MPPSC 2026

सहायक प्राध्यापक

पेपर – II

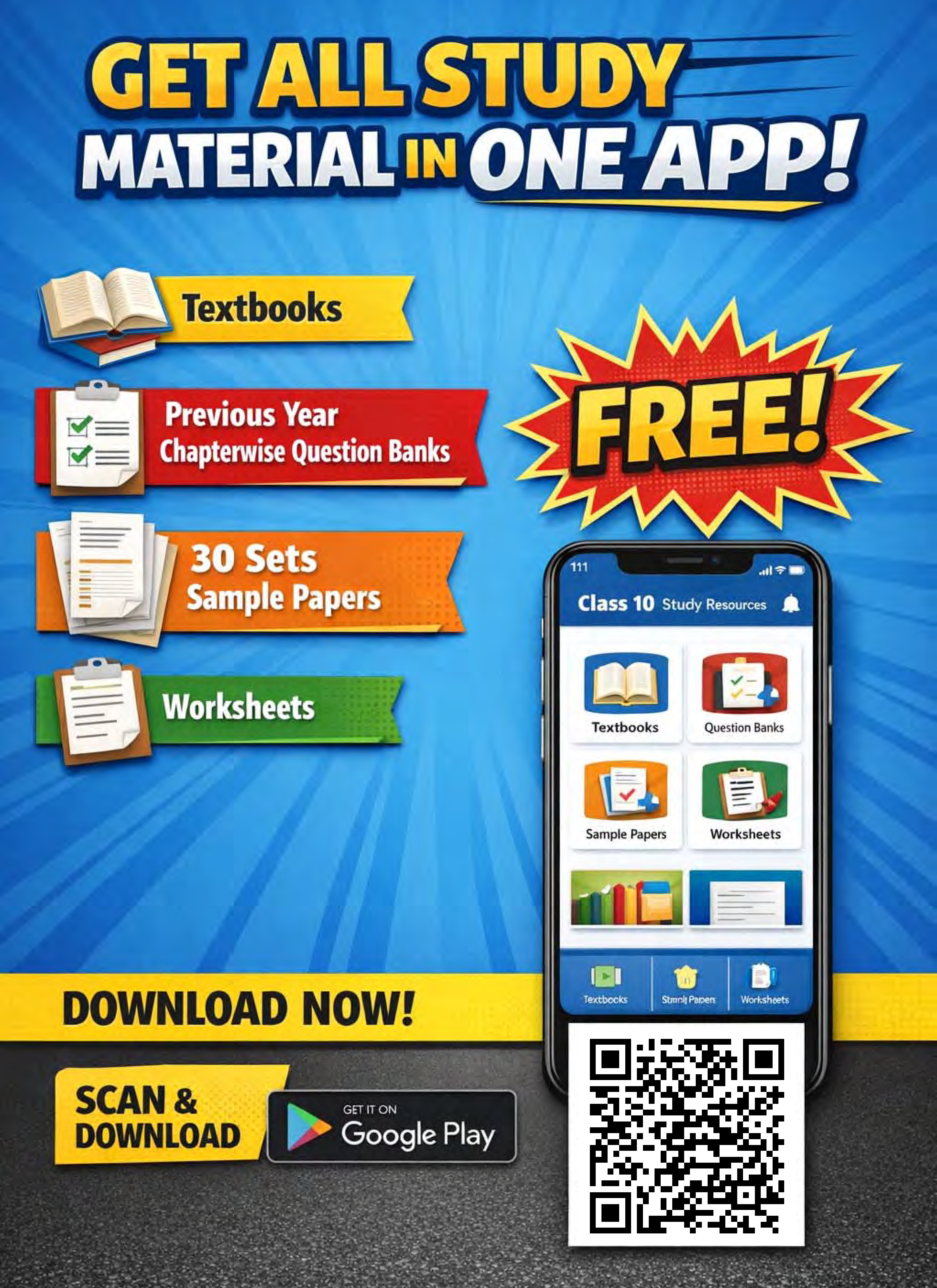
इतिहास

HISTORY

अध्यायवार MCQs

Nodia

Scan QR for Demo PDF


GET ALL STUDY MATERIAL IN ONE APP!
Textbooks
Previous Year Chapterwise Question Banks
30 Sets Sample Papers
Worksheets
FREE!
Class 10 Study Resources
Textbooks
Question Banks
Sample Papers
Worksheets
DOWNLOAD NOW!
SCAN & DOWNLOAD
GET IT ON Google Play

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

2026

सहायक प्राध्यापक

पेपर – II

इतिहास

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक

आयोग द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

NODIA

MPPSC सहायक प्राध्यापक इतिहास
Edition April 2026
Published by :NODIA
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

MRP ₹620.00

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9024037387
email : mail@nodia.in

विषय-सूची

सहायक प्राध्यापक परीक्षा–2026
द्वितीय प्रश्न–पत्र
पाठ्यक्रम – इतिहास

इकाई–01 इतिहास एवं इतिहास लेखन:

- इतिहास क्या है ?–इतिहास की व्युत्पत्ति, इतिहास का अर्थ एवं परिभाषा।
- इतिहास की प्रकृति एवं स्वरुप–इतिहास एक विज्ञान है, इतिहास एक कला है, इतिहास एक दर्शन है।
- इतिहास का विस्तार क्षेत्र – राजनीतिक इतिहास, आर्थिक इतिहास, सामाजिक इतिहास, धार्मिक इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, संवैधानिक इतिहास, विचारों का इतिहास, बौद्धिक इतिहास, क्षेत्रीय इतिहास, राष्ट्रीय इतिहास, विश्व इतिहास।
- इतिहास में वस्तुनिष्ठता – इतिहास में वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता एवं समस्या इतिहासपरक वस्तुनिष्ठता।
- इतिहास में पूर्वाग्रह –पूर्वाग्रह का अर्थ, इतिहास में पूर्वाग्रह के प्रमुख कारण, सामाजिक परिवेश, धर्मगत प्रभाव, राजनीतिक निष्ठा, संरक्षक शासक के प्रति कृतज्ञता आदि।
- इतिहास का अन्य विषयों से सम्बन्ध – इतिहास और भूगोल, इतिहास और पुरातत्व, इतिहास व राजनीति, इतिहास व सामाजशास्त्र, इतिहास और अर्थशास्त्र, इतिहास व साहित्य।
- इतिहास में अनुसंधान – अनुसंधान का अर्थ, अनुसंधान के प्राथमिक एवं द्वितीयक (गौण) स्रोत, तथ्यों का संकलन एवं चयन, साक्ष्य एवं उसका अनुप्रयोग।
- इतिहास के उपागम– धर्म सम्बन्धी, प्राच्यवादी, साम्राज्यवादी, राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, उपाश्रयी, उत्तर आधुनिकतावादी।
- इतिहास के वृहत सिद्धान्त– युग चक्रवादी सिद्धान्त, ऐतिहासिक भौतिकवाद।
- इतिहास लेखन की परम्पराएँ – प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की वैदिक एवं पौराणिक परम्परा (सूतपरम्परा, चरित परम्परा), बौद्ध एवं जैन परम्परा, प्राचीन भारतीय इतिहास लेखक –शुक्र, बाणभट्ट, कलहण, मध्य कालीन भारतीय इतिहास लेखक– मिनहाज–उस–सिराज, जिया–उद्दीन–बरनी, अबुल–फजल। भारत के आधुनिक इतिहास लेखक –रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर, यदुनाथ सरकार, आनन्द के स्वामी, काशी प्रसाद जायसवाल, रमेश चन्द्र मजुमदार, धर्मनिन्द कौशाम्बी, प्रो. सतीशचन्द्र मित्तल।

इकाई–02 प्राचीन भारतीय इतिहास

- संकल्पना एवं विचार– भारतवर्ष, वेद, ऋत्त, सभा–समिति, वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, ऋण, संस्कार, यज्ञ/पंचमहायज्ञ, कर्म का सिद्धान्त, बोधिसत्व, तीर्थकर।
- इतिहास के साहित्यिक स्रोत – धार्मिक साहित्य, लौकिक साहित्य।
- इतिहास के पुरातात्विक स्रोत – अभिलेख, सिक्के, स्मारक आदि।
- विदेशी यात्रियों के विवरण:– यूनानी–रोमन, चीनी तथा अरब लेखक।
- प्रागैतिहास तथा आंध्य इतिहास–मानव तथा पर्यावरण, भौगोलिक कारक, आखेट तथा संग्रह (पुरापाषाण तथा मध्यपाषाण), कृषि का आरम्भ, (नवपाषाण तथा ताम्र पाषाण)।
- सिन्धु/सरस्वती घाटी की सभ्यता – उद्गम, विस्तार, विशेषतायें, पतन, उत्तर जीविता (अवशेष) तथा महत्व, लोह युग तथा द्वितीय शहरीकरण।
- वैदिक काल – वैदिक संस्कृति, वैदिक काल (पूर्व एवं उत्तर) साहित्यिक तथा पुरातात्विक साक्ष्य, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संस्थाओं का विकास, धार्मिक तथा दार्शनिक विचार, अनुष्ठान तथा पद्धतियां।
- महाजनपद काल– 16 महाजनपदों का निर्माण, गणराज्य तथा राजतंत्र, शहरी केन्द्रों का उदय, व्यापार–मार्ग, आर्थिक संवृद्धि, सिक्कों का प्रचलन, मगध साम्राज्य का उत्कर्ष (हर्यक वंश, शिशुनांग वंश तथा नंदवंश) प्राचीन भारत में लोकतंत्र एवं गंणराज्य।
- छठीं शताब्दी ईसापूर्व की धार्मिक, क्रांति– जैन धर्म और बौद्ध धर्म की प्रमुख शिक्षायें, सिद्धांत तथा दार्शनिक विचार। सूत्रों एवं महाकाव्यों का युग।

- विदेशी–आक्रमण– हखमानी (ईरानी/पारसीक) आक्रमण (कुरुष अथवा साइरस द्वितीय, दारा प्रथम (Darius- I) क्षर्षिष अथवा जरक्सीज (Xerxes), दारा तृतीय) सिकन्दर का भारत पर आक्रमण और उनका प्रभाव।

इकाई–03 मौर्य एवं मौर्योत्तर काल

- संकल्पना एवं विचार:– दण्डनीति, कौटिल्य तथा अर्थशास्त्र, सप्तांग, धर्म विजय, स्तूप, चैत्य, विहार, श्रेणी, कर, विष्टि।
- चन्द्रगुप्त मौर्य – उत्पत्ति, प्रारंभिक जीवन, विजयें एवं उपलब्धियों, साम्राज्य विस्तार, अंतिम जीवन।
- शासन व्यवस्था – चन्द्रगुप्त मौर्य का केन्द्रीय शासन, प्रान्तीय शासन, नगर प्रशासन तथा ग्राम प्रशासन।
- सम्राट अशोक "प्रियदर्शी" – प्रारंभिक जीवन, कलिंग का युद्ध तथा उसके परिणाम, अशोके का धम्म, धम्म प्रचार के उपाय, अशोक के प्रशासनिक सुधार।
- अशोक के अभिलेख – शिलालेख, लघु शिलालेख, स्तम्भ लेख, लघु स्तम्भ लेख तथा गुहालेख।
- मौर्य युगीन संस्कृति – सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक जीवन, कला और स्थापत्य, ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपियें।
- मौर्य साम्राज्य का विघटन – मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण, शुंग वंश, पुष्यमित्र शुंग की उपलब्धियों, कण्व राजवंश, सातवाहन राजवंश का इतिहास एवं सातवाहन युगीन संस्कृति (सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक जीवन एवं कला)। पहलव एवं बैक्ट्रियंस।
- विदेशी आक्रमण – भारत–ग्रीक (डेमेट्रियस, युक्रेटाइडीज, मेनाण्डर) शक (तक्षशिला के शक, मथुरा के शक क्षत्रप, महाराष्ट्र के शक क्षत्रप, सौराष्ट तथा मालवा के शक क्षत्रप वंश, कुषाण वंश– कनिष्क का साम्राज्य विस्तार तथा प्रशासन, कुषाण युगीन धर्म, साहित्य एवं कला।
- पूर्वी भारत तथा दक्षिण भारत – कलिंग का चेदि राजवंश, खारवेल तथा उसकी उपलब्धियां, चोल राज्य, चेर राज्य, पाण्ड्य राज्य, संगम साहित्य एवं संगम युगीन संस्कृति, (कला, सामाजिक – आर्थिक दशा, धर्म और धार्मिक विश्वास) बृहत्तर भारत।
- प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा – खगोल विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, शिल्पशास्त्र, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान प्रौद्योगिकी, गणित विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र।

इकाई–04 प्राचीन भारत की संकल्पनाए एवं विचार

- स्त्रीधन, प्रस्तर स्मारंक, अग्रहार, नागर–द्राविड–बेसर।
- गुप्त राजवंश – चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, रामगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त, स्कन्द गुप्त (विजयें तथा उपलब्धियां), गुप्त–वाकाटक संबंध।
- गुप्त युगीन संस्कृति और पडोसी देशों से संपर्क– शासन व्यवस्था, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, धार्मिक जीवन और साहित्य और विज्ञान, कला स्थापत्य। गुप्त काल में भारत का दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य एशिया, चीन व श्रीलंका से सम्पर्क।
- थानेश्वर का वर्धन राजवंश और हर्षकालीन संस्कृति– हर्ष का प्रारंभिक जीवन, युद्ध व विजयें, साम्राज्य विस्तार, शासनप्रबंध, सामाजिक धार्मिक जीवन, शिक्षा और साहित्य, नालंदा विश्वविद्यालय।
- उत्तर और पूर्वी सीमावर्ती राज्य– कश्मीर का कर्कोट राजवंश, उत्पल वंश, लोहार राजवंश, बंगाल का पाल राजवंश और सेन वंश, कामरुप का वर्मन वंश – इतिहास व संस्कृति, विक्रम शिला विश्वविद्यालय।
- चालुक्य वंश – वातापी, कल्याणी, वेंगी (आन्ध्र), के चालुक्य शासक, उनका राजनैतिक इतिहास एवं चालुक्य कालीन संस्कृति (प्रशासन, साहित्य, धर्म, कला और स्थापत्य)।
- राष्ट्रकूट वंश और गुजरात के सोलंकी (चौलुक्य) राजवंश– राजनीतिक इतिहास, प्रमुख शासक तथा राष्ट्रकूट कालीन संस्कृति (शासन प्रबंध, धर्म, साहित्य, कला), गुजरात के सोलंकी (चौलुक्य) राजवंश का संक्षिप्त इतिहास।
- पल्लव राजवंश– कांची के महान पल्लव शासक, राजनीतिक इतिहास तथा पल्लव कालीन संस्कृति (शासन प्रबन्ध, धर्म, साहित्य, कला तथा स्थापत्य, सामाजिक, आर्थिक जीवन)।
- चोल राजवंश– राजनैतिक इतिहास, प्रमुख शासक तथा चोलयुगीन संस्कृति (शासन प्रबन्ध, धार्मिक दशा, साहित्य, कला और स्थापत्य)।
- दक्षिणापथ के अन्य राज्य– देवगिरि के यादव, द्वारसमुद्र के होयसल, कदम्ब राजवंश, गंग राजवंश, वारंगल का काकतीय वंश।

इकाई–05 मध्य कालीन भारतीय इतिहास

- मध्यकालीन संकल्पनाएं एवं विचार– चौथ, हुण्डी (विनिमय पत्र), पोलीगर, जागीर, अमरम, इक्ता, जजिया, मनसब, देशमुख, नाडु, जौहर, साका, सुलह–ए–कुल।
- अरबों का आक्रमण और भारतीय प्रतिरोध– उबैदुल्ला, बुदैलें और मुहम्मद बिन कासिम का सिन्धं के राजा दाहिर पर आक्रमण और दाहिर का बलिदान, कश्मीर के राजा ललितादित्य, गुर्जर, प्रतिहार नरेश, बदामी के चालुक्य नरेश तथा गुहिलवंशी नरेश बप्पा रावल द्वारा अरबों की पराजय।
- तुर्कों एवं पठानों के आक्रमण एवं भारतीय प्रतिरोध – महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी तथा महमूद गजनवी के विभिन्न 17 आक्रमण एवं भारतीय प्रतिरोध– राजा सुहेल देव, मुहम्मद गोरी के आक्रमण, मंगोल आक्रमण, तैमूर का आक्रमण।
- भारत के सल्तनत कालीन शासक तथा भारतीय प्रतिरोध– गुलाम वंश, खिलजी, तुगलक, सैय्यद, लोदी तथा क्षेत्रीय राजपूत शासकों का प्रतिरोध।
- मुगलों का भारत पर आक्रमण तथा भारतीय प्रतिरोध– बाबर, पानीपत, खानवा, चंदेरी और घाघरा का युद्ध, नादिरशाह का आक्रमण, अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण।
- मुगल कालीन शासन तथा भारतीय प्रतिरोध –हुमायूँ, शेरशाह सूरी, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब। गोंड, राजपूत, जाट, सिक्ख शासकों तथा सतनामियों का प्रतिरोध।
- क्षेत्रीय राज्यों का उदय – विजय नगर और बहमनी साम्राज्य उत्थान, विस्तार और विघटन।
- मराठा साम्राज्य का उत्कर्ष –उत्कर्ष के कारण, शिवाजी की विजयें तथा हिन्दवी स्वराज की स्थापना, पेशवाओं के अधीन मराठा साम्राज्य का विस्तार।
- मध्यकालीन शासन प्रणाली– तुर्कों की शासन व्यवस्था, मुगलों की शासन प्रणाली, शेरशाह सूरी का शासन प्रबंध, विजय नगर की शासन प्रणाली, शिवाजी का शासन प्रबंध।

इकाई–06 मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृति जीवन

- सामाजिक जनजीवन– हिन्दू समाज और स्त्रियों की दशा, मुस्लिम समाज एवं स्त्रियों की दशा, भोजन, वस्त्र, आभूषण, मनोरंजन आदि।
- आर्थिक जीवन– कृषि उत्पादन, भू–राजस्व व्यवस्था, सिंचाई के साधन, किसानों की स्थिति, कर व्यवस्था, टकसाल (Mint) उद्योग धंधे (Busisness and Industry) नगरीकरण, व्यापार, (Trade and Commerce) आंतरिक व्यापार, विदेशी व्यापार, हस्त शिल्प, यातायात के साधन (Means of Transport)।
- विजय नगर की संस्कृति – सामाजिक धार्मिक आर्थिक स्थिति, साहित्य एवं कला का विकास।
- भक्ति संम्प्रदाय– शैववाद एवं उसकी शाखाएँ तथा दर्शन, वैष्णववाद एवं उसकी शाखाएँ तथा दर्शन, शाक्त धर्म उद्भव तथा विकास, मध्यकालीन प्रमुख संत –शंकराचार्य, रामानंद, कबीर, नानक, तुकाराम, एकनाथ, संत ज्ञानेश्वर, चैतन्य महाप्रभु, तुलसीदास, मीराबाई, बल्लभाचार्य, रामानुचार्य, संत रविदास, संत सिंगाजी महाराज आदि।
- सिख पंथ और सिख गुरुओं का जीवन और उपदेश, प्रमुख घटनाएँ, आदि ग्रंथ (गुरु ग्रंथ साहिब) खालसा, सूफीवाद तथा प्रमुख सूफी संत।
- मुगलों की धार्मिक नीति – बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, तथा औरंगजेब की धार्मिक नीति।
- सांस्कृतिक जीवन – शैक्षिक पद्धति और उनकी अभिप्रेरणा, साहित्य– पर्शियन (फारसी), संस्कृत, क्षेत्रीय भाषा साहित्य, ललित कलाएँ–चित्रकला के प्रमुख स्कूल, संगीत, उत्तर और दक्षिण भारत की वास्तु एवं स्थापत्य कला का विकास।

इकाई–07 आधुनिक भारत का इतिहास

- संकल्पना एवं विचार – प्राच्यवाद, उपनिवेशवाद, सहायक संधि, सम्प्रदायवाद, खिलाफत, राष्ट्रवाद, परमोच्च शक्ति, द्वैध शासन, अग्रवर्ती नीति, राज्य लोप नीति।
- स्त्रोत तथा इतिहास शास्त्र– अभिलेखागारीय सामग्री, जीवनी तथा संस्मरण, समाचार पत्र, मौखिक वृत्तांत, सृजनात्मक साहित्य एवं आधुनिक इतिहास शास्त्र की अवधारणाएँ– साम्राज्यवादी, राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, उपाश्रयी तथा प्राच्यवादी।

- ब्रिटिश शक्ति का उदय – 17वीं ओर 18वीं शताब्दी में भारत में यूरोपीय व्यापारी–पुर्तगाली, डच, फ्रॉसीसी तथा ब्रिटिश, भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना तथा विस्तार, बंगाल, अवध, हैदरसंबाद, मैसूर, मराठा तथा सिख तथा सिंध का विलय।
- कम्पनी तथा क्राउन का प्रशासन – ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधीन केन्द्रीय तथा प्रान्तीय ढांचे का विकास (1773 – 1853ई), कम्पनी तथा क्राउन के अधीन परमोच्च शक्ति, सिविल सेवा, न्यायिक, पुलिस सेवा, तथा सेना। स्थानीय स्वशासन, संवैधानिक परिवर्तन (1909–1935)।
- आर्थिक इतिहास – कृषि का वाणिज्यीकरण, भूमि बन्दोबस्त, ग्रामीण ऋण–ग्रस्तता, कुटीर उद्योग, धन्धों तथा दस्तकारी का विनाश, कारीगरों की बदलती हुई सामाजिक, आर्थिक दशाएँ, प्रमुख आधुनिक उद्योग, फैक्ट्री कानून का स्वरूप, श्रमिक तथा मजदूर संघ के आंदोलन, अनौद्योगीकरण, मौद्रिक नीति, दुर्भिक्ष तथा महामारी और सरकार की नीति, भारतीय आर्थिक इतिहासकार तथा धन के निष्कासन का सिद्धांत एवं दादाभाई नौरोजी तथा आ.सी. दत्त आदि के विचार।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति का प्रभाव, राजाराम मोहन राय तथा ब्रह्म समाज, दयानंद सरस्वती तथा आर्य समाज, स्वामी, विवेकानन्द तथा रामकृष्ण मिशन, सर सैय्यद अहमद खॉ, एनी बेसेन्ट, थियोसॉफिकल सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय, ज्योतिबा फुले, केशव धोंडो, कर्वे, सावित्री बाई फुले आदि का योगदान, सामाजिक सुधार आंदोलन, महिलाओं की स्थिति, महिलाओं के संगठन, महिलाओं से संबंधित ब्रिटिश कानून।
- भारतीय प्रेस का विकास – 1857 के पूर्व की स्थिति, 1857 का लाइसेन्सिंग एक्ट, वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट और विभिन्न समाचार पत्र अधिनियम, प्रमुख समाचार पत्र।

इकाई–08 आधुनिक भारत का इतिहास

- भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण, राष्ट्रीयता का सामाजिक तथा आर्थिक आधार।
- 1857 की क्रांति– कारण, प्रकृति, परिणाम, असंफलता के कारण तथा प्रभाव। 1857 की क्रांति के प्रमुख नायक– तात्या टोपे, मंगल पाण्डे, बख्त खान, नाना साहब, मौलवी अहमद उल्लाह, लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई आदि।
- उपनिवेशीय शासन का विरोध– प्रमुख विद्रोह–कूका विद्रोह, वासुदेव बलवंत फड़के विद्रोह, जनजातीय विद्रोह– खासी, नागा, अहोम, कोल, मुंडा, भील विद्रोह (महाराष्ट्र तथा राजस्थान)।
- प्रमुख किसान आंदोलन– संथाल विद्रोह, नील विद्रोह, पांबणाँ आंदोलन, चम्पारन सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह, बारदोली सत्याग्रह आदि।
- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना – कारण, उदारवादी नेतृत्व, अतिवादी राष्ट्रवाद, लाल–बाल–पाल की भूमिका, अरविंद घोष, काँग्रेस का विभाजन–नरमदल–गरम दल, सूरत अधिवेशन, काँग्रेस का विभाजन।
- भारत तथा विदेश में क्रांतिकारियों की विचारधारा तथा गतिविधियाँ– प्रारंभिक क्रांतिकारी संगठन, भारत के प्रमुख क्रांतिकारी– प्रमुख क्रांतिकारियों की भूमिका तथा योगदान।
- गॉधी युग और प्रमुख जनआंदोलन भारतीय स्वाधीनता संग्राम में गॉधी का पदार्पण तथा उनके नेतृत्व में हुए समस्त आंदोलन। सुभाषचन्द्र बोस एवं आजाद हिन्द फौज।
- वामपंथी राजनीति भारत में वामपंथी विचारधारा का विकास, प्रमुख वामपंथी संगठन, स्वाधीनता आंदोलन में वामपंथियों का भूमिका।
- साम्प्रदायिक राजनीति– उद्भव, विकास एवं भारत के विभाजन में सांप्रदायिकता की भूमिका।
- स्वतंत्रता पश्चात् भारत (1947 से 1964 तक) – भारतीय राज्यों का एकीकरण, कश्मीर समस्या, भारतीय संविधान का निर्माण, पंचवर्षीय योजना, भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन, भारतीय विदेश नीति (आरंभ से 1964 तक)।

इकाई–09 विश्व का इतिहास:

- संकल्पनाएँ–विधि संहिता (लॉ कोड), रोमन साम्राज्य, दासता, अभिजात तंत्र, जमींदारी प्रथा, ब्लैक डेथ, सामन्तवाद, पुनर्जागरण, संसदीय लोकतंत्र, समाजवाद, फासीवाद, पूर्वी समस्या, चर्च की सर्वोच्चता, पवित्र रोमन साम्राज्य, धर्म सुधार आन्दोलन।
- आधुनिक पश्चिम की आर्थिक क्रांति –वाणिज्यवाद, उपनिवेशवाद, औद्योगिक क्रांति।
- विश्व की (18वीं सदी) प्रमुख क्रांतियाँ – अमेरिका की क्रांति (1776 ई.), फ्रांसीसी क्रांति (1789)।
- 20 वीं सदी की प्रमुख क्रांतियाँ– 1911 की चीनी क्रांति, 1917 ई की रूसी क्रांति–1949 की चीनी क्रांति।

- नेपोलियन बोनापार्ट का युग–उसका उत्थान और पतन, वियना कांग्रेस (1815 ई.)।
- पूर्वी समस्या– क्रीमिया युद्ध (1854–1856), बर्लिन कांग्रेस, युवा तुर्क आन्दोलन, बाल्कन युद्ध।
- जर्मनी और इटली में राष्ट्रवाद का उदय –जर्मनी का एकीकरण, इटली का एकीकरण।
- प्रथम विश्वयुद्ध– कारण, परिणाम एवं प्रभाव, वार्साय की संधि।
- तानाशाही शक्तियों का उदय – फासीवाद और मुसोलिनी की नीतियाँ, नाजीवाद और हिटलर की नीतियाँ।
- द्वितीय विश्व युद्ध – कारण, परिणाम एवं प्रभाव– संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना।

इकाई–10 मध्य प्रदेश का इतिहास एवं स्वाधीनता आन्दोलन :

- प्रागैतिहासिक काल – पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल, नवपाषाण काल, ताम्रपाषाण काल, मध्य प्रदेश के प्रमुख शैलाश्रय एवं शैल चित्र।
- मध्य प्रदेश के प्रमुख अभिलेख –अशोक के अभिलेख– रुपनाथ, गुजरा, पानगुराड़िया, कुषाण नरेश वाशिष्क का साँची अभिलेख, बेसनगर गरुडध्वज स्तम्भ लेख, चन्द्रगुप्त द्वितीय का उदयगिरि गुहा अभिलेख, चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल का साँची पाषाण लेख, चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय का बन्धुवर्मा का मंदसौर अभिलेख।
- मध्य प्रदेश के राजवंश – गर्दभिल्ल वंश, नागवंश, आभीर वंश, औलिकर, परिव्राजक राजवंश, उच्चकल्प वंश, गुर्जर प्रतिहार, कल्चुरी, चंदेल, परमार, तोमर, फारुकी, कच्छपघात वंश।
- मध्य प्रदेश की प्रमुख–रियासतें – गोंडवाना, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, होल्कर, सिन्धिया, भोपाल।
- मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता संघर्ष एवं स्वाधीनता आन्दोलन – बुन्देला विद्रोह एवं मध्यप्रदेश में 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, स्वदेशी आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, झण्डा सत्याग्रह एवं जंगल सत्याग्रह आदि प्रमुख घटनायें, मध्य प्रदेश का पुनर्गठन।
- मध्य प्रदेश के जनजातीय नायकों का संघर्ष एवं इतिहास में योगदान – शंकर शाह, रघुनाथ शाह, भीमाजी नांयक, खाज्या नायक, टंट्या भील, गंजन सिंह कोरकू, बादल मोई, पेमा फाल्या आदि।
- मध्य प्रदेश के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल – स्तूप, मंदिर, महल, किले, गुफाएं, (भीमबेटका, आदमगढ़, आदि) पवित्र नगर आदि।

****

अध्याय 01

इतिहास एवं इतिहास लेखन

1. निम्नलिखित में से कौन 'इतिहास' शब्द की व्युत्पत्ति के मूल का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(A) यह लैटिन शब्द 'हिस्टोरिया' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'वृत्तांत सुनाना'।

(B) यह ग्रीक शब्द 'हिस्टोरिया' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'अन्वेषण' या 'पूछताछ'।

(C) यह संस्कृत शब्द 'इतिहस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'ऐसा ही था'।

(D) यह जर्मन शब्द 'गेशिचटे' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'घटनाएं'।

2. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I: इतिहास को विज्ञान मानने वाला दृष्टिकोण साक्ष्य, आलोचनात्मक पद्धति और वस्तुनिष्ठता की खोज पर इसकी निर्भरता पर जोर देता है।

कथन II: इतिहास को एक कला मानने वाला दृष्टिकोण अतीत के निर्माण में इतिहासकार की कल्पना, वर्णन कौशल और व्यक्तिपरक व्याख्या की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।

(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।

(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

3. निम्नलिखित में से किसे इतिहास के दायरे में एक प्राथमिक उप-क्षेत्र नहीं माना जाता है?

(A) विचारों का इतिहास

(B) बौद्धिक इतिहास

(C) भविष्य विज्ञान

(D) संवैधानिक इतिहास

4. इतिहास में वस्तुनिष्ठता की समस्या मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस कारक से उत्पन्न होती है?

(A) प्राचीन काल के लिए प्राथमिक स्रोत सामग्री की सापेक्ष कमी।

(B) एकल, सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति का अभाव।

(C) प्राचीन लिपियों का सटीकता के साथ अनुवाद करने की तकनीकी कठिनाई।

(D) इतिहासकार की अंतर्निहित व्यक्तिपरकता और उनका व्यक्तिगत संदर्भ।

5. निम्नलिखित में से किसे इतिहास लेखन में पूर्वाग्रह के एक प्रमुख कारण के रूप में पहचाना गया है?

(A) पुरातात्विक साक्ष्यों का उपयोग

(B) सहकर्मी समीक्षा की पद्धति

(C) एक संरक्षक शासक के प्रति इतिहासकार की कृतज्ञता

(D) इतिहास का भूगोल के साथ सह-संबंध

6. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (क्षेत्र)

P. इतिहास और पुरातत्व

Q. इतिहास और समाजशास्त्र

R. इतिहास और अर्थशास्त्र

S. इतिहास और राजनीति

सूची II: (सह-संबंध)

1. समय के साथ शक्ति संरचनाओं, शासन और शासन कला का अध्ययन करता है।
2. अतीत के उत्पादन, वितरण और उपभोग के पैटर्न का विश्लेषण करता है।
3. अतीत के समाजों में सामाजिक संरचनाओं, संस्थानों और परिवर्तनों की जांच करता है।
4. अतीत के पुनर्निर्माण और सत्यापन के लिए भौतिक अवशेषों का उपयोग करता है।

कूट:

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1

(B) P-1, Q-2, R-3, S-4

(C) P-4, Q-1, R-2, S-3

(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

7. ऐतिहासिक शोध में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के बीच मौलिक अंतर क्या है?

(A) प्राथमिक स्रोत लिखित होते हैं, जबकि द्वितीयक स्रोत अलिखित होते हैं।

(B) प्राथमिक स्रोत हमेशा निष्पक्ष होते हैं, जबकि द्वितीयक स्रोत पूर्वाग्रही होते हैं।

(C) प्राथमिक स्रोत अभिलेखागार में पाए जाते हैं, जबकि द्वितीयक स्रोत पुस्तकालयों में पाए जाते हैं।

(D) प्राथमिक स्रोत घटना के समकालीन होते हैं, जबकि द्वितीयक स्रोत उनकी व्याख्याएं होते हैं।

8. भारत में इतिहास लेखन का राष्ट्रवादी दृष्टिकोण मुख्य रूप से किस अन्य दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया के रूप में उभरा?

(A) साम्राज्यवादी दृष्टिकोण

(B) मार्क्सवादी दृष्टिकोण

(C) निम्नवर्गीय दृष्टिकोण

(D) उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): इतिहास की चक्रीय अवधारणा यह सुझाव देती है कि इतिहास खुद को पैटर्न या चक्रों में दोहराता है।
कारण (R): यह दृष्टिकोण एक पूर्व निर्धारित अंत की ओर इतिहास की रैखिक प्रगति को प्रतिपादित करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

10. इतिहास लेखन की पौराणिक परंपरा के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन इसकी कथा संरचना का एक प्रमुख घटक है?
(A) राजाओं और राजवंशों की वंशावली सूची
(B) आर्थिक नीतियों का विश्लेषण
(C) आम लोगों के जीवन पर ध्यान केंद्रित करना
(D) धार्मिक प्रथाओं की आलोचना

11. प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की 'चरित' परंपरा को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) धार्मिक भजनों और अनुष्ठानों का संग्रह।
(B) सामाजिक आचरण के लिए बनाया गया एक कानूनी कोड।
(C) वैश्विक इतिहास का कालानुक्रमिक विवरण।
(D) राजाओं और संरक्षकों की प्रशंसात्मक जीवनियां।

12. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: डेटा के संग्रह में सभी उपलब्ध प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों को इकट्ठा करना शामिल है।
कथन II: डेटा के चयन में विशिष्ट शोध प्रश्न के लिए सबसे प्रासंगिक और विश्वसनीय जानकारी चुनने की एक आलोचनात्मक प्रक्रिया शामिल है।
(A) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।

13. निम्नलिखित प्राचीन भारतीय लेखकों में से कौन एक ऐसे ग्रंथ को लिखने के लिए जाना जाता है जिसमें शासन कला और इतिहास के सिद्धांत शामिल हैं?
(A) बाणभट्ट
(B) कल्हण
(C) शुक्र
(D) मिन्हाज-उस-सिराज

14. ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत, जो इतिहास का एक व्यापक सिद्धांत है, सबसे निकटता से किस दृष्टिकोण से जुड़ा है?
(A) राष्ट्रवादी
(B) साम्राज्यवादी
(C) उत्तर-आधुनिकतावादी
(D) मार्क्सवादी

15. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इतिहास में वस्तुनिष्ठता का तात्पर्य बिना किसी व्याख्या के इतिहास लिखना है।
2. वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता इतिहास को एक विश्वसनीय और भरोसेमंद विषय बनाने की इच्छा से उत्पन्न होती है।
3. ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता एक पूर्ण लक्ष्य है जिसे किसी भी प्रशिक्षित इतिहासकार द्वारा आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

16. मध्यकालीन भारतीय इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी निम्नलिखित में से किस कृति के लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) अकबरनामा
(B) तारीख-ए-फिरोज शाही
(C) तबकात-ए-नासिरी
(D) राजतरंगिणी

17. मुगल काल का अध्ययन करने वाले इतिहासकार के लिए निम्नलिखित में से कौन सा प्राथमिक स्रोत का उदाहरण है?
(A) सम्राट अकबर की 21वीं सदी की जीवनी।
(B) अबुल फजल की अकबरनामा।
(C) आर.सी. मजूमदार द्वारा लिखित मध्यकालीन भारतीय इतिहास की एक पाठ्यपुस्तक।
(D) आधुनिक पत्रिका में प्रकाशित मुगल आर्थिक नीतियों पर एक शोध पत्र।

18. हाशिए पर रहने वाले और गैर-कुलीन समूहों के दृष्टिकोण से अतीत का अध्ययन किस ऐतिहासिक दृष्टिकोण का मुख्य केंद्र है?
(A) निम्नवर्गीय
(B) प्राच्यवादी
(C) राष्ट्रवादी
(D) साम्राज्यवादी

19. इतिहास और साहित्य के बीच सह-संबंध के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) साहित्य अक्सर किसी काल के सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को समझने के स्रोत के रूप में कार्य करता है।
(B) ऐतिहासिक घटनाएं अक्सर साहित्यिक कृतियों के लिए पृष्ठभूमि या विषय वस्तु प्रदान करती हैं।

(C) साहित्यिक स्रोत हमेशा तथ्यात्मक रूप से सटीक होते हैं और उनका उपयोग आलोचनात्मक मूल्यांकन के बिना किया जा सकता है।
(D) इतिहास और साहित्य दोनों अपने विवरणों के निर्माण के लिए वृत्तांत का उपयोग करते हैं।

20. निम्नलिखित आधुनिक भारतीय इतिहासकारों को उनकी गतिविधि की अनुमानित अवधि के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. रामकृष्ण गोपाल भंडारकर
2. काशी प्रसाद जायसवाल
3. रमेश चंद्र मजूमदार
4. सतीशचंद्र मित्तल

(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 4, 3, 1, 2
(D) 1, 2, 3, 4

21. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): साम्राज्यवादी इतिहास लेखन ने अक्सर भारत को निरंकुश शासकों की भूमि और एक स्थिर समाज के रूप में चित्रित किया।
कारण (R): इस चित्रण ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को एक 'सभ्य बनाने वाले मिशन' के रूप में उचित ठहराने का काम किया जो भारत में प्रगति और ज्ञानोदय लाया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

22. प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन के संदर्भ में 'सूत परंपरा' शब्द का अर्थ है:
(A) शाही जीवनियां लिखने की परंपरा।
(B) चारण कथावाचकों की परंपरा जिन्होंने वंशावली और ऐतिहासिक उपाख्यानों को संरक्षित किया।
(C) बुद्ध के जीवन को दर्ज करने वाले बौद्ध भिक्षुओं की परंपरा।
(D) धार्मिक ग्रंथों का संकलन करने वाले जैन विद्वानों की परंपरा।

23. निम्नलिखित में से कौन भारत का आधुनिक इतिहास लेखक है?
(A) हेरोडोटस
(B) लियोपोल्ड वॉन रांके
(C) अर्नोल्ड जे. टायनबी
(D) यदुनाथ सरकार

24. इतिहास विज्ञान है या कला, इस पर बहस किसके इर्द-गिर्द घूमती है:
(A) कार्यप्रणाली और वस्तुनिष्ठता बनाम वृत्तांत और व्याख्या की भूमिका।
(B) प्राथमिक बनाम द्वितीयक स्रोतों का उपयोग।
(C) राजनीतिक इतिहास बनाम सामाजिक इतिहास का अध्ययन।
(D) राष्ट्रीय इतिहास बनाम विश्व इतिहास पर ध्यान केंद्रित करना।

25. इतिहास के प्रति उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण की विशेषता क्या है?
(A) एकल, वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक सत्य के अस्तित्व में विश्वास।
(B) सार्वभौमिक प्रगति और विकास के व्यापक वृत्तांतों पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) व्यापक सिद्धांतों के प्रति संदेह और विखंडन पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) सभी ऐतिहासिक परिवर्तनों की व्याख्या करने के लिए विशेष रूप से आर्थिक डेटा का उपयोग।

26. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (इतिहासकार)
P. कल्हण
Q. अबुल फजल
R. बाणभट्ट
S. जियाउद्दीन बरनी

सूची II: (कृति)
1. हर्षचरित
2. तारीख-ए-फिरोज शाही
3. राजतरंगिणी
4. अकबरनामा

कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

27. सिक्कों का अध्ययन निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी के बारे में जानकारी प्रदान करता है?
(A) उस काल की आर्थिक स्थिति।
(B) किसी राज्य के क्षेत्र का विस्तार।
(C) शासकों की धार्मिक मान्यताएं।
(D) समाज की पूर्ण सामाजिक संरचना।

28. ऐतिहासिक शोध में "साक्ष्य और उसका संचरण" को निम्नलिखित में से कौन सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) इतिहास की पुस्तक या शोध पत्रिका के अंतिम प्रकाशन की प्रक्रिया।
(B) वह तरीका जिससे स्रोतों और विवरणों के माध्यम से ऐतिहासिक जानकारी परिवर्तित होती है।

(C) ऐतिहासिक कलाकृतियों और अवशेषों का संग्रहालयों तक भौतिक परिवहन।
(D) प्राथमिक शोध स्रोतों से प्रासंगिक डेटा का व्यवस्थित चयन।

29. ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की अवधारणा का अर्थ है:
(A) इतिहासकार की विषय के बारे में कोई व्यक्तिगत राय या विश्वास नहीं होना चाहिए।
(B) इतिहासकार को केवल उन्हीं स्रोतों का उपयोग करना चाहिए जो उनके विशिष्ट शोध-प्रबंध से सहमत हों।
(C) इतिहासकार एक निष्पक्ष, साक्ष्य-समर्थित और संतुलित विवरण के लिए प्रयास करता है।
(D) इतिहासकार को एक जटिल और वैज्ञानिक शैक्षणिक भाषा में लिखना चाहिए।

30. "विचारों के इतिहास" के बारे में लिखने वाला इतिहासकार सबसे अधिक संभावना किस पर ध्यान केंद्रित करेगा?
(A) प्रमुख युद्धों की तारीखें और राजाओं का उत्तराधिकार।
(B) कृषि उत्पादन और व्यापार मार्गों में परिवर्तन।
(C) सार्वजनिक भवनों और संरचनाओं की स्थापत्य शैली।
(D) स्वतंत्रता या न्याय जैसी अमूर्त अवधारणाओं का विकास।

31. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इतिहास लेखन की बौद्ध परंपरा विशेष रूप से राजाओं की राजनीतिक उपलब्धियों पर केंद्रित थी।
2. जैन परंपरा ने अपने संतों के जीवनचरित्र और वृत्तांतों के माध्यम से ऐतिहासिक जानकारी में योगदान दिया।
3. बौद्ध और जैन दोनों परंपराओं ने अक्सर अपने ऐतिहासिक वृत्तांतों में धार्मिक सिद्धांतों को एकीकृत किया।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

32. भारतीय इतिहास के प्रति "प्राच्यवादी" दृष्टिकोण की सबसे अच्छी विशेषता क्या है?
(A) भारतीय संस्कृति और स्वदेशी परंपराओं की शत्रुतापूर्ण आलोचना।
(B) भारत की शास्त्रीय भाषाओं और प्राचीन ग्रंथों का विद्वतापूर्ण अध्ययन।
(C) ऐतिहासिक वृत्तांतों के माध्यम से औपनिवेशिक शासन को उचित ठहराने का प्रयास।
(D) भारतीय ग्रामीण और श्रमिक वर्गों के इतिहास पर ध्यान केंद्रित करना।

33. इतिहासकार और उनकी विशेषज्ञता का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) रामकृष्ण गोपाल भंडारकर - भारत में वैज्ञानिक ऐतिहासिक शोध के अग्रदूत।
(B) धर्मानंद कोसंबी - विशेष रूप से आधुनिक भारतीय राजनीतिक इतिहास पर केंद्रित।
(C) यदुनाथ सरकार - मुगल साम्राज्य, विशेष रूप से औरंगजेब के अग्रणी इतिहासकार।
(D) काशी प्रसाद जायसवाल - प्राचीन भारत में हिंदू गणराज्यों के अस्तित्व के पक्ष में तर्क दिया।

34. "ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत" का मुख्य तर्क क्या है?
(A) इतिहास उत्पादन के साधनों पर आधारित वर्ग संघर्षों के माध्यम से आगे बढ़ता है।
(B) इतिहास मुख्य रूप से महान व्यक्तियों के कार्यों से संचालित होता है।
(C) इतिहास समाज के विकास और पतन के आवर्ती चक्रों में चलता है।
(D) इतिहास प्रतिस्पर्धी धार्मिक विचारों के बीच संघर्ष से आकार लेता है।

35. इतिहास लेखन में पूर्वाग्रह के कारण के रूप में "धर्म का प्रभाव" किसमें सबसे अधिक स्पष्ट होगा?
(A) व्यापार पैटर्न का आर्थिक विश्लेषण।
(B) एक ऐतिहासिक क्षेत्र का भौगोलिक सर्वेक्षण।
(C) लेखक के पंथ या धर्म का पक्ष लेने वाला एक वृत्तांत।
(D) संवैधानिक संशोधनों का अध्ययन।

36. इतिहास की कौन सी शाखा विशेष रूप से कानूनी ढांचे और शासन संरचनाओं के विकास का अध्ययन करेगी?
(A) आर्थिक इतिहास
(B) सामाजिक इतिहास
(C) सांस्कृतिक इतिहास
(D) संवैधानिक इतिहास

37. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: बाणभट्ट का 'हर्षचरित' 'चरित' परंपरा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
कथन II: 'हर्षचरित' हर्ष के शासनकाल का पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ और आलोचनात्मक विवरण है, जो संरक्षक की किसी भी प्रशंसा से मुक्त है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

38. एक इतिहासकार जो शक्ति के समीकरणों, विचारधारा और औपनिवेशिक प्रभुत्व के औचित्य के नजरिए से अतीत का विश्लेषण करता है, वह संभवतः कौन सा दृष्टिकोण अपना रहा है?
(A) राष्ट्रवादी
(B) साम्राज्यवादी
(C) धार्मिक
(D) प्राच्यवादी

39. इतिहास और समाजशास्त्र के बीच सह-संबंध फायदेमंद है क्योंकि:
(A) समाजशास्त्र ऐतिहासिक घटनाओं की भविष्यवाणी करने के लिए पूर्ण नियम प्रदान करता है।
(B) इतिहास समाजशास्त्र को निष्पक्ष तथ्यात्मक डेटा प्रदान करता है।
(C) इतिहास और समाजशास्त्र एक जैसे विषय हैं।
(D) समाजशास्त्र सामाजिक संरचनाओं के विश्लेषण के लिए एक ढांचा प्रदान करता है।

40. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): डेटा का चयन ऐतिहासिक शोध में एक महत्वपूर्ण कदम है जिसके लिए इतिहासकार के निर्णय की आवश्यकता होती।
कारण (R): ऐतिहासिक वृत्तांत में स्रोतों से प्राप्त जानकारी के हर एक अंश को शामिल करना असंभव और अक्सर अवांछनीय होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

41. तबकात-ए-नासिरी के लेखक मिन्हाज-उस-सिराज ने मुख्य रूप से किस वंश के इतिहास का वर्णन किया है?
(A) मुगल वंश
(B) खिलजी वंश
(C) प्रारंभिक दिल्ली सल्तनत
(D) तुगलक वंश

42. बौद्धिक इतिहास को "विचारों के इतिहास" से क्या अलग करता है?
(A) बौद्धिक इतिहास संदर्भ में विचारकों पर ध्यान केंद्रित करता है, विचारों का इतिहास अवधारणाओं का पता लगाता है।
(B) विचारों का इतिहास बौद्धिक इतिहास से अधिक व्यापक है।
(C) बौद्धिक इतिहास केवल विज्ञान से संबंधित है, जबकि विचारों का इतिहास दर्शन से संबंधित है।
(D) दोनों क्षेत्रों के बीच कोई अंतर नहीं है।

43. निम्नलिखित में से कौन इतिहास में वस्तुनिष्ठता की एक प्रमुख समस्या का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) अभिलेखीय अनुसंधान के लिए आधुनिक तकनीक के उपयोग की समस्या।
(B) सामान्य दर्शकों के लिए इतिहास को रोचक बनाने की समस्या।
(C) ऐतिहासिक कृतियों का कई भाषाओं में अनुवाद करने की समस्या।
(D) डेटा के विशाल सागर से विशिष्ट तथ्यों के चयन की समस्या।

44. एक ऐतिहासिक अध्ययन के लिए निम्नलिखित परिदृश्य पर विचार कीजिए: "एक इतिहासकार 1857 के विद्रोह पर एक पुस्तक लिख रहा है। इतिहासकार मुख्य रूप से आधिकारिक ब्रिटिश रिपोर्टों, सैनिकों के पत्रों और सरकारी दस्तावेजों का उपयोग करता है।" इस इतिहासकार का कार्य संभवतः किसके द्वारा प्रभावित पूर्वाग्रह को दर्शाएगा:
(A) धार्मिक उत्साह
(B) औपनिवेशिक प्रशासन का दृष्टिकोण
(C) राष्ट्रवादी भावना
(D) एक मार्क्सवादी ढांचा

45. भारत में निम्नलिखित ऐतिहासिक परंपराओं को प्राचीनतम से नवीनतम तक कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित कीजिए।
1. चरित परंपरा
2. पौराणिक परंपरा
3. आधुनिक वैज्ञानिक इतिहास लेखन
4. सल्तनत काल का फारसी इतिहास लेखन
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 4, 1, 3
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 3, 2, 1

46. "इतिहास एक विज्ञान है, न कम, न ज्यादा।" यह प्रसिद्ध सूक्ति इतिहास के किस पहलू पर जोर देती है?
(A) ऐतिहासिक लेखन की साहित्यिक गुणवत्ता।
(B) अतीत की घटनाओं की दार्शनिक व्याख्या।
(C) ऐतिहासिक प्रक्रियाओं की चक्रीय प्रकृति।
(D) ऐतिहासिक जांच की कठोर, साक्ष्य-आधारित कार्यप्रणाली।

47. एक इतिहासकार पर 'सामाजिक परिवेश' का प्रभाव पूर्वाग्रह पैदा कर सकता है। इसका अर्थ है:
(A) समकालीन सामाजिक मूल्य अनजाने में इतिहासकार के दृष्टिकोण को आकार दे सकते हैं।
(B) एक इतिहासकार केवल अपने सामाजिक वर्ग के बारे में लिखेगा।
(C) एक इतिहासकार का कार्य उनके पर्यावरण की स्थितियों से प्रभावित होता है।
(D) वस्तुनिष्ठ होने के लिए एक इतिहासकार को सामाजिक अलगाव में रहना चाहिए।

48. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (इतिहास के प्रति दृष्टिकोण)
P. राष्ट्रवादी
Q. मार्क्सवादी
R. निम्नवर्गीय
S. साम्राज्यवादी
सूची II: (मुख्य केंद्र)

1. आम जनता और उत्पीड़ितों के दृष्टिकोण से इतिहास।
2. औपनिवेशिक शासन का औचित्य।
3. राष्ट्र के अतीत का महिमामंडन और औपनिवेशिक वृत्तांतों का प्रतिरोध।
4. वर्ग संघर्ष और उत्पादन की पद्धति।

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

49. निम्नलिखित में से कौन द्वितीयक स्रोत का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) पानीपत की लड़ाई में लड़ने वाले एक सैनिक की डायरी।
(B) एक आधुनिक इतिहासकार द्वारा लिखित "दिल्ली सल्तनत की आर्थिक नीतियां" नामक पुस्तक।
(C) सम्राट अशोक का एक शिलालेख।
(D) समुद्रगुप्त द्वारा जारी किया गया सिक्का।

50. धर्मानंद कोसंबी का कार्य भारतीय इतिहास लेखन में किस दृष्टिकोण के अनुप्रयोग के लिए महत्वपूर्ण है?
(A) मार्क्सवादी
(B) साम्राज्यवादी
(C) राष्ट्रवादी
(D) उत्तर-आधुनिकतावादी

51. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. विश्व इतिहास विभिन्न समाजों के बीच संबंधों और तुलनाओं पर जोर देते हुए वैश्विक दृष्टिकोण से अतीत का अध्ययन करने का प्रयास करता है।
2. राष्ट्रीय इतिहास सामाजिक और आर्थिक पहलुओं की अनदेखी करते हुए विशेष रूप से एक राष्ट्र के राजनीतिक नेताओं पर ध्यान केंद्रित करता है।
3. क्षेत्रीय इतिहास एक राष्ट्र के भीतर एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के अतीत की जांच करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

52. यह दृष्टिकोण कि इतिहास एक दर्शन है, यह सुझाव देता है कि:
(A) इतिहास केवल तथ्यों और तारीखों का संग्रह है।
(B) इतिहास में अतीत के अर्थ और पैटर्न के बारे में चिंतन शामिल है।
(C) इतिहास केवल प्रशिक्षित दार्शनिकों द्वारा ही लिखा जाना चाहिए।
(D) ऐतिहासिक लेखन को औपचारिक तर्क के नियमों का पालन करना चाहिए।

53. एक इतिहासकार जो किसी सभ्यता के विकास को समझने के लिए अतीत की जलवायु, भू-भाग और नदी प्रणालियों के अध्ययन को प्राथमिकता देता है, वह किसके बीच सह-संबंध पर जोर दे रहा है:
(A) इतिहास और राजनीति
(B) इतिहास और अर्थशास्त्र
(C) इतिहास और भूगोल
(D) इतिहास और साहित्य

54. पूर्वाग्रह के कारण के रूप में 'राजनीतिक वफादारी' शब्द का अर्थ है कि एक इतिहासकार:
(A) राजनीतिक इतिहास का अध्ययन करने से पूरी तरह इनकार कर सकता है।
(B) केवल सरकारी अभिलेखागार के स्रोतों का उपयोग कर सकता है।
(C) पूरी तरह से राजनेताओं की जीवनियों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।
(D) अपनी पसंदीदा विचारधारा के साथ तालमेल बिठाने के लिए अतीत को तोड़-मरोड़ सकता है।

55. प्राचीन भारतीय राजव्यवस्था पर के. पी. जायसवाल का कार्य इतिहास लेखन की किस विचारधारा का प्रमुख उदाहरण है?
(A) मार्क्सवादी
(B) साम्राज्यवादी
(C) राष्ट्रवादी
(D) निम्नवर्गीय

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): पुरातत्व इतिहास के लिए एक महत्वपूर्ण पूरक विषय है, विशेष रूप से उन अवधियों के लिए जहां लिखित रिकॉर्ड कम हैं।
कारण (R): मिट्टी के बर्तन, उपकरण और खंडहर जैसे भौतिक अवशेष अतीत के बारे में प्रत्यक्ष और पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ तथ्य प्रदान करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

57. इतिहास के प्रति "धार्मिक" दृष्टिकोण, अपने पारंपरिक अर्थ में, अक्सर इतिहास को इस रूप में देखता है:
(A) आर्थिक ताकतों का एक उत्पाद।
(B) ईश्वरीय योजना या इच्छा की अभिव्यक्ति।
(C) घटनाओं का एक यादृच्छिक और अर्थहीन क्रम।
(D) विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच एक संघर्ष।

58. निम्नलिखित में से कौन सा इतिहास लेखन की वैदिक और पौराणिक परंपराओं की विशेषता नहीं है?
(A) समय की चक्रीय अवधारणा।

(B) वंशावलियों पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) पौराणिक कथाओं और ऐतिहासिक वृत्तांतों का एकीकरण।
(D) वस्तुनिष्ठता और साक्ष्य के आधुनिक मानकों का कड़ाई से पालन।

59. आर.सी. मजूमदार एक प्रमुख आधुनिक भारतीय इतिहासकार हैं जो इसके लिए जाने जाते हैं:
(A) निम्नवर्गीय अध्ययन परियोजना का नेतृत्व करने के लिए।
(B) भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का आधिकारिक इतिहास लिखने के लिए।
(C) भारतीय इतिहास की मार्क्सवादी व्याख्या के प्रमुख प्रस्तावक होने के लिए।
(D) बहु-खंडीय "हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल" के मुख्य संपादक होने के लिए।

60. ऐतिहासिक शोध प्रक्रिया में पहला कदम आमतौर पर होता है:
(A) डेटा का संग्रह।
(B) एक शोध समस्या का चयन और निर्माण।
(C) अंतिम वृत्तांत लिखना।
(D) द्वितीयक स्रोतों का आलोचनात्मक विश्लेषण।

61. निम्नलिखित में से कौन अबुल फजल की कृति की सही पहचान करता है?
(A) तारीख-ए-अलाई
(B) तबकात-ए-अकबरी
(C) आइन-ए-अकबरी
(D) मुंतखब-उत-तवारीख

62. "आर्थिक इतिहास" के दायरे में सबसे अधिक संभावना किसका अध्ययन शामिल होगा?
(A) दार्शनिक विचार का विकास।
(B) व्यापार संघों, भू-राजस्व प्रणालियों और तकनीक का इतिहास।
(C) संतों का जीवन और धार्मिक आंदोलनों का विकास।
(D) चुनावी प्रणालियों का विकास।

63. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण मौलिक रूप से अतीत के बारे में एक एकल, वस्तुनिष्ठ "सत्य" प्राप्त करने की संभावना को चुनौती देता है।
कथन II: उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण का तर्क है कि ऐतिहासिक वृत्तांत भाषाई निर्माण हैं जिनका वास्तविक अतीत के साथ कोई पारदर्शी संबंध नहीं है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

64. इतिहास में वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता पर जोर दिया जाता है:
(A) इतिहास को और अधिक मनोरंजक बनाने के लिए।
(B) यह सुनिश्चित करने के लिए कि इतिहास शासक वर्ग के हितों की सेवा करे।
(C) व्याख्या की आवश्यकता को समाप्त करने के लिए।
(D) एक विषय के रूप में इतिहास की विश्वसनीयता और शैक्षणिक कठोरता स्थापित करने के लिए।

65. एक इतिहासकार जो यह तर्क देता है कि इतिहास एक "कला" है, वह किसके महत्व पर जोर देगा:
(A) सांख्यिकीय विश्लेषण
(B) कलाकृतियों की रासायनिक विश्लेषण
(C) कथा संरचना और साहित्यिक शैली
(D) सार्वभौमिक नियमों का निर्माण

66. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्राथमिक स्रोत हमेशा द्वितीयक स्रोत की तुलना में अधिक विश्वसनीय होता है।
2. किसी विषय के इतिहास लेखन को समझने के लिए द्वितीयक स्रोत उपयोगी हो सकता है।
3. एक आत्मकथा को प्राथमिक स्रोत माना जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

67. "इतिहास की चक्रीय अवधारणा" किस अन्य अवधारणा के सीधे विरोध में है?
(A) यह विचार कि इतिहास महान व्यक्तियों द्वारा संचालित होता है।
(B) ऐतिहासिक शोध में प्राथमिक स्रोतों का उपयोग।
(C) इतिहास का भूगोल के साथ सह-संबंध।
(D) इतिहास की रैखिक अवधारणा, जो इतिहास को एक रेखा में आगे बढ़ते हुए देखती है।

68. आधुनिक भारतीय लेखकों के संदर्भ में आनंद के. कुमारस्वामी को उनके किस योगदान के लिए जाना जाता है?
(A) भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र का इतिहास
(B) राजनीतिक और सैन्य इतिहास
(C) आर्थिक इतिहास और मार्क्सवादी विश्लेषण
(D) भारतीय संविधान का इतिहास

69. कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) जियाउद्दीन बरनी - अकबरनामा
(B) अबुल फजल - तबकात-ए-नासिरी
(C) कल्हण - राजतरंगिणी
(D) बाणभट्ट - तारीख-ए-फिरोज शाही

70. पारिवारिक इतिहास, विवाह की रस्में और अतीत में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन किसके दायरे में आता है?
(A) राजनीतिक इतिहास
(B) बौद्धिक इतिहास
(C) संवैधानिक इतिहास
(D) सामाजिक इतिहास

71. भारतीय इतिहास लेखन में कल्हण की राजतरंगिणी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) यह संस्कृत में लिखा गया पहला ऐतिहासिक ग्रंथ था।
(B) यह पूरे भारत का संपूर्ण इतिहास प्रदान करता है।
(C) यह बिना किसी ऐतिहासिक मूल्य के एक विशुद्ध रूप से पौराणिक कृति है।
(D) यह एक जुड़े हुए क्षेत्रीय इतिहास को लिखने का एक सचेत प्रयास था।

72. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (इतिहास का प्रकार)
P. सामाजिक इतिहास
Q. आर्थिक इतिहास
R. राजनीतिक इतिहास
S. बौद्धिक इतिहास
सूची II: (अध्ययन का विषय)
1. शासन कला, युद्धों और कूटनीति का अध्ययन।
2. दार्शनिक और वैज्ञानिक विचारों के विकास का अध्ययन।
3. वर्ग, जाति, परिवार और सामुदायिक संरचनाओं का अध्ययन।
4. अतीत में व्यापार, कृषि और उद्योग का अध्ययन।
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

73. एक इतिहासकार जो जानबूझकर उन तथ्यों को छोड़ देता है जो उसके तर्क के विपरीत हैं, वह किसमें विफलता प्रदर्शित कर रहा है:
(A) इतिहास का समाजशास्त्र के साथ सह-संबंध।
(B) द्वितीयक स्रोतों का उपयोग।
(C) इतिहास का चक्रीय सिद्धांत।
(D) ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता।

74. 'चरित' परंपरा, जैसे बाणभट्ट का 'हर्षचरित', की अक्सर आलोचना की जाती है:
(A) साहित्यिक योग्यता की कमी के लिए।
(B) विशेष रूप से आर्थिक डेटा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए।
(C) ऐसी भाषा के उपयोग के लिए जिसका अनुवाद करना कठिन है।
(D) संरक्षक राजा के पक्ष में स्तुति और अतिशयोक्ति की प्रवृत्ति के लिए।

75. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने एक राष्ट्रीय पहचान बनाने और देश के अतीत में गर्व की भावना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
कारण (R): उन्होंने साम्राज्यवादी इतिहासकारों द्वारा नकारात्मक चित्रण का मुकाबला करने के लिए दर्शन, विज्ञान, कला और शासन में भारत की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

76. ऐतिहासिक शोध में "डेटा का संग्रह और चयन" शामिल है:
(A) केवल प्राथमिक स्रोतों को इकट्ठा करना।
(B) विश्वसनीयता के लिए स्रोतों की पहचान करना, उन्हें इकट्ठा करना और उनका आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
(C) सभी उपलब्ध जानकारी को समान रूप से मान्य के रूप में स्वीकार करना।
(D) केवल प्रकाशित पुस्तकों में पाई जाने वाली जानकारी का उपयोग करना।

77. निम्नलिखित में से कौन सूत परंपरा का उदाहरण है?
(A) व्यास द्वारा पुराणों का लेखन।
(B) बौद्ध भिक्षुओं द्वारा त्रिपिटकों का संकलन।
(C) सम्राट अशोक द्वारा शिलालेखों का निर्माण।
(D) राजदरबारों में चारणों द्वारा वंशावलियों और वीरतापूर्ण कार्यों का पाठ।

78. कौन सा कथन 'सांस्कृतिक इतिहास' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) समाज के विश्वासों, मूल्यों, कलात्मक अभिव्यक्तियों और लोकप्रिय रीति-रिवाजों का इतिहास।
(B) राजनीतिक संस्थानों और उनके नेताओं का इतिहास।
(C) युद्ध और सैन्य रणनीति का इतिहास।
(D) आर्थिक उत्पादन और विनिमय का इतिहास।

79. आर.जी. भंडारकर को आधुनिक इतिहास का अग्रदूत माना जाता है क्योंकि उन्होंने:
(A) मराठों का पहला व्यापक इतिहास लिखा।
(B) अपने शोध के लिए विशेष रूप से साहित्यिक स्रोतों का उपयोग किया।
(C) अंग्रेजी में इतिहास लिखने वाले पहले भारतीय थे।
(D) पारंपरिक वृत्तांत से हटकर स्रोतों के प्रति आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण पर जोर दिया।

80. मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार, ऐतिहासिक परिवर्तन का प्राथमिक इंजन है:
(A) ईश्वर की इच्छा।
(B) करिश्माई नेताओं के कार्य।
(C) समाज के आर्थिक आधार से उत्पन्न सामाजिक वर्गों के बीच संघर्ष।
(D) संयोगवश होने वाली घटनाओं का यादृच्छिक परस्पर प्रभाव।

81. इतिहास लेखन में "साक्ष्य और उसका संचरण" एक महत्वपूर्ण अवधारणा है क्योंकि:
(A) यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि समय के साथ स्रोत की सामग्री कैसे बदली जा सकती है।
(B) यह संग्रहालयों के बीच कलाकृतियों को भेजने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है।
(C) यह साबित करता है कि सभी प्राथमिक स्रोत स्वाभाविक रूप से भरोसेमंद हैं।
(D) यह डेटा संग्रह का पर्याय है।

82. 'इतिहास में पूर्वाग्रह' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) इतिहासकार के धार्मिक विश्वासों या राजनीतिक वफादारी से पूर्वाग्रह उत्पन्न हो सकता है।
(B) एक इतिहासकार और एक शासक के बीच संरक्षक-ग्राहक संबंध पूर्वाग्रह का एक बड़ा स्रोत है।
(C) एक इतिहासकार का सामाजिक परिवेश अनजाने में उनके कार्य में पूर्वाग्रह ला सकता है।
(D) यदि इतिहासकार उचित रूप से प्रशिक्षित है तो पूर्वाग्रह को पूरी तरह से समाप्त किया जा सकता है।

83. निम्नलिखित लेखकों को उनके ऐतिहासिक काल के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. अबुल फजल
2. बाणभट्ट
3. यदुनाथ सरकार
4. कल्हण
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 2, 1, 3

84. इतिहास का राजनीति के साथ सह-संबंध तब स्पष्ट होता है जब इतिहासकार अध्ययन करते हैं:
(A) साम्राज्यों का उत्थान और पतन, राज्यों की प्रकृति और विदेश नीति।
(B) कृषि पर वर्षा के पैटर्न का प्रभाव।
(C) परिवार और रिश्तेदारी की संरचना।
(D) कविता में रूपकों का उपयोग।

85. "इतिहास-लेखन" शब्द का क्या अर्थ है?
(A) इतिहास का लेखन।
(B) ऐतिहासिक कलाकृतियों का संग्रह।
(C) इतिहास कैसे लिखा गया है इसका अध्ययन, ऐतिहासिक लेखन का इतिहास।
(D) अतीत की घटनाओं की कालानुक्रमिक सूची।

86. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. निम्नवर्गीय अध्ययन समूह ने कुलीनों पर ध्यान केंद्रित करते हुए ऊपर से नीचे की ओर इतिहास लिखने की कोशिश की।
2. यह दृष्टिकोण औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी दोनों इतिहास लेखन के कुलीनवाद की आलोचना करता है।
3. इसका उद्देश्य इतिहास में अधीनस्थ समूहों की आवाज और एजेंसी को फिर से प्राप्त करना है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

87. निम्नलिखित में से कौन सा आधुनिक इतिहासकार औरंगजेब के इतिहास पर अपने स्मारकीय कार्य के लिए जाना जाता है?
(A) आर.सी. मजूमदार
(B) के.पी. जायसवाल
(C) डी.डी. कोसंबी
(D) यदुनाथ सरकार

88. यदि कोई इतिहासकार सिल्क रोड के किनारे बौद्ध धर्म के प्रसार का अध्ययन करता है, तो वह किस प्रकार के इतिहास में संलग्न है?
(A) धार्मिक, आर्थिक और विश्व इतिहास का संयोजन।
(B) भारत का विशुद्ध रूप से राष्ट्रीय इतिहास।
(C) विशेष रूप से संवैधानिक इतिहास।
(D) केवल बौद्धिक इतिहास।

89. पौराणिक परंपराओं और आधुनिक इतिहास लेखन के बीच एक मुख्य अंतर क्या है?
(A) पौराणिक परंपराएं संस्कृत का उपयोग करती हैं, जबकि आधुनिक इतिहास हिंदी का उपयोग करता है।
(B) पौराणिक परंपराएं राजाओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जबकि आधुनिक इतिहास आम लोगों पर ध्यान केंद्रित करता है।
(C) आधुनिक इतिहास हमेशा पक्षपाती होता है, जबकि पौराणिक परंपराएं वस्तुनिष्ठ होती हैं।
(D) आधुनिक इतिहास साक्ष्यों के आलोचनात्मक मूल्यांकन पर जोर देता है, जो पुराणों में अनुपस्थित है।

90. "ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता" की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार समझा जा सकता है:
(A) एक अप्राप्य आदर्श जिसके लिए इतिहासकारों को फिर भी प्रयास करना चाहिए।
(B) ऐतिहासिक पेशे की एक पूर्ण उपलब्धि।

(C) ऐतिहासिक लेखन से सभी व्याख्याओं का बहिष्कार।
(D) यह विश्वास कि इतिहास खुद को दोहराता है।

91. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): प्राचीन इतिहास के लिए इतिहास और पुरातत्व के बीच सह-संबंध विशेष रूप से मजबूत है।
कारण (R): कई प्राचीन समाजों के लिए पर्याप्त लिखित रिकॉर्ड के अभाव में, पुरातात्विक साक्ष्य अतीत के पुनर्निर्माण के लिए प्राथमिक स्रोत बन जाते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

92. इतिहास लेखन की वह विचारधारा जो ऐतिहासिक लेखन को ही साहित्य का एक रूप मानती है और वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करने के इसके दावे पर सवाल उठाती है, वह है:
(A) मार्क्सवादी
(B) राष्ट्रवादी
(C) उत्तर-आधुनिकतावादी
(D) साम्राज्यवादी

93. इस्लामी दुनिया के इतिहास 'तबकात-ए-नासिरी' के लेखक कौन हैं?
(A) जियाउद्दीन बरनी
(B) अबुल फजल
(C) बाणभट्ट
(D) मिन्हाज-उस-सिराज

94. "क्षेत्रीय इतिहास" का प्राथमिक केंद्र क्या है?
(A) एक ही खंड में पूरी दुनिया का इतिहास सुनाना।
(B) एक विशिष्ट, भौगोलिक रूप से परिभाषित क्षेत्र के इतिहास का अध्ययन करना।
(C) किसी राष्ट्र के राजनीतिक नेताओं के जीवन का वृत्तांत लिखना।
(D) विशेष रूप से आर्थिक डेटा के माध्यम से इतिहास का विश्लेषण करना।

95. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (इतिहासकार)
P. के.पी. जायसवाल
Q. डी.डी. कोसंबी
R. यदुनाथ सरकार
S. आर.सी. मजूमदार
सूची II: (संबद्ध विचार/कृति)
1. भारतीय इतिहास की मार्क्सवादी व्याख्या
2. औरंगजेब का इतिहास
3. 'द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल' के संपादक
4. 'हिंदू पॉलिटी'
कूट:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

96. "सूत" और "चरित" परंपराएं किसके उदाहरण हैं?
(A) भारत में आधुनिक ऐतिहासिक लेखन।
(B) ब्रिटिश साम्राज्यवादी इतिहास लेखन।
(C) इतिहास के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण।
(D) भारत में इतिहास लेखन की पूर्व-आधुनिक स्वदेशी परंपराएं।

97. इतिहासकार की "संरक्षक शासक के प्रति कृतज्ञता" किसके कारण पूर्वाग्रह पैदा कर सकती है:
(A) शासक के शासनकाल का आलोचनात्मक और प्रतिकूल विवरण।
(B) राजनीतिक इतिहास के बजाय आर्थिक इतिहास पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) साहित्यिक स्रोतों के स्थान पर पुरातात्विक साक्ष्यों का उपयोग।
(D) उनकी विफलताओं की अनदेखी करते हुए शासक के गुणों पर अत्यधिक जोर देना।

98. कौन सा कथन इस तर्क को सबसे अच्छी तरह से समाहित करता है कि "इतिहास एक विज्ञान है"?
(A) यह सुझाव देता है कि इतिहास एक सम्मोहक कहानी बनाने के लिए वृत्तांत और कल्पना का उपयोग करता है।
(B) यह सुझाव देता है कि इतिहास में जांच और साक्ष्य एकत्र करने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया शामिल है।
(C) यह सुझाव देता है कि इतिहास का उद्देश्य अतीत में गहरा दार्शनिक अर्थ खोजना है।
(D) यह सुझाव देता है कि इतिहास मुख्य रूप से शाही जीवनियों से संबंधित है।

99. इतिहास शब्द की "व्युत्पत्ति" इसके किस आधार पर एक विषय के रूप में इसकी उत्पत्ति की ओर संकेत करती है?
(A) दिव्य रहस्योद्घाटन
(B) काव्य कल्पना
(C) शाही फरमान
(D) पूछताछ और जांच

100. 18वीं शताब्दी के फ्रांस में सुंदरता और फैशन की बदलती धारणाओं पर केंद्रित अध्ययन किसका उदाहरण होगा?
(A) सांस्कृतिक इतिहास
(B) राजनीतिक इतिहास
(C) संवैधानिक इतिहास
(D) विश्व इतिहास

101. निम्नलिखित में से कौन भारतीय इतिहास के साम्राज्यवादी दृष्टिकोण की विशेषता नहीं है?
(A) 'श्वेत व्यक्ति का उत्तरदायित्व' की अवधारणा।
(B) भारतीय समाज का स्थिर और अपरिवर्तनीय के रूप में चित्रण।
(C) ब्रिटिश शासन का आधुनिकीकरण करने वाली शक्ति के रूप में औचित्य।
(D) भारत के पूर्व-औपनिवेशिक अतीत की महिमा पर ध्यान केंद्रित करना।

102. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्राथमिक स्रोत अध्ययन की जा रही समयावधि की मूल सामग्री हैं।
2. किसी घटना के दिन लिखा गया समाचार पत्र का लेख एक प्राथमिक स्रोत है।
3. किसी ऐतिहासिक व्यक्ति की मृत्यु के 100 साल बाद लिखी गई जीवनी एक प्राथमिक स्रोत है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

103. ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत एक "व्यापक सिद्धांत" है क्योंकि यह:
(A) इतिहास की व्याख्या करने के लिए एक एकल, सर्वव्यापी ढांचा प्रदान करने का प्रयास करता है।
(B) इतिहासकारों की एक बड़ी समिति द्वारा बनाया गया था।
(C) केवल बड़े साम्राज्यों के इतिहास पर लागू होता है।
(D) विशेष रूप से महान पुरुषों की बड़ी उपलब्धियों पर केंद्रित है।

104. निम्नलिखित में से किसे प्राचीन कश्मीर पर एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति का लेखक माना जाता है?
(A) बाणभट्ट
(B) शुक्र
(C) अबुल फजल
(D) कल्हण

105. "इतिहास में वस्तुनिष्ठता की समस्या" किस चुनौती को संदर्भित करती है?
(A) अतीत के बारे में लिखने के लिए पर्याप्त स्रोत खोजना।
(B) इतिहास को एक पेशे के रूप में लाभदायक बनाना।
(C) बिना किसी त्रुटि के प्राचीन भाषाओं का अनुवाद करना।
(D) इतिहासकार की अपने स्वयं के संदर्भ से अलग होने में असमर्थता।

106. निम्नलिखित ऐतिहासिक दृष्टिकोणों को भारतीय इतिहास लेखन में उनके उद्भव और प्रमुखता के सामान्य क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. साम्राज्यवादी
2. राष्ट्रवादी
3. निम्नवर्गीय
4. मार्क्सवादी

(A) 1, 2, 4, 3
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 1, 2, 3

107. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) इतिहास और भूगोल - ऐतिहासिक घटनाओं के स्थानिक संदर्भ का अध्ययन।
(B) इतिहास और अर्थशास्त्र - अतीत की आर्थिक प्रणालियों का अध्ययन।
(C) इतिहास और पुरातत्व - भविष्य के सामाजिक रुझानों का अध्ययन।
(D) इतिहास और राजनीति - शक्ति और शासन का अध्ययन।

108. भारतीय इतिहास लेखन की राष्ट्रवादी विचारधारा का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करना और भारतीय हीनता के औपनिवेशिक वृत्तांतों का मुकाबला करना।
(B) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का समर्थन करना और उसे उचित ठहराना।
(C) वर्ग संघर्ष के नजरिए से भारतीय इतिहास का विश्लेषण करना।
(D) सभी ऐतिहासिक वृत्तांतों को केवल कल्पना के रूप में विखंडित करना।

109. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): जियाउद्दीन बरनी के ऐतिहासिक लेखन दिल्ली सल्तनत के लिए मूल्यवान स्रोत हैं।
कारण (R): बरनी ने इतिहासकारों को सच्चा और निष्पक्ष होने की सलाह दी थी, और उनका अपना काम व्यक्तिगत राय और पूर्वाग्रहों से पूरी तरह मुक्त है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

110. इतिहास की कौन सी शाखा अमूर्त अवधारणाओं की उत्पत्ति, विकास और प्रभाव से संबंधित है?
(A) विचारों का इतिहास
(B) सामाजिक इतिहास
(C) राजनीतिक इतिहास
(D) क्षेत्रीय इतिहास

111. "इतिहास एक दर्शन है" का तात्पर्य है कि यह समझने की कोशिश करता है:

(A) मानवीय अतीत के पैटर्न, अर्थ और अंतर्निहित सिद्धांत।
(B) कलाकृतियों की रासायनिक संरचना।
(C) सभी प्रमुख युद्धों की सही तारीखें।
(D) प्रत्येक शाही परिवार की वंशावली।

112. ऐतिहासिक पद्धति का "साक्ष्य और उसके संचरण" पर जोर शोधकर्ता को किसके बारे में चेतावनी देता है?
(A) मध्यस्थों के माध्यम से जानकारी पारित होने पर विरूपण की संभावना।
(B) पांडुलिपियों का भौतिक क्षय।
(C) अभिलेखागार तक पहुँचने की उच्च लागत।
(D) शोध निष्कर्षों को जल्दी प्रकाशित करने की आवश्यकता।

113. रामकृष्ण गोपाल भंडारकर के कार्य ने किसकी ओर बदलाव का उदाहरण पेश किया:
(A) इतिहास लेखन की अधिक राष्ट्रवादी और भावनात्मक शैली।
(B) भारतीय इतिहास लेखन में अधिक वैज्ञानिक और आलोचनात्मक कार्यप्रणाली।
(C) विशेष रूप से कला और संस्कृति के इतिहास पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) अतीत के पुनर्निर्माण के लिए केवल साहित्यिक स्रोतों का उपयोग।

114. इतिहास की चक्रीय अवधारणा, जो विकास, परिपक्वता और पतन के चरणों को प्रतिपादित करती है, की तुलना किससे की जा सकती है?
(A) ऐतिहासिक पूर्वाग्रह की अवधारणा।
(B) प्राथमिक स्रोतों का उपयोग।
(C) आर्थिक इतिहास का अध्ययन।
(D) इतिहास का रैखिक-प्रगतिशील दृष्टिकोण।

115. एक इतिहासकार जो दरबारी वृत्तांतों और आधिकारिक इतिहास का उपयोग करके एक मध्यकालीन राजा की जीवनी लिख रहा है, उसे किससे उत्पन्न पूर्वाग्रह के बारे में सबसे अधिक जागरूक होना चाहिए:
(A) उत्तर-आधुनिकतावादी संदेह
(B) मार्क्सवादी वर्ग विश्लेषण
(C) संरक्षक को प्रसन्न करने की आवश्यकता
(D) निम्नवर्गीय दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करना

116. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (परंपरा/लेखक)
P. सूत परंपरा
Q. चरित परंपरा
R. पौराणिक परंपरा
S. कल्हण
सूची II: (विशेषता)
1. वंशानुचरित
2. पेशेवर चारण और वंशावली लेखक
3. शाही जीवनियां
4. किसी क्षेत्र का आलोचनात्मक ऐतिहासिक वृत्तांत
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

117. इतिहास के प्रति निम्नवर्गीय दृष्टिकोण मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस समूह पर केंद्रित है?
(A) राजा, रानियां और सत्ताधारी कुलीन वर्ग।
(B) औद्योगिक पूंजीवादी वर्ग।
(C) किसान, आदिवासी और समाज के अन्य हाशिए के वर्ग।
(D) औपनिवेशिक प्रशासक और अधिकारी।

118. इतिहास के दायरे के बारे में कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) इतिहास का दायरा अतीत की राजनीति के अध्ययन तक सीमित है।
(B) इतिहास का दायरा जीवन के लगभग हर पहलू को शामिल करने के लिए विस्तृत हो गया है।
(C) केवल प्रमुख युद्धों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए समय के साथ इतिहास का दायरा संकुचित हो गया है।
(D) इतिहास के दायरे में धर्म और संस्कृति का अध्ययन शामिल नहीं है।

119. उत्तर-आधुनिकतावादी इतिहास लेखन की एक परिभाषित विशेषता क्या है?
(A) प्रगति में निर्विवाद विश्वास।
(B) इतिहास के सार्वभौमिक नियमों की खोज।
(C) ऐतिहासिक वृत्तांतों के विखंडन पर जोर।
(D) विशेष रूप से मात्रात्मक डेटा पर निर्भरता।

120. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. धर्मानंद कोसंबी एक बहुश्रुत विद्वान थे जिन्होंने गणित, भारतविद्या और इतिहास में योगदान दिया।
2. उन्होंने प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन में मार्क्सवादी ढांचे को लागू किया।
3. उन्होंने उत्पादन की पद्धतियों, सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक विकास के बीच परस्पर क्रिया पर ध्यान केंद्रित किया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

121. इतिहास और समाजशास्त्र के बीच संबंध को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) असंबद्ध, क्योंकि एक अतीत का अध्ययन करता है और दूसरा वर्तमान का।

(B) परस्पर निर्भर, क्योंकि इतिहास डेटा प्रदान करता है और समाजशास्त्र उपकरण।
(C) समान, बिना किसी सार्थक अंतर के।
(D) संघर्षपूर्ण, क्योंकि उनकी पद्धतियां परस्पर अनन्य हैं।

122. 'हिंदू पॉलिटी' लिखने का श्रेय किस इतिहासकार को दिया जाता है, जिसने प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक और गणतांत्रिक परंपराओं के अस्तित्व पर प्रकाश डाला था?
(A) यदुनाथ सरकार
(B) आर.सी. मजूमदार
(C) काशी प्रसाद जायसवाल
(D) सतीशचंद्र मित्तल

123. इतिहास में "शोध का अर्थ" क्या है?
(A) इतिहास की किताब पढ़ने की सामान्य क्रिया।
(B) स्रोतों के विश्लेषण पर आधारित एक व्यवस्थित जांच।
(C) ऐतिहासिक घटना का काल्पनिक वर्णन।
(D) तारीखों की एक कालानुक्रमिक सूची।

124. जब कोई इतिहासकार "राष्ट्रीय इतिहास" लिखने का प्रयास करता है, तो वह मुख्य रूप से किस पर ध्यान केंद्रित करता है:
(A) किसी विशिष्ट गांव या शहर का इतिहास।
(B) संपूर्ण विश्व का परस्पर जुड़ा हुआ इतिहास।
(C) एक राष्ट्र बनाने वाले लोगों या राज्य का ऐतिहासिक विकास।
(D) एक व्यक्ति का व्यक्तिगत इतिहास।

125. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): 18वीं सदी के अंत और 19वीं सदी की शुरुआत के प्राच्यवादी विद्वानों ने प्राचीन भारतीय ग्रंथों के मूल्यवान अनुवाद तैयार किए।
कारण (R): उनका प्राथमिक और एकमात्र उद्देश्य ज्ञान की शुद्ध खोज थी, जो ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के हितों से पूरी तरह अलग थी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

126. किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा गया दस्तावेज़ जो किसी ऐतिहासिक घटना का प्रत्यक्ष प्रतिभागी या पर्यवेक्षक था, क्या कहलाता है?
(A) द्वितीयक स्रोत
(B) तृतीयक स्रोत
(C) प्राथमिक स्रोत
(D) इतिहास-लेखन संबंधी स्रोत

127. निम्नलिखित में से कौन "इतिहास में पूर्वाग्रह" की सबसे सटीक परिभाषा है?
(A) ऐतिहासिक कृति में पाद-टिप्पणियों का उपयोग।
(B) एक पूर्वग्रह जो अतीत की इतिहासकार की व्याख्या को प्रभावित करता है।
(C) इतिहास का अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ सह-संबंध।
(D) वैश्विक दृष्टिकोण से इतिहास का अध्ययन।

128. इतिहास लेखन की बौद्ध और जैन परंपराएं महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे:
(A) प्राचीन भारत का एकमात्र विश्वसनीय राजनीतिक इतिहास प्रदान करती हैं।
(B) गैर-ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण से इतिहास पर नजरिया पेश करती हैं।
(C) धार्मिक विचारों और पूर्वाग्रहों से पूरी तरह मुक्त हैं।
(D) विशेष रूप से आर्थिक लेन-देन पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

129. अकबरनामा में अबुल फजल का दृष्टिकोण किसके लिए उल्लेखनीय है:
(A) संक्षिप्तता और प्रशासनिक विवरण की जानबूझकर कमी।
(B) राजनीतिक और सामाजिक पहलुओं को कवर करने वाला व्यापक दायरा।
(C) अपने संरक्षक सम्राट अकबर की कड़ी आलोचना।
(D) जनता की मौखिक परंपराओं पर विशेष निर्भरता।

130. ऐतिहासिक पूर्वाग्रह के कारण के रूप में "राजनीतिक वफादारी" तब स्पष्ट होती है जब कोई इतिहासकार ऐसा विवरण लिखता है जो:
(A) संबद्धता की परवाह किए बिना सभी राजनीतिक हस्तियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है।
(B) अतीत की घटनाओं का विश्लेषण करने के लिए राजनीति विज्ञान की अवधारणाओं का उपयोग करता है।
(C) किसी विशेष राजनीतिक दल, विचारधारा या राष्ट्र-राज्य के कार्यों की बिना सोचे-समझे प्रशंसा करता है।
(D) संविधानों और कानूनों के इतिहास का अध्ययन करता है।

131. 'क्षेत्रीय इतिहास' और 'राष्ट्रीय इतिहास' के बीच मुख्य अंतर किसका है?
(A) समयावधि का
(B) पैमाने और केंद्र का
(C) कार्यप्रणाली का
(D) स्रोत सामग्री का

132. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: यह तर्क कि इतिहास एक कला है, एक कहानीकार के रूप में इतिहासकार की भूमिका पर जोर देता है जिसे तथ्यों को एक सुसंगत वृत्तांत में चुनना और व्यवस्थित करना चाहिए।
कथन II: यह तर्क कि इतिहास एक विज्ञान है, वृत्तांत और व्याख्या की भूमिका को पूरी तरह से खारिज करता है।

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

133. ऐतिहासिक शोध में 'डेटा संग्रह' चरण के बाद 'डेटा चयन' आता है क्योंकि:
(A) सभी सामग्री शोध के लिए प्रासंगिक या प्रामाणिक नहीं होगी।
(B) इतिहासकारों को मिलने वाले आधे डेटा को त्यागना आवश्यक है।
(C) डेटा का पहला सेट हमेशा द्वितीयक स्रोतों से होता है।
(D) डेटा चयन केवल डेटा संग्रह का दूसरा नाम है।

134. निम्नलिखित में से कौन प्रोफेसर सतीशचंद्र मित्तल के ऐतिहासिक दृष्टिकोण का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) मार्क्सवादी द्वंद्ववाद पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) किसान आंदोलनों पर एक निम्नवर्गीय दृष्टिकोण।
(C) औपनिवेशिक शासन का साम्राज्यवादी औचित्य।
(D) एक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, जो अक्सर भारतीय इतिहास की धर्मनिरपेक्षतावादी और मार्क्सवादी व्याख्याओं को चुनौती देता है।

135. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वैदिक परंपरा में ऐतिहासिक चेतना निहित है, हालांकि यह मिथक और अनुष्ठान के साथ जुड़ी हुई है।
2. पुराणों में लंबी वंशावली सूचियाँ हैं जो ऐतिहासिक रिकॉर्ड का एक रूप हैं।
3. सूत परंपरा में वे चारण शामिल थे जिन्होंने ऐतिहासिक स्मृतियों को मौखिक रूप से संरक्षित किया।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

136. एक इतिहासकार जो प्रोटेस्टेंट सुधार विचारों के प्रसार पर प्रिंटिंग प्रेस के प्रभाव का अध्ययन कर रहा है, वह मुख्य रूप से किसमें लगा हुआ है:
(A) राजनीतिक इतिहास
(B) आर्थिक इतिहास
(C) बौद्धिक इतिहास और तकनीक का इतिहास
(D) क्षेत्रीय इतिहास

137. निम्नलिखित में से कौन इतिहास में पूर्वाग्रह का कारण नहीं है?
(A) सामाजिक परिवेश
(B) धर्म का प्रभाव
(C) पुरातात्विक साक्ष्यों का उपयोग
(D) राजनीतिक वफादारी

138. सम्राट हर्ष की जीवनी हर्षचरित के लेखक कौन थे?
(A) कल्हण
(B) शुक्र
(C) बाणभट्ट
(D) अबुल फजल

139. इतिहास के प्रति 'धार्मिक दृष्टिकोण' अक्सर ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या इस रूप में करता है:
(A) आर्थिक कारकों द्वारा निर्धारित।
(B) यादृच्छिक संयोग का परिणाम।
(C) एक ईश्वरीय योजना का प्रकट होना।
(D) वर्ग संघर्ष का उत्पाद।

140. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): विषय, स्रोत और व्याख्या का इतिहासकार का चुनाव कभी भी व्यक्तिपरकता से पूरी तरह मुक्त नहीं होता है।
कारण (R): यही अंतर्निहित व्यक्तिपरकता इतिहास को एक शुद्ध विज्ञान के बजाय एक कला बनाती है, जिसमें व्यक्तिगत निर्णय और कथा कौशल शामिल होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

141. 'विश्व इतिहास' की अवधारणा इतिहासकारों को इसके लिए प्रोत्साहित करती है:
(A) केवल अपने राष्ट्र के इतिहास पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) वैश्विक संदर्भ में घटनाओं और प्रक्रियाओं का विश्लेषण करना।
(C) सभी पूर्व-आधुनिक इतिहास की अनदेखी करना।
(D) इतिहास को केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से देखना।

142. इतिहास की मार्क्सवादी व्याख्या किस प्रकार के ऐतिहासिक सिद्धांत का उदाहरण है?
(A) एक चक्रीय सिद्धांत
(B) एक 'महान व्यक्ति' सिद्धांत
(C) ऐतिहासिक भौतिकवाद पर आधारित एक व्यापक सिद्धांत
(D) एक उत्तर-आधुनिकतावादी विखंडन

143. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (ऐतिहासिक शब्द)
P. प्राथमिक स्रोत
Q. द्वितीयक स्रोत
R. इतिहास लेखन
S. पूर्वाग्रह
सूची II: (परिभाषा)
1. इतिहास लिखने की प्रक्रिया का अध्ययन।

2. 2020 में लिखा गया फ्रांसीसी क्रांति का विश्लेषण करने वाला एक शोध लेख।
3. नेपोलियन बोनापार्ट द्वारा लिखा गया एक पत्र।
4. इतिहासकार के कार्य को प्रभावित करने वाला पूर्वग्रह।

कूट:

(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

144. फ्रांसीसी क्रांति के अध्ययन के लिए निम्नलिखित में से कौन सा सबसे उपयुक्त प्राथमिक स्रोत है?

(A) 2010 में प्रकाशित यूरोपीय इतिहास की एक पाठ्यपुस्तक।
(B) मैरी एंटोनेट के जीवन पर एक आधुनिक वृत्तचित्र।
(C) मनुष्य और नागरिक के अधिकारों की घोषणा (1789)।
(D) आतंक के शासन के दौरान सेट किया गया एक ऐतिहासिक उपन्यास।

145. "अतीत एक विदेशी देश है; वहाँ वे चीजें अलग तरह से करते हैं।" यह प्रसिद्ध उद्धरण इतिहासकारों को इससे बचने की याद दिलाता है:

(A) कालदोष, अतीत पर आधुनिक मूल्यों को थोपने की गलती।
(B) प्राथमिक स्रोतों का उपयोग करना।
(C) स्पष्ट और सुलभ शैली में लिखना।
(D) विदेशी देशों के इतिहास का अध्ययन करना।

146. भारत पर इतिहास लेखन की साम्राज्यवादी विचारधारा का मुख्य उद्देश्य क्या था?

(A) भारतीय शासकों की उपलब्धियों पर प्रकाश डालना।
(B) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की वैधता और लाभों को प्रदर्शित करना।
(C) भारतीय समाज के मार्क्सवादी विश्लेषण को बढ़ावा देना।
(D) किसान जनता को आवाज देना।

147. गुप्त काल में जाति की गतिशीलता, रिश्तेदारी के पैटर्न और सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन किसके अंतर्गत आता है?

(A) आर्थिक इतिहास
(B) सामाजिक इतिहास
(C) संवैधानिक इतिहास
(D) बौद्धिक इतिहास

148. लेखन की "चरित" परंपरा की एक परिभाषित विशेषता क्या है?

(A) यह एक शासक की विफलताओं का आलोचनात्मक विश्लेषण है।
(B) यह एक जीवनी संबंधी कृति है, जो अक्सर एक संरक्षक पर केंद्रित प्रशंसनीय शैली में होती है।
(C) यह कानूनों और आदेशों का एक संग्रह है।
(D) यह आम लोगों का एक गुमनाम इतिहास है।

149. इतिहास और साहित्य के बीच संबंध जटिल है क्योंकि:

(A) यदि आलोचनात्मक रूप से उपयोग किया जाए तो साहित्य सामाजिक इतिहास का स्रोत हो सकता है।
(B) इतिहासकारों को साहित्य पढ़ने की अनुमति नहीं है।
(C) साहित्य का उस ऐतिहासिक काल से कोई संबंध नहीं है जिसमें वह लिखा गया था।
(D) इतिहास तथ्यात्मक है और साहित्य काल्पनिक, इसलिए उनका कभी भी एक साथ अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

150. ऐतिहासिक शोध में, "साक्ष्य" को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार परिभाषित किया गया है:

(A) अतीत के बारे में कोई भी व्यक्तिगत राय।
(B) किसी तर्क का समर्थन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले स्रोतों से प्राप्त जानकारी।
(C) एक पूर्ण और वस्तुनिष्ठ तथ्य जिसके लिए किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं होती है।
(D) केवल आधिकारिक अभिलेखागार में पाए जाने वाले लिखित दस्तावेज़।

151. निम्नलिखित में से कौन इतिहास के प्रति एक दृष्टिकोण नहीं है?

(A) मार्क्सवादी
(B) निम्नवर्गीय
(C) मनोविश्लेषणात्मक
(D) राष्ट्रवादी

152. "नीचे से इतिहास" शब्द सबसे निकटता से किस ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जुड़ा है?

(A) साम्राज्यवादी
(B) निम्नवर्गीय
(C) प्राच्यवादी
(D) धार्मिक

153. एक इतिहासकार जो यह मानता है कि इतिहास ईश्वरीय इच्छा और उद्देश्य के अनुसार प्रकट होता है, वह कौन सा दृष्टिकोण अपना रहा है?

(A) मार्क्सवादी
(B) उत्तर-आधुनिकतावादी
(C) धार्मिक
(D) साम्राज्यवादी

154. ग्रीक शब्द 'हिस्टोरिया' का व्युत्पत्तिगत अर्थ क्या है, जिससे 'हिस्ट्री' शब्द निकला है?

(A) कहानी सुनाना
(B) भविष्यवाणी
(C) पूछताछ या जांच
(D) कालक्रम

155. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कल्हण की राजतरंगिणी की इसके आलोचनात्मक विश्लेषण और विविध स्रोतों के उपयोग के प्रयास के लिए प्रशंसा की जाती है।
2. बाणभट्ट का हर्षचरित राजा हर्ष के शासनकाल का एक निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ विवरण है।
3. अबुल फजल का अकबरनामा मुगल दरबार के किसी संरक्षण के बिना लिखा गया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

156. आर.सी. मजूमदार का कार्य, विशेष रूप से "द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल" श्रृंखला का उनका संपादन, किसका उदाहरण है:
(A) मार्क्सवादी इतिहास लेखन
(B) उत्तर-आधुनिकतावादी विखंडन
(C) राष्ट्रवादी इतिहास लेखन की एक प्रमुख परियोजना
(D) साम्राज्यवादी इतिहास लेखन

157. ऐतिहासिक शोध में 'डेटा का चयन' एक महत्वपूर्ण कदम है जो सीधे प्रभावित करता है:
(A) स्रोत का भौतिक संरक्षण।
(B) इतिहासकार के तर्क की वस्तुनिष्ठता और वैधता।
(C) अंतिम पुस्तक का विक्रय मूल्य।
(D) इतिहास का भूगोल के साथ सह-संबंध।

158. उत्खनन के माध्यम से अतीत की भौतिक संस्कृति का अध्ययन किस संबंधित विषय की प्राथमिक पद्धति है?
(A) समाजशास्त्र
(B) राजनीति विज्ञान
(C) पुरातत्व
(D) साहित्य

159. इतिहास की साम्राज्यवादी विचारधारा के खिलाफ मुख्य आलोचना यह है कि यह थी:
(A) नृवंशकेंद्रित और इसने उपनिवेशवाद के हितों की सेवा की।
(B) आम व्यक्ति पर अत्यधिक केंद्रित।
(C) अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं में लिखी गई।
(D) आर्थिक विवरणों पर बहुत अधिक केंद्रित।

160. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): निम्नवर्गीय अध्ययन परियोजना भारतीय इतिहास लेखन में एक महत्वपूर्ण विकास था।
कारण (R): इसने मौजूदा ऐतिहासिक वृत्तांतों में कुलीन पूर्वाग्रह को चुनौती दी और गैर-कुलीन समूहों के इतिहास को फिर से प्राप्त करने की कोशिश की।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

161. "ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत" सबसे निकटता से किसके लेखन से जुड़ा है?
(A) अर्नोल्ड जे. टायनबी
(B) कार्ल मार्क्स
(C) लियोपोल्ड वॉन रांके
(D) हेरोडोटस

162. राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से लिखे गए भारत के "राष्ट्रीय इतिहास" में संभवतः किस पर जोर दिया जाएगा?
(A) विदेशी शासन के खिलाफ प्रतिरोध का लंबा इतिहास और भारत की सांस्कृतिक एकता।
(B) ब्रिटिश-पूर्व भारत की फूट और अराजकता।
(C) वर्ग संघर्षों की एक श्रृंखला के रूप में भारत का इतिहास।
(D) आधुनिक युग से पहले किसी भी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विकास की कमी।

163. पौराणिक परंपरा में समय की कल्पना किस रूप में की गई थी?
(A) कड़ाई से रैखिक और प्रगतिशील।
(B) चक्रीय, महान युगों के माध्यम से आगे बढ़ता हुआ।
(C) स्थिर और अपरिवर्तनीय।
(D) एक आधुनिक सामाजिक निर्माण।

164. ऐतिहासिक लेखन में 'साक्ष्य' की मौलिक भूमिका क्या है?
(A) पाठ को लंबा बनाना।
(B) इतिहासकार के दावों के लिए एक तथ्यात्मक आधार और समर्थन प्रदान करना।
(C) पाठक को भ्रमित करना।
(D) एक अलग परिशिष्ट में शामिल किया जाना।

165. निम्नलिखित में से कौन इतिहास की 'वैदिक परंपरा' की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) मिथक और इतिहास के बीच स्पष्ट अलगाव।
(B) धार्मिक भजनों और अनुष्ठानों में समाहित ऐतिहासिक स्मृति।
(C) राजाओं और युद्धों का विस्तृत कालानुक्रमिक विवरण।
(D) अन्य सभ्यताओं के इतिहास पर ध्यान केंद्रित करना।

166. एक इतिहासकार जो यह दावा करता है कि "इतिहास एक दर्शन है", उसकी रुचि संभवतः किसमें होगी?
(A) घटनाओं की विशिष्ट तिथियां।
(B) कलाकृतियों का वैज्ञानिक विश्लेषण।
(C) अतीत के व्यापक पैटर्न और अर्थ।
(D) सैन्य नेताओं की जीवनियां।

167. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) मिन्हाज-उस-सिराज : मुख्य रूप से अकबर के शासनकाल के बारे में लिखा।
(B) जियाउद्दीन बरनी : दिल्ली सल्तनत के एक इतिहासकार, तारीख-ए-फिरोज शाही के लेखक।
(C) अबुल फजल : प्राचीन कश्मीर के एक इतिहासकार।
(D) कल्हण : मुगल सम्राट औरंगजेब के एक दरबारी इतिहासकार।

168. पिछली महामारियों और समाज पर उनके प्रभाव का अध्ययन किस ऐतिहासिक उप-क्षेत्र के अंतर्गत आएगा?
(A) मुख्य रूप से सामाजिक इतिहास, आर्थिक और राजनीतिक इतिहास के साथ संबंधों के साथ।
(B) विशेष रूप से राजनीतिक इतिहास।
(C) संवैधानिक इतिहास।
(D) विचारों का इतिहास।

169. कविताओं या नाटकों जैसे साहित्यिक स्रोतों का उपयोग करते समय एक इतिहासकार को किस प्रमुख कमी से बचना चाहिए?
(A) उनकी साहित्यिक योग्यता की सराहना करना।
(B) उन्हें तथ्यात्मक वास्तविकता के प्रत्यक्ष प्रतिबिंब के रूप में मानना।
(C) जिस भाषा में वे लिखे गए हैं उसे समझना।
(D) उन्हें उनके सही ऐतिहासिक संदर्भ में रखना।

170. निम्नलिखित में से कौन 'प्राच्यवादी' दृष्टिकोण का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) पश्चिमी विद्वानों द्वारा पूर्व का अध्ययन, जो अक्सर इसके अतीत का रुमानी चित्रण करते हैं।
(B) पूर्वी देशों के लोगों द्वारा लिखा गया इतिहास।
(C) एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण जो भविष्य की भविष्यवाणी करता है।
(D) ऐतिहासिक लेखन के सभी रूपों की आलोचना।

171. "इतिहास में वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता" किस इच्छा से उत्पन्न होती है?
(A) इतिहास को रचनात्मक कल्पना का एक रूप बनाने के लिए।
(B) यह सुनिश्चित करने के लिए कि इतिहास एक सम्मानित और विश्वसनीय शैक्षणिक विषय हो।
(C) राजनीतिक प्रचार के लिए इतिहास का उपयोग करने के लिए।
(D) इतिहासकारों के बीच सभी असहमति को समाप्त करने के लिए।

172. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (विचारधारा)
P. साम्राज्यवादी
Q. राष्ट्रवादी
R. मार्क्सवादी
S. निम्नवर्गीय
सूची II: (प्रतिनिधि इतिहासकार/समूह)
1. रणजीत गुहा
2. डी.डी. कोसंबी
3. विंसेंट स्मिथ
4. आर.सी. मजूमदार
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

173. ऐतिहासिक भौतिकवाद की अवधारणा यह सुझाव देती है कि किसी भी समाज की नींव उसकी:
(A) धार्मिक मान्यताएं हैं।
(B) राजनीतिक संरचना है।
(C) उत्पादन की आर्थिक पद्धति है।
(D) महान नेता हैं।

174. निम्नलिखित में से कौन "सामाजिक परिवेश" से उत्पन्न होने वाले पूर्वाग्रह के कारण का एक उदाहरण है?
(A) अत्यधिक पितृसत्तात्मक समाज का एक इतिहासकार अतीत में महिलाओं की भूमिका की अनदेखी कर रहा है।
(B) एक शासक से अनुकूल इतिहास लिखने के लिए धन प्राप्त करने वाला इतिहासकार।
(C) एक इतिहासकार जो एक कट्टर आस्तिक है और अपने स्वयं के धर्म का इतिहास लिख रहा है।
(D) एक इतिहासकार जिसके राजनीतिक विचार किसी विशेष दल के साथ मेल खाते हैं।

175. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अबुल फजल सम्राट अकबर के दरबारी इतिहासकार थे।
2. उनकी कृति, अकबरनामा को उस काल के लिए एक मूल्यवान स्रोत माना जाता है।
3. उनका लेखन पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ है और उनके संरक्षक की प्रशंसा से मुक्त है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

176. प्राकृतिक विज्ञानों की तुलना में इतिहास में "वस्तुनिष्ठता की समस्या" बढ़ जाती है क्योंकि:
(A) इतिहासकार उस मानवता का हिस्सा है जिसका वे अध्ययन करते हैं और तटस्थ पर्यवेक्षक नहीं हो सकते।
(B) इतिहास उन घटनाओं से संबंधित है जिन्हें प्रयोगशाला में दोहराया नहीं जा सकता है।
(C) ऐतिहासिक स्रोत अक्सर अपूर्ण होते हैं और उनकी व्याख्या की आवश्यकता होती है।

(D) उपरोक्त सभी।

177. विभिन्न प्राचीन भारतीय ग्रंथों के माध्यम से 'धर्म' की अवधारणा के विकास का पता लगाने वाला इतिहासकार किसमें शोध कर रहा है:
(A) आर्थिक इतिहास
(B) विचारों का इतिहास
(C) सैन्य इतिहास
(D) संवैधानिक इतिहास

178. "साक्ष्य और उसका संचरण" वाक्यांश में "संचरण" का क्या अर्थ है?
(A) किसी दस्तावेज़ को ले जाने की भौतिक क्रिया।
(B) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा ऐतिहासिक जानकारी आगे बढ़ाई जाती है और संभावित रूप से बदल जाती है।
(C) इतिहास की पुस्तक का प्रकाशन।
(D) ऐतिहासिक तथ्य का अंतिम, अपरिवर्तनीय संस्करण।

179. निम्नवर्गीय अध्ययन समूह का एक प्रमुख लक्ष्य क्या था?
(A) आधुनिक भारत का एक निश्चित राजनीतिक इतिहास लिखना।
(B) हाशिए के समूहों के दृष्टिकोण से इतिहास का पुनर्मूल्यांकन करना।
(C) भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक उपस्थिति को उचित ठहराने का प्रयास।
(D) संपूर्ण मानव इतिहास की व्याख्या करने के लिए एक व्यापक सिद्धांत बनाना।

180. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): कल्हण की राजतरंगिणी को भारतीय इतिहास लेखन में एक मील का पत्थर माना जाता है।
कारण (R): पहले के इतिहासकारों के विपरीत, कल्हण कार्य-कारण की आधुनिक समझ, स्रोतों का आलोचनात्मक उपयोग और निष्पक्षता का प्रदर्शन करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

181. सिंधु घाटी सभ्यता के अध्ययन के लिए निम्नलिखित में से कौन सा प्राथमिक स्रोत का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) आर.सी. मजूमदार द्वारा लिखित पुस्तक।
(B) मोहनजोदड़ो से खुदाई में मिली मुहरें और मिट्टी के बर्तन।
(C) 1947 का एक समाचार पत्र लेख।
(D) मेगास्थनीज के विवरण।

182. इतिहास के चक्रीय दृष्टिकोण का अर्थ है कि:
(A) इतिहास को विकास और पतन के दोहराव वाले पैटर्न के रूप में देखा जाता है।
(B) इतिहास एक अंतिम लक्ष्य की ओर एक सीधी रेखा में आगे बढ़ता है।
(C) इतिहास पूरी तरह से यादृच्छिक और अप्रत्याशित है।
(D) ऐतिहासिक परिवर्तन जैसी कोई चीज नहीं होती है।

183. आनंद के. कुमारस्वामी का कार्य मुख्य रूप से ऐतिहासिक अध्ययन के किस क्षेत्र से जुड़ा है?
(A) आर्थिक इतिहास
(B) कला और सौंदर्यशास्त्र का इतिहास
(C) सैन्य इतिहास
(D) संवैधानिक इतिहास

184. एक इतिहासकार जो कट्टर राष्ट्रवादी है, उसके प्रति पूर्वाग्रही होने की संभावना हो सकती है:
(A) अपने राष्ट्र के इतिहास को अत्यधिक सकारात्मक रूप में चित्रित करना।
(B) अपने राष्ट्र के अतीत के केवल नकारात्मक पहलुओं को उजागर करना।
(C) अपने राष्ट्र के इतिहास को पूरी तरह से अनदेखा करना।
(D) अपने राष्ट्र के इतिहास के केवल आर्थिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना।

185. जब इतिहास को अर्थशास्त्र के साथ सह-संबंधित किया जाता है, तो यह समझने में मदद मिलती है:
(A) एक युग के दार्शनिक विचार।
(B) सरकार की संरचना और राजनीतिक गठबंधन।
(C) किसी काल में प्रचलित साहित्यिक शैलियाँ।
(D) उत्पादन, व्यापार और वर्ग संबंधों सहित समाज का भौतिक आधार।

186. निम्नलिखित में से कौन इतिहासकार की शोध प्रक्रिया का हिस्सा नहीं है?
(A) डेटा का संग्रह और चयन।
(B) अतीत की घटनाओं को दोहराने के लिए प्रयोगशाला प्रयोग करना।
(C) प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का आलोचनात्मक विश्लेषण।
(D) एक परिकल्पना का निर्माण और एक वृत्तांत तैयार करना।

187. इतिहास के प्रति उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण की सबसे अधिक संभावना क्या होगी?
(A) किसी ऐतिहासिक घटना का एक निश्चित और अंतिम विवरण स्थापित करना।
(B) किसी ऐतिहासिक पाठ का विश्लेषण करके उसके छिपे हुए पूर्वाग्रहों को उजागर करना।
(C) इतिहास का एक नया व्यापक सिद्धांत प्रस्तावित करना।
(D) साहित्यिक स्रोतों की पूरी तरह अनदेखी करना।

188. यदुनाथ सरकार द्वारा फारसी स्रोतों का व्यापक उपयोग और उनके विस्तृत विवरण किसके ऊपर उनके कार्य की पहचान हैं?
(A) मौर्य साम्राज्य
(B) गुप्त साम्राज्य
(C) मुगल साम्राज्य
(D) ब्रिटिश राज

189. भारतीय परंपरा में 'इतिहास' शब्द का शाब्दिक अर्थ है:
(A) देवताओं की इच्छा
(B) "ऐसा ही था" या "ऐसा ही हुआ है"
(C) राजा की कहानी
(D) भविष्य के लिए एक सबक

190. निम्नलिखित में से कौन 'गलत युग्म' का उदाहरण है?
(A) बाणभट्ट - हर्षचरित
(B) कल्हण - राजतरंगिणी
(C) जियाउद्दीन बरनी - तबकात-ए-नासिरी
(D) अबुल फजल - अकबरनामा

191. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: सही पद्धति का पालन करने वाले किसी भी इतिहासकार के लिए पूर्ण वस्तुनिष्ठता आसानी से प्राप्त की जा सकती है।
कथन II: वस्तुनिष्ठता के लिए प्रयास करने में अपने स्वयं के पूर्वाग्रहों को स्वीकार करना और साक्ष्यों के उपयोग के बारे में पारदर्शी होना शामिल है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(D) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।

192. नागरिकों के बदलते कानूनी अधिकारों और देश के शासन संबंधी दस्तावेजों के विकास का विश्लेषण करने वाले अध्ययन को किस रूप में वर्गीकृत किया जाएगा?
(A) सामाजिक इतिहास
(B) संवैधानिक इतिहास
(C) आर्थिक इतिहास
(D) सांस्कृतिक इतिहास

193. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (लेखक)
P. शुक्र
Q. मिन्हाज-उस-सिराज
R. के.पी. जायसवाल
S. डी.डी. कोसंबी
सूची II: (संबद्ध अवधारणा/कृति)
1. तबकात-ए-नासिरी
2. हिंदू पॉलिटी
3. मार्क्सवादी विश्लेषण का अनुप्रयोग
4. शासन कला पर प्राचीन ग्रंथ
कूट:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

194. सूत परंपरा में मुख्य रूप से क्या शामिल था?
(A) मठों में रखे गए लिखित वृत्तांत।
(B) पत्थर के स्तंभों पर खुदे हुए शाही आदेश।
(C) विद्वानों के बीच दार्शनिक बहस।
(D) चारणों द्वारा वंशावलियों और वीरतापूर्ण कथाओं का मौखिक संचरण।

195. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. साम्राज्यवादी इतिहास लेखन ने अक्सर ब्रिटिश-पूर्व भारत को अराजकता के काल के रूप में वर्णित किया।
2. राष्ट्रवादी इतिहास लेखन ने प्राचीन और मध्यकालीन भारत की उपलब्धियों पर प्रकाश डालकर इसका मुकाबला करने की कोशिश की।
3. निम्नवर्गीय इतिहास लेखन आम लोगों की आवाजों की अनदेखी करने के लिए साम्राज्यवादी और राष्ट्रवादी दोनों विचारधाराओं की आलोचना करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

196. "इतिहास का अर्थ और परिभाषा" समय के साथ घटनाओं के एक साधारण वर्णन से बदलकर क्या हो गई है:
(A) मानवीय अतीत के सभी पहलुओं में एक आलोचनात्मक जांच।
(B) मनोरंजन का एक रूप।
(C) भविष्य बताने वाले नियमों के साथ एक विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक विषय।
(D) साहित्य की एक शाखा।

197. कौन सा आधुनिक इतिहासकार विशेष रूप से राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास के स्थापित धर्मनिरपेक्ष वृत्तांतों को चुनौती देने के लिए जाना जाता है?
(A) डी.डी. कोसंबी
(B) यदुनाथ सरकार
(C) सतीशचंद्र मित्तल
(D) आर.जी. भंडारकर

198. इतिहासकार के पूर्वाग्रह पर 'धर्म का प्रभाव' तब देखा जाता है जब उनका लेखन:
(A) अपने स्वयं के धर्म की श्रेष्ठता को सिद्ध करने के लिए संरचित होता है।
(B) एक धार्मिक कैलेंडर से तारीखें शामिल करता है।

(C) एक धार्मिक संस्था के इतिहास पर चर्चा करता है।
(D) किसी धार्मिक समूह द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा में अनुवादित होता है।

199. समुद्रगुप्त के शासनकाल का एक सिक्का किस प्रकार के ऐतिहासिक स्रोत का उदाहरण है?
(A) एक द्वितीयक स्रोत
(B) एक साहित्यिक स्रोत
(C) एक प्राथमिक पुरातात्विक साक्ष्य
(D) एक इतिहास-लेखन संबंधी निबंध

200. इतिहास विज्ञान है या कला, इस बारे में बहस किसके बीच तनाव पर केंद्रित है:
(A) वस्तुनिष्ठता और व्यक्तिपरकता
(B) प्राचीन और आधुनिक इतिहास
(C) राजनीतिक और सामाजिक इतिहास
(D) प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत

201. निम्नलिखित में से कौन 'द्वितीयक स्रोत' का सबसे उपयुक्त विवरण है?
(A) घटना के समय बनाया गया स्रोत।
(B) वह स्रोत जिसका महत्व कम है।
(C) वह स्रोत जिसका उसकी मूल भाषा से अनुवाद किया गया है।
(D) घटना के बाद बनाई गई प्राथमिक सामग्रियों की व्याख्या करने वाला स्रोत।

202. मार्क्सवादी दृष्टिकोण इतिहास को मुख्य रूप से किसके द्वारा परिभाषित चरणों की प्रगति के रूप में देखता है?
(A) उत्पादन की पद्धति
(B) प्रमुख धर्म
(C) सरकार का रूप
(D) लोगों की नस्ल

203. इतिहास लेखन की किस परंपरा में "संरक्षक शासक के प्रति कृतज्ञता" पूर्वाग्रह का एक सामान्य स्रोत थी?
(A) उत्तर-आधुनिकतावादी
(B) निम्नवर्गीय
(C) चरित परंपरा
(D) मार्क्सवादी

204. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): एक इतिहासकार को प्राथमिक स्रोतों सहित सभी स्रोतों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना चाहिए।
कारण (R): एक प्राथमिक स्रोत में अपने स्वयं के पूर्वाग्रह, त्रुटियाँ या जानबूझकर गलत जानकारी हो सकती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

205. समाज की अपने स्वयं के अतीत के प्रति समझ समय के साथ कैसे आकार लेती है और बदलती है, इसका अध्ययन किसका विषय है?
(A) राजनीतिक इतिहास
(B) इतिहास लेखन
(C) आर्थिक इतिहास
(D) पुरातत्व

206. इतिहास लेखन के संदर्भ में, "व्यापक सिद्धांत" क्या है?
(A) एक सिद्धांत जो बहुत लोकप्रिय है।
(B) एक सिद्धांत जो भौतिक रूप से बड़ा है।
(C) इतिहास के विस्तार की व्याख्या करने वाला एक सर्वव्यापी सिद्धांत।
(D) एक महान और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यक्ति के बारे में सिद्धांत।

207. निम्नलिखित में से कौन बौद्धिक इतिहास के विषय का एक उदाहरण है?
(A) प्लासी के युद्ध की सैन्य रणनीति।
(B) यूरोपीय विचार पर डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत का प्रभाव।
(C) मध्यकालीन इंग्लैंड में गेहूं की कीमत में उतार-चढ़ाव।
(D) रोमन जलसेतु की निर्माण तकनीक।

208. राष्ट्रवादी इतिहास लेखन में के.पी. जायसवाल का मुख्य योगदान क्या था?
(A) ब्रिटिश काल का उनका आर्थिक इतिहास।
(B) मुगल प्रशासन पर उनका कार्य।
(C) 'हिंदू पॉलिटी' में उनका शोध-प्रबंध जिसने रूढ़ियों के खिलाफ तर्क दिया।
(D) निम्नवर्गीय दृष्टिकोण से 1857 के विद्रोह का उनका विश्लेषण।

209. इतिहास और भूगोल के बीच सह-संबंध किसे समझने के लिए महत्वपूर्ण है:
(A) स्थानिक कारकों ने ऐतिहासिक विकास को कैसे प्रभावित किया है।
(B) समाज के दार्शनिक आधार।
(C) ऐतिहासिक वृत्तांत में साहित्यिक विषय।
(D) इतिहासकार के व्यक्तिगत पूर्वाग्रह।

210. कौन सा कथन इतिहास की प्रकृति का गलत वर्णन करता है?
(A) विज्ञान के रूप में इतिहास कार्यप्रणाली और साक्ष्य पर जोर देता है।
(B) कला के रूप में इतिहास वृत्तांत और व्याख्या पर जोर देता है।
(C) इतिहास पूर्ण, अपरिवर्तनीय सत्य प्रदान करता है जो पुनर्व्याख्या के लिए खुले नहीं हैं।
(D) दर्शन के रूप में इतिहास गहरे अर्थों और पैटर्न की खोज

करता है।

211. निम्नलिखित में से कौन इतिहास लेखन की जैन परंपरा की एक परिभाषित विशेषता है?
(A) तारीखों और कालक्रम का पूर्ण अभाव।
(B) संतों के जीवनचरित्र के भीतर एकीकृत ऐतिहासिक विवरण।
(C) विशेष रूप से उत्तर भारत के राजनीतिक इतिहास पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) फारसी का प्राथमिक भाषा के रूप में उपयोग।

212. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (ऐतिहासिक लेखन)
P. राजतरंगिणी
Q. हर्षचरित
R. अकबरनामा
S. तारीख-ए-फिरोज शाही
सूची II: (लेखक)
1. जियाउद्दीन बरनी
2. अबुल फजल
3. बाणभट्ट
4. कल्हण
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

213. पौराणिक इतिहास परंपरा की एक प्रमुख विशेषता 'वंशानुचरित' की अवधारणा है, जो संदर्भित करती है:
(A) ब्रह्मांड का वर्णन।
(B) राजवंशों का कालानुक्रमिक विवरण।
(C) सामाजिक आचरण के नियम।
(D) शासन कला का सिद्धांत।

214. इतिहास में "वस्तुनिष्ठता" का तात्पर्य है:
(A) ऐसा इतिहास लिखना जो तथ्यों से मुक्त हो।
(B) एक तटस्थ और निष्पक्ष दृष्टिकोण, व्यक्तिगत पूर्वाग्रह को कम करना।
(C) कहानी का केवल एक पक्ष प्रस्तुत करना।
(D) यह विश्वास कि सभी ऐतिहासिक स्रोत समान रूप से सत्य हैं।

215. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: भारतीय इतिहास के प्रति राष्ट्रवादी दृष्टिकोण साम्राज्यवादी इतिहासकारों के लेखन की सीधी प्रतिक्रिया थी।
कथन II: निम्नवर्गीय दृष्टिकोण साम्राज्यवादी और राष्ट्रवादी दोनों इतिहासों की कुलीनवादी होने के लिए आलोचना करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

216. मिन्हाज-उस-सिराज का ऐतिहासिक कार्य किसके इतिहास को समझने के लिए महत्वपूर्ण है?
(A) प्रारंभिक दिल्ली सल्तनत।
(B) अकबर का शासनकाल।
(C) गुप्त काल।
(D) मराठा साम्राज्य।

217. पूर्वाग्रह के कारण के रूप में "सामाजिक परिवेश" का अर्थ है कि एक इतिहासकार की व्याख्या किसके द्वारा आकार ले सकती है:
(A) उनके अपने समाज के प्रचलित सांस्कृतिक मानदंड और अनकही धारणाएं।
(B) उनके शोध के लिए उन्हें प्राप्त होने वाली धनराशि।
(C) उनके विश्वविद्यालय की भौगोलिक स्थिति।
(D) वर्तमान में सत्ताधारी राजनीतिक दल।

218. तकनीक के इतिहास, श्रम संबंधों और बाजार विकास का अध्ययन किसके अंतर्गत आता है?
(A) धार्मिक इतिहास
(B) सांस्कृतिक इतिहास
(C) आर्थिक इतिहास
(D) बौद्धिक इतिहास

219. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. शोध की शुरुआत एक प्रश्न के निर्माण से होती है।
2. इसमें स्रोतों की आलोचनात्मक जांच शामिल है।
3. अंतिम परिणाम साक्ष्यों द्वारा समर्थित वृत्तांत या विश्लेषण है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

220. इतिहास की उत्तर-आधुनिकतावादी आलोचना का प्राथमिक लक्ष्य क्या है?
(A) एक नया व्यापक वृत्तांत स्थापित करना।
(B) यह साबित करना कि अतीत का अस्तित्व नहीं था।
(C) "वस्तुनिष्ठ" वृत्तांतों को उनकी निर्मित प्रकृति को प्रकट करने के लिए विखंडित करना।
(D) इतिहास के प्रति विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक और अनुभवजन्य दृष्टिकोण को बढ़ावा देना।

221. किस आधुनिक इतिहासकार का नाम मुगल सम्राट औरंगजेब के बहु-खंडीय इतिहास से जुड़ा है?
(A) आर.जी. भंडारकर

(B) यदुनाथ सरकार
(C) के.पी. जायसवाल
(D) डी.डी. कोसंबी

222. इतिहास और साहित्य के बीच सह-संबंध मजबूत है क्योंकि दोनों विषय:
(A) अक्सर अभिव्यक्ति के प्राथमिक माध्यम के रूप में वृत्तांत का उपयोग करते हैं।
(B) विशेष रूप से काल्पनिक घटनाओं से संबंधित हैं।
(C) विज्ञान हैं जो असत्य सिद्ध की जाने वाली परिकल्पनाएँ तैयार करते हैं।
(D) विशेष रूप से सांख्यिकीय डेटा पर निर्भर करते हैं।

223. यह कहने का क्या अर्थ है कि इतिहास का एक "दायरा" है?
(A) यह उन विषयों और क्षेत्रों की श्रेणी को संदर्भित करता है जिन्हें यह विषय कवर करता है।
(B) यह टेलिस्कोप जैसे उपकरणों को संदर्भित करता है जो इतिहासकार उपयोग करते हैं।
(C) यह इतिहासकार की व्यक्तिगत राय को संदर्भित करता है।
(D) यह इतिहास की कालानुक्रमिक सीमाओं को संदर्भित करता है।

224. आर.जी. भंडारकर का कार्य आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन में किसकी ओर बदलाव का उदाहरण है:
(A) अतीत का रुमानीकरण करना।
(B) राजनीतिक प्रचार के लिए इतिहास का उपयोग करना।
(C) अधिक आलोचनात्मक, वैज्ञानिक और स्रोत-आधारित दृष्टिकोण।
(D) पश्चिमी ऐतिहासिक पद्धतियों की पूर्ण अस्वीकृति।

225. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): प्रामाणिक ऐतिहासिक शोध के लिए प्राथमिक स्रोतों का उपयोग आवश्यक है।
कारण (R): प्राथमिक स्रोत चशमदीद गवाहों के विवरण या घटना के समकालीन सामग्री हैं और इसलिए वे पूर्वाग्रह और त्रुटि से पूरी तरह मुक्त हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

226. सदियों से समाज में महिलाओं की भूमिकाओं के विकास का विश्लेषण किसमें एक प्रमुख विषय है?
(A) राजनीतिक इतिहास
(B) सामाजिक इतिहास
(C) संवैधानिक इतिहास
(D) आर्थिक इतिहास

227. 'इतिहास की चक्रीय अवधारणा' एक 'व्यापक सिद्धांत' है क्योंकि यह किसके लिए एक सार्वभौमिक पैटर्न का प्रस्ताव करती है:
(A) किसी एक राष्ट्र का इतिहास।
(B) सभी सभ्यताओं का उत्थान और पतन।
(C) किसी व्यक्ति का जीवन।
(D) ऐतिहासिक पाठ का निर्माण।

228. कौन सा लेखक अपनी कृति के साथ सही सुमेलित है?
(A) कल्हण - अकबरनामा
(B) बाणभट्ट - राजतरंगिणी
(C) तारीख-ए-फिरोज शाही - जियाउद्दीन बरनी
(D) अबुल फजल - हर्षचरित

229. भारत के राष्ट्रवादी इतिहासकारों, जैसे आर.सी. मजूमदार और के.पी. जायसवाल, ने मुख्य रूप से किसके लिए लिखा:
(A) ब्रिटिश शासन के लिए एक ऐतिहासिक औचित्य प्रदान करना।
(B) भारतीय इतिहास पर मार्क्सवादी सिद्धांत लागू करना।
(C) भारतीय राष्ट्र के विचार को विखंडित करना।
(D) राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करना और औपनिवेशिक इतिहास लेखन का मुकाबला करना।

230. इतिहास लेखन में पूर्वाग्रह का एक बड़ा कारण 'राजनीतिक वफादारी' है। यह इतिहासकार की किसके प्रति निष्ठा को संदर्भित करता है:
(A) विशिष्ट कार्यप्रणाली
(B) विश्वविद्यालय या संस्थान
(C) राष्ट्र, राजनीतिक दल या विचारधारा
(D) साहित्यिक विधा

231. इतिहास और पुरातत्व के बीच प्राथमिक अंतर यह है कि:
(A) इतिहास लिखित स्रोतों का उपयोग करता है जबकि पुरातत्व मुख्य रूप से भौतिक अवशेषों का उपयोग करता।
(B) इतिहास एक कला है जबकि पुरातत्व एक विज्ञान है।
(C) इतिहासकार अतीत का अध्ययन करते हैं, जबकि पुरातत्वविद वर्तमान का अध्ययन करते हैं।
(D) कोई अंतर नहीं है; ये शब्द परस्पर विनिमय के योग्य हैं।

232. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: इतिहास लेखन की निम्नवर्गीय विचारधारा इतिहास को आकार देने में कुलीनों की भूमिका पर केंद्रित है।
कथन II: इतिहास लेखन की मार्क्सवादी विचारधारा वर्ग संघर्ष और आर्थिक संरचनाओं के नजरिए से इतिहास का विश्लेषण करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

233. 'चरित' साहित्य, जैसे हर्षचरित, को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) कानूनों का संग्रह
(B) एक ऐतिहासिक जीवनी, जो अक्सर प्रशंसात्मक होती है
(C) एक धार्मिक ग्रंथ
(D) एक भौगोलिक सर्वेक्षण

234. ऐतिहासिक शोध में 'डेटा का चयन' करने की प्रक्रिया क्या है?
(A) शोध के लिए विषय चुनना।
(B) सभी संभव स्रोतों को इकट्ठा करना।
(C) सबसे प्रासंगिक जानकारी का मूल्यांकन करना और उसे चुनना।
(D) अंतिम निष्कर्ष लिखना।

235. प्राच्यवादी दृष्टिकोण की विशेषता क्या है?
(A) पश्चिमी लोगों द्वारा पूर्व की भाषाओं और इतिहास में विद्वतापूर्ण रुचि।
(B) पूर्वी संस्कृतियों के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया।
(C) पूर्वी दर्शकों के लिए पूर्वी विद्वानों का ऐतिहासिक लेखन।
(D) उपनिवेशवाद के एकमात्र उद्देश्य के रूप में आर्थिक शोषण पर ध्यान केंद्रित करना।

236. इस्लामी राजवंशों का व्यापक इतिहास तबकात-ए-नासिरी किसने लिखा?
(A) जियाउद्दीन बरनी
(B) अबुल फजल
(C) कल्हण
(D) मिन्हाज-उस-सिराज

237. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (शब्द)
P. व्युत्पत्ति
Q. वस्तुनिष्ठता
R. पूर्वाग्रह
S. दायरा
सूची II: (इतिहास में अवधारणा)
1. पूर्वग्रह या पक्षपात
2. कवर किए गए विषयों की श्रेणी
3. निष्पक्षता के लिए प्रयास करना
4. 'इतिहास' शब्द की उत्पत्ति
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

238. डी.डी. कोसंबी भारतीय इतिहास लेखन में किसके अग्रणी उपयोग के लिए एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं:
(A) भाषाविज्ञान और सांख्यिकी के साथ संयुक्त मार्क्सवादी ढांचा।
(B) साम्राज्यवादी ढांचा।
(C) राष्ट्रवादी ढांचा।
(D) उत्तर-आधुनिकतावादी ढांचा।

239. यह विचार कि इतिहास वर्ग संघर्ष की कहानी है, किस दृष्टिकोण के लिए केंद्रीय है?
(A) राष्ट्रवादी
(B) साम्राज्यवादी
(C) धार्मिक
(D) मार्क्सवादी

240. "साक्ष्य और उसका संचरण" वाक्यांश इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि:
(A) ऐतिहासिक साक्ष्य स्थिर है और कभी नहीं बदलता है।
(B) जिस तरह से जानकारी आगे बढ़ाई जाती है, वह इसकी सटीकता और अर्थ को प्रभावित कर सकती है।
(C) आज सभी साक्ष्य इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रेषित किए जाते हैं।
(D) ऐतिहासिक लेखन के लिए साक्ष्य महत्वपूर्ण नहीं हैं।

241. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. राजनीतिक इतिहास शासन कला, सरकार और अंतरराष्ट्रीय संबंधों से संबंधित है।
2. सामाजिक इतिहास समाजों के दैनिक जीवन, रीति-रिवाजों और संरचना से संबंधित है।
3. आर्थिक इतिहास उत्पादन, वितरण और उपभोग से संबंधित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

242. एक शासक राजवंश का आधिकारिक रूप से कमीशन किया गया इतिहास लिखने वाले इतिहासकार को विशेष रूप से पूर्वाग्रह के किस कारण से सावधान रहना होगा?
(A) धर्म का प्रभाव
(B) संरक्षक शासक के प्रति कृतज्ञता
(C) सामाजिक परिवेश
(D) उत्तर-आधुनिकतावादी विचार

243. "विचारों का इतिहास" इतिहास की एक शाखा है जो किसका पता लगाती है:
(A) राजाओं और रानियों का उत्तराधिकार।
(B) समय के साथ विशिष्ट अवधारणाओं का विकास।
(C) व्यापार मार्गों का इतिहास।
(D) सैन्य तकनीक का इतिहास।

244. कश्मीर के राजाओं के इतिहास 'राजतरंगिणी' के लेखक कौन हैं?

(A) बाणभट्ट
(B) कल्हण
(C) अबुल फजल
(D) जियाउद्दीन बरनी

245. ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता एक पेशेवर नैतिकता है जिसके लिए इतिहासकारों को इसकी आवश्यकता होती है:
(A) साक्ष्यों द्वारा समर्थित यथासंभव निष्पक्ष होना।
(B) इतिहास के बजाय कल्पना लिखना।
(C) सभी व्याख्याओं पर एक-दूसरे से सहमत होना।
(D) उनके शोध-प्रबंध का खंडन करने वाले किसी भी साक्ष्य की अनदेखी करना।

246. निम्नलिखित में से कौन इतिहास के प्रति दृष्टिकोण नहीं है?
(A) पर्यावरणीय
(B) निम्नवर्गीय
(C) प्राच्यवादी
(D) मार्क्सवादी

247. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): इतिहास का समाजशास्त्र के साथ सह-संबंध ऐतिहासिक विश्लेषण के लिए अत्यधिक फलदायी है।
कारण (R): समाजशास्त्र सामाजिक संरचना, सामाजिक परिवर्तन और संस्थानों के बारे में सैद्धांतिक अवधारणाएं प्रदान करता है जिन्हें इतिहासकार अतीत के समाजों को समझने के लिए लागू कर सकते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

248. प्राचीन भारत की "सूत" परंपरा मुख्य रूप से थी:
(A) चारणों द्वारा इतिहास सुनाने की एक मौखिक परंपरा।
(B) पुजारियों द्वारा बनाए रखी गई एक लिखित परंपरा।
(C) पत्थर पर शाही आदेशों को अंकित करने की परंपरा।
(D) दार्शनिक बहस की परंपरा।

249. प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) प्राथमिक स्रोत हमेशा सत्य और वस्तुनिष्ठ होते हैं।
(B) द्वितीयक स्रोत एक इतिहासकार के लिए किसी काम के नहीं होते हैं।
(C) एक ही दस्तावेज़ एक प्रश्न के लिए प्राथमिक और दूसरे के लिए द्वितीयक हो सकता है।
(D) ऐतिहासिक शोध में केवल प्राथमिक स्रोतों का ही उपयोग किया जाना चाहिए।

250. आर.सी. मजूमदार और के.पी. जायसवाल जैसे लेखकों का कार्य भारतीय इतिहास लेखन की किस प्रमुख विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) साम्राज्यवादी
(B) राष्ट्रवादी
(C) मार्क्सवादी
(D) निम्नवर्गीय

251. उपनिवेशकों के दृष्टिकोण से अतीत का अध्ययन, जो अक्सर औपनिवेशिक शासन को उचित ठहराने के लिए होता है, किस दृष्टिकोण की विशेषता है?
(A) साम्राज्यवादी
(B) राष्ट्रवादी
(C) मार्क्सवादी
(D) निम्नवर्गीय

252. इतिहास में शोध का मौलिक अर्थ है:
(A) तारीखों और नामों की एक सूची याद करना।
(B) साक्ष्य के आधार पर तथ्यों और सिद्धांतों की व्यवस्थित जांच।
(C) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित एक मनोरंजक कहानी बनाना।
(D) जितनी संभव हो उतनी मौजूदा इतिहास की किताबें पढ़ना।

253. निम्नलिखित में से कौन 'इतिहास की चक्रीय अवधारणा' के मूल विचार का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) इतिहास एक पूर्ण भविष्य की ओर रैखिक रूप से आगे बढ़ता है।
(B) इतिहास विकास और पतन के दोहराव वाले चरणों से होकर गुजरता है।
(C) इतिहास पूरी तरह से आर्थिक ताकतों द्वारा निर्धारित होता है।
(D) इतिहास याद्दच्छिक, असंबद्ध घटनाओं का एक संग्रह है।

254. जियाउद्दीन बरनी के ऐतिहासिक लेखन किस काल के इतिहास के प्रमुख स्रोत हैं?
(A) मौर्य साम्राज्य
(B) गुप्त साम्राज्य
(C) खिलजी और तुगलक के अधीन दिल्ली सल्तनत
(D) मुगल सम्राट अकबर का शासनकाल

255. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: इतिहास लेखन की पौराणिक परंपरा में राजाओं की वंशावली और समय की चक्रीय अवधारणा शामिल थी।
कथन II: चरित परंपरा ने संरक्षक शासकों की प्रशंसनीय जीवनियां लिखने पर ध्यान केंद्रित किया।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

256. एक इतिहासकार जो अपने "सामाजिक परिवेश" से प्रभावित है, वह अनजाने में कर सकता है:
(A) अपने स्वयं के समाज के मूल्यों और चिंताओं को अतीत पर थोपना।
(B) ऐतिहासिक दस्तावेजों की जालसाजी।
(C) केवल पुरातात्विक स्रोतों का उपयोग।
(D) द्वितीयक साहित्य से परामर्श करने से इनकार।

257. इनमें से कौन सा लेखक भारतीय इतिहास लेखन के मध्यकाल से संबंधित है?
(A) अबुल फजल
(B) बाणभट्ट
(C) कल्हण
(D) यदुनाथ सरकार

258. उत्तर-आधुनिकतावादी विचारधारा किसके विचार को चुनौती देती है:
(A) इतिहास में कालक्रम।
(B) अतीत का अस्तित्व।
(C) वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक सत्य प्राप्त करना।
(D) ऐतिहासिक शोध में स्रोतों का उपयोग।

259. 'राष्ट्रीय इतिहास' और 'विश्व इतिहास' के बीच एक मुख्य अंतर किसमें है:
(A) अध्ययन की गई समयावधि।
(B) स्रोतों की भाषा।
(C) इतिहासकार के राजनीतिक विश्वास।
(D) विश्लेषण का भौगोलिक और वैचारिक पैमाना।

260. पुरातत्व की प्राथमिक पद्धति, जो इतिहास का एक प्रमुख संबद्ध विषय है, वह है:
(A) भौतिक अवशेषों का उत्खनन और विश्लेषण
(B) पाठ्य आलोचना
(C) मौखिक साक्षात्कार
(D) सांख्यिकीय मॉडलिंग

261. इतिहास के प्रति 'धार्मिक दृष्टिकोण' ऐतिहासिक कार्य-कारण को किससे उत्पन्न मानता है:
(A) आर्थिक वर्ग संघर्ष।
(B) महान व्यक्तियों के कार्य।
(C) ईश्वरीय इच्छा या हस्तक्षेप।
(D) यादृच्छिक संयोग।

262. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पूर्वाग्रह सचेत और जानबूझकर हो सकता है।
2. पूर्वाग्रह अचेतन और अनजाने में हो सकता है।
3. सभी पूर्वाग्रहों का पूर्ण उन्मूलन एक मान्यता प्राप्त लक्ष्य है, हालांकि इसे प्राप्त करना अत्यंत कठिन है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 3
(D) 1, 2 और 3

263. राजाओं के 'चरित' या जीवनी लिखने की परंपरा किस तरह के पूर्वाग्रह का उदाहरण है?
(A) संरक्षक पर कृतज्ञता और निर्भरता से उत्पन्न पूर्वाग्रह।
(B) मार्क्सवादी विचारधारा से उत्पन्न पूर्वाग्रह।
(C) निम्नवर्गीय दृष्टिकोण से उत्पन्न पूर्वाग्रह।
(D) सत्य में उत्तर-आधुनिकतावादी अविश्वास से उत्पन्न पूर्वाग्रह।

264. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (दृष्टिकोण)
P. उत्तर-आधुनिकतावादी
Q. मार्क्सवादी
R. साम्राज्यवादी
S. राष्ट्रवादी

सूची II: (मुख्य विचार)
1. इतिहास औपनिवेशिक शासन को उचित ठहराने का एक उपकरण है।
2. इतिहास एक कथात्मक निर्माण है; व्यापक सिद्धांत संदिग्ध हैं।
3. इतिहास का उपयोग राष्ट्रीय गौरव बनाने और उपनिवेशवाद का विरोध करने के लिए किया जाता है।
4. इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

265. अपने मूल ग्रीक संदर्भ में 'हिस्टोरिया' शब्द का अर्थ था:
(A) जांच के माध्यम से प्राप्त ज्ञान
(B) एक साधारण कहानी
(C) एक दिव्य प्रेरित कहानी
(D) एक कालानुक्रमिक सूची

266. 1947 से भारतीय संसद के विकास पर केंद्रित अध्ययन किसका उदाहरण होगा?
(A) संवैधानिक इतिहास और राजनीतिक इतिहास
(B) प्राचीन इतिहास
(C) आर्थिक इतिहास
(D) धार्मिक इतिहास

267. जब कोई इतिहासकार अतीत की सामाजिक संरचनाओं, पारिवारिक जीवन और सामुदायिक संबंधों का अध्ययन करता है, तो वह किसके दायरे में काम कर रहा होता है:
(A) राजनीतिक इतिहास
(B) बौद्धिक इतिहास
(C) विचारों का इतिहास

(D) सामाजिक इतिहास

268. 19वीं शताब्दी में आर.जी. भंडारकर के लेखन महत्वपूर्ण थे क्योंकि उन्होंने बढ़ावा दिया:
(A) इतिहास के प्रति एक वैज्ञानिक और साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण।
(B) अतीत का एक रुमानी और अलोचनात्मक दृष्टिकोण।
(C) ब्रिटिश शासन का औचित्य।
(D) प्राचीन भारत की मार्क्सवादी व्याख्या।

269. इतिहास को "कला" मानने वालों का मुख्य तर्क क्या है?
(A) इसमें कल्पना, व्याख्या और वृत्तांत शामिल है।
(B) इसमें वैज्ञानिक सटीकता की आवश्यकता होती है।
(C) इसे केवल संग्रहालयों में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
(D) यह विशुद्ध रूप से काल्पनिक है।

270. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि समाज का आर्थिक आधार उसके सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक अधिरचना को निर्धारित करता है।
कारण (R): इस सिद्धांत के अनुसार, इतिहास उत्पादन के साधनों पर सामाजिक वर्गों के बीच संघर्षों द्वारा संचालित चरणों के माध्यम से आगे बढ़ता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

271. किसी प्रधानमंत्री की आत्मकथा है:
(A) प्राथमिक स्रोत
(B) द्वितीयक स्रोत
(C) तृतीयक स्रोत
(D) अनुपयोगी स्रोत

272. निम्नवर्गीय अध्ययन विचारधारा के संदर्भ में "सबाल्टर्न" शब्द का अर्थ है:
(A) अधीनस्थ पद या सामाजिक स्थिति के लोग; जनता।
(B) सत्ताधारी कुलीन वर्ग
(C) औपनिवेशिक प्रशासक
(D) बौद्धिक वर्ग

273. शुक्र (जैसा कि शुक्रनीति में है) का कार्य पारंपरिक रूप से किस क्षेत्र से जुड़ा है?
(A) शासन कला और राजनीति विज्ञान
(B) महाकाव्य कविता
(C) धार्मिक दर्शन
(D) कला इतिहास

274. यदि कोई इतिहासकार उन साक्ष्यों की अनदेखी करने का विकल्प चुनता है जो उनके शोध-प्रबंध का खंडन करते हैं, तो वे किस सिद्धांत का उल्लंघन कर रहे हैं:
(A) ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता
(B) कालानुक्रमिक क्रम
(C) कथा निर्माण
(D) इतिहास लेखन

275. प्राचीन भारतीय इतिहास के अपने अग्रणी मार्क्सवादी विश्लेषण के लिए कौन सा इतिहासकार सबसे प्रसिद्ध है?
(A) डी. डी. कोसंबी
(B) यदुनाथ सरकार
(C) आर. सी. मजूमदार
(D) के. पी. जायसवाल

276. इतिहास और समाजशास्त्र के बीच संबंध यह है कि इतिहास अक्सर प्रदान करता है:
(A) अतीत से विशिष्ट केस स्टडी और डेटा।
(B) भविष्यवाणी के लिए उपयोग किए जाने वाले सैद्धांतिक मॉडल।
(C) सार्वभौमिक नियम जो सभी सभ्यताओं पर लागू होते हैं।
(D) अस्तित्व के मौलिक दार्शनिक प्रश्न।

277. पौराणिक परंपरा प्राचीन भारतीय इतिहास के किस पहलू के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है?
(A) शाही वंशावलियाँ और राजवंशों का उत्तराधिकार।
(B) उस काल के विस्तृत आर्थिक आंकड़े।
(C) दक्षिण भारत का राजनीतिक इतिहास।
(D) समाज पर एक निम्नवर्गीय दृष्टिकोण।

278. "एक इतिहासकार को निडर और निष्पक्ष, सत्य का मित्र होना चाहिए।" यह आदर्श इतिहास लेखन में किस अवधारणा के महत्व को दर्शाता है?
(A) वस्तुनिष्ठता
(B) पूर्वाग्रह
(C) चक्रीय इतिहास
(D) निम्नवर्गीय अध्ययन

279. ऐतिहासिक दृष्टिकोणों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) निम्नवर्गीय दृष्टिकोण राजाओं और राष्ट्रपतियों के इतिहास पर केंद्रित है।
(B) साम्राज्यवादी दृष्टिकोण ने औपनिवेशिक शासन को वैध बनाने की कोशिश की।
(C) राष्ट्रवादी दृष्टिकोण ने राष्ट्र के अतीत में गर्व जगाने की कोशिश की।
(D) मार्क्सवादी दृष्टिकोण वर्ग संघर्ष और आर्थिक कारकों पर केंद्रित है।

280. इतिहासकार की "राजनीतिक वफादारी" किसके इतिहास में पूर्वाग्रह पैदा करने की सबसे अधिक संभावना है?

(A) हाल के युद्ध या राजनीतिक आंदोलन।
(B) प्राचीन मिट्टी के बर्तनों की तकनीक।
(C) गणितीय अवधारणा का विकास।
(D) पक्षियों के प्रवासन पैटर्न।

281. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (इतिहासकार)
P. रामकृष्ण गोपाल भंडारकर
Q. रमेश चंद्र मजूमदार
R. आनंद के. कुमारस्वामी
S. सतीशचंद्र मित्तल
सूची II: (योगदान / दृष्टिकोण)
1. राष्ट्रवादी इतिहासकार, "हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल" के संपादक।
2. कला इतिहासकार।
3. धर्मनिरपेक्ष वृत्तांतों को चुनौती देने वाले राष्ट्रवादी लेखक।
4. भारतीय इतिहास में वैज्ञानिक पद्धति के अग्रदूत।
कूट:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

282. ऐतिहासिक डेटा एकत्र करने की प्रक्रिया में निम्नलिखित को छोड़कर सभी शामिल हैं:
(A) किसी विशिष्ट सिद्धांत में फिट होने के लिए स्रोतों का आविष्कार करना।
(B) शोध के लिए अभिलेखागार और पुस्तकालयों का दौरा करना।
(C) पुरातात्विक कलाकृतियों और अवशेषों की जांच करना।
(D) गवाहों के साथ मौखिक इतिहास साक्षात्कार आयोजित करना।

283. 'सांस्कृतिक इतिहास' का मुख्य केंद्र किसका अध्ययन है?
(A) किसी समूह के साझा अर्थ और प्रतीक।
(B) युद्ध और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति।
(C) राष्ट्रीय शासकों का उत्तराधिकार।
(D) आर्थिक संकेतकों का इतिहास।

284. निम्नलिखित में से कौन इतिहास का 'व्यापक सिद्धांत' है?
(A) ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत
(B) उत्तर-आधुनिकतावाद
(C) निम्नवर्गीय अध्ययन
(D) प्राच्यवाद

285. इतिहास के प्रति उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण का मूल क्या है?
(A) व्यापक वृत्तांतों और सत्य के प्रति संदेह।
(B) आर्थिक नियतिवाद पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) राष्ट्रवादी उपलब्धियों का जश्न मनाना।
(D) इतिहास के लिए ईश्वरीय योजना में विश्वास।

286. जब कोई इतिहासकार किसी देश की कानूनी व्यवस्था के विकास की जांच करता है, तो वह किसके दायरे में काम कर रहा होता है:
(A) संवैधानिक इतिहास
(B) विचारों का इतिहास
(C) धार्मिक इतिहास
(D) विश्व इतिहास

287. ऐतिहासिक स्रोतों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) इतिहास लेखन के शोध के लिए एक द्वितीयक स्रोत प्राथमिक स्रोत हो सकता है।
(B) प्राथमिक स्रोत स्वाभाविक रूप से द्वितीयक स्रोत की तुलना में अधिक मूल्यवान होता है।
(C) इतिहासकार को अपने शोध में कभी भी द्वितीयक स्रोतों का उपयोग नहीं करना चाहिए।
(D) प्राथमिक स्रोत हमेशा अभिलेखागार में पाया जाने वाला एक लिखित दस्तावेज़ होता है।

288. पूर्वाग्रह के कारण के रूप में "धर्म का प्रभाव" तब प्रदर्शित होता है जब एक इतिहासकार:
(A) ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या धार्मिक श्रेष्ठता के प्रमाण के रूप में करता है।
(B) किसी धार्मिक आंदोलन का इतिहास लिखता है।
(C) काल-निर्धारण के लिए धार्मिक कैलेंडर का उपयोग करता है।
(D) समाज में धर्म की भूमिका को स्वीकार करता है।

289. निम्नलिखित में से कौन भारत में राष्ट्रवादी ऐतिहासिक दृष्टिकोण का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) औपनिवेशिक रूढ़ियों का मुकाबला करने के लिए भारत की पिछली उपलब्धियों पर जोर देना।
(B) अंग्रेजों के 'सभ्य बनाने वाले मिशन' को उचित ठहराना।
(C) किसान और आदिवासी समूहों की एजेंसी पर प्रकाश डालना।
(D) वर्ग संघर्ष के चश्मे से सभी ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण करना।

290. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जियाउद्दीन बरनी दिल्ली सल्तनत के एक इतिहासकार थे।
2. कल्हण की राजतरंगिणी कश्मीर का इतिहास है।
3. बाणभट्ट ने अपने संरक्षक की प्रशंसा में हर्षचरित लिखा था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3

(D) 1, 2 और 3

291. "इतिहास तर्क-वितर्क का विज्ञान है"। इस कथन का तात्पर्य है कि इतिहास:
(A) साक्ष्यों से तार्किक निष्कर्ष पर आधारित है।
(B) दिलचस्प कहानियों का संग्रह है।
(C) विशुद्ध रूप से व्यक्तिपरक है।
(D) निश्चितता के साथ भविष्य की भविष्यवाणी कर सकता है।

292. "सूत परंपरा" के बारे में लिखने वाला इतिहासकार किस पर चर्चा कर रहा होगा:
(A) बौद्ध लेखकों के मठवासी वृत्तांत।
(B) मुगल साम्राज्य के आधिकारिक दरबारी रिकॉर्ड।
(C) मौखिक इतिहास के चारण और सारथी।
(D) 20वीं सदी का वैज्ञानिक इतिहास लेखन।

293. ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की समस्या इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि इतिहासकार:
(A) अपने व्यक्तिगत मूल्यों और संदर्भ से पूरी तरह अलग नहीं हो सकता।
(B) के पास पर्याप्त स्रोत नहीं हैं।
(C) को पर्याप्त भुगतान नहीं किया जाता है।
(D) ऐसी भाषा में लिखता है जो वैज्ञानिक नहीं है।

294. ऐतिहासिक शोध में 'प्राथमिक स्रोत' की सबसे अच्छी परिभाषा क्या है?
(A) किसी घटना के साक्षी द्वारा बनाया गया स्रोत।
(B) शोध पत्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्रोत।
(C) विश्वकोश में पाया गया ऐतिहासिक घटनाओं का सारांश।
(D) किसी प्रसिद्ध इतिहासकार द्वारा लिखी गई पाठ्यपुस्तक।

295. निम्नलिखित में से कौन सा ऐतिहासिक दृष्टिकोण को उसके मुख्य सरोकार के साथ सही ढंग से जोड़ता है?
(A) निम्नवर्गीय - हाशिए पर रहने वालों का इतिहास
(B) राष्ट्रवादी - वर्ग संघर्ष
(C) मार्क्सवादी - उपनिवेशवाद का औचित्य
(D) साम्राज्यवादी - वृत्तांतों का विखंडन

296. एक इतिहासकार का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए:
(A) एक सुविचारित, साक्ष्य-आधारित विवरण प्रदान करना।
(B) पहले से तय राजनीतिक बिंदु को सिद्ध करना।
(C) एक मनोरंजक वृत्तांत बनाना।
(D) समाज के सार्वभौमिक नियमों की खोज करना।

297. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): राजनीति और युद्ध पर अपने पारंपरिक ध्यान से इतिहास का दायरा काफी विस्तृत हो गया है।
कारण (R): आधुनिक इतिहासकार अब अतीत के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक पहलुओं का अध्ययन करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

298. इनमें से कौन सा "इतिहास का राजनीति के साथ सह-संबंध" का एक उदाहरण है?
(A) यह अध्ययन करना कि अतीत के राजनीतिक सिद्धांतों ने संरचनाओं को कैसे आकार दिया है।
(B) यह अध्ययन करना कि भूगोल ने युद्ध के स्थान को कैसे प्रभावित किया।
(C) यह अध्ययन करना कि साहित्यिक विषय सामाजिक चिंताओं को कैसे दर्शाते हैं।
(D) यह अध्ययन करना कि आर्थिक मंदी जन्म दर को कैसे प्रभावित करती है।

299. निम्नलिखित ऐतिहासिक हस्तियों को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें।
1. मिन्हाज-उस-सिराज
2. बाणभट्ट
3. रामकृष्ण गोपाल भंडारकर
4. अबुल फजल
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 3, 4, 1, 2

300. 'इतिहास की चक्रीय अवधारणा' और 'ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत' के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) चक्रीय सिद्धांत इतिहास को दोहराव के रूप में देखता है, जबकि भौतिकवाद इसे प्रगतिशील के रूप में देखता है।
(B) चक्रीय सिद्धांत मार्क्सवादी है, जबकि भौतिकवाद नहीं है।
(C) चक्रीय सिद्धांत महान पुरुषों पर केंद्रित है, जबकि भौतिकवाद विचारों पर केंद्रित है।
(D) दोनों सिद्धांतों के बीच कोई अंतर नहीं है।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) यह ग्रीक शब्द 'हिस्टोरिया' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'अन्वेषण' या 'पूछताछ'।
इतिहास शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के 'हिस्टोरिया' शब्द से हुई है। इसका शाब्दिक अर्थ व्यवस्थित अन्वेषण से प्राप्त ज्ञान है। हेरोडोटस जैसे विद्वानों ने इस शब्द का प्रयोग अतीत की घटनाओं की खोज हेतु किया था। यह केवल कहानियों का संग्रह नहीं है, बल्कि सत्य तक पहुँचने की एक तार्किक और बौद्धिक प्रक्रिया को दर्शाता है।

2. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
इतिहास की प्रकृति बहुआयामी है जिसे विज्ञान और कला दोनों श्रेणियों में रखा जाता है। विज्ञान के रूप में यह साक्ष्यों के विश्लेषण और वस्तुनिष्ठ सत्य की खोज पर निर्भर करता है। वहीं, कला के रूप में यह इतिहासकार की व्याख्यात्मक शक्ति और अतीत के जीवंत पुनर्निर्माण की क्षमता पर बल देता है। ये दोनों दृष्टिकोण मिलकर इतिहास लेखन को पूर्णता प्रदान करते हैं।

3. (C) भविष्य विज्ञान
इतिहास मुख्य रूप से मानवीय अतीत और वर्तमान के संबंधों का अध्ययन करता है। इसके प्रमुख क्षेत्रों में विचारों का विकास और संवैधानिक व्यवस्थाओं का अध्ययन शामिल है। भविष्य विज्ञान आने वाली संभावनाओं के आकलन से संबंधित है, इसलिए इसे इतिहास का प्राथमिक उप-क्षेत्र नहीं माना जाता। इतिहास अतीत के तथ्यों पर आधारित होता है जबकि भविष्य विज्ञान केवल अनुमानों पर निर्भर है।

4. (D) इतिहासकार की अंतर्निहित व्यक्तिपरकता और उनका व्यक्तिगत संदर्भ।
ऐतिहासिक लेखन में पूर्ण वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना एक कठिन चुनौती है। इसका मुख्य कारण यह है कि प्रत्येक इतिहासकार का अपना विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवेश होता है। जब इतिहासकार अतीत की घटनाओं का विश्लेषण करता है, तो उसके व्यक्तिगत विश्वास और वर्तमान संदर्भ व्याख्या को प्रभावित करते हैं। यह व्यक्तिपरकता तथ्यों के चयन और उनके अर्थ निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

5. (C) एक संरक्षक शासक के प्रति इतिहासकार की कृतज्ञता
इतिहास लेखन में पूर्वाग्रह का एक प्रमुख कारण संरक्षक और इतिहासकार का संबंध है। मध्यकालीन और प्राचीन काल में अनेक इतिहासकार राजकीय संरक्षण में कार्य करते थे। अपने आश्रयदाता को प्रसन्न करने की इच्छा के कारण इतिहासकार अक्सर उनकी विफलताओं को छिपाते थे और सफलताओं का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करते थे। इससे ऐतिहासिक विवरणों में निष्पक्षता कम हो जाती है और लेखक का दृष्टिकोण एकतरफा हो जाता है।

6. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
इतिहास का अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ घनिष्ठ संबंध है। पुरातत्व भौतिक अवशेषों से लुप्त सभ्यताओं का पुनर्निर्माण करता है, जबकि समाजशास्त्र सामाजिक परिवर्तनों की जाँच करता है। अर्थशास्त्र अतीत की उत्पादन प्रणालियों का विश्लेषण करता है, वहीं राजनीति विज्ञान शक्ति संघर्ष और शासन कला का अध्ययन करता है। ये सभी विषय मिलकर इतिहास लेखन को एक व्यापक और विश्वसनीय आधार प्रदान करते हैं।

7. (D) प्राथमिक स्रोत घटना के समकालीन होते हैं, जबकि द्वितीयक स्रोत उनकी व्याख्याएं होते हैं।
ऐतिहासिक शोध में स्रोतों का वर्गीकरण उनके कालक्रम पर आधारित है। प्राथमिक स्रोत सीधे उस समय से जुड़े होते हैं जब घटना घटित हुई थी, जैसे शिलालेख या सिक्के। इसके विपरीत, द्वितीयक स्रोत वे कार्य हैं जो बाद के समय में प्राथमिक स्रोतों का विश्लेषण करके तैयार किए जाते हैं। प्राथमिक स्रोत कच्चे माल की तरह हैं, जबकि द्वितीयक स्रोत इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत निष्कर्ष हैं।

8. (A) साम्राज्यवादी दृष्टिकोण
भारत में राष्ट्रवादी इतिहास लेखन का उदय साम्राज्यवादी लेखकों के प्रति उत्तर के रूप में हुआ था। साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने प्रायः भारतीय संस्कृति को पिछड़ा और भारतीय समाज को शासन के अयोग्य चित्रित किया था। इसके विरोध में राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने प्राचीन भारतीय गौरव और सांस्कृतिक उपलब्धियों को उजागर किया। उनका उद्देश्य औपनिवेशिक हीनता को समाप्त करना और भारतीयों में राष्ट्रीय गौरव की भावना सुदृढ़ करना था।

9. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
इतिहास की चक्रीय अवधारणा मानती है कि सभ्यताएं उत्थान और पतन के निश्चित चक्रों से गुजरती हैं। इसके विपरीत, रैखिक अवधारणा समय को निरंतर प्रगति की ओर बढ़ती एक सीधी रेखा के रूप में देखती है। चूँकि चक्रीय दृष्टिकोण दोहराव पर बल देता है और रैखिक दृष्टिकोण निरंतर विकास पर, इसलिए ये दोनों सिद्धांत परस्पर विरोधी माने जाते हैं। प्राचीन दर्शन में चक्रीय विचार अत्यंत लोकप्रिय रहा है।

10. (A) राजाओं और राजवंशों की वंशावली सूची
भारतीय इतिहास लेखन की पौराणिक परंपरा के पाँच प्रमुख अंग हैं, जिनमें 'वंशानुचरित' अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह भाग विभिन्न ऋषियों और राजाओं की विस्तृत वंशावलियों का विवरण प्रदान करता है। पुराणों की ये सूचियाँ प्राचीन भारतीय राजनीतिक इतिहास के विकास को समझने के लिए आधारभूत साक्ष्य मानी जाती हैं। यद्यपि इनमें धार्मिक अंश अधिक हैं,

फिर भी ऐतिहासिक निरंतरता और शाही उत्तराधिकार के लिए इनकी उपयोगिता सर्वोपरि है।

11. (D) राजाओं और संरक्षकों की प्रशंसात्मक जीवनियां।
प्राचीन भारत में 'चरित' साहित्य इतिहास लेखन की विशिष्ट विधा थी, जिसमें किसी राजा या नायक की उपलब्धियों का वर्णन होता था। ये रचनाएँ प्रायः राजदरबार के कवियों द्वारा अपने संरक्षकों के सम्मान में लिखी जाती थीं। इनमें ऐतिहासिक तथ्यों के साथ साहित्यिक अलंकरण का सम्मिश्रण होता था। बाणभट्ट रचित 'हर्षचरित' इसका प्रसिद्ध उदाहरण है, जो तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक परिवेश पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है।

12. (D) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
ऐतिहासिक शोध में तथ्यों का संग्रह और चयन दोनों अनिवार्य चरण हैं। संग्रह के दौरान शोधकर्ता सभी संभावित प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों को एकत्र करता है ताकि अध्ययन का दायरा व्यापक हो सके। इसके पश्चात, तथ्यों के चयन में गहन आलोचनात्मक प्रक्रिया अपनाई जाती है, जहाँ केवल विश्वसनीय और प्रासंगिक जानकारी चुनी जाती है। यह चयनात्मक प्रक्रिया ही ऐतिहासिक निष्कर्षों की वैज्ञानिकता और तार्किकता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है।

13. (C) शुक्र
प्राचीन भारतीय वास्तुकला और राजनीति के क्षेत्र में 'शुक्रनीति' एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस कृति में शासन कला, कूटनीति और राज्य प्रबंधन के सिद्धांतों का समावेश है। यह ग्रंथ तत्कालीन राजनीतिक दर्शन को स्पष्ट करता है और इतिहास के व्यावहारिक महत्व पर चर्चा करता है। शुक्र जैसे लेखकों ने शासन की सफलता के लिए अतीत के अनुभवों और ऐतिहासिक ज्ञान की अनिवार्यता पर विशेष बल दिया है।

14. (D) मार्क्सवादी
ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत कार्ल मार्क्स के विचारों पर आधारित है और यह मार्क्सवादी इतिहास लेखन का आधार है। यह दृष्टिकोण मानता है कि समाज का आर्थिक ढांचा मानवीय इतिहास के विकास की मुख्य चालक शक्ति है। इसके अनुसार, इतिहास विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच होने वाले निरंतर संघर्ष का परिणाम है। यह सिद्धांत महान व्यक्तियों के कार्यों के बजाय भौतिक और आर्थिक कारकों को प्राथमिकता देता है।

15. (A) केवल 2
इतिहास में वस्तुनिष्ठता का अर्थ साक्ष्यों के प्रति ईमानदार रहते हुए निष्पक्ष विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इसकी आवश्यकता इसलिए है ताकि इतिहास को एक विश्वसनीय और वैज्ञानिक शैक्षणिक विषय के रूप में मान्यता मिल सके। पूर्ण वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना एक आदर्श लक्ष्य है जिसे पाना कठिन है, क्योंकि इतिहासकार की पृष्ठभूमि हस्तक्षेप कर सकती है। अतः केवल प्रशिक्षित होने मात्र से वस्तुनिष्ठता स्वतः प्राप्त नहीं हो जाती।

16. (B) तारीख-ए-फिरोज शाही
जियाउद्दीन बरनी दिल्ली सल्तनत काल के एक अत्यंत प्रभावशाली इतिहासकार थे। उनकी सुप्रसिद्ध कृति 'तारीख-ए-फिरोज शाही' मध्यकालीन भारतीय इतिहास को समझने का प्रमुख प्राथमिक स्रोत है। इस ग्रंथ में बरनी ने गयासुद्दीन बलवन से लेकर फिरोज शाह तुगलक के प्रारंभिक शासनकाल तक का विस्तृत विवरण दिया है। उन्होंने अपने लेखन में शासकों को उचित परामर्श देने के उद्देश्य से ऐतिहासिक घटनाओं का गंभीर विश्लेषण किया है।

17. (B) अबुल फजल की अकबरनामा।
मुगल काल के अध्ययन के लिए प्राथमिक स्रोत वे सामग्रियां हैं जो उसी युग में निर्मित हुई थीं। अबुल फजल द्वारा रचित 'अकबरनामा' सम्राट अकबर के शासनकाल का समकालीन वृत्तांत है, जो प्रत्यक्ष अवलोकन और आधिकारिक अभिलेखों पर आधारित है। अन्य विकल्प द्वितीयक स्रोत कहलाते हैं क्योंकि वे बाद में लिखे गए विश्लेषण हैं। यह ग्रंथ तत्कालीन प्रशासन और सामाजिक-आर्थिक नीतियों की प्रामाणिक जानकारी प्रदान करता है।

18. (A) निम्नवर्गीय
निम्नवर्गीय दृष्टिकोण इतिहास लेखन की वह विचारधारा है जो समाज के सबसे निचले और उपेक्षित वर्गों पर ध्यान केंद्रित करती है। यह पारंपरिक इतिहास की आलोचना करता है क्योंकि वह केवल शासक वर्गों तक सीमित रहता था। निम्नवर्गीय इतिहासकार किसानों, मजदूरों और आदिवासियों की सक्रिय भूमिका को उजागर करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य इतिहास को समावेशी बनाना और उन आवाजों को स्थान देना है जिन्हें अक्सर दबा दिया गया था।

19. (C) साहित्यिक स्रोत हमेशा तथ्यात्मक रूप से सटीक होते हैं और उनका उपयोग आलोचनात्मक मूल्यांकन के बिना किया जा सकता है।
इतिहास और साहित्य का संबंध अत्यंत गहरा है, जहाँ साहित्य समाज के सांस्कृतिक मूल्यों के दर्पण के रूप में कार्य करता है। हालांकि, साहित्य को ऐतिहासिक तथ्य के रूप में उपयोग करते समय सावधानी आवश्यक है। साहित्यकार अक्सर कल्पना और अतिशयोक्ति का प्रयोग करते हैं, जिससे उनके विवरण हमेशा सटीक नहीं होते। इसलिए, किसी भी साहित्यिक कृति को साक्ष्य मानने से पहले उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन और सत्यापन अनिवार्य है।

20. (D) 1, 2, 3, 4
आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन में इन विद्वानों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। रामकृष्ण गोपाल भंडारकर ने उन्नीसवीं सदी में वैज्ञानिक शोध की नींव रखी। उनके बाद काशी प्रसाद जायसवाल ने प्राचीन भारतीय राजनीति पर कार्य किया। रमेश चंद्र मजूमदार ने भारतीय इतिहास के बहु-खंडीय संकलन का संपादन किया। सतीशचंद्र मित्तल समकालीन इतिहासकारों में शामिल हैं। यह क्रम भारत में ऐतिहासिक शोध पद्धतियों के विकास को स्पष्ट करता है।

21. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
साम्राज्यवादी इतिहास लेखन ने जानबूझकर भारत को एक स्थिर और निरंकुश शासन वाली भूमि के रूप में चित्रित किया। इस नकारात्मक चित्रण का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को नैतिक वैधता प्रदान करना था। उन्होंने तर्क दिया कि भारतीय स्वयं शासन करने में अक्षम थे और ब्रिटिश शासन भारत को आधुनिक बनाने वाला एक महत्वपूर्ण अभियान था। इस प्रकार, ऐतिहासिक वृत्तांतों का उपयोग राजनीतिक प्रभुत्व हेतु किया गया।

22. (B) चारण कथावाचकों की परंपरा जिन्होंने वंशावली और ऐतिहासिक उपाख्यानों को संरक्षित किया।
प्राचीन भारत में 'सूत परंपरा' ऐतिहासिक स्मृतियों को सुरक्षित रखने का एक महत्वपूर्ण मौखिक माध्यम थी। सूत वे पेशेवर चारण होते थे जो राजदरबारों में राजाओं की वंशावलियों और ऐतिहासिक उपाख्यानों का पाठ करते थे। यह परंपरा लिखित इतिहास के अभाव में अतीत की महत्वपूर्ण जानकारी को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करती थी। पुराणों के निर्माण में भी इस मौखिक परंपरा का योगदान है।

23. (D) यदुनाथ सरकार
सर यदुनाथ सरकार भारत के अत्यंत प्रतिष्ठित आधुनिक इतिहासकार थे, जिन्हें मध्यकालीन भारतीय इतिहास और औरंगजेब के शासनकाल पर उनके विद्वतापूर्ण कार्य के लिए जाना जाता है। उन्होंने ऐतिहासिक शोध में प्राथमिक स्रोतों के कठोर विश्लेषण और वैज्ञानिक कार्यप्रणाली पर बल दिया। यदुनाथ सरकार ने भारतीय संदर्भ में आधुनिक शोध पद्धतियों का उपयोग करते हुए इतिहास लेखन की एक नई और विश्वसनीय परंपरा स्थापित करने में भूमिका निभाई।

24. (A) कार्यप्रणाली और वस्तुनिष्ठता बनाम वृत्तांत और व्याख्या की भूमिका।
इतिहास की प्रकृति पर बहस मुख्य रूप से इसके वैज्ञानिक और कलात्मक पक्षों के संतुलन पर केंद्रित है। इसे विज्ञान मानने वाले विद्वान साक्ष्यों के संकलन में कठोर वैज्ञानिक पद्धति और पूर्ण वस्तुनिष्ठता की मांग करते हैं। दूसरी ओर, इसे कला मानने वाले लोग इस बात पर बल देते हैं कि इतिहास में इतिहासकार द्वारा की गई व्याख्या और रोचक वृत्तांत का होना अनिवार्य है। यह विषय की प्रामाणिकता दर्शाता है।

25. (C) व्यापक सिद्धांतों के प्रति संदेह और विखंडन पर ध्यान केंद्रित करना।
उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण इतिहास के सार्वभौमिक नियमों और 'पूर्ण सत्य' के प्रति गहरा संदेह व्यक्त करता है। यह विचारधारा मानती है कि कोई भी ऐतिहासिक वृत्तांत पूरी तरह निष्पक्ष नहीं हो सकता, क्योंकि वह भाषा और सत्ता की संरचनाओं द्वारा निर्मित होता है। यह दृष्टिकोण व्यापक सिद्धांतों के स्थान पर स्थानीय अनुभवों और विभिन्न व्याख्याओं पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके अनुसार, इतिहास को अनेक दृष्टिकोणों के रूप में देखा जाना चाहिए।

26. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारतीय इतिहास के इन सुप्रसिद्ध लेखकों ने अपने ग्रंथों के माध्यम से विभिन्न युगों की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है। कल्हण की 'राजतरंगिणी' कश्मीर के इतिहास का विवरण है, जबकि अबुल फजल की 'अकबरनामा' मुगल प्रशासन का आधार है। बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' में सम्राट हर्ष की जीवनी लिखी, और जियाउद्दीन बरनी ने दिल्ली सल्तनत का विवरण दिया। ये सभी कृतियाँ आज भी इतिहासकारों के लिए प्राथमिक स्रोत हैं।

27. (D) समाज की पूर्ण सामाजिक संरचना।
सिक्कों का अध्ययन, जिसे मुद्राशास्त्र कहा जाता है, इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक होता है। ये सिक्के तत्कालीन आर्थिक स्थिति, व्यापारिक संबंधों और धातुकर्म की तकनीक पर प्रकाश डालते हैं। इनके वितरण क्षेत्र से राज्य की सीमाओं का अनुमान लगाया जा सकता है और शासकों की धार्मिक मान्यताओं की जानकारी मिलती है। हालांकि, सिक्के समाज की संपूर्ण सामाजिक संरचना और निम्न वर्गों के दैनिक जीवन की पूरी जानकारी नहीं देते।

28. (B) वह तरीका जिससे स्रोतों और विवरणों के माध्यम से ऐतिहासिक जानकारी परिवर्तित होती है।
ऐतिहासिक शोध में "साक्ष्य और उसका संचरण" एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसका तात्पर्य उस माध्यम से है जिसके द्वारा ऐतिहासिक सूचनाएं मूल स्रोत से लेकर इतिहासकार के निष्कर्षों तक पहुँचती हैं। इस यात्रा के दौरान सूचनाओं का संपादन और पुनर्व्याख्या होती है, जिससे मूल अर्थ में बदलाव की संभावना रहती है। इतिहासकार के लिए यह समझना अनिवार्य है कि इस प्रक्रिया ने साक्ष्य की प्रमाणिकता को किस प्रकार प्रभावित किया है।

29. (C) इतिहासकार एक निष्पक्ष, साक्ष्य-समर्थित और संतुलित विवरण के लिए प्रयास करता है।
ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता का अर्थ है कि इतिहासकार को व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और भावनाओं को किनारे रखकर उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर तथ्य प्रस्तुत करने चाहिए। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ लेखक किसी घटना के सभी पक्षों का संतुलित और निष्पक्ष विश्लेषण करने का प्रयास करता है। हालांकि पूर्ण वस्तुनिष्ठता कठिन है, फिर भी एक ईमानदार इतिहासकार का लक्ष्य हमेशा एक तर्कसंगत और सत्यापन योग्य विवरण तैयार करना होता है।

30. (D) स्वतंत्रता या न्याय जैसी अमूर्त अवधारणाओं का विकास।
विचारों का इतिहास लिखने वाला इतिहासकार मानव समाज की वैचारिक प्रगति पर ध्यान केंद्रित करता है। उसका मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि स्वतंत्रता, न्याय और समानता जैसी अमूर्त अवधारणाएं समय के साथ कैसे विकसित हुईं। वह केवल भौतिक घटनाओं का वर्णन नहीं करता, बल्कि उन बौद्धिक प्रेरणाओं की खोज करता है जिन्होंने बड़े सामाजिक आंदोलनों को जन्म दिया। यह शाखा मानवीय चेतना के क्रमिक विकास का विश्लेषण करती है।

31. (B) केवल 2 और 3
बौद्ध और जैन परंपराओं ने भारतीय इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जैन विद्वानों ने अपने तीर्थंकरों और संतों के जीवनचरित्रों के माध्यम से बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्री संकलित की है। दोनों परंपराओं की विशेषता यह है कि उन्होंने ऐतिहासिक वृत्तांतों को अपने नैतिक सिद्धांतों के साथ गहराई से जोड़ा है। यद्यपि बौद्ध वृत्तांतों में राजनीतिक जानकारी मिलती है, लेकिन उनका प्राथमिक केंद्र धर्म का प्रसार और संघ की व्यवस्था थी।

32. (B) भारत की शास्त्रीय भाषाओं और प्राचीन ग्रंथों का विद्वतापूर्ण अध्ययन।
भारतीय इतिहास के प्रति प्राच्यवादी दृष्टिकोण मुख्य रूप से अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के यूरोपीय विद्वानों द्वारा विकसित किया गया था। सर विलियम जोन्स जैसे विद्वानों ने संस्कृत और प्राचीन ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। उनकी रुचि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को समझने में थी। हालांकि उनके कार्यों का उपयोग औपनिवेशिक प्रशासन हेतु किया गया, लेकिन उनका प्राथमिक योगदान भारतीय प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद और उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करना था।

33. (B) धर्मानंद कोसंबी - विशेष रूप से आधुनिक भारतीय राजनीतिक इतिहास पर केंद्रित।
धर्मानंद कोसंबी के बारे में दिया गया युग्म गलत है क्योंकि वे मुख्य रूप से एक महान पालि विद्वान और बौद्ध धर्म के विशेषज्ञ थे। दूसरी ओर, रामकृष्ण गोपाल भंडारकर ने वैज्ञानिक शोध पद्धति की शुरुआत की और यदुनाथ सरकार मुगल काल के अग्रणी विद्वान रहे। काशी प्रसाद जायसवाल ने 'हिंदू पॉलिटी' के माध्यम से प्राचीन भारतीय गणराज्यों के अस्तित्व को सिद्ध किया। कोसंबी का कार्य मुख्य रूप से प्राचीन संस्कृति से संबंधित है।

34. (A) इतिहास उत्पादन के साधनों पर आधारित वर्ग संघर्षों के माध्यम से आगे बढ़ता है।
ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत कार्ल मार्क्स द्वारा विकसित किया गया है और यह मार्क्सवादी इतिहास लेखन का मुख्य स्तंभ है। इसका मूल तर्क यह है कि समाज की आर्थिक स्थितियाँ ही मानवीय इतिहास के विकास की चालक शक्ति हैं। इसके अनुसार, इतिहास विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच होने वाले निरंतर संघर्ष और भौतिक परिस्थितियों के परिवर्तन का परिणाम है। यह सिद्धांत महान व्यक्तियों के बजाय आर्थिक कारकों को प्राथमिकता देता है।

35. (C) लेखक के पंथ या धर्म का पक्ष लेने वाला एक वृत्तांत।
इतिहास लेखन में धर्म का प्रभाव अक्सर पूर्वाग्रह का स्रोत बन जाता है। जब कोई इतिहासकार अपने विशिष्ट धार्मिक विश्वासों के प्रति अत्यधिक निष्ठा रखता है, तो वह अनजाने में अपने धर्म की घटनाओं को श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास कर सकता है। ऐसे वृत्तांतों में अन्य धर्मों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई दे सकता है। यह धार्मिक उत्साह तथ्यों के निष्पक्ष विश्लेषण में बाधा डालता है और ऐतिहासिक सत्य को प्रभावित करता है।

36. (D) संवैधानिक इतिहास
संवैधानिक इतिहास ऐतिहासिक अध्ययन की वह शाखा है जो किसी देश के कानूनी ढांचे और शासन प्रणालियों के विकास पर ध्यान केंद्रित करती है। इसमें विश्लेषण किया जाता है कि समय के साथ राज्य और नागरिकों के बीच संबंध कैसे विकसित हुए और शासन की शक्तियाँ किन नियमों से संचालित हुईं। यह केवल नियमों का संग्रह नहीं है, बल्कि राजनीतिक संस्थाओं के क्रमिक विकास और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना को समझना है।

37. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
बाणभट्ट रचित 'हर्षचरित' भारतीय इतिहास लेखन की 'चरित' विधा का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें राजा हर्ष के जीवन का वर्णन है। हालांकि, इसे पूरी तरह आलोचनात्मक विवरण नहीं माना जा सकता। चूँकि बाणभट्ट राजदरबारी कवि थे, उनके लेखन में अपने संरक्षक के प्रति अत्यधिक प्रशंसा और अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इसलिए, प्रथम कथन सत्य है जबकि द्वितीय कथन ऐतिहासिक निष्पक्षता के अभाव में गलत है।

38. (B) साम्राज्यवादी
साम्राज्यवादी इतिहास लेखन का मुख्य उद्देश्य औपनिवेशिक प्रभुत्व को सही ठहराना और उसे नैतिक आधार प्रदान करना था। इस दृष्टिकोण को अपनाने वाले इतिहासकार अक्सर शक्ति संबंधों का विश्लेषण इस तरह करते थे जिससे ब्रिटिश शासन एक कल्याणकारी शक्ति के रूप में दिखाई दे। वे औपनिवेशिक विस्तार को भारत की प्रगति के लिए आवश्यक बताते थे। उनके विश्लेषण में स्वदेशी संस्थाओं की आलोचना और औपनिवेशिक प्रशासन की प्रशंसा प्रमुख होती थी।

39. (D) समाजशास्त्र सामाजिक संरचनाओं के विश्लेषण के लिए एक ढांचा प्रदान करता है।
इतिहास और समाजशास्त्र के बीच संबंध दोनों विषयों को समृद्ध बनाता है। समाजशास्त्र विभिन्न सामाजिक संरचनाओं और संस्थागत परिवर्तनों को समझने के लिए आवश्यक विश्लेषणात्मक ढांचा प्रदान करता है। इतिहासकार इन समाजशास्त्रीय अवधारणाओं का उपयोग करके अतीत के समाजों का अधिक गहराई से विश्लेषण कर सकते हैं। यह दृष्टिकोण ऐतिहासिक घटनाओं के पीछे छिपे सामाजिक कारणों को उजागर करने में मदद करता है, जिससे केवल तथ्यों के बजाय प्रक्रियाओं की समझ विकसित होती है।

40. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ऐतिहासिक शोध में तथ्यों का चयन एक अनिवार्य प्रक्रिया है। इतिहासकार के पास स्रोतों का एक विशाल भंडार होता है, लेकिन एक शोध कार्य में हर जानकारी को शामिल करना संभव नहीं है। इसलिए, इतिहासकार को शोध प्रश्न की प्रासंगिकता और तथ्यों की विश्वसनीयता के आधार पर चुनाव करना पड़ता है। यह चयनात्मकता ही एक सुसंगत ऐतिहासिक वृत्तांत के निर्माण में सहायक होती है, जो बिखरे हुए तथ्यों को रूप प्रदान करती है।

41. (C) प्रारंभिक दिल्ली सल्तनत
मिन्हाज-उस-सिराज तेरहवीं शताब्दी के प्रमुख इतिहासकार थे जिनकी सुप्रसिद्ध कृति 'तबकात-ए-नासिरी' है। इस ग्रंथ में मुख्य रूप से प्रारंभिक दिल्ली सल्तनत और विशेष रूप से सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद के शासनकाल का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह पुस्तक भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना के बारे में जानकारी देती है और मध्य एशिया के इतिहास पर भी प्रकाश डालती है। इसे सल्तनत काल के राजनीतिक इतिहास का विश्वसनीय स्रोत माना जाता है।

42. (A) बौद्धिक इतिहास संदर्भ में विचारकों पर ध्यान केंद्रित करता है, विचारों का इतिहास अवधारणाओं का पता लगाता है।
बौद्धिक इतिहास और विचारों का इतिहास दोनों वैचारिक विकास का अध्ययन करते हैं, लेकिन उनके दृष्टिकोण में अंतर है। विचारों का इतिहास मुख्य रूप से स्वतंत्रता या न्याय जैसी अमूर्त अवधारणाओं के क्रमिक विकास पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके विपरीत, बौद्धिक इतिहास उन विचारकों और उन परिस्थितियों का अध्ययन करता है जिनके बीच वे विचार उत्पन्न हुए। एक क्षेत्र विचारों की यात्रा पर केंद्रित है, तो दूसरा उन मस्तिष्कों पर।

43. (D) डेटा के विशाल सागर से विशिष्ट तथ्यों के चयन की समस्या।
इतिहास में वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने में बड़ी चुनौती उपलब्ध आँकड़ों में से प्रासंगिक तथ्यों का चयन करना है। जब कोई इतिहासकार शोध करता है, तो उसके सामने स्रोतों की विशाल मात्रा होती है। किस तथ्य को महत्वपूर्ण मानकर शामिल करना है, यह निर्णय इतिहासकार की अपनी समझ पर निर्भर करता है। यह चयनात्मक प्रक्रिया ही अनजाने में पूर्वाग्रह ला सकती है, क्योंकि तथ्यों का चुनाव अक्सर इतिहासकार के वैचारिक झुकाव से प्रभावित होता है।

44. (B) औपनिवेशिक प्रशासन का दृष्टिकोण
यदि कोई इतिहासकार 1857 के विद्रोह के अध्ययन के लिए केवल आधिकारिक ब्रिटिश रिपोर्टों पर निर्भर है, तो उसका कार्य अनिवार्य रूप से औपनिवेशिक पूर्वाग्रह से प्रभावित होगा। ऐसे स्रोतों में विद्रोह को अक्सर केवल एक अराजकता के रूप में देखा जाता है, जहाँ भारतीयों की भावनाओं को नजरअंदाज किया जा सकता है। एक निष्पक्ष विवरण के लिए भारतीय स्रोतों का विश्लेषण भी आवश्यक है, अन्यथा वह केवल शासन का एकपक्षीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करेगा।

45. (C) 2, 1, 4, 3
भारत में इतिहास लेखन की परंपराओं का विकास प्राचीन काल से आधुनिक युग तक हुआ है। सबसे पहले पौराणिक परंपरा आई, इसके बाद राजाओं की जीवनियों पर आधारित 'चरित' परंपरा विकसित हुई। मध्यकाल में दिल्ली सल्तनत के साथ फारसी इतिहास लेखन की शुरुआत हुई, जिसमें कालक्रम पर अधिक ध्यान दिया गया। अंततः, उन्नीसवीं सदी में आधुनिक वैज्ञानिक इतिहास लेखन का उदय हुआ। यह क्रम ऐतिहासिक चेतना के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

46. (D) ऐतिहासिक जांच की कठोर, साक्ष्य-आधारित कार्यप्रणाली।
"इतिहास एक विज्ञान है, न कम, न ज्यादा" यह प्रसिद्ध कथन जे.बी. ब्युरी का है। यह सूक्ति इतिहास के प्रति एक अत्यंत आधुनिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। इसका अर्थ है कि इतिहास लेखन केवल कहानी सुनाने की कला नहीं है, बल्कि यह ठोस साक्ष्यों और तथ्यों के निष्पक्ष विश्लेषण पर आधारित होना चाहिए। यह दृष्टिकोण इतिहासकार को व्यक्तिगत कल्पना के बजाय केवल उन निष्कर्षों तक सीमित रहने को कहता है।

47. (A) समकालीन सामाजिक मूल्य अनजाने में इतिहासकार के दृष्टिकोण को आकार दे सकते हैं।
इतिहासकार का सामाजिक परिवेश उसके सोचने के तरीके और अतीत की व्याख्या को गहराई से प्रभावित करता है। कोई भी लेखक अपने समय की सामाजिक मान्यताओं और सांस्कृतिक धारणाओं से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकता। जब वह अतीत का विश्लेषण करता है, तो वह अक्सर अपने वर्तमान के दृष्टिकोण से उसे देखता है। उदाहरण के लिए, आज का इतिहासकार लोकतंत्र को प्राथमिकता दे सकता है, जिससे अनजाने में ऐतिहासिक विवरणों में पूर्वाग्रह आ सकता है।

48. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
इतिहास लेखन के विभिन्न दृष्टिकोणों के अपने विशिष्ट लक्ष्य होते हैं। राष्ट्रवादी विचारधारा औपनिवेशिक दावों का विरोध करने और राष्ट्रीय गौरव को पुनर्जीवित करने पर बल देती है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण इतिहास को वर्ग संघर्ष के माध्यम से समझने का प्रयास करता है। निम्नवर्गीय इतिहास आम जनता की सक्रियता को केंद्र में रखता है, जबकि साम्राज्यवादी दृष्टिकोण औपनिवेशिक शासन को सही ठहराने के उद्देश्यों से प्रेरित था। ये सभी दृष्टिकोण इतिहास को विस्तार देते हैं।

49. (B) एक आधुनिक इतिहासकार द्वारा लिखित "दिल्ली सल्तनत की आर्थिक नीतियां" नामक पुस्तक।
द्वितीयक स्रोत वे सामग्रियां होती हैं जो प्राथमिक स्रोतों के अध्ययन और विश्लेषण के बाद तैयार की जाती हैं। किसी आधुनिक इतिहासकार द्वारा लिखी गई पुस्तक जिसमें वह पुराने दस्तावेजों का उपयोग करके निष्कर्ष निकालता है, एक द्वितीयक स्रोत है। इसके विपरीत, डायरी और सिक्के प्राथमिक स्रोत कहलाते हैं क्योंकि वे सीधे उस कालखंड से संबंधित होते हैं। द्वितीयक स्रोत हमें यह समझने में मदद करते हैं कि विद्वानों ने अतीत की व्याख्या कैसे की।

50. (A) मार्क्सवादी
डी.डी. कोसंबी भारतीय इतिहास लेखन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने पहली बार प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन में मार्क्सवादी सिद्धांतों और भौतिकवादी दृष्टिकोण को व्यवस्थित रूप से लागू किया। कोसंबी ने राजाओं के वंशों के बजाय उत्पादन के साधनों और सामाजिक संरचनाओं के अंतर्संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया। उनकी कार्यप्रणाली ने सांख्यिकी और नृविज्ञान को जोड़कर इतिहास

को नया वैज्ञानिक आधार प्रदान किया, जिससे अध्ययन की दिशा बदल गई।

51. (B) केवल 1 और 3
विश्व इतिहास का उद्देश्य किसी राष्ट्र की सीमाओं से परे जाकर सभ्यताओं के परस्पर संबंधों और वैश्विक प्रक्रियाओं का अध्ययन करना है। इसी प्रकार, क्षेत्रीय इतिहास एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र की स्थानीय घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। हालांकि, राष्ट्रीय इतिहास के बारे में यह कहना गलत है कि वह सामाजिक-आर्थिक पहलुओं की अनदेखी करता है। आधुनिक राष्ट्रीय इतिहास लेखन में समाज के हर पहलू को शामिल करने का निरंतर प्रयास किया जाता है।

52. (B) इतिहास में अतीत के अर्थ और पैटर्न के बारे में चिंतन शामिल है।
इतिहास को दर्शन के रूप में देखने का तात्पर्य यह है कि इतिहास केवल तिथियों और घटनाओं का संकलन नहीं है। इसमें मानवीय अनुभव के गहरे अर्थों, ऐतिहासिक विकास के अंतर्निहित प्रारूपों और अतीत के अनुभवों से प्राप्त होने वाली शिक्षाओं का गहन चिंतन शामिल होता है। यह दृष्टिकोण यह समझने का प्रयास करता है कि सभ्यताएं क्यों बदलती हैं। यह तथ्यों से परे जाकर उनके पीछे छिपे दार्शनिक आधारों की खोज करने की बौद्धिक प्रक्रिया है।

53. (C) इतिहास और भूगोल
इतिहास और भूगोल के बीच अटूट संबंध किसी भी सभ्यता के विकास को समझने के लिए अनिवार्य है। जब कोई इतिहासकार जलवायु, भू-भाग और प्राकृतिक संसाधनों के प्रभाव का अध्ययन करता है, तो वह यह रेखांकित करता है कि भौगोलिक परिस्थितियों ने मानवीय गतिविधियों और व्यापार मार्गों को कैसे आकार दिया। उदाहरण के लिए, बड़ी सभ्यताओं का उदय नदियों के किनारे हुआ। भौगोलिक वातावरण न केवल मंच प्रदान करता है, बल्कि इतिहास की दिशा भी निर्धारित करता है।

54. (D) अपनी पसंदीदा विचारधारा के साथ तालमेल बिठाने के लिए अतीत को तोड़-मरोड़ सकता है।
राजनीतिक वफादारी इतिहास लेखन में पूर्वाग्रह का एक शक्तिशाली कारण हो सकती है। इसका अर्थ है कि एक इतिहासकार किसी विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा के प्रति अपनी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के कारण तथ्यों को चयनात्मक रूप से प्रस्तुत करता है। वह उन घटनाओं को अधिक महत्व दे सकता है जो उसकी विचारधारा को सही साबित करती हैं। ऐसी स्थिति में ऐतिहासिक सच्चाई गौण हो जाती है और लेखन राजनीतिक प्रचार का एक साधन मात्र बनकर रह जाता है।

55. (C) राष्ट्रवादी
के.पी. जायसवाल प्राचीन भारतीय राजव्यवस्था के क्षेत्र में एक प्रख्यात राष्ट्रवादी इतिहासकार थे। उनकी सुप्रसिद्ध कृति 'हिंदू पॉलिटी' ने इस साम्राज्यवादी धारणा को चुनौती दी कि प्राचीन भारत में केवल निरंकुश शासन था। उन्होंने साक्ष्यों के माध्यम से सिद्ध किया कि प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक और गणतांत्रिक संस्थाएं मौजूद थीं। उनका कार्य भारतीय आत्म-सम्मान को जागृत करने और पश्चिमी विद्वानों के नकारात्मक प्रचार का तार्किक उत्तर देने के लिए समर्पित था।

56. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
पुरातत्व निश्चित रूप से इतिहास का अनिवार्य पूरक है, विशेष रूप से उन युगों के लिए जिनका लिखित विवरण उपलब्ध नहीं है। मिट्टी के बर्तन और औजार जैसे भौतिक अवशेष अतीत की संस्कृति के बारे में जानकारी देते हैं। हालांकि, यह कहना गलत होगा कि ये अवशेष पूरी तरह वस्तुनिष्ठ तथ्य प्रदान करते हैं। पुरातात्विक साक्ष्यों की व्याख्या भी इतिहासकार के अपने ज्ञान पर निर्भर करती है। भौतिक अवशेष स्वयं नहीं बोलते; उनकी व्याख्या में अनुमान की संभावना रहती है।

57. (B) ईश्वरीय योजना या इच्छा की अभिव्यक्ति।
इतिहास के प्रति पारंपरिक धार्मिक दृष्टिकोण घटनाओं को केवल मानवीय क्रियाओं का परिणाम नहीं मानता, बल्कि उन्हें एक उच्चतर ईश्वरीय योजना के प्रकटीकरण के रूप में देखता है। इस विचारधारा के अनुसार, संसार में होने वाले परिवर्तन और राजाओं का उत्थान-पतन सभी किसी पूर्व-निर्धारित धार्मिक उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। यहाँ इतिहास को नैतिकता के दृष्टिकोण से देखा जाता है, जहाँ मुख्य उद्देश्य ईश्वरीय न्याय की स्थापना और धर्म की विजय को प्रदर्शित करना होता है।

58. (D) वस्तुनिष्ठता और साक्ष्य के आधुनिक मानकों का कड़ाई से पालन।
प्राचीन भारत की वैदिक और पौराणिक परंपराओं में ऐतिहासिक चेतना मौजूद थी, लेकिन उनका स्वरूप आधुनिक वैज्ञानिक इतिहास से भिन्न था। ये परंपराएं वंशावलियों और समय की चक्रीय अवधारणा पर आधारित थीं। उनमें घटनाओं के वर्णन का उद्देश्य अक्सर धार्मिक या नैतिक शिक्षा देना होता था। अतः उनमें साक्ष्य के उन आधुनिक कठोर मानकों और पूर्ण वस्तुनिष्ठता की अपेक्षा करना अनुचित है, जो उन्नीसवीं सदी के बाद विकसित वैज्ञानिक शोध की मुख्य विशेषता है।

59. (D) बहु-खंडीय "हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन People" के मुख्य संपादक होने के लिए।
आर.सी. मजूमदार भारत के उन महान इतिहासकारों में से हैं जिन्होंने राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास को पुनर्गठित करने में भूमिका निभाई। उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान ग्यारह खंडों में प्रकाशित "द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल" का संपादन करना था। इस विशाल कार्य के माध्यम से उन्होंने भारतीय इतिहास को उसके समग्र रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें राजनीतिक घटनाओं के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं को भी पर्याप्त स्थान दिया गया है।

60. (B) एक शोध समस्या का चयन और निर्माण।
किसी भी वैज्ञानिक ऐतिहासिक शोध की शुरुआत एक स्पष्ट शोध समस्या या प्रश्न के चयन से होती है। इतिहासकार सबसे पहले यह निर्धारित करता है कि वह अतीत के किस विशिष्ट पहलू या कालखंड का अन्वेषण करना चाहता है। एक सटीक शोध समस्या ही आगे के पूरे कार्य को दिशा प्रदान करती है।

समस्या का निर्माण करने के बाद ही शोधकर्ता प्रासंगिक तथ्यों के संग्रह और स्रोतों के विश्लेषण की ओर बढ़ता है। इसके बिना जाँच दिशाहीन रहती है।

61. (C) आइन-ए-अकबरी
अबुल फजल मुगल सम्राट अकबर के नवरत्नों में से थे और उन्होंने मुगल प्रशासन का विस्तृत विवरण 'आइन-ए-अकबरी' में दिया है। यह विशाल कृति 'अकबरनामा' का ही तीसरा और महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें मुगल साम्राज्य के नियम, राजस्व व्यवस्था और सांस्कृतिक जीवन की सूक्ष्म जानकारी मिलती है। यह ग्रंथ आज भी इतिहासकारों के लिए अकबर के शासनकाल की प्रशासनिक संरचना को समझने के लिए सबसे भरोसेमंद और अनिवार्य प्राथमिक स्रोत माना जाता है।

62. (B) व्यापार संघों, भू-राजस्व प्रणालियों और तकनीक का इतिहास।
आर्थिक इतिहास अतीत के समाजों के भौतिक आधार का अध्ययन करता है। इसके दायरे में मुख्य रूप से यह विश्लेषण शामिल है कि लोग अपनी आजीविका कैसे कमाते थे और व्यापारिक प्रणालियाँ क्या थीं। इसके अतिरिक्त, यह तकनीक के विकास और उत्पादन की पद्धतियों में होने वाले बदलावों का भी बारीकी से अध्ययन करता है। आर्थिक इतिहास हमें यह समझने में मदद करता है कि संसाधनों के वितरण ने समाज की अन्य संस्थाओं को कैसे प्रभावित किया।

63. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
उत्तर-आधुनिकतावाद इतिहास लेखन के पारंपरिक दावों को चुनौती देता है। यह मानता है कि अतीत के बारे में कोई भी 'वस्तुनिष्ठ सत्य' प्राप्त करना असंभव है क्योंकि इतिहासकार हमेशा अपनी भाषा और पूर्वाग्रहों के माध्यम से अतीत का निर्माण करता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, ऐतिहासिक विवरण वास्तविकता का सीधा प्रतिबिंब नहीं होते, बल्कि वे भाषाई निर्माण होते हैं। इसलिए, उत्तर-आधुनिकतावादी मानते हैं कि इतिहास और कल्पना के बीच की रेखा बहुत धुंधली होती है।

64. (D) एक विषय के रूप में इतिहास की विश्वसनीयता और शैक्षणिक कठोरता स्थापित करने के लिए।
इतिहास में वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि इसी पर एक विषय के रूप में इसकी वैज्ञानिक प्रामाणिकता टिकी हुई है। यदि ऐतिहासिक लेखन केवल व्यक्तिगत भावनाओं या राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित होगा, तो वह अपनी विश्वसनीयता खो देगा। वस्तुनिष्ठता के माध्यम से इतिहासकार यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि उसके निष्कर्ष साक्ष्यों पर आधारित हों। यह शैक्षणिक कठोरता ही इतिहास को कहानियों से अलग कर एक गंभीर सामाजिक विज्ञान के रूप में स्थापित करती है।

65. (C) कथा संरचना और साहित्यिक शैली
जो विद्वान इतिहास को एक 'कला' मानते हैं, वे इस बात पर बल देते हैं कि इतिहास लेखन का प्रमुख उद्देश्य अतीत को जीवंत और रोचक बनाना है। उनके अनुसार, केवल तथ्यों को इकट्ठा करना पर्याप्त नहीं है; इतिहासकार को एक कुशल कहानीकार की तरह उन तथ्यों को एक सुसंगत वृत्तांत में पिरोना चाहिए। इसमें वर्णन की शैली और मानवीय संवेदनाओं की समझ अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यह दृष्टिकोण मानता है कि प्रभावी लेखन के बिना इतिहास नीरस रहेगा।

66. (B) केवल 2 और 3
ऐतिहासिक शोध में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों का अपना विशिष्ट महत्व है। आत्मकथा एक प्राथमिक स्रोत है क्योंकि वह उस व्यक्ति द्वारा लिखी गई है जिसने उन घटनाओं को जिया है। द्वितीयक स्रोत हमें यह समझने में मदद करते हैं कि समय के साथ इतिहास लेखन की दिशा कैसे बदली है। हालांकि, यह कहना गलत है कि प्राथमिक स्रोत हमेशा अधिक विश्वसनीय होते हैं, क्योंकि उनमें भी पूर्वाग्रह हो सकता है। अतः इतिहासकार को प्रत्येक स्रोत की जाँच करनी पड़ती है।

67. (D) इतिहास की रैखिक अवधारणा, जो इतिहास को एक रेखा में आगे बढ़ते हुए देखती है।
इतिहास की चक्रीय अवधारणा मानती है कि समय और घटनाएं दोहराव के प्रारूप में चलती हैं, जहाँ सभ्यताओं का उत्थान और पतन एक चक्र की तरह होता है। इसके ठीक विपरीत, इतिहास की रैखिक अवधारणा समय को एक सीधी रेखा के रूप में देखती है जो निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। रैखिक दृष्टिकोण में प्रत्येक घटना अद्वितीय होती है और वह समाज को नए स्तर पर ले जाती है। अतः ये दोनों अवधारणाएं इतिहास समझने के अलग तरीके हैं।

68. (A) भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र का इतिहास
आनंद के. कुमारस्वामी बीसवीं सदी के महान विद्वान थे जिन्होंने भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। उन्होंने पश्चिमी जगत को भारतीय कला के आध्यात्मिक और दार्शनिक महत्व से परिचित कराया। उनका कार्य केवल कला की वस्तुओं का वर्णन नहीं था, बल्कि उन्होंने उन सांस्कृतिक प्रतीकों की व्याख्या की जो भारतीय कलाकृतियों के मूल में स्थित हैं। उनके लेखन ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रति वैश्विक दृष्टिकोण को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

69. (C) कल्हण - राजतरंगिणी
कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' भारतीय इतिहास लेखन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह कश्मीर के इतिहास का पहला क्रमिक विवरण है और इसे भारत का पहला वास्तविक ऐतिहासिक ग्रंथ माना जाता है क्योंकि इसमें शोध की वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। अन्य विकल्पों में दी गई जोड़ियाँ गलत हैं; उदाहरण के लिए, अबुल फजल ने 'अकबरनामा' लिखा था और बाणभट्ट सम्राट हर्ष की जीवनी 'हर्षचरित' के लेखक थे।

70. (D) सामाजिक इतिहास
सामाजिक इतिहास ऐतिहासिक अध्ययन का वह व्यापक क्षेत्र है जो आम लोगों के दैनिक जीवन और सामाजिक संरचनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके अंतर्गत विवाह की परंपराओं और विभिन्न युगों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण

किया जाता है। यह राजनीति और युद्धों के बजाय समाज की आंतरिक बनावट और सामाजिक संस्थाओं के क्रमिक परिवर्तन को समझने का प्रयास करता है। सामाजिक इतिहास हमें बताता है कि बीते हुए समय में लोग एक समाज के रूप में कैसे रहते थे।

71. (D) यह एक जुड़े हुए क्षेत्रीय इतिहास को लिखने का एक सचेत प्रयास था।
कल्हण की 'राजतरंगिणी' का भारतीय इतिहास लेखन में विशिष्ट योगदान यह है कि यह किसी क्षेत्र के इतिहास को सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने का पहला गंभीर प्रयास था। कल्हण ने केवल किंवदंतियों पर भरोसा नहीं किया, बल्कि शिलालेखों और पूर्ववर्ती ग्रंथों का आलोचनात्मक परीक्षण किया। उन्होंने पक्षपात रहित होकर राजाओं के गुणों और दोषों दोनों का वर्णन किया। यह कृति दर्शाती है कि प्राचीन भारत में भी एक उन्नत और वैज्ञानिक ऐतिहासिक चेतना मौजूद थी।

72. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
इतिहास के विभिन्न प्रकार मानव जीवन के अलग-अलग पहलुओं का विश्लेषण करते हैं। सामाजिक इतिहास वर्ग और परिवार जैसे सामाजिक समूहों के अध्ययन पर केंद्रित होता है। आर्थिक इतिहास व्यापार और उत्पादन की प्रणालियों की जाँच करता है। राजनीतिक इतिहास मुख्य रूप से शासन की शक्तियों से संबंधित होता है। वहीं, बौद्धिक इतिहास मानव मस्तिष्क के विकास और दार्शनिक विचारों की यात्रा को समझने का प्रयास करता है। ये सभी मिलकर किसी कालखंड का संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करते हैं।

73. (D) ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता।
ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता एक इतिहासकार के लिए सबसे बुनियादी सिद्धांत है। इसका अर्थ है कि लेखक को सभी उपलब्ध साक्ष्यों के प्रति ईमानदार होना चाहिए, चाहे वे उसके स्वयं के तर्कों के पक्ष में हों या विरोध में। यदि कोई इतिहासकार जानबूझकर उन तथ्यों को छोड़ देता है जो उसके सिद्धांत का खंडन करते हैं, तो वह ऐतिहासिक सत्य के साथ समझौता कर रहा होता है। ऐसी चयनात्मकता शोध की विश्वसनीयता समाप्त कर देती है और इतिहास को पक्षपाती बना देती है।

74. (D) संरक्षक राजा के पक्ष में स्तुति और अतिशयोक्ति की प्रवृत्ति के लिए।
प्राचीन भारत में 'चरित' परंपरा के ग्रंथों की मुख्य आलोचना उनकी प्रशंसात्मक शैली को लेकर की जाती है। चूँकि ये लेखक राजदरबार के आश्रित कवि होते थे, इसलिए उनके लिए अपने संरक्षक राजा की महानता का वर्णन करना एक आवश्यकता बन जाती थी। इस कारण वे अक्सर राजा की विफलताओं को अनदेखा कर देते थे और उनकी उपलब्धियों को अलौकिक गुणों के साथ जोड़कर प्रस्तुत करते थे। इतिहासकारों के लिए इन स्रोतों से वास्तविक तथ्य निकालना एक चुनौती होती है।

75. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय अस्मिता को पुनर्जीवित करने में असाधारण भूमिका निभाई। उन्होंने साम्राज्यवादी लेखकों के उस दावे का खंडन किया जिसमें भारत को पिछड़ा समाज दिखाया गया था। राष्ट्रवादी लेखकों ने प्राचीन भारत के उन्नत विज्ञान और कुशल प्रशासन के साक्ष्य प्रस्तुत किए। इस प्रयास ने न केवल भारतीयों में आत्मविश्वास पैदा किया, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन को एक ठोस बौद्धिक और ऐतिहासिक आधार भी प्रदान किया।

76. (B) विश्वसनीयता के लिए स्रोतों की पहचान करना, उन्हें इकट्ठा करना और उनका आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
ऐतिहासिक शोध में तथ्यों का संग्रह केवल सामग्री इकट्ठा करने तक सीमित नहीं है। यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें इतिहासकार सबसे पहले प्रासंगिक स्रोतों की खोज करता है और फिर उनकी प्रमाणिकता की जाँच करता है। प्रत्येक दस्तावेज का मूल्यांकन उसकी विश्वसनीयता और तत्कालीन संदर्भ के आधार पर किया जाता है। केवल उन्हीं तथ्यों को चुना जाता है जो कठोर आलोचनात्मक परीक्षण पर खरे उतरते हैं। यही वैज्ञानिक पद्धति ऐतिहासिक वृत्तांत को ठोस आधार प्रदान करती है।

77. (D) राजदरबारों में चारणों द्वारा वंशावलियों और वीरतापूर्ण कार्यों का पाठ।
प्राचीन भारतीय समाज में 'सूत परंपरा' ऐतिहासिक स्मृतियों को जीवित रखने का एक सशक्त मौखिक माध्यम थी। इस परंपरा के अंतर्गत पेशेवर चारण राजदरबारों में राजाओं की वंशावलियों का बखान करते थे और उनके पूर्वजों के शौर्यपूर्ण कार्यों की कथाएं सुनाते थे। यह केवल मनोरंजन नहीं था, बल्कि समाज और राजवंशों की ऐतिहासिक पहचान को सुरक्षित रखने का तरीका था। लिखित इतिहास के व्यापक प्रचलन से पहले, यही मौखिक परंपरा अतीत की जानकारियों को पहुँचाने का प्रमुख स्रोत थी।

78. (A) समाज के विश्वासों, मूल्यों, कलात्मक अभिव्यक्तियों और लोकप्रिय रीति-रिवाजों का इतिहास।
सांस्कृतिक इतिहास ऐतिहासिक अध्ययन की वह रोचक शाखा है जो किसी समाज की चेतना को समझने का प्रयास करती है। यह केवल राजाओं या युद्धों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देखता है कि लोग क्या सोचते थे और उनके धार्मिक विश्वास क्या थे। इसमें कला, संगीत, खान-पान और दैनिक जीवन के तौर-तरीकों का भी समावेश होता है। यह मानव समाज के मानसिक और आध्यात्मिक विकास का एक व्यापक चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

79. (D) पारंपरिक वृत्तांत से हटकर स्रोतों के प्रति आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण पर जोर दिया।
रामकृष्ण गोपाल भंडारकर को आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन का अग्रदूत माना जाता है क्योंकि उन्होंने वैज्ञानिक पद्धतियों को भारतीय संदर्भ में लागू किया। उन्होंने केवल पारंपरिक वृत्तांतों को सच मानने के बजाय, स्रोतों के निष्पक्ष विश्लेषण पर बल दिया। उनके लिए इतिहास लेखन एक ऐसी साधना थी जिसमें साक्ष्य ही सर्वोपरि थे। उनके इस दृष्टिकोण ने भारतीय विद्वानों को सिखाया कि कैसे शिलालेखों और

साहित्यिक ग्रंथों का वस्तुनिष्ठ परीक्षण करके एक विश्वसनीय इतिहास का निर्माण किया जा सकता है।

80. (C) समाज के आर्थिक आधार से उत्पन्न सामाजिक वर्गों के बीच संघर्ष।
मार्क्सवादी इतिहास लेखन के अनुसार, मानवीय इतिहास की प्रगति के पीछे का मुख्य कारण आर्थिक परिस्थितियां हैं। समाज का आर्थिक ढांचा ही समाज की पूरी व्यवस्था को संचालित करता है। इस विचारधारा के अनुसार, इतिहास विभिन्न वर्गों के बीच सत्ता और संसाधनों के नियंत्रण के लिए होने वाले निरंतर संघर्ष का परिणाम है। प्रत्येक नया ऐतिहासिक चरण एक पुराने वर्ग की पराजय और नए वर्ग के उदय के माध्यम से सामने आता है, जो समाज को परिवर्तित करता है।

81. (A) यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि समय के साथ स्रोत की सामग्री कैसे बदली जा सकती है।
ऐतिहासिक शोध में साक्ष्य और उसका संचरण एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है। इसका अर्थ यह है कि कोई भी सूचना जब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है, तो उसके स्वरूप में परिवर्तन की संभावना रहती है। इसमें लिपिकीय त्रुटियाँ या जानबूझकर किए गए संपादन शामिल हो सकते हैं। इतिहासकार के लिए यह समझना अनिवार्य है कि वह जो साक्ष्य आज देख रहा है, वह अपने मूल रूप में कैसा था और संचरण की इस प्रक्रिया ने उसे कैसे प्रभावित किया है।

82. (D) यदि इतिहासकार उचित रूप से प्रशिक्षित है तो पूर्वाग्रह को पूरी तरह से समाप्त किया जा सकता है।
इतिहास लेखन में पूर्वाग्रह को पूरी तरह समाप्त करना लगभग असंभव है, चाहे इतिहासकार कितना भी प्रशिक्षित क्यों न हो। प्रत्येक लेखक की अपनी एक विशिष्ट पृष्ठभूमि और मूल्य होते हैं जो अनजाने में उसके विचारों को प्रभावित करते हैं। एक अच्छा इतिहासकार अपने पूर्वाग्रहों को कम करने और उनके प्रति जागरूक रहने का प्रयास तो कर सकता है, लेकिन वह पूरी तरह निष्पक्षता के शून्य स्थान से नहीं लिख सकता। वस्तुनिष्ठता के लिए निरंतर प्रयास करना ही सबसे बड़ी चुनौती है।

83. (2, 4, 1, 3) बाणभट्ट, कल्हण, अबुल फजल, यदुनाथ सरकार
भारतीय इतिहास लेखन का विकास प्राचीन काल से आधुनिक युग तक विभिन्न चरणों में हुआ है। सातवीं शताब्दी में बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' के साथ जीवनी लेखन की शुरुआत की। बारहवीं शताब्दी में कल्हण ने कश्मीर का व्यवस्थित इतिहास लिखा। सोलहवीं शताब्दी के दौरान अबुल फजल ने मुगल प्रशासन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। अंततः, बीसवीं शताब्दी में यदुनाथ सरकार ने आधुनिक शोध पद्धतियों का उपयोग करते हुए इतिहास लेखन को नई ऊंचाइयां प्रदान कीं। यह क्रम ऐतिहासिक लेखन के परिपक्व होने को दर्शाता है।

84. (A) साम्राज्यों का उत्थान और पतन, राज्यों की प्रकृति और विदेश नीति।
इतिहास और राजनीति का सह-संबंध ऐतिहासिक अध्ययन का सबसे पुराना आधार है। इसके अंतर्गत विश्लेषण किया जाता है कि विभिन्न युगों में राज्यों का गठन कैसे हुआ और सत्ता का स्वरूप क्या था। यह संघर्षों, संधियों और प्रशासनिक परिवर्तनों के माध्यम से समाज की राजनीतिक संरचना को समझने का प्रयास करता है। राजनीति विज्ञान की अवधारणाएं इतिहासकारों को शासन प्रणालियों और शक्ति के समीकरणों का गहन विश्लेषण करने में अमूल्य सहायता प्रदान करती हैं।

85. (C) इतिहास कैसे लिखा गया है इसका अध्ययन, ऐतिहासिक लेखन का इतिहास।
इतिहास-लेखन या हिस्टोरियोग्राफी का तात्पर्य केवल इतिहास लिखने से नहीं है, बल्कि यह स्वयं इतिहास लेखन की कला और पद्धति का इतिहास है। इसके अंतर्गत अध्ययन किया जाता है कि अलग-अलग समय में इतिहासकारों ने अतीत को देखने के लिए किन दृष्टिकोणों और स्रोतों का उपयोग किया। यह हमें बताता है कि इतिहासकार की अपनी विचारधारा ने तथ्यों की प्रस्तुति को कैसे प्रभावित किया। इसे समझने से हमें ऐतिहासिक वृत्तांतों की गहराई को पहचानने की शक्ति मिलती है।

86. (B) केवल 2 और 3
निम्नवर्गीय अध्ययन समूह का उदय भारतीय इतिहास लेखन में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस समूह ने साम्राज्यवादी और राष्ट्रवादी दोनों विचारधाराओं की आलोचना की क्योंकि वे मुख्य रूप से कुलीन वर्गों के कार्यों पर ही केंद्रित थे। निम्नवर्गीय इतिहासकारों का मुख्य उद्देश्य समाज के हाशिए पर रहने वाले लोगों, जैसे किसानों और आदिवासियों, की आवाजों को इतिहास में उचित स्थान देना है। उनका मानना है कि वास्तविक ऐतिहासिक परिवर्तन नीचे से होने वाली जन-भागीदारी का परिणाम होते हैं।

87. (D) यदुनाथ सरकार
सर यदुनाथ सरकार को आधुनिक भारत के प्रतिष्ठित इतिहासकारों में गिना जाता है, विशेष रूप से मुगल साम्राज्य के पतन के उनके गहन विश्लेषण के लिए। उनकी कृति 'हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब' शोध का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने अपने लेखन में प्राथमिक फारसी स्रोतों के कठोर विश्लेषण पर बल दिया। सरकार ने केवल युद्धों का वर्णन नहीं किया, बल्कि नीतियों के परिणामों और मुगल सत्ता के बिखरने के कारणों का वैज्ञानिक और निष्पक्ष विवेचन प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया।

88. (A) धार्मिक, आर्थिक और विश्व इतिहास का संयोजन।
सिल्क रोड के माध्यम से बौद्ध धर्म के प्रसार का अध्ययन एक बहुआयामी शोध है। इसमें धार्मिक इतिहास शामिल है क्योंकि यह एक विचारधारा के विस्तार को देखता है, और आर्थिक इतिहास भी है क्योंकि यह व्यापार मार्गों पर निर्भर करता है। चूँकि यह अध्ययन विभिन्न देशों के बीच होने वाले आदान-प्रदान पर ध्यान केंद्रित करता है, इसलिए यह विश्व इतिहास के दायरे में आता है। यह दर्शाता है कि ऐतिहासिक घटनाएं अक्सर कई क्षेत्रों के संगम पर घटित होती हैं।

89. (D) आधुनिक इतिहास साक्ष्यों के आलोचनात्मक मूल्यांकन पर जोर देता है, जो पुराणों में अनुपस्थित है।
पौराणिक परंपरा और आधुनिक इतिहास लेखन के बीच सबसे बड़ा अंतर उनकी कार्यप्रणाली में निहित है। आधुनिक इतिहास लेखन साक्ष्यों के कठोर संकलन और उनकी प्रमाणिकता की जाँच पर आधारित है। इसमें प्रत्येक तथ्य को अन्य स्रोतों से सत्यापित किया जाता है। इसके विपरीत, पौराणिक परंपरा में ऐतिहासिक घटनाओं को मिथकों और नैतिकता के साथ मिश्रित करके प्रस्तुत किया जाता है। वहाँ सत्य की खोज के बजाय वंशावलियों का संरक्षण अधिक महत्वपूर्ण था, जिससे आधुनिक तटस्थता का अभाव रहता है।

90. (A) एक अप्राप्य आदर्श जिसके लिए इतिहासकारों को फिर भी प्रयास करना चाहिए।
ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता एक ऐसा उच्च लक्ष्य है जिसे पूर्ण रूप से प्राप्त करना लगभग असंभव है क्योंकि इतिहासकार स्वयं एक विशेष सामाजिक वातावरण का हिस्सा होता है। हालांकि पूर्ण निष्पक्षता कठिन है, फिर भी एक समर्पित इतिहासकार का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह इसके लिए निरंतर प्रयास करे। वस्तुनिष्ठता का अर्थ है साक्ष्यों के प्रति पूर्ण ईमानदारी बरतना और व्यक्तिगत भावनाओं को तथ्यों से अलग रखना। इसी से इतिहास लेखन को वैज्ञानिक स्वरूप प्राप्त होता है।

91. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्राचीन इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए इतिहास और पुरातत्व का परस्पर सहयोग अनिवार्य है। विशेष रूप से उन युगों के लिए जिनके पास कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं है, पुरातात्विक अवशेष ही अतीत को जानने का एकमात्र माध्यम होते हैं। मिट्टी के बर्तन और प्राचीन बस्तियों के खंडहर हमें तत्कालीन मानव जीवन, उनकी तकनीक और सामाजिक संरचना के बारे में प्रत्यक्ष प्रमाण प्रदान करते हैं। इस प्रकार, पुरातत्व उन अंतरालों को भरने का कार्य करता है जहाँ लिखित इतिहास मौन रहता है।

92. (C) उत्तर-आधुनिकतावादी
उत्तर-आधुनिकतावादी इतिहास लेखन इस विचार पर आधारित है कि भाषा और वास्तविकता के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है। इस विचारधारा के समर्थक मानते हैं कि इतिहास लेखन अनिवार्य रूप से साहित्य का ही एक रूप है, क्योंकि इतिहासकार तथ्यों को चुनने के लिए साहित्यिक तकनीकों का उपयोग करता है। उनके अनुसार, 'पूर्ण सत्य' जैसी कोई चीज नहीं होती, केवल अलग-अलग दृष्टिकोण और भाषाई निर्माण होते हैं। यह दृष्टिकोण ऐतिहासिक दावों की वस्तुनिष्ठता पर सवाल उठाता है और विखंडन पर जोर देता है।

93. (D) मिन्हाज-उस-सिराज
मिन्हाज-उस-सिराज तेरहवीं शताब्दी के एक सुप्रसिद्ध फारसी इतिहासकार थे। उनकी कृति 'तबकात-ए-नासिरी' मध्यकालीन विश्व और विशेष रूप से भारत में मुस्लिम शासन के प्रारंभिक काल का एक महत्वपूर्ण वृत्तांत है। इस पुस्तक में उन्होंने आदम से लेकर अपने समय तक के राजवंशों का इतिहास लिखा है। यह ग्रंथ दिल्ली सल्तनत के प्रारंभिक सुल्तानों की नीतियों और तत्कालीन राजनीतिक उथल-पुथल की सटीक जानकारी देने के लिए इतिहासकारों द्वारा प्राथमिक स्रोत के रूप में देखा जाता है।

94. (B) एक विशिष्ट, भौगोलिक रूप से परिभाषित क्षेत्र के इतिहास का अध्ययन करना।
क्षेत्रीय इतिहास ऐतिहासिक अध्ययन की वह शाखा है जो किसी देश के भीतर एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र पर अपना ध्यान केंद्रित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य उस क्षेत्र की अनूठी परंपराओं और स्थानीय घटनाओं को गहराई से समझना है जो अक्सर बड़े राष्ट्रीय वृत्तांतों में ओझल हो जाते हैं। क्षेत्रीय इतिहास हमें यह समझने में मदद करता है कि स्थानीय विविधताएं कैसे व्यापक ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं और कैसे एक विशिष्ट क्षेत्र की पहचान समय के साथ विकसित हुई है।

95. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन के इन प्रमुख विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से हमारे अतीत को समृद्ध किया है। के.पी. जायसवाल ने 'हिंदू पॉलिटी' के माध्यम से प्राचीन भारतीय गणराज्यों के अस्तित्व को सिद्ध किया। डी.डी. कोसंबी ने भारतीय इतिहास के अध्ययन में पहली बार मार्क्सवादी पद्धति का समावेश किया। यदुनाथ सरकार मुगल काल के विशेषज्ञ माने जाते हैं, जबकि आर.सी. मजूमदार ने 'हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल' द्वारा राष्ट्र के संपूर्ण इतिहास को प्रस्तुत किया।

96. (D) भारत में इतिहास लेखन की पूर्व-आधुनिक स्वदेशी परंपराएं।
सूत और चरित परंपराएं भारत की उन मौलिक और प्राचीन ऐतिहासिक विधाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जो आधुनिक पाश्चात्य पद्धतियों के आने से बहुत पहले से प्रचलित थीं। सूत परंपरा मुख्य रूप से मौखिक थी, जिसमें पेशेवर चारणों द्वारा वंशावलियों का संरक्षण किया जाता था। वहीं, चरित परंपरा में राजाओं की विस्तृत जीवनियां लिखी जाती थीं, जैसे बाणभट्ट का हर्षचरित। ये परंपराएं दर्शाती हैं कि प्राचीन भारतीय समाज में भी अतीत की घटनाओं को याद रखने और उन्हें संजोने की समृद्ध संस्कृति मौजूद थी।

97. (D) उनकी विफलताओं की अनदेखी करते हुए शासक के गुणों पर अत्यधिक जोर देना।
इतिहास लेखन में पूर्वाग्रह का एक बड़ा कारण लेखक का अपने संरक्षक के प्रति व्यक्तिगत लगाव होता है। जब कोई इतिहासकार किसी राजा के दरबार में रहता है, तो उस पर अपने स्वामी की छवि को उज्ज्वल करने का दबाव होता है। ऐसी स्थिति में वह अक्सर शासक की विफलताओं या युद्ध की पराजयों को कम करके दिखाता है और उसके सामान्य कार्यों को महान उपलब्धियों के रूप में प्रस्तुत करता है। यह प्रशंसात्मक दृष्टिकोण ऐतिहासिक सत्य को धुंधला कर देता है और एक पक्षपाती विवरण प्रदान करता है।

98. (B) यह सुझाव देता है कि इतिहास में जांच और साक्ष्य एकत्र करने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया शामिल है।
इतिहास को विज्ञान मानने का तर्क इस विचार पर आधारित है कि ऐतिहासिक शोध केवल कल्पना पर निर्भर नहीं है। इसमें तथ्यों की खोज के लिए एक कठोर कार्यप्रणाली अपनाई जाती है, जिसमें साक्ष्यों का संकलन और उनका आलोचनात्मक परीक्षण शामिल है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण इतिहासकार को निष्पक्ष रहने और केवल उन्हीं दावों को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करता है जिन्हें प्रमाणों से सिद्ध किया जा सके। यह पद्धति इतिहास को एक विश्वसनीय और तर्कसंगत शैक्षणिक अनुशासन बनाती है।

99. (D) पूछताछ और जांच
'इतिहास' शब्द की व्युत्पत्ति इसके ग्रीक मूल 'हिस्टोरिया' से हुई है, जिसका प्राथमिक अर्थ सत्य का पता लगाने के लिए की जाने वाली गहन पूछताछ या जांच है। यह अर्थ स्पष्ट करता है कि इतिहास प्रारंभ से ही एक सक्रिय बौद्धिक प्रक्रिया रही है, न कि केवल पुरानी कहानियों का संग्रह। प्राचीन विचारकों के लिए इतिहास का अर्थ था साक्ष्यों के माध्यम से अतीत की गुत्थियों को सुलझाना। यह अन्वेषणात्मक स्वभाव ही इतिहास को एक ऐसे विषय के रूप में स्थापित करता है जो सत्य की खोज करता है।

100. (A) सांस्कृतिक इतिहास
सांस्कृतिक इतिहास ऐतिहासिक अध्ययन की वह शाखा है जो समाज के अदृश्य पहलुओं, जैसे सौंदर्यबोध, कला और दैनिक जीवन की मान्यताओं का अध्ययन करती है। जब हम अठारहवीं सदी के फ्रांस में फैशन की धारणाओं का विश्लेषण करते हैं, तो हम वास्तव में उस समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और लोगों की मानसिकता के विकास को समझने का प्रयास कर रहे होते हैं। यह दृष्टिकोण हमें बताता है कि संस्कृति के ये तत्व कैसे सामाजिक परिवर्तन का हिस्सा बनते हैं और वे मानवीय व्यवहार को कैसे आकार देते हैं।

101. (D) भारत के पूर्व-औपनिवेशिक अतीत की महिमा पर ध्यान केंद्रित करना।
साम्राज्यवादी इतिहास लेखन की मुख्य विशेषता ब्रिटिश शासन को एक आधुनिकीकरण करने वाली शक्ति के रूप में प्रस्तुत करना था। इस विचारधारा के लेखक अक्सर भारतीय समाज को पिछड़ा और 'सभ्य बनाने वाले मिशन' की आवश्यकता वाला बताते थे। वे भारत के पूर्व-औपनिवेशिक अतीत की महिमा करने के बजाय उसकी कमियों को उजागर करते थे ताकि ब्रिटिश प्रभुत्व को नैतिक रूप से सही ठहराया जा सके। भारत के प्राचीन गौरव को उजागर करना वास्तव में राष्ट्रवादी इतिहासकारों का मुख्य उद्देश्य था।

102. (B) केवल 1 और 2
ऐतिहासिक शोध में स्रोतों की प्रकृति अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। प्राथमिक स्रोत वे सामग्रियां हैं जो उसी समय उत्पन्न हुई थीं जिस समय की घटना का अध्ययन किया जा रहा है, जैसे समकालीन समाचार पत्र या प्रत्यक्षदर्शी के दस्तावेज। इसके विपरीत, किसी घटना के सौ साल बाद लिखी गई जीवनी को द्वितीयक स्रोत माना जाता है क्योंकि वह लेखक के अपने विश्लेषण पर आधारित होती है। प्राथमिक स्रोत इतिहासकार को सीधे अतीत के संपर्क में लाते हैं और किसी भी शोध कार्य के आधार स्तंभ माने जाते हैं।

103. (A) इतिहास की व्याख्या करने के लिए एक एकल, सर्वव्यापी ढांचा प्रदान करने का प्रयास करता है।
ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत को एक 'व्यापक सिद्धांत' इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह मानव इतिहास के संपूर्ण विकास को समझने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत मानता है कि इतिहास की सभी प्रमुख घटनाएं, जैसे क्रांति या साम्राज्यों का पतन, अंततः आर्थिक उत्पादन की पद्धतियों में होने वाले परिवर्तनों से जुड़ी होती हैं। यह केवल स्थानीय घटनाओं की व्याख्या नहीं करता, बल्कि आदिम समाज से लेकर भविष्य तक के पूरे मानवीय सफर को एक तर्कसंगत और भौतिक आधार पर समझाता है।

104. (D) कल्हण
बारहवीं शताब्दी के कश्मीरी विद्वान कल्हण को उनकी अमर कृति 'राजतरंगिणी' के लिए जाना जाता है। यह संस्कृत में रचित एक ग्रंथ है जो प्राचीन काल से लेकर कल्हण के अपने समय तक के कश्मीर के राजाओं का क्रमिक इतिहास प्रदान करता है। कल्हण के कार्य की विशिष्टता उनके द्वारा अपनाई गई आलोचनात्मक पद्धति है, जहाँ उन्होंने पिछले अभिलेखों और शिलालेखों का परीक्षण किया। उन्हें भारतीय इतिहास लेखन की वैज्ञानिक परंपरा का जनक माना जाता है क्योंकि उन्होंने पक्षपात रहित होकर ऐतिहासिक सत्य प्रस्तुत किया।

105. (D) इतिहासकार की अपने स्वयं के संदर्भ से अलग होने में असमर्थता।
इतिहास में वस्तुनिष्ठता की समस्या मुख्य रूप से इतिहासकार की मानवीय सीमाओं से जुड़ी है। प्रत्येक शोधकर्ता का अपना एक सांस्कृतिक और वैचारिक परिवेश होता है, जिससे वह पूरी तरह अलग नहीं हो सकता। जब कोई इतिहासकार अतीत की घटनाओं का विश्लेषण करता है, तो उसके वर्तमान मूल्य और व्यक्तिगत विश्वास अनजाने में तथ्यों की व्याख्या को प्रभावित करते हैं। यह निरंतर चुनौती बनी रहती है कि कैसे एक लेखक अपने युग के पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर साक्ष्यों का निष्पक्ष होकर विश्लेषण कर सके।

106. (A) 1, 2, 4, 3
भारतीय इतिहास लेखन के विभिन्न दृष्टिकोणों का उदय देश की बदलती राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के साथ हुआ। सबसे पहले औपनिवेशिक काल में साम्राज्यवादी दृष्टिकोण उभरा, जिसके उत्तर में भारतीयों ने राष्ट्रवादी विचारधारा विकसित की। इसके बाद, आजादी के आसपास और उसके बाद मार्क्सवादी विश्लेषण प्रभावशाली हुआ, जिसने आर्थिक संरचनाओं पर बल दिया। अंततः, सत्तर और अस्सी के दशक में निम्नवर्गीय या सबाल्टर्न अध्ययन समूह का उदय हुआ। यह क्रम भारतीय बौद्धिक चिंतन की क्रमिक परिपक्वता को दर्शाता है।

107. (C) इतिहास और पुरातत्व - भविष्य के सामाजिक रुझानों का अध्ययन।
इतिहास और उसके संबद्ध विषयों के बीच संबंधों के बारे में यह युग्म गलत है क्योंकि पुरातत्व अतीत की भौतिक संस्कृति और अवशेषों के अध्ययन से संबंधित है, न कि भविष्य के रुझानों से। इसके विपरीत, अन्य सभी युग्म सही हैं; भूगोल ऐतिहासिक घटनाओं को संदर्भ प्रदान करता है, अर्थशास्त्र अतीत की उत्पादन प्रणालियों का विश्लेषण करता है, और राजनीति विज्ञान शक्ति संबंधों को समझने में मदद करता है। पुरातत्व का कार्य उन सूचनाओं को उजागर करना है जो लिखित दस्तावेजों में मौजूद नहीं हैं।

108. (A) राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करना और भारतीय हीनता के औपनिवेशिक वृत्तांतों का मुकाबला करना।
भारतीय इतिहास लेखन की राष्ट्रवादी विचारधारा का उदय औपनिवेशिक काल के दौरान एक बौद्धिक प्रतिरोध के रूप में हुआ था। साम्राज्यवादी लेखकों ने भारत को पिछड़ा समाज चित्रित किया था। इसके जवाब में राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने प्राचीन भारत की वैज्ञानिक खोजों और गौरवशाली शासन प्रणालियों को साक्ष्यों के साथ दुनिया के सामने रखा। उनका मुख्य लक्ष्य भारतीयों के भीतर सोए हुए आत्म-सम्मान को जगाना और एक संगठित राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक आधार प्रदान करना था।

109. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
जियाउद्दीन बरनी के लेखन दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक इतिहास को समझने के लिए मूल्यवान प्राथमिक स्रोत हैं। हालांकि, उनका स्वयं का कार्य पूरी तरह से निष्पक्ष नहीं था। बरनी एक रुढ़िवादी विद्वान थे और उनके लेखन में सुल्तानों के प्रति उनके व्यक्तिगत धार्मिक विचार और विशिष्ट वर्गों के प्रति पूर्वाग्रह स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यद्यपि उन्होंने सैद्धांतिक रूप से इतिहासकारों को सत्य बोलने की सलाह दी थी, लेकिन व्यावहारिक रूप से उनका अपना विवरण अक्सर उनके व्यक्तिगत झुकाव से प्रभावित रहा है।

110. (A) विचारों का इतिहास
विचारों का इतिहास ऐतिहासिक शोध की वह विशिष्ट शाखा है जो मानवीय चेतना और अमूर्त अवधारणाओं, जैसे न्याय या समानता, के क्रमिक विकास का अध्ययन करती है। यह इस बात का विश्लेषण करता है कि ये विचार अलग-अलग युगों में कैसे उत्पन्न हुए और समय के साथ उनके अर्थों में क्या परिवर्तन आए। यह केवल भौतिक घटनाओं का वर्णन नहीं है, बल्कि यह उन वैचारिक संघर्षों की खोज है जिन्होंने मानव सभ्यता के स्वरूप को बदलने में निर्णायक भूमिका निभाई है। यह शाखा मानवीय बौद्धिक विकास को दर्शाती है।

111. (A) मानवीय अतीत के पैटर्न, अर्थ और अंतर्निहित सिद्धांत।
इतिहास को दर्शन के रूप में समझने का तात्पर्य यह है कि इतिहास केवल तथ्यों का निर्जीव ढेर नहीं है, बल्कि इसमें एक गहरा अर्थ छिपा होता है। यह दृष्टिकोण यह समझने का प्रयास करता है कि क्या मानव इतिहास में कोई निश्चित प्रारूप है, जैसे सभ्यताओं का क्रमिक उत्थान और पतन। यह घटनाओं के पीछे की गहराई में जाकर उन सार्वभौमिक सिद्धांतों और नैतिक सत्यों की खोज करता है जो मानवीय अनुभवों को एक व्यापक संदर्भ और दिशा प्रदान करते हैं। यह दार्शनिक अन्वेषण है।

112. (A) मध्यस्थों के माध्यम से जानकारी पारित होने पर विरूपण की संभावना।
ऐतिहासिक पद्धति में 'साक्ष्य और उसके संचरण' पर विशेष ध्यान दिया जाता है क्योंकि कोई भी सूचना जब एक पीढ़ी से दूसरी तक पहुँचती है, तो उसके विकृत होने का जोखिम रहता है। इसमें अनुवाद की गलतियाँ या लेखकों द्वारा जानबूझकर किए गए परिवर्तन शामिल हो सकते हैं। एक सतर्क इतिहासकार को यह समझना चाहिए कि जो साक्ष्य उसे आज मिल रहा है, वह अनेक हाथों से होकर गुजरा है। इसलिए, संचरण की इस पूरी प्रक्रिया का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना साक्ष्य की प्रमाणिकता सुनिश्चित करने हेतु अनिवार्य है।

113. (B) भारतीय इतिहास लेखन में अधिक वैज्ञानिक और आलोचनात्मक कार्यप्रणाली।
रामकृष्ण गोपाल भंडारकर का कार्य भारतीय इतिहास लेखन में एक युगांतरकारी परिवर्तन का प्रतीक है। उन्होंने परंपरागत कथावाचक शैली के स्थान पर साक्ष्यों के कठोर परीक्षण और निष्पक्ष विश्लेषण की नींव रखी। उनके अनुसार, इतिहासकार को केवल उन्हीं तथ्यों को स्वीकार करना चाहिए जो ठोस प्रमाणों, जैसे शिलालेखों के तुलनात्मक अध्ययन, पर आधारित हों। भंडारकर ने सिखाया कि इतिहास लेखन में व्यक्तिगत भावनाओं के बजाय वैज्ञानिक तटस्थता होनी चाहिए। उनके इस दृष्टिकोण ने भारत में एक आधुनिक और विश्वसनीय ऐतिहासिक शोध परंपरा को जन्म दिया।

114. (D) इतिहास का रैखिक-प्रगतिशील दृष्टिकोण।
इतिहास की चक्रीय अवधारणा और रैखिक-प्रगतिशील दृष्टिकोण समय को समझने के दो बिल्कुल विपरीत तरीके हैं। चक्रीय सिद्धांत मानता है कि सभ्यताएं विकास और पतन के निश्चित चक्रों में चलती हैं और इतिहास स्वयं को दोहराता है। इसके विपरीत, रैखिक-प्रगतिशील दृष्टिकोण मानता है कि इतिहास कभी पीछे नहीं मुड़ता और वह निरंतर एक बेहतर लक्ष्य की ओर एक सीधी रेखा में आगे बढ़ता है। जहाँ एक ओर चक्र की कल्पना है, वहीं दूसरी ओर निरंतर ऊपर की ओर बढ़ती हुई प्रगति की।

115. (C) संरक्षक को प्रसन्न करने की आवश्यकता
मध्यकालीन इतिहास लेखन में दरबारी इतिहासकारों पर अपने संरक्षक की प्रशंसा करने का बहुत बड़ा दबाव होता था। जब कोई इतिहासकार आधिकारिक अभिलेखों का उपयोग करता है, तो उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि ये दस्तावेज अक्सर राजा की छवि को त्रुटिहीन दिखाने के लिए लिखे गए थे। इसमें राजा की विफलताओं को छिपाने और उसके साधारण कार्यों को भी महान बनाने की प्रवृत्ति होती है। एक निष्पक्ष जीवनी लिखने के लिए इतिहासकार को इन प्रशंसात्मक विवरणों के पीछे छिपे वास्तविक ऐतिहासिक तथ्यों को बड़ी सावधानी से अलग करना पड़ता है।

116. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
भारतीय इतिहास की विभिन्न विधाओं की अपनी अनूठी विशेषताएं हैं। सूत परंपरा में पेशेवर चारणों द्वारा मौखिक रूप से वंशावलियों का संरक्षण किया जाता था। चरित परंपरा मुख्य रूप से शाही जीवनियों पर केंद्रित थी। पौराणिक परंपरा में 'वंशानुचरित' के माध्यम से राजवंशों का कालानुक्रमिक विवरण मिलता है। अंततः कल्हण ने कश्मीर का एक ऐसा ऐतिहासिक वृत्तांत लिखा जिसमें पहली बार आधुनिक आलोचनात्मक पद्धति की झलक दिखाई देती है। यह विविधता प्राचीन भारत की समृद्ध ऐतिहासिक चेतना और लेखन शैलियों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है।

117. (C) किसान, आदिवासी और समाज के अन्य हाशिए के वर्ग।
इतिहास के प्रति निम्नवर्गीय या 'सबाल्टर्न' दृष्टिकोण का केंद्र बिंदु वे लोग हैं जिन्हें पारंपरिक इतिहास लेखन में हमेशा उपेक्षित रखा गया। यह विचारधारा मानती है कि वास्तविक इतिहास केवल राजाओं की जीत की कहानी नहीं है, बल्कि यह उन करोड़ों सामान्य लोगों का संघर्ष है जो समाज की नींव बनाते हैं। निम्नवर्गीय इतिहासकार मुख्य रूप से किसानों के विद्रोहों और आदिवासियों के प्रतिरोध का विश्लेषण करते हैं। उनका उद्देश्य इन समूहों को ऐतिहासिक प्रक्रिया के सक्रिय नायकों के रूप में स्थापित करना है।

118. (B) इतिहास का दायरा जीवन के लगभग हर पहलू को शामिल करने के लिए विस्तृत हो गया है।
आधुनिक समय में इतिहास का दायरा केवल युद्धों और राजाओं की सूचियों तक सीमित नहीं रह गया है। आज इतिहासकार समाज के हर उस पहलू का अध्ययन करते हैं जो मानव जीवन को प्रभावित करता है। इसमें आम लोगों का दैनिक जीवन, आर्थिक प्रणालियाँ, सांस्कृतिक रीति-रिवाज और पर्यावरण का प्रभाव भी शामिल है। अब इतिहास एक ऐसा बहुआयामी विषय बन चुका है जो समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के साथ मिलकर मानवीय अतीत का एक समग्र और संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है।

119. (C) ऐतिहासिक वृत्तांतों के विखंडन पर जोर।
उत्तर-आधुनिकतावादी इतिहास लेखन की सबसे प्रमुख विशेषता किसी एक निश्चित और पूर्ण ऐतिहासिक सत्य के दावे को नकारना है। यह दृष्टिकोण मानता है कि इतिहासकार भाषा के माध्यम से अतीत का एक कृत्रिम निर्माण करता है, जिसमें हमेशा कुछ पूर्वाग्रह छिपे होते हैं। उत्तर-आधुनिकतावादी विद्वान स्थापित वृत्तांतों का 'विखंडन' करते हैं ताकि उनमें मौजूद सत्ता के संबंधों को उजागर किया जा सके। उनके लिए इतिहास कोई एक महान कहानी नहीं, बल्कि कई बिखरी हुई और परस्पर विरोधी आवाजों का एक जटिल संग्रह मात्र है।

120. (D) 1, 2 और 3
डी.डी. कोसंबी भारतीय इतिहास लेखन के क्षेत्र में एक अद्वितीय प्रतिभा थे जिन्होंने बहु-विषयक दृष्टिकोण की नींव रखी। उन्होंने प्राचीन भारत के अध्ययन में मार्क्सवादी सिद्धांतों का अत्यंत मौलिक प्रयोग किया। कोसंबी ने केवल राजाओं के वंशों के बजाय समाज की भौतिक परिस्थितियों, जैसे कृषि के विस्तार और उत्पादन के साधनों, पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उनके शोध ने यह स्पष्ट किया कि कैसे आर्थिक आधार ने सामाजिक संस्थाओं को आकार दिया है, जिससे भारतीय इतिहास के अध्ययन को एक नया वैज्ञानिक धरातल प्राप्त हुआ।

121. (B) परस्पर निर्भर, क्योंकि इतिहास डेटा प्रदान करता है और समाजशास्त्र उपकरण।
इतिहास और समाजशास्त्र के बीच का संबंध अत्यंत गहरा और पूरक है। इतिहास समाजशास्त्र को अतीत की घटनाओं और मानवीय व्यवहार का विशाल कच्चा तथ्य प्रदान करता है। वहीं दूसरी ओर, समाजशास्त्र इतिहासकार को सामाजिक संरचनाओं और संस्थागत परिवर्तनों का विश्लेषण करने के लिए आवश्यक सैद्धांतिक अवधारणाएं और विश्लेषणात्मक उपकरण देता है। बिना ऐतिहासिक संदर्भ के समाजशास्त्र निराधार है, और बिना समाजशास्त्रीय समझ के इतिहास केवल तथ्यों का एक निर्जीव ढेर बनकर रह जाता है। ये दोनों विषय मिलकर शोध को पूर्णता देते हैं।

122. (C) काशी प्रसाद जायसवाल
काशी प्रसाद जायसवाल एक प्रख्यात राष्ट्रवादी इतिहासकार थे जिन्होंने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'हिंदू पॉलिटी' के माध्यम से भारतीय अतीत के प्रति पश्चिमी नजरिए को बदल दिया। उन्होंने साक्ष्यों के आधार पर यह सशक्त तर्क दिया कि प्राचीन भारत में केवल राजतंत्र ही नहीं, बल्कि परिष्कृत गणतांत्रिक व्यवस्थाएं भी मौजूद थीं। जायसवाल के इस कार्य ने साम्राज्यवादी इतिहासकारों के उस दावे को ध्वस्त कर दिया कि भारतीय हमेशा से निरंकुश शासन के आदी थे। उनके शोध ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीयों में राष्ट्रीय गौरव भरा।

123. (B) स्रोतों के विश्लेषण पर आधारित एक व्यवस्थित जांच।
इतिहास में 'शोध' का तात्पर्य केवल पुरानी कहानियों को दोहराना नहीं है, बल्कि यह अतीत के बारे में नए सत्यों की खोज करने की एक कठोर प्रक्रिया है। इसमें उपलब्ध स्रोतों की प्रमाणिकता की जाँच करना और साक्ष्यों के बीच अंतर्संबंधों को समझना शामिल है। एक शोधकर्ता केवल तथ्यों को इकट्ठा नहीं करता, बल्कि वह यह समझने का प्रयास करता है कि कोई घटना क्यों और कैसे हुई। यह निरंतर चलने वाली एक बौद्धिक यात्रा है जो नए प्रमाणों के आधार पर हमारे अतीत की समझ को गहरा बनाती है।

124. (C) एक राष्ट्र बनाने वाले लोगों या राज्य का ऐतिहासिक विकास।
जब कोई इतिहासकार 'राष्ट्रीय इतिहास' लिखता है, तो उसका मुख्य उद्देश्य उन साझा संघर्षों और उपलब्धियों का वर्णन करना होता है जिन्होंने एक विशिष्ट जनसमूह को एक राष्ट्र के रूप में संगठित किया है। इसमें राष्ट्र की राजनीतिक सीमाओं के निर्माण और राष्ट्रीय पहचान के उभरने की कहानी शामिल होती है। राष्ट्रीय इतिहास अक्सर साझा मूल्यों और सामूहिक स्मृति को सुदृढ़ करने का कार्य करता है। यह व्यक्तिगत इतिहास से ऊपर उठकर एक व्यापक पहचान और भविष्य की साझा आकांक्षाओं को ठोस ऐतिहासिक आधार प्रदान करता है।

125. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के प्राच्यवादी विद्वानों ने प्राचीन भारतीय ग्रंथों का गहन अध्ययन किया और उनके अनुवाद प्रस्तुत किए, जो आज भी विद्वतापूर्ण कार्य माने जाते हैं। हालांकि, यह कहना गलत होगा कि उनका उद्देश्य ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के हितों से पूरी तरह अलग था। वास्तव में, प्राचीन भारतीय कानूनों का ज्ञान अंग्रेजों के लिए भारत पर प्रभावी ढंग से शासन करने के लिए एक अनिवार्य प्रशासनिक आवश्यकता थी। अतः उनकी विद्वतापूर्ण रुचि और औपनिवेशिक शासन की जरूरतों के बीच एक गहरा संबंध हमेशा मौजूद रहा है।

126. (C) प्राथमिक स्रोत
ऐतिहासिक शोध में प्राथमिक स्रोत वे मूल दस्तावेज़ या सामग्रियां हैं जो सीधे उस समय या घटना से जुड़े होते हैं जिसका अध्ययन किया जा रहा है। यदि कोई व्यक्ति किसी आंदोलन में स्वयं शामिल था और उसने उस अनुभव के बारे में लिखा है, तो उसका वृत्तांत एक प्राथमिक स्रोत माना जाता है। ये स्रोत इतिहासकार को घटना के सबसे करीब ले जाते हैं और एक प्रत्यक्षदर्शी का दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। प्राथमिक स्रोतों की प्रमाणिकता और तत्कालीन परिवेश के साथ उनकी निकटता उन्हें किसी भी विश्वसनीय शोध का आधार बनाती है।

127. (B) एक पूर्वाग्रह जो अतीत की इतिहासकार की व्याख्या को प्रभावित करता है।
इतिहास में पूर्वाग्रह का तात्पर्य लेखक की उन पहले से बनी धारणाओं या वैचारिक झुकाव से है जो अनजाने में उसके शोध को प्रभावित करते हैं। कोई भी इतिहासकार पूरी तरह से एक शून्य स्थान में कार्य नहीं करता; उसका अपना सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ होता है। यह पूर्वाग्रह तथ्यों के चयन और उनकी व्याख्या के स्वरूप को बदल सकता है। एक ईमानदार इतिहासकार का लक्ष्य अपने इन पूर्वाग्रहों को पहचानना और साक्ष्यों के प्रति पूरी तरह निष्पक्ष रहकर उन्हें कम से कम करने का निरंतर और गंभीर प्रयास करना होता है।

128. (B) गैर-ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण से इतिहास पर नजरिया पेश करती हैं।
बौद्ध और जैन परंपराओं का भारतीय इतिहास लेखन में विशेष महत्व है क्योंकि वे तत्कालीन समाज को ब्राह्मणवादी ग्रंथों से अलग एक वैकल्पिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं। इन ग्रंथों में न केवल धार्मिक दर्शन का विवरण मिलता है, बल्कि वे उस समय के राजाओं और सामाजिक परिवर्तनों की भी बहुमूल्य जानकारी देते हैं। चूंकि इन परंपराओं के अपने स्वतंत्र सिद्धांत थे, उनके वृत्तांत ब्राह्मणवादी साहित्य में दी गई सूचनाओं के सत्यापन और तुलना के लिए एक विश्वसनीय और स्वतंत्र आधार प्रदान करने में सक्षम हैं।

129. (B) राजनीतिक और सामाजिक पहलुओं को कवर करने वाला व्यापक दायरा।
अबुल फजल द्वारा रचित 'अकबरनामा' मध्यकालीन इतिहास लेखन का एक स्मारकीय उदाहरण है जो अपने विस्तृत दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध है। इसमें केवल युद्धों की सूचियाँ नहीं हैं, बल्कि मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था, राजस्व नीतियों और तत्कालीन धार्मिक विविधता का भी सूक्ष्म वर्णन है। अबुल फजल ने इतिहास को एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा, जहाँ राजनीति का समाज और अर्थव्यवस्था के साथ गहरा जुड़ाव दिखाया गया है, जो उस समय के लिए एक अत्यंत उन्नत और आधुनिक ऐतिहासिक दृष्टिकोण माना जाता था।

130. (C) किसी विशेष राजनीतिक दल, विचारधारा या राष्ट्र-राज्य के कार्यों की बिना सोचे-समझे प्रशंसा करता है।
राजनीतिक वफादारी जब इतिहासकार के लेखन पर हावी हो जाती है, तो वह वस्तुनिष्ठ शोध के बजाय राजनीतिक प्रचार का रूप ले लेती है। ऐसा लेखक अपने देश या पसंदीदा नेता के नकारात्मक पहलुओं को छिपाने और उनकी छोटी उपलब्धियों को भी असाधारण दिखाने का प्रयास करता है। इसमें तथ्यों के प्रति निष्पक्षता का अभाव होता है और घटनाओं की व्याख्या केवल एक राजनीतिक लाभ के लिए की जाती है। यह पूर्वाग्रह इतिहास की शैक्षणिक गरिमा को ठेस पहुँचाता है और पाठक को एक असंतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है।

131. (B) पैमाने और केंद्र का
क्षेत्रीय और राष्ट्रीय इतिहास के बीच मुख्य अंतर अध्ययन के भौगोलिक विस्तार और उसके केंद्र बिंदु का है। जहाँ राष्ट्रीय इतिहास पूरे देश को एक एकीकृत इकाई मानकर उसके साझा विकास का अध्ययन करता है, वहीं क्षेत्रीय इतिहास एक विशिष्ट प्रांत या संस्कृति पर गहराई से ध्यान केंद्रित करता है। क्षेत्रीय इतिहास अक्सर उन स्थानीय विशिष्टताओं को उजागर करता है जो बड़े राष्ट्रीय वृत्तांतों में उपेक्षित रह सकती हैं। हालांकि दोनों की कार्यप्रणाली समान हो सकती है, लेकिन उनका उद्देश्य और विश्लेषण का स्तर एक-दूसरे से भिन्न होता है।

132. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
इतिहास को 'कला' मानने वाले विद्वान इस बात पर जोर देते हैं कि इतिहासकार का मुख्य कौशल तथ्यों को एक प्रभावशाली कहानी के रूप में प्रस्तुत करना है। हालांकि, जो लोग इतिहास को 'विज्ञान' मानते हैं, वे वृत्तांत और व्याख्या की भूमिका को पूरी तरह खारिज नहीं करते। विज्ञान के रूप में इतिहास का अर्थ यह है कि व्याख्या का आधार केवल कल्पना नहीं, बल्कि ठोस साक्ष्य और एक कठोर शोध पद्धति होनी चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण केवल मनमानी व्याख्याओं को रोकता है, न कि विषय की व्याख्यात्मक शक्ति को।

133. (A) सभी सामग्री शोध के लिए प्रासंगिक या प्रामाणिक नहीं होगी।
ऐतिहासिक शोध में तथ्यों का चयन एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य चरण है। शोधकर्ता को बड़ी मात्रा में स्रोत प्राप्त होते हैं, लेकिन उसमें से सारी जानकारी शोध के विशिष्ट प्रश्न के लिए उपयोगी नहीं होती। इतिहासकार को प्रत्येक जानकारी की विश्वसनीयता और शोध के विषय से उसकी निकटता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना पड़ता है। केवल उन्हीं तथ्यों को चुना जाता है जो तार्किक निष्कर्ष निकालने में सहायक हों। यह चयनात्मकता ही ऐतिहासिक वृत्तांत को स्पष्ट, सटीक और शैक्षणिक रूप से प्रभावशाली बनाने में मदद करती है।

134. (D) एक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, जो अक्सर भारतीय इतिहास की धर्मनिरपेक्षतावादी और मार्क्सवादी व्याख्याओं को चुनौती देता है।
प्रोफेसर सतीशचंद्र मित्तल आधुनिक भारतीय इतिहासकारों में अपनी राष्ट्रवादी विचारधारा के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने भारतीय इतिहास के उन पक्षों पर ध्यान केंद्रित किया है जो प्रायः मार्क्सवादी इतिहासकारों द्वारा अलग तरह से व्याख्यायित किए गए थे। उनका लेखन भारतीय संस्कृति की निरंतरता, राष्ट्रीय चेतना के विकास और विदेशी आक्रमणों के प्रति भारतीय प्रतिरोध को प्रमुखता प्रदान करता है। मित्तल का कार्य भारतीय इतिहास लेखन में एक वैकल्पिक राष्ट्रवादी स्वर प्रस्तुत करने का प्रयास है, जो राष्ट्र की सांस्कृतिक जड़ों के प्रति गहरा सम्मान रखता है।

135. (D) 1, 2 और 3
भारत में ऐतिहासिक चेतना का विकास अत्यंत प्राचीन रहा है। वैदिक परंपरा में यद्यपि इतिहास धर्म के साथ गुंथा हुआ है, फिर भी इसमें अतीत की स्मृतियों का समावेश है। पुराणों के भीतर वंशावलियों का विवरण ऐतिहासिक निरंतरता को सुरक्षित रखने का एक सचेत प्रयास था। इसके अतिरिक्त, सूत परंपरा के चारणों ने मौखिक रूप से राजाओं के शौर्य और वंशावलियों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया। ये सभी तत्व सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारतीयों के पास अपने अतीत को संजोने की व्यवस्थित पद्धति थी।

136. (C) बौद्धिक इतिहास और तकनीक का इतिहास
प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन और प्रिंटिंग प्रेस के अंतर्संबंध का अध्ययन इतिहास के दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों का संगम है। यह बौद्धिक इतिहास का हिस्सा है क्योंकि यह धार्मिक विचारों में होने वाले क्रांतिकारी परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। साथ ही, यह तकनीक के इतिहास से भी जुड़ा है क्योंकि प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार ने ही उन नए विचारों को जन-जन तक पहुँचाने की भौतिक क्षमता प्रदान की। यह अध्ययन दर्शाता है कि कैसे एक तकनीकी नवाचार ने मानवीय चिंतन की दिशा बदलकर एक बड़े आंदोलन को सफल बनाया।

137. (C) पुरातात्विक साक्ष्यों का उपयोग
इतिहास लेखन में पूर्वाग्रह के कई कारण हो सकते हैं, जैसे लेखक का सामाजिक परिवेश या उसका धार्मिक झुकाव। ये कारक अनजाने में तथ्यों की व्याख्या को प्रभावित कर सकते हैं। इसके विपरीत, पुरातात्विक साक्ष्यों का उपयोग करना पूर्वाग्रह का कारण नहीं, बल्कि उसे कम करने का एक साधन है। सिक्के और भौतिक अवशेष ठोस प्रमाण प्रदान करते हैं जो अक्सर व्यक्तिपरक साहित्यिक विवरणों की पुष्टि या खंडन कर सकते हैं। पुरातात्विक साक्ष्य ऐतिहासिक शोध को अधिक वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ और विश्वसनीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

138. (C) बाणभट्ट
सातवीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान और राजदरबारी कवि बाणभट्ट ने सम्राट हर्षवर्धन की जीवनी 'हर्षचरित' की रचना की थी। यह संस्कृत साहित्य की अनमोल धरोहर है जिसे भारतीय इतिहास की 'चरित' विधा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है। इस ग्रंथ में बाणभट्ट ने हर्ष के वंश और उनकी विजयों का अलंकृत भाषा में वर्णन किया है। हालांकि इसमें अपने संरक्षक के प्रति प्रशंसा का भाव अधिक है, फिर भी तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों को समझने के लिए इसे एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत माना जाता है।

139. (C) एक ईश्वरीय योजना का प्रकट होना।
इतिहास के प्रति धार्मिक दृष्टिकोण मानवीय घटनाओं को केवल मनुष्यों के निर्णयों का परिणाम नहीं मानता, बल्कि उन्हें एक ईश्वरीय उद्देश्य के हिस्से के रूप में देखता है। इस विचारधारा के अनुसार, साम्राज्यों का उत्थान-पतन ईश्वर के न्याय का परिणाम है। इतिहासकार यहाँ यह दिखाने का प्रयास करता है कि कैसे ईश्वर धर्म की रक्षा करता है और अधर्म का विनाश करता है। यह दृष्टिकोण इतिहास को नैतिकता के चश्मे से देखता है, जहाँ प्रत्येक घटना का एक गहरा और पूर्व-निर्धारित धार्मिक अर्थ होता है।

140. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
इतिहासकार का कार्य पूर्णतः यांत्रिक नहीं हो सकता क्योंकि विषय के चयन से लेकर साक्ष्यों की व्याख्या तक, प्रत्येक चरण में लेखक का व्यक्तिगत निर्णय शामिल होता है। यही अंतर्निहित व्यक्तिपरकता इतिहास को एक मानवीय कला के रूप में भी स्थापित करती है। इतिहासकार को बिखरे हुए तथ्यों को एक सुसंगत विश्लेषण में पिरोने के लिए अपनी कल्पना और भाषाई कौशल का उपयोग करना पड़ता है। अतः इतिहास विज्ञान और कला का एक अनूठा संगम है, जहाँ वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग कलात्मक प्रस्तुति हेतु किया जाता है।

141. (B) वैश्विक संदर्भ में घटनाओं और प्रक्रियाओं का विश्लेषण करना।
विश्व इतिहास की अवधारणा इतिहासकारों को संकीर्ण राष्ट्रीय सीमाओं से ऊपर उठने और मानव सभ्यता को एक समग्र इकाई के रूप में देखने के लिए प्रेरित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में होने वाली घटनाएं कैसे एक-दूसरे से जुड़ी हुई थीं, जैसे व्यापारिक मार्ग या धर्मों का प्रसार। यह विभिन्न संस्कृतियों के बीच तुलनात्मक अध्ययन पर बल देता है और उन वैश्विक परिवर्तनों को उजागर करता है जिन्होंने मानवता के भविष्य को आकार दिया है। यह दृष्टिकोण इतिहास को समावेशी बनाता है।

142. (C) ऐतिहासिक भौतिकवाद पर आधारित एक व्यापक सिद्धांत
इतिहास की मार्क्सवादी व्याख्या कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' के व्यापक सिद्धांत पर आधारित है। यह सिद्धांत मानता है कि मानवीय समाज का संपूर्ण विकास उसकी आर्थिक स्थितियों और उत्पादन की पद्धतियों द्वारा संचालित होता है। इसके अनुसार, इतिहास विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच संसाधनों के नियंत्रण के लिए होने वाले निरंतर संघर्ष की एक क्रमिक प्रगति है। यह केवल व्यक्तिगत कार्यों की व्याख्या नहीं करता, बल्कि आदिम युग से आधुनिक पूंजीवाद तक के पूरे इतिहास को एक वैज्ञानिक ढांचे में समझाता है।

143. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
ऐतिहासिक अध्ययन के विभिन्न तकनीकी शब्दों के अपने विशिष्ट अर्थ हैं जो शोध प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं। नेपोलियन द्वारा लिखा गया मूल पत्र एक प्राथमिक स्रोत है क्योंकि वह सीधे घटना के काल से संबंधित है। आधुनिक शोध लेख, जो बाद में विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं, द्वितीयक स्रोत कहलाते हैं। इतिहास लेखन की प्रक्रिया का व्यवस्थित अध्ययन 'हिस्ट्रीयोग्राफी' कहलाता है। अंततः, इतिहासकार के कार्य को प्रभावित करने वाला कोई भी पूर्वग्रह पूर्वाग्रह कहलाता है। इन अवधारणाओं की सही समझ शोध को निष्पक्ष बनाती है।

144. (C) मनुष्य और नागरिक के अधिकारों की घोषणा (1789)।
फ्रांसीसी क्रांति के अध्ययन के लिए 'मनुष्य और नागरिक के अधिकारों की घोषणा' एक उत्कृष्ट प्राथमिक स्रोत है क्योंकि यह दस्तावेज सीधे क्रांति के दौर में 1789 में तैयार किया गया था। यह तत्कालीन क्रांतिकारियों के विचारों और उनके राजनीतिक दर्शन का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करता है। अन्य विकल्प द्वितीयक स्रोत हैं क्योंकि वे बाद में किए गए विश्लेषण हैं। प्राथमिक स्रोत होने के नाते यह घोषणापत्र इतिहासकारों को उस युग की वास्तविक भावना और कानूनी परिवर्तनों के बिल्कुल करीब ले जाने में मदद करता है।

145. (A) कालदोष, अतीत पर आधुनिक मूल्यों को थोपने की गलती।
यह प्रसिद्ध कथन इतिहासकारों को चेतावनी देता है कि वे अतीत को आज के चश्मे से न देखें। प्रत्येक कालखंड की अपनी विशिष्ट सामाजिक और नैतिक मान्यताएं होती हैं जो आज से बहुत भिन्न हो सकती हैं। 'कालदोष' वह गलती है जब कोई इतिहासकार अतीत की घटनाओं का मूल्यांकन वर्तमान के लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर करने लगता है। एक कुशल इतिहासकार को अतीत को उसके अपने ही संदर्भ में समझने का प्रयास करना चाहिए, ताकि वह उस समय की वास्तविकता को बिना किसी विकृति के प्रस्तुत कर सके।

146. (B) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की वैधता और लाभों को प्रदर्शित करना।
साम्राज्यवादी विचारधारा का मुख्य उद्देश्य भारत पर ब्रिटिश शासन को नैतिक और प्रशासनिक रूप से सही ठहराना था। इस दृष्टिकोण के इतिहासकारों ने अक्सर भारत को एक ऐसी भूमि के रूप में चित्रित किया जो निरंतर विदेशी आक्रमणों से त्रस्त थी। उन्होंने तर्क दिया कि ब्रिटिश शासन ने भारत में पहली बार शांति और व्यवस्था प्रदान की है। उनका मुख्य लक्ष्य औपनिवेशिक प्रभुत्व को एक उपकारी शक्ति के रूप में दिखाना था ताकि भारतीयों के बीच शासन के प्रति स्वीकृति पैदा की जा सके और प्रतिरोध को कम किया जा सके।

147. (B) सामाजिक इतिहास
गुप्त काल में जाति व्यवस्था, पारिवारिक संबंधों और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच गतिशीलता का अध्ययन 'सामाजिक इतिहास' के अंतर्गत आता है। यह शाखा केवल राजाओं की जीत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गहराई से इस बात की जाँच करती है कि उस समय का समाज आंतरिक रूप से कैसे संगठित था। इसमें महिलाओं की स्थिति और विवाह की प्रथाओं का विश्लेषण किया जाता है। सामाजिक इतिहास हमें यह समझने में मदद करता है कि आम लोगों का जीवन और उनके सामाजिक मूल्य समय के साथ कैसे विकसित हुए।

148. (B) यह एक जीवनी संबंधी कृति है, जो अक्सर एक संरक्षक पर केंद्रित प्रशंसनीय शैली में होती है।
प्राचीन भारत में 'चरित' परंपरा इतिहास लेखन की एक ऐसी विधा थी जिसमें किसी राजा या महान व्यक्तित्व के जीवन का विस्तृत वर्णन किया जाता था। ये रचनाएँ प्रायः राजदरबार के कवियों द्वारा लिखी जाती थीं, जिनका उद्देश्य अपने संरक्षक की उपलब्धियों का महिमामंडन करना होता था। बाणभट्ट रचित 'हर्षचरित' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। हालांकि इन ग्रंथों में ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख मिलता है, लेकिन इनकी शैली अक्सर अलंकारिक और प्रशंसनीय होती है, जिससे इतिहासकारों को वास्तविक तथ्यों और साहित्यिक अतिशयोक्ति के बीच संतुलन बनाना पड़ता है।

149. (A) यदि आलोचनात्मक रूप से उपयोग किया जाए तो साहित्य सामाजिक इतिहास का स्रोत हो सकता है।
इतिहास और साहित्य का संबंध अत्यंत जटिल लेकिन फलदायी है। साहित्य किसी भी कालखंड की सामाजिक चेतना का दर्पण होता है, जहाँ लेखक अपने समय की समस्याओं और जनजीवन को शब्दों में पिरोते हैं। हालांकि साहित्य में कल्पना का पुट होता है, फिर भी एक चतुर इतिहासकार इसके माध्यम से उस युग की जनमानस की सोच को समझ सकता है। बस इसके लिए कठोर आलोचनात्मक परीक्षण की आवश्यकता होती है ताकि काल्पनिक अंशों और वास्तविक ऐतिहासिक साक्ष्यों के बीच स्पष्ट अंतर किया जा सके।

150. (B) किसी तर्क का समर्थन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले स्रोतों से प्राप्त जानकारी।
ऐतिहासिक शोध में 'साक्ष्य' वे प्रमाण हैं जिनका उपयोग इतिहासकार अपने निष्कर्षों की पुष्टि के लिए करता है। साक्ष्य सिक्के, शिलालेख या मूल दस्तावेज हो सकते हैं। साक्ष्य अपने आप में अंतिम सत्य नहीं होते; उनकी प्रमाणिकता की जाँच करना और उनकी सही व्याख्या करना इतिहासकार का मुख्य उत्तरदायित्व है। बिना किसी ठोस साक्ष्य के कोई भी ऐतिहासिक विवरण केवल एक कल्पना बनकर रह जाता है। साक्ष्य ही वह आधार हैं जो इतिहास को एक विश्वसनीय और वैज्ञानिक विषय के रूप में स्थापित करते हैं।

151. (C) मनोविश्लेषणात्मक
इतिहास लेखन में विभिन्न दृष्टिकोणों का उपयोग समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए किया जाता है। राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी और निम्नवर्गीय दृष्टिकोण भारतीय इतिहास को समझने के सुस्थापित और व्यापक शैक्षणिक ढांचे हैं। इसके विपरीत, मनोविश्लेषणात्मक पद्धति मुख्य रूप से मनोविज्ञान के क्षेत्र से संबंधित है, जिसका उपयोग व्यक्तिगत व्यवहार के अध्ययन के लिए किया जाता है। यद्यपि कुछ विद्वान इसका सीमित उपयोग कर सकते हैं, लेकिन इसे इतिहास लेखन के प्राथमिक और व्यापक दृष्टिकोण के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है।

152. (B) निम्नवर्गीय
"नीचे से इतिहास" शब्द निम्नवर्गीय दृष्टिकोण की सबसे प्रमुख पहचान है। यह विचारधारा मानती है कि इतिहास केवल राजाओं और प्रशासकों के कार्यों की कहानी नहीं है। इसके बजाय, यह आम जनता, किसानों और समाज के उपेक्षित वर्गों के अनुभवों को केंद्र में रखने का आह्वान करती है। यह दृष्टिकोण पारंपरिक इतिहास लेखन के कुलीनवाद को चुनौती देता है और यह दर्शाता है कि कैसे समाज के साधारण लोगों ने भी ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को आकार देने में निर्णायक और सक्रिय भूमिका निभाई है।

153. (C) धार्मिक
जो इतिहासकार घटनाओं की व्याख्या ईश्वरीय इच्छा के रूप में करता है, वह इतिहास के प्रति 'धार्मिक दृष्टिकोण' अपना रहा होता है। इस विचारधारा के अनुसार, मानवीय इतिहास एक पूर्व-निर्धारित पथ पर अग्रसर है जहाँ प्रत्येक महत्वपूर्ण घटना के पीछे ईश्वर का कोई विशेष उद्देश्य छिपा होता है। यहाँ राजाओं का उत्थान-पतन मानवीय त्रुटियों के बजाय ईश्वरीय न्याय के रूप में देखा जाता है। यह दृष्टिकोण इतिहास को नैतिकता के साथ जोड़कर उसे एक उच्चतर दार्शनिक आधार प्रदान करने का प्रयास करता है।

154. (C) पूछताछ या जांच
अंग्रेजी शब्द 'हिस्ट्री' की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'हिस्टोरिया' से हुई है, जिसका मूल अर्थ सत्य की खोज के लिए की गई गहन पूछताछ या व्यवस्थित जाँच है। प्राचीन यूनान में इस शब्द का प्रयोग किसी घटना के पीछे के वास्तविक कारणों को खोजने की प्रक्रिया के लिए किया जाता था। यह अर्थ स्पष्ट करता है कि इतिहास प्रारंभ से ही केवल सूचनाओं का निष्क्रिय संग्रह नहीं था, बल्कि यह साक्ष्यों के माध्यम से अतीत की गुत्थियों को सुलझाने की एक सक्रिय बौद्धिक प्रक्रिया के रूप में विकसित हुआ।

155. (A) केवल 1
कल्हण रचित 'राजतरंगिणी' भारतीय इतिहास लेखन में अपनी वैज्ञानिक कार्यप्रणाली के लिए प्रशंसित है, क्योंकि इसमें स्रोतों के आलोचनात्मक विश्लेषण का गंभीर प्रयास मिलता है। इसके विपरीत, बाणभट्ट का 'हर्षचरित' पूरी तरह निष्पक्ष नहीं है, क्योंकि वह सम्राट हर्ष की प्रशंसा और साहित्यिक अलंकरण से भरा हुआ है। इसी प्रकार, अबुल फजल का 'अकबरनामा' भी मुगल दरबार के संरक्षण में लिखा गया एक आधिकारिक वृत्तांत था। अतः केवल कल्हण का कार्य ही आधुनिक ऐतिहासिक चेतना के मानकों के करीब दिखाई देता है।

156. (C) राष्ट्रवादी इतिहास लेखन की एक प्रमुख परियोजना
आर.सी. मजूमदार आधुनिक भारतीय इतिहासकारों में राष्ट्रवादी विचारधारा के एक स्तंभ माने जाते हैं। उनके द्वारा संपादित "द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल" श्रृंखला भारतीय इतिहास लेखन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण परियोजना है। इस कार्य का मुख्य उद्देश्य भारतीय इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना था। मजूमदार ने साक्ष्यों के आधार पर भारत की सांस्कृतिक एकता और गौरवशाली अतीत को रेखांकित किया, जिससे स्वतंत्रता के बाद के भारत में एक ठोस राष्ट्रीय और ऐतिहासिक चेतना का निर्माण हुआ।

157. (B) इतिहासकार के तर्क की वस्तुनिष्ठता और वैधता।
ऐतिहासिक शोध में तथ्यों का चयन एक निर्णायक चरण है जो सीधे तौर पर शोध के निष्कर्षों की प्रमाणिकता को प्रभावित करता है। चूँकि इतिहासकार के पास सूचनाओं का अंबार होता है, वह किन तथ्यों को अपने लेखन में शामिल करता है, यही उसके विश्लेषण की दिशा तय करता है। यदि तथ्यों का चयन केवल एक विशेष विचारधारा को पुष्ट करने के लिए किया जाता है, तो कार्य की वस्तुनिष्ठता समाप्त हो जाती है। इसलिए, निष्पक्षता के लिए यह अनिवार्य है कि तथ्यों का चयन पूर्णतः साक्ष्य की विश्वसनीयता पर आधारित हो।

158. (C) पुरातत्व
पुरातत्व इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण संबद्ध विषय है जो मुख्य रूप से भौतिक अवशेषों के माध्यम से अतीत का अध्ययन करता है। इसकी प्राथमिक पद्धति उत्खनन है, जिसके द्वारा प्राचीन बस्तियों और मिट्टी के बर्तनों को खोजा जाता है। ये भौतिक साक्ष्य विशेष रूप से उन युगों के लिए अपरिहार्य हैं जिनका कोई लिखित इतिहास उपलब्ध नहीं है। पुरातत्व के माध्यम से हम तत्कालीन मानव की तकनीक और सामाजिक जीवन की सीधी जानकारी प्राप्त करते हैं, जो लिखित स्रोतों की सीमाओं को भरने में सहायक होती है।

159. (A) नृवंशकेंद्रित और इसने उपनिवेशवाद के हितों की सेवा की।
साम्राज्यवादी इतिहास लेखन की सबसे कड़ी आलोचना यह है कि वह यूरोपीय दृष्टिकोण को ही श्रेष्ठ मानता था। इस विचारधारा के लेखकों का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश औपनिवेशिक नियंत्रण को नैतिक आधार पर सही ठहराना था। उन्होंने जानबूझकर भारतीय इतिहास को इस तरह प्रस्तुत किया जिससे यह साबित हो सके कि भारत हमेशा से विभाजित रहा है और उसे प्रगति के लिए ब्रिटिश शासन की आवश्यकता है। यह दृष्टिकोण निष्पक्ष शोध के बजाय राजनीतिक उद्देश्यों और औपनिवेशिक प्रभुत्व की रक्षा से प्रेरित था।

160. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
निम्नवर्गीय अध्ययन समूह ने भारतीय इतिहास लेखन की दिशा को बदलने का कार्य किया। उन्होंने यह सशक्त तर्क दिया कि पूर्ववर्ती साम्राज्यवादी और राष्ट्रवादी दोनों ही इतिहास मुख्य रूप से कुलीन वर्गों के कार्यों तक सीमित थे, जिससे समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा ओझल रह गया। इस परियोजना का उद्देश्य किसानों और शोषितों के दृष्टिकोण से इतिहास को फिर से लिखना था। यह प्रयास न केवल इतिहास को अधिक समावेशी बनाता है, बल्कि मानवीय एजेंसी के उन नए आयामों को भी उजागर करता है।

161. (B) कार्ल मार्क्स
ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत कार्ल मार्क्स के दार्शनिक चिंतन का आधार है, जिसने इतिहास को देखने का एक नया नजरिया प्रदान किया। मार्क्स के अनुसार, समाज का आर्थिक ढांचा ही उसकी राजनीति और संस्कृति की दिशा तय करता

है। उन्होंने तर्क दिया कि मानवीय इतिहास विभिन्न वर्गों के बीच भौतिक संसाधनों और उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण के लिए होने वाले संघर्षों की एक क्रमिक श्रृंखला है। यह सिद्धांत महान व्यक्तियों के कार्यों के बजाय भौतिक परिस्थितियों को ऐतिहासिक बदलाव का प्राथमिक चालक और निर्णायक कारक मानता है।

162. (A) विदेशी शासन के खिलाफ प्रतिरोध का लंबा इतिहास और भारत की सांस्कृतिक एकता।
राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से लिखा गया भारत का इतिहास मुख्य रूप से देश की आंतरिक शक्ति और अखंडता पर केंद्रित होता है। ऐसे वृत्तांतों में इस बात पर बल दिया जाता है कि भारत प्राचीन काल से ही एक सांस्कृतिक इकाई रहा है। राष्ट्रवादी इतिहासकार भारत के प्राचीन गौरव और आध्यात्मिक ऊंचाइयों को रेखांकित करते हैं ताकि नागरिकों में स्वाभिमान पैदा किया जा सके। उनका मुख्य उद्देश्य उन औपनिवेशिक धारणाओं को तोड़ना है जो भारत को हमेशा से विभाजित और कमजोर समाज के रूप में चित्रित करती थीं।

163. (B) चक्रीय, महान युगों के माध्यम से आगे बढ़ता हुआ।
प्राचीन भारतीय पौराणिक परंपरा में समय की अवधारणा को एक निरंतर ऊपर की ओर बढ़ती रेखा के बजाय एक महान चक्र के रूप में देखा गया था। इसमें समय को सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग जैसे विशाल युगों में विभाजित किया गया है, जो एक के बाद एक दोहराए जाते हैं। यह चक्रीय दृष्टिकोण यह मानता है कि सृष्टि का निर्माण, विकास और पतन एक शाश्वत प्रक्रिया है। यह विचारधारा आधुनिक रैखिक इतिहास से भिन्न है क्योंकि इसमें घटनाओं की अद्वितीयता के बजाय उनके आवर्ती स्वभाव पर अधिक बल है।

164. (B) इतिहासकार के दावों के लिए एक तथ्यात्मक आधार और समर्थन प्रदान करना।
ऐतिहासिक लेखन में साक्ष्य की भूमिका वही है जो विज्ञान में प्रयोगों की होती है। बिना साक्ष्य के इतिहास केवल एक काल्पनिक कहानी या निराधार अनुमान बनकर रह जाता है। साक्ष्य ही वह कसौटी है जिस पर इतिहासकार के प्रत्येक दावे को परखा जाता है। यह लेखक के तर्कों को प्रमाणिकता प्रदान करता है और पाठकों को विश्वास दिलाता है कि प्रस्तुत विवरण वास्तविक घटनाओं पर आधारित है। साक्ष्यों का ईमानदारी से उपयोग ही ऐतिहासिक शोध को विश्वसनीय और एक सम्मानित शैक्षणिक विधा के रूप में स्थापित करता है।

165. (B) धार्मिक भजनों और अनुष्ठानों में समाहित ऐतिहासिक स्मृति।
भारत की वैदिक परंपरा में इतिहास लेखन का आधुनिक स्वरूप तो नहीं मिलता, लेकिन इसमें प्राचीन समाज की गहरी ऐतिहासिक स्मृतियाँ सुरक्षित हैं। वेदों के भजनों और अनुष्ठानों के विवरणों में तत्कालीन कबीलों के संघर्षों और सामाजिक जीवन की महत्वपूर्ण झलकियाँ मिलती हैं। यहाँ इतिहास स्वतंत्र रूप से उपलब्ध न होकर धार्मिक साहित्य के भीतर ही एक अंतर्निहित अंग के रूप में मौजूद है। विद्वान इन रचनाओं का विश्लेषण करके उस युग की राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का पुनर्निर्माण करते हैं, जो निरंतरता समझने में सहायक है।

166. (C) अतीत के व्यापक पैटर्न और अर्थ।
जो इतिहासकार इतिहास को एक दर्शन के रूप में देखता है, उसकी रुचि केवल तिथियों को इकट्ठा करने में नहीं होती। वह यह जानने का प्रयास करता है कि क्या मानवीय अतीत में कोई गहरी लय या दिशा छिपी हुई है। ऐसा विद्वान सभ्यताओं के उदय और पतन के अंतर्निहित कारणों और मानवीय प्रगति की प्रकृति पर चिंतन करता है। उसके लिए इतिहास मानव जाति के सामूहिक अनुभवों का एक ऐसा दर्पण है जिसमें वह भविष्य के लिए संकेत और अस्तित्व के मौलिक प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है।

167. (B) जियाउद्दीन बरनी : दिल्ली सल्तनत के एक इतिहासकार, तारीख-ए-फिरोज शाही के लेखक।
जियाउद्दीन बरनी चौदहवीं शताब्दी के एक अत्यंत महत्वपूर्ण इतिहासकार थे जिन्होंने 'तारीख-ए-फिरोज शाही' लिखकर दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक इतिहास को अमर कर दिया। अन्य विकल्प गलत सुमेलित हैं; मिन्हाज-उस-सिराज ने 'तबकात-ए-नासिरी' लिखी थी, अबुल फजल ने मुगल काल का 'अकबरनामा' लिखा था, और कल्हण ने कश्मीर का इतिहास 'राजतरंगिणी' रचा था। बरनी का कार्य न केवल घटनाओं का वर्णन करता है, बल्कि वह सुल्तानों की नीतियों और तत्कालीन समाज का भी गहन विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

168. (A) मुख्य रूप से सामाजिक इतिहास, आर्थिक और राजनीतिक इतिहास के साथ संबंधों के साथ।
ऐतिहासिक महामारियों का अध्ययन एक जटिल और बहुआयामी विषय है जो मुख्य रूप से सामाजिक इतिहास के दायरे में आता है। यह विश्लेषण करता है कि बीमारियों ने जनसांख्यिकी और लोक मान्यताओं को कैसे बदला। साथ ही, इसका गहरा संबंध आर्थिक इतिहास से भी है क्योंकि महामारियां श्रम बाजार को प्रभावित करती हैं, और राजनीतिक इतिहास से भी क्योंकि वे सार्वजनिक नीतियों में बदलाव लाती हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि कैसे एक स्वास्थ्य संकट पूरे समाज के भविष्य को मौलिक रूप से बदलने की क्षमता रखता है।

169. (B) उन्हें तथ्यात्मक वास्तविकता के प्रत्यक्ष प्रतिबिंब के रूप में मानना।
साहित्यिक स्रोतों का उपयोग करते समय एक इतिहासकार को इस बुनियादी गलती से बचना चाहिए कि वह कविता या नाटक में वर्णित प्रत्येक बात को पूरी तरह सच मान ले। साहित्यकार अक्सर अपने युग की समस्याओं को व्यक्त करने के लिए कल्पना और अतिशयोक्ति का सहारा लेते हैं। यद्यपि साहित्य समाज की मानसिकता को समझने का एक शानदार जरिया है, लेकिन इसमें ऐतिहासिक तथ्यों को अलंकृत करके प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए, साहित्य को केवल एक पूरक स्रोत के रूप में देखा जाना चाहिए और उसका सत्यापन करना अनिवार्य है।

170. (A) पश्चिमी विद्वानों द्वारा पूर्व का अध्ययन, जो अक्सर इसके अतीत का रुमानी चित्रण करते हैं।
प्राच्यवाद या ओरिएंटलिज्म अठारहवीं सदी के उन पश्चिमी विद्वानों के दृष्टिकोण को संदर्भित करता है जिन्होंने पूर्व की संस्कृति और इतिहास का गहन अध्ययन किया। ये विद्वान अक्सर पूर्वी समाजों को रहस्यमयी और पश्चिम से मौलिक रूप से भिन्न मानते थे। हालांकि उन्होंने प्राचीन ग्रंथों के अनुवाद में महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन उनके विवरण अक्सर यूरोपीय श्रेष्ठता की भावना और पूर्व के प्रति एक स्थिर छवि से प्रभावित थे। यह दृष्टिकोण यह समझने में मदद करता है कि कैसे पश्चिम ने अपने उपनिवेशों को बौद्धिक रूप से परिभाषित किया।

171. (B) यह सुनिश्चित करने के लिए कि इतिहास एक सम्मानित और विश्वसनीय शैक्षणिक विषय हो।
इतिहास में वस्तुनिष्ठता की मांग केवल एक सैद्धांतिक आदर्श नहीं है, बल्कि यह इस विषय की साख बचाने की एक अनिवार्य आवश्यकता है। यदि ऐतिहासिक लेखन केवल लेखक की भावनाओं या किसी विचारधारा का पक्ष लेगा, तो वह समाज में अपनी विश्वसनीयता खो देगा। वस्तुनिष्ठता ही वह आधार है जो इतिहास को केवल एक प्रचार सामग्री होने से बचाती है। निष्पक्ष शोध के माध्यम से ही इतिहास एक ऐसा गंभीर शैक्षणिक अनुशासन बन पाता है जिसका उपयोग समाज की वास्तविक समझ विकसित करने के लिए किया जा सकता है।

172. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
इतिहास लेखन की विभिन्न विचारधाराओं ने विशिष्ट विद्वानों के माध्यम से अपनी पहचान बनाई है। विंसेंट स्मिथ साम्राज्यवादी दृष्टिकोण के प्रतिनिधि हैं, जिन्होंने ब्रिटिश शासन के संदर्भ में भारत को देखा। आर.सी. मजूमदार ने राष्ट्रवादी गौरव पर आधारित इतिहास का संपादन किया। डी.डी. कोसंबी ने मार्क्सवादी सिद्धांतों को भारतीय इतिहास में लागू कर आर्थिक संरचनाओं पर बल दिया। रणजीत गुहा ने निम्नवर्गीय समूह का नेतृत्व करते हुए समाज के सबसे निचले वर्गों के इतिहास को केंद्र में रखा। यह विविधता शोध के व्यापक फलक को दर्शाती है।

173. (C) उत्पादन की आर्थिक पद्धति है।
ऐतिहासिक भौतिकवाद के अनुसार, किसी भी समाज की वास्तविक नींव उसका आर्थिक ढांचा होता है, जिसे उत्पादन की पद्धति कहा जाता है। इसमें उत्पादन के साधन और उत्पादन के संबंध शामिल होते हैं। मार्क्सवादी विचारधारा मानती है कि यह आर्थिक आधार ही समाज की अन्य सभी संस्थाओं, जैसे राजनीति, कानून और संस्कृति का स्वरूप निर्धारित करता है। जब आर्थिक आधार में बदलाव आता है, तो पूरी सामाजिक संरचना भी बदल जाती है, जिससे इतिहास एक नए युग में प्रवेश करता है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

174. (A) अत्यधिक पितृसत्तात्मक समाज का एक इतिहासकार अतीत में महिलाओं की भूमिका की अनदेखी कर रहा है।
सामाजिक परिवेश से उत्पन्न पूर्वाग्रह तब दिखाई देता है जब एक इतिहासकार अपने युग की मान्यताओं को अनजाने में अपने शोध पर थोप देता है। यदि कोई लेखक एक ऐसे समाज में पला-बढ़ा है जहाँ पुरुषों को ही प्रधान माना जाता है, तो वह ऐतिहासिक स्रोतों का विश्लेषण करते समय महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान को नजरअंदाज कर सकता है। यह पूर्वाग्रह इसलिए खतरनाक है क्योंकि लेखक इसे स्वाभाविक मानता है और उसे अपनी गलती का एहसास भी नहीं होता। अतः इतिहासकार को अपने परिवेश के प्रति सतर्क रहना चाहिए।

175. (B) केवल 1 और 2
अबुल फजल मुगल सम्राट अकबर के प्रभावशाली दरबारी इतिहासकार थे और उनकी कृति 'अकबरनामा' उस युग का सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है। इसमें प्रशासन और संस्कृति का सूक्ष्म वर्णन मिलता है। हालांकि, यह कहना गलत होगा कि उनका लेखन पूरी तरह वस्तुनिष्ठ है। एक दरबारी होने के नाते, अबुल फजल ने अपने संरक्षक अकबर को एक 'आदर्श शासक' और ईश्वरीय प्रकाश के रूप में प्रस्तुत किया है। इसलिए, ऐतिहासिक तथ्यों को स्वीकार करते समय उनके प्रशंसात्मक लहजे और राजकीय झुकाव को ध्यान में रखना आवश्यक है।

176. (D) उपरोक्त सभी।
इतिहास में वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना प्राकृतिक विज्ञानों की तुलना में बहुत अधिक चुनौतीपूर्ण है। सबसे पहले, इतिहासकार स्वयं उस समाज का हिस्सा है जिसका वह अध्ययन कर रहा है, जिससे पूर्ण तटस्थता कठिन हो जाती है। दूसरे, ऐतिहासिक घटनाएं अद्वितीय होती हैं और उन्हें दोहराकर सिद्ध नहीं किया जा सकता। अंत में, इतिहासकार को अक्सर अपूर्ण स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है, जिनकी व्याख्या में व्यक्तिपरकता का आना स्वाभाविक है। ये सभी कारक मिलकर इतिहास को एक ऐसा विषय बनाते हैं जहाँ निरंतर आत्म-जागरूकता अनिवार्य है।

177. (B) विचारों का इतिहास
जब कोई इतिहासकार 'धर्म' जैसी अमूर्त अवधारणा के समय के साथ होने वाले क्रमिक विकास का अध्ययन करता है, तो वह 'विचारों के इतिहास' के क्षेत्र में कार्य कर रहा होता है। इसमें इस बात का विश्लेषण किया जाता है कि प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक काल तक धर्म के अर्थ और उसके सामाजिक प्रभाव में क्या बदलाव आए। यह अध्ययन केवल भौतिक घटनाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह मानवीय चेतना की उस यात्रा को समझने का प्रयास करता है जिसने सदियों से समाज की नैतिक और सांस्कृतिक नींव को आकार दिया है।

178. (B) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा ऐतिहासिक जानकारी आगे बढ़ाई जाती है और संभावित रूप से बदल जाती है।
'साक्ष्य और उसका संचरण' ऐतिहासिक शोध की एक अत्यंत संवेदनशील प्रक्रिया है। इसका अर्थ यह है कि कोई भी सूचना जब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है, तो वह अनेक अनुवादकों और नकल करने वालों के हाथों से होकर गुजरती है। संचरण के इस लंबे सफर के दौरान मूल संदेश के विकृत होने या महत्वपूर्ण हिस्सों के लुप्त होने का डर हमेशा रहता है। एक कुशल इतिहासकार के लिए यह समझना अनिवार्य है कि

संचरण की इस प्रक्रिया ने उपलब्ध साक्ष्य की प्रमाणिकता को किस प्रकार प्रभावित किया है।

179. (B) हाशिए के समूहों के दृष्टिकोण से इतिहास का पुनर्मूल्यांकन करना।
निम्नवर्गीय अध्ययन समूह का प्राथमिक उद्देश्य इतिहास लेखन के पारंपरिक ढांचे को चुनौती देना था जो केवल कुलीन वर्गों पर केंद्रित था। इस समूह के विद्वानों ने यह तर्क दिया कि वास्तविक ऐतिहासिक परिवर्तन में आम जनता और शोषितों की सक्रिय भूमिका को नजरअंदाज किया गया है। उनका लक्ष्य इन उपेक्षित समूहों के अनुभवों और उनके प्रतिरोध के स्वर को इतिहास की मुख्यधारा में वापस लाना है। यह दृष्टिकोण इतिहास को अधिक लोकतांत्रिक और समावेशी बनाने का एक महत्वपूर्ण बौद्धिक प्रयास माना जाता है।

180. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' भारतीय इतिहास लेखन में एक क्रांतिकारी ग्रंथ माना जाता है क्योंकि इसमें पहली बार आधुनिक शोध की झलक दिखाई देती है। कल्हण ने केवल किंवदंतियों पर भरोसा नहीं किया, बल्कि उन्होंने शिलालेखों और सिक्कों का अत्यंत सावधानीपूर्वक परीक्षण किया। उन्होंने एक सच्चे इतिहासकार की तरह निष्पक्षता का आदर्श प्रस्तुत किया और शासकों के दोषों को भी निर्भीकता से उजागर किया। यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण और कार्य-कारण संबंध की समझ कल्हण को अपने समय के अन्य लेखकों से अलग और आधुनिक बनाती है।

181. (B) मोहनजोदड़ो से खुदाई में मिली मुहरें और मिट्टी के बर्तन।
सिंधु घाटी सभ्यता के अध्ययन के लिए पुरातात्विक अवशेष ही सबसे प्रामाणिक प्राथमिक स्रोत हैं क्योंकि उस काल की लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। खुदाई में मिली मुहरें और मिट्टी के बर्तन तत्कालीन समाज के आर्थिक जीवन और उनकी धार्मिक मान्यताओं का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रदान करते हैं। आधुनिक इतिहासकारों द्वारा लिखी गई पुस्तकें द्वितीयक स्रोत हैं। अतः भौतिक अवशेष ही वे वास्तविक कड़ियाँ हैं जो हमें इस प्राचीन और महान सभ्यता की वास्तविकता से सीधे और बिना किसी पूर्वाग्रह के जोड़ती हैं।

182. (A) इतिहास को विकास और पतन के दोहराव वाले पैटर्न के रूप में देखा जाता है।
इतिहास का चक्रीय दृष्टिकोण इस विश्वास पर आधारित है कि मानवीय सभ्यताएं एक निश्चित जीवन चक्र से होकर गुजरती हैं, जिसमें जन्म, विकास और अंततः पतन शामिल होता है। यह विचारधारा मानती है कि समय की गति एक सीधी रेखा में नहीं, बल्कि एक पहिये की तरह है जहाँ स्थितियाँ पुनः लौटकर आती हैं। प्राचीन ग्रीक दर्शन में यह विचार बहुत लोकप्रिय रहा है। इसके अनुसार, इतिहास हमें यह सिखाता है कि जो आज शिखर पर है, उसका पतन निश्चित है, और यह चक्र निरंतर चलता रहता है।

183. (B) कला और सौंदर्यशास्त्र का इतिहास
आनंद के. कुमारस्वामी का नाम भारतीय कला इतिहास के क्षेत्र में अत्यंत श्रद्धा के साथ लिया जाता है। उन्होंने भारतीय कला के दार्शनिक और आध्यात्मिक आधारों को विश्व के समक्ष बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनका कार्य केवल कलाकृतियों का वर्णन मात्र नहीं था, बल्कि उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भारतीय सौंदर्यशास्त्र कैसे देश की धार्मिक मान्यताओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। कुमारस्वामी के शोध ने पश्चिमी जगत के उस नजरिए को बदलने में मदद की जो भारतीय कला को केवल मूर्तिपूजा या पिछड़ी विधा मानता था।

184. (A) अपने राष्ट्र के इतिहास को अत्यधिक सकारात्मक रूप में चित्रित करना।
एक कट्टर राष्ट्रवादी इतिहासकार के लेखन में अक्सर 'राष्ट्रीय गौरव' की भावना तथ्यों के निष्पक्ष विश्लेषण पर हावी हो सकती है। ऐसा लेखक अपने राष्ट्र की सफलताओं को तो बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है, लेकिन उसके अतीत की गलतियों या सामाजिक बुराइयों को नजरअंदाज कर देता है या उन्हें विदेशी प्रभाव का परिणाम बताकर टाल देता है। यह चयनात्मक प्रस्तुति ऐतिहासिक सत्य को विकृत कर देती है। हालांकि यह राष्ट्रवाद की भावना को सुदृढ़ कर सकता है, लेकिन यह एक संतुलित और विश्वसनीय ऐतिहासिक दृष्टिकोण नहीं है।

185. (D) उत्पादन, व्यापार और वर्ग संबंधों सहित समाज का भौतिक आधार।
इतिहास और अर्थशास्त्र के बीच का सह-संबंध समाज की आंतरिक कार्यप्रणाली को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब इतिहासकार आर्थिक सिद्धांतों का उपयोग करता है, तो वह यह देख पाता है कि कैसे व्यापारिक मार्गों और संसाधनों के वितरण ने बड़े राजनीतिक बदलावों को जन्म दिया। यह दृष्टिकोण हमें बताता है कि सामान्य लोगों का जीवन स्तर क्या था और विभिन्न वर्गों के बीच आर्थिक संबंधों ने समाज की स्थिरता को कैसे प्रभावित किया। आर्थिक आधार ही वह नींव है जिस पर सामाजिक ढांचा खड़ा होता है।

186. (B) अतीत की घटनाओं को दोहराने के लिए प्रयोगशाला प्रयोग करना।
इतिहास एक सामाजिक विज्ञान है जिसमें तथ्यों की खोज के लिए साक्ष्यों का संकलन और स्रोतों का आलोचनात्मक विश्लेषण शामिल होता है। एक इतिहासकार अभिलेखागार में जाता है और पुरानी सामग्रियों की जाँच करता है। हालांकि, वह प्राकृतिक विज्ञानों की तरह प्रयोगशाला में प्रयोग करके अतीत की घटनाओं को पुनः घटित नहीं कर सकता। इतिहासकार का कार्य उन घटनाओं का लिखित पुनर्निर्माण करना है जो एक बार घटित होकर हमेशा के लिए समाप्त हो चुकी हैं। यही सीमा इतिहास को भौतिक विज्ञानों से विशिष्ट बनाती है।

187. (B) किसी ऐतिहासिक पाठ का विश्लेषण करके उसके छिपे हुए पूर्वाग्रहों को उजागर करना।
उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण किसी भी ऐतिहासिक वृत्तांत को 'पूर्ण सत्य' मानने के बजाय उसे एक भाषाई निर्माण के रूप में देखता है। ऐसे दृष्टिकोण वाला इतिहासकार किसी पुराने

पाठ का गहराई से विश्लेषण करता है ताकि वह उसमें छिपे हुए सत्ता के संबंधों और लेखक के अनकहे पूर्वाग्रहों को खोज सके। इस पद्धति को 'विखंडन' कहा जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह दिखाना है कि इतिहास का कोई एक निश्चित अर्थ नहीं होता, बल्कि वह व्याख्या करने वाले के दृष्टिकोण के अनुसार बदलता रहता है।

188. (C) Mughal Empire (मुगल साम्राज्य)
सर यदुनाथ सरकार को आधुनिक भारत का एक महान इतिहासकार माना जाता है, जिन्हें विशेष रूप से मुगल साम्राज्य के गहन और वैज्ञानिक अध्ययन के लिए जाना जाता है। उन्होंने औरंगजेब के शासनकाल और साम्राज्य के पतन पर अपनी विद्वतापूर्ण कृतियों के लिए फारसी स्रोतों का अभूतपूर्व उपयोग किया। सरकार ने केवल युद्धों की सूची नहीं दी, बल्कि उन्होंने प्रशासनिक कमजोरियों और आर्थिक संकट का भी विस्तृत विश्लेषण किया। उनका कार्य आज भी मुगलकालीन शोधार्थियों के लिए एक अनिवार्य और प्रामाणिक संदर्भ ग्रंथ माना जाता है।

189. (B) "ऐसा ही था" या "ऐसा ही हुआ है"
भारतीय परंपरा में 'इतिहास' शब्द की व्युत्पत्ति 'इति-ह-आस' से मानी गई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "निश्चित रूप से ऐसा ही हुआ था"। यह परिभाषा यह स्पष्ट करती है कि इतिहास का मूल उद्देश्य अतीत की वास्तविक घटनाओं को उनके यथार्थ स्वरूप में सुरक्षित रखना है। यह केवल कोरी कल्पना का संग्रह नहीं है, बल्कि यह उन सत्यों का वृत्तांत है जो वास्तव में घटित हुए हैं। यह भारतीय दृष्टिकोण अतीत की घटनाओं की प्रमाणिकता पर बल देता है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए शिक्षा का स्रोत बनते हैं।

190. (C) जियाउद्दीन बरनी - तबकात-ए-नासिरी
यह युग्म गलत है क्योंकि 'तबकात-ए-नासिरी' के लेखक मिन्हाज-उस-सिराज थे, न कि जियाउद्दीन बरनी। बरनी की सबसे प्रसिद्ध कृति 'तारीख-ए-फिरोज शाही' है। अन्य सभी जोड़ियाँ सही हैं: बाणभट्ट ने सम्राट हर्ष के जीवन पर 'हर्षचरित' लिखा, कल्हण ने कश्मीर का इतिहास 'राजतरंगिणी' रचा और अबुल फजल ने मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल का विस्तृत विवरण दिया। इन लेखकों और उनकी कृतियों की सही पहचान ऐतिहासिक शोध और तत्कालीन स्रोतों को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक मानी जाती है।

191. (C) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
इतिहास लेखन में पूर्ण वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना एक कठिन चुनौती है जिसे केवल एक पद्धति के पालन से हासिल नहीं किया जा सकता। प्रत्येक इतिहासकार के पास अपनी एक सामाजिक पृष्ठभूमि होती है जो उसके विश्लेषण को प्रभावित करती है। हालांकि, सच्ची वस्तुनिष्ठता इस बात में निहित है कि लेखक अपने संभावित पूर्वाग्रहों को स्वीकार करे और साक्ष्यों के उपयोग में पूरी तरह से पारदर्शी रहे। वह साक्ष्यों को अपने तर्कों के अनुसार मोड़ने के बजाय उनके प्रति ईमानदार रहे और एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करे।

192. (B) संवैधानिक इतिहास
जब हम किसी देश की कानूनी व्यवस्था और शासन से संबंधित दस्तावेजों के क्रमिक विकास का विश्लेषण करते हैं, तो वह 'संवैधानिक इतिहास' के दायरे में आता है। यह शाखा केवल कानूनों की सूची नहीं है, बल्कि यह इस बात का अध्ययन करती है कि कैसे समय के साथ राज्य की शक्तियाँ परिभाषित हुईं और नागरिकों के अधिकार विकसित हुए। संवैधानिक इतिहास हमें यह समझने में मदद करता है कि वर्तमान की लोकतांत्रिक संस्थाएं किन ऐतिहासिक संघर्षों और वैधानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से अपने मौजूदा स्वरूप तक पहुँची हैं।

193. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
इतिहास के इन विभिन्न विद्वानों और उनकी कृतियों का भारतीय इतिहास लेखन में विशिष्ट स्थान है। शुक्रनीति जैसे ग्रंथों में प्राचीन शासन कला के महत्वपूर्ण सिद्धांत मिलते हैं। मिन्हाज-उस-सिराज द्वारा रचित 'तबकात-ए-नासिरी' प्रारंभिक इतिहास का आधार स्तंभ है। के.पी. जायसवाल ने 'हिंदू पॉलिटी' के माध्यम से प्राचीन भारतीय गणराज्यों के महत्व को रेखांकित किया। वहीं, डी.डी. कोसंबी ने अध्ययन में मार्क्सवादी विश्लेषणात्मक पद्धति को लागू कर उसे नई वैज्ञानिक दिशा प्रदान की, जो सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं पर मुख्य रूप से केंद्रित थी।

194. (D) चारणों द्वारा वंशावलियों और वीरतापूर्ण कथाओं का मौखिक संचरण।
प्राचीन भारत में 'सूत परंपरा' ऐतिहासिक चेतना को सुरक्षित रखने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जीवंत मौखिक माध्यम थी। इस परंपरा के अंतर्गत पेशेवर सूत राजदरबारों में राजाओं के वंशों का बखान करते थे और उनके पूर्वजों के पराक्रम की कहानियाँ सुनाते थे। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि समाज की सामूहिक स्मृति को जीवित रखने का एक तरीका था। लिखित इतिहास के व्यापक प्रसार से पहले, यही मौखिक परंपरा ही अतीत की जानकारियों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का मुख्य जरिया थी।

195. (D) 1, 2 और 3
भारतीय इतिहास लेखन का विकास विभिन्न विचारधाराओं के संवाद के माध्यम से हुआ है। साम्राज्यवादी लेखकों ने अक्सर ब्रिटिश शासन को वैध बनाने के लिए भारतीय अतीत को अंधकारमय दिखाया। इसके जवाब में राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने प्राचीन भारत की महान उपलब्धियों को उजागर कर गर्व की भावना भरी। बाद में, निम्नवर्गीय इतिहासकारों ने इन दोनों की आलोचना की क्योंकि वे केवल सत्ताधारी कुलीन वर्ग पर ही केंद्रित थे। उन्होंने समाज के उपेक्षित वर्गों को इतिहास का मुख्य पात्र बनाने और उनकी आवाजों को स्थान देने का कार्य किया।

196. (A) मानवीय अतीत के सभी पहलुओं में एक आलोचनात्मक जांच।
समय के साथ इतिहास की परिभाषा और उसका दायरा मौलिक रूप से परिवर्तित हुआ है। पहले जहाँ इसे केवल राजाओं के युद्धों का विवरण माना जाता था, अब इसे मानवीय अतीत के हर पहलू की एक गंभीर जांच के रूप में देखा जाता है। इसमें समाज, अर्थव्यवस्था और मानवीय विचारों के क्रमिक विकास

का विश्लेषण शामिल है। आधुनिक इतिहासकार केवल यह नहीं बताता कि 'क्या हुआ', बल्कि वह साक्ष्यों के आधार पर 'क्यों और कैसे' जैसे प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास करता है, जिससे यह समृद्ध विषय बनता है।

197. (C) सतीशचंद्र मित्तल
प्रोफेसर सतीशचंद्र मित्तल आधुनिक भारतीय इतिहासकारों में एक प्रखर राष्ट्रवादी विचारक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने भारतीय इतिहास लेखन की उन प्रचलित व्याख्याओं को चुनौती दी है जो उनके अनुसार अत्यधिक मार्क्सवादी झुकाव वाली थीं। मित्तल का कार्य विशेष रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक ऐसे दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने पर केंद्रित है जो देश की सांस्कृतिक जड़ों को अधिक महत्व देता है। उनके शोध ने राष्ट्रवादी इतिहास लेखन की धारा को पुनर्जीवित करने और उसे समकालीन शैक्षणिक विमर्श में आधार प्रदान करने का प्रयास किया है।

198. (A) अपने स्वयं के धर्म की श्रेष्ठता को सिद्ध करने के लिए संरचित होता है।
इतिहास लेखन में धर्म का प्रभाव तब एक पूर्वाग्रह बन जाता है जब लेखक अपनी धार्मिक निष्ठा को ऐतिहासिक सत्य से ऊपर रखने लगता है। ऐसा इतिहासकार अक्सर अपने धर्म के नायकों को दैवीय गुणों से युक्त और अन्य धर्मों के पात्रों को कमतर दिखाने का प्रयास करता है। वह ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण इस तरह से करता है जिससे उसके अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध हो सके। यह दृष्टिकोण निष्पक्षता के विरुद्ध है क्योंकि यह साक्ष्यों का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करने के बजाय उन्हें एक विशिष्ट विचारधारा में ढालता है।

199. (C) एक प्राथमिक पुरातात्विक साक्ष्य
समुद्रगुप्त के काल का सिक्का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्राथमिक पुरातात्विक साक्ष्य है क्योंकि यह सीधे उस समय से जुड़ा है जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं। सिक्कों पर अंकित चित्र और प्रतीक तत्कालीन राजशाही की प्रकृति और शासक की व्यक्तिगत रुचियों के बारे में सीधी और ठोस जानकारी देते हैं। चूंकि यह कोई बाद की व्याख्या नहीं है बल्कि उस युग का एक भौतिक अवशेष है, इसलिए इसे प्राथमिक स्रोत माना जाता है। ऐसे साक्ष्य साहित्यिक विवरणों की पुष्टि करने में इतिहासकारों की अभूतपूर्व सहायता करते हैं।

200. (A) वस्तुनिष्ठता और व्यक्तिपरकता
इतिहास विज्ञान है या कला, इस निरंतर बहस के केंद्र में वस्तुनिष्ठता और व्यक्तिपरकता के बीच का तनाव मौजूद है। इसे विज्ञान मानने वाले लोग कठोर साक्ष्यों, तथ्यों के सत्यापन और पूर्ण निष्पक्षता पर बल देते हैं। दूसरी ओर, इसे कला मानने वालों का तर्क है कि तथ्यों को एक अर्थपूर्ण वृत्तांत में पिरोने के लिए इतिहासकार की व्यक्तिगत कल्पना और व्याख्या अनिवार्य है। वास्तव में, इतिहास इन दोनों का एक जटिल संतुलन है, जहाँ वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग नींव के रूप में किया जाता है और कला उसे स्वरूप देती है।

201. (D) घटना के बाद बनाई गई प्राथमिक सामग्रियों की व्याख्या करने वाला स्रोत।
द्वितीयक स्रोत वे सामग्रियां हैं जो किसी ऐतिहासिक घटना के घटित होने के बहुत बाद में तैयार की जाती हैं। इनका निर्माण शोधकर्ताओं द्वारा मूल प्राथमिक स्रोतों, जैसे शिलालेखों या समकालीन दस्तावेजों का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, मुगल काल पर आज लिखी गई कोई शोध पुस्तक एक द्वितीयक स्रोत है। ये स्रोत हमें यह समझने में मदद करते हैं कि बाद के विद्वानों ने उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर अतीत की घटनाओं के बारे में क्या निष्कर्ष निकाले और उनका मूल्यांकन किस प्रकार किया।

202. (A) उत्पादन की पद्धति
मार्क्सवादी ऐतिहासिक दृष्टिकोण मानव समाज के विकास को उत्पादन की पद्धतियों के क्रमिक परिवर्तन के रूप में देखता है। इस विचारधारा के अनुसार, इतिहास आदिम साम्यवाद से शुरु होकर सामंतवाद और फिर पूंजीवाद के चरणों से होकर गुज़रता है। प्रत्येक चरण में आर्थिक संरचना और उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण ही समाज के स्वरूप को निर्धारित करता है। यह प्रगतिशील विकास सामाजिक वर्गों के बीच होने वाले निरंतर संघर्ष का परिणाम है, जो समाज को एक नई उत्पादन प्रणाली की ओर ले जाता है, जिसका अंतिम लक्ष्य वर्गविहीन समाज है।

203. (C) चरित परंपरा
प्राचीन और मध्यकालीन भारत की 'चरित' परंपरा में संरक्षक-लेखक संबंध पूर्वाग्रह का एक प्रमुख स्रोत रहा है। इस विधा के अंतर्गत राजदरबारी कवि अपने स्वामी या संरक्षक राजा की जीवनी लिखते थे। चूँकि लेखक पूरी तरह से राजा के पुरस्कारों पर निर्भर होता था, इसलिए उसके लेखन में राजा की अत्यधिक प्रशंसा और उसकी कमियों को छिपाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती थी। इन वृत्तांतों का मुख्य उद्देश्य ऐतिहासिक सत्य की खोज के बजाय राजा के गौरव का गान करना होता था, जिससे उनमें वस्तुनिष्ठता का अभाव पाया जाता है।

204. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ऐतिहासिक शोध में प्राथमिक स्रोतों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना अनिवार्य है क्योंकि वे हमेशा त्रुटिहीन नहीं होते। यद्यपि प्राथमिक स्रोत सीधे उसी काल के होते हैं, लेकिन उनके लेखक का अपना दृष्टिकोण या विशिष्ट उद्देश्य हो सकता है। कोई प्रत्यक्षदर्शी गलत जानकारी दे सकता है या आधिकारिक दस्तावेज सत्य को छिपाने के लिए लिखे जा सकते हैं। इसलिए, एक कुशल इतिहासकार कभी भी किसी साक्ष्य को बिना जाँचे सच नहीं मानता। वह विभिन्न स्रोतों की तुलना करके ही वास्तविक ऐतिहासिक सत्य तक पहुँचने का प्रयास करता है।

205. (B) इतिहास लेखन
इतिहास-लेखन वह महत्वपूर्ण विषय है जो स्वयं इतिहास लिखने की प्रक्रिया और पद्धतियों का अध्ययन करता है। इसमें इस बात का विश्लेषण किया जाता है कि अलग-अलग युगों में समाज ने अपने अतीत को कैसे समझा और इतिहासकारों के दृष्टिकोण समय के साथ कैसे बदले। यह केवल घटनाओं

का विवरण नहीं है, बल्कि यह उन वैचारिक झुकावों और व्याख्या के तरीकों का इतिहास है जिन्होंने ऐतिहासिक वृत्तांतों को आकार दिया है। इतिहास-लेखन का ज्ञान हमें यह समझने में मदद करता है कि अतीत के प्रति हमारा नजरिया निरंतर परिवर्तनशील रहा है।

206. (C) इतिहास के विस्तार की व्याख्या करने वाला एक सर्वव्यापी सिद्धांत।
इतिहास में 'व्यापक सिद्धांत' का तात्पर्य एक ऐसे एकीकृत ढांचे से है जो संपूर्ण मानव इतिहास की दिशा और उसके विकास के नियमों को समझाने का दावा करता है। ये सिद्धांत केवल स्थानीय घटनाओं तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे एक सार्वभौमिक प्रारूप प्रस्तुत करते हैं, जैसे मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद। ऐसे सिद्धांतों का उद्देश्य बिखरे हुए ऐतिहासिक तथ्यों को एक सुसंगत और तर्कसंगत अर्थ प्रदान करना है, जिससे यह समझा जा सके कि मानव समाज समग्र रूप से कैसे और क्यों निरंतर प्रगति की दिशा में आगे बढ़ता है।

207. (B) यूरोपीय विचार पर डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत का प्रभाव।
बौद्धिक इतिहास ऐतिहासिक शोध का वह क्षेत्र है जो मानवीय विचारों और दर्शन के प्रभाव का अध्ययन करता है। जब हम डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत का विश्लेषण करते हैं, तो हम केवल एक वैज्ञानिक खोज को नहीं देखते, बल्कि यह समझते हैं कि कैसे इस विचार ने धर्म और राजनीति के प्रति यूरोपीय लोगों की पूरी मानसिकता को बदल दिया। यह अध्ययन दर्शाता है कि कैसे नए और क्रांतिकारी विचार समाज की पुरानी धारणाओं को चुनौती देते हैं और मानवीय चिंतन के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ लेकर आते हैं।

208. (C) 'हिंदू पॉलिटी' में उनका शोध-प्रबंध जिसने रुढ़ियों के खिलाफ तर्क दिया।
के.पी. जायसवाल का राष्ट्रवादी इतिहास लेखन में सबसे बड़ा योगदान उनकी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'हिंदू पॉलिटी' है। इस कार्य के माध्यम से उन्होंने उन साम्राज्यवादी रुढ़ियों को तार्किक रुप से खंडित किया जो भारत को केवल निरंकुश शासन की भूमि मानती थीं। जायसवाल ने प्राचीन ग्रंथों के साक्ष्यों से यह सिद्ध किया कि भारत में अत्यंत विकसित गणतांत्रिक व्यवस्थाएं और लोकतांत्रिक संस्थाएं मौजूद थीं। उनके इस शोध ने भारतीयों में राजनीतिक गौरव भरा और राष्ट्रवादी विचारधारा को एक अत्यंत मजबूत और वैज्ञानिक आधार प्रदान करने का कार्य किया।

209. (A) स्थानिक कारकों ने ऐतिहासिक विकास को कैसे प्रभावित किया है।
इतिहास और भूगोल का सह-संबंध यह समझने के लिए अपरिहार्य है कि भौगोलिक परिस्थितियों ने मानवीय नियति को कैसे आकार दिया है। नदियाँ, पर्वत और प्राकृतिक संसाधन न केवल सभ्यताओं के उदय का स्थान निर्धारित करते हैं, बल्कि उनके व्यापारिक मार्गों और युद्ध की रणनीतियों को भी प्रभावित करते हैं। भूगोल वह रंगमंच है जिस पर इतिहास का नाटक खेला जाता है। इस स्थानिक संदर्भ के बिना ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण अधूरा रहता है क्योंकि यह हमें बताता है कि भौगोलिक स्थिति ने मानवीय निर्णयों को कैसे नियंत्रित किया।

210. (C) इतिहास पूर्ण, अपरिवर्तनीय सत्य प्रदान करता है जो पुनर्व्याख्या के लिए खुले नहीं हैं।
इतिहास की प्रकृति के बारे में यह धारणा बिल्कुल गलत है कि इसके निष्कर्ष कभी नहीं बदल सकते। वास्तव में, इतिहास एक निरंतर विकसित होने वाला विषय है जहाँ नए साक्ष्यों की खोज और नए दृष्टिकोणों के आगमन के साथ पुरानी व्याख्याओं को संशोधित किया जा सकता है। ऐतिहासिक सत्य अक्सर सापेक्ष होता है और वह उपलब्ध प्रमाणों पर निर्भर करता है। इतिहासकार निरंतर अतीत का पुनर्मूल्यांकन करते रहते हैं ताकि सत्य की ओर अधिक सटीक समझ विकसित की जा सके। यह गतिशीलता ही इतिहास को एक वैज्ञानिक विषय बनाती है।

211. (B) संतों के जीवनचरित्र के भीतर एकीकृत ऐतिहासिक विवरण।
भारतीय इतिहास लेखन की जैन परंपरा में ऐतिहासिक जानकारी अक्सर धार्मिक कथाओं और संतों की जीवनियों के साथ गहराई से जुड़ी हुई मिलती है। इन वृत्तांतों में केवल आध्यात्मिक उपदेश नहीं होते, बल्कि वे तत्कालीन राजाओं और सामाजिक व्यवस्थाओं की भी बहुमूल्य जानकारी देते हैं। जैन विद्वानों ने समय और तिथियों के प्रति एक विशिष्ट जागरुकता दिखाई है, जिससे उनके लेखन प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण और स्वतंत्र स्रोत बन जाते हैं। यह परंपरा ऐतिहासिक शोध को नई गहराई प्रदान करती है।

212. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
भारतीय इतिहास के इन प्रमुख ग्रंथों और लेखकों का मेल ऐतिहासिक साहित्य की समृद्धि को दर्शाता है। कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' कश्मीर के इतिहास का पहला क्रमिक विवरण है। बाणभट्ट की 'हर्षचरित' सम्राट हर्ष के जीवन का जीवंत वृत्तांत प्रस्तुत करती है। अबुल फजल की 'अकबरनामा' मुगल प्रशासन का सबसे विस्तृत दस्तावेज है। वहीं, जियाउद्दीन बरनी की 'तारीख-ए-फिरोज शाही' दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों के शासनकाल पर प्रकाश डालती है। ये सभी रचनाएँ अपने युग की राजनीतिक और सामाजिक वास्तविकताओं को समझने के लिए अनिवार्य प्राथमिक स्रोत हैं।

213. (B) राजवंशों का कालानुक्रमिक विवरण।
पौराणिक इतिहास लेखन में 'वंशानुचरित' एक अत्यंत महत्वपूर्ण संकल्पना है जो राजवंशों और महत्वपूर्ण राजाओं की वंशावलियों का क्रमवार वर्णन करती है। पुराणों के इस भाग में प्राचीन काल के विभिन्न शासकों की पीढ़ियों और उनके शासनकाल की सूचियाँ दी गई हैं। यद्यपि ये विवरण धार्मिक कथाओं के साथ मिश्रित हैं, फिर भी आधुनिक इतिहासकारों ने राजनीतिक इतिहास के ढांचे को तैयार करने के लिए इनका व्यापक उपयोग किया है। यह परंपरा प्राचीन भारत में ऐतिहासिक निरंतरता को सुरक्षित रखने का एक सचेत और व्यवस्थित प्रयास थी।

214. (B) एक तटस्थ और निष्पक्ष दृष्टिकोण, व्यक्तिगत पूर्वाग्रह को कम करना।
इतिहास में 'वस्तुनिष्ठता' का तात्पर्य इतिहासकार की उस प्रतिबद्धता से है जिसमें वह अपने व्यक्तिगत विश्वासों और भावनाओं को किनारे रखकर साक्ष्यों का विश्लेषण करता है। इसका उद्देश्य एक ऐसा संतुलित विवरण प्रस्तुत करना है जिसे अन्य विद्वान भी उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर सत्यापित कर सकें। हालांकि पूर्ण वस्तुनिष्ठता कठिन है, लेकिन एक ईमानदार इतिहासकार का लक्ष्य हमेशा निष्पक्ष रहना होता है। यह प्रयास ही इतिहास को एक विश्वसनीय शैक्षणिक विषय बनाता है और उसे केवल काल्पनिक कथा या प्रचार सामग्री होने से बचाता है।

215. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भारतीय इतिहास लेखन के ये दोनों दृष्टिकोण ऐतिहासिक विमर्श में महत्वपूर्ण मोड़ दर्शाते हैं। राष्ट्रवादी दृष्टिकोण उन्नीसवीं सदी में साम्राज्यवादी लेखकों के उस नकारात्मक प्रचार के जवाब में उभरा जिसने भारतीय संस्कृति को कमतर दिखाया था। राष्ट्रवादी लेखकों ने भारत के गौरवशाली अतीत को उजागर किया। वहीं, निम्नवर्गीय दृष्टिकोण ने बाद में इन दोनों की आलोचना की क्योंकि वे केवल सत्ताधारी कुलीन वर्ग पर ही केंद्रित थे। निम्नवर्गीय इतिहासकारों ने आम जनता को केंद्र में लाकर इतिहास को अधिक समावेशी और व्यापक बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

216. (A) प्रारंभिक दिल्ली सल्तनत।
मिन्हाज-उस-सिराज द्वारा रचित 'तबकात-ए-नासिरी' मध्यकालीन भारतीय इतिहास को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोतों में से एक है। इस ग्रंथ में मुख्य रूप से तेरहवीं शताब्दी के दौरान भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना और प्रारंभिक दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों का विस्तृत इतिहास मिलता है। यह विशेष रूप से सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद के शासनकाल के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्रदान करता है। मिन्हाज का कार्य तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं और मंगोल आक्रमणों के प्रभाव को समझने के लिए इतिहासकारों के लिए आज भी अत्यंत मूल्यवान माना जाता है।

217. (A) उनके अपने समाज के प्रचलित सांस्कृतिक मानदंड और अनकही धारणाएं।
इतिहासकार का 'सामाजिक परिवेश' उसके मानसिक ढांचे को गहराई से प्रभावित करता है, जिससे व्याख्या में पूर्वाग्रह उत्पन्न हो सकता है। प्रत्येक लेखक अनजाने में अपने समय के प्रचलित सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक मानदंडों को सही मानता है और उन्हीं के आधार पर अतीत का मूल्यांकन करता है। उदाहरण के लिए, एक लोकतांत्रिक युग का इतिहासकार प्राचीन राजतंत्र को आज के मानकों पर परखने की गलती कर सकता है। यह अचेतन पूर्वाग्रह तथ्यों के चयन और उनके अर्थ को बदल देता है, जिससे अतीत विकृत होने का खतरा रहता है।

218. (C) आर्थिक इतिहास
आर्थिक इतिहास ऐतिहासिक अध्ययन का वह महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो समाज के भौतिक आधार और लोगों की आजीविका के साधनों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसमें श्रम संबंधों का विकास, तकनीक में होने वाले नवाचारों और व्यापारिक प्रणालियों का गहन विश्लेषण किया जाता है। यह शाखा हमें यह समझने में मदद करती है कि धन के उत्पादन और वितरण ने समाज के अन्य अंगों, जैसे राजनीति और सामाजिक वर्गों को कैसे प्रभावित किया। आर्थिक इतिहास केवल आँकड़ों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह मानवीय प्रगति का व्यवस्थित वृत्तांत है।

219. (D) 1, 2 और 3
ऐतिहासिक शोध एक सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो कई चरणों से होकर गुजरती है। इसकी शुरुआत हमेशा एक सार्थक शोध प्रश्न के निर्माण से होती है। इसके पश्चात, शोधकर्ता उपलब्ध प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का अत्यंत बारीकी से परीक्षण करता है ताकि उनकी प्रमाणिकता सुनिश्चित हो सके। अंत में, इन सभी साक्ष्यों के तार्किक विश्लेषण के आधार पर एक सुसंगत वृत्तांत तैयार किया जाता है। यह पूरी प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि ऐतिहासिक निष्कर्ष केवल अनुमानों पर नहीं, बल्कि ठोस प्रमाणों पर आधारित हों।

220. (C) "वस्तुनिष्ठ" वृत्तांतों को उनकी निर्मित प्रकृति को प्रकट करने के लिए विखंडन करना।
उत्तर-आधुनिकतावादी इतिहास लेखन का मुख्य लक्ष्य उन 'पूर्ण सत्यों' के दावों को चुनौती देना है जो पारंपरिक इतिहास में प्रचलित रहे हैं। इस विचारधारा के अनुसार, कोई भी ऐतिहासिक वृत्तांत निष्पक्ष नहीं होता, बल्कि वह इतिहासकार द्वारा भाषा और सत्ता की संरचनाओं के माध्यम से निर्मित किया जाता है। उत्तर-आधुनिकतावादी विद्वान स्थापित ऐतिहासिक पाठों का 'विखंडन' करते हैं ताकि उनमें छिपे हुए पूर्वाग्रहों को उजागर किया जा सके। वे यह मानते हैं कि इतिहास कोई एक निश्चित कहानी नहीं, बल्कि व्याख्याओं का एक अत्यंत जटिल जाल है।

221. (B) यदुनाथ सरकार
सर यदुनाथ सरकार को मुगल सम्राट औरंगजेब के इतिहास पर उनके स्मारकीय कार्य के लिए विश्व भर में सम्मान प्राप्त है। उनकी पाँच खंडों वाली पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब' मुगलकालीन शोध का एक उत्कृष्ट नमूना है। सरकार ने इस कार्य के लिए फारसी स्रोतों का अत्यंत सूक्ष्मता से अध्ययन किया और औरंगजेब के व्यक्तित्व तथा मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उनका लेखन साक्ष्यों के प्रति पूर्ण निष्ठा और कठोर आलोचनात्मक पद्धति पर आधारित है, जो उन्हें आधुनिक इतिहास लेखन का प्रमुख स्तंभ बनाता है।

222. (A) अक्सर अभिव्यक्ति के प्राथमिक माध्यम के रूप में वृत्तांत का उपयोग करते हैं।
इतिहास और साहित्य के बीच मजबूत संबंध इसलिए है क्योंकि दोनों ही विषय अपने विचारों और घटनाओं को व्यक्त करने के लिए मुख्य रूप से वृत्तांत (कहानी) का उपयोग करते हैं; इतिहास वास्तविक घटनाओं को क्रमबद्ध और अर्थपूर्ण

ढंग से कहानी के रूप में प्रस्तुत करता है, जबकि साहित्य मानव अनुभव, भावनाओं और समाज को रचनात्मक कथाओं के माध्यम से दर्शाता है, इसलिए दोनों में अभिव्यक्ति की यह समान शैली उन्हें आपस में जोड़ती है।

223. (A) यह उन विषयों और क्षेत्रों की श्रेणी को संदर्भित करता है जिन्हें यह विषय कवर करता है।
इतिहास के 'दायरे' का तात्पर्य उन विविध विषयों और मानवीय गतिविधियों के विस्तार से है जिनका अध्ययन इस विषय के अंतर्गत किया जाता है। प्रारंभ में इतिहास का दायरा केवल राजाओं तक सीमित था, लेकिन आधुनिक समय में यह बहुत व्यापक हो गया है। अब इसमें सामाजिक संरचनाएं, आर्थिक प्रणालियाँ, सांस्कृतिक विकास और व्यक्तिगत जीवन के सूक्ष्म पहलुओं का भी समावेश है। सरल शब्दों में, इतिहास का दायरा वह पूरा फलक है जिस पर मानवीय अतीत की हर छोटी-बड़ी गतिविधि को विश्लेषण के लिए स्थान प्राप्त होता है।

224. (C) अधिक आलोचनात्मक, वैज्ञानिक और स्रोत-आधारित दृष्टिकोण।
रामकृष्ण गोपाल भंडारकर ने भारतीय इतिहास लेखन को परंपरागत कथावाचक शैली से निकालकर आधुनिक वैज्ञानिक धरातल पर स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाई। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इतिहासकार को केवल साक्ष्यों, विशेषकर शिलालेखों और प्राचीन ग्रंथों के कठोर परीक्षण के आधार पर ही तथ्य प्रस्तुत करने चाहिए। भंडारकर के लिए निष्पक्षता और साक्ष्य की प्रमाणिकता ही ऐतिहासिक शोध की सर्वोच्च कसौटी थी। उनके इस दृष्टिकोण ने भारतीयों को अतीत के वास्तविक और तर्कसंगत विश्लेषण की कला सिखाई, जो आधुनिक शोध की आधारशिला बनी।

225. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
ऐतिहासिक शोध में प्राथमिक स्रोतों का उपयोग उनकी मौलिकता के कारण अत्यंत आवश्यक है। हालांकि, यह मानना गलत होगा कि ये स्रोत हमेशा पूर्वाग्रह से पूरी तरह मुक्त होते हैं। प्राथमिक स्रोत भी मनुष्यों द्वारा ही बनाए गए थे, जिनके अपने व्यक्तिगत स्वार्थ या अधूरा ज्ञान हो सकता था। एक कुशल इतिहासकार को प्राथमिक स्रोतों की भी उतनी ही कठोरता से जाँच करनी चाहिए जितनी कि अन्य स्रोतों की। केवल तभी वह उन पूर्वाग्रहों को पहचानकर वास्तविक ऐतिहासिक सत्य के करीब पहुँच सकता है और विश्वसनीय निष्कर्ष दे सकता है।

226. (B) सामाजिक इतिहास
समाज में महिलाओं की बदलती भूमिकाओं और उनकी सामाजिक स्थिति का सदियों के संदर्भ में विश्लेषण करना 'सामाजिक इतिहास' का एक प्रमुख विषय है। यह शाखा केवल शासन और शक्ति के केंद्रों पर ध्यान नहीं देती, बल्कि समाज की आंतरिक बनावट, पारिवारिक संरचनाओं और सामाजिक मूल्यों के क्रमिक विकास का अध्ययन करती है। सामाजिक इतिहास हमें यह समझने में मदद करता है कि समाज के विभिन्न वर्गों ने समय के साथ अपनी पहचान कैसे बनाई। यह इतिहास को मानवीय और अधिक समावेशी बनाने का निरंतर प्रयास करता है।

227. (B) सभी सभ्यताओं का उत्थान और पतन।
इतिहास की चक्रीय अवधारणा एक ऐसा 'व्यापक सिद्धांत' है जो यह मानता है कि मानवीय सभ्यताएं विकास के एक निश्चित और दोहराव वाले चक्र से होकर गुजरती हैं। यह सिद्धांत किसी एक राष्ट्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरी मानवता और सभी बड़ी सभ्यताओं पर लागू होने वाले एक सार्वभौमिक नियम का प्रस्ताव करता है। इसके अनुसार, प्रत्येक सभ्यता जन्म लेती है और अंततः उसका पतन हो जाता है, जिसके बाद पुनः एक नया चक्र शुरु होता है। यह दृष्टिकोण इतिहास में एक स्थायी और आवर्ती प्रारूप की खोज करता है।

228. (C) तारीख-ए-फिरोज शाही - जियाउद्दीन बरनी
जियाउद्दीन बरनी द्वारा रचित 'तारीख-ए-फिरोज शाही' मध्यकालीन भारतीय इतिहास का एक अत्यंत प्रामाणिक ग्रंथ है। अन्य विकल्प गलत सुमेलित हैं; 'अकबरनामा' अबुल फजल द्वारा लिखा गया था, 'राजतरंगिणी' कल्हण की प्रसिद्ध कृति है और 'हर्षचरित' बाणभट्ट द्वारा रचित है। बरनी ने अपनी इस पुस्तक में दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों, विशेष रूप से अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल की प्रशासनिक और आर्थिक नीतियों का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया है। यह ग्रंथ सल्तनत काल के शोध के लिए एक अपरिहार्य और अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।

229. (D) राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करना और औपनिवेशिक इतिहास लेखन का मुकाबला करना।
भारत के राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय आत्म-सम्मान को पुनर्जीवित करने का महान बौद्धिक कार्य किया। उन्होंने साम्राज्यवादी लेखकों के उस दावे को चुनौती दी जिसमें भारत को पिछड़ा समाज चित्रित किया गया था। आर.सी. मजूमदार जैसे विद्वानों ने प्राचीन भारतीय विज्ञान और समृद्ध राजनीतिक परंपराओं के साक्ष्य प्रस्तुत किए। उनका मुख्य उद्देश्य भारतीयों में अपने गौरवशाली अतीत के प्रति विश्वास जगाना था, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को एक ठोस ऐतिहासिक और सांस्कृतिक आधार प्रदान किया और हीनता की भावना को समाप्त किया।

230. (C) राष्ट्र, राजनीतिक दल या विचारधारा
राजनीतिक वफादारी इतिहास लेखन में पूर्वाग्रह का एक प्रबल स्रोत है जो लेखक की किसी विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा के प्रति गहरी निष्ठा को दर्शाता है। ऐसा इतिहासकार अक्सर तथ्यों को इस प्रकार प्रस्तुत करता है जिससे उसकी पसंदीदा विचारधारा का समर्थन हो। इसमें ऐतिहासिक घटनाओं का निष्पक्ष विश्लेषण करने के बजाय उन्हें एक राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए तोड़-मरोड़कर पेश किया जाता है। यह वफादारी इतिहास की वैज्ञानिक तटस्थता को समाप्त कर उसे राजनीतिक प्रचार का हिस्सा बना देती है, जिससे विषय की अकादमिक विश्वसनीयता प्रभावित होती है।

231. (A) इतिहास लिखित स्रोतों का उपयोग करता है जबकि पुरातत्व मुख्य रूप से भौतिक अवशेषों का उपयोग करता।
इतिहास और पुरातत्व दोनों अतीत को समझने के साधन हैं, लेकिन उनकी कार्यप्रणालियों में अंतर है। इतिहासकार मुख्य रूप से लिखित दस्तावेजों और साहित्यिक ग्रंथों के विश्लेषण पर निर्भर रहता है। इसके विपरीत, पुरातत्वविद खुदाई से प्राप्त भौतिक अवशेषों, जैसे प्राचीन बस्तियों के खंडहरों और औजारों के वैज्ञानिक परीक्षण के माध्यम से अतीत का पुनर्निर्माण करता है। यद्यपि ये दोनों विषय एक-दूसरे के पूरक हैं, लेकिन पुरातत्व उन युगों के लिए विशेष रूप से अपरिहार्य है जिनका कोई लिखित रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है। यह इतिहास को ठोस आधार प्रदान करता है।

232. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
इतिहास लेखन की निम्नवर्गीय विचारधारा मुख्य रूप से समाज के उपेक्षित वर्गों, जैसे किसानों और मजदूरों पर केंद्रित है, न कि कुलीनों पर। वास्तव में, यह दृष्टिकोण कुलीन पूर्वाग्रहों की कड़ी आलोचना करता है। दूसरी ओर, मार्क्सवादी विचारधारा का यह कथन सही है कि वह वर्ग संघर्ष और आर्थिक संरचनाओं के नजरिए से इतिहास का विश्लेषण करती है। मार्क्सवादी इतिहासकार मानते हैं कि समाज का आर्थिक आधार ही उसकी राजनीतिक व्यवस्था को निर्धारित करता है, जिससे ऐतिहासिक परिवर्तनों की दिशा तय होती है और समाज का विकास होता है।

233. (B) एक ऐतिहासिक जीवनी, जो अक्सर प्रशंसात्मक होती है
प्राचीन भारत के 'चरित' साहित्य को एक ऐसी ऐतिहासिक जीवनी के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिसका केंद्र कोई विशिष्ट राजा होता था। ये रचनाएँ प्रायः राजदरबार के कवियों द्वारा अपने संरक्षकों के सम्मान में लिखी जाती थीं। इनमें ऐतिहासिक तथ्यों के साथ-साथ साहित्यिक अलंकरण और अपने स्वामी के शौर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन मिलता है। हालांकि ये पूर्णतः वस्तुनिष्ठ नहीं होते, फिर भी तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं और सांस्कृतिक परिवेश को समझने के लिए इन्हें अत्यंत महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत माना जाता है। बाणभट्ट रचित 'हर्षचरित' इसका प्रसिद्ध उदाहरण है।

234. (C) सबसे प्रासंगिक जानकारी का मूल्यांकन करना और उसे चुनना।
ऐतिहासिक शोध में 'तथ्यों का चयन' एक सूक्ष्म प्रक्रिया है जो संग्रह के पश्चात की जाती है। इतिहासकार के पास स्रोतों का विशाल भंडार होता है, लेकिन एक सार्थक शोध के लिए हर जानकारी उपयोगी नहीं होती। शोधकर्ता को प्रत्येक साक्ष्य की विश्वसनीयता और अपने विशिष्ट शोध प्रश्न से उसकी निकटता को परखना पड़ता है। केवल उन्हीं तथ्यों को चुना जाता है जो तार्किक विश्लेषण और निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायक हों। यह चयनात्मकता ही ऐतिहासिक वृत्तांत को स्पष्ट, संगठित और वैज्ञानिक रूप से विश्वसनीय आधार प्रदान करती है।

235. (A) पश्चिमी लोगों द्वारा पूर्व की भाषाओं और इतिहास में विद्वतापूर्ण रुचि।
प्राच्यवादी दृष्टिकोण मुख्य रूप से अठारहवीं सदी के उन यूरोपीय विद्वानों के कार्यों को संदर्भित करता है जिन्होंने पूर्व की शास्त्रीय भाषाओं और प्राचीन ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। इन विद्वानों की रुचि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और दार्शनिक प्रणालियों को समझने में थी। हालांकि उनके कुछ विश्लेषणों का उपयोग औपनिवेशिक उद्देश्यों के लिए किया गया, लेकिन उनका प्राथमिक योगदान पूर्वी ज्ञान को वैश्विक मंच पर लाना और उसे एक शैक्षणिक पहचान दिलाना था। उन्होंने पूर्व के अतीत को एक गौरवशाली और रहस्यमयी सभ्यता के रूप में चित्रित किया।

236. (D) मिन्हाज-उस-सिराज
मिन्हाज-उस-सिराज तेरहवीं शताब्दी के एक प्रमुख विद्वान थे जिन्होंने 'तबकात-ए-नासिरी' की रचना की। यह ग्रंथ दिल्ली सल्तनत के प्रारंभिक इतिहास को समझने के लिए एक अनिवार्य प्राथमिक स्रोत है। इसमें आदम से लेकर सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद के समय तक के विभिन्न राजवंशों का विवरण दिया गया है। मिन्हाज का कार्य तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं और विशेष रूप से भारत पर होने वाले मंगोल आक्रमणों की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करने के लिए इतिहासकारों के बीच अत्यंत आदरणीय माना जाता है। यह सल्तनत काल के शोध का आधार है।

237. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
इतिहास की बुनियादी अवधारणाओं को समझने से शोध की प्रक्रिया स्पष्ट होती है। 'व्युत्पत्ति' हमें बताती है कि 'इतिहास' शब्द कैसे उत्पन्न हुआ। 'वस्तुनिष्ठता' का तात्पर्य साक्ष्यों के प्रति पूर्ण निष्पक्षता और तटस्थ रहने के प्रयास से है। 'पूर्वाग्रह' उन झुकावों को दर्शाता है जो अनजाने में इतिहासकार की व्याख्या को प्रभावित कर सकते हैं। 'दायरा' उन विषयों की विस्तृत श्रेणी को परिभाषित करता है जिनका अध्ययन इतिहास के अंतर्गत किया जाता है। ये सभी तत्व मिलकर इतिहास को एक व्यवस्थित और विश्वसनीय शैक्षणिक अनुशासन बनाते हैं।

238. (A) भाषाविज्ञान और सांख्यिकी के साथ संयुक्त मार्क्सवादी ढांचा।
डी.डी. कोसंबी भारतीय इतिहास लेखन के एक क्रांतिकारी पुरुष माने जाते हैं जिन्होंने प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए नया मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने पारंपरिक स्रोतों के साथ-साथ भाषाविज्ञान और पुरातत्व का अत्यंत मौलिक समन्वय किया। कोसंबी ने भारतीय समाज के विकास को मार्क्सवादी ढांचे के भीतर आर्थिक उत्पादन की पद्धतियों और सामाजिक संरचनाओं के माध्यम से समझाया। उनकी कार्यप्रणाली ने केवल राजाओं की वंशावलियों के बजाय समाज के भौतिक आधार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को इतिहास के केंद्र में स्थापित करने का कार्य किया।

239. (D) मार्क्सवादी
इतिहास को वर्ग संघर्ष की निरंतर कहानी के रूप में देखना मार्क्सवादी दृष्टिकोण की मुख्य विशेषता है। कार्ल मार्क्स के

सिद्धांतों पर आधारित यह विचारधारा मानती है कि मानवीय इतिहास विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच संसाधनों पर नियंत्रण के लिए होने वाले संघर्षों का परिणाम है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, समाज का आर्थिक ढांचा ही उसकी राजनीति और संस्कृति को निर्धारित करता है। मार्क्सवादी इतिहासकार ऐतिहासिक परिवर्तनों की व्याख्या राजाओं के व्यक्तिगत निर्णयों के बजाय आर्थिक परिस्थितियों और शोषक एवं शोषित वर्गों के बीच होने वाले द्वंद्व से करते हैं।

240. (B) जिस तरह से जानकारी आगे बढ़ाई जाती है, वह इसकी सटीकता और अर्थ को प्रभावित कर सकती है।
ऐतिहासिक शोध में 'साक्ष्य और उसका संचरण' की अवधारणा इस सच्चाई पर बल देती है कि सूचनाएं समय की यात्रा के दौरान बदल सकती हैं। जब कोई तथ्य एक पांडुलिपि से दूसरी में नकल किया जाता है या अनुवादित होता है, तो उसमें अनजाने में त्रुटियाँ आ सकती हैं। एक सतर्क इतिहासकार को यह समझना चाहिए कि उपलब्ध साक्ष्य अनेक मध्यस्थों से होकर उस तक पहुँचा है। इसलिए, संचरण के इस पूरे मार्ग का आलोचनात्मक परीक्षण करना साक्ष्य की वास्तविक प्रमाणिकता और उसके मूल अर्थ को जानने के लिए अनिवार्य है।

241. (D) 1, 2 और 3
आधुनिक इतिहास लेखन का दायरा अत्यंत व्यापक है और इसमें मानव जीवन के सभी महत्वपूर्ण आयामों का समावेश है। राजनीतिक इतिहास मुख्य रुप से शासन प्रणालियों और युद्धों के अध्ययन पर केंद्रित होता है। सामाजिक इतिहास आम लोगों के दैनिक जीवन और सामाजिक संस्थाओं की संरचना का विश्लेषण करता है। वहीं, आर्थिक इतिहास अतीत की उत्पादन पद्धतियों और संसाधनों के वितरण पर ध्यान देता है। ये तीनों शाखाएं मिलकर किसी भी कालखंड का एक समग्र, संतुलित और विश्वसनीय चित्र प्रस्तुत करने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं।

242. (B) संरक्षक शासक के प्रति कृतज्ञता
जब कोई इतिहासकार किसी राजा द्वारा नियुक्त किया जाता है, तो उसके लेखन में 'संरक्षक के प्रति कृतज्ञता' का पूर्वाग्रह आने की प्रबल संभावना होती है। ऐसी परिस्थिति में लेखक पर अपने स्वामी की छवि को दोषरहित दिखाने का भारी दबाव होता है। वह अक्सर शासक की उपलब्धियों को अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है और उसकी विफलताओं या पराजयों को पूरी तरह से छिपा देता है। यह चयनात्मक प्रस्तुति ऐतिहासिक सत्य को धूमिल कर देती है और वृत्तांत को एक संतुलित विश्लेषण के बजाय प्रशंसा पत्र में बदल देती है।

243. (B) समय के साथ विशिष्ट अवधारणाओं का विकास।
'विचारों का इतिहास' ऐतिहासिक अध्ययन की वह सूक्ष्म शाखा है जो मानवीय चेतना और बौद्धिक चिंतन की यात्रा का विश्लेषण करती है। इसका मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि स्वतंत्रता, न्याय और लोकतंत्र जैसी अमूर्त अवधारणाएं अलग-अलग युगों में कैसे उत्पन्न हुईं और समय के साथ उनके अर्थों में क्या परिवर्तन आए। यह केवल भौतिक घटनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन वैचारिक क्रांतियों की खोज है जिन्होंने सदियों से मानव समाज के व्यवहार और उसकी सामाजिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित किया है।

244. (B) कल्हण
बारहवीं शताब्दी के महान विद्वान कल्हण को उनकी अद्वितीय कृति 'राजतरंगिणी' के लिए जाना जाता है। यह संस्कृत साहित्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है जो प्राचीन कश्मीर के राजाओं का क्रमिक इतिहास प्रदान करता है। कल्हण के कार्य की सबसे बड़ी विशेषता उनकी वैज्ञानिक शोध पद्धति थी, जिसमें उन्होंने शिलालेखों और सिक्कों का निष्पक्ष परीक्षण किया। उन्होंने एक सच्चे इतिहासकार की तरह राजाओं के गुणों और दोषों दोनों का निर्भीकता से वर्णन किया। 'राजतरंगिणी' को भारतीय इतिहास लेखन की आधुनिक और विश्वसनीय परंपरा का अग्रदूत माना जाता है।

245. (A) साक्ष्यों द्वारा समर्थित यथासंभव निष्पक्ष होना।
ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता एक ऐसी शैक्षणिक प्रतिबद्धता है जिसके लिए इतिहासकार को अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को तथ्यों से अलग रखने की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ है कि लेखक को केवल उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर ही निष्कर्ष निकालने चाहिए, चाहे वे उसके स्वयं के विश्वासों के पक्ष में हों या न हों। वस्तुनिष्ठ होने का अर्थ एक संतुलित और निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाना है जिसे अन्य विद्वान भी स्वतंत्र प्रमाणों से सत्यापित कर सकें। यह प्रक्रिया ही इतिहास को एक विश्वसनीय, तर्कसंगत और वैज्ञानिक शैक्षणिक विषय के रुप में स्थापित करती है।

246. (A) पर्यावरणीय
इतिहास लेखन में राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी और निम्नवर्गीय दृष्टिकोण अत्यंत सुस्थापित और व्यापक रुप से मान्य विचारधाराएं हैं जो अतीत के विश्लेषण के लिए विशिष्ट ढांचे प्रदान करती हैं। हालांकि आधुनिक समय में पर्यावरण और इतिहास के संबंधों पर शोध बढ़ रहा है, लेकिन इसे अभी तक इन पारंपरिक विचारधाराओं के समान एक स्वतंत्र 'ऐतिहासिक दृष्टिकोण' के रुप में पूर्णतः मान्यता प्राप्त नहीं हुई है। वर्तमान में इसे अक्सर सामाजिक या आर्थिक इतिहास के एक उप-क्षेत्र के रुप में देखा जाता है, न कि इतिहास को देखने के एक प्राथमिक नजरिए के रुप में।

247. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
इतिहास और समाजशास्त्र के बीच का गहरा सह-संबंध ऐतिहासिक विश्लेषण को नई गहराई प्रदान करता है। समाजशास्त्र सामाजिक संरचनाओं, वर्ग संबंधों और संस्थागत परिवर्तनों के बारे में महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक उपकरण प्रदान करता है। इतिहासकार इन समाजशास्त्रीय ढांचों का उपयोग करके अतीत के समाजों की जटिलताओं को अधिक स्पष्टता से समझ सकते हैं। यह अंतःविषय दृष्टिकोण न केवल तथ्यों के संग्रह में मदद करता है, बल्कि उन सामाजिक प्रक्रियाओं को भी उजागर करता है जिन्होंने बड़े ऐतिहासिक परिवर्तनों और क्रांतियों को जन्म दिया है, जिससे शोध अधिक प्रमाणिक बनता है।

248. (A) चारणों द्वारा इतिहास सुनाने की एक मौखिक परंपरा।
प्राचीन भारत में 'सूत परंपरा' ऐतिहासिक स्मृतियों को जीवित रखने और उन्हें अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने का एक सशक्त मौखिक माध्यम थी। सूत वे पेशेवर चारण होते थे जो राजदरबारों में राजाओं की वंशावलियों का पाठ करते थे और उनके पूर्वजों के शौर्यपूर्ण कार्यों की कहानियाँ सुनाते थे। यह केवल मनोरंजन नहीं था, बल्कि समाज और राजवंशों की ऐतिहासिक पहचान को सुरक्षित रखने की एक सुव्यवस्थित पद्धति थी। लिखित अभिलेखों के व्यापक प्रचलन से पहले, यही मौखिक परंपरा ही अतीत की महत्वपूर्ण जानकारियों को संरक्षित करने का प्राथमिक स्रोत थी।

249. (C) एक ही दस्तावेज़ एक प्रश्न के लिए प्राथमिक और दूसरे के लिए द्वितीयक हो सकता है।
ऐतिहासिक शोध में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का वर्गीकरण शोधकर्ता के प्रश्न पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई इतिहासकार अठारहवीं सदी के किसी युद्ध का अध्ययन कर रहा है, तो उस पर लिखा गया उन्नीसवीं सदी का निबंध द्वितीयक स्रोत होगा। लेकिन यदि वही इतिहासकार यह शोध कर रहा है कि उन्नीसवीं सदी में इतिहास कैसे लिखा जाता था, तो वही निबंध उसके लिए एक प्राथमिक स्रोत बन जाएगा। यह लचीलापन स्पष्ट करता है कि स्रोत का महत्व शोध के उद्देश्य द्वारा निर्धारित होता है, जो ऐतिहासिक पद्धति की सूक्ष्मता है।

250. (B) राष्ट्रवादी
आर.सी. मजूमदार और के.पी. जायसवाल जैसे विद्वानों का कार्य भारतीय इतिहास लेखन की राष्ट्रवादी विचारधारा का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व करता है। इन इतिहासकारों ने औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय आत्म-सम्मान को पुनर्जीवित करने के लिए प्राचीन भारत की महान उपलब्धियों और लोकतांत्रिक प्रणालियों को साक्ष्यों के साथ दुनिया के सामने रखा। उनका मुख्य उद्देश्य साम्राज्यवादी लेखकों के उस नकारात्मक प्रचार का खंडन करना था जिसमें भारत को पिछड़ा समाज बताया गया था। उनके लेखन ने भारतीयों के भीतर राष्ट्रीय गौरव जगाया और स्वतंत्रता आंदोलन को ठोस आधार प्रदान किया।

251. (A) साम्राज्यवादी
साम्राज्यवादी दृष्टिकोण मुख्य रूप से उन औपनिवेशिक लेखकों की विचारधारा को दर्शाता है जिन्होंने अतीत का विश्लेषण इस प्रकार किया जिससे ब्रिटिश शासन को वैध सिद्ध किया जा सके। इस दृष्टिकोण के इतिहासकार अक्सर भारत को एक पिछड़ा और आंतरिक संघर्षों से त्रस्त समाज के रूप में चित्रित करते थे। उन्होंने यह तर्क दिया कि ब्रिटिश शासन ही भारत में आधुनिकता और कानून का शासन लाने वाली एकमात्र शक्ति थी। उनका मुख्य केंद्र शासन की प्रशासनिक कुशलता को दिखाना था, जिसमें स्थानीय लोगों के प्रतिरोध और उनकी आकांक्षाओं को प्रायः नजरअंदाज किया गया।

252. (B) साक्ष्य के आधार पर तथ्यों और सिद्धांतों की व्यवस्थित जांच।
इतिहास में 'शोध' का मौलिक अर्थ अतीत के बारे में नई जानकारियाँ खोजना और स्थापित तथ्यों का पुनर्मूल्यांकन करना है। यह एक कठोर बौद्धिक प्रक्रिया है जिसमें उपलब्ध साक्ष्यों, जैसे शिलालेखों और दस्तावेजों का अत्यंत सूक्ष्मता से विश्लेषण किया जाता है। शोधकर्ता केवल सूचनाएं एकत्रित नहीं करता, बल्कि वह घटनाओं के पीछे के कारणों और उनके प्रभावों के बीच तार्किक संबंधों को खोजने का प्रयास करता है। यह निरंतर चलने वाली एक वैज्ञानिक जाँच है जो हमारे ऐतिहासिक ज्ञान को और अधिक सटीक, प्रमाणिक और समृद्ध बनाती रहती है।

253. (B) इतिहास विकास और पतन के दोहराव वाले चरणों से होकर गुजरता है।
इतिहास की चक्रीय अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि मानवीय सभ्यताएं और समय एक पहिये की तरह चलते हैं, जहाँ स्थितियाँ स्वयं को दोहराती हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, प्रत्येक सभ्यता जन्म लेती है, अपनी परिपक्वता पर पहुँचती है और अंततः उसका पतन हो जाता है, जिसके बाद पुनः एक नया चक्र शुरु होता है। यह विचारधारा विकास के एक ऐसे प्रारूप का प्रस्ताव करती है जिसमें कुछ भी स्थायी नहीं है और उत्थान-पतन की यह प्रक्रिया शाश्वत है। प्राचीन ग्रीक और भारतीय दर्शन में समय को इसी रूप में कल्पित किया गया था।

254. (C) खिलजी और तुगलक के अधीन दिल्ली सल्तनत
जियाउद्दीन बरनी चौदहवीं शताब्दी के एक अत्यंत प्रभावशाली इतिहासकार थे जिनकी सुप्रसिद्ध कृति 'तारीख-ए-फिरोज शाही' है। इस ग्रंथ में बरनी ने दिल्ली सल्तनत के विभिन्न सुल्तानों, विशेष रूप से गयासुद्दीन बलवन से लेकर फिरोज शाह तुगलक के प्रारंभिक शासनकाल तक का विस्तृत विवरण दिया है। यह पुस्तक अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक नीतियों, मुहम्मद बिन तुगलक की योजनाओं और तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों को समझने के लिए सबसे भरोसेमंद प्राथमिक स्रोत मानी जाती है। बरनी का लेखन मध्यकालीन भारत के शोध के लिए आज भी अनिवार्य माना जाता है।

255. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भारत में पूर्व-आधुनिक इतिहास लेखन की परंपराएं अपने विशिष्ट स्वरूप के लिए जानी जाती हैं। पौराणिक परंपरा में 'वंशानुचरित' के माध्यम से राजाओं की विस्तृत वंशावलियां दी गई हैं और समय को एक चक्र के रूप में देखा गया है। वहीं दूसरी ओर, 'चरित' परंपरा में किसी विशिष्ट राजा के जीवन और उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जैसे बाणभट्ट रचित 'हर्षचरित'। यद्यपि इन जीवनियों में प्रशंसा की प्रधानता थी, लेकिन ये दोनों परंपराएं सिद्ध करती हैं कि प्राचीन भारतीय समाज में अपने अतीत को सुरक्षित रखने की एक समृद्ध संस्कृति मौजूद थी।

256. (A) अपने स्वयं के समाज के मूल्यों और चिंताओं को अतीत पर थोपना।
इतिहासकार का 'सामाजिक परिवेश' उसके मानसिक ढांचे को अनजाने में प्रभावित करता है, जिससे उसके लेखन में पूर्वाग्रह आ सकता है। प्रत्येक लेखक जिस समाज में रहता है, उसके नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक मान्यताओं से वह गहराई से जुड़ा होता है। जब वह अतीत का विश्लेषण करता है, तो वह अक्सर अपने वर्तमान के दृष्टिकोण से उसे देखता है। इस कारण वह प्राचीन संस्थाओं को आज के आधुनिक मानकों पर परखने की गलती कर सकता है, जिससे ऐतिहासिक यथार्थ विकृत हो जाता है और अतीत केवल वर्तमान की एक परछाई बनकर रह जाता है।

257. (A) अबुल फजल
अबुल फजल मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल के सबसे प्रमुख इतिहासकार थे। उनकी अमर कृति 'अकबरनामा' मध्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन का एक स्मारकीय उदाहरण है। इसमें उन्होंने मुगल साम्राज्य के प्रशासन, युद्धों और सम्राट अकबर की नीतियों का अत्यंत सूक्ष्मता के साथ वर्णन किया है। बाणभट्ट और कल्हण प्राचीन काल के लेखक हैं, जबकि यदुनाथ सरकार आधुनिक काल के इतिहासकार हैं। अबुल फजल का कार्य सोलहवीं शताब्दी के भारत की राजनीतिक और सामाजिक वास्तविकताओं को समझने के लिए आज भी सबसे विश्वसनीय प्राथमिक स्रोत माना जाता है।

258. (C) वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक सत्य प्राप्त करना।
उत्तर-आधुनिकतावादी विचारधारा इस मौलिक विचार को चुनौती देती है कि इतिहासकार पूरी तरह से निष्पक्ष होकर अतीत का वर्णन कर सकता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, कोई भी ऐतिहासिक वृत्तांत 'पूर्ण सत्य' नहीं होता, बल्कि वह लेखक की भाषा और सत्ता की संरचनाओं द्वारा निर्मित एक व्याख्या मात्र होता है। उत्तर-आधुनिकतावादी मानते हैं कि इतिहास लेखन अनिवार्य रूप से साहित्य का ही एक रूप है जहाँ तथ्यों का चयन इतिहासकार के अपने नजरिए पर निर्भर करता है। यह विचारधारा ऐतिहासिक दावों की निश्चितता और वैज्ञानिकता पर गहरा संदेह व्यक्त करती है।

259. (D) विश्लेषण का भौगोलिक और वैचारिक पैमाना।
राष्ट्रीय और विश्व इतिहास के बीच सबसे बड़ा अंतर उनके अध्ययन के भौगोलिक विस्तार और वैचारिक दृष्टिकोण में निहित है। राष्ट्रीय इतिहास एक विशिष्ट देश की सीमाओं के भीतर उसके लोगों और साझा पहचान के विकास पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके विपरीत, विश्व इतिहास पूरी मानवता को एक इकाई के रूप में देखता है और विभिन्न सभ्यताओं के बीच परस्पर संबंधों और वैश्विक प्रक्रियाओं का विश्लेषण करता है। जहाँ राष्ट्रीय इतिहास साझा गौरव पर बल देता है, वहीं विश्व इतिहास मानव जाति के साझा वैश्विक अनुभवों और उनके तुलनात्मक अध्ययन को प्राथमिकता देता है।

260. (A) भौतिक अवशेषों का उत्खनन और विश्लेषण
पुरातत्व इतिहास का एक अनिवार्य पूरक विषय है जो मुख्य रूप से भौतिक संस्कृति के माध्यम से अतीत का अन्वेषण करता है। इसकी प्राथमिक पद्धति 'उत्खनन' है, जिसके द्वारा प्राचीन बस्तियों, औजारों और मिट्टी के बर्तनों को खोजा जाता है। ये भौतिक अवशेष हमें तत्कालीन मानव जीवन, उनकी तकनीक और सामाजिक संरचना के बारे में प्रत्यक्ष और ठोस प्रमाण प्रदान करते हैं। पुरातत्व विशेष रूप से उन प्राचीन युगों के लिए अपरिहार्य है जिनका कोई लिखित इतिहास उपलब्ध नहीं है, और यह लिखित स्रोतों की प्रमाणिकता को भी पुख्ता करने में सहायक है।

261. (C) ईश्वरीय इच्छा या हस्तक्षेप।
इतिहास के प्रति पारंपरिक धार्मिक दृष्टिकोण घटनाओं की व्याख्या केवल मानवीय कारणों से नहीं करता, बल्कि उन्हें एक उच्चतर ईश्वरीय योजना का परिणाम मानता है। इस विचारधारा के अनुसार, संसार में होने वाले परिवर्तन और राजाओं का उत्थान-पतन ईश्वर की इच्छा का ही प्रकटीकरण हैं। इतिहासकार यहाँ यह दिखाने का प्रयास करता है कि कैसे दिव्य सत्ता धर्म की रक्षा और अधर्म का विनाश करती है। यह दृष्टिकोण इतिहास को नैतिकता के चश्मे से देखता है, जहाँ प्रत्येक घटना का एक गहरा धार्मिक अर्थ होता है, जो पूर्व-निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर है।

262. (D) 1, 2 और 3
इतिहास लेखन में पूर्वाग्रह एक जटिल समस्या है जो सचेत और अचेतन दोनों स्तरों पर कार्य कर सकती है। कभी-कभी इतिहासकार जानबूझकर तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश करता है, तो कभी उसका अपना सामाजिक परिवेश अनजाने में उसके विचारों को आकार देता है। यद्यपि पूर्ण वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना एक कठिन आदर्श है, फिर भी एक समर्पित इतिहासकार का यह निरंतर लक्ष्य होता है कि वह अपने पूर्वाग्रहों को पहचाने और उन्हें कम करने का प्रयास करे। यह शैक्षणिक ईमानदारी ही ऐतिहासिक शोध को विश्वसनीय आधार प्रदान करने हेतु अत्यंत आवश्यक है।

263. (A) संरक्षक पर कृतज्ञता और निर्भरता से उत्पन्न पूर्वाग्रह।
प्राचीन भारत में प्रचलित 'चरित' विधा, जिसमें राजाओं की जीवनियां लिखी जाती थीं, अक्सर संरक्षक-लेखक संबंध से उत्पन्न पूर्वाग्रह का उदाहरण पेश करती है। चूँकि लेखक पूरी तरह से अपने स्वामी के पुरस्कारों पर निर्भर होता था, इसलिए उसके लेखन में राजा की अत्यधिक प्रशंसा और उसकी कमियों को नजरअंदाज करने की प्रवृत्ति होती थी। इन वृत्तांतों का मुख्य उद्देश्य निष्पक्ष विश्लेषण करना नहीं, बल्कि अपने संरक्षक का महिमामंडन करना होता था। यह व्यक्तिगत निर्भरता ऐतिहासिक विवरणों की वस्तुनिष्ठता और उनकी प्रमाणिकता को गहराई से प्रभावित करती है।

264. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
इतिहास लेखन की विभिन्न विचारधाराओं ने अतीत को देखने के विशिष्ट नजरिए प्रदान किए हैं। उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण इतिहास को एक भाषाई निर्माण मानता है और व्यापक सिद्धांतों पर संदेह व्यक्त करता है। मार्क्सवादी विचारधारा इतिहास को विभिन्न वर्गों के बीच होने वाले निरंतर संघर्ष और आर्थिक आधार के माध्यम से समझती है। साम्राज्यवादी दृष्टिकोण ने

औपनिवेशिक शासन को सही ठहराने के लिए इतिहास का उपयोग किया। वहीं, राष्ट्रवादी विचारधारा ने औपनिवेशिक दावों का विरोध करने और भारतीयों में गौरव जगाने के उद्देश्य से इतिहास को पुनर्गठित करने का कार्य किया।

265. (A) जांच के माध्यम से प्राप्त ज्ञान
'इतिहास' शब्द का मूल ग्रीक शब्द 'हिस्टोरिया' में निहित है, जिसका प्रारंभिक अर्थ किसी विषय की व्यवस्थित जांच के माध्यम से प्राप्त जानकारी या ज्ञान था। प्राचीन यूनान में यह शब्द केवल पुरानी कहानियों के लिए नहीं, बल्कि साक्ष्यों और अन्वेषण के आधार पर सत्य तक पहुँचने की प्रक्रिया के लिए उपयोग किया जाता था। यह व्युत्पत्तिगत अर्थ यह स्पष्ट करता है कि इतिहास प्रारंभ से ही एक सक्रिय बौद्धिक प्रयास रहा है, जिसका उद्देश्य अतीत की घटनाओं के पीछे छिपे वास्तविक कारणों और प्रमाणों को उजागर करना है।

266. (A) संवैधानिक इतिहास और राजनीतिक इतिहास
स्वतंत्र भारत में संसद के विकास और उसके कार्यों का अध्ययन एक ऐसा विषय है जो संवैधानिक और राजनीतिक इतिहास दोनों के संगम पर स्थित है। यह संवैधानिक इतिहास है क्योंकि यह देश के विधायी ढांचे के विकास का विश्लेषण करता है। साथ ही, यह राजनीतिक इतिहास भी है क्योंकि यह लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और शासन कला के क्रमिक परिवर्तन को समझने का प्रयास करता है। यह अध्ययन हमें बताता है कि कैसे हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएं समय के साथ विकसित होकर वर्तमान स्वरूप तक पहुँची हैं, जो आधुनिक समाज का आधार है।

267. (D) सामाजिक इतिहास
जब कोई इतिहासकार अतीत की सामाजिक संरचनाओं, वर्ग संबंधों और सामुदायिक रीति-रिवाजों का अध्ययन करता है, तो वह 'सामाजिक इतिहास' के क्षेत्र में कार्य कर रहा होता है। यह शाखा केवल शासन और युद्धों पर ध्यान नहीं देती, बल्कि यह गहराई से इस बात की जाँच करती है कि समाज के सामान्य लोग कैसे रहते थे और उनकी सामाजिक संस्थाएं समय के साथ कैसे बदलीं। सामाजिक इतिहास हमें समाज की आंतरिक बुनावट और लोगों के दैनिक अनुभवों की एक जीवंत तस्वीर प्रदान करता है, जिससे इतिहास अधिक मानवीय और समावेशी बनता है।

268. (A) इतिहास के प्रति एक वैज्ञानिक और साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण।
रामकृष्ण गोपाल भंडारकर ने उन्नीसवीं सदी में भारतीय इतिहास लेखन को एक नई और आधुनिक दिशा प्रदान की। उन्होंने परंपरागत कथावाचक शैली को छोड़कर साक्ष्यों के कठोर और आलोचनात्मक परीक्षण पर बल दिया। उनके लिए ऐतिहासिक शोध एक वैज्ञानिक साधना थी जिसमें शिलालेखों और प्राचीन ग्रंथों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण ही सत्य तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग था। भंडारकर के इस क्रांतिकारी दृष्टिकोण ने भारत में एक विश्वसनीय और तर्कसंगत ऐतिहासिक शोध परंपरा की आधारशिला रखी, जो आज भी भारतीय विद्वानों के लिए प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

269. (A) इसमें कल्पना, व्याख्या और वृत्तांत शामिल है।
इतिहास को 'कला' मानने वाले विद्वानों का मुख्य तर्क यह है कि ऐतिहासिक तथ्य स्वयं कुछ नहीं कहते; उन्हें एक अर्थपूर्ण वृत्तांत में पिरोने का कार्य इतिहासकार का है। इसमें लेखक की अपनी व्याख्यात्मक शक्ति और अतीत के जीवंत पुनर्निर्माण की कल्पनाशीलता अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, एक अच्छा इतिहासकार केवल तथ्यों का संग्रहकर्ता नहीं, बल्कि एक कुशल कलाकार भी है जो बिखरे हुए साक्ष्यों को एक प्रभावशाली कहानी का रूप देता है, जिससे इतिहास पाठकों के लिए रोचक, सुलभ और ज्ञानवर्धक बनता है।

270. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत यह मानता है कि समाज की आर्थिक नींव ही उसकी कानूनी, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था को निर्धारित करती है। इस सिद्धांत के अनुसार, मानवीय इतिहास वास्तव में उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण को लेकर होने वाले निरंतर वर्ग संघर्षों की एक क्रमिक प्रगति है। जैसे-जैसे आर्थिक परिस्थितियों में बदलाव आता है, पुरानी सामाजिक व्यवस्था बिखरने लगती है और एक नया ऐतिहासिक चरण सामने आता है। यह दृष्टिकोण भौतिक और आर्थिक कारकों को ऐतिहासिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण चालक मानता है।

271. (A) प्राथमिक स्रोत
किसी प्रधानमंत्री की आत्मकथा को ऐतिहासिक शोध के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत माना जाता है। चूँकि यह सीधे उस व्यक्ति द्वारा लिखी गई है जिसने उन महत्वपूर्ण निर्णयों को जिया है, इसलिए यह उस कालखंड के राजनीतिक इतिहास के बारे में एक अनूठा और प्रत्यक्ष दृष्टिकोण प्रदान करती है। यद्यपि इसमें लेखक का व्यक्तिगत पूर्वाग्रह हो सकता है, फिर भी यह नीति-निर्माण की प्रक्रियाओं को समझने के लिए एक अपरिहार्य दस्तावेज है। प्राथमिक स्रोत होने के नाते यह इतिहासकारों को सीधे ऐतिहासिक पात्र की मानसिकता के करीब ले जाता है।

272. (A) अधीनस्थ पद या सामाजिक स्थिति के लोग; जनता।
निम्नवर्गीय या 'सबाल्टर्न' शब्द का प्रयोग इतिहास लेखन में उन लोगों के समूह के लिए किया जाता है जो समाज में शक्तिहीन और हाशिए पर रहे हैं। इसमें किसान, मजदूर और वे सभी अधीनस्थ वर्ग शामिल हैं जिन्हें पारंपरिक इतिहास लेखन में प्रायः नजरअंदाज कर दिया गया था। सबाल्टर्न अध्ययन समूह का मुख्य उद्देश्य इन वर्गों की सक्रियता और उनके प्रतिरोध के स्वर को इतिहास के केंद्र में लाना है। यह दृष्टिकोण मानता है कि समाज का वास्तविक इतिहास इन करोड़ों सामान्य लोगों के संघर्षों और अनुभवों के बिना पूर्णतः अधूरा है।

273. (A) शासन कला और राजनीति विज्ञान
प्राचीन भारतीय वाङ्मय में शुक्र (विशेष रूप से शुक्रनीति के संदर्भ में) का कार्य मुख्य रूप से शासन कला, कूटनीति और राज्य के प्रबंधन के व्यापक सिद्धांतों से जुड़ा हुआ है। इस ग्रंथ में राज्य की सुरक्षा, न्याय प्रणाली और राजा के कर्तव्यों का

विस्तृत विवरण मिलता है। यह प्राचीन भारत के राजनीतिक दर्शन को समझने के लिए एक अत्यंत मूल्यवान स्रोत है। शुक्रनीति न केवल प्रशासनिक संरचना पर प्रकाश डालती है, बल्कि यह यह भी दर्शाती है कि प्राचीन काल में शासन को किन नैतिक और व्यावहारिक नियमों के आधार पर संचालित किया जाता था।

274. (A) ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता
ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता एक इतिहासकार के लिए सबसे बुनियादी शैक्षणिक सिद्धांत है। इसका अर्थ है कि शोधकर्ता को पूरी तरह से साक्ष्यों के प्रति ईमानदार रहना चाहिए, चाहे वे उसके स्वयं के विश्वासों के अनुकूल हों या प्रतिकूल। यदि कोई इतिहासकार जानबूझकर उन प्रमाणों को छिपाता है जो उसके पसंदीदा सिद्धांत का खंडन करते हैं, तो वह निष्पक्षता के सिद्धांत का गंभीर उल्लंघन कर रहा होता है। ऐसी चयनात्मकता ऐतिहासिक सत्य को विकृत कर देती है और शोध की विश्वसनीयता को समाप्त कर देती है, जिससे इतिहास केवल एक पक्षपाती प्रचार सामग्री बनकर रह जाता है।

275. (A) डी. डी. कोसंबी
डी.डी. कोसंबी को भारतीय इतिहास लेखन के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी विद्वान माना जाता है, जिन्होंने प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए पहली बार मार्क्सवादी विश्लेषणात्मक ढांचे को वैज्ञानिक ढंग से लागू किया। कोसंबी ने केवल राजाओं और युद्धों के स्थान पर समाज के भौतिक आधार और आर्थिक संरचनाओं पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उनकी कार्यप्रणाली ने सांख्यिकी और नृविज्ञान का अभूतपूर्व समन्वय किया। कोसंबी के शोध ने यह स्पष्ट किया कि कैसे आर्थिक परिस्थितियों के परिवर्तन ने भारतीय संस्कृति और सामाजिक संस्थाओं के क्रमिक विकास को निर्धारित किया है।

276. (A) अतीत से विशिष्ट केस स्टडी और डेटा।
इतिहास और समाजशास्त्र के बीच का संबंध अत्यंत गहरा और परस्पर निर्भरता वाला है। इतिहास समाजशास्त्र को वह कच्चा माल और विस्तृत तथ्य प्रदान करता है जिसकी सहायता से समाजशास्त्री सामाजिक प्रवृत्तियों और मानवीय व्यवहार के सामान्य नियम बना सकते हैं। अतीत की विशिष्ट घटनाएं और अध्ययन समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के परीक्षण के लिए एक प्रयोगशाला की तरह कार्य करते हैं। ऐतिहासिक संदर्भ के बिना समाजशास्त्र की अवधारणाएं निराधार हो सकती हैं, क्योंकि प्रत्येक सामाजिक परिवर्तन के पीछे एक लंबा ऐतिहासिक क्रम होता है। इस प्रकार इतिहास समाजशास्त्र को ठोस धरातल प्रदान करता है।

277. (A) शाही वंशावलियाँ और राजवंशों का उत्तराधिकार।
भारतीय इतिहास लेखन की पौराणिक परंपरा प्राचीन राजनीतिक इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत मानी जाती है। पुराणों के 'वंशानुचरित' भाग में प्राचीन काल के विभिन्न राजाओं और राजवंशों की विस्तृत वंशावलियां दी गई हैं। यद्यपि ये विवरण अक्सर धार्मिक कथाओं के साथ मिश्रित हैं, फिर भी आधुनिक इतिहासकारों ने इनका विश्लेषण करके प्राचीन भारत के राजनीतिक ढांचे और शाही उत्तराधिकार के क्रम को समझने में बड़ी सफलता प्राप्त की है। यह परंपरा प्राचीन काल में ऐतिहासिक निरंतरता को सुरक्षित रखने का एक सचेत प्रयास थी।

278. (A) वस्तुनिष्ठता
यह प्रसिद्ध आदर्श कि एक इतिहासकार को "निडर, निष्पक्ष और सत्य का मित्र" होना चाहिए, सीधे तौर पर ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता के महत्व को रेखांकित करता है। इसका तात्पर्य है कि इतिहासकार का प्राथमिक कर्तव्य साक्ष्यों के प्रति पूर्ण ईमानदारी बरतना है, चाहे वे सत्ता के अनुकूल हों या नहीं। उसे अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और भावनाओं से ऊपर उठकर तथ्यों का तटस्थ विश्लेषण करना चाहिए। वस्तुनिष्ठता ही वह गुण है जो इतिहास को केवल गपशप होने से बचाता है और उसे एक सम्मानित, विश्वसनीय और तर्कसंगत शैक्षणिक अनुशासन के रूप में समाज में स्थापित करता है।

279. (A) निम्नवर्गीय दृष्टिकोण राजाओं और राष्ट्रपतियों के इतिहास पर केंद्रित है।
इतिहास लेखन के दृष्टिकोणों के बारे में यह कथन गलत है क्योंकि निम्नवर्गीय या 'सबाल्टर्न' दृष्टिकोण का मूल उद्देश्य ही राजाओं और कुलीन वर्ग के वर्चस्व वाले इतिहास को चुनौती देना है। यह विचारधारा समाज के उपेक्षित वर्गों, जैसे किसानों और मजदूरों को इतिहास का मुख्य पात्र बनाने पर केंद्रित है। अन्य सभी कथन सही हैं; साम्राज्यवादी लेखकों ने औपनिवेशिक शासन को सही ठहराया, राष्ट्रवादी लेखकों ने राष्ट्र का गौरव जगाया और मार्क्सवादी इतिहासकारों ने आर्थिक कारकों एवं वर्ग संघर्ष को ऐतिहासिक परिवर्तन की मुख्य धुरी के रूप में मान्यता प्रदान की।

280. (A) हाल के युद्ध या राजनीतिक आंदोलन।
इतिहासकार की 'राजनीतिक वफादारी' का सबसे तीव्र प्रभाव हाल के युद्धों या समकालीन राजनीतिक आंदोलनों के विवरण पर पड़ने की संभावना होती है। चूंकि ये घटनाएं लेखक के अपने समय और उसकी दलगत निष्ठाओं से सीधे जुड़ी होती हैं, इसलिए वह अक्सर पूरी तरह निष्पक्ष नहीं रह पाता। ऐसा इतिहासकार अक्सर अपनी पसंदीदा विचारधारा के पक्ष में तथ्यों को प्रस्तुत करता है और विरोधियों की छवि बिगाड़ने का प्रयास करता है। प्राचीन मिट्टी के बर्तनों या तकनीकी विकास जैसे विषयों में राजनीतिक वफादारी का हस्तक्षेप तुलनात्मक रूप से बहुत कम या नगण्य होता है।

281. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारतीय इतिहास लेखन के इन महान विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से हमारे अतीत को समृद्ध किया है। रामकृष्ण गोपाल भंडारकर ने भारत में वैज्ञानिक और साक्ष्य-आधारित शोध पद्धति की नींव रखी। आर.सी. मजूमदार ने राष्ट्रवादी गौरव पर आधारित विस्तृत इतिहास का कुशल संपादन किया। आनंद के. कुमारस्वामी ने भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र के दार्शनिक आधार को विश्व के सामने रखा। वहीं, सतीशचंद्र मित्तल जैसे राष्ट्रवादी लेखक अक्सर प्रचलित धर्मनिरपेक्ष और मार्क्सवादी व्याख्याओं को तार्किक रूप से चुनौती देने और भारतीय संस्कृति के गौरव को स्थापित करने हेतु जाने जाते हैं।

282. (A) किसी विशिष्ट सिद्धांत में फिट होने के लिए स्रोतों का आविष्कार करना।
ऐतिहासिक शोध एक ईमानदार प्रक्रिया है जो उपलब्ध साक्ष्यों के निष्पक्ष विश्लेषण पर टिकी होती है। इसमें तथ्यों के संग्रह के लिए अभिलेखागारों की यात्रा, पुरातात्विक खुदाई के परिणामों की जाँच और मौखिक इतिहास के लिए साक्षात्कार करना शामिल है। हालांकि, अपने किसी पहले से सोचे हुए सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए फर्जी स्रोतों का निर्माण करना ऐतिहासिक नैतिकता के विरुद्ध है और यह शोध की पूरी विश्वसनीयता को समाप्त कर देता है। एक सच्चा इतिहासकार हमेशा साक्ष्यों का अनुसरण करता है, न कि उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार बनाता है।

283. (A) किसी समूह के साझा अर्थ और प्रतीक।
सांस्कृतिक इतिहास ऐतिहासिक अध्ययन की वह रोचक शाखा है जो किसी समाज की 'आंतरिक चेतना' को समझने का प्रयास करती है। इसका मुख्य केंद्र यह विश्लेषण करना है कि किसी विशिष्ट समय में लोग अपनी दुनिया को कैसे देखते थे और उनके साझा मूल्य, कलात्मक प्रतीक और रीति-रिवाज क्या थे। यह केवल भौतिक घटनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवीय व्यवहार के उन सूक्ष्म पहलुओं की खोज करता है जो समाज की पहचान बनाते हैं। सांस्कृतिक इतिहास हमें मानव सभ्यता के मानसिक और आध्यात्मिक विकास का एक व्यापक और सजीव चित्र प्रदान करता है।

284. (A) ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत
ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत को इतिहास का एक 'व्यापक सिद्धांत' माना जाता है क्योंकि यह मानवीय अतीत के संपूर्ण विकास को समझने के लिए एक सार्वभौमिक ढांचा प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत यह दावा करता है कि इतिहास की सभी प्रमुख घटनाएं अंततः आर्थिक उत्पादन की पद्धतियों और सामाजिक वर्गों के बीच होने वाले संघर्षों से निर्धारित होती हैं। यह केवल किसी एक राष्ट्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आदिम समाज से लेकर भविष्य तक की पूरी मानवता की ऐतिहासिक यात्रा को एक वैज्ञानिक और भौतिक आधार पर समझाने का प्रयास करता है।

285. (A) व्यापक वृत्तांतों और सत्य के प्रति संदेह।
उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण का मूल आधार ही उन 'व्यापक सिद्धांतों' के प्रति गहरा संदेह व्यक्त करना है जो इतिहास को एक निश्चित और वस्तुनिष्ठ सत्य के रूप में प्रस्तुत करने का दावा करते हैं। इस विचारधारा के अनुसार, कोई भी ऐतिहासिक विवरण निष्पक्ष नहीं होता, क्योंकि वह लेखक की भाषा और तत्कालीन सत्ता की संरचनाओं का परिणाम होता है। उत्तर-आधुनिकतावादी मानते हैं कि इतिहास एक ऐसा भाषाई निर्माण है जहाँ सत्य हमेशा सापेक्ष होता है। वे वृत्तांतों के विखंडन पर जोर देते हैं ताकि उन छुपी हुई आवाजों को उजागर किया जा सके जिन्हें अक्सर दबा दिया गया है।

286. (A) संवैधानिक इतिहास
जब कोई इतिहासकार किसी देश की कानूनी व्यवस्था, उसके मौलिक कानूनों के विकास और शासन करने वाले दस्तावेजों के क्रमिक परिवर्तन की जाँच करता है, तो वह 'संवैधानिक इतिहास' के क्षेत्र में कार्य कर रहा होता है। यह शाखा इस बात का विश्लेषण करती है कि समय के साथ राज्य की शक्तियाँ कैसे परिभाषित हुईं और नागरिकों के अधिकारों ने किस प्रकार अपना वर्तमान स्वरूप प्राप्त किया। संवैधानिक इतिहास केवल नियमों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह उन राजनीतिक संघर्षों की कहानी है जिन्होंने एक आधुनिक और संगठित राज्य की आधारशिला रखी है।

287. (A) इतिहास लेखन के शोध के लिए एक द्वितीयक स्रोत प्राथमिक स्रोत हो सकता है।
ऐतिहासिक स्रोतों का वर्गीकरण स्थिर नहीं है, बल्कि यह इतिहासकार के शोध प्रश्न पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई विद्वान प्राचीन भारत पर उन्नीसवीं सदी में लिखे गए इतिहास का अध्ययन कर रहा है, तो वह आधुनिक पुस्तक उसके लिए एक प्राथमिक स्रोत बन जाती है। यह इसलिए है क्योंकि वह पुस्तक स्वयं उस युग के बौद्धिक चिंतन का एक साक्ष्य है। यह लचीलापन स्पष्ट करता है कि स्रोत की प्रकृति और उसका महत्व शोध के उद्देश्य के अनुसार बदलता रहता है, जो ऐतिहासिक पद्धति की सूक्ष्मता और उसकी वैज्ञानिक प्रकृति को दर्शाता है।

288. (A) ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या धार्मिक श्रेष्ठता के प्रमाण के रूप में करता है।
धर्म का प्रभाव इतिहास लेखन में तब एक बड़ा पूर्वाग्रह बन जाता है जब इतिहासकार अपने धार्मिक विश्वासों को साक्ष्यों के निष्पक्ष विश्लेषण से ऊपर रखने लगता है। ऐसा लेखक अक्सर अपने धर्म के नायकों को दैवीय रूप से श्रेष्ठ और अन्य धर्मों के पात्रों को कमतर दिखाने का प्रयास करता है। वह ऐतिहासिक परिवर्तनों को ईश्वरीय न्याय के रूप में प्रस्तुत करता है ताकि उसके अपने पंथ की नैतिकता सिद्ध हो सके। यह दृष्टिकोण इतिहास की वैज्ञानिक तटस्थता को समाप्त कर देता है और शोध को एक संतुलित विश्लेषण के बजाय धार्मिक प्रचार का साधन बना देता है।

289. (A) औपनिवेशिक रुढ़ियों का मुकाबला करने के लिए भारत की पिछली उपलब्धियों पर जोर देना।
भारत में राष्ट्रवादी इतिहास लेखन का मुख्य उद्देश्य औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय अस्मिता और गौरव को पुनर्जीवित करना था। साम्राज्यवादी लेखकों ने अक्सर भारत को एक असभ्य समाज चित्रित किया था। इसके विरोध में राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने प्राचीन भारत की महान वैज्ञानिक खोजों, समृद्ध दर्शन और लोकतांत्रिक शासन प्रणालियों के साक्ष्य प्रस्तुत किए। उनका कार्य भारतीयों के भीतर राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाने और स्वतंत्रता आंदोलन को एक ठोस ऐतिहासिक आधार प्रदान करने के लिए समर्पित था, जिससे औपनिवेशिक हीनता की भावना को सफलतापूर्वक चुनौती दी जा सके।

290. (D) 1, 2 और 3
भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा मध्यकालीन काल से ही अत्यंत समृद्ध रही है। जियाउद्दीन बरनी दिल्ली सल्तनत के एक प्रखर इतिहासकार थे जिन्होंने शासन और प्रशासन पर गहराई

से लिखा। कल्हण की 'राजतरंगिणी' कश्मीर के इतिहास का पहला सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक वृत्तांत है, जिसमें आधुनिक शोध पद्धति की झलक मिलती है। वहीं, बाणभट्ट ने अपने संरक्षक सम्राट हर्षवर्धन के जीवन और उनके शौर्य को 'हर्षचरित' के माध्यम से अमर कर दिया। ये तीनों ही रचनाएँ अपने कालखंड की राजनीतिक वास्तविकताओं को समझने के लिए अनिवार्य प्राथमिक स्रोत मानी जाती हैं।

291. (A) साक्ष्यों से तार्किक निष्कर्ष पर आधारित है।
यह कहना कि "इतिहास तर्क-वितर्क का विज्ञान है" इतिहास की उस तर्कसंगत प्रकृति को रेखांकित करता है जिसमें केवल तथ्यों को इकट्ठा करना पर्याप्त नहीं है। इतिहासकार को उपलब्ध साक्ष्यों का अत्यंत सूक्ष्मता से विश्लेषण करना पड़ता है और उनके बीच कार्य-कारण संबंधों को तर्क की कसौटी पर कसना पड़ता है। यह प्रक्रिया कल्पना के बजाय प्रमाणों और तार्किक बहस पर आधारित होती है। यह दृष्टिकोण इतिहास को एक बौद्धिक और वैज्ञानिक अनुशासन बनाता है जहाँ प्रत्येक निष्कर्ष को ठोस प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करना अनिवार्य होता है।

292. (C) मौखिक इतिहास के चारण और सारथी।
'सूत परंपरा' के बारे में लिखने वाला इतिहासकार प्राचीन भारत में ऐतिहासिक स्मृतियों को सुरक्षित रखने के मौखिक माध्यमों पर चर्चा कर रहा होगा। सूत और चारण वे पेशेवर समुदाय थे जो राजदरबारों में राजाओं की वंशावलियों का संरक्षण करते थे और उनके पूर्वजों के वीरतापूर्ण कार्यों की कथाएं सुनाते थे। लिखित अभिलेखों के व्यापक प्रचलन से पहले, यही मौखिक परंपरा ही अतीत की महत्वपूर्ण जानकारियों को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का प्राथमिक जरिया थी। यह परंपरा दर्शाती है कि प्राचीन भारत में इतिहास संजोने की सुव्यवस्थित संस्कृति थी।

293. (A) अपने व्यक्तिगत मूल्यों और संदर्भ से पूरी तरह अलग नहीं हो सकता।
इतिहास में वस्तुनिष्ठता की समस्या मुख्य रूप से इतिहासकार की मानवीय सीमाओं और उसके परिवेश से जुड़ी है। प्रत्येक लेखक एक विशिष्ट सांस्कृतिक और वैचारिक वातावरण में पलता है, जो अनजाने में उसके सोचने के तरीके और अतीत के प्रति उसके नजरिए को आकार देता है। जब वह इतिहास लिखता है, तो उसके वर्तमान मूल्य अक्सर तथ्यों के चयन और उनकी व्याख्या में हस्तक्षेप करते हैं। इस व्यक्तिगत संदर्भ से पूरी तरह मुक्त होना अत्यंत कठिन है, जो ऐतिहासिक लेखन में पूर्ण तटस्थता प्राप्त करने की राह में बड़ी चुनौती है।

294. (A) किसी घटना के साक्षी द्वारा बनाया गया स्रोत।
ऐतिहासिक शोध में 'प्राथमिक स्रोत' की सबसे सटीक परिभाषा वह सामग्री है जो सीधे उस घटना के समय या उसके प्रत्यक्ष साक्षी द्वारा बनाई गई हो जिसका अध्ययन किया जा रहा है। इसमें समकालीन डायरियाँ, सरकारी दस्तावेज, शिलालेख और सिक्के शामिल होते हैं। प्राथमिक स्रोत इतिहासकार को घटना के सबसे करीब ले जाते हैं और एक ऐसा यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रदान करते हैं जिसे बाद के लेखकों ने विश्लेषित नहीं किया है। ये स्रोत किसी भी शोध के आधार स्तंभ हैं क्योंकि ये अतीत का सीधा और बिना मिलावट के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

295. (A) निम्नवर्गीय - हाशिए पर रहने वालों का इतिहास
इतिहास लेखन के विभिन्न दृष्टिकोणों के अपने विशिष्ट सरोकार और लक्ष्य होते हैं। निम्नवर्गीय दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य समाज के हाशिए पर रहने वाले लोगों, जैसे किसानों और मजदूरों के अनुभवों को इतिहास के केंद्र में लाना है। यह कुलीन पूर्वाग्रहों की आलोचना करता है। इसके विपरीत, अन्य विकल्प गलत हैं; राष्ट्रवादी विचारधारा राष्ट्र के गौरव पर बल देती है, मार्क्सवादी विचारधारा वर्ग संघर्ष और आर्थिक आधार पर ध्यान केंद्रित करती है, और साम्राज्यवादी दृष्टिकोण औपनिवेशिक शासन को सही ठहराने का प्रयास करता है। यह मिलान विश्लेषण को स्पष्टता प्रदान करता है।

296. (A) एक सुविचारित, साक्ष्य-आधारित विवरण प्रदान करना।
एक ईमानदार इतिहासकार का सर्वोच्च लक्ष्य अतीत की घटनाओं का एक ऐसा विवरण प्रस्तुत करना है जो पूर्णतः साक्ष्यों पर आधारित हो और जिसका तार्किक विश्लेषण किया गया हो। उसे अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों या राजनीतिक उद्देश्यों से ऊपर उठना चाहिए। इतिहासकार का मुख्य उत्तरदायित्व यह है कि वह उपलब्ध प्रमाणों के प्रति पूर्ण निष्ठा बरते और एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाए जिसे अन्य विद्वान भी सत्यापित कर सकें। यह शैक्षणिक ईमानदारी ही इतिहास को एक विश्वसनीय, वैज्ञानिक और गंभीर सामाजिक विज्ञान के रूप में समाज में प्रतिष्ठा प्रदान करती है।

297. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक समय में इतिहास के दायरे में एक क्रांतिकारी विस्तार हुआ है जो केवल पुराने समय के युद्धों और राजाओं की सूचियों तक सीमित नहीं रहा। आज के इतिहासकार यह मानते हैं कि मानवीय अतीत का कोई भी पहलू अध्ययन से बाहर नहीं होना चाहिए। इसीलिए अब इतिहास में समाज की आंतरिक बनावट, आर्थिक प्रणालियों और सांस्कृतिक मूल्यों का गहन विश्लेषण किया जाता है। यह व्यापक दृष्टिकोण हमें अतीत का एक समग्र और अधिक यथार्थवादी चित्र प्रदान करता है। यह स्पष्ट करता है कि सभ्यता का विकास जीवन की सभी धाराओं के संगम से हुआ है।

298. (A) यह अध्ययन करना कि अतीत के राजनीतिक सिद्धांतों ने संरचनाओं को कैसे आकार दिया है।
इतिहास और राजनीति का सह-संबंध तब स्पष्ट होता है जब हम यह विश्लेषण करते हैं कि विभिन्न युगों के राजनीतिक विचारों और दर्शन ने शासन की प्रणालियों को कैसे बदला। यह अध्ययन शक्ति के समीकरणों, सरकारों के गठन और शासकों एवं शासितों के बीच के बदलते संबंधों पर ध्यान केंद्रित करता है। चूँकि राजनीति किसी भी समाज की दिशा तय करने में निर्णायक भूमिका निभाती है, इसलिए ऐतिहासिक घटनाओं को उनके राजनीतिक संदर्भ के बिना समझना असंभव है। यह सह-संबंध हमें शासन कला और राज्य की प्रकृति के क्रमिक विकास की गहरी समझ देता है।

299. (A) 2, 1, 4, 3
भारतीय इतिहास के लेखन के विकास को इन प्रमुख हस्तियों के कालक्रम के माध्यम से समझा जा सकता है। सातवीं शताब्दी में बाणभट्ट ने सम्राट हर्ष की जीवनी 'हर्षचरित' लिखी। उनके बाद तेरहवीं शताब्दी में मिन्हाज-उस-सिराज ने दिल्ली सल्तनत का विवरण 'तबकात-ए-नासिरी' में दिया। सोलहवीं शताब्दी के अंत में अबुल फजल ने मुगल प्रशासन का ग्रंथ 'अकबरनामा' रचा। अंततः उन्नीसवीं शताब्दी में रामकृष्ण गोपाल भंडारकर ने आधुनिक वैज्ञानिक शोध पद्धतियों की नींव रखी। यह क्रम ऐतिहासिक चेतना और लेखन शैली के क्रमिक परिपक्व होने की यात्रा को दर्शाता है।

300. (A) चक्रीय सिद्धांत इतिहास को दोहराव के रूप में देखता है, जबकि भौतिकवाद इसे प्रगतिशील के रूप में देखता है।
इतिहास की चक्रीय अवधारणा और ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत समय की गति को समझने के दो अलग वैचारिक ढांचे हैं। चक्रीय सिद्धांत यह मानता है कि सभ्यताएं उत्थान और पतन के निश्चित चक्रों में चलती हैं और इतिहास स्वयं को दोहराता है। इसके विपरीत, मार्क्सवादी ऐतिहासिक भौतिकवाद इतिहास को उत्पादन की पद्धतियों में होने वाले बदलावों के कारण एक निरंतर ऊपर की ओर बढ़ती प्रगतिशील प्रक्रिया के रूप में देखता है। जहाँ एक ओर समय का दोहराव है, वहीं दूसरी ओर निरंतर विकास और भविष्य के एक विशिष्ट लक्ष्य की ओर बढ़ने की कल्पना है।

अध्याय 02
प्राचीन भारतीय इतिहास

1. निम्नलिखित कालों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
   I. ताम्रपाषाण काल
   II. मध्यपाषाण काल
   III. नवपाषाण काल
   IV. पुरापाषाण काल
   (A) IV, III, II, I
   (B) IV, II, III, I
   (C) I, II, III, IV
   (D) II, IV, I, III

2. प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वर्णित 'भारतवर्ष' की अवधारणा को निम्नलिखित में से कौन सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
   (A) भरत कबीले की भूमि, जो अंततः पूरे उपमहाद्वीप का बोध कराने लगी
   (B) भरत नामक एक महान संप्रभु शासक द्वारा शासित एक एकीकृत राजनीतिक इकाई
   (C) प्राचीन पौराणिक साहित्य में वर्णित एक आध्यात्मिक या स्वर्गीय साम्राज्य
   (D) उत्तरी गंगा के मैदानों तक सीमित एक संकुचित भौगोलिक क्षेत्र

3. वैदिक विचारधारा के अनुसार, 'ऋत' की अवधारणा क्या है?
   (A) वरिष्ठ पुरोहितों द्वारा संपन्न किए जाने वाले यज्ञों का एक मानक समूह
   (B) सफल युद्ध के माध्यम से राजा द्वारा संचित भौतिक संपदा
   (C) ब्रह्मांडीय व्यवस्था और नैतिक नियम जो पूरे ब्रह्मांड को संचालित करते हैं
   (D) किसी शासक राजवंश की पैतृक वंशावली और शाही उत्तराधिकार

4. सूची I की प्राचीन अवधारणाओं को सूची II के उनके विवरणों के साथ सुमेलित करें।
   सूची I:
   P. वर्णाश्रम
   Q. पुरुषार्थ
   R. ऋण
   S. संस्कार
   सूची II:
   1. मानव जीवन के चार वैध लक्ष्य
   2. तीन ऋण जो एक व्यक्ति पर होते हैं
   3. सामाजिक वर्गों और जीवन के चरणों की व्यवस्था
   4. जीवन के चरणों को चिह्नित करने वाले धार्मिक अनुष्ठान
   (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
   (B) P-1, Q-3, R-4, S-2
   (C) P-3, Q-2, R-1, S-4
   (D) P-4, Q-1, R-2, S-3

5. वैदिक सभाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प चुनें।
   कथन I: वैदिक काल में सभा वृद्धों और चुनिंदा कुलीनों की एक परिषद थी।
   कथन II: समिति सामान्य कबीले के लोगों की एक व्यापक आम सभा थी।
   (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
   (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
   (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
   (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

6. निम्नलिखित में से कौन प्राचीन भारतीय परंपरा के 'पुरुषार्थों' में से एक नहीं है?
   (A) धर्म
   (B) निर्वाण
   (C) अर्थ
   (D) काम

7. निम्नलिखित कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनें।
   कथन (A): 'कर्म का सिद्धांत' कई भारतीय दार्शनिक प्रणालियों का एक मौलिक सिद्धांत है।
   कारण (R): यह मानता है कि व्यक्ति का प्रत्येक कार्य, मंशा और विचार उसके भविष्य को प्रभावित करता है।
   (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
   (D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

8. 'पंच महायज्ञों' के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
   (A) नृ यज्ञ विशेष रूप से राजा को आहुति देने के लिए था।
   (B) ये एक गृहस्थ के लिए दैनिक अनिवार्य यज्ञ थे।
   (C) ब्रह्म यज्ञ में वेदों का अध्ययन शामिल था।
   (D) पितृ यज्ञ पूर्वजों को दी जाने वाली आहुति थी।

9. 'बोधिसत्व' की अवधारणा मुख्य रूप से किस धार्मिक परंपरा से जुड़ी है?
(A) जैन धर्म
(B) आजीवक
(C) महायान बौद्ध धर्म
(D) हीनयान बौद्ध धर्म

10. 'संस्कारों' के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. ये जीवन के प्रमुख चरणों को चिह्नित करने वाले अनुष्ठान हैं जो गर्भाधान से मृत्यु तक चलते हैं।
2. गृह्य सूत्र इनके बारे में जानकारी का एक प्रमुख स्रोत हैं।
3. केवल पहले दो वर्ण, ब्राह्मण और क्षत्रिय, सभी संस्कारों को करने के पात्र थे।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

11. जैन धर्म में निम्नलिखित में से किसे 'तीर्थंकर' के रूप में पूजा जाता है?
(A) एक दिव्य स्वर्गीय प्राणी जो शाश्वत रूप से स्वर्ग में निवास करता है
(B) एक उच्च शिक्षित भिक्षु जिसने सभी पवित्र ग्रंथों में महारत हासिल कर ली है
(C) एक स्थानीय मठवासी व्यवस्था का प्रशासनिक प्रमुख
(D) एक 'तीर्थ बनाने वाला' जिसने पुनर्जन्म के चक्र पर विजय प्राप्त कर ली है

12. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत के रूप में लौकिक साहित्य में मुख्य रूप से किस प्रकार की रचनाएँ शामिल हैं?
(A) पवित्र सूक्त और यज्ञ संबंधी सूत्र
(B) धर्मनिरपेक्ष रचनाएँ जैसे नाटक, विधि ग्रंथ और कविता
(C) वेदों पर भाष्य
(D) जैन तीर्थंकरों की जीवनियाँ

13. अशोक के शिलालेख पुरातात्विक स्रोत की किस श्रेणी का प्रमुख उदाहरण हैं?
(A) मुद्राशास्त्र
(B) स्मारकीय अवशेष
(C) पुरालेखशास्त्र
(D) टेराकोटा कला

14. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: ग्रीक-रोमन विवरण प्राचीन भारत के पश्चिम के साथ व्यापार के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करते हैं।
कथन II: मेगास्थनीज की 'इंडिका' एक जीवित मूल ग्रंथ है जो मौर्य प्रशासन की पूर्ण तस्वीर देता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

15. पुरापाषाण काल के दौरान मानव समुदायों की प्राथमिक निर्वाह रणनीति क्या थी?
(A) शिकार और भोजन संग्रह
(B) व्यवस्थित कृषि और पशुपालन
(C) धातु कर्म और मृदभांड निर्माण
(D) समुद्री व्यापार और मत्स्य पालन

16. निम्नलिखित में से कौन सा विदेशी यात्री और उसके मूल स्थान का गलत जोड़ा है?
(A) फाह्यान - चीन
(B) ह्वेनसांग - फारस
(C) मेगास्थनीज - ग्रीक-रोमन
(D) अल-बिरुनी - अरब

17. भोजन संग्रह से भोजन उत्पादन की ओर संक्रमण किस प्रागैतिहासिक काल की प्रमुख विशेषता है?
(A) पुरापाषाण काल
(B) नवपाषाण काल
(C) मध्यपाषाण काल
(D) ताम्रपाषाण काल

18. सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे विशिष्ट विशेषता क्या है?
(A) उन्नत नगरीय नियोजन और जल निकासी व्यवस्था
(B) खानाबदोश पशुपालन
(C) महापाषाणकालीन समाधान
(D) औजारों और हथियारों के लिए लोहे का उपयोग

19. हड़प्पा सभ्यता के पतन के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(A) यह एक एकल, सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत घटना, विशेष रूप से आर्य आक्रमण के कारण हुआ था।
(B) पतन उल्लेखनीय रूप से आकस्मिक था और सभी हड़प्पा स्थलों पर पूरी तरह से समान था।
(C) जलवायु परिवर्तन और बाढ़ सहित कई कारकों को संभावित कारण माना जाता है।
(D) सभ्यता बिना किसी पहचान योग्य सांस्कृतिक अवशेष छोड़े पूरी तरह से लुप्त हो गई।

20. प्राचीन भारत के संदर्भ में 'द्वितीय नगरीकरण' शब्द किस क्षेत्र में नगरों के उदय को संदर्भित करता है?
(A) कांस्य युग के दौरान सिंधु घाटी
(B) ताम्रपाषाण काल के दौरान गोदावरी घाटी
(C) संगम युग के दौरान कावेरी डेल्टा
(D) छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास गंगा के मैदान

21. कौन सा वेद सबसे प्राचीन है और इसमें मुख्य रूप से विभिन्न देवताओं की स्तुति में सूक्त शामिल हैं?
(A) सामवेद
(B) यजुर्वेद

(C) ऋग्वेद
(D) अथर्ववेद

22. भारत में सिक्कों के प्रारंभिक इतिहास का अध्ययन करने वाले इतिहासकार की सबसे अधिक रुचि किस स्रोत में होगी?
(A) शिलालेख
(B) मुद्राशास्त्र
(C) स्मारक
(D) लौकिक साहित्य

23. निम्नलिखित में से कौन उत्तर वैदिक काल की विशेषता नहीं थी?
(A) सम्राट का बढ़ता महत्व और विस्तृत शाही यज्ञ
(B) एक कठोर, वंशानुगत वर्ण व्यवस्था का उदय
(C) सभ्यता के केंद्र का गंगा के मैदानों की ओर भौगोलिक स्थानांतरण
(D) धार्मिक देवकुल में महिला देवताओं का प्रभुत्व

24. छठी शताब्दी ईसा पूर्व के 'महाजनपद' मुख्य रूप से थे:
(A) सोलह बड़े क्षेत्रीय राज्य, जिनमें राजतंत्र और गणराज्य दोनों शामिल थे
(B) छोटे शिकारी-संग्रहकर्ता समूह
(C) खानाबदोश कबीलों का एक संघ
(D) तटीय व्यापारिक केंद्रों की एक श्रृंखला

25. उस वंश की पहचान करें जिससे मगध शासक बिंबिसार संबंधित था।
(A) नंद
(B) शिशुनाग
(C) हर्यंक
(D) मौर्य

26. जैन धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित में से किन सिद्धांतों पर केंद्रित हैं?
(A) अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रह
(B) चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग
(C) एक एकल, सृष्टिकर्ता ईश्वर की अवधारणा
(D) विस्तृत वैदिक यज्ञों का संपादन

27. हखामनी साम्राज्य, जिसने उत्तर-पश्चिमी भारत पर आक्रमण किया था, किस मूल का था?
(A) यूनानी
(B) रोमन
(C) चीनी
(D) ईरानी

28. सिकंदर महान का भारत पर आक्रमण किस मगध राजवंश के शासनकाल के दौरान हुआ था?
(A) हर्यंक
(B) नंद
(C) शिशुनाग
(D) मौर्य

29. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: वेदों को 'अपौरुषेय' माना जाता है, जिसका अर्थ है कि वे मानव निर्मित नहीं हैं।
कथन II: वेदों को 'श्रुति' के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि वे पीढ़ियों तक मौखिक रूप से प्रसारित होते रहे।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

30. प्राचीन भारत में 'गणराज्य' का सबसे उपयुक्त विवरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) पूर्ण शक्ति वाले वंशानुगत सम्राट द्वारा शासित राज्य
(B) किसी विदेशी साम्राज्य के प्रतिनिधि द्वारा शासित क्षेत्र
(C) बिना किसी राजनीतिक संरचना वाला एक दार्शनिक संप्रदाय
(D) एक अकेले राजा के बजाय एक सभा द्वारा शासित राज्य

31. एक पुरातत्वविद् को एक स्थल मिलता है जहाँ सूक्ष्म पाषाण उपकरण, पशुपालन के प्रमाण और प्रारंभिक मृदभांड मिलते हैं। यह स्थल किस काल का होने की सर्वाधिक संभावना है?
(A) मध्यपाषाण काल
(B) पुरापाषाण काल
(C) ताम्रपाषाण काल
(D) लौह युग

32. तीन ऋणों या 'त्रिऋण' की अवधारणा में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी शामिल हैं?
(A) देव ऋण
(B) राज ऋण
(C) ऋषि ऋण
(D) पितृ ऋण

33. निम्नलिखित में से कौन सा साहित्यिक स्रोत 'लौकिक साहित्य' का एक उदाहरण है?
(A) ऋग्वेद संहिता
(B) कौटिल्य का अर्थशास्त्र
(C) ब्राह्मण ग्रंथ
(D) उपनिषद

34. सूची I के विदेशी यात्रियों को सूची II में उनके संबंधित कार्यों के साथ सुमेलित करें।
सूची I:
P. मेगास्थनीज
Q. फाह्यान
R. ह्वेनसांग
S. अल-बिरुनी
सूची II:
1. सी-यू-की

2. तहकीक-ए-हिंद
3. इंडिका
4. बौद्ध राज्यों का विवरण
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

35. सिक्कों के अध्ययन, जिसमें उनकी धातु संरचना, ढलाई तकनीक और उन पर अंकित प्रतीकों का अध्ययन शामिल है, को कहा जाता है:
(A) पुरालेखशास्त्र
(B) पुरालिपि शास्त्र
(C) मुद्राशास्त्र
(D) पुरातत्व विज्ञान

36. 'द्वितीय नगरीकरण' के दौरान लौह तकनीक के व्यापक उपयोग का प्राथमिक प्रभाव क्या था?
(A) व्यापार और वाणिज्य में गिरावट
(B) वस्तु विनिमय अर्थव्यवस्था की ओर वापसी
(C) राजतंत्रों के विरुद्ध छोटे, जनजातीय गणराज्यों का सुदृढ़ीकरण
(D) वनों की कटाई में वृद्धि और कृषि का विस्तार

37. निम्नलिखित कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनें।
कथन (A): उत्तर वैदिक काल में सामाजिक संरचना ऋग्वैदिक काल की तुलना में अधिक जटिल और कठोर हो गई।
कारण (R): जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था मजबूती से स्थापित हो गई, और ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों की शक्ति में अत्यधिक वृद्धि हुई।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

38. कौन सी बौद्ध अवधारणा उस प्राणी को संदर्भित करती है जो असीम करुणा के कारण, सभी सजीव प्राणियों को ज्ञान प्राप्त करने में सहायता के लिए अपने स्वयं के निर्वाण में विलंब करता है?
(A) तीर्थंकर
(B) बोधिसत्व
(C) अर्हत
(D) प्रत्येकबुद्ध

39. बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) अंतिम लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना है, जो दुखों का अंत है।
(B) यह दुख के संबंध में 'चार आर्य सत्य' प्रतिपादित करता है।
(C) दुख को समाप्त करने का मार्ग 'आर्य अष्टांगिक मार्ग' है।
(D) यह वेदों के अधिकार और जाति व्यवस्था को स्वीकार करता है।

40. मगध साम्राज्य के उदय के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. परिवहन और उपजाऊ मिट्टी प्रदान करने वाली नदियों के साथ इसकी रणनीतिक स्थिति एक प्रमुख कारक थी।
2. इसमें समृद्ध लौह अयस्क के भंडार थे, जो हथियारों और कृषि उपकरणों के लिए महत्वपूर्ण थे।
3. शुरुआती मगध शासक सभी एक परिषद द्वारा लोकतांत्रिक रूप से चुने गए थे।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

41. वह फारसी राजा जिसने पहली बार उत्तर-पश्चिमी भारत के एक हिस्से पर सफलतापूर्वक आक्रमण किया और उसे अपने साम्राज्य के एक प्रांत के रूप में मिला लिया, वह था:
(A) साइरस-द्वितीय
(B) जरक्सीस
(C) दारा-प्रथम
(D) दारा-तृतीय

42. नीचे दिए गए ऐतिहासिक विवरण के आधार पर प्रश्न का उत्तर दें:
एक पत्थर के स्तंभ पर मिला एक शिलालेख ब्राह्मी लिपि और प्राकृत भाषा में लिखा गया है। यह एक महान युद्ध के बाद एक राजा के पश्चाताप और उसके बाद 'धम्म-विजय' की नीति अपनाने की बात करता है। यह शिलालेख ऐतिहासिक स्रोत की किस श्रेणी में आने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) एक मौर्य शाही राजलेख
(B) एक पौराणिक राजा का वर्णन करने वाला धार्मिक ग्रंथ
(C) गुप्त काल का भूमि अनुदान पत्र
(D) दरबारी कवि द्वारा लिखा गया जीवन वृत्तांत

43. पुरापाषाण और नवपाषाण काल के बीच मुख्य अंतर निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) पुरापाषाण काल के लोग धातु के औजारों का उपयोग करते थे, जबकि नवपाषाण काल के लोग पत्थर के औजारों का।
(B) पुरापाषाण समाज नगरीय था, जबकि नवपाषाण समाज खानाबदोश था।
(C) पुरापाषाण कला अनुपस्थित है, जबकि नवपाषाण कला प्रचुर मात्रा में है।
(D) पुरापाषाण काल के लोग शिकारी-संग्रहकर्ता थे, जबकि नवपाषाण काल के लोगों ने कृषि आरंभ की थी।

44. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।

कथन I: हड़प्पा सभ्यता के मेसोपोटामिया के साथ व्यापक व्यापारिक संपर्क थे।
कथन II: विभिन्न मेसोपोटामियाई पुरातात्विक स्थलों पर हड़प्पा की मुहरें प्राप्त हुई हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

45. वैदिक ग्रंथों को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है: श्रुति और स्मृति। निम्नलिखित में से कौन स्मृति श्रेणी के अंतर्गत आता है?
(A) संहिता
(B) ब्राह्मण ग्रंथ
(C) धर्मसूत्र
(D) उपनिषद

46. उत्तर वैदिक काल का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक विकास क्या था?
(A) राजतंत्र का पतन और गणराज्यों का उदय
(B) सभा और समिति का विलुप्त होना
(C) एक एकीकृत, अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना
(D) बड़े क्षेत्रीय राज्यों या 'जनपदों' का उदय

47. महाजनपदों के संदर्भ में, 'आहत सिक्के' क्या थे?
(A) भारत में सिक्कों का सबसे प्रारंभिक रूप, जो चांदी के बने होते थे और जिन पर प्रतीक अंकित होते थे
(B) विभिन्न विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा विशेष रूप से जारी किए गए सोने के सिक्के
(C) विकेंद्रीकृत वस्तु विनिमय प्रणालियों के लिए उपयोग की जाने वाली मिट्टी की पट्टिकाएं
(D) अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्गों पर पाए गए रोमन सिक्के

48. जैन परंपरा में अंतिम तीर्थंकर कौन हैं?
(A) ऋषभनाथ
(B) महावीर
(C) पार्श्वनाथ
(D) सिद्धार्थ गौतम

49. भारत पर सिकंदर के आक्रमण का एक प्रमुख प्रभाव क्या था?
(A) पूरे उपमहाद्वीप पर यूनानी शासन की स्थायी स्थापना
(B) भारत और यूरोप के बीच सीधे मार्गों का खुलना, जिससे व्यापार को बढ़ावा मिला
(C) भारतीय संस्कृति का पूर्ण विनाश
(D) पूरे भारत में यूनानी भाषा को तत्काल अपनाना

50. निम्नलिखित में से कौन वर्णाश्रम व्यवस्था के 'चार आश्रमों' में से एक नहीं है?
(A) शूद्र
(B) ब्रह्मचर्य
(C) गृहस्थ
(D) वानप्रस्थ

51. शिलालेखों के अध्ययन को कहा जाता है:
(A) मुद्राशास्त्र
(B) पुरालिपि शास्त्र
(C) पुरालेखशास्त्र
(D) मानचित्रकला

52. 'ताम्रपाषाण काल' शब्द किस काल को संदर्भित करता है जो किसके उपयोग द्वारा पहचाना जाता है?
(A) केवल पत्थर के औजार
(B) केवल लोहे के औजार
(C) कांस्य और लोहे के औजार
(D) तांबे और पत्थर के औजार

53. सिंधु घाटी सभ्यता की एक महत्वपूर्ण संरचना 'विशाल स्नानागार' किस स्थल पर खोजी गई थी?
(A) हड़प्पा
(B) लोथल
(C) मोहनजोदड़ो
(D) कालीबंगन

54. ऋग्वैदिक आर्यों का राजनीतिक संगठन मुख्य रूप से आधारित था:
(A) एक विशाल, केंद्रीकृत साम्राज्य पर
(B) एक जनजातीय व्यवस्था पर, जिसमें 'जन' सबसे बड़ी राजनीतिक इकाई थी
(C) व्यापारी परिषदों द्वारा शासित नगर-राज्यों पर
(D) पुरोहितों की एक परिषद द्वारा शासित धर्मतंत्र पर

55. मगध साम्राज्य के एक प्रमुख शासक अजातशत्रु किस वंश के थे?
(A) शिशुनाग
(B) नंद
(C) मौर्य
(D) हर्यंक

56. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: जैन धर्म मुक्ति प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या और कायाक्लेश के मार्ग की वकालत करता है।
कथन II: बौद्ध धर्म 'मध्यम मार्ग' की वकालत करता है, जो अत्यधिक विलासिता और कठोर तपस्या के अतिरेक से बचता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

57. सिकंदर महान और राजा पोरस के बीच युद्ध किस नदी के तट पर लड़ा गया था?
(A) सिंधु

(B) चिनाब
(C) झेलम
(D) रावी

58. 'पंच महायज्ञों' में से किसमें सभी प्राणियों को आहुति देना शामिल था?
(A) भूत यज्ञ
(B) ब्रह्म यज्ञ
(C) देव यज्ञ
(D) पितृ यज्ञ

59. चीनी यात्री ह्वेनसांग मुख्य रूप से किस उद्देश्य से भारत आया था?
(A) गुप्त साम्राज्य के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करना
(B) हूणों के विरुद्ध सैन्य गठबंधन बनाना
(C) भारत की वनस्पति और जीव-जंतुओं का दस्तावेजीकरण करना
(D) नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन करना और बौद्ध धर्मग्रंथों को एकत्रित करना

60. निम्नलिखित में से कौन मध्यपाषाण काल की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) बड़ी, भारी कुल्हाड़ियों का उपयोग
(B) सूक्ष्म पाषाण उपकरणों का उदय
(C) लोहे का प्रथम उपयोग
(D) बड़े नगरीय केंद्रों का निर्माण

61. निम्नलिखित मगध राजवंशों को उनके शासन के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. नंद
II. हर्यंक
III. शिशुनाग
(A) I, II, III
(B) II, I, III
(C) II, III, I
(D) III, II, I

62. हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक तत्वों की उत्तरजीविता निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी में देखी जाती है?
(A) शिव के एक आदि-रूप की पूजा
(B) पीपल के वृक्ष और कुछ पशुओं की पूजा
(C) बाद की कुछ संस्कृतियों में मानकीकृत बाट और माप का उपयोग
(D) बाद के कालों में हड़प्पा लिपि का निरंतर उपयोग

63. जैन धर्म में 'त्रिरत्न' में शामिल हैं:
(A) सम्यक श्रद्धा, सम्यक ज्ञान, सम्यक आचरण
(B) बुद्ध, धम्म, संघ
(C) अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद
(D) ब्रह्मचर्य, सत्य और अस्तेय के व्रत

64. सूची I के वैदिक शब्दों को सूची II के उनके अर्थों के साथ सुमेलित करें।
सूची I:
P. जन
Q. राजन
R. पुरोहित
S. ग्रामणी
सूची II:
1. जनजातीय प्रमुख या राजा
2. गाँव का मुखिया
3. कबीला या लोग
4. मुख्य पुरोहित
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

65. भारत के ऐतिहासिक संदर्भ में 'द्वितीय नगरीकरण' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) पतन की अवधि के बाद सिंधु घाटी में नगरों का पुनरुत्थान
(B) हड़प्पा संस्कृति के पतन के बाद गंगा के मैदानों में नगरीय केंद्रों का विकास
(C) संगम युग के दौरान दक्षिण भारत में बंदरगाह नगरों का विकास
(D) दिल्ली सल्तनत द्वारा नई राजधानियों की स्थापना

66. साहित्यिक स्रोतों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) धार्मिक साहित्य किसी काल के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन की अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।
(B) धार्मिक साहित्य हमेशा ऐतिहासिक रूप से सटीक और पूर्वाग्रह से मुक्त होता है।
(C) नाटक और कविता जैसे लौकिक साहित्य का ऐतिहासिक स्रोत के रूप में कोई मूल्य नहीं है।
(D) सभी प्राचीन पांडुलिपियों को पढ़ लिया गया है और उनका अनुवाद कर दिया गया है।

67. निम्नलिखित कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनें।
कथन (A): सोलह महाजनपदों में शासन के राजतंत्रीय और गणतंत्रीय दोनों रूप शामिल थे।
कारण (R): वज्जी और मल्ल जैसे 'गण-संघों' ने प्राचीन भारत में गैर-राजतंत्रीय व्यवस्था के अस्तित्व को प्रदर्शित किया।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

68. ऋग्वैदिक लोगों के प्रमुख देवता थे:

(A) शिव
(B) विष्णु
(C) ब्रह्मा
(D) इंद्र

69. भारत में एक अभियान का नेतृत्व करने वाला पहला फारसी शासक, जिसने क्षेत्र पर अधिकार न किया हो, वह था:
(A) दारा-प्रथम
(B) जरक्सीस
(C) साइरस-द्वितीय
(D) आर्टाजरक्सीस

70. वेदों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सामवेद मुख्य रूप से ऋग्वेद से प्राप्त धुनों और भजनों का संग्रह है।
2. यजुर्वेद विशेष रूप से यज्ञों के नियमों से संबंधित है और पूरी तरह से गद्य में है।
3. अथर्ववेद में बुराइयों और बीमारियों को दूर करने के लिए मंत्र और तंत्र शामिल हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) 1, 2 और 3
(D) केवल 3

71. 'कर्म का सिद्धांत' एक दार्शनिक अवधारणा है जो निम्नलिखित में से किस धार्मिक परंपरा का केंद्र है?
(A) केवल बौद्ध धर्म और जैन धर्म
(B) केवल हिंदू धर्म
(C) पारसी धर्म और हिंदू धर्म
(D) हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म

72. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में, पुरातात्विक स्रोत के रूप में स्मारकों का प्राथमिक महत्व क्या है?
(A) वे अपने समय की कलात्मक और स्थापत्य अभिरुचि को दर्शाते हैं।
(B) वे किसी राजवंश का पूर्ण राजनीतिक इतिहास प्रदान करते हैं।
(C) वे प्राचीन समाजों की अर्थव्यवस्था को समझने का एकमात्र स्रोत हैं।
(D) वे आम लोगों के बारे में विस्तृत जीवनी संबंधी जानकारी प्रदान करते हैं।

73. ऋग्वैदिक काल की पशुचारी अर्थव्यवस्था से उत्तर वैदिक काल की व्यवस्थित कृषि अर्थव्यवस्था में परिवर्तन किसके द्वारा सुगम हुआ था?
(A) एक मानक स्वर्ण सिक्का प्रणाली की व्यापक शुरुआत
(B) समुद्री विदेशी व्यापार में तीव्र वृद्धि
(C) जंगलों को साफ करने और हल बनाने के लिए लोहे का व्यापक उपयोग
(D) गाय के समग्र अनुष्ठानिक महत्व में उल्लेखनीय गिरावट

74. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: अवंती महाजनपद उज्जयिनी और महिष्मति राजधानियों के साथ दो भागों में विभाजित था।
कथन II: गंधार महाजनपद सुदूर पश्चिम में, आधुनिक पाकिस्तान और अफगानिस्तान में स्थित था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

75. नंद वंश का संस्थापक, जिसे अक्सर 'भारत का पहला साम्राज्य निर्माता' कहा जाता है, वह था:
(A) शिशुनाग
(B) बिंबिसार
(C) उदयन
(D) महापद्म नंद

76. 'सूत्रों का युग' किस प्रकार के साहित्य की रचना द्वारा पहचाने जाने वाले काल को संदर्भित करता है?
(A) गेय कविता और महाकाव्य
(B) अनुष्ठान और दर्शन को संक्षेप में प्रस्तुत करने वाले संक्षिप्त, सूत्रात्मक ग्रंथ
(C) वेदों पर विस्तृत भाष्य
(D) बौद्ध जातक कथाएँ

77. उत्तर-पश्चिम भारत पर सिकंदर के आक्रमण का एक तात्कालिक और प्रत्यक्ष राजनीतिक परिणाम क्या था?
(A) चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा एक एकीकृत मौर्य साम्राज्य की स्थापना
(B) भारतीय जनसंख्या का यूनानी बहुदेववाद में धर्मांतरण
(C) खंडित राज्यों का विनाश, जिससे एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ
(D) मगध पर यूनानी शासन के 300 वर्ष लंबे काल की शुरुआत

78. सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताओं के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) नगर ग्रिड पैटर्न पर बने थे और सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
(B) बाट और माप की एक अत्यधिक विकसित प्रणाली प्रचलन में थी।
(C) लोग गेहूं, जौ और कपास की खेती करते थे।
(D) कृषि उपकरणों और हथियारों के निर्माण के लिए लोहे का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता था।

79. वैदिक परंपरा में 'ऋण' की अवधारणा का तात्पर्य है कि व्यक्ति किसके प्रति दायित्वों के साथ जन्म लेता है?
(A) देवता, ऋषि और पूर्वज
(B) केवल माता-पिता और शिक्षक
(C) केवल राजा और राज्य
(D) स्वयं और व्यक्तिगत संपदा की प्राप्ति

80. एक इतिहासकार दक्षिण एशिया में प्रारंभिक कृषि समुदायों के विकास का अध्ययन करना चाहता है। इस शोध का प्राथमिक केंद्र कौन सा काल होगा?
(A) उच्च पुरापाषाण काल
(B) नवपाषाण और ताम्रपाषाण काल
(C) मध्यपाषाण काल
(D) लौह युग

81. एक गणतंत्रीय महाजनपद की विशिष्ट विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) राजा का पुत्र स्वतः ही सिंहासन का उत्तराधिकारी होता था।
(B) निर्णय क्षत्रिय कबीले के सदस्यों द्वारा एक सभा में लिए जाते थे।
(C) शक्ति एक एकल, निरंकुश शासक में निहित होती थी।
(D) क्षेत्र का प्रशासन सीधे मगध सम्राट द्वारा किया जाता था।

82. गुप्त काल का बहुमूल्य विवरण प्रदान करने वाला ग्रंथ 'बौद्ध राज्यों का विवरण' किस चीनी यात्री द्वारा लिखा गया था?
(A) फाह्यान
(B) ह्वेनसांग
(C) इत्सिंग
(D) वांग ह्वेन-त्से

83. उपनिषदों की मुख्य दार्शनिक शिक्षाएँ किन अवधारणाओं के इर्द-गिर्द घूमती हैं?
(A) विस्तृत यज्ञ अनुष्ठानों की प्रभावकारिता
(B) राजाओं का दैवीय अधिकार
(C) आत्मन और ब्रह्म
(D) सामाजिक आचरण और जातिगत कर्तव्यों के नियम

84. सही जोड़े की पहचान करें।
(A) हड़प्पा - गोदीवाड़ा
(B) मोहनजोदड़ो - टेराकोटा हल
(C) लोथल - विशाल अन्नागार
(D) कालीबंगन - जुते हुए खेत का साक्ष्य

85. महापद्म नंद को अक्सर 'सर्वक्षत्रांतक' की उपाधि से संबोधित किया जाता है, जिसका अर्थ है:
(A) समस्त पृथ्वी का स्वामी
(B) द्वितीय परशुराम
(C) सभी क्षत्रियों का विनाश करने वाला
(D) अज्ञात पिता का पुत्र

86. निम्नलिखित में से कौन बौद्ध धर्म के 'अष्टांगिक मार्ग' का हिस्सा नहीं है?
(A) सम्यक दृष्टि
(B) सम्यक भक्ति
(C) सम्यक आजीव
(D) सम्यक व्यायाम

87. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: फारसी आक्रमण के कारण अरामी लिपि की शुरुआत हुई, जो बाद में उत्तर-पश्चिम भारत में खरोष्ठी लिपि के रूप में विकसित हुई।
कथन II: दिव्य सम्राट की फारसी अवधारणा का बाद की भारतीय राजनीति, विशेष रूप से मौर्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

88. समाज के चार वर्णों का उल्लेख पहली बार किस ग्रंथ में मिलता है?
(A) ऋग्वेद के 10वें मंडल का पुरुष सूक्त
(B) ऋग्वेद के प्रारंभिक मंडल
(C) उपनिषद
(D) अर्थशास्त्र

89. सिंधु घाटी सभ्यता की उत्पत्ति के बारे में सिद्धांतों में अक्सर उद्धृत किया जाने वाला एक प्रमुख पर्यावरणीय कारक है:
(A) एक बड़े हिमयुग की शुरुआत
(B) थार मरुस्थल की शुष्क स्थितियाँ
(C) सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों का उपजाऊ वातावरण
(D) गंगा के मैदान के घने वन

90. 'अनेकांतवाद' की अवधारणा, या वास्तविकता की बहुआयामी प्रकृति का सिद्धांत, किसका मूल दार्शनिक सिद्धांत है?
(A) जैन धर्म
(B) बौद्ध धर्म
(C) आजीवक संप्रदाय
(D) चार्वाक संप्रदाय

91. वैदिक काल की सभा और समिति को सबसे अच्छी तरह से किस रूप में वर्णित किया जा सकता है?
(A) सैन्य रेजीमेंट
(B) कर संग्रह एजेंसियां
(C) यज्ञ की वेदियां
(D) लोकप्रिय विचार-विमर्श सभाएँ

92. नीचे दिए गए ऐतिहासिक विवरण को पढ़ें और प्रश्न का उत्तर दें:
पहली शताब्दी ईस्वी का एक ग्रीक-रोमन ग्रंथ रोमन साम्राज्य और भारत के बीच व्यापारिक बंदरगाहों, वस्तुओं और समुद्री मार्गों का विस्तार से वर्णन करता है। पाठ में मुज़िरिस और बेरिगाज़ा जैसे बंदरगाहों का उल्लेख है। यह ग्रंथ कौन सा है?
(A) मेगास्थनीज की इंडिका
(B) पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी
(C) प्लिनी की नेचुरल हिस्ट्री
(D) टॉलेमी की जियोग्राफिया

93. पूर्व-वैदिक से उत्तर-वैदिक काल के संक्रमण के दौरान किस देवता के महत्व में गिरावट देखी गई?
(A) प्रजापति
(B) विष्णु
(C) इंद्र
(D) रुद्र

94. सूची I के महाजनपदों को सूची II की उनकी राजधानियों के साथ सुमेलित करें।
सूची I:
P. काशी
Q. कोसल
R. अंग
S. वत्स
सूची II:
1. चंपा
2. कौशाम्बी
3. वाराणसी
4. श्रावस्ती
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

95. शिशुनाग वंश का संस्थापक कौन था जिसने अस्थायी रूप से राजधानी को पाटलिपुत्र से वैशाली स्थानांतरित कर दिया था?
(A) शिशुनाग
(B) कालाशोक
(C) उदयन
(D) बिंबिसार

96. जैन धर्म के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) यह सभी जीवित प्राणियों में एक शाश्वत आत्मा (जीव) के अस्तित्व को मानता है।
(B) यह कर्म के सिद्धांत को पूरी तरह से खारिज करता है।
(C) मुक्ति के मार्ग में 'त्रिरत्न' शामिल हैं।
(D) यह भिक्षुओं के लिए एक वैध अभ्यास के रूप में सल्लेखना पर बल देता है।

97. निम्नलिखित कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनें।
कथन (A): सिकंदर महान की सेना ने ब्यास नदी के आगे पूर्व की ओर बढ़ने से मना कर दिया था।
कारण (R): सैनिक वर्षों के अभियानों से थक चुके थे और पूर्व में शक्तिशाली नंद सेना की सूचनाओं से भयभीत थे।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

98. 'उपनयन' समारोह, जो एक महत्वपूर्ण 'संस्कार' है, किसे चिह्नित करता है:
(A) छात्र जीवन के चरण में एक बालक का प्रवेश
(B) बच्चे का नामकरण
(C) पहली बार ठोस भोजन ग्रहण करना
(D) व्यक्ति का विवाह

99. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम प्रमाण किस स्थल से मिलते हैं?
(A) हड़प्पा
(B) इनामगाँव
(C) मेहरगढ़
(D) बुर्जहोम

100. पुरातात्विक स्रोतों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. शिलालेखों को सामान्यतः साहित्यिक स्रोतों की तुलना में अधिक विश्वसनीय माना जाता है क्योंकि वे प्रायः समकालीन होते हैं।
2. सिक्कों का अध्ययन आर्थिक इतिहास, साम्राज्य के विस्तार और व्यापार संबंधों को समझने में सहायता करता है।
3. स्तूप और मंदिर जैसे स्मारक उस काल की धार्मिक मान्यताओं के बारे में कोई जानकारी प्रदान नहीं करते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

101. वैदिक साहित्य की एक श्रेणी, ब्राह्मण ग्रंथों का केंद्रीय विषय क्या है?
(A) आत्मन और ब्रह्म पर दार्शनिक विचार
(B) देवताओं और असुरों के बारे में मिथक और आख्यान
(C) अनुष्ठानों और प्रतीकों की विस्तृत व्याख्या
(D) उत्तराधिकार और संपत्ति के नियम

102. सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के लिए कई कारकों को उत्तरदायी माना जाता है। निम्नलिखित में से किसे पारिस्थितिक कारक माना जाता है?
(A) आर्य आक्रमण
(B) विवर्तनिक हलचल और नदी मार्गों में परिवर्तन
(C) सामाजिक विघटन
(D) मेसोपोटामिया के साथ व्यापार में गिरावट

103. उत्तर वैदिक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, 'निष्क' शब्द जिसका ऋग्वेद में अर्थ स्वर्ण आभूषण था, किसका प्रतीक बन गया:
(A) भूमि की माप
(B) मृदभांड का प्रकार
(C) वस्तु के रूप में चुकाया गया कर
(D) मुद्रा की एक इकाई

104. कौन सा महाजनपद आठ कबीलों का एक संघ था, जिसमें लिच्छवी सबसे शक्तिशाली थे?
(A) वज्जी
(B) मगध
(C) काशी
(D) अवंती

105. बौद्ध धर्म के 'चार आर्य सत्य' मौलिक रुप से किस समस्या से संबंधित हैं?
(A) सामाजिक असमानता
(B) राजनीतिक अराजकता
(C) दुख और उसका निवारण
(D) आत्मा की प्रकृति

106. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: रामायण और महाभारत महाकाव्यों को श्रुति साहित्य का भाग माना जाता है।
कथन II: वे उत्तर वैदिक और परवर्ती काल की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक स्थितियों को दर्शाते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

107. उत्तर-पश्चिम भारत में विकसित 'गांधार कला शैली' भारत और किसके बीच सांस्कृतिक समन्वय का प्रत्यक्ष परिणाम थी?
(A) फारस
(B) चीन
(C) अरब
(D) यूनान

108. 'पुरुषार्थ' की अवधारणा किसे दर्शाती है?
(A) समाज के चार वर्ण
(B) मानव अस्तित्व के चार वैध लक्ष्य
(C) जीवन के चार चरण
(D) चार वेद

109. किस यात्री का विवरण हर्षवर्धन के शासनकाल और नालंदा विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है?
(A) फाह्यान
(B) मेगास्थनीज
(C) ह्वेनसांग
(D) अल-बिरुनी

110. प्रागैतिहासिक काल को आद्य-ऐतिहासिक काल से किस आधार पर पृथक किया जाता है?
(A) पत्थर के औजारों बनाम धातु के औजारों का उपयोग
(B) शिकार-संग्रह बनाम कृषि अर्थव्यवस्था
(C) खानाबदोश जीवनशैली बनाम व्यवस्थित जीवनशैली
(D) लेखन प्रणाली की अनुपस्थिति बनाम उपस्थिति

111. निम्नलिखित में से कौन सा हड़प्पा स्थल वर्तमान गुजरात में स्थित है और अपने गोदीवाड़ा के लिए प्रसिद्ध है?
(A) लोथल
(B) हड़प्पा
(C) मोहनजोदड़ो
(D) राखीगढ़ी

112. उत्तर वैदिक काल में 'गोत्र' शब्द का मूल अर्थ 'गौशाला' था लेकिन बाद में इसका अर्थ क्या हो गया:
(A) भूमि मापन की एक इकाई
(B) एक सामान्य पूर्वज से वंश या वंशावली
(C) एक व्यापारिक श्रेणी
(D) एक प्रकार का कर

113. छठी-पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में मगध और अवंती के बीच संघर्ष का मुख्य कारण क्या था?
(A) लौह अयस्क के भंडारों और व्यापार मार्गों पर नियंत्रण
(B) धार्मिक मतभेद
(C) वैवाहिक विवाद
(D) वैदिक ग्रंथों की व्याख्या पर असहमति

114. 'मध्यम मार्ग' किस धर्म का केंद्रीय सिद्धांत है?
(A) बौद्ध धर्म
(B) जैन धर्म
(C) आजीवक
(D) हिंदू धर्म

115. दारा प्रथम के शिलालेख, जैसे कि बेहिस्तुन शिलालेख, भारतीय इतिहास के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे:
(A) सोलह महाजनपदों की पूरी सूची प्रदान करते हैं
(B) बुद्ध और महावीर की शिक्षाओं का वर्णन करते हैं
(C) सिंधु क्षेत्र को फारसी साम्राज्य के हिस्से के रूप में उल्लेखित करते हैं
(D) सिकंदर के आक्रमण का विस्तृत विवरण देते हैं

116. निम्नलिखित में से कौन 'त्रिऋण' में से एक नहीं है?
(A) देव ऋण
(B) पितृ ऋण
(C) ऋषि ऋण
(D) गुरु ऋण

117. एक प्रागैतिहासिक स्थल और उसकी विशिष्ट विशेषता के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) भीमबेटका - पुरापाषाण और मध्यपाषाण कालीन शैलचित्र
(B) बुर्जहोम - गर्त-आवास और स्वामियों के साथ कुत्तों के दफनाने के प्रमाण
(C) मेहरगढ़ - चावल की खेती का सबसे प्राचीन प्रमाण
(D) इनामगाँव - गृह योजनाओं के प्रमाण के साथ बड़ी ताम्रपाषाण कालीन बस्ती

118. पशुपति मुहर, जिसमें पशुओं से घिरी एक बैठी हुई आकृति दिखाई गई है, किस सिंधु घाटी स्थल पर प्राप्त हुई थी?
(A) लोथल
(B) मोहनजोदड़ो
(C) हड़प्पा
(D) धोलावीरा

119. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से पशुचारी और कृषि प्रधान थी।
कथन II: गाय धन का सबसे महत्वपूर्ण रूप थी, और पशुओं के लिए कई युद्ध लड़े गए थे।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

120. किस मगध राजा के बारे में कहा जाता है कि उसने 'रथमूसल' और 'महाशिलाकंटक' जैसे नवीन सैन्य यंत्रों का प्रयोग किया था?
(A) अजातशत्रु
(B) बिंबिसार
(C) महापद्म नंद
(D) धनानंद

121. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. ऋग्वेद की रचना
II. गंगा के मैदानों में लौह युग का आरंभ
III. महाजनपदों का उदय
IV. परिपक्व हड़प्पा चरण
(A) IV, I, II, III
(B) I, IV, II, III
(C) IV, II, I, III
(D) I, II, IV, III

122. प्रतीत्यसमुत्पाद किसकी मूल दार्शनिक शिक्षा है?
(A) बौद्ध धर्म
(B) जैन धर्म
(C) चार्वाक
(D) सांख्य

123. उत्तर-पश्चिमी भारत में प्रयुक्त खरोष्ठी लिपि किस लिपि से उत्पन्न हुई थी जिसे फारसी आक्रमणों के दौरान प्रस्तुत किया गया था?
(A) क्यूनीफ़ॉर्म
(B) चित्रलिपि
(C) ब्राह्मी
(D) अरामी

124. सूची I में साहित्य के प्रकारों को सूची II के उदाहरणों के साथ सुमेलित करें।
सूची I:
P. सूत्र साहित्य
Q. महाकाव्य साहित्य
R. प्रारंभिक बौद्ध साहित्य
S. लौकिक साहित्य
सूची II:
1. महाभारत
2. अर्थशास्त्र
3. त्रिपिटक
4. गृह्य सूत्र
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

125. 'बोधिसत्व' की अवधारणा में महत्वपूर्ण विकास हुआ और इसे किस बौद्ध संप्रदाय के उदय के साथ प्रमुखता प्राप्त हुई?
(A) थेरवाद
(B) हीनयान
(C) महायान
(D) वज्रयान

126. एक प्राचीन भारतीय गृहस्थ के दैनिक जीवन, घरेलू अनुष्ठानों और जीवन के संस्कारों का अध्ययन करने वाले इतिहासकार के लिए कौन से ग्रंथ सर्वाधिक उपयोगी होंगे?
(A) संहिता
(B) आरण्यक
(C) श्रौत सूत्र
(D) गृह्य सूत्र

127. निम्नलिखित कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनें।
कथन (A): हड़प्पा लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
कारण (R): शिलालेख बहुत छोटे हैं, प्रायः मुहरों पर हैं, और द्विभाषी ग्रंथों का अभाव है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

128. वैदिक काल में 'पुरोहित' का सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या था?
(A) युद्ध में सेना का नेतृत्व करना
(B) राजा को परामर्श देना और प्रमुख यज्ञ संपन्न करना
(C) जनता से कर संग्रह करना
(D) ग्राम परिषद में न्याय प्रशासन करना

129. वैशाली के लिच्छवियों पर किस राजा की विजय ने मगध साम्राज्य के विस्तार में एक महत्वपूर्ण चरण चिह्नित किया?

(A) बिंबिसार
(B) अजातशत्रु
(C) शिशुनाग
(D) महापद्म नंद

130. 'वर्णाश्रम' व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 'वर्ण' चार-स्तरीय सामाजिक वर्गीकरण को संदर्भित करता है।
2. 'आश्रम' व्यक्ति के जीवन के चार चरणों को संदर्भित करता है।
3. ऋग्वैदिक काल के दौरान यह व्यवस्था पूरी तरह विकसित और कठोरता से पालन की जाती थी।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

131. जैन धार्मिक ग्रंथ, जो इसका प्रमाण बनाते हैं, सामूहिक रूप से कहलाते हैं:
(A) त्रिपिटक
(B) गाथा
(C) आगम
(D) ज़ेंड अवेस्ता

132. 'सत्रापी प्रणाली', जो प्रांतीय गवर्नरों से संबंधित एक प्रशासनिक नवाचार थी, किसके संपर्क के परिणामस्वरुप भारत में प्रस्तुत की गई थी?
(A) यूनानी
(B) रोमन
(C) चीनी
(D) फारसी

133. आद्य-इतिहास की परिभाषित विशेषता क्या है?
(A) वह काल जिसके लिए लिखित अभिलेख उपलब्ध हैं और उन्हें पढ़ लिया गया है।
(B) लेखन के आविष्कार से पूर्व का काल।
(C) वह काल जिसके लिए लिखित अभिलेख उपलब्ध हैं, लेकिन उन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
(D) वह काल जो विशेष रूप से पत्थर के औजारों के उपयोग द्वारा पहचाना जाता है।

134. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: अल-बिरूनी की 'किताब-उल-हिंद' 11वीं शताब्दी में भारतीय समाज, विज्ञान और दर्शन का एक आलोचनात्मक विवरण है।
कथन II: अल-बिरूनी मौर्य दरबार में एक यूनानी राजदूत था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

135. नवपाषाण क्रांति मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) अग्नि का आविष्कार
(B) नगरीय सभ्यताओं का विकास
(C) लोहे का प्रथम उपयोग
(D) कृषि और व्यवस्थित जीवन का आरंभ

136. निम्नलिखित में से कौन परिपक्व हड़प्पा चरण की प्रमुख विशेषता नहीं है?
(A) महापाषाणकालीन समाधियों का निर्माण
(B) ग्रिड लेआउट के साथ सुनियोजित नगर
(C) निर्माण में पकी हुई ईंटों का उपयोग
(D) एक अपठित चित्रात्मक लिपि

137. महाजनपद काल के दौरान आर्थिक विकास के संदर्भ में 'श्रेणी' शब्द किसे संदर्भित करता था?
(A) सिक्के का एक प्रकार
(B) एक भूमि राजस्व कर
(C) व्यापारियों या शिल्पकारों का एक संघ
(D) एक सैन्य कमांडर

138. प्रथम बौद्ध संगीति बुद्ध के महापरिनिर्वाण के तुरंत बाद किस शासक के संरक्षण में आयोजित की गई थी?
(A) अजातशत्रु
(B) बिंबिसार
(C) अशोक
(D) कनिष्क

139. भारत पर सिकंदर के आक्रमण का सबसे महत्वपूर्ण दीर्घकालिक प्रभाव क्या था?
(A) यूनानी भाषा को अनिवार्य करना
(B) लोकतंत्र का आरंभ
(C) मौर्य शासन के अधीन उत्तर भारत का एकीकरण
(D) भारत और पश्चिम के बीच सीधा संपर्क स्थापित होना

140. निम्नलिखित में से कौन सी अवधारणा उस ब्रह्मांडीय और नैतिक व्यवस्था को संदर्भित करती है जिसे बनाए रखने के लिए वैदिक देवताओं को उत्तरदायी माना जाता था?
(A) यज्ञ
(B) ऋत
(C) कर्म
(D) संसार

141. उदयगिरि का हाथीगुंफा शिलालेख किस राजा के शासनकाल की जानकारी का प्राथमिक स्रोत है?
(A) अशोक
(B) समुद्रगुप्त
(C) कलिंगराज खारवेल
(D) पुलकेशिन द्वितीय

142. ताम्रपाषाण संस्कृति को नवपाषाण संस्कृति से पृथक करने वाली एक प्रमुख विशेषता है:
(A) कृषि का अभ्यास
(B) मृदभांड का उपयोग
(C) पशुपालन
(D) धातु, विशेष रूप से तांबे के उपयोग का आरंभ

143. निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा काल के दौरान समुद्री व्यापार का सबसे ठोस प्रमाण प्रदान करता है?
(A) लोथल में एक ईंट निर्मित गोदीवाड़ा की खोज
(B) मुहर पर एक पोत का चित्रण
(C) 'मेलुहा' के साथ व्यापार का उल्लेख करने वाले मेसोपोटामियाई ग्रंथ
(D) बाट और माप की मानकीकृत प्रणाली

144. ऋग्वैदिक काल के दौरान शासन का मुख्य रूप क्या था?
(A) एक वंशानुगत और क्षेत्रीय राजतंत्र
(B) एक जनजातीय सरदारी जहाँ 'राजन' के पास सीमित शक्तियाँ थीं
(C) धनी व्यापारियों का एक कुलीनतंत्र
(D) पुरोहित द्वारा शासित एक धर्मतंत्र

145. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: चाणक्य की सहायता से चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश का अंत किया।
कथन II: अंतिम नंद शासक, धनानंद, अपनी दमनकारी कर व्यवस्था के कारण अलोकप्रिय था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

146. जैन दर्शन में, एक 'तीर्थंकर' वह है जो:
(A) पुनर्जन्म के चक्र पर विजय प्राप्त कर चुका है और दूसरों को मार्ग दिखाता है
(B) महावीर का शिष्य है
(C) एक विद्वान भिक्षु है
(D) जैन मठ का प्रमुख है

147. 'सूत्रों का युग' क्या था?
(A) वैदिक संहिताओं की रचना का काल
(B) वह काल जब रामायण जैसे महाकाव्य प्रथम बार लिखे गए थे
(C) अनुष्ठान और विधि पर सूत्रात्मक नियमावलियों द्वारा पहचाना जाने वाला काल
(D) बौद्ध ग्रंथों पर महान भाष्यों का युग

148. हखामनी शासक जरक्सीस को भारतीय इतिहास के संदर्भ में किसके लिए जाना जाता है?
(A) मगध साम्राज्य पर विजय
(B) भारत में प्रथम फारसी अभियान का नेतृत्व
(C) मौर्यों के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करना
(D) यूनानियों के विरुद्ध युद्ध में भारतीय पैदल सेना और घुड़सवार सेना को नियुक्त करना

149. 'पंच महायज्ञों' का संपादन किस 'आश्रम' के लिए अनिवार्य कर्तव्य माना जाता था?
(A) ब्रह्मचर्य
(B) वानप्रस्थ
(C) गृहस्थ
(D) संन्यास

150. यूनानी राजदूत मेगास्थनीज, जिसने 'इंडिका' लिखी थी, किस भारतीय शासक के दरबार में भेजा गया था?
(A) अशोक
(B) चंद्रगुप्त मौर्य
(C) बिंबिसार
(D) धनानंद

151. मध्यपाषाण युग की एक प्रमुख विशेषता, जो इसे पूर्ववर्ती पुरापाषाण युग से पृथक करती है, वह थी:
(A) अग्नि का प्रयोग
(B) समाधान का अभ्यास
(C) गुफा चित्रकारी
(D) सूक्ष्म पाषाण उपकरणों का निर्माण

152. निम्नलिखित में से कौन सिंधु घाटी सभ्यता के नगरीय केंद्रों की प्रमुख विशेषता नहीं है?
(A) बड़े मंदिरों और महलों की व्यापक उपस्थिति
(B) एक दुर्ग और एक निचला नगर
(C) एक उन्नत जल निकासी और स्वच्छता व्यवस्था
(D) मानकीकृत पकी हुई ईंटों का उपयोग

153. ऋग्वेद में वर्णित दस राजाओं का युद्ध किस नदी के तट पर लड़ा गया था?
(A) सरस्वती
(B) सिंधु
(C) परुष्णी
(D) वितस्ता

154. सूची I में प्राचीन ग्रंथों को सूची II में उनके सामान्य विषयों के साथ सुमेलित करें।
सूची I:
P. गृह्य सूत्र
Q. श्रौत सूत्र
R. धर्म सूत्र
S. शुल्ब सूत्र
सूची II:
1. यज्ञ-वेदियों के निर्माण के नियम, प्रारंभिक ज्यामिति
2. विभिन्न वर्णों के लिए विधि, रीति-रिवाज और कर्तव्य
3. बड़े, सार्वजनिक वैदिक यज्ञों के नियम
4. घरेलू समारोहों और संस्कारों के नियम

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

155. गंगा और सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र नगर की स्थापना किस हर्यंक शासक द्वारा की गई थी?
(A) बिंबिसार
(B) अजातशत्रु
(C) नागदशक
(D) उदयन

156. बौद्ध धर्म के 'चार आर्य सत्य' का केंद्रीय विचार यह है कि जीवन दुख है, और इस दुख का कारण है:
(A) ईश्वर की इच्छा
(B) तृष्णा और आसक्ति
(C) सामाजिक अन्याय
(D) पूर्व जन्म का कर्म जिसे बदला नहीं जा सकता

157. निम्नलिखित कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनें।
कथन (A): भारत में छठी शताब्दी ईसा पूर्व को प्रायः 'धार्मिक क्रांति' का युग कहा जाता है।
कारण (R): इस काल में बौद्ध और जैन धर्म सहित कई नास्तिक संप्रदायों का उदय हुआ, जिन्होंने वेदों की सत्ता और ब्राह्मणवादी प्रभुत्व को चुनौती दी।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

158. फारस का अंतिम हखामनी शासक, जिसे सिकंदर महान ने पराजित किया था, वह था:
(A) दारा प्रथम
(B) जरक्सीस
(C) साइरस द्वितीय
(D) दारा तृतीय

159. 'विवाह' संस्कार किस जीवन संस्कार को संदर्भित करता है?
(A) परिणय संस्कार
(B) यज्ञोपवीत संस्कार
(C) अन्नप्राशन
(D) अंत्येष्टि

160. वैदिक काल की राजनीतिक संस्थाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. ऋग्वैदिक 'राजन' अपनी प्रजा पर पूर्ण शक्ति रखने वाला एक निरंकुश शासक था।
2. 'सभा' कबीले के वृद्ध और प्रमुख सदस्यों की एक सभा थी।
3. उत्तर वैदिक काल में, सभा और समिति जैसी संस्थाओं का महत्व कम हो गया क्योंकि राजा की शक्ति में वृद्धि हुई थी।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

161. अरब नौवहन और भारत के साथ व्यापार के इतिहास के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत 'मिरात-उल-मेमालिक' किसके द्वारा लिखित है?
(A) अल-मसूदी
(B) सिदी अली रईस
(C) इब्न बतूता
(D) अल-इदरीसी

162. वह भूगर्भीय युग जो अधिकांश मानव प्रागैतिहासिक काल को आवृत्त करता है और हिमयुगों की एक श्रृंखला द्वारा पहचाना जाता है, वह है:
(A) प्लीस्टोसिन
(B) होलोसीन
(C) प्लायोसीन
(D) मायोसीन

163. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में 'उत्तरजीविता' शब्द का तात्पर्य है कि:
(A) सभ्यता वर्तमान समय तक निर्बाध रुप से जारी रही है।
(B) हड़प्पावासियों ने पलायन किया और अपने नगरों को कहीं और फिर से स्थापित किया।
(C) हड़प्पा संस्कृति के कुछ तत्व बाद की भारतीय सभ्यता में जारी रहे।
(D) हड़प्पा के लोग अपनी संस्कृति को त्याग कर वैदिक रीति-रिवाजों में समाहित हो गए।

164. वैदिक युग के साहित्यिक साक्ष्य मुख्य रुप से कहाँ से प्राप्त होते हैं:
(A) पुराण और महाकाव्य
(B) जैन और बौद्ध साहित्य
(C) उस काल के शिलालेख और सिक्के
(D) संहिताओं सहित वैदिक ग्रंथों का संग्रह

165. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: मगध महाजनपद चारों ओर से भूमि से घिरा था और समुद्र तक उसकी कोई प्रत्यक्ष पहुँच नहीं थी।
कथन II: अंग महाजनपद अपनी राजधानी चंपा के साथ गंगा नदी के तट पर स्थित था और नदी व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

166. बौद्ध धर्म में 'अनत्ता' की अवधारणा किस सिद्धांत को संदर्भित करती है?
(A) अहिंसा
(B) अनात्मवाद या 'कोई स्थायी आत्मा नहीं' का सिद्धांत
(C) सभी वस्तुओं की अनित्यता
(D) एक शाश्वत, अपरिवर्तनीय आत्मा का अस्तित्व

167. मगध की सफलता के मुख्य कारणों में से एक वर्तमान में कहाँ स्थित समृद्ध लौह अयस्क के भंडारों पर उसका नियंत्रण था?
(A) पंजाब
(B) राजस्थान
(C) दक्कन का पठार
(D) दक्षिणी बिहार और झारखंड

168. निम्नलिखित में से कौन इतिहास के पुरातात्विक स्रोत का एक उदाहरण है?
(A) अशोक के शिलालेख
(B) ऋग्वेद
(C) अर्थशास्त्र
(D) पुराण

169. प्राचीन वैचारिक दृष्टिकोण से 'भारतवर्ष' की सबसे उपयुक्त परिभाषा क्या है?
(A) मौर्य साम्राज्य का राजनीतिक क्षेत्र
(B) हिमालय और विंध्य के बीच का क्षेत्र
(C) पूरा भारतीय उपमहाद्वीप, जिसे एक विशिष्ट इकाई के रूप में कल्पित किया गया है
(D) केवल हिंद-आर्य भाषा बोलने वालों द्वारा बसा हुआ क्षेत्र

170. निम्नलिखित में से कौन सा 'पुरुषार्थ' या मानव जीवन का लक्ष्य नहीं है?
(A) ऋण
(B) धर्म
(C) अर्थ
(D) मोक्ष

171. ऋग्वैदिक काल में दो सबसे महत्वपूर्ण सभाएँ कौन सी थीं जो राजा पर कुछ नियंत्रण रखती थीं?
(A) श्रेणी और पूग
(B) गण और संघ
(C) विदथ और परिषद
(D) सभा और समिति

172. जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने चार महाव्रतों का उपदेश दिया था। महावीर ने पाँच महाव्रत बनाने के लिए कौन सा व्रत जोड़ा?
(A) अहिंसा
(B) ब्रह्मचर्य
(C) सत्य
(D) अस्तेय

173. नीचे दिए गए पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर प्रश्न का उत्तर दें:
एक पुरातत्वविद् गंगा के मैदानों में एक स्थल की खुदाई कर रहा है और उसे 'उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड', आहत सिक्के और एक किलेबंद बस्ती के अवशेष मिलते हैं। यह स्थल संभवतः किस काल का है?
(A) परिपक्व हड़प्पा चरण
(B) उत्तर वैदिक काल
(C) महाजनपद काल
(D) कुषाण काल

174. छठी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में दारा प्रथम द्वारा उत्तर-पश्चिम भारत पर आक्रमण की पुष्टि किसके द्वारा होती है?
(A) मेगास्थनीज के विवरण
(B) बौद्ध जातक कथाएँ
(C) बेहिस्तुन जैसे फारसी शिलालेख
(D) हाथीगुंफा शिलालेख

175. 'गृहस्थ आश्रम' की अवधारणा जीवन के किस चरण को संदर्भित करती है?
(A) गृहपति का जीवन
(B) विद्यार्थी जीवन
(C) वानप्रस्थ जीवन
(D) संन्यासी जीवन

176. विदेशी यात्रियों के विवरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) वे हमेशा वस्तुनिष्ठ और सांस्कृतिक पूर्वाग्रह से मुक्त होते हैं।
(B) ग्रीक-रोमन विवरण प्रायः भारत की संपदा और व्यापार पर प्रकाश डालते हैं।
(C) फाह्यान जैसे चीनी यात्री मुख्य रूप से राजनीति में रुचि रखते थे।
(D) अरब लेखकों ने केवल भारत के सैन्य पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया।

177. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के स्वदेशी विकास के प्रारंभिक प्रमाण कहाँ प्राप्त हुए हैं?
(A) मेहरगढ़
(B) लोथल
(C) कालीबंगन
(D) इनामगाँव

178. सिंधु घाटी सभ्यता के धोलावीरा स्थल की एक विशिष्ट विशेषता है:
(A) एक अद्वितीय और जटिल जल संचयन प्रणाली
(B) एक जुते हुए खेत का साक्ष्य
(C) एक बड़ा ईंट निर्मित गोदीवाड़ा
(D) कांस्य की नर्तकी की मूर्ति

179. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।

कथन I: उत्तर वैदिक काल में राजपद से जुड़ी शक्ति और अनुष्ठानों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
कथन II: राजसूय, वाजपेय और अश्वमेध जैसे विस्तृत शाही राज्याभिषेक समारोह प्रचलित हो गए थे।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

180. बुद्ध के समकालीन राजा प्रसेनजित द्वारा शासित महाजनपद कोसल की राजधानी थी:
(A) कौशाम्बी
(B) वाराणसी
(C) राजगृह
(D) श्रावस्ती

181. भारत पर होने वाले निम्नलिखित विदेशी आक्रमणों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. सिकंदर महान
II. दारा प्रथम
III. हिंद-यूनानी
IV. शक
(A) II, I, III, IV
(B) I, II, III, IV
(C) II, III, I, IV
(D) I, III, II, IV

182. बौद्ध धर्म का पवित्र प्रमाण 'त्रिपिटक' किनसे निर्मित है?
(A) दीघ, मज्झिम और संयुक्त निकाय
(B) विनय, सुत्त और अभिधम्म पिटक
(C) महावस्तु, ललितविस्तर और बुद्धचरित
(D) जातक, मिलिंदपन्हो और दीपवंस

183. भारत के साथ फारसी संपर्क का एक महत्वपूर्ण परिणाम था:
(A) संस्कृत भाषा की शुरुआत
(B) रोम के साथ समुद्री व्यापार का आरंभ
(C) मगध साम्राज्य की विजय
(D) उत्तर-पश्चिम में खरोष्ठी लिपि का आरंभ

184. सूची I में प्रागैतिहासिक कालों को सूची II में उनके प्रमुख औजारों या तकनीकों के साथ सुमेलित करें।
सूची I:
P. पुरापाषाण काल
Q. मध्यपाषाण काल
R. नवपाषाण काल
S. ताम्रपाषाण काल
सूची II:
1. पॉलिश किए हुए पत्थर के औजार
2. पत्थर के औजारों के साथ तांबे के औजार
3. हस्त-कुठार, विदारक, शल्क उपकरण
4. सूक्ष्म पाषाण उपकरण
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

185. वैदिक परंपरा के दार्शनिक ग्रंथ, जिन्हें अक्सर 'वेदांत' कहा जाता है, वे हैं:
(A) संहिता
(B) ब्राह्मण ग्रंथ
(C) उपनिषद
(D) आरण्यक

186. मगध के उदय के कारणों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) वज्जी और मल्ल के गणराज्यों से सुदृढ़ समर्थन
(B) कृषि अधिशेष प्रदान करने वाली गंगा के मैदानों की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी
(C) राजगृह में रणनीतिक राजधानी, जो पाँच पहाड़ियों से घिरी थी
(D) महत्वाकांक्षी शासकों की एक श्रृंखला

187. निम्नलिखित कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनें।
कथन (A): बौद्ध और जैन धर्म को व्यापारी तथा शिल्पकार वर्गों से महत्वपूर्ण संरक्षण प्राप्त हुआ।
कारण (R): नए धर्मों का अहिंसा पर बल व्यापार के लिए अनुकूल था।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

188. कौन सी प्राचीन भारतीय अवधारणा किसी के कार्यों के परिणामों को दर्शाती है, जो इस जीवन और परलोक में उनके भाग्य को आकार देती है?
(A) ऋत
(B) कर्म
(C) यज्ञ
(D) ऋण

189. पुरातात्विक स्रोतों में, मुद्राशास्त्र किसका अध्ययन है?
(A) शिलालेखों का
(B) स्मारकों का
(C) सिक्कों का
(D) मृदभांडों का

190. हड़प्पा सभ्यता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. लोहे का उपयोग व्यापक था, विशेष रूप से कृषि उपकरणों के लिए।
2. सभ्यता की एक चित्रात्मक लिपि थी जिसे सफलतापूर्वक

पढ़ा जा चुका है।
3. ग्रिड लेआउट और एक परिष्कृत जल निकासी व्यवस्था सहित नगरीय नियोजन एक प्रमुख विशेषता थी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

191. ऋग्वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल की सामाजिक संरचना के बीच मुख्य अंतर क्या था?
(A) ऋग्वैदिक सामाजिक विभाजन लचीले थे, जबकि उत्तर वैदिक काल में एक कठोर वंशानुगत वर्ण व्यवस्था देखी गई।
(B) ऋग्वैदिक काल में एक कठोर जाति व्यवस्था थी, जो उत्तर वैदिक काल में लचीली हो गई।
(C) ऋग्वैदिक काल में वर्ण की अवधारणा अनुपस्थित थी और इसे केवल उत्तर वैदिक काल में प्रस्तुत किया गया था।
(D) ऋग्वैदिक काल में शूद्रों का स्थान उच्च था, जो उत्तर वैदिक काल में गिर गया।

192. निम्नलिखित में से कौन सा महाजनपद एक गणराज्य था?
(A) मगध
(B) मल्ल
(C) कोसल
(D) अवंती

193. 'स्यादवाद' या 'अनेकांतवाद' किसका एक मौलिक सिद्धांत है?
(A) बौद्ध धर्म
(B) जैन धर्म
(C) आजीवक संप्रदाय
(D) चार्वाक संप्रदाय

194. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: 'भारतवर्ष' शब्द का उल्लेख पहली बार ऋग्वेद में मिलता है।
कथन II: पुराण भारतवर्ष को हिमालय के दक्षिण और समुद्र के उत्तर की भूमि के रूप में वर्णित करते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

195. निम्नलिखित में से कौन एक 'संस्कार' नहीं है?
(A) जातकर्म
(B) उपनयन
(C) यज्ञ
(D) विवाह

196. चीनी यात्री फाह्यान ने किस वंश के शासनकाल के दौरान भारत की यात्रा की थी?
(A) मौर्य
(B) कुषाण
(C) वर्धन
(D) गुप्त

197. ताम्रपाषाण संस्कृतियों का नाम इसलिए रखा गया है क्योंकि उनकी तकनीक किसके उपयोग द्वारा पहचानी जाती थी?
(A) पत्थर और लोहा
(B) कांस्य और टिन
(C) तांबा और पत्थर
(D) केवल पॉलिश किया हुआ पत्थर

198. भारतीय इतिहास में 'द्वितीय नगरीकरण' किससे संबंधित है?
(A) हड़प्पा सभ्यता का पतन
(B) गंगा घाटी में लौह तकनीक का प्रसार और कृषि अधिशेष
(C) सिकंदर महान का आक्रमण
(D) मौर्य साम्राज्य की स्थापना

199. ऋग्वैदिक राजनीतिक संरचना में 'विश' क्या था?
(A) शाही परिवार
(B) वृद्धों की परिषद
(C) मुख्य पुरोहित
(D) 'जन' का एक उप-विभाजन

200. हर्यंक शासक बिंबिसार के कोसल और लिच्छवी के साथ वैवाहिक गठजोड़ का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) अपनी राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करना और अपने प्रभाव का विस्तार करना
(B) अपने विशिष्ट धार्मिक विश्वासों का प्रसार करना
(C) एक प्रमुख वैदिक यज्ञ की आवश्यकताओं को पूर्ण करना
(D) नए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों को बढ़ावा देना

201. निम्नलिखित में से कौन इतिहास के स्रोत के रूप में 'लौकिक' साहित्य का अंग है?
(A) उपनिषद
(B) ब्राह्मण ग्रंथ
(C) पाणिनी की 'अष्टाध्यायी'
(D) अथर्ववेद

202. जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर किसे माना जाता है?
(A) ऋषभनाथ
(B) पार्श्वनाथ
(C) महावीर
(D) नेमिनाथ

203. महायान बौद्ध धर्म में 'बोधिसत्व' शब्द का अर्थ है:
(A) बुद्ध का पूर्व अवतार
(B) मठ में एक वरिष्ठ भिक्षु

(C) बुद्ध की मूल शिक्षाओं का अनुयायी
(D) एक प्रबुद्ध प्राणी जो दूसरों को निर्वाण प्राप्ति में सहायता करता है

204. 'वर्णाश्रम धर्म' का सबसे अच्छा विवरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) विभिन्न राज्यों के बीच युद्ध को नियंत्रित करने वाले नियम
(B) व्यक्तियों के लिए निर्धारित कर्तव्य और जीवन के चरण
(C) व्यापार और वाणिज्य से संबंधित विधि
(D) ब्रह्मांड के सृजन के बारे में दार्शनिक सिद्धांत

205. 'पंच महायज्ञ' थे:
(A) पाँच महान सैन्य अभियान
(B) पाँच महान वार्षिक उत्सव
(C) एक गृहस्थ द्वारा किए जाने वाले पाँच दैनिक यज्ञ
(D) एक जैन भिक्षु द्वारा लिए गए पाँच व्रत

206. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: अरब यात्रियों के विवरण पूर्व-मध्यकालीन भारत के इतिहास के लिए एक प्रमुख स्रोत हैं।
कथन II: अल-मसूदी और सुलेमान जैसे लेखकों ने राष्ट्रकूट और प्रतिहार जैसे भारतीय राज्यों के बारे में जानकारी प्रदान की।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

207. पुरापाषाण और मध्यपाषाण युग के शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों के बीच एक प्राथमिक अंतर यह है:
(A) पुरापाषाण काल के औजार भारी थे, जबकि मध्यपाषाण काल के औजार सूक्ष्म पाषाण उपकरण थे।
(B) पुरापाषाण काल के लोग गुफाओं में रहते थे, जबकि मध्यपाषाण काल के लोगों ने आवास निर्मित किए थे।
(C) पुरापाषाण काल के लोग समाधान का अभ्यास करते थे, जबकि मध्यपाषाण काल के लोग नहीं।
(D) पुरापाषाण समाज मातृसत्तात्मक थे, जबकि मध्यपाषाण समाज पितृसत्तात्मक थे।

208. सिंधु घाटी सभ्यता के परिपक्व चरण के लिए सर्वाधिक स्वीकृत अवधि है:
(A) 4000-3500 ईसा पूर्व
(B) 2600-1900 ईसा पूर्व
(C) 3500-2600 ईसा पूर्व
(D) 1900-1500 ईसा पूर्व

209. हड़प्पा सभ्यता के पतन के लिए आर्य-आक्रमण सिद्धांत का विरोध किस कारण से किया गया है?
(A) हड़प्पा की सांस्कृतिक निरंतरता के साक्ष्य
(B) नगरों के पतन और आर्यों के आगमन के बीच कालानुक्रमिक अंतर
(C) हड़प्पा स्थलों पर लोहे के हथियारों की खोज
(D) ऋग्वैदिक ग्रंथों की अहिंसक प्रकृति

210. उत्तर वैदिक काल के दौरान धार्मिक क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन क्या था?
(A) पूर्ववर्ती देवताओं की तुलना में प्रजापति, विष्णु और रुद्र का उदय
(B) यज्ञों और अनुष्ठानों का पूर्ण लोप
(C) प्रमुख धर्मों के रूप में बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उदय
(D) महिला देवियों की पूजा सर्वाधिक प्रमुख विशेषता बन गई

211. निम्नलिखित में से कौन सोलह महाजनपदों में से एक नहीं था?
(A) गांधार
(B) कंबोज
(C) कलिंग
(D) मत्स्य

212. बिंबिसार द्वारा किस महाजनपद का विलय मगध की शक्ति के उदय में प्रथम चरण माना जाता है?
(A) काशी
(B) कोसल
(C) अवंती
(D) अंग

213. रामायण और महाभारत महाकाव्यों को साहित्य की किस श्रेणी का अंग माना जाता है?
(A) श्रुति
(B) पिटक
(C) स्मृति
(D) आगम

214. सूची I के हड़प्पा स्थलों को सूची II के उनके वर्तमान भारतीय राज्यों के साथ सुमेलित करें।
सूची I:
P. कालीबंगन
Q. लोथल
R. राखीगढ़ी
S. रोपड़
सूची II:
1. गुजरात
2. पंजाब
3. राजस्थान
4. हरियाणा
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

215. भारत पर सिकंदर का आक्रमण किसका कारण नहीं था:

(A) भारत और यूनान के बीच प्रत्यक्ष संपर्क की स्थापना
(B) उत्तर-पश्चिमी भारतीय राज्यों का दुर्बल होना
(C) रिक्तता में मौर्य साम्राज्य का उदय
(D) सिकंदर द्वारा नंद वंश का तत्काल पतन

216. वैदिक युग में 'ऋत' की अवधारणा का अर्थ है:
(A) ब्रह्मांडीय नियम और नैतिक व्यवस्था
(B) व्यक्ति की संपत्ति
(C) पवित्र यज्ञ अग्नि
(D) पुरोहित के उच्चारित शब्द

217. निम्नलिखित कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनें।
कथन (A): उत्तर वैदिक काल के दौरान 'सभा' और 'समिति' का महत्व कम हो गया।
कारण (R): राजा की बढ़ती शक्ति और क्षेत्रीय राजतंत्र के उदय ने इन जनजातीय सभाओं के प्रभाव को कम कर दिया।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

218. 'शतपथ ब्राह्मण', जो उत्तर वैदिक समाज और अनुष्ठानों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है, किस वेद से संबंधित है?
(A) यजुर्वेद
(B) ऋग्वेद
(C) सामवेद
(D) अथर्ववेद

219. 'जातक' किससे संबंधित कथाएँ हैं:
(A) जैन तीर्थंकरों का जीवन
(B) कृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद
(C) वैदिक देवताओं के पराक्रम
(D) बुद्ध के पूर्व जन्म

220. प्राचीन भारत में विदेशी आक्रमणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. फारसी आक्रमण का नेतृत्व दारा प्रथम ने किया था, जिसने पंजाब और सिंध के कुछ क्षेत्रों पर अधिकार किया था।
2. सिकंदर महान ने सिंधु नदी के तट पर राजा पोरस का सामना किया।
3. आक्रमणों के कारण नए व्यापार मार्ग खुले और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

221. कौन सा 'पुरुषार्थ' भौतिक समृद्धि और आर्थिक कल्याण से संबंधित है?
(A) धर्म
(B) काम
(C) अर्थ
(D) मोक्ष

222. प्राचीन भारतीय विचारधारा में 'ऋण' शब्द उस दायित्व को दर्शाता है जो एक व्यक्ति पर होता है। 'पितृ ऋण' किसके प्रति ऋण है:
(A) देवताओं के प्रति
(B) ऋषियों के प्रति
(C) राजा के प्रति
(D) पूर्वजों के प्रति

223. सिक्कों के अध्ययन से मुख्य रूप से किस प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है?
(A) आर्थिक स्थितियाँ, राज्यों का विस्तार और उस काल की कला
(B) समाज की पूर्ण सामाजिक संरचना
(C) धार्मिक दर्शन का विवरण
(D) किसी काल का पूर्ण साहित्यिक इतिहास

224. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: नवपाषाण काल में संक्रमण कृषि के आरंभ द्वारा चिह्नित है।
कथन II: कृषि के आरंभ ने अधिक स्थिर जीवनशैली और ग्रामों के निर्माण को जन्म दिया।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

225. परवर्ती हिंदू धर्म में हड़प्पाकालीन धार्मिक प्रथाओं की उत्तरजीविता निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी की पूजा में देखी जा सकती है?
(A) पशुपति
(B) इंद्र
(C) मातृ देवी
(D) पीपल का वृक्ष और पवित्र पशु

226. ऋग्वैदिक से उत्तर वैदिक काल तक राजनीतिक संस्थाओं के विकास को सबसे अच्छी तरह से किस रूप में वर्णित किया गया है?
(A) जनजातीय सरदारी से क्षेत्रीय राजतंत्र की ओर परिवर्तन
(B) राजतंत्र से गणराज्य की ओर
(C) लोकतंत्र से कुलीनतंत्र की ओर
(D) साम्राज्य से खंडित राज्यों की ओर

227. महाजनपदों के युग में आर्थिक विकास को किसके द्वारा महत्वपूर्ण प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था?

(A) वस्तु विनिमय प्रणाली का आरंभ
(B) कृषि में गिरावट
(C) आहत सिक्कों का प्रयोग और व्यापार का उदय
(D) ब्याज पर धन उधार देने पर प्रतिबंध

228. मगध पर हर्यंक वंश के शासन का अंत किसके उदय के साथ हुआ?
(A) नंद वंश
(B) मौर्य वंश
(C) कण्व वंश
(D) शिशुनाग वंश

229. जैन धर्म और बौद्ध धर्म दोनों के दार्शनिक विचारों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) एक नई राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करना
(B) वर्ण व्यवस्था को न्यायोचित ठहराना
(C) जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति का मार्ग खोजना
(D) वैदिक यज्ञों के संपादन को बढ़ावा देना

230. प्रांतीय गवर्नरों के लिए प्रयुक्त फारसी पद 'क्षत्रप' को भारत में किन परवर्ती शासकों द्वारा अपनाया गया था?
(A) मौर्यों द्वारा
(B) शक और कुषाणों द्वारा
(C) गुप्तों द्वारा
(D) चोलों द्वारा

231. पाणिनी की 'अष्टाध्यायी', जो 'लौकिक' साहित्य की एक प्रमुख कृति है, किस पर एक ग्रंथ है?
(A) राजनीति विज्ञान
(B) चिकित्सा
(C) वास्तुकला
(D) संस्कृत व्याकरण

232. एक पुरातत्वविद् को गर्त-आवासों, धूसर मृदभांडों और पत्थर के औजारों के साथ पालतू कुत्तों की अस्थियों वाली एक बस्ती प्राप्त होती है। यह स्थल किस क्षेत्र की नवपाषाण संस्कृति की विशेषता है?
(A) कश्मीर
(B) दक्कन
(C) गंगा घाटी
(D) पश्चिमी घाट

233. जैन संप्रदाय का श्वेतांबर और दिगंबर में विभाजन पारंपरिक रूप से किससे संबंधित है?
(A) तीर्थंकरों की संख्या पर विवाद
(B) विभिन्न राजाओं का संरक्षण
(C) अकाल के दौरान भिक्षुओं के एक समूह का दक्षिण की ओर प्रवासन
(D) अनेकांतवाद की अवधारणा की व्याख्या

234. अशोक के शिलालेखों में प्रयुक्त 'धम्म-महामत्त' शब्द का अर्थ है:
(A) धम्म का संदेश प्रसारित करने के लिए नियुक्त विशेष अधिकारी
(B) उच्च पदस्थ सैन्य कमांडर
(C) प्रांतीय गवर्नर
(D) कोष अधिकारी

235. प्राचीन भारत के 'गण-संघ' या गणराज्य अंततः किसके द्वारा विजित और सम्मिलित किए गए?
(A) फारसी साम्राज्य
(B) यूनानी आक्रमणकारियों
(C) कुषाण साम्राज्य
(D) विस्तारवादी मगध राजतंत्र

236. 'चार महान दृश्य' जिनके कारण राजकुमार सिद्धार्थ ने वैराग्य धारण किया, उनमें निम्नलिखित में से कौन सम्मिलित नहीं था?
(A) एक वृद्ध व्यक्ति
(B) एक धनी व्यापारी
(C) एक रोगी व्यक्ति
(D) एक मृत शरीर

237. आश्रम व्यवस्था में 'वानप्रस्थ' अवस्था में व्यक्ति को क्या करना अपेक्षित है?
(A) शिक्षा प्राप्त करना और ब्रह्मचर्य का पालन करना
(B) विवाह करना, परिवार पालना और जीविकोपार्जन करना
(C) वन में निवृत्त होना और ध्यान का जीवन व्यतीत करना
(D) संसार का पूर्णतः त्याग करना और एक परिव्राजक बनना

238. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: हड़प्पा सभ्यता अत्यधिक समरूप थी, जिसमें सभी स्थलों पर एक समान नगर नियोजन प्राप्त हुआ था।
कथन II: यद्यपि उच्च स्तर का मानकीकरण था, फिर भी मृदभांडों और नगर नियोजन में क्षेत्रीय विविधताएँ उपस्थित थीं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

239. सामवेद, जो सूक्तों का संग्रह है, के मुख्य देवता हैं:
(A) सूर्य
(B) अग्नि
(C) सोम
(D) रुद्र

240. 'द्वितीय बौद्ध संगीति', जिसमें संघ में प्रथम विभाजन हुआ, कहाँ आयोजित की गई थी?
(A) राजगृह
(B) वैशाली
(C) पाटलिपुत्र

(D) कश्मीर

241. 'आश्रम' व्यवस्था के निम्नलिखित चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
I. गृहस्थ
II. संन्यास
III. ब्रह्मचर्य
IV. वानप्रस्थ
(A) III, I, IV, II
(B) I, III, IV, II
(C) III, IV, I, II
(D) I, II, III, IV

242. प्लिनी जैसे ग्रीक-रोमन लेखकों के विवरणों ने किसके बदले में रोम के स्वर्ण के भारत जाने पर खेद व्यक्त किया था?
(A) मसालों, वस्त्रों और रत्नों जैसी विलासिता की वस्तुएं
(B) खाद्यान्न और घोड़े
(C) लौह और इस्पात के हथियार
(D) दार्शनिक ग्रंथ और धार्मिक मूर्तियाँ

243. गंगा के मैदान में 'द्वितीय नगरीकरण' के उदय का प्राथमिक कारण था:
(A) लिपि का विकास
(B) पशुपालन में गिरावट
(C) लौह तकनीक के कारण कृषि अधिशेष का उत्पादन
(D) क्षेत्र में वर्षा में वृद्धि

244. सूची I के वैदिक देवताओं को सूची II में उनकी संबंधित भूमिकाओं के साथ सुमेलित करें।
सूची I:
P. इंद्र
Q. अग्नि
R. वरुण
S. सोम
सूची II:
1. अग्नि का देवता, देवताओं और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ
2. युद्ध और मौसम का देवता
3. उस पादप का देवता जिससे एक अनुष्ठानिक पेय तैयार किया जाता था
4. ब्रह्मांडीय व्यवस्था का रक्षक
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

245. छठी शताब्दी ईसा पूर्व की धार्मिक क्रांति के संदर्भ में, 'नास्तिक' शब्द का प्राथमिक अर्थ क्या है?
(A) वे संप्रदाय जो वैदिक अनुष्ठानों का कड़ाई से पालन करते थे
(B) वे दार्शनिक संप्रदाय जो केवल भौतिकवाद पर केंद्रित थे
(C) वे संप्रदाय जिन्होंने वेदों की सत्ता को अस्वीकार कर दिया
(D) नए धार्मिक आंदोलन जो भारत के बाहर से उत्पन्न हुए

246. भारत पर हखामनी आक्रमण का प्रभाव किसमें दृष्टिगोचर होता है:
(A) सिंधु घाटी के नगरों की वास्तुकला में
(B) मौर्य दरबारी कला और खरोष्ठी लिपि के प्रयोग में
(C) ब्राह्मी लिपि के विकास में
(D) उपनिषदों के धार्मिक दर्शन में

247. निम्नलिखित कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनें।
कथन (A): उपनिषद कर्मकांड से दार्शनिक विचार की ओर संक्रमण को चिह्नित करते हैं।
कारण (R): वे यज्ञों के स्थान पर आत्मन की प्रकृति और ब्रह्म के साथ उसकी तादात्म्यता पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

248. वैदिक काल में 'बलि' शब्द का मूल अर्थ स्वैच्छिक उपहार था, लेकिन महाजनपदों के युग में यह क्या बन गया:
(A) राज्य द्वारा एकत्रित किया जाने वाला एक अनिवार्य कर
(B) राजाओं के बीच विनिमय किया जाने वाला उपहार
(C) एक धार्मिक यज्ञ
(D) सैनिकों को दिया जाने वाला वेतन

249. निम्नलिखित में से कौन बौद्ध धर्म के त्रिरत्न में से एक नहीं है?
(A) बुद्ध
(B) धम्म
(C) अहिंसा
(D) संघ

250. जैन धर्म और बौद्ध धर्म के उदय के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. दोनों की स्थापना क्षत्रिय राजकुमारों द्वारा की गई थी।
2. दोनों ने आरंभ में अपने सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए जनभाषा का प्रयोग किया।
3. दोनों ने स्पष्ट रूप से वेदों के अधिकार को स्वीकार किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

251. निम्नलिखित में से कौन 'लौकिक' साहित्य की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) यह विशेष रूप से देवी-देवताओं से संबंधित है।
(B) इसे दैवीय मूल का माना जाता है।

(C) यह केवल पाली भाषा में लिखा गया है।
(D) इसके लेखक ज्ञात हैं, और यह सांसारिक विषयों से संबंधित है।

252. मगध के उदय में योगदान देने वाले भौगोलिक कारकों में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी शामिल थे?
(A) विशाल जनसंख्या का भरण-पोषण करने वाले उपजाऊ जलोढ़ मैदान
(B) समुद्री व्यापार के लिए प्राकृतिक बंदरगाहों वाली एक लंबी तटरेखा
(C) निकटवर्ती क्षेत्रों में तांबे और लोहे के समृद्ध भंडार
(D) परिवहन और रक्षा के लिए गंगा और सोन जैसी नदियों के साथ रणनीतिक स्थिति

253. भारतीय इतिहास के 'आद्य-ऐतिहासिक' चरण का उदाहरण है:
(A) पुरापाषाण संस्कृतियाँ
(B) मध्यपाषाण शैलकला
(C) सिंधु घाटी सभ्यता
(D) मौर्य साम्राज्य

254. गंगा घाटी में 'लौह युग' किस प्रमुख ऐतिहासिक विकास से संबंधित है?
(A) हड़प्पा सभ्यता का पतन
(B) ऋग्वेद की रचना
(C) हूणों का आक्रमण
(D) महाजनपदों का उदय और द्वितीय नगरीकरण

255. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: ऋग्वैदिक 'राजन' मुख्य रूप से एक सैन्य नेता था जिसने कबीले की रक्षा की थी।
कथन II: महाजनपद काल का 'राजन' एक क्षेत्रीय सम्राट था जिसके पास स्थायी सेना और एक विस्तृत कर व्यवस्था थी।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

256. 'सूत्र' साहित्य के संकलन की प्राथमिक प्रेरणा क्या थी?
(A) लोकप्रिय मनोरंजन के लिए महाकाव्य कविताएं बनाना
(B) वैदिक ज्ञान का संक्षिप्त और व्यवस्थित सारांश प्रदान करना
(C) राजाओं और राजवंशों के इतिहास का दस्तावेजीकरण करना
(D) वेदों के अधिकार को चुनौती देना

257. नंद वंश का अंतिम शासक, जो सिकंदर के आक्रमण के समय सत्ता में था, वह था:
(A) महापद्म नंद
(B) धनानंद
(C) उग्रसेन
(D) पांडुक

258. प्रागैतिहासिक काल के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए इनमें से कौन सा स्रोत सबसे कम उपयोगी होगा?
(A) शिलालेख
(B) पत्थर के औजार
(C) जीवाश्म अवशेष
(D) गुफा चित्रकारी

259. 'कर्म के सिद्धांत' को सबसे अच्छी तरह से किस रूप में समझा जाता है:
(A) अनुष्ठानिक कार्यों की एक प्रणाली
(B) किसी के वर्ण द्वारा निर्धारित कर्तव्य
(C) कार्य-कारण का नियम जहाँ कर्म भविष्य के परिणामों को निर्धारित करते हैं
(D) अपने पूर्वजों के प्रति ऋण

260. निम्नलिखित में से कौन सी बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय की एक परिभाषित विशेषता है?
(A) अर्हत का आदर्श जो व्यक्तिगत मुक्ति चाहता है
(B) बुद्ध की एक महान शिक्षक के रूप में पूजा लेकिन ईश्वर के रूप में नहीं
(C) केवल मूल पाली प्रमाणों का कड़ाई से पालन
(D) बोधिसत्व की अवधारणा और बुद्ध का दैवीकरण

261. 'पुरुषार्थ' की अवधारणा ने किसके लिए एक संरचना प्रदान की?
(A) सेना का आयोजन
(B) अंतर-राज्य संबंधों को विनियमित करना
(C) जीवन के आध्यात्मिक और भौतिक लक्ष्यों के बीच संतुलन बनाना
(D) यज्ञ अनुष्ठानों का संपादन

262. नीचे दिए गए ऐतिहासिक विवरण के आधार पर प्रश्न का उत्तर दें:
बिंबिसार नामक एक राजा अंग को जीतकर और कोसल तथा वैशाली के परिवारों के साथ वैवाहिक संबंध बनाकर अपने मगध राज्य का विस्तार करता है। वह बुद्ध और महावीर दोनों को संरक्षण देता है। वह किस वंश से संबंधित है?
(A) नंद
(B) हर्यंक
(C) शिशुनाग
(D) मौर्य

263. उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांडों का प्रयोग किस काल की एक विशिष्ट पुरातात्विक विशेषता है?
(A) हड़प्पा सभ्यता
(B) ऋग्वैदिक काल
(C) ताम्रपाषाण कालीन दक्कन
(D) महाजनपदों और मौर्यों का युग

264. सूत्र साहित्य का अंग 'शुल्बसूत्र', किसके इतिहास के लिए महत्वपूर्ण हैं:

(A) भारतीय गणित और ज्यामिति
(B) भारतीय संगीत
(C) भारतीय चिकित्सा
(D) भारतीय विधि

265. महाजनपद काल में 'राजतंत्र' और 'गणराज्य' के बीच प्राथमिक अंतर था:
(A) बोली जाने वाली भाषा
(B) प्रमुख धर्म
(C) शासन की प्रणाली
(D) क्षेत्र का आकार

266. निम्नलिखित में से कौन सा सिंधु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख बंदरगाह था?
(A) लोथल
(B) हड़प्पा
(C) मोहनजोदड़ो
(D) बनावली

267. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: उत्तर वैदिक ग्रंथ 'सप्त सिंधु' क्षेत्र से 'गंगा-यमुना दोआब' की ओर एक स्पष्ट भौगोलिक स्थानांतरण दर्शाते हैं।
कथन II: यह स्थानांतरण कृषि के बढ़ते महत्व और लौह उपकरणों के प्रयोग द्वारा वनों की कटाई के अनुरूप है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

268. बौद्ध धर्म में 'मध्यम मार्ग' का विचार किसके बीच का मार्ग है?
(A) आस्तिकता और नास्तिकता
(B) अत्यधिक विलासिता और कठोर तपस्या
(C) राजतंत्र और गणराज्य
(D) ब्राह्मणवाद और जैन धर्म

269. उत्तर-पश्चिमी भारत में हखामनी शासन का मुख्य प्रभाव था:
(A) धार्मिक, जिससे पारसी धर्म का प्रसार हुआ
(B) सामाजिक, जिससे वर्ण व्यवस्था का पतन हुआ
(C) राजनीतिक और आर्थिक, जिससे व्यापार और नए प्रशासन को प्रोत्साहन मिला
(D) साहित्यिक, जिसके परिणामस्वरूप फारसी को दरबारी भाषा के रूप में अपनाया गया

270. चार स्तरीय 'वर्णाश्रम' व्यवस्था में, 'ब्राह्मण' शब्द मुख्य रूप से किस वर्ग के लिए उत्तरदायी है:
(A) शासन और युद्ध
(B) कृषि, व्यापार और वाणिज्य
(C) अन्य तीन वर्गों की सेवा करना
(D) अध्ययन, अध्यापन और यज्ञ संपादन

271. निम्नलिखित में से किस विदेशी लेखक ने 7वीं शताब्दी ईस्वी में बौद्ध स्थलों और नालंदा विश्वविद्यालय पर केंद्रित भारत का विवरण प्रदान किया?
(A) ह्वेनसांग
(B) मेगास्थनीज
(C) फाह्यान
(D) अल-बिरूनी

272. प्रागैतिहास में 'महापाषाण' शब्द का अर्थ है:
(A) पत्थर का एक छोटा औजार
(B) पत्थर का एक बड़ा शिलाखंड या स्मारक, जिसका प्रयोग प्रायः समाधान हेतु किया जाता था
(C) मृदभांड का एक प्रकार
(D) एक गुफा आवास

273. हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद वि-नगरीकरण की अवधि आई, जिसके सदियों बाद पुनः नगरों का उदय हुआ, जिसे जाना जाता है:
(A) प्रथम नगरीकरण
(B) द्वितीय नगरीकरण
(C) कांस्य युग का पतन
(D) महान प्रवास

274. सूची I के शब्दों को सूची II में उनके संबंधित धर्मों या अवधारणाओं के साथ सुमेलित करें।
सूची I:
P. तीर्थंकर
Q. बोधिसत्व
R. पुरुष सूक्त
S. पंच महायज्ञ
सूची II:
1. महायान बौद्ध धर्म
2. वैदिक ब्राह्मणवाद
3. जैन धर्म
4. वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

275. छठी शताब्दी ईसा पूर्व का सबसे शक्तिशाली महाजनपद, जिसने अंततः भारत में प्रथम बड़ा साम्राज्य स्थापित किया, वह था:
(A) कोसल
(B) अवंती
(C) मगध
(D) वज्जी

276. मगध के किस प्रतिद्वंद्वी को अंततः पराजित करने के लिए 'शिशुनाग' वंश ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है?
(A) कोसल

(B) गांधार
(C) वत्स
(D) अवंती

277. निम्नलिखित कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनें।
कथन (A): समाज के निचले वर्गों द्वारा बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को सुगमता से स्वीकार कर लिया गया।
कारण (R): बौद्ध धर्म ने वर्ण व्यवस्था पर प्रहार किया और सामाजिक समानता का उपदेश दिया।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

278. 'सूत्र' और 'महाकाव्य' किस अवधि के बीच के काल को समझने के लिए प्रमुख साहित्यिक स्रोत हैं:
(A) हड़प्पा का पतन और वेदों का उदय
(B) उत्तर वैदिक युग का अंत और मौर्य साम्राज्य का उदय
(C) मौर्य और गुप्त काल
(D) पुरापाषाण और नवपाषाण युग

279. सिकंदर के आक्रमण का एक बड़ा परिणाम उत्तर-पश्चिमी भारत में यूनानी नगरों की स्थापना थी, जिसने सुगम बनाया:
(A) मगध की तत्काल विजय को
(B) यूनान में बौद्ध धर्म के प्रसार को
(C) फारसी साम्राज्य के पतन को
(D) पश्चिम के साथ निरंतर सांस्कृतिक और वाणिज्यिक संपर्क को

280. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. धार्मिक साहित्य सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंडों की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
2. शिलालेख, समकालीन आधिकारिक या निजी रिकॉर्ड होने के कारण, प्रायः अत्यधिक विश्वसनीय माने जाते हैं।
3. विदेशी यात्रियों के विवरण त्रुटियों से पूरी तरह मुक्त हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

281. 'ऋत' की वैदिक अवधारणा का तात्पर्य है:
(A) किसी अनुष्ठान का सही संपादन
(B) देवताओं के प्रति ऋण
(C) ब्रह्मांड की अंतर्निहित ब्रह्मांडीय और नैतिक व्यवस्था
(D) एक पुरोहित परिवार की वंशावली

282. वैदिक काल में 'समिति' थी:
(A) कबीले की एक सामान्य सभा, जो सभी लोगों के लिए खुली थी
(B) महिलाओं की एक परिषद
(C) सैन्य नायकों की एक परिषद
(D) वृद्धों का एक छोटा, चुनिंदा निकाय

283. 'पंच महायज्ञों' में से कौन अतिथियों को दी जाने वाली आहुति का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) देव यज्ञ
(B) पितृ यज्ञ
(C) भूत यज्ञ
(D) नृ यज्ञ

284. मेगास्थनीज की 'इंडिका' मौर्य काल के लिए एक मूल्यवान स्रोत है। यह हमें बाद के किन लेखकों के कार्यों में उद्धरणों के माध्यम से ज्ञात है:
(A) चीनी लेखकों के
(B) ग्रीक-रोमन लेखकों के
(C) अरब लेखकों के
(D) भारतीय लेखकों के

285. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: नवपाषाण चरण की विशेषता एक खाद्य-उत्पादक अर्थव्यवस्था है।
कथन II: पुरापाषाण चरण की विशेषता एक खाद्य-संग्रहकर्ता अर्थव्यवस्था है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

286. सिंधु घाटी सभ्यता के नगरीय नियोजन की सबसे विशिष्ट विशेषता क्या थी?
(A) सड़कों की गोलाकार व्यवस्था
(B) नगर के केंद्र में विशाल मंदिरों की उपस्थिति
(C) केवल लकड़ी और कच्ची ईंटों का उपयोग करके निर्माण
(D) सड़कों की ग्रिड प्रणाली और एक विस्तृत जल निकासी व्यवस्था

287. उत्तर वैदिक काल में, क्षेत्र को इंगित करने वाला 'राष्ट्र' शब्द पहली बार प्रकट हुआ, जो दर्शाता है:
(A) जनजातीय पहचान पर भूमि और क्षेत्रीय राजतंत्र का बढ़ता महत्व
(B) भूमि पर कबीले का महत्व
(C) पुरोहित वर्ग का महत्व
(D) ग्राम सभा का महत्व

288. सोलह महाजनपदों का उल्लेख निम्नलिखित में से किस प्राचीन ग्रंथ में मिलता है?
(A) ऋग्वेद
(B) अंगुत्तर निकाय

(C) अर्थशास्त्र
(D) मनुस्मृति

289. बुद्ध की शिक्षाओं का सार किसमें समाहित है?
(A) पाँच व्रत
(B) चार आर्य सत्य
(C) आत्मन की अवधारणा
(D) जाति व्यवस्था के नियम

290. भारत पर सिकंदर के आक्रमण की सबसे स्थायी विरासत थी:
(A) सदियों के संपर्क को बढ़ावा देने वाले मार्गों का खुलना
(B) भारत में लंबे समय तक चलने वाले यूनानी साम्राज्य की स्थापना
(C) भारतीय संस्कृति का पूर्ण यूनानीकरण
(D) मौर्यों के अधीन उत्तर भारत का राजनीतिक एकीकरण

291. निम्नलिखित में से कौन जीवन के 'चार चरणों' में से एक नहीं है?
(A) ब्रह्मचर्य
(B) गृहस्थ
(C) वैश्य
(D) संन्यास

292. शिलालेखों में पाई जाने वाली प्राचीन लेखन प्रणालियों के अध्ययन को कहा जाता है:
(A) मुद्राशास्त्र
(B) पुरालेखशास्त्र
(C) मुद्रांकन शास्त्र
(D) पुरालिपि शास्त्र

293. मध्यपाषाण काल के दौरान प्राथमिक आर्थिक गतिविधि क्या थी?
(A) व्यवस्थित कृषि
(B) बड़े पैमाने पर व्यापार
(C) शिकार, मत्स्य पालन और भोजन संग्रह
(D) धातु कर्म

294. सिंधु घाटी सभ्यता की राजनीतिक संरचना को सबसे अच्छी तरह वर्णित किया जा सकता है:
(A) एक अकेले राजा द्वारा शासित एक विशाल साम्राज्य
(B) अनिश्चित, लेकिन संभवतः पुरोहितों या व्यापारियों द्वारा शासित व्यवस्था
(C) छोटे युद्धरत राज्यों की एक श्रृंखला
(D) निर्वाचित अधिकारियों वाला लोकतंत्र

295. ऋग्वैदिक समाज को वर्णित किया जा सकता है:
(A) कठोर मातृसत्तात्मक
(B) कठोर जाति-आधारित
(C) नगरीय और वाणिज्यिक
(D) समतावादी और पितृसत्तात्मक

296. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: वज्जी संघ की राजधानी वैशाली थी।
कथन II: वज्जी संघ एक शक्तिशाली राजा द्वारा शासित राजतंत्र था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

297. जैन धर्म के 'अनेकांतवाद' के सिद्धांत का तात्पर्य है कि:
(A) केवल एक ही परम सत्य है
(B) संसार एक भ्रम है
(C) सत्य और वास्तविकता जटिल हैं और उनके कई पहलू हैं
(D) व्यक्ति को कठोर तपस्या का मार्ग अपनाना चाहिए

298. 'सूत्र' ग्रंथों की रचना किसके लिए की गई थी:
(A) अनुष्ठान और विधि के लिए संक्षिप्त नियमावलियों के रूप में कार्य करने हेतु
(B) भजनों के रूप में गाए जाने हेतु
(C) देवी-देवताओं और नायकों की कहानियाँ सुनाने हेतु
(D) दार्शनिक संवादों के रूप में पढ़े जाने हेतु

299. उत्तर-पश्चिमी भारत में फारसी प्रांत, जिसे हेरोडोटस ने 20वें प्रांत के रूप में वर्णित किया था, क्या कहलाता था?
(A) गंदारा
(B) कंबोज
(C) तक्षशिला
(D) हिंदुश

300. 'बोधिसत्व अवलोकितेश्वर' की अवधारणा किसकी एक केंद्रीय विशेषता है?
(A) हीनयान बौद्ध धर्म
(B) महायान बौद्ध धर्म
(C) जैन धर्म
(D) आजीवक दर्शन

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) IV, II, III, I
मानव सभ्यता के विकास का कालक्रम पत्थर के उपकरणों और धातुओं के उपयोग पर आधारित है। भारतीय इतिहास का आरंभ पुरापाषाण काल से हुआ, जब मनुष्य शिकारी-संग्रहकर्ता था। इसके उपरांत मध्यपाषाण काल में सूक्ष्म पाषाण उपकरणों का विकास हुआ। नवपाषाण काल में कृषि और स्थायी बस्तियों का उदय हुआ। अंततः ताम्रपाषाण काल में तांबे और पत्थर के उपकरणों का समन्वित प्रयोग प्रारंभ हुआ।

2. (A) भरत कबीले की भूमि, जो अंततः पूरे उपमहाद्वीप का बोध कराने लगी
प्राचीन ग्रंथों में वर्णित 'भारतवर्ष' की अवधारणा भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता को दर्शाती है। यह नाम ऋग्वैदिक काल के शक्तिशाली 'भरत' कबीले से जुड़ा है। समय के साथ, इस शब्द का विस्तार उत्तर में हिमालय से दक्षिण में समुद्र तक विस्तृत संपूर्ण उपमहाद्वीप के लिए होने लगा। यह प्राचीन भारत की भौगोलिक चेतना और राजनीतिक एकीकरण का एक प्रमुख प्रतीक माना जाता है।

3. (C) ब्रह्मांडीय व्यवस्था और नैतिक नियम जो पूरे ब्रह्मांड को संचालित करते हैं
वैदिक दर्शन में 'ऋत' एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो संपूर्ण ब्रह्मांड की अंतर्निहित व्यवस्था को स्पष्ट करती है। इसमें भौतिक नियमों के साथ नैतिक और धार्मिक आचरण के नियम भी सम्मिलित हैं। वरुण देव को ऋत का रक्षक माना जाता था। यह सुनिश्चित करता है कि समस्त खगोलीय पिंड अपनी निश्चित गति से चलें और सामाजिक व्यवस्था में पूर्ण संतुलन बना रहे।

4. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
प्राचीन सामाजिक संरचना वर्णाश्रम व्यवस्था के माध्यम से वर्गों और जीवन के चरणों का समन्वय करती थी। पुरुषार्थ मनुष्य के चार लक्ष्यों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को परिभाषित करते हैं। तीन ऋणों की अवधारणा देवताओं, ऋषियों और पितरों के प्रति नैतिक दायित्वों पर आधारित है। सोलह संस्कार जन्म से मृत्यु तक के महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठानों और संस्कारों के प्रतीक माने जाते हैं।

5. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
ऋग्वैदिक काल में सभा और समिति दो प्रमुख लोकतांत्रिक संस्थाएं थीं जो राजा की शक्तियों को नियंत्रित करती थीं। सभा मुख्य रूप से समाज के वृद्धों और प्रबुद्ध सदस्यों की एक छोटी परिषद थी, जो न्यायिक कार्य करती थी। समिति कबीले के सामान्य लोगों की एक व्यापक आम सभा थी, जहाँ महत्वपूर्ण कबीलाई निर्णय लिए जाते थे। ये संस्थाएं प्रारंभिक वैदिक काल में जनभागीदारी को दर्शाती हैं।

6. (B) निर्वाण
भारतीय दर्शन के अनुसार पुरुषार्थ मनुष्य के जीवन के चार वांछित लक्ष्यों का समूह है। इनमें 'धर्म' का अर्थ नैतिक कर्तव्य, 'अर्थ' का भौतिक समृद्धि, 'काम' का मानवीय इच्छाएं और 'मोक्ष' का अर्थ जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति है। 'निर्वाण' शब्द मुख्य रूप से बौद्ध धर्म से संबंधित है जो तृष्णा के अंत की अवस्था को दर्शाता है। इसे पारंपरिक पुरुषार्थों की सूची में नहीं रखा जाता।

7. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कर्म का सिद्धांत भारतीय दर्शन की आधारशिला है जो कार्य-कारण के नियम पर आधारित है। यह मानता है कि व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक कार्यों का प्रभाव भविष्य में सुख या दुख के रूप में प्रकट होता है। यह सिद्धांत नैतिक उत्तरदायित्व पर बल देता है और यह समझाता है कि व्यक्ति की वर्तमान स्थिति उसके अतीत के कर्मों का ही परिणाम है।

8. (A) नृ यज्ञ विशेष रूप से राजा को आहुति देने के लिए था।
पंच महायज्ञ एक हिंदू गृहस्थ के लिए दैनिक अनिवार्य धार्मिक कर्तव्य थे। ब्रह्म यज्ञ वेदों के अध्ययन के लिए, देव यज्ञ देवताओं के लिए, पितृ यज्ञ पूर्वजों के लिए और भूत यज्ञ समस्त प्राणियों के प्रति कृतज्ञता के लिए था। 'नृ यज्ञ' वास्तव में अतिथियों के सत्कार और मानवता की सेवा के लिए था, न कि विशेष रूप से राजा को आहुति देने के लिए।

9. (C) महायान बौद्ध धर्म
बोधिसत्व की अवधारणा महायान बौद्ध धर्म का एक केंद्रीय तत्व है। बोधिसत्व वह प्रबुद्ध प्राणी है जो स्वयं निर्वाण प्राप्त करने की योग्यता रखता है, किंतु असीम करुणा के कारण वह अपना निर्वाण तब तक स्थगित कर देता है जब तक वह सभी प्राणियों को मुक्ति प्राप्त करने में सहायता न कर दे। यह आदर्श व्यक्तिगत मुक्ति के स्थान पर परोपकार पर बल देता है।

10. (B) केवल 1 और 2
हिंदू परंपरा में संस्कार व्यक्ति के जीवन के विभिन्न चरणों को पवित्र करने वाले अनुष्ठान हैं। ये गर्भाधान से अंत्येष्टि तक विस्तृत हैं और इनकी संख्या सामान्यतः सोलह मानी जाती है। गृह्य सूत्र इन संस्कारों के विधि-विधान का मुख्य स्रोत हैं। यद्यपि ये संस्कार मुख्य रूप से द्विज वर्णों के लिए थे, किंतु वैश्य भी द्विज वर्ग का हिस्सा होने के कारण इनके पात्र थे।

11. (D) एक 'तीर्थ बनाने वाला' जिसने पुनर्जन्म के चक्र पर विजय प्राप्त कर लिया है
जैन धर्म में 'तीर्थंकर' उन महान गुरुओं को कहा जाता है जिन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त कर संसार रुपी सागर को पार करने हेतु 'तीर्थ' या मार्ग बनाया है। तीर्थंकर कोई देवता नहीं अपितु वे मनुष्य हैं जिन्होंने अपनी इंद्रियों और कर्मों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है।

वे धर्म के सिद्धांतों को पुनः स्थापित करते हैं। भगवान महावीर जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर थे।

12. (B) धर्मनिरपेक्ष रचनाएँ जैसे नाटक, विधि ग्रंथ और कविता
प्राचीन इतिहास को समझने हेतु साहित्यिक स्रोतों को धार्मिक और लौकिक श्रेणियों में विभाजित किया गया है। लौकिक साहित्य में वे रचनाएं सम्मिलित हैं जिनका विषय मुख्य रूप से धर्मनिरपेक्ष होता है। इसमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कालिदास के नाटक और स्मृति ग्रंथ शामिल हैं। ये रचनाएं तत्कालीन समाज की राजनीतिक व्यवस्था, अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक जीवन के विषय में बहुमूल्य और व्यावहारिक जानकारी प्रदान करती हैं।

13. (C) पुरालेखशास्त्र
शिलालेखों और उन पर अंकित लेखों के वैज्ञानिक अध्ययन को पुरालेखशास्त्र कहा जाता है। सम्राट अशोक के शिलालेख भारतीय इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण पुरालेखीय प्रमाण हैं। ये पत्थर के स्तंभों और चट्टानों पर उत्कीर्ण हैं, जो मौर्यकालीन प्रशासन, धार्मिक नीतियों और साम्राज्य की सीमाओं के विषय में प्रत्यक्ष जानकारी देते हैं। इससे ऐतिहासिक तथ्यों की पुष्टि होती है, जिससे इतिहास लेखन अधिक सटीक हो जाता है।

14. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
प्राचीन भारत के विदेशी विवरण इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक हैं। ग्रीक और रोमन लेखकों ने भारत के व्यापारिक संबंधों और भौगोलिक स्थिति का विस्तार से वर्णन किया है। मेगास्थनीज की 'इंडिका' मौर्य साम्राज्य के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी देती है, किंतु यह मूल रूप में सुरक्षित नहीं है। यह परवर्ती यूनानी लेखकों के कार्यों में केवल उद्धरणों के रूप में उपलब्ध है।

15. (A) शिकार और भोजन संग्रह
पुरापाषाण काल मानव इतिहास का सबसे लंबा और प्रारंभिक चरण था। इस दौरान मानव पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर था और उसकी जीवनशैली खानाबदोश थी। लोग भोजन के लिए जंगली जानवरों का शिकार करते थे और कंद-मूल तथा अन्य खाद्य पदार्थों का संग्रह करते थे। वे गुफाओं या खुले आकाश के नीचे रहते थे। औजारों के रूप में वे पत्थर के बड़े उपकरणों का उपयोग करते थे।

16. (B) ह्वेनसांग - फारस
प्राचीन भारत में आने वाले विदेशी यात्रियों के विवरण ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। फाह्यान गुप्त काल में चीन से आया था, जबकि मेगास्थनीज चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत था। अल-बिरूनी मध्यकालीन भारत के दौरान मध्य एशिया से आया था। ह्वेनसांग चीन का निवासी था और सम्राट हर्षवर्धन के काल में बौद्ध ग्रंथों के अध्ययन हेतु भारत आया था, न कि फारस से।

17. (B) नवपाषाण काल
नवपाषाण काल को मानव इतिहास में एक 'क्रांति' के रूप में देखा जाता है क्योंकि इसी दौरान मनुष्य भोजन संग्राहक से भोजन उत्पादक बना। कृषि का विकास और पशुपालन की शुरुआत इस काल की सबसे बड़ी विशेषता थी। खेती के कारण लोग एक स्थान पर बसने लगे, जिससे स्थायी ग्राम बस्तियों का उदय हुआ। इसी काल में मृदभांड निर्माण और परिष्कृत उपकरणों का प्रयोग प्रारंभ हुआ।

18. (A) उन्नत नगरीय नियोजन और जल निकासी व्यवस्था
सिंधु घाटी सभ्यता अपनी असाधारण नगरीय व्यवस्था के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ के नगर एक जाल पद्धति पर आधारित थे जहाँ सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। घरों में पकी हुई ईंटों का उपयोग किया जाता था और प्रत्येक घर में स्वच्छ जल तथा नालियों की व्यवस्था थी। यहाँ की ढकी हुई जल निकासी व्यवस्था समकालीन विश्व में अद्वितीय और श्रेष्ठ थी।

19. (C) जलवायु परिवर्तन और बाढ़ सहित कई कारकों को संभावित कारण माना जाता है।
हड़प्पा सभ्यता का पतन एक जटिल प्रक्रिया थी जिसके लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं था। इतिहासविदों के अनुसार, नदियों के मार्ग में परिवर्तन, भीषण बाढ़ और वनों की कटाई के कारण पर्यावरण में आए बदलाव प्रमुख कारण थे। कुछ विद्वान सूखे और जलवायु परिवर्तन को भी उत्तरदायी मानते हैं। पतन की यह प्रक्रिया क्रमिक थी और अलग-अलग क्षेत्रों में इसका प्रभाव भिन्न था।

20. (D) छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास गंगा के मैदान
भारतीय इतिहास में 'द्वितीय नगरीकरण' का तात्पर्य उस काल से है जब सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के लंबे अंतराल के उपरांत पुनः नगरों का उदय हुआ। यह प्रक्रिया छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास मध्य गंगा घाटी में प्रारंभ हुई। लौह तकनीक के व्यापक उपयोग, कृषि अधिशेष और व्यापार के विस्तार ने इस नगरीकरण को सुगम बनाया। पाटलिपुत्र और वैशाली जैसे नगर इसी काल की देन हैं।

21. (C) ऋग्वेद
ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ज्ञात साहित्यिक ग्रंथ है और इसे सनातन धर्म के चार वेदों में प्रथम माना जाता है। इसकी रचना लगभग 1500 से 1000 ईसा पूर्व के मध्य हुई थी। इसमें 1028 सूक्त सम्मिलित हैं जो विभिन्न देवताओं की स्तुति में लिखे गए हैं। यह ग्रंथ ऋग्वैदिक काल के लोगों के धार्मिक विश्वासों, सामाजिक संरचना और भौगोलिक परिवेश की जानकारी का प्राथमिक स्रोत है।

22. (B) मुद्राशास्त्र
प्राचीन काल के आर्थिक और राजनीतिक इतिहास के अध्ययन हेतु सिक्कों का विश्लेषण एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत है। सिक्कों के वैज्ञानिक अध्ययन और उन पर अंकित चित्रों या लेखों के विश्लेषण को मुद्राशास्त्र कहा जाता है। सिक्के न केवल साम्राज्य की सीमाओं और शासकों की वंशावली की पुष्टि करते हैं, अपितु तत्कालीन व्यापारिक गतिविधियों और मुद्रा प्रणाली के विषय में भी विश्वसनीय जानकारी प्रदान करते हैं।

23. (D) धार्मिक देवकुल में महिला देवताओं का प्रभुत्व
उत्तर वैदिक काल में ऋग्वैदिक काल की तुलना में व्यापक सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन हुए। इस दौरान क्षेत्रीय जनपदों का उदय हुआ और राजा की शक्ति में अपार वृद्धि हुई। वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित होकर और अधिक कठोर हो गई। धार्मिक क्षेत्र में यज्ञों का महत्व बढ़ गया। किंतु, इस काल में महिला देवताओं का कोई प्रभुत्व नहीं था; अपितु पितृसत्तात्मक व्यवस्था सुदृढ़ हो गई थी।

24. (A) सोलह बड़े क्षेत्रीय राज्य, जिनमें राजतंत्र और गणराज्य दोनों शामिल थे
छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में क्षेत्रीय पहचान का उदय हुआ और सोलह बड़े राज्यों का गठन हुआ जिन्हें 'महाजनपद' कहा जाता है। बौद्ध और जैन ग्रंथों में इनकी विस्तृत सूची उपलब्ध है। इनमें मगध जैसे राजतंत्र थे, जहाँ राजा का शासन था, जबकि वज्जी जैसे गणराज्य थे, जहाँ शक्ति कबीलाई कुलीनों की परिषद में निहित थी। यह काल राजनीतिक संघर्ष का प्रतीक माना जाता है।

25. (C) हर्यंक
बिंबिसार मगध साम्राज्य के प्रथम महत्वपूर्ण और शक्तिशाली शासक थे, जो हर्यंक वंश से संबंधित थे। उन्होंने 544 ईसा पूर्व के आसपास शासन प्रारंभ किया और मगध के उत्कर्ष की आधारशिला रखी। बिंबिसार ने वैवाहिक गठजोड़ और सैन्य विजय की नीतियों के माध्यम से अपने राज्य का विस्तार किया। उन्होंने अपनी राजधानी राजगृह का निर्माण किया और वे भगवान बुद्ध के समकालीन थे।

26. (A) अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रह
जैन धर्म की शिक्षाएं नैतिक जीवन और आध्यात्मिक मुक्ति पर केंद्रित हैं। अहिंसा इसका सर्वोपरि सिद्धांत है, जो किसी भी जीवित प्राणी को कष्ट न देने की शिक्षा देता है। अनेकांतवाद का अर्थ है कि सत्य के अनेक पहलू होते हैं। अपरिग्रह का तात्पर्य सांसारिक वस्तुओं के प्रति मोह का त्याग करना है। ये सिद्धांत व्यक्ति के कर्मों को शुद्ध करने हेतु मार्गदर्शक माने जाते हैं।

27. (D) ईरानी
हखामनी साम्राज्य प्राचीन फारस का एक महान राजवंश था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में, दारा प्रथम जैसे शासकों के अधीन इस साम्राज्य ने उत्तर-पश्चिमी भारत पर आक्रमण किया और उसे अपना एक प्रांत बना लिया। इस संपर्क के कारण भारत में खरोष्ठी लिपि का विकास हुआ और मौर्यकालीन वास्तुकला पर भी फारसी प्रभाव पड़ा। यह भारत का प्रथम संगठित और बड़ा विदेशी संपर्क था।

28. (B) नंद
सिकंदर महान ने 326 ईसा पूर्व के दौरान भारत पर आक्रमण किया था। उस समय मगध पर नंद वंश का शासन था और धनानंद सिंहासन पर आसीन था। नंदों के पास एक विशाल सेना थी, जिसमें हाथियों की बड़ी संख्या सम्मिलित थी। यूनानी विवरणों के अनुसार, सिकंदर के सैनिक नंदों की इसी सैन्य शक्ति से भयभीत हो गए थे और उन्होंने आगे बढ़ने से मना कर दिया था।

29. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
वेदों को हिंदू धर्म में सर्वोच्च प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। इन्हें 'अपौरुषेय' कहा जाता है, क्योंकि यह मान्यता है कि इनकी रचना मनुष्यों द्वारा नहीं अपितु दैवीय प्रेरणा से हुई है। वेदों का अन्य नाम 'श्रुति' है, जिसका अर्थ है 'सुना हुआ'। सदियों तक वेदों को गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से केवल मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया गया।

30. (D) एक अकेले राजा के बजाय एक सभा द्वारा शासित राज्य
प्राचीन भारत के महाजनपद काल में 'गणराज्य' एक अद्वितीय राजनीतिक व्यवस्था थी। राजतंत्रों के विपरीत, यहाँ सत्ता किसी एक वंशानुगत राजा के पास नहीं होती थी, अपितु कई कुलीन परिवारों के प्रमुखों के हाथ में होती थी। ये प्रमुख एक केंद्रीय सभा में सामूहिक रूप से निर्णय लेते थे। वज्जी और मल्ल इसके प्रसिद्ध उदाहरण हैं। यहाँ शक्ति का केंद्रीकरण नहीं था और विचार-विमर्श महत्वपूर्ण था।

31. (A) मध्यपाषाण काल
मध्यपाषाण काल पुरापाषाण और नवपाषाण कालों के मध्य का संक्रमणकालीन युग है। इस काल की मुख्य पहचान 'सूक्ष्म पाषाण उपकरण' हैं, जो आकार में अत्यंत छोटे और नुकीले होते थे। इसी काल में मनुष्य ने पहली बार पशुपालन के संकेत दिए और शिकार की अधिक कुशल तकनीकें विकसित कीं। राजस्थान के बागोर जैसे स्थलों से पालतू जानवरों के प्रारंभिक प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

32. (B) राज ऋण
प्राचीन भारतीय दर्शन के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य जन्म के साथ तीन स्वाभाविक ऋणों के साथ आता है। देव ऋण देवताओं के प्रति है, जिसे यज्ञों के माध्यम से चुकाया जाता है। ऋषि ऋण गुरुओं के प्रति है, इसे स्वाध्याय से चुकाया जाता है। पितृ ऋण पूर्वजों के प्रति है, जिसे संतानोत्पत्ति से चुकाया जाता है। 'राज ऋण' जैसा कोई शब्द इस धार्मिक अवधारणा का हिस्सा नहीं है।

33. (B) कौटिल्य का अर्थशास्त्र
लौकिक साहित्य उन रचनाओं को कहा जाता है जिनका विषय धार्मिक अनुष्ठानों के स्थान पर सांसारिक या राजनीतिक होता है। कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जो मौर्य काल के प्रशासन, कूटनीति और सैन्य रणनीति पर विस्तृत ग्रंथ है। जबकि वेद और उपनिषद विशुद्ध रूप से धार्मिक साहित्य के अंतर्गत आते हैं। अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथ इतिहास को वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से समझने में सहायक होते हैं।

34. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
विदेशी यात्रियों ने भारत के इतिहास को लिपिबद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मेगास्थनीज ने 'इंडिका' में मौर्य प्रशासन का वर्णन किया। फाह्यान ने गुप्त काल की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला। ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन के शासनकाल

और बौद्ध धर्म का विवरण दिया। अल-बिरुनी ने अपनी पुस्तक 'तहकीक-ए-हिंद' में 11वीं शताब्दी के भारतीय समाज और विज्ञान का अत्यंत सटीक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

35. (C) मुद्राशास्त्र
सिक्कों के व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहा जाता है। यह इतिहास के पुनर्निर्माण हेतु एक विश्वसनीय पुरातात्विक स्रोत है। इसमें सिक्कों की निर्माण विधि, प्रयुक्त धातु की शुद्धता, उन पर अंकित चित्र और तिथियों का अध्ययन किया जाता है। इससे न केवल आर्थिक समृद्धि का पता चलता है, अपितु व्यापारिक मार्गों और राजवंशों के कालानुक्रम को निर्धारित करने में भी सहायता मिलती है।

36. (D) वनों की कटाई में वृद्धि और कृषि का विस्तार
भारत में द्वितीय नगरीकरण के दौरान लौह तकनीक का प्रसार एक युगांतकारी परिवर्तन था। लोहे के औजारों, विशेष रूप से कुल्हाड़ियों और हलों ने गंगा घाटी के घने वनों को साफ करना सुलभ बना दिया। इसके परिणामस्वरूप कृषि योग्य भूमि का विस्तार हुआ और कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। इस आर्थिक अधिशेष ने जनसंख्या वृद्धि, व्यापार और अंततः बड़े नगरीय केंद्रों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

37. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उत्तर वैदिक काल में ऋग्वैदिक काल की सरल सामाजिक व्यवस्था का अंत हुआ और एक जटिल संरचना का उदय हुआ। वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर निश्चित हो गई और इसमें गतिशीलता समाप्त हो गई। ब्राह्मणों ने धार्मिक अनुष्ठानों और क्षत्रियों ने राजनीतिक शक्ति के माध्यम से समाज पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। वैश्यों और शूद्रों की स्थिति में गिरावट आई, जिससे सामाजिक असमानता गहरी हुई।

38. (B) बोधिसत्व
बोधिसत्व बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय की एक अत्यंत दयालु अवधारणा है। यह एक ऐसे प्रबुद्ध व्यक्ति को संदर्भित करता है जो स्वयं बुद्धत्व प्राप्त करने की क्षमता रखता है, किंतु वह अपने व्यक्तिगत निर्वाण को स्वेच्छा से तब तक स्थगित कर देता है जब तक वह संसार के अंतिम पीड़ित प्राणी को मुक्ति न दिला दे। यह आदर्श निस्वार्थ सेवा और पूर्ण समर्पण को दर्शाता है।

39. (D) यह वेदों के अधिकार और जाति व्यवस्था को स्वीकार करता है।
बौद्ध धर्म एक नास्तिक संप्रदाय के रूप में उभरा जिसने तत्कालीन धार्मिक रुढ़ियों को चुनौती दी। इसकी मौलिक शिक्षाएं 'चार आर्य सत्य' और 'अष्टांगिक मार्ग' पर आधारित हैं, जो निर्वाण के माध्यम से मुक्ति का मार्ग दिखाती हैं। भगवान बुद्ध ने वेदों की सर्वोच्चता और जन्म आधारित जाति व्यवस्था को पूरी तरह नकार दिया था। उन्होंने सामाजिक समानता और नैतिक आचरण पर विशेष बल दिया था।

40. (C) केवल 1 और 2
मगध के उदय के पीछे प्रमुख प्राकृतिक और भौगोलिक कारण थे। गंगा और सोन जैसी नदियों ने व्यापारिक परिवहन और कृषि हेतु उपजाऊ भूमि प्रदान की। साथ ही, राजगृह के निकट प्रचुर मात्रा में लौह अयस्क उपलब्ध था, जिससे सुदृढ़ हथियार और उपकरण बनाए गए। मगध का शासन किसी लोकतांत्रिक परिषद द्वारा नहीं, अपितु बिंबिसार जैसे शक्तिशाली और विस्तारवादी राजतंत्रीय शासकों द्वारा संचालित किया गया था।

41. (C) दारा-प्रथम
फारसी हखामनी साम्राज्य के शासक दारा प्रथम ने लगभग 518 ईसा पूर्व में उत्तर-पश्चिमी भारत पर आक्रमण किया था। उसने सिंधु घाटी के क्षेत्र और पंजाब के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त कर उन्हें अपने साम्राज्य का प्रांत बना लिया। यह प्रांत फारसी साम्राज्य का सबसे समृद्ध भाग था और वहां से भारी मात्रा में स्वर्ण राजस्व प्राप्त होता था। यह भारत का प्रथम संगठित विदेशी शासन था।

42. (A) एक मौर्य शाही राजलेख
सम्राट अशोक के शिलालेख मौर्यकालीन इतिहास के जीवंत प्रमाण हैं। विशेष रूप से कलिंग युद्ध के उपरांत के उनके अभिलेख युद्ध की विभीषिका के प्रति उनके पश्चाताप को दर्शाते हैं। उन्होंने हिंसा का मार्ग त्यागकर 'धम्म-विजय' या नैतिक विजय की नीति अपनाई। ये राजलेख ब्राह्मी लिपि और प्राकृत भाषा में लिखे गए थे ताकि वे सामान्य जनता तक सुलभ हो सकें और मानवीय संदेशों का प्रचार करें।

43. (D) पुरापाषाण काल के लोग शिकारी-संग्रहकर्ता थे, जबकि नवपाषाण काल के लोगों ने कृषि आरंभ की थी।
पुरापाषाण और नवपाषाण कालों के मध्य मुख्य अंतर उनकी जीवन निर्वाह पद्धति में था। पुरापाषाण काल में मानव पूर्णतः प्रकृति पर आश्रित था और भोजन की खोज में भटकता था। इसके विपरीत, नवपाषाण काल में मानव ने कृषि और पशुपालन सीख लिया था। इस कृषि क्रांति के कारण मानव बस्तियाँ स्थायी हो गईं और एक संगठित सामाजिक जीवन की नींव पड़ी, जो सभ्यता में मील का पत्थर थी।

44. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
हड़प्पा सभ्यता एक वैश्विक व्यापारिक शक्ति थी जिसके प्रमाण पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त होते हैं। मेसोपोटामिया के विभिन्न स्थलों पर बड़ी संख्या में हड़प्पा की विशिष्ट मुहरें मिली हैं। इसके अतिरिक्त, मेसोपोटामियाई अभिलेखों में 'मेलुहा' नामक क्षेत्र के साथ व्यापार का उल्लेख है, जिसकी पहचान सिंधु घाटी से की जाती है। यह समुद्री और भूमि व्यापार मुख्य रूप से कपास और कीमती पत्थरों हेतु किया जाता था।

45. (C) धर्मसूत्र
वैदिक साहित्य को श्रुति और स्मृति दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है। 'श्रुति' वे ग्रंथ हैं जो दैवीय मूल के माने जाते हैं, जैसे संहिता, ब्राह्मण और उपनिषद। इसके विपरीत, 'स्मृति' मानवीय रचनाएं हैं जो परंपरा पर आधारित हैं। धर्मसूत्र स्मृति

साहित्य का हिस्सा हैं, जो कानून और सामाजिक कर्तव्यों के नियम निर्धारित करते हैं। ये बाद में हिंदू विधि और स्मृति ग्रंथों के आधार बने।

46. (D) बड़े क्षेत्रीय राज्यों या 'जनपदों' का उदय
उत्तर वैदिक काल में ऋग्वैदिक कबीलाई संरचना धीरे-धीरे क्षेत्रीय आधार पर परिवर्तित होने लगी। लोहे के उपयोग और कृषि विस्तार के कारण लोग विशिष्ट क्षेत्रों में स्थायी रूप से बसने लगे। इसके परिणामस्वरूप छोटे कबीलों का स्थान 'जनपदों' ने ले लिया, जहाँ भूमि पर नियंत्रण शक्ति का मुख्य आधार बना। यही जनपद आगे चलकर बुद्ध के समय में सोलह शक्तिशाली महाजनपदों के रूप में विकसित हुए।

47. (A) भारत में सिक्कों का सबसे प्रारंभिक रूप, जो चांदी के बने होते थे और जिन पर प्रतीक अंकित होते थे
महाजनपद काल के दौरान भारत में धातु मुद्रा की शुरुआत हुई जिसे 'आहत सिक्के' कहा जाता है। ये सिक्के मुख्य रूप से चांदी के टुकड़ों से बने होते थे, जिन पर पेड़, मछली और हाथी जैसे प्रतीक ठप्पा मारकर अंकित किए जाते थे। इन पर कोई लिखित लेख नहीं होता था। ये सिक्के व्यापार के मानकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण चरण थे और प्राचीन भारत की विकसित अर्थव्यवस्था को दर्शाते थे।

48. (B) महावीर
वर्धमान महावीर जैन धर्म के 24वें और अंतिम तीर्थंकर थे। उन्होंने जैन धर्म की शिक्षाओं को सुव्यवस्थित किया और 'ब्रह्मचर्य' नामक पाँचवा महाव्रत जोड़ा। महावीर ने सांसारिक सुखों का त्याग कर कठोर तपस्या की और 'कैवल्य' प्राप्त किया। उनके नेतृत्व में जैन धर्म का व्यापक प्रसार हुआ और इसे एक संगठित स्वरूप मिला। महावीर के उपदेश आज भी जैन अनुयायियों हेतु सर्वोच्च मार्गदर्शक माने जाते हैं।

49. (B) भारत और यूरोप के बीच सीधे मार्गों का खुलना, जिससे व्यापार को बढ़ावा मिला
सिकंदर के आक्रमण का भारत पर राजनीतिक प्रभाव अल्पकालिक था, किंतु इसके आर्थिक और सांस्कृतिक परिणाम दूरगामी थे। उसके अभियान के कारण उत्तर-पश्चिमी भारत और पश्चिम एशिया के मध्य जल और थल मार्गों का जाल बिछ गया। इन नए व्यापारिक मार्गों ने यूनानी विश्व और भारत के मध्य विचारों के आदान-प्रदान को सुगम बनाया। इसके कारण गांधार कला जैसी नई शैलियों का भी जन्म हुआ।

50. (A) शूद्र
वर्णाश्रम व्यवस्था प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति का आधार थी, जिसमें मानव जीवन को चार अनुक्रमिक चरणों में विभाजित किया गया था। पहला ब्रह्मचर्य, दूसरा गृहस्थ, तीसरा वानप्रस्थ और चौथा संन्यास है। 'शूद्र' एक वर्ण है, न कि आश्रम। वर्ण व्यवस्था समाज के श्रम विभाजन को दर्शाती है, जबकि आश्रम व्यवस्था व्यक्ति के आयु आधारित कर्तव्यों और आध्यात्मिक विकास के चरणों को परिभाषित करती है।

51. (C) पुरालेखशास्त्र
प्राचीन इतिहास के अध्ययन में शिलालेखों का विश्लेषण एक अत्यंत विश्वसनीय पद्धति है। शिलालेखों और उन पर अंकित लेखों के अध्ययन को पुरालेखशास्त्र कहा जाता है। ये लेख पत्थरों और तांबे की प्लेटों पर पाए जाते हैं। साहित्यिक ग्रंथों के विपरीत, शिलालेखों में हेरफेर की संभावना बहुत कम होती है, जिससे वे सटीक ऐतिहासिक तथ्य प्रदान करते हैं। इनमें राजाओं की विजयों और महत्वपूर्ण तिथियों के प्रत्यक्ष प्रमाण मिलते हैं।

52. (D) तांबे और पत्थर के औजार
ताम्रपाषाण काल मानव सभ्यता के उस विकासवादी चरण को संदर्भित करता है जहाँ मनुष्य ने पहली बार पत्थर के साथ धातु का उपयोग प्रारंभ किया। इसमें तांबा वह पहली धातु थी जिसका उपयोग उपकरणों और हथियारों के निर्माण हेतु किया गया। यह काल नवपाषाण काल के अंत और कांस्य युग के मध्य का है। इस काल के लोग ग्रामीण समुदायों में रहते थे और विशिष्ट मृदभांडों का निर्माण करते थे।

53. (C) मोहनजोदड़ो
मोहनजोदड़ो के उत्खनन में प्राप्त 'विशाल स्नानागार' सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण स्थापत्य संरचनाओं में से एक है। यह पकी हुई ईंटों से निर्मित एक जलाशय था, जिसे जलरोधी बनाने हेतु बिटुमेन का उपयोग किया गया था। विद्वानों के अनुसार, इसका उपयोग व्यक्तिगत स्वच्छता के स्थान पर धार्मिक अनुष्ठानों या सामूहिक स्नान हेतु किया जाता था। यह हड़प्पावासियों के उत्कृष्ट इंजीनियरिंग कौशल को प्रदर्शित करता है।

54. (B) एक जनजातीय व्यवस्था पर, जिसमें 'जन' सबसे बड़ी राजनीतिक इकाई थी
ऋग्वैदिक काल में राजनीतिक जीवन मुख्य रूप से कबीलाई संबंधों पर आधारित था। समाज विभिन्न कबीलों में विभक्त था जिन्हें 'जन' कहा जाता था। प्रत्येक जन का एक नेता होता था जिसे 'राजन' कहते थे, जिसकी शक्ति निरंकुश नहीं थी अपितु सभा और समिति द्वारा नियंत्रित थी। इस समय क्षेत्रीय पहचान के स्थान पर कबीलाई वफादारी अधिक महत्वपूर्ण थी और राजन को अपने कबीले का रक्षक माना जाता था।

55. (D) हर्यंक
अजातशत्रु मगध के हर्यंक वंश का एक अत्यंत प्रतापी और विस्तारवादी राजा था। उसने लगभग 492 ईसा पूर्व में सत्ता संभाली। अजातशत्रु ने अपने पिता की साम्राज्यवादी नीति को और अधिक आक्रामक रूप प्रदान किया। उसने वैशाली के लिच्छवियों और कोसल के विरुद्ध लंबे समय तक युद्ध लड़ा और मगध का वर्चस्व स्थापित किया। उसी के शासनकाल में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन राजगृह में किया गया था।

56. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
जैन धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ने मुक्ति के पृथक मार्ग सुझाए हैं। जैन धर्म में कायाक्लेश और अत्यधिक तपस्या पर बल दिया गया है, जो शरीर को कष्ट देने के माध्यम से कर्मों के क्षय का

मार्ग बताती है। इसके विपरीत, भगवान बुद्ध ने 'मध्यम मार्ग' का उपदेश दिया। उन्होंने सिखाया कि न तो अत्यधिक इंद्रिय सुख और न ही कठोर तपस्या निर्वाण दिलाती है; सत्य का मार्ग संतुलित है।

57. (C) झेलम
सिकंदर महान और पंजाब के राजा पोरस के मध्य प्रसिद्ध 'हाइडस्पेस का युद्ध' 326 ईसा पूर्व में झेलम नदी के तट पर लड़ा गया था। इस भीषण युद्ध में पोरस की बहादुरी और हाथियों के प्रयोग ने यूनानी सेना को कड़ी चुनौती दी थी। यद्यपि सिकंदर विजयी रहा, किंतु उसने पोरस की वीरता से प्रभावित होकर उसका राज्य उसे लौटा दिया। यह युद्ध भारतीय शौर्य और यूनानी सैन्य रणनीति का ऐतिहासिक संघर्ष था।

58. (A) भूत यज्ञ
वैदिक परंपरा में 'भूत यज्ञ' एक उदार अवधारणा है जो समस्त सजीव जगत के प्रति मनुष्य की उत्तरदायित्व को दर्शाती है। इस यज्ञ में गृहस्थ भोजन का कुछ अंश घर से बाहर पशु-पक्षियों और अन्य प्राणियों हेतु रखता है। इसका उद्देश्य यह स्वीकार करना है कि मनुष्य इस पारिस्थितिकी तंत्र का एकमात्र स्वामी नहीं है, अपितु वह अन्य सभी जीवों के साथ सह-अस्तित्व में है और उनके भरण-पोषण हेतु उत्तरदायी है।

59. (D) नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन करना और बौद्ध धर्मग्रंथों को एकत्रित करना
चीनी तीर्थयात्री ह्वेनसांग सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत आए थे। उनका प्राथमिक उद्देश्य बौद्ध धर्म की पवित्र भूमि के दर्शन करना और मूल संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन करना था। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में कई वर्ष व्यतीत किए, जहाँ उन्होंने महान आचार्यों से दर्शन की शिक्षा प्राप्त की। उनकी यात्रा का विवरण, 'सी-यू-की', तत्कालीन भारत की धार्मिक, सामाजिक और शैक्षिक स्थिति समझने हेतु अमूल्य दस्तावेज है।

60. (B) सूक्ष्म पाषाण उपकरणों का उदय
मध्यपाषाण काल पुरापाषाण और नवपाषाण कालों के मध्य का एक संक्रमणकालीन चरण था। इस काल की विशिष्ट तकनीकी प्रगति 'सूक्ष्म पाषाण उपकरण' का निर्माण था। ये पत्थर के अत्यंत छोटे औजार होते थे जिन्हें लकड़ी या हड्डी के हत्थों में लगाकर भाले या तीर के रूप में उपयोग किया जाता था। इस नवीन तकनीक ने शिकार और भोजन एकत्र करने की दक्षता को काफी बढ़ा दिया था।

61. (C) II, III, I
मगध के राजनीतिक उत्कर्ष का क्रम तीन प्रमुख राजवंशों द्वारा चिह्नित है। सर्वप्रथम हर्यंक वंश ने बिंबिसार और अजातशत्रु के नेतृत्व में मगध को शक्तिशाली बनाया। इसके उपरांत शिशुनाग वंश सत्ता में आया, जिसने प्रतिद्वंद्वियों को पराजित किया। अंततः, नंद वंश ने महापद्म नंद के अधीन विशाल साम्राज्य की स्थापना की। नंदों को पराजित कर मौर्य वंश ने भारत में प्रथम अखिल भारतीय साम्राज्य की नींव रखी।

62. (D) बाद के कालों में हड़प्पा लिपि का निरंतर उपयोग
यद्यपि सिंधु घाटी सभ्यता के भौतिक स्वरूप का पतन हो गया, किंतु इसके अनेक सांस्कृतिक तत्व भारतीय जीवन में सम्मिलित हो गए। पशुपति शिव की पूजा, मातृ देवी और पीपल के वृक्ष का धार्मिक महत्व आज भी जीवित है। बाट और माप की कुछ प्रणालियाँ भी लंबे समय तक प्रभावी रहीं। किंतु, हड़प्पा की चित्रात्मक लिपि पतन के साथ ही लुप्त हो गई और परवर्ती कालों में इसका प्रभाव नहीं देखा गया।

63. (A) सम्यक श्रद्धा, सम्यक ज्ञान, सम्यक आचरण
जैन धर्म के अनुसार, कर्मों के बंधन से मुक्ति हेतु 'त्रिरत्न' का पालन करना अनिवार्य है। 'सम्यक श्रद्धा' का अर्थ है जैन तीर्थंकरों में सच्चा विश्वास। 'सम्यक ज्ञान' का तात्पर्य वास्तविक और संदेह रहित ज्ञान की प्राप्ति है। 'सम्यक आचरण' का अर्थ है प्राप्त ज्ञान के अनुसार पवित्र और नैतिक जीवन जीना। इन तीनों का समन्वित अभ्यास ही आत्मा को जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त कर देता है।

64. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
ऋग्वैदिक काल की प्रशासनिक व्यवस्था कबीलाई संरचना पर आधारित थी। 'जन' कबीले के लोगों के समूह को कहा जाता था, जो राजनीतिक पहचान की सबसे बड़ी इकाई थी। 'राजन' इस कबीले का प्रमुख होता था, जो युद्ध में नेतृत्व करता था। 'पुरोहित' राजा का मुख्य सलाहकार और धार्मिक प्रमुख था। 'ग्रामणी' ग्राम का मुखिया होता था जो स्थानीय प्रशासन और सैन्य कार्यों में राजा की सहायता करता था।

65. (B) हड़प्पा संस्कृति के पतन के बाद गंगा के मैदानों में नगरीय केंद्रों का विकास
भारतीय उपमहाद्वीप में नगरीकरण की प्रथम लहर सिंधु घाटी में आई थी। 'द्वितीय नगरीकरण' उस पुनरुत्थान को दर्शाता है जो लगभग 1000 वर्षों के अंतराल के पश्चात गंगा के मैदानों में प्रारंभ हुआ। यह काल छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास का है, जब लोहे के औजारों के कारण कृषि में सुधार हुआ। इसके फलस्वरूप राजगृह और पाटलिपुत्र जैसे समृद्ध नगर उभरे, जो महाजनपदों की शक्ति के केंद्र बने।

66. (A) धार्मिक साहित्य किसी काल के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन की अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।
साहित्यिक स्रोत इतिहास को समझने हेतु दर्पण के समान कार्य करते हैं। यद्यपि वेदों और जातक कथाओं जैसे धार्मिक ग्रंथों का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक उपदेश था, फिर भी वे अपने समय के समाज, अर्थव्यवस्था और लोगों की मान्यताओं के विषय में महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करते हैं। इतिहासकारों हेतु चुनौती इन ग्रंथों से वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक तथ्यों को निकालना होता है, जिससे किसी विशेष काल का जीवंत चित्रण किया जा सके।

67. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों का काल राजनीतिक विविधता का युग था। जहाँ मगध और कोसल जैसे राज्यों में वंशानुगत राजतंत्र था, वहीं वज्जी और मल्ल जैसे क्षेत्रों में

'गण-संघ' व्यवस्था प्रचलित थी। इन गणराज्यों में निर्णय किसी एक राजा द्वारा नहीं, अपितु कबीलाई कुलीनों की सभा द्वारा सामूहिक रूप से लिए जाते थे। यह व्यवस्था दर्शाती है कि प्राचीन भारत में विकेंद्रीकृत शासन का अस्तित्व बना हुआ था।

68. (D) इंद्र
ऋग्वैदिक काल के आर्य प्रकृति के विभिन्न रूपों की पूजा करते थे और इंद्र उनके सबसे प्रमुख और शक्तिशाली देवता थे। उन्हें 'पुरंदर' या किलों को तोड़ने वाला और युद्ध का देवता माना जाता था। साथ ही, उन्हें वर्षा और बादलों का देवता भी कहा जाता था, जो कृषि हेतु अनिवार्य थे। ऋग्वेद के लगभग 250 सूक्त इंद्र की स्तुति में समर्पित हैं, जो समाज में उनके सर्वोच्च स्थान को दर्शाते हैं।

69. (C) साइरस-द्वितीय
फारस के हखामनी साम्राज्य के संस्थापक साइरस द्वितीय प्रथम विदेशी शासक थे जिन्होंने भारतीय सीमा की ओर प्रस्थान किया। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य में, उन्होंने भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों, विशेष रुप से गांधार के कुछ कबीलों के विरुद्ध सैन्य अभियान चलाया। यद्यपि उन्होंने सिंधु नदी के पूर्व के क्षेत्रों पर पूर्ण अधिकार नहीं किया, किंतु उनके अभियान ने भविष्य के विदेशी आक्रमणों हेतु मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

70. (A) केवल 1 और 3
वेदों के कार्यों और प्रकृति में स्पष्ट अंतर है। सामवेद मुख्य रुप से ऋग्वेद के मंत्रों का गेय रुप है जिसे यज्ञों के समय गाया जाता था। अथर्ववेद बाद की रचना है जिसमें दैनिक जीवन की समस्याओं और व्याधियों से संबंधित मंत्रों का संग्रह है। यजुर्वेद यज्ञ के नियमों और कर्मकांडों से संबंधित है, किंतु यह केवल गद्य में नहीं अपितु गद्य और पद्य दोनों में लिखा गया है।

71. (D) हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म
कर्म का सिद्धांत भारतीय दार्शनिक चिंतन का एक सार्वभौमिक तत्व है। हिंदू धर्म में यह नैतिक व्यवस्था और पुनर्जन्म का आधार है। बौद्ध धर्म में इसे कार्य-कारण की श्रृंखला के रुप में देखा जाता है जो निर्वाण की यात्रा को प्रभावित करता है। जैन धर्म में कर्म को भौतिक कणों के रुप में माना जाता है। तीनों परंपराएँ इस बात पर सहमत हैं कि व्यक्ति के कार्य ही उसके सुख-दुख और भविष्य को निर्धारित करते हैं।

72. (A) वे अपने समय की कलात्मक और स्थापत्य अभिरुचि को दर्शाते हैं।
ऐतिहासिक स्मारकों का पुरातात्विक मूल्य उनके स्थापत्य और कलात्मक विवरणों में निहित होता है। मंदिर, स्तूप और राजप्रासाद अपने समय की तकनीकी प्रगति, सौंदर्यशास्त्र और धार्मिक झुकाव का प्रतिनिधित्व करते हैं। सांची का स्तूप या खजुराहो के मंदिर न केवल धार्मिक केंद्र थे, अपितु वे तत्कालीन समाज की शिल्प कौशल के जीवंत प्रमाण भी हैं। ये संरचनाएँ इतिहासकारों को उस काल के सामाजिक मूल्यों को समझने में सहायता करती हैं।

73. (C) जंगलों को साफ करने और हल बनाने के लिए लोहे का व्यापक उपयोग
वैदिक काल में पशुचारी से कृषि आधारित समाज में परिवर्तन का मुख्य श्रेय लौह तकनीक को जाता है। लगभग 1000 ईसा पूर्व के आसपास, लोहे के उपकरणों के आगमन से घने वनों को काटना और कठोर भूमि को जोतना सुलभ हो गया। लोहे के हलों के उपयोग से कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हुई, जिसने लोगों को स्थायी ग्राम समाज विकसित करने हेतु प्रेरित किया। इसी आर्थिक परिवर्तन ने महाजनपदों का आधार निर्मित किया।

74. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
महाजनपदों की भौगोलिक स्थिति और राजनीतिक विस्तार अत्यंत सुव्यवस्थित था। अवंती मध्य भारत का एक अत्यंत शक्तिशाली राज्य था, जो विंध्य पर्वतमाला द्वारा दो भागों में विभक्त था; इसकी राजधानियाँ उज्जयिनी और महिष्मति थीं। गंधार महाजनपद उत्तर-पश्चिम सीमा पर स्थित था, जिसकी राजधानी तक्षशिला शिक्षा और व्यापार का वैश्विक केंद्र थी। ये राज्य प्राचीन भारत की क्षेत्रीय विविधता और सामरिक महत्व को स्पष्ट रुप से उजागर करते हैं।

75. (D) महापद्म नंद
महापद्म नंद को भारतीय इतिहास का प्रथम महान साम्राज्य निर्माता माना जाता है। उन्होंने शिशुनाग वंश का अंत कर नंद वंश की स्थापना की। उन्हें 'एकराट' और 'सर्वक्षत्रांतक' जैसी उपाधियाँ प्रदान की गई थीं क्योंकि उन्होंने उत्तर भारत के अनेक पुराने क्षत्रिय राजवंशों को पराजित किया और एक विशाल केंद्रीकृत सेना तैयार की। उनके शासनकाल में मगध की शक्ति और सीमाएं अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई थीं।

76. (B) अनुष्ठान और दर्शन को संक्षेप में प्रस्तुत करने वाले संक्षिप्त, सूत्रात्मक ग्रंथ
सूत्रों का युग प्राचीन भारतीय साहित्य में उस चरण को संदर्भित करता है जब विशाल वैदिक ज्ञान को याद रखने हेतु संक्षिप्त और सटीक सूत्रों में संकलित किया गया। इस काल में कल्पसूत्रों की रचना हुई जिनमें समाज के नियमों, घरेलू अनुष्ठानों और सार्वजनिक यज्ञों का विस्तार से वर्णन किया गया। ये ग्रंथ जटिल धार्मिक क्रियाओं को सरल बनाने और उन्हें सामाजिक व्यवस्था में सुव्यवस्थित करने के उद्देश्य से लिखे गए थे।

77. (C) खंडित राज्यों का विनाश, जिससे एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ
सिकंदर के आक्रमण ने उत्तर-पश्चिमी भारत के छोटे-छोटे कबीलाई राज्यों की राजनीतिक शक्ति को पूर्णतः नष्ट कर दिया। इन छोटे राज्यों के पतन ने एक ऐसी राजनीतिक शून्यता उत्पन्न की जिसका लाभ चंद्रगुप्त मौर्य ने उठाया। सिकंदर के प्रस्थान के पश्चात, खंडित राज्यों के प्रतिरोध के अभाव में मौर्यों हेतु इस क्षेत्र को अपने विशाल साम्राज्य में एकीकृत करना सुलभ हो गया। इस प्रकार, सिकंदर के अभियान ने एकीकरण को गति दी।

78. (D) कृषि उपकरणों और हथियारों के निर्माण के लिए लोहे का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता था।
सिंधु घाटी सभ्यता के संबंध में यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि यहाँ के लोग लोहे के उपयोग से पूर्णतः अनभिज्ञ थे। यह एक कांस्य युगीन सभ्यता थी जहाँ उपकरणों के निर्माण हेतु मुख्य रूप से तांबे और कांसे का प्रयोग किया जाता था। इसके विपरीत, यहाँ का नगरीय नियोजन, जल निकासी व्यवस्था, मानकीकृत बाट-माप और उन्नत कृषि अत्यंत विकसित थी। भारत में लोहे का व्यापक प्रयोग इस सभ्यता के पतन के बाद हुआ।

79. (A) देवता, ऋषि और पूर्वज
वैदिक विचारधारा के अनुसार, मनुष्य का अस्तित्व एकाकी नहीं है अपितु वह ब्रह्मांड की विभिन्न शक्तियों से संबद्ध है। 'ऋण' की अवधारणा यह सिखाती है कि व्यक्ति पर जन्म से ही तीन आध्यात्मिक दायित्व होते हैं। देवताओं के प्रति ऋण यज्ञों द्वारा, ऋषियों के प्रति ऋण वेदों के अध्ययन द्वारा, और पूर्वजों के प्रति ऋण संतानोत्पत्ति और कुल परंपरा को बनाए रखकर चुकाया जाता है। यह सिद्धांत व्यक्ति को उत्तरदायी बनाता है।

80. (B) नवपाषाण और ताम्रपाषाण काल
दक्षिण एशिया में प्रारंभिक कृषि और ग्रामीण जीवन के विकास का अध्ययन करने हेतु नवपाषाण और ताम्रपाषाण काल सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। नवपाषाण काल में मानव ने सर्वप्रथम पौधों को पालतू बनाया और स्थायी बस्तियों का निर्माण किया, जैसा कि मेहरगढ़ के अवशेषों से स्पष्ट है। ताम्रपाषाण काल में इन कृषि समुदायों का विस्तार हुआ और उन्होंने तांबे के औजारों का प्रयोग प्रारंभ किया। ये कालखंड उत्पादक समाज को समझने हेतु अनिवार्य हैं।

81. (B) निर्णय क्षत्रिय कबीले के सदस्यों द्वारा एक सभा में लिए जाते थे।
प्राचीन भारत के गणतंत्रीय महाजनपदों की शासन व्यवस्था राजतंत्रों से भिन्न थी। यहाँ सत्ता किसी एक व्यक्ति के हाथ में केंद्रित होने के स्थान पर कबीले के कुलीन परिवारों, मुख्य रूप से क्षत्रियों की एक परिषद या 'सभा' के पास होती थी। महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय विचार-विमर्श और मतदान के माध्यम से लिए जाते थे। लिच्छवी इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह व्यवस्था प्रारंभिक भारतीय राजनीति में सामूहिक नेतृत्व को दर्शाती है।

82. (A) फाह्यान
फाह्यान एक प्रसिद्ध चीनी बौद्ध भिक्षु थे जिन्होंने गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत की यात्रा की थी। उनकी यात्रा का मुख्य उद्देश्य बौद्ध ग्रंथों और पवित्र स्थलों के विषय में सूचना प्राप्त करना था। उनके यात्रा वृत्तांत 'फो-कुओ-की' में मध्य भारत की शांति, समृद्धि और अहिंसक समाज का सुंदर चित्रण प्राप्त होता है। यह ग्रंथ गुप्त काल के सामाजिक और धार्मिक जीवन समझने हेतु महत्वपूर्ण है।

83. (C) आत्मन और ब्रह्म
उपनिषद वैदिक साहित्य के अंतिम भाग हैं और भारतीय दर्शन के शिखर माने जाते हैं। इनका मुख्य केंद्र कर्मकांड नहीं, अपितु गहन दार्शनिक प्रश्न हैं। उपनिषदों की शिक्षाओं का मूल 'आत्मन' और 'ब्रह्म' के मध्य के संबंध को समझना है। वे सिखाते हैं कि संसार नश्वर है और वास्तविक ज्ञान वही है जिससे आत्मा और परमात्मा की एकता का साक्षात्कार हो सके। यही विचार आगे चलकर वेदांत का आधार बने।

84. (D) कालीबंगन - जुते हुए खेत का साक्ष्य
सिंधु घाटी सभ्यता के विभिन्न स्थलों से विशिष्ट पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। राजस्थान के कालीबंगन में प्राक्-हड़प्पा स्तर से जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं, जो उस काल की उन्नत कृषि तकनीक का प्रमाण हैं। अन्य विकल्पों में, लोथल अपने बंदरगाह हेतु प्रसिद्ध है, जबकि मोहनजोदड़ो में विशाल स्नानागार प्राप्त हुए हैं। कालीबंगन का यह निष्कर्ष दर्शाता है कि हड़प्पावासी व्यवस्थित कृषि विधियों से भली-भांति परिचित थे।

85. (C) सभी क्षत्रियों का विनाश करने वाला
महापद्म नंद को पुराणों में 'सर्वक्षत्रांतक' कहा गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'सभी क्षत्रियों का विनाश करने वाला'। यह उपाधि उनके द्वारा पुराने क्षत्रिय राजवंशों, जैसे इक्ष्वाकु और कुरुओं के विनाश और उनके क्षेत्रों पर अधिकार करने की ओर संकेत करती है। उन्हें 'द्वितीय परशुराम' भी कहा जाता था क्योंकि उन्होंने क्षत्रिय प्रभुत्व को चुनौती दी थी। उनके सैन्य अभियानों ने उत्तर भारत में एक शक्तिशाली गैर-क्षत्रिय शासन स्थापित किया।

86. (B) सम्यक भक्ति
भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित 'अष्टांगिक मार्ग' निर्वाण प्राप्ति का व्यावहारिक मार्ग है। इसमें आठ चरण सम्मिलित हैं: सम्यक दृष्टि, संकल्प, वाणी, कर्म, आजीव, व्यायाम, स्मृति और समाधि। यह मार्ग नैतिक आचरण, मानसिक अनुशासन और प्रज्ञा पर बल देता है। 'सम्यक भक्ति' इस अष्टांगिक मार्ग का हिस्सा नहीं है, क्योंकि बौद्ध धर्म का मूल मार्ग व्यक्तिगत प्रयास और आत्म-अनुशासन पर आधारित है, न कि किसी दैवीय शक्ति के प्रति समर्पण पर।

87. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
उत्तर-पश्चिमी भारत पर फारसी आक्रमणों का सांस्कृतिक प्रभाव अत्यंत गहरा था। फारसियों द्वारा प्रयुक्त अरामी लिपि से ही खरोष्ठी लिपि का विकास हुआ, जो परवर्ती काल में अशोक के अभिलेखों में भी प्रयुक्त हुई। साथ ही, सम्राट के दैवीय स्वरूप और कुछ प्रशासनिक प्रथाओं की फारसी अवधारणा ने मौर्य राजव्यवस्था को भी प्रभावित किया। सम्राट अशोक द्वारा पत्थर के स्तंभों का उपयोग फारसी प्रभाव का एक स्पष्ट उदाहरण माना जा सकता है।

88. (A) ऋग्वेद के 10वें मंडल का पुरुष सूक्त
भारतीय समाज की वर्ण व्यवस्था का प्राचीनतम उल्लेख ऋग्वेद के दसवें मंडल में प्राप्त होता है, जिसे 'पुरुष सूक्त' कहा जाता है।

इसमें एक विराट पुरुष के अंगों से चार वर्णों की प्रतीकात्मक उत्पत्ति का वर्णन है: मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य और चरणों से शूद्र। ऋग्वैदिक काल में यह वर्गीकरण मुख्य रूप से व्यवसाय पर आधारित था और काफी लचीला था, जो परवर्ती काल में कठोर हुआ।

89. (C) सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों का उपजाऊ वातावरण
सिंधु घाटी सभ्यता का उदय और समृद्धि मुख्य रूप से सिंधु नदी तंत्र के उपजाऊ जलोढ़ मैदानों के कारण संभव हुई थी। इन नदियों द्वारा प्रतिवर्ष लाई गई उपजाऊ मृदा ने प्रचुर कृषि उत्पादन सुनिश्चित किया, जिससे एक बड़े नगरीय समाज का भरण-पोषण हो सका। नदियों ने न केवल पेयजल और सिंचाई की सुविधा प्रदान की, अपितु जल परिवहन के माध्यम से आंतरिक और विदेशी व्यापार को भी सुगम बनाया।

90. (A) जैन धर्म
अनेकांतवाद जैन दर्शन का एक मौलिक और क्रांतिकारी सिद्धांत है। इसका तात्पर्य है कि यथार्थ अत्यंत जटिल है और सत्य के कई पृथक पहलू हो सकते हैं। एक ही वस्तु को भिन्न दृष्टिकोणों से देखने पर भिन्न सत्य प्रतीत हो सकते हैं, जिनमें से प्रत्येक आंशिक रूप से सत्य है। यह सिद्धांत वैचारिक सहिष्णुता और दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की शिक्षा देता है। इसे सापेक्षता के सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है।

91. (D) लोकप्रिय विचार-विमर्श सभाएँ
वैदिक युग की सभा और समिति राजनीतिक भागीदारी के जीवंत केंद्र थे। 'सभा' संभवतः समाज के वरिष्ठ और प्रबुद्ध लोगों की एक परिषद थी, जबकि 'समिति' कबीले के समस्त वयस्क सदस्यों की एक आम सभा थी। इन संस्थाओं में महत्वपूर्ण नीतिगत विषयों और कबीले के कल्याण पर व्यापक चर्चा होती थी। राजा इन सभाओं की राय की उपेक्षा नहीं कर सकता था। यह प्राचीन भारत की प्रारंभिक लोकतांत्रिक चेतना का सशक्त प्रमाण है।

92. (B) पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी
'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' प्रथम शताब्दी ईस्वी का एक अत्यंत महत्वपूर्ण यूनानी समुद्री मार्गदर्शक ग्रंथ है। यह पुस्तक लाल सागर, फारस की खाड़ी और हिंद महासागर में होने वाले व्यापारिक नौवहन का विस्तृत विवरण प्रदान करती है। इसमें भारतीय तटों के प्रमुख बंदरगाहों जैसे मुज़िरिस और बेरिगाज़ा का उल्लेख है। यह ग्रंथ उस काल में रोमन साम्राज्य और भारत के मध्य होने वाले प्रचुर व्यापार की पुष्टि करता है।

93. (C) इंद्र
ऋग्वैदिक काल में इंद्र सर्वोच्च देवता थे, जिन्हें युद्ध और वर्षा का अधिपति माना जाता था। ऋग्वेद का एक बड़ा भाग उनकी स्तुति में है। किंतु, उत्तर वैदिक काल में धार्मिक विचारधारा में परिवर्तन आया और ऋग्वैदिक प्रमुख देवताओं का स्थान गौण हो गया। इंद्र के स्थान पर प्रजापति, विष्णु और रुद्र जैसे देवताओं का महत्व बढ़ गया। यह परिवर्तन पशुचारी समाज से एक स्थिर कृषि समाज में संक्रमण को दर्शाता है।

94. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
छठी शताब्दी ईसा पूर्व के महाजनपदों की पहचान उनकी समृद्ध राजधानियों से होती थी। काशी की राजधानी वाराणसी धार्मिक और व्यापारिक केंद्र थी। कोसल राज्य की राजधानी श्रावस्ती थी, जहाँ बुद्ध ने अपना पर्याप्त समय व्यतीत किया था। अंग की राजधानी चंपा अपने नदी व्यापार हेतु प्रसिद्ध थी। वत्स की राजधानी कौशाम्बी यमुना नदी के तट पर स्थित एक प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र थी। इन नगरों ने नगरीय क्रांति में भूमिका निभाई।

95. (A) शिशुनाग
शिशुनाग ने हर्यंक वंश के अंतिम शासक को अपदस्थ कर शिशुनाग वंश की स्थापना की थी। वह पहले एक 'अमात्य' या उच्च अधिकारी था। अपनी सैन्य और प्रशासनिक कुशलता के कारण उसे राजा निर्वाचित किया गया। शिशुनाग ने सुरक्षा और राजनीतिक रणनीतियों के कारण मगध की राजधानी को वैशाली स्थानांतरित कर दिया था। उसने मगध की शक्ति को सुदृढ़ किया और विशेष रूप से अवंती के शक्तिशाली साम्राज्य को पराजित किया।

96. (B) यह कर्म के सिद्धांत को पूरी तरह से खारिज करता है।
जैन धर्म के संबंध में यह कथन त्रुटिपूर्ण है कि वह कर्म को अस्वीकार करता है; वास्तव में, कर्म जैन दर्शन का केंद्र बिंदु है। जैन धर्म मानता है कि कर्म सूक्ष्म भौतिक तत्वों के रूप में होते हैं जो आत्मा के साथ संबद्ध हो जाते हैं। इसके विपरीत, जैन धर्म आत्मा के अस्तित्व में विश्वास करता है, त्रिरत्न के मार्ग की वकालत करता है, और आध्यात्मिक शुद्धि हेतु कठोर साधनाओं का समर्थन करता है।

97. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सिकंदर महान की सेना का ब्यास नदी के तट पर रुकना विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। यूनानी सैनिक अपने गृह क्षेत्र से दूर वर्षों के कठिन अभियानों के कारण शारीरिक और मानसिक रूप से क्लांत हो चुके थे। इसके अतिरिक्त, उन्हें गंगा के मैदानों में स्थित शक्तिशाली नंद साम्राज्य की विशाल सेना और उनके हजारों युद्धक हाथियों की अजेय शक्ति के विषय में सूचना मिली थी, जिससे वे भयभीत हो गए।

98. (A) छात्र जीवन के चरण में एक बालक का प्रवेश
उपनयन संस्कार हिंदू धर्म के सर्वाधिक महत्वपूर्ण सोलह संस्कारों में से एक है, जिसे 'यज्ञोपवीत' धारण करने का समारोह भी कहा जाता है। यह संस्कार औपचारिक शिक्षा के प्रारंभ और ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश का प्रतीक है। इस अनुष्ठान के माध्यम से बालक को 'द्विज' माना जाता है, जहाँ वह अपने गुरु के पास रहकर वेदों का अध्ययन प्रारंभ करता है। यह व्यक्ति के बौद्धिक विकास हेतु अनिवार्य आधार था।

99. (C) मेहरगढ़
वर्तमान पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित मेहरगढ़ भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम प्रमाणों हेतु विख्यात है। यहाँ से लगभग 7000 ईसा पूर्व के आसपास गेहूं और जौ की खेती के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यह स्थल शिकारी-संग्रहकर्ता

जीवन से एक स्थायी कृषि समाज की ओर संक्रमण की कथा कहता है। यहाँ के लोग कच्ची ईंटों के गृहों में रहते थे और पशुपालन भी करते थे।

100. (B) केवल 1 और 2
पुरातात्विक स्रोत इतिहास लेखन हेतु अत्यंत ठोस आधार प्रदान करते हैं। शिलालेखों को उनकी समकालीनता और स्थायित्व के कारण साहित्यिक स्रोतों से अधिक विश्वसनीय माना जाता है, जिनमें कालांतर में परिवर्तन संभव है। सिक्कों का अध्ययन आर्थिक इतिहास और व्यापारिक संबंधों को समझने में सहायता करता है। किंतु, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि स्तूप कोई सूचना नहीं देते; वास्तव में ये स्मारक वास्तुकला की प्रगति के दृश्य प्रमाण होते हैं।

101. (C) अनुष्ठानों और प्रतीकों की विस्तृत व्याख्या
ब्राह्मण ग्रंथ वैदिक साहित्य का वह भाग हैं जो संहिताओं की व्याख्या गद्य में करते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य विभिन्न यज्ञों के पीछे के अर्थों को स्पष्ट करना और उन्हें संपन्न करने की जटिल विधियों का निर्देश देना है। इनमें कर्मकांडों के महत्व को समझाने हेतु अनेक पौराणिक कथाओं और प्रतीकों का प्रयोग किया गया है। ये ग्रंथ तत्कालीन समाज की धार्मिक मान्यताओं और पुरोहितों के बढ़ते प्रभाव को विस्तार से दर्शाते हैं।

102. (B) विवर्तनिक हलचल और नदी मार्गों में परिवर्तन
सिंधु घाटी सभ्यता के पतन हेतु उत्तरदायी पारिस्थितिक कारणों में विवर्तनिक हलचलें अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। इन भौगोलिक परिवर्तनों के कारण सिंधु और उसकी सहायक नदियों के मार्ग परिवर्तित हो गए, जिससे कुछ समृद्ध नगर भीषण बाढ़ की चपेट में आ गए, जबकि कुछ अन्य क्षेत्रों में जल की न्यूनता के कारण सूखा पड़ गया। इस जल असंतुलन ने कृषि व्यवस्था को पूर्णतः विनष्ट कर दिया और अंततः पतन हुआ।

103. (D) मुद्रा की एक इकाई
वैदिक काल में भाषा और वस्तुओं के उपयोग में क्रमिक विकास दृष्टिगोचर हुआ। ऋग्वैदिक काल में 'निष्क' शब्द का प्रयोग संभवतः स्वर्ण के आभूषण हेतु किया जाता था। किंतु, उत्तर वैदिक काल में जैसे-जैसे व्यापार और विनिमय की जटिलता बढ़ी, निष्क का उपयोग मूल्य के मानक के रूप में होने लगा। यद्यपि इस समय तक नियमित सिक्के पूर्णतः प्रचलन में नहीं आए थे, फिर भी निष्क एक मानकीकृत टुकड़े के रूप में पहचाना गया।

104. (A) वज्जी
वज्जी महाजनपद प्राचीन भारत की एक अत्यंत अनूठी और शक्तिशाली राजनीतिक इकाई थी। यह कोई एक राज्य नहीं, अपितु आठ कबीलों का एक शक्तिशाली संघ था। इनमें वैशाली के लिच्छवी और विदेह कबीले सर्वाधिक प्रमुख थे। वज्जी की शासन व्यवस्था गणतंत्रीय थी, जहाँ कबीलों के प्रमुख सामूहिक रूप से निर्णय लेते थे। इसकी राजधानी वैशाली उस समय के सबसे समृद्ध और लोकतांत्रिक मूल्यों वाले नगरों में से एक थी।

105. (C) दुख और उसका निवारण
बौद्ध धर्म की संपूर्ण दार्शनिक संरचना 'चार आर्य सत्यों' पर आधारित है जो मानव अस्तित्व की मौलिक समस्या, दुख का विश्लेषण करते हैं। प्रथम सत्य है कि संसार में दुख है; दूसरा सत्य है कि दुख का कारण तृष्णा है; तीसरा सत्य है कि दुख का निवारण संभव है; और चतुर्थ सत्य वह अष्टांगिक मार्ग है जो निर्वाण की ओर ले जाता है। यह शिक्षा व्यावहारिक आत्म-सुधार के माध्यम से शांति प्राप्त करने पर बल देती है।

106. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
रामायण और महाभारत को 'इतिहास' या 'स्मृति' साहित्य का भाग माना जाता है, न कि 'श्रुति' का, क्योंकि इन्हें ऋषियों द्वारा रचित माना गया है न कि सीधे ईश्वरीय ज्ञान के रूप में। यद्यपि ये ग्रंथ पौराणिक हैं, फिर भी ये उत्तर वैदिक काल से परवर्ती काल तक के भारतीय समाज हेतु दर्पण का कार्य करते हैं। इनमें तत्कालीन युद्ध कौशल, राजनीतिक आदर्शों और वर्ण व्यवस्था की बदलती प्रवृत्तियों का विस्तार से वर्णन मिलता है।

107. (D) यूनान
गांधार कला शैली प्राचीन भारत की एक प्रमुख मूर्तिकला शैली थी जो उत्तर-पश्चिम भारत में विकसित हुई। यह शैली भारतीय बौद्ध विषयों और यूनानी-रोमन कला तकनीकों का एक अद्भुत सम्मिश्रण है। सिकंदर के आक्रमण के पश्चात इस क्षेत्र में यूनानी प्रभाव बना रहा, जिसके परिणामस्वरूप बुद्ध की मूर्तियों को यूनानी देवताओं के समान शारीरिक बनावट के साथ उकेरा गया। इसे 'इंडो-ग्रीक' कला भी कहा जाता है।

108. (B) मानव अस्तित्व के चार वैध लक्ष्य
पुरुषार्थ प्राचीन भारतीय संस्कृति की एक व्यापक जीवन-दृष्टि है जो मनुष्य को संतुलित जीवन जीने की दिशा प्रदान करती है। इसमें चार मुख्य लक्ष्य सम्मिलित हैं: धर्म (नैतिक कर्तव्य), अर्थ (आजीविका), काम (इच्छाएं) और मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति)। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि मनुष्य को न तो संसार का पूर्ण त्याग करना चाहिए और न ही उसमें पूर्णतः लिप्त होना चाहिए, अपितु इन चारों लक्ष्यों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना चाहिए।

109. (C) ह्वेनसांग
चीनी यात्री ह्वेनसांग सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत आए थे। उनका प्राथमिक उद्देश्य बौद्ध धर्म की पवित्र भूमि के दर्शन करना और मूल संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन करना था। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में कई वर्ष व्यतीत किए, जहाँ उन्होंने महान आचार्यों से दर्शन और धर्मशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। उनकी यात्रा का विवरण, 'सी-यू-की', तत्कालीन भारत की धार्मिक, सामाजिक और शैक्षिक स्थिति समझने हेतु एक अमूल्य ऐतिहासिक दस्तावेज है।

110. (D) लेखन प्रणाली की अनुपस्थिति बनाम उपस्थिति
इतिहास को स्रोतों के आधार पर तीन मुख्य चरणों में विभाजित किया गया है। प्रागैतिहासिक काल वह समय है जिसके लिए कोई लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। आद्य-ऐतिहासिक काल वह है जहाँ लेखन के प्रमाण तो मिलते हैं, किंतु उन्हें अभी तक

पढ़ा नहीं जा सका है (जैसे सिंधु घाटी सभ्यता)। ऐतिहासिक काल की शुरुआत तब मानी जाती है जब लिखित अभिलेखों को सफलतापूर्वक पढ़ लिया जाता है, जिससे समाज का विवरण स्पष्ट होता है।

111. (A) लोथल
गुजरात के क्षेत्र में स्थित लोथल सिंधु घाटी सभ्यता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तटीय नगर था। इसकी सर्वाधिक विशिष्ट विशेषता यहाँ पाया गया एक विशाल ईंट निर्मित कृत्रिम बंदरगाह है, जो साबरमती नदी की एक सहायक धारा से संबद्ध था। यह साक्ष्य देता है कि हड़प्पावासी समुद्री व्यापार में निपुण थे और यहाँ से पश्चिमी एशिया हेतु जहाज प्रस्थान करते थे। लोथल एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र भी था।

112. (B) एक सामान्य पूर्वज से वंश या वंशावली
'गोत्र' शब्द का अर्थ समय के साथ रुपांतरित हुआ है। मूल रूप से वैदिक काल में इसका अर्थ वह स्थान था जहाँ पूरे कबीले की गायों को रखा जाता था। उत्तर वैदिक काल में गोत्र का अर्थ एक ही पूर्वज से उत्पन्न होने वाले वंश के रूप में विकसित हुआ। सगोत्र विवाह पर प्रतिबंध लगाया गया, जिससे यह रक्त संबंधों और सामाजिक पहचान को निर्धारित करने वाली एक महत्वपूर्ण संस्था बन गई।

113. (A) लौह अयस्क के भंडारों और व्यापार मार्गों पर नियंत्रण
मगध और अवंती छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दो सर्वाधिक शक्तिशाली साम्राज्य थे। उनके मध्य संघर्ष का मुख्य कारण संसाधनों की प्रतिस्पर्धा थी। मगध के पास समृद्ध लौह अयस्क भंडार थे, जबकि अवंती के पास भी मध्य भारत में लोहे की खदानें थीं। लोहे पर नियंत्रण का अर्थ था सुदृढ़ हथियार और श्रेष्ठ कृषि उपकरण। इसके अतिरिक्त, दोनों राज्य प्रमुख व्यापारिक मार्गों पर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहते थे।

114. (A) बौद्ध धर्म
'मध्यम मार्ग' भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का आधार स्तंभ है। बुद्ध ने अनुभव किया कि न तो राजमहलों का विलासी जीवन और न ही शरीर को सुखा देने वाली कठोर तपस्या सत्य की प्राप्ति में सहायक है। उन्होंने इन दोनों अतियों को त्यागकर एक संतुलित जीवन जीने का उपदेश दिया। यह मार्ग प्रज्ञा, शील और समाधि के समन्वय पर आधारित है। मध्यम मार्ग व्यक्ति को मानसिक स्पष्टता और शांति प्रदान करता है।

115. (C) सिंधु क्षेत्र को फारसी साम्राज्य के हिस्से के रूप में उल्लेखित करते हैं
फारसी हखामनी साम्राज्य के शासक दारा प्रथम के शिलालेख भारत के प्राचीन इतिहास हेतु महत्वपूर्ण पुरातात्विक साक्ष्य हैं। इन शिलालेखों में भारतीय क्षेत्र 'हिंदुश' का उल्लेख फारसी साम्राज्य के बीसवें और सर्वाधिक समृद्ध प्रांत के रूप में किया गया है। यह उल्लेख न केवल फारसी साम्राज्य के विस्तार की पुष्टि करता है, अपितु यह भी दर्शाता है कि उस काल में भारत और पश्चिम के मध्य सक्रिय व्यापारिक संपर्क स्थापित थे।

116. (D) गुरु ऋण
वैदिक परंपरा में 'त्रिऋण' की अवधारणा व्यक्ति के तीन मौलिक आध्यात्मिक दायित्वों को परिभाषित करती है। देव ऋण देवताओं के प्रति है, जिसे यज्ञों द्वारा चुकाया जाता है। ऋषि ऋण उन विद्वानों के प्रति है जिन्होंने ज्ञान प्रदान किया, इसे स्वाध्याय से चुकाया जाता है। पितृ ऋण पूर्वजों के प्रति है, जिसे संतानोत्पत्ति के माध्यम से चुकाया जाता है। यद्यपि गुरु का सम्मान सर्वोपरि है, किंतु शास्त्रीय 'त्रिऋण' में 'गुरु ऋण' सम्मिलित नहीं है।

117. (C) मेहरगढ़ - चावल की खेती का सबसे प्राचीन प्रमाण
प्रागैतिहासिक स्थलों के विवरणों में मेहरगढ़ को मुख्य रूप से गेहूं और जौ की खेती के प्राचीनतम प्रमाणों हेतु जाना जाता है, न कि चावल हेतु। चावल की खेती के प्राचीनतम प्रमाण उत्तर प्रदेश के बेलन घाटी स्थित कोलडिहवा से प्राप्त हुए हैं। अन्य विकल्प सही हैं: भीमबेटका अपने शैलचित्रों हेतु, बुर्जहोम अपने गर्त-आवासों हेतु और इनामगाँव अपनी ताम्रपाषाण कालीन ग्रामीण बस्ती हेतु प्रसिद्ध है, जो तत्कालीन जीवन समझने में सहायक हैं।

118. (B) मोहनजोदड़ो
मोहनजोदड़ो के उत्खनन से प्राप्त 'पशुपति मुहर' सिंधु घाटी सभ्यता की धार्मिक मान्यताओं का एक अनूठा प्रमाण है। इस मुहर में एक त्रिमुखीय आकृति को योग मुद्रा में दिखाया गया है, जिसके सिर पर सींग हैं। यह आकृति गैंडा, भैंसा, हाथी और बाघ जैसे शक्तिशाली पशुओं से घिरी हुई है। कई विद्वान इसे भगवान शिव का 'आदि-रूप' मानते हैं। यह मुहर दर्शाती है कि हड़प्पावासी प्रकृति की शक्तियों की पूजा करते थे।

119. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
ऋग्वैदिक काल का समाज और अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से पशुपालन पर आधारित थी। यद्यपि वे कृषि जानते थे, किंतु गाय उनके जीवन का केंद्र थी। गाय को 'अघन्या' माना जाता था और वह संपत्ति का मुख्य मानक थी। ऋग्वेद में युद्धों के लिए 'गविष्टि' शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है 'गायों की खोज'। अधिकांश संघर्ष चरागाहों पर नियंत्रण हेतु होते थे। यह समाज की जनजातीय प्रकृति को दर्शाता है।

120. (A) अजातशत्रु
अजातशत्रु ने मगध की सैन्य शक्ति को आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उसने वैशाली के विरुद्ध युद्ध में दो अभूतपूर्व हथियारों का उपयोग किया था: 'रथमूसल' और 'महाशिलाकंटक'। रथमूसल एक ऐसा रथ था जिसमें गदा या तलवारें लगी होती थीं। महाशिलाकंटक एक बड़े पत्थर फेंकने वाले यंत्र की भाँति था जो शत्रु की सेना पर भारी पत्थरों की बौछार करता था। इन नवाचारों ने मगध को अजेय शक्ति बनाया।

121. (A) IV, I, II, III
भारतीय इतिहास के प्राचीन चरणों का विकास एक निश्चित क्रम में हुआ। सर्वप्रथम परिपक्व हड़प्पा सभ्यता आई, जो अपनी नगरीय व्यवस्था हेतु जानी जाती है। इसके पश्चात ऋग्वेद की

रचना का काल आता है। फिर उत्तर वैदिक काल के दौरान गंगा के मैदानों में लौह युग का आरंभ हुआ, जिससे कृषि विस्तार हुआ। अंततः, छठी शताब्दी ईसा पूर्व में इन्हीं कृषि समुदायों से सोलह महाजनपदों का उदय हुआ।

122. (A) बौद्ध धर्म
'प्रतीत्यसमुत्पाद' बौद्ध दर्शन का अत्यंत केंद्रीय सिद्धांत है, जिसे 'कार्य-कारण का नियम' भी कहा जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'किसी एक वस्तु के होने पर दूसरी वस्तु का उत्पन्न होना'। यह सिद्धांत बताता है कि संसार में कोई भी घटना स्वतंत्र नहीं है, अपितु प्रत्येक वस्तु किसी न किसी कारण पर निर्भर है। यह बारह कड़ियों की एक श्रृंखला के माध्यम से जन्म और दुख के चक्र को स्पष्ट करता है।

123. (D) अरामी
उत्तर-पश्चिमी भारत में प्राचीन काल में प्रयुक्त खरोष्ठी लिपि का उद्भव फारसी हखामनी साम्राज्य के प्रभाव का परिणाम था। फारसी प्रशासन में 'अरामी' लिपि का व्यापक उपयोग होता था, जो दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। जब फारसियों ने सिंधु क्षेत्र पर अधिकार किया, तो उनके प्रशासनिक संपर्क के कारण अरामी लिपि के तत्वों का स्थानीय भाषाओं के साथ मिश्रण हुआ, जिससे खरोष्ठी लिपि का जन्म हुआ।

124. (C) P-4, Q-1, R-3, S-2
प्राचीन भारतीय साहित्य को उनके स्वरुप के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। सूत्र साहित्य के उदाहरण गृह्य सूत्र हैं जो घरेलू रीति-रिवाजों का मार्गदर्शन करते हैं। महाकाव्य साहित्य में महाभारत सम्मिलित है जो सामाजिक आख्यान प्रस्तुत करता है। प्रारंभिक बौद्ध साहित्य का आधार 'त्रिपिटक' है जो बुद्ध के उपदेशों को संकलित करता है। लौकिक साहित्य का उत्कृष्ट उदाहरण कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' है, जो शासन और कूटनीति पर केंद्रित है।

125. (C) महायान
बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय के उदय के साथ 'बोधिसत्व' की अवधारणा को विशेष प्रमुखता प्राप्त हुई। हीनयान में जहाँ व्यक्तिगत निर्वाण पर बल दिया गया था, वहीं महायान ने बोधिसत्व के आदर्श को प्रस्तुत किया। बोधिसत्व वह दयालु प्राणी है जो स्वयं की मुक्ति के स्थान पर दूसरों के दुखों को दूर करने हेतु प्रतिबद्ध है। इस विचारधारा ने बुद्ध को एक देवता के रूप में स्थापित किया और भक्ति को समाहित किया।

126. (D) गृह्य सूत्र
प्राचीन भारत में एक सामान्य गृहस्थ के दैनिक और सामाजिक जीवन की बारीकियों को समझने हेतु 'गृह्य सूत्र' सर्वाधिक महत्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत हैं। ये ग्रंथ 'कल्प सूत्र' का एक भाग हैं और इनमें जन्म, नामकरण, उपनयन और विवाह जैसे जीवन के प्रमुख संस्कारों का विस्तृत विवरण दिया गया है। साथ ही, इनमें दैनिक पूजा के नियम भी बताए गए हैं। ये सूत्र तत्कालीन पारिवारिक संरचना का जीवंत चित्र प्रस्तुत करते हैं।

127. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि इतिहासकारों हेतु आज भी एक अनसुलझी पहेली बनी हुई है। यद्यपि मुहरों और बर्तनों पर लगभग 400 से अधिक विशिष्ट चित्र-चिह्न पाए गए हैं, किंतु उन्हें अभी तक सफलतापूर्वक पढ़ा नहीं जा सका है। इसके मुख्य कारण यह हैं कि उपलब्ध लेख अत्यंत संक्षिप्त हैं। साथ ही, यहाँ कोई 'द्विभाषी शिलालेख' नहीं मिला है, जो इस लिपि के रहस्यों को उद्घाटित करने में सहायक सिद्ध हो सके।

128. (B) राजा को परामर्श देना और प्रमुख यज्ञ संपन्न करना
वैदिक काल में 'पुरोहित' केवल एक धार्मिक अधिकारी नहीं था, अपितु वह राजा का सर्वाधिक विश्वसनीय सलाहकार और मार्गदर्शक भी था। उसका मुख्य कार्य राज्य की समृद्धि और युद्ध में विजय सुनिश्चित करने हेतु जटिल यज्ञों का संपादन करना था। पुरोहित को राजा का 'मित्र और दार्शनिक' माना जाता था जो उसे धर्म के अनुसार शासन करने का परामर्श देता था। पुरोहित का पद तत्कालीन राजनीति में अत्यंत प्रभावशाली था।

129. (B) अजातशत्रु
अजातशत्रु ने मगध साम्राज्य के विस्तार हेतु वैशाली के लिच्छवियों के विरुद्ध एक लंबा और कठिन संघर्ष किया। उन्होंने कूटनीति का आश्रय लेते हुए लिच्छवियों के मध्य फूट डालने का प्रयास किया। इस युद्ध में अजातशत्रु ने रथमूसल और महाशिलाकंटक जैसे नवीन अस्त्रों का सर्वप्रथम प्रयोग किया। वैशाली की विजय ने उत्तर भारत में मगध के वर्चस्व को चुनौतीहीन बना दिया और उपजाऊ क्षेत्रों पर मगध का नियंत्रण स्थापित किया।

130. (A) केवल 1 और 2
वर्णाश्रम व्यवस्था प्राचीन भारतीय समाज की दो प्रणालियों का मिश्रण है। 'वर्ण' समाज के चार वर्गों को दर्शाता है, जबकि 'आश्रम' व्यक्ति के जीवन के चार चरणों को परिभाषित करता है। ऋग्वैदिक काल में यह व्यवस्था अत्यंत प्रारंभिक और लचीली थी; उस समय वर्ण का आधार कर्म था, जन्म नहीं। यह व्यवस्था केवल उत्तर वैदिक काल के दौरान और उसके पश्चात ही अधिक सुव्यवस्थित, कठोर और वंशानुगत निर्मित हुई।

131. (C) आगम
जैन धर्म के पवित्र ग्रंथों के संग्रह को 'आगम' कहा जाता है। ये ग्रंथ भगवान महावीर के उपदेशों पर आधारित हैं जिन्हें उनके प्रमुख शिष्यों ने संकलित किया था। आगम मुख्य रूप से प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं ताकि आम जनता उन्हें सुगमता से समझ सके। इनमें दर्शन, आचार संहिता और तीर्थंकरों की कथाएं सम्मिलित हैं। ये ग्रंथ जैन अनुयायियों हेतु धार्मिक जीवन जीने के लिए सर्वाधिक प्रामाणिक स्रोत हैं।

132. (D) फारसी
भारत में 'सत्रापी प्रणाली' का परिचय फारसी हखामनी साम्राज्य के साथ हुए संपर्कों का परिणाम था। फारसी शासकों ने अपने विशाल साम्राज्य को सुचारु रूप से संचालित करने हेतु उसे विभिन्न प्रांतों में विभाजित किया था, जिन्हें 'सत्रापी' कहा जाता था। जब फारसियों ने उत्तर-पश्चिमी भारत पर विजय प्राप्त की,

तो उन्होंने यहाँ भी यही प्रशासनिक ढांचा लागू किया। परवर्ती विदेशी शासकों ने भी भारत में इसी प्रणाली को अपनाया।

133. (C) वह काल जिसके लिए लिखित अभिलेख उपलब्ध हैं, लेकिन उन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
'आद्य-इतिहास' मानव सभ्यता के उस विकासवादी चरण को संदर्भित करता है जो प्रागैतिहास और इतिहास के मध्य स्थित है। इस काल की मुख्य विशेषता यह है कि समाज ने अपनी लिपि का विकास तो कर लिया था और उनके लिखित साक्ष्य मुहरों पर मिलते भी हैं, किंतु आधुनिक शोधकर्ता अभी तक उस लिपि को पढ़ने में सफल नहीं हुए हैं। सिंधु घाटी सभ्यता इसका सबसे प्रमुख और स्पष्ट उदाहरण मानी जाती है।

134. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
अल-बिरुनी 11वीं शताब्दी में महमूद गजनवी के साथ भारत आया था। वह एक महान विद्वान था जिसने अपनी पुस्तक 'तहकीक-ए-हिंद' में भारतीय समाज, धर्म और दर्शन का अत्यंत निष्पक्ष विवरण प्रस्तुत किया है। उसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक और तुलनात्मक था। किंतु, वह मौर्य दरबार में यूनानी राजदूत नहीं था; मौर्य दरबार में यूनानी राजदूत मेगास्थनीज था जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में आया था।

135. (D) कृषि और व्यवस्थित जीवन का आरंभ
नवपाषाण क्रांति मानव इतिहास का वह युगांतकारी परिवर्तन था जब मनुष्य ने शिकारी-संग्रहकर्ता का जीवन त्यागकर स्वयं भोजन उत्पादित करना प्रारंभ किया। कृषि की खोज ने मानव अस्तित्व को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। खेती के कारण लोग स्थायी गृहों में रहने लगे, जिससे ग्रामों का निर्माण हुआ। इसी काल में अन्न भंडारण हेतु मृदभांड और वस्त्रों हेतु बुनाई जैसी तकनीकें विकसित हुईं। यह व्यवस्थित सामाजिक जीवन का प्रारंभ था।

136. (A) बड़े मंदिरों और महलों की व्यापक उपस्थिति
सिंधु घाटी सभ्यता का परिपक्व चरण अपने सुनियोजित नगरों, जाल पद्धति वाली सड़कों और उन्नत जल निकासी व्यवस्था हेतु विख्यात है। यहाँ पकी हुई ईंटों का प्रयोग किया गया था और उनकी लिपि अभी भी अपठनीय है। 'महापाषाणकालीन समाधियाँ' मुख्य रूप से दक्षिण भारत की लौह युगीन संस्कृतियों से संबंधित हैं और इनका हड़प्पा सभ्यता के नगरीय जीवन से कोई सीधा संबंध नहीं है। अतः यह विकल्प हड़प्पा की विशेषता नहीं है।

137. (C) व्यापारियों या शिल्पकारों का एक संघ
महाजनपद काल के दौरान आर्थिक गतिविधियों के विस्तार के कारण 'श्रेणी' नामक संस्था का उदय हुआ। यह एक ही व्यवसाय करने वाले व्यापारियों या शिल्पकारों का एक स्वायत्त संगठन था। श्रेणियाँ अपने सदस्यों हेतु कच्चे माल की खरीद और मूल्य निर्धारण करती थीं। वे आधुनिक अधिकोषों की भाँति भी कार्य करती थीं और दान स्वीकार कर उस पर ब्याज देती थीं। इन श्रेणियों ने व्यापार के स्थायित्व में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

138. (A) अजातशत्रु
बुद्ध के महापरिनिर्वाण के तुरंत पश्चात, लगभग 483 ईसा पूर्व में, प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन मगध के शक्तिशाली राजा अजातशत्रु के संरक्षण में किया गया था। यह सभा राजगृह की 'सप्तपर्णी गुफा' में आयोजित हुई थी और इसकी अध्यक्षता महाकश्यप ने की थी। इस संगीति का मुख्य उद्देश्य बुद्ध की मूल शिक्षाओं को सुरक्षित रखना था। इसी दौरान बुद्ध के उपदेशों को 'सुत्त पिटक' और 'विनय पिटक' में संकलित किया गया।

139. (D) भारत और पश्चिम के बीच सीधा संपर्क स्थापित होना
सिकंदर के भारत अभियान ने यूनानी विश्व और भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य की भौगोलिक बाधाओं को विनष्ट कर दिया। उसने कई नए मार्ग खोजे, जिससे भविष्य में व्यापारियों हेतु आवागमन सुगम हो गया। इस संपर्क ने न केवल व्यापार को प्रोत्साहित किया, अपितु गांधार मूर्तिकला जैसी कला शैलियों और विचारों के आदान-प्रदान का मार्ग भी प्रशस्त किया। यह दो महान सभ्यताओं के मध्य सक्रिय संवाद की ऐतिहासिक शुरुआत थी।

140. (B) ऋत
ऋग्वेद में 'ऋत' एक सर्वव्यापी नैतिक और ब्रह्मांडीय सिद्धांत है जो समस्त जगत को अनुशासित करता है। यह वह शक्ति है जो सुनिश्चित करती है कि ऋतुएँ समय पर आएं और सूर्य नियमित रूप से उदित हो। वैदिक ऋषियों का विश्वास था कि देवता भी इस नियम के अधीन हैं। मनुष्य हेतु ऋत का अर्थ नैतिक नियमों और सत्य का पालन करना था, ताकि ब्रह्मांडीय संतुलन सुचारु रूप से बना रहे।

141. (C) कलिंगराज खारवेल
भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ियों में स्थित हाथीगुंफा शिलालेख कलिंग के महान शासक खारवेल के शासनकाल की जानकारी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह शिलालेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है। इसमें खारवेल की सैन्य विजयों और जैन धर्म के प्रति उनके संरक्षण का वर्षवार विवरण प्राप्त होता है। यह अभिलेख प्राचीन भारतीय इतिहास के उन दुर्लभ साक्ष्यों में से एक है जो राजा की उपलब्धियों का कालानुक्रमिक विवरण देता है।

142. (D) धातु, विशेष रूप से तांबे के उपयोग का आरंभ
ताम्रपाषाण काल मानव सभ्यता के विकास में एक नवीन मोड़ था क्योंकि इसमें पत्थर के साथ प्रथम बार धातु का प्रयोग प्रारंभ हुआ। यद्यपि इस काल के लोग पत्थर के उपकरणों पर भी निर्भर थे, किंतु तांबे की खोज ने उनकी तकनीकी क्षमता को संवर्धित किया। नवपाषाण काल के विपरीत, जहाँ केवल पत्थरों का उपयोग होता था, ताम्रपाषाण काल में तांबे की कुल्हाड़ियाँ निर्मित होने लगीं। यह काल जटिल समाजों की ओर बढ़ने का सूचक था।

143. (A) लोथल में एक ईंट निर्मित गोदीवाड़ा की खोज
हड़प्पा सभ्यता की व्यापक समुद्री व्यापारिक गतिविधियों का सर्वाधिक प्रत्यक्ष और ठोस प्रमाण गुजरात के लोथल में प्राप्त बंदरगाह है। यह संरचना विश्व की प्राचीनतम ज्ञात कृत्रिम गोदी

मानी जाती है, जिसे ज्वार-भाटे के ज्ञान के साथ कुशलतापूर्वक निर्मित किया गया था। यहाँ से फारस की खाड़ी की मुहरें भी प्राप्त हुई हैं। यह प्रमाणित करता है कि लोथल एक अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह था जहाँ से सुदूर देशों के साथ नियमित समुद्री व्यापार होता था।

144. (B) एक जनजातीय सरदारी जहाँ 'राजन' के पास सीमित शक्तियाँ थीं
ऋग्वैदिक काल में शासन की व्यवस्था कबीलाई संगठन पर आधारित थी। 'राजन' कबीले का मुखिया होता था, जिसका मुख्य उत्तरदायित्व अपने लोगों की रक्षा करना और युद्ध में नेतृत्व करना था। उसकी शक्ति निरंकुश नहीं थी, क्योंकि उसे सभा और समिति जैसी संस्थाओं की मंत्रणा लेनी पड़ती थी। राजा के पास कोई स्थायी सेना नहीं थी; वह मुख्य रूप से कबीले के सदस्यों द्वारा स्वेच्छा से दिए गए उपहारों पर निर्भर रहता था।

145. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
मगध में नंद वंश का पतन और मौर्य साम्राज्य का उदय भारतीय इतिहास की एक युगांतकारी घटना थी। अंतिम नंद शासक धनानंद एक अत्यंत शक्तिशाली किंतु अत्याचारी राजा था। उसने जनता पर अत्यधिक करों का भार डाल दिया था, जिससे वह अलोकप्रिय हो गया। चाणक्य ने इसी असंतोष का लाभ उठाकर चंद्रगुप्त मौर्य को प्रशिक्षित किया और उनकी सैन्य रणनीति की सहायता से नंद साम्राज्य को उखाड़ फेंका, जिससे मौर्य युग प्रारंभ हुआ।

146. (A) पुनर्जन्म के चक्र पर विजय प्राप्त कर चुका है और दूसरों को मार्ग दिखाता है
जैन धर्म में 'तीर्थंकर' शब्द का अर्थ है 'वह जो तीर्थ निर्मित करता है' अर्थात वह जो संसार रुपी भवसागर को पार करने हेतु मार्ग तैयार करता है। तीर्थंकर वह महापुरुष है जिसने अपनी इंद्रियों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर 'कैवल्य' प्राप्त कर लिया है। वे आध्यात्मिक शिक्षक होते हैं जो मानवता को धर्म का मार्ग दिखाते हैं और उन्हें पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त होने की शिक्षा प्रदान करते हैं।

147. (C) अनुष्ठान और विधि पर सूत्रात्मक नियमावलियों द्वारा पहचाना जाने वाला काल
सूत्रों का युग प्राचीन भारतीय साहित्य के इतिहास में उस समय को कहा जाता है जब विस्तृत वैदिक ज्ञान को अत्यंत संक्षिप्त 'सूत्र' शैली में संकलित किया गया। इस काल में कल्पसूत्रों की रचना हुई, जो तीन श्रेणियों में विभक्त थे: श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र और धर्म सूत्र। यह युग जटिल अनुष्ठानिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और समाज हेतु एक स्पष्ट आचार संहिता तैयार करने के प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है।

148. (D) यूनानियों के विरुद्ध युद्ध में भारतीय पैदल सेना और घुड़सवार सेना को नियुक्त करना
फारसी हखामनी शासक जरक्सीस का भारतीय इतिहास में उल्लेख मुख्य रूप से यूनान और फारस के मध्य हुए युद्धों के संदर्भ में आता है। जरक्सीस ने यूनान पर अपने आक्रमण हेतु भारतीय प्रांतों से सैनिकों की भर्ती की थी। यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस के अनुसार, जरक्सीस की विशाल सेना में भारतीय पैदल सैनिक सम्मिलित थे, जिन्होंने यूनान की भूमि पर युद्ध लड़ा था। यह प्राचीन काल में भारत और फारस के सैन्य संबंधों को उजागर करता है।

149. (C) गृहस्थ
आश्रम व्यवस्था में 'गृहस्थ आश्रम' को समस्त आश्रमों का आधार माना गया है क्योंकि एक गृहस्थ ही शेष तीनों आश्रमों के सदस्यों का भरण-पोषण करता है। पंच महायज्ञों का संपादन एक गृहस्थ हेतु दैनिक अनिवार्य कर्तव्य था। इन यज्ञों के माध्यम से वह देवताओं, ऋषियों, पूर्वजों और समस्त सजीव प्राणियों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता था। यह अवधारणा व्यक्ति को समाज और प्रकृति के प्रति उसके नैतिक दायित्वों का बोध कराती थी।

150. (B) चंद्रगुप्त मौर्य
मेगास्थनीज एक यूनानी राजदूत था जिसे यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर ने चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में नियुक्त किया था। मेगास्थनीज ने मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में कई वर्ष व्यतीत किए और अपने अनुभवों को 'इंडिका' नामक ग्रंथ में लिपिबद्ध किया। यद्यपि मूल ग्रंथ अब उपलब्ध नहीं है, किंतु इसके विवरण मौर्यकालीन नगर प्रशासन, सैन्य व्यवस्था और तत्कालीन भारतीय समाज की जाति व्यवस्था के विषय में जानकारी का अत्यंत मूल्यवान स्रोत हैं।

151. (D) सूक्ष्म पाषाण उपकरणों का निर्माण
मध्यपाषाण युग मानव सभ्यता के विकास में पुरापाषाण काल के भारी औजारों से नवपाषाण काल के परिष्कृत जीवन की ओर एक महत्वपूर्ण चरण था। इस युग की सर्वाधिक बड़ी तकनीकी विशेषता 'सूक्ष्म पाषाण उपकरण' का प्रचलन था। ये पत्थर के अत्यंत छोटे औजार होते थे जिन्हें हड्डी या लकड़ी के हत्थों में जड़कर उपयोग किया जाता था। इस प्रगति ने मनुष्य को छोटे जानवरों का शिकार करने में सक्षम बनाया और जीवनशैली में कुशलता लाई।

152. (A) बड़े मंदिरों और महलों की व्यापक उपस्थिति
सिंधु घाटी सभ्यता अपनी असाधारण नागरिक सुविधाओं हेतु प्रसिद्ध है, किंतु पुरातात्विक उत्खनन में यहाँ से किसी विशाल मंदिर या राजा के भव्य राजप्रासाद के साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं। यह मेसोपोटामिया की सभ्यताओं के विपरीत है जहाँ भव्य धार्मिक संरचनाएँ केंद्र में होती थीं। हड़प्पा के नगर मुख्य रूप से उपयोगितावादी थे, जहाँ सुव्यवस्थित आवास, ढकी हुई नालियाँ और विशाल सार्वजनिक स्नानागार जैसी संरचनाओं को प्राथमिकता दी गई थी।

153. (C) परुष्णी
ऋग्वेद के सातवें मंडल में वर्णित 'दस राजाओं का युद्ध' प्राचीन भारत की एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। यह युद्ध परुष्णी नदी के तट पर लड़ा गया था। इसमें एक पक्ष में भरत कबीले के राजा सुदास थे और द्वितीय पक्ष में दस अन्य शक्तिशाली कबीलों का संघ था। राजा सुदास ने इस युद्ध में

निर्णायक विजय प्राप्त की, जिससे भरत कबीले का वर्चस्व स्थापित हुआ। इसी विजय के कारण देश का नाम 'भारत' पड़ा।

154. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
कल्पसूत्रों के अंतर्गत आने वाले चार सूत्र प्राचीन भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को सुव्यवस्थित करते हैं। गृह्य सूत्र घरेलू संस्कारों और पारिवारिक जीवन के नियमों को परिभाषित करते हैं। श्रौत सूत्र सार्वजनिक यज्ञों के विधि-विधानों से संबंधित हैं। धर्म सूत्र सामाजिक आचरण और वर्णों के कर्तव्यों का आधार प्रस्तुत करते हैं। शुल्ब सूत्र यज्ञ-वेदियों की माप और निर्माण से संबंधित हैं, जिन्हें भारतीय गणित का सबसे प्राचीन स्रोत माना जाता है।

155. (D) उदयन
पाटलिपुत्र की स्थापना का श्रेय हर्यंक वंश के शासक उदयन को जाता है। उन्होंने गंगा और सोन नदियों के संगम पर एक दुर्ग के रूप में इसकी नींव रखी थी। उदयन ने अपनी राजधानी को राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया क्योंकि यह स्थान व्यापार और सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। जलमार्गों से संबद्ध होने के कारण यहाँ से साम्राज्य पर नियंत्रण सुलभ था। कालांतर में पाटलिपुत्र मौर्य और गुप्त साम्राज्यों की भी राजधानी बना।

156. (B) तृष्णा और आसक्ति
बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य मानव जीवन के दुख का गहरा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। भगवान बुद्ध के अनुसार, दुख का मूल कारण 'तृष्णा' अर्थात सांसारिक वस्तुओं और सुखों के प्रति गहरी लालसा तथा आसक्ति है। जब मनुष्य नश्वर वस्तुओं में स्थायी सुख खोजता है और उनके प्रति मोह रखता है, तो वह दुख के चक्र में फँस जाता है। इस आसक्ति का त्याग करके ही मनुष्य वास्तविक शांति प्राप्त कर सकता है।

157. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत के इतिहास में एक वैचारिक उथल-पुथल का काल था, जिसे 'धार्मिक क्रांति' के रूप में जाना जाता है। इस समय तक वैदिक धर्म अत्यधिक जटिल अनुष्ठानों और जन्म आधारित भेदभाव से ग्रसित हो गया था। इसके विरोध में बौद्ध और जैन धर्म जैसे नवीन संप्रदायों का उदय हुआ, जिन्होंने वेदों की अपौरुषेयता को चुनौती दी। इन धर्मों ने सरल जीवन और सामाजिक समानता का उपदेश दिया।

158. (D) दारा तृतीय
फारस के हखामनी साम्राज्य का पतन महान यूनानी विजेता सिकंदर के हाथों हुआ था। दारा तृतीय फारस का अंतिम शासक था जिसे सिकंदर ने अर्बेला और गौगामेला जैसे प्रसिद्ध युद्धों में पराजित किया था। दारा तृतीय की पराजय के साथ ही विशाल फारसी साम्राज्य का अंत हो गया। इस विजय के पश्चात ही सिकंदर हेतु भारत के प्रवेश द्वार खुल गए और उसने उत्तर-पश्चिमी भारतीय राज्यों पर अपना ऐतिहासिक आक्रमण प्रारंभ किया था।

159. (A) परिणय संस्कार
हिंदू परंपरा के सोलह संस्कारों में 'विवाह' या 'परिणय संस्कार' को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। यह वह संस्कार है जो व्यक्ति के विद्यार्थी जीवन के अंत और पारिवारिक जीवन की शुरुआत को चिह्नित करता है। विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, अपितु इसे एक पवित्र धार्मिक बंधन माना जाता है जिसके माध्यम से व्यक्ति धर्म, अर्थ और काम के लक्ष्यों को प्राप्त करता है। यह पितृ ऋण से मुक्ति का भी माध्यम है।

160. (C) केवल 2 और 3
वैदिक काल की राजनीतिक संस्थाओं के प्रभाव में समय के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए। ऋग्वैदिक काल में 'सभा' समाज के बुजुर्गों की परिषद थी, और राजा की शक्तियाँ इन सभाओं द्वारा सीमित थीं। राजा को कबीले का रक्षक माना जाता था। किंतु, उत्तर वैदिक काल में जैसे-जैसे क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ और राजा की शक्ति में वृद्धि हुई, सभा और समिति जैसी लोकतांत्रिक संस्थाओं का महत्व और प्रभाव धीरे-धीरे क्षीण होता चला गया।

161. (B) सिदी अली रईस
'मिरात-उल-मेमालिक' 16वीं शताब्दी का एक प्रसिद्ध यात्रा वृत्तांत है जिसे तुर्क नौसेना प्रमुख सिदी अली रईस द्वारा लिखा गया था। यद्यपि यह परवर्ती रचना है, किंतु यह हिंद महासागर में नौवहन और भारत के तटीय क्षेत्रों की स्थिति के विषय में बहुमूल्य सूचना प्रदान करता है। लेखक ने अपनी भारत यात्रा के दौरान देखे गए विभिन्न राज्यों और लोगों की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है जो ऐतिहासिक शोध में सहायक है।

162. (A) प्लीस्टोसिन
प्लीस्टोसिन युग, जिसे प्रायः 'हिमयुग' कहा जाता है, लगभग 26 लाख वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ और 11,700 वर्ष पूर्व समाप्त हुआ। मानव प्रागैतिहास का अधिकांश भाग इसी युग के भीतर आता है। इस दौरान पृथ्वी की जलवायु में भारी उतार-चढ़ाव आए थे। आदिमानव ने इसी चुनौतीपूर्ण वातावरण में जीवित रहने हेतु पत्थर के उपकरण बनाना, अग्नि का उपयोग करना और शिकार की कला विकसित करना सीखा था, जो उनके अस्तित्व हेतु अनिवार्य था।

163. (C) हड़प्पा संस्कृति के कुछ तत्व बाद की भारतीय सभ्यता में जारी रहे।
सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में सांस्कृतिक निरंतरता यह स्पष्ट करती है कि यद्यपि इस सभ्यता के विशाल नगरों का पतन हो गया, किंतु इसकी आत्मा पूर्णतः लुप्त नहीं हुई। हड़प्पावासियों के कई धार्मिक विश्वास, जैसे पशुपति और मातृदेवी की पूजा तथा पीपल के वृक्ष का धार्मिक महत्व, परवर्ती वैदिक और हिंदू संस्कृति में समाहित हो गए। यह भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक निरंतरता का एक अत्यंत सशक्त और जीवंत उदाहरण माना जाता है।

164. (D) संहिताओं सहित वैदिक ग्रंथों का संग्रह
वैदिक युग के इतिहास को पुनर्निर्मित करने हेतु साहित्यिक साक्ष्य ही सूचना का मुख्य आधार हैं। इसमें मुख्य रूप से चार वेद और उनसे संबद्ध ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक तथा उपनिषद सम्मिलित हैं। ये ग्रंथ न केवल धार्मिक मंत्रों का संग्रह हैं, अपितु वे उस काल के लोगों की जीवनशैली, सामाजिक वर्गों और भौगोलिक विस्तार के विषय में भी व्यापक जानकारी प्रदान करते हैं, जो उस युग की वास्तविक आत्मा को समझने में सहायता करती है।

165. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
प्राचीन भारत के महाजनपदों की शक्ति उनकी भौगोलिक स्थिति पर निर्भर थी। मगध मध्य गंगा घाटी में स्थित था, जो पहाड़ियों और नदियों से घिरा होने के कारण सामरिक रूप से सुरक्षित था, किंतु इसकी समुद्री सीमा नहीं थी। इसके विपरीत, अंग महाजनपद मगध के पूर्व में स्थित था और इसकी राजधानी चंपा गंगा के तट पर एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक केंद्र थी। यहाँ से व्यापारी जलमार्ग द्वारा सुदूर क्षेत्रों तक व्यापार हेतु जाते थे।

166. (B) अनात्मवाद या 'कोई स्थायी आत्मा नहीं' का सिद्धांत
'अनात्मवाद' बौद्ध धर्म के सर्वाधिक मौलिक सिद्धांतों में से एक है। भगवान बुद्ध ने सिखाया कि संसार की समस्त वस्तुएं परिवर्तनशील और अनित्य हैं। हिंदू दर्शन के विपरीत, जो एक शाश्वत आत्मा में विश्वास करता है, बौद्ध धर्म मानता है कि 'आत्मा' जैसी कोई स्थायी इकाई नहीं है। मनुष्य का व्यक्तित्व केवल पाँच स्कंधों का एक निरंतर बदलता हुआ समूह है, जो कारण और प्रभाव के नियम से पूर्णतः बंधा हुआ है।

167. (D) दक्षिणी बिहार और झारखंड
मगध के एक महाशक्ति के रूप में उभरने का एक प्रमुख भौतिक कारण इसके भौगोलिक क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध खनिज संसाधन थे। वर्तमान दक्षिणी बिहार और झारखंड का क्षेत्र उच्च गुणवत्ता वाले लौह अयस्क के भंडारों से समृद्ध था। इस प्रचुर लोहे ने मगध को अपने पड़ोसियों के विरुद्ध एक बड़ी सैन्य बढ़त प्रदान की। लोहे की उपलब्धता से न केवल घातक हथियार बनाए गए, अपितु वनों को साफ करने हेतु सुदृढ़ कुल्हाड़ियाँ भी बनाई गईं।

168. (A) अशोक के शिलालेख
ऐतिहासिक स्रोतों को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है: साहित्यिक और पुरातात्विक। पुरातात्विक स्रोतों में भौतिक अवशेष सम्मिलित होते हैं जो सीधे उस काल की गवाही देते हैं। सम्राट अशोक के शिलालेख पत्थरों और स्तंभों पर उत्कीर्ण भौतिक प्रमाण हैं, जो मौर्यकालीन प्रशासन और धम्म की नीति के विषय में प्रत्यक्ष जानकारी देते हैं। इसके विपरीत, ऋग्वेद और अर्थशास्त्र साहित्यिक स्रोत हैं, जो लिखित ग्रंथों के रूप में हम तक पहुँचे हैं।

169. (C) पूरा भारतीय उपमहाद्वीप, जिसे एक विशिष्ट इकाई के रूप में कल्पित किया गया है
'भारतवर्ष' की प्राचीन वैचारिक अवधारणा केवल एक राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं थी, अपितु यह एक सांस्कृतिक और भौगोलिक इकाई का बोध कराती थी। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, उत्तर में हिमालय से दक्षिण में समुद्र तक विस्तृत संपूर्ण भूभाग को भारतवर्ष कहा गया। यह इस उपमहाद्वीप की प्राकृतिक सीमाओं के भीतर रहने वाले लोगों की अंतर्निहित एकता को दर्शाता है। प्राचीन भारतीयों की दृष्टि में यह एक ऐसा पवित्र क्षेत्र था जहाँ समान मूल्य साझा किए जाते थे।

170. (A) ऋण
पुरुषार्थ भारतीय दर्शन की एक नैतिक रूपरेखा है जो मनुष्य के जीवन के लक्ष्यों को चार श्रेणियों में विभक्त करती है। इनमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सम्मिलित हैं। ये मनुष्य के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक माने गए हैं। इसके विपरीत, 'ऋण' एक पृथक अवधारणा है जो मनुष्य पर जन्मजात दायित्वों को दर्शाती है। यद्यपि ऋण और पुरुषार्थ दोनों जीवन को अनुशासित करते हैं, किंतु ऋण को स्वयं में एक 'पुरुषार्थ' या अंतिम साध्य नहीं माना जाता।

171. (D) सभा और समिति
ऋग्वैदिक काल में राजा की सत्ता पूर्णतः निरंकुश नहीं थी, अपितु वह दो अत्यंत महत्वपूर्ण कबीलाई सभाओं, सभा और समिति के प्रति उत्तरदायी था। सभा संभवतः समाज के विशिष्ट बुजुर्गों की एक परिषद थी, जबकि समिति पूरे कबीले के लोगों की एक सामान्य सभा थी जिसमें सामूहिक निर्णय लिए जाते थे। ये संस्थाएं न केवल राजा को परामर्श देती थीं, अपितु महत्वपूर्ण कार्यों में भी भाग लेती थीं, जो प्रारंभिक वैदिक समाज के लोकतांत्रिक चरित्र को उजागर करती हैं।

172. (B) ब्रह्मचर्य
जैन धर्म में नैतिक आचरण हेतु 'महाव्रतों' का विशेष महत्व है। महावीर से पूर्व 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने चार महाव्रत दिए थे: अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह। महावीर ने जैन दर्शन को और अधिक अनुशासित बनाने हेतु इसमें 'ब्रह्मचर्य' नामक पाँचवा महाव्रत सम्मिलित किया। यह व्रत पूर्ण इंद्रिय निग्रह और पवित्र जीवन जीने पर बल देता है, जो जैन मुनियों हेतु एक अनिवार्य शर्त बन गया था। यह आध्यात्मिक पूर्णता का मार्ग है।

173. (C) महाजनपद काल
पुरातात्विक साक्ष्य जैसे 'उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड', आहत सिक्के और किलाबंद बस्तियां छठी शताब्दी ईसा पूर्व के पश्चात के काल की पहचान हैं। यह काल भारत में 'द्वितीय नगरीकरण' और महाजनपदों के उदय का युग था। ये मृदभांड अपनी विशिष्ट चमक के कारण तत्कालीन तकनीकी कौशल का प्रतीक हैं। आहत सिक्कों का प्राप्त होना एक विकसित मुद्रा प्रणाली और व्यापार के विस्तार को दर्शाता है, जबकि किलाबंदी राजनीतिक अस्थिरता का सूचक है।

174. (C) बेहिस्तुन जैसे फारसी शिलालेख
फारसी सम्राट दारा प्रथम के उत्तर-पश्चिमी भारत पर आक्रमण की ऐतिहासिक पुष्टि उनके द्वारा उत्कीर्ण कराए गए अभिलेखों से होती है। बेहिस्तुन और पर्सेपोलिस के प्रसिद्ध शिलालेखों में

'हिंदुश' को फारसी साम्राज्य के प्रांतों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। ये अभिलेख बताते हैं कि सिंधु घाटी फारसी साम्राज्य का बीसवां प्रांत थी और वहां से भारी मात्रा में राजस्व प्राप्त होता था। यह भारत के साथ विदेशी राजनीतिक संबंधों का प्राचीनतम और प्रामाणिक लिखित रिकॉर्ड है।

175. (A) गृहपति का जीवन
आश्रम व्यवस्था में 'गृहस्थ आश्रम' जीवन का दूसरा और अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें व्यक्ति विवाह कर एक गृहपति के रूप में उत्तरदायित्व संभालता है। यह वह समय है जब व्यक्ति अर्थ और काम के पुरुषार्थों का संपादन करता है। एक गृहस्थ से अपेक्षा की जाती है कि वह न केवल अपने परिवार का पालन-पोषण करे, अपितु अतिथियों का सत्कार करे और पंच महायज्ञों के माध्यम से समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करे।

176. (B) ग्रीक-रोमन विवरण प्रायः भारत की संपदा और व्यापार पर प्रकाश डालते हैं।
प्राचीन विदेशी यात्रियों के विवरण इतिहास के पुनर्निर्माण हेतु महत्वपूर्ण पूरक स्रोत हैं। यद्यपि इनमें कुछ सांस्कृतिक भ्रांतियां हो सकती हैं, किंतु ग्रीक-रोमन लेखकों ने भारत के साथ होने वाले व्यापार, यहाँ की बहुमूल्य वस्तुओं जैसे मसाले और मलमल, तथा भारतीय बंदरगाहों का अत्यंत विस्तृत विवरण दिया है। ये विवरण तत्कालीन भारत की आर्थिक समृद्धि और उसके वैश्विक वाणिज्यिक महत्व को प्रमाणित करने हेतु अत्यंत विश्वसनीय माने जाते हैं।

177. (A) मेहरगढ़
भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के विकास की कथा मेहरगढ़ से प्रारंभ होती है। यह स्थल लगभग 7000 ईसा पूर्व का है और यहाँ से गेहूं तथा जौ की खेती के प्राचीनतम प्रमाण प्राप्त हुए हैं। मेहरगढ़ के उत्खनन से ज्ञात होता है कि यहाँ के लोग न केवल व्यवस्थित कृषि करते थे, अपितु उन्होंने पशुपालन और कच्ची ईंटों के गृहों में रहना भी प्रारंभ कर दिया था। यह स्थल शिकारी जीवन से उत्पादक जीवन की ओर हुए महान परिवर्तन का साक्षी है।

178. (A) एक अद्वितीय और जटिल जल संचयन प्रणाली
गुजरात के कच्छ क्षेत्र में स्थित धोलावीरा सिंधु घाटी सभ्यता का एक असाधारण नगर था। इसकी सर्वाधिक बड़ी विशेषता यहाँ की जल प्रबंधन की अद्भुत तकनीक है। धोलावीरा के निवासियों ने जल की न्यूनता को देखते हुए पत्थरों को काटकर विशाल जलाशयों का निर्माण किया था, जहाँ वर्षा जल को संचित किया जाता था। इसके अतिरिक्त, यह नगर तीन स्पष्ट भागों में विभक्त था, जो अन्य हड़प्पा नगरों की तुलना में एक विशिष्ट नगरीय योजना को दर्शाता है।

179. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
उत्तर वैदिक काल में ऋग्वैदिक काल की सरल कबीलाई सरदारी का स्थान शक्तिशाली क्षेत्रीय राजतंत्र ने ले लिया। राजा अब केवल एक रक्षक नहीं, अपितु एक दिव्य और सर्वोच्च शासक के रूप में उभरने लगा। उसकी शक्ति को वैधता प्रदान करने हेतु राजसूय और अश्वमेध जैसे अत्यंत भव्य और खर्चीले यज्ञ किए जाने लगे। इन अनुष्ठानों ने न केवल राजा की प्रतिष्ठा में वृद्धि की, अपितु समाज में पुरोहितों और क्षत्रियों के गठबंधन को और सुदृढ़ बनाया।

180. (D) श्रावस्ती
कोसल महाजनपद छठी शताब्दी ईसा पूर्व के सर्वाधिक प्रमुख राज्यों में से एक था, जिसकी राजधानी श्रावस्ती थी। यह नगर अचिरावती नदी के तट पर स्थित था और उत्तर भारत के प्रमुख व्यापारिक मार्गों का संगम स्थल था। कोसल के राजा प्रसेनजित भगवान बुद्ध के समकालीन थे। श्रावस्ती का बौद्ध धर्म के इतिहास में विशेष महत्व है क्योंकि बुद्ध ने अपने जीवन के सर्वाधिक वर्षावास इसी नगर में व्यतीत किए थे और यहीं कई महत्वपूर्ण उपदेश दिए थे।

181. (A) II, I, III, IV
प्राचीन भारत पर विदेशी आक्रमणों का एक निश्चित ऐतिहासिक क्रम रहा है। सर्वप्रथम छठी शताब्दी ईसा पूर्व में फारसी सम्राट दारा प्रथम ने उत्तर-पश्चिम भारत पर आक्रमण किया। उसके लगभग दो शताब्दियों पश्चात, 326 ईसा पूर्व में यूनानी विजेता सिकंदर महान ने आक्रमण किया। मौर्यों के पतन के पश्चात, दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में हिंद-यूनानी शासकों ने अपने राज्य स्थापित किए। उनके उपरांत प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में शकों ने भारत में प्रवेश किया।

182. (B) विनय, सुत्त और अभिधम्म पिटक
'त्रिपिटक' बौद्ध धर्म का सर्वाधिक पवित्र और आधारभूत ग्रंथ संग्रह है, जो पाली भाषा में रचित है। यह तीन भागों में विभक्त है। विनय पिटक में बौद्ध संघ के अनुशासन संबंधी नियम हैं। सुत्त पिटक में भगवान बुद्ध के उपदेशों और संवादों का संकलन है। अभिधम्म पिटक बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धांतों की उच्च स्तर पर व्याख्या करता है। ये तीनों मिलकर बौद्ध धर्म के धार्मिक और दार्शनिक ढांचे को पूर्णता प्रदान करते हैं।

183. (D) उत्तर-पश्चिम में खरोष्ठी लिपि का आरंभ
भारत और फारस के मध्य हुए प्राचीन संपर्कों के परिणाम बहुआयामी थे। फारसी हखामनी साम्राज्य के शासन के दौरान उत्तर-पश्चिमी भारत में अरामी लिपि का प्रभाव पड़ा, जिससे एक नवीन लिपि खरोष्ठी का जन्म हुआ। यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। अशोक के उत्तर-पश्चिमी शिलालेखों में इसी लिपि का प्रयोग मिलता है। इसके अतिरिक्त, मौर्यकालीन राजप्रासाद की वास्तुकला और पत्थर को चमकाने की कला पर भी फारसी प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

184. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
प्रागैतिहासिक संस्कृतियों की पहचान उनके द्वारा प्रयुक्त उपकरणों की तकनीक से होती है। पुरापाषाण काल में मानव पत्थरों से निर्मित बड़े और खुरदरे औजारों का उपयोग करता था। मध्यपाषाण काल सूक्ष्म पाषाण उपकरणों के निर्माण हेतु जाना जाता है। नवपाषाण काल में औजारों को घिसकर और पॉलिश करके अधिक मारक बनाया गया। अंततः, ताम्रपाषाण काल

वह चरण था जब पत्थर के साथ तांबे की धातु के उपकरणों का प्रयोग समाज में प्रथम बार प्रारंभ हुआ था।

185. (C) उपनिषद
उपनिषद वैदिक साहित्य की अंतिम कड़ी होने के कारण 'वेदांत' कहलाते हैं। ये ग्रंथ कर्मकांडीय यज्ञों के स्थान पर गूढ़ दार्शनिक ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उपनिषदों का मुख्य विषय आत्मन की प्रकृति और ब्रह्म के साथ उसका संबंध है। इनमें गुरु और शिष्य के मध्य हुए संवादों के माध्यम से जीवन के परम सत्य की खोज की गई है। उपनिषदों ने ही कालांतर में महान दार्शनिकों के अद्वैत दर्शन का सुदृढ़ आधार निर्मित किया।

186. (A) वज्जी और मल्ल के गणराज्यों से सुदृढ़ समर्थन
मगध के उदय के कारणों के विषय में यह कथन त्रुटिपूर्ण है कि उसे गणराज्यों का समर्थन प्राप्त था; वास्तव में, मगध के राजाओं ने इन गणराज्यों को विजित करने हेतु निरंतर युद्ध लड़े थे। मगध की सफलता के वास्तविक कारण इसकी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति थी। राजगृह पहाड़ियों से घिरा होने के कारण अभेद्य था। गंगा के मैदान की उपजाऊ मृदा ने आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान की और महत्वाकांक्षी शासकों ने कूटनीति से अपनी सीमाओं का विस्तार किया।

187. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
छठी शताब्दी ईसा पूर्व में उभरे बौद्ध और जैन धर्मों को तत्कालीन वैश्य वर्ग ने भारी समर्थन प्रदान किया। इसका मुख्य कारण यह था कि वैदिक धर्म में समुद्री यात्राओं और ब्याज लेने को प्रायः वर्जित माना जाता था, जो व्यापार में बाधक था। इसके विपरीत, इन धर्मों ने अहिंसा पर बल दिया, जिससे व्यापारिक मार्गों के सुरक्षित रहने की संभावना बढ़ी। साथ ही, इन धर्मों की सामाजिक समानता ने व्यापारियों को समाज में सम्मानजनक स्थान दिया।

188. (B) कर्म
भारतीय जीवन दर्शन में 'कर्म' एक अटल और सार्वभौमिक नियम है। यह मानता है कि व्यक्ति जो कुछ भी आज भोग रहा है, वह उसके पूर्व कार्यों का परिणाम है, और वह आज जो कुछ भी कर रहा है, वह उसके भविष्य को आकार प्रदान करेगा। कर्म का यह सिद्धांत नैतिक उत्तरदायित्व पर बल देता है और यह समझाता है कि कोई भी कार्य निष्फल नहीं जाता। यह केवल वर्तमान जीवन तक सीमित नहीं है, अपितु पुनर्जन्म के चक्र को भी नियंत्रित करता है।

189. (C) सिक्कों का
मुद्राशास्त्र इतिहास के पुनर्निर्माण हेतु एक अनिवार्य पुरातात्विक शाखा है। इसमें सिक्कों की धातु, उनके भार और उन पर अंकित प्रतीकों या लेखों का गहराई से अध्ययन किया जाता है। सिक्के किसी साम्राज्य की आर्थिक स्थिति, व्यापारिक संबंधों और शासकों की वंशावली के विषय में अत्यंत सटीक जानकारी प्रदान करते हैं। उदाहरण हेतु, हिंद-यूनानी राजाओं का अधिकांश इतिहास केवल उनके द्वारा जारी सिक्कों पर आधारित है। यह आर्थिक परिवर्तनों को समझने का भौतिक माध्यम है।

190. (A) केवल 3
सिंधु घाटी सभ्यता अपनी असाधारण नगरीय व्यवस्था हेतु जानी जाती है, जहाँ नगर जाल पद्धति पर आधारित थे और सड़कें समकोण पर काटती थीं। यहाँ की ढकी हुई जल निकासी व्यवस्था समकालीन सभ्यताओं में श्रेष्ठ थी। किंतु, यह कथन त्रुटिपूर्ण है कि वे लोहे का उपयोग करते थे; हड़प्पावासी केवल तांबे और कांसे से परिचित थे। साथ ही, उनकी चित्रात्मक लिपि अभी तक अपठनीय बनी हुई है। अतः, केवल नगरीय नियोजन से संबंधित विवरण ही ऐतिहासिक रूप से सत्य है।

191. (A) ऋग्वैदिक सामाजिक विभाजन लचीले थे, जबकि उत्तर वैदिक काल में एक कठोर वंशानुगत वर्ण व्यवस्था देखी गई।
ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था का स्वरूप कार्यात्मक था, जहाँ व्यक्ति की पहचान उसके कर्म से होती थी, न कि जन्म से। समाज में पर्याप्त गतिशीलता थी और एक ही परिवार के सदस्य पृथक व्यवसाय अपना सकते थे। इसके विपरीत, उत्तर वैदिक काल में कृषि विस्तार और जटिल अनुष्ठानों के कारण सामाजिक श्रेणियां निश्चित हो गईं। अब वर्ण का निर्धारण जन्म से होने लगा, जिससे सामाजिक गतिशीलता समाप्त हो गई। यह परिवर्तन भारतीय सामाजिक इतिहास का महत्वपूर्ण मोड़ था।

192. (B) मल्ल
प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों में शासन की दो मुख्य प्रणालियाँ थीं। मगध और अवंती जैसे राज्य राजतंत्रीय थे जहाँ राजा का सर्वोच्च शासन था। इसके विपरीत, मल्ल और वज्जी गणतंत्रीय राज्य थे। मल्ल राज्य दो भागों में विभक्त था जिनकी राजधानियाँ कुशीनगर और पावा थीं। यहाँ सत्ता किसी एक वंशानुगत राजा के पास न होकर कुलीन क्षत्रिय परिवारों की एक परिषद में निहित थी। मल्ल संघ भगवान बुद्ध के साथ अपने संबंधों हेतु प्रसिद्ध है।

193. (B) जैन धर्म
'स्यादवाद' जैन दर्शन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण बौद्धिक देन है। यह सिद्धांत मानता है कि यथार्थ अत्यंत अनंत और जटिल है कि उसे एक सीमित दृष्टिकोण से पूर्णतः नहीं समझा जा सकता। कोई भी निर्णय किसी विशेष संदर्भ में ही सत्य हो सकता है। यह दर्शन हठधर्मिता को समाप्त कर वैचारिक उदारता और समन्वय की शिक्षा देता है, जो आज के बहुलवादी समाज में भी अत्यंत प्रासंगिक है। यह सत्य की बहुआयामी प्रकृति को स्वीकार करने पर बल देता है।

194. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
'भारतवर्ष' शब्द का उल्लेख ऋग्वेद में नहीं प्राप्त होता, अपितु इसका प्राचीनतम प्रामाणिक उल्लेख खारवेल के हाथीगुंफा शिलालेख और पौराणिक साहित्य में मिलता है। पुराणों में भारतवर्ष को एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई के रूप में परिभाषित किया गया है, जो उत्तर में हिमालय और दक्षिण में समुद्र के मध्य स्थित है। पुराणों के अनुसार, यह वह कर्मभूमि

है जहाँ रहने वाले सभी लोग सांस्कृतिक रूप से एक हैं। अतः भारतवर्ष की यह परिभाषा प्राचीन चेतना का अंग थी।

195. (C) यज्ञ
हिंदू परंपरा में 'संस्कार' व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण हेतु किए जाने वाले अनुष्ठान हैं, जिनकी संख्या सामान्यतः सोलह मानी जाती है। जातकर्म, उपनयन और विवाह जीवन के महत्वपूर्ण संस्कार हैं। 'यज्ञ' एक व्यापक धार्मिक क्रिया है जिसमें देवताओं को आहुति दी जाती है, किंतु इसे स्वयं में एक 'संस्कार' की श्रेणी में नहीं रखा जाता। यज्ञ संस्कारों का एक भाग हो सकते हैं, किंतु वे संस्कार की परिभाषा से पृथक एक स्वतंत्र कर्मकांडीय प्रक्रिया माने जाते हैं।

196. (D) गुप्त
चीनी यात्री फाह्यान ने 5वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान भारत की यात्रा की थी, जो गुप्त साम्राज्य का स्वर्ण युग था। उस समय सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय का शासन था। फाह्यान का मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्मग्रंथों की प्रतियां प्राप्त करना था। उन्होंने अपने विवरणों में गुप्त काल के दौरान मध्य भारत की शांति, समृद्धि और लोगों के अहिंसक व्यवहार की बहुत प्रशंसा की है। यद्यपि उन्होंने राजा का नाम स्पष्ट नहीं लिखा, किंतु उनके द्वारा वर्णित स्थितियाँ गुप्त प्रशासन को प्रमाणित करती हैं।

197. (C) तांबा और पत्थर
ताम्रपाषाण शब्द दो शब्दों 'ताम्र' और 'पाषाण' के मेल से बना है। यह मानव विकास का वह चरण था जब पत्थर के साथ धातु का उपयोग, विशेष रूप से तांबे के रूप में, प्रथम बार प्रारंभ हुआ। यह काल पाषाण युग के अंत और नगरीय कांस्य युग के मध्य ग्रामीण संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करता है। इस काल के लोग तांबे की कुल्हाड़ियाँ बनाने के साथ विशिष्ट प्रकार के चित्रित मृदभांडों का प्रयोग भी करते थे, जो उनके विकसित तकनीकी कौशल को दर्शाता है।

198. (B) गंगा घाटी में लौह तकनीक का प्रसार और कृषि अधिशेष
भारतीय इतिहास में 'द्वितीय नगरीकरण' का उदय छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास हुआ। इस नगरीय क्रांति का मुख्य आधार मध्य गंगा घाटी में लोहे के उपकरणों का व्यापक प्रयोग था। लोहे के हलों और कुल्हाड़ियों ने घने वनों को साफ कर कृषि हेतु विशाल क्षेत्र उपलब्ध कराए, जिससे प्रचुर मात्रा में कृषि अधिशेष उत्पन्न हुआ। इस अधिशेष ने व्यापार को प्रोत्साहित किया, जिसके फलस्वरूप राजगृह और वैशाली जैसे समृद्ध नगर अस्तित्व में आए, जो राजनीतिक शक्ति के केंद्र बने।

199. (D) 'जन' का एक उप-विभाजन
ऋग्वैदिक काल की सामाजिक और राजनीतिक संरचना कबीलाई पिरामिड की भाँति थी। सबसे बड़ी इकाई 'जन' थी, जिसका प्रमुख राजन होता था। 'जन' कई छोटे समूहों में विभक्त था जिन्हें 'विश' कहा जाता था। 'विश' शब्द संभवतः आम लोगों के समूह को दर्शाता था। 'विश' का प्रमुख 'विशपति' कहलाता था। विश के नीचे 'ग्राम' और सबसे छोटी इकाई 'कुल' या परिवार थी। यह विभाजन समाज के संगठित स्वरूप और प्रशासन के क्रमिक स्तरों को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

200. (A) अपनी राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करना और अपने प्रभाव का विस्तार करना
हर्यंक वंश के संस्थापक बिंबिसार एक चतुर कूटनीतिज्ञ थे। उन्होंने मगध की सीमाओं को सुरक्षित करने और अपनी प्रतिष्ठा संवर्धित करने हेतु वैवाहिक गठजोड़ की नीति अपनाई। उन्होंने कोसल की राजकुमारी से विवाह कर काशी का क्षेत्र प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने वैशाली के लिच्छवी राजपरिवार के साथ भी संबंध स्थापित किए। इन गठबंधनों ने न केवल मगध को शक्तिशाली पड़ोसियों के हमलों से सुरक्षित किया, अपितु बिंबिसार को उत्तर भारत की राजनीति में सर्वोच्च स्थान प्रदान किया।

201. (C) पाणिनी की 'अष्टाध्यायी'
'लौकिक' साहित्य वह है जिसका मुख्य विषय प्रत्यक्ष रूप से धार्मिक न होकर सांसारिक विषयों से संबंधित होता है। पाणिनी की 'अष्टाध्यायी' संस्कृत व्याकरण पर लिखा गया विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ है। यह ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तत्कालीन समाज की शब्दावली और जनपदों के विषय में सूचना देता है। जबकि उपनिषद और ब्राह्मण ग्रंथ विशुद्ध रूप से धार्मिक साहित्य का भाग हैं जिनका केंद्र बिंदु यज्ञ और दार्शनिक अनुष्ठान है।

202. (A) ऋषभनाथ
ऋषभनाथ, जिन्हें ऋषभदेव भी कहा जाता है, जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर माने जाते हैं। जैन परंपरा के अनुसार, उन्होंने ही मानव सभ्यता को कृषि और कला जैसी मूलभूत विद्याएं सिखाई थीं। वे इक्ष्वाकु वंश के राजा थे और उन्होंने कालांतर में सांसारिक सुखों का त्याग कर सन्यास धारण किया। ऋषभनाथ का उल्लेख न केवल जैन ग्रंथों में, अपितु भागवत पुराण जैसे हिंदू ग्रंथों में भी एक महान तपस्वी के रूप में प्राप्त होता है। वे जैन धर्म के संस्थापक प्रतीक हैं।

203. (D) एक प्रबुद्ध प्राणी जो दूसरों को निर्वाण प्राप्ति में सहायता करता है
महायान बौद्ध धर्म में 'बोधिसत्व' का आदर्श करुणा की पराकाष्ठा है। यह एक ऐसे प्रबुद्ध व्यक्ति को दर्शाता है जिसने बुद्धत्व प्राप्त करने की योग्यता तो अर्जित कर ली है, किंतु वह अपने स्वयं के निर्वाण के द्वार पर रुक जाता है। वह प्रतिज्ञा करता है कि जब तक संसार का अंतिम पीड़ित प्राणी ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वह मुक्त नहीं होगा। यह अवधारणा व्यक्तिगत मुक्ति के स्थान पर सार्वभौमिक कल्याण और भक्ति पर विशेष बल देती है।

204. (B) व्यक्तियों के लिए निर्धारित कर्तव्य और जीवन के चरण
'वर्णाश्रम धर्म' प्राचीन भारतीय समाज व्यवस्था का वह ढांचा है जो व्यक्ति और समाज के मध्य सामंजस्य स्थापित करता है। इसमें दो प्रणालियों का समावेश है: 'वर्ण', जो समाज के चार वर्गों के सामाजिक और आर्थिक कर्तव्यों को निर्धारित करता है; और 'आश्रम', जो व्यक्ति के जीवन को आयु के आधार पर चार चरणों में विभाजित करता है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती थी कि व्यक्ति अपनी क्षमताओं के अनुसार धर्म का पालन करते हुए समाज में अपना बहुमूल्य योगदान दे सके।

205. (C) एक गृहस्थ द्वारा किए जाने वाले पाँच दैनिक यज्ञ
'पंच महायज्ञ' प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्रों द्वारा एक सामान्य गृहस्थ हेतु निर्धारित दैनिक अनिवार्य कर्तव्य थे। ये यज्ञ अत्यंत सरल थे और इनका उद्देश्य ब्रह्मांड के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना था। इनमें ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, नृ यज्ञ और भूत यज्ञ सम्मिलित थे। ये यज्ञ सिखाते थे कि मनुष्य का जीवन केवल उसके परिवार हेतु नहीं है, अपितु वह देवताओं, पूर्वजों, मानवता और संपूर्ण प्रकृति के प्रति भी नैतिक रूप से उत्तरदायी है।

206. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
8वीं से 11वीं शताब्दी के दौरान भारत आए अरब यात्रियों के विवरण पूर्व-मध्यकालीन इतिहास हेतु प्राथमिक स्रोत हैं। सुलेमान और अल-मसूदी जैसे लेखकों ने अपने वृत्तांतों में उत्तर भारत के गुर्जर-प्रतिहारों और राष्ट्रकूट शासकों की शक्ति का विस्तृत वर्णन किया है। उन्होंने तत्कालीन भारतीय व्यापार, सामाजिक रीति-रिवाजों और भारतीय राजाओं की विशाल सेनाओं की बहुत प्रशंसा की है। ये विवरण तत्कालीन राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता को समझने हेतु इतिहासकारों के लिए अत्यंत उपयोगी और प्रमाणिक सिद्ध होते हैं।

207. (A) पुरापाषाण काल के औजार भारी थे, जबकि मध्यपाषाण काल के औजार सूक्ष्म पाषाण उपकरण थे।
पुरापाषाण और मध्यपाषाण युगों के मध्य तकनीकी विकास का सर्वाधिक बड़ा अंतर पत्थर के उपकरणों के आकार में था। पुरापाषाण काल में मानव हस्त-कुठार जैसे बड़े और भारी औजारों का उपयोग करता था जो बड़े पशुओं के शिकार हेतु थे। मध्यपाषाण काल में जलवायु के परिवर्तन के साथ शिकार के तरीके परिवर्तित हुए। मनुष्य ने 'सूक्ष्म पाषाण उपकरण' निर्मित करने प्रारंभ किए, जो अत्यंत छोटे थे। इन्हें लकड़ी के हत्थों में जड़कर अधिक प्रभावी तीर और भाले तैयार किए गए।

208. (B) 2600-1900 ईसा पूर्व
सिंधु घाटी सभ्यता के इतिहास को तीन चरणों में विभक्त किया गया है। 'परिपक्व हड़प्पा चरण' वह समय था जब यह सभ्यता अपनी उन्नति के चरमोत्कर्ष पर थी। 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व के मध्य की यह अवधि मानकीकृत ईंटों, जाल आधारित नगरीय नियोजन, विकसित जल निकासी व्यवस्था और समृद्ध विदेशी व्यापार द्वारा पहचानी जाती है। इसी दौरान हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे बड़े नगरों का पूर्ण विकास हुआ। यह काल उपमहाद्वीप में प्रथम नगरीकरण का गौरवशाली अध्याय है।

209. (B) नगरों के पतन और आर्यों के आगमन के बीच कालानुक्रमिक अंतर
हड़प्पा सभ्यता के पतन हेतु पूर्व में 'आर्य आक्रमण' को प्रमुख कारण माना जाता था, किंतु आधुनिक इतिहासकारों ने इसे अस्वीकार कर दिया है। पुरातात्विक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि हड़प्पा नगरों के पतन की प्रक्रिया लगभग 1900 ईसा पूर्व में प्रारंभ हुई थी, जबकि आर्यों के आगमन के साक्ष्य 1500 ईसा पूर्व के आसपास के हैं। इस 400 वर्षों के लंबे अंतराल ने इस सिद्धांत को आधारहीन बना दिया है। इसके स्थान पर अब जलवायु परिवर्तन और बाढ़ जैसे प्राकृतिक कारणों को अधिक मान्यता प्राप्त है।

210. (A) पूर्ववर्ती देवताओं की तुलना में प्रजापति, विष्णु और रुद्र का उदय
उत्तर वैदिक काल में ऋग्वैदिक काल की सरल प्रकृति पूजा का स्थान एक अधिक जटिल और अनुष्ठानिक धार्मिक व्यवस्था ने ले लिया। ऋग्वेद के मुख्य देवताओं जैसे इंद्र और अग्नि का प्रभाव क्षीण हो गया। उनके स्थान पर प्रजापति, विष्णु और रुद्र को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ। इस काल में यज्ञ अधिक विस्तृत, खर्चीले और पुरोहितों पर निर्भर हो गए, जिससे समाज में धार्मिक कर्मकांडों का प्रभुत्व संवर्धित हुआ और अंततः उपनिषदों के दार्शनिक विरोध का मार्ग प्रशस्त हुआ।

211. (C) कलिंग
प्राचीन बौद्ध और जैन ग्रंथों में वर्णित सोलह महाजनपदों की सूची में 'कलिंग' का नाम सम्मिलित नहीं है। कलिंग वर्तमान ओडिशा के क्षेत्र में स्थित एक शक्तिशाली राज्य था, किंतु वह बुद्ध के समय के इन सोलह क्षेत्रीय राज्यों की मानक सूची से पृथक था। सोलह महाजनपदों में गंधार, कंबोज और मत्स्य जैसे राज्य सम्मिलित थे जो उस समय की प्रमुख राजनीतिक शक्तियां थे। कलिंग कालांतर में मौर्य काल के दौरान, विशेष रूप से अशोक के आक्रमण के समय एक शक्तिशाली राज्य बना।

212. (D) अंग
बिंबिसार ने मगध को एक साम्राज्य बनाने की शुरुआत 'अंग' महाजनपद की विजय के साथ की थी। अंग मगध के पूर्व में स्थित था और इसकी राजधानी चंपा अपने समृद्ध नदी व्यापार हेतु विख्यात थी। बिंबिसार ने अंग के राजा को पराजित कर उसके राज्य को मगध में सम्मिलित कर लिया। इस विजय ने मगध को न केवल अतिरिक्त भूभाग प्रदान किया, अपितु गंगा के माध्यम से होने वाले लाभदायक व्यापारिक मार्गों पर भी नियंत्रण प्रदान किया। यह मगध के विस्तार का प्रथम सैन्य चरण था।

213. (C) स्मृति
रामायण और महाभारत को भारतीय साहित्य की 'स्मृति' श्रेणी के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। 'स्मृति' का अर्थ है वह ज्ञान जो ऋषियों द्वारा स्मरण रखा गया और कालांतर में संकलित किया गया। ये ग्रंथ 'इतिहास' का भाग माने जाते हैं, जो जीवन के नैतिक और सामाजिक आदर्शों को आख्यानों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं। 'श्रुति' के विपरीत, जो दैवीय मूल के माने जाते हैं, स्मृति साहित्य मानवीय रचनाएं हैं। ये महाकाव्य सदियों तक भारतीय समाज के सांस्कृतिक मार्गदर्शन का मुख्य आधार रहे हैं।

214. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल वर्तमान भारत के विभिन्न राज्यों में विस्तृत हैं। कालीबंगन राजस्थान में स्थित है, जो अपने जुते हुए खेतों हेतु प्रसिद्ध है। लोथल गुजरात के तट पर स्थित एक प्रमुख बंदरगाह नगर था। राखीगढ़ी हरियाणा में स्थित है

और यह भारत के विशालतम हड़प्पा स्थलों में से एक माना जाता है। रोपड़ पंजाब में सतलुज नदी के तट पर स्थित है, जहाँ स्वतंत्रता के पश्चात प्रथम उत्खनन किया गया था। ये स्थल सभ्यता के व्यापक भौगोलिक विस्तार को दर्शाते हैं।

215. (D) सिकंदर द्वारा नंद वंश का तत्काल पतन
सिकंदर के भारत आक्रमण ने कई ऐतिहासिक परिवर्तन किए, किंतु उसने कभी सीधे मगध के नंद साम्राज्य का सामना नहीं किया और न ही उसका पतन किया। सिकंदर की सेना ब्यास नदी के तट से ही लौट गई थी क्योंकि वे नंदों की सैन्य शक्ति से भयभीत थे। यद्यपि उसके आक्रमण ने उत्तर-पश्चिमी भारत के छोटे राज्यों को दुर्बल कर दिया, जिससे चंद्रगुप्त मौर्य हेतु उन्हें एकीकृत करना सुलभ हुआ। सिकंदर के आक्रमण ने व्यापारिक मार्ग खोले थे, किंतु नंदों का अंत मौर्यों द्वारा हुआ था।

216. (A) ब्रह्मांडीय नियम और नैतिक व्यवस्था
'ऋत' वैदिक विचारधारा की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और मौलिक अवधारणा है। यह संपूर्ण ब्रह्मांड के पीछे की अदृश्य और अनिवार्य व्यवस्था को संदर्भित करता है। यह वह नियम है जो प्राकृतिक घटनाओं की नियमितता, जैसे दिन-रात का चक्र और ऋतुओं का परिवर्तन, को नियंत्रित करता है। ऋत केवल भौतिक नियमों तक सीमित नहीं है, अपितु यह एक नैतिक आदर्श भी है जो सत्य के मार्ग को दर्शाता है। देवताओं, विशेष रूप से वरुण देव को 'ऋत' का मुख्य संरक्षक माना जाता था।

217. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उत्तर वैदिक काल में राजनीतिक संरचना में भारी परिवर्तन आया। ऋग्वैदिक काल की लोकतांत्रिक संस्थाएं जैसे सभा और समिति, जो राजा के चयन में प्रभावी भूमिका निभाती थीं, अपनी शक्ति खोने लगीं। जैसे-जैसे जनपद बड़े राज्यों में परिवर्तित हुए और राजा का पद वंशानुगत हुआ, उसने इन सभाओं के नियंत्रण को स्वीकार करना बंद कर दिया। राजा अब दैवीय शक्तियों का दावा करने लगा और पुरोहितों के सहयोग से अपनी निरंकुश सत्ता स्थापित की, जिससे जनभागीदारी का प्रभाव गौण हो गया।

218. (A) यजुर्वेद
'शतपथ ब्राह्मण' यजुर्वेद का एक अत्यंत विशाल और महत्वपूर्ण गद्य ग्रंथ है। यह उत्तर वैदिक काल के इतिहास, विशेष रूप से आर्यों के गंगा के मैदान की ओर विस्तार की जानकारी का प्राथमिक स्रोत है। इसमें विदेह माधव की कथा के माध्यम से वनों की स्वच्छता और कृषि के प्रसार का सुंदर वर्णन प्राप्त होता है। साथ ही, यह ग्रंथ विस्तृत यज्ञ अनुष्ठानों, सामाजिक संरचना और धार्मिक दर्शन की सूक्ष्म व्याख्या प्रस्तुत करता है। इसे ऐतिहासिक महत्व के कारण ब्राह्मण साहित्य का प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है।

219. (D) बुद्ध के पूर्व जन्म
'जातक कथाएँ' बौद्ध साहित्य का एक अत्यंत लोकप्रिय और महत्वपूर्ण भाग हैं। ये कहानियाँ भगवान बुद्ध के बुद्धत्व प्राप्त करने से पूर्व के पिछले जन्मों से संबंधित हैं। बौद्ध धर्म के अनुसार, बुद्ध ने मनुष्य और पशु के रूप में अनेक जन्म लिए थे और प्रत्येक जन्म में उन्होंने करुणा और त्याग का प्रदर्शन किया था। इन कथाओं का ऐतिहासिक महत्व यह है कि ये न केवल नैतिक शिक्षाएं देती हैं, अपितु प्राचीन भारत के सामान्य लोगों के दैनिक जीवन और तत्कालीन सामाजिक स्थितियों का चित्रण करती हैं।

220. (B) केवल 1 और 3
प्राचीन भारत पर विदेशी आक्रमणों ने गहरा ऐतिहासिक प्रभाव डाला। फारसी सम्राट दारा प्रथम ने छठी शताब्दी ईसा पूर्व में उत्तर-पश्चिम भारत पर अधिकार किया, जिससे इस क्षेत्र में प्रशासनिक परिवर्तन आए। किंतु, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि सिकंदर ने सिंधु के तट पर पोरस का सामना किया; वास्तव में उनका युद्ध झेलम नदी के तट पर हुआ था। इन आक्रमणों का सर्वाधिक सकारात्मक पक्ष यह था कि इनके कारण नवीन व्यापारिक मार्ग खुले और भारत का पश्चिम के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान सुदृढ़ हुआ।

221. (C) अर्थ
पुरुषार्थ के चार सोपानों में 'अर्थ' का विशेष महत्व है क्योंकि यह जीवन के भौतिक और आर्थिक पक्ष को संबोधित करता है। 'अर्थ' का तात्पर्य केवल धन संचय नहीं है, अपितु उन सभी संसाधनों और कौशलों की प्राप्ति है जो परिवार के भरण-पोषण और समाज के प्रति उत्तरदायित्वों को निभाने हेतु आवश्यक हैं। कौटिल्य जैसे विचारकों ने अर्थ को अन्य पुरुषार्थों का आधार माना है क्योंकि बिना आर्थिक स्थिरता के धर्म का पालन करना कठिन होता है। यह भारतीयों के व्यावहारिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

222. (D) पूर्वजों के प्रति ऋण
प्राचीन भारतीय विचारधारा में 'पितृ ऋण' उस नैतिक और धार्मिक दायित्व को दर्शाता है जो प्रत्येक व्यक्ति पर उसके पूर्वजों के प्रति होता है। इस ऋण से मुक्ति का एकमात्र मार्ग विवाह करना, संतानोत्पत्ति करना और अपने कुल की परंपरा को आगे बढ़ाना माना गया है। संतान के माध्यम से वंश का निरंतर बना रहना ही पूर्वजों के प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि समझी जाती थी। यह सिद्धांत परिवार की निरंतरता और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को एक पवित्र कर्तव्य के रूप में स्थापित करता था।

223. (A) आर्थिक स्थितियाँ, राज्यों का विस्तार और उस काल की कला
सिक्के इतिहास के एक ठोस और प्रत्यक्ष भौतिक प्रमाण होते हैं। मुद्राशास्त्र के माध्यम से हम किसी काल की आर्थिक समृद्धि का पता लगा सकते हैं, क्योंकि प्रयुक्त धातु की शुद्धता साम्राज्य की आर्थिक स्थिति को दर्शाती है। सिक्कों के प्राप्ति स्थलों से उस राज्य की भौगोलिक सीमाओं और व्यापारिक जाल का ज्ञान होता है। इसके अतिरिक्त, सिक्कों पर अंकित चित्र तत्कालीन वेशभूषा और धार्मिक प्रतीकों के माध्यम से उस युग की कला और संस्कृति पर भी अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रकाश डालते हैं।

224. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
नवपाषाण काल को मानव सभ्यता के इतिहास में एक महान क्रांतिकारी युग माना जाता है। इस काल में मनुष्य ने पहली बार प्रकृति द्वारा प्रदत्त भोजन पर निर्भर रहने के स्थान पर स्वयं अनाज उगाना प्रारंभ किया। कृषि की शुरुआत ने मनुष्य को खानाबदोश जीवन त्यागने हेतु विवश किया क्योंकि फसलों की देखभाल हेतु एक ही स्थान पर रुकना अनिवार्य था। इसके परिणामस्वरूप स्थायी आवासों का निर्माण हुआ और व्यवस्थित ग्राम समुदायों का जन्म हुआ, जिसने भविष्य की जटिल सभ्यताओं के विकास की सुदृढ़ नींव रखी।

225. (B) इंद्र
सिंधु घाटी सभ्यता की धार्मिक मान्यताओं के कई तत्व आज भी आधुनिक हिंदू धर्म में जीवित हैं, किंतु 'इंद्र' इस श्रेणी में नहीं आते। इंद्र मुख्य रुप से ऋग्वैदिक काल के योद्धा देवता हैं जो परवर्ती आर्यों के साथ प्रमुखता में आए। इसके विपरीत, हड़प्पाकालीन मुहरों में पाए गए पशुपति, मातृ देवी की पूजा और पीपल के वृक्ष का धार्मिक महत्व आज भी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। यह सांस्कृतिक निरंतरता प्राचीन भारत की गहरी जड़ों और परंपराओं के अटूट प्रभाव को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करती है।

226. (A) जनजातीय सरदारी से क्षेत्रीय राजतंत्र की ओर परिवर्तन
वैदिक युग की राजनीतिक यात्रा कबीलाई पहचान से भौगोलिक पहचान की ओर एक क्रमिक विकास थी। ऋग्वैदिक काल में 'राजन' केवल अपने कबीले का नेता था और उसकी शक्ति उसके लोगों की वफादारी पर निर्भर थी। उत्तर वैदिक काल में लोहे के प्रयोग और स्थायी खेती ने लोगों को विशिष्ट क्षेत्रों में बसने हेतु प्रेरित किया। अब राजा कबीले के स्थान पर 'क्षेत्र' का स्वामी बन गया। राजा की उपाधियाँ भव्य हो गईं और उसने अपने अधिकार को सुदृढ़ करने हेतु एक स्थायी प्रशासनिक ढांचा विकसित करना प्रारंभ किया।

227. (C) आहत सिक्कों का प्रयोग और व्यापार का उदय
महाजनपद काल में भारतीय अर्थव्यवस्था में एक युगांतकारी परिवर्तन 'आहत सिक्कों' की शुरुआत थी। धातु मुद्रा के आगमन से वस्तु विनिमय की कठिनाइयाँ समाप्त हो गईं और व्यापार का मानकीकरण हुआ। चांदी के इन सिक्कों ने लंबी दूरी के व्यापार को सुगम बनाया, जिससे व्यापारियों और शिल्पकारों की श्रेणियाँ समृद्ध हुईं। आर्थिक अधिशेष और मुद्रा प्रणाली ने न केवल नगरीकरण को प्रोत्साहित किया, अपितु शक्तिशाली साम्राज्यों के गठन हेतु आवश्यक विशाल राजस्व एकत्र करने में भी राजाओं की अत्यधिक सहायता की।

228. (D) शिशुनाग वंश
मगध पर शासन करने वाले हर्यंक वंश का अंत 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में हुआ जब अंतिम शासक को जनता ने अयोग्य मानकर सत्ता से हटा दिया। उसके स्थान पर उसके कुशल अमात्य 'शिशुनाग' को राजा निर्वाचित किया गया। शिशुनाग ने ही शिशुनाग वंश की स्थापना की। इस वंश ने मगध की शक्ति को नवीन ऊंचाइयों पर पहुँचाया, विशेष रुप से अवंती के साथ चल रहे सदियों पुराने संघर्ष को समाप्त कर उसे मगध में मिला लिया। इसके पश्चात ही नंदों और मौर्यों के विशाल साम्राज्यों का उदय संभव हुआ।

229. (C) जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति का मार्ग खोजना
छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धार्मिक आंदोलनों का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन के दुखों का स्थायी समाधान खोजना था। जैन और बौद्ध दोनों धर्मों ने यह स्वीकार किया कि संसार दुखों से व्याप्त है और आत्मा जन्म-मरण के अनंत चक्र में आबद्ध है। जैन धर्म ने त्रिरत्न और कठोर तपस्या के माध्यम से कर्मों के क्षय का मार्ग सुझाया, जबकि बौद्ध धर्म ने मध्यम मार्ग और अष्टांगिक मार्ग द्वारा निर्वाण प्राप्ति पर बल दिया। दोनों का अंतिम साध्य व्यक्ति को सांसारिक बंधन से मुक्त कर परम शांति की ओर ले जाना था।

230. (B) शक और कुषाणों द्वारा
'क्षत्रप' प्रणाली मूल रुप से फारसी प्रशासन की देन थी, जिसे भारत में परवर्ती विदेशी आक्रमणकारियों ने बड़े स्तर पर अपनाया। मौर्यों के पतन के पश्चात आए शक और कुषाण शासकों ने अपने विशाल भारतीय विजित क्षेत्रों पर नियंत्रण रखने हेतु उन्हें कई प्रांतों में विभाजित किया और वहां 'क्षत्रपों' की नियुक्ति की। विशेष रुप से पश्चिमी क्षत्रप इस प्रणाली के प्रसिद्ध उदाहरण हैं। इन क्षत्रपों के पास पर्याप्त प्रशासनिक और सैन्य स्वायत्तता होती थी, जो प्राचीन भारत की विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था का हिस्सा बनी।

231. (D) संस्कृत व्याकरण
पाणिनी द्वारा रचित 'अष्टाध्यायी' संस्कृत भाषा का प्राचीनतम और सर्वाधिक प्रामाणिक व्याकरण ग्रंथ है। लगभग 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में लिखा गया यह ग्रंथ आठ अध्यायों में विभक्त है। पाणिनी ने संस्कृत भाषा को नियमों में आबद्ध कर उसे एक सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक स्वरुप प्रदान किया। यह ग्रंथ न केवल भाषा विज्ञान हेतु महत्वपूर्ण है, अपितु इसमें तत्कालीन भारत के विभिन्न जनपदों, कबीलों और सामाजिक रीति-रिवाजों का भी उल्लेख मिलता है, जो इसे एक अमूल्य और विश्वसनीय ऐतिहासिक दस्तावेज बनाता है।

232. (A) कश्मीर
कश्मीर घाटी के बुर्जहोम और गुफकराल जैसे स्थल उत्तर भारतीय नवपाषाण संस्कृति की अनूठी विशेषताओं हेतु प्रसिद्ध हैं। यहाँ के लोग तीव्र शीत से बचने हेतु भूमि के अंदर 'गर्त-आवास' निर्मित कर रहते थे। इन स्थलों की एक और विशिष्ट विशेषता यह है कि यहाँ कब्रों में स्वामियों के साथ उनके पालतू कुत्तों को दफनाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यहाँ से प्राप्त पत्थर और हड्डियों के पॉलिश किए हुए उपकरण तथा धूसर मृदभांड तत्कालीन निवासियों के उन्नत जीवन कौशल और उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं।

233. (C) अकाल के दौरान भिक्षुओं के एक समूह का दक्षिण की ओर प्रवासन
जैन धर्म का दो प्रमुख संप्रदायों में विभाजन मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के दौरान हुआ। मगध में पड़े एक भीषण बारह वर्षीय अकाल के कारण भद्रबाहु के नेतृत्व में भिक्षुओं

का एक समूह दक्षिण भारत चला गया। जब वे वापस लौटे, तो उन्होंने पाया कि स्थूलभद्र के नेतृत्व में मगध में रहने वाले भिक्षुओं ने श्वेत वस्त्र धारण करना प्रारंभ कर दिया था। इस मतभेद के कारण जैन धर्म 'श्वेतांबर' और 'दिगंबर' दो समूहों में विभाजित हो गया, जिनके आचरण और धार्मिक नियमों में स्पष्ट भिन्नता थी।

234. (A) धम्म का संदेश प्रसारित करने के लिए नियुक्त विशेष अधिकारी
सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के पश्चात अपनी नीतियों में क्रांतिकारी परिवर्तन किया और 'धम्म' के प्रचार को राज्य का मुख्य साध्य बनाया। इस धम्म को जनता तक पहुँचाने और उसे लागू करने हेतु उन्होंने 'धम्म-महामत्त' नामक एक नवीन प्रशासनिक वर्ग की नियुक्ति की। इन अधिकारियों का मुख्य कार्य समाज के विभिन्न वर्गों और विदेशों में भी धम्म का संदेश प्रसारित करना, लोगों के मध्य सद्भाव संवर्धित करना और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना था। यह अशोक के जनकल्याणकारी और मानवीय दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण अंग था।

235. (D) विस्तारवादी मगध राजतंत्र
छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में गणराज्यों और राजतंत्रों के मध्य सत्ता का भीषण संघर्ष हुआ। वज्जी और मल्ल जैसे शक्तिशाली गण-संघों ने लंबे समय तक अपनी स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक व्यवस्था को बनाए रखा। किंतु, मगध के राजाओं, विशेष रूप से अजातशत्रु और महापद्म नंद की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं के समक्ष ये गणराज्य अधिक समय तक नहीं टिक सके। मगध ने अपनी विशाल सैन्य शक्ति और कूटनीतिक चालों के माध्यम से धीरे-धीरे इन सभी गणराज्यों को विजित कर अपने साम्राज्य में मिला लिया।

236. (B) एक धनी व्यापारी
बौद्ध परंपरा के अनुसार, राजकुमार सिद्धार्थ का हृदय परिवर्तन उन 'चार महान दृश्यों' के कारण हुआ था जिन्होंने उन्हें जीवन की नश्वरता का बोध कराया। कपिलवस्तु के भ्रमण के दौरान उन्होंने क्रमशः एक वृद्ध व्यक्ति, एक रोगी, एक शव और अंततः एक शांत संन्यासी को देखा। प्रथम तीन दृश्यों ने उन्हें बुढ़ापे, व्याधि और मृत्यु के अपरिहार्य दुखों से परिचित कराया, जबकि संन्यासी के दृश्य ने उन्हें इन दुखों से मुक्ति पाने की प्रेरणा दी। इन घटनाओं के प्रभाव में उन्होंने गृह त्याग का कठोर निर्णय लिया था।

237. (C) वन में निवृत्त होना और ध्यान का जीवन व्यतीत करना
आश्रम व्यवस्था में 'वानप्रस्थ' तृतीय चरण है जो लगभग 50 से 75 वर्ष की आयु के मध्य आता है। यह पारिवारिक उत्तरदायित्वों से मुक्ति और पूर्ण संन्यास के मध्य का एक संक्रमणकालीन दौर है। इस अवस्था में व्यक्ति अपने गृह और संपत्ति का त्याग कर वन में निवास करता है और अपनी इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण पाने हेतु आध्यात्मिक साधना और ध्यान में संलग्न होता है। यद्यपि वह समाज से पूर्णतः पृथक नहीं होता, किंतु उसका मुख्य ध्यान अब आत्म-साक्षात्कार और आगामी संन्यास हेतु मानसिक तैयारी करना होता है।

238. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
सिंधु घाटी सभ्यता अपनी व्यापकता और मानकीकरण हेतु प्रसिद्ध है, किंतु इसे पूर्णतः एकरूप नहीं माना जा सकता। यद्यपि हड़प्पा और कालीबंगन जैसे नगरों में जाल पद्धति और ईंटों के आकार में समानता थी, फिर भी स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर क्षेत्रीय विविधताएँ विद्यमान थीं। उदाहरण हेतु, धोलावीरा में पत्थर का अधिक उपयोग हुआ है, जबकि कालीबंगन में कच्ची ईंटों का। मृदभांडों की शैली और समाधान की विधियों में भी भिन्नता देखी गई है, जो सभ्यता के भीतर सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती है।

239. (A) सूर्य
सामवेद भारतीय संगीत का प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है और यह मुख्य रूप से ऋग्वेद के उन मंत्रों का संकलन है जिन्हें विशेष धुनों पर गाया जाता था। सामवेद के भजनों का केंद्र बिंदु 'सूर्य' को माना जाता है, जिन्हें ऊर्जा और प्रकाश के अटूट स्रोत के रूप में पूजा जाता था। यद्यपि इसमें अन्य देवताओं की भी स्तुति है, किंतु पारंपरिक रूप से इसका मुख्य संबंध सूर्य और पवित्र 'सोम' रस से है। सामवेद के मंत्रों का गायन विशेष रूप से यज्ञों के अवसर पर 'उद्गाता' नामक पुरोहितों द्वारा संपन्न किया जाता था।

240. (B) वैशाली
द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन बुद्ध के महापरिनिर्वाण के लगभग सौ वर्ष पश्चात, 383 ईसा पूर्व में वैशाली में किया गया था। इस सभा को मगध के राजा कालाशोक का संरक्षण प्राप्त था। इस संगीति का मुख्य कारण वैशाली के भिक्षुओं द्वारा अनुशासन के कुछ नियमों में ढील देने के कारण उत्पन्न विवाद था। यद्यपि विवाद सुलझाने का पूर्ण प्रयास किया गया, किंतु अंततः बौद्ध संघ दो समूहों में विभाजित हो गया: 'स्थविर' और 'महासांघिक'। यह बौद्ध धर्म के इतिहास में प्रथम औपचारिक विभाजन की शुरुआत मानी जाती है।

241. (A) III, I, IV, II
आश्रम व्यवस्था मानव जीवन को सौ वर्षों की औसत आयु मानकर चार समान चरणों में विभाजित करती है। प्रथम चरण 'ब्रह्मचर्य' है, जो शिक्षा और संयमित जीवन हेतु है। द्वितीय 'गृहस्थ' है, जिसमें विवाह और सामाजिक उत्तरदायित्व निर्वाह किए जाते हैं। तृतीय 'वानप्रस्थ' है, जहाँ व्यक्ति धीरे-धीरे सांसारिक मोह त्यागकर आध्यात्मिक चिंतन की ओर उन्मुख होता है। अंतिम चरण 'संन्यास' है, जो मोक्ष की प्राप्ति हेतु संसार का पूर्ण त्याग करने की अवस्था है। यह विकास व्यक्ति को आध्यात्मिक पूर्णता की ओर ले जाता है।

242. (A) मसालों, वस्त्रों और रत्नों जैसी विलासिता की वस्तुएं
प्रथम और द्वितीय शताब्दी ईस्वी में भारत और रोमन साम्राज्य के मध्य व्यापार अपने चरमोत्कर्ष पर था। रोमन लेखक प्लिनी ने अपनी पुस्तक में भारत की विलासिता की वस्तुओं, विशेष रूप से काली मिर्च, सूक्ष्म मलमल और रत्नों के बदले में रोम के स्वर्ण के भारी निकास पर गहरी चिंता व्यक्त की थी। उन्होंने खेद व्यक्त किया था कि रोमन साम्राज्य का बहुमूल्य सोना प्रतिवर्ष भारत चला जाता है ताकि रोम के धनी लोग भारतीय

सुख-सुविधाओं का आनंद ले सकें। यह व्यापार संतुलन पूर्णतः भारत के पक्ष में था।

243. (C) लौह तकनीक के कारण कृषि अधिशेष का उत्पादन
छठी शताब्दी ईसा पूर्व में गंगा घाटी में नगरीकरण की द्वितीय लहर का मुख्य प्रेरक कारक लोहे का व्यापक उपयोग था। लोहे की कुल्हाड़ियों ने गंगा के घने वनों को स्वच्छ करना सुगम बना दिया और लोहे के हलों ने गहरी जुताई को संभव किया। इससे कृषि उत्पादन, विशेष रुप से धान की रोपाई की तकनीक से, अत्यधिक बढ़ गया। जब कृषकों के पास अपनी खपत से अधिक अनाज होने लगा, तो इसने व्यापार और अंततः नगरीय केंद्रों के विकास को जन्म दिया। यह आर्थिक प्रगति ही द्वितीय नगरीकरण का आधार बनी।

244. (C) P-2, Q-1, R-4, S-3
ऋग्वैदिक देवकुल में प्रत्येक देवता का एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण कार्य निर्धारित था। इंद्र युद्ध और वज्र के स्वामी थे जो वर्षा और विजय सुनिश्चित करते थे। अग्नि को देवताओं का मुख माना जाता था और वे मनुष्यों की आहुति देवताओं तक पहुँचाने वाले मध्यस्थ थे। वरुण 'ऋत' या ब्रह्मांडीय नैतिक व्यवस्था के रक्षक थे जो अनैतिकता का दमन करते थे। सोम एक वनस्पति और उससे बने पवित्र पेय के अधिपति थे, जिसका उपयोग यज्ञों में देवताओं को प्रसन्न करने हेतु किया जाता था। ये देवता प्रकृति की शक्ति दर्शाते हैं।

245. (C) वे संप्रदाय जिन्होंने वेदों की सत्ता को अस्वीकार कर दिया
भारतीय दर्शन में 'नास्तिक' शब्द का अर्थ आधुनिक अर्थों में ईश्वर को न मानने वाला नहीं है। प्राचीन काल में, नास्तिक उन दर्शनों या संप्रदायों को कहा जाता था जो वेदों को अंतिम प्रमाण या दैवीय नहीं मानते थे। इसमें मुख्य रूप से बौद्ध धर्म, जैन धर्म और चार्वाक सम्मिलित थे। इसके विपरीत, सांख्य और न्याय जैसे दर्शन 'आस्तिक' कहलाते थे क्योंकि वे वेदों के अधिकार को पूर्णतः स्वीकार करते थे। यह वर्गीकरण तत्कालीन समाज में वैदिक वर्चस्व के प्रति दार्शनिक असहमति को स्पष्ट करने हेतु प्रयुक्त होता था।

246. (B) मौर्य दरबारी कला और खरोष्ठी लिपि के प्रयोग में
भारत पर फारसी आक्रमणों का सर्वाधिक स्थायी प्रभाव प्रशासन और कला के क्षेत्र में दृष्टिगोचर हुआ। उत्तर-पश्चिम में अरामी लिपि से विकसित खरोष्ठी लिपि का प्रयोग अशोक के शिलालेखों में स्पष्ट रूप से मिलता है। इसके अतिरिक्त, मौर्य सम्राट अशोक द्वारा एकाश्मक पत्थरों के भव्य स्तंभों का निर्माण और उन पर की गई अद्भुत चमक, साथ ही शाही दरबार के कुछ शिष्टाचार, फारसी स्थापत्य और दरबारी परंपराओं से प्रभावित माने जाते हैं। यह संपर्क दो महान सभ्यताओं के मध्य कलात्मक आदान-प्रदान का एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

247. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उपनिषद वैदिक साहित्य के विकास में एक वैचारिक क्रांति का प्रतिनिधित्व करते हैं। जहाँ प्रारंभिक वेदों और ब्राह्मण ग्रंथों में बाह्य कर्मकांडों और पशु बलि वाले यज्ञों पर बहुत अधिक बल दिया गया था, वहीं उपनिषदों ने इन प्रथाओं को 'जर्जर नौका' के समान बताया। उन्होंने मनुष्य का ध्यान बाहरी विश्व से हटाकर आंतरिक जगत और आत्मा की खोज की ओर उन्मुख किया। उपनिषदों का मुख्य तर्क यह है कि परम शांति और मुक्ति कर्मकांडों से नहीं, अपितु आत्मा और ब्रह्म की एकता के वास्तविक ज्ञान से ही प्राप्त हो सकती है।

248. (A) राज्य द्वारा एकत्रित किया जाने वाला एक अनिवार्य कर
ऋग्वैदिक काल में 'बलि' पूर्णतः स्वैच्छिक थी, जहाँ कबीले के लोग अपने राजन को स्वेच्छा से उपहार देते थे। किंतु, उत्तर वैदिक काल और महाजनपद युग में जैसे-जैसे राज्यों का आकार संवर्धित हुआ, बलि का स्वरूप परिवर्तित हो गया। अब यह राजा का अधिकार और प्रजा का कर्तव्य बन गया। महाजनपद काल में इसे नियमित रुप से वसूला जाने वाला अनिवार्य भूमि कर बना दिया गया, जो उपज का सामान्यतः छठा भाग होता था। इस कर ने एक स्थायी नौकरशाही और सेना को बनाए रखने हेतु वित्तीय आधार प्रदान किया।

249. (C) अहिंसा
बौद्ध धर्म में 'त्रिरत्न' वे तीन आधारभूत स्तंभ हैं जिन पर पूरा संघ और अनुयायियों की श्रद्धा टिकी होती है। ये 'बुद्ध', 'धम्म' और 'संघ' हैं। जब कोई बौद्ध धर्म स्वीकार करता है, तो वह इन तीनों की शरण में जाने की प्रतिज्ञा करता है। यद्यपि 'अहिंसा' बौद्ध धर्म का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत और शील है, किंतु उसे औपचारिक रूप से त्रिरत्न की सूची में पृथक से सम्मिलित नहीं किया गया है। अहिंसा धम्म का ही एक अनिवार्य अंग मानी जाती है, जो नैतिक जीवन हेतु आवश्यक आधार प्रदान करती है।

250. (B) केवल 1 और 2
बौद्ध और जैन धर्म दोनों की उत्पत्ति ब्राह्मणवादी कर्मकांडों के विरोध में हुई थी। इन दोनों धर्मों के संस्थापक क्षत्रिय राजकुमार थे जिन्होंने सत्य की खोज में राजसी सुखों का त्याग किया था। उन्होंने अपनी शिक्षाओं को जनमानस तक पहुँचाने हेतु कठिन संस्कृत के स्थान पर तत्कालीन लोकभाषाओं का प्रयोग किया, जिससे वे अत्यंत लोकप्रिय हुए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों ने वेदों की सर्वोच्च सत्ता और उनकी पशु बलि वाली प्रथाओं को पूर्णतः नकार दिया था। अतः वेदों को स्वीकार करने का कथन पूर्णतः असत्य है।

251. (D) इसके लेखक ज्ञात हैं, और यह सांसारिक विषयों से संबंधित है।
लौकिक साहित्य प्राचीन भारत के उन ग्रंथों का समूह है जो धार्मिक उपदेशों के स्थान पर मानव जीवन के व्यावहारिक और सांसारिक पहलुओं को संबोधित करते हैं। इन ग्रंथों की सर्वाधिक बड़ी विशेषता यह है कि इनके रचयिताओं का ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध है, जैसे कालिदास या कौटिल्य। इनका विषय क्षेत्र अत्यंत व्यापक है, जिसमें राजनीति, कानून, अर्थशास्त्र और नाटक सम्मिलित हैं। ये रचनाएं तत्कालीन समाज की वास्तविक राजनीतिक स्थिति और लोगों के रहन-सहन को समझने हेतु एक वस्तुनिष्ठ आधार प्रदान करती हैं।

252. (B) समुद्री व्यापार के लिए प्राकृतिक बंदरगाहों वाली एक लंबी तटरेखा
मगध के उदय के भौगोलिक कारणों में 'लंबी तटरेखा' सम्मिलित नहीं थी, क्योंकि मगध एक भूमि-बद्ध क्षेत्र था जो गंगा घाटी के मध्य में स्थित था। इसकी शक्ति के वास्तविक आधार इसके उपजाऊ मैदान थे जिन्होंने प्रचुर अन्न प्रदान किया, और इसकी रणनीतिक नदियाँ जो परिवहन और सुरक्षा प्रदान करती थीं। इसके अतिरिक्त, मगध के पास लोहे की खदानों तक सीधी पहुँच थी, जिससे उन्होंने श्रेष्ठ शस्त्र निर्मित किए। समुद्र तक मगध की पहुँच बहुत कालांतर में हुई, जब उसने अंग और अन्य पूर्वी क्षेत्रों को विजित किया।

253. (C) सिंधु घाटी सभ्यता
आद्य-इतिहास वह कालखंड है जब समाज ने लेखन कला का विकास तो कर लिया था, किंतु आधुनिक इतिहासकार उस लिपि को पढ़ने में अभी तक असमर्थ हैं। सिंधु घाटी सभ्यता इसका सबसे सशक्त उदाहरण है क्योंकि यहाँ से बड़ी मात्रा में मुहरें और अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें एक विशिष्ट चित्रात्मक लिपि का प्रयोग हुआ है। यद्यपि इस लिपि के न पढ़े जा पाने के कारण हमें इस सभ्यता की जानकारी हेतु अभी भी मुख्य रूप से पुरातात्विक अवशेषों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। यह काल प्रागैतिहास और पठनीय लिखित इतिहास का सेतु है।

254. (D) महाजनपदों का उदय और द्वितीय नगरीकरण
गंगा की मध्य घाटी में लौह युग का आगमन एक युगांतकारी परिवर्तन लेकर आया। लगभग 1000 ईसा पूर्व के पश्चात, लोहे के औजारों के व्यापक उपयोग ने वनों को स्वच्छ करने और कठोर भूमि की जुताई को संभव बनाया। इसके कारण कृषि में क्रांतिकारी सुधार हुए और भारी मात्रा में अन्न उत्पादन संवर्धित हुआ। इस आर्थिक समृद्धि ने कबीलाई समाजों को बड़े क्षेत्रीय राज्यों में परिवर्तित कर दिया और नगरों के पुनरुत्थान का मार्ग प्रशस्त किया। लोहा इस संपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन की मुख्य धुरी बना रहा।

255. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
ऋग्वैदिक और महाजनपद कालीन राजपद के स्वरूप में एक स्पष्ट विकासवादी अंतर दृष्टिगोचर होता है। ऋग्वैदिक काल में राजा मुख्य रूप से अपने कबीले का रक्षक और युद्धों में सेनापति था; उसकी शक्ति जनता के सहयोग पर पूर्णतः निर्भर थी। इसके विपरीत, महाजनपद काल तक आते-आते राजा एक विशाल क्षेत्र का स्वामी बन गया। अब उसके पास केवल कबीलाई योद्धा नहीं, अपितु एक पेशेवर और स्थायी सेना थी। साथ ही, उसने प्रशासन संचालित करने हेतु जनता से नियमित कर वसूलने की एक सुव्यवस्थित व्यवस्था भी विकसित कर ली थी।

256. (B) वैदिक ज्ञान का संक्षिप्त और व्यवस्थित सारांश प्रदान करना
सूत्र साहित्य के निर्माण का मुख्य उद्देश्य वेदों की विशाल और जटिल शिक्षाओं को आम जनमानस और विद्यार्थियों हेतु सरल तथा सुबोध बनाना था। सूत्र शैली में ज्ञान को अत्यंत संक्षिप्त और अर्थपूर्ण वाक्यों में पिरोया गया था, जिन्हें सुगमता से स्मरण रखा जा सके। ये सूत्र कर्मकांडों, घरेलू संस्कारों और सामाजिक नियमों को एक सुव्यवस्थित नियमावली के रूप में प्रस्तुत करते थे। इसने वैदिक ज्ञान को बिखरने से सुरक्षित किया और उसे दैनिक जीवन में लागू करने हेतु एक व्यावहारिक ढांचा प्रदान किया, जो शिक्षा हेतु अनिवार्य बना।

257. (B) धनानंद
धनानंद नंद वंश का अंतिम राजा था, जो सिकंदर के भारत अभियान के समय मगध के सिंहासन पर आसीन था। यूनानी लेखकों के अनुसार, धनानंद के पास एक विशाल सेना थी जिसमें पैदल सैनिक, घुड़सवार और हजारों युद्धक हाथी सम्मिलित थे। यद्यपि वह अत्यंत शक्तिशाली था, किंतु अपनी दमनकारी कर नीतियों के कारण वह प्रजा के मध्य बहुत अलोकप्रिय हो गया था। इसी सैन्य शक्ति के भय से सिकंदर के सैनिकों ने आगे बढ़ने से अस्वीकार कर दिया था, और कालांतर में इसी अलोकप्रियता का लाभ उठाकर चंद्रगुप्त मौर्य ने उसे सत्ता से हटा दिया।

258. (A) शिलालेख
प्रागैतिहासिक काल वह समय है जब मनुष्य ने लेखन कला का आविष्कार नहीं किया था। अतः, इस काल के इतिहास को जानने हेतु शिलालेख पूर्णतः अनुपस्थित हैं। शिलालेख केवल उन ऐतिहासिक कालों हेतु उपयोगी होते हैं जहाँ लिपि का अस्तित्व होता है। इसके विपरीत, पत्थर के उपकरण हमें उस समय की तकनीकी प्रगति बताते हैं, जीवाश्म अवशेष मानव के शारीरिक विकास की सूचना देते हैं, और गुफा चित्रकारी आदिमानव के सामाजिक जीवन और पर्यावरण के प्रति उनकी दृष्टि को समझने हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्रोत हैं।

259. (C) कार्य-कारण का नियम जहाँ कर्म भविष्य के परिणामों को निर्धारित करते हैं
कर्म का सिद्धांत भारतीय दर्शन की एक महान तार्किक अवधारणा है जो यह मानती है कि ब्रह्मांड एक न्यायपूर्ण नैतिक नियम से संचालित है। इसका सरल अर्थ है कि प्रत्येक कार्य का एक निश्चित फल होता है। यदि कोई व्यक्ति सत्कर्म करता है, तो उसे सुख प्राप्त होगा, और दुष्कर्मों का परिणाम दुख होगा। यह केवल शारीरिक क्रियाओं तक सीमित नहीं है, अपितु व्यक्ति की मंशा और विचार भी उसके कर्मों का अभिन्न भाग हैं। यह सिद्धांत मनुष्य को अपने भाग्य का निर्माता बनाता है और उसे निरंतर नैतिक आचरण के लिए प्रेरित करता है।

260. (D) बोधिसत्व की अवधारणा और बुद्ध का दैवीकरण
महायान बौद्ध धर्म हीनयान की तुलना में अधिक उदार और भक्ति-प्रधान संप्रदाय के रूप में विकसित हुआ। इसकी सर्वाधिक प्रमुख विशेषता भगवान बुद्ध को एक मानव शिक्षक के स्थान पर एक सर्वोच्च देवता के रूप में पूजना है। महायान ने बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण किया और उनकी विधिवत पूजा प्रारंभ की। साथ ही, इसने 'बोधिसत्व' के आदर्श को प्रस्तुत किया, जो असीम करुणा के कारण निरंतर दूसरों की मुक्ति हेतु प्रयासरत रहते हैं। इस संप्रदाय ने निर्वाण को केवल भिक्षुओं तक सीमित न रखकर सामान्य गृहस्थों हेतु भी सुलभ बनाया।

261. (C) जीवन के आध्यात्मिक और भौतिक लक्ष्यों के बीच संतुलन बनाना
पुरुषार्थ की अवधारणा प्राचीन भारतीय ऋषियों की एक अत्यंत संतुलित और व्यावहारिक देन है। यह स्वीकार करती है कि मनुष्य की केवल आध्यात्मिक आवश्यकताएं ही नहीं होतीं, अपितु उसकी भौतिक और जैविक इच्छाएं भी वैध हैं। धर्म व्यक्ति को नैतिक मर्यादा में रखता है, अर्थ उसे आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है, काम उसकी सुख-सुविधाओं की इच्छा को पूर्ण करता है, और अंततः मोक्ष उसे परम सत्य से संबद्ध करता है। इस प्रकार, पुरुषार्थ व्यक्ति को एक ऐसा जीवन जीने हेतु प्रेरित करता है जो सांसारिक सफलता और आध्यात्मिक शांति का समन्वय हो।

262. (B) हर्यंक
बिंबिसार मगध के हर्यंक वंश का संस्थापक और एक प्रतापी शासक था। उसने मगध की शक्ति संवर्धित करने हेतु 'वैवाहिक गठजोड़' और 'युद्ध' की दोहरी नीति का अवलंबन किया। उसने कोसल और वैशाली के प्रभावशाली राजपरिवारों में विवाह कर अपनी स्थिति सुदृढ़ की और फिर पड़ोसी राज्य अंग को विजित कर उसे मगध में सम्मिलित कर लिया। बिंबिसार धार्मिक रूप से अत्यंत उदार था और उसे जैन तथा बौद्ध दोनों ग्रंथों में सम्मानजनक स्थान प्राप्त है क्योंकि वह भगवान बुद्ध और महावीर का संरक्षक तथा समकालीन था।

263. (D) महाजनपदों और मौर्यों का युग
'उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड' प्राचीन भारतीय इतिहास में द्वितीय नगरीकरण के काल के सर्वाधिक प्रमुख पुरातात्विक साक्ष्य हैं। यह मृदभांड अपनी अत्यंत चिकनी और धातु जैसी काली चमक हेतु प्रसिद्ध है, जो उस समय के शिल्पकारों के उच्च तकनीकी कौशल को प्रदर्शित करता है। इनका उपयोग मुख्य रूप से छठी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर मौर्य काल तक किया जाता था। ये पात्र प्रायः समृद्ध नगरीय केंद्रों में प्राप्त होते हैं, जो इन्हें तत्कालीन समाज के कुलीन वर्ग और आर्थिक समृद्धि का एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक सूचक बनाते हैं।

264. (A) भारतीय गणित और ज्यामिति
'शुल्बसूत्र' कल्पसूत्रों का वह भाग हैं जो विशेष रूप से यज्ञ-वेदियों और अग्निकुंडों के निर्माण की माप और विधि से संबंधित हैं। इन ग्रंथों में जटिल ज्यामितीय आकृतियों जैसे वर्ग, आयत और वृत्त के क्षेत्रफल को समान रखने की विधियाँ प्रदान की गई हैं। इसी प्रक्रिया में प्राचीन ऋषियों ने 'पाइथागोरस प्रमेय' जैसे सिद्धांतों का उल्लेख यूनानी गणितज्ञों से बहुत पूर्व कर दिया था। अतः शुल्बसूत्रों को भारतीय गणित और विशेष रूप से रेखागणित के विकास का सर्वाधिक प्राचीन और महत्वपूर्ण लिखित आधार माना जाता है।

265. (C) शासन की प्रणाली
महाजनपद काल में राजतंत्र और गणराज्य के मध्य का मुख्य अंतर सत्ता के स्रोत में निहित था। राजतंत्र में सर्वोच्च शक्ति एक ही राजा के हाथ में होती थी और पद प्रायः वंशानुगत होता था, जहाँ राजा की इच्छा ही सर्वोपरि नियम था। इसके विपरीत, गणराज्य या 'गण-संघ' में सत्ता कबीलाई कुलीनों की एक परिषद के पास होती थी। यहाँ निर्णय विस्तृत चर्चा, बहस और मतदान के माध्यम से सामूहिक रूप से लिए जाते थे। यह व्यवस्था तत्कालीन भारत में राजनीतिक विविधता और प्रारंभिक लोकतांत्रिक मूल्यों की उपस्थिति को दर्शाती है।

266. (A) लोथल
सिंधु घाटी सभ्यता का लोथल नगर प्राचीन विश्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों में से एक था। यहाँ से प्राप्त एक विशाल ईंट निर्मित जलाशय की पहचान इतिहासकारों ने 'गोदीवाड़ा' के रूप में की है। यह संरचना दर्शाती है कि हड़प्पावासियों ने खंभात की खाड़ी के ज्वार-भाटे का उपयोग कर जहाजों को तट तक लाने की उन्नत तकनीक विकसित कर ली थी। लोथल से प्राप्त फारस की खाड़ी की मुहरें और मेसोपोटामियाई वस्तुएं यह सिद्ध करती हैं कि यह भारत का एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह था जहाँ से नियमित समुद्री व्यापार संचालित होता था।

267. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
उत्तर वैदिक काल के साहित्य में आर्यों के प्रसार की एक स्पष्ट दिशा प्राप्त होती है। ऋग्वैदिक काल में वे मुख्य रूप से पंजाब के क्षेत्र तक सीमित थे। किंतु, उत्तर वैदिक काल के ग्रंथों में उनके गंगा-यमुना दोआब और फिर गंडक नदी तक विस्तार का स्पष्ट उल्लेख है। यह भौगोलिक स्थानांतरण लोहे के आविष्कारों के कारण संभव हुआ, जिससे घने वनों को काटकर कृषि हेतु नवीन भूमि तैयार करना सुलभ हो गया। यह परिवर्तन कबीलाई समाज से कृषि-आधारित क्षेत्रीय साम्राज्यों के उदय की विकास यात्रा का वर्णन करता है।

268. (B) अत्यधिक विलासिता और कठोर तपस्या
भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित 'मध्यम मार्ग' मानव जीवन हेतु एक व्यावहारिक दर्शन है। बुद्ध ने स्वयं राजकुमार के रूप में अत्यधिक सुखों और कालांतर में तपस्वी के रूप में शरीर को सुखा देने वाली कठोर साधनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव किया था। उन्होंने पाया कि ये दोनों ही अतियाँ सत्य की प्राप्ति में बाधक हैं। मध्यम मार्ग इन दोनों के मध्य का एक संतुलित पथ है, जो शील, समाधि और प्रज्ञा पर आधारित है। यह मार्ग व्यक्ति को मानसिक स्पष्टता प्रदान करता है, जिससे वह दुखों से मुक्त होकर निर्वाण की परम अवस्था प्राप्त कर सकता है।

269. (C) राजनीतिक और आर्थिक, जिससे व्यापार और नए प्रशासन को प्रोत्साहन मिला
उत्तर-पश्चिमी भारत पर फारसी शासन ने भारतीय उपमहाद्वीप को प्रथम बार एक विशाल वैश्विक प्रशासनिक व्यवस्था से संबद्ध किया। इस संपर्क के कारण अरामी लिपि और उससे विकसित खरोष्ठी लिपि का भारत में प्रवेश हुआ। प्रशासनिक स्तर पर 'क्षत्रप' प्रणाली की शुरुआत हुई, जो परवर्ती शासकों हेतु प्रेरणा बनी। आर्थिक रूप से, फारसी साम्राज्य के साथ एकीकरण ने पश्चिम एशिया के साथ व्यापार के नवीन मार्ग प्रशस्त किए। फारसी सिक्कों के प्रचलन ने भारतीय मुद्रा प्रणाली के विकास को प्रभावित किया और इस क्षेत्र में एक नई आर्थिक गतिशीलता प्रदान की।

270. (D) अध्ययन, अध्यापन और यज्ञ संपादन
प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था में ब्राह्मणों को समाज का बौद्धिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक माना गया था। वर्ण व्यवस्था के अनुसार, ब्राह्मणों का प्राथमिक कर्तव्य वेदों का अध्ययन करना, उन्हें आगामी पीढ़ियों को सिखाना और धार्मिक अनुष्ठानों तथा यज्ञों को विधिपूर्वक संपन्न कराना था। वे राजाओं के सलाहकार के रूप में भी कार्य करते थे और समाज में धर्म तथा नैतिकता की स्थापना हेतु उत्तरदायी थे। उनसे सादा, अनुशासित और ज्ञान-आधारित जीवन जीने की अपेक्षा की जाती थी ताकि वे समाज हेतु एक श्रेष्ठ आदर्श प्रस्तुत कर सकें।

271. (A) ह्वेनसांग
चीनी बौद्ध भिक्षु ह्वेनसांग 7वीं शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन के काल में भारत आए थे। उन्होंने लगभग पंद्रह वर्षों तक भारत का भ्रमण किया और अपने अनुभवों को 'सी-यू-की' नामक पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिखा। ह्वेनसांग का विवरण विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय के गौरवशाली युग, वहां की शिक्षा प्रणाली और हजारों बौद्ध भिक्षुओं के अनुशासन का आँखों देखा विवरण प्रदान किया है। उन्होंने भारत के विभिन्न बौद्ध केंद्रों और वहां की तत्कालीन सामाजिक-धार्मिक स्थिति का बहुत ही सटीक चित्रण किया है।

272. (B) पत्थर का एक बड़ा शिलाखंड या स्मारक, जिसका प्रयोग प्रायः समाधान हेतु किया जाता था
'महापाषाण' शब्द दो शब्दों 'महा' और 'पाषाण' से मिलकर बना है। यह मुख्य रूप से दक्षिण भारत और दक्कन की उन लौह युगीन संस्कृतियों को संदर्भित करता है जहाँ कब्रों के चारों ओर या उनके ऊपर बड़े-बड़े पत्थरों को घेरकर एक स्मारक निर्मित किया जाता था। ये संरचनाएं मृतकों के सम्मान में और उनकी पहचान हेतु बनाई जाती थीं। इन कब्रों के आंतरिक भाग से लोहे के औजार, हथियार और काले-लाल मृदभांड प्राप्त हुए हैं, जो उस काल के लोगों की तकनीकी प्रगति और उनकी समाधान संबंधी विशिष्ट मान्यताओं का विश्वसनीय प्रमाण प्रदान करते हैं।

273. (B) द्वितीय नगरीकरण
सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के पश्चात लगभग 1000 वर्षों तक भारतीय उपमहाद्वीप में ग्रामीण संस्कृतियों का प्रभुत्व रहा। 'द्वितीय नगरीकरण' का तात्पर्य उस काल से है जब छठी शताब्दी ईसा पूर्व में गंगा के मैदानों में पुनः विशाल नगरों का उदय हुआ। इस पुनरुत्थान का मुख्य कारण लोहे के उपकरणों द्वारा वनों की स्वच्छता, गहन कृषि और व्यापार का विस्तार था। पाटलिपुत्र, वाराणसी और कौशाम्बी जैसे नगर इसी युग की देन हैं। यह काल न केवल आर्थिक उन्नति का था, अपितु बौद्ध और जैन धर्मों जैसे नवीन विचारों के उदय का भी साक्षी रहा।

274. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
प्राचीन भारतीय अवधारणाएँ विभिन्न धार्मिक और सामाजिक परंपराओं की आधारशिला हैं। 'तीर्थंकर' जैन धर्म के प्रबुद्ध गुरुओं को कहा जाता है जिन्होंने संसार सागर से मुक्ति का मार्ग दिखाया। 'बोधिसत्व' महायान बौद्ध धर्म का आदर्श है, जो असीम करुणा के साथ दूसरों के कल्याण हेतु समर्पित है। 'पुरुष सूक्त' ऋग्वेद का वह भाग है जहाँ समाज के चार वर्णों की उत्पत्ति का प्रथम उल्लेख प्राप्त होता है। 'पंच महायज्ञ' वैदिक परंपरा है जिसके माध्यम से व्यक्ति ब्रह्मांड और समाज के प्रति अपने दैनिक कर्तव्यों और ऋणों को निष्ठापूर्वक पूर्ण करता है।

275. (C) मगध
छठी शताब्दी ईसा पूर्व के सोलह महाजनपदों में मगध अंततः सर्वाधिक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में उभरा। इसकी सफलता के पीछे कई कारण थे, जिनमें इसकी सामरिक भौगोलिक स्थिति, प्रचुर लौह अयस्क के भंडार और उपजाऊ गंगा के मैदान सम्मिलित थे। किंतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक बिंबिसार, अजातशत्रु और महापद्म नंद जैसे महत्वाकांक्षी और पराक्रमी शासकों की एक लंबी और सफल श्रृंखला थी। मगध ने अपने समस्त प्रतिद्वंद्वियों को पराजित कर भारत में प्रथम विशाल एकीकृत साम्राज्य के गठन का सुदृढ़ आधार तैयार किया था।

276. (D) अवंती
मगध और अवंती के मध्य वर्चस्व हेतु लगभग सौ वर्षों तक भीषण संघर्ष चला। अवंती के शासक चंड प्रद्योत मगध के बिंबिसार के समकालीन थे। इस प्रतिद्वंद्विता का अंत शिशुनाग वंश के दौरान हुआ जब शिशुनाग ने अवंती को अंतिम रूप से पराजित कर उसे मगध साम्राज्य का अभिन्न भाग बना लिया। अवंती की विजय मगध हेतु एक महान उपलब्धि थी क्योंकि इसने मगध की सीमाओं को मालवा तक विस्तृत कर दिया और पश्चिमी व्यापारिक मार्गों पर उसका नियंत्रण स्थापित कर दिया, जिससे मगध की शक्ति और प्रतिष्ठा में अपार वृद्धि हुई।

277. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध धर्म की लोकप्रियता का एक मुख्य कारण इसका क्रांतिकारी सामाजिक दृष्टिकोण था। उस समय का धर्म जटिल अनुष्ठानों और जन्म आधारित कठोर जाति व्यवस्था से ग्रसित था, जहाँ निम्न वर्गों को धार्मिक अधिकारों से वंचित रखा गया था। भगवान बुद्ध ने प्रत्यक्ष रूप से जातिवाद पर प्रहार किया और घोषित किया कि मुक्ति व्यक्ति के कर्मों और नैतिकता पर निर्भर है, न कि उसके जन्म पर। इस संदेश ने समाज के दबे-कुचले वर्गों को आत्म-सम्मान और आध्यात्मिक स्वतंत्रता की एक नवीन आशा प्रदान की।

278. (B) उत्तर वैदिक युग का अंत और मौर्य साम्राज्य का उदय
सूत्र और महाकाव्य साहित्य भारतीय इतिहास के एक अत्यंत महत्वपूर्ण संधिकाल की विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं। यह वह समय था जब उत्तर वैदिक काल की सरल व्यवस्था समाप्त हो रही थी और बड़े क्षेत्रीय साम्राज्यों के उदय की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी थी। धर्मसूत्रों और रामायण-महाभारत जैसे ग्रंथों में तत्कालीन बदलती सामाजिक संरचना, राजा के कर्तव्यों और राजनीतिक अस्थिरता का स्पष्ट चित्रण प्राप्त होता है। ये स्रोत इतिहासकारों को कबीलाई पहचान से साम्राज्यवादी पहचान की ओर होने वाले इस जटिल ऐतिहासिक संक्रमण को समझने में सहायता करते हैं।

279. (D) पश्चिम के साथ निरंतर सांस्कृतिक और वाणिज्यिक संपर्क को

सिकंदर महान के भारत अभियान का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और स्थायी परिणाम राजनीतिक विजय नहीं, अपितु दो महान सभ्यताओं के मध्य के द्वारों का खुलना था। उसने उत्तर-पश्चिमी सीमा पर कई यूनानी नगरों की स्थापना की, जो कालांतर में व्यापार और संस्कृति के मिलन स्थल बने। इन नगरों और उनके द्वारा खोले गए मार्गों के कारण भारत का यूनानी-रोमन विश्व के साथ सीधा और नियमित संपर्क स्थापित हुआ। इसी संपर्क ने आगामी सदियों में गांधार कला की मूर्तिकला, खगोल विज्ञान के आदान-प्रदान और फलते-फूलते हिंद-रोमन व्यापार का आधार तैयार किया।

280. (B) केवल 1 और 2

इतिहास के पुनर्निर्माण हेतु विभिन्न स्रोतों का आलोचनात्मक विश्लेषण अनिवार्य है। धार्मिक साहित्य समाज की आंतरिक मान्यताओं और सांस्कृतिक ढांचे को समझने हेतु अमूल्य है। शिलालेख अपनी भौतिक प्रकृति और समकालीनता के कारण अत्यंत विश्वसनीय साक्ष्य प्रदान करते हैं क्योंकि उनमें समय के साथ परिवर्तन करना असंभव है। हालांकि, विदेशी यात्रियों के विवरणों को पूर्णतः त्रुटिहीन नहीं माना जा सकता। यात्रियों ने प्रायः भारतीय समाज को अपने सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखा, जिससे उनके विवरणों में कभी-कभी भ्रांतियां या अतिशयोक्तियाँ सम्मिलित हो गई हैं।

281. (C) ब्रह्मांड की अंतर्निहित ब्रह्मांडीय और नैतिक व्यवस्था

वैदिक ऋषियों की दृष्टि में 'ऋत' वह सर्वोच्च सत्य है जो संपूर्ण अस्तित्व का आधार है। यह कोई बाह्य कानून नहीं है जिसे बलात् लागू किया जाता है, अपितु यह प्रकृति की अपनी स्वाभाविक लय और व्यवस्था है। ऋत ही वह मूल कारण है जिससे ऋतुएँ नियमित रुप से परिवर्तित होती हैं और ब्रह्मांड के समस्त तत्व सामंजस्य में रहते हैं। ऋत का पालन करना केवल देवताओं का ही नहीं, अपितु मनुष्यों का भी नैतिक कर्तव्य माना गया था। ऋत से विमुख होना ही अनैतिक माना जाता था, जो ब्रह्मांडीय और सामाजिक असंतुलन उत्पन्न करता है।

282. (A) कबीले की एक सामान्य सभा, जो सभी लोगों के लिए खुली थी

ऋग्वैदिक काल की 'समिति' प्राचीन भारतीय कबीलाई लोकतंत्र का एक जीवंत उदाहरण थी। यह एक व्यापक जनसभा थी जिसमें कबीले के समस्त वयस्क सदस्य भाग ले सकते थे। समिति का मुख्य कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण नीतिगत मामलों पर निर्णय लेना था, जैसे युद्ध की घोषणा, शांति समझौते और राजा का चुनाव या उसका अनुमोदन करना। समिति में होने वाली चर्चाओं और वहां प्राप्त जनसमर्थन के बिना राजा का शासन करना दुष्कर था। यह संस्था दर्शाती है कि प्रारंभिक वैदिक समाज में निर्णय लेने की प्रक्रिया में जनभागीदारी को बहुत महत्व दिया जाता था।

283. (D) नृ यज्ञ

'नृ यज्ञ' पंच महायज्ञों में से एक है जो मनुष्य के मानवता के प्रति उत्तरदायित्व को रेखांकित करता है। इसका मूल सिद्धांत 'अतिथि देवो भव' है, जिसका अर्थ है कि गृह पर आए हुए किसी भी अतिथि का सत्कार देव के समान किया जाना चाहिए। इस यज्ञ का संपादन किसी अग्नि अनुष्ठान से नहीं, अपितु भूखे को भोजन कराने और आश्रयहीन को आश्रय प्रदान करने के माध्यम से होता है। यह अवधारणा समाज में करुणा, आतिथ्य सत्कार और सामाजिक सद्भाव की नींव को सुदृढ़ करने हेतु निर्मित की गई थी, जो मानवता का परिचायक है।

284. (B) ग्रीक-रोमन लेखकों के

मेगास्थनीज की मूल पुस्तक 'इंडिका' समय के साथ नष्ट हो गई, जो मौर्यकालीन इतिहास हेतु एक महान क्षति थी। हालांकि, प्राचीन यूनानी और रोमन लेखकों ने अपने कार्यों में मेगास्थनीज के विवरणों को व्यापक रुप से उद्धृत किया था। इन परवर्ती लेखकों के ग्रंथों में सुरक्षित अंशों को एकत्रित करके ही आधुनिक इतिहासकारों ने मौर्य प्रशासन, सात जातियों और भारतीय समाज के विषय में मेगास्थनीज के विचारों का पुनर्निर्माण किया है। ये साहित्यिक अवशेष आज भी मौर्य काल को समझने हेतु एक अनिवार्य और विश्वसनीय आधार स्तंभ माने जाते हैं।

285. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।

प्रागैतिहासिक चरणों का विभाजन मानव के भोजन प्राप्त करने की विधियों में आए परिवर्तनों को दर्शाता है। पुरापाषाण काल के दौरान मानव पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर था; वह जंगली पशुओं का शिकार करता था और प्राकृतिक रूप से उगने वाले कंद-मूल एकत्र करता था, जिसे 'खाद्य-संग्रहण' कहा गया। इसके विपरीत, नवपाषाण काल में मानव ने पौधों को पालतू बनाना और भूमि को जोतकर अनाज उगाना सीख लिया। इस 'खाद्य-उत्पादन' की क्षमता ने मानव जीवन को स्थायित्व प्रदान किया और प्रथम बार उसे प्रकृति को नियंत्रित करने की शक्ति प्रदान की।

286. (D) सड़कों की ग्रिड प्रणाली और एक विस्तृत जल निकासी व्यवस्था

सिंधु घाटी सभ्यता की अद्वितीय पहचान उसके नगरों के वैज्ञानिक और व्यवस्थित मानचित्र में निहित है। यहाँ की सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं, जिससे पूर्ण नगर आयताकार खंडों में विभाजित हो जाता था। इस जाल प्रणाली के साथ-साथ, वहां की जल निकासी व्यवस्था अत्यंत प्रभावशाली थी। प्रत्येक गृह की छोटी नाली सड़क की बड़ी ढकी हुई नाली से संबद्ध होती थी, जिसमें स्वच्छता हेतु स्थान-स्थान पर मैनहोल भी निर्मित थे। स्वच्छता के प्रति यह समर्पण और इंजीनियरिंग की इतनी सूक्ष्म समझ किसी अन्य समकालीन सभ्यता में नहीं मिलती।

287. (A) जनजातीय पहचान पर भूमि और क्षेत्रीय राजतंत्र का बढ़ता महत्व

वैदिक युग के उत्तरार्ध में राजनीतिक शब्दावली में 'राष्ट्र' शब्द का उदय एक महान परिवर्तन का सूचक था। ऋग्वैदिक काल में लोगों की वफादारी केवल उनके कबीले के प्रति थी और भूमि का कोई निश्चित स्वामित्व नहीं था। जैसे-जैसे कृषि का महत्व संवर्धित हुआ और लोग स्थायी रूप से विशिष्ट क्षेत्रों में निवास

करने लगे, भूमि एक बहुमूल्य संसाधन बन गई। अब 'राष्ट्र' उस भूभाग को संदर्भित करने लगा जिस पर राजा का अधिकार था। यह परिवर्तन जनजातीय सरदारी से एक वास्तविक क्षेत्रीय राजतंत्र की ओर संक्रमण को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

288. (B) अंगुत्तर निकाय
प्राचीन भारत के सोलह शक्तिशाली क्षेत्रीय राज्यों या महाजनपदों का सर्वाधिक प्रामाणिक और विस्तृत उल्लेख बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' में प्राप्त होता है। यह ग्रंथ सुत्त पिटक का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसके अतिरिक्त, जैन ग्रंथ 'भगवती सूत्र' में भी सोलह महाजनपदों की एक समान किंतु थोड़ी भिन्न सूची प्रदान की गई है। इन धार्मिक ग्रंथों से प्राप्त सूचना यह प्रमाणित करती है कि छठी शताब्दी ईसा पूर्व में उत्तर भारत कबीलाई ढांचे से निकलकर बड़े राजनीतिक संगठनों में विभाजित हो चुका था, जिसने प्रथम बड़े साम्राज्य की पृष्ठभूमि तैयार की।

289. (B) चार आर्य सत्य
भगवान बुद्ध की संपूर्ण दार्शनिक और आध्यात्मिक शिक्षाओं का आधार 'चार आर्य सत्य' हैं। ये सत्य मानव जीवन की कटु वास्तविकता—दुख का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। वे बताते हैं कि दुख अपरिहार्य है, दुख का एक मूल कारण है, दुख का अंत संभव है, और उस अंत तक पहुँचने का एक निश्चित मार्ग है। बुद्ध का यह संदेश किसी रहस्यवादी दर्शन के स्थान पर व्यावहारिक सुधार पर आधारित था, जिसका उद्देश्य व्यक्ति को अज्ञानता के अंधकार से निकालकर वास्तविक मानसिक शांति और निर्वाण की ओर अग्रसर करना था।

290. (A) सदियों के संपर्क को बढ़ावा देने वाले मार्गों का खुलना
सिकंदर के आक्रमण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण दीर्घकालिक प्रभाव भारत और पश्चिम के मध्य की भौगोलिक दूरी को विनष्ट करना था। उसने अपने अभियानों के दौरान थल और जल के ऐसे कई नवीन मार्ग खोजे और सुगम बनाए जिनसे पूर्व में कोई परिचित नहीं था। इन मार्गों ने न केवल सेनाओं हेतु, अपितु व्यापारियों, राजदूतों और विद्वानों हेतु भी द्वार उद्घाटित कर दिए। इसी संपर्क के कारण आने वाली सदियों में हिंद-यूनानी राज्यों का उदय हुआ और मौर्य काल से कुषाण काल तक भारत और भूमध्यसागरीय विश्व के मध्य विचारों का आदान-प्रदान संभव हुआ।

291. (C) वैश्य
प्राचीन भारतीय विचारधारा में समाज और व्यक्ति के कर्तव्यों को सुव्यवस्थित करने हेतु दो पृथक प्रणालियाँ थीं: वर्ण और आश्रम। 'वैश्य' समाज के चार वर्णों में से एक है, जो मुख्य रूप से कृषि, व्यापार और पशुपालन हेतु उत्तरदायी था। इसके विपरीत, 'आश्रम' व्यक्ति के जीवन के चार क्रमिक चरणों को संदर्भित करता है—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। आश्रम व्यवस्था का साध्य व्यक्ति के भौतिक और आध्यात्मिक विकास के मध्य संतुलन स्थापित करना था, जबकि वर्ण व्यवस्था समाज में श्रम के विभाजन और सामाजिक सुव्यवस्था को बनाए रखने हेतु थी।

292. (D) पुरालिपि शास्त्र
प्राचीन शिलालेखों और पांडुलिपियों में प्रयुक्त होने वाली पुरानी लेखन शैलियों और लिपियों के अध्ययन को पुरालिपि शास्त्र कहा जाता है। इसमें अक्षरों के आकार में समय के साथ आए परिवर्तनों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है। यह पुरालेखशास्त्र का एक अनिवार्य अंग है क्योंकि किसी भी शिलालेख को पढ़ने हेतु उसकी लिपि के क्रमिक विकास को समझना आवश्यक होता है। जेम्स प्रिंसेप ने इसी विज्ञान की सहायता से 1837 में प्रथम बार ब्राह्मी लिपि को पढ़ने में सफलता प्राप्त की थी, जिससे मौर्यकालीन इतिहास के बंद द्वार मानवता हेतु खुल गए थे।

293. (C) शिकार, मत्स्य पालन और भोजन संग्रह
मध्यपाषाण काल की आर्थिक गतिविधियाँ पुरापाषाण काल की तुलना में अधिक विविधतापूर्ण और कुशल हो गई थीं। यद्यपि मनुष्य अभी भी मुख्य रूप से प्रकृति पर निर्भर था, किंतु सूक्ष्म पाषाण उपकरणों के विकास ने उसे मत्स्य पालन और छोटे पशुओं का शिकार करने में अधिक सक्षम बना दिया था। इस काल में मनुष्य ने जंगली अनाज का संग्रह करना भी प्रारंभ किया, जो भविष्य की कृषि की ओर प्रथम चरण था। साथ ही, कुछ स्थलों पर प्रारंभिक पशुपालन के संकेत भी प्राप्त होते हैं, किंतु जीवन का मुख्य आधार अभी भी शिकार और भोजन संग्रह ही बना रहा।

294. (B) अनिश्चित, लेकिन संभवतः पुरोहितों या व्यापारियों द्वारा शासित व्यवस्था
सिंधु घाटी सभ्यता की राजनीतिक व्यवस्था आज भी इतिहासकारों के मध्य चर्चा का विषय है क्योंकि उनकी लिपि अभी तक नहीं पढ़ी जा सकी है। हालांकि, वहां के नगरों में पाया गया असाधारण मानकीकरण, जाल आधारित नियोजन और व्यापारिक प्रभुत्व यह संकेत देते हैं कि वहां कोई केंद्रीय सत्ता अवश्य विद्यमान थी। कुछ विद्वान मानते हैं कि यह सत्ता प्रभावशाली व्यापारियों के एक समूह के पास थी, जबकि अन्य का मानना है कि वहां मेसोपोटामिया के समान 'पुरोहित-राजा' का शासन हो सकता था। जो भी हो, वहां की व्यवस्था अत्यंत संगठित और शांतिपूर्ण थी।

295. (D) समतावादी और पितृसत्तात्मक
ऋग्वैदिक समाज की मुख्य पहचान उसकी सादगी और कबीलाई भाईचारे में निहित थी। यद्यपि यह समाज पितृसत्तात्मक था, जहाँ परिवार का मुखिया पुरुष होता था, फिर भी महिलाओं को शिक्षा और धार्मिक अनुष्ठानों में पूर्ण भाग लेने का अधिकार प्राप्त था। समाज में परवर्ती कालों जैसी कठोर जाति व्यवस्था या ऊंच-नीच का भाव विद्यमान नहीं था। सामाजिक भेदभाव अत्यंत न्यून था और लोगों के मध्य समानता का भाव अधिक था। धन का मुख्य रूप पशुधन था, और समाज काफी हद तक गतिशील था जहाँ व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार कार्य चुन सकता था।

296. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
वज्जी संघ प्राचीन भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित और शक्तिशाली गणतंत्रीय राज्यों में से एक था। इसकी राजधानी वैशाली एक अत्यंत समृद्ध और सुसंस्कृत नगर थी। वज्जी के विषय में यह

कथन त्रुटिपूर्ण है कि वह किसी एक शक्तिशाली राजा द्वारा शासित था। वास्तव में, यह आठ कबीलों का एक संघ था, जहाँ शासन की बागडोर सामूहिक रूप से निर्वाचित प्रमुखों की एक परिषद के पास थी। लिच्छवी इस संघ का सर्वाधिक प्रमुख कबीला थे। यह व्यवस्था तत्कालीन भारत में राजतंत्रीय प्रभुत्व के विरुद्ध एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजनीतिक विकल्प प्रस्तुत करती थी।

297. (C) सत्य और वास्तविकता जटिल हैं और उनके कई पहलू हैं
जैन धर्म का 'अनेकांतवाद' का सिद्धांत बौद्धिक सहिष्णुता और सापेक्षता का एक अद्भुत उदाहरण है। यह सिखाता है कि सत्य के अनंत गुण होते हैं और कोई भी साधारण मनुष्य पूर्ण सत्य को एक साथ नहीं समझ सकता। हमारा ज्ञान केवल हमारे सीमित दृष्टिकोण पर आधारित होता है। इसलिए, किसी एक विचार को पूर्णतः सही और दूसरे को गलत कहना तर्कहीन है। यह दर्शन हठधर्मिता को त्यागकर दूसरों के विचारों का सम्मान करने और वास्तविकता की बहुआयामी प्रकृति को समझने की प्रेरणा देता है, जिससे समाज में वास्तविक सद्भाव और संतुलन बना रहे।

298. (A) अनुष्ठान और विधि के लिए संक्षिप्त नियमावलियों के रूप में कार्य करने हेतु
सूत्र साहित्य का विकास वेदों की विशालता को संक्षिप्तता में समेटने की आवश्यकता के कारण हुआ था। 'सूत्र' का शाब्दिक अर्थ है धागा, और ये ग्रंथ अत्यंत संक्षिप्त तथा अर्थपूर्ण वाक्यों के रूप में लिखे गए थे ताकि विद्यार्थियों हेतु उन्हें कंठस्थ करना सुलभ हो सके। ये ग्रंथ मुख्य रूप से तीन विषयों पर केंद्रित थे: सार्वजनिक यज्ञ, पारिवारिक संस्कार और सामाजिक आचरण के नियम। इन सूत्रों ने वैदिक परंपराओं को एक सुव्यवस्थित कानूनी और धार्मिक ढांचे में आबद्ध करने का महान कार्य किया, जो आने वाली सदियों तक भारतीय समाज का मुख्य आधार बना।

299. (D) हिदुश
यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस के विवरणों के अनुसार, फारसी सम्राट दारा प्रथम ने उत्तर-पश्चिम भारत पर विजय प्राप्त की थी। इस क्षेत्र को फारसी साम्राज्य के 20वें प्रांत के रूप में सम्मिलित किया गया था, जिसे फारसी में 'हिदुश' कहा गया। यह प्रांत फारसी साम्राज्य हेतु सामरिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान था क्योंकि यह पूरे साम्राज्य में सर्वाधिक घनी आबादी वाला क्षेत्र था और वहां से फारसी राजकोष में भारी मात्रा में स्वर्ण का राजस्व प्राप्त होता था। यह नाम भारत हेतु 'हिंद' शब्द की उत्पत्ति का भी एक प्रारंभिक भाषाई और भौगोलिक संकेत है।

300. (B) महायान बौद्ध धर्म
बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की अवधारणा महायान बौद्ध धर्म की करुणा और भक्ति का प्रतीक है। अवलोकितेश्वर का अर्थ है 'वह भगवान जो दुख की ओर देखता है'। इन्हें असीम करुणा का देवता माना जाता है जो किसी भी संकट में पुकारने पर अपने भक्तों की सहायता हेतु तत्पर रहते हैं। महायान विचारधारा के अनुसार, इन्होंने प्रतिज्ञा की है कि वे तब तक निर्वाण प्राप्त नहीं करेंगे जब तक कि वे संसार के अंतिम दुखी प्राणी को संसार के बंधनों से मुक्त नहीं कर लेते। इनकी लोकप्रियता ने बौद्ध धर्म को एक व्यापक, समावेशी और मानवतावादी स्वरूप प्रदान किया है।

अध्याय 03
मौर्य एवं मौर्योत्तर काल

1. कौटिल्य के अर्थशास्त्र का निम्नलिखित में से कौन सा शब्द शासन या राजनीति के विज्ञान को संदर्भित करता है?
(A) सप्तांग
(B) दण्डनीति
(C) धर्म विजय
(D) विष्टि

2. कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत के अनुसार, कौन सा तत्व राजा या संप्रभु का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) स्वामिन (शासक)
(B) अमात्य (मंत्री)
(C) जनपद (क्षेत्र)
(D) दुर्ग (किला)

3. चन्द्रगुप्त मौर्य की वंशावली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सभी प्राचीन ग्रंथों में चन्द्रगुप्त मौर्य की उत्पत्ति का स्पष्ट रूप से क्षत्रिय वंश के रूप में वर्णन किया गया है।
कथन II: ब्राह्मणवादी और बौद्ध परंपराएं वंशावली के अलग-अलग विवरण देती हैं, जो सर्वसम्मति के अभाव का संकेत देती हैं।
(A) कथन I सही है, और कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, और कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

4. अशोक द्वारा प्रचारित 'धम्म विजय' की अवधारणा का तात्पर्य है:
(A) सैन्य बल और विस्तार के माध्यम से विजय।
(B) मौर्य साम्राज्य के लिए एक विशिष्ट विधिक संहिता।
(C) एक विशिष्ट धार्मिक संप्रदाय की विजय।
(D) धर्म और नैतिक अनुनय द्वारा विजय।

5. सप्तांग सिद्धांत के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (तत्व)
P. अमात्य
Q. जनपद
R. कोष
S. मित्र
सूची II: (अर्थ)
1. राजकोष
2. सहयोगी
3. मंत्री
4. क्षेत्र और जनसंख्या
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

6. निम्नलिखित में से कौन सी बौद्ध स्तूप की विशेषता नहीं है?
(A) एक अर्द्धगोलाकार गुंबद जिसे अण्ड कहा जाता है।
(B) सामूहिक पूजा के लिए एक केंद्रीय कक्ष।
(C) हर्मिका नामक एक वर्गाकार रेलिंग संरचना।
(D) प्रदक्षिणा पथ नामक मार्ग।

7. मौर्यकालीन शब्द 'करा' क्या दर्शाता है?
(A) राज्य द्वारा विनियमित बलात श्रम का एक रूप।
(B) गैर-बौद्धों पर लगाया जाने वाला धार्मिक कर।
(C) शासक को दी जाने वाली स्वैच्छिक भेंट।
(D) कृषि उपज पर लगने वाला एक नियमित कर।

8. मौर्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) ग्राम प्रशासन केंद्रीय नियंत्रण से स्वतंत्र था।
(B) प्रशासन राजा के अधीन अत्यधिक केंद्रीकृत था।
(C) साम्राज्य प्रांतों और उप-मंडलों में विभाजित था।
(D) नगर प्रशासन में 30 सदस्यों की एक परिषद शामिल थी।

9. मौर्य काल में 'विष्टि' शब्द निम्नलिखित में से किसे संदर्भित करता है?
(A) भूमि अनुदान का एक प्रकार
(B) मुद्रा की एक विशिष्ट इकाई
(C) बलात श्रम
(D) व्यापारियों की एक श्रेणी

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): कलिंग का युद्ध अशोक के जीवन और नीतियों में एक निर्णायक मोड़ था।
कारण (R): युद्ध में हुए भीषण रक्तपात ने अशोक को भौतिक विजय के स्थान पर सांस्कृतिक विजय को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या

नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

11. मौर्य और मौर्योत्तर वास्तुकला के संदर्भ में 'चैत्य' मुख्य रूप से क्या था?
(A) बौद्ध भिक्षुओं के लिए एक आवासीय मठ।
(B) मौर्य सम्राट के लिए एक शाही महल।
(C) एक किलेबंद प्रशासनिक प्रांतीय केंद्र।
(D) स्तूप वाला एक प्रार्थना कक्ष या पूजा स्थल।

12. निम्नलिखित में से कौन सी चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल की एक प्रमुख उपलब्धि थी?
(A) धम्म नीति का राजकीय प्रचार।
(B) भारत को यूनानी नियंत्रण से मुक्ति दिलाना।
(C) बौद्ध संगीति का आयोजन।
(D) शाही अभिलेखों में संस्कृत का उपयोग।

13. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) सन्निधाता - मुख्य कोषाध्यक्ष
(B) समाहर्ता - राजस्व का मुख्य संग्रहकर्ता
(C) अमात्य - ग्राम प्रधान
(D) अध्यक्ष - विभागों के अधीक्षक

14. जैन परंपरा के अनुसार, चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने अंतिम दिन निम्नलिखित में से किस स्थान पर बिताए थे?
(A) पाटलिपुत्र
(B) तक्षशिला
(C) उज्जैन
(D) श्रवणबेलगोला

15. अशोक के धम्म के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह स्वयं अशोक द्वारा स्थापित एक नया धर्म था।
2. इसने अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता पर बल दिया।
3. इसके सिद्धांत विशेष रूप से बौद्ध शिक्षाओं से लिए गए थे।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

16. प्राचीन भारत में 'विहार' का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) यह सार्वजनिक बहस और चर्चा का स्थान था।
(B) यह भिक्षुओं के रहने के स्थान के रूप में कार्य करता था।
(C) यह न्याय प्रदान करने के लिए एक शाही न्यायालय था।
(D) यह पशु बलि के लिए एक पवित्र स्थान था।

17. चन्द्रगुप्त मौर्य के समय पाटलिपुत्र के नगर प्रशासन का वर्णन किस प्रसिद्ध प्राचीन कृति में मिलता है?
(A) कौटिल्य का अर्थशास्त्र
(B) मेगास्थनीज की इंडिका
(C) विशाखदत्त का मुद्राराक्षस
(D) पुराण

18. अशोक के अभिलेख निम्नलिखित में से किस लिपि को छोड़कर अन्य सभी में पाए जाते हैं?
(A) देवनागरी
(B) ब्राह्मी
(C) खरोष्ठी
(D) अरामी

19. अशोक के शिलालेखों की कौन सी श्रेणी कलिंग युद्ध और उसके परिणामों का सबसे विस्तृत विवरण प्रदान करती है?
(A) अशोक के लघु शिलालेख
(B) विभिन्न स्तंभ लेख
(C) तेरहवां (XIII) मुख्य शिलालेख
(D) बिहार के गुहा लेख

20. निम्नलिखित मौर्य शासकों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. अशोक
2. चन्द्रगुप्त मौर्य
3. बिंदुसार
4. बृहद्रथ

(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 3, 2, 1, 4

21. अशोक द्वारा नियुक्त 'धम्म महामत्त' नामक अधिकारियों का प्राथमिक कार्य क्या था?
(A) राज्य के लिए राजस्व एकत्र करना।
(B) विभिन्न प्रांतों में सेना का नेतृत्व करना।
(C) धम्म का प्रचार और पर्यवेक्षण करना।
(D) दीवानी और फौजदारी मामलों का न्याय करना।

22. मौर्य काल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मौर्य काल में निर्माण के लिए पकी हुई ईंटों का व्यापक उपयोग देखा गया।
कथन II: मौर्य युग के दौरान स्वच्छता और जल आपूर्ति के लिए वलय कूपों का उपयोग सामान्य हो गया था।
(A) कथन I सही है, और कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, और कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

23. सारनाथ स्थित प्रसिद्ध सिंह शीर्ष, जिसे भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया था, मूल रूप से किसका हिस्सा था?
(A) लघु शिलालेख
(B) मुख्य शिलालेख

(C) स्तूप तोरण द्वार
(D) अशोक का स्तंभ लेख

24. धम्म के प्रचार के लिए अशोक द्वारा अपनाया गया उपाय निम्नलिखित में से कौन सा नहीं था?
(A) लोगों को बलात अपने नए विश्वास में परिवर्तित करना।
(B) धम्म महामत्त नामक विशेष अधिकारियों की नियुक्ति।
(C) अपने सिद्धांतों को चट्टानों और स्तंभों पर उत्कीर्ण करना।
(D) श्रीलंका जैसे विदेशी देशों में मिशन भेजना।

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): कौटिल्य का अर्थशास्त्र शासन कला और प्रशासन के लिए एक व्यापक प्रारूप प्रदान करता है।
कारण (R): यह सप्तांग सिद्धांत और विभिन्न सरकारी अधिकारियों के कर्तव्यों की चर्चा करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

26. मौर्य संदर्भ में 'गिल्ड', जिसे 'श्रेणी' के रूप में जाना जाता है, का तात्पर्य है:
(A) शिल्पकारों या व्यापारियों का एक संगठन।
(B) एक विशिष्ट व्यवसाय वाला जाति समूह।
(C) एक धार्मिक संप्रदाय।
(D) एक सैन्य इकाई।

27. मौर्य युग की कला और वास्तुकला के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) इस युग से पहले कलात्मक उद्देश्यों के लिए पत्थर का उपयोग अज्ञात था।
(B) मौर्य कला विशेष रुप से धार्मिक थी जिसमें कोई लौकिक वास्तुकला नहीं थी।
(C) गांधार कला शैली इस काल की सबसे प्रमुख विशेषता थी।
(D) यह युग पाषाण मूर्तिकला और शैलकृत वास्तुकला द्वारा चिह्नित है।

28. अशोक के अभिलेखों में व्यापक रुप से प्रयुक्त ब्राह्मी लिपि को पहली बार किसके द्वारा पढ़ा गया था?
(A) अलेक्जेंडर कनिंघम
(B) जेम्स प्रिंसेप
(C) विलियम जोन्स
(D) मैक्स मूलर

29. मौर्य साम्राज्य के उत्तर-पश्चिमी भागों में प्रयुक्त खरोष्ठी लिपि कैसे लिखी जाती थी?
(A) बाएं से दाएं।
(B) ऊपर से नीचे।
(C) दाएं से बाएं।
(D) सर्पाकार स्वरुप में।

30. मौर्य साम्राज्य के विघटन के लिए बताए गए प्रमुख कारणों में से एक था:
(A) अशोक के बाद विनाशकारी विदेशी आक्रमण।
(B) किसी भी प्रांतीय प्रशासन व्यवस्था का अभाव।
(C) धम्म के प्रचार के कारण पतन।
(D) अहिंसा की नीति जिसने सेना को कमजोर कर दिया।

31. मौर्य प्रशासनिक विभाजनों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (विभाजन)
P. चक्र
Q. आहार/विषय
R. ग्राम
S. संग्रहण
सूची II: (विवरण)
1. गाँव
2. लगभग 10 गाँवों का समूह
3. प्रांत
4. जिला
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

32. शुंग वंश का संस्थापक, जो अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ का सेनापति था, कौन था?
(A) अग्निमित्र
(B) पुष्यमित्र शुंग
(C) वसुमित्र
(D) देवभूति

33. धार्मिक इतिहास में पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल का प्राथमिक महत्व क्या है?
(A) वह बौद्ध धर्म का एक बड़ा संरक्षक था।
(B) वह ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान से जुड़ा है।
(C) उसने जैन धर्म को राजकीय धर्म के रूप में बढ़ावा दिया।
(D) वह एक नास्तिक था जिसने सभी धर्मों का दमन किया।

34. कण्व वंश, जो शुंगों के उत्तराधिकारी बने, की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) वासुदेव कण्व
(B) नारायण
(C) भूमिमित्र
(D) सुशर्मन

35. सातवाहन वंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उनकी पहचान पुराणों में वर्णित आंध्रों से की जाती है।
2. उनके शासक अक्सर गौतमीपुत्र सातकर्णी की तरह मातृनाम का उपयोग करते थे।
3. वे मुख्य रूप से तमिल देश में स्थित एक समुद्री शक्ति थे।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3
(D) 1, 2 और 3

36. कौन सा सातवाहन शासक शक शासक नहपान को हराने के लिए प्रसिद्ध है और नासिक शिलालेख में जिसकी प्रशंसा की गई है?

(A) सिमुक
(B) हाल
(C) यज्ञ श्री सातकर्णी
(D) गौतमीपुत्र सातकर्णी

37. सातवाहन काल की कला का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व कहाँ की मूर्तियों द्वारा किया जाता है?

(A) सारनाथ और मथुरा
(B) एलोरा और एलिफेंटा
(C) अमरावती और नागार्जुनकोंडा
(D) महाबलीपुरम और कांचीपुरम

38. पहलव या हिंद-पार्थियन सबसे प्रसिद्ध रूप से किस राजा से जुड़े हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्हें सेंट थॉमस द्वारा धर्म परिवर्तित किया गया था?

(A) माउस
(B) गोंडोफर्नीस
(C) एजेस प्रथम
(D) कुजुल कडफिसेस

39. मौर्योत्तर भारत के संदर्भ में "बैक्ट्रियन" शब्द किसे संदर्भित करता है?

(A) मध्य एशिया के शक आक्रमणकारी।
(B) ईरान के पार्थियन शासक।
(C) दक्कन का एक स्थानीय राजवंश।
(D) बैक्ट्रिया क्षेत्र के यूनानी शासक।

40. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:

अभिकथन (A): मौर्योत्तर काल उत्तर भारत में महत्वपूर्ण राजनीतिक विखंडन द्वारा चिह्नित था।

कारण (R): केंद्रीकृत प्रशासन के पतन ने स्वदेशी और विदेशी राजवंशों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

41. हिंद-यवन शासकों में से कौन भिक्षु नागसेन के साथ बौद्ध धर्म पर अपने संवादों के लिए प्रसिद्ध है, जैसा कि 'मिलिंदपन्हो' ग्रंथ में दर्ज है?

(A) डेमेट्रियस
(B) यूक्रेटाइड्स
(C) मिनांडर
(D) अपोलोडोटस

42. भारतीय संस्कृति में हिंद-यवनों का महत्वपूर्ण योगदान क्या था?

(A) हेलेनिस्टिक कला विशेषताओं का परिचय।
(B) मानकीकृत लौह सिक्कों का परिचय।
(C) प्रारंभिक ब्राह्मी लिपि का विकास।
(D) बड़े स्तूपों और विहारों का निर्माण।

43. हिंद-यवनों के बाद भारत पर आक्रमण करने वाले शकों को किस नाम से भी जाना जाता था?

(A) यूची
(B) पार्थियन
(C) हुण
(D) सीथियन

44. सौराष्ट्र और मालवा क्षेत्र का कौन सा शक शासक जूनागढ़ शिलालेख के लिए प्रसिद्ध है?

(A) नहपान
(B) रुद्रदामन प्रथम
(C) माउस
(D) चष्टन

45. विभिन्न शक शाखाओं से संबंधित सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (शक क्षत्रप)

P. तक्षशिला के शक
Q. मथुरा के शक
R. पश्चिमी क्षत्रप (महाराष्ट्र)
S. पश्चिमी क्षत्रप (सौराष्ट्र)

सूची II: (प्रमुख शासक/परिवार)

1. नहपान
2. रुद्रदामन प्रथम
3. माउस
4. राजुवुल

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

46. कुषाण वंश की स्थापना निम्नलिखित में से किस नेता द्वारा की गई थी?

(A) विम कडफिसेस
(B) कनिष्क प्रथम

(C) हुविष्क
(D) कुजुल कडफिसेस

47. कुषाण वंश का सबसे शक्तिशाली और प्रसिद्ध शासक, जो अपनी सैन्य और आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए जाना जाता है, कौन था?
(A) कनिष्क प्रथम
(B) कुजुल कडफिसेस
(C) विम कडफिसेस
(D) वासुदेव प्रथम

48. कनिष्क का साम्राज्य अपने विशाल विस्तार के लिए उल्लेखनीय था, जिसमें मध्य एशिया के हिस्से शामिल थे और जो जोड़ता था:
(A) रोमन साम्राज्य को दक्कन के पठार से।
(B) रेशम मार्ग को भारतीय बंदरगाहों से।
(C) गंगा घाटी को नील घाटी से।
(D) दक्षिण भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र से।

49. चतुर्थ बौद्ध संगीति, जिसने बौद्ध धर्म के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ चिह्नित किया, किसके संरक्षण में आयोजित की गई थी?
(A) अशोक
(B) कनिष्क
(C) मिनांडर
(D) हर्ष

50. कुषाण काल के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) कुषाण जैन धर्म के कट्टर संरक्षक थे और उन्होंने बौद्ध धर्म का दमन किया।
(B) कनिष्क को 78 ईस्वी में शक संवत शुरु करने का श्रेय दिया जाता है।
(C) कुषाण शासकों ने बड़ी संख्या में सोने के सिक्के जारी किए।
(D) इस अवधि के दौरान गांधार और मथुरा कला शैलियाँ फली-फूलीं।

51. गांधार कला शैली, जो कुषाणों के अधीन विकसित हुई, किसका मिश्रण है?
(A) भारतीय विषय और फारसी शैली।
(B) फारसी विषय और चीनी शैली।
(C) भारतीय विषय और यूनानी/रोमन शैली।
(D) भारतीय विषय और मिस्र की शैली।

52. कलिंग का चेदि वंश किस शासक के अधीन प्रमुखता से उभरा, जिसकी उपलब्धियों का विवरण हाथीगुम्फा शिलालेख में मिलता है?
(A) अशोक
(B) सिमुक
(C) रुद्रदामन
(D) खारवेल

53. हाथीगुम्फा शिलालेख के अनुसार, खारवेल किस धर्म का अनुयायी था?
(A) बौद्ध धर्म
(B) आजीवक संप्रदाय
(C) जैन धर्म
(D) ब्राह्मण धर्म

54. संगम युग में, सुदूर दक्षिण के तीन प्रमुख राज्य चोल, चेर और _____ थे:
(A) पल्लव
(B) पाण्ड्य
(C) सातवाहन
(D) कदम

55. संगम युग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. संगम साहित्य मुख्य रूप से संस्कृत में रचित है।
2. यह साहित्य दक्षिण भारत के सामाजिक और राजनीतिक जीवन के बारे में समृद्ध विवरण प्रदान करता है।
3. संगम कवियों की सभाएँ थीं जिन्हें पाण्ड्य राजाओं का संरक्षण प्राप्त था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

56. संगम युग के दौरान चोल राज्य का प्रतीक निम्नलिखित में से कौन सा था?
(A) बाघ
(B) धनुष और बाण
(C) मछली
(D) सिंह

57. संगम युग का चेर साम्राज्य आधुनिक समय के किस क्षेत्र को नियंत्रित करता था?
(A) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना
(B) तमिलनाडु
(C) केरल और तमिलनाडु के कुछ हिस्से
(D) कर्नाटक

58. पाण्ड्य साम्राज्य की राजधानी, जो व्यापार के केंद्र और संगम सभाओं के स्थान के रूप में प्रसिद्ध थी, कौन सी थी?
(A) मदुरै
(B) उरैयूर
(C) वंजी
(D) कांचीपुरम

59. प्राचीन दक्षिण भारतीय इतिहास के संदर्भ में 'संगम' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(A) नदियों का संगम।
(B) एक राजकीय आदेश।

(C) एक प्रकार का कर।
(D) कवियों की गोष्ठी या सभा।

60. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): संगम युग की अर्थव्यवस्था जीवंत थी और रोमन साम्राज्य के साथ इसके व्यापक व्यापारिक संबंध थे।
कारण (R): दक्षिण भारत में रोमन सिक्कों के भंडार सहित पुरातात्विक साक्ष्य इसका समर्थन करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

61. 'वृहत्तर भारत' की अवधारणा किसे संदर्भित करती है?
(A) मौर्य साम्राज्य का क्षेत्रीय विस्तार।
(B) दक्षिण एशियाई देशों का आधुनिक राजनीतिक संघ।
(C) अन्य क्षेत्रों पर भारत का ऐतिहासिक सांस्कृतिक प्रभाव।
(D) सार्वभौमिक भाईचारे का एक दार्शनिक विचार।

62. प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। निम्नलिखित में से किसे ग्रहण के कारणों की व्याख्या करने का श्रेय दिया जाता है?
(A) चरक
(B) सुश्रुत
(C) वराहमिहिर
(D) आर्यभट्ट

63. कौन सा प्राचीन भारतीय ग्रंथ चिकित्सा पर एक व्यापक शोध प्रबंध है, जो रोग विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान से संबंधित है?
(A) चरक संहिता
(B) अर्थशास्त्र
(C) वृहत संहिता
(D) सूर्य सिद्धांत

64. कुतुब मीनार के पास स्थित दिल्ली का लौह स्तंभ, प्राचीन भारतीयों के किस उन्नत ज्ञान का प्रमाण है?
(A) खगोल विज्ञान
(B) धातु विज्ञान
(C) मूर्तिकला
(D) रसायन विज्ञान

65. प्राचीन भारतीय विद्वानों और उनके क्षेत्रों से संबंधित सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (विद्वान)
P. आर्यभट्ट
Q. सुश्रुत
R. वराहमिहिर
S. कौटिल्य
सूची II: (क्षेत्र)
1. शल्य चिकित्सा
2. खगोल विज्ञान और विश्वकोश
3. शासन कला
4. खगोल विज्ञान और गणित
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

66. दशमलव प्रणाली का विकास और शून्य की अवधारणा प्राचीन भारत के किस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान हैं?
(A) गणित
(B) भौतिकी
(C) रसायन विज्ञान
(D) चिकित्सा विज्ञान

67. निम्नलिखित में से कौन सा कौटिल्य के राज्य के सप्तांग सिद्धांत का हिस्सा नहीं है?
(A) जनपद (क्षेत्र)
(B) दण्ड (सेना)
(C) प्रजा (प्रजा का कल्याण)
(D) कोष (खजाना)

68. अशोक के अभिलेखों में अक्सर प्रयुक्त होने वाली "पियदस्सी" उपाधि का अनुवाद है:
(A) सर्वशक्तिमान विजेता।
(B) न्यायप्रिय राजा।
(C) अपनी प्रजा का पिता।
(D) देवताओं का प्रिय।

69. मौर्य प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मौर्य प्रशासन में प्रांतीय प्रमुख अक्सर शाही राजकुमार होते थे।
कथन II: केंद्र सरकार का प्रांतीय गवर्नरों पर कोई नियंत्रण नहीं था।
(A) कथन I सही है, और कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, और कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

70. मौर्यों के अधीन ग्राम प्रशासन का नेतृत्व किस व्यक्ति द्वारा किया जाता था?
(A) नागरिक
(B) ग्रामिक
(C) समाहर्ता
(D) राजुक

71. अशोक के शिलालेख उसके शासनकाल को समझने के प्राथमिक स्रोत हैं। उसके साम्राज्य के सुदूर उत्तर-पश्चिमी भाग में पाए गए अभिलेखों के लिए किस लिपि का उपयोग किया गया था?
(A) केवल ब्राह्मी लिपि
(B) केवल खरोष्ठी लिपि
(C) पाली लिपि
(D) यूनानी और अरामी

72. अशोक के लिए कलिंग युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम क्या था?
(A) व्यक्तिगत परिवर्तन और धम्म को अपनाना।
(B) मौर्य साम्राज्य का आर्थिक दिवालियापन।
(C) दक्षिण में सैन्य अभियानों की शुरुआत।
(D) विद्रोह के बाद साम्राज्य का विखंडन।

73. बिहार के बराबर गुफा अभिलेख किस संप्रदाय के प्रति अशोक के संरक्षण का प्रमाण प्रदान करते हैं?
(A) बौद्धों
(B) जैनियों
(C) आजीवकों
(D) ब्राह्मणों

74. मेगास्थनीज की इंडिका जैसे स्रोतों में वर्णित मौर्य काल का सामाजिक जीवन क्या संकेत देता है?
(A) व्यवसाय के आधार पर सात वर्गों में विभाजित समाज।
(B) एक वर्गहीन और समतावादी समाज।
(C) केवल चार वर्णों वाला समाज जिसमें कोई अन्य समूह नहीं था।
(D) एक ऐसा समाज जहाँ दासता पूरी तरह से अनुपस्थित थी।

75. मौर्योत्तर भारत के निम्नलिखित विदेशी आक्रमणकारियों को उनके आगमन के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. शक
2. कुषाण
3. हिंद-यवन
(A) 3, 1, 2
(B) 1, 3, 2
(C) 2, 1, 3
(D) 3, 2, 1

76. मौर्य काल में आर्थिक जीवन की विशेषता थी:
(A) अर्थव्यवस्था पर राज्य के नियंत्रण का पूर्ण अभाव।
(B) राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था जहाँ कृषि प्राथमिक थी।
(C) केवल विदेशी व्यापार पर आधारित अर्थव्यवस्था।
(D) बिना किसी मुद्रा के वस्तु विनिमय प्रणाली।

77. मौर्य काल के दौरान धार्मिक जीवन विविध था। निम्नलिखित में से कौन सी मान्यता इस समय प्रमुख नहीं थी?
(A) अपने अनुष्ठानों और बलिदानों के साथ ब्राह्मणवाद।
(B) बौद्ध और जैन धर्म के नास्तिक संप्रदाय।
(C) विष्णु और शिव पर केंद्रित भक्ति आंदोलन।
(D) यक्षों और यक्षिणियों की पूजा।

78. अशोक का एक प्रमुख प्रशासनिक सुधार अधिकारियों के एक ऐसे वर्ग का निर्माण करना था जो साम्राज्य का भ्रमण करें और शिकायतों का निवारण करें। इन अधिकारियों को कहा जाता था:
(A) धम्म महामत्त
(B) अमात्य
(C) सन्निधाता
(D) राजुक

79. मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए कई कारकों को उत्तरदायी माना जाता है। निम्नलिखित में से किसे एक प्रशंसनीय आर्थिक कारण माना जाता है?
(A) सेना और नौकरशाही पर अत्यधिक व्यय।
(B) सोने की खोज जिससे अत्यधिक मुद्रास्फीति हुई।
(C) पूरी तरह से व्यापार-आधारित अर्थव्यवस्था में बदलाव।
(D) जनसंख्या द्वारा कोई भी कर देने से इनकार।

80. पुष्यमित्र शुंग के शासन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि क्या थी?
(A) बौद्ध धर्म का संरक्षण और प्रसार।
(B) यूनानियों के विरुद्ध गंगा घाटी की रक्षा।
(C) संगम साहित्य का संकलन।
(D) रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक संबंध।

81. संगम युग के साम्राज्यों और उनके प्रतीकों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (साम्राज्य)
P. चेर
Q. चोल
R. पाण्ड्य
S. मौर्य (तुलना के लिए)
सूची II: (प्रतीक)
1. मछली
2. बाघ
3. धनुष और बाण
4. धर्मचक्र
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

82. सातवाहन साम्राज्य मुख्य रूप से भारत के किस क्षेत्र में स्थित था?
(A) दक्कन क्षेत्र, जिसमें आधुनिक महाराष्ट्र शामिल है।
(B) गंगा-यमुना दोआब।
(C) तमिलनाडु सहित सुदूर दक्षिण।

(D) उत्तर-पश्चिमी सीमा और पंजाब।

83. सातवाहन युग वास्तुकला में अपने विशिष्ट योगदान के लिए जाना जाता है, विशेष रुप से किस रुप में:
(A) एकल चट्टानों से बने बड़े अखंड मंदिर।
(B) शाही महलों में चमकदार टाइलों का उपयोग।
(C) शैलकृत चैत्य, विहार और स्तूप।
(D) द्रविड़ शैली के गोपुरमों का निर्माण।

84. हिंद-यवन राजा डेमेट्रियस किसके लिए जाना जाता है?
(A) जैन धर्म ग्रहण करने के लिए।
(B) इस क्षेत्र में सोने के सिक्के जारी करने के लिए।
(C) 'मिलिंदपन्हो' का पाठ लिखने के लिए।
(D) गंगा घाटी में गहराई तक आक्रमण करने के लिए।

85. शकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उन्होंने शासन की कई शाखाएँ स्थापित कीं, जिन्हें क्षत्रप के रूप में जाना जाता था।
2. वे सातवाहनों द्वारा पूरी तरह से पराजित और निष्कासित कर दिए गए थे।
3. उनका सबसे प्रसिद्ध शासक रुद्रदामन प्रथम था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

86. कनिष्क का प्रशासन किस पर आधारित था?
(A) अत्यधिक केंद्रीकृत मौर्य व्यवस्था पर।
(B) एक ऐसी व्यवस्था जिस पर क्षत्रप नामक शासक होते थे।
(C) नगर-राज्यों की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर।
(D) यूची की आदिवासी परिषद व्यवस्था पर।

87. कुषाणों द्वारा संरक्षित कौन सी कला शैली स्वदेशी शैली में बुद्ध की मानव रुपी मूर्तियाँ बनाने के लिए जानी जाती है?
(A) अमरावती शैली
(B) गांधार शैली
(C) मौर्य शैली
(D) मथुरा शैली

88. संगम साहित्य के मुख्य विषय को व्यापक रूप से 'अगम' और 'पुरम्' में विभाजित किया जा सकता है। यह निम्नलिखित में से किस वर्गीकरण को दर्शाता है?
(A) एक साहित्यिक और सामाजिक वर्गीकरण
(B) एक राजनीतिक वर्गीकरण
(C) एक आर्थिक वर्गीकरण
(D) एक धार्मिक वर्गीकरण

89. संगम युग की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख पहलू रोमन साम्राज्य को निम्नलिखित में से किस वस्तु का निर्यात था?
(A) लोहे और इस्पात के औजार
(B) रेशम और सूती वस्त्र
(C) मसाले और कीमती पत्थर
(D) घोड़े और शाही हाथी

90. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): चन्द्रगुप्त और कौटिल्य के अधीन मौर्य राज्य में एक विस्तृत गुप्तचर प्रणाली थी।
कारण (R): अर्थशास्त्र विभिन्न प्रकार के जासूसों और नियंत्रण बनाए रखने में उनके महत्व का वर्णन करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

91. सुश्रुत संहिता, जो एक प्राचीन ग्रंथ है, मुख्य रुप से ज्ञान के किस क्षेत्र से संबंधित है?
(A) प्राचीन खगोल विज्ञान
(B) राजनीति विज्ञान
(C) संस्कृत व्याकरण
(D) शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएं

92. अर्थशास्त्र में 'दण्डनीति' की अवधारणा मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) धर्मप्राण विजय का सिद्धांत।
(B) दंड देने और कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने की कला।
(C) राज्य की विदेश नीति।
(D) कराधान के नियम।

93. चन्द्रगुप्त मौर्य के प्राथमिक गुरु और सलाहकार कौन थे, जिन्हें नन्द वंश को उखाड़ फेंकने का सूत्रधार माना जाता है?
(A) मेगास्थनीज
(B) अशोक
(C) कौटिल्य
(D) बिंदुसार

94. अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या किसके द्वारा की गई थी?
(A) उसके अपने पुत्र द्वारा
(B) एक यूनानी आक्रमणकारी द्वारा
(C) एक जन विद्रोह द्वारा
(D) उसके सेनापति द्वारा

95. मौर्य प्रांतीय प्रशासन में 'प्रादेशिक' की क्या भूमिका थी?
(A) वह जिले में कार्यकारी और न्यायिक कार्यों को संयोजित करता था।
(B) वह प्रांत का कोषाध्यक्ष था।
(C) वह शहर के पुलिस बल का प्रभारी था।
(D) वह ग्राम प्रधान था।

96. अशोक का कौन सा अभिलेख द्विभाषी है, जिसमें यूनानी और अरामी दोनों भाषाओं का उपयोग किया गया है?
(A) सारनाथ स्तंभ लेख
(B) कंधार अभिलेख
(C) जूनागढ़ शिलालेख
(D) मास्की अभिलेख

97. अशोक के धम्म के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अशोक का धम्म बुद्ध की शिक्षाओं के समान था।
कथन II: धम्म एक सार्वभौमिक नैतिक आचार संहिता थी।
(A) कथन I सही है, और कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, और कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

98. उच्च गुणवत्ता वाली पॉलिश, जिसे अक्सर "मौर्य पॉलिश" कहा जाता है, किसकी एक विशिष्ट विशेषता है?
(A) मौर्यकालीन पत्थर के स्तंभों और मूर्तियों की
(B) मौर्यकालीन मृदभांडों की
(C) मौर्यकालीन वस्त्रों की
(D) मौर्यकालीन सिक्कों की

99. मौर्यों के विरुद्ध ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया को अक्सर उनके पतन का कारण बताया जाता है। इस दृष्टिकोण को किसके द्वारा समर्थन मिलता है?
(A) शुंगों को सत्ता का शांतिपूर्ण हस्तांतरण।
(B) ब्राह्मणवाद की निंदा करने वाले अशोक के शिलालेख।
(C) एक ब्राह्मण द्वारा अंतिम मौर्य राजा को उखाड़ फेंकना।
(D) ब्राह्मणों की आर्थिक समृद्धि।

100. महान सातवाहन शासक गौतमीपुत्र सातकर्णी ने स्वयं को "विदेशी शक्ति का विनाशक" कहा। यह दावा किसे उजागर करता है?
(A) बौद्ध धर्म के प्रति उनका व्यक्तिगत संरक्षण।
(B) पड़ोसियों के साथ शांतिपूर्ण राजनयिक संबंध।
(C) उनका संभावित प्राचीन यूनानी वंश।
(D) विदेशी शासकों और क्षत्रपों के साथ संघर्ष।

101. कुषाण राजा विम कडफिसेस किसके लिए महत्वपूर्ण है?
(A) कुषाण वंश के संस्थापक के रूप में।
(B) चतुर्थ बौद्ध संगीति बुलाने के लिए।
(C) बड़े पैमाने पर सोने के सिक्के जारी करने के लिए।
(D) चीनी हान वंश को हराने के लिए।

102. तोल्काप्पियम द्वारा स्थापित संगम युग की कविता और व्याकरण के वर्गीकरणों में से निम्नलिखित में से कौन सा एक नहीं है?
(A) अकम्
(B) धम्म
(C) पुरम्
(D) इसे अकम् और पुरम् में वर्गीकृत किया गया है।

103. प्राचीन भारतीय ग्रंथों में "यवन" शब्द मूल रूप से आयोनियन यूनानियों के लिए उपयोग किया जाता था लेकिन बाद में इसका उपयोग किसके लिए किया गया?
(A) पूर्वी एशिया के लोगों के लिए।
(B) मध्य एशियाई स्टेपी लोगों के लिए।
(C) दक्कन के निवासियों के लिए।
(D) पश्चिम से आए विदेशियों के लिए।

104. निम्नलिखित में से कौन सी प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली धातुओं के गुणों से सबसे अधिक संबंधित होगी?
(A) धातु विज्ञान
(B) खगोल विज्ञान
(C) चिकित्सा विज्ञान
(D) मूर्तिकला

105. मौर्य प्रशासन के शब्दों से संबंधित सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (शब्द)
P. राजुक
Q. युक्त
R. स्थानिक
S. गोप
सूची II: (कार्य)
1. भूमि मापन और न्याय के प्रभारी।
2. अधीनस्थ राजस्व अधिकारी।
3. 5-10 गांवों के प्रभारी लेखाकार।
4. जिला स्तर के राजस्व और कर संग्रहकर्ता।
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-1, Q-4, R-2, S-3
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

106. सप्तांग सिद्धांत में 'दण्ड' का तात्पर्य है:
(A) सेना या राज्य की दमनकारी शक्ति
(B) राजकोष
(C) किलेबंद राजधानी
(D) सहयोगी और मित्र

107. निम्नलिखित में से कौन सा स्रोत चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य के सत्ता में आने का वृत्तांत प्रदान करता है?
(A) अशोक के शिलालेख
(B) मेगास्थनीज की इंडिका
(C) हाथीगुम्फा शिलालेख
(D) विशाखदत्त का मुद्राराक्षस

108. अशोक के प्रशासनिक सुधारों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) नई सैन्य विजयों की तैयारी करना।
(B) प्रशासन को मानवीय और नैतिक बनाना।

(C) नए करों के माध्यम से राजस्व बढ़ाना।
(D) प्रांतों को स्वायत्तता प्रदान करना।

109. अशोक का 'लघु शिलालेख' क्या है?
(A) एक छोटी चट्टान पर खुदा हुआ एक मुख्य शिलालेख।
(B) छोटे प्रांतों में पाया गया एक अभिलेख।
(C) विशिष्ट विषय-वस्तु वाले व्यक्तिगत अभिलेखों का एक समूह।
(D) एक कनिष्ठ अधिकारी द्वारा जारी किया गया शिलालेख।

110. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): गांधार और मथुरा कला शैलियाँ दो अलग-अलग कलात्मक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।
कारण (R): जबकि गांधार कला हेलेनिस्टिक शैलियों से प्रभावित थी, मथुरा कला अधिक स्वदेशी थी।
(A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

111. उत्तर मौर्य काल में श्रेणियों के पतन को कभी-कभी किसका लक्षण माना जाता है?
(A) शहरी जीवन और वाणिज्य में गिरावट का।
(B) बढ़ती आर्थिक समृद्धि का।
(C) उत्पादन पर बढ़ते राजकीय नियंत्रण का।
(D) कृषि आधारित अर्थव्यवस्था की ओर झुकाव का।

112. कण्व वंश का इतिहास संक्षिप्त और अस्पष्ट होने का मुख्य कारण क्या है?
(A) उन्होंने सदियों तक एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया।
(B) उनका शासन अल्पकालिक था और उनका क्षेत्र सीमित था।
(C) उन्होंने सभी ऐतिहासिक अभिलेखों को नष्ट कर दिया।
(D) कोई भी शिलालेख या सिक्के नहीं पाए गए हैं।

113. सातवाहन समाज की विशिष्ट विशेषताओं में से एक थी:
(A) पितृनाम नामकरण प्रणाली का उपयोग।
(B) मातृनाम नामकरण प्रणाली का प्रचलन।
(C) उत्तराधिकार की एक सख्त मातृसत्तात्मक व्यवस्था।
(D) जातिगत भेदभाव का पूर्ण अभाव।

114. "महाराष्ट्र के शक क्षत्रप" शब्द मुख्य रूप से किस शासक के राजवंश को संदर्भित करता है?
(A) नहपान
(B) रुद्रदामन प्रथम
(C) मिनांडर
(D) गोंडोफर्नीस

115. कनिष्क के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उन्हें 78 ईस्वी में शक संवत शुरू करने का श्रेय दिया जाता है।
2. वे महायान बौद्ध धर्म के महान संरक्षक थे।
3. उनकी शीतकालीन राजधानी पुरुषपुर में थी।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

116. कलिंग के खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख एक मूल्यवान ऐतिहासिक स्रोत है क्योंकि:
(A) यह संस्कृत में लिखा गया है, जो अपनी तरह का पहला है।
(B) यह एक बड़े युद्ध के बाद उनके धर्म परिवर्तन का वर्णन करता है।
(C) यह कलिंग और रोम के बीच व्यापार मार्गों को सूचीबद्ध करता।
(D) यह शासन का विस्तृत वर्ष-वार वृत्तांत प्रदान करता है।

117. कौन सा संगम साम्राज्य अपने मोती उत्पादन और अपनी राजधानी मदुरै के लिए जाना जाता था?
(A) चोल
(B) चेर
(C) पाण्ड्य
(D) पल्लव

118. संगम ग्रंथ तोल्काप्पियम किसकी कृति है?
(A) महाकाव्य कविता
(B) तमिल व्याकरण
(C) नीतिशास्त्र और नैतिकता
(D) युद्ध की कला

119. प्राचीन भारत के एक चिकित्सक जो 'चरक संहिता' के लेखक हैं, वे कौन हैं?
(A) सुश्रुत
(B) वराहमिहिर
(C) आर्यभट्ट
(D) चरक

120. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही नहीं है?
(A) चैत्य - शाही न्यायालय
(B) स्तूप - बौद्ध अवशेषों वाला टीला
(C) विहार - भिक्षुओं का निवास स्थान
(D) सप्तांग - राज्य का सिद्धांत

121. चन्द्रगुप्त मौर्य का केंद्रीय प्रशासन मंत्रियों की एक परिषद द्वारा प्रबंधित किया जाता था, जिसे कहा जाता था:
(A) सप्तांग
(B) सभा

(C) मंत्रिपरिषद्
(D) समिति

122. अशोक की 'धम्म विजय' की नीति पहली बार किस बड़ी घटना के बाद स्पष्ट की गई थी?
(A) कलिंग युद्ध
(B) उनका राज्याभिषेक
(C) तृतीय बौद्ध संगीति
(D) उनका श्रीलंका मिशन

123. अशोक के 'लघु स्तंभ लेख' मुख्य स्तंभ लेखों से अलग हैं और इनमें इस प्रकार के अभिलेख शामिल हैं:
(A) पशु वध पर प्रतिबंध।
(B) कलिंग युद्ध का विवरण।
(C) संरक्षित जानवरों की सूची।
(D) संघ में फूट के विरुद्ध चेतावनी।

124. मौर्य साम्राज्य में ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों की उपस्थिति क्या दर्शाती है?
(A) पूरे साम्राज्य में एक समान लिपि लागू की गई थी।
(B) विभिन्न लिपियों वाले क्षेत्रों को जोड़ने वाले संपर्क।
(C) धर्म के लिए खरोष्ठी और प्रशासन के लिए ब्राह्मी।
(D) ब्राह्मी लिपि खरोष्ठी लिपि से विकसित हुई थी।

125. निम्नलिखित राजवंशों को उनकी स्थापना के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. कण्व
2. शुंग
3. मौर्य
4. सातवाहन
(A) 3, 2, 1, 4
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 3, 4, 2, 1
(D) 4, 3, 1, 2

126. पुष्यमित्र शुंग की एक प्रमुख उपलब्धि 'अश्वमेध' का आयोजन था, जो किसका प्रतीक था?
(A) किसी बड़ी शक्ति के प्रति समर्पण।
(B) बौद्ध धर्म में परिवर्तन।
(C) हिंद-यवनों के साथ शांति संधि।
(D) शाही संप्रभुता का दावा।

127. सातवाहनों को अक्सर भारत के उत्तर और दक्षिण के बीच का सेतु माना जाता है क्योंकि:
(A) उन्होंने दक्षिण में संस्कृति के प्रसार की सुविधा प्रदान की।
(B) उन्होंने नर्मदा नदी पर पुल बनाए।
(C) उन्होंने उत्तर और दक्षिण पर एक साथ शासन किया।
(D) वे विशेष रूप से दक्षिणी भाषाओं का उपयोग करते थे।

128. यूक्रेटाइड्स एक प्रसिद्ध _____ था:
(A) शक शासक जिसने सातवाहनों से युद्ध किया।
(B) हिंद-यवन राजा जिसने तक्षशिला से शासन किया।
(C) राजा कनिष्क के अधीन कुषाण सेनापति।
(D) भिक्षु जिसने राजा मिनांडर से शास्त्रार्थ किया।

129. 'सौराष्ट्र और मालवा के शक क्षत्रप' शब्द सबसे प्रसिद्ध रूप से किस राजवंश से जुड़ा है?
(A) माउस
(B) चष्टन और रुद्रदामन प्रथम
(C) नहपान
(D) कनिष्क

130. कुषाण कला एक समन्वित मिश्रण है जहाँ बौद्ध, ब्राह्मणवादी और पारसी आकृतियाँ दिखाई देती हैं। यह क्या प्रदर्शित करता है?
(A) उदार धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण।
(B) किसी सुसंगत धार्मिक नीति का अभाव।
(C) भारत पर विदेशी संस्कृति का थोपा जाना।
(D) भारतीय परंपराओं का पूर्ण त्याग।

131. संगम काल के दौरान चोल साम्राज्य का मुख्य बंदरगाह शहर कौन सा था?
(A) मुज़िरिस
(B) मदुरै
(C) पुहार
(D) कोरकई

132. संगम साहित्य एक ऐसे समाज का सुझाव देता है जो:
(A) पूरी तरह से देहाती और खानाबदोश था।
(B) बिना किसी संघर्ष वाला एक आदर्श समाज था।
(C) एक भाषा के प्रभुत्व वाला समाज था।
(D) सांस्कृतिक क्षेत्रों के साथ अत्यधिक स्तरीकृत था।

133. चिकित्सा की एक व्यापक प्रणाली के रूप में 'आयुर्वेद' का विकास सबसे निकटता से किससे जुड़ा है?
(A) आर्यभट्ट और वराहमिहिर
(B) कौटिल्य और पाणिनि
(C) चरक और सुश्रुत
(D) पतंजलि और गौतम

134. कौटिल्य के सप्तांग का कौन सा तत्व राजा की 'आंख' माना जाता है, जो गुप्तचरों के जाल को संदर्भित करता है?
(A) मित्र
(B) यह सप्तांग का अलग अंग नहीं है।
(C) दण्ड
(D) कोष

135. चन्द्रगुप्त के अधीन मौर्य साम्राज्य का विस्तार अपनी पश्चिमी सीमा पर कहाँ तक पहुँच गया था?
(A) नर्मदा नदी
(B) सिंधु नदी

(C) ब्रह्मपुत्र नदी
(D) हिंदूकुश पर्वत

136. मेगास्थनीज के अनुसार, पाटलिपुत्र का नगर प्रशासन किसके द्वारा संचालित किया जाता था?
(A) 5-5 सदस्यों की छह समितियां
(B) 8-8 सदस्यों की चार समितियां
(C) 6-6 सदस्यों की पांच समितियां
(D) 3-3 सदस्यों की दस समितियां

137. अशोक के शिलालेखों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) वे प्रजा के साथ संवाद करने का एक साधन थे।
(B) वे भारत, नेपाल और पाकिस्तान में पाए जाते हैं।
(C) सभी शिलालेख विशेष रूप से बौद्ध धर्म के बारे में हैं।
(D) जेम्स प्रिंसेप उन्हें पढ़ने वाले पहले व्यक्ति थे।

138. मौर्य काल में एक विशिष्ट प्रकार के मृदभांड का उत्पादन हुआ जिसे किस नाम से जाना जाता है?
(A) उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड
(B) चित्रित धूसर मृदभांड
(C) गेरू रंग के मृदभांड
(D) लाल और काले मृदभांड

139. मौर्य साम्राज्य के पतन का एक राजनीतिक कारण क्या था?
(A) एक शक्तिशाली व्यापारी वर्ग का उदय।
(B) सरकार की लोकतांत्रिक प्रकृति।
(C) सभी प्रांतों का शांतिपूर्ण अलगाव।
(D) प्रांतीय नौकरशाहों द्वारा दमन।

140. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): सातवाहन शासकों ने ब्राह्मणवाद और बौद्ध धर्म दोनों को संरक्षण दिया।
कारण (R): शासकों ने वैदिक यज्ञ किए और साथ ही बौद्ध स्तूपों के लिए दान भी दिया।
(A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

141. बैक्ट्रियन ग्रीक भारत के पहले शासक थे जिन्होंने:
(A) अपने प्रशासन में संस्कृत का प्रयोग किया।
(B) स्तूप बनवाए।
(C) राजाओं के चित्रों वाले सिक्के जारी किए।
(D) मातृसत्तात्मक उत्तराधिकार का पालन किया।

142. "तक्षशिला के शकों" की स्थापना किस शासक द्वारा की गई थी?
(A) नहपान
(B) रुद्रदामन
(C) गोंडोफर्नीस
(D) माउस

143. कनिष्क के उदय से पहले कौन सा कुषाण शासक कट्टर शैव था?
(A) विम कडफिसेस
(B) कुजुल कडफिसेस
(C) हुविष्क
(D) वासुदेव प्रथम

144. संगम युग के चेर साम्राज्य का किस मुख्य बंदरगाह के माध्यम से मसालों का फलता-फूलता व्यापार था?
(A) पुहार
(B) मुज़िरिस
(C) कोरकई
(D) मदुरै

145. प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. आर्यभट्ट ने सूर्य-केंद्रित सिद्धांत प्रस्तावित किया और पाई की गणना की।
2. सुश्रुत संहिता में नासिका संधान सहित जटिल शल्य क्रियाओं का वर्णन है।
3. दशमलव प्रणाली का उपयोग रोमन आविष्कार था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

146. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य की आय के स्रोत के रूप में 'विष्टि' का उल्लेख है। इसका क्या अर्थ है?
(A) राज्य सार्वजनिक कार्यों के लिए बलात श्रम का उपयोग करता था।
(B) राज्य स्वैच्छिक दान पर निर्भर था।
(C) सभी श्रम का भुगतान सोने के सिक्कों में किया जाता था।
(D) राज्य श्रम में हस्तक्षेप नहीं करता था।

147. पश्चिमी भारत पर चन्द्रगुप्त मौर्य की विजय का प्रमाण किससे मिलता है?
(A) उस क्षेत्र में अशोक के शिलालेखों से।
(B) चीनी यात्री फाह्यान के लेखन से।
(C) एक राज्यपाल के बांध का उल्लेख करने वाले शिलालेख से।
(D) गुजरात में मौर्य शैली के मृदभांडों से।

148. सम्राट के रूप में अभिषेक से पहले अशोक ने अपने प्रारंभिक जीवन में कहाँ के उपराजा के रूप में कार्य किया था?
(A) कलिंग और तोसाली

(B) सुवर्णगिरी और पाटलिपुत्र
(C) कंबोज और गांधार
(D) तक्षशिला और उज्जैन

149. अशोक के मुख्य शिलालेखों की विषय-वस्तु मुख्य रुप से किससे संबंधित है?
(A) आत्मकथा और पारिवारिक इतिहास।
(B) विजित क्षेत्र और युद्ध की लूट।
(C) धम्म और प्रशासनिक नीतियां।
(D) महायान बौद्ध धर्म के सिद्धांत।

150. मौर्योत्तर राजवंशों और उनके संस्थापकों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राजवंश)
P. शुंग
Q. कण्व
R. सातवाहन
S. कुषाण
सूची II: (संस्थापक)
1. सिमुक
2. कुजुल कडफिसेस
3. पुष्यमित्र
4. वासुदेव
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

151. सातवाहन साम्राज्य के आर्थिक जीवन की क्या विशेषता थी?
(A) व्यापार और शहरीकरण में गिरावट।
(B) व्यापारी श्रेणियों पर पूर्ण प्रतिबंध।
(C) केवल पशुपालन पर आधारित अर्थव्यवस्था।
(D) फलता-फूलता व्यापार और सिक्कों का प्रचलन।

152. पश्चिमी क्षत्रपों और सातवाहनों के बीच संघर्ष मुख्य रुप से किसके लिए था?
(A) बंदरगाहों और व्यापार मार्गों पर नियंत्रण।
(B) उपजाऊ गंगा के मैदान।
(C) गोलकोंडा की हीरे की खदानें।
(D) पाटलिपुत्र का धार्मिक केंद्र।

153. कनिष्क के प्रशासन की एक विशिष्ट विशेषता क्षत्रपों की दोहरी प्रणाली थी। इसका संभावित उद्देश्य क्या था?
(A) कलात्मक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना।
(B) प्रांत को दो हिस्सों में विभाजित करना।
(C) नियंत्रण और संतुलन सुनिश्चित करना।
(D) कनिष्ठ प्रशासकों को प्रशिक्षण देना।

154. संगम युग का साहित्य दक्षिण भारत के लिए एक अमूल्य स्रोत है। यह साहित्य मुख्य रूप से किस भाषा में है?
(A) तमिल
(B) संस्कृत
(C) पाली
(D) तेलुगु

155. एक संख्या के रूप में शून्य की अवधारणा प्राचीन भारतीय ____ का क्रांतिकारी योगदान था:
(A) भौतिकविदों
(B) रसायनविदों
(C) मूर्तिकारों
(D) गणितज्ञों

156. सप्तांग सिद्धांत में 'मित्र' किसे दर्शाता है?
(A) कानून और न्याय की व्यवस्था।
(B) राजा के सहयोगी राज्य या मित्र।
(C) गुप्तचरों का जाल।
(D) शाही परिवार।

157. अशोक के किस स्तंभ लेख को लोकप्रिय रूप से "रानी का अभिलेख" कहा जाता है?
(A) सारनाथ स्तंभ लेख
(B) लौरिया नंदनगढ़ स्तंभ लेख
(C) इलाहाबाद-कौशाम्बी स्तंभ लेख
(D) रामपुरवा स्तंभ लेख

158. मौर्य काल के दौरान सामाजिक संरचना में किन व्यावसायिक समूहों का उदय हुआ जो संगठित थे?
(A) जातियां
(B) कुल
(C) गण
(D) श्रेणियाँ

159. सातवाहन वंश का इतिहास मुख्य रूप से किससे निर्मित होता है?
(A) पुराणों, अभिलेखों और सिक्कों से।
(B) केवल यूनानी यात्रियों के वृत्तांतों से।
(C) केवल प्राचीन संगम साहित्य से।
(D) बौद्ध जातक कथाओं से।

160. निम्नलिखित में से कौन एक प्रसिद्ध हिंद-यवन राजा था जिसने साकल से शासन किया और बौद्ध धर्म का संरक्षक था?
(A) डेमेट्रियस
(B) मिनांडर प्रथम
(C) यूक्रेटाइड्स
(D) अपोलोडोटस द्वितीय

161. कुषाणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: कुषाण चीनी मूल के थे।
कथन II: कुषाणों ने भारतीय धर्मों को अपनाया और वे भारतीय कला के संरक्षक बन गए।
(A) कथन I सही है, और कथन II गलत है।

(B) कथन I गलत है, और कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

162. एक चिकित्सक एक प्राचीन ग्रंथ में नासिका संधान का विवरण देखता है। यह ग्रंथ सबसे अधिक संभावना है:
(A) सुश्रुत संहिता
(B) अर्थशास्त्र
(C) चरक संहिता
(D) वृहत संहिता

163. अशोक के किस अभिलेख में 'धम्म विजय' की अवधारणा का सबसे विस्तृत वर्णन मिलता है?
(A) मुख्य शिलालेख I
(B) मुख्य शिलालेख VII
(C) मुख्य शिलालेख XIII
(D) स्तंभ लेख II

164. गाँव प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। 10 गाँवों के समूह के मुखिया को क्या कहा जाता था?
(A) ग्रामिक
(B) स्थानिक
(C) राजुक
(D) गोप

165. सातवाहन काल की कला और वास्तुकला किसके लिए प्रसिद्ध है?
(A) संगमरमर और पॉलिश की हुई सतहों के उपयोग के लिए।
(B) स्थिर और विशाल आकृतियों के लिए।
(C) जातक कथाओं को दर्शाने वाली गतिशील मूर्तियों के लिए।
(D) मानवीय आकृतियों के पूर्ण अभाव के लिए।

166. रुद्रदामन प्रथम सुदर्शन झील की मरम्मत के लिए प्रसिद्ध हैं। इस झील का निर्माण मूल रूप से किसके शासनकाल में हुआ था?
(A) अशोक
(B) चन्द्रगुप्त मौर्य
(C) बिंदुसार
(D) समुद्रगुप्त

167. कनिष्क के अधीन आयोजित चतुर्थ बौद्ध संगीति के कारण किनके बीच एक बड़ा विभाजन हुआ?
(A) आजीवक और जैन।
(B) श्वेतांबर और दिगंबर।
(C) उत्तरी और दक्षिणी स्कूल।
(D) महायान और हीनयान संप्रदाय।

168. संगम युग के लोगों द्वारा पूजे जाने वाले प्राथमिक देवता कौन थे?
(A) मुरुगन
(B) बुद्ध
(C) विष्णु
(D) शिव

169. ऐतिहासिक संदर्भ में "वृहत्तर भारत" का क्या अर्थ है?
(A) वह काल जब भारत भौगोलिक रूप से सबसे बड़ा था।
(B) आधुनिक नेताओं द्वारा परिकल्पित संघ।
(C) दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति का विस्तार।
(D) यूनानी ग्रंथों में दिया गया प्राचीन नाम।

170. निम्नलिखित में से किसे प्राचीन भारतीय गणित का योगदान नहीं माना जाता है?
(A) कलन का विकास
(B) शून्य की अवधारणा
(C) दशमलव स्थान-मान प्रणाली
(D) पाई की गणना

171. मौर्य प्रशासन में नगर पुलिस के प्रमुख को किस नाम से जाना जाता था?
(A) समाहर्ता
(B) दुर्गपाल
(C) अंतपाल
(D) नागरिक

172. 'सप्तांग' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'सात अंग' है। निम्नलिखित में से कौन इन अंगों में से एक नहीं है?
(A) स्वामिन
(B) वर्ण
(C) अमात्य
(D) दुर्ग

173. अशोक के किस शिलालेख में समकालीन यूनानी राजाओं के नामों का उल्लेख है?
(A) शिलालेख V
(B) शिलालेख IX
(C) शिलालेख XIII
(D) शिलालेख II

174. मौर्य युग की भौतिक संस्कृति किस वस्तु के पहली बार बड़े पैमाने पर उपयोग से प्रतिष्ठित है?
(A) मिट्टी और फूस
(B) लकड़ी
(C) कांस्य
(D) पत्थर

175. मौर्य साम्राज्य के पतन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. साम्राज्य की विशालता के कारण इसे नियंत्रित करना कठिन हो गया था।
2. अशोक के उत्तराधिकारी कमजोर शासक थे।

3. शांतिवादी नीतियों ने सैन्य शक्ति को कमजोर कर दिया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से प्रशंसनीय कारण हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

176. प्रतिष्ठान से शासन करने वाला कौन सा राजवंश 400 वर्षों तक दक्कन में एक प्रमुख शक्ति था?
(A) चोल
(B) सातवाहन
(C) शुंग
(D) कण्व

177. 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' किसके बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है?
(A) मौर्य दरबार के बारे में।
(B) हिंद-रोमन व्यापार और बंदरगाहों के बारे में।
(C) अशोक के धम्म दर्शन के बारे में।
(D) कुषाण सैन्य रणनीति के बारे में।

178. 'उज्जैन के शक' किस दक्कन शक्ति के साथ निरंतर संघर्ष में थे?
(A) सातवाहन
(B) चोल
(C) पाण्ड्य
(D) कुषाण

179. कनिष्क युग के साहित्य में बौद्ध विद्वानों का उत्कर्ष देखा गया। निम्नलिखित में से कौन समकालीन था?
(A) कालिदास
(B) बाणभट्ट
(C) अश्वघोष
(D) हरिषेण

180. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): संगम साहित्य दक्षिण भारत को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है।
कारण (R): इसकी रचना एक एकल लेखक द्वारा की गई थी जो एक सुसंगत दृष्टिकोण प्रदान करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

181. प्राचीन भारतीय खगोलविदों में से किसे 'पंचसिद्धांतिका' लिखने का श्रेय दिया जाता है?
(A) आर्यभट्ट
(B) ब्रह्मगुप्त
(C) वराहमिहिर
(D) भास्कर प्रथम

182. एक 'स्तूप' मौलिक रूप से किस रूप में कार्य करता है?
(A) भिक्षुओं के रहने का स्थान।
(B) अवशेषों वाला एक स्मारक।
(C) एक सामूहिक प्रार्थना सभा भवन।
(D) लौकिक शिक्षा का केंद्र।

183. निम्नलिखित मौर्य अधिकारियों में से कौन मुख्य रूप से राजस्व संग्रह के लिए उत्तरदायी था?
(A) सन्निधाता
(B) अध्यक्ष
(C) कुमार
(D) समाहर्ता

184. अशोक का रुम्मिनदेई स्तंभ अभिलेख महत्वपूर्ण है क्योंकि:
(A) इसमें उनकी लुंबिनी यात्रा और कर में कमी का उल्लेख है।
(B) यह उनके बौद्ध धर्म में परिवर्तन को दर्ज करता है।
(C) यह उनके बच्चों के नाम सूचीबद्ध करता है।
(D) यह बलि के निषेध की घोषणा करता है।

185. सातवाहन काल का समाज विभिन्न प्रभावों का मिश्रण प्रतीत होता है। कौन सी विशेषता यह संकेत देती है?
(A) जीवन के सभी क्षेत्रों में विशेष रूप से प्राकृत का उपयोग।
(B) जाति व्यवस्था का पूर्ण त्याग।
(C) शासकों के मातृनाम और वैदिक यज्ञ।
(D) यूनानी को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाना।

186. प्रसिद्ध 'मिलिंदपन्हो' राजा मिनांडर और किसके बीच एक संवाद है?
(A) नागसेन
(B) अश्वघोष
(C) नागार्जुन
(D) वसुबंधु

187. मथुरा कला शैली द्वारा मुख्य रूप से किस सामग्री का उपयोग किया गया था?
(A) नीले-धूसर शिस्ट पत्थर
(B) सफेद संगमरमर
(C) कांस्य
(D) चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर

188. संगम शब्दावली में, पांच पारिस्थितिक क्षेत्रों को किसके आधार पर वर्गीकृत किया गया था?
(A) उनकी राजनीतिक निष्ठा के आधार पर।
(B) भौगोलिक विशेषताओं और सामाजिक जीवन के आधार पर।
(C) उनके निवासियों की जाति के आधार पर।

(D) उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा के आधार पर।

189. चिकित्सा विज्ञान में प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक प्रमुख पहलू था:
(A) शल्य चिकित्सा ही एकमात्र उपचार के रूप में।
(B) प्राथमिक उपचार के रूप में आध्यात्मिक उपचार।
(C) समग्र आहार और स्वच्छता का दृष्टिकोण।
(D) आनुभविक अवलोकन का त्याग।

190. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्राचीन ग्रंथ)
P. अर्थशास्त्र
Q. इंडिका
R. मिलिंदपन्हो
S. हाथीगुम्फा शिलालेख
सूची II: (संबद्ध व्यक्ति/विषय)
1. मिनांडर और नागसेन
2. खारवेल का शासन
3. कौटिल्य द्वारा मौर्य प्रशासन
4. मेगास्थनीज द्वारा मौर्य समाज
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

191. सप्तांग सिद्धांत के किस तत्व को प्रशासन का 'तंत्रिका केंद्र' माना जाता है?
(A) अमात्य
(B) जनपद
(C) कोष
(D) दण्ड

192. अशोक की उपाधि "देवानामपिय" जो अक्सर उनके अभिलेखों में मिलती है, का अर्थ है:
(A) दैवीय अधिकार वाला राजा
(B) देवताओं का प्रिय
(C) भाग्यशाली व्यक्ति
(D) विश्व का विजेता

193. मौर्य आर्थिक विभागों के प्रभारी अधीक्षकों को क्या कहा जाता था?
(A) राजुक
(B) अध्यक्ष
(C) महामत्त
(D) गोप

194. मौर्य युग के दौरान धार्मिक जीवन किसकी विशेषता थी?
(A) पूरे साम्राज्य में आस्थाओं की बहुलता।
(B) बौद्ध धर्म का एकमात्र प्रभुत्व।
(C) ब्राह्मणवाद का विशेष संरक्षण।
(D) यक्ष जैसी लोकप्रिय पंथों की अनुपस्थिति।

195. अशोक के जीवन की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. कलिंग विजय
2. धम्म महामत्तों की नियुक्ति
3. सिंहासन पर बैठना
4. तृतीय बौद्ध संगीति बुलाना
(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 2, 4, 3, 1

196. पहलव मुख्य रूप से उपमहाद्वीप के किस भाग पर शासन करने से जुड़े हैं?
(A) सुदूर दक्षिण
(B) गंगा घाटी
(C) दक्कन का पठार
(D) उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र

197. पहलव वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक कौन था?
(A) माउस
(B) एजेस
(C) गोंडोफर्नीस
(D) विम कडफिसेस

198. "मथुरा के शक क्षत्रप" किसके संरक्षण के लिए जाने जाते थे?
(A) ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च।
(B) जैन धर्म और मथुरा की कला परंपराओं।
(C) पारसी धर्म।
(D) विशेष रूप से ब्राह्मणवादी अनुष्ठानों।

199. कुषाण काल की महानतम साहित्यिक हस्तियों में से एक अश्वघोष थे, जिन्होंने किसकी रचना की थी?
(A) अर्थशास्त्र
(B) तोल्काप्पियम
(C) मिलिंदपन्हो
(D) बुद्धचरित

200. पाण्ड्य साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) मोती उत्पादन और रोम के साथ व्यापार।
(B) कावेरी से प्राप्त कृषि अधिशेष।
(C) व्यापक स्वर्ण खनन कार्य।
(D) घोड़ों के व्यापार पर एकाधिकार।

201. कौन सा प्राचीन भारतीय ग्रंथ पौधों का वर्गीकरण और कृषि पर मार्गदर्शन प्रदान करता है?
(A) नाट्य शास्त्र
(B) काम सूत्र
(C) अर्थशास्त्र

(D) मनु स्मृति

202. मौर्य प्रशासन में 'करा' का तात्पर्य था:
(A) कृषि उपज पर एक नियमित कर
(B) राजा को दी जाने वाली भेंट
(C) व्यापारिक वस्तुओं पर कर
(D) जल कर

203. चन्द्रगुप्त मौर्य की श्रवणबेलगोला की यात्रा किस परंपरा का एक सिद्धांत है?
(A) बौद्ध
(B) आजीवक
(C) ब्राह्मणवादी
(D) जैन

204. मौर्यकालीन ग्राम प्रधान को किसके द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी?
(A) मंत्रियों की एक परिषद द्वारा।
(B) ग्राम वृद्धों द्वारा।
(C) सेना की एक टुकड़ी द्वारा।
(D) केंद्र द्वारा नियुक्त एक गुप्तचर द्वारा।

205. अशोक के अभिलेखों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: स्तंभ लेख विषय-वस्तु में शिलालेखों की तुलना में अधिक एकसमान हैं।
कथन II: स्तंभ लेख पॉलिश किए हुए बलुआ पत्थर के स्तंभों पर उत्कीर्ण थे।
(A) कथन I सही है, और कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, और कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

206. अशोक के अधिकांश अभिलेखों के लिए प्रयुक्त लिपि थी:
(A) खरोष्ठी
(B) अरामी
(C) यूनानी
(D) ब्राह्मी

207. मौर्य साम्राज्य के विघटन में एक कारक बाहरी प्रांतों का विकास था। इसके परिणामस्वरूप क्या हुआ?
(A) अधिक स्वायत्तता की इच्छा।
(B) पाटलिपुत्र पर अधिक निर्भरता।
(C) राजधानी में सांस्कृतिक पुनर्जागरण।
(D) इन क्षेत्रों का परित्याग।

208. शुंग काल किन बौद्ध स्थलों की कला और वास्तुकला के लिए उल्लेखनीय है?
(A) अमरावती और नागार्जुनकोंडा
(B) भरहुत और सांची के तोरण द्वार
(C) अजंता और एलोरा
(D) एलिफेंटा और कार्ला

209. पश्चिमी दक्कन में सातवाहनों के उत्तराधिकारी कौन थे?
(A) पल्लव
(B) वाकाटक
(C) चालुक्य
(D) गुप्त

210. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): कुषाण काल सांस्कृतिक समन्वय का समय था।
कारण (R): कुषाण शासकों ने व्यापार को सुगम बनाया और विविध सांस्कृतिक तत्वों का मिश्रण किया।
(A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

211. खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख कहाँ स्थित है?
(A) बराबर पहाड़ियाँ
(B) जूनागढ़
(C) उदयगिरि पहाड़ियाँ
(D) सांची

212. संगम युग की संस्कृति के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) समाज विभिन्न समूहों में विभाजित था।
(B) मुरुगन की पूजा लोकप्रिय थी।
(C) योद्धाओं के लिए वीर प्रस्तर खड़े किए जाते थे।
(D) कोई विदेशी व्यापार नहीं होता था।

213. वराहमिहिर की 'वृहत संहिता' किस विषय को छोड़कर विभिन्न विषयों को शामिल करती है?
(A) राजनीतिक दर्शन और शासन कला
(B) खगोल विज्ञान और ज्योतिष
(C) भूगोल और वास्तुकला
(D) रत्न विज्ञान और शकुन

214. 'सप्तांग' शब्द राज्य के सात अंगों को संदर्भित करता है। यह किसके दर्शन का केंद्र है?
(A) अशोक
(B) कौटिल्य
(C) मिनांडर
(D) खारवेल

215. मौर्य अधिकारियों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (अधिकारी)
P. सन्निधाता
Q. समाहर्ता
R. नागरिक
S. ग्रामिक
सूची II: (कर्तव्य)
1. ग्राम प्रशासन का प्रमुख
2. नगर अधीक्षक
3. राजस्व का मुख्य संग्रहकर्ता
4. राजकोष का प्रमुख
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

216. चन्द्रगुप्त मौर्य के सैन्य जीवन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि क्या थी?
(A) नन्द वंश की पराजय।
(B) कलिंग की विजय।
(C) धम्म की स्थापना।
(D) प्रथम बौद्ध संगीति।

217. अशोक ने 'प्रतिवेदक' नामक अधिकारी नियुक्त किए जो अनिवार्य रूप से क्या थे?
(A) कर संग्रहकर्ता
(B) सैन्य सेनापति
(C) राजकीय संवाददाता और सूचनादाता
(D) धार्मिक विवादों के लिए न्यायाधीश

218. मौर्य राज्य का किस उद्योग पर महत्वपूर्ण नियंत्रण था जो राजस्व का एक प्रमुख स्रोत था?
(A) सॉफ्टवेयर विकास
(B) कपड़ा उत्पादन
(C) निजी शिक्षा
(D) खनन और धातु विज्ञान

219. मौर्य साम्राज्य का पतन अशोक की मृत्यु के बाद शुरू हुआ। उनका तत्काल उत्तराधिकारी कौन था?
(A) बृहद्रथ
(B) संप्रति
(C) कुणाल
(D) जलौक

220. बाद के शुंग शासक कमजोर हो गए और उनका अधिकार कहाँ तक सीमित रह गया?
(A) दक्कन
(B) मगध
(C) उत्तर-पश्चिम
(D) कलिंग

221. हाल की गाथासप्तशती, जो एक प्राकृत ग्रंथ है, किस राजवंश से संबंधित है?
(A) शुंग
(B) कुषाण
(C) मौर्य
(D) सातवाहन

222. पहलवों का सबसे सटीक वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) उत्तर-पश्चिम में ईरान के पार्थियन।
(B) बैक्ट्रिया के यूनानी।
(C) दक्कन का एक स्थानीय राजवंश।
(D) वे कुषाणों के समान ही थे।

223. कनिष्क के विशाल साम्राज्य की राजधानी कौन सी थी?
(A) पाटलिपुत्र
(B) तक्षशिला
(C) पुरुषपुर
(D) उज्जैन

224. संगम साहित्य का युद्ध और वीरता पर ध्यान किन कविताओं में मिलता है?
(A) पुरम्
(B) अकम्
(C) तिणै
(D) मनरम्

225. प्राचीन भारतीय धातु विज्ञान का ज्ञान किसके द्वारा प्रसिद्ध रूप से उदाहरण स्वरूप है?
(A) सांची का महान स्तूप।
(B) अजंता की शैलकृत गुफाएं।
(C) अशोक का सिंह शीर्ष।
(D) दिल्ली का जंग-रोधी लौह स्तंभ।

226. 'श्रेणी' की अवधारणा महत्वपूर्ण थी क्योंकि ये निकाय:
(A) धार्मिक समूहों के रूप में कार्य करते थे।
(B) बैंकों के रूप में कार्य करते थे और व्यापार का प्रबंधन करते थे।
(C) हमेशा राज्य द्वारा दबाए जाते थे।
(D) केवल विदेशी व्यापारियों को शामिल करते थे।

227. अशोक के शिलालेखों में वर्णित चार मुख्य प्रांत तोसाली, उज्जैन, सुवर्णगिरी और ____ थे:
(A) पाटलिपुत्र
(B) इंद्रप्रस्थ
(C) तक्षशिला
(D) वैशाली

228. अशोक का धम्म क्या नहीं था?
(A) नैतिक और सदाचारी आचरण की एक संहिता।
(B) सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने वाली नीति।
(C) साम्राज्य को एकीकृत करने वाली एक विचारधारा।

(D) अनुष्ठानों वाला एक नया धार्मिक संप्रदाय।

229. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित आर्थिक नीतियां क्या सुझाव देती हैं?
(A) एक अत्यधिक राज्य-विनियमित अर्थव्यवस्था।
(B) एक अहस्तक्षेप या मुक्त-बाजार अर्थव्यवस्था।
(C) एक विशुद्ध रूप से कृषि प्रधान और बिना मुद्रा वाली अर्थव्यवस्था।
(D) विदेशी व्यापार पर आधारित अर्थव्यवस्था।

230. अमरावती में सातवाहन काल की कला किसके प्रति प्राथमिकता दिखाती है?
(A) लाल बलुआ पत्थर
(B) सफेद या धूसर संगमरमर
(C) धूसर-नीला शिस्ट पत्थर
(D) कांस्य

231. हिंद-यवनों ने बाद के भारतीय _____ को प्रभावित किया:
(A) मूर्तिकला
(B) मुद्राशास्त्र
(C) वास्तुकला
(D) साहित्य

232. मथुरा में मिली कनिष्क की मूर्ति राजसी वैभव का एक प्रमुख उदाहरण है। इसकी एक आकर्षक विशेषता क्या है?
(A) मध्य एशियाई पोशाक और सैन्य पहचान।
(B) ध्यान मुद्रा में बैठे राजा।
(C) हेलेनिस्टिक शैली में उकेरी गई।
(D) मूर्ति का सिर सुरक्षित है।

233. खारवेल के शिलालेख में मगध के राजा के विरुद्ध एक अभियान का उल्लेख है, जिसकी पहचान किसके रूप में की गई है?
(A) अशोक
(B) चन्द्रगुप्त मौर्य
(C) बृहस्पतिमित्र
(D) पुष्यमित्र शुंग

234. संगम युग के लोगों का धर्म और विश्वास कैसा था?
(A) विशेष रूप से बौद्ध।
(B) पूरी तरह से वैदिक अनुष्ठानों पर आधारित।
(C) जैन धर्म का प्रभुत्व।
(D) प्रकृति पूजा और ब्राह्मणवाद का मिश्रण।

235. प्राचीन भारतीय ज्ञान में 'भौतिकी' शब्द में किसके बारे में सिद्धांत शामिल होंगे?
(A) ऊष्मागतिकी के नियम।
(B) क्वांटम यांत्रिकी।
(C) पंच महाभूत।
(D) परमाणु की संरचना।

236. अशोक के अधीन मौर्य राज्य द्वारा एक विशाल सेना बनाए रखने का क्या कारण था?
(A) आक्रामक विस्तार जारी रखने के लिए।
(B) एक विशाल साम्राज्य पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए।
(C) युवाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए।
(D) अशोक ने सेना को भंग कर दिया था।

237. मौर्यकालीन पॉलिश किए हुए पत्थर के स्तंभ आमतौर पर किसके बने होते थे?
(A) दक्षिण भारत का ग्रेनाइट।
(B) राजस्थान का संगमरमर।
(C) दक्कन का लैटेराइट।
(D) चुनार का बलुआ पत्थर।

238. गुप्तों के उदय से पहले मगध पर शासन करने वाला अंतिम राजवंश कौन सा था?
(A) इतिहास अस्पष्ट है।
(B) मौर्य
(C) शुंग
(D) कण्व

239. प्राचीन भारतीय तकनीक में सुदर्शन झील का निर्माण क्या दर्शाता है?
(A) एक धार्मिक अनुष्ठान।
(B) एक मनोरंजक सुविधा।
(C) उन्नत जलीय अभियांत्रिकी।
(D) एक प्राकृतिक संरचना।

240. शक क्षत्रपों के उदय ने किस समकालीन राजवंश के लिए चुनौती पेश की?
(A) सातवाहन
(B) मौर्य
(C) गुप्त
(D) पाण्ड्य

241. कुषाण साम्राज्य की स्थिति रणनीतिक थी क्योंकि यह किसके बीच स्थित था?
(A) भूमध्यसागरीय और अटलांटिक मार्ग।
(B) भारत और अफ्रीका के बीच समुद्री मार्ग।
(C) अमेज़न के नदी मार्ग।
(D) चीन और रोम को जोड़ने वाला रेशम मार्ग।

242. संगम युग में महिलाओं की सामाजिक स्थिति कैसी प्रतीत होती है?
(A) पुरुषों के साथ पूर्ण समानता।
(B) पितृसत्ता में विरोधाभासी भूमिकाएँ।
(C) अत्यधिक प्रतिबंधित घरेलू भूमिका।
(D) पूरी तरह से मातृसत्तात्मक।

243. "दण्डनीति" की अवधारणा पर सबसे विस्तृत चर्चा किसमें की गई है?

(A) अशोक के शिलालेख
(B) पुराण
(C) कौटिल्य का अर्थशास्त्र
(D) मिलिंदपन्हो

244. विहार का सही विवरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) अवशेषों वाला स्मारक टीला।
(B) शैलकृत प्रार्थना कक्ष।
(C) किलेबंद शहर का द्वार।
(D) मठवासी निवास स्थान।

245. इंडिका का ज्ञान किससे प्राप्त होता है?
(A) बाद के लेखकों की कृतियों में उद्धरणों से।
(B) हाल ही में हुई पुरातात्विक खोज से।
(C) चीन में मिले अनुवाद से।
(D) पुराणों में संदर्भों से।

246. अशोक पर कलिंग युद्ध का प्रभाव मुख्य रूप से किससे ज्ञात होता है?
(A) यूनानी वृत्तांतों से
(B) मुख्य शिलालेख XIII से
(C) श्रीलंकाई वृत्तांतों से
(D) जैन ग्रंथों से

247. कौन सा मौर्य सांस्कृतिक तत्व फारसी प्रभाव प्रदर्शित करता है?
(A) ब्राह्मी लिपि का उपयोग।
(B) अखंड पॉलिश किए हुए पत्थर के स्तंभ।
(C) यक्षों की पूजा।
(D) स्तूपों का निर्माण।

248. पुष्यमित्र शुंग की प्रमुख उपलब्धियों में से एक क्या थी?
(A) बैक्ट्रियन ग्रीक आक्रमणों को विफल करना।
(B) बौद्ध धर्म का प्रचार।
(C) दक्षिण भारत की विजय।
(D) संगम साहित्य का संहिताकरण।

249. सातवाहन किन धातुओं से बने अपने सिक्कों के लिए जाने जाते हैं?
(A) सोना
(B) चाँदी
(C) सीसा और पोटीन
(D) लोहा

250. प्राचीन भारत में ज्योतिष किस क्षेत्र में योगदान को दर्शाता है?
(A) चिकित्सा विज्ञान
(B) धातु विज्ञान
(C) मूर्तिकला
(D) खगोल विज्ञान

251. कुषाण साम्राज्य के पतन का एक कारण क्या था?
(A) एक विनाशकारी महामारी।
(B) जैन धर्म में परिवर्तन।
(C) सस्सानी साम्राज्य का उदय।
(D) एक सामाजिक क्रांति।

252. 'मरुतम' परिदृश्य में मुख्य आर्थिक गतिविधि क्या थी?
(A) पशुपालन
(B) हल से कृषि
(C) मछली पकड़ना और नमक बनाना
(D) शिकार और संग्रहण

253. मौर्य राज्य द्वारा 'करा' और 'विष्टि' का उपयोग क्या प्रदर्शित करता है?
(A) अर्थव्यवस्था पर उसका कमजोर नियंत्रण।
(B) आय के लिए व्यापार पर निर्भरता।
(C) कल्याणकारी राज्य के प्रति प्रतिबद्धता।
(D) संसाधनों और श्रम के दोहन की शक्ति।

254. मौर्य प्रांतीय प्रशासन प्रणाली किसके लिए तैयार की गई थी?
(A) एक विशाल साम्राज्य का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने के लिए।
(B) पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए।
(C) बिना शासन के कर एकत्र करने के लिए।
(D) लोकतांत्रिक चुनावों की तैयारी के लिए।

255. अशोक के मास्की और गुर्जरा अभिलेख इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे:
(A) सबसे लंबे अभिलेख हैं।
(B) यूनानी भाषा में लिखे गए हैं।
(C) उनके व्यक्तिगत नाम, अशोक, का उल्लेख करते हैं।
(D) उनकी दिनचर्या का वर्णन करते हैं।

256. चैत्य और विहार के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) चैत्य एक प्रार्थना कक्ष है; विहार एक मठ है।
(B) चैत्य एक निवास स्थान है; विहार एक मंदिर है।
(C) चैत्य बौद्ध हैं; विहार जैन हैं।
(D) दोनों शब्द विनिमेय हैं।

257. मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रशंसनीय कारण नहीं है?
(A) अशोक के कमजोर उत्तराधिकारी।
(B) अशोक की मृत्यु के बाद विभाजन।
(C) आर्थिक और वित्तीय संकट।
(D) बारूद के कारण पराजय।

258. मगध में शुंगों के ठीक बाद आने वाला राजवंश कौन सा था?
(A) सातवाहन
(B) कण्व
(C) कुषाण
(D) गुप्त

259. गांधार कला शैली मुख्य रूप से किसे चित्रित करती थी?
(A) रामायण के दृश्य।
(B) जैन तीर्थंकरों का जीवन।
(C) यूनानी-रोमन शैली में बौद्ध जीवन।
(D) मौर्य सम्राटों के चित्र।

260. संगम युग की आर्थिक स्थिति को किसके साथ व्यापार से बढ़ावा मिला?
(A) फारसी साम्राज्य
(B) मिस्र का साम्राज्य
(C) यूनानी नगर-राज्य
(D) रोमन साम्राज्य

261. प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में 'रसायन' किससे संबंधित था?
(A) रसायन विज्ञान और कायाकल्प चिकित्सा।
(B) खगोल विज्ञान और ग्रहों की गति।
(C) व्याकरण और भाषाविज्ञान के नियम।
(D) शासन कला के सिद्धांत।

262. चन्द्रगुप्त मौर्य के केंद्रीय प्रशासन की एक विशेषता क्या थी?
(A) राजा का लोकतांत्रिक चुनाव।
(B) कई विभागों वाली नौकरशाही।
(C) स्थायी सेना की अनुपस्थिति।
(D) धार्मिक नेताओं द्वारा शासन।

263. मुख्य स्तंभ लेख निम्नलिखित में से किस स्थान को छोड़कर अन्य सभी स्थानों पर पाए जाते हैं?
(A) लौरिया-नंदनगढ़
(B) अमरावती
(C) दिल्ली-टोपरा
(D) सांची

264. सातवाहनों के अधीन कला और वास्तुकला का सबसे अच्छा उदाहरण किसके द्वारा दिया गया है?
(A) कार्ला चैत्य और अमरावती स्तूप।
(B) सारनाथ का सिंह शीर्ष।
(C) दिल्ली का लौह स्तंभ।
(D) महाबलीपुरम के अखंड मंदिर।

265. रुद्रदामन प्रथम का जूनागढ़ शिलालेख एक मील का पत्थर है क्योंकि यह:
(A) शक शासकों का एकमात्र शिलालेख है।
(B) खरोष्ठी लिपि में लिखा गया है।
(C) शुद्ध संस्कृत में पहला शाही अभिलेख है।
(D) उनकी बड़ी हार का रिकॉर्ड है।

266. कनिष्क का संरक्षण बौद्ध धर्म के किस संप्रदाय के लिए महत्वपूर्ण था?
(A) हीनयान
(B) थेरवाद
(C) वज्रयान
(D) महायान

267. 'संगम' शब्द का तात्पर्य कहाँ आयोजित सभाओं से है?
(A) कांचीपुरम
(B) कावेरीपट्टिनम
(C) मदुरै
(D) वंजी

268. सप्तांग सिद्धांत, जो राज्य का एक जैविक प्रतिरूप है, किसे दिया गया है?
(A) अशोक को उनके शिलालेखों में।
(B) कौटिल्य को अर्थशास्त्र में।
(C) मेगास्थनीज को इंडिका में।
(D) संगम कवियों को।

269. किस क्षेत्र की विजय ने साम्राज्य को अरब सागर तक पहुँचाया?
(A) कलिंग
(B) मगध
(C) गंगा-यमुना दोआब
(D) सौराष्ट्र

270. अशोक के धम्म की विषय-वस्तु किस पर बल देती है?
(A) सामाजिक उत्तरदायित्व और अहिंसा।
(B) अनुष्ठानिक शुद्धता और बलि।
(C) देवता के रूप में अशोक की पूजा।
(D) बौद्ध धर्म की सर्वोच्चता।

271. ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) धार्मिक बनाम लौकिक उद्देश्य।
(B) पात्रों की जटिलता।
(C) उत्पत्ति और लेखन की दिशा।
(D) जिस सामग्री पर लिखा गया है।

272. सातवाहन शासकों की धार्मिक नीति को किस रूप में वर्णित किया जा सकता है?
(A) सहिष्णु व्यक्तिगत ब्राह्मणवाद।
(B) विशेष रूप से बौद्ध।
(C) कड़ाई से जैन।
(D) नास्तिक।

273. चेदि वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक कौन था?
(A) अशोक
(B) सिमुक
(C) मिनांडर
(D) खारवेल

274. संगम युग में पाण्ड्यों का एक प्रमुख बंदरगाह कौन सा था?
(A) मुज़िरिस
(B) कोरकई
(C) पुहार

(D) तोंडी

275. खगोल विज्ञान में आर्यभट्ट के योगदान में किसे छोड़कर सभी शामिल हैं?
(A) सिद्धांत कि पृथ्वी घूमती है।
(B) ग्रहणों की व्याख्या।
(C) सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण की खोज।
(D) पाई के मान का अनुमान।

276. मौर्य संदर्भ में 'विष्टि' क्या है?
(A) नकद में दिया जाने वाला कर।
(B) राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक उपहार।
(C) एक व्यापार श्रेणी।
(D) राजकीय परियोजनाओं के लिए बलात श्रम।

277. किस घटना ने अशोक को 'भेरीघोष' के स्थान पर 'धम्मघोष' अपनाने के लिए प्रेरित किया?
(A) कलिंग युद्ध से हुआ विनाश।
(B) तक्षशिला में विद्रोह।
(C) बिंदुसार की मृत्यु।
(D) गुरु कौटिल्य की सलाह।

278. शुंग वंश की स्थापना पुष्यमित्र शुंग द्वारा की गई थी, जो एक ____ थे:
(A) बौद्ध भिक्षु
(B) सेना के ब्राह्मण सेनापति
(C) जैन तपस्वी
(D) यूनानी दूत

279. सबसे प्रसिद्ध हिंद-यवन शासक मिनांडर की राजधानी कहाँ थी?
(A) पाटलिपुत्र
(B) साकल
(C) तक्षशिला
(D) मथुरा

280. कुषाण वंश यूची जनजाति की किस शाखा से संबंधित था?
(A) कुई-शुआंग
(B) श्योंगनु
(C) पहलव
(D) सीथियन

281. संगम शब्द किस इतिहास से जुड़ा है?
(A) प्राचीन बंगाल
(B) प्राचीन गुजरात
(C) प्राचीन दक्षिण भारत
(D) प्राचीन पंजाब

282. मौर्य काल की शैलकृत वास्तुकला कहाँ पाई जाती है?
(A) सांची और सारनाथ
(B) अजंता और एलोरा
(C) महाबलीपुरम
(D) बराबर और नागार्जुनी पहाड़ियाँ

283. संगम साम्राज्य और राजधानी का कौन सा युग्म गलत है?
(A) चोल - उरैयूर
(B) चेर - वंजी
(C) पल्लव - कांचीपुरम
(D) पाण्ड्य - मदुरै

284. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 'समाहर्ता' किसका प्रभारी था?
(A) शाही खजाना
(B) राजस्व का संग्रह
(C) सेना
(D) न्यायपालिका

285. मौर्य साम्राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग में किस लिपि का प्रयोग किया गया था?
(A) ब्राह्मी
(B) यूनानी
(C) देवनागरी
(D) खरोष्ठी

286. सातवाहन प्रशासन का एक महत्वपूर्ण पहलू किन्हें कर-मुक्त भूमि अनुदान देना था?
(A) ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को।
(B) केवल सैन्य सेनापतियों को।
(C) केवल शाही परिवार के सदस्यों को।
(D) विदेशी व्यापारियों को।

287. शक संवत, जो 78 ईस्वी में शुरु हुआ, माना जाता है कि इसकी स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) रुद्रदामन प्रथम
(B) माउस
(C) कनिष्क
(D) नहपान

288. संगम साहित्य में जैसा कि चित्रित किया गया है, सामाजिक जीवन क्या दर्शाता है?
(A) स्थानीय और ब्राह्मणवादी विचारों की अंतःक्रिया।
(B) एक जातिविहीन समाज।
(C) सुदृढ़ वर्ण व्यवस्था का प्रभाव।
(D) बौद्ध सामाजिक मानदंडों का प्रभुत्व।

289. प्राचीन भारतीय गणित का सबसे महत्वपूर्ण योगदान क्या था?
(A) पाइथागोरस प्रमेय।
(B) लघुगणक की अवधारणा।
(C) बीजगणित का आविष्कार।
(D) दशमलव प्रणाली और शून्य।

290. अशोक के बाद मौर्य साम्राज्य शीघ्र ही बिखर गया। यह क्या स्पष्ट करता है?
(A) विकेंद्रीकृत प्रतिरूप की सफलता।
(B) एक सुदृढ़ और सक्षम नेता पर निर्भरता।
(C) राजनीतिक संक्रमण में शांति।
(D) प्रशासनिक संरचना का अभाव।

291. प्राचीन भारत में मौर्य साम्राज्य का संस्थापक कौन था?
(A) अशोक
(B) चन्द्रगुप्त मौर्य
(C) बिंदुसार
(D) पुष्यमित्र शुंग

292. प्रसिद्ध राजनीतिक ग्रंथ अर्थशास्त्र किसके द्वारा लिखा गया था?
(A) मेगास्थनीज
(B) कौटिल्य
(C) कालिदास
(D) पाणिनि

293. मौर्य साम्राज्य की राजधानी कौन सी थी?
(A) तक्षशिला
(B) उज्जैन
(C) पाटलिपुत्र
(D) वैशाली

294. किस मौर्य शासक ने कलिंग युद्ध के बाद बौद्ध धर्म अपना लिया था?
(A) बिंदुसार
(B) अशोक
(C) चन्द्रगुप्त मौर्य
(D) दशरथ

295. चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आने वाला यूनानी राजदूत कौन था?
(A) सेल्यूकस
(B) मेगास्थनीज
(C) हेरोडोटस
(D) प्लिनी

296. धम्म की नीति का प्रचार किस मौर्य शासक द्वारा किया गया था?
(A) बिंदुसार
(B) अशोक
(C) चन्द्रगुप्त मौर्य
(D) बृहद्रथ

297. मौर्य वंश का अंतिम शासक कौन था?
(A) अशोक
(B) बिंदुसार
(C) बृहद्रथ
(D) दशरथ

298. शुंग वंश का संस्थापक कौन था?
(A) पुष्यमित्र शुंग
(B) अग्निमित्र
(C) वासुदेव
(D) सिमुक

299. अशोक के अभिलेख मुख्य रूप से किस लिपि में लिखे गए थे?
(A) ब्राह्मी
(B) देवनागरी
(C) तमिल
(D) ग्रंथ

300. भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया प्रसिद्ध सिंह शीर्ष कहाँ स्थित है?
(A) सांची
(B) सारनाथ
(C) भरहुत
(D) अमरावती

41. (C) मिनांडर
हिंद-यवन राजा मिनांडर, जिन्हें भारतीय परंपरा में 'मिलिंद' के नाम से जाना जाता है, अपनी बौद्ध धर्म के प्रति जिज्ञासा के लिए प्रसिद्ध हैं। बौद्ध ग्रंथ 'मिलिंदपन्हो' में मिनांडर और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच हुए गहन दार्शनिक संवादों का संग्रह है। इन संवादों से प्रभावित होकर मिनांडर ने अंततः बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। उनके शासनकाल में कला और शिक्षा को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला और उनकी राजधानी साकल बौद्ध शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बन गई थी।

42. (A) हेलेनिस्टिक कला विशेषताओं का परिचय।
हिंद-यवन शासकों का भारतीय संस्कृति में सबसे स्थायी योगदान हेलेनिस्टिक या यूनानी कला शैलियों का समावेश था। इस प्रभाव के परिणामस्वरूप गांधार कला शैली का उदय हुआ, जहाँ भारतीय आध्यात्मिक विषयों को यूनानी शारीरिक सूक्ष्मता और कलात्मक तकनीक के साथ प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने द्विभाषी सिक्के जारी करने और खगोल विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भी नए मानक स्थापित किए। उनके प्रभाव ने भारतीय कला और विज्ञान को एक नई अंतरराष्ट्रीय दृष्टि और विविधता प्रदान की।

43. (D) सीथियन
मध्य एशिया से भारत आए शकों को पश्चिमी ग्रंथों में 'सीथियन' के नाम से जाना जाता है। ये खानाबदोश जनजातियाँ थीं जिन्होंने हिंद-यवन सत्ता को समाप्त कर भारत के विभिन्न हिस्सों, जैसे तक्षशिला, मथुरा और पश्चिमी भारत पर अधिकार कर लिया था। शकों ने भारत में 'क्षत्रप' प्रणाली के तहत शासन किया, जहाँ प्रांतीय गवर्नर काफी शक्तिशाली होते थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति को अपनाया और कई सदियों तक यहाँ की राजनीति और समाज पर अपना गहरा प्रभाव बनाए रखा।

44. (B) रुद्रदामन प्रथम
पश्चिमी क्षत्रप राजवंश का राजा रुद्रदामन प्रथम अपनी प्रशासनिक कुशलता और प्रजा वत्सलता के लिए विख्यात है। उनका जूनागढ़ शिलालेख संस्कृत भाषा का पहला विस्तृत और काव्यात्मक अभिलेख माना जाता है। इस शिलालेख में उन्होंने सुदर्शन झील की भारी वर्षा के कारण टूटने और बिना किसी अतिरिक्त कर के उसकी मरम्मत कराने का विवरण दिया है। यह शिलालेख न केवल उनके साम्राज्य की सीमाओं की जानकारी देता है, बल्कि उनके न्यायप्रिय शासन और जनकल्याण की भावना को भी दर्शाता है।

45. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत में शकों के विभिन्न केंद्रों का नेतृत्व विशिष्ट शासकों और परिवारों द्वारा किया गया था। माउस तक्षशिला के पहले प्रसिद्ध शक राजा थे, जबकि राजुवुल ने मथुरा में शक शासन को मजबूती प्रदान की। पश्चिमी भारत में नहपान को महाराष्ट्र क्षेत्र के शक्तिशाली क्षत्रप के रूप में जाना जाता है, जो बाद में सातवाहनों से पराजित हुए। वहीं, रुद्रदामन प्रथम सौराष्ट्र के सबसे महान शक शासक हुए, जिन्होंने चष्टन वंश की प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया था।

46. (D) कुजुल कडफिसेस
कुषाण वंश की नींव कुजुल कडफिसेस द्वारा रखी गई थी, जो यूची जनजाति की पांच शाखाओं को एकजुट करने में सफल रहे थे। उन्होंने हिंदूकुश पर्वत को पार कर काबुल और कश्मीर के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण स्थापित किया। उनके द्वारा जारी किए गए तांबे के सिक्के उनके प्रारंभिक शासन की जानकारी देते हैं। कुजुल कडफिसेस ने एक विशाल कुषाण साम्राज्य का आधार तैयार किया, जिसे उनके उत्तराधिकारियों ने भारतीय उपमहाद्वीप के गहरे हिस्सों तक विस्तारित और सुदृढ़ किया था।

47. (A) कनिष्क प्रथम
कनिष्क प्रथम कुषाण वंश के सबसे शक्तिशाली और यशस्वी सम्राट थे, जिनका साम्राज्य मध्य एशिया से लेकर गंगा की घाटी तक फैला हुआ था। वे न केवल एक महान विजेता थे, बल्कि कला, साहित्य और धर्म के उदार संरक्षक भी थे। उनके शासनकाल में कुषाण सत्ता अपनी चरम सीमा पर थी और भारत का रेशम मार्ग पर नियंत्रण स्थापित हुआ था। उन्हें 'द्वितीय अशोक' के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

48. (B) रेशम मार्ग को भारतीय बंदरगाहों से।
कनिष्क का साम्राज्य भौगोलिक रूप से अत्यंत रणनीतिक स्थान पर स्थित था, जिससे उन्हें अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर नियंत्रण प्राप्त हुआ। उनके शासन के अधीन मध्य एशिया के महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग आते थे, जो चीन के रेशम मार्ग को भारत के उत्तर-पश्चिमी बंदरगाहों से जोड़ते थे। इस व्यापारिक एकाधिकार के कारण कुषाण साम्राज्य को भारी आर्थिक लाभ हुआ, जिसका प्रमाण उनके द्वारा जारी किए गए शुद्ध सोने के सिक्के हैं। इसने भारत को तत्कालीन वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख केंद्र बना दिया था।

49. (B) कनिष्क
बौद्ध धर्म के इतिहास में चतुर्थ बौद्ध संगीति एक युगांतकारी घटना थी, जिसका आयोजन सम्राट कनिष्क के संरक्षण में कश्मीर के कुंडलवन में किया गया था। इस संगीति की अध्यक्षता वसुमित्र ने की थी और अश्वघोष इसके उपाध्यक्ष थे। इसी सभा में बौद्ध ग्रंथों पर टीकाएं लिखी गईं और बौद्ध धर्म स्पष्ट रूप से हीनयान और महायान नामक दो संप्रदायों में विभाजित हो गया। महायान संप्रदाय के उदय ने बौद्ध धर्म को विश्व धर्म के रूप में फैलने में सहायता की।

50. (A) कुषाण जैन धर्म के कट्टर संरक्षक थे और उन्होंने बौद्ध धर्म का दमन किया।
कुषाण शासकों, विशेष रूप से कनिष्क के संबंध में यह कहना कि उन्होंने बौद्ध धर्म का दमन किया, ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह गलत है। वास्तव में, कुषाण काल बौद्ध धर्म के स्वर्ण युगों में से एक था, जहाँ कनिष्क ने न केवल बौद्ध धर्म अपनाया बल्कि उसके प्रचार-प्रसार के लिए राजकीय संसाधनों का भरपूर उपयोग किया। उन्होंने स्तूपों का निर्माण कराया और चतुर्थ बौद्ध संगीति बुलाई। कुषाणों की धार्मिक नीति अत्यंत उदार थी, जिसमें बौद्ध, हिंदू और ग्रीक देवताओं का समान सम्मान था।

मानवीय मूल्यों और नैतिक शिक्षाओं का वैश्विक प्रचार करना बन गया।

11. (D) स्तूप वाला एक प्रार्थना कक्ष या पूजा स्थल।
प्राचीन भारतीय वास्तुकला में चैत्य एक विशेष प्रकार के कक्ष को संदर्भित करता है जो बौद्ध भिक्षुओं के लिए पूजा स्थल के रूप में कार्य करता था। इसमें प्रायः एक छोर पर एक छोटा स्तूप स्थित होता था जिसके चारों ओर प्रार्थना के लिए स्थान होता था। यह संरचना विहार से भिन्न थी, क्योंकि विहार मुख्य रूप से भिक्षुओं के रहने के लिए बनाए गए मठ थे। चैत्य की भव्यता कला और धर्म के समन्वय का प्रतीक थी।

12. (B) भारत को यूनानी नियंत्रण से मुक्ति दिलाना।
चन्द्रगुप्त मौर्य की सबसे गौरवशाली सैन्य उपलब्धियों में से एक भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों को यूनानी प्रभुत्व से मुक्त कराना था। उन्होंने सिकंदर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस निकेटर को एक भीषण युद्ध में पराजित किया था। इस विजय के परिणामस्वरुप उन्होंने सिंधु नदी के पश्चिम के विशाल क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित किया और एक संप्रभु भारतीय साम्राज्य की नींव रखी। इस संधि के माध्यम से भारत की सीमाएं प्राकृतिक सुरक्षा रेखाओं तक पहुँच गई थीं।

13. (C) अमात्य - ग्राम प्रधान
मौर्य प्रशासन के अंतर्गत अधिकारियों के कार्यों का विभाजन अत्यंत स्पष्ट और व्यवस्थित था। अमात्य शब्द का प्रयोग उच्च श्रेणी के मंत्रियों और प्रशासनिक अधिकारियों के लिए किया जाता था, न कि ग्राम प्रधान के लिए। ग्राम के प्रमुख को ग्रामिक कहा जाता था जो स्थानीय स्तर पर शासन चलाता था। सन्निधाता मुख्य कोषाध्यक्ष था और समाहर्ता राजस्व संग्रह के लिए जिम्मेदार था। अध्यक्ष विभिन्न सरकारी विभागों के अधीक्षक के रूप में कार्य करते थे।

14. (D) श्रवणबेलगोला
जैन परंपराओं के अनुसार, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने शासन के अंतिम वर्षों में राजपाट त्यागकर जैन धर्म स्वीकार कर लिया था। वे महान जैन मुनि भद्रबाहु के शिष्य बन गए और उनके साथ दक्षिण भारत के श्रवणबेलगोला चले गए। वहाँ उन्होंने 'सल्लेखना' पद्धति के माध्यम से, जो उपवास द्वारा प्राण त्यागने की एक पवित्र जैन प्रक्रिया है, अपने जीवन का अंत किया। यह स्थान आज भी जैन धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है।

15. (B) केवल 2
अशोक का धम्म कोई नया धर्म या संप्रदाय नहीं था, बल्कि यह सामाजिक आचरण के नैतिक सिद्धांतों का एक समूह था। यद्यपि यह बौद्ध धर्म की शिक्षाओं से प्रभावित था, परंतु इसके सिद्धांत सार्वभौमिक थे जो सभी धर्मों के लोगों के लिए मान्य थे। इसने मुख्य रूप से अहिंसा, बड़ों के प्रति सम्मान, सत्य बोलने और धार्मिक सहिष्णुता पर बल दिया। इसका उद्देश्य समाज में शांति स्थापित करना और लोगों के बीच नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना था।

16. (B) यह भिक्षुओं के रहने के स्थान के रूप में कार्य करता था।
प्राचीन भारत में विहारों का निर्माण मुख्य रूप से बौद्ध और जैन भिक्षुओं के आवासीय मठों के रूप में किया गया था। यहाँ भिक्षु वर्षा ऋतु के दौरान विश्राम करते थे और शिक्षा प्राप्त करते थे। विहार की संरचना में आमतौर पर एक खुला आंगन होता था जिसके चारों ओर छोटे-छोटे कक्ष बने होते थे। ये स्थान आध्यात्मिक अध्ययन, ध्यान और धार्मिक चर्चाओं के केंद्र थे। समय के साथ ये विहार महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थानों के रूप में विकसित हुए।

17. (B) मेगास्थनीज की इंडिका
यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहते हुए अपनी पुस्तक इंडिका में मौर्य साम्राज्य का जीवंत विवरण दिया है। इस ग्रंथ में विशेष रूप से राजधानी पाटलिपुत्र के नगर प्रशासन और सामाजिक व्यवस्था की विस्तृत चर्चा की गई है। मेगास्थनीज ने वर्णन किया है कि कैसे 30 सदस्यों वाली एक परिषद विभिन्न समितियों के माध्यम से शहर के कार्यों का प्रबंधन करती थी। हालांकि मूल इंडिका अप्राप्य है, परंतु इसके उद्धरण बाद के लेखकों के कार्यों में मिलते हैं।

18. (A) देवनागरी
सम्राट अशोक के शिलालेख उनकी प्रजा के साथ संचार का मुख्य माध्यम थे, जो विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार अलग-अलग लिपियों में लिखे गए थे। भारत के अधिकांश हिस्सों में ब्राह्मी लिपि का प्रयोग हुआ, जबकि उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में खरोष्ठी, अरामी और यूनानी लिपियों का उपयोग किया गया। देवनागरी लिपि का विकास बहुत बाद की शताब्दियों में हुआ, इसलिए मौर्य काल के दौरान इसके उपयोग का कोई ऐतिहासिक प्रमाण या शिलालेख प्राप्त नहीं होता है।

19. (C) तेरहवां (XIII) मुख्य शिलालेख
अशोक का तेरहवां मुख्य शिलालेख मौर्य इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज माना जाता है क्योंकि यह कलिंग युद्ध के भीषण परिणामों का वर्णन करता है। इसमें युद्ध में हुई मृत्यु और विनाश पर अशोक के पश्चाताप का उल्लेख है, जिसने उन्हें अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। इसी शिलालेख में अशोक ने पड़ोसी राज्यों और यूनानी राजाओं के नामों का भी उल्लेख किया है, जहाँ उन्होंने अपने धम्म के प्रचार के लिए दूत भेजे थे।

20. (A) 2, 3, 1, 4
मौर्य साम्राज्य के शासकों का कालक्रम भारत के प्राचीन इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने लगभग 322 ईसा पूर्व में की थी, जिनके बाद उनके पुत्र बिंदुसार ने शासन संभाला। बिंदुसार के उत्तराधिकारी महान सम्राट अशोक हुए, जिन्होंने साम्राज्य को अपनी चरम सीमा पर पहुँचाया। मौर्य वंश का अंतिम शासक बृहद्रथ था, जिसकी हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की थी, जिससे मौर्य साम्राज्य का अंत और शुंग वंश का उदय हुआ।

80. (B) यूनानियों के विरुद्ध गंगा घाटी की रक्षा।
पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल की एक अत्यंत गौरवशाली और महत्वपूर्ण उपलब्धि भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमाओं से होने वाले यूनानी आक्रमणों को सफलतापूर्वक रोकना था। यवन राजाओं, विशेष रूप से मिनांडर के नेतृत्व में, यूनानी सेनाएं गंगा घाटी के हृदय क्षेत्र तक पहुँच गई थीं। पुष्यमित्र ने अपने सैन्य कौशल और संगठित प्रतिरोध के माध्यम से उन्हें पीछे हटने पर विवश कर दिया। इस रक्षात्मक विजय ने मगध की सुरक्षा सुनिश्चित की और विदेशी प्रभुत्व के विस्तार को रोककर भारतीय संप्रभुता को पुनः स्थापित किया।

81. (B) P-3, Q-2, R-1, S-4
प्राचीन भारतीय राज्यों ने अपनी पहचान को मजबूत करने के लिए विशिष्ट प्रतीकों का सहारा लिया था। चेर राजवंश का प्रतीक 'धनुष और बाण' था, जो उनके पर्वतीय क्षेत्रों और सैन्य कौशल का सूचक था। चोलों ने 'बाघ' को अपने प्रतीक के रूप में चुना, जबकि पाण्ड्यों का प्रतीक 'मछली' था, जो उनकी समुद्री शक्ति और मोतियों के व्यापार को दर्शाता था। तुलनात्मक रूप से, मौर्यों के समय में 'धर्मचक्र' और 'सिंह' जैसे प्रतीकों को प्रमुखता मिली, जो बौद्ध धर्म के प्रभाव और राजकीय शक्ति के संगम को दर्शाते थे।

82. (A) दक्कन क्षेत्र, जिसमें आधुनिक महाराष्ट्र शामिल है।
सातवाहन साम्राज्य का मुख्य राजनीतिक केंद्र और विस्तार दक्कन के पठार पर था, जो उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक सेतु की भूमिका निभाता था। उनकी सत्ता का केंद्र आधुनिक महाराष्ट्र के प्रतिष्ठान या पैठण में स्थित था, और उनका शासन गोदावरी तथा कृष्णा नदियों के बीच के उपजाऊ क्षेत्रों तक फैला हुआ था। सातवाहनों ने मौर्यों के बाद इस क्षेत्र में पहली बड़ी राजनीतिक शक्ति के रूप में खुद को स्थापित किया, जिससे दक्षिण भारत के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को एक नई गति मिली।

83. (C) शैलकृत चैत्य, विहार और स्तूप।
सातवाहन काल वास्तुकला के इतिहास में विशेष रूप से शैलकृत संरचनाओं के विकास के लिए प्रसिद्ध है। पश्चिमी घाट की कठोर चट्टानों को काटकर बनाए गए कार्ला और कन्हेरी जैसे चैत्य और विहार तत्कालीन इंजीनियरिंग और कलात्मक श्रेष्ठता के अद्भुत उदाहरण हैं। इसके साथ ही, दक्षिण भारत में अमरावती स्तूप का निर्माण भी इसी काल की एक महान उपलब्धि है। ये संरचनाएं न केवल बौद्ध धर्म के प्रति उनकी निष्ठा को दर्शाती हैं, बल्कि कला में गतिशीलता और विस्तार के एक नए युग का प्रतिनिधित्व करती हैं।

84. (D) गंगा घाटी में गहराई तक आक्रमण करने के लिए।
हिंद-यवन राजा डेमेट्रियस भारतीय इतिहास में अपने साहसिक सैन्य अभियानों के लिए प्रसिद्ध है, जिसने दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में हिंदूकुश पर्वत को पार किया था। उसने अफगानिस्तान और पंजाब के विशाल क्षेत्रों को जीतते हुए गंगा की घाटी में गहराई तक प्रवेश किया और संभवतः पाटलिपुत्र तक पहुँच गया था। डेमेट्रियस का यह आक्रमण मौर्यों के बाद उत्तर भारत की राजनीतिक अस्थिरता का परिणाम था। उसके इन अभियानों ने भारत में यूनानी सत्ता की जड़ों को मजबूती प्रदान की और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का मार्ग खोला।

85. (A) केवल 1 और 3
शकों ने भारत के विभिन्न हिस्सों में अपना शासन स्थापित किया और प्रशासन चलाने के लिए 'क्षत्रप' प्रणाली का उपयोग किया, जहाँ प्रांतीय गवर्नर काफी स्वायत्त होते थे। रुद्रदामन प्रथम शकों के सबसे प्रसिद्ध और कुशल शासक थे, जिन्होंने संस्कृत भाषा को बढ़ावा दिया और जनकल्याण के कार्य किए। यह कहना गलत है कि उन्हें सातवाहनों ने पूरी तरह निष्कासित कर दिया था; वास्तव में, दोनों शक्तियों के बीच लंबे समय तक संघर्ष चला और शकों ने पश्चिमी भारत में सदियों तक अपना प्रभाव बनाए रखा था।

86. (B) एक ऐसी व्यवस्था जिस पर क्षत्रप नामक शासक होते थे।
कुषाण प्रशासन, विशेष रूप से सम्राट कनिष्क के अधीन, अत्यधिक व्यवस्थित था और इसमें ईरानी तथा मध्य एशियाई तत्वों का समावेश था। उन्होंने 'क्षत्रप' प्रणाली को अपनाया, जहाँ साम्राज्य को विभिन्न प्रांतों में विभाजित किया गया था और प्रत्येक प्रांत का नेतृत्व एक क्षत्रप या महाक्षत्रप करता था। कुषाणों ने अक्सर दोहरे शासन की व्यवस्था भी लागू की, जहाँ दो अधिकारी मिलकर एक प्रांत का प्रबंधन करते थे ताकि शक्ति का संतुलन बना रहे। यह प्रणाली विशाल और विविध साम्राज्य पर प्रभावी नियंत्रण रखने में अत्यंत सफल सिद्ध हुई।

87. (D) मथुरा शैली
मथुरा कला शैली कुषाणों के संरक्षण में विकसित एक स्वदेशी कला परंपरा थी, जो बुद्ध की पहली मानव रूपी मूर्तियों के निर्माण के लिए विख्यात है। गांधार शैली के विपरीत, जो यूनानी शैली से प्रभावित थी, मथुरा कला पूरी तरह से भारतीय परंपराओं और सौंदर्यबोध पर आधारित थी। यहाँ की मूर्तियों में चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया था। बुद्ध को एक शक्तिशाली और आध्यात्मिक महापुरुष के रूप में दर्शाया गया है। यह शैली न केवल बौद्ध, बल्कि जैन और हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियों के लिए भी महत्वपूर्ण थी।

88. (A) एक साहित्यिक और सामाजिक वर्गीकरण
संगम साहित्य के विशाल काव्य संग्रह को मुख्य रूप से दो श्रेणियों, 'अगम' और 'पुरम्' में वर्गीकृत किया गया है, जो प्राचीन तमिल समाज के दो प्रमुख पहलुओं को दर्शाते हैं। 'अगम' कविताएँ मानव भावनाओं, विशेष रूप से प्रेम और आंतरिक जीवन पर केंद्रित हैं, जबकि 'पुरम्' कविताएँ बाहरी दुनिया, वीरता, युद्ध और राजाओं के न्यायप्रिय शासन का गुणगान करती हैं। यह वर्गीकरण केवल साहित्यिक नहीं है, बल्कि यह उस काल के लोगों के सामाजिक मूल्यों और उनके जीवन जीने के दृष्टिकोण को भी स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

89. (C) मसाले और कीमती पत्थर
संगम युग की अर्थव्यवस्था का सबसे जीवंत और आकर्षक पहलू रोमन साम्राज्य के साथ होने वाला समृद्ध समुद्री व्यापार था। दक्षिण भारत से काली मिर्च, जिसे 'यवनप्रिय' कहा जाता था, इलायची, दालचीनी जैसे मसालों और नीलम तथा पन्ने जैसे

31. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
मौर्य साम्राज्य एक अत्यंत सुव्यवस्थित प्रशासनिक विभाजन प्रणाली पर आधारित था ताकि विशाल भूभाग का नियंत्रण आसान हो सके। साम्राज्य को बड़े प्रांतों में विभाजित किया गया था जिन्हें 'चक्र' कहा जाता था। इन प्रांतों को आगे जिलों में बांटा गया था जिन्हें 'आहार' या 'विषय' के नाम से जाना जाता था। सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई 'ग्राम' थी, और लगभग 10 गांवों के एक मध्यवर्ती समूह को 'संग्रहण' कहा जाता था, जहाँ राजस्व और प्रशासनिक लेखा-जोखा रखा जाता था।

32. (B) पुष्यमित्र शुंग
मौर्य साम्राज्य के अंतिम सम्राट बृहद्रथ की हत्या लगभग 185 ईसा पूर्व में उनके अपने सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा की गई थी। पुष्यमित्र ने इस राजनीतिक परिवर्तन के बाद शुंग वंश की स्थापना की, जिसने मगध पर मौर्यों के बाद शासन किया। उनके शासनकाल को प्राचीन भारत में ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान के रूप में देखा जाता है, जहाँ उन्होंने अश्वमेध जैसे वैदिक यज्ञों को पुनर्जीवित किया। उन्होंने न केवल मगध की सीमाओं की रक्षा की, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक दिशा में भी परिवर्तन किए।

33. (B) वह ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान से जुड़ा है।
पुष्यमित्र शुंग का शासनकाल भारतीय धार्मिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है क्योंकि उन्होंने मौर्यों के समय कमजोर हुए ब्राह्मणवादी मूल्यों और कर्मकांडों को पुनः स्थापित किया। उन्होंने दो बार अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया, जो उनकी शाही शक्ति और वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा का प्रतीक था। यद्यपि कुछ स्रोत उन पर बौद्धों के प्रति कठोर होने का आरोप लगाते हैं, परंतु उनके समय में ही भरहुत और सांची के स्तूपों का विकास भी जारी रहा था।

34. (A) वासुदेव कण्व
शुंग वंश के अंतिम राजा देवभूति की हत्या उनके मंत्री वासुदेव द्वारा की गई थी, जिन्होंने लगभग 73 ईसा पूर्व में कण्व वंश की नींव रखी। यह राजवंश भी ब्राह्मण कुल से संबंधित था और इसका शासनकाल अपेक्षाकृत छोटा रहा। कण्व शासकों ने मगध के हृदय क्षेत्र पर शासन किया, परंतु उनकी सत्ता शुंगों की तुलना में काफी कमजोर थी। ऐतिहासिक रूप से, यह काल मगध की केंद्रीय शक्ति के धीरे-धीरे क्षीण होने और क्षेत्रीय शक्तियों के उदय का गवाह बना।

35. (A) केवल 1 और 2
सातवाहन वंश दक्षिण भारत का एक प्रमुख राजवंश था, जिसकी पहचान पुराणों में वर्णित आंध्रों से की जाती है। इस वंश की एक विशेष परंपरा उनके शासकों द्वारा अपने नाम के साथ माता के नाम का उपयोग करना था, जैसे गौतमीपुत्र सातकर्णी, जो समाज में महिलाओं के सम्मान को दर्शाता है। हालांकि, वे सुदूर तमिल देश के बजाय मुख्य रूप से दक्कन क्षेत्र में स्थित थे। उनका शासन उत्तरी और दक्षिणी भारत के बीच एक सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य करता था।

36. (D) गौतमीपुत्र सातकर्णी
गौतमीपुत्र सातकर्णी को सातवाहन वंश का सबसे प्रतापी और शक्तिशाली शासक माना जाता है। उन्होंने शक क्षत्रप नहपान को युद्ध में पराजित किया था, जिसका प्रमाण उन पुनर्मुद्रित सिक्कों से मिलता है जो नहपान के थे परंतु उन पर सातकर्णी का नाम अंकित है। नासिक शिलालेख में उनकी प्रशंसा "क्षत्रियों के गर्व को नष्ट करने वाले" और "वेदों के रक्षक" के रूप में की गई है। उनके नेतृत्व में सातवाहन साम्राज्य ने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा और क्षेत्रीय विस्तार को पुनः प्राप्त किया था।

37. (C) अमरावती और नागार्जुनकोंडा
सातवाहन काल के दौरान दक्षिण भारत में वास्तुकला और मूर्तिकला की एक विशिष्ट शैली विकसित हुई, जिसके सर्वोत्तम अवशेष अमरावती और नागार्जुनकोंडा में प्राप्त होते हैं। अमरावती स्तूप अपनी उत्कृष्ट नक्काशी और सफेद संगमरमर जैसी दिखने वाली चूना पत्थर की मूर्तियों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इन कलाकृतियों में भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं और जातक कथाओं को अत्यंत जीवंतता और गतिशीलता के साथ दर्शाया गया है, जो सातवाहन कालीन कला के उच्च स्तर और धार्मिक समर्पण को प्रदर्शित करता है।

38. (B) गोंडोफर्नीस
हिंद-पार्थियन या पहलव राजवंश का सबसे विख्यात राजा गोंडोफर्नीस था, जिसने पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान उत्तर-पश्चिमी भारत पर शासन किया था। ईसाई परंपराओं के अनुसार, इसी राजा के शासनकाल में सेंट थॉमस भारत आए थे। यह घटना भारत और पश्चिम के बीच प्रारंभिक धार्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को दर्शाती है। गोंडोफर्नीस के सिक्के और तख्ते-बही शिलालेख उनके शासन की पुष्टि करते हैं। उन्होंने विविध संस्कृतियों के बीच सामंजस्य बनाए रखा और व्यापार को प्रोत्साहन दिया।

39. (D) बैक्ट्रिया क्षेत्र के यूनानी शासक।
प्राचीन भारत के इतिहास में 'बैक्ट्रियन' शब्द उन यूनानी शासकों के लिए प्रयुक्त होता है जिन्होंने मध्य एशिया के बैक्ट्रिया क्षेत्र से आकर भारत के उत्तर-पश्चिमी हिस्सों पर अधिकार किया था। इन्हें हिंद-यवन या इंडो-ग्रीक भी कहा जाता है। ये शासक सिकंदर के आक्रमण के बाद वहाँ बस गए यूनानियों के वंशज थे। भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी करने और कला में हेलेनिस्टिक प्रभावों का समावेश करने का श्रेय इन्हीं यूनानी शासकों को दिया जाता है।

40. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरांत भारत में किसी एक शक्तिशाली केंद्रीय सत्ता का अभाव हो गया, जिसके परिणामस्वरूप उत्तर भारत में राजनीतिक विखंडन का दौर शुरू हुआ। शक्तिशाली केंद्रीकृत प्रशासन के अंत ने स्थानीय राजवंशों जैसे शुंग और कण्व को उभरने का अवसर दिया। साथ ही, इसी अस्थिरता का लाभ उठाकर हिंद-यवन, शक और कुषाण जैसी विदेशी शक्तियों ने भारत पर आक्रमण किए और अपने शासन स्थापित किए। यह विखंडन प्रशासनिक शून्यता की स्वाभाविक परिणति थी।

61. (C) अन्य क्षेत्रों पर भारत का ऐतिहासिक सांस्कृतिक प्रभाव।
'वृहत्तर भारत' की अवधारणा उस ऐतिहासिक कालखंड को दर्शाती है जब भारतीय धर्म, भाषा, कला और दर्शन का प्रसार दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य एशिया के विशाल क्षेत्रों में हुआ था। यह विस्तार किसी सैन्य विजय का परिणाम नहीं था, बल्कि व्यापारियों और भिक्षुओं के माध्यम से हुआ एक सांस्कृतिक संचार था। कंबोडिया का अंकोरवाट मंदिर और इंडोनेशिया का बोरोबुदुर स्तूप इसी गहरे भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव के जीवंत उदाहरण हैं, जो सदियों तक इन क्षेत्रों की पहचान बने रहे।

62. (D) आर्यभट्ट
गुप्त काल के महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने अपने ग्रंथ 'आर्यभटीय' में ग्रहणों के पीछे के वास्तविक वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की थी। उन्होंने उस समय प्रचलित पौराणिक मान्यताओं को चुनौती देते हुए यह सिद्ध किया कि ग्रहण राहु-केतु के कारण नहीं, बल्कि पृथ्वी और चंद्रमा की छाया के कारण होते हैं। इसके साथ ही उन्होंने यह भी प्रतिपादित किया कि पृथ्वी गोल है और वह अपनी धुरी पर घूमती है। उनके ये शोध प्राचीन भारतीय विज्ञान की तार्किक श्रेष्ठता के प्रमाण हैं।

63. (A) चरक संहिता
'चरक संहिता' प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान या आयुर्वेद का सबसे महत्वपूर्ण और आधारभूत ग्रंथ माना जाता है। महर्षि चरक द्वारा रचित यह ग्रंथ रोगों के निदान, उपचार की विधियों और निवारक स्वास्थ्य देखभाल पर एक व्यापक शोध प्रबंध है। इसमें शरीर क्रिया विज्ञान, भ्रूण विज्ञान और औषधीय पौधों के गुणों की विस्तृत चर्चा की गई है। चरक ने इस बात पर बल दिया कि उपचार का उद्देश्य केवल रोग को दूर करना नहीं, बल्कि रोगी के समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखना होना चाहिए।

64. (B) धातु विज्ञान
दिल्ली के महरौली में स्थित लौह स्तंभ प्राचीन भारतीयों के धातु विज्ञान के क्षेत्र में असाधारण ज्ञान का एक विस्मयकारी उदाहरण है। लगभग 1600 वर्षों से अधिक समय तक खुले आसमान के नीचे रहने के बावजूद, इस शुद्ध लोहे के स्तंभ पर आज तक जंग नहीं लगा है। यह इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि तत्कालीन भारतीय धातुकर्मी लोहे को संक्षारण से बचाने की उन्नत तकनीक जानते थे। यह स्तंभ न केवल गुप्तकालीन तकनीकी कौशल को दर्शाता है, बल्कि तत्कालीन इंजीनियरिंग की श्रेष्ठता का भी प्रतीक है।

65. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
प्राचीन भारत के विभिन्न विद्वानों ने अपने संबंधित क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान दिया था। आर्यभट्ट ने गणित और खगोल विज्ञान में क्रांति लाई, जबकि सुश्रुत को शल्य चिकित्सा या सर्जरी का जनक माना जाता है। वराहमिहिर ने खगोल विज्ञान के साथ-साथ 'वृहत संहिता' जैसे विश्वकोश की रचना की, जिसमें विविध विषयों का संग्रह है। कौटिल्य, जिन्हें चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है, ने 'अर्थशास्त्र' के माध्यम से राजनीति विज्ञान और शासन कला के कालजयी सिद्धांतों का प्रतिपादन किया था।

66. (A) गणित
शून्य की अवधारणा और दशमलव स्थान-मान प्रणाली का विकास प्राचीन भारतीय गणितज्ञों की विश्व को सबसे बड़ी देन है। इस क्रांतिकारी खोज ने जटिल गणनाओं को सरल बना दिया और आधुनिक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के लिए आधार तैयार किया। शून्य को न केवल एक अंक के रूप में, बल्कि एक मूल्यवान गणितीय इकाई के रूप में स्थापित करने का श्रेय भारतीयों को ही जाता है। अरबों के माध्यम से यह ज्ञान यूरोप तक पहुँचा, जहाँ इसे 'हिंदू-अरबी' अंक प्रणाली के रूप में अपनाया गया।

67. (C) प्रजा (प्रजा का कल्याण)
कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत में राज्य को सात अंगों वाले एक जीव के रूप में परिकल्पित किया गया है, जिसमें स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र शामिल हैं। यद्यपि प्रजा का कल्याण राज्य का अंतिम लक्ष्य था, परंतु 'प्रजा' स्वयं इन सात अंगों की सूची में एक अलग अंग के रूप में शामिल नहीं थी। 'जनपद' अंग के अंतर्गत क्षेत्र और वहाँ रहने वाली जनसंख्या दोनों समाहित थे। सप्तांग सिद्धांत मुख्य रूप से शासन की संरचनात्मक इकाइयों और उनकी कार्यक्षमता पर केंद्रित था।

68. (D) देवताओं का प्रिय।
सम्राट अशोक के अधिकांश शिलालेखों में उनके लिए 'देवानामपिय' उपाधि का प्रयोग किया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'देवताओं का प्रिय'। यह उपाधि उनके उदार धार्मिक दृष्टिकोण और स्वयं को दैवीय गुणों से युक्त शासक के रूप में प्रस्तुत करने की उनकी इच्छा को दर्शाती है। इसके साथ अक्सर 'पियदस्सी' शब्द भी जुड़ता है, जिसका अर्थ है 'देखने में सुंदर' या 'प्रियदर्शी'। ये उपाधियां अशोक के एक दयालु और धर्मनिष्ठ सम्राट के रूप में उनके व्यक्तित्व और शासन के नैतिक आधार को स्पष्ट करती हैं।

69. (A) कथन I सही है, और कथन II गलत है।
मौर्य साम्राज्य के विशाल आकार को देखते हुए प्रशासनिक सुविधा के लिए इसे कई प्रांतों में विभाजित किया गया था। इन महत्वपूर्ण प्रांतों के गवर्नरों के रूप में अक्सर शाही परिवार के राजकुमारों, जिन्हें 'कुमार' कहा जाता था, की नियुक्ति की जाती थी ताकि केंद्र का नियंत्रण बना रहे। यह कहना गलत है कि केंद्र का उन पर कोई नियंत्रण नहीं था; वास्तव में, सम्राट और उनके जासूसों का तंत्र प्रांतीय अधिकारियों पर कड़ी नजर रखता था ताकि कोई विद्रोह न हो सके।

70. (B) ग्रामिक
मौर्यकालीन प्रशासन की सबसे निचली और बुनियादी इकाई ग्राम थी, जिसका मुखिया 'ग्रामिक' कहलाता था। ग्रामिक का चुनाव अक्सर गाँव के बुजुर्गों द्वारा किया जाता था या वह समुदाय का सम्मानित व्यक्ति होता था। उसका मुख्य कार्य गाँव के विवादों को सुलझाने, स्थानीय सफाई का ध्यान रखना और केंद्र के अधिकारियों को राजस्व संग्रह में सहयोग देना था। यद्यपि वह एक सरकारी कर्मचारी नहीं था, परंतु वह राज्य और

51. (C) भारतीय विषय और यूनानी/रोमन शैली।
कुषाण काल में विकसित गांधार कला शैली पूर्व और पश्चिम के सांस्कृतिक समन्वय का एक अद्भुत परिणाम है। इस शैली में बुद्ध की मूर्तियों को यूनानी देवता अपोलो के समान शारीरिक सूक्ष्मता, लहरदार बालों और वस्त्रों की सिलवटों के साथ बनाया गया था, जबकि उनकी मुद्रा और भाव पूरी तरह भारतीय और आध्यात्मिक थे। यह शैली उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों में फली-फूली जहाँ यूनानी और भारतीय संस्कृतियों का निरंतर मिलन होता था। इसने भारतीय मूर्तिकला में यथार्थवाद को नई गहराई प्रदान की।

52. (D) खारवेल
कलिंग का चेदि वंश सम्राट खारवेल के शासनकाल में अपनी शक्ति के चरमोत्कर्ष पर पहुँचा था। उनके जीवन और विजयों का विस्तृत विवरण भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ियों में स्थित हाथीगुम्फा शिलालेख से प्राप्त होता है। खारवेल एक कुशल सेनापति थे जिन्होंने मगध, दक्कन और दक्षिण भारत के राज्यों के विरुद्ध सफल अभियान चलाए थे। इस शिलालेख को भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है क्योंकि यह उनके शासन के वर्ष-वार महत्वपूर्ण कार्यों का सटीक वर्णन प्रदान करता है।

53. (C) जैन धर्म
हाथीगुम्फा शिलालेख से यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता है कि सम्राट खारवेल जैन धर्म के अत्यंत निष्ठावान अनुयायी और महान संरक्षक थे। उन्होंने जैन भिक्षुओं के निवास के लिए उदयगिरि और खंडगिरि पहाड़ियों में अनेक गुफाओं का निर्माण करवाया था। शिलालेख की शुरुआत भी जैनों के पवित्र मंत्र जैसी वंदना से होती है। खारवेल ने जैन धर्म के सम्मान में मगध से 'जिन' की उस मूर्ति को वापस लाने का गौरव प्राप्त किया, जिसे नन्द राजा कलिंग से छीन ले गए थे।

54. (B) पाण्ड्य
प्राचीन दक्षिण भारत के संगम युग के दौरान राजनीति तीन प्रमुख राजवंशों के इर्द-गिर्द घूमती थी, जिन्हें 'मुवेंदर' या तीन महान राजा कहा जाता था। ये चोल, चेर और पाण्ड्य थे। चोलों का प्रभाव कावेरी डेल्टा क्षेत्र में था, चेर आधुनिक केरल और तमिलनाडु के पश्चिमी हिस्सों पर शासन करते थे, जबकि पाण्ड्य साम्राज्य तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में केंद्रित था। इन तीनों राज्यों के बीच सत्ता और संसाधनों के लिए निरंतर संघर्ष और प्रतिस्पर्धा बनी रहती थी।

55. (C) केवल 2 और 3
संगम साहित्य प्राचीन तमिल भाषा की एक उत्कृष्ट धरोहर है, न कि संस्कृत की। यह साहित्य पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में आयोजित कवियों और विद्वानों की सभाओं, जिन्हें 'संगम' कहा जाता था, के दौरान रचा गया था। यह प्राचीन दक्षिण भारत की सामाजिक संरचना, युद्ध, प्रेम और तत्कालीन शासन व्यवस्था का अत्यंत विस्तृत और जीवंत विवरण प्रदान करता है। यद्यपि संगम युग का समय विवादित है, परंतु यह साहित्य उस काल की संस्कृति को समझने का एकमात्र सशक्त माध्यम है।

56. (A) बाघ
संगम युग के दौरान प्रत्येक राजवंश का अपना एक विशिष्ट शाही प्रतीक था, जो उनकी शक्ति और पहचान को दर्शाता था। चोल राज्य का राजकीय प्रतीक 'बाघ' था, जो उनकी सैन्य आक्रामकता और शौर्य का प्रतिनिधित्व करता था। चोलों के झंडे पर बाघ की आकृति अंकित होती थी। इसी प्रकार, चेर राजाओं का प्रतीक 'धनुष-बाण' था और पाण्ड्यों का प्रतीक 'मछली' था। इन प्रतीकों का उपयोग न केवल झंडों पर, बल्कि सिक्कों और राजकीय मुहरों पर भी व्यापक रूप से किया जाता था।

57. (C) केरल और तमिलनाडु के कुछ हिस्से
संगम काल के चेर साम्राज्य का भौगोलिक विस्तार मुख्य रूप से भारत के पश्चिमी तट पर था, जिसमें वर्तमान केरल राज्य और आधुनिक तमिलनाडु के कोंगु क्षेत्र के कुछ हिस्से शामिल थे। चेरों की राजधानी वंजी या करूर थी और उनके शासन में मुज़िरिस जैसा महत्वपूर्ण बंदरगाह आता था, जो विदेशी व्यापार का प्रमुख केंद्र था। चेर शासक अपनी नौसेना और मसालों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध थे। उनके इतिहास की जानकारी हमें संगम कविताओं और यूनानी भौगोलिक वृत्तांतों से प्राप्त होती है।

58. (A) मदुरै
मदुरै पाण्ड्य साम्राज्य की गौरवशाली राजधानी थी और इसे संगम साहित्य के विकास का मुख्य केंद्र माना जाता है। पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में यहीं पर कवियों की प्रसिद्ध सभाएं आयोजित हुई थीं। यह शहर न केवल प्रशासनिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र था, बल्कि रेशम और मोतियों के व्यापार के लिए भी प्रसिद्ध था। मदुरै की आर्थिक और धार्मिक महत्ता इतनी अधिक थी कि इसे दक्षिण का गौरव माना जाता था, जहाँ व्यापारिक मार्ग और विद्वान एक साथ मिलते थे।

59. (D) कवियों की गोष्ठी या सभा।
'संगम' शब्द का शाब्दिक अर्थ मेल या सभा होता है, जिसका उपयोग विशेष रूप से उन विद्वानों और कवियों की सभाओं के लिए किया गया जो पाण्ड्य राजाओं द्वारा मदुरै में आयोजित की गई थीं। माना जाता है कि ऐसी तीन सभाएं आयोजित हुई थीं जहाँ हजारों कवियों ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। इन्हीं सभाओं के दौरान संकलित साहित्य को 'संगम साहित्य' कहा जाता है। यह शब्द उस बौद्धिक और साहित्यिक क्रांति का प्रतीक है जिसने प्राचीन तमिल संस्कृति और भाषा को अमर बना दिया।

60. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संगम युग के दौरान दक्षिण भारत और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापारिक संबंध अत्यंत घनिष्ठ और लाभदायक थे। भारतीय मसालों, मोतियों और कीमती पत्थरों की रोम में भारी मांग थी, जिसके बदले में भारत को भारी मात्रा में सोना और चाँदी प्राप्त होता था। एरिकामेडु जैसे स्थानों पर खुदाई में मिले रोमन मृदभांड और दक्षिण भारत के विभिन्न हिस्सों में पाए गए रोमन सिक्कों के विशाल भंडार इस ऐतिहासिक व्यापारिक समृद्धि के ठोस पुरातात्विक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

21. (C) धम्म का प्रचार और पर्यवेक्षण करना।
सम्राट अशोक ने अपने शासन के चौदहवें वर्ष में धम्म महामत्त नामक अधिकारियों के एक विशेष वर्ग की नियुक्ति की थी। इनका मुख्य उत्तरदायित्व समाज के विभिन्न वर्गों के बीच धम्म के नैतिक सिद्धांतों का प्रचार करना और लोगों के कल्याण की देखभाल करना था। ये अधिकारी कैदियों की स्थिति सुधारने, धार्मिक सहिष्णुता सुनिश्चित करने और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार थे। इस पद के सृजन ने शासन में नैतिकता और मानवता के महत्व को स्पष्ट किया।

22. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मौर्य काल में स्थापत्य और नागरिक सुविधाओं के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई थी। पुरातात्विक साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि इस समय निर्माण कार्यों में पकी हुई ईंटों का उपयोग व्यापक स्तर पर होने लगा था, जिससे इमारतों को स्थायित्व प्राप्त हुआ। साथ ही, शहरों में स्वच्छता और जल प्रबंधन के लिए वलय कूपों या रिंग वेल्स की शुरुआत हुई, जो उस समय की उन्नत शहरी योजना का प्रमाण हैं। ये तकनीकें तत्कालीन समाज की समृद्धि और आधुनिकता को दर्शाती हैं।

23. (D) अशोक का स्तंभ लेख
सारनाथ स्थित सिंह शीर्ष मूल रूप से अशोक द्वारा स्थापित एक विशाल पत्थर के स्तंभ का ऊपरी भाग था। यह मौर्यकालीन मूर्तिकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जिसमें चार सिंह पीठ से पीठ सटाकर बैठे हुए हैं और उनके नीचे एक चक्र बना है। इसकी अद्भुत पॉलिश और कलात्मक सूक्ष्मता प्राचीन भारतीय शिल्पकारों के कौशल को दर्शाती है। आधुनिक भारत सरकार ने इसे राष्ट्र के प्रतीक के रूप में अपनाकर इसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता को सम्मानित किया है।

24. (A) लोगों को बलात अपने नए विश्वास में परिवर्तित करना।
अशोक के धम्म का मूल दर्शन स्वैच्छिक नैतिक परिवर्तन और धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित था, न कि किसी पर जबरन धर्म थोपने पर। उन्होंने धम्म के सिद्धांतों को जनता तक पहुँचाने के लिए शांतिपूर्ण तरीके अपनाए, जैसे चट्टानों पर संदेश लिखवाना और धम्म महामत्तों की नियुक्ति करना। उन्होंने विदेशों में भी दूत भेजे ताकि वे अहिंसा का संदेश फैला सकें। उनकी नीति का केंद्र अनुनय और उदाहरण द्वारा लोगों को सही मार्ग दिखाना था, सैन्य बल नहीं।

25. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कौटिल्य का अर्थशास्त्र प्राचीन भारत का एक महान राजनीतिक ग्रंथ है जो शासन और लोक प्रशासन के लिए एक विस्तृत नियमावली प्रस्तुत करता है। इसमें राज्य के सात अंगों अर्थात सप्तांग सिद्धांत की व्याख्या की गई है, जो राज्य की स्थिरता सुनिश्चित करते हैं। इसके अतिरिक्त, यह विभिन्न सरकारी विभागों के अध्यक्षों के कर्तव्यों, कराधान और विदेश नीति पर सूक्ष्म विवरण प्रदान करता है। इसलिए, यह स्पष्ट है कि यह ग्रंथ एक सुसंगत और व्यावहारिक प्रशासनिक व्यवस्था का आधार था।

26. (A) शिल्पकारों या व्यापारियों का एक संगठन।
मौर्य काल में श्रेणी या गिल्ड आर्थिक जीवन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था थी, जो समान व्यवसाय करने वाले शिल्पकारों या व्यापारियों के हितों की रक्षा करती थी। ये संगठन न केवल उत्पादन और गुणवत्ता के मानक निर्धारित करते थे, बल्कि व्यापारिक विवादों को सुलझाने और अपने सदस्यों को ऋण देने के लिए बैंक के रूप में भी कार्य करते थे। श्रेणियों के पास अपनी स्वायत्तता थी और राज्य के आर्थिक ढांचे में उनका बहुत सम्मान और प्रभाव था।

27. (D) यह युग पाषाण मूर्तिकला और शैलकृत वास्तुकला द्वारा चिह्नित है।
मौर्य काल भारतीय कला के इतिहास में एक क्रांतिकारी चरण था क्योंकि इसी समय लकड़ी और मिट्टी के स्थान पर पत्थर का व्यापक उपयोग शुरु हुआ था। सम्राट अशोक द्वारा निर्मित अखंड स्तंभ, उन पर की गई चमकदार पॉलिश और बराबर की गुफाओं जैसी शैलकृत वास्तुकला इस काल की अद्भुत उपलब्धियाँ हैं। यह युग केवल धार्मिक प्रतीकों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें शाही महलों और नागरिक संरचनाओं के माध्यम से भव्यता का प्रदर्शन भी किया गया था।

28. (B) जेम्स प्रिंसेप
अशोक के शिलालेखों की गूढ़ ब्राह्मी लिपि को समझने की पहली बड़ी सफलता 1837 में ब्रिटिश विद्वान जेम्स प्रिंसेप को प्राप्त हुई थी। उनकी इस खोज ने भारतीय इतिहास के एक महान अध्याय को खोलने में मदद की, क्योंकि इससे पहले इन अभिलेखों के अर्थ अज्ञात थे। प्रिंसेप के प्रयासों से ही यह सिद्ध हुआ कि 'पियदस्सी' कोई और नहीं बल्कि महान सम्राट अशोक ही थे। इस खोज ने मौर्यकालीन प्रशासन और धम्म की समझ को नई दिशा प्रदान की।

29. (C) दाएं से बाएं।
खरोष्ठी लिपि मौर्य काल के दौरान उत्तर-पश्चिमी भारत में प्रचलित थी, जो अपनी विशेष लेखन शैली के लिए जानी जाती थी। ब्राह्मी लिपि के विपरीत, जो बाएं से दाएं लिखी जाती थी, खरोष्ठी लिपि दाएं से बाएं ओर लिखी जाती थी। यह लिपि अरामी लिपि से प्रभावित मानी जाती है और इसका उपयोग अशोक के शाहबाजगढ़ी और मनसेहरा जैसे शिलालेखों में किया गया है। यह प्राचीन भारत की भाषाई विविधता और विदेशी सांस्कृतिक प्रभावों के समन्वय को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

30. (D) अहिंसा की नीति जिसने सेना को कमजोर कर दिया।
मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए कई कारण जिम्मेदार माने जाते हैं, जिनमें से एक तर्क यह दिया जाता है कि अशोक की अहिंसावादी नीतियों ने सेना के मनोबल और मारक क्षमता को प्रभावित किया था। निरंतर युद्ध न होने के कारण सैन्य अनुशासन में कमी आई और साम्राज्य बाहरी आक्रमणों के प्रति संवेदनशील हो गया। यद्यपि यह एकमात्र कारण नहीं था, परंतु इसने बाद के कमजोर उत्तराधिकारियों के समय में केंद्रीय शक्ति के क्षरण की प्रक्रिया को निश्चित रूप से तीव्र कर दिया।

ग्रामीण जनता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता था।

71. (D) यूनानी और अरामी
सम्राट अशोक के शिलालेखों की एक उल्लेखनीय विशेषता उनकी भाषाई विविधता है, जो साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों की स्थानीय संस्कृति के प्रति उनके सम्मान को दर्शाती है। अफगानिस्तान और उसके आसपास के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में, जहाँ यूनानी और ईरानी संस्कृति का प्रभाव था, अशोक ने अपने संदेशों के लिए यूनानी और अरामी लिपियों का उपयोग किया। यह इस तथ्य का प्रमाण है कि मौर्य साम्राज्य एक बहु-सांस्कृतिक और बहु-भाषी राष्ट्र था, जहाँ राजा अपनी प्रजा की भाषा में उनसे संवाद करता था।

72. (A) व्यक्तिगत परिवर्तन और धम्म को अपनाना।
कलिंग युद्ध का अशोक पर गहरा मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रभाव पड़ा। युद्ध के मैदान में हुई व्यापक हिंसा और पीड़ा को देखकर उनका हृदय विचलित हो गया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने भविष्य में युद्ध का त्याग करने का संकल्प लिया। यह उनके जीवन का एक निर्णायक मोड़ था जिसने उन्हें बौद्ध धर्म के निकट लाया और उन्होंने अहिंसा, करुणा और सत्य पर आधारित 'धम्म' के मार्ग को अपना लिया। उन्होंने अपनी शक्ति का उपयोग अब साम्राज्य विस्तार के बजाय नैतिक उत्थान के लिए करने का निर्णय लिया।

73. (C) आजीवकों
गया के निकट बराबर पहाड़ियों की गुफाओं में मिले शिलालेख अशोक की धार्मिक सहिष्णुता का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। यद्यपि अशोक स्वयं एक बौद्ध थे, परंतु उन्होंने इन गुफाओं को 'आजीवक' संप्रदाय के तपस्वियों के निवास के लिए दान में दिया था। आजीवक उस समय का एक महत्वपूर्ण संप्रदाय था। यह दान इस बात को पुख्ता करता है कि अशोक की धम्म नीति केवल बौद्धों तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे सभी धार्मिक संप्रदायों का समान रूप से सम्मान और समर्थन करते थे।

74. (A) व्यवसाय के आधार पर सात वर्गों में विभाजित समाज।
मौर्यकालीन भारत का दौरा करने वाले यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने अपने वृत्तांतों में भारतीय समाज के एक अद्वितीय वर्गीकरण का उल्लेख किया है। उन्होंने समाज को उनकी जाति के बजाय उनके व्यवसायों के आधार पर सात श्रेणियों में विभाजित किया था, जिनमें दार्शनिक, किसान, चरवाहे, कारीगर, सैनिक, निरीक्षक और पार्षद शामिल थे। हालांकि यह पारंपरिक चतुर्वर्ण व्यवस्था से अलग दिखता है, परंतु यह मौर्य काल के दौरान समाज में श्रम विभाजन और प्रशासनिक जटिलता के बढ़ते महत्व को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

75. (A) 3, 1, 2
मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद भारत के उत्तर-पश्चिमी द्वार से विदेशी आक्रमणों का एक सिलसिला शुरू हुआ। सबसे पहले हिंद-यवन या बैक्ट्रियन ग्रीक आए जिन्होंने पंजाब और उत्तर-पश्चिम पर अधिकार किया। उनके बाद शकों ने भारत में प्रवेश किया और विभिन्न शाखाओं में विभाजित होकर शासन किया। अंत में, कुषाण आए जिन्होंने एक विशाल और शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। यह क्रम न केवल सैन्य अभियानों को दर्शाता है, बल्कि भारत में विदेशी संस्कृतियों के क्रमिक समावेश और समन्वय की प्रक्रिया को भी स्पष्ट करता है।

76. (B) राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था जहाँ कृषि प्राथमिक थी।
मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषता आर्थिक गतिविधियों पर राज्य का कड़ा और व्यापक नियंत्रण था। कृषि आय का मुख्य स्रोत थी और राज्य सिंचाई की सुविधा प्रदान करके कृषि उत्पादन बढ़ाने का प्रयास करता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार, खानों, जंगलों और नमक के उत्पादन पर राज्य का एकाधिकार था। व्यापारियों और शिल्पकारों की श्रेणियों को नियमित किया गया था और कीमतों तथा लाभ पर राज्य की कड़ी नजर रहती थी ताकि उपभोक्ताओं का शोषण न हो और राजस्व सुनिश्चित किया जा सके।

77. (C) विष्णु और शिव पर केंद्रित भक्ति आंदोलन।
मौर्य काल के दौरान धार्मिक परिदृश्य अत्यंत विविधतापूर्ण था, जहाँ पारंपरिक ब्राह्मणवाद और उभरते हुए श्रमण संप्रदाय जैसे बौद्ध, जैन और आजीवक एक साथ अस्तित्व में थे। इस समय यक्षों और यक्षिणियों की पूजा भी जनमानस में अत्यंत लोकप्रिय थी। हालांकि, विष्णु और शिव पर केंद्रित भक्ति आंदोलन, जो व्यक्तिगत ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण पर आधारित था, इस काल की मुख्य विशेषता नहीं थी। भक्ति आंदोलन का व्यापक प्रसार और विकास काफी बाद के कालखंडों, विशेष रूप से गुप्त काल और उसके बाद हुआ था।

78. (D) राजुक
सम्राट अशोक ने प्रशासन को अधिक मानवीय और जनता के निकट लाने के लिए 'राजुक' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की थी। राजुकों का पद मूल रूप से भूमि मापन से संबंधित था, परंतु अशोक ने उन्हें न्याय प्रदान करने और सजा में छूट देने के व्यापक अधिकार सौंपे। उन्हें ग्रामीण जनता के सुख-दुख की देखभाल करने और धम्म के सिद्धांतों को लागू करने का उत्तरदायित्व दिया गया था। यह सुधार इस उद्देश्य से किया गया था ताकि दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाली प्रजा को न्याय के लिए राजधानी न भागना पड़े।

79. (A) सेना और नौकरशाही पर अत्यधिक व्यय।
मौर्य साम्राज्य के पतन के पीछे एक महत्वपूर्ण आर्थिक कारण उसकी विशाल सेना और विस्तृत नौकरशाही को बनाए रखने का भारी वित्तीय बोझ था। साम्राज्य की सुरक्षा और प्रशासन के लिए लाखों सैनिकों और हजारों अधिकारियों को वेतन देना पड़ता था, जिससे राजकीय खजाने पर निरंतर दबाव बना रहता था। अशोक के बाद के समय में, जब केंद्रीय नियंत्रण कमजोर हुआ और आय के स्रोत कम हुए, तब इस विशाल ढांचे का खर्च उठाना असंभव हो गया। इसी आर्थिक असंतुलन ने साम्राज्य की नींव को कमजोर कर दिया।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) दण्डनीति
कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार दण्डनीति शासन प्रबंधन और राजनीति के विज्ञान को संबोधित करने वाला शब्द है। यह राज्य की संप्रभु शक्ति का प्रतीक है जो न्याय व्यवस्था और कानून का पालन सुनिश्चित करती है। राज्य की स्थिरता के लिए दंड की उचित शक्ति का प्रयोग अनिवार्य माना गया है। यह विज्ञान राजा को प्रजा पर नियंत्रण और सुरक्षा के सिद्धांतों की व्यापक शिक्षा प्रदान करता है।

2. (A) स्वामिन (शासक)
कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित राज्य के सप्तांग सिद्धांत के अंतर्गत स्वामी अर्थात राजा को राज्य का सर्वोच्च अंग माना गया है। जिस प्रकार मानव शरीर में सिर का स्थान प्रमुख होता है, उसी प्रकार राज्य रुपी शरीर में राजा संप्रभुता का प्रतिनिधित्व करता है। वह राज्य की समस्त शक्तियों का केंद्र होता है और अन्य सभी छह अंगों का मार्गदर्शन करना तथा उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना उसी का मुख्य कर्तव्य है।

3. (B) कथन I गलत है, और कथन II सही है।
प्राचीन भारतीय ग्रंथों में चन्द्रगुप्त मौर्य की उत्पत्ति के विषय में कोई एक सर्वसम्मत मत उपलब्ध नहीं है। जहाँ बौद्ध और जैन ग्रंथ उन्हें क्षत्रिय वंश का बताते हैं, वहीं ब्राह्मणवादी साहित्य और पुराण उन्हें शूद्र या निम्न कुल से संबंधित मानते हैं। विवरणों में व्याप्त यह गहरी विसंगति और ऐतिहासिक साक्ष्यों की भिन्नता इस बात का पुख्ता संकेत देती है कि उनकी वास्तविक वंशावली पर विद्वानों के बीच गहरा मतभेद था।

4. (D) धर्म और नैतिक अनुनय द्वारा विजय।
कलिंग युद्ध के उपरांत सम्राट अशोक ने भौतिक और सैन्य विजय का मार्ग त्यागकर धम्म विजय की नीति अपनाई थी। इस अवधारणा का मूल अर्थ शस्त्रों के बजाय प्रेम, दया और नैतिकता के माध्यम से लोगों के हृदय को जीतना था। उन्होंने जन कल्याण, अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता को शासन का आधार बनाया। यह नीति वैश्विक शांति और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए एक महान प्रशासनिक पहल थी।

5. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
सप्तांग सिद्धांत के अनुसार राज्य के विभिन्न अंगों के विशिष्ट कार्य और अर्थ निर्धारित किए गए थे। अमात्य का अर्थ उच्च प्रशासनिक अधिकारी या मंत्री होता था जो प्रशासन चलाने में सहायक थे। जनपद क्षेत्र और वहाँ की जनसंख्या को दर्शाता था, जबकि कोष का अर्थ राज्य के संचित धन या राजकोष से था। इसी प्रकार मित्र का अर्थ राजा के वे सहयोगी राज्य थे जो संकट के समय राज्य की सहायता करते थे।

6. (B) सामूहिक पूजा के लिए एक केंद्रीय कक्ष।
बौद्ध स्तूप मुख्य रुप से भगवान बुद्ध या उनके शिष्यों के पवित्र अवशेषों को संरक्षित करने के लिए निर्मित स्मारक टीले थे। स्तूप की संरचना में अर्द्धगोलाकार गुंबद, जिसे अण्ड कहा जाता है, हर्मिका नामक वर्गाकार रेलिंग और प्रदक्षिणा पथ शामिल होते थे। स्तूपों का उद्देश्य श्रद्धा व्यक्त करना था, न कि सामूहिक पूजा के लिए किसी बड़े कक्ष का निर्माण करना। चैत्य हॉल का उपयोग प्रार्थना और सामूहिक सभाओं के लिए होता था।

7. (D) कृषि उपज पर लगने वाला एक नियमित कर।
मौर्य काल की राजस्व प्रणाली में करों का विस्तृत वर्गीकरण किया गया था, जिसमें 'करा' कृषि उपज पर लगने वाला एक नियमित कर था। यह राज्य की आय का एक प्रमुख स्रोत था जो किसानों से उनकी फसल के हिस्से के रुप में वसूला जाता था। मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था मुख्य रुप से कृषि पर आधारित थी, इसलिए भूमि और उपज पर लगने वाले ऐसे कर साम्राज्य के विशाल प्रशासनिक ढांचे को चलाने के लिए अत्यंत आवश्यक थे।

8. (A) ग्राम प्रशासन केंद्रीय नियंत्रण से स्वतंत्र था।
मौर्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था अपनी उच्च केंद्रीकृत प्रकृति के लिए जानी जाती थी, जहाँ ग्राम प्रशासन भी केंद्रीय निरीक्षण के अधीन था। यद्यपि ग्राम का मुखिया ग्रामिक होता था और वह स्थानीय मामलों का प्रबंधन करता था, परंतु वह पूरी तरह स्वतंत्र नहीं था। राज्य के अधिकारी जैसे गोप और स्थानिक ग्राम स्तर के राजस्व और प्रशासनिक कार्यों की निगरानी करते थे ताकि संपूर्ण साम्राज्य में केंद्र की पकड़ बनी रहे।

9. (C) बलात श्रम
प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज में विष्टि शब्द का प्रयोग राज्य द्वारा लिए जाने वाले बलात श्रम के लिए किया जाता था। मौर्य काल के दौरान यह एक प्रकार के कर के रुप में प्रचलित था जहाँ लोगों को पारिश्रमिक के बिना सार्वजनिक कार्यों में श्रम देना पड़ता था। यद्यपि इसे शोषणकारी माना जा सकता है, परंतु उस समय इसे राज्य के प्रति नागरिक कर्तव्य का एक हिस्सा माना जाता था जो बुनियादी ढांचे के निर्माण में सहायक था।

10. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कलिंग युद्ध सम्राट अशोक के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी जिसने उनके पूरे दृष्टिकोण को बदल दिया। युद्ध में हुए भीषण रक्तपात और लाखों लोगों की पीड़ा ने उनके हृदय में गहरा पश्चाताप उत्पन्न किया। इसी कारण उन्होंने भेरीघोष के स्थान पर धम्मघोष की नीति अपनाई और सैन्य विस्तार की नीति को सदैव के लिए त्याग दिया। अब उनका मुख्य उद्देश्य

कीमती पत्थरों का बड़े पैमाने पर निर्यात किया जाता था। रोमन अभिजात वर्ग में इन वस्तुओं की भारी मांग थी, जिसके बदले में भारत को भारी मात्रा में सोने के सिक्के प्राप्त होते थे। इस व्यापार ने पाण्ड्य और चेर जैसे दक्षिणी राज्यों को अत्यंत समृद्ध और वैभवशाली बना दिया था।

90. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मौर्य साम्राज्य की सुरक्षा और स्थिरता के पीछे उसकी अत्यंत जटिल और प्रभावी गुप्तचर प्रणाली का बड़ा हाथ था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में जासूसों के विभिन्न वर्गों, जैसे 'संस्था' और 'संचारा' का विस्तृत वर्णन मिलता है, जो राज्य के भीतर और बाहर सूचनाएँ एकत्र करते थे। राजा को हर छोटी-बड़ी गतिविधि की जानकारी देने के लिए जासूसों को भिक्षुओं, व्यापारियों और यहाँ तक कि वेश्याओं के वेश में तैनात किया जाता था। यह व्यवस्था भ्रष्टाचार को रोकने और विद्रोहों को शुरुआती चरण में ही कुचलने के लिए अनिवार्य थी।

91. (D) शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएं
'सुश्रुत संहिता' प्राचीन भारतीय आयुर्वेद का एक महान ग्रंथ है, जो मुख्य रूप से शल्य चिकित्सा या सर्जरी की तकनीकों पर केंद्रित है। महर्षि सुश्रुत, जिन्हें विश्व का प्रथम शल्य चिकित्सक माना जाता है, ने इस ग्रंथ में मोतियाबिंद का ऑपरेशन, पथरी निकालना और टूटी हड्डियों को जोड़ने जैसी जटिल प्रक्रियाओं का वर्णन किया है। सबसे आश्चर्यजनक रूप से, इसमें प्लास्टिक सर्जरी या नासिका संधान की विधि भी दी गई है। यह ग्रंथ प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान की उन्नत अवस्था और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का एक अद्वितीय प्रमाण है।

92. (B) दंड देने और कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने की कला।
कौटिल्य के राजनीतिक दर्शन में 'दण्डनीति' शासन का वह आधार है जो समाज में न्याय और अनुशासन सुनिश्चित करता है। इसका शाब्दिक अर्थ दंड की शक्ति का बुद्धिमानी से प्रयोग करना है ताकि अराजकता को रोका जा सके और 'मत्स्य न्याय' जैसी स्थिति उत्पन्न न हो। दण्डनीति के माध्यम से राजा धर्म, अर्थ और काम की रक्षा करता है। यह अवधारणा इस सिद्धांत पर आधारित है कि बिना उचित दंड के डर के, शक्तिशाली लोग निर्बलों का शोषण करेंगे और सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से नष्ट हो जाएगी।

93. (C) कौटिल्य
कौटिल्य, जिन्हें चाणक्य या विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है, चन्द्रगुप्त मौर्य के उत्थान के पीछे की मुख्य मार्गदर्शक शक्ति थे। उन्होंने तक्षशिला में चन्द्रगुप्त को शिक्षा दी और नन्द वंश के अत्याचारी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए एक मास्टर प्लान तैयार किया। कौटिल्य न केवल एक महान शिक्षक थे, बल्कि एक असाधारण रणनीतिकार और अर्थशास्त्री भी थे। उनके मार्गदर्शन में ही चन्द्रगुप्त ने एक विशाल और सुव्यवस्थित साम्राज्य की स्थापना की, जो भारतीय इतिहास में एकता और कुशल प्रशासन का पहला बड़ा उदाहरण बना।

94. (D) उसके सेनापति द्वारा
मौर्य साम्राज्य का अंत एक नाटकीय सैन्य विद्रोह के साथ हुआ था, जब अंतिम सम्राट बृहद्रथ की हत्या उनके अपने सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की थी। लगभग 185 ईसा पूर्व में एक सैन्य परेड के दौरान पुष्यमित्र ने सार्वजनिक रूप से राजा का वध कर दिया और स्वयं को मगध का शासक घोषित कर दिया। इस घटना ने सदियों पुराने मौर्य वंश को समाप्त कर दिया और शुंग वंश की स्थापना की। यह परिवर्तन मगध की घटती सैन्य शक्ति और राज दरबार के भीतर बढ़ते असंतोष तथा ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया का परिणाम था।

95. (A) वह जिले में कार्यकारी और न्यायिक कार्यों को संयोजित करता था।
मौर्यकालीन प्रांतीय प्रशासन में 'प्रादेशिक' एक उच्च स्तरीय अधिकारी था जो आधुनिक समय के संभागीय आयुक्त या जिला कलेक्टर के समान कार्य करता था। उसका मुख्य कार्य अपने अधिकार क्षेत्र में राजस्व का संग्रह सुनिश्चित करना, कानून व्यवस्था बनाए रखना और न्यायिक कार्यों का संपादन करना था। प्रादेशिक को नियमित रूप से अपने क्षेत्र का दौरा करना पड़ता था ताकि वह जनता की शिकायतों को सुन सके और केंद्र सरकार के निर्देशों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित कर सके। यह पद प्रशासनिक केंद्रीकरण और दक्षता का एक प्रमुख अंग था।

96. (B) कंधार अभिलेख
सम्राट अशोक का कंधार अभिलेख उनकी धम्म नीति के वैश्विक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक समन्वय का एक अद्भुत उदाहरण है। यह एक द्विभाषी शिलालेख है जो यूनानी और अरामी दोनों भाषाओं में लिखा गया है। यह उन लोगों के लिए बनाया गया था जो उस सीमावर्ती क्षेत्र में रहते थे और इन भाषाओं का उपयोग करते थे। यह शिलालेख इस बात की पुष्टि करता है कि अशोक अपने संदेशों को लोगों तक पहुँचाने के लिए उनकी अपनी भाषा का उपयोग करने में विश्वास रखते थे, जिससे उनके शासन की मानवीय और समावेशी प्रकृति स्पष्ट होती है।

97. (B) कथन I गलत है, और कथन II सही है।
अशोक का धम्म व्यक्तिगत रूप से बौद्ध धर्म की शिक्षाओं से प्रेरित था, परंतु यह स्वयं बौद्ध धर्म का पर्याय नहीं था। धम्म एक व्यापक और सार्वभौमिक नैतिक आचार संहिता थी जो किसी भी संप्रदाय या धर्म के व्यक्ति द्वारा अपनाई जा सकती थी। इसमें निर्वाण या मोक्ष जैसे जटिल धार्मिक सिद्धांतों के बजाय दैनिक जीवन की नैतिकता, जैसे माता-पिता का सम्मान और जीवों के प्रति दया पर अधिक बल दिया गया था। इसका उद्देश्य एक आदर्श समाज का निर्माण करना था जहाँ लोग शांति और सद्भाव के साथ रह सकें।

98. (A) मौर्यकालीन पत्थर के स्तंभों और मूर्तियों की
"मौर्य पॉलिश" प्राचीन भारतीय कला की एक ऐसी विशिष्ट तकनीक है जिसने आज भी वैज्ञानिकों और इतिहासकारों को अचंभित कर रखा है। सम्राट अशोक द्वारा निर्मित अखंड बलुआ पत्थर के स्तंभों और दीदारगंज यक्षिणी जैसी मूर्तियों पर एक कांच जैसी अत्यंत चमकदार पॉलिश की गई है। सदियों तक

पर उठे मतभेदों के परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म औपचारिक रूप से 'हीनयान' और 'महायान' नामक दो शाखाओं में बंट गया। महायान संप्रदाय ने बुद्ध को भगवान मानकर उनकी मूर्तियों की पूजा और भक्ति के मार्ग को अपनाया, जबकि हीनयान ने उनके मूल और संयमित उपदेशों का पालन जारी रखा। इस विभाजन ने बौद्ध धर्म को विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग स्वरूपों में फैलने की नई दिशा प्रदान की।

168. (A) मुरुगन
संगम साहित्य के अनुसार, प्राचीन तमिल समाज के सबसे प्रमुख और पूजनीय देवता 'मुरुगन' थे, जिन्हें पहाड़ी क्षेत्र के अधिष्ठाता देव के रूप में माना जाता था। मुरुगन को शक्ति, यौवन और युद्ध के देवता के रूप में पूजा जाता था और उनके सम्मान में कई धार्मिक अनुष्ठान तथा नृत्य आयोजित किए जाते थे। यद्यपि इस समय दक्षिण भारत में धीरे-धीरे अन्य ब्राह्मणवादी और श्रमण मान्यताओं का प्रवेश हो रहा था, परंतु मुरुगन की पूजा स्थानीय तमिल संस्कृति की जड़ों में गहराई से बसी हुई थी। वे तमिल अस्मिता और उनके गौरव के प्रतीक के रूप में आज भी दक्षिण भारत में अत्यंत लोकप्रिय हैं।

169. (C) दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति का विस्तार।
'वृहत्तर भारत' शब्द का प्रयोग उन क्षेत्रों के लिए किया जाता है जहाँ प्राचीन काल में भारतीय संस्कृति, धर्म, भाषा और शासन व्यवस्था का गहरा प्रभाव पड़ा था। इसमें मुख्य रूप से कंबोडिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड और वियतनाम जैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देश शामिल थे। यह विस्तार किसी सैन्य विजय के माध्यम से नहीं, बल्कि व्यापारिक संपर्कों और बौद्ध तथा ब्राह्मण भिक्षुओं के निरंतर आगमन से हुआ था। इन क्षेत्रों में भारतीय महाकाव्यों, संस्कृत शब्दावली और स्थापत्य शैलियों को व्यापक रूप से अपनाया गया, जिससे एक विशाल सांस्कृतिक परिमंडल का निर्माण हुआ जो आज भी इन देशों की परंपराओं में जीवित है।

170. (A) कलन का विकास
प्राचीन भारत में गणित के क्षेत्र में की गई खोजों ने आधुनिक गणित की नींव रखी थी, जिसमें शून्य की अवधारणा, दशमलव स्थान-मान प्रणाली और पाई के सटीक मान की गणना जैसे क्रांतिकारी योगदान शामिल थे। हालांकि, 'कलन' (Calculus) का विकास, जो गणित की एक उच्च शाखा है, प्राचीन भारतीय गणित का हिस्सा नहीं माना जाता है क्योंकि इसका व्यवस्थित विकास बहुत बाद की शताब्दियों में हुआ था। शून्य और दशमलव प्रणाली जैसी भारतीय खोजों ने गणनाओं को एक नया आयाम दिया, जिससे विज्ञान और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में जटिल समस्याओं को सुलझाना संभव हो सका था।

171. (D) नागरिक
मौर्यकालीन नगर प्रशासन में 'नागरिक' वह मुख्य अधिकारी था जो शहर की कानून व्यवस्था, स्वच्छता और सुरक्षा के लिए पूरी तरह उत्तरदायी था। वह आधुनिक समय के नगर आयुक्त या पुलिस प्रमुख के समान कार्य करता था। नागरिक का मुख्य कर्तव्य शहर के विभिन्न क्षेत्रों की निगरानी करना, आग लगने की घटनाओं को रोकना और अपराधियों पर नियंत्रण बनाए रखना था। उसे शहर की जनगणना और विदेशियों की गतिविधियों का विवरण भी रखना पड़ता था। यह पद मौर्य प्रशासन की शहरी क्षेत्रों के प्रति सूक्ष्म दृष्टि और वहां के नागरिकों की सुरक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

172. (B) वर्ण
कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत में राज्य को सात अंगों—स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र—के रूप में परिभाषित किया गया है। यद्यपि 'वर्ण' व्यवस्था प्राचीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण सामाजिक ढांचा थी, परंतु कौटिल्य ने इसे राज्य के एक पृथक और संरचनात्मक अंग के रूप में इन सात अंगों की सूची में शामिल नहीं किया था। सप्तांग सिद्धांत मुख्य रूप से शासन की संस्थागत इकाइयों और राज्य की कार्यक्षमता को बनाए रखने वाले घटकों पर केंद्रित है। वर्ण व्यवस्था सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा थी, जबकि सप्तांग पूर्णतः राजनीतिक और प्रशासनिक दर्शन पर आधारित है।

173. (C) शिलालेख XIII
अशोक का तेरहवां मुख्य शिलालेख ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें उन्होंने कलिंग युद्ध का वर्णन करने के साथ-साथ उन पांच यूनानी राजाओं के नामों का भी उल्लेख किया है जिनके राज्यों में उन्होंने धम्म का संदेश फैलाने के लिए अपने दूत भेजे थे। इन राजाओं में सीरिया के एंटियोकस और मिस्र के टॉलेमी जैसे नाम शामिल हैं। यह विवरण न केवल अशोक की वैश्विक शांति और धम्म के प्रचार की महत्वाकांक्षा को दर्शाता है, बल्कि यह मौर्य साम्राज्य के समकालीन दुनिया के साथ सुदृढ़ राजनयिक और सांस्कृतिक संबंधों का एक ठोस लिखित प्रमाण भी प्रस्तुत करता है।

174. (D) पत्थर
मौर्य युग को भारतीय स्थापत्य कला के इतिहास में एक 'क्रांतिकारी काल' माना जाता है क्योंकि इसी समय बड़े पैमाने पर कलात्मक और संरचनात्मक कार्यों के लिए लकड़ी के स्थान पर पत्थर का उपयोग शुरू हुआ था। सम्राट अशोक द्वारा निर्मित अखंड स्तंभ, उन पर की गई अद्भुत पॉलिश और चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएं मौर्यकालीन शिल्प कौशल की परिपक्वता को दर्शाती हैं। पत्थर के उपयोग ने भारतीय कला को स्थायित्व प्रदान किया, जिससे हजारों वर्षों के बाद भी ये स्मारक आज हमारे सामने सुरक्षित हैं। इस बदलाव ने भारतीय वास्तुकला को एक नई दिशा और भव्यता प्रदान की।

175. (D) 1, 2 और 3
मौर्य साम्राज्य का पतन किसी एक कारण का परिणाम नहीं था, बल्कि इसमें कई भौगोलिक, राजनीतिक और सैन्य कारकों का योगदान था। साम्राज्य का विस्तार इतना अधिक था कि कमजोर उत्तराधिकारियों के लिए दूरस्थ प्रांतों पर केंद्रीय नियंत्रण बनाए रखना लगभग असंभव हो गया था। अशोक की मृत्यु के बाद नेतृत्व में आई शून्यता ने प्रांतीय विद्रोहों को बढ़ावा दिया। साथ ही, अशोक की लंबे समय तक चलने वाली शांतिवादी नीतियों के कारण सेना की युद्धक क्षमता में आई कमी ने साम्राज्य को बाहरी आक्रमणों के प्रति असुरक्षित बना दिया, जिससे अंततः इसका विखंडन हो गया।

केंद्रित है। यद्यपि यह काफी बाद में लिखा गया था, परंतु यह मौर्य साम्राज्य की स्थापना के दौरान हुई गुप्त संधियों और सत्ता संघर्ष की जटिलताओं को समझने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है।

108. (B) प्रशासन को मानवीय और नैतिक बनाना।
कलिंग युद्ध के उपरांत सम्राट अशोक के प्रशासनिक सुधारों का मुख्य केंद्र बिंदु प्रजा का कल्याण और नैतिक उत्थान था। उन्होंने प्रशासन को केवल कर संग्रह और नियंत्रण का साधन बनाने के बजाय सेवा का माध्यम बनाया। उन्होंने राजुकों और धम्म महामत्तों की नियुक्ति की ताकि लोगों की शिकायतों का त्वरित निवारण हो सके और न्याय में करुणा का समावेश हो। उन्होंने सड़कों के किनारे छायादार वृक्ष लगवाना, कुएं खुदवाना और मनुष्यों तथा पशुओं के लिए चिकित्सालय खुलवाना जैसे कार्य किए, जो शासन के प्रति उनके पिता तुल्य दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

109. (C) विशिष्ट विषय-वस्तु वाले व्यक्तिगत अभिलेखों का एक समूह।
अशोक के 'लघु शिलालेख' उनके उन प्रारंभिक व्यक्तिगत आदेशों और घोषणाओं का संग्रह हैं जो मुख्य शिलालेखों से समय और विषय-वस्तु में भिन्न हैं। ये अभिलेख अक्सर उनके बौद्ध धर्म के साथ व्यक्तिगत संबंध और उनके द्वारा किए गए धर्म प्रचार के शुरुआती प्रयासों को दर्शाते हैं। ये शिलालेख भारत के विभिन्न हिस्सों में पाए गए हैं, जैसे बैराट, सासाराम और मास्की। इनका ऐतिहासिक महत्व इस बात में है कि ये अशोक के एक साधारण राजा से एक समर्पित 'धम्म' अनुयायी बनने की क्रमिक यात्रा और उनकी प्रारंभिक धार्मिक गतिविधियों पर प्रकाश डालते हैं।

110. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
गांधार और मथुरा कला शैलियाँ प्राचीन भारत की दो सबसे महत्वपूर्ण और समानांतर कला परंपराएँ थीं, जो अपनी विशिष्ट पहचान रखती थीं। गांधार कला पर यूनानी और रोमन शैलियों का गहरा प्रभाव था, जिसमें बुद्ध की मूर्तियों को विदेशी शारीरिक विशेषताओं के साथ उकेरा गया था। इसके विपरीत, मथुरा कला शैली पूरी तरह से स्वदेशी थी और इसमें बुद्ध तथा अन्य देवताओं को भारतीय सौंदर्य और शक्ति के प्रतिमानों के अनुसार बनाया गया था। इन दोनों शैलियों का सह-अस्तित्व तत्कालीन भारत के उदार सांस्कृतिक परिवेश और कलात्मक विविधता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

111. (A) शहरी जीवन और वाणिज्य में गिरावट का।
उत्तर मौर्य काल के अंतिम चरणों में व्यापारिक श्रेणियों या गिल्ड्स की सक्रियता में आई कमी को अक्सर तत्कालीन समाज में शहरीकरण के ह्रास के रूप में देखा जाता है। श्रेणियाँ मुख्य रूप से फलता-फूलता विदेशी व्यापार और शहरी उत्पादन पर टिकी थीं। जब साम्राज्य खंडित हुए और व्यापारिक मार्ग असुरक्षित हो गए, तो वाणिज्यिक गतिविधियों में गिरावट आई, जिससे इन श्रेणियों का आर्थिक आधार कमजोर पड़ गया। यह बदलाव न केवल अर्थव्यवस्था में सुस्ती का संकेत था, बल्कि यह बड़े शहरों से ग्रामीण आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते झुकाव की प्रक्रिया का भी परिचायक था।

112. (B) उनका शासन अल्पकालिक था और उनका क्षेत्र सीमित था।
कण्व वंश का इतिहास मौर्य और शुंगों की तुलना में काफी कम चर्चित है क्योंकि उनका शासनकाल मात्र 45 वर्षों का रहा और उनका प्रभाव क्षेत्र मुख्य रूप से मगध के कुछ हिस्सों तक ही सिमट गया था। वासुदेव कण्व द्वारा स्थापित इस राजवंश ने कोई बड़ी सैन्य विजय या दूरगामी प्रशासनिक सुधार नहीं किए। इसके अतिरिक्त, पुरातात्विक साक्ष्यों जैसे शिलालेखों और भव्य स्मारकों की कमी भी इस वंश को ऐतिहासिक रूप से धुंधला बना देती है। यह काल वास्तव में मगध की केंद्रीय शक्ति के अंतिम पतन और क्षेत्रीय शक्तियों के उदय का एक संक्रांति काल था।

113. (B) मातृनाम नामकरण प्रणाली का प्रचलन।
सातवाहन समाज की एक अत्यंत विशिष्ट और असाधारण विशेषता उनके शासकों द्वारा अपने नाम के आगे माता के नाम का गौरवपूर्ण उपयोग करना था। गौतमीपुत्र सातकर्णी और वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी जैसे नाम इस प्रथा के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। यद्यपि सिंहासन का उत्तराधिकार मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक था और ज्येष्ठ पुत्र ही राजा बनता था, परंतु मातृनामों का व्यापक प्रचलन समाज में महिलाओं, विशेष रूप से राजमाताओं के उच्च सम्मान और प्रभाव को स्पष्ट रूप से उजागर करता है। यह परंपरा तत्कालीन भारतीय समाज की रुढ़िवादिता के बीच एक प्रगतिशील दृष्टिकोण का संकेत देती है।

114. (A) नहपान
"महाराष्ट्र के शक क्षत्रप" शब्द मुख्य रूप से क्षहरात वंश के राजा नहपान के शासन को संदर्भित करता है, जिन्होंने पहली-दूसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान पश्चिमी भारत के एक बड़े भूभाग पर अधिकार किया था। नहपान की शक्ति का केंद्र नासिक और उसके आसपास का क्षेत्र था, जहाँ से वे दक्कन के व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण रखते थे। उनका शासन सातवाहनों के साथ निरंतर संघर्ष के लिए जाना जाता है। नहपान के सिक्कों का विशाल भंडार और बाद में सातवाहनों द्वारा उन पर अपनी मुहर लगवाना उनके शासन की ऐतिहासिक पुष्टि और उनके प्रभाव की सीमा को दर्शाता है।

115. (D) 1, 2 और 3
सम्राट कनिष्क कुषाण वंश के सबसे महान शासक थे, जिनका भारतीय इतिहास और संस्कृति पर अमिट प्रभाव रहा है। उन्होंने 78 ईस्वी में शक संवत की शुरुआत की, जो आज भी भारत का राष्ट्रीय संवत है। कनिष्क महायान बौद्ध धर्म के प्रबल अनुयायी थे और उन्होंने इसके विश्वव्यापी प्रसार में केंद्रीय भूमिका निभाई। उनकी प्रशासनिक व्यवस्था भी अद्भुत थी, जहाँ उन्होंने मध्य एशिया और भारत के बीच बेहतर नियंत्रण के लिए पुरुषपुर (पेशावर) को अपनी मुख्य राजधानी बनाया। उनके शासनकाल में कला, धर्म और अंतरराष्ट्रीय व्यापार का अभूतपूर्व विकास हुआ था।

133. (C) चरक और सुश्रुत
प्राचीन भारत में आयुर्वेद के विकास और उसकी वैज्ञानिक आधारशिला रखने का मुख्य श्रेय महर्षि चरक और सुश्रुत को दिया जाता है। चरक ने 'चरक संहिता' के माध्यम से आंतरिक चिकित्सा और रोगों के उपचार के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया, जबकि सुश्रुत ने 'सुश्रुत संहिता' में शल्य चिकित्सा की अद्भुत तकनीकों का वर्णन किया। इन दोनों ऋषियों के सामूहिक योगदान ने स्वास्थ्य की एक ऐसी समग्र प्रणाली तैयार की जो आज भी प्रासंगिक है। उनकी शिक्षाओं ने न केवल भारत में, बल्कि पूरे विश्व में चिकित्सा विज्ञान के प्रारंभिक विकास को गहराई से प्रभावित किया और मानवता को आरोग्य का मार्ग दिखाया।

134. (B) यह सप्तांग का अलग अंग नहीं है।
कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत में राज्य के सात प्रमुख अंगों—स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र—की व्याख्या की गई है। यद्यपि कौटिल्य ने गुप्तचरों के जाल को राज्य की रक्षा और सूचना प्राप्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना है और इसे राजा की आँखों के समान बताया है, परंतु गुप्तचर प्रणाली को सप्तांग की सूची में एक स्वतंत्र और अलग अंग के रूप में स्थान नहीं दिया गया है। गुप्तचर प्रणाली वास्तव में 'अमात्य' और 'स्वामी' के कार्यों के पूरक के रूप में प्रशासन का एक अंतर्निहित और अनिवार्य हिस्सा थी।

135. (D) हिंदूकुश पर्वत
सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस निकेटर के विरुद्ध अपनी निर्णायक विजय के माध्यम से मौर्य साम्राज्य की सीमाओं को भारत की प्राकृतिक सीमाओं से भी आगे तक पहुँचा दिया था। संधि के परिणामस्वरूप उन्हें काबुल, कंधार, हेरात और बलूचिस्तान के विशाल क्षेत्र प्राप्त हुए, जिससे साम्राज्य की पश्चिमी सीमा हिंदूकुश पर्वत की दुर्गम श्रेणियों तक जा पहुँची। इस विस्तार ने न केवल भारत को विदेशी आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान की, बल्कि मध्य एशिया के साथ सीधे व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंधों के द्वार भी खोल दिए। यह प्राचीन भारत के क्षेत्रीय विस्तार का सबसे गौरवशाली क्षण माना जाता है।

136. (A) 5-5 सदस्यों की छह समितियां
मेगास्थनीज के विवरण के अनुसार, मौर्यों की राजधानी पाटलिपुत्र का नगर प्रशासन एक अत्यंत जटिल और सुव्यवस्थित प्रणाली द्वारा संचालित होता था। शहर के प्रबंधन के लिए 30 सदस्यों का एक निकाय था, जिसे छह अलग-अलग समितियों में विभाजित किया गया था, और प्रत्येक समिति में पांच सदस्य होते थे। ये समितियां उद्योगों की निगरानी, विदेशियों की देखभाल, जन्म-मृत्यु का पंजीकरण, व्यापार और वाणिज्य, माल के विनिर्माण और बिक्री कर की वसूली जैसे विशिष्ट कार्यों के लिए उत्तरदायी थीं। यह सूक्ष्म प्रबंधन मौर्यकालीन प्रशासनिक कुशलता और नागरिक सुविधाओं के प्रति उनकी सजगता का प्रमाण है।

137. (C) सभी शिलालेख विशेष रूप से बौद्ध धर्म के बारे में हैं।
अशोक के शिलालेखों के बारे में यह धारणा गलत है कि वे केवल बौद्ध धर्म के सिद्धांतों पर आधारित हैं। यद्यपि अशोक स्वयं एक निष्ठावान बौद्ध थे, परंतु उनके अधिकांश शिलालेख 'धम्म' के सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों पर केंद्रित हैं, जो सभी धर्मों के लिए समान रूप से उपयोगी थे। इनमें माता-पिता की सेवा, अहिंसा, उदारता और सभी संप्रदायों के प्रति सहिष्णुता की बात की गई है। ये अभिलेख केवल धार्मिक उपदेश नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक आचरण और प्रशासनिक पारदर्शिता के लिए जारी किए गए राजकीय आदेश थे, जिनका उद्देश्य पूरे साम्राज्य में नैतिक मूल्यों की स्थापना करना था।

138. (A) उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड
मौर्य काल की भौतिक संस्कृति की एक सबसे विशिष्ट पहचान 'उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड' का व्यापक उत्पादन और उपयोग है। इन बर्तनों की सतह अत्यंत चिकनी, काली और धातु जैसी चमक वाली होती थी, जो प्राचीन भारतीय कुम्हारों के उच्च तकनीकी कौशल को दर्शाती है। ये मृदभांड न केवल मगध के हृदय क्षेत्र में, बल्कि दूर-दराज के व्यापारिक केंद्रों में भी पाए गए हैं, जो मौर्यकालीन आर्थिक समृद्धि और व्यापारिक संपर्कों के विस्तार का संकेत देते हैं। इन्हें तत्कालीन समाज के कुलीन वर्ग के विलासिता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

139. (D) प्रांतीय नौकरशाहों द्वारा दमन।
मौर्य साम्राज्य के क्रमिक पतन के लिए उत्तरदायी प्रमुख राजनीतिक कारकों में से एक दूरस्थ प्रांतों में नियुक्त नौकरशाहों का दमनकारी व्यवहार था। विशाल साम्राज्य और संचार के सीमित साधनों के कारण केंद्र के लिए हर अधिकारी की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखना कठिन था। अशोक के समय में भी तक्षशिला जैसे प्रांतों में अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह हुए थे। अशोक की मृत्यु के बाद, जब केंद्रीय सत्ता कमजोर हुई, तब इन अधिकारियों की मनमानी बढ़ गई, जिससे जनता में गहरा असंतोष पैदा हुआ और कई प्रांतों ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर साम्राज्य का विघटन कर दिया।

140. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
सातवाहन शासकों की धार्मिक नीति अत्यंत संतुलित और समावेशी थी, जहाँ उन्होंने व्यक्तिगत रूप से ब्राह्मणवादी धर्म का पालन करते हुए भी बौद्ध धर्म को व्यापक संरक्षण प्रदान किया। सातवाहन राजाओं ने जहाँ एक ओर 'अश्वमेध' और 'राजसूय' जैसे भव्य वैदिक यज्ञों का अनुष्ठान कर अपनी धार्मिक निष्ठा प्रदर्शित की, वहीं दूसरी ओर उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं को कर-मुक्त भूमि दान में दी और भव्य स्तूपों तथा चैत्यों के निर्माण में भरपूर आर्थिक सहयोग दिया। यह उदारता तत्कालीन समाज में धार्मिक सद्भाव बनाए रखने और विभिन्न वर्गों का समर्थन प्राप्त करने के लिए उनकी एक सोची-समझी नीति का हिस्सा थी।

141. (C) राजाओं के चित्रों वाले सिक्के जारी किए।
बैक्ट्रियन ग्रीक या हिंद-यवन शासकों ने भारतीय मुद्राशास्त्र के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन की शुरुआत की थी। वे भारत के पहले ऐसे शासक थे जिन्होंने सिक्कों पर राजाओं के जीवंत चित्र और उनके नाम अंकित करने की परंपरा शुरु की। इससे पहले भारत में मुख्य रूप से 'आहत' सिक्के चलते थे जिन पर केवल प्रतीक होते थे। यूनानी सिक्कों ने मुद्रा को एक

समझते थे। यह विविधता को एकता में पिरोने की एक सफल राजकीय पहल थी।

125. (A) 3, 2, 1, 4
प्राचीन भारत के राजवंशों का इतिहास मौर्य साम्राज्य की नींव के साथ एक नई दिशा में मुड़ गया। चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा लगभग 322 ईसा पूर्व में स्थापित यह साम्राज्य लगभग 137 वर्षों तक चला। इसके बाद पुष्यमित्र शुंग ने अंतिम मौर्य राजा की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की। शुंगों के बाद कण्व वंश का एक संक्षिप्त दौर आया, जिन्होंने मगध पर शासन किया। इसी अवधि के दौरान और उसके बाद दक्षिण में सातवाहन एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में उभरे। यह कालक्रम भारत के राजनीतिक केंद्र के धीरे-धीरे विकेंद्रीकरण और क्षेत्रीय शक्तियों के उदय की कहानी कहता है।

126. (D) शाही संप्रभुता का दावा।
पुष्यमित्र शुंग द्वारा 'अश्वमेध यज्ञ' का आयोजन उनके शासनकाल की एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक घटना थी। यह यज्ञ न केवल उनके सैन्य शौर्य और उत्तर भारत पर उनके नियंत्रण का प्रतीक था, बल्कि यह मौर्यों के शासन के दौरान कमजोर हुए वैदिक अनुष्ठानों के पुनरुद्धार की भी घोषणा थी। अश्वमेध यज्ञ के माध्यम से पुष्यमित्र ने अपनी शाही संप्रभुता का सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन किया और विदेशी शत्रुओं के विरुद्ध अपनी सफलताओं को प्रमाणित किया। यह समारोह ब्राह्मणवादी परंपराओं की पुनर्स्थापना और शाही गरिमा के प्रदर्शन का माध्यम बना।

127. (A) उन्होंने दक्षिण में संस्कृति के प्रसार की सुविधा प्रदान की।
सातवाहन राजवंश को भारतीय इतिहास में उत्तर और दक्षिण के बीच एक 'सांस्कृतिक सेतु' माना जाता है क्योंकि उन्होंने इन दोनों क्षेत्रों के बीच विचारों, धर्म और कला के आदान-प्रदान को सुगम बनाया। उनके शासनकाल में उत्तर भारत की आर्य संस्कृति और दक्षिण भारत की द्रविड़ परंपराओं का अद्भुत समन्वय हुआ। उन्होंने प्राकृत भाषा और ब्राह्मणवादी धर्म को संरक्षण दिया, जबकि साथ ही बौद्ध धर्म के विकास में भी योगदान दिया। उनकी राजनीतिक स्थिरता ने व्यापारियों और विद्वानों को मुक्त आवाजाही का अवसर प्रदान किया, जिससे पूरे उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक एकता और अधिक मजबूत हुई।

128. (B) हिंद-यवन राजा जिसने तक्षशिला से शासन किया।
यूक्रेटाइड्स एक अत्यंत शक्तिशाली और प्रभावशाली हिंद-यवन राजा था, जिसने दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान बैक्ट्रिया और उत्तर-पश्चिमी भारत के विशाल क्षेत्रों पर अपना अधिकार स्थापित किया था। उसने तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया और वहाँ से अपने साम्राज्य का संचालन किया। यूक्रेटाइड्स की सिक्के ढालने की कला अत्यंत परिष्कृत थी और उसके द्वारा जारी किए गए विशाल स्वर्ण सिक्के उसके शासन के वैभव और आर्थिक समृद्धि के प्रमाण हैं। उसका शासनकाल हिंद-यवन सत्ता के विस्तार और इस क्षेत्र में यूनानी प्रभाव के स्थायित्व के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

129. (B) चष्टन और रुद्रदामन प्रथम
"सौराष्ट्र और मालवा के शक क्षत्रप" शब्द मुख्य रूप से कार्दमक वंश के शासकों को संदर्भित करता है, जिसकी स्थापना चष्टन ने की थी और जिसे उनके पौत्र रुद्रदामन प्रथम ने अपनी चरम सीमा पर पहुँचाया। इस राजवंश ने उज्जैन को अपनी शक्ति का केंद्र बनाया और पश्चिमी भारत के व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण रखा। रुद्रदामन प्रथम की उपलब्धियां और उनका प्रसिद्ध जूनागढ़ शिलालेख इस वंश की ऐतिहासिक महत्ता को रेखांकित करते हैं। उनका शासन न केवल सैन्य विजयों के लिए, बल्कि संस्कृत साहित्य के संरक्षण और उत्कृष्ट जल प्रबंधन प्रणालियों के विकास के लिए भी विख्यात है।

130. (A) उदार धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण।
कुषाण कालीन कला और संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी अद्भुत समन्वयकारी प्रकृति है, जहाँ विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का संगम दिखाई देता है। कुषाण शासकों के सिक्कों पर बुद्ध के साथ-साथ शिव, कार्तिकेय और यूनानी तथा ईरानी देवताओं के चित्र मिलते हैं। यह विविधता यह सिद्ध करती है कि कुषाण सम्राट केवल एक धर्म के पक्षपाती नहीं थे, बल्कि उन्होंने अपने विशाल और विविध साम्राज्य की सभी आस्थाओं को समान सम्मान दिया। यह उदार दृष्टिकोण न केवल सामाजिक स्थिरता का आधार बना, बल्कि इसने एक अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी कलात्मक परंपरा को भी जन्म दिया।

131. (C) पुहार
संगम युग के दौरान 'पुहार', जिसे कावेरीपट्टिनम के नाम से भी जाना जाता है, चोल साम्राज्य का सबसे वैभवशाली और महत्वपूर्ण बंदरगाह शहर था। यह शहर कावेरी नदी के मुहाने पर स्थित था और यहाँ से दक्षिण-पूर्व एशिया तथा रोमन साम्राज्य के साथ व्यापक समुद्री व्यापार होता था। संगम साहित्य, विशेष रूप से 'पट्टिनप्पालाई' में पुहार की चहल-पहल, वहां के विदेशी व्यापारियों की उपस्थिति और जहाजों से भरे बंदरगाह का अत्यंत सजीव वर्णन मिलता है। यह शहर न केवल व्यापार का केंद्र था, बल्कि चोलों की समृद्धि और उनकी नौसैनिक शक्ति का भी प्रमुख प्रतीक था।

132. (D) सांस्कृतिक क्षेत्रों के साथ अत्यधिक स्तरीकृत था।
संगम साहित्य के सूक्ष्म अध्ययन से एक ऐसे प्राचीन तमिल समाज की झलक मिलती है जो केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और भौगोलिक रूप से भी स्पष्ट रूप से विभाजित था। 'तिणै' की अवधारणा के अनुसार, पूरे भूभाग को पांच पारिस्थितिक क्षेत्रों जैसे कुरुंजी (पहाड़), मुल्लई (जंगल) आदि में बांटा गया था, जहाँ रहने वाले लोगों के व्यवसाय और जीवन शैली अलग-अलग थी। समाज में योद्धाओं, कवियों, व्यापारियों और किसानों के बीच स्पष्ट स्तरीकरण था। यह विविधता और जटिलता यह दर्शाती है कि प्राचीन दक्षिण भारतीय समाज एक अत्यंत विकसित और सुसंगत सामाजिक ढांचे पर आधारित था।

मौसम की मार झेलने के बाद भी यह पॉलिश अपनी चमक और चिकनाई बनाए हुए है। यह तकनीक मौर्यकालीन शिल्पकारों के धातु विज्ञान और परिष्करण की अद्भुत श्रेष्ठता का जीवंत प्रमाण है, जो उस समय के विश्व में अद्वितीय थी।

99. (C) एक ब्राह्मण द्वारा अंतिम मौर्य राजा को उखाड़ फेंकना।
कुछ इतिहासकारों का मानना है कि मौर्य साम्राज्य का पतन ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया का परिणाम था। इसका मुख्य आधार यह है कि अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ की हत्या उनके ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की थी। इस तर्क के समर्थकों का कहना है कि अशोक की अहिंसा की नीति और यज्ञों तथा पशु बलि पर प्रतिबंध ने ब्राह्मण वर्ग के विशेषाधिकारों और आर्थिक हितों को प्रभावित किया था। शुंग वंश के उदय के साथ ही अश्वमेध जैसे वैदिक अनुष्ठानों का पुनरुद्धार हुआ, जिसे मौर्यों की बौद्ध-समर्थक नीतियों के विरुद्ध एक सांस्कृतिक विद्रोह के रूप में देखा जाता है।

100. (D) विदेशी शासकों और क्षत्रपों के साथ संघर्ष।
महान सातवाहन शासक गौतमीपुत्र सातकर्णी द्वारा स्वयं को "विदेशी शक्ति का विनाशक" घोषित करना उनके उन सफल अभियानों को दर्शाता है जो उन्होंने शकों, यवनों और पहलवों के विरुद्ध चलाए थे। विशेष रूप से, शक क्षत्रप नहपान के विरुद्ध उनकी शानदार विजय ने पश्चिमी भारत में सातवाहनों के सम्मान को पुनः स्थापित किया। उनका यह दावा न केवल उनके सैन्य शौर्य का प्रतीक है, बल्कि यह विदेशी प्रभाव को समाप्त कर भारतीय परंपराओं और वर्ण व्यवस्था की रक्षा करने की उनकी अटूट प्रतिबद्धता को भी गर्व के साथ प्रदर्शित करता है।

101. (C) बड़े पैमाने पर सोने के सिक्के जारी करने के लिए।
कुषाण राजा विम कडफिसेस भारतीय मुद्राशास्त्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं क्योंकि उन्होंने भारत में बड़े पैमाने पर शुद्ध सोने के सिक्के जारी करने की परंपरा शुरू की थी। उनके इन सिक्कों पर एक ओर राजा की आकृति और दूसरी ओर भगवान शिव, उनके त्रिशूल तथा नंदी के चित्र अंकित हैं, जो उनके व्यक्तिगत धार्मिक झुकाव को दर्शाते हैं। ये सिक्के न केवल कुषाण साम्राज्य की विशाल आर्थिक समृद्धि का प्रमाण हैं, बल्कि उस समय के अंतरराष्ट्रीय व्यापार और भारत में सोने के बढ़ते प्रवाह को भी स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं।

102. (B) धम्म
संगम साहित्य के सुप्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ तोल्काप्पियम में कविता और सामाजिक जीवन को 'अकम्' (आंतरिक/प्रेम) और 'पुरम्' (बाहरी/वीरता) नामक दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है। यह प्राचीन तमिल समाज के नैतिक और साहित्यिक ढांचे का आधार था। दूसरी ओर, 'धम्म' शब्द का प्रयोग सम्राट अशोक द्वारा अपनी नैतिक और प्रशासनिक नीतियों के लिए किया गया था, जिसका संगम कालीन तमिल वर्गीकरण से कोई सीधा ऐतिहासिक संबंध नहीं है। संगम साहित्य पूरी तरह से दक्षिण भारतीय परिवेश और वहां की विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं पर आधारित है।

103. (D) पश्चिम से आए विदेशियों के लिए।
प्राचीन भारतीय साहित्य और शिलालेखों में प्रयुक्त 'यवन' शब्द की उत्पत्ति यूनानी क्षेत्र 'आयोनिया' से हुई है, और प्रारंभ में यह केवल यूनानियों के लिए उपयोग किया जाता था। हालांकि, समय बीतने के साथ इस शब्द का अर्थ व्यापक हो गया और इसे पश्चिम से आने वाले किसी भी विदेशी समूह के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा। मौर्योत्तर काल में यह शब्द विशेष रूप से उन हिंद-यवन शासकों के लिए प्रसिद्ध हुआ जिन्होंने भारत के उत्तर-पश्चिम में अपनी सत्ता स्थापित की थी। यह शब्द भारत के बाहरी दुनिया के साथ बढ़ते संपर्कों और विदेशी पहचानों के प्रति भारतीय दृष्टिकोण को दर्शाता है।

104. (A) धातु विज्ञान
प्राचीन भारत में धातुओं के शोधन, मिश्र धातु बनाने और उनके गुणों के अध्ययन के ज्ञान को धातु विज्ञान के रूप में जाना जाता था। यह ज्ञान अत्यंत उन्नत था, जिसका प्रमाण दिल्ली का जंग-रोधी लौह स्तंभ और तांबे की विशाल बुद्ध प्रतिमाएं हैं। प्राचीन भारतीयों ने पारा, लोहा, तांबा और सोने जैसी धातुओं के रासायनिक और भौतिक गुणों को समझने में महारत हासिल कर ली थी। इस ज्ञान का उपयोग न केवल सिक्के ढालने और हथियार बनाने में, बल्कि चिकित्सा और स्थापत्य कला में भी बड़ी कुशलता के साथ किया जाता था।

105. (A) P-1, Q-2, R-4, S-3
मौर्य प्रशासन में विभिन्न स्तरों पर अधिकारियों के कार्य अत्यंत स्पष्ट रूप से विभाजित थे। राजुक मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि के मापन और न्याय व्यवस्था के लिए उत्तरदायी थे। युक्त अधीनस्थ अधिकारी थे जो राजस्व के कार्यों में सहायता करते थे, जबकि स्थानिक जिला स्तर पर कर संग्रह का महत्वपूर्ण कार्य देखते थे। सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई में गोप को 5 से 10 गांवों के लेखा-जोखा और जनसंख्या का विवरण रखने का दायित्व सौंपा गया था। यह विस्तृत श्रेणीबद्ध प्रणाली प्रशासन की सूक्ष्मता और सटीकता को सुनिश्चित करती थी।

106. (A) सेना या राज्य की दमनकारी शक्ति
कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत के अंतर्गत 'दण्ड' राज्य की सैन्य शक्ति और उसकी संप्रभुता को बनाए रखने वाले बल का प्रतीक है। यह केवल शारीरिक दंड नहीं है, बल्कि राज्य की वह अनुशासनात्मक शक्ति है जो कानून का पालन सुनिश्चित करती है और बाहरी शत्रुओं से रक्षा करती है। एक सुशिक्षित और अनुशासित सेना राज्य की सुरक्षा का मुख्य आधार मानी जाती थी। कौटिल्य का मानना था कि बिना दण्ड की शक्ति के राज्य का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है, क्योंकि यह न्याय और शांति बनाए रखने का अनिवार्य साधन है।

107. (D) विशाखदत्त का मुद्राराक्षस
विशाखदत्त द्वारा रचित संस्कृत नाटक 'मुद्राराक्षस' मौर्य इतिहास का एक अनूठा स्रोत है, जो चन्द्रगुप्त मौर्य और उनके गुरु चाणक्य द्वारा नन्द वंश को उखाड़ फेंकने की राजनीतिक चालों का रोमांचक विवरण प्रदान करता है। यह नाटक विशेष रूप से चाणक्य की कूटनीति और उनके द्वारा नन्दों के वफादार मंत्री राक्षस को अपने पक्ष में करने की कहानी पर

ऐतिहासिक दस्तावेज बना दिया, जिससे शासकों के कालक्रम और उनकी पहचान को समझने में मदद मिली। यह कलात्मक और प्रशासनिक सुधार बाद के लगभग सभी भारतीय राजवंशों के लिए एक मानक बन गया।

142. (D) माउस
भारत में शक शासन की पहली प्रमुख शाखा तक्षशिला में स्थापित हुई थी और इसका संस्थापक राजा माउस था। उसने लगभग प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान उत्तर-पश्चिमी भारत के विशाल क्षेत्रों पर अपना अधिकार जमाया था। माउस के सिक्कों पर यूनानी और भारतीय दोनों तरह के प्रभाव दिखाई देते हैं, जो उनकी समन्वयकारी नीति का संकेत देते हैं। उसने 'महाराज' जैसी भव्य उपाधियाँ धारण कीं और शकों को भारत की राजनीति में एक प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित किया। माउस के नेतृत्व में शकों ने हिंद-यवनों के प्रभुत्व को चुनौती दी और अपनी जड़ों को भारतीय भूमि पर मजबूती से जमाया।

143. (A) विम कडफिसेस
कुषाण राजा विम कडफिसेस अपने कट्टर शैव अनुयायी होने के कारण इतिहास में प्रसिद्ध हैं, जो उनके द्वारा जारी किए गए सिक्कों से स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता है। उनके सिक्कों पर भगवान शिव की आकृति, उनके हाथ में त्रिशूल और उनके वाहन नंदी का चित्रण मिलता है। विम कडफिसेस ने 'महेश्वर' जैसी उपाधि धारण की थी, जो उनके शिव के प्रति गहरे भक्ति भाव को दर्शाती है। यह रोचक है कि जहाँ उनके उत्तराधिकारी कनिष्क बौद्ध धर्म के महान संरक्षक बने, वहीं विम कडफिसेस ने भारतीय परंपराओं, विशेष रूप से शैव धर्म को अपनाकर कुषाणों के भारतीयकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान की थी।

144. (B) मुज़िरिस
संगम युग के चेर साम्राज्य का 'मुज़िरिस' बंदरगाह प्राचीन विश्व के सबसे व्यस्त और महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों में से एक था। केरल के तट पर स्थित यह बंदरगाह मसालों, विशेष रूप से काली मिर्च के वैश्विक व्यापार का मुख्य द्वार था। यूनानी और रोमन व्यापारी यहाँ अपने जहाजों के साथ सोना लेकर आते थे और उसके बदले में यहाँ से भारी मात्रा में काली मिर्च, कीमती पत्थर और अन्य सुगंधित वस्तुएं लेकर जाते थे। मुज़िरिस की आर्थिक समृद्धि और वहां के अंतरराष्ट्रीय परिवेश का वर्णन संगम कविताओं और समकालीन विदेशी वृत्तांतों में बड़े विस्तार के साथ मिलता है।

145. (A) केवल 1 और 2
प्राचीन भारत में विज्ञान और गणित के क्षेत्र में की गई प्रगति विस्मयकारी थी। आर्यभट्ट ने न केवल सूर्य-केंद्रित सिद्धांत की दिशा में संकेत दिए, बल्कि उन्होंने पाई का अत्यंत सटीक मान और दशमलव प्रणाली के महत्व को भी प्रतिपादित किया। इसी प्रकार, सुश्रुत ने अपनी संहिता में प्लास्टिक सर्जरी और मोतियाबिंद के ऑपरेशन जैसी जटिल शल्य क्रियाओं का वर्णन किया, जो उस समय के विश्व के लिए अज्ञात थीं। हालांकि, दशमलव प्रणाली का आविष्कार पूर्णतः भारतीय था, जिसे बाद में अरबों ने अपनाकर यूरोप तक पहुँचाया, न कि यह रोम का कोई आविष्कार था।

146. (A) राज्य सार्वजनिक कार्यों के लिए बलात श्रम का उपयोग करता था।
मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था में 'विष्टि' शब्द का प्रयोग राज्य द्वारा प्रजा से लिए जाने वाले बेगार या बलात श्रम के लिए किया जाता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार, यह राज्य के लिए आय के एक साधन के रूप में कार्य करता था जहाँ श्रमिकों को बिना किसी नकद भुगतान के सिंचाई परियोजनाओं, किलों के निर्माण और सड़कों की मरम्मत जैसे सार्वजनिक कार्यों में अपना श्रम देना पड़ता था। यद्यपि यह आज के समय में शोषणकारी लग सकता है, परंतु उस समय इसे कर के एक विकल्प के रूप में देखा जाता था जो उन लोगों के लिए था जो कर देने में असमर्थ थे।

147. (C) एक राज्यपाल के बांध का उल्लेख करने वाले शिलालेख से।
पश्चिमी भारत, विशेष रूप से गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र पर चन्द्रगुप्त मौर्य के आधिपत्य का सबसे पुख्ता प्रमाण शक राजा रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख से प्राप्त होता है। इस शिलालेख में वर्णन है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रांतीय राज्यपाल पुष्यगुप्त वैश्य ने कृषि की सिंचाई के लिए वहाँ 'सुदर्शन झील' का निर्माण करवाया था। यह शिलालेख न केवल चन्द्रगुप्त की पश्चिमी विजय की पुष्टि करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि मौर्य प्रशासन दूर-दराज के क्षेत्रों में भी जनकल्याणकारी और बुनियादी ढांचे के विकास कार्यों में सक्रिय रूप से लगा हुआ था।

148. (D) तक्षशिला और उज्जैन
सम्राट अशोक के राज्याभिषेक से पूर्व का उनका जीवन एक कुशल प्रशासक और सैन्य सेनापति के रूप में उनके प्रशिक्षण का काल था। अपने पिता बिंदुसार के शासनकाल में, अशोक ने दो अत्यंत महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण प्रांतों—तक्षशिला और उज्जैन—के उपराजा या गवर्नर के रूप में कार्य किया था। तक्षशिला में उन्होंने एक बड़े विद्रोह को अत्यंत कुशलता और शांति के साथ दबाया था, जबकि उज्जैन में उन्होंने प्रशासनिक अनुभव प्राप्त किया। इन महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों ने उन्हें भविष्य के सम्राट के रूप में तैयार किया और उन्हें साम्राज्य की जटिल राजनीतिक और भौगोलिक स्थितियों की गहरी समझ प्रदान की।

149. (C) धम्म और प्रशासनिक नीतियां।
अशोक के मुख्य शिलालेख उनके शासन के दर्शन और उनकी लोक कल्याणकारी योजनाओं का दर्पण हैं। ये शिलालेख उनकी सैन्य विजयों या शाही गौरव का गान करने के बजाय नैतिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और 'धम्म' के सिद्धांतों के प्रचार पर केंद्रित हैं। इनमें प्रजा के प्रति सम्राट के कर्तव्यों, जीव हिंसा के त्याग, सहिष्णुता और धम्म महामत्तों की नियुक्ति जैसे प्रशासनिक सुधारों की चर्चा की गई है। अशोक ने इन शिलालेखों के माध्यम से अपनी जनता के साथ सीधा संवाद स्थापित किया और उन्हें एक सदाचारी और शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया।

116. (D) यह शासन का विस्तृत वर्ष-वार वृत्तांत प्रदान करता है।
कलिंग के राजा खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख प्राचीन भारतीय अभिलेखों में अपनी विशिष्ट शैली के कारण अद्वितीय स्थान रखता है। यह शिलालेख खारवेल के शासनकाल के पहले 13 वर्षों का एक व्यवस्थित और क्रमिक विवरण प्रदान करता है, जिसमें उनकी सैन्य विजयों, सार्वजनिक कल्याण के कार्यों और धार्मिक अनुष्ठानों की वर्ष-वार जानकारी दी गई है। इस तरह का विस्तृत और तिथिवार ऐतिहासिक विवरण उस समय के अन्य अभिलेखों में अत्यंत दुर्लभ है। यह शिलालेख कलिंग की शक्ति के पुनरुद्धार और तत्कालीन भारत की राजनीतिक स्थिति को समझने के लिए एक विश्वसनीय प्राथमिक स्रोत है।

117. (C) पाण्ड्य
पाण्ड्य राजवंश अपनी आर्थिक समृद्धि और मोतियों के उत्पादन के लिए पूरे प्राचीन विश्व में प्रसिद्ध था। उनकी राजधानी मदुरै व्यापार और संस्कृति का एक भव्य केंद्र थी, जहाँ से दक्षिण भारत के व्यापारिक मार्गों का संचालन होता था। पाण्ड्य तटों से प्राप्त होने वाले उच्च गुणवत्ता वाले मोतियों की रोमन साम्राज्य में भारी मांग थी, जिससे उन्हें भारी धन प्राप्त होता था। पाण्ड्यों ने न केवल आर्थिक क्षेत्र में, बल्कि तमिल भाषा और साहित्य को संगम सभाओं के माध्यम से संरक्षण प्रदान करने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

118. (B) तमिल व्याकरण
'तोल्काप्पियम' संगम साहित्य का सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसे तमिल भाषा के व्याकरण और काव्य शास्त्र का आधार माना जाता है। इसकी रचना तोल्काप्पियर द्वारा की गई थी। यह केवल व्याकरण के नियमों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह तत्कालीन समाज के वर्गीकरण, मानवीय भावनाओं और पारिस्थितिक क्षेत्रों के बारे में भी गहन जानकारी प्रदान करता है। यह ग्रंथ तमिल साहित्य की प्राचीनता और उसकी समृद्ध भाषाई परंपरा का एक उत्कृष्ट प्रमाण है। आधुनिक तमिल विद्वान आज भी भाषा की शुद्धता और संरचना के लिए इस ग्रंथ को सर्वोच्च प्रमाण मानते हैं।

119. (D) चरक
महर्षि चरक प्राचीन भारत के महानतम चिकित्सकों में से एक थे और उन्हें आयुर्वेद का एक प्रमुख स्तंभ माना जाता है। उनकी कालजयी रचना 'चरक संहिता' चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी ग्रंथ है, जिसमें रोगों के लक्षणों, उनके कारणों और उपचार की विधियों का सूक्ष्म वर्णन है। उन्होंने इस विचार को प्रतिपादित किया कि रोकथाम उपचार से बेहतर है और संतुलित आहार तथा जीवनशैली का स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण स्थान है। चरक की शिक्षाएं न केवल प्राचीन काल में, बल्कि आज भी स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक हैं।

120. (A) चैत्य - शाही न्यायालय
प्राचीन बौद्ध वास्तुकला में चैत्य और विहार के विशिष्ट अर्थ और कार्य थे, जिन्हें अक्सर भ्रमवश एक मान लिया जाता है। चैत्य का तात्पर्य एक प्रार्थना कक्ष या पूजा स्थल से था जहाँ स्तूप स्थापित होता था, न कि किसी 'शाही न्यायालय' से। दूसरी ओर, विहार वे मठ थे जहाँ बौद्ध भिक्षु निवास करते थे। स्तूप बुद्ध के अवशेषों पर निर्मित पवित्र टीले थे और सप्तांग कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित राज्य के सात अंगों का सिद्धांत था। इन शब्दों का सही अर्थ समझना तत्कालीन धार्मिक और प्रशासनिक ढांचे को जानने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

121. (C) मंत्रिपरिषद्
सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का केंद्रीय प्रशासन एक अत्यंत सुव्यवस्थित और प्रभावशाली व्यवस्था थी, जिसमें राजा की सहायता के लिए 'मंत्रिपरिषद्' नामक एक उच्च स्तरीय सलाहकार निकाय होता था। इस परिषद में अनुभवी और योग्य मंत्रियों को शामिल किया जाता था जो राज्य की नीतियों, युद्ध, शांति और राजस्व जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर राजा को परामर्श देते थे। यद्यपि अंतिम निर्णय राजा का होता था, परंतु मंत्रिपरिषद् की भूमिका प्रशासन की गुणवत्ता बनाए रखने और निरंकुशता को रोकने में अत्यंत महत्वपूर्ण थी। यह व्यवस्था मौर्यकालीन शासन की परिपक्वता और लोकतांत्रिक तत्वों की मौजूदगी को दर्शाती है।

122. (A) कलिंग युद्ध
सम्राट अशोक की 'धम्म विजय' की क्रांतिकारी नीति कलिंग युद्ध के विनाशकारी अनुभवों की सीधी प्रतिक्रिया थी। युद्ध में हुई व्यापक हिंसा और निर्दोषों की मृत्यु ने अशोक के हृदय को करुणा और पश्चाताप से भर दिया। इसके बाद उन्होंने भविष्य में युद्ध का त्याग करने का संकल्प लिया। यह उनके जीवन का एक निर्णायक मोड़ था जिसने उन्हें बौद्ध धर्म के निकट लाया और उन्होंने अहिंसा, करुणा और सत्य पर आधारित 'धम्म' के मार्ग को अपना लिया। उन्होंने अपनी शक्ति का उपयोग अब साम्राज्य विस्तार के बजाय नैतिक उत्थान के लिए करने का निर्णय लिया।

123. (D) संघ में फूट के विरुद्ध चेतावनी।
अशोक के 'लघु स्तंभ लेख' मुख्य रुप से बौद्ध धर्म और संघ की आंतरिक व्यवस्था से संबंधित विषयों को संबोधित करते हैं। कौशाम्बी, सांची और सारनाथ जैसे स्थानों पर पाए गए इन लेखों में सम्राट ने बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों को संघ में फूट डालने या गुटबाजी करने के विरुद्ध कड़ी चेतावनी दी है। यह दर्शाता है कि अशोक केवल एक बाहरी संरक्षक नहीं थे, बल्कि वे बौद्ध संघ की एकता और पवित्रता बनाए रखने के प्रति भी अत्यंत सजग थे। इन अभिलेखों के माध्यम से वे धम्म के सिद्धांतों के कड़ाई से पालन और धार्मिक अनुशासन पर जोर देते थे।

124. (B) विभिन्न लिपियों वाले क्षेत्रों को जोड़ने वाले संपर्क।
मौर्य साम्राज्य की विशाल सीमाओं के भीतर ब्राह्मी और खरोष्ठी जैसी विभिन्न लिपियों का अस्तित्व तत्कालीन भारत की भाषाई विविधता और प्रशासनिक समन्वय को उजागर करता है। ब्राह्मी लिपि का उपयोग भारत के अधिकांश हिस्सों में किया जाता था, जबकि खरोष्ठी लिपि का प्रयोग उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में होता था। अशोक द्वारा अपने शिलालेखों में इन दोनों लिपियों का उपयोग करना यह सिद्ध करता है कि वे अपनी प्रजा के विभिन्न समूहों के साथ उनकी अपनी भाषा और लिपि में संवाद करने के महत्व को

की अपनी न्याय व्यवस्था और आचार संहिता होती थी। वे एक प्रकार के बैंक के रूप में भी कार्य करती थीं जहाँ लोग धन जमा कर सकते थे। श्रेणियों के उदय ने व्यापारिक गतिविधियों को स्थिरता और व्यावसायिकता प्रदान की।

159. (A) पुराणों, अभिलेखों और सिक्कों से।
सातवाहन वंश का इतिहास जानने के लिए विद्वान मुख्य रूप से साहित्यिक और पुरातात्विक स्रोतों के समन्वय पर निर्भर करते हैं। मत्स्य और वायु जैसे पुराणों में सातवाहन राजाओं की लंबी वंशावली और उनके शासनकाल का विवरण मिलता है। साथ ही, नासिक और नानाघाट जैसे स्थानों से प्राप्त शिलालेख और उनके द्वारा जारी किए गए विशिष्ट सीसे तथा तांबे के सिक्के उनके साम्राज्य की सीमाओं, आर्थिक स्थिति और व्यक्तिगत उपलब्धियों की पुष्टि करते हैं। इन विविध स्रोतों के संगम से ही सातवाहनों के गौरवशाली इतिहास की एक स्पष्ट और विश्वसनीय छवि निर्मित करना संभव हो पाया है।

160. (B) मिनांडर प्रथम
मिनांडर प्रथम, जिन्हें भारतीय साहित्य में 'मिलिंद' के नाम से पुकारा जाता है, सबसे प्रसिद्ध हिंद-यवन शासक थे जिन्होंने साकल (आधुनिक सियालकोट) को अपनी राजधानी बनाया था। वे अपनी दार्शनिक जिज्ञासा के लिए जाने जाते थे, जिसके कारण उन्होंने बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ गहन संवाद किया। इस शास्त्रार्थ का परिणाम 'मिलिंदपन्हो' नामक कालजयी ग्रंथ के रूप में सामने आया। मिनांडर ने अंततः बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया और वे इसके महान संरक्षक बने। उनके शासनकाल में उत्तर-पश्चिमी भारत में व्यापार और यूनानी-भारतीय कला का अभूतपूर्व विकास हुआ था।

161. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
कुषाण वंश का मूल मध्य एशिया के यूची जनजाति से जुड़ा था, जो चीन की सीमाओं के पास से पलायन कर भारत आए थे। हालांकि वे विदेशी मूल के थे, परंतु भारत में बसने के बाद उन्होंने यहाँ की संस्कृति, धर्म और भाषाओं को पूरी तरह से आत्मसात कर लिया था। कुषाण शासकों ने न केवल बौद्ध और हिंदू धर्म के प्रति गहरी निष्ठा दिखाई, बल्कि वे भारतीय कला शैलियों, विशेष रूप से गांधार और मथुरा कला के महान संरक्षक भी बने। उनका यह सांस्कृतिक अनुकूलन भारत में एक महान समन्वयकारी युग की नींव रखने में अत्यंत सफल रहा।

162. (A) सुश्रुत संहिता
प्राचीन भारत में शल्य चिकित्सा के शिखर को छूने वाला ग्रंथ 'सुश्रुत संहिता' है, जिसमें 'नासिका संधान' या राइनोप्लास्टी का अत्यंत विस्तृत वर्णन मिलता है। महर्षि सुश्रुत ने कटी हुई नाक को चेहरे के अन्य हिस्सों की त्वचा का उपयोग करके पुनर्गठित करने की जो विधि बताई थी, उसे आधुनिक प्लास्टिक सर्जरी का आधार माना जाता है। इस ग्रंथ में न केवल शल्य क्रियाओं का, बल्कि शल्य चिकित्सा में उपयोग होने वाले सौ से अधिक उपकरणों का भी उल्लेख है। यह प्राचीन भारतीयों की शरीर रचना विज्ञान और तकनीकी कौशल के प्रति उनकी गहरी समझ का सर्वोत्तम प्रमाण है।

163. (C) मुख्य शिलालेख XIII
अशोक के तेरहवें मुख्य शिलालेख को उनके शासन की 'धम्म विजय' नीति का घोषणापत्र माना जा सकता है। इसमें कलिंग युद्ध की विभीषिका के बाद हुए उनके हृदय परिवर्तन का मर्मस्पर्शी विवरण है। इसी शिलालेख में अशोक स्पष्ट करते हैं कि शस्त्रों के माध्यम से होने वाली विजय वास्तविक विजय नहीं है, बल्कि धर्म और नैतिकता के माध्यम से लोगों के हृदय को जीतना ही 'धम्म विजय' है। उन्होंने उन विदेशी राजाओं और दूरदराज के क्षेत्रों की सूची भी दी है जहाँ उन्होंने अपने दूतों के माध्यम से इस महान अहिंसक संदेश को फैलाया था।

164. (D) गोप
मौर्यकालीन प्रशासन में गाँवों और उच्च स्तरीय जिला प्रशासन के बीच की कड़ी के रूप में 'गोप' नामक एक अत्यंत महत्वपूर्ण अधिकारी होता था। गोप का मुख्य उत्तरदायित्व लगभग दस गाँवों के समूह के प्रशासन और राजस्व के लेखा-जोखा की देखरेख करना था। उसे अपने अधीन आने वाले गाँवों की जनसंख्या, पशुधन और कृषि उपज का सटीक विवरण रखना पड़ता था। यह पद प्रशासनिक केंद्रीकरण और सूचना प्रबंधन की उस सूक्ष्म प्रणाली का हिस्सा था जिसके माध्यम से मौर्य सम्राट अपने विशाल साम्राज्य के प्रत्येक हिस्से पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखने में सक्षम थे।

165. (C) जातक कथाओं को दर्शाने वाली गतिशील मूर्तियों के लिए।
सातवाहन कालीन कला, विशेष रूप से अमरावती शैली, अपनी मूर्तियों में जीवंतता और नाटकीय गतिशीलता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के शिल्पकारों ने सफेद चूना पत्थर की सतह पर बुद्ध के पूर्व जन्मों से जुड़ी जातक कथाओं को अत्यंत सूक्ष्मता और भावनाओं के साथ उकेरा है। इन कलाकृतियों में मानव आकृतियों को विभिन्न मुद्राओं में दिखाया गया है, जो उमंग और श्रद्धा के भावों से भरी हुई हैं। यह शैली तत्कालीन समाज की धार्मिक आस्थाओं के साथ-साथ उनके कलात्मक परिष्कार और शिल्प कौशल के प्रति गहरी निष्ठा को भी प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित करती है।

166. (B) चन्द्रगुप्त मौर्य
गुजरात के सौराष्ट्र में स्थित 'सुदर्शन झील' प्राचीन भारतीय इंजीनियरिंग और लोक कल्याण का एक उत्कृष्ट प्रतीक है। यद्यपि रुद्रदामन प्रथम ने इस झील की मरम्मत करवाई थी, परंतु इसके निर्माण का मूल श्रेय मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य को जाता है। उन्होंने अपने प्रांतीय गवर्नर पुष्यगुप्त वैश्य के माध्यम से इस विशाल जलाशय का निर्माण सिंचाई के उद्देश्य से करवाया था। यह झील कई शताब्दियों तक अस्तित्व में रही और समय-समय पर अशोक और गुप्त राजाओं ने भी इसकी देखभाल की। यह मौर्यों की सुदूर क्षेत्रों में कृषि विकास की दूरदर्शी नीति का प्रमाण है।

167. (D) महायान और हीनयान संप्रदाय।
सम्राट कनिष्क के शासनकाल में आयोजित चतुर्थ बौद्ध संगीति बौद्ध धर्म के इतिहास में एक बड़े वैचारिक विभाजन का कारण बनी। इस सभा के दौरान बौद्ध शिक्षाओं की व्याख्या

150. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद भारत में अनेक नए राजवंशों का उदय हुआ जिन्होंने अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की। पुष्यमित्र ने शुंग वंश की स्थापना की, जो मौर्यों के उत्तराधिकारी बने। वासुदेव ने कण्व वंश की नींव रखी, जबकि सिमुक को दक्षिण में शक्तिशाली सातवाहन वंश का संस्थापक माना जाता है। उत्तर-पश्चिम से आए कुषाणों का नेतृत्व कुजुल कडफिसेस ने किया, जिसने कुषाण सत्ता को भारत में मजबूती प्रदान की। इन राजवंशों और उनके संस्थापकों ने प्राचीन भारत के राजनीतिक मानचित्र को फिर से परिभाषित किया और सांस्कृतिक विविधता में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

151. (D) फलता-फूलता व्यापार और सिक्कों का प्रचलन।
सातवाहन साम्राज्य के आर्थिक जीवन की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी असाधारण व्यापारिक समृद्धि और नगरीय विकास था। उनके शासनकाल में भारत के पश्चिमी और पूर्वी तटों के बीच व्यापारिक संपर्क मजबूत हुए और रोमन साम्राज्य के साथ समुद्री व्यापार अपने चरमोत्कर्ष पर था। सातवाहनों ने बड़ी मात्रा में सीसे, पोटीन और तांबे के सिक्के जारी किए, जो बाजार में मुद्रा के व्यापक प्रचलन और सुचारू आर्थिक विनिमय को दर्शाते हैं। श्रेणियों या व्यापारिक गिल्ड्स की सक्रियता ने उत्पादन और वितरण को सुव्यवस्थित किया, जिससे साम्राज्य की आर्थिक नींव अत्यंत शक्तिशाली और समृद्ध बनी रही।

152. (A) बंदरगाहों और व्यापार मार्गों पर नियंत्रण।
पश्चिमी क्षत्रपों (शकों) और सातवाहनों के बीच सदियों तक चलने वाले संघर्ष का मूल कारण पश्चिमी भारत के अत्यंत समृद्ध और सामरिक रूप से महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों तथा बंदरगाहों पर नियंत्रण प्राप्त करना था। विशेष रूप से भड़ौच और कोंकण तट के बंदरगाह विदेशी व्यापार के मुख्य केंद्र थे, जहाँ से भारी राजस्व प्राप्त होता था। दोनों ही शक्तियां इन संसाधनों पर अपना एकाधिकार चाहती थीं क्योंकि जो इन बंदरगाहों को नियंत्रित करता था, वही तत्कालीन अर्थव्यवस्था का स्वामी होता था। यह निरंतर चलने वाला सैन्य और कूटनीतिक संघर्ष न केवल क्षेत्रीय विस्तार की इच्छा थी, बल्कि यह आर्थिक प्रभुत्व की एक बड़ी लड़ाई थी।

153. (C) नियंत्रण और संतुलन सुनिश्चित करना।
कुषाण प्रशासन में, विशेष रूप से कनिष्क के समय में, क्षत्रपों की दोहरी प्रणाली (जहाँ दो अधिकारी मिलकर एक प्रांत का शासन चलाते थे) एक अत्यंत चतुर प्रशासनिक नवाचार था। इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि कोई भी अकेला प्रांतीय गवर्नर इतना शक्तिशाली न हो जाए कि वह सम्राट के विरुद्ध विद्रोह कर सके। एक अधिकारी दूसरे की गतिविधियों पर नजर रखता था, जिससे प्रशासन में पारदर्शिता और केंद्र के प्रति वफादारी बनी रहती थी। यह 'नियंत्रण और संतुलन' की नीति कुषाणों के विशाल और विविधतापूर्ण साम्राज्य को लंबे समय तक एकजुट रखने में सफल सिद्ध हुई।

154. (A) तमिल
संगम साहित्य दक्षिण भारत की सबसे प्राचीन और समृद्ध साहित्यिक धरोहर है, जिसकी रचना मुख्य रूप से प्राचीन तमिल भाषा में की गई है। यह साहित्य किसी एक लेखक की कृति नहीं है, बल्कि यह सैकड़ों कवियों और विद्वानों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है जिन्होंने मदुरै की सभाओं में अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। यद्यपि बाद के समय में इसमें कुछ संस्कृत प्रभाव दिखाई देते हैं, परंतु इसकी आत्मा और अभिव्यक्ति की शैली पूरी तरह से तमिल और दक्षिण भारतीय परिवेश से जुड़ी है। यह साहित्य तमिल भाषा की भाषाई श्रेष्ठता और उसकी स्वतंत्र पहचान का एक अद्वितीय ऐतिहासिक दस्तावेज है।

155. (D) गणितज्ञों
प्राचीन भारतीय गणितज्ञों द्वारा शून्य को एक संख्या के रूप में परिभाषित करना और उसका गणितीय उपयोग करना मानव सभ्यता के इतिहास की सबसे क्रांतिकारी खोजों में से एक है। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कर जैसे महान विद्वानों ने न केवल शून्य की अवधारणा को प्रतिपादित किया, बल्कि उन्होंने इसके प्रयोग के लिए स्पष्ट नियम भी बनाए। इस योगदान ने न केवल अंकगणित और बीजगणित के विकास को संभव बनाया, बल्कि भविष्य के खगोल विज्ञान और कंप्यूटर विज्ञान के लिए भी आधार तैयार किया। भारतीय गणितज्ञों की इस खोज के बिना आधुनिक विज्ञान की कल्पना करना लगभग असंभव है।

156. (B) राजा के सहयोगी राज्य या मित्र।
कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत में 'मित्र' राज्य का वह अंग है जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों और विदेश नीति के महत्व को रेखांकित करता है। इसका तात्पर्य उन सहयोगी राज्यों या शासकों से है जो साझा हितों या संधियों के कारण राजा के साथ जुड़े होते हैं और युद्ध या अन्य संकटों के समय बिना शर्त सहायता प्रदान करते हैं। कौटिल्य का मानना था कि एक सच्चा मित्र वही है जिसका हित राजा के हित से जुड़ा हो और जिसकी वफादारी समय की कसौटी पर खरी उतरी हो। एक मजबूत मित्र-मंडल राज्य की बाहरी सुरक्षा और उसकी कूटनीतिक प्रतिष्ठा का एक अनिवार्य आधार माना जाता था।

157. (C) इलाहाबाद-कौशाम्बी स्तंभ लेख
इलाहाबाद स्थित अशोक के स्तंभ लेख को 'रानी का अभिलेख' कहा जाता है क्योंकि यह एकमात्र ऐसा शिलालेख है जिसमें अशोक की एक रानी, कारुवाकी, और उनके पुत्र तीवर के नाम का उल्लेख है। इस अभिलेख में रानी कारुवाकी द्वारा किए गए दानों का वर्णन है, जो राज परिवार की महिलाओं की धार्मिक उदारता और उनकी सामाजिक भूमिका को दर्शाता है। यह शिलालेख मौर्य काल के व्यक्तिगत और पारिवारिक इतिहास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। समय के साथ, इस स्तंभ पर बाद के राजाओं जैसे समुद्रगुप्त और जहाँगीर के लेख भी उत्कीर्ण किए गए थे।

158. (D) श्रेणियाँ
मौर्य काल के दौरान शहरी अर्थव्यवस्था के विकास के साथ ही विभिन्न व्यावसायिक समूहों ने स्वयं को संगठित करना शुरु कर दिया था, जिन्हें 'श्रेणी' या गिल्ड कहा जाता था। ये श्रेणियाँ शिल्पकारों, बुनकरों और व्यापारियों के शक्तिशाली संगठन थे जो न केवल उत्पादन और मूल्य का निर्धारण करते थे, बल्कि अपने सदस्यों के हितों की रक्षा भी करते थे। श्रेणियों

176. (B) सातवाहन
सातवाहन राजवंश प्राचीन भारत का एक अत्यंत प्रभावशाली और दीर्घकालिक शासन था जिसने लगभग चार शताब्दियों तक दक्कन के पठार पर अपनी संप्रभुता बनाए रखी। उनकी राजधानी प्रतिष्ठान या पैठण (आधुनिक महाराष्ट्र) थी, जो व्यापार और संस्कृति का एक समृद्ध केंद्र थी। सातवाहनों ने न केवल राजनीतिक स्थिरता प्रदान की, बल्कि उन्होंने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक आदान-प्रदान के मार्ग भी प्रशस्त किए। उनके शासनकाल को दक्कन के स्वर्ण युग के रूप में देखा जाता है, जहाँ कला, साहित्य और समुद्री व्यापार का अभूतपूर्व विकास हुआ था।

177. (B) हिंद-रोमन व्यापार और बंदरगाहों के बारे में।
'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' पहली शताब्दी ईस्वी का एक अत्यंत महत्वपूर्ण यूनानी भौगोलिक और व्यापारिक वृत्तांत है। यह ग्रंथ तत्कालीन भारत के समुद्री मार्गों, प्रमुख बंदरगाहों और विशेष रूप से रोमन साम्राज्य के साथ होने वाले फलता-फूलता व्यापार का विस्तृत विवरण प्रदान करता है। इसमें भड़ौच और मुज़िरिस जैसे बंदरगाहों से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं जैसे मसालों, मलमल और कीमती पत्थरों की सूची दी गई है। यह ऐतिहासिक दस्तावेज प्राचीन भारत की वैश्विक व्यापारिक पहुंच और उसकी आर्थिक समृद्धि को समझने के लिए सबसे विश्वसनीय स्रोतों में से एक माना जाता है।

178. (A) सातवाहन
उज्जैन के शक क्षत्रपों और दक्कन की सातवाहन शक्ति के बीच लंबे समय तक चला संघर्ष प्राचीन भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह संघर्ष मुख्य रूप से मालवा और पश्चिमी भारत के समृद्ध व्यापारिक क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए था। विशेष रूप से गौतमीपुत्र सातकर्णी और शक शासक नहपान के बीच हुई लड़ाइयां अत्यंत प्रसिद्ध हैं। यद्यपि दोनों शक्तियों ने समय-समय पर एक-दूसरे को पराजित किया, परंतु इस निरंतर युद्ध ने पश्चिमी भारत की राजनीति को गहराई से प्रभावित किया और अंततः दोनों ही साम्राज्यों की शक्ति के क्षरण में भी भूमिका निभाई।

179. (C) अश्वघोष
अश्वघोष कुषाण सम्राट कनिष्क के दरबार की एक अत्यंत प्रखर साहित्यिक और आध्यात्मिक हस्ती थे। उन्हें संस्कृत का एक महान कवि और दार्शनिक माना जाता है। अश्वघोष ने 'बुद्धचरित' नामक महाकाव्य की रचना की थी, जिसमें भगवान बुद्ध के जीवन का अत्यंत सुंदर और मर्मस्पर्शी वर्णन है। कनिष्क के शासनकाल में अश्वघोष ने बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय के सिद्धांतों को लोकप्रिय बनाने और बौद्ध दर्शन को साहित्यिक गरिमा प्रदान करने में केंद्रीय भूमिका निभाई थी। उनकी कृतियाँ आज भी संस्कृत साहित्य की अनमोल धरोहर मानी जाती हैं।

180. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
संगम साहित्य प्राचीन दक्षिण भारत के सामाजिक और राजनीतिक जीवन को समझने के लिए एक अमूल्य ऐतिहासिक स्रोत है। इसकी रचना किसी एक लेखक द्वारा नहीं, बल्कि सैकड़ों कवियों की सभाओं या 'संगम' के दौरान की गई थी, जिसके कारण इसमें तत्कालीन समाज का एक अत्यंत व्यापक और सुसंगत दृष्टिकोण प्राप्त होता है। यह साहित्य प्रेम और युद्ध के विषयों के साथ-साथ राजाओं के कर्तव्यों, व्यापारिक समृद्धि और सामान्य जन के दैनिक संघर्षों का जीवंत विवरण प्रदान करता है। कवियों की सामूहिक दृष्टि ने इस साहित्य को ऐतिहासिक यथार्थवाद की गहराई प्रदान की है।

181. (C) वराहमिहिर
वराहमिहिर गुप्त काल के एक महान ज्योतिषी, खगोलशास्त्री और गणितज्ञ थे, जिन्होंने 'पंचसिद्धांतिका' नामक एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ की रचना की थी। इस ग्रंथ में उन्होंने तत्कालीन समय में प्रचलित खगोल विज्ञान के पांच प्रमुख सिद्धांतों का सार संकलित किया है। वराहमिहिर ने प्राचीन भारतीय ज्ञान को एक व्यवस्थित स्वरुप प्रदान किया और ऋतुओं के परिवर्तन, बादलों के निर्माण तथा भूजल जैसे विषयों पर भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनकी कृतियाँ प्राचीन भारत में प्राकृतिक विज्ञान और खगोल विज्ञान की प्रगति के ठोस प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

182. (B) अवशेषों वाला एक स्मारक।
बौद्ध परंपरा में 'स्तूप' का मौलिक उद्देश्य भगवान बुद्ध या उनके महान शिष्यों के पवित्र शारीरिक अवशेषों, जैसे दंत, अस्थि या बाल, को सुरक्षित और सम्मानित रूप से रखना है। यह केवल एक वास्तुकला नहीं, बल्कि श्रद्धा और ध्यान का एक प्रतीक है जो बुद्ध के परिनिर्वाण का प्रतिनिधित्व करता है। स्तूप की अर्द्धगोलाकार संरचना ब्रह्मांड का प्रतीक मानी जाती है। श्रद्धालु इसके चारों ओर प्रदक्षिणा करते हैं, जो उनके आध्यात्मिक जीवन के चक्र और बुद्ध की शिक्षाओं के प्रति उनके समर्पण का परिचायक है। स्तूप शांति और आत्मिक जागृति का एक पवित्र स्मारक है।

183. (D) समाहर्ता
मौर्य प्रशासनिक व्यवस्था में 'समाहर्ता' का पद अत्यंत महत्वपूर्ण और शक्तिशाली था, क्योंकि वह संपूर्ण साम्राज्य के राजस्व संग्रह का मुख्य उत्तरदायी अधिकारी था। उसका कार्य न केवल करों का निर्धारण और उन्हें एकत्रित करना था, बल्कि राज्य की आय और व्यय का वार्षिक बजट तैयार करना भी था। समाहर्ता के अधीन राजस्व अधिकारियों का एक बड़ा तंत्र कार्य करता था जो कृषि, व्यापार और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले धन पर कड़ी नजर रखते थे। राज्य की आर्थिक स्थिरता और विशाल प्रशासनिक ढांचे का संचालन काफी हद तक समाहर्ता की कुशलता पर निर्भर करता था।

184. (A) इसमें उनकी लुंबिनी यात्रा और कर में कमी का उल्लेख है।
नेपाल की तराई में स्थित अशोक का रुम्मिनदेई स्तंभ लेख ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बुद्ध के जन्मस्थान, लुंबिनी, की सटीक पहचान की पुष्टि करता है। इस शिलालेख में सम्राट अशोक द्वारा अपने राज्याभिषेक के बीसवें वर्ष में इस पवित्र स्थान की यात्रा करने का विवरण है। श्रद्धा स्वरुप, अशोक ने लुंबिनी गाँव के धार्मिक कर (बली) को माफ कर दिया और भू-राजस्व (भाग) को भी घटाकर उपज

की पूजा करते थे, और साथ ही 'मुरुगन' जैसे स्थानीय देवताओं के प्रति उनकी गहरी आस्था थी। इसी काल में वैदिक यज्ञों और ब्राह्मणवादी देवी-देवताओं का प्रभाव भी बढ़ने लगा था। यह धार्मिक जीवन किसी एक कट्टर विचार से नहीं, बल्कि श्रद्धा की अनेक धाराओं के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और आपसी आदान-प्रदान से निर्मित हुआ था, जो तत्कालीन समाज की उदारता को दर्शाता है।

235. (C) पंच महाभूत।
प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में 'भौतिकी' का विचार ब्रह्मांड के मूल तत्वों के दार्शनिक और वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित था। इसके अनुसार, इस भौतिक जगत की प्रत्येक वस्तु पांच मूलभूत तत्वों या 'पंच महाभूत'—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—के मेल से बनी है। इन तत्वों के गुणों और उनकी परस्पर क्रियाओं को समझकर ही प्राचीन वैज्ञानिकों ने पदार्थ की प्रकृति और सृष्टि के नियमों की व्याख्या करने का प्रयास किया था। यह अवधारणा न केवल भौतिक विज्ञान का आधार थी, बल्कि इसने आयुर्वेद और दर्शन को भी गहराई से प्रभावित किया। यह प्राचीन भारतीयों के प्रकृति के प्रति सूक्ष्म अवलोकन और उनके तर्कसंगत दृष्टिकोण का प्रमाण है।

236. (B) एक विशाल साम्राज्य पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए।
सम्राट अशोक के शासनकाल में, यद्यपि उन्होंने युद्ध त्याग दिया था, फिर भी उन्होंने एक अत्यंत विशाल और सुसज्जित स्थायी सेना बनाए रखी। इस विशाल सेना का प्राथमिक उद्देश्य मौर्य साम्राज्य की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करना और इतने बड़े भूभाग पर केंद्र का प्रभावी नियंत्रण बनाए रखना था। अशोक जानते थे कि साम्राज्य की शांति और धम्म की नीति को तभी लागू किया जा सकता है जब राज्य के पास किसी भी विद्रोह या बाहरी खतरे को दबाने की पर्याप्त शक्ति हो। सेना का अस्तित्व एक निवारक बल के रूप में कार्य करता था, जो मौर्य सत्ता के सम्मान और साम्राज्य की अखंडता को अक्षुण्ण रखने के लिए अनिवार्य था।

237. (D) चुनार का बलुआ पत्थर।
मौर्यकालीन स्थापत्य कला की सबसे विशिष्ट पहचान सम्राट अशोक के अखंड पत्थर के स्तंभ हैं, जो अपनी अद्भुत सूक्ष्मता और पॉलिश के लिए प्रसिद्ध हैं। इन विशाल स्तंभों के निर्माण के लिए मुख्य रूप से वाराणसी के निकट स्थित 'चुनार की खदानों' से प्राप्त होने वाले मटमैले रंग के बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया था। शिल्पकारों ने इन भारी पत्थरों को तराश कर उन पर कांच जैसी चमक वाली पॉलिश की, जो आज भी वैज्ञानिकों के लिए शोध का विषय है। इन स्तंभों को चुनार से सैकड़ों मील दूर साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों तक ले जाना तत्कालीन परिवहन और इंजीनियरिंग की असाधारण सफलता का प्रमाण है।

238. (A) इतिहास अस्पष्ट है।
मौर्यों, शुंगों और कण्वों के पतन के बाद, गुप्त साम्राज्य के उदय से पहले मगध का राजनीतिक इतिहास काफी धुंधला और विवादित है। इस बीच के कालखंड में किसी एक शक्तिशाली राजवंश के निरंतर शासन के स्पष्ट ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं। माना जाता है कि मगध छोटे-छोटे स्थानीय राजाओं और संभवतः कुछ समय के लिए कुषाणों के प्रभाव में रहा होगा। ऐतिहासिक अभिलेखों और शिलालेखों की कमी के कारण यह दौर भारतीय इतिहास के एक 'अंधकार युग' के रूप में देखा जाता है, जहाँ सत्ता का स्वरूप अत्यधिक विकेंद्रीकृत और अस्थिर था, जब तक कि गुप्तों ने पुनः राजनीतिक एकता स्थापित नहीं की।

239. (C) उन्नत जलीय अभियांत्रिकी।
गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील का निर्माण प्राचीन भारत की 'उन्नत जलीय अभियांत्रिकी' या हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग का एक बेजोड़ उदाहरण है। मौर्यों द्वारा शुरु की गई यह परियोजना कई शताब्दियों तक सुचारु रूप से कार्य करती रही, जो तत्कालीन सिंचाई प्रबंधन की श्रेष्ठता को दर्शाती है। इसके बांध का निर्माण और नहरों के माध्यम से पानी का वितरण यह सिद्ध करता है कि प्राचीन भारतीय इंजीनियर जल संरक्षण और कृषि विकास के प्रति अत्यंत गंभीर और तकनीकी रूप से दक्ष थे। समय-समय पर विभिन्न राजवंशों के राजाओं द्वारा इसकी मरम्मत कराना इस जलाशय के आर्थिक और सामाजिक महत्व को प्रमाणित करता है।

240. (A) सातवाहन
पश्चिमी और मध्य भारत में शक क्षत्रपों के शक्तिशाली उदय ने समकालीन सातवाहन राजवंश के लिए एक गंभीर और निरंतर राजनीतिक चुनौती पेश की थी। शकों ने विशेष रूप से उन समृद्ध व्यापारिक क्षेत्रों और बंदरगाहों पर अधिकार कर लिया था जो सातवाहनों के आर्थिक हितों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थे। इस प्रतिस्पर्धा के कारण दोनों शक्तियों के बीच दशकों तक भीषण युद्ध हुए, जिनमें नहपान और गौतमीपुत्र सातकर्णी जैसे महान योद्धा शामिल थे। यह संघर्ष केवल क्षेत्रीय विस्तार की लड़ाई नहीं थी, बल्कि यह उत्तर और दक्षिण के बीच के व्यापारिक मार्गों पर वर्चस्व स्थापित करने का एक बड़ा प्रयास था जिसने तत्कालीन राजनीति को परिभाषित किया।

241. (D) चीन और रोम को जोड़ने वाला रेशम मार्ग।
कुषाण साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति इतिहास में अत्यंत रणनीतिक और लाभदायक मानी जाती है क्योंकि यह प्राचीन विश्व के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग—'रेशम मार्ग' (Silk Route)—के केंद्र में स्थित था। यह मार्ग चीन के रेशम को मध्य एशिया के माध्यम से रोमन साम्राज्य तक पहुँचाता था। कनिष्क के शासनकाल में कुषाणों का इस मार्ग पर पूर्ण नियंत्रण था, जिससे उन्हें व्यापारियों से भारी कर और सुरक्षा शुल्क प्राप्त होता था। इस व्यापारिक एकाधिकार ने कुषाण साम्राज्य को अपार धन और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्रदान की, जिससे भारत उस समय की वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख केंद्र बन गया था।

242. (B) पितृसत्ता में विरोधाभासी भूमिकाएँ।
संगम साहित्य में जैसा कि चित्रित किया गया है, प्राचीन तमिल समाज में महिलाओं की स्थिति काफी जटिल और विविध थी। एक ओर जहाँ समाज मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक था और महिलाओं से घरेलू मर्यादाओं के पालन की अपेक्षा की जाती थी, वहीं दूसरी ओर उन्हें शिक्षा और कला के क्षेत्र में काफी स्वतंत्रता प्राप्त थी। संगम साहित्य में कई महिला कवयित्रियों

कहा जाता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में लगभग 27 प्रकार के अध्यक्षों का उल्लेख मिलता है, जो कृषि, वाणिज्य, खानों, कसाईखानों और यहाँ तक कि वेश्याओं की गतिविधियों की भी निगरानी करते थे। उदाहरण के लिए, 'सीताध्यक्ष' कृषि का प्रभारी था और 'पण्याध्यक्ष' व्यापार को नियंत्रित करता था। इन अध्यक्षों की नियुक्ति यह सुनिश्चित करने के लिए की जाती थी कि राज्य के संसाधनों का उचित उपयोग हो और राजस्व में किसी प्रकार की चोरी या अनियमितता न हो सके।

194. (A) पूरे साम्राज्य में आस्थाओं की बहुलता।
मौर्य काल के दौरान भारत का धार्मिक जीवन अत्यंत जीवंत और विविधतापूर्ण था, जहाँ अनेक विचार और मान्यताएं एक साथ पनप रही थीं। यद्यपि सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को व्यक्तिगत रूप से अपनाया और उसका प्रचार किया, परंतु उन्होंने अन्य सभी धर्मों जैसे ब्राह्मणवाद, जैन धर्म और आजीवक संप्रदाय को भी समान सम्मान और संरक्षण प्रदान किया। समाज में यक्ष-यक्षिणी पूजा जैसे लोकप्रिय लोक-धर्म भी व्यापक रूप से प्रचलित थे। यह धार्मिक बहुलता और सहिष्णुता मौर्य साम्राज्य की उस उदार सामाजिक नीति का हिस्सा थी जिसने विभिन्न समुदायों के बीच शांति और एकता बनाए रखने में सहायता की।

195. (A) 3, 1, 2, 4
सम्राट अशोक का शासनकाल महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का एक क्रमिक सिलसिला है। उनका राज्याभिषेक लगभग 269 ईसा पूर्व में हुआ, जिसके आठ वर्ष बाद उन्होंने कलिंग पर विजय प्राप्त की। इस युद्ध के भीषण परिणामों ने उन्हें धम्म की ओर मोड़ा, जिसके प्रचार के लिए उन्होंने धम्म महामत्तों की नियुक्ति किया। बाद में, बौद्ध धर्म के भीतर के मतभेदों को सुलझाने और धम्म के संदेश को शुद्ध बनाए रखने के लिए उन्होंने पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया। यह क्रम एक विजेता सम्राट के एक महान आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनने की अद्भुत यात्रा को दर्शाता है।

196. (D) उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र
पहलव या हिंद-पार्थियन राजवंश का शासन मुख्य रूप से प्राचीन भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों और पंजाब के कुछ हिस्सों तक सीमित था। वे मूल रूप से ईरान के पार्थियन क्षेत्र से आए थे और उन्होंने शकों के कुछ क्षेत्रों पर अधिकार कर अपनी सत्ता स्थापित की थी। उनकी राजधानी तक्षशिला थी, जो उस समय शिक्षा और व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था। पहलवों का प्रभाव भारत के भीतरी हिस्सों तक नहीं पहुँच सका, परंतु उन्होंने उत्तर-पश्चिमी गलियारे की राजनीति और व्यापार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे भारत और पश्चिम के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान जारी रहा।

197. (C) गोंडोफर्नीस
पहलव राजवंश के इतिहास में राजा गोंडोफर्नीस का नाम सबसे प्रमुखता से लिया जाता है। पहली शताब्दी ईस्वी में शासन करने वाले इस राजा के सिक्के और अभिलेख उत्तर-पश्चिमी भारत में व्यापक रूप से पाए गए हैं। गोंडोफर्नीस न केवल अपनी सैन्य उपलब्धियों के लिए, बल्कि ईसाई परंपराओं में सेंट थॉमस के भारत आगमन के साथ जुड़े होने के कारण भी विश्व प्रसिद्ध हैं। उनके शासनकाल में पहलव सत्ता अपनी चरम सीमा पर थी और उनकी राजधानी तक्षशिला कला और कूटनीति का प्रमुख केंद्र बनी रही। वे एक कुशल प्रशासक थे जिन्होंने विविध संस्कृतियों के बीच सामंजस्य बनाए रखा।

198. (B) जैन धर्म और मथुरा की कला परंपराओं।
मथुरा के शक क्षत्रपों ने भारतीय संस्कृति के विकास में एक अत्यंत रचनात्मक भूमिका निभाई थी। उन्होंने न केवल इस क्षेत्र में अपनी राजनीतिक पकड़ मजबूत की, बल्कि वे जैन धर्म के प्रति अत्यंत उदार थे और उसे व्यापक संरक्षण प्रदान किया। उनके शासनकाल में मथुरा मूर्तिकला का एक महान केंद्र बन गया, जहाँ कंकाली टीला जैसे स्थानों से जैन तीर्थंकरों की अद्भुत मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इन शासकों के समर्थन से विकसित हुई कला परंपराओं ने न केवल धार्मिक प्रतीकों को जीवंत किया, बल्कि भारतीय कला में शारीरिक भव्यता और स्वदेशी शैली के समन्वय का मार्ग भी प्रशस्त किया।

199. (D) बुद्धचरित
महान विद्वान अश्वघोष कुषाण सम्राट कनिष्क के दरबार की साहित्यिक गरिमा के प्रतीक थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'बुद्धचरित' है, जिसे संस्कृत साहित्य का एक अनुपम महाकाव्य माना जाता है। इस ग्रंथ में उन्होंने भगवान बुद्ध के जन्म से लेकर उनके निर्वाण तक की जीवन यात्रा को अत्यंत सरल, सुंदर और काव्यमय ढंग से प्रस्तुत किया है। अश्वघोष ने अपनी रचनाओं के माध्यम से बौद्ध दर्शन को आम लोगों के लिए सुलभ बनाया। बुद्धचरित न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि यह प्राचीन भारतीय काव्य शास्त्र और उच्च स्तरीय साहित्यिक कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण भी है।

200. (A) मोती उत्पादन और रोम के साथ व्यापार।
पाण्ड्य साम्राज्य की असाधारण आर्थिक शक्ति का मुख्य आधार उनके तटों से प्राप्त होने वाले अनमोल मोती थे। प्राचीन विश्व में पाण्ड्य मोतियों की गुणवत्ता बेजोड़ मानी जाती थी, जिसके कारण रोमन साम्राज्य के विलासी वर्ग में उनकी भारी मांग थी। इस व्यापार के माध्यम से पाण्ड्यों को प्रचुर मात्रा में विदेशी मुद्रा और सोना प्राप्त होता था, जिसने उनकी राजधानी मदुरै को एक वैभवशाली महानगर बना दिया। संगम साहित्य में इस व्यापारिक समृद्धि और तटों पर विदेशी जहाजों के निरंतर आने-जाने का अत्यंत सजीव वर्णन मिलता है, जो उनकी वैश्विक आर्थिक पहुंच को दर्शाता है।

201. (C) अर्थशास्त्र
कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' केवल राजनीति का ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह तत्कालीन अर्थव्यवस्था के प्रत्येक सूक्ष्म पहलू पर मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसमें कृषि को राज्य की आय का मुख्य स्रोत माना गया है और विभिन्न प्रकार के पौधों, फसलों के वर्गीकरण तथा भूमि की उर्वरता बढ़ाने के तरीकों पर विस्तृत चर्चा की गई है। 'सीताध्यक्ष' नामक अधिकारी को कृषि की देखरेख और मौसम के अनुसार बुवाई के निर्देश देने का दायित्व सौंपा गया था। यह ग्रंथ प्राचीन भारत में कृषि विज्ञान और वानिकी के प्रति

कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार, भूमि के नीचे छिपे सभी खनिज संसाधनों पर एकमात्र राज्य का अधिकार था। 'अकराध्यक्ष' नामक अधिकारी खानों के संचालन और धातुओं के शोधन की निगरानी करता था। लोहे का उत्पादन सैन्य हथियारों और कृषि उपकरणों के लिए अनिवार्य था, जबकि सोने, चाँदी और तांबे का उपयोग सिक्के ढालने के लिए किया जाता था। राज्य का यह एकाधिकार न केवल भारी राजस्व प्रदान करता था, बल्कि साम्राज्य की सैन्य और आर्थिक संप्रभुता को भी सुनिश्चित करता था।

219. (C) कुणाल
सम्राट अशोक की मृत्यु के उपरांत मौर्य साम्राज्य का नेतृत्व उनके पुत्र कुणाल के हाथों में आया। यद्यपि अशोक ने एक विशाल और सुव्यवस्थित साम्राज्य छोड़ा था, परंतु उनके उत्तराधिकारियों में वह दृढ़ संकल्प और प्रशासनिक क्षमता नहीं थी जो साम्राज्य की एकता को बनाए रखने के लिए आवश्यक थी। कुणाल के शासन के बारे में ऐतिहासिक स्रोतों में मतभेद हैं और माना जाता है कि उनके समय से ही साम्राज्य का धीरे-धीरे कमजोर होना और विभाजन शुरू हो गया था। कुणाल के बाद मौर्य वंश का पतन और तीव्र हो गया, जिससे अंततः यह महान साम्राज्य छोटे-छोटे हिस्सों में बंटकर इतिहास के पन्नों में सिमट गया।

220. (B) मगध
शुंग वंश की प्रारंभिक शक्ति और विस्तार के बाद, उनके बाद के शासक धीरे-धीरे कमजोर होते गए और उनकी सत्ता का प्रभाव क्षेत्र सिकुड़ता चला गया। अंततः शुंगों का अधिकार केवल मगध के केंद्रीय हृदय क्षेत्र और उसके आसपास के सीमित इलाकों तक ही सिमट कर रह गया था। क्षेत्रीय शक्तियों के उदय और उत्तर-पश्चिम से लगातार होने वाले विदेशी दबाव ने उनकी सीमाओं को संकुचित कर दिया। शुंगों की इस घटती शक्ति ने अंततः कण्व वंश के लिए मार्ग प्रशस्त किया, जब उनके ही एक मंत्री ने अंतिम शुंग राजा को हटाकर सत्ता पर अधिकार कर लिया। यह मगध की गिरती हुई राजनीतिक साख का एक और प्रमाण था।

221. (D) सातवाहन
'गाथासप्तशती' सातवाहन काल की एक अत्यंत महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति है, जिसका श्रेय सातवाहन राजा 'हाल' को दिया जाता है। यह ग्रंथ प्राकृत भाषा में रचा गया है और इसमें प्रेम, ग्रामीण जीवन और तत्कालीन समाज की भावनाओं को दर्शाने वाली सात सौ कविताओं का संग्रह है। यह कृति न केवल सातवाहन काल की भाषाई प्राथमिकता को स्पष्ट करती है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि यहाँ के शासक स्वयं विद्वान और साहित्य प्रेमी थे। गाथासप्तशती प्राचीन भारतीय साहित्य में प्राकृत भाषा के विकास और उसके सौंदर्य को समझने के लिए एक अनिवार्य और अत्यंत मधुर ग्रंथ माना जाता है।

222. (A) उत्तर-पश्चिम में ईरान के पार्थियन।
प्राचीन भारत के इतिहास में 'पहलव' शब्द उन शासकों के लिए प्रयुक्त होता है जो मूल रूप से उत्तर-पूर्वी ईरान के पार्थियन क्षेत्र से संबंध रखते थे। उन्होंने भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों पर आक्रमण कर अपना शासन स्थापित किया था। शक और कुषाणों की भांति पहलव भी भारत की समृद्ध संस्कृति से प्रभावित हुए और उन्होंने यहाँ की परंपराओं को अपनाया। यद्यपि उनका शासन मुख्य रूप से सिंधु नदी के आसपास के क्षेत्रों तक ही सीमित रहा, परंतु राजा गोंडोफर्नीस जैसे शासकों के अधीन उन्होंने एक महत्वपूर्ण राजनीतिक पहचान बनाई। वे भारत के साथ ईरानी सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी थे।

223. (C) पुरुषपुर
कुषाण सम्राट कनिष्क ने अपने विशाल साम्राज्य के कुशल प्रबंधन और सुरक्षा के लिए 'पुरुषपुर' (आधुनिक पेशावर) को अपनी मुख्य राजधानी बनाया था। यह स्थान सामरिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि यह मध्य एशिया के व्यापारिक मार्गों और भारत के भीतरी हिस्सों को जोड़ने वाले द्वार पर स्थित था। पुरुषपुर कनिष्क के समय में कला, बौद्ध धर्म और शिक्षा का एक महान केंद्र बन गया था। यहीं पर उन्होंने एक विशाल स्तूप और मठ का निर्माण करवाया था जो अपनी भव्यता के लिए पूरे एशिया में प्रसिद्ध था। इस राजधानी के चयन ने कुषाणों को एक अंतरराष्ट्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करने में मदद की।

224. (A) पुरम्
संगम साहित्य में 'पुरम्' श्रेणी की कविताएँ वीरता, युद्ध के शौर्य और राजाओं के महान कार्यों को समर्पित हैं। इन रचनाओं में योद्धाओं के बलिदान, युद्ध के मैदान के दृश्यों और समाज में वीरता के महत्व का अत्यंत प्रभावशाली वर्णन मिलता है। 'पुरम्' कविताएँ केवल युद्ध का गान नहीं करतीं, बल्कि वे राजा के न्याय, उसकी दानशीलता और जन कल्याण के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को भी दर्शाती हैं। यह प्राचीन तमिल समाज के उस गौरवशाली पक्ष को उजागर करता है जहाँ साहस और मर्यादा को जीवन का सर्वोच्च मूल्य माना जाता था। ये कविताएँ तत्कालीन राजनीतिक नैतिकता का एक जीवंत ऐतिहासिक दस्तावेज हैं।

225. (D) दिल्ली का जंग-रोधी लौह स्तंभ।
दिल्ली के महरौली में खड़ा लौह स्तंभ प्राचीन भारतीय धातु विज्ञान के उत्कृष्ट ज्ञान का सबसे जीवंत और विस्मयकारी उदाहरण है। गुप्त कालीन इस स्तंभ का निर्माण शुद्ध लोहे से किया गया है और इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लगभग 1600 वर्षों से खुले आसमान के नीचे रहने के बाद भी इस पर जंग नहीं लगा है। यह इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक लोहे को संक्षारण से बचाने की जटिल रासायनिक प्रक्रियाओं में महारत हासिल कर चुके थे। यह स्तंभ न केवल तत्कालीन इंजीनियरिंग के कौशल को दर्शाता है, बल्कि प्राचीन भारत के उन्नत वैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी प्रतीक है।

226. (B) बैंकों के रूप में कार्य करते थे और व्यापार का प्रबंधन करते थे।
प्राचीन भारत में 'श्रेणी' या गिल्ड केवल व्यापारिक संगठन नहीं थे, बल्कि वे आर्थिक स्थिरता के प्रमुख आधार स्तंभ थे।

210. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
कुषाण काल भारतीय इतिहास में सांस्कृतिक समन्वय और अंतरराष्ट्रीय संपर्कों का एक स्वर्ण युग माना जाता है। कुषाण शासकों ने रेशम मार्ग पर अपना नियंत्रण स्थापित कर चीन, रोमन साम्राज्य और भारत के बीच व्यापार को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया। इस फलता-फूलता व्यापार ने न केवल आर्थिक समृद्धि लाई, बल्कि विभिन्न देशों के विचारों, धर्मों और कला शैलियों के मिलन का मार्ग भी प्रशस्त किया। कुषाणों की उदार नीति ने भारतीय, ग्रीक और ईरानी सांस्कृतिक तत्वों को एक साथ लाकर एक नई और समृद्ध वैश्विक पहचान निर्मित की, जिसका प्रभाव कला और धर्म के क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

211. (C) उदयगिरि पहाड़ियाँ
कलिंग के राजा खारवेल का ऐतिहासिक हाथीगुम्फा शिलालेख ओडिशा के भुवनेश्वर के निकट स्थित उदयगिरि पहाड़ियों की एक प्राकृतिक गुफा में उत्कीर्ण है। यह शिलालेख प्राचीन ब्राह्मी लिपि और प्राकृत भाषा में लिखा गया है। यह स्थान न केवल राजनीतिक इतिहास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि उदयगिरि और पास की खंडगिरि पहाड़ियाँ जैन धर्म के प्राचीन और प्रमुख केंद्रों में से एक रही हैं। खारवेल ने इन पहाड़ियों में जैन भिक्षुओं के निवास के लिए अनेक गुफाओं का निर्माण करवाया था। यह स्थल खारवेल की सैन्य विजयों और उनके धार्मिक समर्पण का एक शाश्वत गवाह है जो आज भी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

212. (D) कोई विदेशी व्यापार नहीं होता था।
संगम युग की संस्कृति और अर्थव्यवस्था के बारे में यह कहना पूरी तरह गलत है कि उस समय कोई विदेशी व्यापार नहीं होता था। इसके विपरीत, संगम युग अपनी असाधारण व्यापारिक सक्रियता और विशेष रुप से रोमन साम्राज्य के साथ घनिष्ठ व्यापारिक संबंधों के लिए ही प्रसिद्ध है। दक्षिण भारत के बंदरगाहों से मसालों, मोतियों और वस्त्रों का भारी निर्यात किया जाता था। पुरातात्विक खुदाई में मिले रोमन सिक्के और मृदभांड इस समृद्ध व्यापार के अकाट्य प्रमाण हैं। विदेशी व्यापार ने ही दक्षिण के राज्यों को वह धन और संसाधन प्रदान किए जिससे वे कला और साहित्य को बड़े पैमाने पर संरक्षण दे सके।

213. (A) राजनीतिक दर्शन और शासन कला
वराहमिहिर द्वारा रचित 'वृहत संहिता' प्राचीन भारत का एक महान विश्वकोश है, जो खगोल विज्ञान और ज्योतिष के साथ-साथ अत्यंत विविध विषयों को अपने भीतर समेटे हुए है। इसमें वास्तुकला, मूर्तिकला, बादलों के लक्षण, वर्षा का पूर्वानुमान, कृषि, रत्न विज्ञान और यहाँ तक कि इत्र बनाने की कला पर भी विस्तृत जानकारी दी गई है। हालांकि, यह ग्रंथ मुख्य रुप से प्राकृतिक विज्ञान और भविष्यवाणियों पर केंद्रित है और इसमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र की भांति 'राजनीतिक दर्शन और शासन कला' के सिद्धांतों की विस्तृत चर्चा नहीं की गई है। यह प्राचीन भारतीयों की बहुआयामी वैज्ञानिक रुचि का एक शानदार उदाहरण है।

214. (B) कौटिल्य
सप्तांग सिद्धांत कौटिल्य के राजनीतिक दर्शन का मूल आधार है, जिसे उन्होंने अपने ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' में विस्तार से समझाया है। इस सिद्धांत के माध्यम से उन्होंने राज्य की परिकल्पना सात परस्पर निर्भर अंगों—स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र—वाले एक जीवंत शरीर के रूप में की है। कौटिल्य का मानना था कि राज्य की स्थिरता और शक्ति के लिए इन सातों अंगों का स्वस्थ और संतुलित होना अनिवार्य है। यह सिद्धांत न केवल शासन की संरचना को स्पष्ट करता है, बल्कि यह राजा को यह भी सिखाता है कि उसे अपने साम्राज्य की सुरक्षा और समृद्धि के लिए किन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

215. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
मौर्य प्रशासनिक संरचना में प्रत्येक अधिकारी के कर्तव्यों का स्पष्ट वर्गीकरण प्रशासन की दक्षता का आधार था। सन्निधाता का मुख्य कार्य राजकीय कोष की सुरक्षा और उसका उचित प्रबंधन करना था, जबकि समाहर्ता संपूर्ण साम्राज्य से राजस्व एकत्रित करने और बजट तैयार करने के लिए उत्तरदायी था। नागरिक शहर के प्रबंधन और वहां की शांति व्यवस्था बनाए रखने का कार्य देखता था। ग्रामीण स्तर पर ग्रामिक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण थी क्योंकि वह गाँव के दैनिक प्रशासन का प्रमुख था और स्थानीय जनता तथा सरकार के बीच एक सेतु की तरह कार्य करता था।

216. (A) नन्द वंश की पराजय।
चन्द्रगुप्त मौर्य के सैन्य जीवन की सबसे गौरवशाली और ऐतिहासिक रूप से क्रांतिकारी उपलब्धि मगध के नन्द वंश का समूल विनाश करना था। चाणक्य की कूटनीतिक सहायता से उन्होंने एक शक्तिशाली सेना तैयार की और नन्द राजा धनानन्द को पराजित कर पाटलिपुत्र पर अधिकार कर लिया। इस विजय ने न केवल सदियों पुरानी एक निरंकुश सत्ता का अंत किया, बल्कि भारत में पहले अखिल भारतीय साम्राज्य, मौर्य साम्राज्य, की नींव भी रखी। इस सफलता ने चन्द्रगुप्त को एक महान विजेता के रुप में स्थापित किया और भारत को राजनीतिक एकता के सूत्र में पिरोने की प्रक्रिया की शुरुआत की।

217. (C) राजकीय संवाददाता और सूचनादाता
सम्राट अशोक ने अपनी प्रजा की समस्याओं और साम्राज्य की गतिविधियों से निरंतर अवगत रहने के लिए 'प्रतिवेदक' नामक अधिकारियों की एक विशेष श्रेणी नियुक्त की थी। ये अधिकारी अनिवार्य रुप से राजा के निजी संवाददाता थे जिन्हें यह विशेष अधिकार प्राप्त था कि वे किसी भी समय, चाहे सम्राट भोजन कर रहे हों या विश्राम में हों, उन्हें जनता के मामलों की महत्वपूर्ण सूचनाएं दे सकते थे। अशोक का यह कदम प्रशासन में पारदर्शिता और जवाबदेही लाने की दिशा में एक बड़ा सुधार था। यह दर्शाता है कि अशोक अपनी प्रजा के प्रति कितने संवेदनशील थे और शासन के कार्यों में कोई विलंब नहीं चाहते थे।

218. (D) खनन और धातु विज्ञान
मौर्य राज्य की आर्थिक शक्ति का एक बड़ा हिस्सा 'खनन और धातु विज्ञान' पर उसके पूर्ण और कड़े नियंत्रण से आता था।

निर्धारण किया जा सके। यह विज्ञान प्राचीन भारतीयों के सूक्ष्म अवलोकन और उनके गणितीय कौशल का परिणाम था, जिसने कालांतर में आधुनिक खगोल विज्ञान के विकास के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया।

251. (C) सस्सानी साम्राज्य का उदय।
कुषाण साम्राज्य के पतन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण बाहरी कारक ईरान में शक्तिशाली 'सस्सानी साम्राज्य' का उदय था। तीसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान सस्सानियों ने कुषाणों के पश्चिमी क्षेत्रों पर आक्रमण किए और उनके प्रभाव को काफी हद तक सीमित कर दिया। इस निरंतर सैन्य दबाव और महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण खोने के कारण कुषाणों की आर्थिक और राजनीतिक शक्ति क्षीण होती चली गई। इसके परिणामस्वरूप, एक समय का विशाल कुषाण साम्राज्य छोटे-छोटे स्थानीय राज्यों में विभाजित हो गया, जिससे अंततः उनकी केंद्रीय सत्ता का अंत हो गया। यह ऐतिहासिक परिवर्तन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संतुलन के बदलने का एक प्रत्यक्ष परिणाम था।

252. (B) हल से कृषि
संगम साहित्य के अनुसार 'मरुतम' उस पारिस्थितिक क्षेत्र को कहा जाता था जो नदियों के आसपास की उपजाऊ और समतल भूमि थी। इस क्षेत्र की मुख्य आर्थिक गतिविधि 'हल से की जाने वाली कृषि' थी, जहाँ मुख्य रूप से धान और गन्ने की खेती की जाती थी। मरुतम क्षेत्र अपनी प्रचुर सिंचाई सुविधाओं और उपजाऊ मिट्टी के कारण दक्षिण भारत का सबसे समृद्ध हिस्सा माना जाता था। यहाँ के समाज में किसानों और भू-स्वामियों का विशेष महत्व था, और यहीं से राज्यों को सबसे अधिक राजस्व प्राप्त होता था। यह क्षेत्र संगम कालीन अर्थव्यवस्था की रीढ़ था और यहाँ के जीवन में स्थिरता और संपन्नता स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी।

253. (D) संसाधनों और श्रम के दोहन की शक्ति।
मौर्य प्रशासन द्वारा 'करा' और 'विष्टि' का उपयोग यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि राज्य के पास अपने विशाल साम्राज्य के संसाधनों और मानव श्रम पर कितना व्यापक और कठोर नियंत्रण था। राज्य न केवल उपज का एक हिस्सा कर के रूप में लेने में सक्षम था, बल्कि वह सार्वजनिक परियोजनाओं और सैन्य आवश्यकताओं के लिए आम जनता के श्रम का भी सीधा उपयोग कर सकता था। यह व्यवस्था मौर्य सम्राटों की उस अपार शक्ति का प्रतीक थी जिसके माध्यम से वे विशाल सड़कों, सिंचाई बांधों और किलों जैसे बुनियादी ढांचे का निर्माण करने और एक अत्यधिक केंद्रीकृत सत्ता को बनाए रखने में सफल रहे थे।

254. (A) एक विशाल साम्राज्य का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने के लिए।
मौर्यकालीन प्रांतीय प्रशासन की जटिल और श्रेणीबद्ध प्रणाली का एकमात्र उद्देश्य इतने विशाल और भौगोलिक रूप से विविध साम्राज्य पर केंद्र का प्रभावी और सुचारू नियंत्रण सुनिश्चित करना था। साम्राज्य को कई प्रांतों में बांटना और वहां 'कुमार' जैसे उच्च अधिकारियों की नियुक्ति करना यह सुनिश्चित करता था कि सम्राट के आदेश सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचें और वहां से राजस्व का प्रवाह निर्बाध बना रहे। यह प्रशासनिक ढांचा सूचनाओं के त्वरित आदान-प्रदान और स्थानीय विद्रोहों को तुरंत दबाने के लिए तैयार किया गया था। मौर्यों की यह दूरदर्शी व्यवस्था ही उनकी लंबी अवधि तक चलने वाली स्थिरता और उनकी शक्ति का मुख्य रहस्य थी।

255. (C) उनके व्यक्तिगत नाम, अशोक, का उल्लेख करते हैं।
कर्नाटक के मास्की और मध्य प्रदेश के गुर्जरा में पाए गए अशोक के शिलालेख मौर्य इतिहास के लिए क्रांतिकारी महत्व रखते हैं क्योंकि इन्हीं अभिलेखों में सम्राट के लिए उनके व्यक्तिगत नाम 'अशोक' का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इससे पहले के अधिकांश अभिलेखों में उन्हें केवल 'देवानामपिय पियदस्सी' के नाम से संबोधित किया गया था, जिससे उनकी वास्तविक पहचान को लेकर विद्वानों में संशय था। इन शिलालेखों की खोज ने यह अंतिम रूप से सिद्ध कर दिया कि प्रियदर्शी राजा कोई और नहीं, बल्कि महान मौर्य सम्राट अशोक ही थे। यह खोज अशोक के व्यक्तित्व और उनके द्वारा जारी किए गए विशाल अभिलेखों के बीच एक अटूट ऐतिहासिक कड़ी स्थापित करती है।

256. (A) चैत्य एक प्रार्थना कक्ष है; विहार एक मठ है।
बौद्ध वास्तुकला में चैत्य और विहार के कार्यों के बीच एक बहुत ही स्पष्ट और मौलिक अंतर है। चैत्य एक पवित्र प्रार्थना कक्ष या मंदिर के समान होता था, जिसके केंद्र में श्रद्धा के लिए एक स्तूप स्थित होता था जहाँ भिक्षु और श्रद्धालु सामूहिक रूप से पूजा या ध्यान करते थे। इसके विपरीत, विहार मुख्य रूप से भिक्षुओं के रहने के लिए बनाए गए निवास स्थान या मठ थे, जहाँ उनके विश्राम और अध्ययन के लिए छोटे-छोटे कक्ष होते थे। सरल शब्दों में, चैत्य भक्ति का स्थान था और विहार भिक्षुओं का घर। इन दोनों का सह-अस्तित्व बौद्ध धर्म के संगठित और सामुदायिक जीवन की आवश्यकता को दर्शाता है।

257. (D) बारूद के कारण पराजय।
मौर्य साम्राज्य के पतन के अनेक ऐतिहासिक और आर्थिक कारण गिनाए जाते हैं, परंतु 'बारूद के कारण पराजय' इसमें शामिल नहीं है क्योंकि उस प्राचीन काल में बारूद का उपयोग युद्धों में नहीं होता था। मौर्यों के पतन के वास्तविक कारणों में अशोक के बाद आए कमजोर उत्तराधिकारी, साम्राज्य के भीतर प्रशासनिक भ्रष्टाचार, प्रांतीय अधिकारियों का दमनकारी व्यवहार और साम्राज्य के विशाल आकार के कारण उत्पन्न वित्तीय संकट शामिल थे। बारूद तकनीक का भारत में प्रवेश बहुत बाद की शताब्दियों में हुआ। मौर्य सत्ता का अंत आंतरिक कमजोरियों और मगध की केंद्रीय शक्ति के धीरे-धीरे क्षीण होने का परिणाम था।

258. (B) कण्व
मगध के इतिहास में शुंग वंश के ठीक बाद 'कण्व वंश' का शासन आता है। इस राजवंश की स्थापना लगभग 73 ईसा पूर्व में वासुदेव कण्व ने की थी, जिन्होंने अंतिम शुंग राजा देवभूति की हत्या कर सत्ता पर अधिकार कर लिया था। शुंगों की भांति कण्व भी ब्राह्मण मूल के थे। यद्यपि कण्वों का शासनकाल बहुत लंबा नहीं रहा और उनकी शक्ति शुंगों की तुलना में काफी

ये निकाय आधुनिक बैंकों की भांति कार्य करते थे जहाँ आम जनता और राजा अपना धन सुरक्षित जमा कर सकते थे, जिस पर श्रेणियाँ ब्याज भी देती थीं। इस धन का उपयोग व्यापारिक विस्तार और जनकल्याण के कार्यों में किया जाता था। श्रेणियों के पास अपने नियम और न्यायालय होते थे, जो व्यापारिक विवादों को सुलझाते थे। उनकी विश्वसनीयता और आर्थिक शक्ति इतनी अधिक थी कि राज्य भी उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता था और उनके फैसलों का सम्मान करता था।

227. (C) तक्षशिला
सम्राट अशोक के विशाल मौर्य साम्राज्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए चार मुख्य प्रशासनिक केंद्रों या प्रांतीय राजधानियों में विभाजित किया गया था। ये केंद्र थे—उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला, पश्चिम में उज्जैन, दक्षिण में सुवर्णगिरी और पूर्व में तोसाली। पाटलिपुत्र साम्राज्य की मुख्य राजधानी थी जहाँ से सम्राट स्वयं शासन करते थे। तक्षशिला का केंद्र न केवल सैन्य दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि यह शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय व्यापार का भी सबसे बड़ा संगम स्थल था। इन केंद्रों की स्थापना यह सुनिश्चित करने के लिए की गई थी कि साम्राज्य के सुदूर कोनों तक केंद्र की पकड़ बनी रहे और प्रशासन प्रभावी ढंग से कार्य कर सके।

228. (D) अनुष्ठानों वाला एक नया धार्मिक संप्रदाय।
अशोक का धम्म कोई नया धर्म, संप्रदाय या कर्मकांडों वाली कोई पूजा पद्धति नहीं थी। वास्तव में, यह सामाजिक और नैतिक जीवन जीने की एक सरल आचार संहिता थी जिसे सभी धर्मों के लोग अपना सकते थे। इसमें ईश्वर की पूजा या जटिल यज्ञों के लिए कोई स्थान नहीं था। धम्म का मुख्य जोर अहिंसा, बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति प्रेम और धार्मिक सहिष्णुता जैसे व्यावहारिक मूल्यों पर था। अशोक का उद्देश्य लोगों को किसी नए धर्म में दीक्षित करना नहीं, बल्कि उन्हें एक बेहतर और अधिक नैतिक मनुष्य बनाना था ताकि समाज में शांति और सामंजस्य स्थापित हो सके।

229. (A) एक अत्यधिक राज्य-विनियमित अर्थव्यवस्था।
कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित आर्थिक नीतियां एक ऐसी व्यवस्था का चित्रण करती हैं जहाँ राज्य की भूमिका अत्यंत व्यापक और नियंत्रक थी। अर्थव्यवस्था के लगभग हर क्षेत्र, जैसे कृषि, उद्योग, व्यापार और खनन पर राज्य की कड़ी नजर रहती थी। राज्य स्वयं उद्योगों का संचालन करता था और निजी व्यापारियों की गतिविधियों को भी सख्त नियमों के माध्यम से नियंत्रित करता था ताकि उपभोक्ताओं के साथ धोखाधड़ी न हो और कीमतों में स्थिरता बनी रहे। यह व्यापक नियमन राज्य के राजस्व को अधिकतम करने और समाज के सभी वर्गों के आर्थिक हितों की रक्षा करने के उद्देश्य से किया गया था।

230. (B) सफेद या धूसर संगमरमर
अमरावती की सातवाहन कालीन कला अपनी अद्वितीय सुंदरता और निर्माण सामग्री के विशेष उपयोग के लिए जानी जाती है। यहाँ के शिल्पकारों ने मुख्य रूप से 'सफेद या धूसर चूना पत्थर' का उपयोग किया था, जो देखने में संगमरमर जैसा प्रतीत होता है। इस कोमल पत्थर पर की गई बारीक नक्काशी और बुद्ध के जीवन की जातक कथाओं का विस्तृत चित्रण अत्यंत जीवंत और प्रभावशाली है। यह सामग्री अमरावती शैली को मथुरा और गांधार शैलियों से अलग एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। इन मूर्तियों की चमक और कोमलता सातवाहन कालीन कला के उच्च स्तर और उनके धार्मिक समर्पण का सुंदर प्रमाण प्रस्तुत करती है।

231. (B) मुद्राशास्त्र
हिंद-यवन शासकों का भारतीय इतिहास पर सबसे स्थायी और गहरा प्रभाव 'मुद्राशास्त्र' या सिक्कों के निर्माण के क्षेत्र में पड़ा। उन्होंने भारत में पहली बार ऐसे सिक्के पेश किए जिन पर राजाओं की वास्तविक तस्वीरें और उनके नाम दोनों भाषाओं (यूनानी और प्राकृत) में अंकित थे। इससे पहले भारतीय सिक्के केवल प्रतीकों वाले होते थे। यूनानी प्रभाव के कारण ही भारतीय सिक्कों में कलात्मक सौंदर्य और ऐतिहासिक स्पष्टता आई। इस नई पद्धति को बाद के लगभग सभी भारतीय राजवंशों ने अपनाया, जिससे राजाओं के कालक्रम और उनकी पहचान को सटीक रूप से समझने में इतिहासकारों को अभूतपूर्व सहायता मिली।

232. (A) मध्य एशियाई पोशाक और सैन्य पहचान।
मथुरा में प्राप्त सम्राट कनिष्क की प्रसिद्ध मूर्ति कुषाण कालीन कला का एक अत्यंत प्रभावशाली उदाहरण है। यद्यपि इस मूर्ति का सिर खंडित है, परंतु इसकी वेशभूषा कुषाणों की मध्य एशियाई जड़ों को स्पष्ट रूप से उजागर करती है। मूर्ति में कनिष्क को भारी चोगा, लंबे जूते और हाथ में एक विशाल तलवार लिए हुए दिखाया गया है, जो उनकी योद्धा छवि और शाही सत्ता का प्रतीक है। यह चित्रण भारतीय मूर्तिकला में एक नया तत्व था, जहाँ राजा को उसके मूल सांस्कृतिक परिवेश और सैन्य वैभव के साथ प्रस्तुत किया गया था। यह मूर्ति कुषाणों के भारतीयकरण के साथ-साथ अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने के प्रयास को दर्शाती है।

233. (C) बृहस्पतिमित्र
खारवेल के प्रसिद्ध हाथीगुम्फा शिलालेख में उनके द्वारा मगध के विरुद्ध किए गए एक सफल सैन्य अभियान का विस्तार से वर्णन है। शिलालेख के अनुसार, खारवेल ने मगध पर आक्रमण किया और वहां के राजा को आत्मसमर्पण करने पर विवश कर दिया। इस राजा की पहचान इतिहासकारों द्वारा 'बृहस्पतिमित्र' के रूप में की गई है। खारवेल ने इस विजय के माध्यम से न केवल अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन किया, बल्कि वे मगध से 'कलिंग जिन' की वह पवित्र मूर्ति भी वापस ले आए जिसे नन्द राजा कलिंग से छीन कर ले गए थे। यह घटना कलिंग के स्वाभिमान की पुनर्स्थापना और खारवेल के अजेय शौर्य का प्रतीक बनी।

234. (D) प्रकृति पूजा और ब्राह्मणवाद का मिश्रण।
संगम युग के दौरान दक्षिण भारत का धार्मिक परिदृश्य अत्यंत समृद्ध और विविध था, जहाँ प्राचीन स्थानीय परंपराओं और उत्तर से आए ब्राह्मणवादी विचारों का एक सुंदर समन्वय दिखाई देता है। लोग प्रकृति की शक्तियों, जैसे पहाड़ों, वनों और नदियों

का आठवां हिस्सा कर दिया। यह अभिलेख अशोक की धार्मिक निष्ठा और प्रजा के प्रति उनकी करुणा का एक जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है।

185. (C) शासकों के मातृनाम और वैदिक यज्ञ।
सातवाहन काल का समाज और धर्म विभिन्न परंपराओं के अद्भुत समन्वय का प्रतिनिधित्व करता है। जहाँ एक ओर सातवाहन राजाओं ने गर्व से अपनी माताओं के नाम धारण किए, जो समाज में महिलाओं के प्रभाव को दर्शाता है, वहीं दूसरी ओर वे वैदिक धर्म के कट्टर समर्थक थे और उन्होंने अश्वमेध जैसे भव्य यज्ञों का अनुष्ठान किया। इसके साथ ही, उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं को भी उदारतापूर्वक दान दिया। यह दोहरा दृष्टिकोण यह सिद्ध करता है कि सातवाहन काल में स्थानीय परंपराओं और प्राचीन वैदिक मूल्यों के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित हो चुका था।

186. (A) नागसेन
'मिलिंदपन्हो' प्राचीन भारतीय साहित्य की एक कालजयी कृति है, जो हिंद-यवन राजा मिनांडर (मिलिंद) और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच हुए गहन दार्शनिक शास्त्रार्थ का संग्रह है। इस ग्रंथ में राजा मिनांडर द्वारा पूछे गए जटिल प्रश्नों और भिक्षु नागसेन द्वारा दिए गए तार्किक उत्तरों के माध्यम से बौद्ध दर्शन की सूक्ष्मताओं को स्पष्ट किया गया है। अंततः नागसेन के तर्कों से प्रभावित होकर मिनांडर ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। यह ग्रंथ न केवल धार्मिक महत्व का है, बल्कि यह तत्कालीन भारत की बौद्धिक जीवंतता और यूनानी-भारतीय संवाद का एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

187. (D) चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर
मथुरा कला शैली की सबसे प्रमुख और विशिष्ट पहचान उसमें उपयोग की जाने वाली निर्माण सामग्री है, जो मुख्य रूप से सीकरी क्षेत्र से प्राप्त होने वाला 'चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर' था। इस पत्थर का उपयोग मथुरा के शिल्पकारों ने बुद्ध, जैन तीर्थंकरों और हिंदू देवी-देवताओं की अत्यंत भव्य और प्रभावशाली मूर्तियाँ बनाने के लिए किया था। लाल रंग की पृष्ठभूमि पर सफेद चित्तियों वाले इस पत्थर ने मथुरा की मूर्तियों को एक अलग ही आकर्षण और पहचान प्रदान की। यह सामग्री स्थानीय उपलब्धता और तत्कालीन भारतीय सौंदर्यबोध के साथ पूरी तरह मेल खाती थी।

188. (B) भौगोलिक विशेषताओं और सामाजिक जीवन के आधार पर।
संगम साहित्य में प्रतिपादित पांच पारिस्थितिक क्षेत्रों या 'तिणै' का वर्गीकरण प्राचीन दक्षिण भारत की सूक्ष्म भौगोलिक समझ का परिणाम था। यह विभाजन—पहाड़, वन, कृषि योग्य भूमि, तटीय क्षेत्र और शुष्क भूमि—वहाँ की प्राकृतिक विशेषताओं, वहां रहने वाले लोगों के मुख्य व्यवसायों और यहाँ तक कि उनके सामाजिक व्यवहार तथा भावनाओं के आधार पर किया गया था। उदाहरण के लिए, पहाड़ के लोगों का जीवन शिकार पर आधारित था, जबकि तटीय क्षेत्रों में मछली पकड़ना मुख्य कार्य था। यह वर्गीकरण समाज और प्रकृति के बीच के गहरे और अटूट संबंध को वैज्ञानिक ढंग से दर्शाता है।

189. (C) समग्र आहार और स्वच्छता का दृष्टिकोण।
प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान या आयुर्वेद का मूल दर्शन केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं था, बल्कि यह जीवन जीने की एक पूर्ण और समग्र पद्धति थी। इसमें व्यक्ति के आहार, दैनिक स्वच्छता, मानसिक शांति और प्रकृति के साथ तालमेल पर विशेष बल दिया गया था। महर्षि चरक और सुश्रुत की शिक्षाओं के अनुसार, अधिकांश रोगों का कारण असंतुलित आहार और अशुद्ध जीवनशैली है। इसलिए, उपचार में जड़ी-बूटियों के साथ-साथ शुद्ध भोजन और साफ-सफाई को प्राथमिकता दी जाती थी। यह निवारक स्वास्थ्य देखभाल का दृष्टिकोण आज भी आधुनिक चिकित्सा जगत के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है।

190. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
प्राचीन भारत के ये ग्रंथ और अभिलेख हमारे इतिहास को समझने के लिए ठोस आधार प्रदान करते हैं। कौटिल्य का अर्थशास्त्र जहाँ मौर्यकालीन राजनीति और प्रशासन का विस्तृत प्रारूप देता है, वहीं मेगास्थनीज की इंडिका तत्कालीन समाज और राजधानी की व्यवस्था पर विदेशी दृष्टि डालती है। 'मिलिंदपन्हो' राजा मिनांडर और भिक्षु नागसेन के बीच हुए बौद्ध धर्म पर दार्शनिक संवादों का अनमोल संग्रह है। इसी प्रकार, खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख कलिंग राज्य की शक्ति और खारवेल के शासनकाल की गौरवपूर्ण घटनाओं का वर्ष-वार प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करता है।

191. (A) अमात्य
कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत के अंतर्गत 'अमात्य' राज्य के मंत्रियों और उच्च प्रशासनिक अधिकारियों के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रशासन की रीढ़ की हड्डी माने जाते थे। अमात्य वे कुशल और बुद्धिमान व्यक्ति थे जो राजा को नीतिगत निर्णय लेने में परामर्श देते थे और सरकारी विभागों का संचालन करते थे। कौटिल्य ने अमात्यों की तुलना राज्य रुपी शरीर की 'आंखों' से की है, क्योंकि उनकी योग्यता और ईमानदारी पर ही शासन की सफलता निर्भर करती थी। उन्हें प्रशासन का तंत्रिका केंद्र माना जाता था जो राजा के आदेशों को धरातल पर क्रियान्वित करते थे।

192. (B) देवताओं का प्रिय
सम्राट अशोक के शिलालेखों में उनके लिए प्रयुक्त 'देवानामपिय' उपाधि उनके शासन के आध्यात्मिक और मानवीय आधार को स्पष्ट करती है। इसका शाब्दिक अर्थ 'देवताओं का प्रिय' है, जो यह दर्शाता है कि सम्राट स्वयं को दैवीय कृपा के पात्र और अपनी प्रजा के प्रति ईश्वरीय दायित्व निभाने वाले शासक के रूप में देखते थे। यह उपाधि उनके एक धर्मनिष्ठ और दयालु सम्राट होने की छवि को पुख्ता करती है। अशोक ने अपनी शक्ति का उपयोग डराने के लिए नहीं, बल्कि प्रेम और नैतिकता के माध्यम से प्रजा का कल्याण करने के लिए किया, जो इस उपाधि की सार्थकता को सिद्ध करता है।

193. (B) अध्यक्ष
मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था और प्रशासन का सूक्ष्म प्रबंधन विभिन्न विभागों के अधीक्षकों द्वारा किया जाता था, जिन्हें 'अध्यक्ष'

का उल्लेख मिलता है जिनकी रचनाएं आज भी पूजनीय हैं। साथ ही, युद्धों में पुरुषों के वीरगति प्राप्त करने पर सती प्रथा जैसी कठोर परंपराओं के संकेत भी मिलते हैं। यह विरोधाभासी स्थिति उस समय के समाज में महिलाओं की बौद्धिक शक्ति और सामाजिक बंधनों के बीच के संघर्ष को दर्शाती है।

243. (C) कौटिल्य का अर्थशास्त्र
'दण्डनीति' की अवधारणा, जो शासन व्यवस्था और राजनीति के विज्ञान को परिभाषित करती है, कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' का केंद्रीय विषय है। कौटिल्य ने इस पर अत्यंत सूक्ष्मता और गहराई से चर्चा की है, जहाँ उन्होंने बताया है कि कैसे दंड की शक्ति का न्यायपूर्ण प्रयोग समाज में व्यवस्था बनाए रखने और अराजकता को रोकने के लिए अनिवार्य है। उनके अनुसार, दण्डनीति ही वह माध्यम है जिससे धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि होती है। यह ग्रंथ न केवल दंड के प्रकारों का वर्णन करता है, बल्कि यह भी सिखाता है कि राजा को कब और कितनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए ताकि प्रजा सुखी और सुरक्षित रहे।

244. (D) मठवासी निवास स्थान।
प्राचीन बौद्ध और जैन वास्तुकला में 'विहार' का तात्पर्य उन मठों या आवासीय परिसरों से था जहाँ भिक्षु निवास करते थे। ये संरचनाएं मुख्य रूप से वर्षा ऋतु के दौरान विश्राम और आध्यात्मिक अध्ययन के लिए बनाई गई थीं। विहार की बनावट में आमतौर पर एक केंद्रीय आंगन होता था जिसके चारों ओर छोटे-छोटे शयनकक्ष और ध्यान के लिए स्थान बने होते थे। ये स्थान केवल रहने के लिए ही नहीं, बल्कि शिक्षा, चर्चा और बौद्धिक गतिविधियों के जीवंत केंद्र भी थे। समय के साथ, यही विहार नालंदा और विक्रमशिला जैसे महान विश्वविद्यालयों के रूप में विकसित हुए जिन्होंने पूरी दुनिया में ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

245. (A) बाद के लेखकों की कृतियों में उद्धरणों से।
मेगास्थनीज द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रंथ 'इंडिका', जो मौर्यकालीन भारत का एक महत्वपूर्ण विवरण है, अपने मूल स्वरूप में आज उपलब्ध नहीं है। इसके बारे में हमारा अधिकांश ज्ञान बाद के यूनानी और रोमन लेखकों जैसे एरियन, स्ट्रैबो और प्लिनी की कृतियों से प्राप्त होता है, जिन्होंने अपनी पुस्तकों में मेगास्थनीज के वृत्तांतों को विस्तार से उद्धृत किया है। इन उद्धरणों के माध्यम से ही हमें मौर्यकालीन पाटलिपुत्र के प्रशासन, सैन्य व्यवस्था और तत्कालीन समाज के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती है। यद्यपि ये जानकारी परोक्ष है, परंतु यह मौर्य इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए एक अनिवार्य आधार प्रदान करती है।

246. (B) मुख्य शिलालेख XIII
सम्राट अशोक के जीवन पर कलिंग युद्ध के गहरे और परिवर्तनकारी प्रभाव का सबसे विश्वसनीय और विस्तृत विवरण उनके 'तेरहवें मुख्य शिलालेख' से प्राप्त होता है। इस शिलालेख में अशोक ने स्वयं स्वीकार किया है कि युद्ध में हुए भीषण रक्तपात और लाखों लोगों के विनाश ने उनके मन में गहरा शोक और पश्चाताप उत्पन्न किया। इसी शिलालेख में वे युद्ध के त्याग और 'धम्म' के मार्ग पर चलने के अपने संकल्प की घोषणा करते हैं। यह ऐतिहासिक दस्तावेज न केवल एक राजा के हृदय परिवर्तन की कहानी कहता है, बल्कि यह मौर्य साम्राज्य की विदेश नीति में आए महान क्रांतिकारी बदलाव का भी आधिकारिक प्रमाण है।

247. (B) अखंड पॉलिश किए हुए पत्थर के स्तंभ।
मौर्यकालीन स्थापत्य कला में सम्राट अशोक द्वारा स्थापित अखंड और चमकदार पॉलिश वाले पत्थर के स्तंभों पर विद्वानों को अक्सर प्राचीन फारसी या ईरानी प्रभाव दिखाई देता है। फारस के हखामनी साम्राज्य में भी पत्थर के विशाल स्तंभों का उपयोग शाही भव्यता प्रदर्शित करने के लिए किया जाता था। हालांकि, भारतीय स्तंभों और फारसी स्तंभों में मौलिक अंतर हैं—जैसे भारतीय स्तंभ एक ही पत्थर को तराश कर बनाए गए हैं, जबकि फारसी स्तंभ कई टुकड़ों को जोड़कर। फिर भी, पत्थर पर की गई वह विशेष चमक और शाही घोषणाओं की शैली स्पष्ट रूप से उस समय के अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान और ईरानी कला के प्रभाव को दर्शाती है।

248. (A) बैक्ट्रियन ग्रीक आक्रमणों को विफल करना।
पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल की सबसे गौरवशाली सैन्य उपलब्धि उत्तर-पश्चिमी भारत से होने वाले शक्तिशाली बैक्ट्रियन ग्रीक आक्रमणों को सफलतापूर्वक रोकना और उन्हें पराजित करना था। यवन सेनाएं भारत के भीतरी हिस्सों तक पहुँच चुकी थीं, जिससे मगध की सुरक्षा संकट में थी। पुष्यमित्र ने अपने सैन्य कौशल और साहस के बल पर इन विदेशी आक्रमणकारियों को पीछे धकेला और गंगा घाटी की संप्रभुता की रक्षा की। उनकी इस विजय ने न केवल मगध साम्राज्य को बचाया, बल्कि भारतीय भूमि पर यूनानी सत्ता के विस्तार को रोककर भारतीय अस्मिता और शाही गरिमा को पुनः स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

249. (C) सीसा और पोटीन
सातवाहन राजवंश भारतीय मुद्राशास्त्र के इतिहास में अपनी विशिष्ट धातु के सिक्कों के लिए जाना जाता है। जहाँ अन्य राजा सोने और चाँदी को प्राथमिकता देते थे, सातवाहनों ने मुख्य रूप से 'सीसा' और 'पोटीन' के सिक्के बड़ी मात्रा में जारी किए। उनके इन सिक्कों पर जहाज, हाथी और चैत्य जैसे प्रतीकों का अंकन उनकी नौसैनिक शक्ति और धार्मिक झुकाव को दर्शाता है। सीसे के सिक्कों का इतना व्यापक उपयोग तत्कालीन अर्थव्यवस्था में मुद्रा की सुलभता और सातवाहनों के व्यापारिक संपर्कों के प्रति उनके अनूठे दृष्टिकोण को उजागर करता है। यह उनकी स्वतंत्र और मौलिक आर्थिक नीति का एक मजबूत ऐतिहासिक प्रमाण है।

250. (D) खगोल विज्ञान
प्राचीन भारत में 'ज्योतिष' शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से खगोल विज्ञान के अर्थ में किया जाता था, जो आकाशीय पिंडों की गति और समय के मापन का विज्ञान था। आर्यभट्ट और वराहमिहिर जैसे महान विद्वानों ने ज्योतिष के माध्यम से ग्रहों की स्थिति, ग्रहणों के समय और पृथ्वी की परिधि जैसी जटिल गणनाएं की थीं। उस समय ज्योतिष को वेदों का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता था ताकि धार्मिक अनुष्ठानों के लिए सही समय का

एक अत्यंत वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसका उद्देश्य राज्य की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना था।

202. (A) कृषि उपज पर एक नियमित कर
मौर्यकालीन राजस्व व्यवस्था में 'करा' शब्द का प्रयोग उन नियमित करों के लिए किया जाता था जो किसानों द्वारा अपनी कृषि उपज के एक निश्चित हिस्से के रूप में राज्य को दिए जाते थे। यह कर साम्राज्य की आर्थिक रीढ़ था क्योंकि मौर्य साम्राज्य की विशाल प्रशासनिक और सैन्य आवश्यकताओं की पूर्ति इसी से होती थी। करा का निर्धारण अक्सर भूमि की उर्वरता और सिंचाई की सुविधाओं के आधार पर किया जाता था। राज्य द्वारा कृषि उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए सिंचाई के साधन उपलब्ध कराए जाते थे, जिससे राजस्व में स्थिरता बनी रहती थी। यह कर प्रणाली अत्यंत व्यवस्थित और तर्कसंगत थी।

203. (D) जैन
जैन धर्म की प्राचीन परंपराओं और ग्रंथों के अनुसार, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने जीवन के उत्तरार्ध में जैन धर्म की दीक्षा ली थी। वे जैन मुनि भद्रबाहु के साथ मगध में आए भीषण अकाल के बाद दक्षिण भारत के श्रवणबेलगोला चले गए थे। वहां उन्होंने एक सच्चे जैन भिक्षु की भांति कठोर तपस्या की और अंततः 'सल्लेखना' व्रत का पालन करते हुए अपने प्राण त्याग दिए। यह घटना न केवल चन्द्रगुप्त के व्यक्तिगत धार्मिक परिवर्तन को दर्शाती है, बल्कि दक्षिण भारत में जैन धर्म के प्रसार के इतिहास में भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानी जाती है।

204. (B) ग्राम वृद्धों द्वारा।
मौर्य काल में ग्रामीण प्रशासन को अत्यंत स्वायत्तता प्राप्त थी और ग्राम का मुखिया, ग्रामिक, स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करता था। उसे निर्णय लेने और गाँव के मामलों का प्रबंधन करने में 'ग्राम वृद्धों' या गाँव के बुजुर्गों की एक परिषद द्वारा सहायता और परामर्श प्रदान किया जाता था। यह परिषद गाँव के विवादों को सुलझाने, स्थानीय त्योहारों के आयोजन और सार्वजनिक कार्यों जैसे तालाबों की मरम्मत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। यह व्यवस्था जमीनी स्तर पर एक प्रकार के सामुदायिक लोकतंत्र को दर्शाती है, जहाँ अनुभवी बुजुर्गों के ज्ञान का उपयोग ग्राम कल्याण के लिए किया जाता था।

205. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सम्राट अशोक के 'स्तंभ लेख' शिलालेखों की तुलना में अपनी विषय-वस्तु और प्रस्तुति में अधिक एकरूपता और निरंतरता दिखाते हैं। ये स्तंभ विशेष रूप से चुनार के बलुआ पत्थर से निर्मित थे, जिन पर मौर्यकालीन अद्भुत और चमकदार पॉलिश की गई थी। इन स्तंभों पर उत्कीर्ण संदेश मुख्य रूप से धम्म के सिद्धांतों और अशोक के प्रशासनिक सुधारों पर केंद्रित थे। स्तंभों का निर्माण और उन पर संदेशों का अंकन न केवल राजकीय शक्ति का प्रदर्शन था, बल्कि यह मौर्य शिल्पकारों की अद्वितीय कलात्मक और तकनीकी श्रेष्ठता का भी जीवंत प्रमाण था जो आज भी सुरक्षित है।

206. (D) ब्राह्मी
सम्राट अशोक ने अपनी प्रजा के साथ प्रभावी संवाद स्थापित करने के लिए जिस लिपि का सबसे अधिक और व्यापक उपयोग किया, वह 'ब्राह्मी' लिपि थी। भारत के विभिन्न कोनों में पाए गए अधिकांश शिलालेख और स्तंभ लेख इसी लिपि में लिखे गए हैं। ब्राह्मी लिपि को ही अधिकांश आधुनिक भारतीय लिपियों की जननी माना जाता है। अशोक ने इस लिपि को इसलिए चुना क्योंकि यह उस समय की सबसे लोकप्रिय और व्यापक रूप से समझी जाने वाली लिपि थी। जेम्स प्रिंसेप द्वारा इसे पहली बार पढ़े जाने के बाद ही मौर्य इतिहास के कई अनछुए और गौरवशाली पहलू दुनिया के सामने उजागर हो सके।

207. (A) अधिक स्वायत्तता की इच्छा।
मौर्य साम्राज्य के पतन के साथ ही उसके बाहरी और दूरस्थ प्रांतों में स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा जागृत होने लगी। अशोक की मृत्यु के बाद जब केंद्रीय सत्ता कमजोर हुई, तो प्रांतीय गवर्नर, जो अक्सर शक्तिशाली और महत्वाकांक्षी थे, अपनी अलग सत्ता स्थापित करने का प्रयास करने लगे। पाटलिपुत्र से दूरी और संचार के सीमित साधनों ने इन क्षेत्रीय शक्तियों को स्वतंत्र होने का सुनहरा अवसर प्रदान किया। यह राजनीतिक प्रवृत्ति अंततः साम्राज्य के विखंडन का कारण बनी, जिससे मौर्यों की एकीकृत शक्ति कई छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभाजित हो गई, जिससे भारत में पुनः राजनीतिक विकेंद्रीकरण का युग शुरू हुआ।

208. (B) भरहुत और सांची के तोरण द्वार
शुंग काल भारतीय बौद्ध कला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण निर्माण काल के रूप में जाना जाता है। यद्यपि पुष्यमित्र शुंग को अक्सर ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान से जोड़ा जाता है, परंतु उनके समय में बौद्ध स्मारकों का भव्य विस्तार हुआ। मध्य प्रदेश के भरहुत स्तूप की अद्भुत नक्काशी और सांची के महान स्तूप के सुंदर तोरण द्वारों का निर्माण इसी काल की महान उपलब्धियाँ हैं। इन कलाकृतियों में बुद्ध के जीवन की घटनाओं और जातक कथाओं को पत्थर पर अत्यंत बारीकी से उकेरा गया है। शुंग कालीन कला ने भारतीय मूर्तिकला में एक नई शैली और कलात्मक परिपक्वता का संचार किया था।

209. (B) वाकाटक
सातवाहन साम्राज्य के पतन के बाद, पश्चिमी दक्कन के विशाल क्षेत्र में वाकाटक राजवंश एक प्रमुख और शक्तिशाली राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरा। वाकाटकों ने न केवल सातवाहनों की राजनीतिक विरासत को संभाला, बल्कि वे कला और साहित्य के महान संरक्षक भी बने। उनके शासनकाल में अजंता की कई विश्व प्रसिद्ध गुफाओं का निर्माण और अलंकरण हुआ। वाकाटकों के गुप्त साम्राज्य के साथ घनिष्ठ वैवाहिक और कूटनीतिक संबंध थे, जिसने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच राजनीतिक स्थिरता और सांस्कृतिक समन्वय को और अधिक मजबूत किया। वे प्राचीन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्थापित हुए।

सीमित थी, फिर भी उन्होंने मगध की परंपरा को जारी रखा। यह दौर मगध के केंद्रीय प्रभुत्व के धीरे-धीरे समाप्त होने और भारत में क्षेत्रीय शक्तियों के उदय की एक महत्वपूर्ण संक्रांति बेला थी।

259. (C) यूनानी-रोमन शैली में बौद्ध जीवन।
गांधार कला शैली की सबसे बड़ी विशेषता बुद्ध के आध्यात्मिक जीवन को यूनानी और रोमन कलात्मक सूक्ष्मताओं के साथ प्रस्तुत करना है। इस शैली में बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी देवताओं के समान मांसल शरीर, लहरदार बाल और सिलवटों वाले भारी वस्त्रों के साथ बनाई गई थीं। यहाँ तक कि बुद्ध के चेहरे की विशेषताएं भी अक्सर हेलेनिस्टिक प्रभाव को दर्शाती हैं। यह शैली उत्तर-पश्चिमी भारत में विकसित हुई जहाँ यूनानी और भारतीय संस्कृतियों का गहरा मिलन हुआ था। गांधार कला ने बुद्ध की शांत मुद्रा को एक वैश्विक और यथार्थवादी स्वरुप प्रदान किया, जो पूर्व और पश्चिम के सांस्कृतिक संगम का अनूठा उदाहरण है।

260. (D) रोमन साम्राज्य
संगम युग की असाधारण आर्थिक समृद्धि और व्यापारिक उत्कर्ष का सबसे बड़ा कारण रोमन साम्राज्य के साथ होने वाला व्यापक और घनिष्ठ समुद्री व्यापार था। दक्षिण भारत से मसालों, विशेष रुप से काली मिर्च, जिसे रोम में 'काला सोना' माना जाता था, और मोतियों का निर्यात भारी मात्रा में किया जाता था। इसके बदले में रोम से स्वर्ण और रजत मुद्राओं का प्रवाह भारत की ओर होता था। प्लिनी जैसे रोमन लेखकों ने रोम के खजाने से भारत को होने वाले इस भारी धन के नुकसान पर चिंता भी व्यक्त की थी। इस व्यापारिक संबंध ने चेर, चोल और पाण्ड्य राज्यों को अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य का एक प्रमुख केंद्र बना दिया था।

261. (A) रसायन विज्ञान और कायाकल्प चिकित्सा।
प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में 'रसायन' का संबंध केवल आधुनिक रसायन विज्ञान से ही नहीं था, बल्कि यह आयुर्वेद की एक ऐसी विशिष्ट शाखा थी जो शरीर को युवा बनाए रखने और जीवन को दीर्घायु करने की विधियों पर केंद्रित थी। इसमें विभिन्न धातुओं और जड़ी-बूटियों के शुद्धिकरण तथा उनके औषधीय प्रयोगों का गहरा अध्ययन शामिल था। रसायनों का उद्देश्य शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना और बुढ़ापे के लक्षणों को रोकना था। प्राचीन भारतीयों का यह विज्ञान न केवल चिकित्सा के प्रति उनके गहन ज्ञान को दर्शाता है, बल्कि यह दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की उनकी आकांक्षा का भी वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करता है।

262. (B) कई विभागों वाली नौकरशाही।
सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के केंद्रीय प्रशासन की सबसे उल्लेखनीय विशेषता उसकी अत्यंत परिष्कृत और विस्तृत नौकरशाही व्यवस्था थी, जो विभिन्न सरकारी विभागों में विभाजित थी। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार, प्रशासन का कार्य 'अध्यक्ष' नामक अधिकारियों के अधीन अनेक विभागों द्वारा किया जाता था, जो कृषि, व्यापार, खनन, संचार और सैन्य प्रबंधन जैसे विशिष्ट कार्यों के लिए उत्तरदायी थे। यह नौकरशाही राज्य के प्रत्येक आर्थिक और सामाजिक पहलू पर नियंत्रण रखने के लिए तैयार की गई थी। इस सुव्यवस्थित तंत्र के कारण ही चन्द्रगुप्त एक विशाल भूभाग पर प्रभावी शासन करने और मौर्य सत्ता को स्थायित्व प्रदान करने में सफल रहे थे।

263. (B) अमरावती
सम्राट अशोक के 'मुख्य स्तंभ लेख' भारत के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों पर पाए गए हैं, जैसे लौरिया-नंदनगढ़, दिल्ली-टोपरा और सांची। ये स्तंभ सम्राट के संदेशों को सार्वजनिक रुप से प्रसारित करने के प्रमुख साधन थे। हालांकि, दक्षिण भारत के अमरावती में स्तूप और अन्य बौद्ध अवशेष तो प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं, परंतु वहां से अशोक का कोई 'मुख्य स्तंभ लेख' प्राप्त नहीं हुआ है। अमरावती मुख्य रुप से सातवाहन कालीन कला और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। अशोक के स्तंभों का भौगोलिक वितरण उनके साम्राज्य के प्रशासनिक केंद्रों और प्रमुख व्यापारिक मार्गों की उपस्थिति को स्पष्ट रुप से दर्शाता है।

264. (A) कार्ला चैत्य और अमरावती स्तूप।
सातवाहन काल की कला और वास्तुकला अपनी भव्यता और सूक्ष्म नक्काशी के लिए भारतीय इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखती है। महाराष्ट्र के लोनावला के निकट स्थित 'कार्ला चैत्य' शैलकृत वास्तुकला का सबसे सुंदर और विशाल उदाहरण है, जो अपनी भव्य गुफा और नक्काशीदार स्तंभों के लिए प्रसिद्ध है। इसी प्रकार, आंध्र प्रदेश का 'अमरावती स्तूप' अपनी चूना पत्थर की सुंदर मूर्तियों और जातक कथाओं के जीवंत चित्रण के लिए विख्यात है। ये दोनों स्थल सातवाहन काल के दौरान कला के प्रति उनके गहरे समर्पण और बौद्ध धर्म के प्रति उनकी निष्ठा के सर्वोत्तम सांस्कृतिक प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

265. (C) शुद्ध संस्कृत में पहला शाही अभिलेख है।
शक राजा रुद्रदामन प्रथम का जूनागढ़ शिलालेख भारतीय अभिलेख विज्ञान के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है क्योंकि यह शुद्ध संस्कृत भाषा में लिखा गया पहला विस्तृत शाही अभिलेख है। इससे पहले के अधिकांश शिलालेख प्राकृत भाषा में होते थे। यह शिलालेख न केवल रुद्रदामन की सैन्य विजयों और सुदर्शन झील की मरम्मत का विवरण देता है, बल्कि यह संस्कृत भाषा के प्रति उनके अनुराग और उस समय के उच्च स्तरीय काव्य कौशल को भी प्रदर्शित करता है। इसने भारतीय राजकीय परंपराओं में संस्कृत को एक प्रशासनिक और साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

266. (D) महायान
सम्राट कनिष्क का संरक्षण बौद्ध धर्म के 'महायान' संप्रदाय के उदय और उसके वैश्विक प्रसार के लिए अत्यंत निर्णायक सिद्ध हुआ। कनिष्क के शासनकाल में ही चतुर्थ बौद्ध संगीति आयोजित की गई थी, जहाँ महायान सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया। इस संप्रदाय ने बुद्ध की प्रतिमा पूजा और व्यक्तिगत भक्ति पर बल दिया, जिससे यह आम जनता के लिए अधिक सरल और आकर्षक बन गया। कनिष्क ने न केवल भारत में बल्कि मध्य एशिया और चीन की ओर धम्म दूतों को

(D) I, II और III

11. प्राचीन भारतीय वास्तुकला के संदर्भ में 'द्रविड़' शब्द मुख्य रुप से किस भौगोलिक क्षेत्र में पाई जाने वाली शैली को संदर्भित करता है?
(A) उत्तर के दुर्गम हिमालयी तलहटी क्षेत्र
(B) मध्य के उपजाऊ गंगा के मैदान
(C) पश्चिमी राजस्थान के शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र
(D) कृष्णा नदी घाटी के दक्षिण का क्षेत्र

12. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): समुद्रगुप्त की विजयों का विस्तृत विवरण प्रयाग प्रशस्ति में मिलता है।
कारण (R): प्रयाग प्रशस्ति की रचना उसके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा की गई थी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

13. किस गुप्त शासक को 'लिच्छवि-दौहित्र' की उपाधि से संबोधित किया जाता है, जो उसके मातृक संबंध को दर्शाता है?
(A) चंद्रगुप्त प्रथम
(B) चंद्रगुप्त द्वितीय
(C) समुद्रगुप्त
(D) कुमारगुप्त प्रथम

14. गुप्त शासक रामगुप्त के अस्तित्व की पुष्टि मुख्य रुप से किस साहित्यिक स्रोत से होती है?
(A) मुद्राराक्षस
(B) हर्षचरित
(C) रघुवंश
(D) देवीचंद्रगुप्तम

15. सूची I (स्थापत्य शैली) को सूची II (विशिष्ट विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. नागर
Q. द्रविड़
R. वेसर
S. स्मारक पत्थर
सूची II:
1. मिश्रित शैली
2. पिरामिडनुमा मीनार या विमान
3. वक्राकार शिखर
4. वीरतापूर्ण मृत्यु की स्मृति
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

16. किस गुप्त सम्राट ने प्रसिद्ध 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी?
(A) समुद्रगुप्त
(B) चंद्रगुप्त द्वितीय
(C) कुमारगुप्त प्रथम
(D) स्कंदगुप्त

17. किस गुप्त राजकुमारी के वैवाहिक गठबंधन के माध्यम से गुप्त-वाकाटक संबंधों को महत्वपूर्ण मजबूती मिली थी?
(A) कुमारदेवी
(B) प्रभावतीगुप्त
(C) ध्रुवदेवी
(D) अनंतदेवी

18. निम्नलिखित गुप्त शासकों को उनके शासनकाल के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए (प्राचीन से नवीन):
1. स्कंदगुप्त
2. समुद्रगुप्त
3. चंद्रगुप्त द्वितीय
4. कुमारगुप्त प्रथम
(A) 2, 3, 4, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 4, 3, 1
(D) 3, 2, 1, 4

19. पश्चिमी भारत के शक क्षत्रपों की पराजय किस गुप्त शासक की एक प्रमुख उपलब्धि थी?
(A) चंद्रगुप्त प्रथम
(B) समुद्रगुप्त
(C) चंद्रगुप्त द्वितीय
(D) स्कंदगुप्त

20. चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावतीगुप्त का विवाह किस समकालीन राजवंश में हुआ था?
(A) कदंब
(B) नाग
(C) राष्ट्रकूट
(D) वाकाटक

21. प्रथम बड़े हूण आक्रमण को विफल करने का श्रेय किस गुप्त शासक को दिया जाता है?
(A) चंद्रगुप्त द्वितीय
(B) कुमारगुप्त प्रथम
(C) स्कंदगुप्त
(D) बुधगुप्त

22. गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: कुमारगुप्त प्रथम ने अश्वमेध यज्ञ किया था, जैसा कि

की व्याख्या और पाई के अत्यंत सटीक मान की गणना शामिल थी। हालांकि, 'सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण' का व्यवस्थित सिद्धांत आर्यभट्ट के कार्यों में इस आधुनिक भौतिक विज्ञान के स्वरूप में स्पष्ट रूप से मौजूद नहीं था। आर्यभट्ट का मुख्य योगदान खगोल विज्ञान और गणित को एक तार्किक आधार प्रदान करना था, जिसने सदियों तक आने वाले वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन किया।

276. (D) राजकीय परियोजनाओं के लिए बलात श्रम।
मौर्यकालीन प्रशासनिक और आर्थिक व्यवस्था में 'विष्टि' शब्द का प्रयोग राज्य द्वारा प्रजा से लिए जाने वाले बेगार या 'बलात श्रम' के लिए किया जाता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार, यह श्रम का एक रूप था जिसे लोग कर के स्थान पर या सार्वजनिक सेवा के रूप में प्रदान करते थे। विष्टि का उपयोग मुख्य रूप से किलों के निर्माण, सड़कों की मरम्मत, सिंचाई के लिए बांध बनाने और सेना के साथ सामान ढोने जैसे भारी कार्यों के लिए किया जाता था। यद्यपि यह श्रम बिना किसी नकद भुगतान के लिया जाता था, परंतु यह मौर्य साम्राज्य के विशाल बुनियादी ढांचे को बनाए रखने का एक अनिवार्य साधन था।

277. (A) कलिंग युद्ध से हुआ विनाश।
सम्राट अशोक के जीवन की सबसे निर्णायक घटना 'कलिंग युद्ध' थी, जिसके भीषण रक्तपात और विनाश ने उनके हृदय को गहरे पश्चाताप से भर दिया था। युद्ध के मैदान में लाखों लोगों की मृत्यु को देखकर अशोक ने भविष्य में तलवार के बल पर विजय प्राप्त करने की नीति यानी 'भेरीघोष' को सदैव के लिए त्यागने का संकल्प लिया। इसके स्थान पर उन्होंने प्रेम, अहिंसा और नैतिकता के माध्यम से लोगों के दिलों को जीतने की नीति, जिसे 'धम्मघोष' कहा जाता है, को अपनाया। यह परिवर्तन न केवल अशोक के व्यक्तित्व में आया एक आध्यात्मिक बदलाव था, बल्कि इसने मौर्य साम्राज्य की पूरी विदेश नीति को मानवीय आधार प्रदान किया।

278. (B) सेना के ब्राह्मण सेनापति
शुंग वंश के संस्थापक पुष्यमित्र शुंग मूल रूप से अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ के 'सेनापति' थे और वे एक उच्च कुलीन ब्राह्मण परिवार से संबंध रखते थे। लगभग 185 ईसा पूर्व में, एक सैन्य निरीक्षण के दौरान पुष्यमित्र ने राजा बृहद्रथ की हत्या कर दी और मगध के सिंहासन पर अधिकार कर लिया। यह घटना केवल एक राजनीतिक विद्रोह नहीं थी, बल्कि इसे मौर्यों की कथित बौद्ध-समर्थक नीतियों के विरुद्ध एक ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया के रूप में भी देखा जाता है। पुष्यमित्र ने शुंग वंश की स्थापना कर उत्तर भारत में पुनः वैदिक परंपराओं को पुनर्जीवित किया, जिससे भारतीय राजनीति में एक नए युग की शुरुआत हुई।

279. (B) साकल
सबसे प्रसिद्ध हिंद-यवन राजा मिनांडर प्रथम, जिन्हें 'मिलिंद' के नाम से भी जाना जाता है, ने 'साकल' (आधुनिक सियालकोट) को अपने विशाल साम्राज्य की राजधानी बनाया था। साकल उस समय न केवल एक महत्वपूर्ण सैन्य और प्रशासनिक केंद्र था, बल्कि यह बौद्ध धर्म, शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय व्यापार का भी एक जीवंत संगम स्थल बन गया था। मिनांडर के शासनकाल में साकल की भव्यता और वहां के बौद्धिक परिवेश की चर्चा 'मिलिंदपन्हो' जैसे ग्रंथों में मिलती है। राजधानी के रूप में साकल के चयन ने हिंद-यवनों को पंजाब और उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखने में सहायता की थी।

280. (A) कुई-शुआंग
कुषाणों का मूल मध्य एशिया की 'यूची' जनजाति से जुड़ा था, जो खानाबदोश थे और चीनी सीमाओं के पास रहते थे। बाद में यह जनजाति पांच स्वतंत्र शाखाओं में विभाजित हो गई, जिनमें से 'कुई-शुआंग' शाखा सबसे शक्तिशाली सिद्ध हुई। कुजुल कडफिसेस के नेतृत्व में इस शाखा ने अन्य चारों शाखाओं को एकजुट कर 'कुषाण' वंश की नींव रखी। भारत में प्रवेश करने के बाद इसी राजवंश ने एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया जिसने मध्य एशिया और उत्तरी भारत को एक राजनीतिक सूत्र में पिरोया। कुई-शुआंग शाखा के इसी नेतृत्व ने कुषाणों को प्राचीन विश्व की महानतम शक्तियों में से एक बनाने में सफलता प्राप्त की थी।

281. (C) प्राचीन दक्षिण भारत
'संगम' शब्द का सीधा संबंध प्राचीन दक्षिण भारत के गौरवशाली इतिहास और तमिल साहित्य के स्वर्ण युग से है। यह शब्द उन विद्वानों और कवियों की सभाओं को संदर्भित करता है जो पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में आयोजित की गई थीं। इन सभाओं के माध्यम से प्राचीन तमिल भाषा में वीर गाथाओं, प्रेम कविताओं और सामाजिक नियमों का एक विशाल संग्रह तैयार हुआ, जिसे 'संगम साहित्य' कहा जाता है। यह साहित्य न केवल दक्षिण भारत की प्राचीन संस्कृति और वहां की स्वतंत्र भाषाई पहचान का प्रतीक है, बल्कि यह उस काल के राजाओं के शौर्य और उनकी व्यापारिक समृद्धि का एकमात्र विश्वसनीय ऐतिहासिक दस्तावेज भी है।

282. (D) बराबर और नागार्जुनी पहाड़ियाँ
मौर्यकालीन स्थापत्य कला की सबसे सुंदर और प्राचीन 'शैलकृत वास्तुकला' बिहार के गया जिले में स्थित बराबर और नागार्जुनी पहाड़ियों में देखने को मिलती है। सम्राट अशोक और उनके पौत्र दशरथ ने इन पहाड़ियों की कठोर ग्रेनाइट चट्टानों को काटकर अत्यंत चिकनी और पॉलिश वाली गुफाओं का निर्माण करवाया था। ये गुफाएं मुख्य रूप से आजीवक संप्रदाय के तपस्वियों के निवास के लिए दान में दी गई थीं। इन गुफाओं की वास्तुकला और उनके प्रवेश द्वारों की बारीक नक्काशी तत्कालीन भारतीय शिल्पकारों के असाधारण कौशल का प्रमाण है। यह मौर्यों की धार्मिक सहिष्णुता और वास्तुकला में उनके क्रांतिकारी नवाचारों को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

283. (C) पल्लव - कांचीपुरम
संगम युग के दौरान दक्षिण भारत की राजनीति और संस्कृति मुख्य रूप से चोल, चेर और पाण्ड्य राजाओं के इर्द-गिर्द घूमती थी, जिन्हें 'मुवेंदर' कहा जाता था। चोलों की राजधानी उरैयूर थी, चेरों की वंजी और पाण्ड्यों की मदुरै थी। पल्लव वंश का उदय और कांचीपुरम को उनकी राजधानी के रूप में प्रसिद्धि संगम

युग के काफी बाद, लगभग तीसरी-चौथी शताब्दी ईस्वी में हुई थी। यद्यपि पल्लव एक महान शक्ति बने, परंतु वे संगम काल के मूल तीन राजवंशों का हिस्सा नहीं थे। संगम साहित्य विशेष रूप से पाण्ड्य राजाओं के मदुरै स्थित केंद्र और वहां आयोजित होने वाली साहित्यिक सभाओं के सांस्कृतिक योगदान पर केंद्रित है।

284. (B) राजस्व का संग्रह
मौर्य प्रशासनिक व्यवस्था में 'समाहर्ता' का पद आधुनिक समय के राजस्व मंत्री और वित्त सचिव के मिश्रण के समान था। उसका प्राथमिक उत्तरदायित्व संपूर्ण साम्राज्य से करों और राजस्व के संग्रह की निगरानी करना तथा राज्य के लिए वार्षिक बजट तैयार करना था। समाहर्ता यह सुनिश्चित करता था कि कृषि, व्यापार, खानों और जंगलों जैसे सभी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय राजकीय कोष में सुरक्षित पहुँचे। इसके अतिरिक्त, वह राजस्व विभाग के अधिकारियों के कार्यों का निरीक्षण भी करता था। मौर्य साम्राज्य की विशाल प्रशासनिक मशीनरी और सैन्य शक्ति को बनाए रखने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन समाहर्ता पर निर्भर करता था।

285. (D) खरोष्ठी
सम्राट अशोक के शिलालेखों की एक उल्लेखनीय विशेषता उनके भौगोलिक स्थान के अनुसार लिपियों का चयन था। मौर्य साम्राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग (आधुनिक पाकिस्तान और अफगानिस्तान का क्षेत्र) में पाए गए शिलालेखों के लिए मुख्य रूप से 'खरोष्ठी' लिपि का उपयोग किया गया था। यह लिपि दाएं से बाएं लिखी जाती थी और स्थानीय लोगों के बीच प्रचलित थी। इसके विपरीत, शेष भारत में मुख्य रूप से ब्राह्मी लिपि का प्रयोग हुआ था। अशोक द्वारा खरोष्ठी का उपयोग करना उनकी उस प्रशासनिक संवेदनशीलता को दर्शाता है जहाँ वे अपनी प्रजा के साथ उनकी अपनी परिचित लिपि में संवाद करना चाहते थे ताकि धम्म का संदेश प्रभावी ढंग से सब तक पहुँच सके।

286. (A) ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को।
सातवाहन प्रशासन का एक क्रांतिकारी और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण पहलू 'कर-मुक्त भूमि अनुदान' देने की परंपरा की शुरुआत करना था। उन्होंने मुख्य रूप से ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को उनके धार्मिक और शैक्षणिक कार्यों के समर्थन में उपजाऊ भूमि दान में दी। इन भूमि अनुदानों के साथ-साथ राज्य ने उन क्षेत्रों में कर वसूलने और प्रशासनिक हस्तक्षेप करने के अपने अधिकार भी त्याग दिए थे। यद्यपि इसका उद्देश्य धार्मिक पुण्य प्राप्त करना था, परंतु कालांतर में इस प्रथा ने भारत में सामंतवाद के उदय और भूमि व्यवस्था में बड़े बदलावों की नींव रखी। यह सातवाहनों की धार्मिक सहिष्णुता और विद्वानों के प्रति उनके सम्मान का पुख्ता प्रमाण है।

287. (C) कनिष्क
'शक संवत', जो 78 ईस्वी में शुरु हुआ था, का संस्थापक सबसे शक्तिशाली कुषाण सम्राट 'कनिष्क' को माना जाता है। यद्यपि इसका नाम शकों के साथ जुड़ा है, परंतु ऐतिहासिक रूप से यह कनिष्क के राज्याभिषेक या उनके शासन के आरंभ का प्रतीक है। कालांतर में पश्चिमी भारत के शक शासकों ने इस संवत का व्यापक उपयोग किया, जिसके कारण इसका नाम शक संवत पड़ गया। इसकी महत्ता इतनी अधिक है कि स्वतंत्र भारत सरकार ने इसे हमारे 'राष्ट्रीय संवत' के रूप में अपनाया है। यह संवत न केवल कनिष्क के गौरवशाली शासन की याद दिलाता है, बल्कि यह प्राचीन भारत की सटीक कालक्रम गणना और वैज्ञानिक चेतना का भी एक शाश्वत प्रतीक है।

288. (A) स्थानीय और ब्राह्मणवादी विचारों की अंतःक्रिया।
संगम साहित्य में जैसा कि चित्रित किया गया है, प्राचीन तमिल समाज का सामाजिक जीवन स्थानीय जनजातीय परंपराओं और उत्तर भारत से धीरे-धीरे आ रहे ब्राह्मणवादी मूल्यों के एक रोचक संगम का प्रतिनिधित्व करता है। जहाँ एक ओर लोग अपने प्राचीन देवताओं और प्रकृति की पूजा करते थे, वहीं दूसरी ओर वैदिक यज्ञों, पुरोहितों के सम्मान और वर्ण व्यवस्था के प्रारंभिक तत्वों का प्रभाव भी बढ़ने लगा था। यह समाज पूरी तरह से स्थिर नहीं था, बल्कि यह विचारों के आदान-प्रदान और समन्वय के दौर से गुजर रहा था। संगम कविताओं में इस सांस्कृतिक मेल-जोल और उसके परिणामस्वरूप समाज में आ रहे क्रमिक बदलावों का सूक्ष्म और यथार्थवादी चित्रण मिलता है।

289. (D) दशमलव प्रणाली और शून्य।
प्राचीन भारतीय गणित का संपूर्ण विश्व के लिए सबसे क्रांतिकारी और मौलिक योगदान 'दशमलव स्थान-मान प्रणाली' और 'शून्य' का आविष्कार है। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त जैसे महान गणितज्ञों ने शून्य को न केवल एक प्रतीक, बल्कि एक मूल्यवान संख्या के रूप में स्थापित किया, जिससे जटिल गणनाएं करना अत्यंत सरल हो गया। इस खोज ने ही आधुनिक बीजगणित और कंप्यूटर विज्ञान की नींव रखी। अरबों ने इस प्रणाली को भारतीयों से सीखा और इसे 'हिंदू-अरबी अंक प्रणाली' के रूप में यूरोप तक पहुँचाया। भारतीय गणितज्ञों का यह योगदान मानव सभ्यता के बौद्धिक इतिहास में एक मील का पत्थर है, जिसने विश्व की वैज्ञानिक प्रगति की दिशा और गति को बदल दिया।

290. (B) एक सुदृढ़ और सक्षम नेता पर निर्भरता।
अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य का तेजी से बिखरना यह स्पष्ट करता है कि यह विशाल साम्राज्य सम्राट की व्यक्तिगत योग्यता और उनके करिश्माई नेतृत्व पर निर्भर था। मौर्य प्रशासन अत्यंत केंद्रीकृत था, जहाँ राजा ही सत्ता का स्रोत था। जब तक चन्द्रगुप्त और अशोक जैसे महान शासक थे, साम्राज्य एकजुट रहा। परंतु जैसे ही सत्ता अयोग्य उत्तराधिकारियों के हाथों में आई, केंद्रीय नियंत्रण शिथिल पड़ गया और प्रांतीय गवर्नर स्वतंत्र होने लगे। यह पतन सिद्ध करता है कि एक विशाल और विविध साम्राज्य को केवल एक सुदृढ़ प्रशासनिक ढांचे के भरोसे नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली और दूरदर्शी नेतृत्व के माध्यम से ही लंबे समय तक संभाला जा सकता है।

291. (B) चन्द्रगुप्त मौर्य
प्राचीन भारत में मौर्य साम्राज्य की स्थापना का महान श्रेय चन्द्रगुप्त मौर्य को जाता है, जिन्होंने लगभग 322 ईसा पूर्व में

मगध के सिंहासन पर अधिकार किया था। अपने गुरु चाणक्य की रणनीतिक सहायता से उन्होंने नन्द वंश के अंतिम शासक धनानन्द को पराजित किया और एक विशाल साम्राज्य की नींव रखी। चन्द्रगुप्त ने न केवल भारत को पहली बार एक एकीकृत राजनीतिक सूत्र में पिरोया, बल्कि उत्तर-पश्चिम में यूनानी सेनापति सेल्यूकस निकेटर को हराकर विदेशी प्रभुत्व को भी समाप्त किया। उनके नेतृत्व में भारत ने सैन्य शक्ति और प्रशासनिक कुशलता के एक नए युग में प्रवेश किया, जिसने आने वाली सदियों के लिए एक आदर्श स्थापित किया।

292. (B) कौटिल्य
प्राचीन भारत का महान राजनीतिक और आर्थिक ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' कौटिल्य द्वारा रचित है, जिन्हें चाणक्य या विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है। यह ग्रंथ केवल राजनीति का सिद्धांत नहीं है, बल्कि यह शासन कला, लोक प्रशासन, सैन्य रणनीति, कानून व्यवस्था और अर्थव्यवस्था के प्रबंधन के लिए एक विस्तृत नियमावली है। कौटिल्य ने इसमें राज्य के सप्तांग सिद्धांत और एक राजा के आदर्श कर्तव्यों का सूक्ष्म वर्णन किया है। अर्थशास्त्र के विचार आज भी शासन और कूटनीति के क्षेत्र में अत्यंत प्रासंगिक माने जाते हैं। यह ग्रंथ मौर्य साम्राज्य की नींव को वैचारिक मजबूती प्रदान करने का मुख्य आधार था।

293. (C) पाटलिपुत्र
मौर्य साम्राज्य की विशाल राजधानी 'पाटलिपुत्र' प्राचीन भारत के सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्रों में से एक थी। गंगा और सोन नदियों के संगम पर स्थित होने के कारण यह शहर सामरिक और व्यापारिक दृष्टि से अत्यंत सुरक्षित था। मेगास्थनीज जैसे यूनानी यात्रियों ने पाटलिपुत्र की भव्यता, वहां के नौ मील लंबे सुरक्षा प्राचीरों और विशाल शाही महलों का अत्यंत प्रशंसापूर्ण विवरण दिया है। यह शहर न केवल प्रशासनिक सत्ता का केंद्र था, बल्कि यह बौद्ध धर्म, शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का भी मुख्य केंद्र बना रहा। पाटलिपुत्र की समृद्धि मौर्य साम्राज्य के वैभव का सीधा प्रतिबिंब थी।

294. (B) अशोक
महान मौर्य शासक अशोक भारतीय इतिहास के उन विरले राजाओं में से हैं जिनका हृदय परिवर्तन एक युद्ध की विभीषिका के कारण हुआ था। कलिंग युद्ध में हुए भीषण रक्तपात ने अशोक को गहरा आघात पहुँचाया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने शस्त्र त्यागकर शांति का मार्ग चुना। इसी घटना के बाद उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया और धम्म के नैतिक सिद्धांतों के प्रचार के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। अशोक ने बौद्ध धर्म को केवल स्वयं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्होंने इसके संदेशों को शिलालेखों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया और इसे एक वैश्विक धर्म के रूप में स्थापित करने में केंद्रीय भूमिका निभाई।

295. (B) मेगास्थनीज
चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आने वाला प्रसिद्ध यूनानी राजदूत 'मेगास्थनीज' था, जिसे सेल्यूकस निकेटर ने भेजा था। मेगास्थनीज कई वर्षों तक मौर्य राजधानी पाटलिपुत्र में रहा और वहां के सामाजिक, प्रशासनिक और सैन्य जीवन का सूक्ष्म अवलोकन किया। उसने अपने अनुभवों को 'इंडिका' नामक पुस्तक में संकलित किया, जो मौर्यकालीन भारत के इतिहास को जानने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण विदेशी स्रोत है। हालांकि इंडिका का मूल स्वरूप अप्राप्य है, परंतु उसके उद्धरणों से हमें तत्कालीन भारत के सात वर्गों वाले समाज, नगर प्रशासन की समितियों और राजा की दिनचर्या के बारे में अत्यंत रोचक और प्रमाणिक जानकारी प्राप्त होती है।

296. (B) अशोक
सम्राट अशोक ने अपने शासन के उत्तरार्ध में जिस 'धम्म' की नीति का प्रचार किया, वह उनकी प्रजा के नैतिक उत्थान और सामाजिक सद्भाव के लिए एक महान क्रांतिकारी कदम था। अशोक का धम्म कोई संकुचित धार्मिक विश्वास नहीं था, बल्कि यह सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों जैसे अहिंसा, सत्य, बड़ों के प्रति आदर और सभी धार्मिक संप्रदायों के प्रति सहिष्णुता पर आधारित एक आचार संहिता थी। उन्होंने धम्म महामत्तों की नियुक्ति की और साम्राज्य के सुदूर कोनों में चट्टानों और स्तंभों पर धम्म के सिद्धांतों को उत्कीर्ण करवाया ताकि लोग एक सदाचारी जीवन जी सकें। यह नीति अशोक को एक महान मानवतावादी मार्गदर्शक के रूप में स्थापित करती है।

297. (C) बृहद्रथ
मौर्य वंश का अंतिम शासक 'बृहद्रथ' था, जिसका शासनकाल मौर्य साम्राज्य की गिरती हुई शक्ति और राजनीतिक अस्थिरता का गवाह बना। लगभग 185 ईसा पूर्व में, बृहद्रथ की हत्या उसके अपने ही सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने एक सैन्य परेड के दौरान कर दी थी। इस हिंसक तख्तापलट ने सदियों पुराने मौर्य शासन का अंत कर दिया और मगध पर शुंग वंश की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। बृहद्रथ की मृत्यु के साथ ही भारत का पहला महान एकीकृत साम्राज्य खंडित हो गया। यह घटना मगध के राजदरबार में आंतरिक षड्यंत्रों और सैन्य असंतोष के बढ़ने को दर्शाती है, जिससे मौर्यों का गौरवशाली अध्याय इतिहास में समाप्त हो गया।

298. (A) पुष्यमित्र शुंग
शुंग वंश की स्थापना 'पुष्यमित्र शुंग' ने लगभग 185 ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद की थी। पुष्यमित्र अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ के सेनापति थे और उन्होंने एक बड़े राजनीतिक परिवर्तन के माध्यम से सत्ता पर अधिकार किया। पुष्यमित्र का शासनकाल विशेष रूप से वैदिक परंपराओं और ब्राह्मणवादी मूल्यों के पुनरुद्धार के लिए जाना जाता है, जो मौर्यों के काल में कुछ हद तक गौण हो गए थे। उन्होंने न केवल मगध की सीमाओं की विदेशी आक्रमणकारियों से रक्षा की, बल्कि अश्वमेध यज्ञ जैसे प्राचीन अनुष्ठानों को पुनः प्रारंभ कर शाही गरिमा और भारतीय संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

299. (A) ब्राह्मी
सम्राट अशोक के अधिकांश शिलालेख और स्तंभ लेख मुख्य रूप से 'ब्राह्मी' लिपि में लिखे गए थे, जो उस समय के भारत की सबसे व्यापक और लोकप्रिय लिपि थी। ब्राह्मी लिपि के अक्षरों को पत्थरों पर अत्यंत स्पष्टता के साथ उकेरा गया था, जिससे

(D) स्कंदगुप्त

34. दक्षिण पूर्व एशिया के साथ गुप्त काल के संपर्क मुख्य रूप से किन कारकों से प्रेरित थे?
(A) धार्मिक प्रचार और व्यापार
(B) सैन्य विजय और उपनिवेशवाद
(C) हूण आक्रमणों से शरण लेना
(D) कृषि बस्तियों की स्थापना

35. सूची I (गुप्त काल के ग्रंथ) को सूची II (लेखक/विषय) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. आर्यभटीय
Q. रघुवंश
R. मृच्छकटिकम्
S. कामसूत्र
सूची II:
1. वात्स्यायन
2. शूद्रक
3. कालिदास
4. आर्यभट्ट
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

36. हर्षवर्धन किस वंश के थे?
(A) गुप्त
(B) मौखरि
(C) मैत्रक
(D) पुष्यभूति

37. कन्नौज में स्थानांतरित करने से पहले हर्षवर्धन के साम्राज्य की प्रारंभिक राजधानी क्या थी?
(A) पाटलिपुत्र
(B) उज्जैन
(C) थानेसर
(D) वल्लभी

38. हर्षवर्धन की प्रसिद्ध जीवनी 'हर्षचरित' किसके द्वारा लिखी गई थी?
(A) कालिदास
(B) बाणभट्ट
(C) ह्वेनसांग
(D) रविकीर्ति

39. हर्षवर्धन के दक्षिण की ओर विस्तार को नर्मदा नदी के तट पर किस प्रसिद्ध चालुक्य शासक ने रोका था?
(A) पुलकेशिन प्रथम
(B) कीर्तिवर्मन प्रथम
(C) विक्रमादित्य प्रथम
(D) पुलकेशिन द्वितीय

40. हर्षवर्धन के अधीन प्रशासन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: हर्ष ने अपने साम्राज्य में व्यापक यात्रा करके व्यक्तिगत रूप से प्रशासन का निरीक्षण किया।
कथन II: हर्ष के अधीन दंड संहिता अत्यंत उदार थी, जिसमें मृत्युदंड का कोई उदाहरण नहीं था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

41. हर्ष प्रारंभ में शिव के उपासक थे, किंतु बाद में उनका झुकाव किस अन्य धर्म की ओर हो गया?
(A) जैन धर्म
(B) आजीवक धर्म
(C) महायान बौद्ध धर्म
(D) वैष्णव धर्म

42. हर्ष द्वारा आयोजित महान पंचवर्षीय सभा (मोक्ष परिषद), जिसमें ह्वेनसांग ने भाग लिया था, किस स्थान पर आयोजित की गई थी?
(A) प्रयाग
(B) थानेसर
(C) पाटलिपुत्र
(D) कन्नौज

43. किस प्रसिद्ध प्राचीन विश्वविद्यालय को हर्षवर्धन से महत्वपूर्ण राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ और वह महायान बौद्ध शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बन गया?
(A) तक्षशिला
(B) विक्रमशिला
(C) वल्लभी
(D) नालंदा

44. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र हर्षवर्धन के साम्राज्य के चरमोत्कर्ष काल में उसका हिस्सा नहीं था?
(A) थानेसर
(B) नर्मदा नदी के दक्षिण का क्षेत्र
(C) कन्नौज
(D) आधुनिक बंगाल और ओडिशा के कुछ हिस्से

45. भारत के बारे में चीनी तीर्थयात्री ह्वेनसांग के वृत्तांत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने एक विकसित जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता के प्रचलन का वर्णन किया।
II. उन्होंने सड़कों की सुरक्षा और डकैती की अनुपस्थिति पर ध्यान दिया।
III. उन्होंने शिक्षा प्रणाली, विशेष रूप से नालंदा के कामकाज की प्रशंसा की।

अध्याय 04
प्राचीन भारत की संकल्पनाए एवं विचार

1. प्राचीन भारत में उस संपत्ति के लिए किस शब्द का प्रयोग किया जाता था, जिस पर महिला का पूर्ण अधिकार होता था और जिसे वह प्रायः विवाह के समय उपहार स्वरूप प्राप्त करती थी?
(A) अग्रहार
(B) स्त्रीधन
(C) वेसर
(D) स्मारक पत्थर

2. प्राचीन भारतीय भूमि अनुदान, जिसे 'अग्रहार' कहा जाता था, के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अग्रहार आमतौर पर धार्मिक संस्थानों को दिए जाने वाले भूमि अनुदान थे।
कथन II: अग्रहार विशेष रूप से ब्राह्मणों को उनके ज्ञान और धार्मिक कर्तव्यों के लिए दिए जाने वाले भूमि अनुदान थे।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

3. निम्नलिखित में से कौन सी मंदिर वास्तुकला की एक प्रमुख शैली नहीं है?
(A) नागर
(B) द्रविड़
(C) गांधार
(D) वेसर

4. मंदिर वास्तुकला की वेसर शैली को किन दो शैलियों का मिश्रित स्वरूप माना जाता है?
(A) नागर और कलिंग
(B) द्रविड़ और पल्लव
(C) गुप्त और गांधार
(D) नागर और द्रविड़

5. प्राचीन भारत में स्मारक पत्थरों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) वे विशेष रूप से राज्य द्वारा बड़े युद्धों में सैन्य विजय की स्मृति में स्थापित किए जाते थे।
(B) वे मुख्य रूप से दान किए गए अग्रहारों की सीमाओं को परिभाषित करने के लिए पवित्र चिह्नों के रूप में प्रयुक्त होते थे।
(C) वे शहीद नायकों या सती अनुष्ठान करने वाली महिलाओं की स्मृति में स्थापित किए जाते थे।
(D) वे एक विशिष्ट स्थापत्य विशेषता थे जो केवल गुप्त साम्राज्य के प्रशासनिक केंद्रों में पाए जाते थे।

6. मंदिर वास्तुकला की नागर शैली मुख्य रूप से भारत के किस क्षेत्र से संबंधित है?
(A) दक्षिण भारत
(B) उत्तर भारत
(C) पूर्वी भारत
(D) पश्चिम भारत

7. प्राचीन भारतीय समाज में 'अग्रहार' का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) विभिन्न विदेशी वस्तुओं के लिए एक व्यस्त बाज़ार
(B) सेना के लिए एक सुरक्षित सैन्य छावनी
(C) श्रेणियों और शिल्पकारों के लिए एक आवासीय क्षेत्र
(D) ब्राह्मणों या धार्मिक निकायों को दिया गया भूमि अनुदान

8. द्रविड़ स्थापत्य शैली के बारे में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) यह गुप्त और कुषाण तत्वों का मिश्रण करने वाली एक मिश्रित शैली है।
(B) यह मुख्य रूप से दक्षिण भारत में पाई जाती है।
(C) इसकी विशेषता एक पिरामिडनुमा शिखर है जिसे 'विमान' कहा जाता है।
(D) इसमें प्रायः मंदिर परिसर के भीतर एक बड़ा जल कुंड होता है।

9. गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक किसे माना जाता है जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की थी?
(A) समुद्रगुप्त
(B) श्रीगुप्त
(C) चंद्रगुप्त प्रथम
(D) घटोत्कच

10. प्राचीन भारत में 'स्त्रीधन' के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह महिला की संतानों द्वारा उत्तराधिकार में प्राप्त किया जा सकता था।
II. इसके व्यय पर उसके पति का पूर्ण नियंत्रण होता था।
III. इसमें केवल भूमि जैसी अचल संपत्ति शामिल थी।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III

भेजकर महायान बौद्ध धर्म को एक अंतरराष्ट्रीय पहचान प्रदान की, जिससे यह विश्व के एक बड़े हिस्से का धर्म बन सका।

267. (C) मदुरै
प्राचीन तमिल परंपराओं के अनुसार, 'संगम' शब्द का तात्पर्य उन कवियों और विद्वानों की महान सभाओं से है जो पाण्ड्य राजाओं के उदार संरक्षण में उनकी राजधानी 'मदुरै' में आयोजित की गई थीं। माना जाता है कि मदुरै में ही ऐसी तीन महत्वपूर्ण सभाएं हुई थीं जहाँ हजारों विद्वानों ने अपनी साहित्यिक कृतियाँ प्रस्तुत कीं और उनका संकलन किया गया। मदुरै न केवल इन साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र था, बल्कि यह दक्षिण भारत की शिक्षा, संस्कृति और व्यापार का भी हृदय स्थल था। संगम सभाओं के कारण ही मदुरै को तमिल भाषा और उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की जननी के रूप में सम्मानित किया जाता है।

268. (B) कौटिल्य को अर्थशास्त्र में।
राज्य का 'सप्तांग सिद्धांत' कौटिल्य के महान राजनीतिक ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' का सबसे प्रभावशाली और आधारभूत दर्शन है। इस सिद्धांत में उन्होंने राज्य को एक जीवित अंग के रूप में परिकल्पित किया है, जिसके सात अंग—स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र—परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। कौटिल्य का तर्क था कि जिस प्रकार एक शरीर बिना किसी अंग के अक्षम हो जाता है, उसी प्रकार राज्य की स्थिरता और शक्ति के लिए इन सातों घटकों का कुशलतापूर्वक कार्य करना अनिवार्य है। यह सिद्धांत प्राचीन भारत के प्रशासनिक विज्ञान की परिपक्वता और सूक्ष्म दृष्टि का एक कालजयी उदाहरण है।

269. (D) सौराष्ट्र
सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य की 'सौराष्ट्र' क्षेत्र की विजय ने मौर्य साम्राज्य की पहुंच को पहली बार 'अरब सागर' के तट तक विस्तृत कर दिया। यह विजय मौर्यों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी क्योंकि इससे उन्हें पश्चिमी तट के समृद्ध बंदरगाहों तक सीधा रास्ता मिल गया, जिससे रोमन और यूनानी विश्व के साथ समुद्री व्यापार के नए अवसर खुले। जूनागढ़ शिलालेख में सुदर्शन झील के निर्माण का उल्लेख इस क्षेत्र पर मौर्यों के सुदृढ़ प्रशासनिक नियंत्रण की पुष्टि करता है। इस विस्तार ने मौर्य साम्राज्य को एक महान समुद्री और व्यापारिक शक्ति बनने में सहायता की, जिससे भारत की आर्थिक संपन्नता और बढ़ी।

270. (A) सामाजिक उत्तरदायित्व और अहिंसा।
सम्राट अशोक के 'धम्म' का मूल दर्शन किसी जटिल धार्मिक पूजा पद्धति के बजाय 'सामाजिक उत्तरदायित्व और अहिंसा' के व्यावहारिक सिद्धांतों पर आधारित है। धम्म का मुख्य उद्देश्य समाज में आपसी सद्भाव को बढ़ावा देना और लोगों के बीच नैतिक व्यवहार को सुदृढ़ करना था। अशोक ने अपने संदेशों में बड़ों के प्रति सम्मान, सत्य बोलने, जीवों के प्रति दया भाव रखने और सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता दिखाने पर विशेष बल दिया। यह धम्म नीति सम्राट की प्रजा के प्रति उनकी करुणा और एक न्यायप्रिय एवं शांतिपूर्ण समाज के निर्माण की उनकी महान आकांक्षा का सच्चा प्रतिबिंब है।

271. (C) उत्पत्ति और लेखन की दिशा।
ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों के बीच का मुख्य अंतर उनकी उत्पत्ति और लिखने के तरीके में निहित है। ब्राह्मी लिपि पूरी तरह से भारतीय मूल की है और यह 'बाएं से दाएं' लिखी जाती है। इसके विपरीत, खरोष्ठी लिपि की उत्पत्ति अरामी लिपि से प्रभावित मानी जाती है और यह 'दाएं से बाएं' लिखी जाती थी। खरोष्ठी का उपयोग मुख्य रूप से मौर्य साम्राज्य के उत्तर-पश्चिमी हिस्सों में किया गया था, जबकि ब्राह्मी पूरे उपमहाद्वीप में व्यापक रूप से प्रचलित थी। इन दो लिपियों का सह-अस्तित्व प्राचीन भारत की भाषाई विविधता और विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों के सुंदर संगम को दर्शाता है।

272. (A) सहिष्णु व्यक्तिगत ब्राह्मणवाद।
सातवाहन शासकों की धार्मिक नीति को 'सहिष्णु व्यक्तिगत ब्राह्मणवाद' के रूप में सबसे सटीक रूप से वर्णित किया जा सकता है। यद्यपि सातवाहन राजा स्वयं कट्टर ब्राह्मण थे और उन्होंने अश्वमेध तथा राजसूय जैसे प्राचीन वैदिक यज्ञों का अनुष्ठान किया था, परंतु उन्होंने अपनी प्रजा के बीच अन्य धर्मों, विशेष रूप से बौद्ध धर्म के प्रति कभी भेदभाव नहीं किया। उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं को उदारतापूर्वक भूमि दान दी और भव्य मठों एवं स्तूपों के निर्माण में भरपूर सहायता प्रदान की। उनकी यह उदारता समाज में धार्मिक सद्भाव बनाए रखने और शासन के प्रति जनसमर्थन जुटाने की एक सफल रणनीति थी।

273. (D) खारवेल
कलिंग के चेदि वंश का सबसे प्रतापी और ऐतिहासिक रूप से विख्यात शासक 'खारवेल' था। खारवेल ने मौर्यों के पतन के बाद कलिंग की शक्ति को पुनः स्थापित किया और उसे एक विशाल साम्राज्य में बदल दिया। उनके शासनकाल की सैन्य उपलब्धियों और उनके द्वारा किए गए जनकल्याणकारी कार्यों का विस्तृत विवरण हाथीगुम्फा शिलालेख से प्राप्त होता है। खारवेल एक कुशल योद्धा होने के साथ-साथ कला और धर्म के भी महान संरक्षक थे। उन्होंने जैन धर्म के प्रति अपनी अटूट निष्ठा दिखाई और कलिंग को प्राचीन भारत के राजनीतिक मानचित्र पर एक गौरवशाली स्थान दिलाया।

274. (B) कोरकई
संगम युग में पाण्ड्य साम्राज्य का सबसे महत्वपूर्ण और वैभवशाली बंदरगाह 'कोरकई' था, जो थमिराबरानी नदी के मुहाने पर स्थित था। यह स्थान प्राचीन विश्व में मोतियों के व्यापार के लिए सबसे बड़ा केंद्र माना जाता था। कोरकई से प्राप्त होने वाले अनमोल मोतियों की रोमन साम्राज्य और सुदूर पूर्व के देशों में भारी मांग थी, जिससे पाण्ड्य राजाओं को प्रचुर मात्रा में धन और प्रतिष्ठा प्राप्त होती थी। संगम साहित्य में कोरकई के तटों पर विदेशी जहाजों की भीड़ और वहां होने वाली व्यापक व्यापारिक गतिविधियों का अत्यंत सजीव वर्णन मिलता है, जो पाण्ड्यों की आर्थिक संपन्नता का मुख्य आधार था।

275. (C) सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण की खोज।
प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने विज्ञान के क्षेत्र में कई क्रांतिकारी सिद्धांत प्रस्तुत किए थे, जिनमें पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने की अवधारणा, ग्रहणों के वास्तविक वैज्ञानिक कारणों

उसके सिक्कों से प्रमाणित होता है।
कथन II: कुमारगुप्त प्रथम का शासनकाल मुख्यतः शांतिपूर्ण था और राजनीतिक स्थिरता इसकी विशेषता थी।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

23. गुप्त काल के दौरान, प्रांतीय राज्यपालों को प्रायः किस उपाधि से जाना जाता था?
(A) समाहर्ता
(B) सन्निधाता
(C) राजुक
(D) उपरिक

24. गुप्त काल के दौरान कराधान का सबसे सामान्य रूप क्या था?
(A) कृषि उपज का एक हिस्सा, प्रायः छठा भाग।
(B) सभी आयातित विलासिता की वस्तुओं पर लगाया जाने वाला व्यापार कर।
(C) सीधे राजा के निजी मंदिर को दिया जाने वाला धार्मिक कर।
(D) प्रत्येक वयस्क पुरुष निवासी से एकत्र किया जाने वाला मानक कर।

25. गुप्त काल के दौरान प्रशासनिक भूमिकाओं के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) महादंडनायक - मुख्य न्यायिक अधिकारी
(B) कुमारमात्य - उच्च पदस्थ अधिकारियों का एक संवर्ग
(C) विषयपति - एक प्रांत (भुक्ति) का प्रमुख
(D) संधि विग्रहिक - शांति और युद्ध का मंत्री

26. निम्नलिखित में से कौन सी गुप्त काल के दौरान सामाजिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता नहीं थी?
(A) अस्पृश्यता की प्रथा का पूर्ण उन्मूलन।
(B) वर्ण व्यवस्था की सुदृढ़ता।
(C) उत्तर-वैदिक युग की तुलना में महिलाओं की स्थिति में सुधार।
(D) जातियों और उप-जातियों का प्रसार।

27. गुप्त काल के दौरान अर्थव्यवस्था के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्वर्ण मुद्राएँ प्रचुर मात्रा में जारी की गई थीं, जो एक समृद्ध अर्थव्यवस्था का संकेत थीं।
II. रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार में गिरावट आई, किंतु दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार विकसित हुआ।
III. शिल्पकारों और व्यापारियों के लिए श्रेणी प्रणाली अत्यधिक विकसित थी।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

28. प्रसिद्ध अजंता और एलोरा की गुफाएँ, जो अपने भित्ति चित्रों और मूर्तियों के लिए जानी जाती हैं, को गुप्त और किस अन्य समकालीन राजवंश के शासनकाल के दौरान महत्वपूर्ण संरक्षण मिला?
(A) पल्लव
(B) वाकाटक
(C) चोल
(D) पाल

29. निम्नलिखित में से कौन गुप्त काल के दौरान धार्मिक जीवन का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(A) बौद्ध धर्म एकमात्र राजकीय धर्म बन गया।
(B) जैन धर्म ने अपने सर्वाधिक विस्तार काल का अनुभव किया।
(C) भक्ति के उदय के साथ ब्राह्मणवाद का पुनरुत्थान हुआ।
(D) सभी धार्मिक गतिविधियों में गिरावट आई।

30. प्रसिद्ध संस्कृत कवि और नाटककार कालिदास पारंपरिक रूप से किस गुप्त सम्राट के दरबार से संबंधित रहे हैं?
(A) समुद्रगुप्त
(B) स्कंदगुप्त
(C) कुमारगुप्त प्रथम
(D) चंद्रगुप्त द्वितीय

31. देवगढ़ का दशावतार मंदिर किस काल की कला और वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) गुप्त
(B) मौर्य
(C) कुषाण
(D) चोल

32. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): गुप्त काल को प्रायः प्राचीन भारत का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है।
कारण (R): इस युग में विज्ञान, साहित्य, कला और वास्तुकला में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ देखी गईं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

33. चीनी तीर्थयात्री फाहियान के वृत्तांत किस गुप्त राजा के शासनकाल के दौरान समाज और प्रशासन के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं?
(A) समुद्रगुप्त
(B) चंद्रगुप्त द्वितीय
(C) कुमारगुप्त प्रथम

अशोक के धम्म और उनके आदेशों को जनता आसानी से समझ सके। यह लिपि ही आधुनिक देवनागरी और दक्षिण भारत की कई लिपियों की जननी मानी जाती है। जेम्स प्रिंसेप द्वारा 1837 में इस लिपि को पढ़ने की सफलता ने प्राचीन भारतीय इतिहास के एक महान युग के रहस्यों को खोलने में मदद की। ब्राह्मी लिपि का उपयोग अशोक के अखिल भारतीय विज़न का एक ठोस प्रमाण है।

300. (B) सारनाथ
भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया प्रसिद्ध 'सिंह शीर्ष' उत्तर प्रदेश के सारनाथ में स्थित है, जहाँ सम्राट अशोक ने एक विशाल स्तंभ स्थापित करवाया था। यह भव्य कृति बौद्ध धर्म में बुद्ध द्वारा दिए गए प्रथम उपदेश के सम्मान में निर्मित की गई थी। इसमें चार सिंह एक-दूसरे की ओर पीठ करके खड़े हैं, जो शक्ति, साहस और आत्मविश्वास का प्रतीक हैं। इसकी अद्भुत चमकदार पॉलिश और कलात्मक बारीकियां मौर्यकालीन मूर्तिकला के चरमोत्कर्ष को दर्शाती हैं। आधुनिक भारत ने 1950 में इसे अपनी राष्ट्रीय पहचान और गौरव के प्रतीक के रूप में स्वीकार कर इसकी ऐतिहासिक महत्ता को सम्मानित किया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

46. कार्कोट राजवंश भारत के किस क्षेत्र का एक प्रमुख शासक वंश था?
(A) बंगाल
(B) कामरुप
(C) गुजरात
(D) कश्मीर

47. पाल राजवंश, जिसने बंगाल और बिहार पर शासन किया, किस धर्म के महान संरक्षक थे?
(A) बौद्ध धर्म
(B) शैव धर्म
(C) वैष्णव धर्म
(D) जैन धर्म

48. प्रसिद्ध विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना किस पाल शासक ने की थी?
(A) गोपाल
(B) धर्मपाल
(C) देवपाल
(D) महीपाल प्रथम

49. कश्मीर के निम्नलिखित राजवंशों को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. लोहार
2. कार्कोट
3. उत्पल
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

50. वर्मन राजवंश, जो गुप्तों और हर्ष का समकालीन था, ने पूर्वी भारत के किस राज्य पर शासन किया था?
(A) कामरुप
(B) ओड्र
(C) वंग
(D) मगध

51. सेन राजवंश, जो बंगाल में पालों के उत्तराधिकारी बने, किस धार्मिक परंपरा के संरक्षक थे?
(A) बौद्ध धर्म
(B) जैन धर्म
(C) ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म, विशेष रुप से वैष्णव धर्म
(D) केवल तंत्रवाद

52. ललितादित्य मुक्तापीड़, जो कश्मीर के सर्वाधिक शक्तिशाली शासकों में से एक थे, किस वंश के थे?
(A) उत्पल
(B) लोहार
(C) वर्मन
(D) कार्कोट

53. कन्नौज के नियंत्रण के लिए 'त्रिपक्षीय संघर्ष' में पाल, गुर्जर-प्रतिहार और कौन सी अन्य प्रमुख शक्ति शामिल थी?
(A) चालुक्य
(B) चोल
(C) राष्ट्रकूट
(D) पल्लव

54. सेन राजवंश का अंतिम महान शासक कौन था, जिसके संरक्षण में जयदेव ने 'गीत गोविंद' लिखा था?
(A) विजय सेन
(B) लक्ष्मण सेन
(C) बल्लाल सेन
(D) हेमंत सेन

55. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): पाल शासकों ने श्रीविजय साम्राज्य जैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई राज्यों के साथ सुदृढ़ सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध बनाए रखे।
कारण (R): पाल और श्रीविजय के शासक दोनों ही महायान बौद्ध धर्म के अनुयायी और संरक्षक थे।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

56. वातापि के चालुक्यों को किस अन्य नाम से भी जाना जाता है?
(A) पश्चिमी चालुक्य
(B) पूर्वी चालुक्य
(C) वेंगी के चालुक्य
(D) कल्याणी के चालुक्य

57. चालुक्यों की राजधानी वातापि आधुनिक समय का बादामी है, जो किस भारतीय राज्य में स्थित है?
(A) तमिलनाडु
(B) आंध्र प्रदेश
(C) कर्नाटक
(D) महाराष्ट्र

58. चालुक्य शाखाओं और उनकी संबंधित राजधानियों के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(A) वातापि के चालुक्य - बादामी
(B) वातापि के चालुक्य - वेंगी

128. धर्मपाल द्वारा स्थापित विक्रमशिला विश्वविद्यालय शिक्षा की किस शाखा के लिए एक प्रसिद्ध केंद्र था?
(A) वैदिक अनुष्ठान
(B) वज्रयान बौद्ध धर्म
(C) हीनयान बौद्ध धर्म
(D) अद्वैत दर्शन

129. किस क्षेत्र में लोहार राजवंश उत्पल राजवंश का उत्तराधिकारी बना?
(A) कामरुप
(B) कश्मीर
(C) बंगाल
(D) गुजरात

130. वातापि के चालुक्यों की स्थापत्य उपलब्धियों को स्थलों के किस समूह में सर्वोत्तम रुप से देखा जा सकता है?
(A) ऐहोल, बादामी और पट्टडकल
(B) कांची और महाबलीपुरम
(C) एलोरा और एलिफेंटा
(D) तंजावुर और गंगेयकोंडचोलपुरम

131. चोल कला के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह अपनी शानदार कांस्य मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
II. नटराज की प्रतिमा चोल कांस्य कला का एक प्रमुख उदाहरण है।
III. बृहदेश्वर मंदिर की दीवारों पर चोल चित्रकला पाई जाती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I
(D) I, II और III

132. 'स्मारक पत्थर' (वीरगल) किसकी स्मृति में बनाए जाते थे?
(A) एक नए राजा का राज्याभिषेक
(B) एक नए मंदिर का निर्माण
(C) ब्राह्मण को भूमि का अनुदान
(D) युद्ध में एक नायक की मृत्यु या सती होने वाली महिला

133. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राष्ट्रकूट कन्नौज के नियंत्रण के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में निरंतर संलग्न रहे।
कारण (R): उस काल के दौरान कन्नौज पर नियंत्रण उत्तर भारत में शाही संप्रभुता का प्रतीक था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

134. निम्नलिखित में से कौन 'नागर' शैली के मंदिर की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) एक सपाट छत
(B) वक्राकार मीनार जिसे शिखर कहा जाता है
(C) पिरामिडनुमा मीनार जिसे विमान कहा जाता है
(D) एक अष्टकोणीय आधार योजना

135. महान होयसल शासक कौन था जो वैष्णव धर्म का संरक्षक था और जिसने बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर निर्मित कराया था?
(A) बल्लाल द्वितीय
(B) नरसिंह तृतीय
(C) विनयादित्य
(D) विष्णुवर्धन

136. गुप्त और वाकाटक राजवंशों के बीच संबंधों के बारे में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) वाकाटकों को अंततः गुप्त साम्राज्य में विलीन कर लिया गया था।
(B) इसे एक वाकाटक राजा के साथ प्रभावतीगुप्त के विवाह द्वारा सुदृढ़ किया गया था।
(C) वाकाटकों ने दक्कन के एक बड़े भाग पर शासन किया।
(D) इस गठबंधन ने शकों के विरुद्ध युद्ध में चंद्रगुप्त द्वितीय की सहायता की।

137. बंगाल का सेन राजवंश संस्कृत साहित्य के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है। लक्ष्मण सेन के दरबार में निम्नलिखित में से कौन एक प्रसिद्ध कवि था?
(A) कालिदास
(B) बाणभट्ट
(C) जयदेव
(D) भवभूति

138. पूर्वी चालुक्यों ने अपनी राजधानी कहाँ से शासन किया?
(A) वेंगी
(B) वातापि
(C) कल्याणी
(D) मान्यखेत

139. काकतीय रानी रुद्रमादेवी ने 13वीं शताब्दी में शासन किया और उनके शासन का वर्णन किस प्रसिद्ध यात्री ने किया था?
(A) फाहियान
(B) ह्वेनसांग
(C) अल-बिरुनी
(D) मार्को पोलो

140. सूची I (प्राचीन विश्वविद्यालय) को सूची II (संस्थापक/संरक्षक राजवंश) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. नालंदा
Q. विक्रमशिला
R. वल्लभी

(B) सोलंकी
(C) पाल
(D) चोल

71. गुजरात के किस सोलंकी शासक को महमूद गजनवी की सेना को पराजित करने और सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का श्रेय दिया जाता है?
(A) मूलराज प्रथम
(B) जयसिंह सिद्धराज
(C) कुमारपाल
(D) भीम प्रथम

72. राष्ट्रकूट राजवंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राष्ट्रकूट प्रशासन गुप्त और चालुक्य प्रशासनों की तर्ज पर संगठित था।
कथन II: राष्ट्रकूट कला का सर्वोत्तम उदाहरण एलोरा और एलिफेंटा की रॉक-कट वास्तुकला है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

73. पल्लव राजवंश ने दक्षिण भारत के एक बड़े भाग पर शासन किया, उनकी राजधानी कहाँ थी?
(A) मदुरै
(B) तंजावुर
(C) कांचीपुरम
(D) वेंगी

74. पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम प्रारंभ में जैन थे, किंतु बाद में वे किस संत के प्रभाव में आकर शैव धर्म में दीक्षित हुए?
(A) अप्पार
(B) संबंधर
(C) सुंदरर
(D) माणिक्यवाचकर

75. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): पल्लव राजा नरसिंहवर्मन प्रथम ने 'वातापिंड' की उपाधि धारण की।
कारण (R): उन्होंने अपने पिता की हार का प्रतिशोध लेने के लिए चालुक्यों की राजधानी वातापि पर अधिकार कर लिया और उसे विनष्ट कर दिया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

76. ममल्लापुरम में 'रथ' मंदिरों के रूप में जानी जाने वाली रॉक-कट मंदिरों की विशिष्ट शैली का निर्माण किस राजवंश के संरक्षण में किया गया था?
(A) चोल
(B) पल्लव
(C) पांड्य
(D) राष्ट्रकूट

77. निम्नलिखित में से कौन पल्लव कला और वास्तुकला की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) ईंट और चूने का अनन्य उपयोग
(B) बड़े पिरामिडनुमा गोपुरम का निर्माण
(C) रॉक-कट से संरचनात्मक मंदिरों में संक्रमण
(D) किसी भी धार्मिक मूर्ति की अनुपस्थिति

78. 'दशकुमारचरित' के लेखक महान संस्कृत विद्वान दण्डिन, माना जाता है कि किस पल्लव शासक के दरबार को सुशोभित करते थे?
(A) महेंद्रवर्मन प्रथम
(B) नरसिंहवर्मन प्रथम
(C) नंदीवर्मन द्वितीय
(D) नरसिंहवर्मन द्वितीय

79. निम्नलिखित में से कौन महान पल्लव शासकों में से एक नहीं है?
(A) राजेंद्र चोल
(B) महेंद्रवर्मन प्रथम
(C) नरसिंहवर्मन प्रथम
(D) नरसिंहवर्मन द्वितीय

80. महाबलीपुरम में शोर मंदिर (तटीय मंदिर), जो एक संरचनात्मक पाषाण मंदिर है, किस पल्लव राजा द्वारा निर्मित किया गया था?
(A) महेंद्रवर्मन प्रथम
(B) नरसिंहवर्मन द्वितीय
(C) नरसिंहवर्मन प्रथम
(D) परमेश्वरवर्मन प्रथम

81. पल्लव प्रशासन में 'सभा' और 'ऊर' की क्या भूमिका थी?
(A) वे भूमि करों के प्रकार थे।
(B) वे प्रशासनिक कार्यों वाली ग्रामीण संस्थाएँ थीं।
(C) वे सैन्य प्रभाग थे।
(D) वे दरबारी अधिकारियों की उपाधियाँ थीं।

82. चोल राजवंश ने किस पूर्ववर्ती राजवंश के सामंतों को पदच्युत कर प्रमुखता प्राप्त की?
(A) पल्लव
(B) राष्ट्रकूट
(C) चेर
(D) पांड्य

सूची II:
1. रुद्रमादेवी
2. विष्णुवर्धन
3. रामचंद्र
4. दुर्विनीत
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

106. गुप्त काल के शासन के संदर्भ में 'भुक्ति' शब्द किसे संदर्भित करता था?
(A) एक प्रांत
(B) एक जिला
(C) एक गाँव
(D) गाँवों का एक समूह

107. मध्यकालीन बंगाल के शासक राजवंशों की धार्मिक संबद्धताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: बंगाल के पाल शासक कट्टर शैव थे।
कथन II: पालों के उत्तराधिकारी सेन शासक वैष्णव धर्म के महान संरक्षक थे।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

108. वेसर स्थापत्य शैली किन दो राजवंशों के संरक्षण में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची?
(A) पल्लव और चोल
(B) परवर्ती चालुक्य और होयसल
(C) पाल और सेन
(D) गुप्त और वाकाटक

109. कौन सा राजवंश अपने राजाओं के नाम पर मंदिर विकास की 'चार शैलियों': महेंद्र शैली, ममल्ल शैली, राजसिंह शैली और नंदीवर्मन शैली से संबंधित है?
(A) चोल
(B) चालुक्य
(C) पल्लव
(D) राष्ट्रकूट

110. निम्नलिखित में से कौन सी साहित्यिक कृति रामगुप्त के शासन का प्रमाण प्रदान करती है?
(A) बाणभट्ट द्वारा रचित हर्षचरित
(B) कालिदास द्वारा रचित रघुवंश
(C) हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति
(D) विशाखदत्त द्वारा रचित देवीचंद्रगुप्तम

111. समुद्रगुप्त की विजयों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) उन्होंने दक्षिणी राजाओं के प्रति 'ग्रहण-मोक्ष-अनुग्रह' की नीति अपनाई।
(B) उन्हें वाकाटक शासक प्रवरसेन द्वितीय ने पराजित किया था।
(C) उन्होंने दक्षिण भारत के सभी राज्यों को अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया था।
(D) उन्होंने वन साम्राज्यों (आटविक-राज्यों) को पूर्णतः उपेक्षित कर दिया था।

112. 'अग्रहार' शब्द का अर्थ है:
(A) राजकीय करों को जमा करने के लिए एक शाही केंद्रीय कोष।
(B) विद्वान ब्राह्मणों को दिया जाने वाला भूमि अनुदान।
(C) कुलीन सैन्य सैनिकों के लिए एक आवासीय क्षेत्र।
(D) कुशल स्थानीय शिल्पकारों पर लगाया जाने वाला एक पेशेवर कर।

113. निम्नलिखित राजवंशों और उनकी संबंधित राजधानियों में से गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(A) पल्लव - कांची
(B) राष्ट्रकूट - वेंगी
(C) वातापि के चालुक्य - बादामी
(D) चोल - तंजावुर

114. किस गुप्त सम्राट के शासनकाल में निरंतर हूण आक्रमणों के कारण साम्राज्य का पतन प्रारंभ हुआ?
(A) स्कंदगुप्त
(B) चंद्रगुप्त द्वितीय
(C) कुमारगुप्त प्रथम
(D) बुधगुप्त

115. पल्लव काल के दौरान संस्कृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली विकसित की।
II. नयनार (शैव संत) और आलवार (वैष्णव संत) ने इस अवधि के दौरान भक्ति आंदोलन का नेतृत्व किया।
III. संस्कृत एकमात्र आधिकारिक भाषा थी, और तमिल को कोई संरक्षण नहीं दिया गया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I
(D) I, II और III

116. चोलों का नौसैनिक प्रभुत्व किसके शासनकाल के दौरान सर्वाधिक प्रमुखता से प्रदर्शित हुआ?
(A) विजयालय और आदित्य प्रथम
(B) परान्तक प्रथम
(C) कुलोत्तुंग प्रथम

95. पश्चिमी गंग राजवंश ने आधुनिक कर्नाटक के एक बड़े भाग पर शासन किया, उनकी राजधानी प्रारंभ में कोलार थी और बाद में कहाँ हुई?
(A) तलकाड़
(B) द्वारसमुद्र
(C) बादामी
(D) वेंगी

96. दक्षिणापथ के अन्य राज्यों के बारे में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) होयसल अपनी विशिष्ट तारे के आकार की मंदिर योजनाओं के लिए जाने जाते हैं।
(B) गंग राजवंश मुख्य रूप से कलिंग क्षेत्र में स्थापित किया गया था।
(C) देवगिरि के यादवों को अंततः दिल्ली सल्तनत ने अपने अधीन कर लिया था।
(D) काकतीय शासक रुद्रमादेवी भारतीय इतिहास में शासन करने वाली कुछ रानियों में से एक थीं।

97. श्रवणबेलगोला में प्रसिद्ध गोमतेश्वर की एकाश्म प्रतिमा किस राजवंश के एक मंत्री द्वारा निर्मित कराई गई थी?
(A) होयसल
(B) पश्चिमी गंग
(C) कदंब
(D) चोल

98. निम्नलिखित में से कौन सी होयसल मंदिर वास्तुकला की सर्वाधिक विशिष्ट विशेषता है?
(A) नरम सोपस्टोन का उपयोग जिससे जटिल नक्काशी संभव हुई
(B) बड़े पिरामिडनुमा गोपुरम
(C) एकाश्म रथ
(D) सादी और अलंकरण रहित बाहरी दीवारें

99. हनमकोंडा का 'सहस्त्र स्तंभ मंदिर' किस राजवंश की वास्तुकला का एक श्रेष्ठ उदाहरण है?
(A) यादव
(B) होयसल
(C) काकतीय
(D) पल्लव

100. गुप्त साम्राज्य के शासकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. समुद्रगुप्त के दक्षिणी अभियान में कई राजाओं को पराजित करना और फिर उन्हें पुनर्स्थापित करना शामिल था।
II. चंद्रगुप्त द्वितीय ने पश्चिमी क्षत्रपों को विजित कर साम्राज्य का विस्तार किया।
III. स्कंदगुप्त का शासनकाल पुष्यमित्रों और हूणों के विरुद्ध संघर्षों के लिए जाना जाता था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

101. हर्षवर्धन के जीवन की निम्नलिखित घटनाओं को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. थानेसर के सिंहासन पर बैठना
2. राजधानी को कन्नौज में स्थानांतरित करना
3. पुलकेशिन द्वितीय के हाथों पराजय
4. ह्वेनसांग द्वारा सम्मिलित प्रयाग सभा
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 1, 2, 4

102. निम्नलिखित में से कौन सा गुप्त काल के दौरान विदेशी व्यापार के लिए एक प्रमुख बंदरगाह नहीं था?
(A) ताम्रलिप्ति
(B) इंद्रप्रस्थ
(C) भड़ौच
(D) सोपारा

103. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 4वीं और 5वीं शताब्दी ईस्वी में दक्कन की राजनीतिक स्थिरता के लिए गुप्त-वाकाटक संबंध महत्वपूर्ण थे।
कारण (R): दोनों राजवंशों के बीच वैवाहिक गठबंधन ने गुप्तों को पश्चिमी क्षत्रपों के विरुद्ध उनके अभियान में सामरिक लाभ प्रदान किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

104. प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय विशेष रूप से किस विचारधारा के लिए शिक्षा का एक बड़ा केंद्र था?
(A) महायान बौद्ध धर्म
(B) हीनयान बौद्ध धर्म
(C) अद्वैत वेदांत
(D) श्वेतांबर जैन धर्म

105. सूची I (राजवंश) को सूची II (एक प्रमुख शासक) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. यादव
Q. होयसल
R. काकतीय
S. पश्चिमी गंग

(B) सोलंकी
(C) प्रारंभिक चालुक्य
(D) परवर्ती पश्चिमी चालुक्य

152. कश्मीर के इतिहास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: कार्कोट राजवंश के शासन का विवरण कल्हण की 'राजतरंगिणी' में दिया गया है।
कथन II: कार्कोट राजवंश के ललितादित्य मुक्तापीड़ ने कश्मीर के मार्तंड में प्रसिद्ध सूर्य मंदिर निर्मित कराया था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

153. दक्षिण भारत में वर्चस्व के संघर्ष में पल्लवों के मुख्य प्रतिद्वंद्वी किस राजवंश के शासक थे?
(A) पांड्य
(B) चेर
(C) वातापि के चालुक्य
(D) राष्ट्रकूट

154. निर्वाचित समितियों (वारियम) के साथ ग्राम स्वायत्तता की प्रणाली किस राजवंश के प्रशासन की एक प्रमुख विशेषता थी?
(A) चोल
(B) गुप्त
(C) मौर्य
(D) वर्धन

155. होयसल मंदिर प्रायः एक ऊंचे मंच पर बनाए जाते हैं जिसे कहा जाता है:
(A) शिखर
(B) गर्भगृह
(C) मंडप
(D) जगती

156. गुप्त प्रशासन में 'संधिविग्रहिक' किस विभाग का प्रभारी मंत्री था?
(A) राजस्व और वित्त
(B) शांति और युद्ध
(C) न्याय
(D) शाही घराना

157. निम्नलिखित में से कौन सी समुद्रगुप्त की उपलब्धि नहीं है?
(A) प्रयाग प्रशस्ति में उनकी विजयों का विस्तृत विवरण
(B) अश्वमेध यज्ञ का संपादन
(C) हूणों की पराजय और 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण करना
(D) संगीत का संरक्षण, जिससे उन्हें 'कविराज' की उपाधि मिली

158. कांची का कैलाशनाथ मंदिर, जो संरचनात्मक मंदिर वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, किस पल्लव राजा द्वारा निर्मित कराया गया था?
(A) महेंद्रवर्मन प्रथम
(B) नरसिंहवर्मन प्रथम
(C) दंतिवर्मन
(D) नरसिंहवर्मन द्वितीय

159. नर्मदा के तट पर हर्षवर्धन को पराजित करने वाला चालुक्य शासक कौन था?
(A) पुलकेशिन द्वितीय
(B) विक्रमादित्य प्रथम
(C) कीर्तिवर्मन द्वितीय
(D) मंगलेश

160. सूची I (राज्य) को सूची II (राजधानी) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. होयसल
Q. काकतीय
R. यादव
S. पल्लव
सूची II:
1. कांची
2. देवगिरि
3. वारंगल
4. द्वारसमुद्र
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

161. 'वेसर' शैली क्या थी?
(A) गुप्त युग में लोकप्रिय चित्रकला की एक शैली
(B) नागर और द्रविड़ विशेषताओं को मिलाने वाली मंदिर वास्तुकला की एक मिश्रित शैली
(C) सैनिकों को दिया जाने वाला एक प्रकार का भूमि अनुदान
(D) हर्ष के दरबार में विकसित एक साहित्यिक शैली

162. बाणभट्ट द्वारा रचित 'हर्षचरित' का सर्वोत्तम वर्णन किस रूप में किया जा सकता है?
(A) ऐतिहासिक जीवनी
(B) काल्पनिक उपन्यास
(C) धार्मिक ग्रंथ
(D) विधिक ग्रंथ

163. बंगाल और बिहार में पालों का उत्तराधिकारी कौन सा राजवंश बना?
(A) कार्कोट
(B) वर्मन
(C) सेन

(D) राजराज प्रथम और राजेंद्र प्रथम

117. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): हर्ष का साम्राज्य विशाल होने के पश्चात भी मौर्य साम्राज्य की भाँति केंद्रीकृत नहीं था।
कारण (R): हर्ष की प्रशासनिक व्यवस्था अनेक अधीनस्थ राजाओं और सरदारों वाली एक सामंती संरचना पर बहुत अधिक निर्भर थी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

118. कश्मीर के उत्पल राजवंश की स्थापना किसने की थी?
(A) ललितादित्य मुक्तापीड़
(B) अवंतिवर्मन
(C) दिद्दा
(D) संग्रामराज

119. चालुक्य राजा विक्रमादित्य द्वितीय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि क्या थी?
(A) हर्षवर्धन को पराजित करना
(B) चालुक्य साम्राज्य की स्थापना करना
(C) वास्तुकला की वेसर शैली की स्थापना करना
(D) पल्लव राजधानी कांची पर निरंतर आक्रमण करना

120. सूची I (मंदिर/स्मारक) को सूची II (स्थान) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. कैलाश मंदिर
Q. बृहदेश्वर मंदिर
R. सूर्य मंदिर
S. शोर मंदिर
सूची II:
1. मोढेरा
2. ममल्लापुरम
3. तंजावुर
4. एलोरा
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

121. उत्तर-गुप्त कालीन कर्नाटक में एक महत्वपूर्ण शक्ति, कदंब राजवंश की स्थापना किसने की थी?
(A) काकुस्थवर्मन
(B) शिवस्कन्दवर्मन
(C) मयूरशर्मन
(D) विष्णुवर्धन

122. गुजरात के सोलंकी राजवंश के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) वे बंगाल के पालों के साथ निरंतर युद्धरत थे।
(B) वे जैन और शैव दोनों धर्मों के संरक्षक थे।
(C) उनकी राजधानी अणहिलवाड़ा थी।
(D) प्रसिद्ध विद्वान हेमचंद्र उनके शासन काल में हुए थे।

123. 'धर्मशास्त्र' ग्रंथों में 'स्त्रीधन' का उल्लेख किस रूप में किया गया है?
(A) महिलाओं द्वारा दिया जाने वाला कर
(B) वधू पक्ष द्वारा दिया गया दहेज
(C) महिलाओं के विरुद्ध अपराधों के लिए दंड
(D) एक महिला की अपनी निजी संपत्ति

124. देवगिरि के यादवों का राजनीतिक इतिहास किसके नेतृत्व वाली सेना द्वारा पराजित होने के साथ समाप्त हुआ?
(A) चोल
(B) दिल्ली सल्तनत
(C) होयसल
(D) बहमनी साम्राज्य

125. कामरूप के वर्मन राजवंश का उल्लेख गुप्त काल के किस प्रसिद्ध शिलालेख में मिलता है?
(A) जूनागढ़ शिलालेख
(B) भीतरी स्तंभ शिलालेख
(C) प्रयाग प्रशस्ति
(D) महरौली लौह स्तंभ शिलालेख

126. निम्नलिखित राजवंशों को उनकी प्रमुखता के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. चोल
2. पल्लव
3. राष्ट्रकूट
4. वातापि के चालुक्य
(A) 4, 2, 3, 1
(B) 2, 4, 3, 1
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 2, 3, 4, 1

127. ह्वेनसांग के वृत्तांत के अनुसार हर्ष के शासनकाल के दौरान आर्थिक जीवन का सर्वोत्तम वर्णन कौन करता है?
(A) स्थानीय व्यापार और शहरी केंद्रों में कुछ गिरावट के साथ एक कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था।
(B) बहुमूल्य धातु के सिक्कों के व्यापक उपयोग के साथ एक अत्यधिक शहरीकृत वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था।
(C) शाही रोम के साथ अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार पर पूर्णतः आश्रित अर्थव्यवस्था।
(D) एक आदिम आर्थिक व्यवस्था जहाँ केवल वस्तु विनिमय ही लेन-देन का साधन था।

83. शाही चोल वंश का संस्थापक कौन था, जिसने 9वीं शताब्दी के मध्य में तंजावुर पर अधिकार कर लिया था?
(A) राजराज प्रथम
(B) राजेंद्र प्रथम
(C) विजयालय
(D) आदित्य प्रथम

84. चोल साम्राज्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजराज प्रथम श्रीलंका के लिए नौसैनिक अभियान चलाने वाले प्रथम शासक थे।
II. चोल प्रशासन बिना किसी स्थानीय सरकार के अत्यधिक केंद्रीकृत था।
III. तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर राजेंद्र प्रथम द्वारा निर्मित कराया गया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

85. किस चोल राजा ने 'गंगेयकोंडचोल' की उपाधि धारण की और 'गंगेयकोंडचोलपुरम' नामक एक नई राजधानी निर्मित की?
(A) राजराज प्रथम
(B) कुलोत्तुंग प्रथम
(C) राजेंद्र प्रथम
(D) राजाधिराज प्रथम

86. चोल प्रशासन की सर्वाधिक उल्लेखनीय और विशिष्ट विशेषता क्या थी?
(A) एक गुप्त आंतरिक जासूसी प्रणाली का निर्माण।
(B) स्वायत्त ग्राम स्वशासन की प्रणाली।
(C) बहु-स्तरीय प्रांतीय संरचना का विकास।
(D) सभी स्थानीय अधिकारियों की प्रत्यक्ष व्यक्तिगत नियुक्ति।

87. चोल कला अपनी उत्कृष्ट कांस्य मूर्तियों के लिए विशेष रुप से प्रसिद्ध है, जिनमें से सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिमा किसकी है?
(A) विष्णु अनंतशयन
(B) गणेश
(C) ध्यान मुद्रा में बुद्ध
(D) नटराज के रुप में शिव

88. उत्तरमेरुर शिलालेख किस राजवंश के अधीन ग्राम सभा या 'सभा' के कामकाज के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है?
(A) चोल
(B) पल्लव
(C) पांड्य
(D) चालुक्य

89. सूची I (शासक) को सूची II (राजवंश) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. अमोघवर्ष प्रथम
Q. नरसिंहवर्मन प्रथम
R. धर्मपाल
S. राजराज प्रथम
सूची II:
1. पाल
2. चोल
3. राष्ट्रकूट
4. पल्लव
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

90. चोल प्रशासन में 'मंडलम्' शब्द किसे संदर्भित करता था?
(A) एक प्रांत
(B) एक ज़िला
(C) एक गाँव
(D) एक नगर परिषद

91. निम्नलिखित में से किस राजवंश की राजधानी देवगिरि थी?
(A) होयसल
(B) काकतीय
(C) कदंब
(D) यादव

92. होयसल राजवंश, जो अपने जटिल नक्काशीदार मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है, की राजधानी कहाँ थी?
(A) देवगिरि
(B) द्वारसमुद्र
(C) वारंगल
(D) बनवासी

93. काकतीय राजवंश ने अपनी राजधानी वारंगल के साथ किस आधुनिक क्षेत्र पर शासन किया?
(A) कर्नाटक
(B) तमिलनाडु
(C) तेलंगाना/आंध्र प्रदेश
(D) केरल

94. कदंब राजवंश, जिसे प्रशासनिक भाषा के रूप में कन्नड़ का प्रयोग करने वाला प्रथम स्वदेशी साम्राज्य माना जाता है, की स्थापना मयूरशर्मन ने अपनी राजधानी कहाँ की थी?
(A) तलकाड़
(B) कोलार
(C) मान्यखेत
(D) बनवासी

S. कांची

सूची II:

1. पाल राजवंश
2. गुप्त राजवंश
3. पल्लव राजवंश
4. मैत्रक राजवंश

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

141. चोल साम्राज्य के प्रशासन को मंडलम्, वलनाडु, नाडु और किसमें विभाजित किया गया था?

(A) भुक्ति
(B) विषय
(C) कुर्रम
(D) गण

142. वर्धन राजवंश की प्रारंभिक राजधानी क्या थी?

(A) कन्नौज
(B) पाटलिपुत्र
(C) उज्जैन
(D) थानेसर

143. निम्नलिखित में से कौन सा राजवंश 'दक्षिणापथ' क्षेत्र का नहीं था?

(A) कामरूप का वर्मन
(B) देवगिरि का यादव
(C) द्वारसमुद्र का होयसल
(D) वारंगल का काकतीय

144. गुप्त काल के दौरान भारत और चीन के बीच संपर्क मुख्य रूप से किसके द्वारा सुगम हुआ था?

(A) चीन के हृदय स्थल में निरंतर गुप्त सैन्य अभियान।
(B) बौद्ध भिक्षुओं और भ्रमणशील विद्वानों की निरंतर यात्राएँ।
(C) चीनी व्यापारियों द्वारा भारत में बड़े स्थायी उपनिवेश स्थापित करना।
(D) एक प्रत्यक्ष साझा क्षेत्रीय सीमा की औपचारिक स्थापना।

145. निम्नलिखित ऐतिहासिक व्यक्तियों को उनके शासनकाल के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. हर्षवर्धन
2. चंद्रगुप्त द्वितीय
3. पुलकेशिन द्वितीय
4. महेंद्रवर्मन प्रथम

(A) 2, 1, 4, 3
(B) 2, 4, 3, 1
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 4, 2, 1, 3

146. पल्लव शासक महेंद्रवर्मन प्रथम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. वे कला और वास्तुकला के महान संरक्षक थे और उन्होंने रॉक-कट गुफा मंदिरों का प्रारंभ किया।
II. उन्होंने संस्कृत नाटक 'मत्तविलास प्रहसन' की रचना की।
III. वे चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के साथ अपने दीर्घ संघर्ष में निर्णायक रूप से विजयी हुए।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I
(D) I, II और III

147. कौन सा राष्ट्रकूट शासक 'नृपतुंग' की उपाधि से प्रसिद्ध था और कन्नड़ में काव्यशास्त्र पर उपलब्ध प्राचीनतम कृति 'कविराजमार्ग' का लेखक था?

(A) दंतिदुर्ग
(B) कृष्ण प्रथम
(C) अमोघवर्ष प्रथम
(D) ध्रुव

148. गंग राजवंश को विशेष रूप से कर्नाटक में किस धर्म के प्रति उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए स्मरणीय माना जाता है?

(A) बौद्ध धर्म
(B) शैव धर्म
(C) वैष्णव धर्म
(D) जैन धर्म

149. गुप्त काल के दौरान धार्मिक जीवन के बारे में सही कथन की पहचान कीजिए।

(A) गुप्त राजा विशेष रूप से समर्पित शैव थे।
(B) भारतीय उपमहाद्वीप से बौद्ध धर्म पूर्णतः विलुप्त हो गया।
(C) यह ब्राह्मणवादी प्रभुत्व और वैष्णव धर्म का काल था।
(D) कर्मकांडीय पशु बलि की प्रथा वैधानिक रूप से प्रतिबंधित थी।

150. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A): चोल नौसेना अपने समय की सर्वाधिक शक्तिशाली समुद्री शक्तियों में से एक थी।

कारण (R): इसने चोलों को हिंद महासागर के व्यापार मार्गों को नियंत्रित करने और श्रीलंका तथा दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ क्षेत्रों को विजित करने में समर्थ बनाया।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

151. कल्याणी के चालुक्यों को इस नाम से भी जाना जाता है:

(A) पूर्वी चालुक्य

(C) कल्याणी के चालुक्य - मान्यखेत
(D) वेंगी के चालुक्य - वातापि

59. प्रसिद्ध ऐहोल शिलालेख, जो पुलकेशिन द्वितीय की विजयों की प्रशंसा करता है, किस कवि द्वारा रचा गया था?
(A) बाणभट्ट
(B) हरिषेण
(C) दण्डिन
(D) रविकीर्ति

60. सूची I (राजवंश) को सूची II (प्रभाव का क्षेत्र) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. पाल
Q. वर्मन
R. कार्कोट
S. चालुक्य
सूची II:
1. कश्मीर
2. कामरूप
3. बंगाल
4. वातापि
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

61. चालुक्य की किस शाखा को पूर्वी चालुक्य के रुप में जाना जाता है?
(A) वातापि के चालुक्य
(B) कल्याणी के चालुक्य
(C) वेंगी के चालुक्य
(D) गुजरात के चौलुक्य

62. वातापि के चालुक्यों के अधीन विकसित स्थापत्य शैली को किस प्रमुख मिश्रित शैली का अग्रदूत माना जाता है?
(A) नागर
(B) द्रविड़
(C) मौर्य
(D) वेसर

63. पट्टडकल में स्थित विशाल विरुपाक्ष मंदिर किस चालुक्य राजा की रानी द्वारा पल्लवों पर उसकी विजय की स्मृति में बनाया गया था?
(A) विक्रमादित्य द्वितीय
(B) पुलकेशिन द्वितीय
(C) विक्रमादित्य प्रथम
(D) कीर्तिवर्मन द्वितीय

64. चालुक्य प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) साम्राज्य को मंडलों या राष्ट्रों नामक प्रांतों में विभाजित किया गया था।
(B) प्रशासनिक व्यवस्था बिना किसी स्थानीय स्वायत्तता के अत्यधिक केंद्रीकृत थी।
(C) ग्राम प्रशासन की मूल इकाई थी।
(D) शासक प्रायः 'सत्याश्रय' और 'श्री-पृथ्वी-वल्लभ' जैसी उपाधियों का प्रयोग करते थे।

65. मान्यखेत के राष्ट्रकूट राजवंश का संस्थापक कौन था, जिसने वातापि के चालुक्यों को पदच्युत किया था?
(A) कृष्ण प्रथम
(B) दंतिदुर्ग
(C) गोविंद तृतीय
(D) अमोघवर्ष प्रथम

66. राष्ट्रकूटों के शासन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में प्रमुख प्रतिभागी थे।
II. उनकी राजधानी आंध्र के वेंगी में स्थित थी।
III. उन्होंने शैव और जैन धर्म दोनों को संरक्षण प्रदान किया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

67. एलोरा में स्थित शानदार रॉक-कट कैलाश मंदिर का निर्माण किस राष्ट्रकूट राजा के संरक्षण में किया गया था?
(A) दंतिदुर्ग
(B) ध्रुव धारावर्ष
(C) कृष्ण प्रथम
(D) अमोघवर्ष प्रथम

68. सर्वाधिक शक्तिशाली और दीर्घकाल तक शासन करने वाला राष्ट्रकूट शासक कौन था, जो अपनी साहित्यिक अभिरुचि और जैन धर्म के संरक्षण के लिए जाना जाता था?
(A) गोविंद तृतीय
(B) इंद्र तृतीय
(C) कृष्ण तृतीय
(D) अमोघवर्ष प्रथम

69. सोलंकी राजवंश, जिसे गुजरात के चौलुक्य के रूप में भी जाना जाता है, की राजधानी कहाँ थी?
(A) वातापि
(B) वल्लभी
(C) अणहिलवाड़ा
(D) द्वारका

70. मोढेरा का प्रसिद्ध सूर्य मंदिर और माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिर किस राजवंश के शासन के दौरान निर्मित हुए थे?
(A) राष्ट्रकूट

(D) गुप्त

164. राष्ट्रकूटों के राजनीतिक इतिहास के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इस राजवंश की स्थापना दंतिदुर्ग ने की थी।
II. उन्हें कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों ने अपदस्थ किया था।
III. वे केवल दक्कन तक ही सीमित रहे और उन्होंने कभी उत्तर की ओर विस्तार का प्रयास नहीं किया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I
(D) I, II और III

165. प्राचीन भारतीय भूगोल और इतिहास में 'दक्षिणापथ' शब्द सामान्यतः किसे संदर्भित करता है?
(A) सुदूर पूर्व को जोड़ने वाला व्यापार मार्ग
(B) गंगा डेल्टा के समीपवर्ती क्षेत्र
(C) विंध्य के दक्षिण का संपूर्ण भारतीय प्रायद्वीप
(D) मध्य एशिया का थल मार्ग

166. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): गुप्त काल में भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच प्रगाढ़ संबंध देखे गए।
कारण (R): यह संपर्क मुख्य रूप से बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म के प्रसार के साथ-साथ सक्रिय समुद्री व्यापार से प्रेरित था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

167. गुप्त काल के दौरान उपलब्धियों के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(A) आर्यभट्ट - खगोल विज्ञान और गणित
(B) कालिदास - संस्कृत नाटक और काव्य
(C) देवगढ़ मंदिर - मंदिर वास्तुकला
(D) वराहमिहिर - चिकित्सा विज्ञान

168. त्रिपक्षीय संघर्ष किस रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण नगर के नियंत्रण को लेकर लड़ा गया था?
(A) कन्नौज
(B) पाटलिपुत्र
(C) उज्जैन
(D) थानेसर

169. पल्लव राजा नरसिंहवर्मन प्रथम ने ममल्लापुरम नगर की स्थापना की थी, जिसे इस नाम से भी जाना जाता है:
(A) कांचीपुरम
(B) वातापिपुरा
(C) महाबलीपुरम
(D) गंगेयकोंडचोलपुरम

170. निम्नलिखित में से कौन सी चोल धार्मिक जीवन की एक विशेषता है?
(A) अन्य संप्रदायों के प्रति उल्लेखनीय सहिष्णुता के साथ शैव धर्म का प्रभुत्व।
(B) जैन धर्म का अनन्य संरक्षण और राज्य प्रायोजन।
(C) सभी गैर-शैव संप्रदायों का व्यवस्थित राजकीय उत्पीड़न।
(D) प्राथमिक राजकीय धर्म के रूप में महायान बौद्ध धर्म का उदय।

171. गुजरात के सोलंकी शासक जयसिंह सिद्धराज और उनके उत्तराधिकारी कुमारपाल किस जैन विद्वान से अत्यधिक प्रभावित थे?
(A) भद्रबाहु
(B) हरिभद्र
(C) जिनसेन
(D) हेमचंद्र

172. राष्ट्रकूटों और चालुक्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राष्ट्रकूटों ने दक्कन से चालुक्य शक्ति का पूर्णतः उन्मूलन कर दिया था।
कथन II: कल्याणी के चालुक्य, जो एक परवर्ती शाखा थी, अंततः राष्ट्रकूटों को पदच्युत कर सत्ता में आए।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

173. एलोरा में एक ही चट्टान से निर्मित एकाश्म कैलाश मंदिर किसके द्वारा निर्मित कराया गया था?
(A) पल्लव
(B) चोल
(C) राष्ट्रकूट
(D) गुप्त

174. निम्नलिखित में से कौन सा राजवंश अपने प्रमुख शासन क्षेत्र के साथ सही सुमेलित नहीं है?
(A) पाल - बंगाल और बिहार
(B) राष्ट्रकूट - दक्कन
(C) पल्लव - तमिलनाडु
(D) वेंगी के चालुक्य - गुजरात

175. दक्षिण-पूर्व एशिया में श्रीविजय साम्राज्य के विरुद्ध नौसैनिक अभियान का नेतृत्व करने वाला चोल राजा कौन था?
(A) राजेंद्र प्रथम
(B) राजराज प्रथम
(C) कुलोत्तुंग प्रथम

(C) कश्मीर
(D) कलिंग

274. नटराज की चोल कांस्य प्रतिमा भगवान शिव को कौन सा नृत्य करते हुए दर्शाती है?
(A) सृष्टि, स्थिति और संहार का नृत्य
(B) संरक्षण का नृत्य
(C) ध्यान का नृत्य
(D) युद्ध नृत्य

275. सूची I (राजवंश) को सूची II (राजकीय प्रतीक) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. चोल
Q. पल्लव
R. चालुक्य
S. पांड्य
सूची II:
1. वराह
2. मछली
3. व्याघ्र
4. नंदी
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

276. बाणभट्ट की 'कादंबरी' को विश्व के प्रारंभिक किस विधा के रूप में जाना जाता है?
(A) जीवनी
(B) महाकाव्य
(C) नाटक
(D) उपन्यास

277. वेंगी के चालुक्यों ने किन दो नदियों के बीच के क्षेत्र पर शासन किया?
(A) नर्मदा और ताप्ती
(B) कृष्णा और तुंगभद्रा
(C) कृष्णा और गोदावरी
(D) गंगा और यमुना

278. सेन राजवंश के बल्लाल सेन को अपने पिता के किस अधूरे कार्य को पूर्ण करने का श्रेय दिया जाता है?
(A) गीत गोविंद
(B) दानसागर और अद्भुतसागर
(C) पवनदूत
(D) ब्राह्मणसर्वस्व

279. पल्लव काल का सामाजिक जीवन किसके उदय से अत्यधिक प्रभावित था?
(A) आजीवक संप्रदाय
(B) महायान बौद्ध धर्म
(C) चार्वाक विचारधारा
(D) आलवारों और नयनारों का भक्ति आंदोलन

280. शाही गुप्त राजवंश का अंतिम ज्ञात शासक कौन था?
(A) विष्णुगुप्त
(B) स्कंदगुप्त
(C) बुधगुप्त
(D) नरसिंहगुप्त

281. निम्नलिखित में से कौन पल्लव राजवंश का शासक नहीं था?
(A) महेंद्रवर्मन प्रथम
(B) नरसिंहवर्मन प्रथम
(C) अमोघवर्ष प्रथम
(D) नरसिंहवर्मन द्वितीय

282. चोल युग के दौरान धार्मिक स्थिति के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) शैव और वैष्णव धर्म विकसित हुए, यद्यपि शैव धर्म को अधिक राजकीय संरक्षण प्राप्त था।
(B) बौद्ध धर्म राजकीय धर्म था।
(C) चोल राजाओं द्वारा केवल जैन धर्म को संरक्षण दिया गया था।
(D) शैव राजाओं द्वारा वैष्णवों का उत्पीड़न किया गया था।

283. कदंब राजवंश प्राचीन किस क्षेत्र का एक ब्राह्मण राजवंश था?
(A) तमिल क्षेत्र
(B) कलिंग क्षेत्र
(C) मगध क्षेत्र
(D) कर्नाटक क्षेत्र

284. हर्ष के साम्राज्य में निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र सम्मिलित था?
(A) संपूर्ण दक्कन का पठार
(B) पंजाब, कन्नौज, बंगाल और उड़ीसा
(C) कश्मीर और नेपाल
(D) चोल और पांड्य साम्राज्य

285. निम्नलिखित में से कौन द्रविड़ शैली की मंदिर वास्तुकला की विशेषता नहीं है?
(A) एक विशाल प्रवेश द्वार जिसे गोपुरम कहा जाता है
(B) गर्भगृह के ऊपर एक पिरामिडनुमा मीनार जिसे विमान कहा जाता है
(C) एक वक्राकार शिखर
(D) एक बड़े जल कुंड की उपस्थिति

286. गुप्त शासक समुद्रगुप्त के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्हें उनकी सैन्य विजयों के लिए 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है।
II. वे कला और संगीत के महान संरक्षक थे और एक कुशल

187. चोल प्रशासनिक इकाई 'नाडु' मूलतः क्या थी?
(A) एक प्रांत
(B) एक नगर प्रशासन
(C) एक सैन्य छावनी
(D) गाँवों का एक समूह या एक उप-जिला

188. निम्नलिखित में से कौन पल्लव रॉक-कट वास्तुकला का एक उदाहरण है?
(A) तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर
(B) महाबलीपुरम के पंच रथ
(C) एलोरा का कैलाश मंदिर
(D) मोढेरा का सूर्य मंदिर

189. राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेत की पहचान आधुनिक किस स्थान से की जाती है?
(A) महाराष्ट्र में नांदेड़
(B) तमिलनाडु में कांची
(C) कर्नाटक में मल्खेड़
(D) आंध्र प्रदेश में वेंगी

190. पल्लवों और वातापि के चालुक्यों के बीच दीर्घकालिक संघर्ष का मुख्य कारण क्या था?
(A) धार्मिक मतभेद
(B) वैवाहिक विवाद
(C) त्रिपक्षीय संघर्ष में विभिन्न पक्षों का समर्थन
(D) उपजाऊ रायचूर दोआब पर नियंत्रण

191. निम्नलिखित राजवंशों को उनकी स्थापना के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. वर्धन राजवंश
2. गुप्त राजवंश
3. पाल राजवंश
4. चोल राजवंश (शाही)
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 1, 2, 4

192. हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान शिक्षा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नालंदा सर्वाधिक प्रमुख शिक्षण संस्थान था।
II. पाठ्यक्रम विशेष रूप से धार्मिक था और लौकिक विषयों को पृथक रखा गया था।
III. हर्ष विद्या और बाणभट्ट जैसे विद्वानों के महान संरक्षक थे।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

193. श्रवणबेलगोला में गोमतेश्वर की प्रतिमा किस राजवंश से संबंधित है?
(A) होयसल
(B) पश्चिमी गंग
(C) कदंब
(D) यादव

194. 'गंगेयकोंड' की उपाधि राजेंद्र चोल प्रथम ने किस क्षेत्र के सफल अभियान के पश्चात धारण की थी?
(A) गंगा घाटी
(B) श्रीलंका
(C) मलय प्रायद्वीप
(D) नर्मदा घाटी

195. अपने अल्पवयस्क पुत्रों की ओर से रानी-संरक्षिका प्रभावतीगुप्त का शासन किस राजवंश के इतिहास में एक महत्वपूर्ण चरण है?
(A) गुप्त
(B) पल्लव
(C) वाकाटक
(D) चालुक्य

196. वेंगी के चालुक्यों को इस नाम से भी जाना जाता है:
(A) पश्चिमी चालुक्य
(B) उत्तरी चालुक्य
(C) दक्षिणी चालुक्य
(D) पूर्वी चालुक्य

197. निम्नलिखित में से कौन गुप्त काल में सामाजिक जीवन की विशेषता नहीं है?
(A) जाति व्यवस्था अधिक कठोर हो गई।
(B) अछूतों को पृथक कर दिया गया था और वे मुख्य नगर के बाहर निवास करते थे।
(C) पूर्ण लैंगिक समानता के साथ महिलाओं की स्थिति में व्यापक सुधार हुआ।
(D) कन्याओं के बाल विवाह की प्रथा सामान्य हो गई।

198. हर्ष और पुलकेशिन द्वितीय के बीच प्रसिद्ध युद्ध किस नदी के तट पर हुआ था?
(A) गोदावरी
(B) नर्मदा
(C) कृष्णा
(D) ताप्ती

199. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): पाल शासक बौद्ध मठों और विश्वविद्यालयों के महान संरक्षक थे।
कारण (R): पालों ने विक्रमशिला जैसे संस्थानों की स्थापना की और नालंदा को पुनर्जीवित किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

200. गुजरात में सोलंकी राजवंश का शासन किसके हाथों उनकी पराजय के साथ समाप्त हुआ?
(A) वाघेला और बाद में दिल्ली सल्तनत
(B) महमूद गजनवी
(C) मुहम्मद गोरी
(D) राष्ट्रकूट

201. सूची I (राजवंश) को सूची II (वास्तुकला में योगदान) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. पल्लव
Q. चोल
R. राष्ट्रकूट
S. होयसल
सूची II:
1. जटिल नक्काशी वाले तारे के आकार के मंदिर
2. रॉक-कट रथ (महाबलीपुरम)
3. एकाश्म कैलाश मंदिर (एलोरा)
4. भव्य संरचनात्मक मंदिर (तंजावुर)
(A) P-1, Q-3, R-4, S-2
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

202. कश्मीर के कार्कोट, उत्पल और लोहार राजवंशों के इतिहास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत कौन सा है?
(A) राजतरंगिणी
(B) हर्षचरित
(C) सी-यू-की
(D) गीत गोविंद

203. गुप्त काल के सिक्कों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: चंद्रगुप्त प्रथम स्वर्ण मुद्राएँ जारी करने वाले प्रथम गुप्त शासक थे।
कथन II: गुप्तों की स्वर्ण मुद्राएँ, जिन्हें दीनार कहा जाता था, कलात्मक रूप से उच्च स्तर की थीं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

204. निम्नलिखित में से कौन कामरूप के वर्मन राजवंश का एक प्रसिद्ध शासक और हर्षवर्धन का समकालीन था?
(A) गोपाल
(B) भास्करवर्मन
(C) अवंतिवर्मन
(D) शशांक

205. चालुक्यों की राजधानी वातापि को किस पल्लव राजा ने विनष्ट कर दिया था?
(A) महेंद्रवर्मन प्रथम
(B) परमेश्वरवर्मन प्रथम
(C) नरसिंहवर्मन प्रथम
(D) नंदीवर्मन द्वितीय

206. चोल शासकों द्वारा मुख्य रूप से किस धर्म को संरक्षण प्रदान किया गया था?
(A) बौद्ध धर्म
(B) जैन धर्म
(C) वैष्णव धर्म
(D) शैव धर्म

207. देवगिरि का यादव राजा रामचंद्र किस दिल्ली सुल्तान का समकालीन था?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) इल्तुतमिश
(C) बलबन
(D) मुहम्मद बिन तुगलक

208. गुप्त काल में 'उपरिक' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया जाता था?
(A) एक गाँव का मुखिया
(B) एक प्रांतीय राज्यपाल
(C) एक गुप्तचर
(D) एक नगर अधिकारी

209. कार्कोटों के पश्चात कश्मीर पर शासन करने वाला राजवंश कौन सा था?
(A) लोहार
(B) उत्पल
(C) वर्मन
(D) सेन

210. चोल प्रशासन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. साम्राज्य को मंडलम् नामक प्रांतों में विभाजित किया गया था।
II. एक प्रमुख विशेषता ग्राम सभाओं (सभा और ऊर) का स्वायत्त संचालन था।
III. सभी भूमि सीधे केंद्र सरकार के स्वामित्व में थी, जिसमें कोई निजी स्वामित्व नहीं था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

211. निम्नलिखित में से कौन राष्ट्रकूट कला और वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण है?
(A) शोर मंदिर, महाबलीपुरम
(B) बृहदेश्वर मंदिर, तंजौर
(C) कैलाश मंदिर, एलोरा
(D) कंदारिया महादेव मंदिर, खजुराहो

212. गंगा घाटी में राजेंद्र चोल के अभियान का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) उत्तरी क्षेत्र को स्थायी रूप से अपने राज्य में मिलाना।
(B) उत्तर के साथ नए और सुरक्षित व्यापार मार्ग स्थापित करना।
(C) चालुक्यों के विरुद्ध पालों के साथ सैन्य गठबंधन बनाना।
(D) अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन करना और पवित्र गंगा जल लाना।

213. श्रीलंका के साथ गुप्त काल के संबंधों की पुष्टि एक श्रीलंकाई राजा द्वारा समुद्रगुप्त के पास कहाँ एक बौद्ध मठ बनाने की अनुमति के लिए शिष्टमंडल भेजने से होती है?
(A) सांची
(B) नालंदा
(C) बोधगया
(D) सारनाथ

214. बंगाल के सेन राजवंश का राजनीतिक इतिहास किसके साथ प्रारंभ होता है?
(A) विजय सेन
(B) हेमंत सेन
(C) बल्लाल सेन
(D) लक्ष्मण सेन

215. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): होयसल मंदिर अपनी अत्यधिक विस्तृत और अलंकृत नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं।
कारण (R): निर्माण सामग्री के रूप में नरम सोपस्टोन के उपयोग ने शिल्पकारों को उच्च स्तर की जटिलता प्राप्त करने में सहायता दी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

216. 'स्त्रीधन' की अवधारणा क्या इंगित करती है?
(A) महिलाओं का विशिष्ट प्रकार की संपत्ति पर पूर्ण अधिकार था।
(B) महिलाओं के पास कोई संपत्ति अधिकार नहीं था।
(C) सभी संपत्ति पति और पत्नी द्वारा संयुक्त रूप से रखी जाती थी।
(D) संपत्ति केवल पुरुष उत्तराधिकारियों द्वारा विरासत में प्राप्त की जा सकती थी।

217. कल्याणी के चालुक्य दक्कन में किस प्रमुख राजवंश के उत्तराधिकारी बने?
(A) पल्लव
(B) चोल
(C) राष्ट्रकूट
(D) वाकाटक

218. ब्राह्मणों (ब्रह्मदेय) और मंदिरों को भूमि अनुदान की प्रथा किस अवधि के दौरान अत्यधिक व्यापक हो गई?
(A) प्रशासनिक विकेंद्रीकरण का उत्तर-गुप्त काल।
(B) अत्यधिक केंद्रीकृत राजकीय शासन का मौर्य काल।
(C) देहाती जनजातीय संगठन का प्रारंभिक वैदिक काल।
(D) नगर नियोजन का सिंधु घाटी सभ्यता काल।

219. संस्कृत प्रहसन 'मत्तविलास प्रहसन' किस शासक द्वारा लिखा गया था?
(A) हर्षवर्धन
(B) अमोघवर्ष प्रथम
(C) समुद्रगुप्त
(D) महेंद्रवर्मन प्रथम

220. विक्रमशिला का महान बौद्ध विश्वविद्यालय किस आधुनिक राज्य में स्थित था?
(A) पश्चिम बंगाल
(B) बिहार
(C) उत्तर प्रदेश
(D) ओडिशा

221. किस चोल शासक ने श्रीलंका की विजय पूर्ण की, जिसे उनके पिता राजराज प्रथम ने प्रारंभ किया था?
(A) आदित्य प्रथम
(B) परान्तक प्रथम
(C) राजेंद्र प्रथम
(D) कुलोत्तुंग प्रथम

222. ऐहोल शिलालेख, जो वातापि के चालुक्यों के इतिहास के लिए एक प्रमुख स्रोत है, किस भाषा में लिखा गया है?
(A) पाली
(B) तमिल
(C) प्राकृत
(D) संस्कृत

223. कश्मीर के उत्पल राजवंश का संस्थापक कौन था?
(A) अवंतिवर्मन
(B) ललितादित्य
(C) दुर्लभवर्धन
(D) संग्रामराज

250. निम्नलिखित में से कौन सा शासक देवगिरि के यादव राजवंश से संबंधित था?
(A) रामचंद्र
(B) गणपतिदेव
(C) विष्णुवर्धन
(D) बल्लाल तृतीय

251. सूची I (शब्द) को सूची II (चोल प्रशासन में अर्थ) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. मंडलम्
Q. वलनाडु
R. नाडु
S. कुर्रम
सूची II:
1. गाँवों का एक समूह
2. एक जिला या उप-प्रभाग
3. एक प्रभाग
4. एक प्रांत
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

252. गुप्त प्रशासन की विशेषता थी:
(A) मौर्यों के समान सत्ता का अत्यधिक केंद्रीकरण
(B) महत्वपूर्ण स्थानीय स्वायत्तता के साथ एक विकेंद्रीकृत, सामंती संरचना
(C) पूर्णतः सैन्य सेनापतियों द्वारा संचालित प्रणाली
(D) औपचारिक कराधान प्रणाली का अभाव

253. हर्ष की धार्मिक नीति का सर्वोत्तम वर्णन किस रूप में किया गया है?
(A) बौद्ध धर्म के प्रति शत्रुतापूर्ण
(B) अपने पूरे शासनकाल के दौरान जैन धर्म का अनुयायी
(C) प्रारंभ में शिव भक्त, तत्पश्चात महायान बौद्ध धर्म के प्रति गहरा झुकाव
(D) एक नया सर्वसमावेशी धर्म बनाने का प्रयास

254. काकतीय राजवंश ने अपनी राजधानी कहाँ से शासन किया?
(A) देवगिरि
(B) द्वारसमुद्र
(C) कांची
(D) वारंगल

255. गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने नालंदा महाविहार की स्थापना की।
II. उन्होंने 'मयूर' प्रकार सहित विभिन्न प्रकार के सिक्के जारी किए।
III. उनके शासनकाल के अंत में पुष्यमित्रों से एक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

256. पल्लव समाज और अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से किस पर आधारित थी?
(A) समुद्री व्यापार और समुद्री डकैती
(B) व्यापार द्वारा पूरक कृषि अर्थव्यवस्था
(C) औद्योगिक उत्पादन
(D) देहाती खानाबदोश जीवन

257. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने 'वराह' नाम के स्वर्ण सिक्के जारी किए।
कारण (R): 'वराह' वातापि के चालुक्यों का राजकीय प्रतीक था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

258. पश्चिमी गंग राजवंश ने मुख्य रूप से 'गंगवाड़ी' नामक क्षेत्र पर शासन किया, जो किसके समतुल्य है?
(A) दक्षिणी कर्नाटक
(B) गोदावरी डेल्टा
(C) कांची के आसपास का क्षेत्र
(D) तटीय केरल

259. चालुक्यों, पल्लवों और पांड्यों के बीच निरंतर होने वाले युद्धों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिणाम क्या था?
(A) इससे दक्षिण में बौद्ध धर्म का तीव्र प्रसार हुआ।
(B) इसके परिणामस्वरूप चालुक्यों के अधीन एक एकीकृत दक्षिणी साम्राज्य बना।
(C) इसने तीनों राज्यों के संसाधनों को क्षीण कर दिया, जिससे नई शक्तियों के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ।
(D) इसने क्षेत्र में सभी सांस्कृतिक विकास को अवरुद्ध कर दिया।

260. माउंट आबू के प्रसिद्ध जैन मंदिर किस राजवंश के शासन के दौरान निर्मित हुए थे?
(A) मालवा के परमार
(B) बुंदेलखंड के चंदेल
(C) कन्नौज के गहड़वाल
(D) गुजरात के सोलंकी

261. गुप्त सेना के संदर्भ में, 'महाबलाधिकृत' कौन था?

236. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): चोल काल में द्रविड़ मंदिर वास्तुकला की पूर्णता देखी गई।
कारण (R): राजराज प्रथम और राजेंद्र प्रथम जैसे शासकों ने बृहदेश्वर मंदिर जैसे विशाल मंदिरों का निर्माण कराया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

237. देवगढ़ का 'दशावतार' मंदिर किस काल की प्रारंभिक नागर शैली की वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) मौर्य
(B) कुषाण
(C) गुप्त
(D) वर्धन

238. निम्नलिखित में से कौन वातापि के चालुक्य राजवंश का संस्थापक था?
(A) पुलकेशिन द्वितीय
(B) कीर्तिवर्मन प्रथम
(C) मंगलेश
(D) पुलकेशिन प्रथम

239. गुप्त काल के दौरान पश्चिम के साथ व्यापार में गिरावट की भरपाई किस क्षेत्र के साथ व्यापार में वृद्धि से हुई?
(A) चीन और दक्षिण पूर्व एशिया
(B) अफ्रीका
(C) अमेरिका
(D) मध्य एशिया

240. सोलंकी राजवंश को इस नाम से भी जाना जाता है:
(A) वातापि के चालुक्य
(B) गुजरात के चौलुक्य
(C) वेंगी के चालुक्य
(D) कल्याणी के चालुक्य

241. प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में 'अग्रहार' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) एक शाही आदेश
(B) ब्राह्मणों को दिया गया गाँव या भूमि
(C) सिक्कों का एक प्रकार
(D) एक सैन्य चौकी

242. पल्लव-चालुक्य संघर्ष मुख्य रूप से किन दो नदियों के बीच की उपजाऊ भूमि के नियंत्रण के लिए हुआ था?
(A) कृष्णा और तुंगभद्रा
(B) गंगा और यमुना
(C) नर्मदा और ताप्ती
(D) कावेरी और वैगई

243. चोल काल अपने व्यापक और सटीक भूमि सर्वेक्षणों के लिए जाना जाता है। यह मुख्य रूप से किस शासक द्वारा प्रारंभ किया गया था?
(A) विजयालय
(B) राजेंद्र प्रथम
(C) राजराज प्रथम
(D) कुलोत्तुंग प्रथम

244. ह्वेनसांग द्वारा वर्णित हर्ष के शासनकाल के दौरान सामाजिक संरचना थी:
(A) एक समतावादी समाज।
(B) एक लचीली प्रणाली जहाँ सामाजिक गतिशीलता सुलभ थी।
(C) धनी व्यापारियों के प्रभुत्व वाला समाज।
(D) अस्पृश्यता के साथ एक कठोर चतुर्वर्ण जाति व्यवस्था।

245. राष्ट्रकूट राजवंश के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) उनकी राजधानी मान्यखेत में थी।
(B) वे शैव, वैष्णव और जैन धर्म के महान संरक्षक थे।
(C) उन्हें पल्लवों ने अपदस्थ किया था।
(D) उन्होंने कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया था।

246. महाबलीपुरम के पांच एकाश्म 'रथों' के नाम किसके नाम पर रखे गए हैं?
(A) पल्लव राजाओं के
(B) पांडव भाइयों और द्रौपदी के
(C) हिंदू देवी-देवताओं के
(D) स्थापत्य शैलियों के प्रकारों पर

247. कामरूप का वर्मन राजवंश किसकी समकालीन शक्ति था?
(A) मौर्यों की
(B) चोलों की
(C) दिल्ली सल्तनत की
(D) गुप्तों और हर्षवर्धन की

248. गंगेयकोंडचोलपुरम नगर की स्थापना किस सैन्य उपलब्धि की स्मृति में की गई थी?
(A) गंगा नदी तक का विजयी अभियान
(B) श्रीलंका की विजय
(C) चालुक्यों पर विजय
(D) श्रीविजय के लिए सफल नौसैनिक अभियान

249. निम्नलिखित में से कौन सा राजवंश अपनी शक्तिशाली नौसेना के लिए विख्यात था?
(A) गुप्त
(B) वर्धन
(C) चोल
(D) राष्ट्रकूट

(D) आदित्य प्रथम

176. वर्धन राजवंश के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) उनकी मूल राजधानी पाटलिपुत्र थी।
(B) प्रभाकरवर्धन 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण करने वाले प्रथम शासक थे।
(C) हर्ष, प्रभाकरवर्धन के ज्येष्ठ पुत्र थे।
(D) इस राजवंश की स्थापना स्वयं हर्ष ने की थी।

177. "नागर-द्रविड़-वेसर" शब्द किसे संदर्भित करते हैं?
(A) तीन प्रमुख सामाजिक वर्ग
(B) भारतीय मंदिर वास्तुकला की तीन मुख्य शैलियाँ
(C) तीन प्रकार की भू-राजस्व प्रणालियाँ
(D) दक्षिण के तीन प्रसिद्ध राजवंश

178. गुप्त युग में महत्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रगति देखी गई। निम्नलिखित में से किसे गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत को प्रतिपादित करने और सौर वर्ष की गणना करने का श्रेय दिया जाता है?
(A) ब्रह्मगुप्त
(B) आर्यभट्ट
(C) वराहमिहिर
(D) सुश्रुत

179. पाल राजवंश की स्थापना 8वीं शताब्दी ईस्वी में गोपाल ने की थी। उनके राज्यारोहण के बारे में क्या विशिष्ट था?
(A) उन्हें सिंहासन अपने पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ था।
(B) उन्होंने सेन राजा से बलपूर्वक सिंहासन छीना था।
(C) अराजकता के युग को समाप्त करने के लिए उन्हें सामंतों द्वारा राजा चुना गया था।
(D) उन्हें राष्ट्रकूट सम्राट द्वारा नियुक्त किया गया था।

180. सूची I (लेखक) को सूची II (कृति) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. बाणभट्ट
Q. रविकीर्ति
R. हरिषेण
S. जयदेव
सूची II:
1. गीत गोविंद
2. प्रयाग प्रशस्ति
3. ऐहोल शिलालेख
4. हर्षचरित
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

181. होयसल राजवंश के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उनकी राजधानी द्वारसमुद्र थी।
II. उन्होंने वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली विकसित की जिसकी विशेषता जटिल नक्काशी थी।
III. उनके सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक राजराज प्रथम थे।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल III
(D) I, II और III

182. गुप्त प्रशासन में 'भुक्ति' शब्द आधुनिक समय के किसके समतुल्य है?
(A) जिला
(B) राज्य या प्रांत
(C) तहसील
(D) गाँव

183. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): पल्लव काल को दक्षिण में ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म के एक महान धार्मिक पुनरुत्थान के रूप में जाना जाता है।
कारण (R): नयनारों और आलवारों के नेतृत्व में भक्ति आंदोलन विकसित हुआ और इस दौरान उसे राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

184. कदंब साम्राज्य आधुनिक समय के किस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण शक्ति था?
(A) कर्नाटक
(B) तमिलनाडु
(C) केरल
(D) आंध्र प्रदेश

185. चीनी यात्री ह्वेनसांग के वृत्तांत किसके शासनकाल के प्राथमिक स्रोत हैं?
(A) चंद्रगुप्त मौर्य
(B) अशोक
(C) हर्षवर्धन
(D) समुद्रगुप्त

186. किस गुप्त शासक ने 'शकारि' और 'विक्रमादित्य' की उपाधियाँ धारण कीं?
(A) चंद्रगुप्त द्वितीय
(B) चंद्रगुप्त प्रथम
(C) समुद्रगुप्त
(D) स्कंदगुप्त

(A) अश्वारोही सेना का प्रमुख
(B) गज सेना का प्रमुख
(C) सेना का प्रधान सेनापति
(D) युद्ध और शांति का मंत्री

262. पल्लव शासक नरसिंहवर्मन प्रथम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: पल्लव राजा नरसिंहवर्मन प्रथम को 'ममल्ल' के नाम से भी जाना जाता था।
कथन II: बंदरगाह नगर महाबलीपुरम को उनके नाम पर 'ममल्लापुरम' भी कहा जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

263. पाल शासक धर्मपाल ने किस प्राचीन विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित किया था?
(A) तक्षशिला
(B) विक्रमशिला
(C) वल्लभी
(D) नालंदा

264. होयसल स्थापत्य शैली को किस व्यापक शैली का एक रूप माना जाता है?
(A) वेसर
(B) नागर
(C) द्रविड़
(D) गांधार

265. इनमें से कौन सा शासक कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष का भाग नहीं था?
(A) धर्मपाल
(B) ध्रुव
(C) राजराज प्रथम
(D) वत्सराज

266. समुद्रगुप्त के शासनकाल के दौरान श्रीलंका के साथ गुप्त साम्राज्य के संबंधों का उल्लेख किस चीनी लेखक के वृत्तांतों में मिलता है?
(A) वांग ह्वेन-त्से
(B) फाहियान
(C) इत्सिंग
(D) ह्वेनसांग

267. कश्मीर का कार्कोट राजवंश किस शासक के अधीन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा?
(A) दुर्लभवर्धन
(B) अवंतिवर्मन
(C) जयपीड़
(D) ललितादित्य मुक्तापीड़

268. अजंता की गुफाओं के भित्ति चित्रों का मुख्य विषय क्या है?
(A) रामायण और महाभारत के दृश्य
(B) बुद्ध का जीवन और जातक कथाएँ
(C) गुप्त सम्राटों के राजकीय दृश्य
(D) सामान्य जन का दैनिक जीवन

269. राष्ट्रकूट राजवंश को कल्याणी के पश्चिमी चालुक्य राजवंश के किस शासक ने अपदस्थ किया था?
(A) विक्रमादित्य VI
(B) सोमेश्वर प्रथम
(C) तैलप II
(D) जयसिंह II

270. चोल नौसेना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह प्राचीन विश्व की सर्वाधिक शक्तिशाली समुद्री सेनाओं में से एक थी।
II. इसका उपयोग श्रीलंका और मालदीव को विजित करने के लिए किया गया था।
III. इसने दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापक व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुगम बनाया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I
(D) I, II और III

271. कांची का वैकुंठ पेरुमल मंदिर किस पल्लव शासक द्वारा निर्मित कराया गया था?
(A) नंदीवर्मन द्वितीय
(B) नरसिंहवर्मन द्वितीय
(C) महेंद्रवर्मन प्रथम
(D) नरसिंहवर्मन प्रथम

272. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): गुप्त काल को प्रायः संस्कृत साहित्य का शास्त्रीय युग कहा जाता है।
कारण (R): कालिदास, विशाखदत्त और शूद्रक जैसे महान साहित्यिक व्यक्तित्वों ने इसी युग में अपनी प्रमुख कृतियों की रचना की।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

273. 'प्राग्ज्योतिषपुर-अधिपति' की उपाधि किस क्षेत्र के राजा को संदर्भित करती है?
(A) बंगाल
(B) कामरूप

224. निम्नलिखित में से कौन चोल राजवंश का प्रमुख शासक नहीं है?
(A) राजराज प्रथम
(B) विष्णुवर्धन
(C) राजेंद्र प्रथम
(D) कुलोत्तुंग प्रथम

225. रॉक-cut वास्तुकला से संरचनात्मक मंदिरों में संक्रमण किस राजवंश का एक महत्वपूर्ण योगदान है?
(A) गुप्त
(B) पल्लव
(C) मौर्य
(D) चोल

226. सूची I (पुस्तक) को सूची II (मुख्य विषय) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I:
P. आर्यभटीय
Q. हर्षचरित
R. कामसूत्र
S. गीत गोविंद
सूची II:
1. सामाजिक जीवन
2. भक्ति काव्य
3. खगोल विज्ञान और गणित
4. राजकीय जीवनी
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

227. पल्लव प्रशासन के संदर्भ में, 'ऊर' किसकी एक सभा थी?
(A) ब्रह्मदेय गाँवों में ब्राह्मण भूस्वामी
(B) नगर में व्यापारी और शिल्पकार
(C) सामान्य गाँव के गैर-ब्राह्मण, करदाता निवासी
(D) सैन्य सेनापति

228. अंतिम प्रमुख शाही गुप्त शासक कौन था जिसे आंतरिक विद्रोहों और बाहरी आक्रमणों से गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा?
(A) चंद्रगुप्त द्वितीय
(B) कुमारगुप्त प्रथम
(C) विष्णुगुप्त
(D) स्कंदगुप्त

229. उल्लेखनीय राष्ट्रकूट शासकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राष्ट्रकूट राजा कृष्ण प्रथम ने एलोरा में कैलाश मंदिर निर्मित कराया था।
कथन II: राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष प्रथम जैन धर्म के महान संरक्षक थे।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

230. हलेबिडु में होयसलेश्वर मंदिर किस देवता को समर्पित है?
(A) विष्णु
(B) शिव
(C) ब्रह्मा
(D) सूर्य

231. गुप्त प्रशासनिक व्यवस्था में एक जिले के लिए प्रयुक्त शब्द था:
(A) भुक्ति
(B) ग्राम
(C) नगर
(D) विषय

232. हर्षवर्धन के सांस्कृतिक योगदान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्हें तीन संस्कृत नाटक: रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद लिखने का श्रेय दिया जाता है।
II. उन्होंने कन्नौज और प्रयाग में भव्य धार्मिक सभाओं का आयोजन किया।
III. उन्होंने संस्कृत के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

233. वाकाटक साम्राज्य भारत के किस भाग में स्थित था?
(A) गंगा के मैदान
(B) कलिंग क्षेत्र
(C) उत्तरी दक्कन का पठार
(D) सुदूर दक्षिण

234. बंगाल के सेन शासक मूलतः किस क्षेत्र से आए थे?
(A) कर्नाटक
(B) मगध
(C) कामरूप
(D) कलिंग

235. काकतीय साम्राज्य किस संसाधन के प्रबंधन के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध था?
(A) स्वर्ण खदानें
(B) हीरा व्यापार
(C) मसाला व्यापार
(D) सिंचाई टैंक और कृषि

वीणा वादक थे।
III. उन्होंने दक्षिणी राज्यों के पूर्ण विलय की नीति का अनुसरण किया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I
(D) I, II और III

287. राष्ट्रकूट राजा ध्रुव धारावर्ष ने किन दो समकालीन उत्तरी शासकों को पराजित किया था?

(A) धर्मपाल और वत्सराज
(B) नागभट्ट द्वितीय और देवपाल
(C) हर्ष और पुलकेशिन द्वितीय
(D) चंद्रगुप्त द्वितीय और रुद्रसेन द्वितीय

288. बेलूर का प्रसिद्ध चेन्नाकेशव मंदिर किस स्थापत्य शैली का उदाहरण है?

(A) पल्लव
(B) होयसल
(C) चोल
(D) काकतीय

289. चीनी यात्री फाहियान किसके शासनकाल के दौरान भारत आया था?

(A) अशोक
(B) चंद्रगुप्त द्वितीय
(C) कनिष्क
(D) हर्षवर्धन

290. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A): चोलों की ग्राम सभाएँ, विशेष रूप से ब्रह्मदेय गाँवों की 'सभा', उच्च स्तर की स्वायत्तता का उपभोग करती थीं।

कारण (R): उत्तरमेरुर जैसे शिलालेख इन सभाओं के संचालन का विवरण देते हैं।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

291. "वातापिंड" की उपाधि किसके द्वारा धारण की गई थी?

(A) हर्ष को पराजित करने के पश्चात पुलकेशिन द्वितीय द्वारा
(B) गंगा अभियान के पश्चात राजेंद्र चोल द्वारा
(C) चालुक्यों की राजधानी को विनष्ट करने के पश्चात नरसिंहवर्मन प्रथम द्वारा
(D) चालुक्यों को पराजित करने के पश्चात दंतिदुर्ग द्वारा

292. 10वीं शताब्दी ईस्वी में शासन करने वाली रानी दिद्दा किस राजवंश की थीं?

(A) कश्मीर का कार्कोट राजवंश
(B) बंगाल का पाल राजवंश
(C) बंगाल का सेन राजवंश
(D) कश्मीर का उत्पल राजवंश

293. गुप्त काल के आर्थिक जीवन में किस क्षेत्र के साथ विदेशी व्यापार में गिरावट देखी गई?

(A) दक्षिण पूर्व एशिया
(B) चीन
(C) रोमन साम्राज्य
(D) मध्य एशिया

294. लोहार राजवंश किस क्षेत्र के तीन प्रमुख हिंदू राजवंशों में से अंतिम था?

(A) बंगाल
(B) कश्मीर
(C) कामरुप
(D) गुजरात

295. निम्नलिखित में से कौन सा राजवंश 'दक्षिणापथ' से संबंधित नहीं था?

(A) देवगिरि का यादव
(B) द्वारसमुद्र का होयसल
(C) वारंगल का काकतीय
(D) बंगाल का सेन राजवंश

296. गुप्त शासक चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपने पश्चिमी क्षेत्रों को बेहतर ढंग से नियंत्रित करने के लिए अपनी दूसरी राजधानी किस नगर में स्थापित की थी?

(A) उज्जैन
(B) पाटलिपुत्र
(C) कन्नौज
(D) थानेसर

297. चालुक्यों, राष्ट्रकूटों, होयसलों और यादवों के शक्ति केंद्र मुख्य रूप से किस आधुनिक भारतीय राज्य में थे?

(A) तमिलनाडु
(B) आंध्र प्रदेश
(C) कर्नाटक
(D) केरल

298. दक्षिण भारत में स्थापत्य कला के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: पल्लव दक्षिण भारत में रॉक-cut वास्तुकला के अग्रदूत थे।

कथन II: चोलों ने विशाल संरचनात्मक मंदिरों के साथ द्रविड़ शैली को पूर्णता प्रदान की।

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

जिन्होंने शिक्षा को महत्व दिया। यद्यपि उनके शासन के अंत में बख्तियार खिलजी के आक्रमण से शक्ति कमजोर हुई, किंतु उनकी सांस्कृतिक उपलब्धियां अतुलनीय रहीं।

55. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बंगाल के पाल शासकों और सुमात्रा के श्रीविजय साम्राज्य के मध्य अत्यंत घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंध थे। इन मधुर संबंधों का मुख्य आधार दोनों का महायान बौद्ध धर्म के प्रति गहरा लगाव और संरक्षण था। पाल राजा देवपाल ने श्रीविजय के शासक बालपुत्रदेव के अनुरोध पर नालंदा में एक विहार बनाने हेतु पांच गाँवों का दान दिया था। यह सहयोग न केवल धार्मिक शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण था, बल्कि इसने समुद्री व्यापारिक संपर्कों को भी निरंतर सक्रिय रखा।

56. (A) पश्चिमी चालुक्य
वातापि के चालुक्यों को भारतीय इतिहास में 'प्रारंभिक पश्चिमी चालुक्य' के रूप में जाना जाता है ताकि उन्हें वेंगी के पूर्वी चालुक्यों से अलग पहचाना जा सके। छठी से आठवीं शताब्दी के दौरान उन्होंने कर्नाटक और महाराष्ट्र के बड़े हिस्से पर शासन किया। इस राजवंश के प्रसिद्ध राजा पुलकेशिन द्वितीय थे जिन्होंने हर्ष को पराजित किया था। उनकी स्थापत्य कला और सैन्य उपलब्धियों ने उन्हें दक्कन की सर्वोच्च शक्ति के रूप में स्थापित किया था।

57. (C) कर्नाटक
चालुक्यों की ऐतिहासिक राजधानी वातापि वर्तमान कर्नाटक राज्य के बादामी में स्थित है। यह स्थान अपनी रॉक-कट गुफाओं और स्थापत्य कला हेतु विश्व प्रसिद्ध है। बादामी की पहाड़ियों से घिरा यह नगर सामरिक दृष्टि से सुरक्षित था और यहाँ निर्मित लाल बलुआ पत्थर के मंदिर चालुक्य कालीन कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। कर्नाटक के इस क्षेत्र ने न केवल चालुक्यों के उत्थान को देखा, बल्कि यह दक्षिण भारतीय संस्कृति के विकास का प्रमुख केंद्र भी रहा।

58. (A) वातापि के चालुक्य - बादामी
चालुक्य राजवंश की मुख्य शाखा वातापि में स्थित थी, जिसे वर्तमान में बादामी के नाम से जाना जाता है। यह नगर उनकी राजनीतिक शक्ति और कलात्मक गतिविधियों का केंद्र था। चालुक्यों की अन्य शाखाओं में वेंगी के पूर्वी चालुक्य और कल्याणी के पश्चिमी चालुक्य शामिल थे। वातापि के चालुक्यों ने ही उस वैभवशाली स्थापत्य परंपरा की नींव रखी जिसे बाद के शासकों ने आगे बढ़ाया। बादामी और चालुक्यों का संबंध भारतीय इतिहास में अत्यंत गौरवशाली है।

59. (D) रविकीर्ति
ऐहोल का प्रसिद्ध प्रशस्ति लेख चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा संस्कृत भाषा में रचा गया था। इस शिलालेख में पुलकेशिन द्वितीय की सैन्य सफलताओं का विस्तृत वर्णन है, जिसमें हर्षवर्धन के विरुद्ध उनकी निर्णायक विजय विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रविकीर्ति ने स्वयं को कालिदास और भारवि के समान प्रतिभाशाली बताया है। यह अभिलेख न केवल एक ऐतिहासिक दस्तावेज है, बल्कि संस्कृत काव्य कला का एक उत्कृष्ट नमूना भी माना जाता है।

60. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
पाल राजवंश ने मुख्य रूप से बंगाल के उपजाऊ क्षेत्रों में अपनी शक्ति स्थापित की और बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया। वर्मन वंश प्राचीन कामरूप या आधुनिक असम का शासक था। कश्मीर में कार्कोट वंश ने ललितादित्य जैसे विजेताओं के साथ अपनी धाक जमाई। चालुक्य वंश की मुख्य शक्ति वातापि में केंद्रित थी, जहाँ से उन्होंने दक्कन की राजनीति को नियंत्रित किया। यह भौगोलिक विभाजन उस काल के क्षेत्रीय साम्राज्यों के प्रभाव क्षेत्रों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

61. (C) वेंगी के चालुक्य
चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने आंध्र के वेंगी क्षेत्र को जीतकर अपने भाई विष्णुवर्धन को वहाँ का शासक नियुक्त किया था, जिससे 'पूर्वी चालुक्य' शाखा का जन्म हुआ। वेंगी की यह शाखा अपनी मुख्य शाखा से स्वतंत्र होकर कई शताब्दियों तक शासन करती रही। उन्होंने तेलुगु भाषा और संस्कृति को अत्यधिक बढ़ावा दिया। वेंगी के चालुक्यों ने बाद में चोलों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए, जिससे भारतीय इतिहास के अनेक महत्वपूर्ण प्रशासनिक परिवर्तन प्रभावित हुए।

62. (D) वेसर
वातापि के चालुक्यों के संरक्षण में जिस स्थापत्य शैली का जन्म हुआ उसे वेसर शैली कहा जाता है, जो नागर और द्रविड़ शैलियों का एक अनूठा सम्मिश्रण है। उन्होंने ऐहोल, बादामी और पट्टडकल जैसे केंद्रों पर अनेक मंदिरों का निर्माण कराया जहाँ दोनों शैलियों के तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इस मिश्रित शैली ने भारतीय मंदिर वास्तुकला को नया आयाम प्रदान किया, जिसमें उत्तर भारतीय शिखर और दक्षिण भारतीय मंडपों का सुंदर सामंजस्य स्थापित किया गया था।

63. (A) विक्रमादित्य द्वितीय
पट्टडकल का विरुपाक्ष मंदिर चालुक्य राजा विक्रमादित्य द्वितीय की रानी लोकमहादेवी द्वारा पल्लवों पर उनके पति की सफल विजयों की स्मृति में बनवाया गया था। यह मंदिर द्रविड़ स्थापत्य शैली का भव्य उदाहरण है, जिसकी संरचना कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर से प्रभावित मानी जाती है। मंदिर की दीवारों पर रामायण के दृश्यों का सूक्ष्म चित्रण किया गया है। यह मंदिर न केवल सैन्य शक्ति का प्रतीक है, बल्कि कला के प्रति उनके अटूट समर्पण को भी प्रदर्शित करता है।

64. (B) प्रशासनिक व्यवस्था बिना किसी स्थानीय स्वायत्तता के अत्यधिक केंद्रीकृत थी।
चालुक्य प्रशासन की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसकी विकेंद्रीकृत प्रकृति और स्थानीय निकायों को दी गई स्वायत्तता थी। साम्राज्य मंडल और राष्ट्र जैसे प्रांतों में विभाजित था, किंतु गाँवों का प्रबंधन स्थानीय संस्थाओं द्वारा कुशलतापूर्वक किया जाता था। शासक प्रजा कल्याण के प्रति समर्पित थे और उन्होंने भूमि दान के माध्यम से कृषि को बढ़ावा दिया। यह कहना गलत है कि व्यवस्था पूरी तरह केंद्रीकृत थी, क्योंकि स्थानीय

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) स्त्रीधन
प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रीधन उस विशेष संपत्ति को कहा जाता था जिस पर महिलाओं का पूर्ण और स्वतंत्र अधिकार होता था। यह संपत्ति प्रायः उन्हें विवाह के समय माता-पिता या सगे-संबंधियों द्वारा उपहारस्वरूप दी जाती थी। धर्मशास्त्रों के अनुसार इस धन पर पति का कोई विधिक अधिकार नहीं होता था। महिला इसका उपयोग करने हेतु स्वतंत्र थी, जो उसकी आर्थिक सुरक्षा का मुख्य साधन था।

2. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
अग्रहार प्राचीन और मध्यकालीन भारत में ब्राह्मणों को दिए जाने वाले भूमि अनुदान थे, जो उनके धार्मिक और शैक्षिक कर्तव्यों के निर्वहन हेतु प्रदान किए जाते थे। ये अनुदान प्रायः कर-मुक्त होते थे और इनका स्वामित्व ब्राह्मण समूहों के पास होता था। यद्यपि धार्मिक संस्थानों को भी भूमि दी जाती थी, किंतु 'अग्रहार' शब्द विशेष रूप से ब्राह्मण बस्तियों और उनके विशेषाधिकारों से ही जुड़ा हुआ था।

3. (C) गांधार
भारतीय मंदिर वास्तुकला की तीन प्रमुख शैलियाँ नागर, द्रविड़ और वेसर हैं, जो क्रमशः उत्तर, दक्षिण और मध्य भारत में प्रचलित थीं। गांधार शैली मुख्य रूप से मूर्तिकला और बौद्ध धार्मिक कला से संबंधित है, जिसमें यूनानी और रोमन कलात्मक तत्वों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। यह कुषाण काल में उत्तर-पश्चिमी भारत में विकसित हुई थी और इसे मंदिर वास्तुकला की मुख्य शास्त्रीय शैली नहीं माना जाता।

4. (D) नागर और द्रविड़
वेसर शैली मंदिर वास्तुकला की एक विशिष्ट मिश्रित शैली है, जो उत्तर भारत की नागर शैली और दक्षिण भारत की द्रविड़ शैली के तत्वों को समाहित करती है। इसका विकास मुख्य रूप से विंध्य पर्वत और कृष्णा नदी के मध्य हुआ था। बादामी के चालुक्यों ने इस शैली को व्यापक संरक्षण दिया, जिसमें विमान और शिखर दोनों के मिले-जुले लक्षण दिखाई देते हैं। यह स्थापत्य समन्वय का उत्कृष्ट प्रमाण है।

5. (C) वे शहीद नायकों या सती अनुष्ठान करने वाली महिलाओं की स्मृति में स्थापित किए जाते थे।
प्राचीन और मध्यकालीन भारत में स्मारक पत्थरों को वीरगल या सती पत्थर के रूप में जाना जाता था। ये उन बहादुर योद्धाओं के सम्मान में स्थापित किए जाते थे जिन्होंने युद्ध या पशु रक्षा में प्राणों की आहुति दी थी। इसके अतिरिक्त, ये उन महिलाओं की स्मृति में भी बनाए जाते थे जिन्होंने सती प्रथा का पालन किया था। ये स्मारक समाज में बलिदान के आदर्शों को जीवित रखते थे।

6. (B) उत्तर भारत
नागर शैली भारतीय मंदिर वास्तुकला की प्रमुख शैली है, जो मुख्य रूप से हिमालय से विंध्य पर्वतमाला तक उत्तर भारतीय क्षेत्रों में प्रचलित थी। इसकी मुख्य विशेषता वक्राकार शिखर है जो ऊपर की ओर पतला होता जाता है। नागर मंदिरों का आधार प्रायः वर्गाकार होता है और इसमें स्तंभों वाले विस्तृत मंडपों का निर्माण किया जाता है। खजुराहो और उड़ीसा के प्रसिद्ध मंदिर इसी स्थापत्य शैली के उदाहरण हैं।

7. (D) ब्राह्मणों या धार्मिक निकायों को दिया गया भूमि अनुदान
प्राचीन भारत में अग्रहार का मुख्य उद्देश्य विद्वान ब्राह्मणों या धार्मिक संस्थानों को उनकी सेवाओं के लिए भूमि या गाँव दान करना था। ये अनुदान प्रायः राजाओं द्वारा कर-मुक्त रखे जाते थे ताकि प्राप्तकर्ता बिना किसी आर्थिक बाधा के अध्ययन और धार्मिक अनुष्ठान कर सकें। इस व्यवस्था ने शिक्षा के प्रसार और ब्राह्मणवादी संस्कृति के सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि विस्तार भी हुआ।

8. (A) यह गुप्त और कुषाण तत्वों का मिश्रण करने वाली एक मिश्रित शैली है।
द्रविड़ शैली दक्षिण भारत की एक मौलिक मंदिर वास्तुकला है। इसकी मुख्य विशेषताओं में पिरामिडनुमा बहुमंजिला शिखर शामिल है, जिसे विमान कहा जाता है। इसके अतिरिक्त मंदिर परिसर के भीतर विशाल प्रवेश द्वार, जिसे गोपुरम कहते हैं, और एक विशाल जल कुंड इसकी पहचान है। यह शैली गुप्त या कुषाण तत्वों का मिश्रण नहीं है, बल्कि पल्लव और चोल राजाओं के संरक्षण में स्वतंत्र रूप से विकसित हुई।

9. (C) चंद्रगुप्त प्रथम
चंद्रगुप्त प्रथम को गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है क्योंकि उन्होंने ही इस वंश की प्रतिष्ठा को साम्राज्यिक स्तर पर स्थापित किया। उन्होंने 319 ईस्वी में महाराजाधिराज की प्रभावशाली उपाधि धारण की, जो उनकी संप्रभुता का प्रतीक थी। लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी के साथ उनके वैवाहिक गठबंधन ने गुप्तों की स्थिति को सुदृढ़ किया। उनके शासनकाल से ही गुप्त संवत का प्रारंभ माना जाता है, जो युगांतरकारी था।

10. (A) केवल I
प्राचीन धर्मशास्त्रों के अनुसार स्त्रीधन पर महिला का अनन्य अधिकार होता था और उसकी मृत्यु के पश्चात यह संपत्ति उसकी संतानों को प्राप्त होती थी। इस धन पर पति का विधिक नियंत्रण नहीं होता था। इसमें आभूषण, वस्त्र और विवाह के समय प्राप्त अन्य चल उपहार भी सम्मिलित थे। केवल गंभीर संकट की स्थिति में ही पति को बहुत सीमित परिस्थितियों में इसके उपयोग की अनुमति प्रदान की गई थी।

पश्चात महेंद्रवर्मन ने अनेक शिव मंदिरों का निर्माण कराया और तमिल भक्ति साहित्य को प्रोत्साहन दिया। उनके इस परिवर्तन ने पल्लव साम्राज्य में भक्ति आंदोलन के विकास को तेज कर दिया। अप्पार की भक्ति और उनके भजनों ने जनमानस के साथ-साथ राजसत्ता को भी शैव दर्शन की ओर दृढ़ता से आकर्षित किया था।

75. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पल्लव सम्राट नरसिंहवर्मन प्रथम ने अपने पिता की चालुक्यों के हाथों हुई हार का बदला लेने हेतु चालुक्य राजधानी वातापि पर भीषण आक्रमण किया। उन्होंने पुलकेशिन द्वितीय को पराजित किया और वातापि को जीतकर उसे तहस-नहस कर दिया। इस ऐतिहासिक सैन्य सफलता की स्मृति में उन्होंने 'वातापिंड' की गरिमामयी उपाधि धारण की। यह जीत पल्लव सैन्य इतिहास की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है, जिसने दक्कन में कुछ समय के लिए पल्लवों का पूर्ण प्रभुत्व और श्रेष्ठता स्थापित कर दी थी।

76. (B) पल्लव
ममल्लापुरम के प्रसिद्ध 'रथ' मंदिर पल्लव राजवंश की रॉक-कट वास्तुकला के सबसे अद्भुत और अद्वितीय उदाहरण हैं। इन मंदिरों का निर्माण मुख्य रूप से नरसिंहवर्मन प्रथम के काल में हुआ था, जहाँ प्रत्येक मंदिर को एक ही विशाल अखंड चट्टान से तराश कर बनाया गया है। इन रथों के नाम महाभारत के पांडवों के नाम पर रखे गए हैं, यद्यपि इनका सीधा संबंध पांडवों से नहीं है। यह स्थापत्य प्रयोग गुफा मंदिरों से स्वतंत्र संरचनात्मक मंदिरों की ओर संक्रमण का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण माना जाता है।

77. (C) रॉक-कट से संरचनात्मक मंदिरों में संक्रमण
पल्लव कला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसके माध्यम से भारतीय मंदिर वास्तुकला गुफाओं से निकलकर स्वतंत्र संरचनात्मक मंदिरों के रूप में विकसित हुई। प्रारंभ में महेंद्रवर्मन ने केवल गुफा मंदिर बनाए, किंतु बाद में नरसिंहवर्मन द्वितीय जैसे शासकों ने कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर जैसे भव्य संरचनात्मक मंदिरों का निर्माण किया। इस क्रमिक विकास ने द्रविड़ शैली को उसके पूर्ण स्वरूप तक पहुँचाने में आधारभूत भूमिका निभाई। ईंट और लकड़ी के स्थान पर पत्थर का स्थायी उपयोग एक युगांतरकारी उपलब्धि थी।

78. (D) नरसिंहवर्मन द्वितीय
महान संस्कृत विद्वान दण्डिन पल्लव सम्राट नरसिंहवर्मन द्वितीय के दरबार के प्रमुख विद्वानों में से एक थे। दण्डिन की प्रसिद्ध कृति 'दशकुमारचरित' उस समय के संस्कृत साहित्य की अनमोल धरोहर है। नरसिंहवर्मन द्वितीय का शासनकाल शांति और सांस्कृतिक उन्नति का युग था, जिसमें साहित्य और कला को भरपूर राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। दण्डिन जैसे मनीषियों की उपस्थिति ने कांचीपुरम को न केवल राजनीतिक राजधानी बल्कि पूरे भारत में संस्कृत विद्या और उच्च कोटि के साहित्यिक सृजन का प्रदीप्त केंद्र बना दिया था।

79. (A) राजेंद्र चोल
महेंद्रवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन प्रथम और नरसिंहवर्मन द्वितीय पल्लव राजवंश के शक्तिशाली शासक थे, जिन्होंने कला और सैन्य विजयों में योगदान दिया। इसके विपरीत, राजेंद्र चोल पल्लव नहीं बल्कि चोल राजवंश के सर्वाधिक प्रतापी सम्राट थे, जिन्होंने गंगा अभियान के माध्यम से चोल शक्ति को शिखर पर पहुँचाया। यद्यपि पल्लवों और चोलों का प्रभाव क्षेत्र एक ही रहा, किंतु वे अलग राजवंशों से थे। राजेंद्र चोल का काल पल्लवों के पतन के काफी बाद का है जब चोलों ने पूर्ण वर्चस्व स्थापित किया।

80. (B) नरसिंहवर्मन द्वितीय
महाबलीपुरम में समुद्र तट पर स्थित प्रसिद्ध 'शोर मंदिर' का निर्माण पल्लव राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय द्वारा कराया गया था। यह मंदिर पल्लव वास्तुकला में रॉक-कट से संरचनात्मक पत्थर के मंदिरों की ओर पूर्ण संक्रमण का प्रतीक है। इसे ग्रेनाइट के पत्थरों से निर्मित किया गया है और यह अपनी सुंदरता हेतु जाना जाता है। शोर मंदिर द्रविड़ शैली के प्रारंभिक स्वरूप को दर्शाता है और इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो पल्लव कला की शाश्वत विरासत मानी जाती है।

81. (B) वे प्रशासनिक कार्यों वाली ग्रामीण संस्थाएँ थीं।
पल्लव प्रशासन में स्थानीय स्वशासन की जड़ें अत्यंत गहरी थीं, जिसमें 'सभा' और 'ऊर' नामक ग्रामीण संस्थाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। 'सभा' मुख्य रूप से ब्राह्मण बस्तियों की एक स्वायत्त परिषद थी जो भूमि प्रबंधन और कर संग्रह का कार्य करती थी। 'ऊर' सामान्य गाँवों की सभा थी जिसमें स्थानीय निवासी शामिल होते थे। इन संस्थाओं ने शासन के विकेंद्रीकरण और ग्रामीण स्तर पर प्रजातांत्रिक मूल्यों को जीवित रखने में योगदान दिया, जिससे राज्य और जनता के मध्य प्रशासनिक समन्वय बना रहा।

82. (A) पल्लव
शाही चोल राजवंश का पुनरुत्थान नौवीं शताब्दी में पल्लवों की शक्ति के क्षीण होने के परिणामस्वरूप हुआ। चोल शासक प्रारंभ में पल्लवों के अधीन सामंत के रूप में कार्य करते थे। जब पल्लव और पांड्य आपस में युद्धों के कारण कमजोर हो गए, तो विजयालय चोल ने इस स्थिति का लाभ उठाकर स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। उन्होंने धीरे-धीरे पल्लव क्षेत्रों पर अधिकार करना प्रारंभ किया और अंततः उन्हें विस्थापित कर दक्षिण भारत में शक्तिशाली साम्राज्य की नींव रखी जो आने वाले समय की महाशक्ति बना।

83. (C) विजयालय
विजयालय को शाही चोल राजवंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है, जिन्होंने 850 ईस्वी के आसपास तंजावुर पर अधिकार कर उसे अपनी राजधानी बनाया। उन्होंने पल्लवों की अधीनता त्याग कर चोलों की स्वतंत्र सत्ता को पुनर्जीवित किया। यद्यपि वे एक छोटे शासक के रूप में उभरे थे, किंतु उनकी इस सफलता ने भविष्य के महान चोल साम्राज्य हेतु आधार तैयार किया। उन्होंने तंजावुर में निशुंभसूदनी देवी के

22. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल के सिक्के उनके द्वारा अश्वमेध यज्ञ किए जाने की पुष्टि करते हैं, जो उनकी संप्रभुता का प्रतीक था। उनका शासनकाल लगभग चार दशकों तक चला, जो मुख्यतः आंतरिक शांति और प्रशासनिक स्थिरता का युग था। इसी शांतिपूर्ण वातावरण के कारण साहित्य का विकास हुआ और उन्होंने प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की। उनका काल गुप्त साम्राज्य के सांस्कृतिक वैभव का प्रतिनिधित्व करता है।

23. (D) उपरिक
गुप्त काल में साम्राज्य को कई प्रशासनिक प्रभागों में बांटा गया था, जिनमें प्रांतों को 'भुक्ति' कहा जाता था। इन प्रांतों के प्रमुख या राज्यपाल को 'उपरिक' की उपाधि दी जाती थी, जिनकी नियुक्ति सीधे सम्राट द्वारा की जाती थी। उपरिक का मुख्य उत्तरदायित्व अपने क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखना और राजस्व एकत्र करना था। वे प्रायः सम्राट के विश्वसनीय अधिकारी या शाही परिवार के सदस्य होते थे।

24. (A) कृषि उपज का एक हिस्सा, प्रायः छठा भाग।
गुप्त कालीन अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित थी और राज्य की आय का प्रमुख स्रोत भूमि कर था। किसानों को अपनी उपज का एक निश्चित हिस्सा राजा को कर के रूप में देना पड़ता था, जिसे 'भाग' कहा जाता था। सामान्यतः यह हिस्सा कुल उपज का छठा भाग होता था, जिसे धार्मिक ग्रंथों में भी न्यायसंगत माना गया था। इसका उपयोग सार्वजनिक कल्याण और सेना के रखरखाव हेतु किया जाता था।

25. (C) विषयपति - एक प्रांत (भुक्ति) का प्रमुख
गुप्त प्रशासन में 'भुक्ति' एक बड़े प्रांत को संदर्भित करता था, जिसके प्रमुख को उपरिक कहा जाता था। भुक्ति को पुनः छोटे जिलों में विभाजित किया गया था, जिन्हें 'विषय' कहा जाता था और इनके प्रमुख को 'विषयपति' के नाम से जाना जाता था। विषयपति का कार्य अपने जिले में शासन चलाना और भूमि संबंधी अभिलेखों का रखरखाव करना था। अतः विषयपति जिला प्रशासन का मुख्य केंद्र और उत्तरदायी अधिकारी था।

26. (A) अस्पृश्यता की प्रथा का पूर्ण उन्मूलन।
गुप्त काल में कला और साहित्य में अभूतपूर्व प्रगति हुई, किंतु सामाजिक क्षेत्र में अस्पृश्यता की प्रथा का उन्मूलन नहीं हुआ, बल्कि यह और अधिक स्पष्ट हो गई। फाहियान के अनुसार चांडालों जैसे वर्गों को नगर के बाहर रहना पड़ता था। वर्ण व्यवस्था इस काल में अधिक सुदृढ़ और जन्म आधारित हो गई थी। यद्यपि समाज समृद्ध था, किंतु निम्न वर्गों की स्थिति में सुधार नहीं हुआ और सामाजिक भेदभाव बना रहा।

27. (D) I, II और III
गुप्त काल में बड़ी संख्या में जारी स्वर्ण सिक्के साम्राज्य की आर्थिक संपन्नता और व्यापारिक विस्तार को दर्शाते हैं। यद्यपि पश्चिमी रोमन व्यापार में कमी आई थी, किंतु दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ व्यापारिक संबंधों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इस काल में व्यापारियों और शिल्पकारों की श्रेणियां अत्यंत शक्तिशाली थीं, जो बैंकिंग और विनिर्माण कार्यों का संचालन करती थीं। यह आर्थिक ढांचा साम्राज्य की स्थिरता का आधार था।

28. (B) वाकाटक
अजंता और एलोरा की गुफाओं के निर्माण में गुप्त शासकों के साथ-साथ वाकाटक राजवंश का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। विशेष रूप से अजंता की बाद की गुफाओं के भित्ति चित्रों को वाकाटक राजाओं का सीधा संरक्षण प्राप्त हुआ था। गुप्त-वाकाटक वैवाहिक संबंधों ने भी इन कलात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया। इन गुफाओं की उत्कृष्ट कला उस समय के धार्मिक सद्भाव और श्रेष्ठ स्थापत्य कौशल का अद्भुत मेल प्रस्तुत करती है।

29. (C) भक्ति के उदय के साथ ब्राह्मणवाद का पुनरुत्थान हुआ।
गुप्त काल को भारतीय इतिहास में ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म के पुनरुत्थान और भक्ति मार्ग के लोकप्रिय होने के युग के रूप में पहचाना जाता है। इस काल में विष्णु और शिव की व्यक्तिगत भक्ति पर आधारित धर्म अधिक प्रभावशाली हुआ और भव्य मंदिरों का निर्माण प्रारंभ हुआ। गुप्त सम्राटों ने वैष्णव धर्म को राजकीय संरक्षण दिया। इसी समय रामायण, महाभारत और पुराणों को अंतिम रुप दिया गया, जिससे पौराणिक आधार सुदृढ़ हुआ।

30. (B) स्कंदगुप्त
यद्यपि ऐतिहासिक रुप से महाकवि कालिदास को चंद्रगुप्त द्वितीय के 'नवरत्नों' में माना जाता है, किंतु कुछ परंपराएं उन्हें स्कंदगुप्त के काल से भी जोड़ती हैं। कालिदास की कृतियाँ जैसे रघुवंश और अभिज्ञानशाकुंतलम गुप्त कालीन सांस्कृतिक वैभव को प्रतिबिंबित करती हैं। उनकी रचनाओं में वर्णित भौगोलिक विवरण गुप्त साम्राज्य के विस्तार से मेल खाते हैं। वे संस्कृत साहित्य के महानतम रचनाकार हैं जिनका योगदान अतुलनीय और अत्यंत प्रभावशाली रहा है।

31. (A) गुप्त
उत्तर प्रदेश के ललितपुर में स्थित देवगढ़ का दशावतार मंदिर गुप्त कालीन वास्तुकला का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। यह मंदिर अपनी नक्काशीदार दीवारों और भगवान विष्णु के विभिन्न रुपों के चित्रण हेतु प्रसिद्ध है। इसकी संरचना में शिखर निर्माण के प्रारंभिक प्रयास दिखाई देते हैं, जो बाद में नागर शैली का आधार बना। इसके प्रवेश द्वार और मूर्तिकला गुप्त युग की शास्त्रीय सुंदरता और आध्यात्मिक गहराई को प्रदर्शित करते हैं।

32. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गुप्त काल को प्राचीन भारत का 'स्वर्ण युग' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस अवधि में चहुंमुखी प्रगति हुई थी। विज्ञान के क्षेत्र में आर्यभट्ट, साहित्य में कालिदास और कला के क्षेत्र में अजंता के भित्ति चित्र इसी युग की देन हैं। राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि ने विद्वानों को अपनी प्रतिभा दिखाने हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान किया। विभिन्न क्षेत्रों की महान उपलब्धियों के कारण इसे इतिहास का सर्वश्रेष्ठ युग माना जाता है।

33. (B) चंद्रगुप्त द्वितीय
चीनी बौद्ध भिक्षु फाहियान ने चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत की यात्रा की थी और अपने वृत्तांतों में तत्कालीन समाज का जीवंत चित्रण किया। उन्होंने पाटलिपुत्र की समृद्धि, गुप्त प्रशासन की उदारता और दंड विधान की सरलता के बारे में महत्वपूर्ण विवरण दिए हैं। फाहियान के अनुसार लोग सुखी थे और उन्हें आवागमन की स्वतंत्रता थी। परिस्थितियों के आधार पर उनका वर्णन स्पष्ट रूप से चंद्रगुप्त द्वितीय के काल का है।

34. (A) धार्मिक प्रचार और व्यापार
गुप्त काल के दौरान दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ भारत के प्रगाढ़ संबंध व्यापारिक लाभ और बौद्ध तथा हिंदू धर्म के प्रसार से प्रेरित थे। भारतीय व्यापारी मसालों के लिए इन क्षेत्रों की यात्रा करते थे। उनके साथ भिक्षु और विद्वान भी गए जिन्होंने वहां भारतीय संस्कृति, लिपि और धार्मिक दर्शन का प्रसार किया। इसी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के परिणामस्वरूप वहां अंकोरवाट जैसे महान स्मारकों की नींव पड़ी, जिसमें भारतीय प्रभाव स्पष्ट है।

35. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
गुप्त काल के महान ग्रंथों में आर्यभट्ट द्वारा रचित 'आर्यभटीय' गणित और खगोल विज्ञान की आधारशिला है। कालिदास का 'रघुवंश' राम के वंशजों के गौरव का वर्णन करने वाला उत्कृष्ट महाकाव्य है। शूद्रक द्वारा लिखित 'मृच्छकटिकम्' उस समय के सामाजिक जीवन का वास्तविक चित्रण करने वाला नाटक है। वात्स्यायन का 'कामसूत्र' तत्कालीन समाज के मानवीय संबंधों पर आधारित ग्रंथ है। ये रचनाएं गुप्त काल की बौद्धिक श्रेष्ठता का प्रमाण हैं।

36. (D) पुष्यभूति
हर्षवर्धन प्राचीन भारत के महान सम्राट थे, जो पुष्यभूति राजवंश से संबंधित थे। इस वंश की स्थापना पुष्यभूति ने हरियाणा के थानेसर में की थी। हर्ष ने अपने भाई राज्यवर्धन की मृत्यु के पश्चात कठिन परिस्थितियों में शासन संभाला और उत्तर भारत को एकीकृत किया। उनके नेतृत्व में यह वंश अपनी शक्ति के चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। उन्होंने न केवल साम्राज्य विस्तार किया, बल्कि साहित्य और धर्म को भी अत्यधिक बढ़ावा दिया।

37. (C) थानेसर
हर्षवर्धन के पुष्यभूति राजवंश की प्रारंभिक राजधानी थानेसर थी, जो आधुनिक हरियाणा के कुरुक्षेत्र में स्थित है। यह स्थान उनके पूर्वजों का शक्ति केंद्र था। बाद में अपनी बहन राज्यश्री की रक्षा करने और मौखरि साम्राज्य को संभालने हेतु उन्होंने अपनी राजधानी कन्नौज स्थानांतरित कर दी। कन्नौज अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण उत्तर भारत के नियंत्रण हेतु अधिक उपयुक्त और सामरिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान बन गया था।

38. (B) बाणभट्ट
'हर्षचरित' सम्राट हर्षवर्धन की पहली विस्तृत जीवनी है, जिसकी रचना उनके दरबारी कवि बाणभट्ट ने संस्कृत भाषा में की थी। इस ग्रंथ में हर्ष के पूर्वजों, उनके प्रारंभिक जीवन और राजा बनने के संघर्षपूर्ण सफर का अलंकारिक शैली में वर्णन किया गया है। बाणभट्ट ने अपनी रचना में उस समय की सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों का भी सजीव चित्रण किया है। यह कृति हर्ष के शासनकाल को समझने का प्राथमिक स्रोत है।

39. (D) पुलकेशिन द्वितीय
हर्षवर्धन ने उत्तर भारत में विजय प्राप्त करने के पश्चात जब दक्षिण की ओर विस्तार करने का प्रयास किया, तो नर्मदा नदी के तट पर उन्हें चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। इस ऐतिहासिक युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष की विशाल सेना को पराजित कर उनकी विजय यात्रा पर विराम लगा दिया। इस घटना की पुष्टि ऐहोल अभिलेख और ह्वेनसांग के वृत्तांतों से होती है, जिससे सीमा नर्मदा तक सीमित रही।

40. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
हर्षवर्धन अत्यंत परिश्रमी शासक थे, जो साम्राज्य के विभिन्न भागों में निरंतर यात्रा करके स्वयं प्रशासनिक कार्यों का निरीक्षण करते थे। ह्वेनसांग के अनुसार हर्ष का प्रशासन सक्रिय था, किंतु दंड संहिता उदार नहीं बल्कि अत्यंत कठोर थी। कानून का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध अंग-भंग जैसे कड़े दंड दिए जाते थे। यद्यपि हर्ष व्यक्तिगत रूप से उदार थे, किंतु सुरक्षा हेतु उन्होंने कठोर न्यायिक प्रणाली को बनाए रखा था।

41. (C) महायान बौद्ध धर्म
सम्राट हर्षवर्धन अपने प्रारंभिक जीवन में भगवान शिव के भक्त थे। किंतु बाद में वे चीनी यात्री ह्वेनसांग के संपर्क में आए और महायान बौद्ध धर्म के सिद्धांतों से प्रभावित होकर इसके अनुयायी बन गए। उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु अनेक मठों का निर्माण कराया और कन्नौज में विशाल सभाओं का आयोजन किया। हालांकि, वे अन्य धर्मों के प्रति भी सहिष्णु बने रहे और उन्होंने ब्राह्मणों तथा विद्वानों को दान देना जारी रखा।

42. (A) प्रयाग
हर्षवर्धन प्रत्येक पांच वर्ष के अंतराल पर प्रयाग में एक विशाल सभा का आयोजन करते थे, जिसे 'मोक्ष परिषद' कहा जाता था। ह्वेनसांग ने इस परिषद के छठे आयोजन में स्वयं भाग लिया था। इस सभा में हर्ष अपनी संचित संपत्ति का दान धार्मिक संस्थाओं और गरीबों को अत्यंत उदारतापूर्वक करते थे। यह आयोजन हर्ष की धार्मिक सहिष्णुता और प्रजा के प्रति उनके कल्याणकारी दृष्टिकोण का एक अद्वितीय उदाहरण माना जाता है।

43. (D) नालंदा
नालंदा विश्वविद्यालय हर्षवर्धन के शासनकाल में महायान बौद्ध शिक्षा के अंतरराष्ट्रीय केंद्र के रूप में उभरा। हर्ष ने इस विश्वविद्यालय के रखरखाव हेतु सौ गाँवों का राजस्व दान में दिया था, जिससे यहाँ के हजारों छात्रों को निशुल्क आवास और भोजन उपलब्ध होता था। उनकी उदारता के कारण ही ह्वेनसांग जैसे विदेशी विद्वान यहाँ अध्ययन करने आए। हर्ष ने विद्या के संरक्षक के रूप में नालंदा को वैश्विक शैक्षणिक प्रतिष्ठा प्रदान की।

44. (B) नर्मदा नदी के दक्षिण का क्षेत्र
हर्षवर्धन ने उत्तर भारत में विशाल साम्राज्य स्थापित किया था, जिसमें पंजाब, उत्तर प्रदेश और बिहार शामिल थे। हालांकि, नर्मदा नदी के दक्षिण का क्षेत्र कभी भी उनके नियंत्रण में नहीं रहा क्योंकि चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने उन्हें नर्मदा के तट पर पराजित कर दिया था। इस हार के कारण हर्ष की महत्वाकांक्षा केवल उत्तरी भारत तक सीमित रही। प्रायद्वीपीय भारत का क्षेत्र दक्षिण के शक्तिशाली राजवंशों के अधीन बना रहा।

45. (B) केवल I और III
चीनी तीर्थयात्री ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी के भारतीय समाज का विवरण दिया है, जिसमें उन्होंने जाति व्यवस्था की कठोरता और अस्पृश्यता का उल्लेख किया है। उन्होंने विशेष रूप से नालंदा विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षण व्यवस्था और वहां के कठोर शैक्षणिक अनुशासन की प्रशंसा की है। हालांकि, उन्होंने यह भी बताया कि उस समय सड़कें पूरी तरह सुरक्षित नहीं थीं और उन्हें स्वयं भी अपनी यात्रा के दौरान डाकुओं का सामना करना पड़ा था।

46. (D) कश्मीर
कार्कोट राजवंश सातवीं से नौवीं शताब्दी के दौरान कश्मीर का अत्यंत शक्तिशाली और प्रभावशाली शासक वंश था। इस वंश की स्थापना दुर्लभवर्धन ने की थी। कार्कोट राजाओं ने कश्मीर को राजनीतिक रूप से सुदृढ़ किया और इसके भौगोलिक विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके शासनकाल में कश्मीर उत्तर भारत की प्रमुख शक्ति बन गया था। उन्होंने वास्तुकला, सिंचाई और व्यापार को बढ़ावा दिया, जिससे कश्मीर आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध हुआ।

47. (A) बौद्ध धर्म
बंगाल और बिहार पर शासन करने वाला पाल राजवंश बौद्ध धर्म का अंतिम महान संरक्षक माना जाता है। पाल राजा स्वयं 'परम सौगत' की उपाधि धारण करते थे, जो उनके बौद्ध अनुयायी होने का प्रमाण है। उन्होंने नालंदा और ओदंतपुरी जैसे मठों को भारी दान दिया और बौद्ध शिक्षा के केंद्रों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया। पालों के शासनकाल में ही वज्रयान बौद्ध धर्म का विकास हुआ और तिब्बत में इसका प्रसार किया गया।

48. (B) धर्मपाल
पाल राजवंश के महान शासकों में से एक, धर्मपाल ने बिहार के भागलपुर में प्रसिद्ध विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। यह विश्वविद्यालय विशेष रूप से बौद्ध तंत्र और दर्शन की शिक्षा हेतु वैश्विक केंद्र बन गया। धर्मपाल ने इसके रखरखाव हेतु सौ से अधिक गाँवों का दान दिया था। उनके प्रयासों से विक्रमशिला ने नालंदा की भांति प्रतिष्ठा प्राप्त की और यहाँ से निकले विद्वानों ने तिब्बत में ज्ञान का प्रसार किया।

49. (B) 2, 3, 1
कश्मीर के मध्यकालीन इतिहास में राजवंशों का क्रम कार्कोट वंश से प्रारंभ होता है, जिन्होंने कश्मीर को साम्राज्य बनाया। उनके पतन के पश्चात अवंतिवर्मन ने उत्पल वंश की स्थापना की, जो अपनी सिंचाई व्यवस्था हेतु प्रसिद्ध हुआ। अंत में लोहार वंश सत्ता में आया, जिसने बाहरी आक्रमणों के विरुद्ध कश्मीर की रक्षा की। यह क्रम कश्मीर के राजनीतिक उत्थान को स्पष्ट करता है, जिसके अधीन क्षेत्र ने अपनी विशिष्ट स्थापत्य पहचान विकसित की।

50. (A) कामरूप
वर्मन राजवंश प्राचीन कामरूप क्षेत्र का पहला ऐतिहासिक राजवंश था, जिसने आधुनिक असम के बड़े भाग पर शासन किया। इस वंश की स्थापना पुष्यवर्मन ने चौथी शताब्दी में की थी। इस वंश के राजा भास्करवर्मन हर्षवर्धन के समकालीन और घनिष्ठ मित्र थे, जिन्होंने कन्नौज की सभा में भाग लिया था। वर्मन शासकों ने गुप्तों की प्रशासनिक प्रणाली को अपनाया और संस्कृत भाषा को बढ़ावा दिया। कामरूप का उल्लेख इलाहाबाद स्तंभ लेख में मिलता है।

51. (C) ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म, विशेष रूप से वैष्णव धर्म
बंगाल में पाल राजवंश के बाद सत्ता में आए सेन राजाओं ने बौद्ध धर्म के स्थान पर ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म को राजकीय संरक्षण प्रदान किया। वे स्वयं को 'परम वैष्णव' कहते थे और उन्होंने हिंदू रीति-रिवाजों को समाज में पुनः प्रतिष्ठित किया। सेन काल के दौरान ही गीत गोविंद के लेखक जयदेव को संरक्षण मिला। इस काल में संस्कृत साहित्य का विकास हुआ और उन्होंने अनेक मंदिरों का निर्माण कराया, जो उनकी धार्मिक निष्ठा दर्शाते हैं।

52. (D) कार्कोट
ललितादित्य मुक्तापीड़ कश्मीर के कार्कोट राजवंश के सर्वाधिक तेजस्वी और शक्तिशाली शासक थे। उन्हें महान सैन्य विजयों हेतु जाना जाता है, जिन्होंने कश्मीर की सीमाओं का विस्तार मध्य एशिया तक कर दिया था। उन्होंने युद्धों में सफलता के साथ वास्तुकला में भी महान योगदान दिया। कश्मीर के प्रसिद्ध मार्तंड सूर्य मंदिर का निर्माण उन्हीं के संरक्षण में हुआ था। वे कश्मीर के इतिहास के सबसे प्रभावशाली सम्राटों में से एक गिने जाते हैं।

53. (C) राष्ट्रकूट
कन्नौज पर नियंत्रण हेतु आठवीं और नौवीं शताब्दी के दौरान पाल, गुर्जर-प्रतिहार और राष्ट्रकूटों के मध्य हुए संघर्ष को 'त्रिपक्षीय संघर्ष' कहा जाता है। दक्कन के राष्ट्रकूट शासक अपनी भौगोलिक दूरी के बावजूद उत्तर भारत की राजनीति में सक्रिय रहे और बार-बार कन्नौज पर अधिकार किया। इस संघर्ष का मुख्य कारण गंगा घाटी के संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त करना था। इस युद्ध ने तीनों राजवंशों की सैन्य और आर्थिक शक्ति को क्षीण कर दिया।

54. (B) लक्ष्मण सेन
लक्ष्मण सेन बंगाल के सेन राजवंश के अंतिम प्रतापी शासक थे, जिन्होंने साहित्य और कला को अभूतपूर्व प्रोत्साहन दिया। उनके दरबार में 'गीत गोविंद' के रचयिता जयदेव जैसे महान कवि सुशोभित थे, जिनकी रचनाएं आज भी भक्ति परंपरा का अभिन्न अंग हैं। लक्ष्मण सेन स्वयं एक विद्वान शासक थे

(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

299. वर्मन राजवंश ने प्राग्ज्योतिषपुर से शासन किया, जो आधुनिक समय के किस क्षेत्र का प्राचीन नाम है?
(A) बिहार
(B) ओडिशा
(C) बंगाल
(D) असम

300. गुजरात के सोलंकी शासक भीम प्रथम को किस आक्रांता के आक्रमण का सामना करना पड़ा?
(A) मुहम्मद गोरी
(B) महमूद गजनवी
(C) तैमूर
(D) चंगेज खान

अधिकारियों के पास अपने मामलों में पर्याप्त अधिकार मौजूद थे।

65. (B) दंतिदुर्ग
राष्ट्रकूट राजवंश की स्थापना दंतिदुर्ग ने आठवीं शताब्दी के मध्य में चालुक्य साम्राज्य के पतन के पश्चात की थी। उन्होंने अंतिम चालुक्य राजा कीर्तिवर्मन द्वितीय को पराजित कर अपनी संप्रभुता स्थापित की और मान्यखेत को अपनी राजधानी बनाया। दंतिदुर्ग ने 'पृथ्वीवल्लभ' जैसी उपाधियाँ धारण कीं, जो उनकी बढ़ती सैन्य शक्ति का प्रतीक थीं। उनके नेतृत्व में राष्ट्रकूट एक ऐसी महाशक्ति के रूप में उभरे जिन्होंने उत्तर और दक्षिण भारत के मध्य सेतु के रूप में प्रभावी भूमिका निभाई।

66. (B) केवल I और III
राष्ट्रकूट शासक उत्तर भारत के कन्नौज पर नियंत्रण हेतु हुए त्रिपक्षीय संघर्ष के प्रमुख खिलाड़ी थे और उन्होंने कई बार विजय प्राप्त की। उनकी राजधानी मान्यखेत में स्थित थी न कि वेंगी में। राष्ट्रकूट राजाओं ने धार्मिक उदारता का परिचय देते हुए जैन धर्म को भी व्यापक संरक्षण प्रदान किया। अमोघवर्ष प्रथम जैसे शासक स्वयं जैन धर्म के अनुयायी थे। उनकी यह नीति समाज में धार्मिक सामंजस्य बनाए रखने और कलात्मक विविधता को प्रोत्साहित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई थी।

67. (C) कृष्ण प्रथम
एलोरा का विश्व प्रसिद्ध कैलाश मंदिर राष्ट्रकूट राजा कृष्ण प्रथम के संरक्षण में निर्मित एक अद्भुत स्थापत्य उपलब्धि है। यह मंदिर संपूर्ण रूप से एक ही विशाल चट्टान को ऊपर से नीचे की ओर काटकर बनाया गया है, जो अभियांत्रिकी और कला का बेजोड़ नमूना है। यह भगवान शिव को समर्पित है और इसकी भव्यता शिल्पकारों के असाधारण कौशल को दर्शाती है। कैलाश मंदिर न केवल राष्ट्रकूटों की धार्मिक निष्ठा का प्रतीक है, बल्कि यह विश्व की सबसे महत्वपूर्ण रॉक-कट संरचना मानी जाती है।

68. (D) अमोघवर्ष प्रथम
अमोघवर्ष प्रथम राष्ट्रकूट वंश के सबसे महान सम्राट थे, जिन्होंने लगभग 64 वर्षों तक शासन किया। वे न केवल शक्तिशाली शासक थे, बल्कि अपनी उच्च साहित्यिक अभिरुचि हेतु भी प्रसिद्ध थे। उन्होंने कन्नड़ भाषा में 'कविराजमार्ग' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की। जैन धर्म के अनुयायी होने के कारण उन्होंने समाज में शांति और अहिंसा को बढ़ावा दिया। उनके शासनकाल को राष्ट्रकूटों का स्वर्ण युग माना जाता है, जिसमें कला, साहित्य और धर्म ने अपनी उन्नति के उच्चतम शिखर को प्राप्त किया।

69. (C) अणहिलवाड़ा
गुजरात के सोलंकी या चौलुक्य राजवंश की राजधानी अणहिलवाड़ा (वर्तमान पाटन) थी। यह नगर मध्यकालीन भारत का अत्यंत समृद्ध व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र था। सोलंकी शासकों ने इसे भव्य महलों, मंदिरों और जलाशयों से सुसज्जित किया था। अणहिलवाड़ा की भौगोलिक स्थिति ने इसे पश्चिमी व्यापार मार्गों से जोड़ा, जिससे राज्य की अर्थव्यवस्था को बहुत लाभ हुआ। सोलंकी काल में गुजरात ने अपनी विशिष्ट स्थापत्य पहचान बनाई, जिसे 'मारु-गुर्जर' शैली के रूप में जाना जाता है जो उनकी गौरवशाली विरासत है।

70. (B) सोलंकी
मोढेरा का सूर्य मंदिर और माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिर गुजरात के सोलंकी राजवंश की स्थापत्य कला के उत्कृष्ट प्रतीक हैं। सोलंकी राजाओं के संरक्षण में निर्मित ये मंदिर अपनी बारीक नक्काशी और वास्तुकला की भव्यता हेतु प्रसिद्ध हैं। विशेष रूप से दिलवाड़ा के मंदिरों में सफेद संगमरमर पर की गई नक्काशी अद्वितीय मानी जाती है। सोलंकी शासकों ने धार्मिक मतभेदों से ऊपर उठकर हिंदू और जैन समुदायों को समान बढ़ावा दिया, जिससे उनके काल में स्थापत्य का चहुंमुखी विकास संभव हुआ।

71. (D) भीम प्रथम
सोलंकी राजा भीम प्रथम को महमूद गजनवी के सोमनाथ आक्रमण के दौरान कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। गजनवी के प्रस्थान के पश्चात भीम प्रथम ने ही प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर का पाषाण से भव्य पुनर्निर्माण कराया था। उन्होंने अपनी सैन्य शक्ति को पुनर्गठित किया और बाहरी आक्रमणकारियों के विरुद्ध प्रतिरोध जारी रखा। उनके शासनकाल में ही गुजरात ने सांस्कृतिक पुनरुत्थान देखा और मोढेरा जैसे मंदिरों का निर्माण हुआ। भीम प्रथम की दृढ़ इच्छाशक्ति ने सोलंकी साम्राज्य को पुनः सुदृढ़ बनाया।

72. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
राष्ट्रकूटों ने अपनी प्रशासनिक व्यवस्था हेतु गुप्त और चालुक्य प्रणालियों के सिद्धांतों को अपनाया था, जिससे उनका शासन व्यवस्थित बना। कला के क्षेत्र में राष्ट्रकूटों का योगदान अद्वितीय है, जिसका सर्वोत्तम प्रमाण एलोरा का कैलाश मंदिर और एलिफेंटा की गुफाएं हैं। इन स्थलों पर की गई रॉक-कट वास्तुकला भारतीय कला के इतिहास में सर्वोच्च स्थान रखती है। अतः राष्ट्रकूटों ने न केवल सुदृढ़ राजनीतिक ढांचा तैयार किया, बल्कि विश्वस्तरीय सांस्कृतिक धरोहरों के निर्माण में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

73. (C) कांचीपुरम
पल्लव राजवंश की गौरवशाली राजधानी कांचीपुरम थी, जिसे 'मंदिरों का नगर' भी कहा जाता है। यह प्राचीन भारत में शिक्षा और संस्कृति का अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र था जहाँ संस्कृत और तमिल विद्वानों का संगम होता था। कांचीपुरम की भौगोलिक स्थिति और इसके धार्मिक महत्व ने इसे पल्लवों की शक्ति का प्रमुख स्तंभ बना दिया था। यहाँ के मंदिरों की वास्तुकला ने बाद की द्रविड़ शैली के विकास की नींव रखी। पल्लव शासकों ने इस नगर को एक अद्वितीय आध्यात्मिक और शैक्षणिक गरिमा प्रदान की थी।

74. (A) अप्पार
पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम प्रारंभ में जैन धर्म के अनुयायी थे, किंतु प्रसिद्ध शैव संत अप्पार के आध्यात्मिक प्रभाव में आकर उन्होंने शैव धर्म स्वीकार कर लिया। इस धर्मांतरण के

11. (D) कृष्णा नदी घाटी के दक्षिण का क्षेत्र
द्रविड़ स्थापत्य शैली मुख्य रूप से भारत के सुदूर दक्षिणी भाग से संबंधित है, जिसका विस्तार कृष्णा नदी घाटी से कन्याकुमारी तक माना जाता है। इस भौगोलिक क्षेत्र में पल्लव, चोल और विजयनगर साम्राज्यों के अधीन इस शैली का विकास हुआ। इसकी वास्तुकला में विमान, मंडप और अलंकृत गोपुरम जैसे तत्व प्रमुखता से दिखाई देते हैं। यह शैली उत्तर भारतीय नागर शैली से स्पष्ट रूप से भिन्न और विशिष्ट है।

12. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रयाग प्रशस्ति समुद्रगुप्त के शासनकाल और उनकी सैन्य विजयों का सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है। इसकी रचना उनके दरबारी कवि और मंत्री हरिषेण द्वारा चंपू काव्य शैली में की गई थी। इस अभिलेख में समुद्रगुप्त को महान विजेता और कविराज के रूप में वर्णित किया गया है। चूंकि हरिषेण उनके निकटतम दरबारी थे, इसलिए यह प्रशस्ति उस काल के राजनीतिक और सैन्य इतिहास की प्रामाणिक जानकारी देती है।

13. (C) समुद्रगुप्त
समुद्रगुप्त को उनके अभिलेखों और सिक्कों में 'लिच्छवि-दौहित्र' की उपाधि से संबोधित किया गया है, जिसका अर्थ है 'लिच्छवि राजकुमारी का पुत्र'। यह उपाधि उनके पिता चंद्रगुप्त प्रथम और लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी के मध्य हुए वैवाहिक गठबंधन की पुष्टि करती है। इस संबंध ने गुप्त वंश की सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनीतिक शक्ति को बढ़ावा दिया। समुद्रगुप्त ने इस मातृक संबंध को गर्व के साथ प्रदर्शित किया था।

14. (D) देवीचंद्रगुप्तम
गुप्त शासक रामगुप्त के ऐतिहासिक अस्तित्व की पुष्टि मुख्य रूप से विशाखदत्त द्वारा रचित संस्कृत नाटक 'देवीचंद्रगुप्तम' से होती है। इस कृति के अनुसार रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को शक राजा को सौंपने का निर्णय लिया था, जिसके पश्चात उनके छोटे भाई चंद्रगुप्त द्वितीय ने उनकी हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया। यद्यपि अन्य स्रोत भी इसका उल्लेख करते हैं, किंतु यह नाटक इस घटना का विस्तृत विवरण देता है।

15. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
भारतीय वास्तुकला में नागर शैली की पहचान वक्राकार शिखर से होती है, जबकि द्रविड़ शैली में पिरामिडनुमा विमान मुख्य विशेषता है। वेसर शैली इन दोनों के मिश्रण से बनी एक हाइब्रिड पद्धति है, जो मध्य भारत में लोकप्रिय हुई। स्मारक पत्थर जिन्हें वीरगल भी कहा जाता है, प्राचीन समाज में योद्धाओं की वीरतापूर्ण मृत्यु और उनके बलिदान की स्मृति को अमर बनाने के लिए स्थापित किए जाते थे।

16. (B) चंद्रगुप्त द्वितीय
गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ने पश्चिमी भारत के शक्तिशाली शक शासकों को पराजित करने के पश्चात 'विक्रमादित्य' की गौरवशाली उपाधि धारण की थी। यह उनकी वीरता और न्यायप्रियता का प्रतीक बन गई। उनके शासनकाल को गुप्त साम्राज्य का चरमोत्कर्ष माना जाता है, जिसमें कला, विज्ञान और साहित्य ने अभूतपूर्व प्रगति की। वे विद्वानों के संरक्षक भी थे जिनके दरबार में कालिदास जैसे नवरत्न सुशोभित थे।

17. (B) प्रभावतीगुप्त
चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावतीगुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय के साथ हुआ था, जिसने गुप्तों और वाकाटकों के मध्य रणनीतिक गठबंधन स्थापित किया। इस वैवाहिक संबंध ने चंद्रगुप्त द्वितीय को शकों के विरुद्ध सैन्य अभियान में सामरिक लाभ प्रदान किया। रुद्रसेन द्वितीय की मृत्यु के पश्चात प्रभावतीगुप्त ने संरक्षिका के रूप में कुशलतापूर्वक शासन किया। इस दौरान वाकाटक राज्य पर गुप्त साम्राज्य का प्रभाव स्पष्ट था।

18. (A) 2, 3, 4, 1
गुप्त वंश के शासकों का सही कालक्रम समुद्रगुप्त से प्रारंभ होता है, जिन्होंने साम्राज्य की नींव सुदृढ़ की। उनके पश्चात चंद्रगुप्त द्वितीय ने साम्राज्य का विस्तार किया और इसे सांस्कृतिक ऊंचाइयों तक पहुँचाया। उनके उत्तराधिकारी कुमारगुप्त प्रथम का शासनकाल अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण और कलात्मक विकास का रहा। अंत में स्कंदगुप्त ने सिंहासन संभाला, जिन्होंने हूणों के आक्रमणों को विफल किया, किंतु उनके बाद साम्राज्य का पतन होने लगा।

19. (C) चंद्रगुप्त द्वितीय
पश्चिमी भारत के शक क्षत्रपों का उन्मूलन चंद्रगुप्त द्वितीय की महानतम सैन्य उपलब्धि मानी जाती है। इस विजय के फलस्वरूप गुप्त साम्राज्य का विस्तार अरब सागर के तटों तक हो गया और उन्हें भड़ौच जैसे महत्वपूर्ण बंदरगाहों पर नियंत्रण प्राप्त हुआ। इस विजय की स्मृति में उन्होंने चांदी के सिक्के जारी किए और 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। इस अभियान ने गुप्त अर्थव्यवस्था को अंतरराष्ट्रीय व्यापार से जोड़ा।

20. (D) वाकाटक
चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावतीगुप्त का विवाह शक्तिशाली वाकाटक राजवंश के राजा रुद्रसेन द्वितीय के साथ हुआ था। यह गठबंधन गुप्त साम्राज्य की दक्षिण की ओर विस्तारवादी नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा था। वाकाटकों की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी कि वे शकों के विरुद्ध गुप्तों की सहायता कर सकते थे। इस वैवाहिक संबंध ने दोनों राज्यों के मध्य मित्रता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया, जिससे स्थिरता आई।

21. (C) स्कंदगुप्त
गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त को प्रथम बड़े हूण आक्रमण को सफलतापूर्वक विफल करने और भारत की सीमाओं की रक्षा करने का गौरव प्राप्त है। भीतरी स्तंभ लेख के अनुसार उन्होंने हूणों को ऐसी करारी शिकस्त दी कि वे कई दशकों तक पुनः आक्रमण नहीं कर सके। यद्यपि इस संघर्ष ने अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव डाला, किंतु स्कंदगुप्त की वीरता ने साम्राज्य को तत्काल विघटन से बचा लिया और वे प्रजा रक्षक कहलाए।

मंदिर का निर्माण कराया। विजयालय की दूरदर्शिता ने चोलों को दक्षिण भारत की अग्रणी राजनीतिक शक्ति बनाया।

84. (B) केवल II और III
चोल प्रशासन अपनी स्वायत्त स्थानीय सरकार हेतु विशेष रूप से प्रसिद्ध था जो अत्यधिक विकेंद्रीकृत थी। तंजावुर का भव्य बृहदेश्वर मंदिर राजराज प्रथम द्वारा निर्मित कराया गया था। चोल साम्राज्य अपनी सैन्य शक्ति और अद्भुत मंदिर वास्तुकला हेतु इतिहास में प्रसिद्ध रहा है, विशेष रूप से उनकी नौसैनिक श्रेष्ठता के कारण। गंगेयकोंडचोलपुरम में मंदिर का निर्माण राजेंद्र प्रथम ने कराया था। चोलों की शासन व्यवस्था में स्थानीय परिषदों की भूमिका महत्वपूर्ण थी, जो तत्कालीन समय में प्रशासनिक कुशलता का उत्कृष्ट उदाहरण थी।

85. (C) राजेंद्र प्रथम
राजेंद्र प्रथम चोल राजवंश के सबसे शक्तिशाली सम्राटों में से एक थे, जिन्होंने उत्तर भारत में गंगा नदी तक सफल सैन्य अभियान चलाया। इस ऐतिहासिक विजय की स्मृति में उन्होंने 'गंगेयकोंडचोल' की उपाधि धारण की। उन्होंने इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में 'गंगेयकोंडचोलपुरम' नामक भव्य राजधानी की स्थापना की और वहाँ विशाल मंदिर तथा कृत्रिम झील का निर्माण कराया। उनका यह अभियान चोल नौसेना और सैन्य शक्ति के चरम विस्तार को दर्शाता है, जिसने दक्षिण भारतीय प्रभाव को उत्तर भारत तक पहुँचाया।

86. (B) स्वायत्त ग्राम स्वशासन की प्रणाली।
चोल प्रशासन की अद्वितीय विशेषता इसकी विकसित ग्रामीण स्वशासन प्रणाली थी। गाँवों का प्रशासन 'सभा' और 'ऊर' जैसी स्थानीय परिषदों द्वारा संचालित किया जाता था, जिनके पास अपने आंतरिक मामलों में पूर्ण स्वायत्तता थी। उत्तरमेरुर अभिलेखों से इन समितियों के लोकतांत्रिक चुनाव और कार्यप्रणाली की विस्तृत जानकारी मिलती है। यह व्यवस्था उस समय की अन्य शासन प्रणालियों की तुलना में अधिक जनभागीदारी वाली और विकेंद्रीकृत थी, जिसने चोलों को भारतीय इतिहास में एक विशेष और सम्मानजनक स्थान दिलाया है।

87. (D) नटराज के रूप में शिव
चोल काल अपनी उत्कृष्ट कांस्य मूर्तियों हेतु विश्व भर में विख्यात है, जिनमें नटराज के रूप में भगवान शिव की प्रतिमा को कला का सर्वोत्तम उदाहरण माना जाता है। यह प्रतिमा शिव के 'तांडव' नृत्य को दर्शाती है, जो ब्रह्मांड के निर्माण और विनाश का प्रतीक है। चोल शिल्पकारों ने 'लुप्त मोम' विधि का प्रयोग कर इन मूर्तियों को अत्यंत सूक्ष्म और सजीव बनाया। नटराज की यह आकृति न केवल धार्मिक महत्व रखती है, बल्कि भारतीय सौंदर्यशास्त्र और धातु विज्ञान के उच्च स्तर का अद्वितीय प्रमाण है।

88. (A) चोल
उत्तरमेरुर के दो प्रसिद्ध शिलालेख चोल शासक परान्तक प्रथम के समय के हैं, जो ग्राम सभाओं की कार्यप्रणाली का विस्तृत और सटीक विवरण प्रदान करते हैं। इन अभिलेखों में बताया गया है कि सभा के सदस्यों का चयन लाटरी प्रणाली से कैसे किया जाता था और उनकी योग्यताएं क्या होती थीं। यह जानकारी चोल कालीन स्थानीय स्वशासन की गहराई और उनकी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को समझने हेतु अनिवार्य है। यह सिद्ध करता है कि चोल साम्राज्य में जमीनी स्तर पर प्रशासनिक व्यवस्था अत्यंत संगठित और पारदर्शी थी।

89. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
अमोघवर्ष प्रथम राष्ट्रकूट राजवंश के प्रसिद्ध शासक थे जिन्होंने शांति और साहित्य को बढ़ावा दिया। नरसिंहवर्मन प्रथम महान पल्लव शासक थे जिन्होंने महाबलीपुरम का निर्माण कराया। धर्मपाल पाल राजवंश के प्रतापी राजा थे जिन्होंने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना कर बौद्ध शिक्षा को पुनर्जीवित किया। राजराज प्रथम शाही चोल वंश के शक्तिशाली सम्राट थे जिन्होंने तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण कराया। यह वर्गीकरण विभिन्न राजवंशों के नेतृत्व करने वाले महान ऐतिहासिक नायकों के योगदान को स्पष्ट करता है।

90. (A) एक प्रांत
चोल साम्राज्य के कुशल प्रशासन हेतु पूरे राज्य को कई बड़े क्षेत्रों में विभाजित किया गया था, जिन्हें 'मंडलम्' कहा जाता था। प्रत्येक मंडलम् प्रायः एक शाही राजकुमार या वरिष्ठ अधिकारी के नियंत्रण में होता था। मंडलम् को पुनः छोटे प्रशासनिक प्रभागों जैसे वलनाडु और नाडु में बांटा गया था। यह बहुस्तरीय संरचना चोलों को उनके विशाल साम्राज्य पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखने और राजस्व संग्रह को सुचारू रूप से संचालित करने में सहायक सिद्ध होती थी। यह उनकी उन्नत प्रशासनिक दूरदर्शिता का प्रमाण है।

91. (D) यादव
यादव राजवंश ने 12वीं से 14वीं शताब्दी के दौरान महाराष्ट्र और उत्तरी कर्नाटक के क्षेत्रों पर शासन किया था और उनकी राजधानी देवगिरि थी। यादव शासक अपनी सैन्य शक्ति और भव्य किलों के निर्माण हेतु जाने जाते थे। देवगिरि का किला उस समय का अभेद्य दुर्ग माना जाता था। यादवों के शासनकाल में मराठी साहित्य और संस्कृति को काफी प्रोत्साहन मिला। बाद में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमणों के कारण इस राजवंश का पतन हुआ और देवगिरि दिल्ली सल्तनत के अधीन आ गई जो बड़ा राजनीतिक परिवर्तन था।

92. (B) द्वारसमुद्र
होयसल राजवंश की प्रसिद्ध राजधानी द्वारसमुद्र थी, जिसे वर्तमान में कर्नाटक के हलेबिडु के नाम से जाना जाता है। होयसल राजाओं ने 10वीं से 14वीं शताब्दी के मध्य मैसूर के आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया। वे विशेष रूप से अपनी अद्वितीय मंदिर वास्तुकला हेतु विख्यात हैं, जिसमें पत्थर पर अत्यंत बारीक और जटिल नक्काशी की गई है। द्वारसमुद्र न केवल समृद्ध राजनीतिक केंद्र था, बल्कि कला का महत्वपूर्ण स्थल बना रहा। यहाँ के होयसलेश्वर मंदिर की भव्यता होयसल साम्राज्य के वैभव की शाश्वत गवाह है।

करना और अंत में उन्हें राज्यों को लौटाकर अपनी अधीनता में रखना। वे जानते थे कि उत्तर भारत से सुदूर दक्षिण के क्षेत्रों पर सीधा शासन करना प्रशासनिक रूप से कठिन होगा। इस नीति ने उन्हें दक्षिणी राज्यों की निष्ठा प्राप्त करने और बिना सीधे शासन के अपना प्रभुत्व स्थापित करने में पूरी तरह समर्थ बनाया, जो उनकी कूटनीतिक सफलता का प्रमाण है।

112. (B) विद्वान ब्राह्मणों को दिया जाने वाला भूमि अनुदान।
प्राचीन भारत में 'अग्रहार' उस विशिष्ट भूमि या गाँव को कहा जाता था जिसे राजाओं द्वारा विद्वान ब्राह्मणों को उनकी सेवाओं के बदले दान में दिया जाता था। ये अनुदान प्रायः कर-मुक्त होते थे और इनका मुख्य उद्देश्य शिक्षा और धार्मिक अनुष्ठानों हेतु एक स्थिर आर्थिक आधार प्रदान करना था। इस व्यवस्था ने ब्राह्मणों को सांसारिक चिंताओं से मुक्त होकर ज्ञान के प्रसार में समर्पित होने का अवसर दिया। अग्रहार बस्तियां अक्सर क्षेत्रीय शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण केंद्रों के रूप में विकसित हुईं, जिसने समाज को शिक्षित किया।

113. (B) राष्ट्रकूट - वेंगी
राष्ट्रकूट राजवंश की राजधानी वेंगी नहीं, बल्कि कर्नाटक के मान्यखेत में स्थित थी। वेंगी मुख्य रूप से पूर्वी चालुक्यों का शक्ति केंद्र था। पल्लवों की राजधानी कांची, वातापि के चालुक्यों की बादमी और चोलों की तंजावुर होने के तथ्य ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह सही हैं। राष्ट्रकूटों ने मान्यखेत से ही अपनी विशाल सैन्य शक्ति का संचालन किया और उत्तर भारत की राजनीति में सक्रिय हस्तक्षेप किया। राजधानी का यह गलत युग्म उस समय के क्षेत्रीय भूगोल और राजवंशों के शक्ति केंद्रों के मध्य अंतर को स्पष्ट करने हेतु महत्वपूर्ण तथ्य है।

114. (A) स्कंदगुप्त
स्कंदगुप्त के शासनकाल के दौरान मध्य एशिया की हूण जनजाति ने भारत पर भीषण आक्रमण प्रारंभ किए। यद्यपि स्कंदगुप्त ने अपनी वीरता से उन्हें पराजित कर साम्राज्य की रक्षा की, किंतु इन निरंतर युद्धों ने शाही खजाने को पूरी तरह रिक्त कर दिया। आर्थिक तंगी के कारण सोने के सिक्कों की शुद्धता में भी भारी गिरावट आई। स्कंदगुप्त के बाद के शासक इतने शक्तिशाली नहीं थे कि वे आंतरिक विद्रोहों को झेल सकें, जिससे महान गुप्त साम्राज्य के विघटन और पतन की प्रक्रिया अपरिवर्तनीय रूप से प्रारंभ हो गई जो इतिहास का सत्य है।

115. (A) केवल I और II
पल्लव काल को दक्षिण भारत में द्रविड़ मंदिर वास्तुकला की नींव रखने और भक्ति आंदोलन के उदय हेतु जाना जाता है। इस दौरान नयनार और आलवार संतों ने भक्ति का प्रसार किया जिससे सामाजिक समरसता बढ़ी। यह कहना गलत है कि तमिल को संरक्षण नहीं दिया गया; वास्तव में पल्लव शासकों ने संस्कृत के साथ तमिल साहित्य को भी भरपूर प्रोत्साहन दिया। तमिल संतों ने इसी काल में उत्कृष्ट धार्मिक रचनाएं कीं जिन्होंने दक्षिण भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया। अतः पल्लव काल द्विभाषी संस्कृति और कलात्मक नवाचार का स्वर्ण युग था।

116. (D) राजराज प्रथम और राजेंद्र प्रथम
चोलों की नौसैनिक शक्ति राजराज प्रथम और उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम के शासनकाल में अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँची। राजराज प्रथम ने श्रीलंका के उत्तरी भाग और मालदीव पर विजय प्राप्त कर अपनी समुद्री श्रेष्ठता सिद्ध की। उनके उत्तराधिकारी राजेंद्र प्रथम ने इस विस्तार को और आगे बढ़ाते हुए संपूर्ण श्रीलंका जीता और दक्षिण-पूर्व एशिया के श्रीविजय साम्राज्य के विरुद्ध विशाल नौसैनिक अभियान का सफल नेतृत्व किया। उनकी इस अपराजेय नौसेना ने बंगाल की खाड़ी को 'चोल झील' में परिवर्तित कर दिया और अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

117. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हर्षवर्धन का साम्राज्य विशाल होने के बावजूद मौर्यों की तुलना में काफी कम केंद्रीकृत था। हर्ष की शासन व्यवस्था सामंती ढांचे पर आधारित थी जिसमें अधीनस्थ राजा अपने क्षेत्रों में काफी स्वायत्तता रखते थे। ये सामंत युद्ध के समय हर्ष को सैन्य सहायता प्रदान करते थे किंतु आंतरिक प्रशासन में वे स्वतंत्र थे। यही कारण था कि हर्ष की मृत्यु के तुरंत बाद उनका साम्राज्य बिखर गया क्योंकि उसमें मौर्यों जैसी मजबूत केंद्रीय नौकरशाही का अभाव था जो स्थानीय शक्तियों को एकीकृत रखने में सक्षम हो सके, जिससे पतन हुआ।

118. (B) अवंतिवर्मन
कश्मीर के उत्पल राजवंश की स्थापना 9वीं शताब्दी के मध्य में अवंतिवर्मन द्वारा की गई थी। उन्होंने कश्मीर में शांति और समृद्धि का नया युग प्रारंभ किया। अवंतिवर्मन को विशेष रूप से उनकी जन-कल्याणकारी नीतियों और जल प्रबंधन हेतु याद किया जाता है। उन्होंने झेलम नदी के प्रवाह को नियंत्रित करने हेतु नहरों का निर्माण कराया जिससे कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। उनके द्वारा स्थापित 'अवंतिपुर' नगर आज भी उनके शासन की स्थापत्य भव्यता का प्रमाण प्रस्तुत करता है, जिसने कश्मीर को आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ बनाया।

119. (D) पल्लव राजधानी कांची पर निरंतर आक्रमण करना
चालुक्य राजा विक्रमादित्य द्वितीय की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उपलब्धि पल्लवों के विरुद्ध उनकी सफल सैन्य सफलताएं थीं। उन्होंने पल्लव राजधानी कांचीपुरम पर तीन बार आक्रमण किया और उसे विजित किया। उनकी महानता इस बात में है कि उन्होंने विजित नगर को विनष्ट करने के स्थान पर वहाँ के मंदिरों को भारी दान दिया। उनकी इस उदारता और वीरता ने चालुक्य-पल्लव संघर्ष में नया आयाम जोड़ा। उनकी यह विजय दक्षिण भारत में चालुक्य साम्राज्य की सैन्य श्रेष्ठता और उनके सांस्कृतिक सम्मान को दृढ़ता से स्थापित करने में सफल रही जो गौरवपूर्ण है।

120. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
एलोरा का कैलाश मंदिर राष्ट्रकूटों की अद्भुत रॉक-कट कला का उदाहरण है। तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर चोल साम्राज्य की स्थापत्य भव्यता को प्रदर्शित करता है। गुजरात के मोढेरा में स्थित सूर्य मंदिर सोलंकी राजवंश की सूक्ष्म नक्काशी का प्रतीक है। महाबलीपुरम का शोर मंदिर पल्लव कालीन

पूर्व एशिया के साथ समुद्री व्यापार का केंद्र था, जबकि भड़ौच और सोपारा पश्चिमी देशों के साथ व्यापार को नियंत्रित करते थे। इसके विपरीत, इंद्रप्रस्थ गंगा के मैदान में स्थित एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर था जिसकी पहचान दिल्ली के आसपास के क्षेत्र से की जाती है। यह एक महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक केंद्र तो था, किंतु समुद्र तट पर स्थित न होने के कारण बंदरगाह के रूप में कभी विकसित नहीं हुआ।

103. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गुप्त और वाकाटक राजवंशों के मध्य स्थापित वैवाहिक संबंधों ने दक्कन और मध्य भारत में राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावतीगुप्त का विवाह वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय से हुआ था, जिससे दोनों शक्तियों के मध्य गहरा सामरिक गठबंधन बना। इस सहयोग ने गुप्तों को शकों के विरुद्ध अपने युद्ध अभियान में भौगोलिक और सैन्य लाभ प्रदान किया। इस प्रकार वैवाहिक कूटनीति ने गुप्त साम्राज्य के विस्तार और उसकी सुरक्षा को सुदृढ़ करने में एक प्रभावी माध्यम का कार्य किया था।

104. (A) महायान बौद्ध धर्म
नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन काल में बौद्ध शिक्षा का सबसे गौरवशाली केंद्र था, जो विशेष रुप से महायान विचारधारा के अध्ययन हेतु जाना जाता था। यहाँ सुदूर देशों जैसे चीन, तिब्बत और कोरिया से छात्र बौद्ध दर्शन और तर्कशास्त्र की शिक्षा प्राप्त करने आते थे। गुप्त शासकों और हर्षवर्धन ने इसे अत्यधिक संरक्षण दिया। ह्वेनसांग के अनुसार यहाँ के पाठ्यक्रम और विद्वानों का स्तर इतना ऊँचा था कि इसे दुनिया का पहला आवासीय विश्वविद्यालय माना जाता है, जिसने वैश्विक ज्ञान परंपरा को अत्यंत समृद्ध किया और ख्याति प्राप्त की।

105. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
यादव राजवंश के शक्तिशाली राजा रामचंद्र थे जिनके काल में खिलजी आक्रमण हुआ। होयसल साम्राज्य के प्रसिद्ध राजा विष्णुवर्धन थे जिन्होंने बेलूर के चेन्नाकेशव मंदिर का निर्माण कराया। काकतीय वंश की तेजस्वी रानी रुद्रमादेवी अपनी वीरता और प्रशासनिक सुधारों हेतु इतिहास में प्रसिद्ध हैं। पश्चिमी गंग राजवंश के राजा दुर्विनीत महान योद्धा होने के साथ साहित्य के संरक्षक भी थे। यह सुमेल दक्षिण भारतीय इतिहास के विभिन्न गौरवशाली राजवंशों और उनके प्रभावशाली शासकों के मध्य संबंधों को स्पष्ट रूप से उजागर करता है जो महत्वपूर्ण हैं।

106. (A) एक प्रांत
गुप्त साम्राज्य के प्रशासनिक ढांचे में 'भुक्ति' शब्द का प्रयोग एक बड़े प्रांत को संबोधित करने हेतु किया जाता था। पूरा साम्राज्य कई भुक्तियों में विभाजित था जिनका प्रबंधन सीधे केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारियों के माध्यम से होता था। प्रत्येक भुक्ति के प्रमुख को 'उपरिक' कहा जाता था, जो प्रायः शाही परिवार का सदस्य या सम्राट का अत्यंत विश्वसनीय सेनापति होता था। भुक्ति को पुनः प्रशासनिक सुगमता हेतु 'विषयों' में बांटा गया था। यह विकेंद्रीकृत व्यवस्था गुप्तों को उनके विशाल साम्राज्य पर कुशल नियंत्रण रखने में सहायता प्रदान करती थी।

107. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
बंगाल के पाल शासक कट्टर शैव नहीं थे, बल्कि वे बौद्ध धर्म के महान संरक्षक थे और स्वयं को 'परम सौगत' कहते थे। उनके शासनकाल में बौद्ध धर्म ने अपनी उन्नति का अंतिम महान युग देखा। दूसरी ओर, पालों के बाद सत्ता में आए सेन राजवंश के शासकों ने ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म को पुनर्जीवित किया। वे विशेष रूप से वैष्णव धर्म के उपासक थे और उन्होंने समाज में वैदिक कर्मकांडों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अतः दोनों राजवंशों की धार्मिक प्राथमिकताएं एक-दूसरे से पूरी तरह भिन्न और स्पष्ट ऐतिहासिक तथ्य हैं।

108. (B) परवर्ती चालुक्य और होयसल
वेसर स्थापत्य शैली कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों और द्वारसमुद्र के होयसल शासकों के संरक्षण में अपनी परिपक्वता और कलात्मक चरमोत्कर्ष पर पहुँची। इन राजवंशों ने नागर और द्रविड़ शैलियों के तत्वों को मिलाकर अत्यंत जटिल मंदिर वास्तुकला का विकास किया। होयसल काल में यह शैली अपनी सूक्ष्म नक्काशी और तारों जैसी मंदिर योजनाओं के साथ शिखर पर पहुँच गई। हलेबिडु और बेलूर के मंदिर इसी वेसर परंपरा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यह शैली मध्य भारत की कलात्मक रचनात्मकता और समन्वय की भावना का एक स्थायी ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत करती है।

109. (C) पल्लव
पल्लव राजवंश अपनी मंदिर वास्तुकला के क्रमिक विकास हेतु जाना जाता है, जिसे उनके प्रमुख राजाओं के नाम पर चार चरणों में विभाजित किया गया है। महेंद्र शैली में रॉक-कट गुफा मंदिर बने, जबकि ममल्ल शैली में रथ मंदिर निर्मित हुए। राजसिंह शैली ने स्वतंत्र संरचनात्मक मंदिरों जैसे शोर मंदिर की शुरुआत की और नंदीवर्मन शैली में अधिक परिष्कृत मंदिरों का विकास हुआ। यह वर्गीकरण पल्लव कला की निरंतरता और उसमें समय के साथ आए तकनीकी परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से समझने में इतिहासकारों की सहायता करता है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

110. (D) विशाखदत्त द्वारा रचित देवीचंद्रगुप्तम
यद्यपि गुप्तों की मुख्य वंशावलियों में रामगुप्त का नाम प्रायः नहीं मिलता, किंतु विशाखदत्त का नाटक 'देवीचंद्रगुप्तम' उनके शासन का प्रमुख साहित्यिक साक्ष्य है। इस नाटक में वर्णित है कि रामगुप्त ने शक आक्रमणकारी से डरकर अपनी पत्नी ध्रुवदेवी का सौदा किया था। इसके अतिरिक्त बाद के कुछ लेखों और मुद्राओं से भी उनके अस्तित्व के संकेत मिलते हैं। यह साहित्यिक स्रोत गुप्त इतिहास के एक विवादित अध्याय पर प्रकाश डालता है, जिससे यह पता चलता है कि समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय के मध्य एक अल्पकालिक शासन व्यवस्था रही थी।

111. (A) उन्होंने दक्षिणी राजाओं के प्रति 'ग्रहण-मोक्ष-अनुग्रह' की नीति अपनाई।
समुद्रगुप्त ने अपनी दक्षिण विजय के दौरान अत्यंत व्यावहारिक नीति का पालन किया जिसे 'ग्रहण-मोक्ष-अनुग्रह' कहा जाता है। इसका अर्थ था राजाओं को पराजित करना, फिर उन्हें मुक्त

उनकी सैन्य पहुँच उत्तर में हिमालय से दक्षिण में रामेश्वरम तक थी जो उन्हें एक अखिल भारतीय महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

165. (C) विंध्य के दक्षिण का संपूर्ण भारतीय प्रायद्वीप
प्राचीन भारतीय ग्रंथों और अभिलेखों में 'दक्षिणापथ' शब्द का प्रयोग विंध्य पर्वतमाला और नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित पूरे भारतीय प्रायद्वीपीय क्षेत्र हेतु किया जाता था। यह शब्द न केवल भौगोलिक इकाई को दर्शाता था बल्कि यह उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ने वाले महान व्यापारिक मार्ग का भी नाम था। मौर्य और गुप्त काल के बाद सातवाहन और राष्ट्रकूट जैसे राजवंशों ने स्वयं को 'दक्षिणापथ-पति' के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट संस्कृति हेतु जाना जाता था और भारतीय इतिहास के विकास में इसका अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

166. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गुप्त काल के दौरान भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध अपने चरमोत्कर्ष पर थे। इस संपर्क का मुख्य चालक भारतीय व्यापारियों की समुद्री यात्राएं थीं जो मसालों और रेशम के व्यापार हेतु इन क्षेत्रों में जाते थे। इन व्यापारियों के साथ ही बौद्ध भिक्षु और हिंदू विद्वान भी वहां पहुँचे, जिससे वहां भारतीय धर्म, लिपि और कला का गहरा प्रभाव पड़ा। चंपा और श्रीविजय जैसे राज्यों में भारतीय संस्कृति का प्रसार इसी सक्रिय व्यापारिक विनिमय का परिणाम था जिसने 'वृहत्तर भारत' की महान अवधारणा को जन्म दिया।

167. (D) वराहमिहिर - चिकित्सा विज्ञान
गुप्त काल के महान विद्वानों में वराहमिहिर का योगदान मुख्य रूप से खगोल विज्ञान और ज्योतिष शास्त्र में था, न कि चिकित्सा विज्ञान में। चिकित्सा के क्षेत्र में इस काल में सुश्रुत और चरक की परंपराएं प्रचलित थीं और वाग्भट्ट जैसे विद्वानों ने महत्वपूर्ण कार्य किए। अन्य युग्म सही हैं क्योंकि आर्यभट्ट ने गणित और कालिदास ने साहित्य में अभूतपूर्व उपलब्धियां प्राप्त कीं। वराहमिहिर के कार्यों ने भारतीय खगोल विज्ञान को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया और वे गुप्त कालीन बौद्धिक प्रगति के एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जाज्वल्यमान स्तंभ माने जाते हैं।

168. (A) कन्नौज
हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात उत्तर भारत की राजनीति में 'कन्नौज' शक्ति का सर्वोच्च प्रतीक बन गया था, जिसके नियंत्रण हेतु पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूटों के बीच लगभग दो शताब्दियों तक संघर्ष चला। इसे 'त्रिपक्षीय संघर्ष' के नाम से जाना जाता है। कन्नौज गंगा घाटी के उपजाऊ क्षेत्र के केंद्र में स्थित था और यहाँ से पूरे उत्तर भारत पर प्रभावी नियंत्रण रखना संभव था। इस नगर का आर्थिक महत्व इतना अधिक था कि जो भी शक्ति इस पर अधिकार करती, उसे आर्यावर्त का स्वामी माना जाता था। अंततः इस संघर्ष ने तीनों ही महाशक्तियों को कमजोर किया।

169. (C) महाबलीपुरम
पल्लव राजा नरसिंहवर्मन प्रथम ने बंगाल की खाड़ी के तट पर एक नया बंदरगाह नगर स्थापित किया जिसे उनके सम्मान में ममल्लापुरम कहा गया। आधुनिक समय में इसे महाबलीपुरम के नाम से जाना जाता है। यह नगर न केवल एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र बना बल्कि पल्लव कला और स्थापत्य का विश्व प्रसिद्ध प्रदर्शन स्थल भी बना जहाँ रथ मंदिर और तट मंदिर निर्मित किए गए। नरसिंहवर्मन प्रथम की इस महान उपलब्धि ने पल्लव साम्राज्य की समुद्री शक्ति और उनकी अद्भुत कलात्मक दृष्टि को भारतीय इतिहास में स्थायी रूप से गौरवशाली स्थान प्रदान किया है।

170. (A) अन्य संप्रदायों के प्रति उल्लेखनीय सहिष्णुता के साथ शैव धर्म का प्रभुत्व।
चोल काल में शैव धर्म को राजकीय धर्म के रूप में सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त थी और राजा स्वयं भगवान शिव के अनन्य भक्त थे। उन्होंने तंजावुर जैसे स्थानों पर विशाल शिव मंदिरों का निर्माण कराया। हालांकि, चोल शासकों ने अन्य धार्मिक मतों के प्रति भी अत्यंत उदारता का परिचय दिया। उन्होंने वैष्णव मंदिरों को भूमि दान दी और बौद्ध विहारों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की। यह धार्मिक सामंजस्य चोल प्रशासन की एक प्रमुख विशेषता थी जिसने समाज में शांति बनाए रखी और कलात्मक विकास को बहुआयामी प्रोत्साहन प्रदान किया था।

171. (D) हेमचंद्र
गुजरात के सोलंकी राजा जयसिंह सिद्धराज और उनके उत्तराधिकारी कुमारपाल महान जैन आचार्य हेमचंद्र के ज्ञान से अत्यधिक प्रभावित थे। हेमचंद्र के मार्गदर्शन में ही कुमारपाल ने जैन धर्म स्वीकार किया और अपने राज्य में अहिंसा के सिद्धांतों को सख्ती से लागू किया। हेमचंद्र ने 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' जैसे व्याकरण ग्रंथों और 'कुमारपालचरित' जैसे ऐतिहासिक काव्यों की रचना की। उनके प्रभाव के कारण ही गुजरात मध्यकालीन भारत में जैन धर्म और साहित्य का प्रमुख केंद्र बन गया। राजा और ऋषि के मध्य इस संबंध ने गुजरात के नैतिक इतिहास को गहराई से प्रभावित किया।

172. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
आठवीं शताब्दी के मध्य में राष्ट्रकूटों ने दंतिदुर्ग के नेतृत्व में वातापि के चालुक्यों की सत्ता को पूरी तरह उखाड़ फेंका और दक्कन पर अपना वर्चस्व स्थापित किया। राष्ट्रकूट लगभग दो सौ वर्षों तक महाशक्ति बने रहे। किंतु 10वीं शताब्दी के अंत में इतिहास ने स्वयं को दोहराया जब तैलप द्वितीय के नेतृत्व में कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों ने अंतिम राष्ट्रकूट राजा को पराजित कर पुनः चालुक्य शक्ति को सत्ता में स्थापित कर दिया। ये दोनों घटनाएं दक्कन के राजनीतिक इतिहास में दो महान राजवंशों के मध्य सत्ता के हस्तांतरण को पूरी तरह स्पष्ट करती हैं।

173. (C) राष्ट्रकूट
एलोरा का विस्मयकारी कैलाश मंदिर राष्ट्रकूट राजवंश के स्थापत्य कौशल का चरमोत्कर्ष है, जिसे राजा कृष्ण प्रथम के

संरचनात्मक मंदिर वास्तुकला की प्रारंभिक उत्कृष्ट कृति मानी जाती है। यह सुमेल विभिन्न भारतीय राजवंशों के धार्मिक अनुराग और उनके द्वारा निर्मित उन महान स्मारकों को दर्शाता है जो आज भी भारतीय सांस्कृतिक विरासत के अनमोल रत्न और गौरवशाली प्रतीक हैं।

121. (C) मयूरशर्मन
उत्तर-गुप्त कालीन कर्नाटक में कदंब राजवंश की स्थापना मयूरशर्मन ने की थी। वे एक ब्राह्मण थे जो पल्लवों द्वारा किए गए अपमान का बदला लेने हेतु शस्त्र उठाकर योद्धा बन गए। उन्होंने बनवासी को अपनी राजधानी बनाया और स्वतंत्र राज्य की नींव रखी। मयूरशर्मन ने न केवल शक्तिशाली सेना संगठित की बल्कि उन्होंने अश्वमेध यज्ञ भी किया जो उनकी संप्रभुता का प्रतीक था। उनके नेतृत्व में कदंबों ने पल्लवों की सर्वोच्चता को चुनौती दी और कर्नाटक के इतिहास में एक गौरवशाली अध्याय का सफलतापूर्वक सूत्रपात किया जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

122. (A) वे बंगाल के पालों के साथ निरंतर युद्धरत थे।
गुजरात के सोलंकी राजवंश का मुख्य संघर्ष मालवा के परमारों के साथ था, न कि सुदूर पूर्व में स्थित बंगाल के पालों के साथ। सोलंकी शासक अपनी स्थापत्य कला हेतु प्रसिद्ध थे जिन्होंने जैन और शैव धर्मों को समान संरक्षण दिया। प्रसिद्ध विद्वान हेमचंद्र उनके दरबार की शोभा बढ़ाते थे और अणहिलवाड़ा उनकी समृद्ध राजधानी थी। पालों के साथ निरंतर युद्ध का दावा ऐतिहासिक रूप से गलत है क्योंकि दोनों राज्यों की भौगोलिक दूरी बहुत अधिक थी और उनके राजनीतिक हित आपस में नहीं टकराते थे, जिससे यह तथ्य पूर्णतः निराधार है।

123. (D) एक महिला की अपनी निजी संपत्ति
धर्मशास्त्रों के अनुसार 'स्त्रीधन' उस संपत्ति को संदर्भित करता है जिस पर केवल महिला का पूर्ण स्वामित्व और अधिकार होता था। इसमें विवाह के समय प्राप्त उपहार और अन्य रिश्तेदारों से प्राप्त धन या आभूषण शामिल होते थे। यह संपत्ति महिला की निजी निधि मानी जाती थी जिसका उपयोग वह संकट के समय या अपनी इच्छानुसार करने हेतु स्वतंत्र थी। इसकी मुख्य विशेषता यह थी कि उत्तराधिकार में यह संपत्ति पुत्रों के बजाय मुख्य रूप से पुत्रियों को प्राप्त होती थी, जो प्राचीन काल में महिला आर्थिक सशक्तिकरण का प्रारंभिक प्रमाण माना जाता है।

124. (B) दिल्ली सल्तनत
देवगिरि के यादवों का गौरवशाली राजनीतिक इतिहास 13वीं और 14वीं शताब्दी के दौरान दिल्ली सल्तनत के निरंतर आक्रमणों के साथ समाप्त हो गया। अलाउद्दीन खिलजी ने सबसे पहले देवगिरि पर आक्रमण कर राजा रामचंद्र को संधि हेतु विवश किया। बाद में मलिक काफूर के नेतृत्व में खिलजी की सेनाओं ने यादव साम्राज्य का पूर्णतः अंत कर दिया। अंततः मुहम्मद बिन तुगलक ने देवगिरि को दिल्ली सल्तनत का स्थायी हिस्सा बना लिया और कुछ समय हेतु अपनी राजधानी भी बनाया। इस पराजय ने दक्षिण भारत में इस्लामी शासन के विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया।

125. (C) प्रयाग प्रशस्ति
समुद्रगुप्त द्वारा स्थापित प्रयाग प्रशस्ति में कामरूप के वर्मन राजवंश का उल्लेख एक सीमावर्ती राज्य के रूप में मिलता है। इस अभिलेख के अनुसार कामरुप के राजा ने समुद्रगुप्त की संप्रभुता स्वीकार की थी और वे नियमित रुप से कर देते थे तथा आदेशों का पालन करते थे। यह ऐतिहासिक संदर्भ कामरूप के राजनीतिक अस्तित्व और गुप्त साम्राज्य के साथ उसके संबंधों की पुष्टि करने वाला प्राचीनतम प्रमाण है। यह वर्मन शासकों की शक्ति और उस समय के अंतर-राज्यीय संबंधों की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करता है जो ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है।

126. (A) 4, 2, 3, 1
दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंशों का उत्थान कालक्रमानुसार व्यवस्थित रहा है। सर्वप्रथम छठी शताब्दी में वातापि के चालुक्य बड़ी शक्ति के रूप में उभरे। उनके साथ ही पल्लव राजवंश ने भी अपनी जड़ें जमाईं। आठवीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों ने चालुक्यों को विस्थापित कर वर्चस्व स्थापित किया। अंततः नौवीं शताब्दी में शाही चोलों का उदय हुआ जिन्होंने दक्षिण भारत और समुद्र पार तक अपना विशाल साम्राज्य फैलाया। यह क्रम दक्षिण भारतीय इतिहास के राजनीतिक परिवर्तन को स्पष्ट करता है, जो क्षेत्रीय प्रभुत्व और साम्राज्यों के क्रमिक विकास की कहानी दर्शाता है।

127. (A) स्थानीय व्यापार और शहरी केंद्रों में कुछ गिरावट के साथ एक कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था।
ह्वेनसांग के वृत्तांतों के अनुसार हर्षवर्धन के काल में भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित थी। मौर्य और गुप्त काल की तुलना में इस समय शहरी केंद्रों और अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार में कुछ गिरावट आई थी, जिससे आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का उदय हुआ। लोग मुख्य रूप से खेती और पशुपालन पर निर्भर थे। यद्यपि आंतरिक व्यापार अभी भी सक्रिय था, किंतु बड़े व्यापारिक संघों और सोने के सिक्कों के व्यापक प्रचलन में कमी देखी गई थी। राज्य का मुख्य राजस्व भूमि कर से प्राप्त होता था जो अर्थव्यवस्था के सामंतीकरण को दर्शाता है।

128. (B) वज्रयान बौद्ध धर्म
पाल राजा धर्मपाल द्वारा स्थापित विक्रमशिला विश्वविद्यालय मुख्य रूप से वज्रयान बौद्ध धर्म और तंत्र की शिक्षा हेतु विश्व प्रसिद्ध केंद्र था। यह संस्थान बौद्ध धर्म के इस तांत्रिक स्वरूप के विकास और प्रसार में अग्रणी रहा। यहाँ के विद्वानों ने तिब्बत की यात्रा की और वहाँ वज्रयान सिद्धांतों की नींव रखी। विक्रमशिला का शैक्षणिक ढांचा और परीक्षा प्रणाली अत्यंत कठोर थी जो उच्च विद्वत्ता सुनिश्चित करती थी। नालंदा के साथ-साथ यह विश्वविद्यालय मध्यकालीन बौद्ध बौद्धिक संपदा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली स्तंभ बना रहा जिसने ज्ञान फैलाया।

129. (B) कश्मीर
लोहार राजवंश कश्मीर के इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण हिंदू राजवंश था जिसने 11वीं शताब्दी के प्रारंभ में उत्पल वंश के बाद सत्ता संभाली। इस वंश की स्थापना संग्रामराज ने की थी।

147. (C) अमोघवर्ष प्रथम
राष्ट्रकूट सम्राट अमोघवर्ष प्रथम मध्यकालीन भारत के एक अद्वितीय और विद्वान शासक थे। उन्हें कन्नड़ साहित्य की पहली उपलब्ध शास्त्रीय कृति 'कविराजमार्ग' लिखने का गौरव प्राप्त है जिसने कन्नड़ काव्यशास्त्र की नींव रखी। वे जैन धर्म के प्रति समर्पित होने के बावजूद अन्य मतों के प्रति अत्यंत उदार थे। उनका शासनकाल केवल सैन्य विस्तार हेतु नहीं बल्कि कन्नड़ और संस्कृत साहित्य के अभूतपूर्व विकास हेतु प्रसिद्ध है। अमोघवर्ष ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा और शांतिप्रिय स्वभाव से राष्ट्रकूट साम्राज्य को नई सांस्कृतिक गरिमा और पहचान प्रदान की थी।

148. (D) जैन धर्म
पश्चिमी गंग राजवंश को कर्नाटक में जैन धर्म के प्रसार और संरक्षण में उनके असाधारण योगदान हेतु याद किया जाता है। गंग राजाओं और उनके मंत्रियों ने अनेक जैन बसदियों का निर्माण कराया और विद्वानों को भूमि दान दिया। श्रवणबेलगोला में गोमतेश्वर की विशाल प्रतिमा का निर्माण उनके इसी धार्मिक अनुराग का सबसे महान और जीवंत उदाहरण है। गंग शासकों की छत्रछाया में जैन दर्शन और साहित्य ने इस क्षेत्र में गहराई से अपनी जड़ें जमाईं। उनकी इस धार्मिक निष्ठा ने न केवल जैन धर्म को स्थायित्व दिया बल्कि कर्नाटक की विरासत को समृद्ध किया।

149. (C) यह ब्राह्मणवादी प्रभुत्व और वैष्णव धर्म का काल था।
गुप्त काल को भारतीय इतिहास में पौराणिक हिंदू धर्म और विशेष रूप से वैष्णव धर्म के उदय हेतु पहचाना जाता है। गुप्त शासक स्वयं को 'परम भागवत' कहते थे और भगवान विष्णु के भक्त थे। इस काल में मूर्तिकला और मंदिर निर्माण के माध्यम से ब्राह्मणवादी संस्कृति ने समाज में पुनः श्रेष्ठता प्राप्त की। यद्यपि बौद्ध और जैन धर्म अभी भी अस्तित्व में थे, किंतु वे गुप्तों के राजकीय धर्म की तुलना में धीरे-धीरे पृष्ठभूमि में चले गए। भक्ति और कर्मकांडों के मेल ने इस काल के धार्मिक जीवन को एक नया और स्थायी स्वरूप प्रदान किया।

150. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
चोल नौसेना मध्यकालीन विश्व की सर्वाधिक संगठित और शक्तिशाली समुद्री शक्तियों में से एक थी जिसने हिंद महासागर पर अपना पूर्ण वर्चस्व स्थापित किया था। राजराज प्रथम और राजेंद्र प्रथम ने इस नौसैनिक श्रेष्ठता का उपयोग कर श्रीलंका और मालदीव को विजित किया। इस मजबूत नौसेना ने न केवल साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया बल्कि समुद्री व्यापार मार्गों को सुरक्षित बनाकर चोल अर्थव्यवस्था को अत्यंत समृद्ध बनाया। यह नौसैनिक प्रभुत्व ही था जिसने चोलों को अंतरराष्ट्रीय शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया और सांस्कृतिक प्रभाव दूर तक फैलाया।

151. (D) परवर्ती पश्चिमी चालुक्य
कल्याणी के चालुक्यों को 'परवर्ती पश्चिमी चालुक्य' कहा जाता है क्योंकि उन्होंने 10वीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों के पतन के बाद बादामी के प्राचीन चालुक्यों की शक्ति को पुनर्जीवित किया था। इस राजवंश की स्थापना तैलप द्वितीय ने की थी। उन्होंने अपनी राजधानी कल्याणी से एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया जिसमें दक्कन का अधिकांश भाग शामिल था। वे अपनी विशिष्ट मंदिर वास्तुकला और कन्नड़ साहित्य के संरक्षण हेतु प्रसिद्ध थे। पल्लवों के स्थान पर चोल उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी बने। यह शाखा चालुक्यों की परंपरा को ऊंचाइयों पर ले गई।

152. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
कश्मीर के कार्कोट राजवंश का सबसे प्रमाणिक विवरण कल्हण द्वारा रचित सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'राजतरंगिणी' में मिलता है। इस वंश के सर्वाधिक प्रतापी सम्राट ललितादित्य मुक्तापीड़ थे जिन्होंने कश्मीर को साम्राज्यिक शक्ति बनाया। उन्होंने अनंतनाग के समीप मार्तंड में भगवान सूर्य को समर्पित एक विशाल और भव्य मंदिर का निर्माण कराया था जो अपनी अनूठी वास्तुकला और भव्यता हेतु आज भी विख्यात है। ये दोनों तथ्य कश्मीर के गौरवशाली मध्यकालीन इतिहास और कार्कोट शासकों द्वारा कला के क्षेत्र में किए गए महान योगदान की पूरी तरह पुष्टि करते हैं।

153. (C) वातापि के चालुक्य
छठी से आठवीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत में वर्चस्व स्थापित करने हेतु पल्लवों और वातापि के चालुक्यों के मध्य निरंतर संघर्ष चला। इस संघर्ष का मुख्य कारण कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के मध्य के उपजाऊ रायचूर दोआब क्षेत्र पर नियंत्रण प्राप्त करना था। पल्लव राजाओं और चालुक्य सम्राटों के बीच हुई लड़ाइयों ने दोनों साम्राज्यों की सैन्य शक्ति का परीक्षण किया। इस दीर्घकालिक शत्रुता ने दक्षिण भारत की राजनीतिक सीमाओं को बार-बार बदला और अंततः दोनों शक्तियों के पतन और नई शक्तियों जैसे राष्ट्रकूटों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

154. (A) चोल
निर्वाचित समितियों या 'वारियम' के माध्यम से संचालित ग्राम स्वायत्तता की प्रणाली चोल प्रशासन की सबसे विशिष्ट पहचान थी। चोल साम्राज्य में प्रत्येक गाँव का अपना आंतरिक स्वशासन था जिसे स्थानीय स्तर पर चुने गए सदस्यों द्वारा चलाया जाता था। ये समितियाँ सिंचाई, मंदिरों के रखरखाव और राजस्व संग्रह जैसे कार्यों हेतु उत्तरदायी थीं। उत्तरमेरुर अभिलेखों से इन चुनावों की निष्पक्ष प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी मिलती है। यह व्यवस्था उस काल की प्रशासनिक दूरदर्शिता का अद्भुत उदाहरण है जिसने ग्रामीण जनता को प्रत्यक्ष रूप से शासन से जोड़ा।

155. (D) जगती
होयसल वास्तुकला की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उनके मंदिर प्रायः एक ऊंचे और विस्तृत मंच पर बनाए जाते हैं जिसे 'जगती' कहा जाता है। यह मंच न केवल मंदिर को ऊँचाई प्रदान करता था बल्कि भक्तों हेतु मंदिर के चारों ओर प्रदक्षिणा करने हेतु एक खुला मार्ग भी उपलब्ध कराता था। जगती का आकार अक्सर मंदिर की योजना के अनुरूप तारों जैसा होता था। यह मंच मंदिर की संरचनात्मक मजबूती को बढ़ाने के साथ उसकी दृश्य भव्यता को भी अत्यधिक बढ़ा देता था। यह तत्व होयसल शैली को अन्य दक्षिण भारतीय शैलियों से अलग बनाता है।

138. (A) वेंगी
पूर्वी चालुक्यों ने आंध्र प्रदेश के वेंगी नामक स्थान को अपनी राजधानी बनाया और वहाँ से कई शताब्दियों तक शासन किया। इस शाखा की स्थापना पुलकेशिन द्वितीय के भाई कुब्ज विष्णुवर्धन ने की थी। वेंगी अपनी उपजाऊ भूमि और रणनीतिक स्थिति के कारण एक महत्वपूर्ण शक्ति केंद्र बन गया। यहाँ के शासकों ने तेलुगु भाषा और साहित्य को राजकीय संरक्षण दिया जिससे क्षेत्र में विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान का विकास हुआ। वेंगी के चालुक्यों ने पश्चिमी चालुक्यों और चोलों के मध्य एक महत्वपूर्ण बफर राज्य के रूप में कार्य कर राजनीति प्रभावित की।

139. (D) मार्को पोलो
प्रसिद्ध वेनिस यात्री मार्को पोलो ने 13वीं शताब्दी के अंत में काकतीय साम्राज्य की यात्रा की थी और रानी रुद्रमादेवी के कुशल शासन का अत्यंत प्रशंसात्मक विवरण दिया है। उन्होंने बताया कि कैसे एक महिला शासक होने के बावजूद रुद्रमादेवी ने अपनी बुद्धिमत्ता और सैन्य शक्ति से अपने राज्य की रक्षा की और प्रजा का कल्याण किया। मार्को पोलो के वृत्तांतों से काकतीय साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि और वहां के उत्तम वस्त्रों की जानकारी मिलती है। यह विदेशी वृत्तांत मध्यकालीन भारत में महिला नेतृत्व की सफलता का अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है।

140. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
नालंदा विश्वविद्यालय को गुप्त शासकों, विशेष रूप कुमारगुप्त प्रथम द्वारा स्थापित और पोषित किया गया था। विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना पाल राजा धर्मपाल ने बौद्ध शिक्षा के प्रसार हेतु की थी। गुजरात का वल्लभी विश्वविद्यालय मैत्रक राजवंश के संरक्षण में हीनयान बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र बना। कांचीपुरम दक्षिण भारत में पल्लव राजवंश के अधीन संस्कृत और धार्मिक शिक्षा का महान केंद्र था। यह सुमेल प्राचीन भारत की उन्नत शिक्षा प्रणाली और विभिन्न राजवंशों द्वारा विद्या के केंद्रों को दिए गए राजकीय संरक्षण को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

141. (C) कुर्रम
चोल साम्राज्य का प्रशासनिक ढांचा अत्यंत व्यवस्थित था जिसे मंडलम्, वलनाडु और नाडु में विभाजित किया गया था। प्रशासन की सबसे छोटी और बुनियादी इकाई 'कुर्रम' थी जो कई गाँवों का एक समूह होती थी। कुर्रम स्तर पर स्थानीय स्वशासन अत्यंत सक्रिय था जहाँ ग्रामीण परिषदें अपने आंतरिक मामलों का प्रबंधन स्वयं करती थीं। यह सूक्ष्म विभाजन चोलों को राजस्व एकत्र करने, कानून-व्यवस्था बनाए रखने और स्थानीय विकास कार्यों को कुशलतापूर्वक संचालित करने में समर्थ बनाता था। यह व्यवस्था उनकी उन्नत नौकरशाही का श्रेष्ठ उदाहरण है।

142. (D) थानेसर
वर्धन या पुष्यभूति राजवंश की प्रारंभिक राजधानी थानेसर थी जो वर्तमान हरियाणा के कुरुक्षेत्र में स्थित है। यहीं से इस वंश के संस्थापक पुष्यभूति और बाद में प्रभाकरवर्धन ने अपनी शक्ति का विस्तार किया। हर्षवर्धन ने भी अपने शासन के प्रारंभिक वर्ष थानेसर से ही संचालित किए थे। बाद में सामरिक आवश्यकताओं के कारण उन्होंने अपनी राजधानी को कन्नौज स्थानांतरित कर दिया। थानेसर उनके पैतृक गौरव और प्रारंभिक सैन्य सफलताओं का प्रतीक बना रहा। प्राचीन काल में यह नगर व्यापार और धार्मिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र था।

143. (A) कामरूप का वर्मन
'दक्षिणापथ' शब्द का प्रयोग ऐतिहासिक रूप से विंध्य पर्वतमाला के दक्षिण में स्थित भारतीय प्रायद्वीप के लिए किया जाता था। देवगिरि के यादव, द्वारसमुद्र के होयसल और वारंगल के काकतीय सभी दक्षिणापथ के प्रमुख राजवंश थे जिन्होंने दक्कन और सुदूर दक्षिण में शासन किया। इसके विपरीत, कामरूप का वर्मन राजवंश उत्तर-पूर्वी भारत (असम) में स्थित था जो भौगोलिक रूप से दक्षिणापथ का हिस्सा नहीं था। वर्मन शासकों का प्रभाव क्षेत्र ब्रह्मपुत्र घाटी में था और उनका दक्षिणापथ की राजनीति से सीधा संबंध नहीं था। अतः वे एक पृथक शक्ति थे।

144. (B) बौद्ध भिक्षुओं और भ्रमणशील विद्वानों की निरंतर यात्राएँ।
गुप्त काल के दौरान भारत और चीन के मध्य प्रगाढ़ सांस्कृतिक संबंधों का मुख्य आधार बौद्ध धर्म का प्रसार था। फाहियान जैसे चीनी भिक्षु पवित्र बौद्ध ग्रंथों की खोज हेतु भारत आए। इसी प्रकार भारतीय विद्वान भी धर्म और ज्ञान का प्रसार करने चीन गए। इन निरंतर यात्राओं ने न केवल धार्मिक दर्शन का आदान-प्रदान किया बल्कि दोनों देशों के मध्य विज्ञान, कला और चिकित्सा के क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ाया। इस बौद्धिक और आध्यात्मिक संपर्क ने ही प्राचीन काल में भारत और चीन को एक मजबूत सांस्कृतिक सूत्र में बांधे रखा था।

145. (B) 2, 4, 3, 1
इन ऐतिहासिक व्यक्तियों का सही कालक्रम चौथी शताब्दी के अंत में चंद्रगुप्त द्वितीय के शासन से प्रारंभ होता है। उनके पश्चात सातवीं शताब्दी के प्रारंभ में पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम का शासन आता है। लगभग उसी समय चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने दक्षिण में अपनी शक्ति स्थापित की और हर्षवर्धन के उत्तर भारतीय साम्राज्य को चुनौती दी। अंत में हर्षवर्धन का काल आता है जिन्होंने 606 से 647 ईस्वी तक शासन किया। यह क्रम भारतीय इतिहास के गुप्तोत्तर काल में उत्तर और दक्षिण की बदलती राजनीतिक शक्तियों के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

146. (A) केवल I और II
पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम बहुमुखी प्रतिभा के धनी शासक थे जिन्होंने दक्षिण भारत में रॉक-कट गुफा मंदिरों की परंपरा शुरु की। वे स्वयं एक उच्च कोटि के विद्वान थे जिन्होंने प्रसिद्ध संस्कृत नाटक 'मत्तविलास प्रहसन' की रचना की जो उस समय के धार्मिक पाखंडों पर प्रहार था। हालांकि यह कहना गलत है कि वे पुलकेशिन द्वितीय के विरुद्ध निर्णायक रूप से विजयी हुए थे। वास्तव में पुलकेशिन द्वितीय ने उन्हें युद्ध में पराजित किया था जिसका बदला बाद में उनके पुत्र नरसिंहवर्मन प्रथम ने लिया था। अतः तीसरा कथन ऐतिहासिक रूप से गलत है।

लोहार शासकों के काल में कश्मीर ने कई विदेशी आक्रमणों, विशेष रूप से गजनवी के हमलों का डटकर मुकाबला किया और अपनी स्वतंत्रता अक्षुण्ण रखी। कल्हण की प्रसिद्ध कृति 'राजतरंगिणी' में इस राजवंश के इतिहास का विस्तृत विवरण मिलता है। इस वंश के शासनकाल में कश्मीर को अनेक आंतरिक संघर्षों का सामना करना पड़ा, फिर भी उन्होंने अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाई रखी।

130. (A) ऐहोल, बादामी और पट्टडकल
वातापि के चालुक्यों की अद्भुत स्थापत्य कला का दर्शन मुख्य रूप से कर्नाटक के ऐहोल, बादामी और पट्टडकल में होता है। ऐहोल को 'भारतीय मंदिर वास्तुकला का पालना' कहा जाता है जहाँ अनेक प्रारंभिक प्रयोग किए गए। बादामी अपनी शानदार रॉक-कट गुफाओं हेतु प्रसिद्ध है। पट्टडकल में निर्मित मंदिरों का समूह द्रविड़ और नागर शैलियों के सुंदर संगम को दर्शाता है जिसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर घोषित किया है। ये तीनों स्थल चालुक्यों के काल में हुए अद्वितीय कलात्मक विकास और उनके धार्मिक अनुराग के जीवंत प्रमाण के रूप में आज भी प्रतिष्ठित हैं।

131. (D) I, II और III
चोल काल अपनी अद्वितीय कांस्य कला हेतु विश्व प्रसिद्ध है जिसमें 'लुप्त मोम' तकनीक का प्रयोग कर सूक्ष्म मूर्तियां बनाई जाती थीं। नटराज की प्रसिद्ध कांस्य प्रतिमा इसी युग की सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है जो शिव के ब्रह्मांडीय नृत्य को सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त चोल शासकों ने चित्रकला को भी अत्यधिक प्रोत्साहन दिया जिसके प्रमाण तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर की दीवारों पर बने शानदार भित्ति चित्रों में मिलते हैं। ये चित्र चोलों के धार्मिक विश्वासों और उनके उन्नत कलात्मक बोध को अत्यंत सुंदरता के साथ आज भी अभिव्यक्त करते हैं।

132. (D) युद्ध में एक नायक की मृत्यु या सती होने वाली महिला
स्मारक पत्थर, जिन्हें दक्षिण भारत में 'वीरगल' कहा जाता था, उन साहसी योद्धाओं के सम्मान में स्थापित किए जाते थे जिन्होंने युद्ध में या गाँव की रक्षा करते समय प्राणों का बलिदान दिया था। ये पत्थर समाज में वीरता और त्याग के महान आदर्शों को प्रतिष्ठित करने के माध्यम थे। कुछ पत्थर उन महिलाओं की याद में भी बनाए जाते थे जिन्होंने अपने पति की मृत्यु के बाद सती होने का निर्णय लिया था। इन स्मारकों पर प्रायः संबंधित व्यक्ति की वीरता का चित्रण अंकित होता था जो आने वाली पीढ़ियों हेतु प्रेरणा का कार्य करता था।

133. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आठवीं शताब्दी के दौरान कन्नौज उत्तर भारत की राजनीतिक शक्ति का सर्वोच्च केंद्र बन गया था और इस पर नियंत्रण करना पूरे आर्यावर्त पर प्रभुत्व का प्रतीक माना जाता था। इसी कारण राष्ट्रकूट, पाल और प्रतिहार शासक इस नगर को जीतने हेतु निरंतर संघर्षरत रहे जिसे 'त्रिपक्षीय संघर्ष' कहा जाता है। राष्ट्रकूटों ने कई बार अपनी सेनाओं के साथ गंगा घाटी में प्रवेश किया और कन्नौज के राजाओं को पराजित किया। उनके लिए यह अभियान अपनी साम्राज्यिक श्रेष्ठता सिद्ध करने और उत्तर भारत के उपजाऊ संसाधनों पर प्रभाव जमाने का माध्यम था।

134. (B) वक्राकार मीनार जिसे शिखर कहा जाता है
नागर शैली उत्तर भारतीय मंदिर वास्तुकला की मुख्य पहचान है जिसकी सबसे विशिष्ट विशेषता गर्भगृह के ऊपर बनी एक ऊंची और वक्राकार मीनार है जिसे 'शिखर' कहा जाता है। यह शिखर ऊपर की ओर जाते हुए धीरे-धीरे संकीर्ण होता जाता है और उसके शीर्ष पर एक 'आमलक' स्थापित किया जाता है। नागर मंदिरों में प्रायः विस्तृत मंडप और प्रवेश द्वार होते हैं, किंतु उनका मुख्य आकर्षण उनका ऊर्ध्वाधर विस्तार और कलात्मक शिखर ही होता है। खजुराहो के मंदिर इसी नागर शैली के परिपक्व स्वरुप को अत्यंत भव्यता के साथ प्रदर्शित करते हैं।

135. (D) विष्णुवर्धन
होयसल राजवंश के राजा विष्णुवर्धन शक्तिशाली और कला प्रेमी शासक थे जिन्होंने वैष्णव धर्म स्वीकार करने के पश्चात कला को नया आयाम दिया। उन्होंने बेलूर में प्रसिद्ध 'चेन्नाकेशव मंदिर' का निर्माण कराया जो अपनी अत्यंत सूक्ष्म नक्काशी हेतु जाना जाता है। विष्णुवर्धन के शासनकाल में होयसल साम्राज्य ने चोलों को पराजित कर अपनी स्वतंत्र शक्ति स्थापित की। उनके द्वारा बनवाए गए मंदिर न केवल उनकी धार्मिक निष्ठा के प्रतीक हैं बल्कि वे होयसल वास्तुकला की उस विशिष्ट शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसने भारतीय कला में नए मानदंड स्थापित किए।

136. (A) वाकाटकों को अंततः गुप्त साम्राज्य में विलीन कर लिया गया था।
गुप्त और वाकाटक राजवंशों के मध्य संबंध मुख्य रूप से सामरिक और वैवाहिक गठबंधन पर आधारित थे न कि विलय पर। चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावतीगुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय से हुआ था जिससे दोनों राज्यों के मध्य अटूट मित्रता बनी। वाकाटकों ने दक्कन में अपनी स्वतंत्र सत्ता बनाए रखी और गुप्तों को शकों के विरुद्ध युद्ध में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की। यद्यपि प्रभावतीगुप्त के शासन के दौरान गुप्त प्रभाव अधिक था, किंतु वाकाटक राज्य कभी भी औपचारिक रूप से गुप्त साम्राज्य का हिस्सा नहीं बना बल्कि एक सहयोगी ही रहा।

137. (C) जयदेव
प्रसिद्ध संस्कृत कवि जयदेव बंगाल के सेन राजवंश के अंतिम महान राजा लक्ष्मण सेन के दरबार के प्रमुख विद्वानों में से एक थे। जयदेव की अमर कृति 'गीत गोविंद' भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम पर आधारित है जो भारतीय भक्ति साहित्य और शास्त्रीय नृत्य की आधारशिला बनी। लक्ष्मण सेन ने साहित्य और कला को उदारतापूर्वक संरक्षण प्रदान किया जिससे उनका दरबार विद्वत्ता का केंद्र बन गया था। जयदेव के गीतों की माधुर्यता ने न केवल बंगाल बल्कि पूरे भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना को युगों तक गहराई से प्रभावित किया है।

156. (B) शांति और युद्ध
गुप्त प्रशासन में 'संधिविग्रहिक' एक अत्यंत महत्वपूर्ण और उच्च स्तरीय मंत्री पद था जो विदेशी मामलों, संधियों और युद्ध की घोषणाओं हेतु उत्तरदायी होता था। यह अधिकारी सम्राट की विदेश नीति का मुख्य वास्तुकार होता था और अन्य राज्यों के साथ राजनयिक संबंधों का प्रबंधन करता था। प्रयाग प्रशस्ति के रचयिता हरिषेण स्वयं समुद्रगुप्त के शासनकाल में इसी गरिमामयी पद पर आसीन थे। यह पद दर्शाता है कि गुप्त सम्राटों ने अपने साम्राज्य के विस्तार हेतु एक सुव्यवस्थित और प्रभावी कूटनीतिक तंत्र विकसित किया था जो उनकी सफलता का आधार था।

157. (C) हूणों की पराजय और 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण करना
समुद्रगुप्त एक महान विजेता थे जिनकी विजयों का विवरण प्रयाग प्रशस्ति में मिलता है और उन्होंने अपनी शक्ति के प्रतीक के रूप में अश्वमेध यज्ञ भी किया था। उन्हें संगीत से इतना प्रेम था कि उन्हें 'कविराज' कहा गया। हालांकि, हूणों को पराजित करने और 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण करने की उपलब्धि उनके नाम नहीं है। हूणों को स्कंदगुप्त ने पराजित किया था और 'विक्रमादित्य' की उपाधि उनके पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय ने ली थी। अतः यह विकल्प समुद्रगुप्त के जीवन के संदर्भ में ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है और अन्य विकल्प पूरी तरह सही हैं।

158. (D) नरसिंहवर्मन द्वितीय
कांचीपुरम में स्थित प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण पल्लव सम्राट नरसिंहवर्मन द्वितीय द्वारा 8वीं शताब्दी के प्रारंभ में कराया गया था। यह मंदिर पल्लव वास्तुकला में संरचनात्मक पाषाण मंदिरों के विकास का चरम बिंदु माना जाता है। यह भगवान शिव को समर्पित है और अपनी बारीक मूर्तिकला और भव्य विमान हेतु विख्यात है। इस मंदिर की योजना ने बाद में आने वाले चोल और चालुक्य मंदिरों के निर्माण को गहराई से प्रभावित किया। यह पल्लव कालीन कलात्मक वैभव और धार्मिक निष्ठा का एक चिरस्थायी और गौरवशाली ऐतिहासिक प्रतीक बना हुआ है।

159. (A) पुलकेशिन द्वितीय
उत्तर भारत के शक्तिशाली सम्राट हर्षवर्धन को नर्मदा नदी के तट पर चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने एक निर्णायक युद्ध में पराजित किया था। हर्ष अपनी विशाल सेना के साथ दक्षिण की ओर विस्तार करने का प्रयास कर रहे थे, किंतु पुलकेशिन द्वितीय के सामरिक कौशल ने उनकी इस महत्वाकांक्षा को विफल कर दिया। इस विजय के पश्चात पुलकेशिन ने 'परमेश्वर' की उपाधि धारण की। यह भारतीय इतिहास की युगांतरकारी घटना है जिसने उत्तर और दक्षिण भारत के मध्य राजनीतिक शक्ति संतुलन स्थापित किया और हर्ष के साम्राज्य की सीमाओं को नर्मदा तक सीमित किया।

160. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
होयसल राजवंश की राजधानी द्वारसमुद्र थी जो अपनी जटिल मंदिर वास्तुकला हेतु प्रसिद्ध हुई। काकतीयों ने वारंगल से शासन किया और तेलंगाना क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यादवों की शक्ति का केंद्र देवगिरि था जहाँ उन्होंने एक अभेद्य किला स्थापित किया। पल्लवों की गौरवशाली राजधानी कांचीपुरम थी जो अपनी धार्मिक गरिमा हेतु जानी जाती थी। यह सुमेल दक्षिण भारत के इन चारों प्रमुख राज्यों और उनके ऐतिहासिक शक्ति केंद्रों के मध्य के भौगोलिक और राजनीतिक संबंधों को स्पष्ट रूप से परिभाषित और प्रमाणित करता है।

161. (B) नागर और द्रविड़ विशेषताओं को मिलाने वाली मंदिर वास्तुकला की एक मिश्रित शैली
'वेसर' शैली प्राचीन भारतीय मंदिर वास्तुकला की एक रचनात्मक मिश्रित शैली है। इसका विकास मुख्य रूप से मध्य भारत और दक्कन क्षेत्र में हुआ जहाँ उत्तर भारतीय 'नागर' शैली के शिखर और दक्षिण भारतीय 'द्रविड़' शैली के विमान तत्वों का अनूठा सामंजस्य देखा जाता है। चालुक्य और होयसल शासकों ने इस शैली को व्यापक राजकीय संरक्षण प्रदान किया। यह शैली भारतीय शिल्पकारों की उस अद्भुत क्षमता को दर्शाती है जिसके माध्यम से उन्होंने दो भिन्न क्षेत्रीय कला परंपराओं को जोड़कर एक नई, आकर्षक और तकनीकी रूप से उन्नत स्थापत्य पद्धति को जन्म दिया।

162. (A) ऐतिहासिक जीवनी
बाणभट्ट द्वारा रचित 'हर्षचरित' संस्कृत साहित्य की पहली महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जीवनी मानी जाती है। इसमें पुष्यभूति वंश के उत्थान और विशेष रूप से सम्राट हर्षवर्धन के प्रारंभिक जीवन और राजा बनने तक की घटनाओं का विस्तृत और अलंकारिक वर्णन है। यद्यपि इसमें कुछ साहित्यिक अतिशयोक्तियाँ शामिल हैं, फिर भी यह उस काल के राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक इतिहास को समझने का एक अत्यंत मूल्यवान और प्राथमिक स्रोत है। बाणभट्ट ने अपने आश्रयदाता हर्ष के चरित्र को आदर्श सम्राट के रूप में प्रस्तुत कर इस कृति को इतिहास में अमर बना दिया है।

163. (C) सेन
11वीं शताब्दी के अंत में बंगाल और बिहार में पाल राजवंश की शक्ति के क्षीण होने पर सेन राजवंश ने सत्ता संभाली। सेन शासकों ने पालों के बौद्ध संरक्षण के विपरीत ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म को राजकीय धर्म के रूप में पुनः प्रतिष्ठित किया। विजय सेन और लक्ष्मण सेन जैसे प्रतापी राजाओं के अधीन सेन साम्राज्य ने बंगाल में राजनीतिक एकता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का युग देखा। उन्होंने संस्कृत साहित्य को अत्यधिक बढ़ावा दिया और वर्ण व्यवस्था को सुदृढ़ किया। पालों के बाद सेनों का उदय बंगाल के इतिहास में एक महत्वपूर्ण धार्मिक परिवर्तन का प्रतीक है।

164. (A) केवल I और II
राष्ट्रकूट राजवंश की स्थापना 8वीं शताब्दी में दंतिदुर्ग ने की थी और उन्होंने मान्यखेत को अपनी राजधानी बनाया। उनका साम्राज्य अत्यंत शक्तिशाली था, किंतु 10वीं शताब्दी के अंत में कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों ने उन्हें सत्ता से हटा दिया। यह कहना गलत है कि वे केवल दक्कन तक सीमित रहे; वास्तव में राष्ट्रकूट शासकों ने कई बार गंगा के मैदानों तक सैन्य अभियान चलाए और उत्तर भारत के कन्नौज पर नियंत्रण प्राप्त किया।

93. (C) तेलंगाना/आंध्र प्रदेश
काकतीय राजवंश ने मुख्य रूप से आधुनिक तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के क्षेत्रों पर शासन किया और उनकी राजधानी वारंगल थी। इस राजवंश के शासकों ने सिंचाई हेतु विशाल टैंकों और बांधों का निर्माण कराया, जिससे क्षेत्र की कृषि अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी सुधार हुआ। रानी रुद्रमादेवी और राजा प्रतापसिंह इस वंश के प्रभावशाली शासक थे। काकतीयों के काल में तेलुगु साहित्य और व्यापार ने अभूतपूर्व प्रगति की। उनकी प्रशासनिक व्यवस्था ने आधुनिक तेलुगु पहचान की नींव रखने में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

94. (D) बनवासी
कदंब राजवंश की स्थापना मयूरशर्मन ने चौथी शताब्दी में की थी और उन्होंने कर्नाटक के बनवासी को अपनी राजधानी बनाया। कदंबों को प्रथम स्वदेशी कन्नड़ साम्राज्य माना जाता है क्योंकि उन्होंने प्रशासनिक कार्यों में कन्नड़ भाषा को प्रमुखता प्रदान की। बनवासी अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण कदंबों की शक्ति का केंद्र बना रहा। इस राजवंश ने कर्नाटक के राजनीतिक एकीकरण और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण प्रारंभिक योगदान दिया। हलामदी शिलालेख जैसे प्रमाण कदंब काल के दौरान कन्नड़ के विकसित स्वरूप की पुष्टि करते हैं।

95. (A) तलकाड़
पश्चिमी गंग राजवंश ने लगभग नौ शताब्दियों तक आधुनिक कर्नाटक के बड़े हिस्से पर शासन किया। उनकी प्रारंभिक राजधानी कोलार थी, किंतु बाद में उन्होंने इसे कावेरी नदी के तट पर स्थित तलकाड़ में स्थानांतरित कर दिया। तलकाड़ उनके साम्राज्य का प्रमुख राजनीतिक और धार्मिक केंद्र बन गया। गंग शासक अपनी धार्मिक उदारता और जैन धर्म के संरक्षण हेतु जाने जाते हैं। श्रवणबेलगोला की गोमतेश्वर प्रतिमा का निर्माण इसी राजवंश के एक मंत्री चामुंडराय द्वारा कराया गया था, जो गंगों की कलात्मक दृष्टि का प्रतीक है।

96. (B) गंग राजवंश मुख्य रूप से कलिंग क्षेत्र में स्थापित किया गया था।
पश्चिमी गंग राजवंश मुख्य रूप से आधुनिक कर्नाटक के दक्षिणी भाग में स्थापित था, न कि कलिंग में। कलिंग का क्षेत्र ओडिशा के पूर्वी गंगों से संबंधित है जो एक अलग शाखा थी। होयसल अपनी तारा-नुमा मंदिर योजनाओं हेतु प्रसिद्ध हैं और यादवों को दिल्ली सल्तनत ने विजित किया था, ये तथ्य सही हैं। काकतीय रानी रुद्रमादेवी का शासन महिला नेतृत्व का गौरवशाली उदाहरण है। अतः गंगों के भौगोलिक स्थान के संबंध में दिया गया कथन ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण और स्पष्ट रूप से गलत है।

97. (B) पश्चिमी गंग
कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में स्थित भगवान बाहुबली की 57 फीट ऊँची एकाश्म गोमतेश्वर प्रतिमा का निर्माण पश्चिमी गंग राजवंश के सेनापति और मंत्री चामुंडराय द्वारा 10वीं शताब्दी में कराया गया था। यह प्रतिमा विश्व की सबसे बड़ी मुक्त खड़ी एकाश्म मूर्तियों में से एक है और जैन धर्म के महत्वपूर्ण तीर्थों में गिनी जाती है। इसके निर्माण में प्रयुक्त अभियांत्रिकी कौशल गंग कालीन कला के उच्च स्तर को दर्शाता है। यह स्मारक आज भी गंग राजाओं की धार्मिक सहिष्णुता और कला के प्रति समर्पण का भव्य प्रतीक है।

98. (A) नरम सोपस्टोन का उपयोग जिससे जटिल नक्काशी संभव हुई
होयसल वास्तुकला की प्रमुख विशेषता निर्माण सामग्री के रूप में नरम सोपस्टोन का उपयोग है। यह पत्थर प्रारंभ में नरम होता है जिससे शिल्पकारों हेतु उस पर बारीक और अत्यंत जटिल नक्काशी करना आसान हो जाता है, किंतु समय के साथ यह कठोर हो जाता है। इसी विशेषता के कारण होयसल मंदिरों की दीवारों पर आभूषणों जैसी सूक्ष्मता के साथ पौराणिक कथाओं का चित्रण संभव हो सका। यह तकनीक उन्हें तत्कालीन अन्य सभी स्थापत्य शैलियों से पूर्णतः अलग और अद्वितीय बनाती है जो उनकी कलात्मक श्रेष्ठता का प्रमाण है।

99. (C) काकतीय
तेलंगाना के हनमकोंडा में स्थित प्रसिद्ध 'सहस्र स्तंभ मंदिर' काकतीय वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। इसका निर्माण 12वीं शताब्दी में राजा रुद्रदेव के शासनकाल में हुआ था। यह मंदिर भगवान शिव, विष्णु और सूर्य को समर्पित है और अपनी बारीक नक्काशीदार स्तंभों हेतु जाना जाता है। काकतीय शिल्पियों ने ग्रेनाइट के पत्थरों पर जो सूक्ष्म विवरण उकेरे हैं, वे उनके तकनीकी कौशल की श्रेष्ठता को प्रमाणित करते हैं। यह मंदिर काकतीय साम्राज्य की समृद्धि और उनके धार्मिक सद्भाव का एक चिरस्थायी ऐतिहासिक स्मारक है।

100. (D) I, II और III
समुद्रगुप्त ने अपनी दक्षिण विजय के दौरान राजाओं को पराजित कर उन्हें पुनः स्थापित करने की 'ग्रहण-मोक्ष-अनुग्रह' नीति अपनाई थी। चंद्रगुप्त द्वितीय ने शकों का दमन कर गुप्त साम्राज्य की शक्ति को पश्चिमी भारत में सर्वोच्च बनाया। स्कंदगुप्त को अपने शासन के प्रारंभ में पुष्यमित्रों के विद्रोह को दबाने और हूणों के आक्रमणों को विफल करने हेतु कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। ये तीनों कथन गुप्त काल के सम्राटों की सैन्य उपलब्धियों और उनके राजनीतिक कौशल का सही विवरण प्रस्तुत करते हैं, जो साम्राज्य की रक्षा में सहायक थे।

101. (A) 1, 2, 3, 4
हर्षवर्धन के जीवन की घटनाओं का क्रम 606 ईस्वी में उनके थानेसर के सिंहासन पर बैठने से प्रारंभ होता है। इसके पश्चात उन्होंने अपनी बहन की सहायता हेतु कन्नौज को अपनी नई राजधानी बनाया। उनके शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना नर्मदा के तट पर चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के हाथों हुई उनकी सैन्य पराजय थी। अंत में उन्होंने चीनी यात्री ह्वेनसांग के सम्मान में प्रयाग में भव्य सभा का आयोजन किया था। यह कालक्रम हर्ष के उदय से लेकर उनके शासनकाल के सांस्कृतिक चरमोत्कर्ष तक के सफर को स्पष्ट करता है।

102. (B) इंद्रप्रस्थ
गुप्त काल के दौरान ताम्रलिप्ति, भड़ौच और सोपारा अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रमुख बंदरगाह थे। ताम्रलिप्ति मुख्य रूप से दक्षिण-

शासनकाल में निर्मित किया गया था। यह मंदिर इंजीनियरिंग का ऐसा चमत्कार है जहाँ पूरी पहाड़ी को काटकर एक विशाल स्वतंत्र मंदिर की आकृति दी गई है। यह दुनिया की सबसे बड़ी एकाश्म संरचनाओं में से एक है। इसकी दीवारों पर की गई सूक्ष्म नक्काशी राष्ट्रकूट शासकों की धार्मिक निष्ठा और कला के प्रति प्रेम को दर्शाती है। यह मंदिर न केवल भारतीय बल्कि संपूर्ण विश्व की प्राचीन वास्तुकला का एक अद्वितीय और अमूल्य रत्न माना जाता है।

174. (D) वेंगी के चालुक्य - गुजरात
वेंगी के चालुक्य मुख्य रूप से आधुनिक आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों में स्थित थे और उन्होंने वहीं से कई शताब्दियों तक शासन किया था, न कि गुजरात से। गुजरात का क्षेत्र सोलंकी या चौलुक्य राजवंश के प्रभाव में था जो एक अलग शाखा थी। अन्य सभी विकल्प सही सुमेलित हैं क्योंकि पाल बंगाल में, राष्ट्रकूट दक्कन में और पल्लव तमिलनाडु के क्षेत्र में अपनी शक्ति का केंद्र बनाए हुए थे। वेंगी के चालुक्यों ने अपनी स्वतंत्र राजनीतिक पहचान आंध्र के भौगोलिक क्षेत्र में विकसित की थी जिसने दक्षिण-पूर्वी भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

175. (A) राजेंद्र प्रथम
चोल सम्राट राजेंद्र प्रथम ने दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थित शक्तिशाली श्रीविजय साम्राज्य के विरुद्ध 1025 ईस्वी में एक अभूतपूर्व नौसैनिक अभियान का सफल नेतृत्व किया था। इस सैन्य कार्रवाई का मुख्य उद्देश्य भारतीय व्यापारियों के समुद्री मार्गों में आने वाली बाधाओं को दूर करना और चोलों के व्यापारिक हितों की रक्षा करना था। उनकी नौसेना ने सुमात्रा जैसे महत्वपूर्ण स्थानों पर विजय प्राप्त की। यह भारतीय इतिहास में किसी सम्राट द्वारा समुद्र पार किया गया अब तक का सबसे सफल सैन्य अभियान माना जाता है जिसने चोलों की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को शिखर पर पहुँचाया।

176. (B) प्रभाकरवर्धन 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण करने वाले प्रथम शासक थे।
वर्धन राजवंश की प्रतिष्ठा को प्रभाकरवर्धन ने स्थापित किया था, जिन्होंने 'महाराजाधिराज' जैसी शक्तिशाली उपाधियाँ धारण कीं। उन्होंने हूणों के विरुद्ध सफल युद्ध किए और अपने वंश को साम्राज्य की ओर अग्रसर किया। हर्षवर्धन उनके कनिष्ठ पुत्र थे जो अपने बड़े भाई की मृत्यु के बाद सिंहासन पर बैठे। इस राजवंश की स्थापना पुष्यभूति ने बहुत पहले की थी, अतः हर्ष इसके संस्थापक नहीं थे। प्रभाकरवर्धन के नेतृत्व में ही वर्धन वंश ने उत्तर भारत की राजनीति में अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज करानी शुरू की थी जो हर्ष के काल में चरमोत्कर्ष पर पहुँची।

177. (B) भारतीय मंदिर वास्तुकला की तीन मुख्य शैलियाँ
नागर, द्रविड़ और वेसर भारतीय मंदिर वास्तुकला की तीन प्रमुख शास्त्रीय शैलियाँ हैं जो विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में विकसित हुईं। नागर शैली मुख्य रूप से उत्तर भारत में लोकप्रिय हुई जिसकी विशेषता इसके वक्राकार शिखर हैं। द्रविड़ शैली दक्षिण भारत में पल्लवों और चोलों के अधीन फली-फूली जिसकी पहचान पिरामिडनुमा विमान और भव्य गोपुरम हैं। वेसर शैली इन दोनों शैलियों का अनूठा सम्मिश्रण है जो मध्य भारत में चालुक्यों द्वारा विकसित की गई। ये तीनों शैलियाँ भारतीय स्थापत्य कला की विविधता, तकनीकी दक्षता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि हैं।

178. (A) ब्रह्मगुप्त
गुप्त काल के महान गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त ने अपनी सुप्रसिद्ध कृति 'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' में गुरुत्वाकर्षण के मूल सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए बताया था कि पृथ्वी स्वभाव से ही वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है। उन्होंने शून्य के प्रयोग और बीजगणित के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। यद्यपि सौर वर्ष की गणना में आर्यभट्ट का नाम भी प्रमुख है, किंतु ब्रह्मगुप्त ने गणितीय गणनाओं को अधिक वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। उनकी खोजों ने न केवल प्राचीन भारत बल्कि भविष्य के वैश्विक विज्ञान और विशेष रूप से अरब गणितीय परंपराओं को भी अत्यंत गहराई से प्रभावित किया था।

179. (C) अराजकता के युग को समाप्त करने के लिए उन्हें सामंतों द्वारा राजा चुना गया था।
बंगाल में शशांक की मृत्यु के पश्चात फैली अराजकता को समाप्त करने हेतु 8वीं शताब्दी के मध्य में वहां के प्रमुख सामंतों और जनता ने मिलकर गोपाल को अपना शासक चुना। यह राज्यारोहण भारतीय इतिहास में लोकतांत्रिक चयन का एक दुर्लभ और महत्वपूर्ण उदाहरण है। गोपाल ने पाल राजवंश की नींव रखी और राज्य में शांति स्थापित की। इसी जनादेश की शक्ति के कारण पाल शासकों को समाज के सभी वर्गों का समर्थन प्राप्त हुआ जिससे वे आने वाली चार शताब्दियों तक एक स्थिर और शक्तिशाली साम्राज्य का कुशलतापूर्वक संचालन करने में समर्थ रहे।

180. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
बाणभट्ट सम्राट हर्षवर्धन के दरबारी कवि थे जिन्होंने उनकी जीवनी 'हर्षचरित' की रचना की। रविकीर्ति ने पुलकेशिन द्वितीय की विजयों का गुणगान करने वाला 'ऐहोल शिलालेख' लिखा। हरिषेण समुद्रगुप्त के मंत्री थे जिन्होंने 'प्रयाग प्रशस्ति' के माध्यम से उनकी सैन्य उपलब्धियों को अमर बनाया। जयदेव ने सेन शासकों के संरक्षण में 'गीत गोविंद' की रचना की। यह सुमेल प्राचीन भारत के महान लेखकों और उनकी कालजयी कृतियों को उनके संबंधित कालखंडों के साथ जोड़कर उस युग के उच्च कोटि के साहित्यिक और राजनीतिक इतिहास को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

181. (A) केवल I और II
होयसल राजवंश की राजधानी द्वारसमुद्र थी जहाँ से उन्होंने दक्कन के एक बड़े हिस्से पर शासन किया। उन्होंने मंदिर वास्तुकला की अत्यंत विशिष्ट और अलंकृत शैली विकसित की जिसे उनकी जटिल नक्काशी और तारा-नुमा मंदिर योजनाओं हेतु जाना जाता है। हलेबिडु और बेलूर के मंदिर इस कला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। हालांकि, राजराज प्रथम होयसल शासक नहीं बल्कि चोल राजवंश के सर्वाधिक प्रतापी सम्राट थे। होयसल राजाओं में विष्णुवर्धन जैसे नाम प्रमुख हैं जिन्होंने

स्थिति में कोई क्रांतिकारी सुधार हुआ था, जैसा कि ऐतिहासिक साक्ष्यों से स्पष्ट है।

198. (B) नर्मदा
सम्राट हर्षवर्धन और चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के मध्य ऐतिहासिक युद्ध नर्मदा नदी के तट पर लड़ा गया था। इस भीषण संघर्ष में पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष की विशाल सेना को पराजित कर उनके दक्षिण की ओर होने वाले विस्तार को स्थायी रूप से रोक दिया था। इस विजय की पुष्टि ऐहोल अभिलेख और चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांतों से भी होती है। यह घटना दक्षिण भारत के इतिहास में चालुक्यों की बढ़ती सैन्य शक्ति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रमाण मानी जाती है। हर्ष की इस हार ने उनके साम्राज्य की दक्षिणी सीमा को नर्मदा तक ही सीमित कर दिया और पुलकेशिन को दक्षिणापथ का स्वामी बना दिया था।

199. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बंगाल के पाल शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी और महान संरक्षक थे, जिनके अधीन बौद्ध धर्म ने भारत में अपनी अंतिम महान ऊँचाइयों को छुआ। उन्होंने न केवल विक्रमशिला विश्वविद्यालय जैसे नए संस्थानों की स्थापना की, बल्कि नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों को भारी भूमि दान और आर्थिक सहायता देकर उन्हें पुनर्जीवित भी किया। उनके इस उदार संरक्षण के कारण ही भारत के बौद्ध विद्वान तिब्बत और दक्षिण-पूर्व एशिया में ज्ञान का प्रसार करने में सफल रहे। पालों का यह योगदान मध्यकालीन भारतीय इतिहास में शिक्षा और धर्म के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और सदैव स्मरणीय बना हुआ है, जो उनकी धार्मिक नीति को दर्शाता है।

200. (A) वागेला और बाद में दिल्ली सल्तनत
गुजरात में सोलंकी राजवंश का शासन 13वीं शताब्दी में कमजोर हो गया और सत्ता उनके ही सामंत 'वागेला' वंश के हाथों में चली गई। वागेला शासकों ने कुछ समय तक गुजरात की स्वतंत्रता को बनाए रखा, किंतु अंततः 1299 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी की सेनाओं ने गुजरात पर आक्रमण कर दिया। अंतिम वागेला राजा कर्णदेव को पराजित कर दिल्ली सल्तनत ने गुजरात पर अपना पूर्ण अधिकार कर लिया। इस प्रकार सोलंकी काल में प्रारंभ हुई वैभवशाली हिंदू शासन परंपरा का अंत हुआ और गुजरात दिल्ली सल्तनत के अधीन एक महत्वपूर्ण सूबा बन गया जो भारतीय इतिहास में एक बड़ा राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन माना जाता है।

201. (B) P-2, Q-4, R-3, S-1
पल्लव राजवंश ने महाबलीपुरम में रॉक-कट रथों के निर्माण के साथ अद्वितीय स्थापत्य कला की नींव रखी। चोल साम्राज्य ने तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर जैसे भव्य मंदिरों का निर्माण कर द्रविड़ शैली को पूर्णता प्रदान की। राष्ट्रकूटों ने एलोरा में एक ही चट्टान को काटकर विशाल कैलाश मंदिर का निर्माण कर अभियांत्रिकी का चमत्कार प्रस्तुत किया। होयसल शासकों ने क्लोरिटिक शिस्ट पर अत्यंत बारीक नक्काशी वाले तारा-नुमा मंदिर निर्मित कर अपनी एक अलग पहचान बनाई। यह सुमेल दक्षिण भारत की समृद्ध स्थापत्य विरासत और विभिन्न राजवंशों के कलात्मक योगदान को स्पष्ट रूप से परिभाषित और प्रमाणित करता है।

202. (A) राजतरंगिणी
कश्मीर के मध्यकालीन इतिहास, विशेष रूप से कार्कोट और लोहार राजवंशों के शासन को समझने के लिए कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत है। 12वीं शताब्दी में लिखी गई यह कृति संस्कृत साहित्य की पहली वास्तविक ऐतिहासिक पुस्तक मानी जाती है जिसमें तथ्यों की जाँच पर बल दिया गया है। इसमें राजाओं की वंशावलियों के साथ-साथ उस समय की सामाजिक स्थितियों और प्रशासनिक परिवर्तनों का अत्यंत गहरा विश्लेषण मिलता है। कश्मीर के संघर्षपूर्ण अतीत को जानने के लिए यह ग्रंथ इतिहासकारों के लिए एक अपरिहार्य और अनमोल खजाना है, जो कश्मीर की राजनीतिक यात्रा को तार्किक ढंग से प्रस्तुत करता है।

203. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
गुप्त काल में स्वर्ण मुद्राएं बड़ी मात्रा में जारी की गई थीं जिन्हें 'दीनार' कहा जाता था और ये अपनी उत्कृष्ट कलात्मकता हेतु प्रसिद्ध थीं। हालांकि, चंद्रगुप्त प्रथम स्वर्ण मुद्राएं जारी करने वाले पहले गुप्त शासक नहीं थे; ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार इस प्रथा की व्यवस्थित शुरुआत उनके पुत्र समुद्रगुप्त और बाद में चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में अधिक प्रमुखता से हुई थी। गुप्तकालीन सिक्कों पर सम्राटों को विभिन्न वीरतापूर्ण कृत्यों को करते हुए दिखाया गया है जो उस युग की समृद्धि और परिष्कृत कलात्मक रुचि का सजीव चित्रण करते हैं। अतः सिक्कों का विकास गुप्त साम्राज्य की बढ़ती आर्थिक शक्ति का प्रमुख प्रतीक माना जाता है।

204. (B) भास्करवर्मन
भास्करवर्मन कामरूप के वर्मन राजवंश के सबसे प्रसिद्ध और अंतिम महान शासक थे। वे सम्राट हर्षवर्धन के समकालीन और घनिष्ठ मित्र थे। उन्होंने बंगाल के गौड़ राजा शशांक के विरुद्ध हर्ष के साथ सैन्य गठबंधन किया था। भास्करवर्मन की विद्वत्ता और उदारता की प्रशंसा चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अपने वृत्तांतों में की है, जिन्होंने उनके निमंत्रण पर कामरूप की यात्रा की थी। उनके शासनकाल में कामरूप एक समृद्ध राज्य बना रहा। हर्ष और भास्करवर्मन की यह मित्रता उस काल की भारतीय राजनीति में उत्तर और पूर्व भारत के बीच मजबूत संबंधों का एक विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है जो ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है।

205. (C) नरसिंहवर्मन प्रथम
पल्लव सम्राट नरसिंहवर्मन प्रथम ने अपने पिता की चालुक्यों के हाथों हुई हार का बदला लेने के लिए चालुक्य राजधानी वातापि पर भीषण आक्रमण किया। 642 ईस्वी में उन्होंने चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय को युद्ध में पराजित किया और वातापि को विनष्ट कर दिया। इस ऐतिहासिक सैन्य सफलता की स्मृति में उन्होंने 'वातापिंड' की गरिमामयी उपाधि धारण की। यह जीत न केवल पल्लव साम्राज्य की सैन्य श्रेष्ठता का प्रतीक थी बल्कि इसने दक्कन में चालुक्यों के बढ़ते प्रभुत्व को समाप्त कर पल्लवों को दक्षिण की सर्वोच्च शक्ति बना दिया

190. (D) उपजाऊ रायचूर दोआब पर नियंत्रण
पल्लवों और वातापि के चालुक्यों के बीच चली आ रही शताब्दियों पुरानी प्रतिद्वंद्विता का मुख्य केंद्र कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच स्थित अत्यंत उपजाऊ 'रायचूर दोआब' क्षेत्र पर नियंत्रण करना था। यह क्षेत्र अपनी कृषि समृद्धि और सामरिक स्थिति के कारण दोनों ही साम्राज्यों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। इस उपजाऊ भूमि के संसाधनों पर अधिकार पाने की लालसा ने ही दोनों राजवंशों को निरंतर युद्धों में उलझाए रखा जिससे दक्षिण भारत का राजनीतिक परिदृश्य बार-बार प्रभावित होता रहा। इस संघर्ष ने अंततः दोनों महाशक्तियों को कमजोर किया जिससे राष्ट्रकूटों जैसी नई शक्तियों के उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ।

191. (A) 2, 1, 3, 4
भारतीय इतिहास में इन राजवंशों का सही कालानुक्रमिक क्रम चौथी शताब्दी में गुप्त राजवंश की स्थापना से प्रारंभ होता है। सातवीं शताब्दी के प्रारंभ में हर्षवर्धन के नेतृत्व में वर्धन राजवंश ने उत्तर भारत में अपनी शक्ति स्थापित की। इसके पश्चात 8वीं शताब्दी के मध्य में बंगाल में पाल राजवंश का उदय हुआ जिन्होंने बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया। अंत में 9वीं शताब्दी में शाही चोल राजवंश का पुनरुत्थान हुआ जिसने दक्षिण भारत और समुद्र पार तक अपना विशाल साम्राज्य फैलाया। यह क्रम भारतीय इतिहास के विभिन्न युगों में बदलती राजनीतिक शक्तियों के विकास को स्पष्ट रूप से ऐतिहासिक रूप में प्रदर्शित करता है।

192. (C) केवल I और III
हर्षवर्धन के शासनकाल में नालंदा विश्वविद्यालय महायान बौद्ध शिक्षा के सर्वोच्च अंतरराष्ट्रीय केंद्र के रूप में उभरा जिसे हर्ष ने राजकीय संरक्षण प्रदान किया। हर्ष स्वयं एक उच्च कोटि के विद्वान थे और उन्होंने बाणभट्ट जैसे प्रकांड पंडितों को अपने दरबार में आश्रय दिया। हर्ष ने शिक्षा और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए संस्कृत भाषा का व्यापक प्रयोग किया और स्वयं भी नाटक लिखे, इसलिए यह कहना गलत है कि उन्होंने संस्कृत पर प्रतिबंध लगाया था। उनके काल में शिक्षा में तर्कशास्त्र और चिकित्सा जैसे लौकिक विषयों को भी प्रमुखता से शामिल किया गया था जो बौद्धिक विकास को दर्शाता है।

193. (B) पश्चिमी गंग
कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में स्थित भगवान गोमतेश्वर की विश्व प्रसिद्ध 57 फीट ऊँची एकाश्म प्रतिमा पश्चिमी गंग राजवंश से संबंधित है। इस प्रतिमा का निर्माण गंग राजा राचमल्ल के प्रसिद्ध मंत्री और सेनापति चामुंडराय द्वारा 10वीं शताब्दी में कराया गया था। यह अद्भुत शिल्प कला का नमूना एक ही विशाल चट्टान को काटकर बनाया गया है और यह जैन धर्म की आध्यात्मिक श्रेष्ठता और त्याग का सर्वोच्च प्रतीक माना जाता है। पश्चिमी गंग शासकों की जैन धर्म के प्रति अटूट निष्ठा और उनके द्वारा प्रदान किए गए महान कलात्मक संरक्षण का यह आज भी दुनिया के सामने एक गौरवशाली ऐतिहासिक प्रमाण है।

194. (A) गंगा घाटी
चोल सम्राट राजेंद्र प्रथम ने अपनी विशाल सैन्य शक्ति का प्रदर्शन करते हुए उत्तर भारत की ओर एक सफल विजय अभियान चलाया जो गंगा नदी के तट तक पहुँचा गया। इस ऐतिहासिक सैन्य सफलता की स्मृति में उन्होंने 'गंगेयकोंड' की गौरवशाली उपाधि धारण की। उन्होंने इस महान उपलब्धि के उपलक्ष्य में 'गंगेयकोंडचोलपुरम' नामक एक नई राजधानी की स्थापना की और वहाँ गंगा का पवित्र जल लाकर एक विशाल जलाशय 'चोलगंगम' का निर्माण कराया। यह अभियान चोल नौसेना और थल सेना की अजेय शक्ति तथा उनके साम्राज्यवादी विस्तार की महत्वाकांक्षा को भारतीय इतिहास में स्थायी रूप से गौरव के साथ प्रतिष्ठित करता है।

195. (C) वाकाटक
प्रभावतीगुप्त, जो गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री थीं, का शासन वाकाटक राजवंश के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। अपने पति रुद्रसेन द्वितीय की असामयिक मृत्यु के पश्चात उन्होंने अपने अल्पवयस्क पुत्रों की संरक्षिका के रूप में लगभग बीस वर्षों तक वाकाटक राज्य का कुशलतापूर्वक संचालन किया। इस दौरान वाकाटक प्रशासन पर गुप्तों का प्रभाव काफी बढ़ गया था और उन्होंने अपनी प्रशासनिक दक्षता से राज्य की सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित की। प्रभावतीगुप्त का शासनकाल न केवल एक महिला शासक की योग्यता का उत्कृष्ट उदाहरण है बल्कि यह गुप्त-वाकाटक संबंधों के चरम बिंदु को भी ऐतिहासिक रूप से प्रदर्शित करता है।

196. (D) पूर्वी चालुक्य
वेंगी के चालुक्यों को भारतीय इतिहास में 'पूर्वी चालुक्य' के नाम से जाना जाता है ताकि उन्हें उनकी मूल शाखा 'वातापि के पश्चिमी चालुक्यों' से अलग पहचाना जा सके। इस शाखा की स्थापना पुलकेशिन द्वितीय के भाई कुब्ज विष्णुवर्धन ने की थी जिन्होंने आंध्र प्रदेश के वेंगी क्षेत्र में एक स्वतंत्र और शक्तिशाली राज्य की नींव रखी। उन्होंने कई शताब्दियों तक शासन किया और तेलुगु भाषा तथा संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वेंगी के चालुक्यों ने बाद में चोलों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए जिससे दक्षिण भारत की राजनीति में बड़े परिवर्तन हुए। उनकी यह स्वायत्त सत्ता दक्षिण-पूर्वी भारत के इतिहास का हिस्सा बनी रही।

197. (C) पूर्ण लैंगिक समानता के साथ महिलाओं की स्थिति में व्यापक सुधार हुआ।
गुप्त काल में यद्यपि कला और साहित्य का स्वर्ण युग था, किंतु सामाजिक दृष्टिकोण से महिलाओं की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ बल्कि उसमें गिरावट देखी गई। इस काल में सती प्रथा का पहला साक्ष्य मिलता है और बाल विवाह की प्रथा अधिक सामान्य हो गई। महिलाओं को उच्च शिक्षा और संपत्ति के अधिकारों से वंचित रखा गया था और वे पुरुषों पर आश्रित बनी रहीं। यद्यपि उच्च वर्ग की कुछ महिलाओं को अधिकार प्राप्त थे, किंतु सामान्यतः समाज में पूर्ण लैंगिक समानता का अभाव था। अतः यह कहना गलत है कि इस युग में महिलाओं की

हुआ जो सदियों तक श्रीलंकाई तीर्थयात्रियों और विद्वानों के लिए बौद्ध शिक्षा और आध्यात्मिक साधना का एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र बना रहा।

214. (B) हेमंत सेन
बंगाल के सेन राजवंश की राजनीतिक शक्ति की नींव 11वीं शताब्दी के अंत में हेमंत सेन द्वारा रखी गई थी। उन्होंने पालों की कमजोर स्थिति का लाभ उठाकर राढ़ के क्षेत्र में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करना प्रारंभ किया। यद्यपि उनके पुत्र विजय सेन ने इस वंश को एक साम्राज्य के रूप में विस्तारित किया, किंतु सेन वंश के एक स्वतंत्र राजनीतिक इकाई के रूप में उभरने का श्रेय हेमंत सेन को ही जाता है। उनके शासनकाल ने पालों के बौद्ध वर्चस्व के स्थान पर सेनों के ब्राह्मणवादी हिंदू शासन की शुरुआत का मार्ग प्रशस्त किया जिसने बंगाल के सामाजिक और धार्मिक इतिहास में एक नया मोड़ दिया जो अत्यंत महत्वपूर्ण था।

215. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
होयसल मंदिर अपनी अद्वितीय सुंदरता और दीवारों पर की गई सूक्ष्म नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं। इस बारीक शिल्पकारी का मुख्य कारण निर्माण सामग्री के रूप में 'नरम सोपस्टोन' का बुद्धिमानीपूर्ण उपयोग था। यह पत्थर शुरुआत में नरम होता है जिससे शिल्पकारों के लिए उस पर आभूषणों जैसी सूक्ष्मता के साथ पौराणिक कथाओं को उकेरना संभव हो सका। समय के साथ यह पत्थर हवा के संपर्क में आकर कठोर हो जाता है। इसी तकनीकी विशिष्टता ने होयसल वास्तुकला को अन्य समकालीन शैलियों से अलग और कलात्मक रूप से श्रेष्ठ बनाया जो उनकी रचनात्मकता और तकनीकी ज्ञान का एक उत्कृष्ट एवं सर्वकालिक प्रमाण है।

216. (A) महिलाओं का विशिष्ट प्रकार की संपत्ति पर पूर्ण अधिकार था।
प्राचीन भारत के धर्मशास्त्रों में 'स्त्रीधन' की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि महिलाओं को कुछ विशिष्ट संपत्तियों पर पूर्ण और अनन्य विधिक अधिकार प्राप्त था। इसमें वे सभी उपहार और धन शामिल थे जो उन्हें विवाह के समय माता-पिता से या पति से प्राप्त होते थे। इस संपत्ति पर पति का कोई सीधा नियंत्रण नहीं होता था और महिला इसे अपनी इच्छानुसार खर्च करने या हस्तांतरित करने के लिए स्वतंत्र थी। यह व्यवस्था प्राचीन समाज में महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा और उनके स्वतंत्र अस्तित्व को कानूनी मान्यता प्रदान करने का एक अत्यंत प्रगतिशील प्रयास माना जाता है जो उनके सामाजिक सम्मान और सुरक्षा को सुनिश्चित करता था।

217. (C) राष्ट्रकूट
कल्याणी के चालुक्य 10वीं शताब्दी के अंत में दक्कन में राष्ट्रकूट राजवंश के उत्तराधिकारी बने। तैलप द्वितीय ने अंतिम राष्ट्रकूट शासक कर्क द्वितीय को पराजित कर राष्ट्रकूटों के विशाल साम्राज्य पर अपना अधिकार कर लिया और पुनः चालुक्य शक्ति को सत्ता के केंद्र में प्रतिष्ठित किया। उन्होंने अपनी नई राजधानी कल्याणी से शासन किया। यह सत्ता परिवर्तन दक्कन के इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था जिसने राष्ट्रकूटों के दो सौ वर्षों के वर्चस्व को समाप्त किया और चालुक्यों की गौरवशाली परंपरा को एक शक्तिशाली रूप में पुनर्जीवित कर क्षेत्र में पुनः स्थापित कर दिया जो उनकी राजनीतिक शक्ति की पुनर्स्थापना का प्रतीक था।

218. (A) प्रशासनिक विकेंद्रीकरण का उत्तर-गुप्त काल।
उत्तर-गुप्त काल के दौरान ब्राह्मणों और मंदिरों को कर-मुक्त भूमि अनुदान देने की प्रथा अत्यंत व्यापक हो गई थी। इस काल में राजाओं ने अपनी प्रशासनिक और आर्थिक शक्तियों का विकेंद्रीकरण करते हुए विद्वानों और धार्मिक संस्थानों को भू-स्वामित्व प्रदान किया। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि का विस्तार हुआ और एक नए सामंती वर्ग का उदय हुआ। ये अनुदान ताम्रपत्रों पर अंकित किए जाते थे जो प्राप्तकर्ता को भूमि पर पूर्ण अधिकार प्रदान करते थे। इस व्यवस्था ने भारतीय समाज में मंदिर-केंद्रित अर्थव्यवस्था और ब्राह्मणवादी संस्कृति के सुदृढ़ीकरण में एक आधारभूत ऐतिहासिक भूमिका निभाई जिसने सामाजिक और आर्थिक ढांचे को बदल दिया।

219. (D) महेंद्रवर्मन प्रथम
पल्लव सम्राट महेंद्रवर्मन प्रथम एक असाधारण प्रतिभा संपन्न शासक थे जिन्होंने संस्कृत में 'मत्तविलास प्रहसन' नामक एक अत्यंत प्रसिद्ध नाटक की रचना की थी। यह नाटक सातवीं शताब्दी के धार्मिक पाखंडों, विशेष रूप से कापालिकों और बौद्ध भिक्षुओं के भ्रष्ट आचरण पर किया गया एक व्यंग्यात्मक प्रहार है। यह महेंद्रवर्मन की साहित्यिक श्रेष्ठता और तत्कालीन समाज के प्रति उनकी गहरी आलोचनात्मक दृष्टि का उत्कृष्ट उदाहरण है। एक योद्धा और कला प्रेमी राजा द्वारा इस प्रकार के प्रहसन की रचना करना पल्लव कालीन बौद्धिक चेतना और वैचारिक स्वतंत्रता के उच्च स्तर को स्पष्ट रूप से ऐतिहासिक रूप में प्रदर्शित करता है जो उनकी महानता का परिचायक है।

220. (B) बिहार
प्राचीन विक्रमशिला विश्वविद्यालय आधुनिक बिहार राज्य के भागलपुर जिले में स्थित था। इसकी स्थापना 8वीं शताब्दी के अंत में पाल राजा धर्मपाल ने बौद्ध धर्म के वज्रयान संप्रदाय की शिक्षा और प्रसार के लिए की थी। यह विश्वविद्यालय गंगा नदी के तट पर स्थित था और अपनी ऊँची शैक्षणिक गुणवत्ता के कारण नालंदा के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्र बन गया था। यहाँ से निकलने वाले विद्वानों ने विशेष रूप से तिब्बत में बौद्ध धर्म की नींव रखी। आज इसके खंडहर पाल कालीन वैभवशाली शिक्षा प्रणाली और उनकी महान स्थापत्य कला की गौरवशाली याद दिलाते हैं जो बिहार की ऐतिहासिक विरासत का एक अमूल्य और महत्वपूर्ण हिस्सा है।

221. (C) राजेंद्र प्रथम
श्रीलंका की पूर्ण विजय का गौरव चोल सम्राट राजेंद्र प्रथम को प्राप्त है। यद्यपि उनके पिता राजराज प्रथम ने श्रीलंका के उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया था, किंतु राजेंद्र प्रथम ने अपनी विशाल नौसेना का उपयोग कर संपूर्ण द्वीप को विजित किया और वहाँ के राजा महिंद पंचम को बंदी बना लिया। उनके शासनकाल में श्रीलंका लगभग पांच दशकों तक चोल साम्राज्य का एक प्रांत बना रहा। राजेंद्र प्रथम की इस सैन्य सफलता ने

था। इस उपाधि के साथ उनका नाम भारतीय इतिहास में एक महान विजेता के रूप में हमेशा हेतु दर्ज हो गया।

206. (D) शैव धर्म
चोल राजवंश के शासक भगवान शिव के अनन्य भक्त थे और उन्होंने शैव धर्म को राजकीय धर्म के रूप में अभूतपूर्व संरक्षण प्रदान किया। उनके शासनकाल में दक्षिण भारत में भव्य शिव मंदिरों का निर्माण हुआ जिनमें तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर प्रमुख है। चोल राजाओं ने नयनार संतों की रचनाओं को संकलित कराया और भक्ति परंपरा को समाज की मुख्यधारा से जोड़ा। यद्यपि वे अन्य मतों के प्रति सहिष्णु थे, किंतु शैव धर्म के प्रति उनका अनुराग उनकी कला और दान पत्रों में सर्वत्र दिखाई देता है। चोलों का यह धार्मिक नेतृत्व आज भी दक्षिण भारतीय शैव परंपरा का मजबूत आधार बना हुआ है जो उनकी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है।

207. (A) अलाउद्दीन खिलजी
देवगिरि के यादव राजा रामचंद्र दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के समकालीन थे और उनका सामना खिलजी के आक्रामक सैन्य विस्तार से हुआ। 1296 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी ने देवगिरि पर अचानक आक्रमण कर राजा रामचंद्र को संधि करने और भारी हर्जाना देने के लिए विवश किया था। बाद में 1307 ईस्वी में मलिक काफूर के नेतृत्व में खिलजी की सेनाओं ने पुनः देवगिरि पर आक्रमण कर इसे अपने नियंत्रण में ले लिया। यह संघर्ष दक्षिण भारत के स्वतंत्र राज्यों के पतन और दिल्ली सल्तनत के वर्चस्व की शुरुआत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पड़ाव माना जाता है जिसने भविष्य की राजनीति को पूरी तरह बदल दिया।

208. (B) एक प्रांतीय राज्यपाल
गुप्त साम्राज्य के प्रशासनिक ढांचे में 'भुक्ति' के सर्वोच्च कार्यकारी अधिकारी या राज्यपाल को 'उपरिक' कहा जाता था। उपरिक की नियुक्ति सीधे सम्राट द्वारा की जाती थी और वे प्रायः शाही परिवार के सदस्य या सम्राट के विश्वसनीय उच्च अधिकारी होते थे। उनका मुख्य कार्य अपने प्रांत में शांति और कानून-व्यवस्था बनाए रखना, राजस्व का संग्रह करना और केंद्र सरकार के आदेशों का पालन सुनिश्चित करना था। उपरिक के अधीन 'विषयपति' कार्य करते थे। यह पद दर्शाता है कि गुप्तों ने अपने विशाल साम्राज्य के कुशल प्रबंधन के लिए एक सुव्यवस्थित क्षेत्रीय प्रशासनिक व्यवस्था विकसित की थी जो उनकी साम्राज्यिक सफलता का आधार बनी।

209. (B) उत्पल
कश्मीर के इतिहास में 9वीं शताब्दी के मध्य में कार्कोट राजवंश के पतन के पश्चात उत्पल राजवंश ने सत्ता संभाली। इस वंश की स्थापना अवंतिवर्मन ने 855 ईस्वी में की थी जिन्होंने कश्मीर में राजनीतिक स्थिरता और समृद्धि का एक नया युग प्रारंभ किया। उत्पल शासकों के काल में विशेष रूप से कृषि विकास और सिंचाई परियोजनाओं पर ध्यान दिया गया जिससे कश्मीर की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई। अवंतिवर्मन द्वारा बनवाए गए अवंतिपुर के मंदिर उनकी कलात्मक दृष्टि के महत्वपूर्ण प्रमाण हैं। कश्मीर को एक सुव्यवस्थित शासन प्रदान करने में उत्पल वंश की ऐतिहासिक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरवशाली रही है जो इसे इतिहास में विशिष्ट बनाती है।

210. (A) केवल I और II
चोल प्रशासन की मुख्य विशेषता साम्राज्य का मंडलम् में विभाजन और स्थानीय स्तर पर ग्राम सभाओं को दी गई व्यापक स्वायत्तता थी। ये सभाएं कर संग्रह और विकास कार्यों का स्वतंत्र प्रबंधन करती थीं। हालांकि, यह कहना गलत है कि चोल काल में निजी संपत्ति का अभाव था; वास्तव में उस समय भूमि के विभिन्न प्रकार जैसे निजी स्वामित्व वाली भूमि और मंदिरों की भूमि प्रचलित थी। किसानों के पास अपनी भूमि पर व्यक्तिगत अधिकार होते थे। अतः चोलों ने निजी अधिकारों और सामुदायिक प्रबंधन के बीच एक संतुलित प्रशासनिक ढांचा तैयार किया था जो उनकी आर्थिक नीति की सफलता और सामाजिक स्थिरता का एक प्रमुख कारण बना।

211. (C) कैलाश मंदिर, एलोरा
राष्ट्रकूट राजवंश की कला प्रतिभा का सबसे महान उदाहरण एलोरा में स्थित 'कैलाश मंदिर' है। राजा कृष्ण प्रथम द्वारा 8वीं शताब्दी में निर्मित यह मंदिर अभियांत्रिकी का एक चमत्कार है क्योंकि इसे एक ही विशाल चट्टान को काटकर बनाया गया है। यह दुनिया की सबसे बड़ी एकाश्म संरचना है जिसमें मंदिर की सूक्ष्म नक्काशी और मूर्तियाँ सब एक ही पत्थर का हिस्सा हैं। यह मंदिर राष्ट्रकूटों की धार्मिक निष्ठा और उस काल के शिल्पकारों के असाधारण तकनीकी कौशल का एक गौरवशाली ऐतिहासिक प्रतीक बना हुआ है। इसकी भव्यता और स्थापत्य कला विश्व भर के कला प्रेमियों और इतिहासकारों को आज भी विस्मित करती है।

212. (D) अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन करना और पवित्र गंगा जल लाना।
चोल सम्राट राजेंद्र प्रथम के गंगा अभियान का मुख्य उद्देश्य अपनी विशाल सैन्य शक्ति का प्रदर्शन करना और उत्तर भारतीय शासकों पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करना था। इस विजय के प्रतीक के रूप में वे पवित्र गंगा नदी का जल अपनी राजधानी में लाए। उन्होंने इस उपलक्ष्य में 'गंगेयकोंडचोल' की उपाधि धारण की और 'चोलगंगम' नामक एक विशाल कृत्रिम झील का निर्माण कराया जिसमें गंगा का जल मिलाया गया था। यह अभियान चोलों की उस साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा को दर्शाता है जो केवल दक्षिण तक सीमित न रहकर उत्तर भारत की प्रतीकात्मक श्रेष्ठता पर भी अपना दावा स्थापित करना चाहती थी जो ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है।

213. (C) बोधगया
श्रीलंका के राजा मेघवर्ण ने गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के पास एक औपचारिक दूत मंडल भेजकर बोधगया में श्रीलंकाई बौद्ध भिक्षुओं के लिए एक भव्य मठ और विहार बनाने की अनुमति माँगी थी। समुद्रगुप्त ने अपनी धार्मिक सहिष्णुता और कूटनीतिक दूरदर्शिता का परिचय देते हुए सहर्ष यह अनुमति प्रदान कर दी। यह घटना गुप्त साम्राज्य और श्रीलंका के बीच मधुर अंतरराष्ट्रीय संबंधों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की पुष्टि करती है। इसके परिणामस्वरूप बोधगया में एक विशाल विहार का निर्माण

अपनी सैन्य शक्ति और स्थापत्य कला के माध्यम से इतिहास में अपनी एक अलग और अमिट पहचान बनाई थी।

182. (B) राज्य या प्रांत
गुप्त प्रशासन में 'भुक्ति' शब्द का प्रयोग साम्राज्य के सबसे बड़े प्रशासनिक प्रभाग हेतु किया जाता था जो आधुनिक समय के 'राज्य' या 'प्रांत' के समतुल्य था। प्रत्येक भुक्ति का प्रशासन एक उच्च अधिकारी द्वारा चलाया जाता था जिसे 'उपरिक' कहा जाता था और जिसकी नियुक्ति सीधे सम्राट द्वारा की जाती थी। भुक्ति के प्रशासन में सहायता हेतु एक पूरी परिषद होती थी। यह व्यवस्था दर्शाती है कि गुप्त साम्राज्य ने इतने विशाल क्षेत्र के कुशल प्रबंधन हेतु एक सुव्यवस्थित और प्रभावी विकेंद्रीकृत प्रशासनिक ढांचा तैयार किया था जो मौर्यों के मॉडल से काफी भिन्न था।

183. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पल्लव काल दक्षिण भारत के इतिहास में ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म के पुनरुत्थान और भक्ति आंदोलन के उदय का स्वर्ण युग माना जाता है। इस काल में नयनार और आलवार संतों ने स्थानीय तमिल भाषा में ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत प्रेम और भक्ति का संदेश फैलाया जिसने समाज के सभी वर्गों को प्रभावित किया। पल्लव राजाओं ने इन संतों को सम्मान दिया और भव्य मंदिरों का निर्माण कराया जो भक्ति गतिविधियों के मुख्य केंद्र बने। इस धार्मिक जागृति ने न केवल जैन और बौद्ध धर्म के प्रभाव को कम किया बल्कि आधुनिक दक्षिण भारतीय संस्कृति की एक अटूट नींव स्थापित की।

184. (A) कर्नाटक
कदंब साम्राज्य मुख्य रूप से आधुनिक कर्नाटक के क्षेत्र में चौथी शताब्दी ईस्वी में एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में उभरा था। उनकी राजधानी बनवासी थी जो अपनी समृद्धि हेतु प्रसिद्ध थी। कदंबों को प्रथम स्वदेशी कन्नड़ राजवंश माना जाता है क्योंकि उन्होंने कन्नड़ भाषा को प्रशासनिक महत्व प्रदान किया। उनके शासनकाल में कर्नाटक ने राजनीतिक स्थिरता और ब्राह्मणवादी शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की। कदंबों द्वारा विकसित की गई स्थापत्य शैलियों ने बाद में आने वाले चालुक्य और होयसल साम्राज्यों के भव्य मंदिर निर्माण हेतु एक आधारभूत भूमिका निभाई जो कर्नाटक की ऐतिहासिक विरासत है।

185. (C) हर्षवर्धन
चीनी तीर्थयात्री ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान भारत की लंबी यात्रा की थी। उनके द्वारा लिखित ग्रंथ 'सी-यू-की' हर्ष के समय के राजनीतिक प्रशासन, सामाजिक जीवन और धार्मिक आयोजनों का सबसे विस्तृत और प्रामाणिक स्रोत माना जाता है। ह्वेनसांग हर्ष के घनिष्ठ मित्र बन गए थे और उन्होंने कन्नौज एवं प्रयाग की धर्म सभाओं का आँखों देखा वर्णन किया है। उनके वृत्तांतों ने हर्ष को न केवल एक महान विजेता बल्कि विद्या के संरक्षक और प्रजावत्सल शासक के रूप में भी विश्व इतिहास के पटल पर सदैव हेतु अमर कर दिया है।

186. (A) चंद्रगुप्त द्वितीय
गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ने पश्चिमी भारत के शक्तिशाली शक क्षत्रपों का पूर्णतः उन्मूलन करने के पश्चात 'शकारि' और 'विक्रमादित्य' जैसी गौरवशाली उपाधियाँ धारण की थीं। शकों पर उनकी यह विजय न केवल सैन्य दृष्टि से महत्वपूर्ण थी बल्कि इसने गुप्त साम्राज्य को पश्चिमी समुद्री व्यापार मार्गों से भी जोड़ दिया जिससे आर्थिक समृद्धि में भारी वृद्धि हुई। इन उपाधियों के साथ ही वे भारतीय लोककथाओं में एक अत्यंत न्यायप्रिय और विद्वानों के संरक्षक सम्राट के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। उनका शासनकाल गुप्त साम्राज्य की राजनीतिक शक्ति और सांस्कृतिक श्रेष्ठता के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करता है।

187. (D) गाँवों का एक समूह या एक उप-जिला
चोल प्रशासन में 'नाडु' एक अत्यंत प्रभावी प्रशासनिक इकाई थी जो कई गाँवों के समूह से मिलकर बनती थी और आधुनिक समय के एक 'उप-जिले' के समतुल्य थी। नाडु की अपनी एक स्वायत्त परिषद होती थी जिसे 'नाट्टार' कहा जाता था। यह परिषद कृषि प्रबंधन, राजस्व संग्रह और स्थानीय विवादों का निपटारा स्वयं करती थी। नाडु व्यवस्था ने चोल साम्राज्य में स्थानीय स्तर पर प्रजातांत्रिक भागीदारी और कुशल प्रशासनिक विकेंद्रीकरण सुनिश्चित किया। इस व्यवस्था के कारण ही चोल साम्राज्य की जड़ें ग्रामीण समाज में अत्यंत गहरी थीं और प्रशासन पारदर्शी एवं जनोन्मुखी बना रहा।

188. (B) महाबलीपुरम के पंच रथ
महाबलीपुरम में स्थित 'पंच रथ' पल्लव राजवंश की रॉक-कट वास्तुकला के सबसे अद्भुत और अद्वितीय उदाहरण हैं। इन सातवीं शताब्दी के स्मारकों का निर्माण एक ही विशाल अखंड चट्टान को ऊपर से नीचे की ओर तराश कर किया गया है। प्रत्येक रथ की बनावट और स्थापत्य शैली भिन्न है जो पल्लव शिल्पकारों की रचनात्मक विविधता को दर्शाती है। यद्यपि इनके नाम पांडव भाइयों और द्रौपदी के नाम पर रखे गए हैं, किंतु ये वास्तव में मंदिर वास्तुकला के विभिन्न शैलियों के प्रयोग मात्र हैं। ये स्मारक पल्लव काल की उस कलात्मक श्रेष्ठता का प्रमाण हैं जिसने बाद में भव्य द्रविड़ शैली को जन्म दिया था।

189. (C) कर्नाटक में मल्खेड़
राष्ट्रकूटों की वैभवशाली राजधानी मान्यखेत की पहचान वर्तमान कर्नाटक राज्य के गुलबर्गा जिले में स्थित 'मल्खेड़' से की जाती है। यह नगर राष्ट्रकूटों के उत्कर्ष काल में दक्षिण भारत का एक अत्यंत समृद्ध राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र था। अमोघवर्ष प्रथम ने इसे एक शानदार नगर के रूप में विकसित किया था जिसकी तुलना इंद्र की नगरी से की जाती थी। मल्खेड़ की रणनीतिक स्थिति ने राष्ट्रकूटों को उत्तर और दक्षिण भारत दोनों की राजनीति को प्रभावित करने में सक्षम बनाया। यद्यपि आज वहाँ केवल प्राचीन अवशेष ही शेष हैं, किंतु यह स्थान राष्ट्रकूट साम्राज्य की महानता का एक मूक गवाह बना हुआ है।

चोलों के समुद्री प्रभुत्व को हिंद महासागर में सर्वोच्च बना दिया और दक्षिण भारत के राजनीतिक प्रभाव को सीमाओं के पार तक विस्तारित करने में एक अत्यंत निर्णायक और ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी।

222. (D) संस्कृत
वातापि के चालुक्यों के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत 'ऐहोल शिलालेख' उच्च कोटि की संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इसकी रचना पुलकेशिन द्वितीय के दरबारी कवि रविकीर्ति ने की थी जिन्होंने शास्त्रीय संस्कृत काव्य शैली का अत्यंत सुंदरता से प्रयोग किया है। यद्यपि लिपि पुरानी कन्नड़ है, किंतु भाषा की शुद्धता और साहित्यिक सुंदरता इसे संस्कृत साहित्य का एक अनमोल रत्न बनाती है। इस अभिलेख में पुलकेशिन की विजयों का विवरण देते हुए रविकीर्ति ने अपनी तुलना कालिदास और भारवि जैसे महान कवियों से की है। यह शिलालेख उस काल के दौरान दक्षिण भारत में संस्कृत भाषा के गहराते राजकीय सम्मान को दृढ़ता से प्रमाणित करता है।

223. (A) अवंतिवर्मन
कश्मीर के उत्पल राजवंश की स्थापना 855 ईस्वी में अवंतिवर्मन द्वारा की गई थी। उन्होंने कश्मीर को कार्कोट राजवंश के बाद फैली अराजकता से मुक्ति दिलाई और शांति एवं समृद्धि के एक नए युग का सूत्रपात किया। अवंतिवर्मन को विशेष रूप से उनकी लोक-कल्याणकारी योजनाओं और कृषि सुधारों के लिए याद किया जाता है। उन्होंने झेलम नदी की बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए उत्कृष्ट अभियांत्रिकी कार्य कराए जिससे कश्मीर घाटी में कृषि उपज में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। उनके द्वारा बनवाए गए अवंतिपुर के मंदिर उनकी स्थापत्य कला और धार्मिक निष्ठा के जीवंत प्रतीक के रूप में आज भी कश्मीर में खड़े हैं जो उनके शासन की सफलता दर्शाते हैं।

224. (B) विष्णुवर्धन
राजराज प्रथम, राजेंद्र प्रथम और कुलोत्तुंग प्रथम चोल राजवंश के सर्वाधिक शक्तिशाली और प्रसिद्ध सम्राट थे जिन्होंने साम्राज्य का विस्तार किया और महान मंदिरों का निर्माण कराया। इसके विपरीत, विष्णुवर्धन चोल नहीं बल्कि होयसल राजवंश के महान शासक थे जिन्होंने द्वारसमुद्र से शासन किया और बेलूर के चेन्नाकेशव मंदिर का निर्माण कराया। यद्यपि वे चोलों के समकालीन थे, किंतु उनका राजनीतिक संबंध होयसल वंश से था। उन्होंने चोलों के प्रभाव को कम कर कर्नाटक में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की थी। अतः उन्हें चोल शासकों की सूची में रखना ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह गलत होगा क्योंकि दोनों का कार्यक्षेत्र और वंश भिन्न था।

225. (B) पल्लव
दक्षिण भारतीय वास्तुकला के इतिहास में पल्लव राजवंश का योगदान सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि उन्होंने ही रॉक-कट गुफा मंदिरों से स्वतंत्र संरचनात्मक मंदिरों की ओर संक्रमण की प्रक्रिया शुरू की। प्रारंभ में महेंद्रवर्मन ने केवल चट्टानों को काटकर गुफाएं बनाईं, किंतु नरसिंहवर्मन द्वितीय के काल में स्वतंत्र मंदिर जैसे कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर और शोर मंदिर अस्तित्व में आए। इस तकनीकी नवाचार ने द्रविड़ शैली को उसका स्थायी और भव्य स्वरूप प्रदान किया। पल्लवों के इस स्थापत्य प्रयोग ने ही भविष्य के महान चोल मंदिरों के निर्माण के लिए एक आधारभूत मार्ग और प्रेरणा प्रदान की थी जो उनकी महानतम सांस्कृतिक उपलब्धि मानी जाती है।

226. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
'आर्यभटीय' खगोल विज्ञान और गणित का एक वैज्ञानिक ग्रंथ है। 'हर्षचरित' बाणभट्ट द्वारा रचित सम्राट हर्षवर्धन की एक राजकीय जीवनी है जो उनके संघर्षों का वर्णन करती है। 'कामसूत्र' तत्कालीन समाज के मानवीय संबंधों और सामाजिक जीवन की बारीकियों को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। 'गीत गोविंद' जयदेव द्वारा रचित एक मधुर भक्ति काव्य है जिसने राधा-कृष्ण की प्रेम लीला को अमर बना दिया। यह सुमेल गुप्त और गुप्तोत्तर काल की बौद्धिक संपदा की विविधता और भारतीय साहित्य के विभिन्न आयामों को उनके सही विषयों के साथ अत्यंत स्पष्ट रूप से जोड़कर प्रस्तुत करता है जो उस युग की बौद्धिक श्रेष्ठता का प्रमाण है।

227. (C) सामान्य गाँव के गैर-ब्राह्मण, करदाता निवासी
पल्लव प्रशासन में 'ऊर' सामान्य ग्रामीण क्षेत्रों की एक प्राथमिक स्वायत्त सभा थी जिसमें गाँव के स्थानीय गैर-ब्राह्मण निवासी शामिल होते थे। इसका मुख्य कार्य ग्रामीण स्तर पर भूमि प्रबंधन, करों का संग्रह और स्थानीय विवादों का समाधान करना था। यह ब्राह्मणों की 'सभा' से भिन्न थी और ग्रामीण लोकतंत्र की आधारभूत इकाई मानी जाती थी। ऊर की सक्रियता यह दर्शाती है कि पल्लव काल में शासन केवल राजा तक सीमित नहीं था बल्कि आम जनता की भी अपने दैनिक प्रशासनिक कार्यों में प्रत्यक्ष भागीदारी थी। यह व्यवस्था समाज में प्रशासनिक संतुलन बनाए रखने और स्थानीय विकास को गति देने में अत्यंत प्रभावी और सहायक सिद्ध होती थी।

228. (D) स्कंदगुप्त
स्कंदगुप्त गुप्त राजवंश के अंतिम शक्तिशाली सम्राट थे जिन्हें अपने शासनकाल में बाहरी आक्रमणों का सामना करना पड़ा। उन्होंने मध्य एशिया की हूण जनजाति के आक्रमणों को विफल कर भारत की सीमाओं की रक्षा की, जैसा कि भीतरी स्तंभ लेख से स्पष्ट है। हालांकि, इन निरंतर युद्धों ने शाही खजाने पर भारी दबाव डाला और आर्थिक स्थिरता को कमजोर कर दिया। स्कंदगुप्त की मृत्यु के पश्चात गुप्त साम्राज्य में कोई भी ऐसा योग्य शासक नहीं हुआ जो बिखरते हुए साम्राज्य को संभाल सके जिससे अंततः महान गुप्त वंश का पतन हो गया। उनकी वीरता ने साम्राज्य को तत्काल विनाश से बचाया था किंतु दीर्घकालिक संकट जारी रहा।

229. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
राष्ट्रकूट राजा कृष्ण प्रथम ने अपनी धार्मिक निष्ठा और अभियांत्रिकी कौशल का परिचय देते हुए एलोरा में भव्य कैलाश मंदिर का निर्माण कराया जो विश्व धरोहर है। वहीं, अमोघवर्ष प्रथम राष्ट्रकूट वंश के सबसे विद्वान शासक थे जिन्होंने जैन धर्म को अपना लिया और इसे व्यापक राजकीय संरक्षण प्रदान किया। अमोघवर्ष ने स्वयं कन्नड़ साहित्य की उन्नति में योगदान दिया और वे अपनी अहिंसक नीतियों के लिए

प्रसिद्ध थे। ये दोनों तथ्य राष्ट्रकूटों के दो भिन्न किंतु महत्वपूर्ण पहलुओं—महान वास्तुकला और धार्मिक एवं साहित्यिक पुनर्जागरण—को ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह स्पष्ट करते हैं जो उनके गौरवशाली साम्राज्य की महानता का मुख्य आधार हैं।

230. (B) शिव
हलेबिडु में स्थित होयसलेश्वर मंदिर भगवान शिव को समर्पित एक भव्य स्थापत्य कला का उदाहरण है। इसका निर्माण 12वीं शताब्दी में होयसल राजा विष्णुवर्धन के शासनकाल के दौरान हुआ था। यह मंदिर अपनी जटिल नक्काशी और विस्मयकारी मूर्तिकला के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है जहाँ पत्थरों पर पौराणिक कथाओं को अत्यंत सजीवता के साथ उकेरा गया है। मंदिर के बाहर स्थित नंदी की विशाल मूर्तियाँ इसकी धार्मिक महत्ता को और बढ़ा देती हैं। यह मंदिर होयसल कालीन शैव धर्म के प्रति गहरी आस्था और उनकी विकसित वेसर स्थापत्य शैली का एक जीवंत ऐतिहासिक गौरव बना हुआ है जो पर्यटकों और इतिहासकारों को निरंतर अपनी ओर आकर्षित करता है।

231. (D) विषय
गुप्त साम्राज्य के प्रशासनिक विभाजन में 'विषय' शब्द का प्रयोग आधुनिक समय के 'जिले' के समतुल्य क्षेत्र के लिए किया जाता था। प्रत्येक विषय 'भुक्ति' का एक हिस्सा होता था और इसका प्रशासन एक उच्चाधिकारी द्वारा चलाया जाता था जिसे 'विषयपति' कहा जाता था। विषयपति को सलाह देने के लिए एक परिषद होती थी जिसमें नगर के प्रमुख व्यापारी और शिल्पकार शामिल होते थे। यह व्यवस्था दर्शाती है कि गुप्त प्रशासन में स्थानीय स्तर पर नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित की गई थी और जिला स्तर पर शासन को सुचारु बनाने के लिए एक प्रभावी ढांचा विकसित किया गया था जिसने क्षेत्रीय स्थिरता और विकास सुनिश्चित करने में सहायता की थी।

232. (A) केवल I और II
सम्राट हर्षवर्धन एक कुशल योद्धा होने के साथ साहित्य के प्रेमी और स्वयं एक उच्च कोटि के नाटककार थे। उन्हें संस्कृत में 'रत्नावली' और 'नागानंद' जैसे प्रसिद्ध नाटकों की रचना करने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने कन्नौज और प्रयाग में भव्य धार्मिक सभाओं का आयोजन किया जहाँ विद्वानों ने चर्चा की। हर्ष ने कभी संस्कृत के उपयोग पर प्रतिबंध नहीं लगाया बल्कि उनके काल में संस्कृत साहित्य और शिक्षा अपने चरमोत्कर्ष पर थी। उनके दरबार में बाणभट्ट जैसे महान संस्कृत विद्वान सुशोभित थे। अतः हर्ष का सांस्कृतिक योगदान उनके राजनीतिक विस्तार की तुलना में किसी भी तरह कम महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता है।

233. (C) उत्तरी दक्कन का पठार
वाकाटक साम्राज्य मुख्य रुप से आधुनिक महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों सहित उत्तरी दक्कन के पठार पर स्थित था। गुप्तों के समकालीन इस राजवंश ने तीसरी से पांचवीं शताब्दी के दौरान मध्य भारत की राजनीति में एक अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाई थी। वाकाटकों की भौगोलिक स्थिति सामरिक रूप से इतनी महत्वपूर्ण थी कि गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ने उनके साथ वैवाहिक गठबंधन करना आवश्यक समझा। वाकाटक शासक कला और संस्कृति के महान संरक्षक थे और उनके सहयोग से ही अजंता की मूर्तिकला का विकास संभव हो सका। यह साम्राज्य उत्तर और दक्षिण भारत की संस्कृतियों के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में कार्य करता था।

234. (A) कर्नाटक
ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार बंगाल के सेन राजवंश के पूर्वज मूलतः 'कर्णाट' क्षेत्र से आए थे। वे संभवतः चालुक्यों के सैन्य अभियानों के साथ बंगाल पहुँचे और वहीं बस गए। सेन राजा स्वयं को 'ब्रह्म-क्षत्रिय' कहते थे जो उनके दक्षिण भारतीय मूल और बाद में योद्धा बनने की प्रक्रिया को दर्शाता है। बंगाल में पालों की सत्ता कमजोर होने पर उन्होंने अपनी स्वतंत्र शक्ति स्थापित की। दक्षिण से पूर्व भारत की ओर का यह प्रवास और सत्ता स्थापना भारतीय इतिहास की एक रोचक घटना है जिसने बंगाल के सामाजिक और धार्मिक परिदृश्य को ब्राह्मणवादी परंपराओं के माध्यम से गहराई से प्रभावित और पूरी तरह परिवर्तित किया था।

235. (D) सिंचाई टैंक और कृषि
काकतीय राजवंश अपने उन्नत जल प्रबंधन और सिंचाई प्रणालियों के लिए विशेष रुप से प्रसिद्ध था। उन्होंने तेलंगाना के शुष्क क्षेत्रों में कृषि को बढ़ावा देने के लिए 'चेरुवु' और बांधों का एक विशाल जाल बिछाया था, जैसे प्रसिद्ध रामप्पा और पाखल झीलें। इन जलाशयों ने क्षेत्र की बंजर भूमि को उपजाऊ बनाकर राज्य की अर्थव्यवस्था को अत्यंत सुदृढ़ बनाया। काकतीय शासकों की इस दूरदर्शी सिंचाई नीति के कारण ही उनका साम्राज्य आर्थिक रूप से समृद्ध हुआ। आज भी उनके द्वारा बनाए गए कई टैंक तेलंगाना के ग्रामीण जीवन और कृषि के लिए आधारभूत स्तंभ बने हुए हैं जो उनकी प्रशासनिक और अभियांत्रिकी सफलता का प्रमाण हैं।

236. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
चोल काल को दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला की 'द्रविड़ शैली' का स्वर्ण युग माना जाता है। राजराज प्रथम ने तंजावुर में भव्य बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण कराकर वास्तुकला के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया, जिसकी विशालता और विमान की ऊँचाई अद्वितीय है। उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम ने भी गंगेयकोंडचोलपुरम में इसी परंपरा को आगे बढ़ाया। इन मंदिरों में द्रविड़ शैली के सभी तत्व जैसे गोपुरम और मंडप अपने सबसे परिष्कृत स्वरूप में दिखाई देते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि चोल सम्राटों के उदार संरक्षण ने ही द्रविड़ कला को उसके सर्वकालिक सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाया और उसे वैश्विक पहचान प्रदान की थी।

237. (C) गुप्त
उत्तर प्रदेश के देवगढ़ में स्थित 'दशावतार मंदिर' गुप्त कालीन स्थापत्य कला की एक अत्यंत महत्वपूर्ण उत्कृष्ट कृति है। यह मंदिर नागर शैली के सबसे शुरुआती स्वरुप को दर्शाता है जिसमें एक ऊंचे चबूतरे पर वर्गाकार मंदिर और उसके ऊपर शिखर निर्माण का प्रथम प्रयास देखा जा सकता है। भगवान विष्णु को समर्पित इस मंदिर की दीवारों पर उकेरी गई शेषशायी विष्णु जैसी मूर्तियाँ गुप्त काल की शास्त्रीय सुंदरता

का श्रेष्ठ उदाहरण हैं। यह मंदिर सादगी और सूक्ष्म अलंकरण का ऐसा अद्भुत मेल प्रस्तुत करता है जिसने भविष्य की उत्तर भारतीय मंदिर निर्माण शैलियों के लिए एक आधारभूत आदर्श और प्रेरणा का कार्य किया था।

238. (D) पुलकेशिन प्रथम
वातापि के चालुक्य राजवंश की नींव छठी शताब्दी के मध्य में पुलकेशिन प्रथम द्वारा रखी गई थी। उन्होंने ही बादामी की पहाड़ियों को अपनी शक्ति का केंद्र बनाया और वहां एक अभेद्य किले का निर्माण कराया। पुलकेशिन प्रथम ने अश्वमेध यज्ञ कर अपनी संप्रभुता स्थापित की और 'सत्याश्रय' जैसी उपाधियाँ धारण कीं। यद्यपि उनके उत्तराधिकारी पुलकेशिन द्वितीय ने साम्राज्य को अखिल भारतीय पहचान दिलाई, किंतु एक स्वतंत्र राजनीतिक इकाई के रूप में चालुक्यों को स्थापित करने का वास्तविक श्रेय पुलकेशिन प्रथम की दूरदर्शिता को ही जाता है। उनके नेतृत्व में ही चालुक्यों की उस गौरवशाली यात्रा का प्रारंभ हुआ जिसने शताब्दियों तक दक्कन पर राज किया।

239. (A) चीन और दक्षिण पूर्व एशिया
गुप्त काल के अंतिम चरणों में रोमन साम्राज्य के पतन के कारण पश्चिमी देशों के साथ भारत के व्यापार में कमी आई थी, किंतु इस आर्थिक घाटे की भरपाई चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ बढ़ते व्यापारिक संबंधों से हुई। भारतीय व्यापारी मसालों और अन्य बहुमूल्य वस्तुओं के लिए बंगाल की खाड़ी के माध्यम से इन पूर्वी क्षेत्रों की निरंतर यात्रा करने लगे। इस व्यापार ने ताम्रलिप्ति जैसे बंदरगाहों के महत्व को बढ़ा दिया और इसके साथ ही बौद्ध धर्म तथा भारतीय संस्कृति का प्रसार भी इन देशों में तेजी से हुआ। यह व्यापारिक बदलाव गुप्त कालीन अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करने और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को बनाए रखने में प्रभावी रहा।

240. (B) गुजरात के चौलुक्य
सोलंकी राजवंश को भारतीय इतिहास में 'गुजरात के चौलुक्य' के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि वे मूल चालुक्य वंश के समान ही अपनी उत्पत्ति मानते थे। उन्होंने 10वीं से 13वीं शताब्दी के दौरान गुजरात के एक बड़े भाग पर शासन किया और अणहिलवाड़ा को अपनी राजधानी बनाया। सोलंकी शासक अपनी स्थापत्य कला, विशेष रूप से 'मारु-गुर्जर' शैली के लिए प्रसिद्ध थे जिसके तहत मोढेरा के सूर्य मंदिर का निर्माण हुआ। गुजरात के राजनीतिक एकीकरण और उसकी सांस्कृतिक एवं आर्थिक समृद्धि में सोलंकी वंश का योगदान अत्यंत गौरवशाली रहा है जिसने क्षेत्र को एक विशिष्ट पहचान और ऐतिहासिक गरिमा प्रदान करने में सफलता प्राप्त की थी।

241. (B) ब्राह्मणों को दिया गया गाँव या भूमि
प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में 'अग्रहार' उन गाँवों या भूमि के टुकड़ों को संदर्भित करता है जिन्हें राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को उनके धार्मिक और शैक्षणिक योगदान के बदले दान में दिया जाता था। ये अग्रहार सामान्यतः कर-मुक्त होते थे और इनके प्राप्तकर्ताओं को भूमि का पूर्ण अधिकार और राजस्व का उपयोग करने की स्वतंत्रता होती थी। इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य विद्वानों के लिए एक सुरक्षित जीवन सुनिश्चित करना था ताकि वे बिना किसी आर्थिक बाधा के ज्ञान के प्रसार में समर्पित रह सकें। यह प्रथा शिक्षा के विकेंद्रीकृत प्रसार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनी जिसने भारतीय संस्कृति को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाया।

242. (A) कृष्णा और तुंगभद्रा
पल्लवों और वातापि के चालुक्यों के बीच लंबे समय तक चले संघर्ष का मुख्य भौगोलिक केंद्र कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच स्थित उपजाऊ 'रायचूर दोआब' क्षेत्र था। यह क्षेत्र अपनी कृषि उत्पादकता और सामरिक स्थिति के कारण दोनों ही राजवंशों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। इस उपजाऊ भूमि पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए पल्लव और चालुक्य राजाओं ने बार-बार एक-दूसरे पर आक्रमण किए जिससे दक्षिण भारत की राजनीति में निरंतर अस्थिरता बनी रही। इस शत्रुता ने अंततः दोनों शक्तियों के संसाधनों को काफी हद तक क्षीण कर दिया। यह संघर्ष क्षेत्र के आर्थिक संसाधनों और सामरिक श्रेष्ठता पर आधिपत्य जमाने की एक दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धा थी।

243. (C) राजराज प्रथम
चोल सम्राट राजराज प्रथम ने अपने शासनकाल के दौरान भू-राजस्व व्यवस्था को आधुनिक बनाने के लिए पूरे साम्राज्य में एक अत्यंत सटीक भूमि सर्वेक्षण का कार्य प्रारंभ कराया था। यह उनकी प्रशासनिक कुशलता का एक उत्कृष्ट उदाहरण था जिसके माध्यम से भूमि की गुणवत्ता के आधार पर करों का निर्धारण किया गया। उन्होंने भूमि के मापन के लिए एक मानक इकाई विकसित की थी। इस सुधार ने न केवल राज्य की आय को स्थिर बनाया बल्कि किसानों के शोषण को रोकने में भी सहायता प्रदान की। राजराज प्रथम द्वारा स्थापित यह राजस्व प्रणाली इतनी उन्नत थी कि इसने बाद के कई राजवंशों के लिए एक आदर्श प्रशासनिक मॉडल का कार्य किया था।

244. (D) अस्पृश्यता के साथ एक कठोर चतुर्वर्ण जाति व्यवस्था।
चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी के दौरान सम्राट हर्षवर्धन के साम्राज्य का भ्रमण किया और वहां की सामाजिक संरचना का चित्रण किया। उनके वृत्तांतों के अनुसार तत्कालीन समाज कठोर चतुर्वर्ण व्यवस्था पर आधारित था जिसमें ब्राह्मणों का स्थान सर्वोच्च था। उन्होंने समाज के सबसे निचले पायदान पर स्थित 'चांडालों' की स्थिति और उनके साथ किए जाने वाले अस्पृश्यता के व्यवहार का भी स्पष्ट उल्लेख किया है। ह्वेनसांग के अनुसार ये लोग नगर के बाहर निवास करते थे। यह विवरण दर्शाता है कि राजनीतिक समृद्धि के बावजूद, सामाजिक स्तर पर जातिगत भेदभाव और छुआछूत जैसी कुरीतियां समाज में गहराई से व्याप्त थीं जो उस काल की वास्तविकता थी।

245. (C) उन्हें पल्लवों ने अपदस्थ किया था।
राष्ट्रकूट राजवंश के संबंध में यह कहना गलत है कि उन्हें पल्लवों ने अपदस्थ किया था; वास्तव में 10वीं शताब्दी के अंत में कल्याणी के परवर्ती चालुक्य राजा तैलप द्वितीय ने उन्हें पराजित कर सत्ता से हटाया था। राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेत थी और वे शैव, वैष्णव तथा जैन धर्म के महान संरक्षक थे। उन्होंने उत्तर भारत के कन्नौज के लिए हुए त्रिपक्षीय संघर्ष में भी अत्यंत प्रभावी भूमिका निभाई थी। राष्ट्रकूटों ने

पल्लवों के साथ कई युद्ध तो लड़े, किंतु उनके साम्राज्य का अंत पल्लवों द्वारा नहीं बल्कि चालुक्यों द्वारा ही किया गया था। यह राजनीतिक स्पष्टता उनके इतिहास और पतन के कारणों को समझने के लिए अनिवार्य है।

246. (B) पांडव भाइयों और द्रौपदी के
महाबलीपुरम में सातवीं शताब्दी में पल्लव शासकों द्वारा निर्मित पांच एकाश्म 'रथ' मंदिरों के नाम पौराणिक रूप से महाभारत के पांडव भाइयों और द्रौपदी के नाम पर रखे गए हैं। हालांकि, इतिहासकारों के अनुसार इन मंदिरों का पांडवों के जीवन की घटनाओं से कोई ऐतिहासिक संबंध नहीं है। ये नाम केवल प्रतीकात्मक हैं। वास्तव में ये संरचनाएं पल्लव कालीन मंदिर वास्तुकला की विभिन्न शैलियों का एक प्रयोगात्मक प्रदर्शन थीं जिन्हें एक ही विशाल चट्टान से तराश कर बनाया गया था। इन रथों की भव्यता पल्लव काल की कलात्मक श्रेष्ठता और उनके धार्मिक-सांस्कृतिक अनुराग को पूरी तरह से और गौरव के साथ प्रतिबिंबित करती है जो अद्वितीय है।

247. (D) गुप्तों और हर्षवर्धन की
कामरूप का वर्मन राजवंश चौथी से सातवीं शताब्दी के दौरान गुप्त साम्राज्य और बाद में हर्षवर्धन की एक महत्वपूर्ण समकालीन शक्ति थी। इलाहाबाद स्तंभ लेख में वर्मन शासकों का उल्लेख एक सीमावर्ती राज्य के रूप में मिलता है जिसने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की थी। इस वंश के अंतिम महान राजा भास्करवर्मन सम्राट हर्षवर्धन के घनिष्ठ मित्र थे जिन्होंने कन्नौज की धर्म सभा में भी भाग लिया था। वर्मन शासकों ने गुप्तों की प्रशासनिक व्यवस्था को अपनाया और क्षेत्र में संस्कृत संस्कृति का प्रसार किया। यह राजवंश पूर्वोत्तर भारत के राजनीतिक एकीकरण और उसे मुख्यधारा की राजनीति से जोड़ने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कड़ी था।

248. (A) गंगा नदी तक का विजयी अभियान
चोल सम्राट राजेंद्र प्रथम ने उत्तर भारत की ओर एक असाधारण सैन्य अभियान चलाया था जिसमें उनकी सेनाओं ने गंगा नदी के तट तक पहुँचकर वहाँ के राजाओं को पराजित किया था। इस गौरवशाली विजय की स्मृति में उन्होंने 'गंगेयकोंडचोलपुरम' नामक एक नई और भव्य राजधानी की स्थापना की। उन्होंने यहाँ एक विशाल शिव मंदिर और 'चोलगंगम' नामक एक विशाल जलाशय का निर्माण कराया जिसमें गंगा का पवित्र जल मिलाया गया था। यह नगर चोलों की अजेय सैन्य शक्ति और दक्षिण भारत की उत्तर भारत पर प्राप्त प्रतीकात्मक श्रेष्ठता का एक चिरस्थायी ऐतिहासिक स्मारक बना रहा जो उनकी साम्राज्यवादी शक्ति और धार्मिक निष्ठा का अद्भुत प्रतीक है।

249. (C) चोल
चोल राजवंश मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अपनी अत्यंत शक्तिशाली और संगठित नौसेना के लिए विश्व विख्यात था। राजराज प्रथम और उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम ने इस नौसैनिक श्रेष्ठता का उपयोग कर न केवल श्रीलंका को विजित किया, बल्कि दक्षिण-पूर्व एशिया के श्रीविजय साम्राज्य के प्रभुत्व को भी चुनौती दी। चोल नौसेना ने बंगाल की खाड़ी पर अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया और समुद्री व्यापार मार्गों को सुरक्षित बनाकर साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि में क्रांतिकारी योगदान दिया। चोलों की यह समुद्री शक्ति ही थी जिसने भारतीय संस्कृति और धर्म को समुद्र पार के देशों तक पहुँचाया और चोल साम्राज्य को एक अंतरराष्ट्रीय महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया।

250. (A) रामचंद्र
राजा रामचंद्र देवगिरि के यादव राजवंश के सबसे प्रसिद्ध और अंतिम शक्तिशाली शासकों में से एक थे जिन्होंने 13वीं शताब्दी के अंत में शासन किया था। उनके काल में ही दिल्ली सल्तनत के अलाउद्दीन खिलजी ने पहली बार दक्षिण भारत पर आक्रमण किया और देवगिरि की अपार संपदा को लूटा। रामचंद्र को खिलजी के साथ अपमानजनक संधि करनी पड़ी और कर देने के लिए विवश होना पड़ा। उनके शासन के बाद यादव साम्राज्य का धीरे-धीरे पतन हो गया और यह क्षेत्र दिल्ली सल्तनत के अधीन आ गया। राजा रामचंद्र का कार्यकाल दक्षिण भारतीय राज्यों के पतन और उत्तर भारतीय सल्तनत के विस्तार की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और युगांतरकारी ऐतिहासिक घटना है।

251. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
चोल साम्राज्य का प्रशासनिक विभाजन अत्यंत व्यवस्थित था। 'मंडलम्' सबसे बड़ा प्रशासनिक प्रभाग था जो एक प्रांत के समतुल्य था। मंडलम् को पुनः 'वलनाडु' में बांटा गया था और वलनाडु को 'नाडु' (जिलों) में विभाजित किया गया था। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई 'कुर्रम' थी जो कई गाँवों का एक समूह होती थी। यह पदानुक्रमित संरचना चोलों को अपने विशाल साम्राज्य पर प्रभावी नियंत्रण रखने और राजस्व संग्रह को सरल बनाने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती थी। यह व्यवस्था चोलों की उन्नत नौकरशाही और उनकी सूक्ष्म प्रशासनिक दूरदर्शिता का एक श्रेष्ठ प्रमाण प्रस्तुत करती है जिसने शासन को जन-सामान्य के निकट पहुँचाया था।

252. (B) महत्वपूर्ण स्थानीय स्वायत्तता के साथ एक विकेंद्रीकृत, सामंती संरचना
गुप्त प्रशासन की मुख्य विशेषता इसकी विकेंद्रीकृत और सामंती प्रकृति थी जो मौर्यों के केंद्रीकरण से काफी भिन्न थी। यद्यपि सम्राट सर्वोच्च था, किंतु शासन का संचालन प्रांतीय राज्यपालों और जिला अधिकारियों के माध्यम से होता था जिन्हें अपने क्षेत्रों में व्यापक स्वायत्तता प्राप्त थी। इसके अतिरिक्त, गुप्तों ने अधीनस्थ राजाओं को उनके आंतरिक प्रशासन में स्वतंत्रता दी थी जो केवल सम्राट को कर और सैन्य सहायता प्रदान करते थे। गाँवों और नगरों के प्रशासन में भी स्थानीय परिषदों का प्रभाव था। यह लचीला ढांचा ही था जिसने गुप्त साम्राज्य को स्थिरता प्रदान की और सांस्कृतिक विकास हेतु अनुकूल वातावरण तैयार किया जो युगांतरकारी था।

253. (C) प्रारंभ में शिव भक्त, तत्पश्चात महायान बौद्ध धर्म के प्रति गहरा झुकाव
सम्राट हर्षवर्धन की धार्मिक नीति उनकी व्यक्तिगत आस्था और राजकीय सहिष्णुता का सुंदर मिश्रण थी। अपने प्रारंभिक जीवन में वे भगवान शिव के अनन्य उपासक थे, जैसा कि उनके सिक्कों से स्पष्ट होता है। किंतु बाद में चीनी यात्री ह्वेनसांग के संपर्क में

आने पर वे महायान बौद्ध धर्म के सिद्धांतों से अत्यंत प्रभावित हुए और इसके संरक्षक बन गए। उन्होंने बुद्ध के सम्मान में कन्नौज में एक विशाल सभा का आयोजन किया। हालांकि, वे अंत तक अन्य धर्मों के प्रति भी उदार बने रहे और प्रयाग की सभाओं में वे शिव, सूर्य और बुद्ध तीनों की समान रुप से पूजा करते और दान देते थे जो उनकी व्यापक धार्मिक दृष्टि का प्रतीक था।

254. (D) वारंगल
काकतीय राजवंश ने मुख्य रूप से आधुनिक तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के क्षेत्रों पर शासन किया और उनकी ऐतिहासिक राजधानी वारंगल थी। वारंगल अपनी समृद्ध संस्कृति और भव्य किलों के लिए जाना जाता था। काकतीय शासकों ने यहाँ से एक शक्तिशाली साम्राज्य का संचालन किया और सिंचाई तथा कृषि विकास में अभूतपूर्व कार्य किए। रानी रुद्रमादेवी और उनके उत्तराधिकारियों ने वारंगल को कला और व्यापार का एक महान केंद्र बनाया। यद्यपि बाद में दिल्ली सल्तनत के आक्रमणों के कारण इस वैभवशाली राजधानी का पतन हो गया, किंतु वारंगल के किले के अवशेष आज भी काकतीयों के गौरव और उनकी समृद्ध विरासत की गवाही देते हैं जो तेलंगाना की सांस्कृतिक पहचान है।

255. (D) I, II और III
गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम का शासनकाल सांस्कृतिक उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध है। उन्होंने प्राचीन भारत के महान नालंदा महाविहार की स्थापना की थी जो बौद्ध शिक्षा का वैश्विक केंद्र रहा। कुमारगुप्त ने कलात्मक दृष्टि से अत्यंत श्रेष्ठ सिक्के जारी किए जिनमें उनके 'मयूर' प्रकार के सिक्के उनकी धार्मिक आस्था को दर्शाते हैं। उनके शासन के अंतिम वर्षों में साम्राज्य को पुष्यमित्रों के विद्रोह और बाहरी खतरों से गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा जिन्हें उनके पुत्र स्कंदगुप्त ने सफलतापूर्वक नियंत्रित किया। ये तीनों तथ्य कुमारगुप्त प्रथम के काल की समृद्धि, विद्या के प्रति अनुराग और उस समय उभरी राजनीतिक कठिनाइयों का एक सटीक ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करते हैं।

256. (B) व्यापार द्वारा पूरक कृषि अर्थव्यवस्था
पल्लव कालीन समाज और अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि थी, किंतु यह समुद्री व्यापार द्वारा मजबूती से पूरित थी। पल्लव शासकों ने कावेरी नदी के उपजाऊ क्षेत्रों में सिंचाई टैंकों के माध्यम से कृषि उत्पादन को बढ़ावा दिया जिससे राज्य की आय सुदृढ़ हुई। इसके साथ ही महाबलीपुरम जैसे बंदरगाहों के माध्यम से दक्षिण-पूर्व एशिया और श्रीलंका के साथ सक्रिय समुद्री व्यापार होता था। समाज में ब्राह्मणों और मंदिरों का महत्वपूर्ण प्रभाव था क्योंकि उन्हें भारी भूमि दान प्राप्त थे। यह आर्थिक ढांचा पल्लवों को उनकी भव्य मंदिर वास्तुकला और सैन्य व्यवस्था के रखरखाव हेतु आवश्यक संसाधन प्रदान करता था जिससे पल्लव संस्कृति का विकास हुआ।

257. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय ने अपनी संप्रभुता के प्रतीक के रूप में स्वर्ण सिक्के जारी किए थे जिन्हें 'वराह' कहा जाता था। 'वराह' वातापि के चालुक्यों का राजकीय चिन्ह था जो उनकी मुद्राओं और राजकीय मोहरों पर प्रमुखता से अंकित होता था। यह धार्मिक प्रतीक उनकी वैष्णव धर्म के प्रति निष्ठा और उनकी शाही सत्ता की रक्षा के संकल्प को दर्शाता था। इन सिक्कों के प्रचलन से यह भी स्पष्ट होता है कि चालुक्य काल में व्यापार उन्नत अवस्था में था और उनकी अर्थव्यवस्था काफी समृद्ध थी। दक्षिण भारत में 'वराह' शब्द बाद में स्वर्ण मुद्राओं हेतु एक सामान्य शब्द बन गया जो चालुक्यों के व्यापक आर्थिक प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

258. (A) दक्षिणी कर्नाटक
पश्चिमी गंग राजवंश ने मुख्य रूप से आधुनिक कर्नाटक के दक्षिणी भाग पर शासन किया था जिसे ऐतिहासिक रूप से 'गंगवाड़ी' कहा जाता था। यह क्षेत्र मुख्य रूप से कावेरी नदी की ऊपरी घाटी और मैसूर के आसपास के जिलों को कवर करता था। तलकाड़ उनकी प्रमुख राजधानी थी। गंगवाड़ी अपनी उपजाऊ भूमि और रणनीतिक स्थिति के कारण दक्षिण भारत की राजनीति में एक महत्वपूर्ण इकाई बनी रही। इस क्षेत्र में गंग शासकों ने जैन धर्म, कन्नड़ साहित्य और विशिष्ट वास्तुकला को अत्यधिक बढ़ावा दिया। गंगवाड़ी का यह भौगोलिक क्षेत्र आज भी अपनी प्राचीन विरासत और श्रवणबेलगोला जैसे महान तीर्थ स्थलों के कारण कर्नाटक के सांस्कृतिक इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखता है।

259. (C) इसने तीनों राज्यों के संसाधनों को क्षीण कर दिया, जिससे नई शक्तियों के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ।
चालुक्यों, पल्लवों और पांड्यों के बीच दक्षिणापथ में वर्चस्व के लिए हुए निरंतर युद्धों का सबसे गहरा परिणाम यह हुआ कि इससे तीनों ही महाशक्तियों की आर्थिक और सैन्य क्षमताएं धीरे-धीरे पूरी तरह समाप्त हो गईं। युद्धों के भारी खर्च और प्रशासनिक अस्थिरता ने उनकी केंद्रीय सत्ता को कमजोर कर दिया। इसी कमजोरी का लाभ उठाकर उनके ही अधीनस्थ शक्तियों ने स्वयं को स्वतंत्र करना शुरु कर दिया। इसके परिणामस्वरूप राष्ट्रकूटों और बाद में शाही चोलों जैसी नई और अधिक शक्तिशाली शक्तियों के उत्थान के लिए अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न हो गईं। अतः इन युद्धों ने दक्षिण भारत के पुराने राजनीतिक ढांचे को समाप्त कर एक नए साम्राज्यवादी युग की नींव रखी थी।

260. (D) गुजरात के सोलंकी
राजस्थान के माउंट आबू में स्थित विश्व प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मंदिरों का निर्माण मुख्य रूप से गुजरात के सोलंकी राजवंश के शासनकाल के दौरान हुआ था। इन मंदिरों का निर्माण सोलंकी राजाओं के मंत्रियों, जैसे विमल शाह और तेजपाल, द्वारा कराया गया था। ये मंदिर सफेद संगमरमर पर की गई अपनी अविश्वसनीय रुप से सूक्ष्म और जटिल नक्काशी के लिए पूरे विश्व में विख्यात हैं। सोलंकी काल की यह स्थापत्य कला जैन धर्म के प्रति उनके राजकीय सम्मान और उस युग के शिल्पकारों के असाधारण तकनीकी कौशल का एक उत्कृष्ट प्रमाण है। इन मंदिरों की भव्यता और शांति आज भी सोलंकी काल के सांस्कृतिक वैभव की जीवंत और गौरवशाली गवाह बनी हुई है जो अद्वितीय है।

261. (C) सेना का प्रधान सेनापति

गुप्त साम्राज्य के सैन्य ढांचे में 'महाबलाधिकृत' का पद सर्वोच्च सैन्य अधिकारी या पूरी सेना के प्रधान सेनापति को संदर्भित करता था। यह अधिकारी सम्राट के सीधे नियंत्रण में कार्य करता था और पैदल सेना, घुड़सवार सेना तथा अन्य सैन्य प्रभागों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए उत्तरदायी था। महाबलाधिकृत का मुख्य कार्य युद्ध की योजना बनाना और युद्ध क्षेत्र में सेना का नेतृत्व करना था। यह पद दर्शाता है कि गुप्त सम्राटों ने अपनी सीमाओं की रक्षा और साम्राज्य विस्तार के लिए एक अत्यंत अनुशासित और पेशेवर सैन्य नेतृत्व विकसित किया था। इस प्रभावी सैन्य संगठन के कारण ही गुप्त शासक विदेशी शक्तियों को पराजित करने में पूरी तरह सफल रहे थे।

262. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।

पल्लव राजा नरसिंहवर्मन प्रथम अपनी असाधारण वीरता के लिए प्रसिद्ध थे, जिसके कारण उन्हें 'ममल्ल' (महान योद्धा) की उपाधि दी गई थी। उन्होंने ही बंगाल की खाड़ी के तट पर एक भव्य बंदरगाह और कलात्मक नगर की स्थापना की थी। इस नगर को उनके सम्मान में 'ममल्लापुरम' के नाम से जाना गया, जो आज वैश्विक स्तर पर महाबलीपुरम के रूप में विख्यात है। यहाँ निर्मित रथ मंदिर और अन्य स्मारक नरसिंहवर्मन प्रथम की इसी 'ममल्ल' शैली की स्थापत्य कला के उत्कृष्ट और अद्वितीय उदाहरण माने जाते हैं। ये दोनों तथ्य पल्लव सम्राट के व्यक्तित्व और उनके द्वारा छोड़ी गई अमिट सांस्कृतिक एवं स्थापत्य विरासत को ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह स्पष्ट और प्रमाणित करते हैं।

263. (D) नालंदा

पाल राजवंश के सबसे प्रतापी और विद्या प्रेमी शासक धर्मपाल ने न केवल विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की, बल्कि उन्होंने प्राचीन नालंदा महाविहार को भी पतन से बचाने के लिए उसे पुनर्जीवित किया। उन्होंने नालंदा के रखरखाव और वहां के हजारों छात्रों एवं शिक्षकों के निशुल्क भोजन-आवास के लिए लगभग दो सौ गाँवों का राजस्व दान में दिया था। धर्मपाल के इस उदार संरक्षण के कारण नालंदा एक बार फिर बौद्ध शिक्षा और दर्शन का विश्व स्तरीय केंद्र बन गया। उनकी इस दूरदर्शी पहल ने भारतीय ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखने और बौद्ध धर्म के प्रसार को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई गति प्रदान करने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी।

264. (A) वेसर

होयसल मंदिर वास्तुकला को मुख्य रूप से 'वेसर' शैली का एक अत्यंत परिष्कृत और विकसित रूप माना जाता है। वेसर शैली नागर और द्रविड़ शैलियों का एक अनूठा सम्मिश्रण है। होयसल शिल्पकारों ने इस शैली में अपनी ओर से अनेक नवाचार जोड़े, जैसे क्लोरिटिक शिस्ट का उपयोग और तारा-नुमा मंदिर योजना। उनके मंदिरों में नागर शैली के शिखर और द्रविड़ शैली के विमानों का सामंजस्यपूर्ण मेल देखा जाता है। हलेबिडु और बेलूर के मंदिर इसी वेसर परंपरा की पराकाष्ठा हैं जहाँ स्थापत्य और मूर्तिकला के बीच का अंतर लगभग समाप्त हो जाता है। यह शैली होयसल साम्राज्य की अद्वितीय कलात्मक रचनात्मकता और सांस्कृतिक समन्वय का स्थायी प्रतीक है जो ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है।

265. (C) राजराज प्रथम

कन्नौज के नियंत्रण के लिए आठवीं और नौवीं शताब्दी के दौरान हुए प्रसिद्ध 'त्रिपक्षीय संघर्ष' में मुख्य रूप से तीन शक्तियाँ शामिल थीं: बंगाल के पाल, दक्कन के राष्ट्रकूट और मध्य भारत के गुर्जर-प्रतिहार। राजराज प्रथम इस संघर्ष का हिस्सा नहीं थे क्योंकि वे चोल राजवंश के शासक थे और उनका उत्थान 10वीं शताब्दी के अंत में हुआ था, जब त्रिपक्षीय संघर्ष लगभग समाप्त हो चुका था। चोलों की राजनीति मुख्य रूप से सुदूर दक्षिण और समुद्री विस्तार पर केंद्रित थी, न कि उत्तर भारत के कन्नौज पर। अतः राजराज प्रथम का नाम इस ऐतिहासिक संघर्ष के संदर्भ में पूरी तरह अप्रासंगिक और ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है जो उनके कालखंड से मेल नहीं खाता।

266. (A) वांग ह्वेन-त्से

समुद्रगुप्त के शासनकाल के दौरान भारत और श्रीलंका के बीच स्थापित मधुर राजनयिक संबंधों का उल्लेख मुख्य रूप से चीनी लेखक वांग ह्वेन-त्से के वृत्तांतों में मिलता है। उन्होंने विस्तार से बताया है कि कैसे श्रीलंकाई राजा मेघवर्ण ने समुद्रगुप्त के पास बहुमूल्य उपहारों के साथ अपना दूत भेजा था और बोधगया में श्रीलंकाई भिक्षुओं के लिए एक मठ बनाने की अनुमति प्राप्त की थी। यह विवरण उस समय के अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक संबंधों और गुप्त साम्राज्य के प्रभाव क्षेत्र की पुष्टि करता है। यद्यपि फाहियान और ह्वेनसांग भी महत्वपूर्ण चीनी यात्री थे, किंतु समुद्रगुप्त और श्रीलंका के बीच के इस विशिष्ट संदर्भ की जानकारी वांग ह्वेन-त्से द्वारा प्रस्तुत वृत्तांतों से ही सबसे प्रामाणिक रूप में प्राप्त होती है।

267. (D) ललितादित्य मुक्तापीड़

कश्मीर का कार्कोट राजवंश अपने सबसे महान शासक ललितादित्य मुक्तापीड़ के शासनकाल में अपनी शक्ति और वैभव के चरम शिखर पर पहुँचा। ललितादित्य एक अत्यंत पराक्रमी विजेता थे जिन्होंने कश्मीर की सीमाओं का विस्तार मध्य एशिया, पंजाब और कन्नौज तक कर दिया था। उन्होंने न केवल सैन्य विजयें प्राप्त कीं, बल्कि कश्मीर को स्थापत्य कला से भी समृद्ध किया। उनके द्वारा निर्मित मार्तंड सूर्य मंदिर उस काल की भव्यता और उनकी धार्मिक सहिष्णुता का जीवंत प्रमाण है। उनके शासनकाल में कश्मीर उत्तर भारत की एक प्रमुख और अपराजेय राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरा। ललितादित्य की उपलब्धियों ने उन्हें कश्मीर के इतिहास का सबसे यशस्वी सम्राट बना दिया है जो उनकी सैन्य और कलात्मक प्रतिभा का प्रमाण है।

268. (B) बुद्ध का जीवन और जातक कथाएँ

अजंता की गुफाओं के विश्व प्रसिद्ध भित्ति चित्रों का मुख्य विषय भगवान बुद्ध का जीवन चरित्र और उनके पूर्व जन्मों से संबंधित 'जातक कथाएँ' हैं। इन चित्रों में बुद्ध के जन्म, त्याग, ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण की घटनाओं को अत्यंत सुंदरता और बारीकी से चित्रित किया गया है। चित्रकारों ने जातक कथाओं के माध्यम से करुणा और अहिंसा जैसे मानवीय मूल्यों को

सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। यद्यपि इन चित्रों में उस समय के दरबारी जीवन और सामाजिक परिवेश की भी झलक मिलती है, किंतु उनका मूल आधार पूरी तरह आध्यात्मिक और बौद्ध दर्शन से प्रेरित है। अजंता की यह चित्रकला भारतीय शास्त्रीय कला की श्रेष्ठता और उसकी आध्यात्मिक गहराई का एक अद्वितीय वैश्विक प्रमाण है।

269. (C) तैलप II
10वीं शताब्दी के अंत में राष्ट्रकूट राजवंश के वर्चस्व को कल्याणी के परवर्ती पश्चिमी चालुक्य राजवंश के संस्थापक तैलप द्वितीय ने समाप्त कर दिया था। तैलप द्वितीय ने 973 ईस्वी में अंतिम राष्ट्रकूट राजा कर्क द्वितीय को एक भीषण युद्ध में पराजित किया और मान्यखेत पर अपना पूर्ण अधिकार कर लिया। इस विजय के साथ ही उन्होंने दक्कन में पुनः चालुक्य शक्ति की स्थापना की और कल्याणी को अपनी नई राजधानी बनाया। यह सत्ता परिवर्तन दक्कन के राजनीतिक इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी जिसने दो शताब्दियों पुराने राष्ट्रकूट शासन का अंत किया और चालुक्यों की गौरवशाली परंपरा को एक नए और शक्तिशाली रूप में पुनर्जीवित कर क्षेत्र में पुनः प्रतिष्ठित किया जो युगांतरकारी था।

270. (D) I, II और III
चोल राजवंश की नौसेना मध्यकालीन विश्व की सबसे आधुनिक समुद्री शक्तियों में से एक थी जिसने हिंद महासागर के व्यापारिक मार्गों पर अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित किया था। राजराज प्रथम और उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम ने इस नौसैनिक शक्ति का सफलतापूर्वक उपयोग कर श्रीलंका, मालदीव और दक्षिण-पूर्व एशिया के श्रीविजय साम्राज्य के कई क्षेत्रों को विजित किया। इस नौसेना ने न केवल साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया, बल्कि सुदूर देशों के साथ व्यापार और भारतीय संस्कृति के प्रसार को भी अभूतपूर्व रूप से सुगम बनाया। चोलों की यह समुद्री श्रेष्ठता ही थी जिसने उन्हें एक अंतरराष्ट्रीय महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया और दक्षिण-पूर्व एशिया के इतिहास को गहराई से प्रभावित और पूरी तरह परिवर्तित किया था।

271. (A) नंदीवर्मन द्वितीय
कांचीपुरम में स्थित प्रसिद्ध 'वैकुंठ पेरुमल मंदिर' का निर्माण पल्लव सम्राट नंदीवर्मन द्वितीय द्वारा 8वीं शताब्दी के मध्य में कराया गया था। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है और पल्लव वास्तुकला की बाद की 'नंदीवर्मन शैली' का एक उत्कृष्ट और परिपक्व उदाहरण माना जाता है। इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता इसकी दीवारों पर बनी ऐतिहासिक पट्टिकाएं हैं जो पल्लव राजवंश के इतिहास, विशेष रूप से नंदीवर्मन द्वितीय के राज्यारोहण और उनके संघर्षों का विस्तृत और सजीव चित्रण करती हैं। यह मंदिर न केवल एक पवित्र धार्मिक स्थल है, बल्कि पल्लव कालीन इतिहास और मूर्तिकला को समझने के लिए एक अत्यंत मूल्यवान ऐतिहासिक दस्तावेज की भूमिका भी निभाता है जो पल्लव कला की श्रेष्ठता को दर्शाता है।

272. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गुप्त काल को संस्कृत साहित्य का 'शास्त्रीय युग' कहना पूरी तरह न्यायसंगत है क्योंकि इसी काल में संस्कृत भाषा ने अपने परिष्कार की उच्चतम सीमाओं को छुआ। महाकवि कालिदास ने अपने अमर काव्यों की रचना की, विशाखदत्त ने 'मुद्राराक्षस' जैसा राजनीतिक नाटक लिखा और शूद्रक ने 'मृच्छकटिकम्' के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत किया। गुप्त सम्राटों के उदार संरक्षण और शांतिपूर्ण वातावरण ने इन विद्वानों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा दिखाने का अनुकूल अवसर प्रदान किया। इसी बौद्धिक क्रांति के परिणामस्वरूप प्राचीन भारत की साहित्यिक धरोहर इतनी समृद्ध और महान हो सकी कि वह आज भी विश्व साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है जो गौरवशाली है।

273. (B) कामरूप
'प्राग्ज्योतिषपुर' प्राचीन भारत में कामरूप क्षेत्र की राजधानी और प्रमुख नगर का नाम था, और वहां के शासक स्वयं को गर्व से 'प्राग्ज्योतिषपुर-अधिपति' की उपाधि से संबोधित करते थे। कामरूप के वर्मन राजवंश के शासकों, जैसे भास्करवर्मन, के लिए इस उपाधि का प्रयोग विशेष रूप से किया गया है। प्राग्ज्योतिषपुर अपनी भौगोलिक स्थिति और ज्योतिष शास्त्र के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था। यह उपाधि उस क्षेत्र की स्वायत्तता और उसकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को रेखांकित करती है। भास्करवर्मन और हर्षवर्धन की मित्रता के दौरान इस पदवी का उल्लेख तत्कालीन अभिलेखों और चीनी वृत्तांतों में प्रमुखता से मिलता है जो कामरूप की राजनीतिक महत्ता और उसके ऐतिहासिक गौरव को प्रमाणित करता है।

274. (A) सृष्टि, स्थिति और संहार का नृत्य
चोल काल की सुप्रसिद्ध नटराज की कांस्य प्रतिमा भगवान शिव को 'आनंद तांडव' मुद्रा में नृत्य करते हुए दर्शाती है जो ब्रह्मांड की पांच महत्वपूर्ण गतिविधियों: सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव और अनुग्रह का प्रतीक है। इस प्रतिमा में शिव का एक हाथ अभय मुद्रा में है जो सुरक्षा का आश्वासन देता है, जबकि दूसरा हाथ अग्नि धारण किए हुए है जो विनाश का प्रतीक है। उनके पैरों के नीचे कुचला गया असुर अज्ञानता के अंत को दर्शाता है। यह कलाकृति न केवल चोल शिल्पकारों के असाधारण तकनीकी कौशल को प्रदर्शित करती है, बल्कि यह हिंदू दर्शन की उस सूक्ष्मता को भी सजीव करती है जिसमें जीवन और मृत्यु के चक्र को एक नृत्य के रूप में देखा गया है।

275. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
प्राचीन दक्षिण भारतीय राजवंशों के राजकीय प्रतीक उनकी विशिष्ट पहचान और धार्मिक मान्यताओं को दर्शाते थे। चोलों का राजकीय चिन्ह 'व्याघ्र' था जो उनकी शक्ति का प्रतीक था। पल्लवों ने 'नंदी' को अपना प्रतीक बनाया जो शैव धर्म के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा को प्रदर्शित करता था। चालुक्यों का चिन्ह 'वराह' था जो उनकी रक्षा करने की क्षमता का सूचक था। पांड्य राजवंश ने 'मछली' को अपना प्रतीक चिन्ह चुना जो उनके समुद्री प्रभाव और तटीय क्षेत्रों पर नियंत्रण को दर्शाता था। यह सुमेल इन राजवंशों की गौरवशाली परंपराओं और उनके द्वारा अपनाए गए उन वीर प्रतीकों को स्पष्ट रूप से उजागर करता है जो उनकी मोहरों और ध्वजों की शोभा बढ़ाते थे और उनकी ऐतिहासिक गरिमा के परिचायक थे।

सुखी थे, दंड विधान काफी उदार था और मध्य देश में बौद्ध धर्म काफी फल-फूल रहा था। यद्यपि फाहियान ने सीधे तौर पर सम्राट के नाम का उल्लेख नहीं किया है, किंतु उनके द्वारा वर्णित परिस्थितियां और कालखंड स्पष्ट रूप से चंद्रगुप्त द्वितीय के गौरवशाली और शांतिपूर्ण शासनकाल की ही ऐतिहासिक रूप से पुष्टि करते हैं जो उस युग की समृद्धि का परिचायक है।

290. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
चोल काल के दौरान स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था अपनी परिपक्वता के चरम पर थी, जहाँ विशेष रूप से ब्राह्मण बस्तियों की 'सभा' को अपने आंतरिक प्रशासनिक कार्यों में अभूतपूर्व स्वायत्तता प्राप्त थी। उत्तरमेरुर से प्राप्त दो महत्वपूर्ण शिलालेख इस बात का विस्तृत और अकाट्य प्रमाण प्रदान करते हैं कि इन सभाओं के सदस्यों का चयन कैसे निष्पक्ष लाटरी पद्धति से किया जाता था। ये सभाएं कर संग्रह, न्याय, सिंचाई और मंदिरों के प्रबंधन के लिए पूरी तरह उत्तरदायी थीं। राज्य का हस्तक्षेप इनमें न्यूनतम होता था। अतः यह स्पष्ट है कि चोलों ने एक ऐसा विकेंद्रीकृत मॉडल विकसित किया था जिसने लोकतांत्रिक मूल्यों को ग्रामीण स्तर पर गहराई से स्थापित किया। यह व्यवस्था चोल साम्राज्य की स्थिरता और उनकी प्रशासनिक दूरदर्शिता का एक मुख्य आधार बनी।

291. (C) चालुक्यों की राजधानी को विनष्ट करने के पश्चात नरसिंहवर्मन प्रथम द्वारा
पल्लव सम्राट नरसिंहवर्मन प्रथम ने 642 ईस्वी में चालुक्य राजधानी वातापि पर एक अत्यंत भीषण और निर्णायक आक्रमण किया था। उन्होंने चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय को युद्ध में पराजित किया और उनकी राजधानी वातापि को पूरी तरह जीतकर उसे विनष्ट कर दिया। इस महान और ऐतिहासिक सैन्य उपलब्धि की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए नरसिंहवर्मन प्रथम ने 'वातापिंड' की गरिमामयी उपाधि धारण की थी। यह जीत पल्लव सैन्य इतिहास का सबसे सुनहरा अध्याय मानी जाती है क्योंकि इसने उनके पिता की पुरानी हार का बदला लिया और दक्कन की राजनीति में पल्लवों की अपराजेयता को दृढ़ता से स्थापित कर दिया। इस उपाधि के साथ ही नरसिंहवर्मन प्रथम का नाम भारतीय इतिहास में एक महान विजेता और रक्षक के रूप में हमेशा के लिए सम्मानपूर्वक दर्ज हो गया जो गौरवशाली है।

292. (D) कश्मीर का उत्पल राजवंश
रानी दिद्दा कश्मीर के इतिहास की एक अत्यंत प्रभावशाली और चतुर महिला शासिका थीं जिन्होंने 10वीं शताब्दी के अंत में शासन किया था। वे मूल रूप से लोहार वंश की राजकुमारी थीं, किंतु उनका विवाह उत्पल राजवंश के राजा क्षेमगुप्त के साथ हुआ था। अपने पति की मृत्यु के पश्चात उन्होंने पहले अपने पुत्रों की संरक्षिका के रूप में और बाद में स्वयं स्वतंत्र रूप से कश्मीर की सत्ता संभाली। रानी दिद्दा अपनी कूटनीतिक बुद्धिमत्ता और विद्रोहों को कठोरता से दबाने की क्षमता के लिए जानी जाती थीं। यद्यपि उनका व्यक्तिगत चरित्र जटिल था, किंतु उन्होंने कश्मीर को एक लंबे समय तक राजनीतिक स्थिरता प्रदान की। उनके शासन के अंत के साथ ही कश्मीर में उत्पल वंश की सत्ता औपचारिक रूप से समाप्त हुई और लोहार राजवंश का उदय हुआ जो उनके दत्तक पुत्र के माध्यम से सत्ता में आया था।

293. (C) रोमन साम्राज्य
गुप्त काल के अंतिम चरणों में भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदूर पश्चिमी देशों, विशेष रूप से 'रोमन साम्राज्य' के साथ होने वाले लाभदायक अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भारी गिरावट का सामना करना पड़ा। इस गिरावट का मुख्य कारण रोमन साम्राज्य का आंतरिक विघटन और वहां की आर्थिक अस्थिरता थी। इससे पहले भारत से रेशम, मसालों और काली मिर्च का भारी निर्यात होता था जिसके बदले में भारत को बड़ी मात्रा में स्वर्ण प्राप्त होता था। इस व्यापारिक कमी ने गुप्तों के शाही खजाने और सोने के सिक्कों की शुद्धता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। हालांकि, इस घाटे की कुछ हद तक भरपाई दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन के साथ बढ़ते नए व्यापारिक संपर्कों से हुई, किंतु पश्चिमी मार्ग की उस पुरानी समृद्धि की कमी को पूरी तरह नहीं भरा जा सका। यह परिवर्तन गुप्तोत्तर काल में आर्थिक सामंतीकरण की ओर झुकाव का एक प्रमुख कारण भी बना जो महत्वपूर्ण है।

294. (B) कश्मीर
लोहार राजवंश कश्मीर के मध्यकालीन इतिहास का अंतिम प्रमुख और शक्तिशाली हिंदू राजवंश था जिसने कश्मीर घाटी पर शासन किया। इस वंश की स्थापना संग्रामराज ने 1003 ईस्वी में की थी, जो रानी दिद्दा के उत्तराधिकारी बने थे। लोहार राजवंश के शासनकाल में कश्मीर ने कई भयानक विदेशी आक्रमणों, विशेष रूप से महमूद गजनवी के हमलों का अत्यंत वीरतापूर्वक और सफलतापूर्वक मुकाबला किया। कल्हण की प्रसिद्ध कृति 'राजतरंगिणी' में इस राजवंश के राजनीतिक उतार-चढ़ाव, सामाजिक संघर्षों और प्रशासनिक सुधारों का अत्यंत विस्तृत और जीवंत ऐतिहासिक विवरण मिलता है। यद्यपि बाद के वर्षों में आंतरिक कलह और कमजोर उत्तराधिकारियों के कारण इस वंश की शक्ति क्षीण हो गई, फिर भी लोहार शासकों ने कश्मीर की सांस्कृतिक और धार्मिक अखंडता को कई शताब्दियों तक अक्षुण्ण बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी।

295. (D) बंगाल का सेन राजवंश
'दक्षिणापथ' शब्द का प्रयोग ऐतिहासिक रूप से विंध्य पर्वतमाला और नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित भारतीय प्रायद्वीप के भौगोलिक क्षेत्रों के लिए किया जाता था। देवगिरि के यादव, द्वारसमुद्र के होयसल और वारंगल के काकतीय सभी दक्षिणापथ के प्रमुख और गौरवशाली राजवंश थे जिन्होंने मध्यकाल के दौरान दक्कन और सुदूर दक्षिण में अपनी शक्ति स्थापित की थी। इसके विपरीत, सेन राजवंश पूर्वी भारत के बंगाल क्षेत्र से संबंधित था, जो भौगोलिक और राजनीतिक रूप से उत्तरी भारत का हिस्सा माना जाता था। यद्यपि सेन शासकों के पूर्वज कर्नाटक से आए थे, किंतु उनका साम्राज्य और शासन पूरी तरह से बंगाल की सीमाओं तक ही सीमित था। अतः वे दक्षिणापथ के राजवंशों की श्रेणी में नहीं आते। यह अंतर उस काल के क्षेत्रीय राजनीतिक भूगोल और राजवंशों के प्रभाव

थी। इस धार्मिक सद्भाव ने चोल कालीन संस्कृति को एक नई गहराई और भव्यता प्रदान की थी।

283. (D) कर्नाटक क्षेत्र
कदंब राजवंश प्राचीन कर्नाटक क्षेत्र का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरवशाली ब्राह्मण राजवंश था जिसने चौथी शताब्दी ईस्वी में पल्लवों की सत्ता को चुनौती देते हुए अपनी स्वतंत्र शक्ति स्थापित की थी। इस वंश की स्थापना मयूरशर्मन ने की थी और उन्होंने बनवासी को अपनी राजधानी बनाया। कदंबों को कर्नाटक का पहला स्वदेशी साम्राज्य माना जाता है क्योंकि उन्होंने स्थानीय कन्नड़ भाषा और संस्कृति को राजकीय संरक्षण प्रदान किया। उनके शासनकाल में कर्नाटक ने राजनीतिक स्थिरता और वैदिक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की। कदंबों द्वारा विकसित की गई प्रारंभिक स्थापत्य शैली ने बाद में आने वाले चालुक्य और होयसल साम्राज्यों के भव्य मंदिर निर्माण के लिए एक सुदृढ़ आधार तैयार किया जो आज भी कर्नाटक की ऐतिहासिक पहचान का एक अमूल्य हिस्सा है।

284. (B) पंजाब, कन्नौज, बंगाल और उड़ीसा
सम्राट हर्षवर्धन ने सातवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में उत्तर भारत में एक विशाल और संगठित साम्राज्य स्थापित किया था, जिसमें पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और उड़ीसा के कुछ महत्वपूर्ण हिस्से शामिल थे। उनकी राजनीतिक सत्ता का मुख्य केंद्र कन्नौज था जहाँ से वे पूरे आर्यावर्त की राजनीति को नियंत्रित करते थे। हर्ष ने पूर्वी भारत के राजाओं को पराजित कर और पश्चिमी भारत के राज्यों के साथ गठबंधन कर अपनी धाक जमाई थी। यद्यपि नर्मदा के दक्षिण में चालुक्यों ने उनके विस्तार को रोक दिया था, किंतु उत्तर भारत का एक बड़ा हिस्सा उनके प्रभावी प्रशासनिक नियंत्रण में था। हर्ष का यह साम्राज्य उत्तर भारत के राजनीतिक एकीकरण का अंतिम महान प्रयास माना जाता है जिसने क्षेत्र में शांति, शिक्षा और सांस्कृतिक उन्नति का एक नया युग निर्मित किया था।

285. (C) एक वक्राकार शिखर
दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला की 'द्रविड़ शैली' की मुख्य विशेषताओं में भव्य गोपुरम, विशाल स्तंभों वाले मंडप और गर्भगृह के ऊपर बनी पिरामिडनुमा बहुमंजिला मीनार शामिल है जिसे 'विमान' कहा जाता है। इसके विपरीत, 'वक्राकार शिखर' उत्तर भारतीय नागर शैली की एक अत्यंत विशिष्ट पहचान है, न कि द्रविड़ शैली की। द्रविड़ मंदिरों में शिखर का स्वरूप सीधा और सीढ़ीनुमा होता है जो अंत में एक गुंबद जैसी संरचना पर समाप्त होता है। इसके अलावा, द्रविड़ मंदिरों के परिसर में अक्सर एक बड़ा जल कुंड भी होता है जो उनकी धार्मिक और सामाजिक उपयोगिता को दर्शाता है। अतः वक्राकार शिखर का उल्लेख द्रविड़ शैली के संदर्भ में करना ऐतिहासिक और स्थापत्य कला के नियमों की दृष्टि से पूरी तरह गलत और भ्रामक है जो शैलियों के अंतर को स्पष्ट करता है।

286. (A) केवल I और II
गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त एक असाधारण सैन्य प्रतिभा के धनी थे, जिनकी निरंतर विजयों के कारण इतिहासकार विन्सेंट स्मिथ ने उन्हें 'भारत का नेपोलियन' कहा है। वे केवल एक महान योद्धा ही नहीं थे, बल्कि कला और संगीत के भी अनन्य प्रेमी थे, जिसका प्रमाण उनके वीणा वादन प्रकार के सिक्कों और उनकी 'कविराज' की उपाधि से मिलता है। हालांकि, यह कहना गलत है कि उन्होंने दक्षिणी राज्यों के पूर्ण विलय की नीति अपनाई थी; वास्तव में उन्होंने वहां के राजाओं को पराजित कर उन्हें पुनः स्वतंत्र कर अपनी अधीनता में रखा था, जिसे 'ग्रहण-मोक्ष-अनुग्रह' की नीति कहा जाता है। यह कूटनीतिक दृष्टिकोण उनकी प्रशासनिक बुद्धिमत्ता को दर्शाता है क्योंकि वे जानते थे कि सुदूर दक्षिण पर सीधा नियंत्रण रखना उस समय कठिन होगा। अतः उनकी नीतियां सैन्य बल और व्यावहारिक कूटनीति का मेल थीं।

287. (A) धर्मपाल और वत्सराज
राष्ट्रकूट सम्राट ध्रुव धारावर्ष ने 8वीं शताब्दी के अंत में उत्तर भारत की राजनीति में अत्यंत प्रभावशाली हस्तक्षेप किया और 'त्रिपक्षीय संघर्ष' के दौरान दो प्रमुख समकालीन शासकों को पराजित किया। उन्होंने बंगाल के पाल राजा धर्मपाल और गुर्जर-प्रतिहार शासक वत्सराज दोनों को गंगा के मैदानों में हुई सैन्य भिड़ंत में करारी शिकस्त दी थी। ध्रुव के इस सफल उत्तरी अभियान ने राष्ट्रकूटों को विंध्य के पार एक अजेय महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। इस विजय के परिणामस्वरूप राष्ट्रकूटों ने न केवल अपनी सैन्य श्रेष्ठता सिद्ध की बल्कि कन्नौज के भाग्य का फैसला करने में भी अपनी निर्णायक भूमिका स्थापित की। ध्रुव के ये युद्ध कौशल और उनकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाएं राष्ट्रकूटों के इतिहास में उत्तर भारत पर उनके अल्पकालिक प्रभुत्व के स्वर्ण युग का प्रतिनिधित्व करती हैं।

288. (B) होयसल
कर्नाटक के बेलूर में स्थित सुप्रसिद्ध चेन्नाकेशव मंदिर 'होयसल स्थापत्य शैली' का एक अत्यंत भव्य और बेजोड़ उदाहरण है। इसका निर्माण 12वीं शताब्दी में महान होयसल राजा विष्णुवर्धन द्वारा अपनी सैन्य सफलताओं और वैष्णव धर्म के प्रति अपनी अटूट आस्था की स्मृति में कराया गया था। यह मंदिर अपनी अत्यंत सूक्ष्म और विस्मयकारी नक्काशी के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है, जहाँ पत्थर के हर इंच पर देवताओं और नर्तकियों को आभूषणों जैसी बारीकी से उकेरा गया है। होयसल शिल्पकारों ने नरम सोपस्टोन का उपयोग कर जिस कलात्मक ऊँचाई को यहाँ प्राप्त किया है, वह अद्वितीय है। यह मंदिर न केवल एक पवित्र तीर्थ स्थल है, बल्कि यह होयसल साम्राज्य के वैभव, उनकी धार्मिक निष्ठा और मध्यकालीन भारतीय कला की चरम परिपक्वता का एक शानदार ऐतिहासिक गौरव है जो सदैव आकर्षित करता है।

289. (B) चंद्रगुप्त द्वितीय
प्रसिद्ध चीनी बौद्ध भिक्षु और यात्री फाहियान ने पांचवीं शताब्दी के प्रारंभ में गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत की लंबी यात्रा की थी। फाहियान का मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म के पवित्र ग्रंथों का संग्रह करना और बुद्ध से संबंधित तीर्थ स्थलों के दर्शन करना था। उन्होंने अपने यात्रा वृत्तांत में तत्कालीन भारत के सामाजिक और आर्थिक जीवन का अत्यंत सकारात्मक चित्रण किया है। उनके अनुसार लोग समृद्ध और

अध्याय 05
मध्य कालीन भारतीय इतिहास

1. मध्यकालीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में 'जज़िया' शब्द का क्या अर्थ है?
   (A) आयातित वस्तुओं पर लगाया गया व्यापार शुल्क।
   (B) सुरक्षा के बदले गैर-मुस्लिमों पर लगाया गया कर।
   (C) विजित क्षेत्रों से एकत्र किया गया सैन्य उपकर।
   (D) धार्मिक स्थलों के निर्माण के लिए अनिवार्य दान।

2. 'मनसब' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: यह मुगलों द्वारा शुरू की गई एक सैन्य पद और पारिश्रमिक प्रणाली थी।
   कथन II: पद से धारक का वेतन और उसके द्वारा रखे जाने वाले सशस्त्र अनुचरों की संख्या निर्धारित होती थी।
   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (A) केवल कथन I
   (B) केवल कथन II
   (C) कथन I और कथन II दोनों
   (D) न तो कथन I और न ही कथन II

3. सल्तनत काल के दौरान 'इक्ता' के बारे में गलत कथन की पहचान कीजिए।
   (A) यह वेतन के बदले भूमि राजस्व अनुदान की एक प्रणाली थी।
   (B) इक्ता के धारक को इक्तादार या मुक्ती कहा जाता था।
   (C) इक्ता अपनी शुरुआत से ही एक वंशानुगत अधिकार था।
   (D) इक्तादार अपने क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए उत्तरदायी था।

4. अकबर द्वारा प्रतिपादित 'सुलह-ए-कुल' की अवधारणा का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
   (A) गैर-मुस्लिमों के प्रति धार्मिक असहिष्णुता की नीति।
   (B) इस्लाम और हिंदू धर्म के तत्वों को जोड़ने वाला एक नया समन्वयात्मक धर्म।
   (C) दक्षिणी राज्यों को जीतने के लिए एक सैन्य रणनीति।
   (D) सभी धर्मों के बीच सार्वभौमिक शांति और सहिष्णुता का सिद्धांत।

5. मध्यकालीन भारत में 'हुंडी' शब्द का तात्पर्य था:
   (A) विधिक और नागरिक मामलों के संबंध में जारी एक शाही फरमान।
   (B) कृषि योग्य भूमि क्षेत्रों को मापने के लिए एक विशिष्ट इकाई।
   (C) विनिमय पत्र के रूप में उपयोग किया जाने वाला एक वित्तीय साधन।
   (D) शहरी समुदाय के शिल्पकारों से एकत्र किया जाने वाला एक प्रकार का कर।

6. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
   (A) चौथ - मराठों द्वारा लगाया गया एक कर
   (B) अमरम - सल्तनत में कृषि उपज पर एक कर
   (C) जागीर - सैन्य सेवा के लिए भूमि अनुदान
   (D) देशमुख - एक वंशानुगत ग्रामीण अधिकारी

7. मध्यकालीन राजपूत समाज में 'जौहर' की प्रथा थी:
   (A) सैन्य विजय के बाद आयोजित एक उत्सव।
   (B) शाही उत्तराधिकार को चिह्नित करने वाला एक धार्मिक अनुष्ठान।
   (C) निर्दोषता सिद्ध करने के लिए एक पारंपरिक कठिन परीक्षा।
   (D) बंदी बनने से बचने के लिए सामूहिक आत्मदाह।

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
   अभिकथन (A): मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिंध पर अरबों का आक्रमण अंततः पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर स्थायी अरब शासन स्थापित करने में सफल रहा।
   कारण (R): कश्मीर के ललितादित्य और गुर्जर-प्रतिहारों जैसे शक्तिशाली भारतीय शासकों के प्रतिरोध ने सिंध से अरबों के पूर्व की ओर विस्तार को रोक दिया।
   (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) A सही है लेकिन R गलत है।
   (D) A गलत है लेकिन R सही है।

9. दक्षिण भारत के संदर्भ में, विशेष रूप से विजयनगर काल के दौरान 'पॉलीगार' (पालयक्कारर) क्या था?
   (A) मसालों के व्यापार में विशेषज्ञता रखने वाला एक विदेशी व्यापारी।
   (B) स्थानीय प्रशासन का प्रबंधन करने वाला एक मंदिर का पुजारी।
   (C) एक क्षेत्र का अधिकार रखने वाला अधीनस्थ सामंती सरदार।
   (D) आधिकारिक इतिहास लिखने का कार्य सौंपा गया एक दरबारी कवि।

क्षेत्रों को स्पष्ट रूप से ऐतिहासिक रूप से परिभाषित और प्रमाणित करता है।

296. (A) उज्जैन

गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपने विशाल साम्राज्य के प्रशासन को और अधिक प्रभावी बनाने और पश्चिमी भारत के नवनिर्जित शक क्षेत्रों पर कड़ी निगरानी रखने के लिए 'उज्जैन' को अपनी दूसरी राजधानी बनाया था। पाटलिपुत्र मुख्य राजधानी बनी रही, किंतु उज्जैन एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजनीतिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरा। उज्जैन की रणनीतिक स्थिति ने गुप्तों को अरब सागर के माध्यम से होने वाले अंतरराष्ट्रीय व्यापार को नियंत्रित करने और पश्चिमी तट के बंदरगाहों पर अपना प्रभुत्व बनाए रखने में सक्षम बनाया। इसके अतिरिक्त, उज्जैन विद्या और खगोल विज्ञान का भी महान केंद्र था जहाँ कालिदास जैसे विद्वानों ने अपनी रचनाएं कीं। दूसरी राजधानी के रूप में उज्जैन के चयन ने गुप्त साम्राज्य की प्रशासनिक पकड़ को मजबूत किया और इसे सांस्कृतिक रूप से और अधिक समृद्ध और विविधतापूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

297. (C) कर्नाटक

चालुक्य, राष्ट्रकूट, होयसल और यादव जैसे मध्यकालीन भारत के सर्वाधिक शक्तिशाली राजवंशों के शक्ति केंद्र मुख्य रूप से आधुनिक 'कर्नाटक' राज्य के भौगोलिक क्षेत्र में स्थित थे। बादामी के चालुक्यों ने बागलकोट जिले से अपनी शुरुआत की, राष्ट्रकूटों ने मान्यखेत से दक्कन पर शासन किया, और होयसलों ने द्वारसमुद्र को अपनी भव्य राजधानी बनाया। यादवों का प्रभाव क्षेत्र भी उत्तरी कर्नाटक के भागों में विस्तृत था। इन राजवंशों ने न केवल कर्नाटक की राजनीतिक सीमाओं को सुदृढ़ किया, बल्कि उन्होंने कन्नड़ भाषा, साहित्य और एक विशिष्ट स्थापत्य शैली को भी अभूतपूर्व राजकीय संरक्षण प्रदान किया। आज इन राजवंशों द्वारा बनवाए गए भव्य मंदिर और स्मारक कर्नाटक की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के सबसे महत्वपूर्ण और गौरवशाली स्तंभ माने जाते हैं जो पूरी दुनिया में भारतीय कला की श्रेष्ठता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

298. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।

दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला का विकास एक निरंतर और गौरवशाली प्रक्रिया रही है जिसमें पल्लवों ने सातवीं शताब्दी में रॉक-कट गुफा मंदिरों और एकाश्म रथों के निर्माण के साथ इस कला की ठोस नींव रखी थी। पल्लव ही वे प्रथम शिल्पकार थे जिन्होंने पत्थरों को तराश कर धार्मिक स्मारकों को एक स्थायी स्वरूप प्रदान किया। कालांतर में नौवीं से बारहवीं शताब्दी के दौरान चोल शासकों ने इस विरासत को आगे बढ़ाते हुए विशाल और भव्य संरचनात्मक मंदिरों का निर्माण किया, जिनमें तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर द्रविड़ शैली की पूर्णता और तकनीकी श्रेष्ठता का सर्वकालिक शिखर माना जाता है। ये दोनों राजवंश दक्षिण भारतीय स्थापत्य कला के क्रमिक उत्थान और उसके शास्त्रीय स्वरुप के परिपक्व होने की ऐतिहासिक कहानी को पूरी तरह स्पष्ट करते हैं। उनके संयुक्त योगदान ने ही दक्षिण भारत को मंदिरों की भूमि के रूप में वैश्विक पहचान दिलाई है जो आज भी विस्मित करती है।

299. (D) असम

प्राचीन भारतीय ग्रंथों और अभिलेखों में वर्णित 'प्राग्ज्योतिषपुर' आधुनिक 'असम' राज्य के कामरूप क्षेत्र का प्राचीन और गौरवशाली नाम है। यह नगर वर्मन राजवंश की समृद्ध राजधानी थी और इसे 'ज्योतिष शास्त्र का नगर' भी कहा जाता था। प्राग्ज्योतिषपुर का उल्लेख रामायण, महाभारत और गुप्त कालीन प्रयाग प्रशस्ति में प्रमुखता से मिलता है, जो इसकी प्राचीनता और ऐतिहासिक महत्ता को प्रमाणित करता है। कामरूप के वर्मन शासकों ने यहाँ से एक स्वतंत्र और शक्तिशाली राज्य का संचालन किया जिसने उत्तर-पूर्वी भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज का गुवाहाटी शहर इसी प्राचीन प्राग्ज्योतिषपुर के स्थान पर बसा हुआ माना जाता है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही तंत्र, ज्योतिष और भारतीय संस्कृति के पूर्वोत्तर विस्तार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र बना रहा है जो असम की पहचान है और ऐतिहासिक गरिमा को सजीव करता है।

300. (B) महमूद गजनवी

गुजरात के सोलंकी शासक भीम प्रथम के शासनकाल के दौरान 1025 ईस्वी में महमूद गजनवी ने प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया था। इस हमले के समय भीम प्रथम को अपनी राजधानी छोड़कर पलायन करना पड़ा था क्योंकि गजनवी की सेना बहुत शक्तिशाली थी। गजनवी के प्रस्थान के पश्चात उन्होंने मंदिर के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उसे पाषाण से भव्य स्वरुप प्रदान किया। यह घटना उस काल के भयानक विदेशी आक्रमणों और भारतीय शासकों द्वारा किए गए सांस्कृतिक पुनर्स्थापना के संकल्प एवं प्रयासों का एक प्रमुख ऐतिहासिक उदाहरण मानी जाती है। भीम प्रथम की इस दृढ़ता ने सोलंकी राजवंश के सम्मान को पुनः स्थापित किया और सोमनाथ मंदिर को उसके प्राचीन गौरव के साथ फिर से समाज के सामने प्रस्तुत किया जो उनकी अटूट धार्मिक निष्ठा और साहस का प्रमाण है।

276. (D) उपन्यास
सम्राट हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा रचित 'कादंबरी' को विश्व के प्रारंभिक और सर्वश्रेष्ठ 'उपन्यास' के रूप में मान्यता प्राप्त है। संस्कृत गद्य की इस कालजयी कृति में प्रेम, पुनर्जन्म और मानवीय भावनाओं का अत्यंत सूक्ष्म वर्णन किया गया है। इसकी कथावस्तु अत्यंत जटिल और आकर्षक है जो पाठकों को कल्पना की एक नई दुनिया में ले जाती है। बाणभट्ट की लेखन शैली इतनी प्रभावशाली थी कि 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' की कहावत प्रचलित हो गई। यद्यपि बाणभट्ट इसे पूरा नहीं कर सके थे और उनके पुत्र भूषणभट्ट ने इसे समाप्त किया, फिर भी 'कादंबरी' अपनी भाषाई सुंदरता और कल्पनाशीलता के कारण विश्व साहित्य की एक अद्वितीय धरोहर मानी जाती है जो उस युग के साहित्यिक वैभव का प्रमाण है।

277. (C) कृष्णा और गोदावरी
वेंगी के चालुक्यों ने मुख्य रूप से कृष्णा और गोदावरी नदियों के बीच स्थित अत्यंत उपजाऊ डेल्टा क्षेत्र पर अपना शासन स्थापित किया था। यह क्षेत्र, जिसे 'वेंगी' कहा जाता था, अपनी कृषि उत्पादकता और व्यापारिक महत्व के कारण दक्षिण-पूर्वी भारत की राजनीति का मुख्य केंद्र बना रहा। इस साम्राज्य की स्थापना पुलकेशिन द्वितीय के भाई कुब्ज विष्णुवर्धन ने की थी। इन दो महान नदियों के जल संसाधनों ने न केवल वेंगी को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाया, बल्कि इसकी रणनीतिक स्थिति ने इसे दक्षिण के चोलों और उत्तर-पश्चिम के राष्ट्रकूटों के बीच एक महत्वपूर्ण बफर राज्य के रूप में भी प्रतिष्ठित किया। वेंगी के चालुक्यों ने यहीं से अपनी विशिष्ट तेलुगु संस्कृति और स्थापत्य कला का विकास किया जो शताब्दियों तक फली-फूली।

278. (B) दानसागर और अद्भुतसागर
बंगाल के सेन राजवंश के राजा बल्लाल सेन एक अत्यंत विद्वान शासक और लेखक थे जिन्हें 'दानसागर' और 'अद्भुतसागर' जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना करने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने 'दानसागर' में धार्मिक दान और रीति-रिवाजों का विस्तृत वर्णन किया, जबकि 'अद्भुतसागर' खगोल विज्ञान पर आधारित एक ग्रंथ था जिसे वे पूरा नहीं कर सके थे और जिसे बाद में उनके पुत्र लक्ष्मण सेन ने पूर्ण किया। बल्लाल सेन ने बंगाल में 'कुलीनवाद' की प्रथा शुरू की और सामाजिक सुधारों पर बल दिया। उनके ये साहित्यिक कार्य न केवल उनकी व्यक्तिगत विद्वत्ता को दर्शाते हैं बल्कि वे सेन काल के दौरान बंगाल में हुए ब्राह्मणवादी सांस्कृतिक पुनरुत्थान और शिक्षा के प्रति अटूट राजकीय अनुराग के ऐतिहासिक प्रमाण भी हैं।

279. (D) आलवारों और नयनारों का भक्ति आंदोलन
पल्लव काल के दौरान दक्षिण भारत का सामाजिक और धार्मिक जीवन आलवार और नयनार संतों के नेतृत्व में फले-फूले 'भक्ति आंदोलन' से गहराई से प्रभावित था। इन संतों ने स्थानीय तमिल भाषा में ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण और प्रेम का संदेश फैलाया, जिससे धर्म केवल कर्मकांडों तक सीमित न रहकर आम जनता की भावनाओं से जुड़ गया। इस आंदोलन ने जातिगत बंधनों को शिथिल करने और समाज के सभी वर्गों को आध्यात्मिक मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पल्लव राजाओं ने इन संतों को राजकीय सम्मान दिया और उनके भजनों के आधार पर भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। इस भक्ति लहर ने दक्षिण भारतीय संस्कृति, साहित्य और संगीत को एक नई जीवंतता और स्थायी दिशा प्रदान की जो आज भी वहाँ के जनजीवन का आधार है।

280. (A) विष्णुगुप्त
शाही गुप्त राजवंश के अंतिम ज्ञात और मान्यता प्राप्त शासक विष्णुगुप्त थे जिन्होंने छठी शताब्दी के मध्य में मगध के आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया था। उनके समय तक महान गुप्त साम्राज्य की शक्ति अत्यंत क्षीण हो चुकी थी और वह केवल एक छोटे क्षेत्रीय राज्य के रूप में सिमट कर रह गया था। हूणों के निरंतर आक्रमणों, आंतरिक विद्रोहों और अधीनस्थ सामंतों की बढ़ती महत्वाकांक्षाओं ने साम्राज्य की नींव को पूरी तरह खोखला कर दिया था। विष्णुगुप्त के शासन के अंत के साथ ही उस गौरवशाली गुप्त युग का औपचारिक समापन हो गया जिसने सदियों तक भारत को राजनीतिक एकता और सांस्कृतिक ऊंचाइयों पर रखा था। उनके बाद उत्तर भारत में अनेक छोटी-छोटी शक्तियों का उदय हुआ जिससे राजनीतिक विकेंद्रीकरण का एक नया युग प्रारंभ हुआ।

281. (C) अमोघवर्ष प्रथम
महेंद्रवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन प्रथम और नरसिंहवर्मन द्वितीय पल्लव राजवंश के सर्वाधिक प्रतापी और प्रसिद्ध शासक थे जिन्होंने दक्षिण भारत में कला, साहित्य और सैन्य विजयों में अभूतपूर्व योगदान दिया। इसके विपरीत, अमोघवर्ष प्रथम पल्लव नहीं बल्कि राष्ट्रकूट राजवंश के सबसे महान और विद्वान सम्राट थे। उन्होंने अपनी राजधानी मान्यखेत से शासन किया और वे अपनी जैन धर्म के प्रति निष्ठा एवं कन्नड़ साहित्य के संरक्षण के लिए विख्यात हैं। यद्यपि राष्ट्रकूटों और पल्लवों के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा थी, किंतु अमोघवर्ष का संबंध पूरी तरह से राष्ट्रकूट वंश की परंपरा से था। अतः उन्हें पल्लव शासकों की श्रेणी में रखना ऐतिहासिक तथ्यों की दृष्टि से पूरी तरह त्रुटिपूर्ण होगा क्योंकि दोनों राजवंशों की पहचान और कार्यक्षेत्र पूर्णतः भिन्न थे।

282. (A) शैव और वैष्णव धर्म विकसित हुए, यद्यपि शैव धर्म को अधिक राजकीय संरक्षण प्राप्त था।
चोल काल दक्षिण भारत में हिंदू धर्म, विशेष रूप से शैव और वैष्णव मतों के चहुंमुखी विकास का एक स्वर्ण युग था। चोल शासक स्वयं भगवान शिव के अनन्य उपासक थे और उन्होंने तंजावुर जैसे विशाल शिव मंदिरों का निर्माण कराकर शैव धर्म को राजकीय धर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया। इसके साथ ही, नयनार और आलवार संतों के भक्ति आंदोलन ने इन दोनों संप्रदायों को जनमानस के बीच अत्यंत लोकप्रिय बना दिया। चोल राजाओं ने वैष्णव मंदिरों को भी उदारतापूर्वक भूमि दान दी और अन्य मतों के प्रति सहिष्णुता बनाए रखी। समाज में मंदिरों की भूमिका केवल धार्मिक नहीं बल्कि आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में भी अत्यंत प्रभावी

10. मध्यकालीन दक्षिण भारत की प्रशासनिक संरचना में 'नाडु' शब्द मुख्य रूप से किसे दर्शाता था?
(A) गाँवों का एक समूह जो एक प्रशासनिक इकाई बनाता था।
(B) शाही राजधानी नगर।
(C) एक राजकुमार द्वारा शासित एक बड़ा प्रांतीय विभाजन।
(D) एक मंदिर-केंद्रित बस्ती।

11. मध्यकालीन प्रशासनिक प्रणालियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. 'जागीर' प्रणाली में नकद वेतन के बदले अधिकारियों को भू-राजस्व अधिकार देना शामिल था।
2. दिल्ली सल्तनत के तहत 'इक्ता' प्रणाली अनिवार्य रूप से जागीर प्रणाली की अग्रदूत थी।
3. जागीरदारों और इक्तादारों दोनों का उन्हें सौंपी गई भूमि पर पूर्ण स्वामित्व होता था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

12. 712 ईस्वी में जब मुहम्मद बिन कासिम ने आक्रमण किया था, तब सिंध का शासक कौन था?
(A) बप्पा रावल
(B) राजा दाहिर
(C) ललितादित्य
(D) राजा सुहेलदेव

13. राजपूतों के बीच 'शाका' की प्रथा को सबसे अच्छी तरह से इस रूप में समझा जाता है:
(A) नए राजा के लिए औपचारिक राज्याभिषेक समारोह।
(B) आक्रमणकारियों के साथ हस्ताक्षरित एक रणनीतिक शांति संधि।
(C) हार निश्चित होने पर योद्धाओं का अंतिम आत्मघाती हमला।
(D) एक बड़े युद्ध से पहले रखा जाने वाला उपवास काल।

14. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (शब्द)
P. चौथ
Q. देशमुख
R. हुंडी
S. अमरम

सूची II: (विवरण)
1. विनिमय पत्र
2. विजयनगर के तहत भूमि अनुदान
3. वंशानुगत जिला अधिकारी
4. एक मराठा कर

(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

15. मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध पर आक्रमण के बाद, मुख्य भूमि भारत में अरब विस्तार को भारतीय शासकों के एक गठबंधन द्वारा प्रभावी रूप से रोक दिया गया था। निम्नलिखित में से कौन-सी वह शक्ति नहीं थी जिसने अरबों का प्रतिरोध किया था?
(A) कांची के पल्लव
(B) कश्मीर के ललितादित्य
(C) गुर्जर-प्रतिहार
(D) बादामी के चालुक्य

16. गजनी के महमूद द्वारा भारत पर सत्रह आक्रमणों का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) भारत में एक स्थायी गजनवी साम्राज्य स्थापित करना।
(B) भारतीय मंदिरों और नगरों की संपत्ति को लूटना।
(C) भारत में इस्लामी संस्कृति और शिक्षा का प्रसार करना।
(D) आगे बढ़ते सेलजुक तुर्कों से शरण लेना।

17. विजयनगर साम्राज्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: विजयनगर साम्राज्य में 'अमरम' सैन्य कमांडरों को दिया जाने वाला भूमि अनुदान था।
कथन II: अमरम अनुदान के धारकों, जिन्हें अमरनायक कहा जाता था, को राजा को एक निश्चित वार्षिक नजराना देना आवश्यक था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

18. भारत पर हुए निम्नलिखित आक्रमणों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. मुहम्मद बिन कासिम का आक्रमण
2. गजनी के महमूद का प्रथम आक्रमण
3. तैमूर का आक्रमण
4. तराइन का प्रथम युद्ध (मुहम्मद गोरी)

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 1, 2, 4, 3
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 4, 2, 3
(D) 2, 4, 1, 3

19. निम्नलिखित में से किसे एक बड़े युद्ध में अरबों को हराने का श्रेय दिया जाता है, जिससे उनके आगे बढ़ने पर रोक लग गई?
(A) राजा सुहेलदेव
(B) पृथ्वीराज चौहान
(C) बप्पा रावल

(D) राजा दाहिर

20. मध्यकालीन दक्कन और महाराष्ट्र में 'देशमुख' शब्द किससे संबंधित है?
(A) एक व्यापारिक गिल्ड का प्रमुख।
(B) शाही घुड़सवार सेना का एक कमांडर।
(C) प्रांतीय न्यायालय में एक न्यायाधीश।
(D) एक जिले (परगना) का प्रभारी वंशानुगत अधिकारी।

21. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): गजनी के महमूद द्वारा किए गए अनगिनत आक्रमणों ने उत्तरी भारत के राजनीतिक ढांचे को कमजोर कर दिया।
कारण (R): गजनी के महमूद के अभियान लूटपाट और विनाश पर केंद्रित थे, न कि एक समेकित साम्राज्य स्थापित करने पर, जिससे भारतीय शासकों के बीच शक्ति शून्यता और फूट पैदा हुई।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

22. गजनी के महमूद की सेनाओं के विरुद्ध प्रतिरोध का नेतृत्व विशेष रूप से किसके द्वारा किया गया था?
(A) बप्पा रावल
(B) राजा सुहेलदेव
(C) ललितादित्य
(D) राजा दाहिर

23. सल्तनत काल के दौरान भारत पर मंगोल आक्रमणों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) मंगोलों ने कई दशकों तक दिल्ली सल्तनत के लिए गंभीर खतरा पैदा किया।
(B) इल्तुतमिश और बलबन जैसे शासकों ने मंगोलों के विरुद्ध सुदृढ़ रक्षात्मक नीतियां अपनाईं।
(C) अलाउद्दीन खिलजी की सेनाओं ने कई बड़े मंगोल आक्रमणों को सफलतापूर्वक विफल कर दिया।
(D) मंगोल दिल्ली पर स्थायी रूप से कब्जा करने और उसे अपने पास रखने में सफल रहे।

24. गुलाम वंश के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कुतुबुद्दीन ऐबक गुलाम वंश का संस्थापक था।
2. इल्तुतमिश ने सल्तनत को सुदृढ़ किया और दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया।
3. इस वंश को 'गुलाम वंश' कहा जाता है क्योंकि प्रत्येक शासक राजा बनने से पहले गुलाम था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

25. तैमूर का दिल्ली पर आक्रमण 1398 ईस्वी में किस वंश के शासनकाल के दौरान हुआ था?
(A) खिलजी वंश
(B) सैयद वंश
(C) तुगलक वंश
(D) लोदी वंश

26. बाजार नियंत्रण नीतियां और मूल्य विनियमन किस दिल्ली सुल्तान के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) इल्तुतमिश
(C) बलबन
(D) मुहम्मद बिन तुगलक

27. सल्तनत वंश और उसके संस्थापक के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(A) तुगलक वंश - फिरोज शाह तुगलक
(B) सैयद वंश - बहलोल लोदी
(C) लोदी वंश - खिज्र खान
(D) खिलजी वंश - जलालुद्दीन खिलजी

28. विभिन्न राजपूत शासकों द्वारा दिया गया प्रतिरोध दिल्ली सल्तनत के लिए एक निरंतर चुनौती थी। इस प्रतिरोध का प्राथमिक उद्देश्य था:
(A) अखिल भारतीय साम्राज्य स्थापित करने की महत्वाकांक्षा।
(B) राजनीतिक स्वतंत्रता और संस्कृति की रक्षा करना।
(C) मध्य एशियाई व्यापार मार्गों पर नियंत्रण प्राप्त करना।
(D) शासक सुल्तानों को हिंदू धर्म में परिवर्तित करना।

29. लोदी वंश का मूल क्या था?
(A) तुर्की
(B) मंगोल
(C) अफगान
(D) फारसी

30. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (वंश)
P. गुलाम
Q. खिलजी
R. तुगलक
S. लोदी

सूची II: (प्रमुख शासक)
1. गयासुद्दीन तुगलक
2. सिकंदर लोदी
3. इल्तुतमिश
4. अलाउद्दीन खिलजी

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

31. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मुहम्मद बिन तुगलक का राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद स्थानांतरित करने का निर्णय एक रणनीतिक विफलता थी।
कारण (R): यह स्थानांतरण दोषपूर्ण नियोजन के साथ बलपूर्वक लागू किया गया था, जिससे जनता को अपार कष्ट हुआ और उत्तर भारत पर सुल्तान का नियंत्रण कमजोर हो गया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

32. पानीपत का प्रथम युद्ध (1526) किसके बीच लड़ा गया था?
(A) बाबर और राणा सांगा
(B) बाबर और इब्राहिम लोदी
(C) हुमायूँ और शेरशाह सूरी
(D) अकबर और हेमू

33. भारत में बाबर के युद्धों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) खानवा का युद्ध अफगान सरदारों के विरुद्ध लड़ा गया था।
(B) चंदेरी के युद्ध ने मेदिनी राय के विरुद्ध शक्ति को सुदृढ़ किया।
(C) घाघरा का युद्ध राणा सांगा के नेतृत्व में राजपूतों के विरुद्ध लड़ा गया था।
(D) पानीपत के प्रथम युद्ध ने पूरे भारत पर निर्विवाद मुगल नियंत्रण स्थापित कर दिया।

34. 1739 में नादिर शाह के आक्रमण का मुगल साम्राज्य पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा। इस आक्रमण के समय मुगल सिंहासन पर कौन था?
(A) मुहम्मद शाह 'रंगीला'
(B) औरंगजेब
(C) बहादुर शाह प्रथम
(D) शाह आलम द्वितीय

35. शेरशाह सूरी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उसने मुगल सम्राट हुमायूँ को पराजित किया और सूर साम्राज्य की स्थापना की।
2. उसने एक नई भू-राजस्व प्रणाली सहित महत्वपूर्ण प्रशासनिक सुधार प्रस्तुत किए।
3. वह मूल रूप से लोदी वंश की सेवा में एक अफगान कुलीन था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

36. अहमद शाह अब्दाली के भारत पर आक्रमणों का समापन 1761 में पानीपत के तीसरे युद्ध के रूप में हुआ। इस युद्ध में उसका मुख्य प्रतिद्वंद्वी कौन था?
(A) मुगल सम्राट
(B) सिख
(C) जाट
(D) मराठा

37. खानवा के युद्ध (1527) का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) इब्राहिम लोदी के संबंधी उसकी हार का बदला लेना चाहते थे।
(B) धनी गुजरात तट को जीतने की बाबर की तीव्र इच्छा।
(C) राणा सांगा के नेतृत्व वाले राजपूत संघ से उत्पन्न खतरा।
(D) बंगाल और उसके आकर्षक पूर्वी व्यापार मार्गों पर नियंत्रण।

38. 1567-68 में अकबर द्वारा चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी मुगल-राजपूत इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना है। उस समय मेवाड़ के राणा कौन थे?
(A) राणा प्रताप
(B) राणा उदय सिंह
(C) राणा सांगा
(D) राणा कुंभा

39. गोंड साम्राज्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: गोंड रानी दुर्गावती ने आसफ खान के नेतृत्व वाली मुगल सेना का कड़ा विरोध किया।
कथन II: गोंड एक जनजातीय समुदाय थे जिन्होंने गढ़-कटंगा के क्षेत्र में एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित किया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

40. निम्नलिखित में से किस समूह ने औरंगजेब की नीतियों के विरुद्ध महत्वपूर्ण प्रतिरोध आंदोलन का नेतृत्व नहीं किया?
(A) बहमनी
(B) जाट
(C) सिख
(D) सतनामी

41. निम्नलिखित मुगल सम्राटों को उनके शासनकाल के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

85. औरंगजेब की मृत्यु के बाद मराठा शक्ति को पुनर्जीवित करने में उनकी भूमिका के लिए किस पेशवा को अक्सर "मराठा राज्य का दूसरा संस्थापक" कहा जाता है?
(A) बाजीराव प्रथम
(B) बालाजी बाजीराव
(C) बालाजी विश्वनाथ
(D) माधवराव

86. दिल्ली सल्तनत के निम्नलिखित वंशों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. खिलजी
2. तुगलक
3. गुलाम
4. लोदी
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 1, 2, 3, 4

87. सल्तनत काल के दौरान भारत में तुर्कों की प्रशासनिक प्रणाली मुख्य रूप से फारसी-अरबी प्रणाली पर आधारित थी। प्रांतीय प्रशासन में सर्वोच्च अधिकारी कौन था?
(A) कोतवाल
(B) काजी
(C) आमिल
(D) मुक्ती या वली

88. विजयनगर प्रशासन में भू-राजस्व के लिए उत्तरदायी सबसे महत्वपूर्ण विभाग को क्या कहा जाता था?
(A) अठवन
(B) कंदाचार
(C) कावल
(D) रायसाल

89. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (मुगल अधिकारी)
P. मीर बख्शी
Q. खान-ए-सामां
R. सद्र-उस-सुदूर
S. काजी-उल-कुज़ात
सूची II: (कार्य)
1. शाही घराने का प्रभारी
2. न्याय विभाग का प्रमुख
3. सैन्य विभाग का प्रमुख
4. धार्मिक विभाग का प्रमुख
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-2, R-3, S-1

90. शिवाजी के अष्टप्रधान में, विदेश मामलों के लिए उत्तरदायी मंत्री को किस रूप में जाना जाता था?
(A) सुमंत या दबीर
(B) पेशवा
(C) अमात्य
(D) न्यायाधीश

91. शेरशाह सूरी के भू-राजस्व प्रशासन की विशिष्ट विशेषता क्या थी?
(A) सभी भूमियों के लिए 50% का समान कर लागू करना।
(B) विशेष रूप से नकद भुगतान में राजस्व का संग्रह।
(C) राज्य और किसान के बीच सभी मध्यस्थों का उन्मूलन।
(D) भूमि की उर्वरता के आधार पर माप और मूल्यांकन।

92. बहमनी साम्राज्य के विघटन से पाँच स्वतंत्र सल्तनतों का गठन हुआ। निम्नलिखित में से कौन-सी सही सूची है?
(A) बीजापुर, गोलकुंडा, गुलबर्गा, बीदर, बरार
(B) बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर, बीदर और बरार
(C) दौलताबाद, गोलकुंडा, अहमदनगर, बीदर और बरार
(D) बीजापुर, वारंगल, अहमदनगर, बीदर और बरार

93. पुरंदर की संधि (1665) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: पुरंदर की संधि (1665) शिवाजी के लिए एक बड़ा राजनीतिक झटका थी।
कथन II: संधि के अंतर्गत शिवाजी को अपने अनेक किले मुगलों को सौंपने पड़े और उनकी सेवा करने के लिए सहमत होना पड़ा।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I सही है, कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

94. शिवाजी द्वारा परिकल्पित 'हिंदवी स्वराज्य' की अवधारणा का सबसे उपयुक्त अर्थ है:
(A) विशेष रूप से हिंदुओं के उपयोग के लिए स्थापित एक राज्य।
(B) वेदों के कठोर सिद्धांतों द्वारा शासित एक साम्राज्य।
(C) क्षेत्रीय मराठा प्रमुखों का एक विकेंद्रीकृत परिसंघ।
(D) बाहरी और विदेशी शासन से मुक्त एक संप्रभु स्वदेशी राज्य।

95. पेशवाओं में सबसे अधिक विस्तारवादी और आक्रामक कौन था, जो अपने तीव्र अभियानों और "हिंदू पद पादशाही" की नीति के लिए प्रसिद्ध था?
(A) बाजीराव प्रथम
(B) बालाजी विश्वनाथ
(C) बालाजी बाजीराव
(D) रघुनाथ राव

(C) बालाजी विश्वनाथ
(D) माधवराव प्रथम

52. शिवाजी की प्रशासनिक प्रणाली को 'अष्टप्रधान' के रूप में जाना जाता था। यह किसकी एक परिषद थी?
(A) चार मंत्रियों की
(B) दस मंत्रियों की
(C) सोलह मंत्रियों की
(D) आठ मंत्रियों की

53. निम्नलिखित में से कौन विघटित बहमनी साम्राज्य के पाँच उत्तराधिकारी राज्यों में से एक नहीं था?
(A) बीजापुर
(B) गोलकुंडा
(C) वारंगल
(D) बीदर

54. शेरशाह सूरी के अधीन प्रशासनिक व्यवस्था अत्यधिक केंद्रीकृत थी। 'परगना' किसके प्रभार वाली एक प्रशासनिक इकाई थी?
(A) दीवान
(B) शिकदार
(C) सूबेदार
(D) मुकद्दम

55. विजयनगर साम्राज्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: विजयनगर साम्राज्य के प्रशासन की विशेषता नयंकर प्रणाली थी।
कथन II: नयंकर प्रणाली में उनकी सेवाओं के बदले सैन्य प्रमुखों को भूमि देना शामिल था, जो 'इक्ता' प्रणाली के समान थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

56. दिल्ली सल्तनत के प्रशासन में 'दीवान-ए-अर्ज' किसका विभाग था?
(A) सैन्य मामले
(B) विदेशी मामले
(C) वित्त
(D) शाही पत्राचार

57. मुगलों की प्रशासनिक प्रणाली एक जटिल संरचना थी। मुगलों के अधीन राजस्व विभाग का प्रमुख कौन था?
(A) मीर बख्शी
(B) सद्र-उस-सुदूर
(C) दीवान-ए-आला या वज़ीर
(D) खान-ए-सामां

58. शिवाजी के प्रशासन के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(A) सचिव - सेनापति
(B) पेशवा - प्रधानमंत्री
(C) अमात्य - वित्त मंत्री
(D) सुमंत - विदेश मंत्री

59. मध्यकालीन प्रशासन के संदर्भ में, सल्तनत और मुगल दोनों के तहत 'वज़ीर' का प्राथमिक कार्य क्या था?
(A) प्रमुख अभियानों में सेना का नेतृत्व करना।
(B) शासक के मुख्य धार्मिक सलाहकार के रूप में कार्य करना।
(C) शाही परिवार और कारखानों का प्रबंधन करना।
(D) राजस्व और वित्त विभाग का प्रमुख होना।

60. शिवाजी के जीवन की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. सूरत की लूट
2. रायगढ़ में राज्याभिषेक
3. जय सिंह के साथ पुरंदर की संधि
4. अफजल खान प्रकरण
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 4, 1, 3, 2
(B) 1, 4, 3, 2
(C) 4, 3, 1, 2
(D) 1, 3, 4, 2

61. मध्यकालीन प्रशासनिक प्रणालियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. तुर्कों ने भारत में 'इक्ता' प्रणाली की शुरुआत की।
2. शेरशाह सूरी के भू-राजस्व सुधारों को बाद में अकबर द्वारा अपनाया और परिष्कृत किया गया।
3. शिवाजी की राजस्व प्रणाली मुख्य रूप से भूमि की माप और राज्य का हिस्सा निर्धारित करने पर आधारित थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

62. राजा दाहिर का बलिदान किस आक्रमण के विरुद्ध प्रतिरोध से जुड़ा है?
(A) गजनी के महमूद का आक्रमण
(B) मुहम्मद गोरी का आक्रमण
(C) तैमूर का आक्रमण
(D) मुहम्मद बिन कासिम का आक्रमण

63. कश्मीर के किस शासक को अरबों को हराने और उनके उत्तरवर्ती विस्तार को रोकने का श्रेय दिया जाता है?
(A) ललितादित्य मुक्तापीड
(B) दिद्दा

(C) जैन्-ुल-आबिदीन
(D) हर्ष

64. मराठों द्वारा मुख्य रुप से 'चौथ' प्रणाली का उपयोग किसलिए किया जाता था?
(A) मंदिर निर्माण के वित्तपोषण के लिए राजस्व।
(B) संप्रभुता का दावा और आक्रमणों से सुरक्षा।
(C) मराठा क्षेत्र के भीतर एक विशिष्ट व्यापार कर।
(D) नागरिक प्रशासकों के वेतन का भुगतान करने के लिए धन।

65. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): अकबर की 'सुलह-ए-कुल' नीति ने मुगल साम्राज्य को सुदृढ़ करने में सहायता की।
कारण (R): इसने एक सामंजस्यपूर्ण वातावरण को बढ़ावा दिया और गैर-मुस्लिमों, विशेष रूप से राजपूत प्रमुखों का सहयोग सुनिश्चित किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

66. पूर्व मध्यकाल में गुर्जर-प्रतिहारों की महत्वपूर्ण भूमिका निम्नलिखित में से क्या थी?
(A) सिंध से भारतीय हृदयस्थल में अरबों की प्रगति का प्रतिरोध करना।
(B) अरब जगत के साथ व्यापार को सुगम बनाना।
(C) मंदिर वास्तुकला की नागर शैली के विकास को संरक्षण देना।
(D) गुप्तों के बाद प्रथम अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना करना।

67. 'जौहर' और 'शाका' का सबसे सटीक वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) 'शाका' महिलाओं द्वारा आत्मदाह था और 'जौहर' पुरुषों द्वारा अंतिम हमला था।
(B) दोनों शब्द युद्ध के मैदान में योद्धाओं के अंतिम हमले को संदर्भित करते हैं।
(C) 'जौहर' महिलाओं द्वारा आत्मदाह था और 'शाका' पुरुषों का अंतिम हमला था।
(D) दोनों शब्द शाही परिवार द्वारा सामूहिक आत्मदाह के कार्य को संदर्भित करते हैं।

68. उबेदुल्ला और बुदैल के आक्रमण किस क्षेत्र पर आक्रमण करने के शुरुआती अरब प्रयास थे?
(A) कश्मीर
(B) गुजरात
(C) कन्नौज
(D) सिंध

69. 'मनसबदारी' प्रणाली के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) इसने एक सरकारी अधिकारी के पद और स्थिति को निर्धारित किया।
(B) पदों को 'ज़ात' और 'सवार' में विभाजित किया गया था।
(C) यह विशुद्ध रूप से एक सैन्य प्रणाली थी जिसके कोई नागरिक कार्य नहीं थे।
(D) मनसब सैद्धांतिक रूप से वंशानुगत नहीं थे।

70. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (शासक)
P. बप्पा रावल
Q. ललितादित्य
R. दाहिर
S. सुहेलदेव
सूची II: (विवरण)
1. गजनी के महमूद के विरुद्ध प्रतिरोध
2. अरब आक्रमण के दौरान सिंध का राजा
3. कश्मीर का राजा जिसने अरबों को हराया
4. गुहिल वंश का राजा जिसने अरबों का प्रतिरोध किया
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

71. 'जागीर' एक मुगल अधिकारी को सौंपी गई भूमि थी। 'जागीर' और 'वतन जागीर' के बीच मुख्य अंतर क्या था?
(A) 'जागीर' वेतन के लिए थी, 'वतन जागीर' धार्मिक अनुदान के लिए थी।
(B) 'जागीर' दक्कन में थी, 'वतन जागीर' उत्तर भारत में थी।
(C) 'जागीर' सम्राट द्वारा प्रदान की जाती थी, 'वतन जागीर' सूबेदार द्वारा।
(D) जागीर हस्तांतरणीय थी, जबकि वतन जागीर वंशानुगत थी।

72. गजनी के महमूद से भिन्न, मुहम्मद गोरी का भारत पर आक्रमण करने का प्राथमिक उद्देश्य था:
(A) भारत में एक स्थायी इस्लामी साम्राज्य की स्थापना करना।
(B) केवल धन लूटना।
(C) हिंदू मंदिरों को नष्ट करना।
(D) मंगोल खतरों से एक सुरक्षित पनाहगाह सुनिश्चित करना।

73. बादामी के चालुक्यों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे दक्कन क्षेत्र में एक बड़ी शक्ति थे।
2. वे उन राजवंशों में से एक थे जिन्होंने शुरुआती अरब आक्रमणों का प्रतिरोध किया था।
3. उनके सबसे प्रसिद्ध शासक पुलकेशिन द्वितीय थे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-sa/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

74. विजयनगर शासकों के अधीन 'अमरम' की अवधारणा उत्तर भारत की किस प्रणाली के सर्वाधिक समान है?
(A) इक्ता प्रणाली
(B) जमींदारी प्रणाली
(C) रैयतवाड़ी प्रणाली
(D) महलवाड़ी प्रणाली

75. 'इक्ता' शब्द का शाब्दिक अर्थ है:
(A) खालसा भूमि
(B) बंजर भूमि
(C) वंशानुगत भूमि
(D) हिस्सा या भाग

76. तैमूर के आक्रमण ने किस सत्तारूढ़ वंश के पतन का मार्ग प्रशस्त किया और सैयदों के उदय का मार्ग तैयार किया?
(A) खिलजी वंश
(B) तुगलक वंश
(C) लोदी वंश
(D) गुलाम वंश

77. सैयद वंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सैयद वंश का शासन काफी हद तक दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों तक ही सीमित था।
कथन II: सैयद वंश के शासक शक्तिशाली सम्राट थे जिन्होंने अधिकांश भारतीय उपमहाद्वीप को नियंत्रित किया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

78. घाघरा का युद्ध (1529) महत्वपूर्ण था क्योंकि:
(A) यह भारत में बाबर की पहली बड़ी विजय थी।
(B) यह बाबर और राणा सांगा के बीच लड़ा गया था।
(C) इसके कारण चंदेरी के किले पर अधिकार कर लिया गया।
(D) इसने बाबर के प्रति अंतिम पूर्वी अफगान प्रतिरोध को समाप्त कर दिया।

79. मुगल शासन के विरुद्ध जाट समुदाय का प्रतिरोध, विशेष रूप से औरंगजेब के काल में, किस क्षेत्र में केंद्रित था?
(A) दिल्ली, मथुरा और आगरा के आसपास का क्षेत्र
(B) पंजाब
(C) राजस्थान
(D) बुंदेलखंड

80. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): औरंगजेब के शासनकाल में जाटों, सिखों और सतनामियों जैसे समूहों द्वारा विद्रोहों की एक श्रृंखला देखी गई।
कारण (R): औरंगजेब की धार्मिक नीतियों और उच्च भू-राजस्व मांगों ने जनसंख्या के विभिन्न वर्गों में व्यापक असंतोष उत्पन्न किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

81. जब हुमायूँ 1555 में अपना सिंहासन वापस प्राप्त करने के लिए भारत लौटा, तब शासक कौन था?
(A) शेरशाह सूरी
(B) सिकंदर सूरी
(C) इस्लाम शाह सूरी
(D) आदिल शाह सूरी

82. औरंगजेब के शासनकाल के दौरान सतनामी विद्रोह किसके द्वारा किया गया था?
(A) धार्मिक स्वरूप वाले किसानों और शिल्पकारों का एक समुदाय।
(B) राजपूत प्रमुखों का एक समूह।
(C) अफगान सैनिकों का एक संप्रदाय।
(D) उत्तर-पूर्वी सीमा का एक कबीला।

83. किस युद्ध ने सूर वंश के निश्चित अंत और हुमायूँ के नेतृत्व में मुगल शासन की बहाली को चिह्नित किया?
(A) चौसा का युद्ध
(B) कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध
(C) सरहिंद का युद्ध
(D) पानीपत का द्वितीय युद्ध

84. क्षेत्रीय राज्यों के उदय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. विजयनगर और बहमनी राज्यों का उदय तुगलक वंश के पतन के दौरान हुआ था।
2. विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक हरिहर और बुक्का थे।
3. बहमनी साम्राज्य अपनी स्थापना से ही एक शिया राज्य था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

(B) यह अपनी भव्य मंदिर वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध था।
(C) शासकों ने संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़ और तमिल साहित्य को संरक्षण प्रदान किया।
(D) इसने तालिकोटा के युद्ध में बहमनी साम्राज्य को सफलतापूर्वक पीछे हटा दिया।

108. शिवाजी के नेतृत्व में मराठा शक्ति के उदय का मुख्य कारण था:
(A) मुगल सम्राट से बड़े पैमाने पर वित्तीय सहायता।
(B) मुगल और दक्कन सल्तनतों के पतन के दौरान रणनीतिक अवसर।
(C) आधुनिक शस्त्रों के लिए पुर्तगालियों के साथ गठबंधन।
(D) मराठा क्षेत्र के भीतर समृद्ध रत्न खानों की खोज।

109. पेशवाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: पेशवा, जो मूल रूप से प्रधानमंत्री थे, मराठा साम्राज्य के वास्तविक शासक बन गए।
कथन II: बालाजी विश्वनाथ के समय से पेशवा का पद वंशानुगत हो गया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

110. मुगल प्रशासन के संदर्भ में, 'सूबे' थे:
(A) सैन्य छावनियाँ
(B) जिले
(C) शाही कार्यशालाएँ
(D) प्रांत

111. एक प्रशासनिक इकाई के रूप में 'नाडु' शब्द किस मध्यकालीन साम्राज्य से सर्वाधिक निकटता से जुड़ा है?
(A) चोल और विजयनगर जैसे दक्षिण भारतीय साम्राज्य
(B) दिल्ली सल्तनत
(C) मुगल साम्राज्य
(D) मराठा साम्राज्य

112. 'सुलह-ए-कुल' या 'सार्वभौमिक शांति' की अवधारणा किस मुगल सम्राट की प्रशासनिक और धार्मिक नीति का आधार थी?
(A) बाबर
(B) अकबर
(C) हुमायूँ
(D) औरंगजेब

113. 'जज़िया' क्या था?
(A) अश्वों के आयात पर लगने वाला कर।
(B) एक इस्लामी राज्य में गैर-मुस्लिम प्रजा पर लगने वाला प्रति-व्यक्ति कर।
(C) फसल की उपज पर आधारित भू-राजस्व कर।
(D) नदी पार करने के स्थानों पर एकत्र किया जाने वाला पथ-कर।

114. 'हुंडी' शब्द एक मध्यकालीन भारतीय साधन को दर्शाता है जिसकी तुलना आधुनिक काल के किससे की जा सकती है?
(A) चेक या विनिमय पत्र
(B) अंश (शेयर) प्रमाण पत्र
(C) सरकारी बांड
(D) संपत्ति का विलेख

115. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मंगोल आक्रमणों ने दिल्ली सल्तनत के अस्तित्व के लिए गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न कीं।
कारण (R): बलबन और अलाउद्दीन खिलजी जैसे शासकों को मुख्य रूप से मंगोल खतरे से निपटने के लिए नए किले बनाने पड़े और एक बड़ी स्थायी सेना रखनी पड़ी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

116. राजा सुहेलदेव का प्रतिरोध किसकी सेनाओं पर उनकी विजय से जुड़ा है?
(A) मुहम्मद गोरी
(B) कुतुबुद्दीन ऐबक
(C) मुहम्मद बिन कासिम
(D) गजनी के महमूद के अधीन एक सेनापति

117. कौन-सा सल्तनत शासक अपने 'सांकेतिक मुद्रा' प्रयोग के लिए जाना जाता है?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) मुहम्मद बिन तुगलक
(D) फिरोज शाह तुगलक

118. मुगलों और सिखों के बीच संघर्ष का प्राथमिक कारण किसके शासनकाल के दौरान आरंभ हुआ?
(A) अकबर
(B) जहाँगीर
(C) शाहजहाँ
(D) औरंगजेब

119. अहमद शाह अब्दाली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वह नादिर शाह का एक सेनापति था जिसने बाद में अफगानिस्तान में अपना शासन स्थापित किया।
2. उसने पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों को पराजित किया।
3. उसका प्राथमिक लक्ष्य मुगल वंश को हटाकर पूरे भारत

96. 'पॉलीगार' (पालयक्कारर) शब्द सैन्य-प्रशासन की एक प्रणाली को दर्शाता है जो ब्रिटिश शासन से पहले किस क्षेत्र में प्रमुख थी?
(A) बंगाल
(B) दक्षिण भारत
(C) पंजाब
(D) राजस्थान

97. गुहिल वंश के बप्पा रावल ऐतिहासिक रूप से किसके लिए महत्वपूर्ण हैं?
(A) जयपुर नगर की स्थापना के लिए।
(B) 8वीं शताब्दी में अरब आक्रमणों का प्रतिरोध करने के लिए।
(C) तराइन के युद्ध में मुहम्मद गोरी के विरुद्ध लड़ने के लिए।
(D) अकबर के साथ गठबंधन बनाने के लिए।

98. मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच मुख्य संघर्ष किस पर नियंत्रण को लेकर था?
(A) तबरहिंद (भटिंडा) का किला
(B) गुजरात
(C) कन्नौज
(D) दिल्ली

99. सल्तनत और मुगल प्रशासन में 'खालसा' भूमि किसे संदर्भित करती थी?
(A) धार्मिक संस्थानों को दी गई भूमि।
(B) बिना खेती वाली भूमि।
(C) सीधे शाही कोष के लिए आरक्षित भूमि।
(D) वेतन के बदले अमीरों को सौंपी गई भूमि।

100. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): शेरशाह सूरी का शासनकाल अल्पकालिक था, किंतु उनके प्रशासनिक सुधार अत्यंत महत्वपूर्ण थे।
कारण (R): उनके अनेक सुधारों, विशेष रूप से भू-राजस्व और प्रशासन में, को मुगल सम्राट अकबर द्वारा अपनाया और विकसित किया गया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

101. 'दाहिर का बलिदान' किसके विरुद्ध लड़ते हुए सिंध के राजा की मृत्यु से संबंधित है?
(A) सिकंदर महान
(B) गजनी के महमूद
(C) मुहम्मद बिन कासिम
(D) मुहम्मद गोरी

102. मध्यकालीन भारत में 'देशमुख' शब्द एक वंशानुगत भूस्वामी को संदर्भित करता है, विशेष रूप से:
(A) बंगाल क्षेत्र में
(B) दक्कन के पठार में
(C) पंजाब के मैदानों में
(D) गंगा की घाटी में

103. लोदी वंश के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे दिल्ली सल्तनत के प्रथम अफगान शासक थे।
2. सिकंदर लोदी ने आगरा नगर की स्थापना की।
3. पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोदी की पराजय के बाद इस वंश का अंत हो गया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

104. वह गोंड शासक कौन था जिसने अकबर के अधीन मुगल आक्रमण के विरुद्ध वीरतापूर्ण प्रतिरोध किया था?
(A) रानी दुर्गावती
(B) संग्राम शाह
(C) दलपत शाह
(D) वीर नारायण

105. चंदेरी का युद्ध (1528) बाबर और किसके बीच लड़ा गया था?
(A) राणा सांगा
(B) इब्राहिम लोदी
(C) मेदिनी राय
(D) महमूद लोदी

106. ऐतिहासिक घटनाओं के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (घटना)
P. नादिर शाह का आक्रमण
Q. तैमूर का आक्रमण
R. पानीपत का तीसरा युद्ध
S. पानीपत का प्रथम युद्ध

सूची II: (वर्ष)
1. 1526
2. 1761
3. 1398
4. 1739

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

107. विजयनगर साम्राज्य के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) इसकी स्थापना हरिहर और बुक्का ने की थी।

1. शाहजहाँ
2. जहाँगीर
3. औरंगजेब
4. अकबर

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 4, 3, 2, 1
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 1, 2, 3

42. मुगलों के विरुद्ध सिख प्रतिरोध किस सिख गुरु को औरंगजेब द्वारा मृत्युदंड दिए जाने के बाद तीव्र हो गया?
(A) गुरु तेग बहादुर
(B) गुरु अर्जन देव
(C) गुरु हरगोबिंद
(D) गुरु गोविंद सिंह

43. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 14वीं शताब्दी में किस नदी के तट पर की गई थी?
(A) कृष्णा
(B) गोदावरी
(C) कावेरी
(D) तुंगभद्रा

44. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विजयनगर और बहमनी साम्राज्य निरंतर संघर्ष की स्थिति में थे।
कारण (R): उनके संघर्ष का प्राथमिक कारण कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच स्थित उपजाऊ रायचूर दोआब पर नियंत्रण था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

45. बहमनी साम्राज्य की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) मुहम्मद शाह प्रथम
(B) फिरोज शाह बहमनी
(C) अलाउद्दीन हसन बहमन शाह
(D) महमूद गवां

46. बहमनी साम्राज्य के विघटन का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) विजयनगर साम्राज्य द्वारा आक्रमण।
(B) विनाशकारी अकालों की एक श्रृंखला।
(C) पूरे राज्य में एक सफल किसान विद्रोह।
(D) दक्कनी और अफाकी (विदेशी) अमीरों के बीच प्रतिद्वंद्विता।

47. तालिकोटा का युद्ध (1565) एक ऐतिहासिक घटना है जिसके कारण किसका पतन हुआ:
(A) विजयनगर साम्राज्य
(B) बहमनी साम्राज्य
(C) मराठा साम्राज्य
(D) उड़ीसा का गजपति साम्राज्य

48. मराठों के उदय के कारणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. महाराष्ट्र की पहाड़ी भौगोलिक स्थिति ने प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान की।
2. भक्ति आंदोलन ने एकता और सामाजिक समानता की भावना उत्पन्न की।
3. मराठों द्वारा दक्कन सल्तनत की प्रशासनिक और सैन्य प्रणालियों में प्राप्त अनुभव।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

49. शिवाजी का राज्याभिषेक, जिसने 'हिंदवी स्वराज्य' की औपचारिक स्थापना को चिह्नित किया, किस किले में हुआ था?
(A) पन्हाला
(B) रायगढ़
(C) सिंहगढ़
(D) प्रतापगढ़

50. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (युद्ध)
P. खानवा का युद्ध
Q. घाघरा का युद्ध
R. चंदेरी का युद्ध
S. पानीपत का प्रथम युद्ध

सूची II: (बाबर का प्रतिद्वंद्वी)
1. मेदिनी राय
2. इब्राहिम लोदी
3. महमूद लोदी (अफगान सेना)
4. राणा सांगा

(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

51. मराठा साम्राज्य का विस्तार पेशवाओं के काल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। एक महत्वपूर्ण, वंशानुगत पद धारण करने वाले प्रथम पेशवा कौन थे?
(A) बाजीराव प्रथम
(B) बालाजी बाजीराव

में अफगान शासन स्थापित करना था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

120. बहमनी साम्राज्य का पाँच अलग-अलग सल्तनतों में विघटन किसके इतिहास की एक प्रमुख घटना है?

(A) दक्कन
(B) दिल्ली सल्तनत
(C) बंगाल
(D) गुजरात

121. शिवाजी द्वारा 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना किसकी घोषणा थी?

(A) सभी गैर-मराठों के विरुद्ध युद्ध।
(B) मुगल सम्राट के प्रति निष्ठा।
(C) एक संप्रभु, स्वतंत्र राज्य की स्थापना।
(D) एक विशुद्ध धार्मिक हिंदू राज्य।

122. पेशवाओं के अधीन, मराठा साम्राज्य का तीव्र विस्तार हुआ। यह विस्तार मुख्य रूप से किसके द्वारा संचालित था?

(A) चौथ की आक्रामक सैन्य वसूली।
(B) अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए रक्षात्मक नीति।
(C) उत्तर भारत के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान की इच्छा।
(D) यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के साथ गठबंधन।

123. शिवाजी का प्रशासन किसके लिए उल्लेखनीय था?

(A) शक्तिशाली सामंती सरदारों के साथ विकेंद्रीकृत संरचना।
(B) सभी प्रमुख निर्णयों के लिए विदेशी सलाहकारों पर निर्भरता।
(C) बिना किसी परिवर्तन के मुगल मनसबदारी प्रणाली को अपनाना।
(D) सशक्त केंद्रीय नौकरशाही और नियंत्रण।

124. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (शब्द)

P. इक्ता
Q. मनसब
R. अमरम
S. अष्टप्रधान

सूची II: (प्रणाली/साम्राज्य)

1. मुगल साम्राज्य
2. विजयनगर साम्राज्य
3. शिवाजी का प्रशासन
4. दिल्ली सल्तनत

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

125. खानवा का युद्ध पानीपत के प्रथम युद्ध की तुलना में अधिक निर्णायक और महत्वपूर्ण था क्योंकि:

(A) यह एक बड़ी सेना के विरुद्ध लड़ा गया था।
(B) इसके परिणामस्वरूप अधिक धन प्राप्त हुआ।
(C) इसने राजपूत संघ की शक्ति को समाप्त कर दिया।
(D) यह पहली बार था जब भारत में बारूद का उपयोग किया गया था।

126. अकबर द्वारा चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी मुगल-राजपूत संबंधों में एक महत्वपूर्ण घटना है। किले पर अधिकार के बाद क्या हुआ?

(A) अकबर ने मेवाड़ के राणा के साथ वैवाहिक गठबंधन किया।
(B) एक संधि के अंतर्गत किला राणा उदय सिंह को लौटा दिया गया।
(C) अकबर ने एक राजपूत कमांडर को किले का राज्यपाल नियुक्त किया।
(D) अकबर ने किले के निवासियों के सामान्य नरसंहार का आदेश दिया।

127. औरंगजेब के विरुद्ध सतनामी विद्रोह किसका प्रकटीकरण था?

(A) आर्थिक और धार्मिक किसान असंतोष।
(B) एक क्षेत्रीय सरदार की महत्वाकांक्षा।
(C) मुगल राजकुमारों से जुड़ी एक राजप्रासाद साजिश।
(D) एक विदेशी शक्ति का हस्तक्षेप।

128. विजयनगर साम्राज्य के पतन का सबसे महत्वपूर्ण कारण क्या था?

(A) दुर्बल शासकों की एक श्रृंखला।
(B) तालिकोटा के युद्ध में पराजय।
(C) सिंहासन के दावेदारों के बीच दीर्घकालिक गृहयुद्ध।
(D) पुर्तगालियों द्वारा अश्व व्यापार का बंद किया जाना।

129. दिल्ली सल्तनत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: तुर्की सुल्तानों के अधीन प्रशासन मुख्य रूप से सैन्य प्रकृति का था।

कथन II: सुल्तानों को निरंतर आंतरिक विद्रोहों और बाहरी खतरों का सामना करना पड़ता था, जिससे अस्तित्व के लिए एक सुदृढ़ सेना आवश्यक हो गई थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) दोनों कथन गलत हैं।

130. मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा निर्मित 'दीवान-ए-कोही' विभाग का संबंध किससे था?
(A) कृषि
(B) दास
(C) दान
(D) सार्वजनिक निर्माण

131. गुलाम वंश का अंतिम प्रभावी शासक कौन था?
(A) इल्तुतमिश
(B) रज़िया सुल्तान
(C) गयासुद्दीन बलबन
(D) नसीरुद्दीन महमूद

132. वह आक्रमणकारी कौन था जिसने 1398 में भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली को लूटा था?
(A) चंगेज खान
(B) कुबलई खान
(C) हलाकु खान
(D) तैमूर (तैमूरलंग)

133. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): तुगलक वंश का शासन दिल्ली सल्तनत के चरमोत्कर्ष और पतन के प्रारंभ दोनों का प्रतीक था।
कारण (R): जहाँ मुहम्मद बिन तुगलक का साम्राज्य सल्तनत इतिहास में सबसे बड़ा था, वहीं उसके असफल प्रयोगों और दुर्बल उत्तराधिकारियों ने इसके तीव्र विघटन को जन्म दिया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

134. किन युद्धों में पराजित होने के बाद हुमायूँ को अपना राज्य शेरशाह सूरी के हाथों खोना पड़ा?
(A) पानीपत और घाघरा
(B) चौसा और कन्नौज
(C) चंदेरी और खानवा
(D) सरहिंद और माछीवाड़ा

135. मुगलों के विरुद्ध गढ़-कटंगा के गोंड साम्राज्य के प्रतिरोध का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था?
(A) बाज़ बहादुर
(B) चाँद बीबी
(C) दुर्गा प्रसाद
(D) रानी दुर्गावती

136. राजपूत युद्ध के संदर्भ में 'शाका' शब्द का तात्पर्य है:
(A) पुरुष योद्धाओं द्वारा मृत्यु तक लड़ना।
(B) शत्रु को शांति का प्रस्ताव देना।
(C) युद्ध जीतने के बाद विजय उत्सव।
(D) राजपूत घुड़सवार सेना द्वारा उपयोग की जाने वाली एक विशिष्ट तलवार।

137. निम्नलिखित में से कौन-सा मराठा साम्राज्य के उदय का कारण नहीं था?
(A) महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन का एकीकृत प्रभाव।
(B) क्षेत्र की पहाड़ी भौगोलिक स्थिति।
(C) मुगल सम्राटों का निरंतर समर्थन।
(D) दक्कन सल्तनत की सेवा में प्राप्त सैन्य और प्रशासनिक अनुभव।

138. पेशवा का पद किसके नेतृत्व में सर्वाधिक शक्तिशाली हो गया, जिससे मराठा राजा नाममात्र का शासक रह गया?
(A) बाजीराव प्रथम
(B) शिवाजी
(C) संभाजी
(D) ताराबाई

139. शिवाजी के प्रशासन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसे 'अष्टप्रधान' कहा जाता था, जो आठ मंत्रियों की एक परिषद थी।
2. अष्टप्रधान के पद वंशानुगत थे।
3. पेशवा परिषद का प्रमुख था, जो प्रधानमंत्री के समान था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

140. मुगल प्रशासन में 'मीर बख्शी' कौन था?
(A) राजस्व विभाग का प्रमुख।
(B) सैन्य विभाग का प्रमुख और मुख्य वेतन अधिकारी।
(C) न्यायपालिका का प्रमुख।
(D) धार्मिक और धर्मार्थ बंदोबस्ती मंत्री।

141. 'दाग' (अश्वों को दागना) और 'चेहरा' (सैनिकों का विवरणात्मक रोल) की प्रणाली को किसके द्वारा कठोरता से लागू किया गया था?
(A) इल्तुतमिश
(B) बलबन
(C) अलाउद्दीन खिलजी
(D) मुहम्मद बिन तुगलक

142. बहमनी साम्राज्य के उत्तराधिकारी राज्यों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
(A) बरार, बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा, बीदर
(B) बीजापुर, बरार, अहमदनगर, बीदर, गोलकुंडा
(C) अहमदनगर, बीजापुर, बरार, गोलकुंडा, बीदर
(D) बरार, अहमदनगर, बीदर, बीजापुर, गोलकुंडा

143. तालिकोटा के युद्ध के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) इसके परिणामस्वरुप विजयनगर (हम्पी) नगर को लूटा गया।
(B) यह विजयनगर साम्राज्य और बहमनी साम्राज्य के बीच लड़ा गया था।
(C) विजयनगर की सेना का नेतृत्व कृष्णदेवराय ने किया था।
(D) इसने दक्कन में विजयनगर साम्राज्य की सर्वोच्चता स्थापित की।

144. 'अमरम' विजयनगर साम्राज्य में एक भूमि धारण प्रणाली थी जहाँ भूमि किसे प्रदान की जाती थी?
(A) धार्मिक सेवाओं के लिए ब्राह्मणों को।
(B) सेना के रखरखाव के लिए सैन्य कमांडरों (नायकों) को।
(C) प्रत्यक्ष कृषि के लिए किसानों को।
(D) सामूहिक कृषि के लिए ग्रामीण समुदायों को।

145. 'पॉलीगार' (पालयक्कारर) शब्द का अर्थ है:
(A) मध्यकालीन दक्षिण भारत में बुनकरों की एक व्यापारिक श्रेणी।
(B) दक्षिण भारत में एक सामंती स्वामी या अधीनस्थ सरदार।
(C) हिंद महासागर में व्यापार के लिए उपयोग किया जाने वाला एक व्यापारिक पोत।
(D) एक प्रमुख मंदिर परिसर का पुजारी।

146. अरब आक्रमण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मुहम्मद बिन कासिम के आक्रमण से सिंध में अरब शासन की स्थापना हुई।
कथन II: यह शासन पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में तेजी से विस्तारित हुआ।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(C) दोनों कथन सही हैं।
(D) दोनों कथन गलत हैं।

147. गुहिल वंश के बप्पा रावल को राजस्थानी लोकगाथाओं में उनकी किस भूमिका के लिए सराहा जाता है?
(A) मुहम्मद गोरी को पराजित करने के लिए।
(B) अकबर की अधीनता स्वीकार करने के लिए।
(C) प्रारंभिक अरब आक्रमणों का प्रतिरोध करने के लिए।
(D) जोधपुर नगर के निर्माण के लिए।

148. गजनी के महमूद के भारत पर आक्रमणों का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) भारत में एक विशाल साम्राज्य स्थापित करने की इच्छा।
(B) भारतीय जनसंख्या का धर्मांतरण करने का धार्मिक उत्साह।
(C) कन्नौज के शासकों के साथ व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता।
(D) अपने मध्य एशियाई साम्राज्य के लिए धन लूटना।

149. चौसा का युद्ध (1539) किसकी महत्वपूर्ण विजय थी?
(A) गुजरात के शासक के विरुद्ध हुमायूँ की।
(B) हेमू के विरुद्ध अकबर की।
(C) हुमायूँ के विरुद्ध शेरशाह सूरी की।
(D) लोदियों के विरुद्ध बाबर की।

150. अकबर के शासनकाल की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. जज़िया की समाप्ति
2. चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी
3. दीन-ए-इलाही की घोषणा
4. पानीपत का द्वितीय युद्ध
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 4, 1, 2, 3
(B) 1, 4, 2, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 2, 4, 1, 3

151. औरंगजेब के विरुद्ध जाट विद्रोह का नेतृत्व किन नेताओं ने किया था?
(A) बंदा बहादुर
(B) छत्रसाल
(C) दुर्गादास राठौर
(D) चूड़ामन और बदन सिंह

152. शिवाजी के अष्टप्रधान के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (मंत्री)
P. अमात्य
Q. सचिव
R. सेनापति
S. न्यायाधीश
सूची II: (विभाग)
1. प्रधान सेनापति
2. मुख्य न्यायाधीश
3. वित्त मंत्री
4. शाही पत्राचार
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

153. दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था फारसी-इस्लामी और भारतीय परंपराओं का मिश्रण थी। राज्य पत्राचार से संबंधित विभाग को क्या कहा जाता था?
(A) दीवान-ए-अर्ज
(B) दीवान-ए-रिसालत
(C) दीवान-ए-इंशा
(D) दीवान-ए-बंदगान

237. मुगलों के विरुद्ध गोंड प्रतिरोध किस क्षेत्र में केंद्रित था?
(A) मालवा
(B) बरार
(C) गढ़-कटंगा
(D) खानदेश

238. बहमनी साम्राज्य का उदय किसके दुर्बल होने का सीधा परिणाम था?
(A) खिलजी वंश
(B) विजयनगर साम्राज्य
(C) काकतीय साम्राज्य
(D) तुगलक वंश

239. पेशवा किस छत्रपति के समय प्रमुखता में आए?
(A) शाहू
(B) शिवाजी द्वितीय
(C) संभाजी
(D) राजाराम

240. शेरशाह सूरी की भू-राजस्व प्रणाली महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसमें:
(A) किसानों पर कर समाप्त कर दिए गए थे।
(B) व्यवस्थित माप और मूल्यांकन पद्धति थी।
(C) कुलीनों को भूमि का स्वामित्व दिया गया था।
(D) सैन्य सेवा के रूप में सभी कर एकत्र किए गए थे।

241. दिल्ली सल्तनत में 'इक्ता' का तात्पर्य है:
(A) एक वंशानुगत भूमि अनुदान
(B) वेतन के बदले एक राजस्व आवंटन
(C) नकद में दिया जाने वाला वेतन
(D) एक धार्मिक कर

242. सिंध की अरब विजय मुख्य रूप से किसके कारण एक पृथक घटना बनी रही?
(A) गुर्जर-प्रतिहारों का प्रतिरोध।
(B) खलीफा द्वारा अरब सेनाओं को वापस बुला लिया जाना।
(C) अरब सेना में एक विनाशकारी महामारी।
(D) दुर्गम रेगिस्तानी भौगोलिक स्थिति।

243. गुलाम वंश का प्रथम शासक कौन था?
(A) इल्तुतमिश
(B) बलबन
(C) कुतुबुद्दीन ऐबक
(D) रज़िया सुल्तान

244. अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण का समापन किस प्रसिद्ध युद्ध में हुआ?
(A) पानीपत का द्वितीय युद्ध
(B) बक्सर का युद्ध
(C) प्लासी का युद्ध
(D) पानीपत का तीसरा युद्ध

245. दक्कन में औरंगजेब का दीर्घकालिक और अंततः निरर्थक युद्ध मुख्य रूप से किसके विरुद्ध था?
(A) पुर्तगाली
(B) राजपूत
(C) मराठा
(D) ब्रिटिश

246. तालिकोटा का युद्ध विजयनगर साम्राज्य और किसके बीच लड़ा गया था?
(A) एक एकल इकाई के रूप में बहमनी साम्राज्य
(B) दक्कन सल्तनतों का एक गठबंधन
(C) मराठा
(D) मुगल साम्राज्य

247. 'अष्टप्रधान' शब्द किससे संबंधित है?
(A) बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग
(B) आठ महत्वपूर्ण ग्रंथों का संग्रह
(C) मौर्य साम्राज्य के आठ प्रांत
(D) शिवाजी के आठ मंत्रियों की परिषद

248. विजयनगर प्रशासनिक व्यवस्था में 'नयंकर' प्रणाली का तात्पर्य था:
(A) सैन्य प्रमुखों को भूमि आवंटित करने की प्रणाली।
(B) ग्राम स्वशासन की एक प्रणाली।
(C) केंद्रीय न्यायिक प्रणाली।
(D) राजस्व और वित्त विभाग।

249. 'मनसबदारी' प्रणाली के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) यह प्रारंभ से ही एक वंशानुगत प्रणाली थी।
(B) 'ज़ात' उन अश्वों की संख्या को इंगित करता था जिन्हें एक मनसबदार को रखना होता था।
(C) पद और वेतन के लिए एक श्रेणीकरण प्रणाली।
(D) 'सवार' अभिजात वर्ग के व्यक्तिगत पद और वेतन को इंगित करता था।

250. अकबर द्वारा प्रवर्तित 'सुलह-ए-कुल' की अवधारणा में सम्मिलित था:
(A) विभिन्न धर्मों के बीच शांति और सद्भाव की नीति।
(B) सभी को दीन-ए-इलाही में धर्मांतरित होने के लिए विवश करना।
(C) अन्य धर्मों के प्रति पूर्ण असहिष्णुता।
(D) सभी धार्मिक समूहों का एक सैन्य गठबंधन बनाना।

251. निम्नलिखित में से किस शासक ने अरबों को पराजित किया और सिंध से उनकी पूर्व की ओर प्रगति को रोका?
(A) पृथ्वीराज चौहान
(B) राजा दाहिर
(C) राजा सुहेलदेव
(D) गुर्जर-प्रतिहार

(D) 1030 ईस्वी में

167. तराइन का प्रथम और द्वितीय युद्ध मुहम्मद गोरी और किसके बीच लड़ा गया था?
(A) कन्नौज के जयचंद
(B) मेवाड़ के राणा कुंभा
(C) राजा सुहेलदेव
(D) पृथ्वीराज चौहान

168. तैमूर के आक्रमण के समय दिल्ली पर किस वंश का शासन था?
(A) तुगलक वंश
(B) खिलजी वंश
(C) सैयद वंश
(D) लोदी वंश

169. सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन, 'दीवान-ए-कोही' की स्थापना और राजधानी का दौलताबाद स्थानांतरण किस सुल्तान से संबंधित है?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) फिरोज शाह तुगलक
(C) मुहम्मद बिन तुगलक
(D) सिकंदर लोदी

170. निम्नलिखित में से कौन-सा युद्ध बाबर द्वारा नहीं लड़ा गया था?
(A) चौसा का युद्ध
(B) पानीपत का प्रथम युद्ध
(C) खानवा का युद्ध
(D) घाघरा का युद्ध

171. जहाँगीर द्वारा गुरु अर्जन देव को मृत्युदंड देना मुगलों और किसके बीच संबंधों में एक महत्वपूर्ण मोड़ था?
(A) जाट
(B) सतनामी
(C) राजपूत
(D) सिख

172. बहमनी साम्राज्य की स्थापना दक्कन में किसके अधिकार के विरुद्ध विद्रोह के रूप में की गई थी?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) फिरोज शाह तुगलक
(D) विजयनगर साम्राज्य

173. प्रशासन की नयंकर प्रणाली, जहाँ सैन्य प्रमुखों को सेवा के बदले भूमि दी जाती थी, किसकी एक प्रमुख विशेषता थी?
(A) मुगल साम्राज्य
(B) दिल्ली सल्तनत
(C) विजयनगर साम्राज्य
(D) मराठा राज्य

174. तृतीय पेशवा, बालाजी बाजीराव, मराठों के लिए किस बड़ी सैन्य आपदा से जुड़े हैं?
(A) राक्षसी-तांगड़ी का युद्ध
(B) नादिर शाह के विरुद्ध पराजय
(C) बेसिन की संधि
(D) पानीपत का तीसरा युद्ध

175. भू-राजस्व की 'ज़ब्ती' प्रणाली, जिसे बाद में टोडरमल द्वारा विकसित किया गया था, किसके प्रशासन की एक प्रमुख विशेषता थी?
(A) मुगल सम्राट अकबर
(B) शेरशाह सूरी
(C) शिवाजी
(D) अलाउद्दीन खिलजी

176. 'सुलह-ए-कुल' का क्या अर्थ है?
(A) पूर्ण विजय
(B) पूर्ण शांति
(C) धार्मिक युद्ध
(D) दैवीय विश्वास

177. 712 ईस्वी में सिंध पर अरब आक्रमण का नेतृत्व किसने किया था?
(A) उबेदुल्ला
(B) मुहम्मद बिन कासिम
(C) बुदैल
(D) अल-हज्जाज

178. मुहम्मद गोरी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मुहम्मद गोरी के आक्रमणों के परिणामस्वरूप दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई।
कथन II: गजनी के महमूद के विपरीत, गोरी का लक्ष्य भारत में एक स्थायी साम्राज्य स्थापित करना था और उसने अपने विजित क्षेत्रों को अपने विश्वसनीय सेनापति, कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंप दिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

179. तुगलक वंश का संस्थापक कौन था?
(A) मुहम्मद बिन तुगलक
(B) फिरोज शाह तुगलक
(C) गयासुद्दीन तुगलक
(D) नसीरुद्दीन महमूद शाह तुगलक

180. वह अफगान शासक कौन था जिसने मुगल सम्राट हुमायूँ को भारत से बाहर खदेड़ दिया था?
(A) इब्राहिम लोदी

209. दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा प्रारंभिक मुगल वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके निर्माण का आदेश किसने दिया था?
(A) स्वयं हुमायूँ ने
(B) उसकी पत्नी, हमीदा बानू बेगम ने
(C) उसके पुत्र, अकबर ने
(D) उसकी बहन, गुलबदन बेगम ने

210. मुगल उत्पीड़न के उत्तर में किस गुरु ने सिख सैन्य समुदाय, 'खालसा' की स्थापना की थी?
(A) गुरु गोविंद सिंह
(B) गुरु नानक
(C) गुरु तेग बहादुर
(D) गुरु अर्जन देव

211. बहमनी साम्राज्य मुख्य रूप से किस पड़ोसी साम्राज्य के साथ संघर्षरत था?
(A) उड़ीसा के गजपति
(B) मालवा की सल्तनत
(C) विजयनगर साम्राज्य
(D) मुगल साम्राज्य

212. पुर्तगालियों पर मराठा विजय और बेसिन पर अधिकार किस पेशवा की एक बड़ी उपलब्धि थी?
(A) बालाजी विश्वनाथ
(B) बालाजी बाजीराव
(C) माधवराव
(D) बाजीराव प्रथम

213. शिवाजी के राजस्व प्रशासन की एक प्रमुख विशेषता थी:
(A) किसानों पर सभी करों की समाप्ति।
(B) वंशानुगत जमींदारों के माध्यम से राजस्व का संग्रह।
(C) भूमि माप के माध्यम से राजस्व मूल्यांकन।
(D) सभी कृषि उपज पर 50% का एक समान कर लगाना।

214. तुर्की सुल्तानों के अधीन प्रांतीय प्रशासन के प्रमुख को किस रूप में जाना जाता था?
(A) कोतवाल
(B) वली या मुक्ती
(C) शिकदार
(D) आमिल

215. 'ज़ात' और 'सवार' रैंक किस प्रणाली के दो मुख्य घटक थे?
(A) इक्ता प्रणाली
(B) नयंकर प्रणाली
(C) रैयतवाड़ी प्रणाली
(D) मनसबदारी प्रणाली

216. सिंध पर अरब आक्रमण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सिंध पर अरब आक्रमण का समग्र रूप से भारत पर सीमित राजनीतिक प्रभाव पड़ा।
कथन II: अरबों की प्रगति को गुर्जर-प्रतिहारों जैसे शक्तिशाली राज्यों ने रोक दिया था और वे सिंध तक ही सीमित रहे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

217. बाबर द्वारा पराजित लोदी वंश का अंतिम शासक था:
(A) बहलोल लोदी
(B) सिकंदर लोदी
(C) इब्राहिम लोदी
(D) दौलत खान लोदी

218. मेवाड़ के राजपूत राज्य ने मुगल शासन का सर्वाधिक लंबे समय तक प्रतिरोध किया। चित्तौड़गढ़ के पतन के बाद किस शासक ने संघर्ष जारी रखा?
(A) महाराणा प्रताप
(B) राणा उदय सिंह
(C) राणा सांगा
(D) राजा मान सिंह

219. बहमनी साम्राज्य के अवशेषों से उत्पन्न दक्कन की पाँच सल्तनतें अक्सर आपस में संघर्षरत थीं, किंतु वे किसके विरुद्ध एकजुट हुईं?
(A) मुगल साम्राज्य
(B) मराठा
(C) पुर्तगाली
(D) विजयनगर साम्राज्य

220. 'हिंदवी स्वराज्य' की अवधारणा सबसे निकटता से किससे जुड़ी है?
(A) कृष्णदेवराय
(B) शिवाजी
(C) महाराणा प्रताप
(D) गुरु गोविंद सिंह

221. मुगलों के अधीन 'मीर बख्शी' ने उन कर्तव्यों का निर्वहन किया जो आधुनिक काल के किसके सर्वाधिक समान हैं?
(A) वरिष्ठ वित्त मंत्री
(B) मुख्य न्यायिक अधिकारी
(C) सैन्य वेतन अधिकारी
(D) संघीय गृह मंत्री

222. भू-राजस्व में प्रशासनिक नवाचार 'पट्टा' (स्वामित्व विलेख) और 'कबूलियत' (सहमति पत्र) किसके द्वारा आरंभ किए गए थे?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) अकबर

194. मध्यकालीन स्रोतों में 'हुंडी' शब्द किसके संदर्भ में पाया जाता है?
(A) व्यापार और वित्त
(B) सैन्य संगठन
(C) राजस्व संग्रह
(D) न्यायिक घोषणाएँ

195. गुहिल वंश के किस राजा को प्रारंभिक अरब आक्रमणकारियों के विरुद्ध प्रतिरोध के लिए जाना जाता है?
(A) महाराणा प्रताप
(B) राणा सांगा
(C) बप्पा रावल
(D) राणा कुंभा

196. गजनी के महमूद के आक्रमणों का मुख्य लक्ष्य क्या था?
(A) चोलों और पांड्यों के दक्षिणी राज्य।
(B) बंगाल और असम का उत्तर-पूर्वी क्षेत्र।
(C) कश्मीर और हिमालय के दूरस्थ क्षेत्र।
(D) समृद्ध उत्तरी मंदिर नगर।

197. खिलजी वंश की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) कुतुबुद्दीन मुबारक शाह
(C) जलालुद्दीन फिरोज खिलजी
(D) मलिक काफूर

198. खानवा का युद्ध (1527) बाबर और किसके नेतृत्व वाली राजपूत सेना के बीच लड़ा गया था?
(A) मेवाड़ के राणा प्रताप
(B) मेवाड़ के राणा सांगा
(C) चंदेरी के मेदिनी राय
(D) आमेर के राजा मान सिंह

199. नादिर शाह के आक्रमण के फलस्वरूप दिल्ली से अपार संपत्ति लूटी गई, जिसमें सम्मिलित थे:
(A) नालंदा का पुस्तकालय
(B) सोमनाथ मंदिर के द्वार
(C) मुगल नौसेना का पूरा बेड़ा
(D) कोहिनूर हीरा और मयूर सिंहासन

200. मुगल सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में किस क्षेत्र के राजपूतों का प्रतिरोध जारी रहा?
(A) मेवाड़
(B) आमेर (जयपुर)
(C) मारवाड़ (जोधपुर)
(D) बीकानेर

201. किस शासक के शासनकाल को विजयनगर साम्राज्य का 'स्वर्ण युग' माना जाता है?
(A) हरिहर प्रथम
(B) बुक्का प्रथम
(C) कृष्णदेवराय
(D) अच्युत देव राय

202. पेशवा का पद किस मराठा छत्रपति के शासनकाल में सर्वोच्च और वंशानुगत हो गया?
(A) शाहू
(B) शिवाजी
(C) संभाजी
(D) राजाराम

203. सल्तनत प्रशासन में 'दीवान-ए-विजारत' मुख्य रूप से किसका विभाग था?
(A) सैन्य
(B) विदेशी मामले
(C) धार्मिक मामले
(D) राजस्व और वित्त

204. शेरशाह सूरी के प्रशासनिक सुधारों में निम्नलिखित में से क्या सम्मिलित नहीं था?
(A) चांदी का 'रुपया' और तांबे का 'दाम' प्रचलित करना।
(B) मुगल मनसबदारी प्रणाली का उपयोग।
(C) सड़कों का निर्माण और रखरखाव, जैसे ग्रैंड ट्रंक रोड।
(D) एक सुव्यवस्थित गुप्तचर प्रणाली।

205. मुगल भारत में 'जागीर' शब्द का तात्पर्य था:
(A) एक जमींदार के स्वामित्व वाली वंशानुगत भूमि।
(B) सम्राट के प्रत्यक्ष नियंत्रण वाली भूमि।
(C) वेतन के बदले आवंटित राजस्व।
(D) धार्मिक विभूतियों को दिया गया कर-मुक्त अनुदान।

206. अकबर द्वारा समाप्त किए जाने के बाद किस मुगल सम्राट ने गैर-मुस्लिमों पर पुनः 'जज़िया' आरोपित किया था?
(A) जहाँगीर
(B) शाहजहाँ
(C) बहादुर शाह प्रथम
(D) औरंगजेब

207. किस चालुक्य राजा को अरबों को हराने का श्रेय दिया जाता है, जिससे सिंध से उनकी दक्षिण की ओर प्रगति रुक गई?
(A) विक्रमादित्य द्वितीय
(B) पुलकेशिन द्वितीय
(C) विक्रमादित्य प्रथम
(D) कीर्तिवर्मन द्वितीय

208. मुगलों से पूर्व दिल्ली सल्तनत पर शासन करने वाला लोदी वंश किस जातीय मूल का था?
(A) तुर्की
(B) अफगान
(C) मंगोल
(D) फारसी

(B) सिकंदर लोदी
(C) महमूद लोदी
(D) शेरशाह सूरी

181. दक्कन में औरंगजेब के दीर्घकालिक युद्धों ने मुगल कोष को रिक्त कर दिया और साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण बना। वहाँ उसके मुख्य प्रतिद्वंद्वी कौन थे?
(A) राजपूत और जाट
(B) पुर्तगाली और ब्रिटिश
(C) दक्कन की सल्तनतें और मराठा
(D) सिख और सतनामी

182. विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक, हरिहर और बुक्का, मूल रूप से किस साम्राज्य की सेवा में थे?
(A) द्वारसमुद्र के होयसल
(B) वारंगल के काकतीय
(C) मदुरै के पांड्या
(D) दिल्ली सल्तनत

183. पेशवाओं ने अपना प्रशासनिक मुख्यालय कहाँ स्थापित किया था?
(A) सतारा
(B) रायगढ़
(C) मुंबई
(D) पुणे

184. दिल्ली सल्तनत के प्रशासन में 'आमिल' किस कार्य के लिए उत्तरदायी अधिकारी था?
(A) भू-राजस्व एकत्र करना।
(B) नगर के रक्षक दल की कमान संभालना।
(C) सैन्य अभियानों का नेतृत्व करना।
(D) दीवानी मामलों में न्याय प्रदान करना।

185. शेरशाह और मुगलों के प्रशासन के बीच प्राथमिक अंतर क्या था?
(A) शेरशाह का प्रशासन अधिक केंद्रीकृत था।
(B) मुगलों ने मनसबदारी प्रणाली का उपयोग नहीं किया।
(C) मुगल प्रणाली की स्थायी प्रकृति।
(D) शेरशाह अफगान प्रमुखों पर निर्भर था, जबकि मुगलों के पास एक विविध कुलीन वर्ग था।

186. राजस्व एकत्र करने वाले वंशानुगत जिला अधिकारी के रूप में 'देशमुख' की अवधारणा किसके मध्यकालीन प्रशासन के केंद्र में है?
(A) महाराष्ट्र का क्षेत्रीय राज्य
(B) बंगाल
(C) पंजाब
(D) केरल

187. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विजयनगर और बहमनी साम्राज्य निरंतर युद्धरत थे।
कारण (R): वे दोनों उपजाऊ रायचूर दोआब और कोंकण तट के समुद्री बंदरगाहों पर नियंत्रण चाहते थे।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

188. भारत पर तैमूर के आक्रमण का एक महत्वपूर्ण परिणाम निम्नलिखित में से क्या था?
(A) इसने तुगलक वंश को सुदृढ़ किया।
(B) इसने व्यापक विनाश किया और दिल्ली सल्तनत को घातक रूप से कमजोर कर दिया।
(C) इसके कारण मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई।
(D) इसके परिणामस्वरूप दिल्ली और समरकंद के बीच एक दीर्घकालिक गठबंधन हुआ।

189. घाघरा का युद्ध भारत में किस विजेता द्वारा लड़ा गया अंतिम बड़ा युद्ध था?
(A) गजनी के महमूद
(B) मुहम्मद गोरी
(C) बाबर
(D) तैमूर

190. निम्नलिखित में से कौन-सा सही सुमेलित नहीं है?
(A) हुमायूँ - शेरशाह सूरी के विरुद्ध लड़ा
(B) अकबर - चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी
(C) जहाँगीर - चित्रकला को संरक्षण दिया
(D) शाहजहाँ - सतनामी प्रतिरोध का नेतृत्व किया

191. मराठा साम्राज्य के उदय को निम्नलिखित को छोड़कर अन्य सभी द्वारा सुगम बनाया गया था:
(A) दक्कन की स्थिरता की दीर्घ अवधि।
(B) शिवाजी जैसी विभूतियों का सुदृढ़ नेतृत्व।
(C) भक्ति आंदोलन की एकीकृत शक्ति।
(D) महाराष्ट्र की ऊबड़-खाबड़ भौगोलिक स्थिति।

192. शिवाजी के प्रशासन में 'पंडितराव' किसके लिए उत्तरदायी थे?
(A) सैन्य रणनीति।
(B) धार्मिक मामले और दान।
(C) वित्तीय प्रबंधन।
(D) विदेशी संबंध।

193. मुगल प्रांतीय प्रशासन केंद्रीय प्रशासन की एक प्रतिकृति था। एक प्रांत ('सूबे') के गवर्नर को क्या कहा जाता था?
(A) दीवान
(B) सूबेदार या नाज़िम
(C) बख्शी
(D) कोतवाल

(D) शेरशाह सूरी

223. विजयनगर के संदर्भ में 'अमरम' शब्द किससे संबंधित है?
(A) सैन्य प्रमुख को भूमि या राजस्व का अनुदान।
(B) एक वंशानुगत ग्रामीण मुखिया।
(C) व्यापार और वाणिज्य पर कर।
(D) एक शाही महल।

224. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. 'चौथ' एक क्षेत्र के राजस्व के एक-चौथाई हिस्से के बराबर का कर था।
2. यह मराठों द्वारा उन भूमियों पर आरोपित किया जाता था जिन पर वे प्रत्यक्ष शासन नहीं करते थे।
3. 'चौथ' का भुगतान मराठा छापों के विरुद्ध एक सुरक्षा गारंटी थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

225. निम्नलिखित में से कौन गजनी के महमूद की सेनाओं का प्रतिरोध करने के लिए जाना जाता है?
(A) राजा दाहिर
(B) राजा सुहेलदेव
(C) पृथ्वीराज चौहान
(D) बप्पा रावल

226. वह दिल्ली सुल्तान कौन था जिस पर अपने पिता और पूर्ववर्ती गयासुद्दीन तुगलक की हत्या का आरोप है?
(A) मुहम्मद बिन तुगलक
(B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) फिरोज शाह तुगलक
(D) कैकुबाद

227. चंदेरी का युद्ध बाबर द्वारा किसकी शक्ति को कम करने के लिए लड़ा गया था?
(A) पूर्व में अफगान
(B) दिल्ली में लोदी
(C) मेदिनी राय के नेतृत्व में राजपूत
(D) गुजरात का सुल्तान

228. औरंगजेब के शासनकाल में विद्रोह करने वाले सतनामी किस संप्रदाय के थे?
(A) पंजाब के सिख योद्धा
(B) राजस्थान के राजपूत कुलीन
(C) गुजरात के मुस्लिम व्यापारी
(D) नारनौल क्षेत्र के हिंदू किसान

229. विजयनगर साम्राज्य के सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक कृष्णदेवराय किस वंश के थे?
(A) संगम
(B) सालुव
(C) तुलुव
(D) अराविदु

230. शिवाजी के अष्टप्रधान में 'सुमंत' किस विभाग का मंत्री था?
(A) वित्त
(B) विदेश मामले
(C) न्याय
(D) सेना

231. मुगलों की प्रशासनिक प्रणाली भारतीय और किस परंपरा का संश्लेषण थी?
(A) ब्रिटिश परंपराओं का
(B) चीनी परंपराओं का
(C) केवल तुर्की परंपराओं का
(D) फारसी-अरबी परंपराओं का

232. 'जौहर' एक प्रथा थी जो किससे संबद्ध थी?
(A) राजपूत युद्ध
(B) मराठा युद्ध
(C) सिख धार्मिक समारोह
(D) सल्तनत कालीन दरबारी शिष्टाचार

233. गुहिल वंश का वह शासक कौन था जिसे अरब आक्रमणों को विफल करने का श्रेय दिया जाता है?
(A) हम्मीर देव
(B) राणा कुंभा
(C) बप्पा रावल
(D) महाराणा प्रताप

234. मुहम्मद गोरी के भारत पर आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) एक मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करना
(B) मंदिरों को लूटना
(C) मंगोलों से शरण पाना
(D) मसाला व्यापार को नियंत्रित करना

235. दिल्ली में सैयद वंश की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) बहलोल लोदी
(B) तैमूर
(C) आलम शाह
(D) खिज्र खान

236. 1567-68 में अकबर द्वारा चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी किसके विरुद्ध निर्देशित थी?
(A) महाराणा प्रताप
(B) राणा उदय सिंह
(C) राणा सांगा
(D) राणा कुंभा

267. दिल्ली सल्तनत में तुर्की प्रशासन का एक प्रमुख पक्ष 'इक्ता' था, जो था:
(A) एक वंशानुगत भूमि अनुदान
(B) एक सैन्य रैंक
(C) एक प्रकार का कर
(D) राजस्व आवंटन की एक प्रणाली

268. विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था किसके लिए प्रसिद्ध है?
(A) मनसबदारी प्रणाली
(B) आयगर और नयंकर प्रणालियाँ
(C) इक्ता प्रणाली
(D) ज़ब्ती प्रणाली

269. मनसबदारी प्रणाली में 'ज़ात' रैंक क्या निर्धारित करती थी?
(A) उन सैनिकों की संख्या जिन्हें मनसबदार को रखना होता था।
(B) वह विशिष्ट प्रांत जहाँ मनसबदार सेवा करेगा।
(C) मनसबदार की स्थिति और वेतन।
(D) मनसबदार के धार्मिक कर्तव्य।

270. 'जौहर' और 'शाका' की अवधारणा किसकी ऐतिहासिक परंपराओं से जुड़ी है?
(A) मराठा
(B) जाट
(C) सिख
(D) राजपूत

271. गुहिल वंश का वह राजा कौन था जिसने प्रारंभिक अरब आक्रमणों का कड़ा प्रतिरोध किया था?
(A) बप्पा रावल
(B) राणा सांगा
(C) महाराणा प्रताप
(D) राणा कुंभा

272. मुहम्मद बिन कासिम के आक्रमण ने किस भारतीय राजा को लक्ष्य बनाया था?
(A) पृथ्वीराज चौहान
(B) दाहिर
(C) जयचंद
(D) आनंदपाल

273. भारत में गजनी के महमूद और मुहम्मद गोरी के उद्देश्यों में प्राथमिक अंतर यह था कि:
(A) गजनी इस्लाम का प्रसार करना चाहता था, जबकि गोरी धन चाहता था।
(B) गोरी ने साम्राज्य की स्थापना चाही जबकि गजनी ने लूटपाट की।
(C) गजनी एक तुर्क था, जबकि गोरी एक अरब था।
(D) गोरी ने दक्षिण से आक्रमण किया, जबकि गजनी ने उत्तर-पश्चिम से।

274. किसके पतन के पश्चात सैयद वंश ने अल्पकाल के लिए शासन किया?
(A) तुगलक वंश
(B) खिलजी वंश
(C) लोदी वंश
(D) गुलाम वंश

275. बाबर ने घाघरा का युद्ध किसके विरुद्ध लड़ा था?
(A) राणा सांगा के नेतृत्व में राजपूत
(B) गुजरात का सुल्तान
(C) पूर्व में अफगान
(D) चंदेरी का शासक

276. गोंड रानी दुर्गावती का प्रतिरोध किस मुगल सम्राट की सेनाओं के विरुद्ध था?
(A) हुमायूँ
(B) जहाँगीर
(C) शाहजहाँ
(D) अकबर

277. बहमनी साम्राज्य के विघटन से कितने स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ?
(A) तीन
(B) चार
(C) पाँच
(D) छह

278. 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना किसका जीवन मिशन था?
(A) बाजीराव प्रथम
(B) शिवाजी
(C) बालाजी विश्वनाथ
(D) संभाजी

279. शिवाजी के प्रशासन में 'पेशवा' कौन था?
(A) मुख्य न्यायाधीश
(B) वित्त मंत्री
(C) विदेश मंत्री
(D) प्रधानमंत्री

280. शेरशाह सूरी का प्रशासन किन सुधारों के लिए उल्लेखनीय है?
(A) भू-राजस्व, मुद्रा और संचार।
(B) नौसैनिक युद्ध
(C) धार्मिक नीति
(D) मनसबदारी प्रणाली

281. मध्यकालीन भारत में 'हुंडी' शब्द का तात्पर्य था:
(A) एक भूमि अनुदान
(B) एक प्रकार की घुड़सवार सेना
(C) एक विनिमय पत्र
(D) एक शाही फरमान

252. गजनी के महमूद के सत्रह आक्रमणों का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) इस्लाम का प्रसार करना
(B) संपत्ति लूटना
(C) भारत में साम्राज्य स्थापित करना
(D) राजपूतों को पराजित करना

253. बाजार विनियमन नीति किसके शासनकाल की एक विशिष्ट पहचान थी?
(A) बलबन
(B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) अलाउद्दीन खिलजी
(D) फिरोज शाह तुगलक

254. पानीपत का तीसरा युद्ध (1761) अहमद शाह अब्दाली और किसके बीच लड़ा गया था?
(A) मुगल
(B) सिख
(C) राजपूत
(D) मराठा

255. मुगलों के विरुद्ध जाट प्रतिरोध किसके शासनकाल के दौरान विशेष रुप से सशक्त था?
(A) औरंगजेब
(B) अकबर
(C) जहाँगीर
(D) शाहजहाँ

256. बहमनी साम्राज्य का संस्थापक कौन था?
(A) महमूद गवां
(B) अलाउद्दीन हसन बहमन शाह
(C) फिरोज शाह बहमनी
(D) मुहम्मद शाह प्रथम

257. शिवाजी द्वारा 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना किसका प्रतीक थी?
(A) एक हिंदू धर्मतांत्रिक राज्य
(B) एक संप्रभु स्वदेशी शासन
(C) एक मराठा परिसंघ
(D) मुगलों का एक सहायक राज्य

258. शिवाजी का प्रशासन किसके लिए जाना जाता है?
(A) अष्टप्रधान परिषद
(B) मनसबदारी प्रणाली
(C) इक्ता प्रणाली
(D) नयंकर प्रणाली

259. शेरशाह सूरी का 'परगना' के लिए प्रशासनिक मुख्यालय एक शिकदार और एक मुंसिफ द्वारा प्रबंधित किया जाता था। यह क्या दर्शाता है?
(A) एक अत्यधिक विकेंद्रीकृत प्रणाली।
(B) शासन का विशुद्ध सैन्य स्वरुप।
(C) एक सुव्यवस्थित स्थानीय प्रशासन।
(D) राजस्व की उपेक्षा करने वाली प्रणाली।

260. 'जज़िया' शब्द को सबसे अच्छी तरह से इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(A) युद्ध में प्राप्त लूट के माल पर कर।
(B) कृषि भूमि पर कर।
(C) आयातित वस्तुओं पर सीमा शुल्क।
(D) सुरक्षा के बदले गैर-मुस्लिम प्रजा पर आरोपित कर।

261. कश्मीर का वह राजा जिसे अरब आक्रमणकारियों को पराजित करने वाला बताया गया है:
(A) अवंतीवर्मन
(B) दिद्दा
(C) ललितादित्य
(D) जैनुल-आबिदीन

262. तैमूर ने किसके शासनकाल के दौरान भारत पर आक्रमण किया था?
(A) खिलजी वंश
(B) तुगलक वंश
(C) सैयद वंश
(D) लोडी वंश

263. खानवा के युद्ध में बाबर की विजय किसके विरुद्ध थी?
(A) इब्राहिम लोदी
(B) नुसरत शाह
(C) मेदिनी राय
(D) राणा सांगा

264. किसकी शहादत के पश्चात मुगलों के विरुद्ध सिख प्रतिरोध एक सशस्त्र संघर्ष में परिवर्तित हो गया?
(A) गुरु अर्जन देव
(B) गुरु नानक
(C) गुरु अंगद
(D) गुरु राम दास

265. विजयनगर और बहमनी साम्राज्य किसके पतन के पश्चात उभरी दो प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियाँ थीं?
(A) मौर्य साम्राज्य
(B) गुप्त साम्राज्य
(C) दिल्ली सल्तनत (तुगलक वंश)
(D) मुगल साम्राज्य

266. मराठा साम्राज्य किसके अधीन अपने विस्तार के शिखर पर पहुँचा?
(A) पेशवा
(B) छत्रपति
(C) होलकर
(D) सिंधिया

154. मुगल प्रशासन में 'मनसब' क्या था?
(A) एक पद जिसने अधिकारी के वेतन और सैन्य उत्तरदायित्वों को निर्धारित किया।
(B) निष्ठावान कुलीनों को दी जाने वाली एक वंशानुगत उपाधि।
(C) धार्मिक बंदोबस्ती के रूप में दी गई भूमि।
(D) व्यापारियों से एकत्र किया गया कर।

155. 'इक्ता' प्रणाली के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे सटीक कथन है?
(A) इसने धारक को भूमि का स्थायी स्वामित्व प्रदान किया।
(B) इसे मुगल सम्राट अकबर ने आरंभ किया था।
(C) इसका उपयोग विशेष रूप से धार्मिक विद्वानों को भुगतान करने के लिए किया जाता था।
(D) यह एक गैर-वंशानुगत राजस्व आवंटन प्रणाली थी।

156. 'चौथ' और 'सरदेशमुखी' किसके द्वारा एकत्र किए जाने वाले दो महत्वपूर्ण कर थे?
(A) विजयनगर साम्राज्य
(B) मराठा
(C) मुगल
(D) बहमनी सल्तनत

157. गुर्जर-प्रतिहारों, पालों और राष्ट्रकूटों के बीच संघर्ष ('त्रिपक्षीय संघर्ष') का मुख्य कारण किस नगर पर नियंत्रण करना था?
(A) दिल्ली
(B) उज्जैन
(C) कन्नौज
(D) पाटलिपुत्र

158. सैयद वंश के संस्थापक खिज्र खान ने किसका वंशज होने का दावा किया था?
(A) चंगेज खान
(B) तैमूर
(C) अंतिम तुगलक सुल्तान
(D) पैगंबर मुहम्मद

159. 1739 में नादिर शाह का भारत पर आक्रमण किस मुगल सम्राट के शासनकाल में हुआ था?
(A) मुहम्मद शाह
(B) फर्रुखसियर
(C) अहमद शाह
(D) आलमगीर द्वितीय

160. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 1565 में तालिकोटा के युद्ध ने विजयनगर साम्राज्य के वैभव के अंत को चिह्नित किया।
कारण (R): बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा और बीदर की दक्कन सल्तनतों की संयुक्त सेनाओं ने विजयनगर की सेना को निर्णायक रूप से पराजित किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

161. मराठों का 'सरदेशमुखी' का दावा क्या था?
(A) राजस्व का एक-चौथाई हिस्सा।
(B) चौथ के अतिरिक्त दस प्रतिशत का उपकर।
(C) लवण उत्पादन पर कर।
(D) व्यापार मेलों में भाग लेने का शुल्क।

162. शेरशाह सूरी की प्रशासनिक व्यवस्था किसके लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करती थी?
(A) अकबर
(B) शिवाजी
(C) बहमनी सुल्तान
(D) ब्रिटिश

163. चोल और विजयनगर प्रशासन में 'नाडु' शब्द किससे संबंधित है?
(A) राजधानी नगर
(B) एक प्रांतीय इकाई
(C) गाँवों का एक समूह
(D) एक सैन्य चौकी

164. 'जौहर' के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह बंदी बनने से बचने के लिए शत्रु सैनिकों द्वारा सामूहिक आत्महत्या की प्रथा थी।
2. यह राजपूत महिलाओं द्वारा अपने सम्मान की रक्षा के लिए किया जाता था।
3. इसके पश्चात अक्सर पुरुष 'शाका' करते थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

165. अरब यात्री अल-मसूदी ने किस भारतीय राजवंश की शक्ति और प्रतिष्ठा का वर्णन किया है, जो अरब विस्तार के प्रतिरोध के लिए प्रसिद्ध था?
(A) पाल
(B) राष्ट्रकूट
(C) गुर्जर-प्रतिहार
(D) चोल

166. गजनी के महमूद का सबसे प्रसिद्ध आक्रमण सोमनाथ मंदिर पर हमला था:
(A) 1001 ईस्वी में
(B) 1025 ईस्वी में
(C) 1018 ईस्वी में

282. 'सुलह-ए-कुल' नीति अकबर के किस प्रयास की अभिव्यक्ति थी?
(A) धार्मिक सहिष्णुता और सद्भाव स्थापित करना।
(B) पूरे भारत पर विजय प्राप्त करना।
(C) एक एकल धर्म, दीन-ए-इलाही को बढ़ावा देना।
(D) उलेमाओं का दमन करना।

283. निम्नलिखित दिल्ली सुल्तानों में से कौन एक विशाल दास विभाग ('दीवान-ए-बंदगान') स्थापित करने के लिए जाना जाता है?
(A) इल्तुतमिश
(B) बलबन
(C) अलाउद्दीन खिलजी
(D) फिरोज शाह तुगलक

284. 1739 में नादिर शाह द्वारा दिल्ली की लूट किसके लिए एक विनाशकारी घटना थी?
(A) दिल्ली सल्तनत
(B) मुगल साम्राज्य
(C) लोदी वंश
(D) मराठा साम्राज्य

285. शाहजहाँ के शासनकाल को मुगल वास्तुकला का स्वर्ण युग माना जाता है, किंतु इसमें निरंतर संघर्ष भी देखा गया, विशेष रूप से:
(A) उत्तर-पूर्व में
(B) पंजाब में
(C) दक्कन में
(D) गुजरात में

286. विजयनगर और बहमनी साम्राज्यों के बीच विवाद का मुख्य बिंदु किस पर नियंत्रण था?
(A) मालाबार तट
(B) मदुरै नगर
(C) पन्ना की रत्न खानें
(D) रायचूर दोआब

287. मराठा साम्राज्य की विस्तारवादी नीति का सर्वाधिक सक्रियता से किस पेशवा ने अनुसरण किया?
(A) बाजीराव प्रथम
(B) बालाजी विश्वनाथ
(C) बालाजी बाजीराव
(D) माधवराव

288. दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था में 'वज़ीर' किसका प्रमुख था?
(A) सैन्य विभाग (दीवान-ए-अर्ज)
(B) वित्त और राजस्व विभाग (दीवान-ए-विजारत)
(C) शाही पत्राचार (दीवान-ए-इंशा)
(D) विदेश विभाग (दीवान-ए-रिसालत)

289. 'सरदेशमुखी' मराठों द्वारा किस आधार पर मांगा गया 10% का अतिरिक्त कर था?
(A) विदेशी आक्रमण से भूमि के रक्षक होने के नाते।
(B) महाराष्ट्र के वंशानुगत प्रधान सरदेशमुख होने के नाते।
(C) दक्कन में सर्वोच्च शक्ति होने के नाते।
(D) व्यापार मार्गों के प्रबंधक होने के नाते।

290. 'पॉलीगार' (पालयक्कारर) क्या था?
(A) दक्षिण भारत में एक अधीनस्थ सामंती सरदार।
(B) मुगल दरबार में एक बहुभाषी विद्वान।
(C) मालाबार तट से व्यापार किया जाने वाला एक प्रकार का मसाला।
(D) बंगाल में बुनकरों का एक समुदाय।

291. राजा दाहिर का बलिदान किसके दौरान हुआ था?
(A) तराइन का प्रथम युद्ध
(B) गजनी के महमूद का आक्रमण
(C) सिंध पर अरब आक्रमण
(D) पंजाब पर मंगोल छापा

292. राजा सुहेलदेव द्वारा दिया गया प्रतिरोध किसकी सेना के विरुद्ध था?
(A) मुहम्मद गोरी
(B) मुहम्मद बिन कासिम
(C) तैमूर
(D) गजनी के महमूद का एक सेनापति

293. खिलजी वंश किसके अंतिम शासकों को अपदस्थ कर सत्ता में आया था?
(A) तुगलक वंश
(B) लोदी वंश
(C) गुलाम वंश
(D) सैयद वंश

294. पानीपत के प्रथम युद्ध के परिणामस्वरूप लोदी वंश का अंत हुआ और किस साम्राज्य की स्थापना हुई?
(A) सूर साम्राज्य
(B) मुगल साम्राज्य
(C) खिलजी सल्तनत
(D) मराठा साम्राज्य

295. जाटों, सिखों और सतनामियों का प्रतिरोध किस मुगल सम्राट द्वारा सामना की गई प्रमुख चुनौतियाँ थीं?
(A) अकबर
(B) शाहजहाँ
(C) जहाँगीर
(D) औरंगजेब

296. विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी किस नदी के तट पर स्थित थी?
(A) तुंगभद्रा

थी। यह व्यवस्था ग्रामीण और प्रांतीय प्रशासन के बीच एक कड़ी थी।

11. (A) केवल 1 और 2
जागीर और इक्ता प्रणालियाँ मध्यकालीन भारत में सैन्य और प्रशासनिक अधिकारियों को भुगतान करने की विधियाँ थीं। इन प्रणालियों में अधिकारियों को भूमि का राजस्व अधिकार दिया जाता था, न कि भूमि का पूर्ण स्वामित्व। इक्ता प्रणाली दिल्ली सल्तनत में प्रचलित थी, जबकि जागीर प्रणाली मुगलों के अधीन थी। अधिकारियों का इन भूमियों पर केवल राजस्व संग्रह का अधिकार होता था और राज्य आवश्यकतानुसार उनका स्थानांतरण कर सकता था।

12. (B) राजा दाहिर
712 ईस्वी में जब मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में अरब सेना ने सिंध पर आक्रमण किया, तब वहाँ का शासक राजा दाहिर था। वह ब्राह्मण वंश का अंतिम हिंदू राजा था। रावर के युद्ध में राजा दाहिर ने अरबों का वीरतापूर्वक सामना किया, किंतु अंततः युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी मृत्यु के पश्चात ही सिंध क्षेत्र पर अरबों का अधिकार स्थापित हो सका, जो भारतीय उपमहाद्वीप में उनके प्रवेश का द्वार बना।

13. (C) हार निश्चित होने पर योद्धाओं का अंतिम आत्मघाती हमला।
राजपूतों में 'शाका' की परंपरा युद्ध के मैदान में अंतिम बलिदान का प्रतीक थी। जब किसी किले की घेराबंदी के दौरान विजय की कोई आशा नहीं बचती थी, तब राजपूत योद्धा केसरिया वस्त्र धारण कर दुर्ग के द्वार खोल देते थे। वे शत्रु पर अंतिम प्रहार करने के लिए निकल पड़ते थे, जिसका उद्देश्य केवल मृत्यु तक लड़ना होता था। यह क्रिया महिलाओं द्वारा किए गए 'जौहर' के पश्चात की जाती थी।

14. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
मध्यकालीन भारत में विभिन्न प्रशासनिक और वित्तीय शब्दावलियाँ प्रचलित थीं। 'चौथ' मराठों द्वारा वसूला जाने वाला एक-चौथाई सैन्य कर था। 'देशमुख' महाराष्ट्र के क्षेत्रों में एक वंशानुगत अधिकारी का पद था, जो राजस्व संग्रह में सहायक होता था। 'हुंडी' व्यापारियों के बीच उपयोग किया जाने वाला एक विनिमय पत्र था। 'अमरम' विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत सैन्य सेवाओं के बदले नायकों को प्रदान किया जाने वाला भूमि अनुदान था।

15. (A) कांची के पल्लव
सिंध पर अरब विजय के पश्चात, उनकी भारत के आंतरिक भागों की ओर प्रगति को रोकने में उत्तर और मध्य भारत के शासकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कश्मीर के ललितादित्य, गुर्जर-प्रतिहार और बादामी के चालुक्यों जैसे राजवंशों ने अरब सेनाओं का कड़ा प्रतिरोध किया। हालाँकि, दक्षिण भारत के कांची के पल्लव इस प्रतिरोध गठबंधन का हिस्सा नहीं थे, क्योंकि वे भौगोलिक रूप से इन संघर्षों के केंद्रों से दूर स्थित थे।

16. (B) भारतीय मंदिरों और नगरों की संपत्ति को लूटना।
महमूद गजनी ने 1000 से 1027 ईस्वी के बीच भारत पर सत्रह बार आक्रमण किए। इन आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य भारत की अपार धन-संपत्ति को लूटना था, विशेष रूप से समृद्ध मंदिरों और नगरों से। वह इस धन का उपयोग अपने मध्य एशियाई साम्राज्य को सुदृढ़ करने और गजनी को एक शानदार शहर बनाने के लिए करना चाहता था। भारत में स्थायी साम्राज्य स्थापित करना उसका तात्कालिक लक्ष्य नहीं था।

17. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
विजयनगर साम्राज्य में सैन्य प्रशासन को सुदृढ़ करने के लिए 'अमरम' प्रणाली लागू की गई थी। इसके अंतर्गत राजा अपने सैन्य कमांडरों (अमरनायक) को उनकी सेवाओं के बदले भूमि का एक निश्चित भाग प्रदान करता था। इन नायकों का उत्तरदायित्व कानून-व्यवस्था बनाए रखना और राजा को सैन्य सहायता प्रदान करना था। इसके बदले में उन्हें प्रतिवर्ष राजा के दरबार में उपस्थित होकर एक निश्चित राशि नजराने के रूप में देनी पड़ती थी।

18. (A) 1, 2, 4, 3
भारत पर हुए मुस्लिम आक्रमणों का कालक्रम ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। सबसे पहले 712 ईस्वी में मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर आक्रमण किया। इसके पश्चात 1000 ईस्वी के आसपास महमूद गजनी के आक्रमण आरंभ हुए। 1191 ईस्वी में तराइन का प्रथम युद्ध मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच लड़ा गया। अंत में 1398 ईस्वी में तैमूरलंग ने दिल्ली पर आक्रमण कर व्यापक विनाश किया।

19. (C) बप्पा रावल
8वीं शताब्दी के दौरान मेवाड़ के गुहिल वंश के संस्थापक बप्पा रावल ने अरब आक्रमणकारियों के विरुद्ध भारतीय प्रतिरोध का नेतृत्व किया। उन्होंने नागभट्ट प्रथम जैसे अन्य भारतीय शासकों के साथ मिलकर एक गठबंधन बनाया और सिंध से आगे बढ़ने वाली अरब सेनाओं को निर्णायक रूप से पराजित किया। उनके अदम्य साहस के कारण अरबों को पीछे हटना पड़ा, जिससे अगले कई वर्षों तक भारत का आंतरिक भाग सुरक्षित रहा।

20. (D) एक जिले (परगना) का प्रभारी वंशानुगत अधिकारी।
मध्यकालीन दक्कन और विशेष रूप से महाराष्ट्र के प्रशासनिक ढांचे में 'देशमुख' एक महत्वपूर्ण पद था। यह एक वंशानुगत अधिकारी होता था, जो एक पूरे परगना या जिले के राजस्व और प्रशासनिक कार्यों का प्रबंधन करता था। देशमुख का मुख्य कार्य स्थानीय स्तर पर राजस्व संग्रह सुनिश्चित करना और राज्य तथा किसानों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करना था। उन्हें राजस्व का एक निश्चित भाग प्राप्त होता था।

21. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
महमूद गजनी द्वारा भारत पर किए गए बार-बार के आक्रमणों ने उत्तरी भारत की राजनीतिक स्थिरता को गंभीर रूप से प्रभावित किया। यद्यपि उसका उद्देश्य साम्राज्य विस्तार के बजाय केवल धन की लूट और मंदिरों का विनाश था, किंतु इन हमलों ने

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) सुरक्षा के बदले गैर-मुस्लिमों पर लगाया गया कर।
मध्यकालीन भारत में जज़िया एक प्रति-व्यक्ति कर था, जो मुस्लिम शासकों द्वारा अपनी गैर-मुस्लिम प्रजा पर लगाया जाता था। यह कर मुख्य रूप से राज्य द्वारा प्रदान की जाने वाली सुरक्षा और सैन्य सेवा से छूट के बदले लिया जाता था। भारत में इसका आरंभ मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध विजय के पश्चात किया था। यह कर केवल सक्षम पुरुषों से ही संग्रहित किया जाता था।

2. (C) कथन I और कथन II दोनों
मनसबदारी प्रणाली मुगलों द्वारा आरंभ की गई एक विशिष्ट प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था थी। 'मनसब' शब्द का अर्थ पद या श्रेणी होता है। यह प्रणाली किसी भी अधिकारी का राजकीय पदानुक्रम में स्थान, उसका वेतन और उसके द्वारा रखे जाने वाले सशस्त्र अनुचरों की संख्या निर्धारित करती थी। इसमें 'ज़ात' व्यक्तिगत पद को दर्शाता था, जबकि 'सवार' मनसबदार द्वारा रखे जाने वाले घुड़सवारों की संख्या को इंगित करता था।

3. (C) इक्ता अपनी शुरुआत से ही एक वंशानुगत अधिकार था।
इक्ता प्रणाली दिल्ली सल्तनत के दौरान प्रशासन और राजस्व संग्रह का एक प्रमुख आधार थी। सुल्तान अपने अधिकारियों को नकद वेतन के बदले भूमि का राजस्व अधिकार प्रदान करता था। प्रारंभ में यह व्यवस्था स्थानांतरणीय थी और इसे वंशानुगत नहीं माना जाता था। इक्तादार का मुख्य कार्य राजस्व एकत्र करना और सैन्य व्यवस्था बनाए रखना था। फिरोज शाह तुगलक के समय यह प्रणाली धीरे-धीरे वंशानुगत होने लगी थी।

4. (D) सभी धर्मों के बीच सार्वभौमिक शांति और सहिष्णुता का सिद्धांत।
'सुलह-ए-कुल' का शाब्दिक अर्थ सार्वभौमिक शांति या पूर्ण सहिष्णुता है। यह अवधारणा मुगल सम्राट अकबर द्वारा प्रतिपादित की गई थी। इस नीति का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य के भीतर विभिन्न धर्मों, संप्रदायों और समुदायों के बीच सद्भाव स्थापित करना था। यह भेदभाव रहित शासन के सिद्धांत पर आधारित थी, जिसने मुगल सत्ता को भारत के विविध सामाजिक ढांचे में स्थिरता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5. (C) विनिमय पत्र के रूप में उपयोग किया जाने वाला एक वित्तीय साधन।
मध्यकालीन भारत में 'हुंडी' एक महत्वपूर्ण वित्तीय साधन और विनिमय पत्र के रूप में प्रचलित थी। इसका उपयोग व्यापारियों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर धन हस्तांतरित करने के लिए किया जाता था। इसमें उधार का विवरण और भुगतान का वचन सम्मिलित होता था। इस व्यवस्था ने लंबी दूरी के व्यापार को सुरक्षित बनाया, क्योंकि इसके कारण भारी मात्रा में नकद राशि ले जाने की आवश्यकता समाप्त हो गई थी।

6. (B) अमरम - सल्तनत में कृषि उपज पर एक कर
'अमरम' शब्द मुख्य रूप से विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था से जुड़ा है। यह एक प्रकार का भूमि अनुदान था, जो 'अमरनायक' या सैन्य कमांडरों को उनकी सेवाओं के बदले प्रदान किया जाता था। इसके विपरीत, 'चौथ' मराठों द्वारा पड़ोसी क्षेत्रों से वसूला जाने वाला कर था। 'जागीर' प्रणाली मुगलों के अधीन प्रचलित थी और 'देशमुख' दक्कन में राजस्व संग्रह करने वाला एक महत्वपूर्ण वंशानुगत अधिकारी था।

7. (D) बंदी बनने से बचने के लिए सामूहिक आत्मदाह।
मध्यकालीन राजपूत समाज में 'जौहर' की प्रथा एक अत्यंत गौरवशाली और साहसी बलिदान का प्रतीक थी। जब राजपूत योद्धाओं को युद्ध में अपनी पराजय निश्चित लगती थी, तब शत्रु के हाथों अपमान और बंदी बनने से बचने के लिए महिलाएँ सामूहिक रूप से अग्नि में आत्मदाह कर लेती थीं। यह प्रथा सती प्रथा से भिन्न थी, क्योंकि यह विशेष रूप से युद्ध की विषम परिस्थितियों में आत्मसम्मान की रक्षा हेतु की जाती थी।

8. (D) A गलत है लेकिन R सही है।
मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध पर किया गया आक्रमण भारत में इस्लामी शासन की दिशा में प्रारंभिक कदम था, किंतु यह स्थायी साम्राज्य स्थापित करने में सफल नहीं रहा। इसका मुख्य कारण कश्मीर के ललितादित्य मुक्तापीड और शक्तिशाली गुर्जर-प्रतिहार शासकों का निरंतर प्रतिरोध था। इन भारतीय शक्तियों ने अरबों को सिंध और मुल्तान के क्षेत्रों तक ही सीमित रखा और उन्हें गंगा के मैदानी क्षेत्रों की ओर बढ़ने से रोका।

9. (C) एक क्षेत्र का अधिकार रखने वाला अधीनस्थ सामंती सरदार।
'पॉलीगार' या 'पालयक्कारर' शब्द मुख्य रूप से विजयनगर साम्राज्य के पतन के पश्चात दक्षिण भारत में प्रचलित हुआ। ये स्थानीय स्तर पर शक्तिशाली सामंती सरदार या भूमिपति होते थे, जिन्हें सैन्य सेवाओं के बदले क्षेत्रों का प्रशासन और राजस्व संग्रह का अधिकार प्राप्त था। इनका मुख्य कार्य कानून-व्यवस्था बनाए रखना और शासक को सैन्य सहायता देना था। इन्होंने बाद में ब्रिटिश शासन के विस्तार का कड़ा विरोध किया।

10. (A) गाँवों का एक समूह जो एक प्रशासनिक इकाई बनाता था।
मध्यकालीन दक्षिण भारत, विशेष रूप से चोल और विजयनगर साम्राज्यों के दौरान 'नाडु' एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई थी। यह कई गाँवों के समूह को मिलाकर बनती थी। नाडु का मुख्य कार्य राजस्व प्रशासन, न्याय व्यवस्था और स्थानीय स्तर पर कृषि संबंधी कार्यों का प्रबंधन करना था। इसकी अपनी एक परिषद होती थी जो स्थानीय स्वायत्तता का प्रतिनिधित्व करती

उन्हें दक्षिण की ओर बढ़ने से रोका। उनकी सैन्य शक्ति ने उन्हें भारतीय इतिहास में एक स्थायी स्थान दिलाया।

74. (A) इक्ता प्रणाली
विजयनगर साम्राज्य की 'अमरम' प्रणाली और दिल्ली सल्तनत की 'इक्ता' प्रणाली के बीच गहरी संरचनात्मक समानताएं हैं। दोनों ही प्रणालियों में शासक अपने सैन्य अधिकारियों को नकद वेतन के बदले भूमि का एक निश्चित क्षेत्र आवंटित करता था। इन अधिकारियों (नायकों या इक्तादारों) का उत्तरदायित्व उस भूमि से राजस्व एकत्र करना, वहाँ प्रशासन चलाना और राज्य की सेवा के लिए एक स्थायी सेना बनाए रखना था। यह व्यवस्था सैन्य रूप से सशक्त और प्रशासनिक रूप से विकेंद्रीकृत थी।

75. (D) हिस्सा या भाग
'इक्ता' अरबी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ 'हिस्सा' या 'भाग' होता है। दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक संदर्भ में यह राज्य द्वारा अपने अधिकारियों को प्रदान किया गया भूमि राजस्व का एक निश्चित हिस्सा था। इस प्रणाली के माध्यम से सुल्तान अपने सैनिकों और अमीरों को वेतन के बदले राजस्व संग्रह का अधिकार सौंपता था। यह व्यवस्था केवल राजस्व के उपभोग का अधिकार थी, न कि भूमि के स्वामित्व का, और इसे सुल्तान द्वारा स्थानांतरित किया जा सकता था।

76. (B) तुगलक वंश
1398 ईस्वी में मध्य एशियाई आक्रांता तैमूरलंग के विनाशकारी आक्रमण ने तुगलक वंश की कमर तोड़ दी। इस हमले के समय सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद शासन कर रहा था, किंतु वह तैमूर को रोकने में विफल रहा। तैमूर द्वारा दिल्ली में की गई लूटपाट ने सल्तनत की शक्ति को समाप्त कर दिया। इसी अराजकता का लाभ उठाकर खिज्र खान ने, जिसे तैमूर ने अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था, दिल्ली में सैयद वंश की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

77. (A) केवल कथन I सही है।
सैयद वंश (1414-1451) दिल्ली सल्तनत के इतिहास में एक अपेक्षाकृत कमजोर शासन काल था। तैमूर के आक्रमण के पश्चात उत्पन्न हुई राजनीतिक अस्थिरता के कारण इस वंश के शासकों का अधिकार क्षेत्र अत्यंत सीमित हो गया था। उनका प्रभावी नियंत्रण मुख्यतः दिल्ली और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों तक ही सीमित रह गया था। वे उन महान शक्तियों की तरह नहीं थे जिन्होंने उपमहाद्वीप के बड़े भाग पर शासन किया हो। अंततः बहलोल लोदी ने सत्ता संभाली।

78. (D) इसने बाबर के प्रति अंतिम पूर्वी अफगान प्रतिरोध को समाप्त कर दिया।
1529 ईस्वी में लड़ा गया घाघरा का युद्ध बाबर के भारत अभियानों की अंतिम बड़ी विजय थी। यह युद्ध बाबर और बिहार-बंगाल के अफगान सरदारों के गठबंधन के बीच हुआ था, जिनका नेतृत्व महमूद लोदी कर रहा था। इस विजय ने गंगा घाटी में बाबर के प्रभुत्व को निर्विवाद बना दिया और भारत में अफगान शक्ति के अंतिम बड़े संगठित प्रतिरोध को कुचल दिया। इसके साथ ही बाबर ने उत्तर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव को सुदृढ़ कर लिया।

79. (A) दिल्ली, मथुरा और आगरा के आसपास का क्षेत्र
मुगल सम्राट औरंगजेब के शासनकाल के दौरान दिल्ली, आगरा और मथुरा के समीपवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले जाटों ने सशक्त प्रतिरोध किया। इस विद्रोह का मुख्य कारण मुगल प्रशासन द्वारा की जा रही उच्च भू-राजस्व की मांगें और औरंगजेब की कठोर धार्मिक नीतियां थीं। गोकुला, राजाराम और बाद में चूड़ामन जैसे नेताओं ने जाटों को संगठित कर मुगलों की रसद आपूर्ति को बाधित किया। इस संघर्ष ने अंततः स्वतंत्र जाट राज्य के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

80. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
औरंगजेब का शासनकाल अपनी धार्मिक कट्टरता और अत्यधिक केंद्रीकृत नियंत्रण के लिए जाना जाता है, जिसके कारण समाज के विभिन्न वर्गों में असंतोष व्याप्त हो गया। जज़िया कर का पुनः आरोपित किया जाना, मंदिरों का विनाश और किसानों पर करों का भारी बोझ जाटों, सिखों और सतनामियों जैसे समूहों के विद्रोह के प्रमुख कारण बने। इन आंदोलनों ने केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि गहरे आर्थिक और सामाजिक असंतोष को भी व्यक्त किया, जिससे मुगल साम्राज्य की आधारशिला कमजोर होने लगी।

81. (B) सिकंदर सूरी
जब मुगल सम्राट हुमायूँ 1555 ईस्वी में ईरान से अपनी सेना लेकर भारत लौटा, तब सूर साम्राज्य अपने अंतिम और दुर्बल चरण में था। शेरशाह सूरी के योग्य उत्तराधिकारियों की कमी के कारण साम्राज्य आंतरिक कलह से जूझ रहा था। उस समय सिकंदर शाह सूरी दिल्ली के सिंहासन पर आसीन था। हुमायूँ ने सरहिंद के युद्ध में सिकंदर सूरी को निर्णायक रूप से पराजित किया। इस विजय के साथ ही सूर वंश का प्रभाव समाप्त हुआ और भारत में मुगल सत्ता की पुनरावृत्ति संभव हुई।

82. (A) धार्मिक स्वरूप वाले किसानों और शिल्पकारों का एक समुदाय।
सतनामी विद्रोह 1672 ईस्वी में औरंगजेब के शासनकाल के दौरान नारनौल के क्षेत्रों में हुआ था। सतनामी मुख्य रूप से निम्न वर्ग के किसानों, शिल्पकारों और श्रमिकों का एक धार्मिक संप्रदाय था, जो अपनी ईमानदारी और धार्मिक विश्वासों के लिए जाने जाते थे। एक मामूली विवाद ने सशस्त्र विद्रोह का रूप ले लिया, जिसे दबाने के लिए औरंगजेब को विशाल शाही सेना भेजनी पड़ी। यह विद्रोह मुगल प्रशासन के प्रति ग्रामीण वर्ग के गहरे आर्थिक और सामाजिक असंतोष का प्रतीक था।

83. (C) सरहिंद का युद्ध
1555 ईस्वी में लड़ा गया सरहिंद का युद्ध मुगल इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस युद्ध में हुमायूँ की सेना ने सूर वंश के अंतिम शक्तिशाली दावेदार सिकंदर शाह सूरी को पराजित किया। इस विजय ने शेरशाह सूरी द्वारा स्थापित सूर साम्राज्य का निश्चित अंत कर दिया और हुमायूँ को पुनः दिल्ली और

क्षेत्रीय शक्तियों की सैन्य क्षमता को क्षीण कर दिया। इसके परिणामस्वरूप भारतीय राजाओं के बीच आपसी फूट बढ़ी, जिसने भविष्य के तुर्की आक्रमणों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

22. (B) राजा सुहेलदेव
महमूद गजनी के आक्रमणों के दौरान श्रावस्ती के राजा सुहेलदेव ने विदेशी सेनाओं के विरुद्ध वीरतापूर्ण प्रतिरोध का नेतृत्व किया। उन्होंने बहराइच के युद्ध में महमूद के सेनापति सालार मसूद को निर्णायक रूप से पराजित कर मार गिराया। राजा सुहेलदेव की यह विजय केवल एक सैन्य सफलता नहीं थी, बल्कि इसने विदेशी आक्रमणकारियों के मन में भय उत्पन्न किया और उत्तर-पूर्व भारत को लंबे समय तक सुरक्षित रखा।

23. (D) मंगोल दिल्ली पर स्थायी रूप से कब्जा करने और उसे अपने पास रखने में सफल रहे।
दिल्ली सल्तनत के दौरान मंगोलों ने उत्तर-पश्चिमी सीमा पर निरंतर खतरे उत्पन्न किए। इल्तुतमिश, बलबन और अलाउद्दीन खिलजी ने मंगोल आक्रमणों को विफल करने के लिए सैन्य सुदृढ़ीकरण और दुर्गों के निर्माण की नीतियां अपनाईं। यद्यपि मंगोलों ने कई बार दिल्ली की सीमाओं को घेरा और लूटपाट की, किंतु वे कभी भी दिल्ली पर स्थायी शासन स्थापित करने या शहर पर दीर्घकालिक अधिकार करने में सफल नहीं हो सके।

24. (A) केवल 1 और 2
दिल्ली सल्तनत के गुलाम वंश की स्थापना 1206 ईस्वी में कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी, जो मुहम्मद गोरी का दास था। इल्तुतमिश ने इस साम्राज्य को सुदृढ़ किया और लाहौर के स्थान पर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। यद्यपि इस वंश को 'गुलाम वंश' कहा जाता है, किंतु इसके सभी शासक स्वयं दास नहीं थे; उनमें से केवल ऐबक, इल्तुतमिश और बलबन ही शासक बनने से पूर्व दास थे।

25. (C) तुगलक वंश
मध्य एशियाई विजेता तैमूरलंग ने 1398 ईस्वी में भारत पर आक्रमण किया। उस समय दिल्ली की गद्दी पर तुगलक वंश के अंतिम शासक नसीरुद्दीन महमूद का शासन था। तैमूर के इस आक्रमण ने दिल्ली में अभूतपूर्व तबाही मचाई और सल्तनत की शक्ति को पूरी तरह नष्ट कर दिया। इस हमले के पश्चात तुगलक वंश का पतन सुनिश्चित हो गया, जिससे कालांतर में सैयद और लोदी वंश का उदय हुआ।

26. (A) अलाउद्दीन खिलजी
अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी विशाल सेना के भरण-पोषण के लिए दिल्ली सल्तनत में एक अद्वितीय बाजार नियंत्रण और मूल्य विनियमन प्रणाली लागू की थी। उसने अनाज, वस्त्र और घोड़ों जैसी आवश्यक वस्तुओं की कीमतें निश्चित कर दीं। इस प्रणाली को कठोरता से लागू करने के लिए उसने 'शहना-ए-मंडी' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की। इसका मुख्य उद्देश्य सैनिकों को कम वेतन में भी जीवन की आवश्यकताएं उपलब्ध कराना था।

27. (D) खिलजी वंश - जलालुद्दीन खिलजी
दिल्ली सल्तनत के विभिन्न वंशों के संस्थापकों का ज्ञान प्रशासनिक इतिहास के लिए आवश्यक है। खिलजी वंश की स्थापना 1290 ईस्वी में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने की थी। इसके विपरीत, तुगलक वंश का संस्थापक गयासुद्दीन तुगलक था। सैयद वंश की नींव खिज्र खान द्वारा रखी गई थी, जबकि लोदी वंश का संस्थापक बहलोल लोदी था। जलालुद्दीन खिलजी ने गुलाम वंश के पतन के पश्चात नए युग की शुरुआत की।

28. (B) राजनीतिक स्वतंत्रता और संस्कृति की रक्षा करना।
दिल्ली सल्तनत के विस्तार के दौरान विभिन्न राजपूत शासकों ने निरंतर और कड़ा प्रतिरोध जारी रखा। उनके इस संघर्ष का प्राथमिक उद्देश्य अपनी राजनीतिक संप्रभुता को अक्षुण्ण रखना और अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत एवं धार्मिक पहचान की रक्षा करना था। वे बाहरी सल्तनत के शासन को स्वीकार करने के बजाय अपनी क्षेत्रीय स्वायत्तता के लिए मृत्यु तक लड़ने को तत्पर रहते थे। यह प्रतिरोध एक बड़ी चुनौती बना रहा।

29. (C) अफगान
लोदी वंश दिल्ली सल्तनत पर शासन करने वाला अंतिम राजवंश था और यह जातीय रूप से अफगान मूल का था। 1451 ईस्वी में बहलोल लोदी ने इस वंश की स्थापना की थी। इससे पूर्व के अधिकांश राजवंश जैसे गुलाम, खिलजी और तुगलक मुख्य रूप से तुर्की मूल के थे। लोदी शासकों ने प्रशासन में अफगान कबीलाई परंपराओं को महत्व दिया, जहाँ सुल्तान को पूर्ण निरंकुश शासक के स्थान पर 'समानों में प्रथम' माना जाता था।

30. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
दिल्ली सल्तनत के विभिन्न राजवंशों और उनके प्रमुख शासकों का मिलान इतिहास की समझ के लिए महत्वपूर्ण है। गुलाम वंश के महत्वपूर्ण शासक इल्तुतमिश थे, जिन्होंने शासन को स्थिरता दी। खिलजी वंश के सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राट अलाउद्दीन खिलजी थे, जो सैन्य सुधारों के लिए प्रसिद्ध थे। तुगलक वंश की स्थापना गयासुद्दीन तुगलक ने की थी। लोदी वंश के प्रमुख शासक सिकंदर लोदी थे, जिन्होंने आगरा नगर की नींव रखी।

31. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद स्थानांतरित करने का निर्णय भारतीय इतिहास की एक विवादास्पद घटना है। सुल्तान ने दक्कन पर बेहतर नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से यह कदम उठाया था, किंतु नियोजन की कमी के कारण यह योजना पूरी तरह विफल रही। इसके परिणामस्वरूप उत्तर भारत में अशांति फैली और अंततः सुल्तान को पुनः दिल्ली लौटने का आदेश देना पड़ा, जिससे अपार जन-धन की हानि हुई।

32. (B) बाबर और इब्राहिम लोदी
पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 को बाबर और दिल्ली सल्तनत के अंतिम सुल्तान इब्राहिम लोदी के बीच लड़ा गया था। इस ऐतिहासिक युद्ध में बाबर ने अपनी श्रेष्ठ सैन्य रणनीति और तोपखाने के प्रभावी उपयोग से लोदी की विशाल सेना को पराजित किया। इब्राहिम लोदी युद्ध के मैदान में मारा गया, जिसके परिणामस्वरूप दिल्ली सल्तनत का अंत हुआ और भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी गई।

33. (B) चंदेरी के युद्ध ने मेदिनी राय के विरुद्ध शक्ति को सुदृढ़ किया।
बाबर ने भारत में अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए कई निर्णायक युद्ध लड़े। 1528 ईस्वी में चंदेरी का युद्ध मेदिनी राय के नेतृत्व वाले राजपूतों के विरुद्ध लड़ा गया, जिसमें बाबर की विजय हुई। खानवा का युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध था, जबकि घाघरा का युद्ध अफगान सेनाओं के विरुद्ध लड़ा गया था। पानीपत के प्रथम युद्ध ने आधार रखा, किंतु उत्तर भारत पर मुगल नियंत्रण बाद के युद्धों से सुदृढ़ हुआ।

34. (A) मुहम्मद शाह 'रंगीला'
1739 ईस्वी में जब फारसी आक्रांता नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली को लूटा, तब मुगल सिंहासन पर मुहम्मद शाह 'रंगीला' आसीन था। नादिर शाह की सेना ने मुगल सेना को करनाल के युद्ध में पराजित कर दिया। इस आक्रमण के दौरान नादिर शाह ने दिल्ली में भयानक कत्लेआम किया और प्रसिद्ध मयूर सिंहासन तथा कोहिनूर हीरा भी अपने साथ ले गया, जिससे मुगल प्रतिष्ठा को आघात पहुँचा।

35. (D) 1, 2 और 3
शेरशाह सूरी मध्यकालीन भारत का एक असाधारण शासक था, जिसने हुमायूँ को पराजित कर सूर साम्राज्य की स्थापना की। वह मूलतः एक अफगान कुलीन था। उसने शासन व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन किए, जिसमें भूमि की माप पर आधारित राजस्व प्रणाली और ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण सम्मिलित है। उसके प्रशासनिक सुधार इतने प्रभावी थे कि बाद में मुगल सम्राट अकबर ने भी उन्हें अपना आधार बनाया।

36. (D) मराठा
अहमद शाह अब्दाली ने 1761 ईस्वी में पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों का सामना किया। इस समय मराठा शक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर थी और उत्तर भारत के मामलों में निर्णायक भूमिका निभा रही थी। सदाशिवराव भाऊ के नेतृत्व में मराठा सेना ने अफगान आक्रांता को रोकने का प्रयास किया, किंतु रसद आपूर्ति में बाधा के कारण मराठों की भारी पराजय हुई। इस युद्ध ने भारत में मराठा प्रभुत्व को अवरुद्ध कर दिया।

37. (C) राणा सांगा के नेतृत्व वाले राजपूत संघ से उत्पन्न खतरा।
1527 ईस्वी में लड़ा गया खानवा का युद्ध बाबर के लिए पानीपत से भी अधिक चुनौतीपूर्ण था। इसका मुख्य कारण मेवाड़ के राणा सांगा के नेतृत्व में एकजुट हुआ शक्तिशाली राजपूत संघ था, जो बाबर को भारत से बाहर खदेड़ने का संकल्प ले चुका था। बाबर को अनुभव हुआ कि जब तक वह इस संयुक्त राजपूत शक्ति को पराजित नहीं करता, तब तक उसका शासन स्थायी नहीं हो सकता।

38. (B) राणा उदय सिंह
1567-68 ईस्वी में जब मुगल सम्राट अकबर ने चित्तौड़गढ़ के किले की घेराबंदी की, तब मेवाड़ के शासक राणा उदय सिंह थे। यद्यपि राणा स्वयं सुरक्षित स्थान पर चले गए थे, किंतु किले की रक्षा का दायित्व जयमल और फत्ता जैसे वीर सेनापतियों ने संभाला। इस घेराबंदी के परिणामस्वरूप अंततः मुगलों की विजय हुई और राजपूतों द्वारा वीरतापूर्वक बलिदान दिया गया। यह घटना मुगल विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण थी।

39. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
गोंड साम्राज्य मध्य भारत के गढ़-कटंगा क्षेत्र में स्थित एक अत्यंत शक्तिशाली और समृद्ध जनजातीय राज्य था। रानी दुर्गावती, जो इस साम्राज्य की शासक थीं, अपनी वीरता और कुशल प्रशासन के लिए प्रसिद्ध थीं। 1564 ईस्वी में उन्होंने मुगल सेनापति आसफ खान के नेतृत्व वाली विशाल मुगल सेना का डटकर मुकाबला किया। यद्यपि वे युद्ध में पराजित हुईं, किंतु उनकी शहादत ने जनजातीय प्रतिरोध की एक अमिट गाथा अंकित कर दी।

40. (A) बहमनी
औरंगजेब के शासनकाल के दौरान उसकी धार्मिक नीतियों के कारण साम्राज्य के कई भागों में विद्रोह हुए। इनमें जाटों, सिखों और सतनामियों का प्रतिरोध प्रमुख था। ये आंदोलन मुगल सत्ता के विरुद्ध व्यापक असंतोष का परिणाम थे। हालाँकि, बहमनी साम्राज्य इस काल में औरंगजेब का प्रतिद्वंद्वी नहीं था, क्योंकि बहमनी साम्राज्य का विघटन औरंगजेब के शासनकाल से बहुत पहले ही पाँच अलग-अलग सल्तनतों में हो चुका था।

41. (B) 4, 2, 1, 3
मुगल सम्राटों के शासनकाल का सही कालानुक्रमिक क्रम भारतीय इतिहास की संरचना को समझने के लिए अनिवार्य है। सबसे पहले अकबर (1556-1605) ने साम्राज्य को सुदृढ़ किया। उसके पश्चात जहाँगीर (1605-1627) ने सत्ता संभाली। जहाँगीर के पश्चात शाहजहाँ (1628-1658) का काल आया, जो वास्तुकला के स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है। अंत में औरंगजेब (1658-1707) का शासन रहा, जिसके दौरान साम्राज्य का भौगोलिक विस्तार अधिकतम स्तर पर पहुँचा।

42. (A) गुरु तेग बहादुर
औरंगजेब की धार्मिक नीतियों के परिणामस्वरूप सिखों का मुगल सत्ता के प्रति प्रतिरोध अत्यंत तीव्र हो गया। 1675 ईस्वी में जब नौवें सिख गुरु, गुरु तेग बहादुर ने कश्मीरी पंडितों के अधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए औरंगजेब की नीतियों का विरोध किया, तो उन्हें मृत्युदंड दे दिया गया। इस घटना के पश्चात उनके पुत्र गुरु गोविंद सिंह ने सिखों को सैन्य शक्ति के रूप में संगठित कर संघर्ष तेज कर दिया।

43. (D) तुंगभद्रा
विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ईस्वी में हरिहर और बुक्का नामक दो भाइयों ने तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर की थी। इस स्थान का चयन रणनीतिक और धार्मिक दोनों कारणों से महत्वपूर्ण था। तुंगभद्रा नदी ने न केवल राज्य की सुरक्षा के लिए एक प्राकृतिक बाधा प्रदान की, बल्कि उपजाऊ भूमि और जल की निरंतर आपूर्ति भी सुनिश्चित की। इसी नदी के किनारे हंपी स्थित है।

44. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
विजयनगर और बहमनी साम्राज्यों के बीच संघर्ष मध्यकालीन दक्षिण भारतीय इतिहास की एक निरंतर विशेषता रही। इन दोनों शक्तियों के बीच शत्रुता का मुख्य केंद्र रायचूर दोआब था, जो कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच स्थित एक अत्यंत उपजाऊ क्षेत्र था। इस आर्थिक रूप से समृद्ध और रणनीतिक क्षेत्र पर नियंत्रण प्राप्त करने की आकांक्षा ने दोनों साम्राज्यों को कई युद्धों में धकेला। इसके अलावा व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण भी विवाद का कारण था।

45. (C) अलाउद्दीन हसन बहमन शाह
बहमनी साम्राज्य की स्थापना 1347 ईस्वी में अलाउद्दीन हसन बहमन शाह द्वारा की गई थी, जिसे जफर खान के नाम से भी जाना जाता था। उसने दिल्ली सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध विद्रोह कर दक्कन में प्रथम स्वतंत्र मुस्लिम साम्राज्य की नींव रखी। उसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया और शासन को सुव्यवस्थित करने के लिए इसे चार प्रांतों में विभाजित किया। यह साम्राज्य विजयनगर का प्रबल प्रतिद्वंद्वी बना रहा।

46. (D) दक्कनी और अफाकी (विदेशी) अमीरों के बीच प्रतिद्वंद्विता।
बहमनी साम्राज्य के पतन का सबसे प्रमुख आंतरिक कारण इसके कुलीन वर्ग के भीतर चल रही तीव्र गुटबाजी थी। साम्राज्य का प्रशासन दो मुख्य समूहों में विभाजित था: दक्कनी (स्थानीय मुस्लिम) और अफाकी (ईरान और अरब से आए विदेशी मुस्लिम)। इन दोनों गुटों के बीच सत्ता और प्रभाव के लिए होने वाले निरंतर संघर्षों ने केंद्रीय सत्ता को अत्यंत कमजोर कर दिया। अंततः इसी कलह के कारण साम्राज्य पाँच स्वतंत्र सल्तनतों में बिखर गया।

47. (A) विजयनगर साम्राज्य
1565 ईस्वी में लड़ा गया तालिकोटा का युद्ध, जिसे राक्षसी-तांगड़ी के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिण भारतीय इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था। इस युद्ध में बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर और बीदर की दक्कन सल्तनतों के संयुक्त गठबंधन ने विजयनगर साम्राज्य की सेना को पराजित किया। इस पराजय के पश्चात विजयनगर शहर को पूरी तरह लूटा और नष्ट कर दिया गया, जिससे इस गौरवशाली साम्राज्य का प्रभाव समाप्त हो गया।

48. (D) 1, 2 और 3
मराठा शक्ति के उदय के पीछे कई भौगोलिक, सामाजिक और राजनीतिक कारक उत्तरदायी थे। महाराष्ट्र की पहाड़ी भौगोलिक स्थिति ने मराठों को प्राकृतिक सुरक्षा और छापामार युद्ध में निपुणता प्रदान की। भक्ति आंदोलन के संतों ने सामाजिक समानता और भाषाई एकता का संचार किया। इसके अतिरिक्त कई मराठा सरदारों ने दक्कन की सल्तनतों में सैन्य पदों पर कार्य करते हुए शासन चलाने का अनुभव प्राप्त किया था, जो स्वराज्य निर्माण में सहायक हुआ।

49. (B) रायगढ़
शिवाजी महाराज का औपचारिक राज्याभिषेक 1674 ईस्वी में रायगढ़ के सुदृढ़ किले में संपन्न हुआ था। इस भव्य समारोह के माध्यम से उन्होंने 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना की घोषणा की और 'छत्रपति' की उपाधि धारण की। रायगढ़ उनकी राजधानी के रूप में चुना गया क्योंकि इसकी भौगोलिक स्थिति सैन्य दृष्टि से अत्यंत सुरक्षित और प्रभावशाली थी। इस राज्याभिषेक ने मराठों को एक स्वतंत्र संप्रभु शक्ति के रूप में स्थापित किया।

50. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
बाबर ने भारत में अपनी सत्ता सुदृढ़ करने के लिए विभिन्न प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध महत्वपूर्ण युद्ध लड़े। 1526 में पानीपत का युद्ध इब्राहिम लोदी के विरुद्ध था। 1527 में खानवा का युद्ध मेवाड़ के राणा सांगा के साथ हुआ। 1528 में चंदेरी का युद्ध मेदिनी राय के विरुद्ध लड़ा गया, जिससे राजपूत प्रतिरोध कमजोर हुआ। अंत में 1529 में घाघरा का युद्ध अफगान सेनाओं के विरुद्ध लड़ा गया, जिसने बाबर के साम्राज्य को सुरक्षित किया।

51. (C) बालाजी विश्वनाथ
पेशवा का पद मराठा प्रशासन में 'अष्टप्रधान' का प्रमुख था, किंतु बालाजी विश्वनाथ के समय से इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन आए। 1713 ईस्वी में साहू महाराज ने उन्हें पेशवा नियुक्त किया। अपनी कूटनीतिक कुशलता से उन्होंने मराठा साम्राज्य को आंतरिक संकटों से उबारा और मुगल दरबार में प्रभाव स्थापित किया। उनके कार्यकाल के दौरान ही पेशवा का पद शक्तिशाली और वंशानुगत बन गया, जिससे सत्ता वास्तविक रूप से पेशवाओं के हाथों में आ गई।

52. (D) आठ मंत्रियों की
शिवाजी महाराज ने अपने साम्राज्य के कुशल प्रशासन के लिए 'अष्टप्रधान' नामक आठ मंत्रियों की एक परिषद गठित की थी। इस परिषद का प्रत्येक मंत्री राजा के प्रति व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी था और उन्हें विशिष्ट प्रशासनिक विभाग सौंपे गए थे। इन पदों में पेशवा (प्रधानमंत्री), अमात्य (वित्त), सुमंत (विदेश), सेनापति (सैन्य) आदि सम्मिलित थे। यह व्यवस्था शिवाजी की प्रशासनिक दूरदर्शिता और केंद्रीकृत नियंत्रण का उत्कृष्ट उदाहरण थी।

53. (C) वारंगल
15वीं शताब्दी के अंत में बहमनी साम्राज्य के पतन के पश्चात दक्कन में पाँच स्वतंत्र सल्तनतों का उदय हुआ। ये राज्य

बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा, बरार और बीदर थे। वारंगल इनमें सम्मिलित नहीं था; वास्तव में वारंगल के काकतीय राज्य को बहुत पहले ही दिल्ली सल्तनत और पश्चात में बहमनी शासकों द्वारा विजित कर लिया गया था, जिससे वह एक स्वतंत्र इकाई के रूप में समाप्त हो गया था।

54. (B) शिकदार
शेरशाह सूरी की प्रशासनिक व्यवस्था अत्यंत व्यवस्थित थी। उसने अपने साम्राज्य को कई 'सरकारों' (जिलों) में विभाजित किया था, जो पुनः छोटे 'परगना' में विभाजित थे। प्रत्येक परगना में 'शिकदार' मुख्य प्रशासनिक अधिकारी होता था, जो कानून-व्यवस्था बनाए रखने और सैन्य कर्तव्यों के लिए उत्तरदायी था। उसके साथ एक 'मुंसिफ' राजस्व कार्यों के लिए नियुक्त होता था। यह व्यवस्था स्थानीय स्तर पर शासन को प्रभावी बनाने के लिए निर्मित थी।

55. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
विजयनगर साम्राज्य का प्रांतीय और सैन्य प्रशासन 'नयंकर प्रणाली' पर आधारित था। इस व्यवस्था के अंतर्गत राजा अपने सैन्य प्रमुखों या नायकों को उनकी निष्ठा और सैन्य सेवाओं के बदले भूमि का एक निश्चित भाग, जिसे 'अमरम' कहा जाता था, प्रदान करता था। इन नायकों का उत्तरदायित्व कानून-व्यवस्था बनाए रखना और राजा को सैन्य सहायता प्रदान करना था। इसके बदले में उन्हें प्रतिवर्ष राजा के दरबार में निश्चित राशि देनी पड़ती थी।

56. (A) सैन्य मामले
दिल्ली सल्तनत के प्रशासन में 'दीवान-ए-अर्ज' सैन्य विभाग का प्रमुख कार्यालय था। इस विभाग का नेतृत्व 'आरिज़-ए-मुमालिक' करता था, जिसका मुख्य कार्य सैनिकों की भर्ती, उनका प्रशिक्षण और वेतन वितरण करना था। सुल्तान बलबन ने इस विभाग को सुदृढ़ किया ताकि मंगोल आक्रमणों और आंतरिक विद्रोहों का प्रभावी ढंग से सामना किया जा सके। आरिज़ के माध्यम से सेना की कार्यक्षमता और अनुशासन को नियंत्रित किया जाता था।

57. (C) दीवान-ए-आला या वज़ीर
मुगल साम्राज्य के प्रशासनिक ढांचे में वित्त और राजस्व विभाग का प्रबंधन 'दीवान-ए-आला' या 'वज़ीर' के अधीन होता था। यह सम्राट के पश्चात सबसे महत्वपूर्ण पदों में से एक था, जिसका मुख्य उत्तरदायित्व साम्राज्य के राजस्व संग्रह की देखरेख, व्यय का लेखा-जोखा रखना और वित्तीय नीतियों का निर्धारण करना था। अकबर के समय टोडरमल ने इस पद पर रहते हुए भू-राजस्व प्रणाली में महत्वपूर्ण सुधार किए, जिससे आर्थिक स्थिरता प्राप्त हुई।

58. (A) सचिव - सेनापति
शिवाजी महाराज के अष्टप्रधान परिषद में प्रत्येक पद का एक विशिष्ट कार्य निर्धारित था। 'पेशवा' राज्य के प्रधानमंत्री थे, 'अमात्य' वित्त विभाग के प्रमुख थे और 'सुमंत' का कार्य विदेशी मामलों की देखरेख करना था। 'सचिव' का कार्य राजकीय पत्राचार और फरमानों को संभालना था, जबकि सैन्य विभाग का प्रमुख 'सर-ए-नौबत' या 'सेनापति' कहलाता था। इस प्रकार, 'सचिव' और 'सेनापति' दो अलग-अलग भूमिकाएं थीं, और उनका युग्म गलत सुमेलित है।

59. (D) राजस्व और वित्त विभाग का प्रमुख होना।
सल्तनत और मुगल दोनों प्रशासनों में 'वज़ीर' का पद अत्यधिक प्रभावकारी था। यद्यपि समय के साथ इसकी शक्तियों में परिवर्तन आया, किंतु इसका प्राथमिक कार्य हमेशा राज्य की वित्तीय स्थिरता और राजस्व प्रबंधन से जुड़ा रहा। वज़ीर सभी सरकारी विभागों के व्यय की निगरानी करता था और शाही कोष के सुचारु संचालन को सुनिश्चित करता था। प्रशासनिक पदानुक्रम में वह नागरिक प्रशासन का मुख्य स्तंभ और सम्राट का प्रमुख सलाहकार था।

60. (A) 4, 1, 3, 2
शिवाजी महाराज के जीवन की घटनाओं का कालक्रम उनके राजनीतिक उत्कर्ष को दर्शाता है। 1659 ईस्वी में अफजल खान का वध उनकी प्रारंभिक विजयों में से एक था। इसके पश्चात 1664 ईस्वी में उन्होंने प्रथम बार सूरत को लूटा। 1665 ईस्वी में मुगलों के साथ पुरंदर की संधि हुई, जिसके अंतर्गत उन्हें कई दुर्ग सौंपने पड़े। अंततः 1674 ईस्वी में रायगढ़ के दुर्ग में उनका भव्य राज्याभिषेक हुआ, जिसने उन्हें विधिवत छत्रपति के रूप में स्थापित किया।

61. (D) 1, 2 और 3
भारत के मध्यकालीन इतिहास में प्रशासनिक प्रणालियों का क्रमिक विकास हुआ। तुर्कों ने 'इक्ता' प्रणाली के माध्यम से राजस्व प्रबंधन और सैन्य सामंतवाद की शुरुआत की। शेरशाह सूरी ने भूमि की माप और वर्गीकरण पर आधारित जो भू-राजस्व सुधार किए, वे अत्यंत वैज्ञानिक थे। अकबर ने उन्हें 'दहसाला' प्रणाली के आधार के रूप में अपनाया। इसी प्रकार शिवाजी ने भी भूमि की सटीक माप और उपज के आधार पर एक न्यायसंगत राजस्व व्यवस्था लागू की थी।

62. (D) मुहम्मद बिन कासिम का आक्रमण
राजा दाहिर सिंध के अंतिम हिंदू शासक थे, जिन्होंने 712 ईस्वी में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व वाले प्रारंभिक अरब आक्रमण का डटकर मुकाबला किया। रावर के युद्ध में उन्होंने अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया, किंतु अंततः वे वीरगति को प्राप्त हुए। राजा दाहिर का बलिदान भारतीय इतिहास में विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध प्रारंभिक प्रतिरोध की एक महत्वपूर्ण गाथा है। उनकी मृत्यु के पश्चात ही सिंध क्षेत्र पर अरब शासन की नींव पड़ी।

63. (A) ललितादित्य मुक्तापीड
कश्मीर के कार्कोट वंश के महान शासक ललितादित्य मुक्तापीड को अरबों के विस्तार को रोकने का मुख्य श्रेय दिया जाता है। 8वीं शताब्दी के दौरान जब अरब सेनाएं सिंध से उत्तर की ओर बढ़ने का प्रयास कर रही थीं, ललितादित्य ने अपनी सैन्य कुशलता से उन्हें पराजित किया। उन्होंने न केवल कश्मीर की सीमाओं की रक्षा की, बल्कि कन्नौज के यशोवर्मन के साथ

गठबंधन कर मध्य एशिया तक अपने प्रभाव का विस्तार किया। उनकी विजयों ने भारत को सुरक्षित रखा।

64. (B) संप्रभुता का दावा और आक्रमणों से सुरक्षा।
'चौथ' मराठा राजस्व प्रणाली का एक प्रमुख कर था, जो पड़ोसी राज्यों की कुल उपज का एक-चौथाई हिस्सा होता था। यह कर उन क्षेत्रों से वसूला जाता था जो सीधे मराठा शासन के अधीन नहीं थे। इस कर के भुगतान के बदले मराठा उन क्षेत्रों पर आक्रमण न करने और उन्हें बाहरी शत्रुओं से सुरक्षा प्रदान करने की गारंटी देते थे। यह एक प्रकार का 'सुरक्षा शुल्क' था जिसने मराठा प्रभाव को प्रसारित करने में भूमिका निभाई।

65. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
अकबर की 'सुलह-ए-कुल' की नीति मुगल साम्राज्य की स्थिरता और सुदृढ़ीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई। इस नीति के माध्यम से अकबर ने धार्मिक कट्टरता को त्यागकर सभी संप्रदायों के बीच सहिष्णुता और सद्भाव को बढ़ावा दिया। इसके परिणामस्वरूप उसे राजपूतों जैसे प्रभावशाली समुदायों का अटूट सहयोग प्राप्त हुआ। इस सामाजिक समरसता ने न केवल विद्रोहों को कम किया, बल्कि एक समावेशी कुलीन वर्ग के निर्माण में भी सहायता की।

66. (A) सिंध से भारतीय हृदयस्थल में अरबों की प्रगति का प्रतिरोध करना।
पूर्व मध्यकाल में गुर्जर-प्रतिहार राजवंश ने भारत के 'द्वारपाल' के रूप में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 8वीं से 10वीं शताब्दी के दौरान उन्होंने सिंध के अरब शासकों के विरुद्ध एक सुदृढ़ रक्षा दीवार खड़ी की। नागभट्ट प्रथम और मिहिर भोज जैसे प्रतापी शासकों ने अरब आक्रमणों को बार-बार विफल किया और उन्हें भारतीय हृदयस्थल में प्रवेश करने से रोका। उनके प्रतिरोध के कारण ही भारत का आंतरिक भाग प्रारंभिक इस्लामी विस्तार से सुरक्षित रहा।

67. (C) 'जौहर' महिलाओं द्वारा आत्मदाह था और 'शाका' पुरुषों का अंतिम हमला था।
'जौहर' और 'शाका' राजपूत वीरता और सम्मान के दो पूरक पक्ष थे। जब किसी युद्ध में पराजय अपरिहार्य होती थी, तब राजपूत महिलाएं अपने सम्मान की रक्षा के लिए सामूहिक रूप से अग्नि में प्रवेश कर 'जौहर' करती थीं। इसके तुरंत पश्चात पुरुष योद्धा केसरिया बाना पहनकर और मृत्यु का संकल्प लेकर शत्रु पर अंतिम आत्मघाती प्रहार करते थे, जिसे 'शाका' कहा जाता था। इन दोनों कार्यों का सम्मिलित रूप राजपूत समाज में सर्वोच्च बलिदान था।

68. (D) सिंध
उबेदुल्ला और बुदैल के अभियान 8वीं शताब्दी के आरंभ में भारत पर अरबों के शुरुआती आक्रमण प्रयासों का हिस्सा थे। इन दोनों अभियानों को खलीफा के सेनापतियों द्वारा सिंध के राजा दाहिर के विरुद्ध भेजा गया था, किंतु भारतीय प्रतिरोध के कारण ये दोनों ही प्रयास विफल रहे और इन सेनापतियों को युद्ध में मार दिया गया। इन प्रारंभिक विफलताओं के पश्चात ही मुहम्मद बिन कासिम को विशाल सेना के साथ भेजा गया, जिसने सिंध पर विजय प्राप्त की।

69. (C) यह विशुद्ध रूप से एक सैन्य प्रणाली थी जिसके कोई नागरिक कार्य नहीं थे।
मुगलों की मनसबदारी प्रणाली एक व्यापक प्रशासनिक व्यवस्था थी, जिसने सैन्य और नागरिक दोनों विभागों को एकीकृत किया था। प्रत्येक सरकारी अधिकारी, चाहे वह सेना में हो या प्रशासन में, एक 'मनसब' या पद धारण करता था। यह कथन गलत है कि इसके कोई नागरिक कार्य नहीं थे, क्योंकि प्रांतीय गवर्नर और वित्तीय अधिकारी भी मनसबदार ही होते थे। यह प्रणाली पदानुक्रम और उत्तरदायित्व निर्धारित करने का मुख्य आधार थी और यह वंशानुगत नहीं थी।

70. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
मध्यकालीन भारत के इतिहास में विभिन्न शासकों ने विदेशी आक्रमणों का कड़ा प्रतिरोध किया। मेवाड़ के बप्पा रावल ने 8वीं शताब्दी में अरबों को पीछे धकेला। कश्मीर के ललितादित्य ने अपनी सैन्य शक्ति से अरब विस्तार को उत्तर में रोका। राजा दाहिर सिंध के अंतिम शासक थे, जिन्होंने मुहम्मद बिन कासिम के आक्रमण का सामना किया। राजा सुहेलदेव ने महमूद गजनी की सेनाओं और उसके सेनापति सालार मसूद के विरुद्ध एक निर्णायक विजय प्राप्त की थी।

71. (D) जागीर हस्तांतरणीय थी, जबकि वतन जागीर वंशानुगत थी।
मुगल प्रशासन में 'जागीर' वेतन के बदले आवंटित भूमि का राजस्व अधिकार था, जिसे सम्राट कभी भी वापस ले सकता था या अधिकारी का स्थानांतरण होने पर बदल सकता था। इसके विपरीत 'वतन जागीर' उन स्थानीय राजाओं और प्रमुखों को दी जाती थी, जिन्होंने मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी। यह उनकी अपनी पैतृक भूमि होती थी, जिसे मुगलों ने उन्हें वापस सौंप दिया था। वतन जागीर वंशानुगत होती थी और इसका हस्तांतरण नहीं किया जा सकता था।

72. (A) भारत में एक स्थायी इस्लामी साम्राज्य की स्थापना करना।
महमूद गजनी और मुहम्मद गोरी के भारत पर आक्रमणों के उद्देश्यों में एक मूलभूत अंतर था। महमूद का मुख्य लक्ष्य भारत की मंदिरों और नगरों से अपार धन-संपत्ति लूटना और अपने मध्य एशियाई साम्राज्य को आर्थिक रूप से समृद्ध करना था। इसके विपरीत मुहम्मद गोरी का उद्देश्य केवल लूटपाट तक सीमित नहीं था; वह भारत में एक स्थायी राजनीतिक सत्ता और साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। उसकी विजयों ने ही दिल्ली सल्तनत की स्थापना के लिए आधार तैयार किया।

73. (D) 1, 2 और 3
बादामी के चालुक्य दक्षिण और मध्य भारत के इतिहास में एक प्रमुख शक्ति थे। 6वीं से 8वीं शताब्दी के दौरान उनका दक्कन क्षेत्र पर वर्चस्व था। उनके सबसे प्रतापी राजा पुलकेशिन द्वितीय थे, जिन्होंने उत्तर के शक्तिशाली सम्राट हर्ष को पराजित किया था। चालुक्यों ने पश्चिमी तट से होने वाले प्रारंभिक अरब आक्रमणों का भी सफलतापूर्वक सामना किया और

(B) गोदावरी
(C) कृष्णा
(D) कावेरी

297. 'हिंदवी स्वराज्य' की औपचारिक स्थापना किसके द्वारा चिह्नित की गई थी?
(A) अफजल खान पर शिवाजी की विजय
(B) शिवाजी द्वारा सूरत की लूट
(C) रायगढ़ में शिवाजी का राज्याभिषेक
(D) आगरा से शिवाजी का पलायन

298. शेरशाह सूरी का प्रशासन किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) कुशल और केंद्रीकृत शासन।
(B) एक विकेंद्रीकृत सामंती संरचना।
(C) पूर्णतः राजपूतों से ली गई प्रणाली।
(D) बिना किसी परिवर्तन के तुगलक नीतियों की निरंतरता।

299. विजयनगर प्रशासन में 'अमरम' अनुदान किस उद्देश्य के लिए दिए जाते थे?
(A) कला और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए।
(B) मंदिरों के निर्माण और रखरखाव के लिए।
(C) बंजर भूमि में नई बस्तियों को प्रोत्साहित करने के लिए।
(D) राजा के लिए सैनिकों की एक निश्चित संख्या बनाए रखने के लिए।

300. 'मनसब' की अवधारणा मुगल प्रशासनिक संरचना के केंद्र में थी, जो एक अधिकारी के किसे परिभाषित करती थी?
(A) धार्मिक संबद्धता और कर्तव्य।
(B) पद, वेतन और सैन्य उत्तरदायित्व।
(C) वंशानुगत भूमि अधिकार।
(D) व्यापार और वाणिज्यिक विशेषाधिकार।

आगरा पर अधिकार प्राप्त करने में सहायता की। पंद्रह वर्षों के निर्वासन के पश्चात इस युद्ध ने भारत में मुगल वंश के द्वितीय शासन काल की नींव रखी।

84. (A) केवल 1 और 2
14वीं शताब्दी के दौरान जब मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में दिल्ली सल्तनत का विघटन आरंभ हुआ, तब दक्कन में दो महान शक्तियों का उदय हुआ। विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 में हरिहर और बुक्का ने की, जबकि बहमनी साम्राज्य की नींव 1347 में हसन गंगू ने रखी। यद्यपि विजयनगर एक हिंदू साम्राज्य था, किंतु बहमनी साम्राज्य अपनी स्थापना के समय एक सुन्नी राज्य था। इन दोनों साम्राज्यों के बीच का संघर्ष दक्षिण भारतीय इतिहास की मुख्य विशेषता बनी रही।

85. (C) बालाजी विश्वनाथ
बालाजी विश्वनाथ को "मराठा साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक" माना जाता है, क्योंकि उन्होंने औरंगजेब के पश्चात उत्पन्न हुई अराजकता और गृहयुद्ध की स्थिति से साम्राज्य को उबारा। 1713 ईस्वी में पेशवा बनने के पश्चात उन्होंने कूटनीतिक कुशलता से साहू महाराज की स्थिति को सुदृढ़ किया और विभिन्न मराठा सरदारों को एकजुट किया। उन्होंने मुगलों के साथ महत्वपूर्ण संधियाँ कीं, जिससे मराठों को दक्षिण में चौथ और सरदेशमुखी वसूलने का कानूनी अधिकार प्राप्त हुआ।

86. (A) 3, 1, 2, 4
दिल्ली सल्तनत के पाँच प्रमुख राजवंशों का शासनकाल भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण श्रृंखला है। इसकी शुरुआत 1206 में गुलाम वंश के साथ हुई, जिसके पश्चात 1290 में खिलजी वंश ने सत्ता संभाली। 1320 में तुगलक वंश का उत्थान हुआ, जिसने सल्तनत का सर्वाधिक भौगोलिक विस्तार किया। सैयदों के संक्षिप्त शासन के पश्चात अंततः 1451 में लोदी वंश का शासन आरंभ हुआ, जो 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध तक चला। यह क्रम सल्तनत के विकास को दर्शाता है।

87. (D) मुक्ती या वली
दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक ढांचे में प्रांतों को 'इक्ता' कहा जाता था और उनके प्रमुख को 'मुक्ती' या 'वली' के नाम से जाना जाता था। ये अधिकारी सीधे सुल्तान के प्रति उत्तरदायी होते थे और उनका मुख्य कार्य अपने आवंटित क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखना, राजस्व संग्रह करना और सुल्तान को आवश्यकता पड़ने पर सैन्य सहायता प्रदान करना था। मुक्ती का पद स्थानांतरणीय होता था ताकि वे स्थानीय स्तर पर बहुत अधिक शक्तिशाली न हो सकें और केंद्रीय नियंत्रण बना रहे।

88. (A) अठवन
विजयनगर साम्राज्य में भू-राजस्व प्रशासन के लिए एक समर्पित और सुव्यवस्थित विभाग था, जिसे 'अठवन' कहा जाता था। राजस्व राज्य की आय का मुख्य स्रोत था, जो सामान्यतः उपज का छठा हिस्सा होता था, यद्यपि भूमि की गुणवत्ता के आधार पर इसमें भिन्नता हो सकती थी। अठवन विभाग का मुख्य कार्य भूमि का सर्वेक्षण करना, राजस्व का निर्धारण करना और उसका संग्रह सुनिश्चित करना था। इस कुशल राजस्व प्रणाली ने ही विजयनगर के विशाल सैन्य और सांस्कृतिक वैभव को वित्तपोषित किया।

89. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
मुगल प्रशासन में उच्च पदों का स्पष्ट कार्य विभाजन था। 'मीर बख्शी' सैन्य विभाग का प्रमुख था, जो मनसबदारों की नियुक्ति और सैन्य वेतन की देखरेख करता था। 'खान-ए-सामां' शाही घराने और कारखानों की आवश्यकताओं के लिए उत्तरदायी था। 'सद्र-उस-सुदूर' धार्मिक मामलों और अनुदानों का विभाग संभालता था। 'काजी-उल-कुज़ात' साम्राज्य का मुख्य न्यायाधीश होता था। यह सुव्यवस्थित नौकरशाही तंत्र मुगल सत्ता को स्थायित्व प्रदान करने और प्रशासनिक नियंत्रण बनाए रखने के लिए निर्मित था।

90. (A) सुमंत या दबीर
शिवाजी महाराज की अष्टप्रधान परिषद में 'सुमंत' या 'दबीर' का पद अत्यंत महत्वपूर्ण था। उनका प्राथमिक उत्तरदायित्व अन्य राज्यों के साथ कूटनीतिक संबंध बनाए रखना, विदेशी दूतों का स्वागत करना और राजा को विदेश नीति के मामलों में परामर्श देना था। इसके अतिरिक्त वे पड़ोसी शक्तियों की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखते थे और गुप्तचर सूचनाएं एकत्रित करने में भी भूमिका निभाते थे। यह पद शिवाजी के स्वराज्य की रक्षा और बाहरी विस्तार की रणनीति के लिए एक अपरिहार्य स्तंभ था।

91. (D) भूमि की उर्वरता के आधार पर माप और मूल्यांकन।
शेरशाह सूरी ने भू-राजस्व प्रशासन में वैज्ञानिक सुधार किए जो अत्यंत प्रभावशाली रहे। उन्होंने भूमि की सटीक माप के लिए 'सिकंदरी गज' का उपयोग किया और भूमि को उसकी उर्वरता के आधार पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया। राजस्व का निर्धारण औसत उपज के एक-तिहाई भाग के रूप में किया गया था। किसानों को राजस्व नकद या अनाज दोनों रूपों में देने की छूट थी। इन सुधारों ने किसानों को सुरक्षा प्रदान की और राज्य की आय को स्थिर बनाया, जिसने बाद में अकबर के लिए आधार का कार्य किया।

92. (B) बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर, बीदर और बरार
15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बहमनी साम्राज्य के केंद्रीय शासन की कमजोरी के कारण यह पाँच स्वतंत्र सल्तनतों में विभाजित हो गया। ये राज्य थे: बीजापुर के आदिल शाही, गोलकुंडा के कुतुब शाही, अहमदनगर के निज़ाम शाही, बीदर के बरीद शाही और बरार के इमाद शाही। इन राज्यों के बीच अक्सर सीमा विवाद और वर्चस्व की लड़ाई चलती रहती थी, किंतु विजयनगर साम्राज्य के विरुद्ध वे अक्सर एकजुट होकर लड़ते थे। इन सल्तनतों ने दक्कन की विशिष्ट संस्कृति को जन्म दिया।

93. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
1665 ईस्वी में मुगल सेनापति जय सिंह और शिवाजी के बीच हुई पुरंदर की संधि मराठा इतिहास की एक कठिन घड़ी थी। मुगलों के सैन्य दबाव के कारण शिवाजी को अपने 35 दुर्गों में से 23 दुर्ग मुगलों को सौंपने पड़े, जिनकी राजस्व आय बहुत

प्रतिपादित की गई थी। इस नीति का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य के भीतर विभिन्न धर्मों, संप्रदायों और समुदायों के बीच सद्भाव स्थापित करना था। यह भेदभाव रहित शासन के सिद्धांत पर आधारित थी, जिसने मुगल सत्ता को भारत के विविध सामाजिक ढांचे में गहराई से स्थापित करने और स्थिरता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

113. (B) एक इस्लामी राज्य में गैर-मुस्लिम प्रजा पर लगने वाला प्रति-व्यक्ति कर।
मध्यकालीन भारत में जज़िया एक प्रति-व्यक्ति कर था, जो मुस्लिम शासकों द्वारा अपनी गैर-मुस्लिम प्रजा पर आरोपित किया जाता था। यह कर मुख्य रूप से राज्य द्वारा प्रदान की जाने वाली सुरक्षा और सैन्य सेवा से छूट के बदले लिया जाता था। भारत में इसकी शुरुआत मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध विजय के पश्चात की थी। यह कर इस्लामी सिद्धांतों पर आधारित था और इसे केवल सक्षम पुरुषों से ही वसूला जाता था। यह कर गैर-मुस्लिम प्रजा के प्रति राज्य के दायित्वों को परिभाषित करता था।

114. (A) चेक या विनिमय पत्र
मध्यकालीन भारत में 'हुंडी' एक महत्वपूर्ण वित्तीय साधन और विनिमय पत्र के रूप में प्रचलित थी। इसका उपयोग व्यापारियों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर धन हस्तांतरित करने के लिए किया जाता था। इसमें उधार का विवरण और भुगतान का वचन सम्मिलित होता था। इस व्यवस्था ने लंबी दूरी के व्यापार को सुरक्षित और सुगम बनाया, क्योंकि इसके कारण भारी मात्रा में नकद राशि ले जाने की जोखिम भरी आवश्यकता समाप्त हो गई थी। आधुनिक बैंकिंग प्रणाली में चेक का कार्य वैसा ही है जैसा मध्यकाल में हुंडी का था।

115. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
दिल्ली सल्तनत के शासनकाल के दौरान मंगोलों ने उत्तर-पश्चिमी सीमा से निरंतर और गंभीर खतरे उत्पन्न किए। इल्तुतमिश, बलबन और विशेष रूप से अलाउद्दीन खिलजी ने मंगोल आक्रमणों को विफल करने के लिए सैन्य सुदृढ़ीकरण और दुर्गों के निर्माण की नीतियां अपनाईं। मंगोल आक्रमणों ने दिल्ली सल्तनत के अस्तित्व के लिए गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न कीं। बलबन और अलाउद्दीन खिलजी जैसे शासकों को मुख्य रूप से मंगोल खतरे से निपटने के लिए नए दुर्ग बनाने पड़े और एक बड़ी स्थायी सेना रखनी पड़ी।

116. (D) गजनी के महमूद के अधीन एक सेनापति
महमूद गजनी के आक्रमणों के दौरान श्रावस्ती के राजा सुहेलदेव ने विदेशी सेनाओं के विरुद्ध वीरतापूर्ण प्रतिरोध का नेतृत्व किया। उन्होंने बहराइच के युद्ध में महमूद के सेनापति सालार मसूद को निर्णायक रूप से पराजित किया और मार गिराया। राजा सुहेलदेव की यह विजय केवल एक सैन्य सफलता नहीं थी, बल्कि इसने विदेशी आक्रमणकारियों के मन में भय उत्पन्न किया और लंबे समय तक उत्तर-पूर्व भारत को बाहरी हमलों से सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

117. (C) मुहम्मद बिन तुगलक
मुहम्मद बिन तुगलक अपने शासनकाल के दौरान किए गए अभिनव और महत्वाकांक्षी प्रयोगों के लिए जाना जाता है, जिनमें 'सांकेतिक मुद्रा' का प्रचलन सर्वाधिक चर्चित है। उसने चांदी के सिक्कों की कमी को दूर करने के लिए तांबे और पीतल के सिक्कों को सरकारी स्तर पर प्रचलित किया और उनका मूल्य चांदी के टंका के समान निर्धारित किया। हालाँकि, सिक्कों की ढलाई पर नियंत्रण की कमी और व्यापक जालसाजी के कारण यह योजना पूरी तरह विफल रही, जिससे सल्तनत के कोष को भारी क्षति पहुँची।

118. (B) जहाँगीर
मुगलों और सिखों के बीच सशस्त्र संघर्ष की शुरुआत मुगल सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में हुई। इसका तात्कालिक कारण गुरु अर्जन देव द्वारा जहाँगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो को आशीर्वाद देना था। जहाँगीर ने इसे राजद्रोह माना और गुरु अर्जन देव को बंदी बनाकर 1606 ईस्वी में मृत्युदंड दे दिया। इस दुखद घटना ने सिखों को सैन्य रूप से संगठित होने के लिए प्रेरित किया और भविष्य के उन दीर्घकालिक संघर्षों की नींव रखी, जिन्होंने मुगल सत्ता को अंततः कमजोर करने में बड़ी भूमिका निभाई।

119. (A) केवल 1 और 2
अहमद शाह अब्दाली आधुनिक अफगानिस्तान का संस्थापक और एक कुशल सैन्य रणनीतिकार था। वह नादिर शाह का सेनापति था और उसकी मृत्यु के पश्चात उसने अफगान साम्राज्य स्थापित किया। उसने भारत पर कई आक्रमण किए, जिनमें 1761 का पानीपत का तीसरा युद्ध सर्वाधिक निर्णायक था, जहाँ उसने मराठों को पराजित किया। हालाँकि, उसका मुख्य उद्देश्य भारत में स्थायी अफगान शासन स्थापित करना नहीं था, बल्कि पंजाब पर नियंत्रण बनाए रखना और अपार धन-संपत्ति लूटना था।

120. (A) दक्कन
15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बहमनी साम्राज्य के केंद्रीय शासन की कमजोरी के कारण यह पाँच स्वतंत्र सल्तनतों में विभाजित हो गया। ये राज्य थे: बीजापुर के आदिल शाही, गोलकुंडा के कुतुब शाही, अहमदनगर के निज़ाम शाही, बीदर के बरीद शाही और बरार के इमाद शाही। बहमनी साम्राज्य का पाँच अलग-अलग सल्तनतों में विघटन दक्कन के इतिहास की एक प्रमुख घटना है। इन राज्यों के बीच अक्सर सीमा विवाद और वर्चस्व की लड़ाई चलती रहती थी।

121. (C) एक संप्रभु, स्वतंत्र राज्य की स्थापना।
'हिंदवी स्वराज्य' शिवाजी महाराज द्वारा परिकल्पित एक राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारधारा थी। इसका मूल उद्देश्य भारतीय उपमहाद्वीप को विदेशी आक्रांताओं और दमनकारी सल्तनत शासन से मुक्त कराकर एक ऐसी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करना था, जो स्थानीय मूल्यों, परंपराओं और न्याय पर आधारित हो। शिवाजी द्वारा 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना एक संप्रभु, स्वतंत्र राज्य की स्थापना का प्रतीक थी। इसके माध्यम

उन्हें उनके कार्यों के बदले राजस्व का एक निश्चित भाग और कुछ भूमि अधिकार प्राप्त थे।

103. (D) 1, 2 और 3
लोदी वंश दिल्ली सल्तनत पर शासन करने वाला अंतिम राजवंश था और यह जातीय रूप से अफगान मूल का था। 1451 ईस्वी में बहलोल लोदी ने इस वंश की स्थापना की थी। सिकंदर लोदी ने आगरा नगर की स्थापना की। पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 को मुगल आक्रांता बाबर और दिल्ली सल्तनत के अंतिम सुल्तान इब्राहिम लोदी के बीच लड़ा गया था। इब्राहिम लोदी युद्ध के मैदान में मारा गया, जिसके परिणामस्वरुप दिल्ली सल्तनत का अंत हुआ और भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी गई।

104. (A) रानी दुर्गावती
गोंड साम्राज्य मध्य भारत के गढ़-कटंगा क्षेत्र में स्थित एक अत्यंत शक्तिशाली और समृद्ध जनजातीय राज्य था। रानी दुर्गावती, जो इस साम्राज्य की शासक थीं, अपनी वीरता और कुशल प्रशासन के लिए प्रसिद्ध थीं। 1564 ईस्वी में उन्होंने मुगल सेनापति आसफ खान के नेतृत्व वाली विशाल मुगल सेना का डटकर मुकाबला किया। यद्यपि वे युद्ध में पराजित हुईं, किंतु उनकी शहादत ने जनजातीय प्रतिरोध और गौरव की एक अमिट गाथा भारतीय इतिहास में अंकित कर दी।

105. (C) मेदिनी राय
1528 ईस्वी में चंदेरी का युद्ध मुगल सम्राट बाबर और राजपूतों के बीच लड़ा गया था। इस युद्ध में राजपूत सेना का नेतृत्व मेदिनी राय ने किया था, जो राणा सांगा का एक शक्तिशाली सहयोगी और चंदेरी का शासक था। खानवा की विजय के पश्चात बाबर मालवा क्षेत्र में अपना प्रभाव सुदृढ़ करना चाहता था। इस युद्ध में राजपूतों ने अभूतपूर्व वीरता दिखाई, किंतु बाबर की तोपखाने की शक्ति के कारण मेदिनी राय की पराजय हुई। यह विजय बाबर के लिए मध्य भारत में प्रभुत्व स्थापित करने की दिशा में बड़ा कदम थी।

106. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण सैन्य घटनाओं और उनके वर्षों का मिलान राजनीतिक परिवर्तनों को स्पष्ट करता है। 1398 में तैमूरलंग के आक्रमण ने दिल्ली सल्तनत को हिला दिया। 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध ने भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी। 1739 में नादिर शाह के आक्रमण ने मुगल वैभव को नष्ट कर दिया। अंत में 1761 में पानीपत का तीसरा युद्ध लड़ा गया, जिसने मराठा विस्तार को रोक दिया और ब्रिटिश शक्ति के उदय के लिए अप्रत्यक्ष रूप से मार्ग प्रशस्त किया।

107. (D) इसने तालिकोटा के युद्ध में बहमनी साम्राज्य को सफलतापूर्वक पीछे हटा दिया।
विजयनगर साम्राज्य दक्षिण भारत की एक महान शक्ति था, जिसकी स्थापना हरिहर और बुक्का ने की थी। यह साम्राज्य अपनी भव्य वास्तुकला और साहित्य के संरक्षण के लिए विश्वविख्यात रहा। हालाँकि, यह कथन गलत है कि इसने तालिकोटा के युद्ध में विजय प्राप्त की। वास्तव में 1565 ईस्वी में तालिकोटा (राक्षसी-तांगड़ी) के युद्ध में दक्कन सल्तनतों के संयुक्त गठबंधन ने विजयनगर को निर्णायक रूप से पराजित किया था, जिसके कारण इस महान साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया।

108. (B) मुगल और दक्कन सल्तनतों के पतन के दौरान रणनीतिक अवसर।
शिवाजी महाराज के नेतृत्व में मराठा शक्ति का उत्थान केवल सैन्य कुशलता का परिणाम नहीं था, बल्कि एक सटीक रणनीतिक समय का भी चुनाव था। 17वीं शताब्दी के मध्य में जब शक्तिशाली मुगल साम्राज्य दक्कन के युद्धों में उलझा हुआ था और बीजापुर एवं गोलकुंडा जैसी दक्कन सल्तनतें आंतरिक रूप से कमजोर हो रही थीं, तब शिवाजी ने इस राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाकर स्वराज्य की नींव रखी। उनकी छापामार युद्ध नीति ने उन्हें एक नई संप्रभु शक्ति के रूप में स्थापित किया।

109. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
पेशवा का पद मराठा प्रशासन में 'अष्टप्रधान' का प्रमुख था, किंतु बालाजी विश्वनाथ के समय से इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन आए। 1713 ईस्वी में साहू महाराज ने उन्हें पेशवा नियुक्त किया। साहू महाराज के शासनकाल के दौरान पेशवा का पद शक्तिशाली और वंशानुगत बन गया, जिससे आगे चलकर मराठा शासन की बागडोर वास्तविक रूप से पेशवाओं के हाथों में आ गई। पेशवा, जो मूल रूप से प्रधानमंत्री थे, मराठा साम्राज्य के वास्तविक शासक बन गए और शासन के समस्त सूत्र संचालित करने लगे।

110. (D) प्रांत
मुगल साम्राज्य के प्रशासनिक ढांचे में साम्राज्य को कई बड़े भौगोलिक और प्रशासनिक खंडों में विभाजित किया गया था, जिन्हें 'सूबा' कहा जाता था। प्रत्येक सूबे का प्रशासन एक गवर्नर द्वारा चलाया जाता था, जिसे 'सूबेदार' या 'नाज़िम' कहा जाता था। सूबों का विभाजन सम्राट अकबर द्वारा साम्राज्य के कुशल प्रबंधन के लिए किया गया था। प्रत्येक सूबे में केंद्र की भांति ही राजस्व, सैन्य और न्यायिक अधिकारी नियुक्त होते थे, जो स्थानीय स्तर पर शाही नियंत्रण और व्यवस्था सुनिश्चित करते थे।

111. (A) चोल और विजयनगर जैसे दक्षिण भारतीय साम्राज्य
मध्यकालीन दक्षिण भारत, विशेष रूप से चोल और विजयनगर साम्राज्यों के दौरान 'नाडु' एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई थी। यह कई गाँवों के समूह को मिलाकर बनती थी। नाडु का मुख्य कार्य राजस्व प्रशासन, न्याय व्यवस्था और स्थानीय स्तर पर कृषि संबंधी कार्यों का प्रबंधन करना था। इसकी अपनी एक परिषद होती थी जो स्थानीय स्वायत्तता का प्रतिनिधित्व करती थी। यह व्यवस्था ग्रामीण और प्रांतीय प्रशासन के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती थी, जो स्थानीय आवश्यकताओं को राज्य तक पहुँचाती थी।

112. (B) अकबर
'सुलह-ए-कुल' का शाब्दिक अर्थ सार्वभौमिक शांति या पूर्ण सहिष्णुता है। यह अवधारणा मुगल सम्राट अकबर द्वारा

पुत्र हुमायूँ के शासनकाल के दौरान सूर वंश के उत्थान का एक महत्वपूर्ण कालखंड था।

171. (D) सिख
मुगल सम्राट जहाँगीर द्वारा सिखों के पाँचवें गुरु, गुरु अर्जन देव को दिया गया मृत्युदंड मुगलों और सिखों के संबंधों में एक स्थायी कड़वाहट का कारण बना। गुरु अर्जन देव पर जहाँगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो की सहायता करने का आरोप था। 1606 ईस्वी में हुई उनकी शहादत ने शांतिप्रिय सिख समुदाय को सैन्य रूप से संगठित होने के लिए प्रेरित किया। इसके पश्चात सिखों ने अपनी रक्षा के लिए 'मीरी और पीरी' के सिद्धांत को अपनाया और मुगलों के विरुद्ध एक सशक्त योद्धा समुदाय के रूप में उभरे।

172. (B) मुहम्मद बिन तुगलक
बहमनी साम्राज्य की स्थापना 1347 ईस्वी में दिल्ली सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की दमनकारी और अस्थिर नीतियों के विरुद्ध एक बड़े विद्रोह के परिणामस्वरूप हुई थी। दक्कन के अमीरों ने तुगलक के केंद्रीय नियंत्रण से मुक्त होने के लिए अलाउद्दीन हसन बहमन शाह के नेतृत्व में विद्रोह किया। इस विद्रोह की सफलता ने दक्कन में प्रथम स्वतंत्र मुस्लिम साम्राज्य की नींव रखी। बहमनी साम्राज्य का उदय दिल्ली सल्तनत के भौगोलिक संकुचन और दक्षिण भारत में क्षेत्रीय शक्तियों के सशक्तिकरण का उदाहरण है।

173. (C) विजयनगर साम्राज्य
'नयंकर प्रणाली' विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था का एक विशिष्ट स्तंभ थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत राजा (राय) अपने विश्वसनीय सैन्य प्रमुखों या 'नायकों' को उनकी सैन्य सेवाओं के बदले भूमि का एक निश्चित भाग, जिसे 'अमरम' कहा जाता था, आवंटित करता था। इन नायकों को अपने क्षेत्र से राजस्व एकत्र करने, कानून-व्यवस्था बनाए रखने और आवश्यकता पड़ने पर राजा को सैन्य सहायता प्रदान करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया था। यह प्रणाली राज्य के सुदूर क्षेत्रों तक केंद्रीय प्रभाव बनाए रखने का साधन थी।

174. (D) पानीपत का तीसरा युद्ध
तृतीय पेशवा बालाजी बाजीराव, जिन्हें नाना साहब के नाम से भी जाना जाता था, के कार्यकाल में मराठा साम्राज्य का विस्तार अपने चरम पर था। किंतु इसी दौरान 1761 ईस्वी में पानीपत का तीसरा युद्ध लड़ा गया, जो मराठों के लिए एक भीषण सैन्य आपदा सिद्ध हुआ। अहमद शाह अब्दाली की सेनाओं ने मराठों को निर्णायक रूप से पराजित किया। इस युद्ध में मराठा शक्ति के अपार जन-धन की हानि हुई और इसने पेशवा की प्रतिष्ठा को इतना गहरा आघात पहुँचाया कि सदमे के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

175. (A) मुगल सम्राट अकबर
भू-राजस्व की 'ज़ब्ती' या 'दहसाला' प्रणाली मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक उपलब्धि थी। अकबर के वित्त मंत्री राजा टोडरमल ने इसे पिछले दस वर्षों की औसत पैदावार और मूल्यों के आधार पर विकसित किया था। इस प्रणाली में भूमि की सटीक माप की जाती थी और कर का निर्धारण नकद में किया जाता था। इससे न केवल किसानों को अपने कर दायित्वों की स्पष्ट जानकारी मिली, बल्कि राज्य की आय भी स्थिर हो गई, जिससे साम्राज्य को आर्थिक मजबूती प्राप्त हुई।

176. (B) पूर्ण शांति
'सुलह-ए-कुल' एक फारसी शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ 'पूर्ण शांति' या 'सार्वभौमिक सहिष्णुता' है। मुगल सम्राट अकबर ने इस अवधारणा को अपनी धार्मिक और प्रशासनिक नीति का आधार बनाया। इसका उद्देश्य साम्राज्य के सभी धर्मों और समुदायों के बीच बिना किसी भेदभाव के सद्भाव और शांति स्थापित करना था। अकबर का मानना था कि एक विशाल और विविध देश पर शासन करने के लिए सभी प्रजा के प्रति समान दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य है। यह नीति मुगल साम्राज्य की एकता और स्थिरता का मुख्य आधार बनी।

177. (B) मुहम्मद बिन कासिम
712 ईस्वी में सिंध पर ऐतिहासिक अरब आक्रमण का नेतृत्व एक युवा और कुशल सेनापति मुहम्मद बिन कासिम ने किया था। उसे इराक के गवर्नर अल-हज्जाज ने राजा दाहिर को दंडित करने और सिंध क्षेत्र पर अधिकार करने के लिए भेजा था। कासिम ने आधुनिक सैन्य उपकरणों और रणनीतियों का उपयोग कर राजा दाहिर को पराजित किया। इस आक्रमण ने भारतीय उपमहाद्वीप में पहली बार इस्लामी शासन का द्वार खोला और सिंध क्षेत्र को खलीफा के साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण भाग बना दिया।

178. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मुहम्मद गोरी के आक्रमणों का भारतीय इतिहास पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा। जहाँ महमूद गजनी का उद्देश्य मुख्य रूप से लूटपाट था, वहीं गोरी का लक्ष्य भारत में एक संगठित तुर्की साम्राज्य स्थापित करना था। तराइन के युद्धों में विजय के पश्चात उसने अपने विजित प्रदेशों का प्रशासन अपने वफादार दास और सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंप दिया। इसी नींव पर 1206 ईस्वी में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई, जिसने उत्तर भारत की राजनीतिक संरचना को पूर्णतः बदल दिया।

179. (C) गयासुद्दीन तुगलक
तुगलक वंश की स्थापना 1320 ईस्वी में गयासुद्दीन तुगलक द्वारा की गई थी, जिसे गाजी मलिक के नाम से भी जाना जाता था। उसने खिलजी वंश के अंतिम अकुशल शासकों के पश्चात फैली अराजकता को समाप्त कर सत्ता संभाली। गयासुद्दीन ने दिल्ली के समीप तुगलकाबाद नामक एक सुदृढ़ नगर बसाया और सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण करवाकर कृषि क्षेत्र में सुधार किए। उसका संक्षिप्त शासन काल दिल्ली सल्तनत को पुनः व्यवस्थित करने और प्रशासनिक मजबूती प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक चरण था।

180. (D) शेरशाह सूरी
अफगान शासक शेरशाह सूरी ने अपनी असाधारण सैन्य कुशलता और कूटनीति के माध्यम से मुगल सम्राट हुमायूँ को

से शिवाजी ने जनता में स्व-शासन और राष्ट्रीय गौरव की भावना जाग्रत की।

122. (A) चौथ की आक्रामक सैन्य वसूली।
पेशवाओं के अधीन, विशेष रूप से बाजीराव प्रथम के कार्यकाल में, मराठा साम्राज्य का तीव्र विस्तार हुआ। यह विस्तार मुख्य रूप से 'चौथ' और 'सरदेशमुखी' की आक्रामक सैन्य वसूली की नीति द्वारा संचालित था। मराठा सेनाएं उत्तर भारत की ओर बढ़ीं और मुगल प्रभाव वाले क्षेत्रों से राजस्व का दावा किया। इस नीति ने न केवल मराठा कोष को समृद्ध किया, बल्कि मुगलों के राजनीतिक प्रभुत्व को चुनौती देते हुए मराठों को एक अखिल भारतीय शक्ति के रूप में स्थापित किया।

123. (D) सशक्त केंद्रीय नौकरशाही और नियंत्रण।
शिवाजी महाराज का प्रशासन अपनी कार्यकुशलता और सुदृढ़ केंद्रीय नियंत्रण के लिए मध्यकालीन भारत में अद्वितीय था। उन्होंने 'अष्टप्रधान' परिषद के माध्यम से एक संगठित नौकरशाही तंत्र विकसित किया, जिसमें राजा की शक्तियाँ सर्वोच्च थीं। जागीरदारी प्रथा के विपरीत उन्होंने अधिकारियों को नकद वेतन देने और राजस्व संग्रह पर सीधा नियंत्रण रखने की नीति अपनाई। भ्रष्टाचार रोकने और अनुशासन बनाए रखने के लिए उनके द्वारा स्थापित कठोर नियम उनकी प्रशासनिक दूरदर्शिता का प्रमाण थे।

124. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
मध्यकालीन भारतीय राज्यों की प्रशासनिक प्रणालियों की अपनी विशिष्ट पहचान थी। दिल्ली सल्तनत ने 'इक्ता' प्रणाली के माध्यम से राजस्व प्रबंधन किया। मुगलों ने एक जटिल 'मनसब' व्यवस्था विकसित की जो पद और सैन्य उत्तरदायित्व निर्धारित करती थी। विजयनगर साम्राज्य में 'अमरम' अनुदान के माध्यम से नायकों को भूमि दी जाती थी। शिवाजी महाराज ने अपने साम्राज्य के कुशल संचालन के लिए 'अष्टप्रधान' परिषद का गठन किया था। ये सभी प्रणालियाँ शासन व्यवस्था के मुख्य आधार थीं।

125. (C) इसने राजपूत संघ की शक्ति को समाप्त कर दिया।
1527 ईस्वी में लड़ा गया खानवा का युद्ध बाबर के लिए पानीपत से भी अधिक चुनौतीपूर्ण था। इसका मुख्य कारण मेवाड़ के राणा सांगा के नेतृत्व में एकजुट हुआ शक्तिशाली राजपूत संघ था, जो बाबर को भारत से बाहर खदेड़ने का संकल्प ले चुका था। बाबर को लगा कि जब तक वह इस संयुक्त राजपूत शक्ति को पराजित नहीं करता, तब तक भारत में उसका शासन स्थायी नहीं हो सकता। इस विजय के पश्चात बाबर का उत्तरी भारत पर नियंत्रण सुदृढ़ हो गया और राजपूत संघ की शक्ति समाप्त हो गई।

126. (D) अकबर ने किले के निवासियों के सामान्य नरसंहार का आदेश दिया।
1567-68 ईस्वी में अकबर द्वारा चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी मुगल इतिहास की एक अत्यंत रक्तरंजित घटना है। कई महीनों के कड़े प्रतिरोध के पश्चात जब मुगलों ने दुर्ग के फाटकों को तोड़ दिया, तब अकबर ने विजय के उन्माद में दुर्ग के भीतर उपस्थित लगभग 30,000 निवासियों और निहत्थे नागरिकों के सामान्य नरसंहार का आदेश दिया। यह कार्य अकबर के उदारवादी चरित्र पर एक गहरा धब्बा माना जाता है और इसने राजपूतों के मन में मुगलों के प्रति दीर्घकालिक शत्रुता के भाव को गहरा कर दिया।

127. (A) आर्थिक और धार्मिक किसान असंतोष।
औरंगजेब के शासनकाल के दौरान सतनामी विद्रोह 1672 ईस्वी में हुआ था। सतनामी मुख्य रूप से निम्न वर्ग के किसानों, शिल्पकारों और श्रमिकों का एक धार्मिक संप्रदाय था। यह विद्रोह आर्थिक और धार्मिक किसान असंतोष का प्रकटीकरण था। एक मामूली विवाद ने सशस्त्र विद्रोह का रूप ले लिया, जिसे दबाने के लिए औरंगजेब को एक विशाल शाही सेना भेजनी पड़ी। यह विद्रोह मुगल प्रशासन के प्रति ग्रामीण और श्रमिक वर्ग के गहरे आर्थिक और सामाजिक असंतोष का प्रतीक था।

128. (B) तालिकोटा के युद्ध में पराजय।
1565 ईस्वी में लड़ा गया तालिकोटा का युद्ध, जिसे राक्षसी-तांगड़ी के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिण भारतीय इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था। इस युद्ध में बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर और बीदर की दक्कन सल्तनतों के संयुक्त गठबंधन ने विजयनगर साम्राज्य की सेना को पराजित किया। इस पराजय के पश्चात विजयनगर शहर को पूरी तरह लूटा और नष्ट कर दिया गया, जिससे वैभवशाली साम्राज्य का प्रभाव समाप्त हो गया। विजयनगर साम्राज्य के पतन का यह सबसे महत्वपूर्ण कारण था।

129. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
दिल्ली सल्तनत की स्थापना और उसका विस्तार निरंतर युद्धों और सैन्य अभियानों के माध्यम से हुआ था। तुर्की सुल्तानों के अधीन प्रशासन अनिवार्य रूप से सैन्य प्रकृति का था, क्योंकि राज्य का अस्तित्व और सुरक्षा एक सुदृढ़ स्थायी सेना पर निर्भर थी। उत्तर-पश्चिम से मंगोलों के लगातार हमलों और आंतरिक रूप से विद्रोही अमीरों की चुनौतियों के कारण सुल्तानों को अपनी पूरी प्रशासनिक व्यवस्था को रक्षात्मक और आक्रामक सैन्य संरचना के चारों ओर केंद्रित करना पड़ा।

130. (A) कृषि
मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि उत्पादन में सुधार और अकाल जैसी स्थितियों से निपटने के लिए एक विशेष और नया विभाग 'दीवान-ए-कोही' स्थापित किया था। इस विभाग का मुख्य कार्य किसानों को प्रत्यक्ष ऋण प्रदान करना, कृषि क्षेत्र का विस्तार करना और राज्य की देखरेख में वैज्ञानिक पद्धति से फसलों के चक्रण को बढ़ावा देना था। यद्यपि सुल्तान की यह योजना अत्यंत प्रगतिशील थी, किंतु भ्रष्टाचार और अधिकारियों की अक्षमता के कारण यह अंततः सफल नहीं हो सकी।

131. (C) गयासुद्दीन बलबन
गुलाम वंश के अंतिम चरण में गयासुद्दीन बलबन एक अत्यंत शक्तिशाली और प्रभावी शासक के रूप में उभरा। उसने 'रक्त और लौह' की नीति अपनाकर सुल्तान के पद की प्रतिष्ठा और शक्ति

को पुनः स्थापित किया। बलबन ने चालीस अमीरों के दल को समाप्त किया, गुप्तचर व्यवस्था को सुदृढ़ किया और मंगोलों के विरुद्ध सीमाओं की रक्षा की। उसकी मृत्यु के पश्चात उसके उत्तराधिकारी दुर्बल सिद्ध हुए, जिससे जल्द ही खिलजी वंश के उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ।

132. (D) तैमूर (तैमूरलंग)
मध्य एशियाई विजेता तैमूरलंग ने 1398 ईस्वी में भारत पर आक्रमण किया। उस समय दिल्ली की गद्दी पर तुगलक वंश के अंतिम शासक नसीरुद्दीन महमूद का शासन था। तैमूर के इस आक्रमण ने दिल्ली में अभूतपूर्व तबाही मचाई और सल्तनत की शक्ति को पूरी तरह नष्ट कर दिया। इस हमले के पश्चात तुगलक वंश का पतन सुनिश्चित हो गया, जिससे कालांतर में सैयदों और लोदी वंश के उत्थान के लिए राजनीतिक मार्ग प्रशस्त हुआ।

133. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
तुगलक वंश का शासन काल दिल्ली सल्तनत के लिए विरोधाभासों का समय था। मुहम्मद बिन तुगलक के अधीन सल्तनत ने अपनी अधिकतम भौगोलिक सीमा प्राप्त की, जिसमें दक्षिण भारत का बड़ा हिस्सा सम्मिलित था। हालाँकि, सुल्तान के महत्वाकांक्षी और प्रयोगधर्मी निर्णयों, जैसे राजधानी परिवर्तन और सांकेतिक मुद्रा, ने राजकोष को रिक्त कर दिया और साम्राज्य में अशांति फैला दी। तैमूर के आक्रमण ने अंततः इस महान साम्राज्य का पतन सुनिश्चित कर दिया।

134. (B) चौसा और कन्नौज
मुगल सम्राट हुमायूँ को शेरशाह सूरी के हाथों दो निर्णायक युद्धों में पराजित होना पड़ा, जिसके कारण उसे भारत से पलायन करना पड़ा। 1539 में चौसा के युद्ध में शेरशाह की चालाकी और रणनीतिक श्रेष्ठता के कारण हुमायूँ की सेना को भारी क्षति हुई। इसके पश्चात 1540 में कन्नौज के युद्ध में अंतिम पराजय ने हुमायूँ को विस्थापित कर दिया और अगले पंद्रह वर्षों के लिए भारत में अफगान सत्ता (सूर साम्राज्य) की स्थापना हुई।

135. (D) रानी दुर्गावती
गोंड साम्राज्य मध्य भारत के गढ़-कटंगा क्षेत्र में स्थित एक अत्यंत शक्तिशाली और समृद्ध जनजातीय राज्य था। रानी दुर्गावती, जो इस साम्राज्य की शासक थीं, अपनी वीरता और कुशल प्रशासन के लिए प्रसिद्ध थीं। 1564 ईस्वी में उन्होंने मुगल सेनापति आसफ खान के नेतृत्व वाली विशाल मुगल सेना का डटकर मुकाबला किया। यद्यपि वे युद्ध में पराजित हुईं, किंतु उनकी शहादत ने जनजातीय प्रतिरोध और गौरव की एक अमिट गाथा भारतीय इतिहास में अंकित कर दी।

136. (A) पुरुष योद्धाओं द्वारा मृत्यु तक लड़ना।
राजपूतों में 'शाका' की परंपरा युद्ध के मैदान में अंतिम बलिदान का प्रतीक थी। जब किसी किले की घेराबंदी के दौरान विजय की कोई आशा नहीं बचती थी, तब राजपूत योद्धा केसरिया वस्त्र धारण कर दुर्ग के द्वार खोल देते थे। वे शत्रु पर अंतिम प्रहार करने के लिए निकल पड़ते थे, जिसका उद्देश्य केवल मृत्यु तक लड़ना होता था। यह क्रिया महिलाओं द्वारा किए गए 'जौहर' के पश्चात की जाती थी और सामूहिक रुप से वीरता का प्रतीक थी।

137. (C) मुगल सम्राटों का निरंतर समर्थन।
मराठा साम्राज्य का उदय मुगल सत्ता के विरुद्ध संघर्ष और प्रतिरोध की उपज था, न कि उनके समर्थन की। महाराष्ट्र की पहाड़ी भौगोलिक स्थिति ने छापामार युद्ध के लिए उपयुक्त आधार प्रदान किया। भक्ति आंदोलन ने जातिगत बंधनों को तोड़कर सामाजिक एकता और क्षेत्रीय पहचान की भावना को सुदृढ़ किया। इसके अतिरिक्त अनेक मराठा सरदारों ने दक्कन की सल्तनतों में उच्च पदों पर रहकर प्रशासनिक अनुभव प्राप्त किया था, जिसने स्वराज्य निर्माण में योगदान दिया।

138. (A) बाजीराव प्रथम
बाजीराव प्रथम के कार्यकाल के दौरान पेशवा का पद मराठा साम्राज्य में शक्ति का मुख्य केंद्र बन गया। यद्यपि शिवाजी महाराज के समय छत्रपति ही सर्वोच्च थे, किंतु धीरे-धीरे पेशवाओं की प्रशासनिक और सैन्य कुशलता के कारण राजा की शक्ति नाममात्र की रह गई। बाजीराव प्रथम ने अपनी आक्रामक विस्तारवादी नीतियों और सैन्य विजयों के माध्यम से पेशवा की प्रतिष्ठा को शिखर पर पहुँचाया। उनके समय में साम्राज्य के सभी महत्वपूर्ण निर्णय पुणे से लिए जाने लगे।

139. (C) केवल 1 और 3
शिवाजी महाराज ने प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के लिए आठ मंत्रियों की एक परिषद 'अष्टप्रधान' का गठन किया था। इस परिषद का नेतृत्व 'पेशवा' करता था जो आधुनिक प्रधानमंत्री के समान था। शिवाजी ने यह सुनिश्चित किया था कि ये पद वंशानुगत न हों; मंत्रियों की नियुक्ति पूरी तरह योग्यता के आधार पर की जाती थी और उन्हें राजा द्वारा पदमुक्त किया जा सकता था। जागीरदारी प्रथा के स्थान पर उन्होंने अधिकारियों को नकद वेतन देने की नीति अपनाई।

140. (B) सैन्य विभाग का प्रमुख और मुख्य वेतन अधिकारी।
मुगल प्रशासनिक ढांचे में 'मीर बख्शी' एक अत्यंत महत्वपूर्ण और शक्तिशाली अधिकारी था। वह सैन्य विभाग का मुख्य प्रबंधक था, जिसकी जिम्मेदारियों में मनसबदारों की भर्ती, उनके सैन्य दस्तों का निरीक्षण और अश्वों को दागने की व्यवस्था की निगरानी सम्मिलित थी। वह सभी सैन्य अधिकारियों के वेतन बिलों पर हस्ताक्षर करता था और युद्ध के दौरान सम्राट के साथ सेना का संचालन करता था। मीर बख्शी का पद साम्राज्य की रक्षा और सैन्य अनुशासन के लिए केंद्रीय धुरी था।

141. (C) अलाउद्दीन खिलजी
अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी सैन्य शक्ति को सुदृढ़ करने और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए 'दाग' और 'चेहरा' प्रणालियाँ अनिवार्य की थीं। 'दाग' व्यवस्था के अंतर्गत प्रत्येक घोड़े को शाही निशान से दागा जाता था ताकि सैनिक निरीक्षण के समय श्रेष्ठ अश्वों को निम्न श्रेणी के अश्वों से न बदल सकें। 'चेहरा' के तहत प्रत्येक सैनिक का विस्तृत शारीरिक विवरण दर्ज किया जाता था ताकि उनकी पहचान सुनिश्चित की जा सके। इन सुधारों ने खिलजी की सेना को अत्यधिक अनुशासित बनाया।

142. (A) बरार, बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा, बीदर
15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बहमनी साम्राज्य के विघटन के पश्चात दक्कन में पाँच स्वतंत्र सल्तनतें अस्तित्व में आईं। इनका उदय क्रमिक रूप से हुआ, जिसमें सबसे पहले बरार (1490) ने स्वतंत्रता घोषित की, उसके पश्चात बीजापुर और अहमदनगर स्वतंत्र हुए। गोलकुंडा का उत्थान 1512 में हुआ और अंततः बीदर ने 1528 में स्वयं को स्वतंत्र घोषित किया। इन राज्यों के उदय ने दक्कन की राजनीति को अत्यधिक जटिल बना दिया, जहाँ वे अक्सर आपस में युद्धरत रहते थे।

143. (A) इसके परिणामस्वरूप विजयनगर (हम्पी) नगर को लूटा गया।
1565 ईस्वी में लड़ा गया तालिकोटा का युद्ध दक्षिण भारतीय इतिहास की एक विनाशकारी घटना थी। इस युद्ध में दक्कन की सल्तनतों के संयुक्त गठबंधन ने विजयनगर साम्राज्य की मुख्य सेना को पराजित किया। विजय के पश्चात हमलावर सेनाओं ने पाँच महीनों तक विजयनगर की राजधानी हम्पी में भयानक लूटपाट, आगजनी और तोड़फोड़ की। विश्व के सबसे वैभवशाली शहरों में से एक हम्पी पूरी तरह मलबे में तब्दील हो गया। इस पराजय ने दक्षिण भारत के अंतिम महान हिंदू साम्राज्य के गौरव को समाप्त कर दिया।

144. (B) सेना के रखरखाव के लिए सैन्य कमांडरों (नायकों) को।
विजयनगर साम्राज्य की 'अमरम' प्रणाली एक सैन्य-प्रशासनिक व्यवस्था थी। इसके अंतर्गत राजा अपने प्रमुख सैन्य अधिकारियों, जिन्हें 'अमरनायक' कहा जाता था, को उनकी सेवाओं के बदले राजस्व संग्रह के लिए भूमि आवंटित करता था। इन नायकों का मुख्य दायित्व अपने आवंटित क्षेत्र में शांति बनाए रखना, राजा को एक निश्चित वार्षिक राजस्व प्रदान करना और युद्ध के समय राजा की सहायता के लिए एक स्थायी सैन्य दल तैयार रखना था। यह व्यवस्था साम्राज्य की सैन्य तत्परता सुनिश्चित करती थी।

145. (B) दक्षिण भारत में एक सामंती स्वामी या अधीनस्थ सरदार।
'पॉलीगार' या 'पालयक्कारर' दक्षिण भारत के विजयनगर और उसके उत्तरवर्ती काल के दौरान एक विशिष्ट सामंती वर्ग था। ये स्थानीय स्तर पर शक्तिशाली सरदार होते थे जिन्हें प्रशासनिक और सैन्य अधिकार प्राप्त थे। उन्हें 'पालयम' नामक क्षेत्र दिए जाते थे, जहाँ वे राजस्व संग्रह करते थे और कानून-व्यवस्था बनाए रखते थे। 18वीं शताब्दी के दौरान जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी पकड़ सुदृढ़ करनी चाही, तो इन पॉलीगारों ने अपनी स्वायत्तता की रक्षा के लिए अनेक हिंसक संघर्षों का नेतृत्व किया।

146. (A) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
712 ईस्वी में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिंध पर अरब विजय ने भारत में पहली बार इस्लामी शासन की नींव रखी। हालाँकि, यह राजनीतिक विस्तार सिंध और मुल्तान के क्षेत्रों तक ही सीमित रहा। यह कथन गलत है कि यह पूरे उपमहाद्वीप में तेजी से फैला, क्योंकि गुर्जर-प्रतिहार, चालुक्य और कश्मीर के ललितादित्य जैसे शक्तिशाली राजवंशों ने अरबों की प्रगति को प्रभावी ढंग से अवरुद्ध कर दिया। अगले कई शताब्दियों तक अरब भारत के आंतरिक भागों में प्रवेश नहीं कर सके।

147. (C) प्रारंभिक अरब आक्रमणों का प्रतिरोध करने के लिए।
मेवाड़ के गुहिल वंश के संस्थापक बप्पा रावल को राजस्थानी लोकगाथाओं और इतिहास में एक महान रक्षक के रूप में माना जाता है। 8वीं शताब्दी में जब अरब सेनाएं सिंध पर विजय प्राप्त करने के पश्चात राजपूताना और मध्य भारत की ओर बढ़ने का प्रयास कर रही थीं, तब बप्पा रावल ने एक शक्तिशाली गठबंधन बनाकर उन्हें करारी शिकस्त दी। उनके इस शौर्यपूर्ण प्रतिरोध के कारण ही भारत का विशाल आंतरिक भूभाग लंबे समय तक विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रहने में सफल रहा।

148. (D) अपने मध्य एशियाई साम्राज्य के लिए धन लूटना।
महमूद गजनी ने भारत पर सत्रह बार आक्रमण किए, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत की अपार धन-संपत्ति को लूटना था। वह इस लूटे गए धन का उपयोग गजनी को एक शानदार सांस्कृतिक और प्रशासनिक केंद्र बनाने तथा अपने मध्य एशियाई प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध युद्ध लड़ने के लिए करना चाहता था। उसका उद्देश्य भारत में स्थायी साम्राज्य स्थापित करना या यहाँ बसना नहीं था। सोमनाथ जैसे समृद्ध मंदिरों पर उसके हमले इसी आर्थिक आकांक्षा और सैन्य प्रभुत्व का भाग थे।

149. (C) हुमायूँ के विरुद्ध शेरशाह सूरी की।
1539 ईस्वी में लड़ा गया चौसा का युद्ध भारतीय इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था। इस युद्ध में अफगान शासक शेरशाह सूरी ने मुगल सम्राट हुमायूँ को करारी शिकस्त दी। गंगा नदी के तट पर लड़े गए इस युद्ध में शेरशाह की रणनीतिक कुशलता ने मुगलों को भारी क्षति पहुँचाया। इस विजय के पश्चात शेरशाह ने 'शाह' की उपाधि धारण की और अपना स्वयं का सिक्का प्रचलित किया। इस पराजय ने हुमायूँ की स्थिति को अत्यंत निर्बल कर दिया और मुगल साम्राज्य के अस्थायी अंत का आरंभ हुआ।

150. (A) 4, 1, 2, 3
अकबर के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं का कालक्रम उसके साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण और धार्मिक नीतियों के विकास को स्पष्ट करता है। 1556 ईस्वी में पानीपत का द्वितीय युद्ध उसकी पहली बड़ी सैन्य सफलता थी। इसके पश्चात 1564 ईस्वी में उसने जज़िया कर को समाप्त कर एक उदारवादी छवि बनाई। 1567-68 ईस्वी में चित्तौड़गढ़ की प्रसिद्ध घेराबंदी हुई, जिससे राजपूत शक्ति पर उसका प्रभाव बढ़ा। अंत में 1582 ईस्वी में उसने अपने नए धार्मिक विचार 'दीन-ए-इलाही' की घोषणा की थी।

151. (D) चूड़ामन और बदन सिंह
औरंगजेब की नीतियों के विरुद्ध जाट प्रतिरोध 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अत्यंत शक्तिशाली हो गया। यद्यपि गोकुला ने इस विद्रोह का आरंभ किया था, किंतु चूड़ामन और बदन सिंह ने जाटों को एक सुव्यवस्थित सैन्य और राजनीतिक शक्ति के रूप में संगठित किया। उन्होंने भरतपुर जैसे स्वतंत्र जाट राज्य की नींव रखी और मुगलों के केंद्रीय नियंत्रण को आगरा और

अधिक थी। इसके अतिरिक्त उन्हें अपने पुत्र संभाजी को मुगल दरबार में मनसबदार के रूप में भेजने और स्वयं आवश्यकता पड़ने पर मुगल सेवा में उपस्थित होने के लिए सहमत होना पड़ा। इस संधि ने शिवाजी के स्वराज्य विस्तार को अस्थायी रूप से रोक दिया था।

94. (D) बाहरी और विदेशी शासन से मुक्त एक संप्रभु स्वदेशी राज्य।
'हिंदवी स्वराज्य' शिवाजी महाराज द्वारा परिकल्पित एक राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारधारा थी। इसका मूल उद्देश्य भारतीय उपमहाद्वीप को विदेशी आक्रांताओं और दमनकारी सल्तनत शासन से मुक्त कराकर एक ऐसी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करना था, जो स्थानीय मूल्यों, परंपराओं और न्याय पर आधारित हो। यह किसी विशिष्ट धर्म के विरुद्ध नहीं, बल्कि विदेशी पराधीनता के विरुद्ध एक आत्मनिर्णय का आंदोलन था। इसके माध्यम से शिवाजी ने जनता में स्व-शासन और राष्ट्रीय गौरव की भावना जाग्रत की।

95. (A) बाजीराव प्रथम
बाजीराव प्रथम को मराठा इतिहास का सबसे महान सैन्य सेनापति और विस्तारवादी पेशवा माना जाता है। उन्होंने 'हिंदू पद पादशाही' के आदर्श को सामने रखते हुए मराठा साम्राज्य को उत्तर भारत के हृदयस्थल तक पहुँचाया। अपने मात्र 20 वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने पालखेड़ के युद्ध में निजाम को हराया और दिल्ली तक अपनी सेना पहुँचा दी। वे अपनी तीव्र सैन्य चालों और छापामार युद्ध में निपुणता के लिए प्रसिद्ध थे। उनके नेतृत्व में ही मराठा शक्ति मुगलों के वास्तविक उत्तराधिकारी के रूप में उभरी।

96. (B) दक्षिण भारत
'पॉलीगार' या 'पालयक्कारर' प्रणाली मुख्य रूप से दक्षिण भारत, विशेष रूप से विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत मदुरै और तिरुनेलवेली जैसे क्षेत्रों में प्रचलित थी। ये स्थानीय स्तर के सैन्य प्रमुख और प्रशासनिक अधिकारी थे, जिन्हें शासन द्वारा 'पालयम' या छोटे क्षेत्र प्रदान किए जाते थे। इनका उत्तरदायित्व अपने क्षेत्र से राजस्व एकत्र करना, कानून-व्यवस्था बनाए रखना और केंद्रीय सत्ता को सैन्य सहायता उपलब्ध कराना था। 18वीं शताब्दी के अंत में उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विस्तारवादी प्रयासों का कड़ा विरोध किया था।

97. (B) 8वीं शताब्दी में अरब आक्रमणों का प्रतिरोध करने के लिए।
गुहिल वंश के प्रतापी राजा बप्पा रावल राजस्थानी इतिहास और लोकगाथाओं के एक महान नायक हैं। 8वीं शताब्दी में जब अरब सेनाएं सिंध पर विजय प्राप्त करने के बाद राजस्थान और मालवा की ओर बढ़ने का प्रयास कर रही थीं, तब बप्पा रावल ने भारतीय शासकों का एक संयुक्त मोर्चा बनाकर उन्हें करारी शिकस्त दी। उन्होंने न केवल आक्रमणकारियों को पीछे धकेला, बल्कि उनके प्रभाव को लंबे समय तक सिंध की सीमाओं तक ही सीमित रखा। उनकी वीरता ने उत्तर-पश्चिमी भारत को विदेशी दासता से सुरक्षित रखा।

98. (A) तबरहिंद (भटिंडा) का किला
मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच ऐतिहासिक संघर्ष का तात्कालिक कारण तबरहिंद (वर्तमान भटिंडा) के रणनीतिक दुर्ग पर नियंत्रण था। गोरी ने इस दुर्ग पर अधिकार कर लिया था, जो पृथ्वीराज के साम्राज्य की सीमा पर स्थित एक महत्वपूर्ण चौकी थी। इस अतिक्रमण ने दोनों शक्तियों को युद्ध की स्थिति में ला खड़ा किया। इसी विवाद के परिणामस्वरूप 1191 ईस्वी में तराइन का प्रथम युद्ध हुआ, जिसमें पृथ्वीराज की विजय हुई, किंतु अगले ही वर्ष द्वितीय युद्ध ने भारतीय इतिहास की दिशा बदल दी।

99. (C) सीधे शाही कोष के लिए आरक्षित भूमि।
मध्यकालीन भारतीय प्रशासन में, विशेष रूप से दिल्ली सल्तनत और मुगल काल के दौरान, 'खालसा' उस भूमि को कहा जाता था जिसका राजस्व सीधा केंद्र सरकार या शाही कोष में जमा होता था। इस भूमि का प्रबंधन सीधे शाही अधिकारियों द्वारा किया जाता था और इससे प्राप्त आय का उपयोग सम्राट के व्यक्तिगत व्यय, राजमहल के रखरखाव और केंद्रीय सेना के वेतन के लिए किया जाता था। खालसा भूमि का विस्तार सुल्तान या सम्राट की आर्थिक शक्ति और केंद्रीय नियंत्रण के स्तर को दर्शाता था।

100. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
शेरशाह सूरी का शासन काल मात्र पाँच वर्षों (1540-1545) का था, किंतु उन्होंने इस अल्प अवधि में प्रशासनिक और वित्तीय सुधारों की जो नींव रखी, वह अद्वितीय थी। उन्होंने भूमि की सटीक माप, राजस्व वर्गीकरण और चांदी के 'रुपये' जैसी प्रणालियाँ आरंभ कीं। ये सुधार इतने व्यावहारिक और प्रभावी थे कि बाद में मुगल सम्राट अकबर ने अपने प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के लिए शेरशाह की नीतियों को ही आधार बनाया और उनमें सुधार किया। इस प्रकार शेरशाह को मुगल प्रशासन का अग्रदूत माना जाता है।

101. (C) मुहम्मद बिन कासिम
राजा दाहिर सिंध के अंतिम हिंदू शासक थे, जिन्होंने 712 ईस्वी में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व वाले प्रारंभिक अरब आक्रमण का डटकर मुकाबला किया। रावर के युद्ध में उन्होंने अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया, किंतु अंततः वे वीरगति को प्राप्त हुए। राजा दाहिर का बलिदान भारतीय इतिहास में विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध प्रारंभिक प्रतिरोध की एक महत्वपूर्ण गाथा है। उनकी मृत्यु के पश्चात ही सिंध क्षेत्र पर अरब शासन की नींव पड़ी, जिसने आगे के आक्रमणों का मार्ग प्रशस्त किया।

102. (B) दक्कन के पठार में
मध्यकालीन दक्कन और विशेष रूप से महाराष्ट्र के प्रशासनिक ढांचे में 'देशमुख' एक महत्वपूर्ण पद था। यह एक वंशानुगत अधिकारी होता था, जो एक पूरे परगना या जिले के राजस्व और प्रशासनिक कार्यों का प्रबंधन करता था। देशमुख का मुख्य कार्य स्थानीय स्तर पर राजस्व संग्रह सुनिश्चित करना और राज्य तथा किसानों के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करना था।

अतिरिक्त 10% वसूलते थे। यह कर 'चौथ' के अतिरिक्त लिया जाता था और इसे शिवाजी महाराज अपना पुश्तैनी अधिकार बताते थे। इस कर की वसूली ने न केवल मराठा कोष को सुदृढ़ किया, बल्कि दक्कन के क्षेत्रों पर मराठों के संप्रभुता के दावे को भी कानूनी और पारंपरिक आधार प्रदान किया।

162. (A) अकबर
शेरशाह सूरी ने अपने अल्प शासनकाल में जो प्रशासनिक और राजस्व सुधार किए, वे मध्यकालीन भारत के इतिहास में मील का पत्थर माने जाते हैं। उन्होंने भूमि की माप, राजस्व वर्गीकरण और चांदी के रुपये जैसी जो वैज्ञानिक प्रणालियाँ विकसित कीं, वे इतनी प्रभावशाली थीं कि बाद में मुगल सम्राट अकबर ने अपने शासन तंत्र को सुव्यवस्थित करने के लिए उन्हें ही आधार के रूप में अपनाया। शेरशाह की प्रशासनिक दूरदर्शिता और कुशल नौकरशाही अकबर के विशाल साम्राज्य के प्रबंधन के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुई।

163. (C) गाँवों का एक समूह
मध्यकालीन दक्षिण भारत, विशेष रूप से चोल और विजयनगर साम्राज्यों के दौरान 'नाडु' एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई थी। यह कई गाँवों के समूह को मिलाकर बनती थी। नाडु का मुख्य कार्य राजस्व प्रशासन, न्याय व्यवस्था और स्थानीय स्तर पर कृषि संबंधी कार्यों का प्रबंधन करना था। इसकी अपनी एक परिषद होती थी जो स्थानीय स्वायत्तता का प्रतिनिधित्व करती थी। यह व्यवस्था ग्रामीण और प्रांतीय प्रशासन के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती थी, जो स्थानीय आवश्यकताओं को राज्य तक पहुँचाती थी।

164. (B) केवल 2 और 3
'जौहर' की प्रथा राजपूत महिलाओं द्वारा अपने सम्मान और पवित्रता की रक्षा के लिए की जाने वाली एक गरिमापूर्ण आत्म-बलिदान की क्रिया थी। यह शत्रु सेना द्वारा बंदी बनाए जाने और अपमानित होने के भय से सामूहिक रूप से अग्नि में प्रवेश करने की प्रक्रिया थी। यह कथन गलत है कि यह शत्रु सैनिकों द्वारा की जाती थी। जौहर के पश्चात ही राजपूत पुरुष 'शाका' करते थे, जिसमें वे केसरिया वस्त्र धारण कर अंतिम युद्ध के लिए निकल पड़ते थे। यह दोनों क्रियाएं राजपूत वीरता का प्रतीक थीं।

165. (C) गुर्जर-प्रतिहार
अरब यात्री और भूगोलवेत्ता अल-मसूदी ने 10वीं शताब्दी के दौरान भारत की यात्रा की थी। उन्होंने अपने वृत्तांतों में गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य की अपार सैन्य शक्ति और राजनीतिक वैभव का विस्तार से वर्णन किया है। अल-मसूदी ने उन्हें अरबों का सबसे बड़ा शत्रु और भारत का रक्षक बताया, जिन्होंने सिंध के अरब शासकों को भारतीय सीमा में प्रवेश करने से दृढ़तापूर्वक रोका। उनके विवरणों से स्पष्ट होता है कि गुर्जर-प्रतिहारों के पास एक विशाल घुड़सवार सेना और अत्यंत कुशल प्रशासनिक व्यवस्था थी।

166. (B) 1025 ईस्वी में
महमूद गजनी ने अपने भारत अभियानों के दौरान सबसे विनाशकारी और प्रसिद्ध आक्रमण 1025 ईस्वी में गुजरात के सोमनाथ मंदिर पर किया था। यह मंदिर अपनी अकूत धन-संपत्ति और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता था। महमूद ने मंदिर की मूर्तियों को खंडित किया और वहाँ से अपार स्वर्ण तथा बहुमूल्य रत्न लूटकर गजनी ले गया। इस हमले ने न केवल भारत की आर्थिक समृद्धि को आघात पहुँचाया, बल्कि भारतीय शासकों के बीच राजनीतिक निर्बलता और एकता के अभाव को भी उजागर कर दिया।

167. (D) पृथ्वीराज चौहान
तराइन के युद्ध भारतीय इतिहास के निर्णायक युद्धों में से एक हैं, जो मुहम्मद गोरी और दिल्ली-अजमेर के शासक पृथ्वीराज चौहान के बीच लड़े गए। 1191 ईस्वी में हुए प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज ने गोरी को बुरी तरह पराजित किया, किंतु उसे जीवित छोड़ दिया। अगले ही वर्ष, 1192 ईस्वी में, गोरी ने पुनः आक्रमण किया और छल व बेहतर सैन्य रणनीति के साथ पृथ्वीराज को द्वितीय युद्ध में पराजित कर दिया। इस विजय ने भारत में तुर्की शासन और दिल्ली सल्तनत की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

168. (A) तुगलक वंश
1398 ईस्वी में जब मध्य एशियाई विजेता तैमूरलंग ने भारत पर आक्रमण किया, तब दिल्ली में तुगलक वंश का शासन था और नसीरुद्दीन महमूद गद्दी पर आसीन था। तैमूर का आक्रमण दिल्ली सल्तनत के इतिहास में सबसे विनाशकारी घटनाओं में से एक था। उसने दिल्ली में भयानक नरसंहार किया और शहर को पूरी तरह लूटा। इस हमले ने तुगलक वंश की केंद्रीय सत्ता को इतना निर्बल कर दिया कि साम्राज्य बिखर गया और भारत में तुर्की प्रभुत्व की समाप्ति के साथ सैयदों के उत्थान का मार्ग खुला।

169. (C) मुहम्मद बिन तुगलक
मुहम्मद बिन तुगलक को उसके अपरंपरागत और महत्वाकांक्षी प्रशासनिक प्रयोगों के लिए जाना जाता है। उसने राजस्व सुधार के लिए 'सांकेतिक मुद्रा' आरंभ की, दक्कन पर बेहतर नियंत्रण के लिए राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद स्थानांतरित किया और कृषि विकास के लिए 'दीवान-ए-कोही' विभाग का निर्माण किया। यद्यपि ये योजनाएं सैद्धांतिक रूप से दूरदर्शी थीं, किंतु व्यावहारिक कार्यान्वयन में विफलता और जनमानस की उपेक्षा के कारण ये सभी प्रयोग असफल रहे, जिससे उसे एक विवादास्पद शासक माना जाता है।

170. (A) चौसा का युद्ध
चौसा का युद्ध 1539 ईस्वी में मुगल सम्राट हुमायूँ और अफगान शासक शेरशाह सूरी के बीच लड़ा गया था, न कि बाबर द्वारा। बाबर ने भारत में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए 1526 में पानीपत का प्रथम युद्ध, 1527 में खानवा का युद्ध, 1528 में चंदेरी का युद्ध और 1529 में घाघरा का युद्ध लड़ा था। बाबर की मृत्यु 1530 ईस्वी में हुई थी, जबकि चौसा का युद्ध उसके

दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में गंभीर चुनौती दी। इन नेताओं के नेतृत्व में जाटों ने अपनी क्षेत्रीय स्वायत्तता को सफलतापूर्वक बनाए रखा।

152. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
शिवाजी महाराज की अष्टप्रधान परिषद में प्रत्येक मंत्री को विशिष्ट प्रशासनिक दायित्व सौंपे गए थे। 'अमात्य' का मुख्य कार्य राज्य की आय और व्यय का लेखा-जोखा रखना था। 'सचिव' शाही पत्राचार, अभिलेखों और फरमानों के प्रबंधन के लिए उत्तरदायी था। 'सेनापति' या सर-ए-नौबत सैन्य संगठन और सेना का प्रमुख था। 'न्यायाधीश' दीवानी और फौजदारी मामलों में न्याय प्रदान करने वाला मुख्य अधिकारी था। ये पद योग्यता पर आधारित थे और शिवाजी के केंद्रीकृत प्रशासन को सुदृढ़ करते थे।

153. (C) दीवान-ए-इंशा
दिल्ली सल्तनत के प्रशासन में 'दीवान-ए-इंशा' शाही पत्राचार और सरकारी अभिलेखों का मुख्य विभाग था। इस विभाग का नेतृत्व 'दबीर-ए-मुमालिक' करता था। इसका मुख्य उत्तरदायित्व सुल्तान के आदेशों और फरमानों का प्रारूप तैयार करना, उन्हें विभिन्न प्रांतों के गवर्नरों को प्रेषित करना और गुप्त पत्राचार का प्रबंधन करना था। प्रशासन की विश्वसनीयता और केंद्रीय नियंत्रण बनाए रखने के लिए यह विभाग एक अत्यंत संवेदनशील और महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता था।

154. (A) एक पद जिसने अधिकारी के वेतन और सैन्य उत्तरदायित्वों को निर्धारित किया।
मुगल साम्राज्य में 'मनसब' एक आधिकारिक पद या श्रेणी थी, जो किसी व्यक्ति की राजकीय सेवा में स्थिति को परिभाषित करती थी। यह प्रणाली अकबर द्वारा आरंभ की गई थी और यह नागरिक एवं सैन्य दोनों अधिकारियों पर लागू होती थी। मनसब के माध्यम से किसी अधिकारी का पदानुक्रम में स्थान, उसका नकद या भूमि के रूप में वेतन और उसके द्वारा रखी जाने वाली सेना का आकार निर्धारित किया जाता था। यह प्रणाली मुगल साम्राज्य के प्रशासनिक और सैन्य ढांचे की आधारशिला थी।

155. (D) यह एक गैर-वंशानुगत राजस्व आवंटन प्रणाली थी।
इक्ता प्रणाली दिल्ली सल्तनत की एक प्रमुख राजस्व और प्रशासनिक व्यवस्था थी। इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि यह सैद्धांतिक रूप से गैर-वंशानुगत थी और इक्तादारों का नियमित स्थानांतरण किया जाता था ताकि वे स्थानीय स्तर पर बहुत अधिक शक्तिशाली न हो सकें। इक्ता के माध्यम से अधिकारियों को केवल राजस्व संग्रह का अधिकार मिलता था, न कि भूमि का स्वामित्व। सुल्तान के पास किसी भी समय इक्ता को वापस लेने या परिवर्तित करने का पूर्ण अधिकार सुरक्षित रहता था।

156. (B) मराठा
'चौथ' और 'सरदेशमुखी' मराठा साम्राज्य के राजस्व संग्रह के दो सबसे महत्वपूर्ण आधार थे। चौथ पड़ोसी राज्यों की कुल उपज का 25% भाग होता था, जो उन्हें मराठा आक्रमणों से सुरक्षा की गारंटी के रूप में दिया जाता था। सरदेशमुखी एक अतिरिक्त 10% कर था, जिसे शिवाजी महाराज ने महाराष्ट्र के वंशानुगत प्रधान होने के नाते अपना कानूनी अधिकार बताया था। इन दोनों करों ने मराठा सेनाओं के वित्तपोषण और उनके क्षेत्रीय विस्तार में निर्णायक भूमिका का निर्वहन किया था।

157. (C) कन्नौज
8वीं से 10वीं शताब्दी के दौरान उत्तर भारत में 'त्रिपक्षीय संघर्ष' कन्नौज नगर पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए हुआ था। कन्नौज उस समय अपनी रणनीतिक स्थिति और उपजाऊ गंगा घाटी के केंद्र में होने के कारण सत्ता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता था। गुर्जर-प्रतिहार, बंगाल के पाल और दक्कन के राष्ट्रकूट राजवंशों ने इस नगर पर अधिकार के लिए कई पीढ़ियों तक युद्ध लड़े। अंततः गुर्जर-प्रतिहारों ने कन्नौज पर अपना स्थायी नियंत्रण स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

158. (D) पैगंबर मुहम्मद
सैयद वंश की स्थापना 1414 ईस्वी में खिज्र खान द्वारा की गई थी। इस वंश का नाम 'सैयद' इसलिए पड़ा क्योंकि इसके संस्थापक खिज्र खान ने स्वयं को पैगंबर मुहम्मद का वंशज होने का दावा किया था। यद्यपि ऐतिहासिक रूप से इस दावे के साक्ष्यों पर चर्चा होती है, किंतु उस समय अपनी राजनीतिक वैधता और धार्मिक प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए उन्होंने इस पहचान का उपयोग किया। खिज्र खान ने कभी भी 'सुल्तान' की उपाधि धारण नहीं की और तैमूर के वंशजों के प्रतिनिधि के रूप में शासन किया।

159. (A) मुहम्मद शाह
1739 ईस्वी में जब फारसी सम्राट नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली में भयंकर लूटपाट की, तब मुगल सम्राट मुहम्मद शाह सिंहासन पर आसीन था। मुहम्मद शाह को उसकी विलासी जीवनशैली के कारण 'रंगीला' भी कहा जाता था। नादिर शाह की विजय ने मुगल साम्राज्य की आंतरिक निर्बलता को पूरी तरह उजागर कर दिया। इस आक्रमण के दौरान नादिर शाह विश्वप्रसिद्ध कोहिनूर हीरा और शाहजहाँ का मयूर सिंहासन अपने साथ ले गया, जिससे मुगल वैभव को अपूरणीय क्षति पहुँची।

160. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
1565 ईस्वी में लड़ा गया तालिकोटा का युद्ध, जिसे राक्षसी-तांगड़ी के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिण भारतीय इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था। इस युद्ध में बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर और बीदर की दक्कन सल्तनतों के संयुक्त गठबंधन ने विजयनगर साम्राज्य की सेना को पराजित किया। इस पराजय के पश्चात विजयनगर शहर को पूरी तरह लूटा और नष्ट कर दिया गया, जिससे एक समय के वैभवशाली और शक्तिशाली साम्राज्य का प्रभाव समाप्त हो गया।

161. (B) चौथ के अतिरिक्त दस प्रतिशत का उपकर।
'सरदेशमुखी' मराठा राजस्व प्रणाली का एक विशिष्ट भाग था। शिवाजी महाराज स्वयं को महाराष्ट्र का 'सरदेशमुख' (प्रमुख) मानते थे और इसी आधार पर वे पड़ोसी क्षेत्रों से कुल राजस्व का

चौसा (1539) और कन्नौज (1540) के युद्धों में निर्णायक रूप से पराजित किया। इन पराजयों के पश्चात हुमायूँ को अपनी जान बचाकर भारत से बाहर ईरान की ओर पलायन करना पड़ा। शेरशाह ने दिल्ली पर अधिकार कर सूर साम्राज्य की स्थापना की और पंद्रह वर्षों तक मुगलों को सत्ता से दूर रखा। हुमायूँ केवल शेरशाह की मृत्यु के कई वर्षों पश्चात ही अपना खोया हुआ साम्राज्य पुनः प्राप्त कर सका।

181. (C) दक्कन की सल्तनतें और मराठा
औरंगजेब के शासनकाल का उत्तरार्ध दक्कन के क्षेत्रों में निरंतर युद्धों में व्यतीत हुआ, जिसने मुगल साम्राज्य की आर्थिक और सैन्य शक्ति को क्षीण कर दिया। दक्कन में उसके मुख्य प्रतिद्वंद्वी बीजापुर और गोलकुंडा की सल्तनतें थीं, जिन्हें उसने अंततः विजित कर लिया। किंतु सबसे बड़ी चुनौती मराठों के रूप में उभरी, जिन्होंने शिवाजी महाराज के पश्चात भी छापामार युद्ध जारी रखा। इन संघर्षों ने मुगल कोष को रिक्त कर दिया और उत्तर भारत में प्रशासनिक शिथिलता पैदा की, जो साम्राज्य के पतन का कारण बनी।

182. (B) वारंगल के काकतीय
विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक हरिहर और बुक्का अपनी प्रारंभिक राजनीतिक यात्रा के दौरान वारंगल के काकतीय वंश के शासक प्रतापरुद्र देव की सेवा में थे। जब 14वीं शताब्दी के आरंभ में दिल्ली सल्तनत ने वारंगल को विजित कर लिया, तो वे वहाँ से पलायन कर अनेगुंडी चले गए। बाद में उन्हें बंदी बनाकर दिल्ली ले जाया गया, जहाँ उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया, किंतु अंततः उन्होंने पुनः हिंदू धर्म अपनाया और विद्यारण्य स्वामी के मार्गदर्शन में तुंगभद्रा के तट पर विजयनगर की स्वतंत्र सत्ता स्थापित की।

183. (D) पुणे
पेशवाओं के उत्थान के साथ मराठा साम्राज्य का प्रशासनिक केंद्र सतारा से स्थानांतरित होकर पुणे बन गया। यद्यपि मराठा छत्रपति सतारा में निवास करते थे और औपचारिक रूप से सर्वोच्च थे, किंतु पेशवाओं की बढ़ती शक्ति के कारण पुणे वास्तविक सत्ता का केंद्र बन गया। बाजीराव प्रथम के समय में पुणे का अत्यधिक विकास हुआ और यह मराठा कूटनीति, सैन्य रणनीति और संस्कृति का मुख्य केंद्र बना। 'शनिवारवाड़ा' महल पेशवाओं की भव्यता और उनके शक्तिशाली प्रशासनिक नियंत्रण का प्रतीक था।

184. (A) भू-राजस्व एकत्र करना।
दिल्ली सल्तनत के प्रांतीय प्रशासन में 'आमिल' एक महत्वपूर्ण स्थानीय राजस्व अधिकारी था। उसका मुख्य उत्तरदायित्व परगना या गाँवों के समूह से निर्धारित भू-राजस्व का संग्रह सुनिश्चित करना और उसका लेखा-जोखा रखना था। आमिल सीधे प्रांतीय प्रशासन के प्रति उत्तरदायी होता था और वह यह सुनिश्चित करता था कि किसानों से कर की वसूली राज्य के नियमों के अनुसार हो। इस पद की महत्ता सल्तनत की वित्तीय स्थिरता बनाए रखने और ग्रामीण क्षेत्रों पर प्रशासनिक पकड़ सुदृढ़ करने में निहित थी।

185. (C) मुगल प्रणाली की स्थायी प्रकृति।
शेरशाह सूरी और मुगलों के प्रशासन के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर उनकी प्रणालियों के स्थायित्व और विकास में निहित था। शेरशाह का प्रशासन एक प्रतिभाशाली शासक की व्यक्तिगत क्षमताओं पर आधारित था, जिसने अल्प समय में क्रांतिकारी सुधार किए। इसके विपरीत मुगलों, विशेष रूप से अकबर के अधीन, इन सुधारों को एक विस्तृत, लिखित और संस्थागत रूप दिया गया जो शताब्दियों तक चलता रहा। जहाँ शेरशाह की प्रणाली उसके उत्तराधिकारियों के साथ निर्बल हो गई, वहीं मुगल व्यवस्था एक अधिक स्थायी और जटिल नौकरशाही तंत्र में विकसित हुई।

186. (A) महाराष्ट्र का क्षेत्रीय राज्य
'देशमुख' का पद मध्यकालीन महाराष्ट्र के राजस्व और प्रशासनिक ढांचे का एक अभिन्न अंग था। यह एक वंशानुगत जिला स्तरीय अधिकारी होता था, जो कई गाँवों के समूह (परगना) के राजस्व संग्रह की देखरेख करता था। देशमुख का मुख्य कार्य स्थानीय स्तर पर कृषि को बढ़ावा देना और राज्य के लिए कर संग्रह सुनिश्चित करना था। शिवाजी महाराज के प्रशासन और बाद में मराठा साम्राज्य में देशमुखों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही, क्योंकि वे राज्य और ग्रामीण समाज के बीच एक शक्तिशाली कड़ी के रूप में कार्य करते थे।

187. (A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
विजयनगर और बहमनी साम्राज्यों के बीच का लंबा संघर्ष मुख्य रूप से आर्थिक और भौगोलिक हितों पर आधारित था। रायचूर दोआब, जो कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के संगम पर स्थित था, अपनी उपजाऊ मिट्टी के कारण दोनों के लिए आकर्षण का केंद्र था। इसके अतिरिक्त कोंकण तट के बंदरगाहों पर नियंत्रण प्राप्त करना विदेशी व्यापार, विशेष रूप से घोड़ों के आयात के लिए अनिवार्य था। इन संसाधनों पर वर्चस्व की होड़ ने दोनों शक्तियों को निरंतर युद्ध की स्थिति में रखा, जिससे अंततः दोनों की शक्ति क्षीण हुई।

188. (B) इसने व्यापक विनाश किया और दिल्ली सल्तनत को घातक रूप से कमजोर कर दिया।
1398 ईस्वी में तैमूरलंग के आक्रमण ने दिल्ली सल्तनत के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तैमूर की सेना ने दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में अभूतपूर्व तबाही मचाई, जिससे कृषि, व्यापार और प्रशासनिक व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई। इस हमले ने केंद्रीय तुगलक सत्ता को इतना निर्बल बना दिया कि वह अपने दूरस्थ प्रांतों पर नियंत्रण खो बैठी। इस राजनीतिक शून्यता और आर्थिक बर्बादी ने सल्तनत के विघटन की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया और भविष्य के नए राजवंशों के उदय के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

189. (C) बाबर
1529 ईस्वी में लड़ा गया घाघरा का युद्ध मुगल सम्राट बाबर के जीवन का अंतिम बड़ा सैन्य अभियान था। यह युद्ध उसने बिहार और बंगाल के अफगान सरदारों के संयुक्त मोर्चे के विरुद्ध लड़ा था, जिनका समर्थन बंगाल के सुल्तान नुसरत शाह द्वारा किया

भारतीय इतिहास की एक प्रमुख विवादास्पद चर्चा बनी हुई है, जिसने उसके शासन के प्रारंभ को प्रभावित किया।

227. (C) मेदिनी राय के नेतृत्व में राजपूत
1528 ईस्वी में चंदेरी का युद्ध मुगल सम्राट बाबर और राजपूतों के बीच लड़ा गया था। इस युद्ध में राजपूत सेना का नेतृत्व मेदिनी राय ने किया था, जो राणा सांगा का एक शक्तिशाली सहयोगी और चंदेरी का शासक था। खानवा की विजय के पश्चात बाबर मालवा क्षेत्र में अपना प्रभाव सुदृढ़ करना चाहता था। इस युद्ध में राजपूतों ने अभूतपूर्व वीरता दिखाई, किंतु बाबर की तोपखाने की शक्ति के कारण मेदिनी राय की पराजय हुई। यह विजय बाबर के लिए मध्य भारत में प्रभुत्व स्थापित करने की दिशा में एक बड़ा कदम थी।

228. (D) नारनौल क्षेत्र के हिंदू किसान
औरंगजेब के शासनकाल के दौरान सतनामी विद्रोह 1672 ईस्वी में नारनौल (हरियाणा) के समीप हुआ था। सतनामी एक धार्मिक संप्रदाय था जिसमें मुख्य रूप से हिंदू किसान, शिल्पकार और छोटे व्यवसायी सम्मिलित थे। वे अपनी सादगी, ईमानदारी और कट्टर धार्मिक निष्ठा के लिए जाने जाते थे। एक शाही सैनिक और सतनामी किसान के बीच मामूली विवाद ने एक विशाल किसान विद्रोह का रूप ले लिया। इस आंदोलन ने मुगल सत्ता की स्थानीय पकड़ को हिला दिया और यह औरंगजेब के विरुद्ध जन-असंतोष का एक सशक्त उदाहरण बना।

229. (C) तुलुव
विजयनगर साम्राज्य के इतिहास में चार प्रमुख राजवंशों ने शासन किया, जिनमें 'तुलुव वंश' सर्वाधिक गौरवशाली माना जाता है। इस वंश के सबसे प्रतापी और प्रसिद्ध सम्राट कृष्णदेवराय (1509-1529) थे। उनके शासनकाल में विजयनगर अपनी सैन्य शक्ति और सांस्कृतिक समृद्धि के चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। उन्होंने बीजापुर के सुल्तान और उड़ीसा के गजपति राजाओं को पराजित कर साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। कृष्णदेवराय की महानता और उनके तुलुव वंश के योगदान ने विजयनगर को मध्यकालीन भारत का एक अद्वितीय साम्राज्य बना दिया।

230. (B) विदेश मामले
शिवाजी महाराज की अष्टप्रधान परिषद में 'सुमंत' का पद, जिसे 'दबीर' भी कहा जाता था, अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील था। उनका मुख्य उत्तरदायित्व पड़ोसी राज्यों और विदेशी शक्तियों (जैसे मुगल, दक्कन सल्तनतें और यूरोपीय व्यापारी) के साथ कूटनीतिक संबंध बनाना और उनका प्रबंधन करना था। सुमंत विदेशी दूतों का स्वागत करते थे, संधियों का प्रारूप तैयार करने में राजा की सहायता करते थे और गुप्तचरों के माध्यम से बाहरी गतिविधियों की जानकारी रखते थे। यह पद स्वराज्य की सुरक्षा और कूटनीतिक वर्चस्व के लिए अनिवार्य था।

231. (D) फारसी-अरबी परंपराओं का
मुगलों की प्रशासनिक प्रणाली भारतीय सामाजिक वास्तविकताओं और मध्य एशियाई फारसी-अरबी शासन सिद्धांतों का एक अत्यंत परिष्कृत संश्लेषण थी। उन्होंने दिल्ली सल्तनत की तुर्की परंपराओं को अपनाया, किंतु उनमें फारसी शिष्टाचार, केंद्रीकृत नियंत्रण और अरबी राजस्व सिद्धांतों का समावेश किया। अकबर के शासनकाल में इस प्रणाली को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल ढाला गया, जिससे यह अधिक व्यापक और प्रभावी बन गई। इस प्रशासनिक मॉडल ने न केवल मुगल शासन को स्थायित्व प्रदान किया, बल्कि बाद की भारतीय शासन व्यवस्थाओं को भी प्रभावित किया।

232. (A) राजपूत युद्ध
'जौहर' की प्रथा मध्यकालीन भारत के राजपूत इतिहास की एक अत्यंत शौर्यपूर्ण और हृदयविदारक परंपरा है। यह प्रथा विशेष रूप से उन युद्धों में देखी जाती थी जहाँ राजपूत सेना को अपनी पराजय और दुर्ग के पतन की निश्चित संभावना दिखाई देती थी। शत्रु के हाथों अपमान और दासता से बचने के लिए राजपूत महिलाएं सामूहिक रूप से पवित्र अग्नि में आत्मदाह कर लेती थीं। चित्तौड़गढ़ के घेरे के दौरान रानी पद्मिनी और अन्य वीरांगनाओं द्वारा किए गए जौहर की गाथाएं आज भी भारतीय संस्कृति में वीरता और आत्मसम्मान का प्रतीक मानी जाती हैं।

233. (C) बप्पा रावल
मेवाड़ के गुहिल वंश के प्रतापी राजा बप्पा रावल को 8वीं शताब्दी के दौरान सिंध से आगे बढ़ने वाले प्रारंभिक अरब आक्रमणों के विरुद्ध प्रतिरोध का मुख्य नायक माना जाता है। उन्होंने अन्य भारतीय राजाओं के साथ मिलकर एक शक्तिशाली मोर्चा बनाया और अरब सेनाओं को निर्णायक रूप से पराजित किया। बप्पा रावल की इस सैन्य सफलता ने न केवल राजस्थान को सुरक्षित रखा, बल्कि अरबों को अगले कई दशकों तक भारतीय हृदयस्थल की ओर बढ़ने से रोक दिया। उनकी वीरता और रणनीतिक कौशल आज भी राजस्थानी गौरव का प्रतीक हैं।

234. (A) एक मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करना
मुहम्मद गोरी के भारत पर आक्रमणों का प्राथमिक और दीर्घकालिक उद्देश्य केवल धन लूटना नहीं था, बल्कि भारत में एक स्थायी तुर्की सत्ता और मुस्लिम साम्राज्य की आधारशिला रखना था। 12वीं शताब्दी के अंत में उसने पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर दिल्ली और अजमेर पर अधिकार किया। अपनी विजयों के बाद उसने विजित क्षेत्रों का प्रशासन अपने विश्वसनीय सेनापतियों को सौंपा, जिससे अंततः 1206 ईस्वी में दिल्ली सल्तनत का उदय हुआ। गोरी की इन रणनीतिक विजयों ने भारतीय राजनीतिक मानचित्र को पूरी तरह बदल दिया।

235. (D) खिज्र खान
दिल्ली में सैयद वंश की स्थापना 1414 ईस्वी में खिज्र खान द्वारा की गई थी। वह तैमूरलंग के आक्रमण के समय मुल्तानी गवर्नर था और तैमूर ने भारत से लौटते समय उसे अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था। खिज्र खान ने तुगलक वंश की निर्बलता का लाभ उठाकर दिल्ली की सत्ता संभाली। उसने कभी भी 'सुल्तान' की उपाधि धारण नहीं की और स्वयं को 'रैयत-ए-आला' कहलाना पसंद किया। उसके द्वारा स्थापित यह वंश 1451 ईस्वी तक दिल्ली पर शासन करता रहा, जिसके बाद लोदी वंश का उदय हुआ।

युद्ध में बाबर की आधुनिक युद्ध तकनीक और तोपखाने ने उसे विजय दिलाई, जिससे भारत में मुगल साम्राज्य की नींव स्थायी रूप से सुदृढ़ हो गई।

199. (D) कोहिनूर हीरा और मयूर सिंहासन
1739 ईस्वी में फारसी आक्रांता नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर उसे पूरी तरह तहस-नहस कर दिया। उसकी लूट की सबसे मूल्यवान वस्तुओं में शाहजहाँ द्वारा निर्मित रत्नजड़ित 'तख्त-ए-ताऊस' (मयूर सिंहासन) और विश्वप्रसिद्ध 'कोहिनूर' हीरा सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त वह भारी मात्रा में स्वर्ण, रजत और बहुमूल्य जवाहरात भी अपने साथ ले गया। इस लूट ने मुगल कोष को रिक्त कर दिया और साम्राज्य की रही-सही प्रतिष्ठा को समाप्त कर दिया, जिससे मुगल शासन का पतन और भी तीव्र हो गया।

200. (A) मेवाड़
मुगल सम्राट जहाँगीर के शासनकाल के दौरान मेवाड़ का राजपूत राज्य एकमात्र ऐसी शक्ति थी जिसने लंबे समय तक मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की थी। महाराणा प्रताप के पुत्र राणा अमर सिंह ने अपने पूर्वजों की भांति ही मुगलों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा। जहाँगीर ने मेवाड़ को झुकाने के लिए कई सैन्य अभियान प्रेषित किए। अंततः 1615 ईस्वी में खुर्रम (शाहजहाँ) के प्रयासों से एक सम्मानजनक संधि हुई, जिसके तहत मेवाड़ ने मुगलों की संप्रभुता स्वीकार की, किंतु उसे अन्य राजपूत राज्यों की तुलना में विशेष रियायतें प्राप्त हुईं।

201. (C) कृष्णदेवराय
तुलुव वंश के शासक कृष्णदेवराय (1509-1529) के शासनकाल को विजयनगर साम्राज्य का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। उनके समय में साम्राज्य ने अपनी भौगोलिक सीमाओं का सर्वाधिक विस्तार किया और कला, साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की। वे स्वयं एक महान विद्वान और कवि थे, जिन्होंने 'अमुक्तमाल्यद' जैसी रचना की। उनके दरबार में 'अष्टदिग्गज' नामक आठ महान कवि सुशोभित थे। उनकी सैन्य विजयों और लोक कल्याणकारी कार्यों ने विजयनगर को उस समय का सबसे शक्तिशाली और वैभवशाली राज्य बना दिया था।

202. (A) शाहू
पेशवा का पद मराठा साम्राज्य में छत्रपति शाहू महाराज के शासनकाल के दौरान वास्तविक सत्ता का केंद्र और वंशानुगत बन गया। 1713 ईस्वी में जब शाहू ने बालाजी विश्वनाथ को पेशवा नियुक्त किया, तो उन्होंने अपनी कूटनीतिक कुशलता से न केवल साम्राज्य को स्थिरता दी, बल्कि पेशवा की प्रतिष्ठा को भी बढ़ाया। बालाजी की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र बाजीराव प्रथम की नियुक्ति ने इस पद को वंशानुगत स्वरूप प्रदान किया। धीरे-धीरे प्रशासन के सभी सूत्र पेशवाओं के हाथों में आ गए और छत्रपति केवल नाममात्र के प्रमुख रह गए।

203. (D) राजस्व और वित्त
दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक ढांचे में 'दीवान-ए-विज़ारत' सबसे महत्वपूर्ण विभाग था, जो सीधे 'वज़ीर' के नियंत्रण में होता था। इस विभाग का प्राथमिक उत्तरदायित्व साम्राज्य के राजस्व संग्रह, कर निर्धारण, व्यय का लेखा-जोखा और वित्तीय नीतियों का प्रबंधन करना था। वज़ीर सभी सरकारी विभागों की आय-व्यय की निगरानी करता था और शाही खजाने के सुचारु संचालन को सुनिश्चित करता था। सल्तनत की आर्थिक मजबूती काफी हद तक इसी विभाग के सुचारु कामकाज पर निर्भर करती थी।

204. (B) मुगल मनसबदारी प्रणाली का उपयोग।
शेरशाह सूरी ने अपने अल्प शासनकाल में कई महत्वपूर्ण प्रशासनिक सुधार किए, किंतु उन्होंने मुगल मनसबदारी प्रणाली का उपयोग नहीं किया; वास्तव में यह प्रणाली पश्चात में अकबर द्वारा विकसित की गई थी। शेरशाह के सुधारों में चांदी के 'रुपये' और तांबे के 'दाम' की नई मुद्रा प्रणाली, सड़क नेटवर्क (जैसे ग्रैंड ट्रंक रोड) का विस्तार और एक अत्यंत कुशल गुप्तचर तंत्र सम्मिलित था। उन्होंने शासन को अत्यधिक केंद्रीकृत रखा और राजस्व व्यवस्था में भूमि की माप को अनिवार्य बनाया, जिसने किसानों को सुरक्षा प्रदान की।

205. (C) वेतन के बदले आवंटित राजस्व।
मुगल प्रशासनिक व्यवस्था में 'जागीर' वह भूमि क्षेत्र था जिसका राजस्व अधिकार किसी मनसबदार को उसके नकद वेतन के बदले आवंटित किया जाता था। जागीरदार का मुख्य कार्य उस भूमि से राजस्व एकत्र करना और अपना वेतन प्राप्त करना था। यह महत्वपूर्ण है कि जागीरदार को भूमि का स्वामित्व नहीं मिलता था, बल्कि केवल राजस्व उपभोग का अधिकार मिलता था। जागीरें हस्तांतरणीय होती थीं और सम्राट किसी भी समय उन्हें वापस ले सकता था या किसी अन्य को आवंटित कर सकता था, जिससे केंद्रीय नियंत्रण बना रहता था।

206. (D) औरंगजेब
मुगल सम्राट अकबर ने 1564 ईस्वी में 'जज़िया' कर को समाप्त कर दिया था, जिसे उसकी उदारवादी और धर्मनिरपेक्ष नीतियों का एक बड़ा कदम माना गया। हालाँकि, लगभग एक शताब्दी पश्चात, 1679 ईस्वी में औरंगजेब ने अपनी कट्टर रूढ़िवादी नीतियों के तहत गैर-मुस्लिम प्रजा पर पुनः 'जज़िया' आरोपित कर दिया। औरंगजेब के इस निर्णय का व्यापक स्तर पर विरोध हुआ और इसने हिंदुओं, विशेष रूप से राजपूतों और मराठों के बीच मुगल सत्ता के प्रति असंतोष को तीव्र कर दिया, जो साम्राज्य के पतन का एक कारक बना।

207. (A) विक्रमादित्य द्वितीय
बादामी के चालुक्य वंश के प्रतापी राजा विक्रमादित्य द्वितीय को 8वीं शताब्दी के दौरान अरबों की दक्षिणगामी प्रगति को रोकने का गौरव प्राप्त है। जब अरब सेनाओं ने सिंध से आगे बढ़कर गुजरात और दक्कन की सीमाओं पर आक्रमण किया, तो विक्रमादित्य द्वितीय के सेनापति पुलकेशिन (जो गुजरात शाखा के थे) ने उन्हें निर्णायक रूप से पराजित किया। इस विजय के उपलक्ष्य में विक्रमादित्य ने उन्हें 'अवनिजनाश्रय' की उपाधि प्रदान की। इस प्रतिरोध ने दक्षिण भारत को प्रारंभिक इस्लामी आक्रमणों के विनाशकारी प्रभावों से सुरक्षित रखा।

208. (B) अफगान
लोदी वंश दिल्ली सल्तनत पर शासन करने वाला अंतिम राजवंश था और यह जातीय रूप से अफगान मूल का था। 1451 ईस्वी में बहलोल लोदी ने इस वंश की स्थापना की थी। इससे पूर्व के अधिकांश राजवंश जैसे गुलाम, खिलजी और तुगलक मुख्य रूप से तुर्की मूल के थे। लोदी शासकों ने प्रशासन में अफगान कबीलाई परंपराओं को महत्व दिया, जहाँ सुल्तान को पूर्ण निरंकुश शासक के स्थान पर 'समानों में प्रथम' माना जाता था। उनकी यह जातीय पहचान उनके शासन की प्रशासनिक और सैन्य संरचना में स्पष्ट रूप से झलकती थी।

209. (B) उसकी पत्नी, हमीदा बानू बेगम ने
दिल्ली में स्थित हुमायूँ का मकबरा मुगल वास्तुकला की पहली महान कृति मानी जाती है, जिसका निर्माण 1560 के दशक में आरंभ हुआ था। इस भव्य स्मारक के निर्माण का आदेश हुमायूँ की विधवा पत्नी हमीदा बानू बेगम (हाजी बेगम) ने दिया था। इसके वास्तुकार मिराक मिर्जा गियास थे जो फारसी परंपराओं से प्रभावित थे। यह मकबरा अपनी दोहरी गुंबद शैली और 'चारबाग' उद्यान पद्धति के लिए प्रसिद्ध है, जिसने बाद में ताजमहल जैसी विश्वप्रसिद्ध इमारतों के निर्माण के लिए एक प्रेरणा और प्रतिमान के रूप में कार्य किया।

210. (A) गुरु गोविंद सिंह
मुगलों के निरंतर उत्पीड़न और धार्मिक कट्टरता के प्रत्युत्तर में सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह ने 1699 ईस्वी में आनंदपुर साहिब में 'खालसा' पंथ की स्थापना की। उन्होंने सिखों को एक संगठित और अनुशासित सैन्य समुदाय में बदल दिया, जिसका मुख्य उद्देश्य अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध लड़ना था। 'खालसा' की स्थापना ने सिखों को एक नई पहचान और अटूट शक्ति प्रदान की, जिससे वे मुगल साम्राज्य के विरुद्ध एक सशक्त राजनीतिक और सैन्य चुनौती के रूप में उभर सके, जिसने अंततः पंजाब में सिख प्रभुत्व का मार्ग प्रशस्त किया।

211. (C) विजयनगर साम्राज्य
14वीं से 16वीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत का इतिहास मुख्य रूप से बहमनी साम्राज्य और विजयनगर साम्राज्य के बीच के निरंतर और तीव्र संघर्ष की गाथा है। इन दोनों शक्तियों के बीच शत्रुता का मुख्य केंद्र उपजाऊ रायचूर दोआब क्षेत्र था, जिस पर नियंत्रण प्राप्त करना दोनों अपनी आर्थिक मजबूती के लिए अनिवार्य मानते थे। इसके अतिरिक्त कृष्णा-गोदावरी डेल्टा और कोंकण तट के व्यापारिक मार्गों पर वर्चस्व के लिए भी वे बार-बार युद्धरत रहे। इन युद्धों ने अंततः दोनों साम्राज्यों के संसाधनों को क्षीण कर दिया।

212. (D) बाजीराव प्रथम
पेशवा बाजीराव प्रथम के कार्यकाल के दौरान मराठा शक्ति ने न केवल मुगलों को चुनौती दी, बल्कि यूरोपीय शक्तियों के विस्तार को भी सफलतापूर्वक रोका। 1739 ईस्वी में पेशवा के भाई चिमनाजी अप्पा के नेतृत्व में मराठा सेना ने पुर्तगालियों पर एक शानदार विजय प्राप्त की और बेसिन के सुदृढ़ दुर्ग तथा सालसेट द्वीप पर अधिकार कर लिया। यह विजय मराठों की नौसैनिक और सैन्य श्रेष्ठता का प्रमाण थी, जिसने पश्चिमी तट पर पुर्तगाली प्रभुत्व को समाप्त कर मराठा साम्राज्य की तटीय सुरक्षा को सुदृढ़ किया।

213. (C) भूमि माप के माध्यम से राजस्व मूल्यांकन।
शिवाजी महाराज का राजस्व प्रशासन अत्यंत न्यायसंगत और वैज्ञानिक था। उन्होंने प्रचलित जागीरदारी प्रथा को हतोत्साहित किया और सीधे राज्य के नियंत्रण में राजस्व संग्रह की व्यवस्था की। उनके प्रशासन की एक प्रमुख विशेषता 'काठी' नामक मानक दंड के उपयोग से भूमि की सटीक माप करना था। राजस्व का निर्धारण भूमि की उर्वरता और वास्तविक उपज के आधार पर किया जाता था, जो सामान्यतः 33% से 40% के मध्य होता था। इस व्यवस्था ने बिचौलियों के शोषण को कम किया और किसानों में सुरक्षा एवं समृद्धि का भाव जगाया।

214. (B) वली या मुक्ती
दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक ढांचे में साम्राज्य को कई 'इक्ता' (प्रांतों) में विभाजित किया गया था। प्रत्येक इक्ता के प्रमुख प्रशासनिक और सैन्य अधिकारी को 'वली' या 'मुक्ती' कहा जाता था। इनकी नियुक्ति सीधे सुल्तान द्वारा की जाती थी और ये स्थानीय स्तर पर कानून-व्यवस्था बनाए रखने, राजस्व संग्रह करने और आवश्यकता पड़ने पर सुल्तान को सैन्य सहायता प्रदान करने के लिए उत्तरदायी थे। मुक्ती का पद अस्थायी और स्थानांतरणीय होता था ताकि वे स्थानीय स्तर पर बहुत शक्तिशाली न हो सकें और केंद्रीय नियंत्रण अक्षुण्ण बना रहे।

215. (D) मनसबदारी प्रणाली
'ज़ात' और 'सवार' मुगल साम्राज्य की मनसबदारी प्रणाली के दो अभिन्न और अनिवार्य घटक थे। 'ज़ात' शब्द किसी अधिकारी (मनसबदार) के राजकीय पदानुक्रम में व्यक्तिगत पद और उसके वेतन को निर्धारित करता था। इसके विपरीत 'सवार' श्रेणी यह इंगित करती थी कि उस अधिकारी को राज्य की सेवा के लिए कितने घुड़सवारों और अश्वों का रखरखाव करना अनिवार्य है। अकबर द्वारा परिष्कृत की गई यह व्यवस्था मुगल नौकरशाही और सेना के कुशल प्रबंधन, वर्गीकरण और नियंत्रण का मुख्य आधार थी।

216. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
712 ईस्वी में मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध की विजय ने भारत में पहली बार इस्लामी शासन की स्थापना की, किंतु इसका तात्कालिक राजनीतिक प्रभाव भारत के शेष भागों पर सीमित रहा। इसका मुख्य कारण गुर्जर-प्रतिहार और राष्ट्रकूट जैसे शक्तिशाली भारतीय राजवंशों का कड़ा प्रतिरोध था, जिन्होंने अरबों को सिंध की भौगोलिक सीमाओं तक ही सीमित रखा। अरब सेनाएं गंगा के उपजाऊ मैदानों या दक्कन की ओर बढ़ने में सफल नहीं हो सकीं, जिससे भारत का विशाल आंतरिक भूभाग कई शताब्दियों तक अरब प्रभुत्व से सुरक्षित रहा।

217. (C) इब्राहिम लोदी
इब्राहिम लोदी दिल्ली सल्तनत और लोदी वंश का अंतिम सुल्तान था। वह अपने कठोर स्वभाव और अफगान कुलीनों के प्रति अविश्वास के कारण आंतरिक विरोधों का सामना कर रहा था। इसी निर्बलता का लाभ उठाकर बाबर ने 1526 ईस्वी

में पानीपत के प्रथम युद्ध में उसे चुनौती दी। इस ऐतिहासिक संघर्ष में इब्राहिम लोदी युद्ध के मैदान में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। उसकी मृत्यु के साथ ही तीन शताब्दियों से चले आ रहे दिल्ली सल्तनत के युग का अंत हुआ और भारत में मुगल साम्राज्य का उत्थान हुआ।

218. (A) महाराणा प्रताप
1568 ईस्वी में अकबर द्वारा चित्तौड़गढ़ के सुदृढ़ दुर्ग पर अधिकार कर लेने के पश्चात भी मेवाड़ का प्रतिरोध समाप्त नहीं हुआ। महाराणा प्रताप, जो राणा उदय सिंह के उत्तराधिकारी थे, ने मुगलों की अधीनता स्वीकार करने के स्थान पर वनों और पहाड़ियों से अपना संघर्ष जारी रखा। 1576 ईस्वी में हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध में उन्होंने मुगल सेना का वीरतापूर्वक सामना किया। महाराणा प्रताप का अडिग संकल्प और अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए दिया गया उनका सर्वोच्च बलिदान उन्हें भारतीय इतिहास में देशभक्ति का अमर प्रतीक बनाता है।

219. (D) विजयनगर साम्राज्य
बहमनी साम्राज्य के पतन के पश्चात उदित पाँचों दक्कन सल्तनतें (बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर, बीदर और बरार) सामान्यतः आपस में शत्रुता रखती थीं और निरंतर युद्धरत रहती थीं। हालाँकि विजयनगर साम्राज्य की बढ़ती शक्ति और उनके क्षेत्रों पर उसके दावों ने इन सल्तनतों को एकजुट होने पर विवश कर दिया। 1565 ईस्वी में बरार को छोड़कर शेष चार सल्तनतों ने एक शक्तिशाली गठबंधन बनाया और तालिकोटा के युद्ध में विजयनगर को निर्णायक रूप से पराजित किया, जिसने दक्षिण भारत के राजनीतिक परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया।

220. (B) शिवाजी
'हिंदवी स्वराज्य' की अवधारणा शिवाजी महाराज की राजनीतिक विचारधारा का प्राण थी। इसका अर्थ था एक ऐसा संप्रभु स्वदेशी राज्य जो बाहरी विदेशी ताकतों और दमनकारी सल्तनत शासन से मुक्त हो। शिवाजी ने इस आदर्श के माध्यम से स्थानीय लोगों में स्वाभिमान और एकता की भावना जाग्रत की। उन्होंने सिद्ध किया कि भारतीय राजा अपनी भूमि पर स्वतंत्र और न्यायपूर्ण शासन स्थापित करने में सक्षम हैं। उनका स्वराज्य न केवल सैन्य शक्ति पर, बल्कि कुशल प्रशासन, प्रजा के कल्याण और सांस्कृतिक गौरव के पुनरुद्धार पर आधारित था।

221. (C) सैन्य वेतन अधिकारी
मुगल प्रशासन में 'मीर बख्शी' सैन्य विभाग का सर्वोच्च अधिकारी था, जिसके कर्तव्य आज के मुख्य सैन्य प्रशासन और वेतन अधिकारी के समान थे। वह मनसबदारों की भर्ती सुनिश्चित करता था, उनके सैन्य दस्तों का निरीक्षण करता था और सभी सैन्य अधिकारियों के वेतन बिलों को प्रमाणित करता था। यद्यपि वह सेना का वास्तविक सेनापति नहीं था (वह अधिकार सम्राट का था), किंतु सेना के सुचारू संचालन, अनुशासन और रसद प्रबंधन में उसकी भूमिका केंद्रीय और अपार प्रभाव वाली थी, जिससे सैन्य व्यवस्था सुदृढ़ बनी रहती थी।

222. (D) शेरशाह सूरी
शेरशाह सूरी ने भू-राजस्व व्यवस्था को पारदर्शी और किसान-अनुकूल बनाने के लिए 'पट्टा' और 'कबूलियत' की नवीन प्रणालियाँ आरंभ की थीं। 'पट्टा' एक आधिकारिक दस्तावेज था जिसमें भूमि का क्षेत्रफल, उसकी गुणवत्ता और किसान द्वारा देय राजस्व का स्पष्ट विवरण होता था। इसके बदले में किसान 'कबूलियत' नामक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर कर उस राजस्व को चुकाने का वचन देता था। इन सुधारों ने बिचौलियों के भ्रष्टाचार को समाप्त किया और किसान तथा राज्य के बीच सीधा संबंध स्थापित कर राजस्व प्रणाली में विश्वास पैदा किया।

223. (A) सैन्य प्रमुख को भूमि या राजस्व का अनुदान।
विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक संरचना में 'अमरम' शब्द उस भूमि अनुदान को संदर्भित करता था जो सैन्य प्रमुखों, जिन्हें 'अमरनायक' कहा जाता था, को प्रदान किया जाता था। यह अनुदान नकद वेतन के विकल्प के रूप में था। इसके बदले में इन नायकों को राज्य की सेवा के लिए एक स्थायी सेना (घुड़सवार, पैदल और हाथी) का रखरखाव करना पड़ता था और राजा को एक निश्चित वार्षिक राजस्व देना होता था। यह व्यवस्था साम्राज्य की सैन्य तत्परता और क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने का एक प्रमुख आधार थी।

224. (D) 1, 2 और 3
'चौथ' मराठा साम्राज्य की राजस्व वसूली की एक अत्यंत प्रभावी और रणनीतिक प्रणाली थी। यह पड़ोसी क्षेत्रों की कुल आय का 25% (एक-चौथाई) भाग होता था। मराठे यह कर उन क्षेत्रों से वसूलते थे जिन पर उनका प्रत्यक्ष प्रशासनिक नियंत्रण नहीं था। इस भुगतान के बदले मराठा उन क्षेत्रों को आश्वासन देते थे कि वे स्वयं वहाँ लूटपाट नहीं करेंगे और उन पर होने वाले किसी भी बाहरी आक्रमण से उनकी रक्षा करेंगे। इस प्रकार चौथ मराठा सैन्य प्रभाव और आर्थिक शक्ति के विस्तार का मुख्य साधन बना।

225. (B) राजा सुहेलदेव
महमूद गजनी के आक्रमणों के कालखंड में उत्तर-पूर्वी उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती क्षेत्र के राजा सुहेलदेव ने विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध एक अभूतपूर्व विजय प्राप्त की थी। 1033 ईस्वी में बहराइच के प्रसिद्ध युद्ध में उन्होंने महमूद के सेनापति सालार मसूद को अपनी संगठित सेना के माध्यम से पराजित कर मार गिराया। राजा सुहेलदेव का यह सफल प्रतिरोध न केवल उनकी सैन्य कुशलता का परिचायक था, बल्कि इसने अगले कई दशकों तक इस क्षेत्र को इस्लामी आक्रमणों से पूरी तरह सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

226. (A) मुहम्मद बिन तुगलक
गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु 1325 ईस्वी में अफगानपुर में एक लकड़ी के भवन के ढहने से हुई थी। इतिहासकारों और समकालीन लेखकों, जैसे इब्न बतूता, ने संकेत दिया है कि यह भवन सुल्तान के पुत्र जौना खान (मुहम्मद बिन तुगलक) द्वारा रचित एक सुनियोजित षड्यंत्र था ताकि वह शीघ्र सिंहासन प्राप्त कर सके। यद्यपि कुछ विद्वान इसे एक दुर्घटना मानते हैं, किंतु मुहम्मद बिन तुगलक पर अपने पिता की हत्या का संदेह

संयुक्त राजपूत सेना के बीच हुआ था। राणा सांगा ने बाबर को भारत से बाहर निकालने के लिए विभिन्न राजपूत कुलों का एक विशाल गठबंधन बनाया था। इस युद्ध में बाबर की आधुनिक युद्ध तकनीक और तोपखाने ने उसे विजय दिलाई, जिससे भारत में मुगल साम्राज्य की नींव स्थायी रुप से मजबूत हो गई और राजपूतों की शक्ति क्षीण हुई।

264. (A) गुरु अर्जन देव
सिखों के पाँचवें गुरु, गुरु अर्जन देव की शहादत मुगलों और सिखों के संबंधों में एक युगांतरकारी मोड़ था। 1606 ईस्वी में मुगल सम्राट जहाँगीर द्वारा उन्हें दिए गए मृत्युदंड ने शांतप्रिय सिख समुदाय को अन्याय के विरुद्ध शस्त्र उठाने के लिए प्रेरित किया। इस घटना के बाद सिखों ने अपनी रक्षा के लिए सैन्य संगठन पर ध्यान देना शुरु किया, जो छठे गुरु हरगोबिंद के समय से और भी सशक्त हुआ। अंततः, इस शहादत ने सिखों को एक महान योद्धा समुदाय में बदल दिया, जिसने मुगलों का डटकर मुकाबला किया।

265. (C) दिल्ली सल्तनत (तुगलक वंश)
विजयनगर और बहमनी साम्राज्यों का उदय 14वीं शताब्दी के मध्य में दिल्ली सल्तनत, विशेष रुप से तुगलक वंश, के केंद्रीय नियंत्रण के कमजोर होने के कारण हुआ था। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की अस्थिर नीतियों के कारण उपजे असंतोष का लाभ उठाकर हरिहर और बुक्का ने 1336 में विजयनगर की और हसन गंगू ने 1347 में बहमनी साम्राज्य की नींव रखी। इन दोनों क्षेत्रीय शक्तियों के उद्भव ने दिल्ली सल्तनत के दक्षिण भारतीय प्रभुत्व को समाप्त कर दिया और दक्षिण भारत की राजनीति को एक नया स्वरुप प्रदान किया।

266. (A) पेशवा
मराठा साम्राज्य का भौगोलिक और राजनीतिक विस्तार पेशवाओं के शासनकाल के दौरान अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। विशेष रुप से पेशवा बाजीराव प्रथम और उनके उत्तराधिकारियों के नेतृत्व में मराठा सेनाएं उत्तर भारत में दिल्ली, पंजाब और बंगाल तक पहुँच गईं। पेशवाओं ने प्रशासनिक और सैन्य नियंत्रण अपने हाथों में ले लिया, जिससे मराठा सत्ता एक अखिल भारतीय शक्ति के रूप में उभरी। उनके समय में मराठा परिसंघ ने मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में उपमहाद्वीप के एक विशाल भूभाग पर अपनी धाक जमाई थी।

267. (D) राजस्व आवंटन की एक प्रणाली
दिल्ली सल्तनत के दौरान 'इक्ता' प्रणाली तुर्की प्रशासन का एक अनिवार्य अंग थी। यह वेतन के बदले अधिकारियों को आवंटित किए गए भूमि राजस्व का एक हिस्सा था। इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य सुल्तान के प्रति वफादार एक सैन्य वर्ग तैयार करना और दूर-दराज के क्षेत्रों से कुशलतापूर्वक राजस्व एकत्र करना था। इक्तादार उस भूमि से राजस्व संग्रह करते थे और उससे अपनी सेना का खर्च तथा अपना वेतन निकालते थे। यह प्रणाली राज्य के वित्तीय और सैन्य प्रबंधन को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी थी।

268. (B) आयगर और नयंकर प्रणालियाँ
विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था अपनी अनूठी 'आयगर' और 'नयंकर' प्रणालियों के लिए विख्यात है। आयगर प्रणाली गाँवों के स्थानीय प्रशासन से संबंधित थी, जहाँ बारह अधिकारियों का एक समूह ग्रामीण मामलों का प्रबंधन करता था। इसके विपरीत, नयंकर प्रणाली सैन्य-सामंती ढांचे पर आधारित थी, जिसमें नायकों को उनकी सेवाओं के बदले 'अमरम' नामक भूमि अनुदान दिया जाता था। इन प्रणालियों ने विजयनगर को स्थानीय स्तर पर स्वायत्तता और केंद्रीय स्तर पर सैन्य मजबूती प्रदान की, जिससे वह सदियों तक टिका रहा।

269. (C) मनसबदार की स्थिति और वेतन।
मुगल मनसबदारी प्रणाली में 'ज़ात' एक आधिकारिक श्रेणी थी जो सीधे तौर पर एक अधिकारी (मनसबदार) के राजकीय पदानुक्रम में स्थान और उसके व्यक्तिगत वेतन को निर्धारित करती थी। ज़ात जितनी अधिक होती थी, अधिकारी की प्रतिष्ठा और उसका आर्थिक लाभ उतना ही अधिक होता था। इसके साथ 'सवार' श्रेणी भी जुड़ी होती थी, जो सैन्य उत्तरदायित्वों को दर्शाती थी। ज़ात रैंक ने मुगल नौकरशाही में अनुशासन और स्पष्ट पदानुक्रम बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाई, जिससे सम्राट का अधिकारियों पर नियंत्रण सुनिश्चित होता था।

270. (D) राजपूत
'जौहर' और 'शाका' मध्यकालीन राजपूत इतिहास की दो अत्यंत गौरवशाली और साहसी परंपराएं हैं, जो उनके अटूट स्वाभिमान का प्रतीक मानी जाती हैं। जब किसी युद्ध में राजपूतों की पराजय और दुर्ग का पतन निश्चित होता था, तब महिलाएं अपने सतीत्व की रक्षा के लिए 'जौहर' (सामूहिक आत्मदाह) करती थीं। इसके तुरंत बाद पुरुष योद्धा केसरिया बाना पहनकर 'शाका' (अंतिम आत्मघाती हमला) के लिए शत्रु पर टूट पड़ते थे। ये प्रथाएं विशेष रुप से चित्तौड़गढ़ जैसे प्रसिद्ध राजपूत किलों की ऐतिहासिक घेराबंदी से जुड़ी हुई हैं।

271. (A) बप्पा रावल
मेवाड़ के गुहिल वंश के प्रतापी राजा बप्पा रावल को 8वीं शताब्दी के दौरान सिंध से आगे बढ़ने वाले प्रारंभिक अरब आक्रमणों के विरुद्ध प्रतिरोध का मुख्य नायक माना जाता है। उन्होंने अन्य भारतीय राजाओं के साथ मिलकर एक शक्तिशाली मोर्चा बनाया और अरब सेनाओं को निर्णायक रूप से पराजित किया। बप्पा रावल की इस सैन्य सफलता ने न केवल राजस्थान को सुरक्षित रखा, बल्कि अरबों को अगले कई दशकों तक भारतीय हृदयस्थल की ओर बढ़ने से रोक दिया। उनकी वीरता और रणनीतिक कौशल आज भी राजस्थानी गौरव का प्रतीक हैं।

272. (B) दाहिर
712 ईस्वी में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में हुए सिंध पर अरब आक्रमण का मुख्य लक्ष्य राजा दाहिर थे। दाहिर सिंध के ब्राह्मण वंश के अंतिम शासक थे। कासिम ने इराक के गवर्नर अल-हज्जाज के आदेश पर एक विशाल सेना के साथ हमला किया था। रावर के भीषण युद्ध में राजा दाहिर ने वीरतापूर्वक संघर्ष किया, किंतु अंततः वे युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त

236. (B) राणा उदय सिंह
1567-68 ईस्वी में अकबर द्वारा चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी मेवाड़ के शासक राणा उदय सिंह के विरुद्ध थी। अकबर मेवाड़ की रणनीतिक स्थिति और राजपूतों के बीच उसके प्रभाव को समाप्त करना चाहता था। यद्यपि राणा उदय सिंह स्वयं पहाड़ियों में चले गए थे, किंतु किले की रक्षा जयमल और फत्ता नामक वीर सेनापतियों ने की। इस घेराबंदी के परिणामस्वरूप अंततः मुगलों की विजय हुई और राजपूतों द्वारा वीरतापूर्वक बलिदान दिया गया। यह घटना मुगल साम्राज्य के विस्तार की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और रक्तरंजित मील का पत्थर थी।

237. (C) गढ़-कटंगा
मध्यकालीन भारत में मुगलों के विरुद्ध गोंड जनजातीय प्रतिरोध मुख्य रूप से 'गढ़-कटंगा' क्षेत्र (वर्तमान मध्य प्रदेश का पूर्वी भाग) में केंद्रित था। इस साम्राज्य की सबसे प्रसिद्ध शासिका रानी दुर्गावती थीं, जिन्होंने अपनी असाधारण वीरता और नेतृत्व क्षमता से मुगल सम्राट अकबर की सेनाओं को कड़ी चुनौती दी। 1564 ईस्वी में मुगल सेनापति आसफ खान के आक्रमण के दौरान, गोंड योद्धाओं ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए भीषण युद्ध किया। यद्यपि वे पराजित हुए, किंतु गढ़-कटंगा का यह प्रतिरोध जनजातीय स्वाभिमान की एक प्रेरणादायक गाथा बन गया।

238. (D) तुगलक वंश
बहमनी साम्राज्य की स्थापना 1347 ईस्वी में दिल्ली सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की दमनकारी और अस्थिर नीतियों के विरुद्ध एक बड़े विद्रोह के परिणामस्वरूप हुई थी। दक्कन के अमीरों ने तुगलक के केंद्रीय नियंत्रण से मुक्त होने के लिए अलाउद्दीन हसन बहमन शाह के नेतृत्व में विद्रोह किया। इस विद्रोह की सफलता ने दक्कन में प्रथम स्वतंत्र मुस्लिम साम्राज्य की नींव रखी। बहमनी साम्राज्य का उदय दिल्ली सल्तनत के भौगोलिक संकुचन और दक्षिण भारत में क्षेत्रीय शक्तियों के सशक्तिकरण का एक प्रमुख उदाहरण है, जिसने तुगलक वंश को कमजोर किया।

239. (A) शाहू
मराठा साम्राज्य में पेशवा की शक्ति का वास्तविक उदय छत्रपति शाहू महाराज के शासनकाल (1708-1749) में हुआ। शाहू ने प्रशासनिक जटिलताओं और आंतरिक कलह को दूर करने के लिए पेशवा बालाजी विश्वनाथ पर अत्यधिक विश्वास किया। धीरे-धीरे, पेशवाओं की सैन्य विजयों और कूटनीतिक सफलताओं के कारण शासन के सभी महत्वपूर्ण निर्णय पुणे से लिए जाने लगे। शाहू महाराज के उदार व्यक्तित्व और पेशवाओं की असाधारण योग्यता ने इस पद को मराठा साम्राज्य का वास्तविक शासक बना दिया, जिससे छत्रपति की भूमिका केवल औपचारिक रह गई।

240. (B) व्यवस्थित माप और मूल्यांकन पद्धति थी।
शेरशाह सूरी ने भू-राजस्व प्रशासन में क्रांतिकारी वैज्ञानिक सुधार किए जो अत्यंत प्रभावशाली रहे। उन्होंने भूमि की सटीक माप के लिए 'सिकंदरी गज' का उपयोग किया और भूमि को उसकी उर्वरता के आधार पर तीन श्रेणियों (उत्तम, मध्यम और खराब) में विभाजित किया। राजस्व का निर्धारण औसत उपज के एक-तिहाई भाग के रूप में किया गया था। किसानों को राजस्व नकद या अनाज दोनों रूपों में देने की छूट थी। इन सुधारों ने किसानों को सुरक्षा प्रदान की और राज्य की आय को स्थिर बनाया, जिसने बाद में अकबर के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

241. (B) वेतन के बदले एक राजस्व आवंटन
दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक ढांचे में 'इक्ता' एक अत्यंत महत्वपूर्ण व्यवस्था थी, जिसका अर्थ है राज्य द्वारा अपने अधिकारियों को वेतन के बदले प्रदान किया गया भूमि राजस्व का अधिकार। इक्ता प्राप्त करने वाले अधिकारी को 'इक्तादार' या 'मुक्ती' कहा जाता था। उसका मुख्य कार्य अपने क्षेत्र से राजस्व एकत्र करना, वहाँ प्रशासन चलाना और सुल्तान के लिए एक सैन्य टुकड़ी का रखरखाव करना था। यह प्रणाली गैर-वंशानुगत थी और अधिकारियों का नियमित स्थानांतरण होता था ताकि केंद्रीय नियंत्रण बना रहे और वे स्थानीय स्तर पर बहुत शक्तिशाली न हो सकें।

242. (A) गुर्जर-प्रतिहारों का प्रतिरोध।
712 ईस्वी में मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध की विजय के बाद अरबों की प्रगति भारत के आंतरिक भागों में रुक गई, जिसका मुख्य कारण शक्तिशाली गुर्जर-प्रतिहार राजवंश का निरंतर और सशक्त प्रतिरोध था। नागभट्ट प्रथम और उनके उत्तराधिकारियों ने सिंध से राजस्थान और गंगा घाटी की ओर बढ़ने वाले अरब आक्रमणों को बार-बार विफल किया। उनके इस अजेय सैन्य कौशल के कारण ही सिंध की अरब विजय भारतीय इतिहास में एक पृथक घटना बनकर रह गई और वे अगले तीन सौ वर्षों तक भारत के अन्य क्षेत्रों पर अधिकार नहीं कर सके।

243. (C) कुतुबुद्दीन ऐबक
गुलाम वंश की स्थापना 1206 ईस्वी में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा की गई थी, जो मुहम्मद गोरी का एक अत्यंत विश्वसनीय और योग्य सेनापति था। गोरी की मृत्यु के बाद उसने स्वयं को लाहौर का स्वतंत्र शासक घोषित किया और दिल्ली सल्तनत की नींव रखी। यद्यपि उसका शासन काल मात्र चार वर्षों का था, किंतु उसने उत्तर भारत में तुर्की प्रभुत्व स्थापित करने और प्रशासन की प्रारंभिक रूपरेखा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐबक की उदारता के कारण उसे 'लाखबख्श' के नाम से भी जाना जाता था।

244. (D) पानीपत का तीसरा युद्ध
अफगान सम्राट अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर कई आक्रमण किए, जिसका चरमोत्कर्ष 14 जनवरी, 1761 को पानीपत के तीसरे युद्ध के रूप में हुआ। यह युद्ध अब्दाली और मराठा साम्राज्य के बीच लड़ा गया था। अब्दाली ने अपनी श्रेष्ठ सैन्य रणनीति और क्षेत्रीय मुस्लिम शासकों के सहयोग से मराठों को निर्णायक रूप से पराजित किया। इस युद्ध में मराठा शक्ति को अपार जन-धन की क्षति हुई, जिसने उनके उत्तर भारत के प्रभुत्व को समाप्त कर दिया और भारत के आधुनिक इतिहास की दिशा बदल दी।

245. (C) मराठा
औरंगजेब के शासनकाल का उत्तरार्ध (1681-1707) दक्कन के क्षेत्रों में मराठों के विरुद्ध संघर्ष में व्यतीत हुआ। यद्यपि उसने बीजापुर और गोलकुंडा की सल्तनतों को समाप्त कर दिया, किंतु मराठों द्वारा शिवाजी महाराज के बाद भी जारी रखा गया छापामार युद्ध उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती सिद्ध हुआ। मराठों ने मुगलों की विशाल सेना को थका दिया और उनके संसाधनों को रिक्त कर दिया। औरंगजेब का यह दक्कन अभियान अंततः मुगल साम्राज्य के पतन का एक मुख्य कारण बना क्योंकि इसने उत्तर भारत में प्रशासन को कमजोर कर दिया था।

246. (B) दक्कन सल्तनतों का एक गठबंधन
1565 ईस्वी में लड़ा गया तालिकोटा का युद्ध, जिसे राक्षसी-तांगड़ी के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है, विजयनगर साम्राज्य और चार दक्कन सल्तनतों (बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर और बीदर) के संयुक्त गठबंधन के बीच हुआ था। बरार इस गठबंधन का हिस्सा नहीं था। विजयनगर की बढ़ती शक्ति और उनके हस्तक्षेपों से परेशान होकर इन मुस्लिम राज्यों ने आपसी मतभेद भुलाकर एक शक्तिशाली मोर्चा बनाया। इस युद्ध में विजयनगर की निर्णायक पराजय हुई, जिसके परिणामस्वरूप उसकी वैभवशाली राजधानी हम्पी को पूरी तरह नष्ट कर दिया गया।

247. (D) शिवाजी के आठ मंत्रियों की परिषद
'अष्टप्रधान' शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित एक प्रशासनिक परिषद थी, जिसमें आठ महत्वपूर्ण मंत्री सम्मिलित थे। यह परिषद शासन के विभिन्न पहलुओं जैसे वित्त, विदेश नीति, रक्षा, न्याय और धार्मिक मामलों की देखरेख करती थी। इसका नेतृत्व 'पेशवा' (प्रधानमंत्री) करता था। शिवाजी ने यह सुनिश्चित किया था कि ये पद वंशानुगत न होकर योग्यता पर आधारित हों और प्रत्येक मंत्री सीधे राजा के प्रति जवाबदेह हो। यह व्यवस्था शिवाजी के दूरदर्शी नेतृत्व और उनके द्वारा स्थापित कुशल प्रशासनिक नियंत्रण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

248. (A) सैन्य प्रमुखों को भूमि आवंटित करने की प्रणाली।
विजयनगर साम्राज्य की 'नयंकर प्रणाली' एक विशिष्ट प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था थी। इसके अंतर्गत राजा अपने प्रमुख सैन्य अधिकारियों, जिन्हें 'नायक' कहा जाता था, को उनकी सेवाओं के बदले राजस्व संग्रह के लिए 'अमरम' नामक भूमि आवंटित करता था। इन नायकों का मुख्य दायित्व अपने आवंटित क्षेत्र में शांति बनाए रखना, राजा को वार्षिक राजस्व देना और युद्ध के समय राजा की सहायता के लिए एक निश्चित संख्या में सैनिक और हाथी तैयार रखना था। यह प्रणाली साम्राज्य के विकेंद्रीकृत प्रशासन और सैन्य शक्ति का आधार थी।

249. (C) पद और वेतन के लिए एक श्रेणीकरण प्रणाली।
मुगल सम्राट अकबर द्वारा परिष्कृत की गई मनसबदारी प्रणाली एक जटिल नौकरशाही और सैन्य श्रेणीकरण व्यवस्था थी। यह प्रणाली अधिकारियों (मनसबदारों) का पदानुक्रम में स्थान, उनका वेतन और उनके द्वारा रखी जाने वाली सेना के आकार को निर्धारित करती थी। प्रत्येक मनसबदार को 'ज़ात' (व्यक्तिगत पद और वेतन) और 'सवार' (रखे जाने वाले घुड़सवारों की संख्या) के आधार पर श्रेणी दी जाती थी। यह कथन सही है कि यह एक श्रेणीकरण प्रणाली थी जिसने मुगल प्रशासन को एक संगठित और केंद्रीकृत स्वरूप प्रदान किया था।

250. (A) विभिन्न धर्मों के बीच शांति और सद्भाव की नीति।
'सुलह-ए-कुल' मुगल सम्राट अकबर द्वारा प्रतिपादित एक उदारवादी विचारधारा थी, जिसका शाब्दिक अर्थ 'सार्वभौमिक शांति' है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य के भीतर रहने वाले विभिन्न धर्मों, संप्रदायों और समुदायों के बीच सहिष्णुता, आपसी सम्मान और सद्भाव स्थापित करना था। अकबर का मानना था कि एक स्थिर साम्राज्य के लिए सभी प्रजा का सहयोग और शांति अनिवार्य है। इस नीति ने मुगल शासन को भारत के विविध सामाजिक ढांचे में स्वीकार्यता प्रदान की और उसे सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

251. (D) गुर्जर-प्रतिहार
8वीं शताब्दी के दौरान, शक्तिशाली गुर्जर-प्रतिहार राजवंश ने भारत के 'द्वारपाल' के रूप में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने सिंध के अरब शासकों के विरुद्ध एक सुदृढ़ रक्षा दीवार खड़ी की। नागभट्ट प्रथम और उनके उत्तराधिकारियों ने सिंध से आगे बढ़ने वाले अरब आक्रमणों को बार-बार विफल किया और उन्हें भारतीय हृदयस्थल में प्रवेश करने से रोका। गुर्जर-प्रतिहारों के इस निरंतर प्रतिरोध के कारण ही भारत का विशाल आंतरिक भाग अगले कई शताब्दियों तक प्रारंभिक इस्लामी विस्तार की लहरों से सुरक्षित रह सका।

252. (B) संपत्ति लूटना
महमूद गजनी ने 1000 से 1027 ईस्वी के बीच भारत पर सत्रह बार आक्रमण किए। इन आक्रमणों का मुख्य और प्राथमिक उद्देश्य भारत की अपार धन-संपत्ति को लूटना था, विशेष रूप से समृद्ध मंदिरों और नगरों से। वह इस लूट के धन का उपयोग अपने मध्य एशियाई साम्राज्य को सुदृढ़ करने और गजनी को एक शानदार शहर बनाने के लिए करना चाहता था। भारत में स्थायी साम्राज्य स्थापित करना उसका तात्कालिक उद्देश्य नहीं था। सोमनाथ जैसे मंदिरों पर उसके हमले इसी आर्थिक और सैन्य प्रभुत्व की आकांक्षा का हिस्सा थे।

253. (C) अलाउद्दीन खिलजी
अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी विशाल सेना के भरण-पोषण के लिए दिल्ली सल्तनत में एक अद्वितीय बाजार नियंत्रण और मूल्य विनियमन प्रणाली लागू की थी। उसने अनाज, वस्त्र और घोड़ों जैसी दैनिक उपभोग की वस्तुओं की कीमतें निश्चित कर दीं। इस प्रणाली को कठोरता से लागू करने के लिए उसने 'शहना-ए-मंडी' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की। इसका मुख्य उद्देश्य सैनिकों को कम वेतन में भी जीवन की आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध कराना सुनिश्चित करना था। यह नीति खिलजी की प्रशासनिक दूरदर्शिता और सैन्य केंद्रीकरण का एक महत्वपूर्ण अंग थी।

254. (D) मराठा
अहमद शाह अब्दाली ने 1761 ईस्वी में पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों का सामना किया। इस समय मराठा शक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर थी और उत्तर भारत के मामलों में निर्णायक भूमिका निभा रही थी। सदाशिवराव भाऊ के नेतृत्व में मराठा सेना ने अफगान आक्रांता को रोकने का प्रयास किया, किंतु आपसी समन्वय की कमी और रसद आपूर्ति में बाधा के कारण मराठों की भारी पराजय हुई। इस युद्ध ने भारत में मराठा प्रभुत्व के विस्तार को गंभीर रूप से अवरुद्ध कर दिया और भविष्य की राजनीति के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

255. (A) औरंगजेब
मुगल सम्राट औरंगजेब के शासनकाल के दौरान उसकी धार्मिक और कठोर नीतियों के कारण साम्राज्य के कई हिस्सों में विद्रोह हुए। इनमें मथुरा, आगरा और दिल्ली के समीपवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले जाटों का प्रतिरोध अत्यंत सशक्त था। गोकुला, राजाराम और बाद में चूड़ामन जैसे नेताओं ने जाटों को संगठित कर मुगलों की केंद्रीय सत्ता को सीधी चुनौती दी। इस विद्रोह का मुख्य कारण मुगल प्रशासन द्वारा की जा रही उच्च भू-राजस्व की मांगें और सांस्कृतिक हस्तक्षेप था, जिसने अंततः एक स्वतंत्र जाट राज्य का मार्ग खोला।

256. (B) अलाउद्दीन हसन बहमन शाह
बहमनी साम्राज्य की स्थापना 1347 ईस्वी में अलाउद्दीन हसन बहमन शाह द्वारा की गई थी, जिसे हसन गंगू के नाम से भी जाना जाता था। उसने दिल्ली सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध विद्रोह कर दक्कन में प्रथम स्वतंत्र मुस्लिम साम्राज्य की नींव रखी। उसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया और शासन को सुव्यवस्थित करने के लिए इसे चार प्रांतों में विभाजित किया। यह साम्राज्य लंबे समय तक विजयनगर साम्राज्य का प्रबल प्रतिद्वंद्वी बना रहा और दक्कन की राजनीति को सदियों तक प्रभावित किया।

257. (B) एक संप्रभु स्वदेशी शासन
'हिंदवी स्वराज्य' शिवाजी महाराज द्वारा परिकल्पित एक राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारधारा थी। इसका मूल उद्देश्य भारतीय उपमहाद्वीप को विदेशी आक्रांताओं और दमनकारी सल्तनत शासन से मुक्त कराकर एक ऐसी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करना था, जो स्थानीय मूल्यों, परंपराओं और न्याय पर आधारित हो। शिवाजी द्वारा 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना एक संप्रभु स्वदेशी शासन का प्रतीक थी। इसके माध्यम से शिवाजी ने जनता में स्व-शासन और राष्ट्रीय गौरव की भावना जाग्रत की, जो आगे चलकर मुगल सत्ता के पतन का एक मुख्य कारण बनी।

258. (A) अष्टप्रधान परिषद
शिवाजी महाराज का प्रशासन अपनी कार्यकुशलता और सुदृढ़ केंद्रीय नियंत्रण के लिए मध्यकालीन भारत में अद्वितीय था। उन्होंने 'अष्टप्रधान' नामक आठ मंत्रियों की एक परिषद गठित की थी, जो शासन के विभिन्न पहलुओं की देखरेख करती थी। प्रत्येक मंत्री सीधे राजा के प्रति उत्तरदायी था और उन्हें विशिष्ट प्रशासनिक विभाग सौंपे गए थे। शिवाजी ने यह सुनिश्चित किया था कि ये पद वंशानुगत न होकर योग्यता पर आधारित हों। यह व्यवस्था शिवाजी की प्रशासनिक दूरदर्शिता और केंद्रीकृत नियंत्रण का उत्कृष्ट उदाहरण थी, जिसने मराठा राज्य को स्थिरता प्रदान की।

259. (C) एक सुव्यवस्थित स्थानीय प्रशासन।
शेरशाह सूरी की प्रशासनिक व्यवस्था अत्यधिक व्यवस्थित और स्थानीय शासन पर केंद्रित थी। उसने अपने साम्राज्य को सरकारों और परगना में विभाजित किया था। प्रत्येक परगना में 'शिकदार' सैन्य और प्रशासनिक प्रमुख होता था, जबकि 'मुंसिफ' राजस्व मामलों की देखरेख करता था। यह द्वैध प्रबंधन एक सुव्यवस्थित स्थानीय प्रशासन को दर्शाता है, जहाँ कानून-व्यवस्था और राजस्व संग्रह के बीच संतुलन बनाया गया था। शेरशाह की इस प्रभावी प्रणाली ने ही बाद में मुगल प्रशासन के लिए एक ठोस आधार प्रदान किया था।

260. (D) सुरक्षा के बदले गैर-मुस्लिम प्रजा पर आरोपित कर।
मध्यकालीन भारत में जज़िया एक प्रति-व्यक्ति कर था, जो मुस्लिम शासकों द्वारा अपनी गैर-मुस्लिम प्रजा पर आरोपित किया जाता था। यह कर मुख्य रूप से राज्य द्वारा प्रदान की जाने वाली सुरक्षा और सैन्य सेवा से छूट के बदले लिया जाता था। भारत में इसकी शुरुआत मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध विजय के बाद की थी। यह कर इस्लामी कानून के सिद्धांतों पर आधारित था और इसे केवल सक्षम पुरुषों से ही वसूला जाता था। यह कर गैर-मुस्लिम प्रजा के प्रति राज्य के दायित्वों और उनकी स्थिति को परिभाषित करता था।

261. (C) ललितादित्य
कश्मीर के कार्कोट वंश के महान शासक ललितादित्य मुक्तापीड को अरबों के विस्तार को रोकने का मुख्य श्रेय दिया जाता है। 8वीं शताब्दी के दौरान, जब अरब सेनाएं सिंध से उत्तर की ओर बढ़ने का प्रयास कर रही थीं, ललितादित्य ने अपनी सैन्य कुशलता से उन्हें पराजित किया। उन्होंने न केवल कश्मीर की सीमाओं की रक्षा की, बल्कि कन्नौज के यशोवर्मन के साथ गठबंधन कर मध्य एशिया तक अपने प्रभाव का विस्तार किया। उनकी विजयों ने भारत के उत्तरी भाग को अरब प्रभुत्व से सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

262. (B) तुगलक वंश
मध्य एशियाई विजेता तैमूरलंग ने 1398 ईस्वी में भारत पर आक्रमण किया। उस समय दिल्ली की गद्दी पर तुगलक वंश के अंतिम शासक नसीरुद्दीन महमूद का शासन था। तैमूर के इस आक्रमण ने दिल्ली में अभूतपूर्व तबाही मचाई और सल्तनत की शक्ति को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। इस हमले के बाद तुगलक वंश का पतन सुनिश्चित हो गया, जिससे दिल्ली सल्तनत की केंद्रीय सत्ता बिखर गई। तैमूर की इस लूटपाट ने भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग और दिल्ली के वैभव को अपूरणीय क्षति पहुँचाई थी।

263. (D) राणा सांगा
1527 ईस्वी में लड़ा गया खानवा का युद्ध बाबर के लिए पानीपत से भी अधिक चुनौतीपूर्ण था। यह युद्ध बाबर और मेवाड़ के शक्तिशाली शासक राणा सांगा के नेतृत्व वाली

जा रहा था। इस विजय ने गंगा घाटी में बाबर के प्रभुत्व को निर्विवाद बना दिया और भारत में अफगान शक्ति के अंतिम बड़े संगठित प्रतिरोध को कुचल दिया। इसके अगले ही वर्ष, 1530 ईस्वी में बाबर की मृत्यु हो गई, जिससे यह युद्ध उसके करियर की अंतिम निर्णायक जीत बन गया।

190. (D) शाहजहाँ - सतनामी प्रतिरोध का नेतृत्व किया
मुगल इतिहास के संदर्भ में सतनामी विद्रोह एक महत्वपूर्ण घटना है, किंतु यह शाहजहाँ के शासनकाल में नहीं, बल्कि औरंगजेब के शासनकाल के दौरान 1672 ईस्वी में हुआ था। शाहजहाँ का शासनकाल मुख्य रूप से वास्तुकला के विकास और मध्य एशियाई अभियानों के लिए जाना जाता है। सतनामियों का विद्रोह औरंगजेब की कठोर धार्मिक और आर्थिक नीतियों के विरुद्ध नारनौल के किसानों और शिल्पकारों का एक सशस्त्र आंदोलन था। अन्य विकल्प जैसे हुमायूँ का शेरशाह से संघर्ष और अकबर की चित्तौड़गढ़ विजय ऐतिहासिक रूप से सही हैं।

191. (A) दक्कन की स्थिरता की दीर्घ अवधि।
मराठा साम्राज्य का उत्थान दक्कन में स्थिरता के कारण नहीं, बल्कि वहाँ व्याप्त गहरी राजनीतिक अस्थिरता और संघर्षों के कारण हुआ था। औरंगजेब के दक्कन अभियानों और दक्कन सल्तनतों के क्रमिक पतन ने एक ऐसी शक्ति शून्यता उत्पन्न की जिसका लाभ शिवाजी महाराज ने स्वराज्य निर्माण के लिए उठाया। महाराष्ट्र की कठिन भौगोलिक स्थिति, शिवाजी का नेतृत्व और भक्ति आंदोलन द्वारा जाग्रत की गई सामाजिक-सांस्कृतिक एकता मराठों के उदय के वास्तविक आधार थे, जिन्होंने विदेशी शासन के विरुद्ध सशक्त विकल्प प्रस्तुत किया।

192. (B) धार्मिक मामले और दान।
शिवाजी महाराज की अष्टप्रधान परिषद में 'पंडितराव' का पद धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था के प्रबंधन के लिए समर्पित था। उनका मुख्य कार्य राज्य के धार्मिक अनुष्ठानों की देखरेख करना, विद्वान ब्राह्मणों को दान वितरित करना और धार्मिक नियमों की व्याख्या करना था। वे समाज में नैतिक आचरण और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण के लिए भी उत्तरदायी थे। यह पद दर्शाता है कि शिवाजी का प्रशासन न केवल सैन्य और राजस्व मामलों पर केंद्रित था, बल्कि वह अपनी प्रजा के आध्यात्मिक कल्याण के प्रति भी सचेत था।

193. (B) सूबेदार या नाज़िम
मुगल प्रांतीय प्रशासन में सूबे का सर्वोच्च अधिकारी 'सूबेदार' कहलाता था, जिसे 'नाज़िम' या 'सिपहसालार' के नाम से भी जाना जाता था। उसकी नियुक्ति सीधे सम्राट द्वारा की जाती थी और वह अपने प्रांत में सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था। सूबेदार का प्राथमिक उत्तरदायित्व प्रांत में कानून-व्यवस्था बनाए रखना, विद्रोहों का दमन करना और शाही फरमानों का अनुपालन सुनिश्चित करना था। उसके पास व्यापक सैन्य और प्रशासनिक शक्तियाँ होती थीं, जिससे वह स्थानीय स्तर पर मुगल सत्ता का मुख्य स्तंभ बना रहता था।

194. (A) व्यापार और वित्त
मध्यकालीन भारतीय आर्थिक इतिहास में 'हुंडी' शब्द का अत्यधिक महत्व है, जो प्रत्यक्ष रूप से व्यापार और वित्तीय लेनदेन से संबद्ध था। यह एक प्रकार का विनिमय पत्र या साख पत्र होता था जिसका उपयोग व्यापारी बड़ी मात्रा में नकद राशि साथ ले जाने के जोखिम से बचने के लिए करते थे। हुंडी प्रणाली की विश्वसनीयता इतनी अधिक थी कि इसे दूर-दराज के क्षेत्रों में भी स्वीकार किया जाता था, जिसने आंतरिक और बाह्य व्यापार के विकास में उत्प्रेरक का कार्य किया। यह मध्यकालीन भारत की विकसित बैंकिंग प्रणाली का प्रमाण है।

195. (C) बप्पा रावल
मेवाड़ के गुहिल वंश के संस्थापक बप्पा रावल को 8वीं शताब्दी के दौरान सिंध से आगे बढ़ने वाले प्रारंभिक अरब आक्रमणों के विरुद्ध प्रतिरोध का मुख्य नायक माना जाता है। उन्होंने अन्य भारतीय राजाओं के साथ मिलकर एक शक्तिशाली मोर्चा बनाया और अरब सेनाओं को निर्णायक रूप से पराजित किया। बप्पा रावल की इस सैन्य सफलता ने न केवल राजस्थान को सुरक्षित रखा, बल्कि अरबों को अगले कई दशकों तक भारतीय हृदयस्थल की ओर बढ़ने से रोक दिया। उनकी वीरता और रणनीतिक कौशल आज भी राजस्थानी गौरव का प्रतीक हैं।

196. (D) समृद्ध उत्तरी मंदिर नगर।
महमूद गजनी के भारत पर आक्रमणों का प्राथमिक लक्ष्य उत्तरी भारत के वे समृद्ध मंदिर और नगर थे जहाँ अपार धन-संपत्ति संचित थी। उसने मथुरा, कन्नौज, थानेसर और सोमनाथ जैसे स्थानों को विशेष रूप से लक्ष्य बनाया क्योंकि ये स्थान न केवल धार्मिक केंद्र थे, बल्कि उस समय के सबसे बड़े आर्थिक भंडार भी थे। महमूद इन आक्रमणों के माध्यम से जो अपार लूट का माल प्राप्त करता था, उसका उपयोग वह अपनी राजधानी गजनी को सजाने और मध्य एशिया में अपने साम्राज्य की सैन्य शक्ति बढ़ाने के लिए करना चाहता था।

197. (C) जलालुद्दीन फिरोज खिलजी
खिलजी वंश की स्थापना 1290 ईस्वी में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने गुलाम वंश के अंतिम निर्बल शासकों को अपदस्थ कर की थी। इसे इतिहास में 'खिलजी क्रांति' के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसने प्रशासन में तुर्की कुलीन वर्ग के एकाधिकार को समाप्त किया और योग्यता के आधार पर पदों के आवंटन की शुरुआत की। यद्यपि जलालुद्दीन एक उदारवादी शासक था, किंतु उसके भतीजे अलाउद्दीन खिलजी ने उसकी हत्या कर सत्ता हस्तगत कर ली और साम्राज्य को सैन्य और प्रशासनिक दृष्टि से शिखर पर पहुँचाया।

198. (B) मेवाड़ के राणा सांगा
1527 ईस्वी में लड़ा गया खानवा का युद्ध बाबर के भारत में प्रवास के लिए सबसे निर्णायक संघर्ष था। यह युद्ध बाबर और मेवाड़ के शक्तिशाली शासक राणा सांगा के नेतृत्व वाली संयुक्त राजपूत सेना के बीच हुआ था। राणा सांगा ने बाबर को भारत से बाहर निकालने के लिए विभिन्न राजपूत कुलों और अफगान सरदारों का एक विशाल गठबंधन बनाया था। इस

हुए। उनकी मृत्यु के साथ ही सिंध क्षेत्र पर अरबों का अधिकार स्थापित हो गया, जिसने भारत में भावी इस्लामी आक्रमणों का मार्ग प्रशस्त किया।

273. (B) गोरी ने साम्राज्य की स्थापना चाही जबकि गजनी ने लूटपाट की।
महमूद गजनी और मुहम्मद गोरी के भारत पर आक्रमणों के पीछे के उद्देश्यों में एक मौलिक अंतर था। महमूद गजनी का प्राथमिक लक्ष्य भारत की अपार धन-संपत्ति लूटना और अपने मध्य एशियाई साम्राज्य को आर्थिक मजबूती देना था; उसने यहाँ स्थायी सत्ता स्थापित करने का प्रयास नहीं किया। इसके विपरीत, मुहम्मद गोरी का लक्ष्य भारत में एक स्थायी राजनीतिक प्रभुत्व और इस्लामी साम्राज्य की नींव रखना था। गोरी की इसी महत्वाकांक्षा के परिणामस्वरूप ही दिल्ली सल्तनत की स्थापना संभव हो सकी, जिसने भारतीय इतिहास की धारा को बदल दिया।

274. (A) तुगलक वंश
दिल्ली में सैयद वंश की स्थापना 1414 ईस्वी में खिज्र खान द्वारा तुगलक वंश के पतन के बाद की गई थी। 1398 में तैमूरलंग के आक्रमण ने तुगलक वंश की शक्ति को पूरी तरह नष्ट कर दिया था, जिससे राजनीतिक शून्यता पैदा हुई। खिज्र खान, जो तैमूर का प्रतिनिधि था, ने इस अराजकता का लाभ उठाकर दिल्ली की सत्ता हथिया ली। सैयदों का शासन काल तुलनात्मक रूप से संक्षिप्त और प्रभावहीन रहा, जो मुख्यतः दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों तक ही सीमित था, और अंततः लोदी वंश द्वारा प्रतिस्थापित किया गया।

275. (C) पूर्व में अफगान
1529 ईस्वी में लड़ा गया घाघरा का युद्ध मुगल सम्राट बाबर के जीवन का अंतिम बड़ा सैन्य अभियान था। यह युद्ध उसने बिहार और बंगाल के अफगान सरदारों के संयुक्त मोर्चे के विरुद्ध लड़ा था, जिनका नेतृत्व महमूद लोदी कर रहा था। इस विजय ने गंगा घाटी में बाबर के प्रभुत्व को निर्विवाद बना दिया और भारत में अफगान शक्ति के अंतिम बड़े संगठित प्रतिरोध को कुचल दिया। इसके साथ ही, बाबर ने उत्तर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव को पूरी तरह सुरक्षित और सुदृढ़ कर लिया था।

276. (D) अकबर
गोंड साम्राज्य की प्रसिद्ध रानी दुर्गावती ने 1564 ईस्वी में मुगल सम्राट अकबर की विस्तारवादी सेनाओं के विरुद्ध वीरतापूर्ण प्रतिरोध का नेतृत्व किया था। अकबर के सेनापति आसफ खान ने समृद्ध गढ़-कटंगा राज्य पर अधिकार करने के लिए आक्रमण किया था। रानी दुर्गावती ने अपनी छोटी सेना के साथ विशाल मुगल सेना का डटकर मुकाबला किया और अंततः बंदी बनने के बजाय आत्म-बलिदान का मार्ग चुना। उनकी यह शहादत भारतीय इतिहास में मातृभूमि की रक्षा और महिला वीरता की एक अमर गाथा के रूप में अंकित है।

277. (C) पाँच
15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 16वीं शताब्दी की शुरुआत में बहमनी साम्राज्य के केंद्रीय शासन की कमजोरी के कारण यह पाँच स्वतंत्र सल्तनतों में विभाजित हो गया। ये राज्य थे: बीजापुर के आदिल शाही, गोलकुंडा के कुतुब शाही, अहमदनगर के निज़ाम शाही, बीदर के बरीद शाही और बरार के इमाद शाही। इन राज्यों के बीच अक्सर सीमा विवाद और वर्चस्व की लड़ाई चलती रहती थी, किंतु विजयनगर साम्राज्य के विरुद्ध वे अक्सर एकजुट होकर लड़ते थे। इन सल्तनतों ने दक्कन की राजनीति और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया।

278. (B) शिवाजी
'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना शिवाजी महाराज का सर्वोच्च जीवन मिशन था। इसका अर्थ था एक ऐसा संप्रभु स्वदेशी राज्य जो विदेशी शक्तियों और दमनकारी सल्तनत शासन के नियंत्रण से पूर्णतः मुक्त हो। शिवाजी ने इस आदर्श के माध्यम से स्थानीय प्रजा में स्वाभिमान, साहस और राष्ट्रीय एकता की भावना का संचार किया। उन्होंने न केवल सैन्य शक्ति के बल पर अपनी सीमाओं का विस्तार किया, बल्कि एक न्यायपूर्ण और कुशल प्रशासनिक व्यवस्था भी स्थापित की, जिसने भविष्य के मराठा गौरव की सुदृढ़ आधारशिला रखी।

279. (D) प्रधानमंत्री
शिवाजी महाराज की अष्टप्रधान परिषद में 'पेशवा' का पद सर्वोच्च था, जो आधुनिक शासन व्यवस्था के प्रधानमंत्री के समान था। उनका मुख्य कार्य संपूर्ण नागरिक प्रशासन की देखरेख करना, विभिन्न विभागों के बीच समन्वय स्थापित करना और राजा की अनुपस्थिति में राज्य के मामलों का प्रबंधन करना था। पेशवा सभी महत्वपूर्ण सरकारी दस्तावेजों और फरमानों पर अपनी मुहर लगाते थे। शिवाजी के काल में पेशवा राजा के प्रति सीधे उत्तरदायी होते थे और उनकी कूटनीतिक एवं प्रशासनिक कुशलता स्वराज्य की स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

280. (A) भू-राजस्व, मुद्रा और संचार।
शेरशाह सूरी का अल्पकालिक शासन काल अपने क्रांतिकारी प्रशासनिक सुधारों के लिए मध्यकालीन इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उन्होंने भूमि की सटीक माप और वर्गीकरण पर आधारित भू-राजस्व प्रणाली लागू की, चांदी के 'रुपये' का प्रचलन शुरू किया जो सदियों तक मुद्रा का मानक रहा, और ग्रैंड ट्रंक रोड जैसी विशाल सड़कों एवं सरायों का निर्माण करवाकर संचार व्यवस्था को सुदृढ़ किया। शेरशाह के इन सुधारों ने न केवल व्यापार और कृषि को बढ़ावा दिया, बल्कि बाद में मुगल सम्राट अकबर के शासन के लिए एक सुव्यवस्थित आधार भी प्रदान किया।

281. (C) एक विनिमय पत्र
मध्यकालीन भारत में 'हुंडी' व्यापार और वित्त के क्षेत्र में उपयोग किया जाने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन था। यह एक प्रकार का विनिमय पत्र या क्रेडिट नोट होता था जिसके माध्यम से व्यापारी एक स्थान पर धन जमा कर दूसरे स्थान पर उसे प्राप्त कर सकते थे। इसने लंबी दूरी के व्यापार को सुगम और सुरक्षित बनाया, क्योंकि इसके कारण भारी मात्रा में नकद राशि साथ ले जाने की आवश्यकता और उससे जुड़ी जोखिम समाप्त हो गई। हुंडी प्रणाली भारतीय व्यापारियों की विकसित आर्थिक सोच और बैंकिंग कौशल का उत्कृष्ट प्रमाण थी।

47. ब्रज भाषा और अवधी जैसी क्षेत्रीय भाषाओं के विकास को मध्यकाल के दौरान अत्यधिक प्रोत्साहन मिला, जिसका मुख्य कारण था:
(A) सामान्य जन तक पहुँचने के लिए स्थानीय भाषा में भक्ति और सूफी साहित्य की रचना।
(B) दिल्ली सुल्तानों का राजकीय संरक्षण जिन्होंने इन बोलियों को राज्य की भाषा घोषित किया था।
(C) प्राथमिक साहित्यिक भाषाओं के रूप में शास्त्रीय संस्कृत और फारसी का ह्रास।
(D) तटीय क्षेत्रों में यूरोपीय समुद्री व्यापारियों और धार्मिक मिशनरियों का प्रभाव।

48. भक्ति संतों और उनके प्रभाव के प्राथमिक क्षेत्र के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए।
(A) चैतन्य महाप्रभु - महाराष्ट्र
(B) मीराबाई - राजस्थान
(C) संत ज्ञानेश्वर - बंगाल
(D) कबीर - दक्षिण भारत

49. दिल्ली सल्तनत और मुगलों की कर प्रणाली में 'जकात' क्या था?
(A) संपन्न मुसलमानों के लिए अनिवार्य एक धार्मिक कर, जिसका उपयोग परोपकारी उद्देश्यों के लिए किया जाता था।
(B) गैर-मुस्लिम किसानों की कृषि उपज पर लगने वाला कर।
(C) आयातित वस्तुओं पर लगाया जाने वाला सीमा शुल्क।
(D) सिंचाई के उद्देश्य से भूमि पर लगाया जाने वाला कर।

50. मध्यकालीन भारत में संगीत के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ध्रुपद हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का एक प्रमुख रूप था जो इस अवधि के दौरान विकसित हुआ।
2. सितार और तबला के आविष्कार का श्रेय प्रायः अमीर खुसरो को दिया जाता है।
3. सम्राट अकबर के दरबार में संगीत कठोरता से वर्जित था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

51. प्रसिद्ध 'गोपुरम्' (मंदिर के प्रवेश द्वार पर अलंकृत विशाल मीनारें) किस साम्राज्य के अंतर्गत विकसित वास्तुकला की एक विशिष्ट विशेषता हैं?
(A) गुप्त साम्राज्य
(B) मुगल साम्राज्य
(C) विजयनगर साम्राज्य
(D) मौर्य साम्राज्य

52. शंकराचार्य का दर्शन, जिसका हिंदू विचारधारा पर गहरा प्रभाव पड़ा, किस नाम से जाना जाता है?
(A) द्वैत (Dualism)
(B) विशिष्टाद्वैत (Qualified Monism)
(C) शुद्धाद्वैत (Pure Non-dualism)
(D) अद्वैत (Non-dualism)

53. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: मध्यकालीन भारत में खान-पान की आदतें सभी सामाजिक स्तरों और क्षेत्रों में एक समान थीं।
कथन II: धनी वर्ग और निर्धन वर्ग के आहार में महत्वपूर्ण अंतर था, जहाँ अभिजात वर्ग विविध प्रकार के समृद्ध व्यंजनों का सेवन करते थे, वहीं सामान्य जन का आहार सरल और स्थानीय उपज पर आधारित था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

54. जहाँगीर की धार्मिक नीति को सर्वाधिक उपयुक्त रूप से किस प्रकार वर्णित किया जा सकता है?
(A) अकबर की सहिष्णुता की नीति से पूर्ण विच्छेद।
(B) व्यापक रूप से अकबर की उदार नीतियों की निरंतरता, यद्यपि कट्टरपंथ के कुछ व्यक्तिगत उदाहरणों के साथ।
(C) सभी गैर-मुसलमानों का सुव्यवस्थित उत्पीड़न।
(D) राज्य धर्म के रूप में इस्लाम का पूर्ण उन्मूलन।

55. निम्नलिखित सिख गुरुओं को उनके गुरु-काल के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. गुरु अर्जुन देव
2. गुरु हरगोविंद
3. गुरु रामदास
4. गुरु अंगद देव

सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) 4, 3, 1, 2
(B) 3, 4, 1, 2
(C) 4, 1, 3, 2
(D) 2, 4, 3, 1

56. मध्यकालीन हिंदू समाज में 'जौहर' की प्रथा, विशेष रूप से राजपूतों के बीच, किसे संदर्भित करती थी?
(A) शत्रुओं द्वारा बंदी बनाए जाने और अपमान से बचने के लिए महिलाओं द्वारा सामूहिक आत्मदाह।
(B) महिला का अपना पति चुनने का अधिकार।
(C) कुल देवता की पूजा करने की रस्म।
(D) निसंतान शासक द्वारा पुरुष उत्तराधिकारी को गोद लेना।

57. मध्यकाल के दौरान भारत के पश्चिमी तट पर निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रमुख व्यापारिक बंदरगाह नहीं था?
(A) सूरत

291. (C) सिंध पर अरब आक्रमण
राजा दाहिर सिंध के अंतिम हिंदू शासक थे, जिन्होंने 712 ईस्वी में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व वाले प्रारंभिक अरब आक्रमण का डटकर मुकाबला किया। रावर के भीषण युद्ध में उन्होंने अभूतपूर्व साहस और वीरता का परिचय दिया, किंतु अंततः वे युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त हुए। राजा दाहिर का बलिदान भारतीय इतिहास में विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध प्रारंभिक प्रतिरोध की एक गौरवशाली गाथा है। उनकी मृत्यु के पश्चात ही सिंध क्षेत्र पर अरबों का अधिकार स्थापित हो सका, जिसने भारत में भावी इस्लामी आक्रमणों का द्वार खोला।

292. (D) गजनी के महमूद का एक सेनापति
राजा सुहेलदेव का ऐतिहासिक प्रतिरोध महमूद गजनी के सेनापति सालार मसूद के विरुद्ध था। 11वीं शताब्दी के प्रारंभ में जब सालार मसूद ने उत्तर भारत के आंतरिक भागों को जीतने के लिए एक विशाल सेना के साथ बहराइच की ओर कूच किया, तब राजा सुहेलदेव ने विभिन्न स्थानीय प्रमुखों को संगठित कर उसका डटकर मुकाबला किया। 1033 ईस्वी में हुए इस युद्ध में सुहेलदेव ने सालार मसूद को निर्णायक रूप से पराजित कर मार गिराया। इस महान विजय ने अगले कई दशकों तक इस क्षेत्र को विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रखा।

293. (C) गुलाम वंश
खिलजी वंश की स्थापना 1290 ईस्वी में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने गुलाम वंश के अंतिम और अत्यंत कमजोर शासकों को अपदस्थ कर की थी। इसे इतिहास में 'खिलजी क्रांति' के रूप में देखा जाता है क्योंकि इसने प्रशासन में तुर्की कुलीन वर्ग के वर्चस्व को समाप्त किया और योग्यता के आधार पर गैर-तुर्की मुसलमानों और अन्य समुदायों के लिए सत्ता के द्वार खोले। खिलजी वंश के उदय ने दिल्ली सल्तनत को एक नई ऊर्जा और विस्तारवादी दिशा प्रदान की, जिससे इसके साम्राज्य का दक्षिण भारत तक प्रसार संभव हो सका।

294. (B) मुगल साम्राज्य
21 अप्रैल, 1526 को लड़ा गया पानीपत का प्रथम युद्ध भारतीय इतिहास की एक युगांतरकारी घटना थी। इस युद्ध में मध्य एशियाई आक्रांता बाबर ने दिल्ली सल्तनत के अंतिम सुल्तान इब्राहिम लोदी को पराजित किया। लोदी की पराजय और मृत्यु के साथ ही तीन शताब्दियों से चले आ रहे दिल्ली सल्तनत के युग का अंत हो गया और भारत में 'मुगल साम्राज्य' की नींव रखी गई। बाबर की विजय का मुख्य कारण उसका श्रेष्ठ तोपखाना और उन्नत सैन्य रणनीति थी, जिसने भारतीय युद्धकला के इतिहास को हमेशा के लिए बदल दिया।

295. (D) औरंगजेब
मुगल सम्राट औरंगजेब के शासनकाल को जाटों, सिखों और सतनामियों जैसे विभिन्न समुदायों के सशक्त और निरंतर प्रतिरोध के लिए जाना जाता है। उसकी कठोर धार्मिक नीतियों, उच्च भू-राजस्व की मांगों और मंदिरों के प्रति उसके दृष्टिकोण ने समाज के विभिन्न वर्गों में गहरा असंतोष पैदा किया। मथुरा के जाटों ने गोकुला के नेतृत्व में, सिखों ने गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह के नेतृत्व में, और सतनामियों ने अपने धार्मिक विश्वासों की रक्षा के लिए औरंगजेब की विशाल सेनाओं का सामना किया। इन विद्रोहों ने मुगल साम्राज्य की आंतरिक स्थिरता को गंभीर रूप से क्षीण कर दिया।

296. (A) तुंगभद्रा
विजयनगर साम्राज्य की वैभवशाली राजधानी हम्पी तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित थी। इस स्थान का चयन इसकी रणनीतिक सुरक्षा और धार्मिक महत्ता के कारण किया गया था। तुंगभद्रा नदी और आसपास की उबड़-खाबड़ चट्टानी पहाड़ियों ने शहर को एक अभेद्य प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान की। इस नदी के जल ने न केवल शहर की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा किया, बल्कि एक उन्नत सिंचाई प्रणाली के माध्यम से कृषि को भी समृद्ध किया। आज हम्पी के खंडहर इसी नदी के किनारे स्थित हैं, जो इस महान साम्राज्य के गौरवशाली अतीत की गवाही देते हैं।

297. (C) रायगढ़ में शिवाजी का राज्याभिषेक
शिवाजी महाराज द्वारा 'हिंदवी स्वराज्य' की औपचारिक और विधिवत स्थापना 1674 ईस्वी में रायगढ़ के किले में हुए उनके भव्य राज्याभिषेक के साथ हुई थी। इस समारोह के माध्यम से उन्होंने स्वयं को एक स्वतंत्र संप्रभु शासक के रूप में स्थापित किया और 'छत्रपति' की उपाधि धारण की। यह राज्याभिषेक न केवल एक व्यक्तिगत उपलब्धि थी, बल्कि यह मुगल और दक्कन सल्तनतों के विरुद्ध एक शक्तिशाली राजनीतिक घोषणा थी कि मराठा अब एक स्वतंत्र शक्ति हैं। इस घटना ने मराठा इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात किया और स्वदेशी शासन के संकल्प को सुदृढ़ किया।

298. (A) कुशल और केंद्रीकृत शासन।
शेरशाह सूरी का प्रशासन मध्यकालीन भारत में कुशल और अत्यधिक केंद्रीकृत शासन का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। उन्होंने अपने मात्र पाँच वर्षों के शासनकाल में शासन के हर क्षेत्र में बुनियादी सुधार किए। उन्होंने साम्राज्य को सरकारों और परगना में विभाजित कर स्थानीय उत्तरदायित्व तय किए, भूमि की सटीक माप करवाकर एक न्यायपूर्ण राजस्व प्रणाली लागू की और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर नियम बनाए। शेरशाह की यह प्रशासनिक क्षमता इतनी असाधारण थी कि उनके द्वारा स्थापित कई प्रणालियाँ आगे चलकर मुगल और यहाँ तक कि ब्रिटिश शासन का भी आधार बनीं।

299. (D) राजा के लिए सैनिकों की एक निश्चित संख्या बनाए रखने के लिए।
विजयनगर साम्राज्य की 'नयंकर प्रणाली' के तहत दिए जाने वाले 'अमरम' अनुदानों का प्राथमिक उद्देश्य राज्य की सैन्य शक्ति को अक्षुण्ण बनाए रखना था। इन अनुदानों को प्राप्त करने वाले सैन्य प्रमुखों (नायकों) को अपने आवंटित क्षेत्र के राजस्व का उपयोग करते हुए राजा की सेवा के लिए पैदल सैनिकों, अश्वरोहियों और हाथियों का एक निश्चित दस्ता हमेशा तैयार रखना पड़ता था। इसके अलावा, उन्हें युद्ध के समय स्वयं भी इन सैन्य टुकड़ियों का नेतृत्व करना होता था। इस व्यवस्था ने विजयनगर को एक विशाल और निरंतर युद्ध के लिए तैयार सेना बनाए रखने में सक्षम बनाया।

300. (B) पद, वेतन और सैन्य उत्तरदायित्व।
'मनसब' मुगल प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था का मूल आधार था, जो किसी भी अधिकारी की राजकीय सेवा में स्थिति को सटीक रूप से परिभाषित करता था। यह शब्द पदानुक्रम में अधिकारी की श्रेणी या पद को इंगित करता था। मनसब के आधार पर ही यह तय होता था कि उस अधिकारी को कितना वेतन दिया जाएगा और उसे राज्य की सुरक्षा के लिए कितने घुड़सवारों एवं अन्य सैन्य संसाधनों का रखरखाव करना अनिवार्य होगा। इस प्रणाली ने पूरी मुगल नौकरशाही को एक संगठित, अनुशासित और केंद्रीकृत ढांचे में बाँधने का कार्य किया, जो साम्राज्य के संचालन के लिए अनिवार्य था।

अध्याय 06

मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन

1. मध्यकालीन भारतीय समाज में संपत्ति के अधिकारों के संदर्भ में हिंदू महिलाओं की स्थिति का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
   (A) उनके पास समस्त पैतृक संपत्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त करने और उसे हस्तांतरित करने के पूर्ण तथा निरपेक्ष अधिकार थे।
   (B) उनके पास सीमित अधिकार थे, मुख्य रूप से 'स्त्रीधन' पर, जिसमें विवाह के समय प्राप्त उपहार सम्मिलित थे।
   (C) उन्हें विधि द्वारा किसी भी प्रकार की संपत्ति रखने या उत्तराधिकार में प्राप्त करने से पूर्णतः प्रतिबंधित किया गया था।
   (D) उनके वैधानिक संपत्ति अधिकार प्रत्येक सामाजिक स्तर पर पुरुषों के समान थे।

2. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
   कथन I: मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन पूर्णतः एक अखंड आंदोलन था जिसका एक ही एकीकृत दर्शन था।
   कथन II: कबीर और गुरु नानक जैसे प्रमुख भक्ति संतों ने ईश्वर की निर्गुण (निराकार) अवधारणा पर बल दिया, जबकि तुलसीदास और मीराबाई जैसे अन्य संतों ने सगुण (साकार) भक्ति पर ध्यान केंद्रित किया।
   (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
   (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
   (C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
   (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

3. मुगल वास्तुकला के संदर्भ में, 'पितरा दुरा' (pietra dura) शब्द किसे संदर्भित करता है?
   (A) भवनों के अग्रभाग के लिए लाल बलुआ पत्थर का उपयोग।
   (B) विशाल, गुंबददार दोहरे गुंबदों का निर्माण।
   (C) संगमरमर में बहुमूल्य और अर्ध-बहुमूल्य पत्थरों की जड़ाई।
   (D) जटिल जालीदार स्क्रीन (जालियों) का निर्माण।

4. निम्नलिखित में से कौन-सी भारत में मध्यकाल के दौरान विकसित हुई चित्रकला की एक प्रमुख शैली नहीं थी?
   (A) मुगल शैली
   (B) राजस्थानी शैली
   (C) पहाड़ी शैली
   (D) कंपनी शैली

5. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
   अभिकथन (A): अकबर के अधीन भू-राजस्व प्रणाली, जिसे ज़ब्ती या दहसाला प्रणाली के रूप में जाना जाता है, एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक नवाचार था।
   कारण (R): यह पिछले दस वर्षों के औसत उत्पादन और औसत कीमतों पर आधारित था, जिसका उद्देश्य अधिक निश्चित और स्थिर राजस्व मांग प्राप्त करना था।
   (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) A सही है लेकिन R गलत है।
   (D) A गलत है लेकिन R सही है।

6. विजयनगर साम्राज्य में सामाजिक जीवन के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
   (A) समाज जाति के आधार पर कठोर रूप से स्तरीकृत था।
   (B) महिलाएं पूर्णतः पृथक थीं और उन्होंने किसी भी सार्वजनिक या आर्थिक जीवन में भाग नहीं लिया।
   (C) सती प्रथा प्रचलित थी, विशेष रूप से राजपरिवार और उच्च वर्गों के बीच।
   (D) मंदिर महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में कार्य करते थे।

7. किस सिख गुरु की शिक्षाएं विशेष रूप से आदि ग्रंथ (गुरु ग्रंथ साहिब) में संकलित हैं?
   (A) केवल गुरु नानक और गुरु गोविंद सिंह की।
   (B) दसों ऐतिहासिक सिख गुरुओं में से प्रत्येक की।
   (C) पांचवें गुरु, जिन्हें गुरु अर्जुन देव के नाम से जाना जाता है।
   (D) पहले पांच सिख गुरु और नौवें गुरु की।

8. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द भूमि और उसके राजस्व के वंशानुगत अनुदान को संदर्भित करता है, जो मध्यकालीन भारत में भू-राजस्व प्रणाली की एक सामान्य विशेषता थी?
   (A) जागीर
   (B) इजारेदारी

(A) भारी औद्योगिक मशीनरी और उपकरण
(B) आधुनिक कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर उत्पाद
(C) परिष्कृत पेट्रोलियम और रासायनिक वस्तुएं
(D) वस्त्र, विभिन्न मसाले और नील

28. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: मध्यकाल के दौरान मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति ने तलाक और विधवाओं के पुनर्विवाह की अनुमति दी थी, जो तत्कालीन हिंदू समाज में प्रायः कठिन था।
कथन II: मुस्लिम महिलाएं वैधानिक रूप से अपने माता-पिता की संपत्ति के उत्तराधिकार में हिस्से की अधिकारी थीं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

29. प्रमुख मराठी भक्ति संत जिन्होंने भगवद गीता पर एक प्रसिद्ध टीका लिखी थी जिसे 'ज्ञानेश्वरी' के नाम से जाना जाता है, वे थे:
(A) तुकाराम
(B) एकनाथ
(C) संत ज्ञानेश्वर
(D) रामानंद

30. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): दिल्ली सल्तनत और मुगल काल के दौरान शहरीकरण में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई।
कारण (R): केंद्रीकृत प्रशासन की स्थापना, व्यापार और वाणिज्य की वृद्धि, तथा प्रशासनिक केंद्रों में अभिजात वर्ग एवं शिल्पकारों के संकेंद्रण ने कस्बों और शहरों के विकास को बढ़ावा दिया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

31. उस स्थापत्य शैली की पहचान कीजिए जो ढालू दीवारों, विशाल गोलाकार बुर्जों और 'बैटर' (batter) या अंदर की ओर झुकाव के उपयोग की विशेषता है, जो प्रायः तुगलक वंश से जुड़ी होती है।
(A) तुगलक शैली
(B) चारबाग शैली
(C) पितरा दुरा शैली
(D) द्रविड़ शैली

32. निम्नलिखित भक्ति संतों में से कौन रामानंद के शिष्य थे और अपने दोहों के लिए जाने जाते हैं जिन्होंने धार्मिक कट्टरपंथ और जातिगत भेदभाव को चुनौती दी थी?
(A) तुलसीदास
(B) कबीर
(C) मीराबाई
(D) चैतन्य महाप्रभु

33. मध्यकालीन भारत में आरोपित निम्नलिखित में से कौन-सा कर गैर-मुसलमानों पर एक धार्मिक कर था?
(A) जकात
(B) जजिया
(C) खराज
(D) खुम्स

34. निम्नलिखित मुगल सम्राटों को उनके शासनकाल के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. शाहजहाँ
2. हुमायूँ
3. जहाँगीर
4. अकबर
सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 3, 4, 1
(D) 4, 2, 1, 3

35. 'नयनकार प्रणाली' (Nayankara system) किस राज्य की एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक और सैन्य विशेषता थी?
(A) दिल्ली सल्तनत
(B) मुगल साम्राज्य
(C) विजयनगर साम्राज्य
(D) बहमनी साम्राज्य

36. मध्यकालीन भारतीय वस्त्रों के संदर्भ में, 'जामा' और 'पाजामा' थे:
(A) महिलाओं द्वारा धारण किए जाने वाले आभूषण।
(B) पुरुषों के लिए शिरोवस्त्र (पगड़ी) के प्रकार।
(C) सैनिकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पादत्राण (जूते)।
(D) पुरुषों के पहनावे का हिस्सा बनने वाले सामान्य वस्त्र।

37. विजयनगर साम्राज्य के साहित्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. शासक संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़ और तमिल साहित्य के महान संरक्षक थे।
2. एक प्रमुख शासक कृष्णदेवराय ने स्वयं तेलुगु कृति 'अमुक्तमाल्यद' की रचना की थी।
3. इस अवधि के दौरान रचित समस्त साहित्यिक कृतियाँ विशेष रूप से धार्मिक प्रकृति की थीं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

18. मुगल वास्तुकला में 'चारबाग' शैली का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) एक स्वर्ग रुपी उद्यान का प्रतिनिधित्व करना, जिसमें क्षेत्र को जल नहरों द्वारा चार मुख्य भागों में विभाजित किया गया हो।
(B) मुख्य भवन के लिए एक सुदृढ़ रक्षात्मक संरचना प्रदान करना।
(C) शाही दरबार और घोषणाओं के लिए एक सार्वजनिक स्थान निर्मित करना।
(D) महल परिसर के भीतर एक हाट (बाजार) के रूप में कार्य करना।

19. निम्नलिखित भक्ति संतों को उनके प्राकट्य के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. रामानुजाचार्य
2. शंकराचार्य
3. कबीर
4. चैतन्य महाप्रभु

सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 4, 3, 2, 1

20. विजयनगर साम्राज्य में आर्थिक जीवन के बारे में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से अत्यंत सीमित कृषि के साथ पशुपालन पर आधारित थी।
(B) राज्य का राजस्व व्यापक रूप से खानाबदोश जनजातियों से प्राप्त करों पर निर्भर था।
(C) आर्थिक आत्मनिर्भरता बनाए रखने के लिए विदेशी व्यापार प्रतिबंधित था।
(D) कृषि मुख्य आधार थी, और राज्य ने तालाबों और बांधों जैसी बड़े स्तर की सिंचाई परियोजनाओं में निवेश किया।

21. किस मुगल सम्राट की धार्मिक नीति में इस्लामी कट्टरपंथ की ओर स्पष्ट झुकाव देखा गया, जिसमें जजिया को पुनः लागू करना और कुछ मंदिरों को नष्ट करना सम्मिलित था?
(A) जहाँगीर
(B) शाहजहाँ
(C) औरंगजेब
(D) अकबर

22. एक भक्ति संप्रदाय के रूप में 'शैववाद' मुख्य रूप से किसके इर्द-गिर्द केंद्रित है?
(A) देवी शक्ति की उनके विभिन्न रूपों में उपासना।
(B) भगवान शिव की भक्ति और उपासना।
(C) एक निराकार ईश्वर में एकेश्वरवादी विश्वास।
(D) भगवान विष्णु और उनके अवतारों की उपासना।

23. सूची I में दिए गए शब्द को सूची II में दिए गए अर्थ से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (शब्द)
P. टंका (Tanka)
Q. बंजारे (Banjaras)
R. हुंडी (Hundi)
S. दस्तूर (Dastur)

सूची II: (मध्यकालीन अर्थव्यवस्था में अर्थ)
1. विनिमय पत्र या साख पत्र
2. दिल्ली सुल्तानों द्वारा मानकीकृत चांदी का सिक्का
3. थोक परिवहन में विशेषज्ञ खानाबदोश व्यापारिक समुदाय
4. राजस्व दरों की अनुसूची

(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

24. मध्यकालीन भारत में 'पर्दा' प्रथा (महिलाओं का घूँघट और पृथक्करण) थी:
(A) हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों द्वारा प्रचलित, विशेष रूप से उच्च वर्गों के बीच।
(B) विशेष रूप से हिंदू महिलाओं द्वारा प्रचलित।
(C) विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं द्वारा प्रचलित।
(D) एक ऐसी प्रथा जो मध्यकालीन भारत में अस्तित्व में नहीं थी।

25. मुगल-सिख संबंधों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. गुरु अर्जुन देव की शहादत जहाँगीर के शासनकाल के दौरान हुई थी।
2. मुगल साम्राज्य के प्रारंभ से ही संबंध निरंतर शत्रुतापूर्ण रहे थे।
3. गुरु तेग बहादुर को औरंगजेब के आदेश पर मृत्युदंड दिया गया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

26. 'विशिष्टाद्वैत' या योग्य अद्वैतवाद का दर्शन, जो वैष्णव भक्ति परंपरा में प्रभावशाली था, किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया था?
(A) रामानुजाचार्य
(B) शंकराचार्य
(C) संत ज्ञानेश्वर
(D) मध्वाचार्य

27. मध्यकाल के दौरान भारत से निर्यात की जाने वाली एक प्रमुख वस्तु निम्नलिखित में से कौन-सी थी?

(C) खालसा
(D) इनाम

9. सूची I में दिए गए भक्ति संत को सूची II में दिए गए संबंधित दर्शन/संप्रदाय से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (भक्ति संत)
P. शंकराचार्य
Q. रामानुजाचार्य
R. वल्लभाचार्य
S. कबीर
सूची II: (संबंधित दर्शन/संप्रदाय)
1. पुष्टिमार्ग
2. निर्गुण भक्ति
3. अद्वैत वेदांत
4. विशिष्टाद्वैत
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

10. निम्नलिखित में से कौन-सा मध्यकालीन भारतीय समाज में मनोरंजन का एक प्रमुख रूप था, जिसका आनंद प्रायः राजपरिवार और सामान्य जन द्वारा समान रूप से लिया जाता था?
(A) चौपड़ (एक पारंपरिक बोर्ड गेम)
(B) आधुनिक सिनेमा और चलचित्र प्रदर्शन
(C) इलेक्ट्रॉनिक गेम और वीडियो प्रणाली
(D) यूरोपीय शैली का ओपेरा

11. भारत में सूफीवाद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सूफीवाद को मुख्य रूप से 'बा-शरा' (वे जो इस्लामी कानून का पालन करते थे) और 'बे-शरा' (वे जो पालन नहीं करते थे) में विभाजित किया गया था।
2. चिश्ती सिलसिला, जो सबसे प्रमुख सिलसिलों में से एक था, ने राज्य की राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया और धन संचय किया।
3. 'वहदत-उल-वुजूद' (अस्तित्व की एकता) की अवधारणा कई सूफियों के लिए एक केंद्रीय दार्शनिक विचार था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

12. किस मुगल सम्राट की धार्मिक नीति को 'सुलह-ए-कुल' या सार्वभौमिक शांति और सद्भाव के सिद्धांत द्वारा सर्वाधिक उपयुक्त रूप से वर्णित किया गया है?
(A) बाबर
(B) अकबर
(C) शाहजहाँ
(D) औरंगजेब

13. निम्नलिखित में से कौन मध्यकालीन भारत की शिक्षा प्रणाली में 'मकतब' और 'मदरसा' को सबसे उपयुक्त रूप से परिभाषित करता है?
(A) मकतब व्यावसायिक प्रशिक्षण के केंद्र थे, जबकि मदरसे धार्मिक अध्ययन पर केंद्रित थे।
(B) मकतब विशेष रूप से कुलीन वर्ग के बालकों के लिए थे, जबकि मदरसे सामान्य जन के लिए थे।
(C) मकतब प्राथमिक शिक्षा के केंद्र थे, जबकि मदरसे उच्च शिक्षा के संस्थान थे।
(D) मकतब और मदरसे एक ही संस्थाएं थीं जिनके विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नाम थे।

14. मध्यकालीन भारतीय कृषि के संदर्भ में 'खुद-काश्त' (Khud-kashta) शब्द किसे संदर्भित करता है?
(A) भूमिहीन खेतिहर मजदूर।
(B) किसान जो अन्य गाँवों में अस्थाई या संविदात्मक आधार पर खेती करते थे।
(C) राजस्व संग्रह के लिए उत्तरदायी गाँव का मुखिया।
(D) किसान जो उसी गाँव में अपनी भूमि पर खेती करते थे जहाँ वे निवास करते थे।

15. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): जहाँगीर के शासनकाल को मुगल चित्रकला का चरमोत्कर्ष माना जाता है।
कारण (R): जहाँगीर कला का गहरा पारखी था और उसके पास चित्रकारों की अपनी व्यक्तिगत कार्यशाला थी, जो व्यक्ति-चित्रण (पोट्रेट) और प्रकृति के अध्ययन में विशेषज्ञता को प्रोत्साहित करती थी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

16. मध्यकालीन साहित्यिक कृति और उसके लेखक का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(A) तुलसीदास - रामचरितमानस
(B) कबीर - पद्मावत
(C) अबुल फज़ल - अकबरनामा
(D) कृष्णदेवराय - अमुक्तमाल्यद

17. 1699 में 'खालसा' की स्थापना सिख इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसके लिए उत्तरदायी गुरु कौन थे?
(A) गुरु नानक
(B) गुरु गोविंद सिंह
(C) गुरु अर्जुन देव
(D) गुरु तेग बहादुर

38. शाक्त धर्म, मध्यकालीन भारत का एक प्रमुख संप्रदाय, किसकी उपासना पर केंद्रित था?
(A) सर्वोच्च सत्ता के रूप में भगवान शिव।
(B) स्त्री तत्व, देवी या शक्ति, परम सत्य के रूप में।
(C) समस्त जीवन के स्रोत के रूप में सूर्य देव।
(D) सुरक्षा और समृद्धि के लिए पैतृक आत्माएं।

39. रहट (पर्सियन व्हील) का प्रचलन मध्यकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था के किस क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण विकास था?
(A) वस्त्र बुनाई
(B) समुद्री परिवहन
(C) सिक्कों की ढलाई
(D) कृषि में सिंचाई

40. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: बाबर और हुमायूँ की धार्मिक नीति अत्यधिक असहिष्णुता और गैर-मुसलमानों के उत्पीड़न द्वारा चिह्नित थी।
कथन II: बाबर और हुमायूँ दोनों अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करने में व्यस्त थे और सामान्यतः बहुसंख्यक हिंदू जनसंख्या के प्रति सहिष्णुता की व्यावहारिक नीति का पालन करते थे।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

41. गुरु नानक के जीवन और शिक्षाओं के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) उन्होंने एक निराकार ईश्वर (इक ओंकार) में एकेश्वरवादी विश्वास की वकालत की।
(B) उन्होंने जातिगत भेदभाव, कर्मकांड और मूर्तिपूजा की कड़ी निंदा की।
(C) उन्होंने संसार का त्याग करने और तपस्वी के रूप में रहने के विचार को प्रोत्साहित किया।
(D) उनकी शिक्षाओं ने ईमानदार जीवन जीने और दूसरों के साथ साझा करने (कीरत करो, नाम जपो, वंड छको) के महत्व पर बल दिया।

42. सूची I में दिए गए मुगल सम्राट को सूची II में दिए गए संबंधित स्थापत्य स्मारक से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मुगल सम्राट)
P. अकबर
Q. शाहजहाँ
R. जहाँगीर
S. हुमायूँ
सूची II: (संबंधित स्थापत्य स्मारक)
1. एतमाद-उद-दौला का मकबरा
2. हुमायूँ का मकबरा
3. फतेहपुर सीकरी
4. ताजमहल
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

43. 'सूफीवाद', इस्लाम का रहस्यवादी आयाम, किस प्राथमिक उद्देश्य के साथ उद्भूत और विकसित हुआ?
(A) राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना और एक नया खिलाफत स्थापित करना।
(B) शरिया को प्रतिस्थापित करने के लिए एक नया विधिक कोड तैयार करना।
(C) सैन्य जिहाद को उद्धार के एकमात्र मार्ग के रूप में बढ़ावा देना।
(D) प्रेम और भक्ति के माध्यम से ईश्वर का प्रत्यक्ष, व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त करना।

44. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़िए और उसके पश्चात आने वाले प्रश्न का उत्तर दीजिए:
एक मुगल प्रांत में एक किसान ऐसी भूमि पर खेती करता है जो गाँव के समुदाय की है, लेकिन वह दूसरे गाँव में निवास करता है। वह जिस भूमि पर खेती करता है, उसके लिए वह राज्य को राजस्व का भुगतान करता है। उस काल के कृषि वर्गीकरण के आधार पर, इस किसान की पहचान किस रूप में की जाएगी?
(A) एक खुद-काश्त
(B) एक पाही-काश्त
(C) एक ज़मींदार
(D) एक मुज़ारियान

45. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): औरंगजेब के शासनकाल के दौरान गुरु तेग बहादुर की शहादत मुगल-सिख संबंधों में एक निर्णायक मोड़ थी।
कारण (R): इसके कारण उनके पुत्र और उत्तराधिकारी गुरु गोविंद सिंह के नेतृत्व में सिखों का सैन्यीकरण हुआ और मुगल दमन का प्रतिरोध करने के लिए खालसा का निर्माण हुआ।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

46. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान की एक प्रमुख महिला भक्ति संत थीं, जो भगवान कृष्ण को समर्पित अपने भक्ति गीतों के लिए प्रसिद्ध थीं?
(A) संत ज्ञानेश्वर
(B) तुलसीदास
(C) एकनाथ
(D) मीराबाई

282. (A) धार्मिक सहिष्णुता और सद्भाव स्थापित करना।
'सुलह-ए-कुल' अकबर की एक दार्शनिक और प्रशासनिक नीति थी, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक सद्भाव स्थापित करना था। इस नीति के माध्यम से अकबर ने यह संदेश दिया कि राज्य का कोई भी भेदभावपूर्ण धर्म नहीं होगा और सभी नागरिकों को अपने विश्वास का पालन करने की स्वतंत्रता होगी। यह प्रयास साम्राज्य के विभिन्न धार्मिक समूहों, विशेष रूप से राजपूतों और मुसलमानों को एक साझा राजनीतिक मंच पर लाने के लिए किया गया था, जिससे मुगल साम्राज्य को स्थिरता और दीर्घायु प्राप्त हुई।

283. (D) फिरोज शाह तुगलक
फिरोज शाह तुगलक को दासों के प्रति उसके विशेष अनुराग के लिए जाना जाता है, जिसके कारण उसने 'दीवान-ए-बंदगान' नामक एक अलग और विशाल विभाग की स्थापना की थी। उसके शासनकाल में दासों की संख्या लगभग 1,80,000 तक पहुँच गई थी। इन दासों को विभिन्न शिल्पों में प्रशिक्षित किया जाता था और उन्हें राजकीय कारखानों एवं प्रशासन में नियुक्त किया जाता था। यद्यपि सुल्तान का उद्देश्य एक वफादार सैन्य और प्रशासनिक वर्ग तैयार करना था, किंतु अंततः यह विशाल दासों की संख्या सल्तनत के पतन और आर्थिक बोझ का एक कारण भी बनी।

284. (B) मुगल साम्राज्य
1739 ईस्वी में नादिर शाह का दिल्ली पर आक्रमण मुगल साम्राज्य के इतिहास की सबसे विनाशकारी घटनाओं में से एक था। इस हमले ने न केवल दिल्ली को जन-धन की भारी हानि पहुँचाई, बल्कि मुगल सत्ता की रही-सही प्रतिष्ठा को भी मिट्टी में मिला दिया। नादिर शाह द्वारा की गई अपार लूट और कत्लेआम ने केंद्रीय नियंत्रण को इतना कमजोर कर दिया कि इसके बाद मुगल सम्राट केवल नाममात्र के शासक रह गए। इस घटना ने क्षेत्रीय शक्तियों और यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के उत्थान के लिए राजनीतिक मार्ग प्रशस्त कर दिया।

285. (C) दक्कन में
शाहजहाँ का शासनकाल मुगल वास्तुकला और वैभव का चरम माना जाता है, किंतु यह काल दक्कन के क्षेत्रों में निरंतर सैन्य संघर्षों का भी साक्षी रहा। शाहजहाँ ने अपने साम्राज्य की सीमाओं को दक्षिण की ओर विस्तारित करने के लिए निरंतर प्रयास किए, जिसके परिणामस्वरूप अहमदनगर का विलय हुआ और बीजापुर एवं गोलकुंडा की सल्तनतों को मुगलों की अधीनता स्वीकार करने पर विवश होना पड़ा। इन दक्कन अभियानों ने भारी संसाधनों की मांग की और भविष्य के उन जटिल संघर्षों की नींव रखी जो औरंगजेब के समय में और अधिक विकराल हो गए।

286. (D) रायचूर दोआब
विजयनगर और बहमनी साम्राज्यों के बीच सदियों तक चले संघर्ष की मुख्य जड़ रायचूर दोआब क्षेत्र था। यह क्षेत्र कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच स्थित एक अत्यंत उपजाऊ और आर्थिक रूप से समृद्ध भूभाग था। इस पर नियंत्रण प्राप्त करना दोनों साम्राज्यों के लिए उनकी आर्थिक मजबूती और सैन्य शक्ति के विस्तार के लिए अपरिहार्य था। रायचूर दोआब के लिए होने वाले इन निरंतर युद्धों ने दोनों शक्तियों के संसाधनों को काफी हद तक क्षीण कर दिया और दक्षिण भारत के राजनीतिक इतिहास को गहराई से प्रभावित किया।

287. (A) बाजीराव प्रथम
पेशवा बाजीराव प्रथम को मराठा साम्राज्य का सबसे आक्रामक और विस्तारवादी पेशवा माना जाता है। उन्होंने 'हिंदू पद पादशाही' के आदर्श को अपनाते हुए मराठा ध्वज को उत्तर भारत के हृदयस्थल तक पहुँचाया। अपने मात्र 20 वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने अद्वितीय सैन्य कुशलता का प्रदर्शन करते हुए निज़ाम, पुर्तगालियों और मुगलों को कई बार पराजित किया। उनकी आक्रामक नीतियों के कारण ही मराठा शक्ति मुगलों के वास्तविक राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में उभरी और एक विशाल परिसंघ के रूप में पूरे उपमहाद्वीप पर छा गई।

288. (B) वित्त और राजस्व विभाग (दीवान-ए-विजारत)
दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक ढांचे में 'वज़ीर' का पद केंद्र में था और वह 'दीवान-ए-विजारत' का प्रमुख होता था। यह विभाग साम्राज्य के वित्तीय मामलों, राजस्व संग्रह और व्यय के प्रबंधन के लिए उत्तरदायी था। वज़ीर सभी विभागों के वित्तीय खातों का निरीक्षण करता था और सुल्तान को आर्थिक नीतियों पर सलाह देता था। सल्तनत की आर्थिक स्थिरता और प्रशासनिक दक्षता काफी हद तक वज़ीर और उसके विभाग की कार्यकुशलता पर निर्भर करती थी, जिससे उसे सुल्तान के बाद सबसे शक्तिशाली अधिकारी माना जाता था।

289. (B) महाराष्ट्र के वंशानुगत प्रधान सरदेशमुख होने के नाते।
'सरदेशमुखी' मराठा राजस्व व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण और कानूनी दावा था। शिवाजी महाराज ने तर्क दिया था कि वे महाराष्ट्र के पुराने राजस्व अधिकारियों के वंशानुगत प्रधान यानी 'सरदेशमुख' हैं। इसी पारंपरिक अधिकार के आधार पर वे पड़ोसी क्षेत्रों से कुल राजस्व का अतिरिक्त 10% वसूलते थे। यह कर 'चौथ' से अलग था और इसे चुकाना मराठा संप्रभुता और शिवाजी के सर्वोच्च प्रशासनिक दर्जे को स्वीकार करने का प्रतीक माना जाता था। इस कर ने मराठा साम्राज्य को एक ठोस आर्थिक और कानूनी आधार प्रदान किया।

290. (A) दक्षिण भारत में एक अधीनस्थ सामंती सरदार।
'पॉलीगार' या 'पालयक्कारर' मध्यकालीन दक्षिण भारत, विशेष रूप से विजयनगर और उसके उत्तरवर्ती राज्यों के दौरान एक प्रभावशाली सामंती वर्ग था। ये स्थानीय स्तर पर शक्तिशाली सरदार होते थे जिन्हें प्रशासनिक और सैन्य उत्तरदायित्व सौंपे गए थे। उन्हें 'पालयम' नामक क्षेत्र आवंटित किए जाते थे जहाँ वे राजस्व संग्रह करते थे और कानून-व्यवस्था बनाए रखते थे। 18वीं शताब्दी के दौरान, इन पॉलीगारों ने अपनी क्षेत्रीय स्वायत्तता की रक्षा के लिए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विस्तारवादी प्रयासों के विरुद्ध कड़ा और लंबे समय तक सशस्त्र प्रतिरोध किया था।

(B) कालीकट
(C) ताम्रलिप्ति
(D) खंभात (कैम्बे)

58. भारत में चिश्ती सूफी सिलसिले की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) मोइनुद्दीन चिश्ती
(B) निजामुद्दीन औलिया
(C) बाबा फरीद
(D) कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी

59. सूची I में दिए गए कर/शब्द को सूची II में दिए गए विवरण से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (कर/शब्द)
P. खराज
Q. खुम्स
R. खालसा
S. बटाई
सूची II: (विवरण)
1. युद्ध की लूट का राज्य का हिस्सा
2. कृषि भूमि पर भू-राजस्व कर
3. फसल-साझाकरण की एक प्रणाली
4. वे भूमि जिनका राजस्व सीधे शाही कोष के लिए एकत्र किया जाता था
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

60. दिल्ली सुल्तानों और मुगलों के अंतर्गत 'कारखानों' या शाही कार्यशालाओं के विकास का मुख्य उद्देश्य था:
(A) ग्रामीण जनसंख्या को रोजगार प्रदान करना।
(B) दरबार और सेना की आवश्यकताओं के लिए विलासिता की वस्तुओं एवं सामग्रियों का निर्माण और आपूर्ति करना।
(C) प्राथमिक शिक्षा के केंद्रों के रूप में कार्य करना।
(D) राजनीतिक अपराधियों के लिए कारागार के रूप में कार्य करना।

61. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): चर्मकार समुदाय के एक भक्ति संत, संत रविदास ने जाति आधारित सामाजिक पदानुक्रम को चुनौती दी।
कारण (R): सामान्यतः भक्ति आंदोलन ने निम्न जातियों की आवाजों को उनके आध्यात्मिक अनुभवों को व्यक्त करने और सामाजिक असमानताओं की आलोचना करने के लिए एक मंच प्रदान किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

62. किसी क्षेत्र और उससे जुड़ी चित्रकला की प्रमुख शैली के अशुद्ध युग्म की पहचान कीजिए।
(A) राजस्थान - राजस्थानी शैली
(B) मुगल दरबार - मुगल शैली
(C) हिमालय की तलहटी - पहाड़ी शैली
(D) दक्कन सल्तनत - चारबाग शैली

63. महाराष्ट्र के भक्ति संत तुकाराम के भक्ति गीत मुख्य रूप से किस देवता को संबोधित थे?
(A) भगवान विठोबा (विष्णु/कृष्ण का एक रूप)
(B) भगवान शिव
(C) देवी दुर्गा
(D) भगवान गणेश

64. मुगलों के अंतर्गत आर्थिक स्थितियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सिक्कों की ढलाई अत्यधिक विकेंद्रीकृत थी और इसमें किसी भी प्रकार के मानकीकरण का अभाव था।
2. हस्तशिल्प, विशेष रूप से बंगाल, गुजरात और कोरोमंडल के वस्त्र, अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख हिस्सा थे।
3. आंतरिक व्यापार के लिए परिवहन के साधन व्यापक रूप से बैलगाड़ियों और नदी की नौकाओं पर निर्भर थे।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

65. फतेहपुर सीकरी के 'इबादत खाना' (प्रार्थना गृह) में अकबर द्वारा विभिन्न धर्मों के गुरुओं के साथ की गई धार्मिक चर्चाओं ने उसे किस विचार को प्रतिपादित करने के लिए प्रेरित किया?
(A) जजिया
(B) दीन-ए-इलाही
(C) वहदत-उल-वुजूद
(D) शरिया

66. मराठी साहित्य और भक्ति आंदोलन में संत एकनाथ का सबसे महत्वपूर्ण योगदान क्या था?
(A) उन्होंने ज्ञानेश्वरी का एक आलोचनात्मक संस्करण लिखा, जिससे यह जनसुलभ हो गई।
(B) उन्होंने एक नए सैन्य संगठन की स्थापना की।
(C) उन्होंने दक्कन सल्तनत के विरुद्ध एक राजनीतिक विद्रोह का नेतृत्व किया।
(D) उन्होंने कुरान का मराठी में अनुवाद किया।

67. मध्यकालीन हिंदू समाज के संदर्भ में 'स्त्रीधन' शब्द का अर्थ है:
(A) वधू के परिवार द्वारा वर को दिया जाने वाला दहेज।
(B) महिला व्यापारियों पर लगाया जाने वाला कर।

144. मध्यकाल के दौरान क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य की एक विस्तृत प्रणाली के विकास के लिए मुख्य प्रेरणा क्या थी?
(A) भक्ति और सूफी संतों द्वारा अपने संदेश को सामान्य जन तक पहुँचाने का प्रयास।
(B) शासकों की फारसी को दरबारी भाषा के रूप में प्रतिस्थापित करने की इच्छा।
(C) खलीफा की ओर से स्थानीय बोलियों को प्रोत्साहित करने का निर्देश।
(D) यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों का संरक्षण।

145. विजयनगर साम्राज्य के सामाजिक जीवन में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी सम्मिलित थे?
(A) सामाजिक जीवन के केंद्रों के रूप में मंदिरों की अनुपस्थिति।
(B) एक सुस्पष्ट जाति पदानुक्रम।
(C) धनी वर्ग और राजपरिवार के बीच बहुपत्नी विवाह का प्रचलन।
(D) विशेष रुप से उच्च वर्गों में सती प्रथा का प्रचलन।

146. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: मुगल सम्राटों, विशेष रुप से अकबर ने संगीत के विकास में गहरी अभिरुचि ली और तानसेन जैसे संगीतकारों को संरक्षण प्रदान किया।
कथन II: औरंगजेब ने अपने कट्टर धार्मिक विश्वासों के कारण अपने दरबार से वाद्य और गायन संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

147. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़िए और उसके पश्चात आने वाले प्रश्न का उत्तर दीजिए:
मध्यकालीन भारत में व्यापारियों का एक समूह गुजरात से आगरा तक सूती वस्त्रों की एक बड़ी खेप पहुँचाना चाहता है। उनके परिवहन का सर्वाधिक संभावित साधन क्या होगा?
(A) नदी जलयानों का बेड़ा।
(B) एक नवनिर्मित रेलवे लाइन।
(C) भारवाही पशुओं और बैलगाड़ियों का एक बड़ा काफिला।
(D) परस्पर जुड़ी उड़ानों की एक श्रृंखला।

148. दक्कन में एक सुदृढ़ शैव संप्रदाय 'वीरशैव' या लिंगायत आंदोलन की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) बसवन्ना
(B) शंकराचार्य
(C) रामानुजाचार्य
(D) संत ज्ञानेश्वर

149. अकबर की भू-राजस्व प्रणाली 'आईन-ए-दहसाला' मुख्य रुप से उनके किस मंत्री की उपज थी?
(A) अबुल फज़ल
(B) राजा टोडरमल
(C) फैज़ी
(D) बीरबल

150. निम्नलिखित में से कौन शाहजहाँ की धार्मिक नीति की सही पहचान करता है?
(A) वह एक कट्टर उदारवादी था जिसने ईसाई धर्म को प्रोत्साहित किया।
(B) वह अकबर और जहाँगीर की तुलना में अधिक रूढ़िवादी था, परंतु औरंगजेब से कम।
(C) वह एक नास्तिक था जिसने समस्त धार्मिक संस्थानों को भंग कर दिया।
(D) वह बिना किसी विचलन के अकबर की सुलह-ए-कुल नीति का सटीक अनुयायी था।

151. मध्यकालीन भारत में 'मदरसों' की स्थापना के लिए प्राथमिक प्रेरणा निम्नलिखित में से कौन-सी थी?
(A) समस्त बालकों को सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना।
(B) बुनाई और धातु कर्म जैसे व्यावसायिक शिल्प सिखाना।
(C) इस्लामी धर्मशास्त्र और विधि (फिक्ह) में विद्वानों को राजकीय अधिकारियों के रूप में सेवा करने के लिए प्रशिक्षित करना।
(D) पश्चिमी विज्ञान और दर्शन के अध्ययन को बढ़ावा देना।

152. सिख गुरुओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. गुरु नानक सिख धर्म के संस्थापक थे।
2. गुरु गोविंद सिंह दसवें और अंतिम मानवरुपी गुरु थे।
3. गुरु अर्जुन देव अकबर के शासनकाल में शहीद हुए थे।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

153. चित्रकला की 'पहाड़ी' शैली, जो हिमालय की तलहटी में पल्लवित हुई, मुख्य रुप से अपने विषयों को कहाँ से ग्रहण करती थी?
(A) मुगल दरबारी दृश्य और व्यक्ति-चित्रण (पोर्ट्रेट)।
(B) हिंदू पौराणिक कथाएं, विशेष रुप से राधा और कृष्ण की किंवदंतियां।
(C) बौद्ध धर्म की जातक कथाएं।
(D) ईसाई बाइबिल की कहानियाँ।

154. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): मध्यकाल के दौरान हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों में उच्च वर्ग की महिलाओं के बीच 'पर्दा' प्रथा अधिक

S. अकबरनामा

सूची II: (भाषा)

1. फारसी
2. गुरमुखी/पंजाबी
3. अवधी (हिंदी)
4. तेलुगु

(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

78. मध्यकालीन भारत के दौरान मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

(A) उच्च वर्ग की महिलाओं के बीच 'पर्दा' प्रणाली को अधिक कठोरता से लागू किया गया था।
(B) विवाह के समय महिलाओं को 'मेहर' (स्त्रीधन) का अधिकार था।
(C) विधवाओं के पुनर्विवाह की अनुमति थी और यह प्रचलित था।
(D) तलाक और उत्तराधिकार के समस्त मामलों में महिलाओं के पास पुरुषों के समान और पूर्ण अधिकार थे।

79. भक्ति संत चैतन्य महाप्रभु से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वे बंगाल में वैष्णववाद, विशेष रूप से कृष्ण भक्ति के प्रमुख प्रस्तावक थे।
2. उन्होंने भावनात्मक भक्ति के स्थान पर अद्वैत वेदांत दर्शन और बौद्धिक विमर्श की वकालत की।
3. उन्होंने भक्ति में 'संकीर्तन' या सामूहिक गायन और नृत्य की प्रथा को लोकप्रिय बनाया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

80. मुगल भू-राजस्व प्रशासन के संदर्भ में 'नसक' (Nasaq) प्रणाली क्या थी?

(A) उपज और कीमतों के दस वर्ष के औसत पर आधारित एक प्रणाली।
(B) राजस्व मांग का एक स्थूल अनुमान या मूल्यांकन, जिसे समूह मूल्यांकन के रूप में भी जाना जाता है।
(C) राज्य और किसान के बीच निश्चित अनुपात में फसलों का विभाजन।
(D) उच्चतम बोली लगाने वाले को राजस्व संग्रह अधिकार खेती (इजारा) पर देना।

81. मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक संश्लेषण के संदर्भ में, एक इतिहासकार गुरु ग्रंथ साहिब के भीतर की रचनाओं को विशेष रूप से महत्वपूर्ण पाएगा क्योंकि वे:

(A) हिंदू और मुस्लिम दोनों संतों की शिक्षाओं को सम्मिलित करते हैं, जो एक समावेशी आध्यात्मिक परंपरा को दर्शाते हैं।
(B) ऐतिहासिक सिख गुरुओं द्वारा प्राप्त पूर्ण राजनीतिक और सैन्य सर्वोच्चता को प्रदर्शित करते हैं।
(C) विशेष रूप से शास्त्रीय संस्कृत में लिखे गए हैं, जो प्राचीन पारंपरिक भाषाओं के पुनरुद्धार को प्रदर्शित करते हैं।
(D) पूर्णतः खालसा के सदस्यों के लिए कठोर सैन्य नियमावली और व्यवहारिक आचरण प्रदान करने पर केंद्रित हैं।

82. सूफीवाद के संदर्भ में 'सिलसिला' शब्द किसे संदर्भित करता है?

(A) एक आध्यात्मिक वंशावली या क्रम, जो एक सूफी संत को उसके पूर्ववर्तियों से जोड़ता है।
(B) सूफी कविता और दार्शनिक प्रवचनों की एक पुस्तक।
(C) संगीतमय पाठ (समा) का अभ्यास।
(D) एक सूफी दरगाह पर संचालित परोपकारी रसोई (लंगर)।

83. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

कथन I: विजयनगर साम्राज्य की सामाजिक संरचना अत्यधिक समतावादी थी, जिसमें कोई जातिगत भेदभाव नहीं था।

कथन II: निकोलो कोंटी और अब्दुल रज्जाक जैसे विदेशी यात्रियों ने विजयनगर समाज में एक कठोर जाति व्यवस्था के अस्तित्व और सती प्रथा के प्रचलन का उल्लेख किया है।

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

84. शाहजहाँ की धार्मिक नीति को प्रायः अकबर के उदारवाद और औरंगजेब के कट्टरपंथ के बीच के संक्रमण काल के रूप में देखा जाता है। कौन-सा कार्य इस परिवर्तन को दर्शाता है?

(A) हिंदुओं पर से तीर्थयात्रा कर की समाप्ति।
(B) एक नए संश्लेषित धर्म, दीन-ए-इलाही का निर्माण।
(C) इबादत खाना में नियमित अंतर-धार्मिक चर्चाओं का आयोजन।
(D) नवनिर्मित हिंदू मंदिरों को नष्ट करने का आदेश।

85. महाराष्ट्र में प्रमुख 'वारकरी' संप्रदाय का सर्वाधिक उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?

(A) एक उग्र शैव संप्रदाय जो अपनी कठोर तपस्या के लिए जाना जाता है।
(B) अद्वैत वेदांत पर केंद्रित एक दार्शनिक शैली।
(C) विठोबा की उपासना करने के लिए पंढरपुर की वार्षिक तीर्थयात्रा पर केंद्रित एक वैष्णव भक्ति परंपरा।
(D) एक सूफी सिलसिला जो महाराष्ट्र की स्थानीय संस्कृति में विलीन हो गया।

86. फतेहपुर सीकरी में प्रसिद्ध बुलंद दरवाजा अकबर द्वारा किसकी विजय की स्मृति में निर्मित कराया गया था?

(C) उपहार के रूप में प्राप्त वह संपत्ति जिस पर महिला का विशेष नियंत्रण होता था।
(D) महिला को उसके पिता की पैतृक संपत्ति से प्राप्त उत्तराधिकार।

68. मध्यकाल के दौरान दक्षिण भारत में स्थापत्य विकास, विशेष रुप से विजयनगर के अंतर्गत, किसके लिए सर्वाधिक जाना जाता है?
(A) विशाल मकबरों और समाधियों का निर्माण।
(B) प्राथमिक विशेषताओं के रूप में मेहराबों और गुंबदों का उपयोग।
(C) लाल बलुआ पत्थर का उपयोग करके किलेबंद शहरों का निर्माण।
(D) बड़े मंडपों और अलंकृत गोपुरों के साथ मंदिर परिसरों का विस्तार।

69. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: सिख ग्रंथ, आदि ग्रंथ, गुरु गोविंद सिंह द्वारा संकलित किया गया था।
कथन II: आदि ग्रंथ में सिख गुरुओं की रचनाओं के साथ-साथ कबीर, रविदास और बाबा फरीद जैसे हिंदू और मुस्लिम संतों की रचनाएँ भी सम्मिलित हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

70. किस मुगल सम्राट के शासनकाल में चित्रकला की गुणवत्ता में ह्रास देखा गया और संरक्षण ललित कलाओं से हटकर वास्तुकला तथा रुढ़िवादी धार्मिक कार्यों की ओर चला गया?
(A) अकबर
(B) औरंगजेब
(C) जहाँगीर
(D) शाहजहाँ

71. निम्नलिखित में से कौन सुहरावर्दी सिलसिले के एक प्रमुख सूफी संत थे, जिन्होंने चिश्तियों के विपरीत, राज्य का संरक्षण स्वीकार किया था?
(A) निजामुद्दीन औलिया
(B) मोइनुद्दीन चिश्ती
(C) बाबा फरीद
(D) बहा-उद-दीन ज़कारिया

72. मुगल-सिख संबंधों की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. गुरु तेग बहादुर को मृत्युदंड
2. आदि ग्रंथ का संकलन
3. खालसा की स्थापना
4. गुरु अर्जुन देव की शहादत
सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 1, 2, 4, 3

73. 'पुष्टिमार्ग' (अनुग्रह का मार्ग), कृष्ण की उपासना पर केंद्रित वैष्णववाद का एक संप्रदाय, किसके द्वारा स्थापित किया गया था?
(A) रामानंद
(B) चैतन्य महाप्रभु
(C) वल्लभाचार्य
(D) शंकराचार्य

74. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): मुगलों के अंतर्गत विदेशी व्यापार समृद्ध हुआ, जिसमें भारत के पक्ष में व्यापार संतुलन अनुकूल रहा।
कारण (R): भारत के प्राथमिक आयात घोड़े, विलासिता की वस्तुएं और स्वर्ण-चांदी (बुलियन) थे, जबकि वस्त्रों और मसालों के इसके निर्यात की यूरोपीय तथा एशियाई बाजारों में अत्यधिक मांग थी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

75. निम्नलिखित में से कौन-सा मध्यकालीन भारत में प्रचलित शैव धर्म की शाखा नहीं थी?
(A) पाशुपत
(B) कापालिक
(C) कालामुख
(D) वारकरी

76. मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली, विशेष रुप से मदरसों का मुख्य उद्देश्य था:
(A) धर्मनिरपेक्ष वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए व्यक्तियों को प्रशिक्षित करना।
(B) राज्य के लिए धर्मशास्त्रियों, न्यायविदों और प्रशासकों का एक वर्ग तैयार करना।
(C) महिलाओं सहित संपूर्ण जनसंख्या के बीच साक्षरता को बढ़ावा देना।
(D) बढ़ईगीरी और धातु कर्म जैसे व्यावसायिक कौशल सिखाना।

77. सूची I में दी गई साहित्यिक कृति को सूची II में दी गई भाषा से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (साहित्यिक कृति)
P. रामचरितमानस
Q. अमुक्तमाल्यद
R. गुरु ग्रंथ साहिब

दक्षिण भारतीय शैलियों के प्रभाव के बिना पूर्णतः स्वतंत्र विकास थी।
कथन II: विजयनगर वास्तुकला ने विशेष रूप से मंदिर निर्माण में चोलों, पांड्यों और होयसालों की परंपराओं को जारी रखा और विस्तृत किया।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

96. सूफी प्रथा 'समा', जो रुढ़िवादी धर्मशास्त्रियों के लिए विवाद का विषय थी, किसे संदर्भित करती है?
(A) रमजान के महीने में उपवास रखने की क्रिया।
(B) आध्यात्मिक स्थिति प्रेरित करने के लिए संगीत और काव्य प्रदर्शनों का पाठ।
(C) मक्का की तीर्थयात्रा।
(D) निर्धनों को दान देना।

97. मध्य प्रदेश के निमाड़ क्षेत्र के पूजनीय संत, संत सिंगाजी, भक्ति की किस परंपरा से संबंधित थे?
(A) कृष्ण के प्रति सगुण भक्ति
(B) निराकार ईश्वर पर बल देने वाली निर्गुण भक्ति
(C) देवी पूजा की शाक्त परंपरा
(D) शैव तपस्या

98. मध्यकाल के दौरान भारत में 'दोहरा गुंबद' एक महत्वपूर्ण स्थापत्य विशेषता के रूप में प्रस्तुत किया गया था। इसका प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) आंतरिक कक्ष के लिए आनुपातिक छत बनाए रखते हुए एक भव्य और प्रभावशाली बाहरी रूप प्रदान करना।
(B) तोप के गोलों के विरुद्ध रक्षा की एक अतिरिक्त परत प्रदान करना।
(C) महल परिसर के लिए जल भंडार के रूप में कार्य करना।
(D) आध्यात्मिक और लौकिक दोनों प्रमुखों के रूप में शासक की दोहरी प्रकृति का प्रतीक होना।

99. मध्यकालीन भारतीय व्यापार में 'हुंडियों' का व्यापक रूप से किस रूप में उपयोग किया जाता था?
(A) सागर में चलने वाले एक प्रकार के जलयान के रूप में।
(B) तांबे में ढाले गए मुद्रा के एक रूप के रूप में।
(C) साख और प्रेषण (remittance) के साधन, जो आधुनिक विनिमय पत्रों के समान थे।
(D) नगर के फाटकों पर व्यापारियों द्वारा दिया जाने वाला एक कर।

100. मुगल सम्राट औरंगजेब की धार्मिक नीतियों में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी सम्मिलित थे?
(A) जजिया को पुनः लागू करना।
(B) 'झरोखा-दर्शन' की प्रथा को बंद करना।
(C) शाही दरबार में संगीत पर प्रतिबंध लगाना।
(D) कई नए हिंदू मंदिरों का संरक्षण और निर्माण।

101. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): व्यापार और वाणिज्य, आंतरिक और विदेशी दोनों, मध्यकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक थे।
कारण (R): मुगलों जैसे बड़े साम्राज्यों द्वारा प्रदान की गई राजनीतिक स्थिरता, सड़कों के विकसित संजाल, सरायों और एक मानक मुद्रा ने व्यापार को सुगम बनाया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

102. किस भक्ति संत को 'रामचरितमानस' की रचना करने का श्रेय दिया जाता है, जो अवधी बोली में रामायण की एक पुनरावृत्ति है और अत्यधिक लोकप्रिय हुई?
(A) कबीर
(B) तुलसीदास
(C) रामानंद
(D) सूरदास

103. मुगल पहनावे के संदर्भ में 'जामा' किस प्रकार के वस्त्र को संदर्भित करता है?
(A) हार
(B) पगड़ी का आभूषण
(C) कर्णफूल (बाली)
(D) गाउन या लंबा कोट (अंगरखा)

104. सूची I में दिए गए सूफी संत को सूची II में दिए गए सिलसिले/क्रम से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सूफी संत)
P. मोइनुद्दीन चिश्ती
Q. बहा-उद-दीन ज़कारिया
R. शेख अहमद सरहिंदी
S. निजामुद्दीन औलिया
सूची II: (सिलसिला/क्रम)
1. नक्शबंदी
2. चिश्ती
3. सुहरावर्दी
4. चिश्ती
(A) P-2, Q-3, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

105. दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य में प्रशासन तथा उच्च संस्कृति की प्राथमिक भाषा थी:
(A) अरबी
(B) तुर्की
(C) फारसी

(A) बंगाल
(B) गुजरात
(C) मेवाड़
(D) दक्कन

87. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भक्ति आंदोलन ने क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
कारण (R): भक्ति संतों ने अपने संदेश को अधिक सुलभ बनाने के लिए शास्त्रीय संस्कृत के स्थान पर ब्रज, अवधी और मराठी जैसी जनसाधारण की लोक भाषाओं में अपने भजनों और शिक्षाओं की रचना की।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

88. विजयनगर साम्राज्य की आर्थिक स्थिति की एक प्रमुख विशेषता निम्नलिखित में से कौन-सी थी?
(A) बड़ी संख्या में स्वर्ण सिक्कों (वराह) का प्रचलन और एक समृद्ध विदेशी व्यापार।
(B) वस्तु विनिमय प्रणाली ही लेनदेन का एकमात्र साधन थी, जिसमें कोई सिक्का नहीं था।
(C) राज्य ने स्थानीय शिल्पकारों की रक्षा के लिए विदेशी व्यापार को हतोत्साहित किया।
(D) अर्थव्यवस्था पूर्णतः राज्य द्वारा नियंत्रित थी जिसमें कोई निजी उद्यम नहीं था।

89. सूची I में दी गई अवधारणा/शब्द को सूची II में दिए गए संबंधित संत/परंपरा से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा/शब्द)
P. सुलह-ए-कुल
Q. वहदत-उल-वुजूद
R. अद्वैत वेदांत
S. खालसा
सूची II: (संबंधित संत/परंपरा)
1. शंकराचार्य
2. गुरु गोविंद सिंह
3. इब्न अरबी (भारत में सूफियों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया)
4. अकबर
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

90. 'अष्ट प्रधान' परिषद शिवाजी के अधीन मराठा प्रशासन की एक प्रशासनिक विशेषता थी, लेकिन आठ महान कवियों का एक समूह 'अष्टदिग्गज', किस मध्यकालीन शासक के दरबार की शोभा बढ़ाते थे?
(A) कृष्णदेवराय
(B) अकबर
(C) राजराज चोल
(D) अलाउद्दीन खिलजी

91. चित्रकला की मुगल शैली जहाँगीर के शासनकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची, जो विशेष रूप से किसे पसंद करते थे और प्रोत्साहित करते थे:
(A) अमूर्त और ज्यामितीय प्रतिरूप (पैटर्न)।
(B) किले की दीवारों पर बड़े स्तर के भित्ति चित्र।
(C) केवल सुलेखन डिजाइनों के साथ पांडुलिपि चित्रण।
(D) यथार्थवादी व्यक्ति-चित्र (पोर्ट्रेट) तथा वनस्पतियों और जीवों का विस्तृत अध्ययन।

92. मध्यकालीन भारत में किसानों की स्थिति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. किसान समान भूमि जोत और सामाजिक स्थिति वाला एक सजातीय समूह था।
2. राज्य की भू-राजस्व मांग प्रायः अधिक होती थी, जो कभी-कभी उपज के एक-तिहाई या आधे भाग तक पहुँच जाती थी।
3. अकाल या अत्यधिक कराधान के समय में भी किसानों को अपनी भूमि त्यागने का कोई अधिकार नहीं था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

93. सिख गुरुओं की शिक्षा मूल रूप से किस पर आधारित है?
(A) बहुदेववादी उपासना और मूर्ति पूजा।
(B) कठोर तपस्या और सांसारिक जीवन का त्याग।
(C) एक निराकार ईश्वर के प्रति भक्ति और संपूर्ण मानवता की समानता।
(D) समाज का एक कठोर जाति पदानुक्रम में विभाजन।

94. निम्नलिखित में से कौन मध्यकाल में हिंदू समाज की सामाजिक संरचना का सर्वाधिक उपयुक्त वर्णन करता है?
(A) उच्च सामाजिक गतिशीलता वाली एक पूर्णतः परिवर्तनशील प्रणाली।
(B) वर्ण व्यवस्था द्वारा शासित समाज, परंतु जिसमें अनेक जातियों और उप-जातियों का विस्तार हुआ।
(C) केवल ब्राह्मणों और शूद्रों में विभाजित एक द्विआधारी समाज।
(D) इस्लाम के प्रभाव में जाति व्यवस्था का पूर्ण पतन।

95. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: विजयनगर साम्राज्य की स्थापत्य शैली पूर्ववर्ती

(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

116. हुमायूँ की धार्मिक नीति को सामान्यतः किस प्रकार वर्णित किया गया था?
(A) उनके व्यक्तिगत विश्वासों और राजनीतिक आवश्यकताओं से प्रभावित एक व्यावहारिक और सहिष्णु दृष्टिकोण।
(B) सुन्नी कट्टरपंथ का कठोर पालन और शियाओं का उत्पीड़न।
(C) प्रथम बार समस्त गैर-मुसलमानों पर जजिया लगाना।
(D) राज्य धर्म के रूप में सूफी रहस्यवाद का सक्रिय प्रचार।

117. मध्यकालीन भारत में मुस्लिम समाज के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) यह जातीयता (तुर्क, अफगान, फारसी) तथा विदेशी मूल (अशरफ) एवं स्वदेशी धर्मांतरितों (अजलाफ) के बीच के अंतर पर आधारित था।
(B) यह बिना किसी आंतरिक विभाजन वाला एक अखंड और समतावादी समुदाय था।
(C) भारतीय मुस्लिम धर्मांतरितों के बीच जाति की अवधारणा पूर्णतः अनुपस्थित थी।
(D) समस्त मुसलमानों की, उनकी पृष्ठभूमि के उपरांत भी, उच्च प्रशासनिक पदों तक समान पहुँच थी।

118. देवी की उपासना पर केंद्रित शाक्त धर्म की जड़ें और विकास कहाँ से जुड़े हैं?
(A) पूर्व-वैदिक और गैर-आर्य लोक परंपराएं जिन्हें बाद में मुख्यधारा के हिंदू धर्म में आत्मसात कर लिया गया।
(B) विशेष रूप से वैदिक ग्रंथों और अनुष्ठानों में।
(C) बुद्ध की शिक्षाओं में।
(D) मध्य एशियाई सूफीवाद की रहस्यमय परंपराओं में।

119. सूची I में दी गई स्थापत्य विशेषता को सूची II में दिए गए प्रमुख उदाहरण/जुड़ाव से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (स्थापत्य विशेषता)
P. पितरा दुरा
Q. दोहरा गुंबद
R. चारबाग
S. गोपुरम्
सूची II: (प्रमुख उदाहरण/जुड़ाव)
1. हुमायूँ के मकबरे का उद्यान
2. मीनाक्षी मंदिर, मदुरै
3. एतमाद-उद-दौला का मकबरा
4. हुमायूँ का मकबरा (संरचना)
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

120. मध्यकाल के दौरान आंतरिक व्यापार में थोक वस्तुओं के परिवहन का एक महत्वपूर्ण साधन निम्नलिखित में से कौन-सा था, जो प्रायः बंजारों जैसे खानाबदोश समुदायों द्वारा किया जाता था?
(A) बैलगाड़ियों के बड़े काफिले
(B) रेलवे
(C) हवाई माल ढुलाई
(D) ट्रक और लॉरी

121. औरंगजेब की धार्मिक नीति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उसने संपूर्ण साम्राज्य में समस्त हिंदू त्योहारों को मनाने पर पूर्णतः प्रतिबंध लगा दिया था।
2. उसने गैर-मुसलमानों पर जजिया को पुनः लागू किया, जिसे अकबर ने समाप्त कर दिया था।
3. उसने कई प्रमुख हिंदू मंदिरों को नष्ट करने का आदेश दिया, उन्हें राजनीतिक अवज्ञा के केंद्र के रूप में देखा।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

122. 'गुरु ग्रंथ साहिब' विश्व के धर्मग्रंथों में अद्वितीय है क्योंकि:
(A) यह एकमात्र पवित्र पुस्तक है जो पूर्णतः काव्य में लिखी गई है।
(B) यह स्वयं पवित्र ग्रंथ को जीवित गुरु का दर्जा देता है।
(C) इसे स्वयं धर्म के संस्थापक द्वारा संकलित किया गया था।
(D) यह एक गुप्त कोड में लिखा गया है जिसे केवल कुछ ही लोग समझ सकते हैं।

123. 'कलमकारी' और 'बंधनी' किस मध्यकालीन हस्तशिल्प के प्रसिद्ध रूप हैं?
(A) मृदभांड (पोटरी)
(B) धातु कर्म
(C) वस्त्र रंगाई और छपाई
(D) काष्ठ नक्काशी

124. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: भक्ति आंदोलन केवल उत्तर भारत तक ही सीमित था और दक्षिण में इसकी कोई उपस्थिति नहीं थी।
कथन II: भक्ति आंदोलन की जड़ें 7वीं से 9वीं शताब्दी तक दक्षिण भारत के अलवार (वैष्णव) और नयनार (शैव) संतों के भजनों में खोजी जा सकती हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

125. मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली (मकतब और मदरसे) का प्राथमिक उद्देश्य क्या निर्मित करना था?

(A) साक्षर और धार्मिक रूप से विज्ञ व्यक्ति जो राज्य की सेवा कर सकें
(B) वैज्ञानिक और अन्वेषक
(C) कलाकार और संगीतकार
(D) लोकतांत्रिक नेता

126. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(A) मीराबाई - पंजाब
(B) संत ज्ञानेश्वर - महाराष्ट्र
(C) चैतन्य महाप्रभु - बंगाल
(D) रामानंद - प्रयाग (इलाहाबाद)

127. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): विजयनगर साम्राज्य का आर्थिक जीवन उल्लेखनीय समृद्धि से चिह्नित था।
कारण (R): उर्वर रायचूर दोआब और लाभदायक समुद्री बंदरगाहों पर इसका नियंत्रण, एक सुप्रबंधित भू-राजस्व प्रणाली के साथ मिलकर, राज्य के लिए अपार धन उत्पन्न करता था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

128. भारतीय सूफियों के बीच प्रभावशाली 'वहदत-उल-वुजूद' (अस्तित्व की एकता) की अवधारणा, दार्शनिक रूप से किस भारतीय दार्शनिक अवधारणा के निकट है?
(A) शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत
(B) न्याय तर्क
(C) मध्वाचार्य का द्वैत
(D) सांख्य द्वैतवाद

129. निम्नलिखित स्मारकों के निर्माण को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. ताजमहल
2. कुतुब मीनार (निर्माण प्रारंभ)
3. बुलंद दरवाजा
4. हुमायूँ का मकबरा
सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 4, 1
(D) 4, 2, 1, 3

130. चित्रकला की 'किशनगढ़ शैली', जो 'बणी ठणी' के अपने शैलीगत चित्रण के लिए जानी जाती है, किस प्रमुख कला रूप की उप-शैली थी?
(A) राजस्थानी चित्रकला
(B) मुगल चित्रकला
(C) पहाड़ी चित्रकला
(D) दक्कनी चित्रकला

131. विजयनगर साम्राज्य में महिलाओं की सामाजिक स्थिति जटिल थी। कौन-सा कथन इसे सर्वाधिक सटीकता से दर्शाता है?
(A) कुछ महिलाएं उच्च शिक्षित थीं और साहित्य, प्रशासन तथा यहाँ तक कि कुश्ती में भी सम्मिलित थीं, जबकि सती जैसी प्रथाएँ भी प्रचलित थीं।
(B) महिलाएं अपने घरों तक ही सीमित थीं और उनकी कोई सार्वजनिक भूमिका नहीं थी।
(C) जीवन के समस्त क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों के साथ पूर्ण समानता प्राप्त थी।
(D) सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और बहुपत्नी विवाह की अनुमति नहीं थी।

132. निम्नलिखित भक्ति संतों पर विचार कीजिए:
1. कबीर
2. तुलसीदास
3. नानक
इनमें से कौन 'निर्गुण' भक्ति (निराकार ईश्वर की भक्ति) के प्रस्तावक थे?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

133. मुगल सम्राट बाबर की धार्मिक नीति को सर्वाधिक उपयुक्त रूप से इस प्रकार समझा जा सकता है:
(A) सामान्यतः व्यावहारिक, एक धार्मिक कट्टरपंथी के दुराग्रह के बिना, यद्यपि उसने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धार्मिक शब्दावली का उपयोग करने में संकोच नहीं किया।
(B) भारत को इस्लाम में परिवर्तित करने का एक कट्टर उत्साह।
(C) एक नए संश्लेषित पंथ का निर्माण।
(D) हिंदू मंदिरों को सक्रिय रूप से नष्ट करने और शिया इस्लाम को बढ़ावा देने की नीति।

134. भारत में चिश्ती और सुहरावर्दी सूफी सिलसिलों के बीच प्राथमिक अंतर क्या था?
(A) चिश्ती सामान्यतः राज्य से दूरी बनाए रखते थे और निर्धनता में रहते थे, जबकि सुहरावर्दी राज्य अनुदान और पद स्वीकार करते थे।
(B) चिश्ती नगर आधारित थे, जबकि सुहरावर्दी वनों में रहते थे।
(C) चिश्ती 'वहदत-उल-वुजूद' के समर्थक थे, जबकि सुहरावर्दी 'वहदत-उश-शुहुद' के समर्थक थे।
(D) चिश्ती विशेष रूप से एक उत्तर भारतीय सिलसिला था, जबकि सुहरावर्दी केवल दक्षिण में थे।

135. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

कथन I: मुगल सम्राटों ने एक बड़ी और कुशल टंकण प्रणाली बनाए रखी जिसने अत्यधिक मानकीकृत स्वर्ण, रजत और ताम्र सिक्कों का उत्पादन किया।

कथन II: मुगल मुद्रा की एकरुपता और शुद्धता ने विशाल साम्राज्य में व्यापार और वाणिज्य को बहुत सुगम बनाया।

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

136. निम्नलिखित में से कौन 'जागीर' प्रणाली को सर्वाधिक उपयुक्त रूप से परिभाषित करता है?

(A) नकद वेतन के स्थान पर किसी कुलीन को भूमि के खंड का राजस्व सौंपने की प्रणाली।
(B) किसानों द्वारा भूमि के वंशानुगत स्वामित्व की प्रणाली।
(C) उच्चतम बोली लगाने वाले को राजस्व की वसूली का अधिकार देने की प्रथा।
(D) सैन्य सुरक्षा के लिए गैर-मुसलमानों से एकत्र किया जाने वाला कर।

137. संगीत का रूप 'ख्याल' जो परवर्ती मध्यकाल में प्रमुखता से उभरा, इसके विकास का श्रेय प्रायः किसे दिया जाता है?

(A) जौनपुर के शर्की वंश के शासकों को।
(B) अकबर के दरबार में तानसेन को।
(C) सूफी कवि अमीर खुसरो को।
(D) महाराष्ट्र के भक्ति संतों को।

138. मध्यकालीन भारत में सामाजिक रीति-रिवाजों के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।

(A) 'पर्दा' प्रणाली का पालन उच्च वर्ग की हिंदू और मुस्लिम दोनों महिलाओं द्वारा किया जाता था।
(B) जाति व्यवस्था हिंदू समाज का आधार थी।
(C) सल्तनत काल के दौरान सती प्रथा पूर्णतः समाप्त हो गई थी।
(D) मनोरंजन में शतरंज, चौपड़ और पशुओं के द्वंद्व जैसी गतिविधियाँ सम्मिलित थीं।

139. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

अभिकथन (A): शाहजहाँ के शासनकाल को प्रायः 'मुगल वास्तुकला का स्वर्ण युग' कहा जाता है।

कारण (R): शाहजहाँ का शासनकाल व्यापक निर्माण गतिविधियों द्वारा चिह्नित था, जिसमें लाल बलुआ पत्थर के स्थान पर संगमरमर को प्राथमिकता दी गई थी, जिसका चरमोत्कर्ष ताजमहल और दिल्ली के लाल किले जैसी उत्कृष्ट कृतियों में हुआ।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

140. उत्तर भारतीय भक्ति आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति रामानंद महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उन्होंने:

(A) स्थानीय भाषा में उपदेश दिया और कबीर तथा रविदास सहित समस्त जातियों के शिष्यों को स्वीकार किया।
(B) अद्वैत वेदांत के दर्शन की वकालत की।
(C) फारसी में रचना करने वाले प्रथम भक्ति संत थे।
(D) महाराष्ट्र में वारकरी संप्रदाय की स्थापना की।

141. सूची I में दी गई चित्रकला की शैली को सूची II में दी गई विशिष्ट विशेषता से सुमेलित कीजिए।

सूची I: (चित्रकला की शैली)

P. मुगल शैली (जहाँगीर का काल)
Q. राजस्थानी शैली
R. पहाड़ी शैली
S. विजयनगर शैली (भित्ति चित्र)

सूची II: (विशिष्ट विशेषता)

1. राधा-कृष्ण के गीतात्मक विषय (जैसे, कांगड़ा शैली)
2. सपाट, गहरे रंगों और सुदृढ़ रुपरेखाओं के साथ धार्मिक आख्यान।
3. यथार्थवादी चित्रण और प्रकृति का वैज्ञानिक अध्ययन।
4. पौराणिक विषय और रामायण/महाभारत के दृश्य।

(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

142. मुगल प्रशासनिक तंत्र में 'आमुल' या 'अमलगुज़ार' क्या था?

(A) जिला (सरकार) स्तर पर एक राजस्व संग्राहक।
(B) एक किले का सैन्य कमांडर।
(C) शाही गृह का मुखिया।
(D) एक न्यायाधीश जो दाण्डिक मामलों की अध्यक्षता करता था।

143. सिख धर्म के विकास के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रथम पांच गुरुओं ने मुख्य रुप से विश्वास की आध्यात्मिक और सामाजिक आधारशिला स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया।
2. पांचवें और नौवें गुरुओं की शहादत के कारण आत्मरक्षा और सैन्यीकरण पर अधिक बल दिया गया।
3. दसवें गुरु गोविंद सिंह ने मानवरूपी गुरुओं की परंपरा को समाप्त घोषित कर दिया, और पवित्र ग्रंथ में गुरुत्व निहित कर दिया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

(D) संस्कृत

106. विजयनगर साम्राज्य में चित्रकला की कला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कला मुख्य रूप से दरबारी जीवन और व्यक्ति-चित्रण जैसे धर्मनिरपेक्ष विषयों पर केंद्रित थी।
2. लेपाक्षी और हम्पी के भित्ति चित्र विजयनगर चित्रकला के प्रमुख उदाहरण हैं।
3. शैली धार्मिक आख्यानों पर ध्यान केंद्रित करते हुए चालुक्य और होयसल परंपराओं की निरंतरता दर्शाती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

107. गुरु गोविंद सिंह द्वारा खालसा के निर्माण में एक दीक्षा समारोह और 'पांच ककारों' (Five Ks) को अपनाना सम्मिलित था। निम्नलिखित में से कौन-सा 'पांच ककारों' में से एक नहीं है?

(A) केश (बिना कटे बाल)
(B) कंघा
(C) कृपाण (तलवार)
(D) कीर्तन (भक्ति गायन)

108. किस मध्यकालीन शासक की भू-राजस्व प्रणाली में भूमि की माप, उर्वरता के आधार पर वर्गीकरण, और औसत पैदावार तथा कीमतों (दहसाला प्रणाली) के आधार पर नकद में राजस्व का निर्धारण सम्मिलित था?

(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) अकबर
(C) शेर शाह सूरी
(D) औरंगजेब

109. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

कथन I: भक्ति और सूफी आंदोलनों के प्रभाव के कारण मध्यकालीन हिंदू समाज में जाति व्यवस्था कम कठोर और अधिक लचीली हो गई।

कथन II: यद्यपि भक्ति और सूफी संतों ने जातिगत भेदभाव के विरुद्ध उपदेश दिया, समग्र सामाजिक संरचना व्यापक रूप से पदानुक्रमित और जाति-आधारित बनी रही।

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

110. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़िए और उसके पश्चात आने वाले प्रश्न का उत्तर दीजिए:

एक मुगल 'कारखाने' में एक शिल्पकार को कार्नेलियन, लैपिस लाजुली और जैस्पर के साथ जटिल पुष्प प्रतिरूप वाले संगमरमर की जाली बनाने का कार्य सौंपा गया है। इस विशिष्ट सजावटी तकनीक को किस नाम से जाना जाता है?

(A) जाली का काम (Jali)
(B) अरबी (Arabesque)
(C) फ्रेस्को चित्रकारी
(D) पितरा दुरा (Pietra dura)

111. भक्ति कविता का एक रूप 'अभंग', किस क्षेत्र के भक्ति संतों के साथ सर्वाधिक जुड़ा हुआ है?

(A) बंगाल
(B) पंजाब
(C) राजस्थान
(D) महाराष्ट्र

112. गुरु अर्जुन देव और मुगल सम्राट जहाँगीर के बीच प्रारंभिक संघर्ष का मुख्य कारण था:

(A) जहाँगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो के लिए गुरु का कथित समर्थन।
(B) गुरु अर्जुन देव द्वारा जजिया कर देने से इनकार।
(C) आदि ग्रंथ के संकलन को लेकर विवाद।
(D) एक पृथक सिख राज्य स्थापित करने का गुरु का प्रयास।

113. निम्नलिखित में से कौन मुगलों के अंतर्गत उत्तर भारत की वास्तुकला के विकास का सटीक वर्णन करता है?

(A) फारसी, मध्य एशियाई और स्वदेशी भारतीय स्थापत्य परंपराओं का संश्लेषण।
(B) विशुद्ध फारसी डिजाइनों के पक्ष में भारतीय शैलियों की पूर्ण अस्वीकृति।
(C) पत्थर और संगमरमर से बचते हुए केवल काष्ठ और ईंट का उपयोग।
(D) न्यूनतम अलंकरण वाली छोटी, सरल संरचनाओं पर ध्यान देना।

114. 'पाही-काश्त' (Pahi-kashta) शब्द मध्यकालीन भारत में किसानों के किस वर्ग को संदर्भित करता है?

(A) वे किसान जो अपनी जोती गई भूमि के स्वामी थे।
(B) भूमिहीन मजदूर जो पारिश्रमिक के लिए कार्य करते थे।
(C) गाँव के मुखिया जो किसान भी थे।
(D) गैर-निवासी किसान जो अपने गाँव के अतिरिक्त किसी अन्य गाँव में भूमि जोतते थे।

115. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

अभिकथन (A): विजयनगर के शासक कला और साहित्य के महान संरक्षक थे।

कारण (R): कृष्णदेवराय के शासनकाल को तेलुगु साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है, जिनके दरबार में 'अष्टदिग्गज' सुशोभित थे।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

व्यापक हो गई।
कारण (R): इसे उच्च सामाजिक स्थिति के प्रतीक के रूप में देखा जाता था और मुस्लिम अभिजात वर्ग के अनुकरण में उच्च जाति के हिंदुओं द्वारा इसे अपनाया गया था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

155. मध्यकालीन भारतीय समाज में आभूषणों की क्या भूमिका थी?
(A) वे पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा धारण किए जाते थे और सामाजिक स्थिति, धन तथा धार्मिक विश्वास का प्रतीक थे।
(B) वे केवल महिलाओं द्वारा धारण किए जाते थे।
(C) उनका उपयोग मुद्रा के एक रूप के रूप में किया जाता था।
(D) समस्त प्रमुख धर्मों द्वारा उनके उपयोग का निषेध किया गया था।

156. विजयनगर साम्राज्य का आर्थिक जीवन निम्नलिखित में से किन वस्तुओं के समृद्ध व्यापार की विशेषता था?
(A) मसाले, वस्त्र और बहुमूल्य पत्थर
(B) लौह अयस्क और कोयला
(C) भारी औद्योगिक मशीनरी
(D) कंप्यूटर सॉफ्टवेयर

157. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: एक प्रमुख भक्ति संत, संत रविदास व्यवसाय से मोची थे।
कथन II: भक्ति आंदोलन एक विशेष रूप से उच्च जाति का, ब्राह्मणवादी आंदोलन था जिसने निम्न जातियों के लोगों को बहिष्कृत किया था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

158. 'गीत गोविंद', कृष्ण और राधा के प्रेम पर आधारित एक गीतात्मक कविता जिसने भक्ति आंदोलन को प्रभावित किया, किसके द्वारा रचित थी?
(A) तुलसीदास
(B) जयदेव
(C) मीराबाई
(D) कालिदास

159. सूची I में दिए गए मुगल शासक को सूची II में दी गई धार्मिक नीति की विशेषता से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मुगल शासक)
P. अकबर
Q. जहाँगीर
R. शाहजहाँ
S. औरंगजेब
सूची II: (धार्मिक नीति की विशेषता)
1. रूढ़िवादी परिवर्तन, नए मंदिरों का विध्वंस
2. जजिया को पुनः लागू करना, रूढ़िवादी शुद्धतावाद
3. सुलह-ए-कुल, जजिया का उन्मूलन
4. उदार नीति की सामान्य निरंतरता, गुरु अर्जुन देव को मृत्युदंड
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

160. मध्यकाल के दौरान किसानों की स्थिति के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक सटीक है?
(A) वे समस्त महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति वाले समृद्ध जमींदार थे।
(B) वे एक विभेदित समूह थे, जिनमें भूमि के स्वामी 'खुद-काश्त' से लेकर भूमिहीन मजदूर सम्मिलित थे, और वे प्रायः उच्च राजस्व मांगों के अधीन थे।
(C) वे समस्त राज्य के स्वामित्व वाले खेतों में कार्य करने वाले भूमिहीन मजदूर थे।
(D) उन्हें समस्त प्रकार के कराधान से छूट प्रदान की गई थी।

161. 'कल्याण मंडप' (विवाह कक्ष), जिसमें प्रायः विस्तृत नक्काशीदार स्तंभ होते थे, किस वंश के अंतर्गत मंदिर वास्तुकला में एक विशिष्ट योग था?
(A) मौर्य
(B) गुप्त
(C) विजयनगर
(D) मुगल

162. निम्नलिखित सिख गुरुओं में से किसने अमृतसर नगर की स्थापना की और हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) का निर्माण प्रारंभ किया?
(A) गुरु रामदास
(B) गुरु नानक
(C) गुरु अंगद
(D) गुरु अर्जुन देव

163. सूफियों का भक्ति मार्ग प्रायः रूढ़िवादी इस्लामी पादरियों (उलेमा) के साथ संघर्ष की स्थिति में रहता था क्योंकि:
(A) उलेमा ने बाह्य धार्मिक कानूनों (शरिया) के कठोर पालन पर बल दिया, जबकि सूफियों ने आंतरिक रहस्यमय अनुभव और ईश्वर के प्रति प्रेम पर बल दिया।
(B) सूफियों ने कुरान और पैगंबर मुहम्मद को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया था।
(C) सूफियों ने प्रार्थना करने या उपवास करने से मना कर दिया था।

लिए खुली थीं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

226. भारत में चिश्ती और सुहरावर्दी सूफी सिलसिलों के बीच प्राथमिक अंतर क्या था?
(A) चिश्ती सामान्यतः राज्य से दूरी बनाए रखते थे और निर्धनता में जीवन व्यतीत करते थे, जबकि सुहरावर्दी राज्य अनुदान और पद स्वीकार करते थे।
(B) चिश्ती नगर आधारित थे, जबकि सुहरावर्दी वनों में रहते थे।
(C) चिश्ती 'वहदत-उल-वुजूद' के समर्थक थे, जबकि सुहरावर्दी 'वहदत-उश-शुहुद' के समर्थक थे।
(D) चिश्ती विशेष रुप से एक उत्तर भारतीय सिलसिला था, जबकि सुहरावर्दी केवल दक्षिण में थे।

227. किसके पश्चात मुगल-सिख संबंधों में अत्यधिक गिरावट आई?
(A) जहाँगीर के शासनकाल में गुरु अर्जुन देव की शहादत।
(B) गुरु नानक की यात्राएँ।
(C) आदि ग्रंथ का संकलन।
(D) अमृतसर नगर की स्थापना।

228. मध्यकाल के दौरान दक्षिण भारत में वास्तुकला के विकास का सर्वोत्तम उदाहरण किस साम्राज्य के कार्यों से मिलता है?
(A) विजयनगर साम्राज्य
(B) मौर्य साम्राज्य
(C) गुप्त साम्राज्य
(D) पाल साम्राज्य

229. किस भक्ति संत की रचनाएँ सिखों (गुरु ग्रंथ साहिब) और कबीरपंथियों दोनों के पवित्र ग्रंथों में सम्मिलित हैं?
(A) कबीर
(B) तुलसीदास
(C) मीराबाई
(D) चैतन्य

230. सूची I में दिए गए संत/दार्शनिक को सूची II में दिए गए संबंधित विचारधारा से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (संत/दार्शनिक)
P. रामानुज
Q. मध्वाचार्य
R. शंकराचार्य
S. वल्लभाचार्य
सूची II: (संबंधित विचारधारा)
1. अद्वैत (अद्वैतवाद)
2. द्वैत (द्वैतवाद)
3. विशिष्टाद्वैत (विशिष्ट अद्वैतवाद)
4. शुद्धाद्वैत (शुद्ध अद्वैतवाद)
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

231. 'मकतबों' और 'मदरसों' पर केंद्रित मुगल शिक्षा प्रणाली मुख्य रुप से किस पर केंद्रित थी?
(A) धार्मिक और प्रशासनिक प्रशिक्षण।
(B) शिल्पकारों के लिए व्यावसायिक कौशल।
(C) वैज्ञानिक और तकनीकी नवाचार।
(D) शारीरिक शिक्षा और खेल।

232. सूफीवाद के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह इस्लाम की रहस्यमय शाखा है।
2. सूफी विभिन्न सिलसिलों या आदेशों में संगठित थे।
3. भारत में चिश्ती सिलसिले ने राज्य की राजनीति से परहेज किया और निर्धनता में जीवन बिताया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

233. मध्यकालीन भारत में किस आर्थिक गतिविधि के लिए रहट (पर्सियन व्हील) एक महत्वपूर्ण तकनीक थी?
(A) कृषि के लिए सिंचाई
(B) वस्त्र बुनना
(C) सिक्के ढालना
(D) समुद्री नौवहन

234. किस मुगल सम्राट के शासनकाल को चित्रकला के लिए 'स्वर्ण युग' माना जाता है?
(A) जहाँगीर
(B) बाबर
(C) हुमायूँ
(D) औरंगजेब

235. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: विजयनगर साम्राज्य का सामाजिक जीवन बिना किसी जातिगत भेदभाव के समतावादी था।
कथन II: निकोलो डी कोंटी और अब्दुल रज्जाक जैसे विदेशी यात्रियों के विवरण एक कठोर जाति व्यवस्था और सती जैसी प्रथाओं वाले समाज का वर्णन करते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

सूची I: (लेखक)
P. अबुल फज़ल
Q. तुलसीदास
R. कृष्णदेवराय
S. संत ज्ञानेश्वर
सूची II: (साहित्यिक कृति)
1. ज्ञानेश्वरी
2. अमुक्तमाल्यद
3. रामचरितमानस
4. अकबरनामा
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

175. 'कांगड़ा' और 'गुलेर' शैलियाँ मध्यकालीन भारतीय चित्रकला के किस प्रमुख विद्यालय से जुड़ी हैं?
(A) पहाड़ी शैली
(B) मुगल शैली
(C) दक्कनी शैली
(D) राजस्थानी शैली

176. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन मध्यकालीन भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया का सर्वाधिक सटीक वर्णन करता है?
(A) प्रशासनिक आवश्यकताओं और वाणिज्यिक गतिविधियों द्वारा संचालित, इस अवधि में विद्यमान नगरों की वृद्धि और नए नगरों की स्थापना देखी गई।
(B) निरंतर युद्ध के कारण शहरीकरण में भारी गिरावट आई।
(C) समस्त नगर छोटी, किलेबंद बस्तियां थे जिनमें कोई वाणिज्यिक जीवन नहीं था।
(D) शहरी केंद्र केवल समुद्री तट पर विद्यमान थे न कि भीतरी भागों में।

177. विजयनगर साम्राज्य में धार्मिक जीवन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. शासक समस्त हिंदू संप्रदायों, विशेष रूप से वैष्णववाद और शैव धर्म के संरक्षक थे।
2. मंदिर न केवल उपासना के स्थान थे अपितु प्रमुख आर्थिक और सामाजिक संस्थान भी थे।
3. इस्लाम और ईसाई धर्म जैसे अन्य धर्मों का पालन करना कठोरता से वर्जित था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

178. भू-राजस्व मूल्यांकन की 'बटाई' प्रणाली क्या थी?
(A) खलिहान में राज्य और कृषक के बीच वास्तविक फसल का विभाजन।
(B) दस वर्ष के औसत के आधार पर एक निश्चित नकद भुगतान।
(C) गाँव की उपज का एक स्थूल अनुमान।
(D) गैर-कृषि आय पर कर।

179. भक्ति आंदोलन के वे संत जो मुगल सम्राट अकबर और जहाँगीर के समकालीन थे और जिन्होंने महाकाव्य 'रामचरितमानस' लिखा था, वे थे:
(A) तुलसीदास
(B) कबीर
(C) गुरु नानक
(D) मीराबाई

180. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: संपूर्ण मुगल काल में सिखों के साथ मुगलों के संबंध शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण थे।
कथन II: जहाँगीर के अंतर्गत गुरु अर्जुन देव और औरंगजेब के अंतर्गत गुरु तेग बहादुर की शहादत ने गहरी शत्रुता उत्पन्न की और सशस्त्र संघर्ष को जन्म दिया।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

181. मुगल वास्तुकला में विस्तृत 'जालियों' (छिद्रित पाषाण पर्दे) का उपयोग सौंदर्य और कार्यात्मक दोनों उद्देश्यों के लिए किया जाता था, जो था:
(A) गोपनीयता बनाए रखते हुए आंतरिक भाग में वायु संचार और मंद प्रकाश की अनुमति देना।
(B) मुख्य गुंबद के भार को आधार प्रदान करना।
(C) घुसपैठियों के विरुद्ध एक रक्षात्मक बाधा के रूप में कार्य करना।
(D) शाही शिलालेखों और आदेशों को प्रदर्शित करना।

182. निम्नलिखित में से किसे उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन का अग्रदूत माना जाता है, जिन्होंने दक्षिणी भक्ति और कबीर जैसे परवर्ती संतों के बीच की कड़ी का कार्य किया?
(A) रामानंद
(B) शंकराचार्य
(C) चैतन्य
(D) तुकाराम

183. निम्नलिखित में से कौन मध्यकालीन भारत में एक प्रमुख हस्तशिल्प उद्योग नहीं था?
(A) ऑटोमोबाइल निर्माण
(B) वस्त्र उत्पादन
(C) धातु कर्म और आभूषण
(D) पाषाण नक्काशी और मूर्तिकला

184. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

4. भ्रमणशील व्यापारिक समुदाय
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

205. 'बसोहली' और 'मानकोट' शैलियाँ चित्रकला के किस विद्यालय के शुरुआती चरण हैं?
(A) पहाड़ी शैली
(B) मुगल शैली
(C) राजस्थानी शैली
(D) दक्कनी शैली

206. विजयनगर साम्राज्य में सांस्कृतिक जीवन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. शासक संस्कृत तथा तेलुगु और कन्नड़ जैसी क्षेत्रीय भाषाओं के महान संरक्षक थे।
2. स्थापत्य शैली द्रविड़ और इस्लामी विशेषताओं का एक अनूठा मिश्रण थी।
3. अब्दुल रज्जाक जैसे विदेशी यात्रियों ने नगर और इसकी संस्कृति का विस्तृत विवरण प्रदान किया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

207. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़िए और उसके पश्चात आने वाले प्रश्न का उत्तर दीजिए:
मध्यकालीन भारत का एक शासक एक नई राजधानी निर्मित करना चाहता है जो उसकी शक्ति और धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाती हो। वह इसमें मस्जिदें, मंदिर, महल और सार्वजनिक भवन सम्मिलित करता है, और अपने संपूर्ण साम्राज्य के शिल्पकारों को आमंत्रित करता है। यह दृष्टिकोण किसकी सर्वाधिक विशेषता है:
(A) अकबर द्वारा फतेहपुर सीकरी का निर्माण।
(B) फिरोज शाह तुगलक द्वारा फिरोजाबाद का निर्माण।
(C) कृष्णदेवराय द्वारा विजयनगर का विकास।
(D) औरंगजेब की दिल्ली की परियोजनाएं।

208. 'सगुण' और 'निर्गुण' भक्ति के बीच मुख्य अंतर है:
(A) सगुण भक्ति में गुणों के साथ ईश्वर की भक्ति सम्मिलित है, जबकि निर्गुण निराकार ईश्वर की भक्ति है।
(B) सगुण भक्ति पुरुषों के लिए है, जबकि निर्गुण भक्ति विशेष रूप से महिलाओं के लिए है।
(C) सगुण भक्ति में निराकार ईश्वर की भक्ति सम्मिलित है, जबकि निर्गुण में गुणों के साथ ईश्वर की भक्ति (जैसे, मूर्ति रूप में) सम्मिलित है।
(D) सगुण भक्ति उत्तर भारत में प्रचलित है, जबकि निर्गुण दक्षिण में।

209. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: मुगल सम्राट जहाँगीर ने चित्रकला में बहुत कम अभिरुचि दिखाई।
कथन II: जहाँगीर के शासनकाल को प्रायः मुगल चित्रकला का स्वर्ण युग माना जाता है, जिसमें व्यक्ति-चित्रण (पोट्रेट) और प्रकृति के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित किया गया था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

210. भारतीय साहित्य पर भक्ति आंदोलन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव क्या था?
(A) इसने क्षेत्रीय लोक भाषाओं में साहित्य के विकास और संवर्धन को प्रेरित किया।
(B) इसके कारण समस्त साहित्यिक सृजन में गिरावट आई।
(C) इसने फारसी को एकमात्र साहित्यिक भाषा के रूप में प्रोत्साहित किया।
(D) इसने सुनिश्चित किया कि समस्त साहित्य केवल संस्कृत में ही लिखा जाए।

211. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) तुलसीदास - सगुण भक्ति
(B) कबीर - सगुण भक्ति
(C) मीराबाई - निर्गुण भक्ति
(D) गुरु नानक - सगुण भक्ति

212. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): विजयनगर नगर 15वीं और 16वीं शताब्दी में विश्व के सबसे बड़े और समृद्ध नगरों में से एक था।
कारण (R): साम्राज्य का समृद्ध आंतरिक और विदेशी व्यापार, उन्नत सिंचाई द्वारा समर्थित कुशल कृषि, और शासकों के संरक्षण ने इसकी अपार संपत्ति और विस्तार में योगदान दिया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

213. मकबरों और महलों के चारों ओर 'चारबाग' (चार भागों वाला उद्यान) लेआउट बनाने की प्रथा भारत में किसके द्वारा प्रारंभ की गई थी?
(A) मुगल
(B) दिल्ली सुल्तान
(C) चोल
(D) मौर्य

214. सूफीवाद में 'समा' शब्द किस प्रथा को संदर्भित करता है?
(A) आध्यात्मिक परमानंद प्राप्त करने के लिए भक्ति संगीत

194. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: चित्रकला की मुगल शैली बिना किसी बाह्य प्रभाव के पूर्णतः स्वदेशी कला रूप थी।
कथन II: यह चित्रकला की स्वदेशी भारतीय परंपरा और फारसी लघु चित्रकला शैली का संश्लेषण थी।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

195. विजयनगर साम्राज्य में, विशेष रूप से कृष्णदेवराय के शासनकाल के दौरान, साहित्य के लिए प्राथमिक भाषा थी:
(A) तेलुगु
(B) फारसी
(C) संस्कृत
(D) पाली

196. किस मुगल सम्राट की नीति अभिजात वर्ग के विभिन्न समूहों के बीच संतुलन बनाए रखने और वैवाहिक संबंधों तथा उच्च मनसबों के माध्यम से राजपूत सरदारों को अपने पक्ष में करने की थी?
(A) अकबर
(B) बाबर
(C) औरंगजेब
(D) शाहजहाँ

197. निम्नलिखित में से कौन मध्यकाल में भारत में मनोरंजन का एक लोकप्रिय रूप नहीं था?
(A) टेलीविजन धारावाहिक
(B) पशुओं के द्वंद्व (हाथी, ऊंट)
(C) कुश्ती
(D) पोलो (चौगान)

198. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की प्रसिद्ध सूफी दरगाह कहाँ स्थित है?
(A) अजमेर
(B) दिल्ली
(C) फतेहपुर सीकरी
(D) गुलबर्गा

199. मध्यकालीन भारतीय कर प्रणालियों के संदर्भ में 'जजिया' शब्द क्या दर्शाता है?
(A) आयातित वस्तुओं पर सीमा शुल्क।
(B) इस्लामी कानून द्वारा शासित राज्य में गैर-मुस्लिम प्रजा पर आरोपित व्यक्तिगत कर (poll-tax)।
(C) किसानों की कृषि उपज पर कर।
(D) संपत्ति के विक्रय पर कर।

200. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भक्ति आंदोलन एक सामाजिक और धार्मिक आंदोलन था जिसने जाति व्यवस्था और कर्मकांडों की आलोचना की।
कारण (R): कबीर, नानक और रविदास जैसे भक्ति संत निम्न जातियों सहित विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों से आए थे और उन्होंने समानता तथा भक्ति का संदेश दिया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

201. मध्यकालीन मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति का सर्वाधिक सटीक विवरण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) उनके पास किसी भी रूप में कोई वैधानिक या सामाजिक अधिकार नहीं थे।
(B) उनके पास समस्त धार्मिक और वैधानिक पहलुओं में पुरुषों से बेहतर अधिकार थे।
(C) वैधानिक रूप से, उनके पास संपत्ति और तलाक के अधिकार थे, यद्यपि प्रायः पितृसत्तात्मक सामाजिक रीति-रिवाजों द्वारा सीमित थे।
(D) कुरान महिलाओं को किसी भी संपत्ति के स्वामित्व से कठोरता से और पूर्णतः मना करता है।

202. बीजापुर और गोलकुंडा जैसे दक्कन सल्तनतों में विकसित स्थापत्य शैली किसके लिए उल्लेखनीय है?
(A) फारसी, तुर्की और दक्षिण भारतीय (द्रविड़) तत्वों का अनूठा संश्लेषण।
(B) काष्ठ और फूस का विशेष उपयोग।
(C) उत्तर भारतीय मुगल वास्तुकला की सटीक अनुकृति।
(D) किसी भी गुंबद या मेहराब का अभाव।

203. निम्नलिखित में से कौन गुरु नानक की एक प्रमुख शिक्षा है?
(A) अनेक देवी-देवताओं की उपासना।
(B) एक निराकार ईश्वर में विश्वास और समस्त मनुष्यों की समानता।
(C) तपस्या की आवश्यकता और पारिवारिक जीवन का त्याग।
(D) जाति के नियमों और अनुष्ठानों का कठोर पालन।

204. सूची I में दिए गए आर्थिक जीवन के शब्द को सूची II में दिए गए अर्थ से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (आर्थिक जीवन से संबंधित शब्द)
P. सराएँ
Q. ददन
R. कारखाने
S. बंजारे
सूची II: (अर्थ)
1. शिल्पकारों के लिए अग्रिम भुगतान प्रणाली
2. शाही कार्यशालाएँ
3. यात्रियों और व्यापारियों के लिए विश्राम गृह

(D) उलेमा समस्त गैर-मुस्लिम थे जो इस्लाम को दूषित करने का प्रयत्न कर रहे थे।

164. मध्यकालीन भारतीय उद्योगों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वस्त्र उद्योग सर्वाधिक प्रमुख उद्योगों में से एक था, जिसमें सूती और रेशमी वस्त्र का उत्पादन होता था।
2. जलयान निर्माण एक प्रमुख उद्योग था, विशेष रुप से बंगाल, गुजरात और मालाबार जैसे तटीय क्षेत्रों में।
3. मध्यकालीन भारत में लोहे और इस्पात का उत्पादन अज्ञात था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-SA/SE सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

165. मुगल सम्राट जहाँगीर की धार्मिक नीति उदारवाद और रुढ़िवाद का मिश्रण थी। उनके रुढ़िवाद का एक उदाहरण है:

(A) नूरजहाँ के साथ उनका विवाह।
(B) हिंदू विद्वानों और योगियों का उनका संरक्षण।
(C) सिख गुरु अर्जुन देव को मृत्युदंड।
(D) यूरोपीय चित्रकला में उनकी गहरी अभिरुचि।

166. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़िए और उसके पश्चात आने वाले प्रश्न का उत्तर दीजिए:

एक इतिहासकार को मुगल काल का एक प्रलेख प्राप्त होता है जिसमें भूमि के एक विशिष्ट खंड से राज्य के राजस्व का विवरण दिया गया है जो सीधे शाही अधिकारियों द्वारा प्रबंधित किया जाता है, और उसकी आय केंद्रीय कोष में जाती है। इस भूमि को किस रुप में वर्गीकृत किया जाएगा?

(A) जागीर भूमि
(B) खालसा भूमि
(C) इनाम भूमि
(D) वक्फ भूमि

167. 'नक्शबंदी' सूफी सिलसिला, जिसने परवर्ती मुगल काल के दौरान प्रमुखता प्राप्त की, किसके लिए जाना जाता था?

(A) शरिया के कठोर पालन पर बल और 'समा' जैसे नवाचारों का विरोध।
(B) हिंदू और इस्लामी प्रथाओं के मेल वाले संश्लेषित विश्वास।
(C) समाज से पूर्ण पृथक्करण और अत्यधिक तपस्या।
(D) राजनीतिक तटस्थता और राज्य संरक्षण स्वीकार करने से इनकार।

168. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

कथन I: फारसी के प्रभुत्व के कारण मध्यकाल के दौरान संस्कृत साहित्य का विकास पूर्णतः अवरुद्ध हो गया था।

कथन II: फारसी की प्रधानता के उपरांत भी, संस्कृत को हिंदू राजाओं, विशेष रुप से दक्षिण भारत और राजस्थान में, संरक्षण मिलता रहा और महत्वपूर्ण रचनाएँ रचित होती रहीं।

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

169. एक भक्ति संत और उनके संबंधित क्षेत्र के अशुद्ध युग्म की पहचान कीजिए।

(A) तुकाराम - महाराष्ट्र
(B) नानक - पंजाब
(C) वल्लभाचार्य - बंगाल
(D) रामानुजाचार्य - तमिलनाडु

170. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

अभिकथन (A): 1699 में गुरु गोविंद सिंह द्वारा खालसा की स्थापना ने सिख समुदाय को परिवर्तित कर दिया।

कारण (R): इसने एक अनुशासित और लड़ाकू समुदाय 'संत-सिपाही' निर्मित किया, जो अपने विश्वास की रक्षा करने और अन्याय तथा दमन के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रतिबद्ध था।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

171. बाबर की धार्मिक नीति मुख्य रुप से किससे प्रेरित थी?

(A) राजनीतिक व्यवहारवाद और एक नए साम्राज्य को सुदृढ़ करने की आवश्यकता।
(B) समस्त प्रजा पर सुन्नी इस्लाम थोपने की इच्छा।
(C) हिंदू धर्म के प्रति गहरी विद्वेष भावना।
(D) उनकी माता का प्रभाव, जो एक धर्मनिष्ठ बौद्ध थीं।

172. मध्यकालीन हिंदू समाज के कुछ भागों में प्रचलित एक सामाजिक कुरीति 'सती' शब्द का अर्थ है:

(A) अपने पति की चिता पर विधवा द्वारा स्वयं को दाह करने की प्रथा।
(B) विधवाओं का पुनर्विवाह।
(C) अपने पति की संपत्ति उत्तराधिकार में पाने का महिला का अधिकार।
(D) महिलाओं को सार्वजनिक दृष्टि से ओझल रखना।

173. दिल्ली में 'मदरसा-ए-फिरोज शाही' उच्च शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र था, जिसकी स्थापना किसके द्वारा की गई थी?

(A) फिरोज शाह तुगलक
(B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) अकबर
(D) औरंगजेब

174. सूची I में दिए गए लेखक को सूची II में दी गई साहित्यिक कृति से सुमेलित कीजिए।

और कविता का श्रवण।
(B) 40 दिनों तक उपवास रखना।
(C) दिन में पांच बार कुरान का पाठ करना।
(D) किसी संत की दरगाह की तीर्थयात्रा करना।

215. 'टंका' और 'जीतल' दिल्ली सल्तनत के दो मूल सिक्के थे, जिन्हें किसके द्वारा प्रारंभ किया गया था?
(A) इल्तुतमिश
(B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक
(D) बलबन

216. मध्यकालीन भारत में हिंदू महिलाओं की स्थिति को निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी द्वारा चिह्नित किया गया था?
(A) समस्त जातियों में विधवा पुनर्विवाह को व्यापक प्रोत्साहन।
(B) कुछ समुदायों में सती प्रथा का प्रचलन।
(C) सीमित संपत्ति अधिकार, मुख्य रूप से 'स्त्रीधन' तक सीमित।
(D) बाल विवाह की प्रथा।

217. मुगल सेना के संदर्भ में 'मनसबदार' थे:
(A) अभिजात वर्ग का एक वर्ग जो एक पद (मनसब) धारण करते थे और एक निश्चित संख्या में घुड़सवारों की आपूर्ति करने के लिए बाध्य थे।
(B) साधारण पैदल सैनिक।
(C) शाही कोष के प्रभारी।
(D) सेना से जुड़े धार्मिक उपदेशक।

218. सिख गुरुओं के जीवन और शिक्षाओं को मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस स्रोत में प्रलेखित किया गया है?
(A) गुरु ग्रंथ साहिब और जन्मसाखियाँ
(B) वेद और उपनिषद
(C) पुराण
(D) त्रिपिटक

219. अकबर की धार्मिक नीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उसने गैर-मुसलमानों पर से जजिया और तीर्थयात्रा कर समाप्त कर दिया।
2. उसने समस्त धर्मों के विद्वानों के साथ धार्मिक विमर्श के लिए इबादत खाना की स्थापना की।
3. उसने 'दीन-ए-इलाही' या 'तौहीद-ए-इलाही' नामक एक नया संश्लेषित मार्ग प्रतिपादित किया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

220. बीजापुर में प्रसिद्ध स्थापत्य कृति, गोल गुंबद, किसके लिए जानी जाती है?
(A) विशाल केंद्रीय गुंबद जो विश्व के सबसे बड़े गुंबदों में से एक है।
(B) जटिल पितरा दुरा जड़ाई का कार्य।
(C) निकटवर्ती चारबाग उद्यान।
(D) लाल बलुआ पत्थर का अग्रभाग।

221. यदि आप 17वीं शताब्दी में एक व्यापारी होते जो भौतिक रूप से नकद ले जाए बिना सूरत से दिल्ली धन प्रेषित करना चाहते थे, तो आपकी सर्वाधिक विश्वसनीय पद्धति क्या होती?
(A) हुंडी (Hundi) का उपयोग करना
(B) चेक (Cheque) का उपयोग करना
(C) बैंक ड्राफ्ट का उपयोग करना
(D) डाक मनी ऑर्डर का उपयोग करना

222. दक्षिण भारत के अलवार और नयनार किसके प्रारंभिक प्रस्तावक थे?
(A) भक्ति आंदोलन
(B) जैन धर्म
(C) बौद्ध धर्म
(D) आजीवक संप्रदाय

223. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: मुगल सम्राट औरंगजेब ने अकबर के समान उदार और सहिष्णु धार्मिक नीति का पालन किया।
कथन II: औरंगजेब का शासनकाल इस्लामी शुद्धतावाद, जजिया को पुनः लागू करने और कुछ हिंदू मंदिरों को नष्ट करने द्वारा चिह्नित था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

224. भक्ति आंदोलन के भीतर 'वैष्णववाद' संप्रदाय की क्या विशेषता है?
(A) भगवान विष्णु, विशेष रूप से उनके अवतार राम और कृष्ण की उपासना।
(B) भगवान शिव और उनके परिवार की उपासना।
(C) मातृ देवी (शक्ति) की उपासना।
(D) एक निराकार, गुणरहित दिव्य सिद्धांत की उपासना।

225. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भारत में मोइनुद्दीन चिश्ती और निजामुद्दीन औलिया जैसे चिश्ती सूफी जनसाधारण के बीच अत्यधिक लोकप्रिय थे।
कारण (R): उन्होंने एक सरल, पवित्र जीवन शैली अपनाई, अपनी शिक्षाओं के लिए स्थानीय भाषाओं का उपयोग किया, और उनकी 'दरगाहें' समस्त धर्मों और जातियों के लोगों के

1. फारसी दरबार की आधिकारिक भाषा थी।
2. इस काल में भारत-फारसी स्थापत्य शैलियों का संश्लेषण देखा गया।
3. क्षेत्रीय भाषाओं और साहित्य को पूर्णतः दमित कर दिया गया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

248. विजयनगर साम्राज्य की 'नयनकार' प्रणाली मुख्य रूप से किसकी एक प्रणाली थी?

(A) सैन्य सेवा के बदले क्षेत्रों (अमरम) पर सैन्य और प्रशासनिक अधिकार सौंपना।
(B) नकद में राजस्व संग्रह।
(C) ग्राम-स्तरीय न्यायिक प्रशासन।
(D) मंदिरों को धार्मिक दान।

249. चिश्ती सूफी सिलसिला भारत में किस पर बल देने के कारण अत्यधिक लोकप्रिय हुआ?

(A) प्रेम, मानवता की सेवा और स्थानीय संस्कृति के साथ सामंजस्य।
(B) राजनीतिक शक्ति और धन संचय।
(C) हठधर्मिता और अनुष्ठान का कठोर पालन।
(D) सैन्य विजय और बलपूर्वक धर्म परिवर्तन।

250. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

कथन I: मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति समस्त जातियों, वर्गों और क्षेत्रों में एक समान थी।

कथन II: महिलाओं की स्थिति और स्वतंत्रता में उनकी सामाजिक स्थिति के आधार पर महत्वपूर्ण भिन्नताएँ थीं, जिसमें शाही और कुलीन महिलाएं प्रायः शिक्षित होती थीं लेकिन अधिक एकांत में भी रहती थीं।

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

251. 'ज़ब्ती' या 'दहसाला' के रूप में जानी जाने वाली मुगल भू-राजस्व प्रणाली का सर्वाधिक उपयुक्त विवरण निम्नलिखित में से कौन-सा है?

(A) फसल साझा करने की एक प्रणाली।
(B) अधीनस्थ सरदारों पर आरोपित कर प्रणाली।
(C) कर खेती (इजारेदारी) की एक प्रणाली।
(D) उत्पादन और कीमतों के दस वर्ष के औसत पर आधारित एक निश्चित राजस्व मांग।

252. राजस्थानी और पहाड़ी जैसी चित्रकला की प्रमुख शैलियों का विकास किससे प्रभावित था?

(A) मुगल शाही संरक्षण में ह्रास, जिसके कारण कलाकारों ने क्षेत्रीय दरबारों में कार्य की खोज की।
(B) यूरोपीय कलाकारों का सीधा हस्तक्षेप।
(C) कला के समस्त रूपों पर प्रतिबंध लगाने वाला एक धार्मिक आदेश।
(D) अमेरिका से नई चित्रकला सामग्री की प्राप्ति।

253. भक्ति संत चैतन्य महाप्रभु भारत के किस क्षेत्र से सर्वाधिक प्रसिद्ध रूप से जुड़े हुए हैं?

(A) बंगाल
(B) महाराष्ट्र
(C) पंजाब
(D) राजस्थान

254. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

अभिकथन (A): मुगल काल में फारसी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य समृद्ध हुआ।

कारण (R): यद्यपि फारसी दरबार और प्रशासन की भाषा थी, भक्ति और सूफी आंदोलनों ने स्थानीय साहित्य की वृद्धि के लिए एक प्रमुख प्रोत्साहन प्रदान किया।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

255. सूफीवाद में 'पीर' और 'मुरीद' की अवधारणा किसके बीच के संबंध को दर्शाती है?

(A) आध्यात्मिक गुरु और शिष्य।
(B) शासक और प्रजा।
(C) पति और पत्नी।
(D) व्यापारी और ग्राहक।

256. निम्नलिखित में से कौन मध्यकालीन भारत में कर नहीं था?

(A) वैट (Value Added Tax)
(B) खराज
(C) जजिया
(D) जकात

257. फतेहपुर सीकरी में अकबर द्वारा 'इबादत खाना' या प्रार्थना गृह किस उद्देश्य से स्थापित किया गया था?

(A) विभिन्न धर्मों के विद्वानों और धर्मशास्त्रियों के साथ विमर्श करने के लिए।
(B) उसके निजी प्रार्थना कक्ष के रूप में सेवा करने के लिए।
(C) विधिक मामलों के लिए सर्वोच्च न्यायालय के रूप में कार्य करने के लिए।
(D) शाही कोष को संग्रहीत करने के लिए।

258. विजयनगर साम्राज्य के सामाजिक जीवन के बारे में सही कथन की पहचान कीजिए।

236. अकबर के प्रशासन और साम्राज्य का विस्तृत विवरण 'आईन-ए-अकबरी' किसके द्वारा लिखा गया था?
(A) अबुल फज़ल
(B) बदायुनी
(C) फैज़ी
(D) टोडरमल

237. महाराष्ट्र के वह भक्ति संत जो शिवाजी के समकालीन थे और अपने 'अभंगों' के लिए जाने जाते हैं, वे हैं:
(A) तुकाराम
(B) संत ज्ञानेश्वर
(C) एकनाथ
(D) नामदेव

238. सल्तनत और मुगल काल के दौरान शहरीकरण की वृद्धि का मुख्य कारण क्या था?
(A) प्रशासन, अभिजात वर्ग और सैन्य शिविरों का संकेंद्रण, जिसने वस्तुओं और सेवाओं की मांग निर्मित की।
(B) कृषि में ह्रास ने लोगों को नगरों की ओर जाने के लिए विवश किया।
(C) यूरोपीय प्रभाव और उपनिवेशीकरण।
(D) ग्रामीणों को बलपूर्वक स्थानांतरित करने की राजकीय नीति।

239. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): औरंगजेब की धार्मिक नीति अकबर की सुलह-ए-कुल की नीति से भिन्न थी।
कारण (R): औरंगजेब की नीतियां इस्लाम की अधिक रुढ़िवादी व्याख्या द्वारा निर्देशित थीं, जिससे जजिया को पुनः लागू किया गया और अन्य उपाय किए गए जिनसे गैर-मुस्लिम विमुख हो गए।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

240. 'गोपुरम्', एक विशाल और अलंकृत प्रवेश द्वार, कहाँ की मंदिर वास्तुकला की एक विशिष्ट विशेषता है?
(A) दक्षिण भारत
(B) उत्तर भारत
(C) गांधार क्षेत्र
(D) पाल साम्राज्य

241. खालसा के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन अशुद्ध है?
(A) यह मुख्य रुप से एक व्यापारिक और वाणिज्यिक संघ (श्रेणी) था।
(B) इसकी स्थापना गुरु गोविंद सिंह ने की थी।
(C) इसने एक 'संत-सिपाही' समुदाय निर्मित किया।
(D) इसके सदस्यों को पांच ककारों (5 Ks) को अपनाना आवश्यक था।

242. 'अद्वैत' (अद्वैतवाद) का दर्शन किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया था?
(A) शंकराचार्य
(B) रामानुजाचार्य
(C) मध्वाचार्य
(D) वल्लभाचार्य

243. उच्च गुणवत्ता वाले सूती और रेशमी वस्त्रों का उत्पादन मध्यकालीन भारत में एक प्रमुख उद्योग था, जिसमें से कौन-सा क्षेत्र अपनी सूक्ष्म मलमल के लिए विशेष रुप से प्रसिद्ध था?
(A) बंगाल
(B) पंजाब
(C) राजस्थान
(D) महाराष्ट्र

244. मुगल सम्राट हुमायूँ के धार्मिक दृष्टिकोण को किस प्रकार वर्णित किया जा सकता है?
(A) संश्लेषित और उनके व्यक्तिगत रहस्यमय विश्वासों से प्रभावित।
(B) अत्यंत रुढ़िवादी और असहिष्णु।
(C) समस्त धर्मों के प्रति उदासीन।
(D) जैन धर्म का अनुयायी।

245. सूची I में दिए गए मध्यकालीन शब्द को सूची II में दिए गए उसके अर्थ से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (शब्द)
P. खुद-काश्त
Q. पाही-काश्त
R. जजिया
S. जकात
सूची II: (अर्थ)
1. गैर-मुसलमानों पर एक कर
2. मुसलमानों पर एक धार्मिक कर
3. एक निवासी स्वयं खेती करने वाला किसान
4. एक गैर-निवासी कृषक
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

246. निम्नलिखित में से कौन भगवान कृष्ण को समर्पित एक प्रसिद्ध महिला भक्ति संत थीं?
(A) मीराबाई
(B) संत ज्ञानेश्वर
(C) तुलसीदास
(D) कबीर

247. मुगलों के अंतर्गत सांस्कृतिक विकास के बारे में निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

अभिकथन (A): औरंगजेब की धार्मिक नीतियों ने मुगल साम्राज्य के पतन में योगदान दिया।
कारण (R): उसकी रुढ़िवादी नीतियों, जैसे कि जजिया को पुनः लागू करना और मंदिरों को नष्ट करना, ने गैर-मुस्लिम जनसंख्या के बड़े वर्गों, विशेष रूप से राजपूतों और मराठों को विमुख कर दिया, जिससे विद्रोह हुए जिन्होंने साम्राज्य को दुर्बल कर दिया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

185. मध्यकालीन भारत में सामान्य जन के वस्त्र सामान्यतः थे:
(A) सरल और स्थानीय रूप से उपलब्ध कपास से निर्मित।
(B) बहुमूल्य रेशम और ब्रोकेड से निर्मित।
(C) यूरोप से आयातित।
(D) सम्राट द्वारा निर्धारित, संपूर्ण देश में एक समान।

186. मध्यकालीन हिंदू समाज में महिलाओं की स्थिति के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही कथन है?
(A) 'सती' प्रथा और बाल विवाह का प्रचलन था, विशेष रूप से कुछ समुदायों और क्षेत्रों में।
(B) विधवा पुनर्विवाह को समस्त जातियों में व्यापक रूप से प्रोत्साहित और प्रचलित किया गया था।
(C) 'पर्दा' प्रणाली पूर्णतः अस्तित्व में नहीं थी।
(D) पैतृक संपत्ति में महिलाओं के उत्तराधिकार के समान अधिकार थे।

187. 'सूफी' शब्द का मूल अरबी शब्द 'सूफ' माना जाता है, जिसका अर्थ है:
(A) ऊन, प्रारंभिक रहस्यवादियों द्वारा धारण किए जाने वाले मोटे ऊनी वस्त्रों के संदर्भ में।
(B) प्रज्ञा, उनके दार्शनिक ज्ञान के संदर्भ में।
(C) तलवार, पवित्र योद्धाओं के रूप में उनकी भूमिका के संदर्भ में।
(D) पवित्रता, उनके हृदय की पावनता के संदर्भ में।

188. विजयनगर शैली की वास्तुकला को भारतीय मंदिर वास्तुकला की किस व्यापक परंपरा का भाग माना जाता है?
(A) द्रविड़ शैली
(B) नागर शैली
(C) वेसर शैली
(D) गांधार शैली

189. सूची I में दिए गए भक्ति संत को सूची II में दी गई भक्ति के मुख्य देवता से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (भक्ति संत)
P. मीराबाई
Q. तुलसीदास
R. चैतन्य
S. तुकाराम
सूची II: (भक्ति के मुख्य देवता)
1. राम
2. कृष्ण (विठोबा के रूप में)
3. कृष्ण
4. कृष्ण
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

190. शाही दरबार में औरंगजेब द्वारा संगीत पर प्रतिबंध लगाने का क्या प्रभाव पड़ा?
(A) इसके कारण संगीतकारों ने क्षेत्रीय अभिजात वर्ग और सूबेदारों के दरबारों में संरक्षण प्राप्त किया, जिससे क्षेत्रीय संगीत शैलियों का विकेंद्रीकरण और विकास हुआ।
(B) इसके कारण भारत में शास्त्रीय संगीत पूर्णतः समाप्त हो गया।
(C) इसके कारण संगीत के एक नए शांत, ध्यानपूर्ण रूप का विकास हुआ।
(D) इसका कोई वास्तविक प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि प्रतिबंध कभी पूर्णतः लागू नहीं किया गया था।

191. मुगलों के अंतर्गत भू-राजस्व प्रणाली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ज़ब्ती या दहसाला प्रणाली भूमि की माप और औसत उपज पर आधारित थी।
2. बटाई प्रणाली में राज्य और किसान के बीच वास्तविक फसल का साझाकरण सम्मिलित था।
3. नसक प्रणाली किसी गाँव या बड़े क्षेत्र के लिए समूह मूल्यांकन की एक पद्धति थी।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

192. सिख धर्मग्रंथ, आदि ग्रंथ, को इसके अंतिम रूप में किसके द्वारा संकलित और संपादित किया गया था?
(A) गुरु नानक
(B) गुरु अर्जुन देव
(C) गुरु गोविंद सिंह
(D) बंदा बहादुर

193. वल्लभाचार्य का धार्मिक दर्शन, जो ईश्वर की कृपा के माध्यम से मुक्ति पर बल देता है, किस नाम से जाना जाता है?
(A) पुष्टिमार्ग
(B) अद्वैत
(C) द्वैत
(D) विशिष्टाद्वैत

(A) मंदिर सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र था।
(B) यह एक जातिविहीन समाज था।
(C) महिलाओं को उच्च स्तर प्राप्त था और सती जैसी प्रथाएं विद्यमान नहीं थीं।
(D) व्यवहार में आने वाली प्राथमिक भाषा फारसी थी।

259. किस सिख गुरु को मुगल सम्राट औरंगजेब के आदेश पर मृत्युदंड दिया गया था?
(A) गुरु तेग बहादुर
(B) गुरु अर्जुन देव
(C) गुरु हरगोविंद
(D) गुरु गोविंद सिंह

260. संगमरमर पर अर्ध-बहुमूल्य पत्थरों को जड़ने की स्थापत्य विशेषता 'पितरा दुरा' किस स्मारक में सर्वाधिक प्रमुखता से दिखाई देती है?
(A) ताजमहल
(B) कुतुब मीनार
(C) गोल गुंबद
(D) बृहदेश्वर मंदिर

261. निम्नलिखित भक्ति संतों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. शंकराचार्य
2. रामानुज
3. कबीर
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 1, 3, 2

262. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: मध्यकालीन भारत में परिवहन के साधन अत्यधिक उन्नत थे, जिसमें राजमार्गों और रेलवे का संजाल था।
कथन II: आंतरिक व्यापार व्यापक रूप से नदी परिवहन और भारवाही पशुओं तथा बैलगाड़ियों का उपयोग करने वाले स्थलीय काफिलों पर निर्भर था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

263. मीराबाई के भक्ति गीत किस भाषा/बोली में रचित थे?
(A) ब्रज भाषा और राजस्थानी
(B) बंगाली
(C) मराठी
(D) तेलुगु

264. मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली का प्राथमिक उद्देश्य था:
(A) धार्मिक ज्ञान प्रदान करना और व्यक्तियों को राजकीय सेवा के लिए प्रशिक्षित करना।
(B) धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक मूल्यों को प्रोत्साहित करना।
(C) आलोचनात्मक सोच और असहमति को प्रोत्साहित करना।
(D) जनसाधारण को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना।

265. औरंगजेब की धार्मिक नीति के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा एक अशुद्ध कथन है?
(A) उसने अपने दरबार में संगीत और चित्रकला को संरक्षण प्रदान किया।
(B) उसने गैर-मुसलमानों पर जजिया को पुनः लागू किया।
(C) उसने कई दरबारी समारोहों को बंद कर दिया जिन्हें वह गैर-इस्लामी मानता था।
(D) उसने कुछ हिंदू मंदिरों को नष्ट करने का आदेश दिया।

266. भक्ति आंदोलन की दो मुख्य शाखाएँ, निर्गुण और सगुण, किस आधार पर भिन्न थीं?
(A) ईश्वर की निराकार या साकार रूप में उनकी अवधारणा।
(B) उनका भौगोलिक स्थान।
(C) उनके अनुयायियों की जाति।
(D) उनकी राजनीतिक संबद्धता।

267. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): विजयनगर साम्राज्य की आर्थिक स्थिति समृद्ध थी।
कारण (R): साम्राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था पल्लवित हो रही थी और मसालों एवं वस्त्रों में एक लाभदायक विदेशी व्यापार पर इसका नियंत्रण था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

268. भगवद गीता पर एक प्रसिद्ध टीका 'ज्ञानेश्वरी' किसके द्वारा लिखी गई थी?
(A) संत ज्ञानेश्वर
(B) तुकाराम
(C) एकनाथ
(D) नामदेव

269. मध्यकालीन भारत में 'अशरफ' और 'अजलाफ' किस समुदाय के भीतर के सामाजिक विभाजन थे?
(A) मुस्लिम समाज
(B) हिंदू समाज
(C) सिख समाज
(D) जैन समाज

270. सूची I में दी गई स्थापत्य शैली/विशेषता को सूची II में दिए गए संबंधित वंश/शासक से सुमेलित कीजिए।

मांग ने शिल्पकारों एवं व्यापारियों को आकर्षित किया, जिससे नगरों का विकास हुआ। व्यापार मार्गों पर सरायों की स्थापना एवं मुद्रा व्यवस्था के मानकीकरण ने भी आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाकर नगरों के विस्तार में योगदान दिया था।

31. (A) तुगलक शैली
तुगलक वंश के दौरान विकसित स्थापत्य शैली अपनी सादगी एवं सुदृढ़ता हेतु जानी जाती है। इस शैली की प्रमुख विशेषता दीवारों का अंदर की ओर झुकाव था, जो भवनों को स्थायित्व प्रदान करता था। इसमें लाल बलुआ पत्थर के स्थान पर धूसर पाषाण का उपयोग अधिक किया गया। ऊंचे चबूतरों पर निर्मित ये संरचनाएं और विशाल गोलाकार बुर्ज इन्हें सुरक्षात्मक दुर्ग जैसा रूप प्रदान करते थे। गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा इस विशिष्ट निर्माण कला का एक प्रमुख उदाहरण है।

32. (B) कबीर
कबीर पंद्रहवीं शताब्दी के एक क्रांतिकारी भक्ति संत थे जो रामानंद के शिष्यों में सर्वाधिक प्रभावशाली माने जाते हैं। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से धार्मिक कर्मकांडों, मूर्तिपूजा और जातिगत भेदभाव पर कड़ा प्रहार किया। उनकी शिक्षाएं ईश्वर के निर्गुण एवं निराकार रूप पर आधारित थीं, जो हिंदू एवं मुस्लिम दोनों समुदायों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास करती थीं। कबीर की वाणी ने भारतीय समाज में आध्यात्मिक जागृति एवं सामाजिक समानता हेतु एक सुदृढ़ मंच तैयार किया था।

33. (B) जजिया
जजिया मध्यकालीन भारत में गैर-मुस्लिम प्रजा पर आरोपित एक धार्मिक कर था। यह कर शासकों द्वारा उन लोगों से लिया जाता था जो इस्लाम स्वीकार नहीं करते थे, और इसके प्रतिफल स्वरूप उन्हें राज्य की ओर से सुरक्षा प्रदान की जाती थी। अकबर ने इस कर को अपनी उदारवादी नीति के अंतर्गत समाप्त कर दिया था, किंतु कालांतर में औरंगजेब ने इसे पुनः लागू किया। यह कर प्रायः आर्थिक भार और सामाजिक भेदभाव का प्रतीक माना जाता था।

34. (A) 2, 4, 3, 1
मुगल साम्राज्य के शासकों का क्रम भारतीय इतिहास की राजनीतिक दिशा निर्धारित करता है। साम्राज्य की आधारशिला बाबर ने रखी, जिसके पश्चात हुमायूँ सत्तारूढ़ हुआ। हुमायूँ के बाद अकबर ने साम्राज्य को सुदृढ़ किया और एक महान शासक के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। अकबर का उत्तराधिकारी जहाँगीर बना, और जहाँगीर के पश्चात शाहजहाँ ने शासन संभाला। अंततः औरंगजेब ने कमान संभाली। यह कालक्रम मुगल सत्ता के उदय, विस्तार और कला के स्वर्ण युग के विभिन्न चरणों को दर्शाता है।

35. (C) विजयनगर साम्राज्य
विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था में नयनकार प्रणाली का महत्वपूर्ण स्थान था। इस व्यवस्था के अंतर्गत साम्राज्य को 'अमरम' नामक क्षेत्रों में विभाजित किया गया था, जिन्हें 'नायक' नामक सैन्य कमांडरों को सौंपा जाता था। ये नायक उन क्षेत्रों से राजस्व संग्रह करते थे और बदले में सम्राट को सैन्य सहायता एवं निश्चित वार्षिक शुल्क प्रदान करते थे। यह प्रणाली न केवल प्रशासन को विकेंद्रीकृत करने का साधन थी, अपितु इसने साम्राज्य की सैन्य शक्ति को सुदृढ़ बनाया।

36. (D) पुरुषों के पहनावे का हिस्सा बनने वाले सामान्य वस्त्र।
मध्यकालीन भारतीय पुरुषों के परिधान में जामा एवं पाजामा अत्यंत महत्वपूर्ण वस्त्र थे। जामा एक प्रकार का लंबा कोट अथवा अंगरखा होता था जिसे कटि पर बांधा जाता था और यह घुटनों तक अथवा उससे नीचे तक आता था। इसके साथ अधोवस्त्र के रूप में पाजामा धारण किया जाता था। यह वेशभूषा न केवल मुगल दरबार के कुलीन वर्ग में प्रचलित थी, अपितु इसे समाज के अन्य संपन्न वर्गों ने भी अपनाया। यह उस काल की सांस्कृतिक समन्वय को दर्शाता है।

37. (B) केवल 1 और 2
विजयनगर साम्राज्य के शासक कला एवं साहित्य के महान संरक्षक थे, जिसके कारण उनके काल में अनेक भाषाओं का विकास हुआ। उन्होंने संस्कृत के साथ-साथ तेलुगु, कन्नड़ एवं तमिल साहित्य को भी प्रोत्साहित किया। महान शासक कृष्णदेवराय स्वयं एक विद्वान लेखक थे, जिन्होंने प्रसिद्ध तेलुगु कृति 'अमुक्तमाल्यद' की रचना की थी। इस अवधि का साहित्य न केवल धार्मिक विषयों तक सीमित था, अपितु इसमें व्याकरण, संगीत, राजनीति एवं ऐतिहासिक घटनाओं का भी विस्तृत वर्णन मिलता है।

38. (B) स्त्री तत्व, देवी या शक्ति, परम सत्य के रूप में।
शाक्त धर्म मध्यकालीन भारत का एक प्रभावशाली संप्रदाय था जो देवी अथवा शक्ति की उपासना पर केंद्रित था। इस विचारधारा में स्त्री तत्व को सृष्टि की सर्वोच्च शक्ति एवं परम सत्य के रूप में स्वीकार किया गया है। भक्त देवी को दुर्गा, काली अथवा लक्ष्मी जैसे विभिन्न रूपों में पूजते थे। यह संप्रदाय विशेष रूप से बंगाल एवं असम के क्षेत्रों में अत्यंत लोकप्रिय था। शाक्त परंपरा ने तंत्र एवं भक्ति के मेल से एक विशिष्ट आध्यात्मिक मार्ग तैयार किया था।

39. (D) कृषि में सिंचाई
मध्यकालीन भारतीय कृषि में 'रहट' अथवा पर्सियन व्हील का उपयोग एक क्रांतिकारी तकनीकी विकास था। यह सिंचाई की ऐसी प्रणाली थी जिसमें पशु शक्ति का उपयोग कर कूपों से जल निकाला जाता था। इसके माध्यम से सुदूर खेतों तक जल पहुँचाना सुगम हो गया, जिससे पैदावार में वृद्धि हुई और वर्ष में एक से अधिक फसलें उगाना संभव हुआ। सिंचाई के इस साधन ने विशेष रूप से उत्तर भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया और जीवन स्तर को सुधारा।

40. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
मुगल साम्राज्य के प्रारंभिक वर्षों में बाबर एवं हुमायूँ का मुख्य ध्यान अपनी सत्ता सुदृढ़ करने और साम्राज्य विस्तार पर था। वे धार्मिक रूप से कट्टर नहीं थे और अपनी बहुसंख्यक हिंदू प्रजा के प्रति प्रायः सहिष्णुता की व्यावहारिक नीति का अनुपालन करते थे। यद्यपि उनके शासनकाल में कोई संगठित उदारवादी नीति नहीं थी, किंतु उन्होंने दमनकारी धार्मिक उत्पीड़न को भी प्रोत्साहित नहीं किया। उनकी प्राथमिकता प्रशासनिक स्थिरता

281. लाल बलुआ पत्थर और श्वेत संगमरमर का एक साथ उपयोग किस मुगल सम्राट के शासनकाल की वास्तुकला की एक प्रमुख विशेषता है, जो एक संक्रमण को चिह्नित करता है?
(A) हुमायूँ और अकबर
(B) बाबर
(C) जहाँगीर और शाहजहाँ
(D) औरंगजेब

282. 'आदि ग्रंथ' में सिख गुरुओं की शिक्षाओं के साथ-साथ किन संतों की शिक्षाएँ भी सम्मिलित हैं?
(A) कबीर, रविदास और बाबा फरीद
(B) शंकराचार्य और रामानुज
(C) चैतन्य और वल्लभाचार्य
(D) तुलसीदास और सूरदास

283. मुगल काल के दौरान विदेशी व्यापार की क्या स्थिति थी?
(A) यह जीवंत था, भारत का व्यापार संतुलन अनुकूल था, और आयात की तुलना में निर्यात अधिक था।
(B) इस पर पूर्णतः प्रतिबंध था।
(C) यह नगण्य था और अर्थव्यवस्था पर इसका कोई प्रभाव नहीं था।
(D) यह पूर्णतः सरकार द्वारा नियंत्रित था जिसमें कोई निजी व्यापारी नहीं थे।

284. निम्नलिखित में से कौन मध्यकाल के दौरान दक्षिण भारत में वास्तुकला के विकास की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) अलंकृत गोपुरों और मंडपों के साथ विशाल मंदिर परिसरों का निर्माण।
(B) वास्तविक मेहराब और गुंबद का उपयोग।
(C) लाल बलुआ पत्थर का विशेष उपयोग।
(D) बड़े स्तूपों और विहारों का निर्माण।

285. विभिन्न दार्शनिक संप्रदायों और उनके समर्थकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. शंकराचार्य : अद्वैत
2. रामानुजाचार्य : विशिष्टाद्वैत
3. मध्वाचार्य : द्वैत
ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

286. मध्यकालीन भारत में 'मकतब' मुख्य रूप से किसके केंद्र थे?
(A) प्राथमिक शिक्षा
(B) उच्च शिक्षा
(C) सैन्य प्रशिक्षण
(D) व्यावसायिक प्रशिक्षण

287. मुगल प्रशासन में 'खालसा' शब्द किसे संदर्भित करता था?
(A) वह भूमि जिसका राजस्व शाही कोष के लिए आरक्षित था।
(B) धार्मिक व्यक्तियों को दान में दी गई भूमि।
(C) अभिजात वर्ग को जागीर के रूप में आवंटित भूमि।
(D) बिना खेती वाली बंजर भूमि।

288. विजयनगर साम्राज्य के सामाजिक जीवन की सर्वाधिक विशिष्ट विशेषता क्या थी?
(A) मंदिर-केंद्रित गतिविधियों की प्रमुखता।
(B) जाति व्यवस्था की अनुपस्थिति।
(C) महिलाओं के लिए पूर्ण समानता।
(D) फारसी संस्कृति का प्रभुत्व।

289. सिख गुरुओं की शिक्षाओं ने किस पर विशेष बल दिया?
(A) एकेश्वरवाद, सामाजिक समानता और नैतिक आचरण।
(B) कर्मकांड और मूर्तिपूजा।
(C) जाति व्यवस्था।
(D) तपस्या और संसार से विरक्ति।

290. औरंगजेब की धार्मिक नीति किसके द्वारा चिह्नित थी?
(A) इस्लामी कट्टरपंथ की ओर झुकाव।
(B) उदारवाद और समस्त धर्मों को संरक्षण।
(C) एक नए धर्म का सृजन।
(D) धार्मिक मामलों के प्रति उदासीनता।

291. मध्यकाल में भारतीय निर्यात की एक प्रमुख वस्तु निम्नलिखित में से कौन-सी थी?
(A) मसाले और वस्त्र
(B) भारी मशीनरी
(C) स्वर्ण और रजत
(D) घोड़े

292. भक्ति के 'पुष्टिमार्ग' संप्रदाय की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) वल्लभाचार्य
(B) रामानंद
(C) कबीर
(D) चैतन्य

293. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: चित्रकला की मुगल शैली फारसी और भारतीय शैलियों का मिश्रण थी।
कथन II: यह सम्राट औरंगजेब के शासनकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची, जो कला के महान संरक्षक थे।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

294. प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन किस मुगल सम्राट के दरबार का भाग थे?

सूची I: (स्थापत्य शैली/विशेषता)
P. बुलंद दरवाजा
Q. गोल गुंबद
R. कुतुब मीनार
S. संगमरमर और पितरा दुरा का उपयोग
सूची II: (संबंधित वंश/शासक)
1. दिल्ली सल्तनत (कुतुब-उद-दीन ऐबक)
2. बीजापुर का आदिल शाही वंश
3. अकबर (मुगल)
4. शाहजहाँ (मुगल)
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

271. निम्नलिखित में से कौन मध्यकालीन हिंदू समाज की सामाजिक स्थितियों का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(A) वर्ण और जाति व्यवस्था के इर्द-गिर्द संरचित समाज, जिसमें पदानुक्रमित विभाजन थे।
(B) एक जातिविहीन और समतावादी सामाजिक व्यवस्था।
(C) जनजातीय रीति-रिवाजों के प्रभुत्व वाला समाज।
(D) एक समाज जहाँ सामाजिक गतिशीलता अत्यधिक उच्च और सुलभ थी।

272. मुगल-सिख संबंधों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. बाबर के अंतर्गत प्रारंभ से ही संबंध शत्रुतापूर्ण थे।
2. गुरु तेग बहादुर की शहादत जहाँगीर के शासनकाल में हुई थी।
3. खालसा की स्थापना मुगल दमन की सीधी प्रतिक्रिया थी।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

273. 'दीवान-ए-खास' और 'दीवान-ए-आम' किस साम्राज्य की महल वास्तुकला की विशेषताएं थीं?
(A) मुगल
(B) विजयनगर
(C) चोल
(D) मौर्य

274. सूफी अवधारणा 'वहदत-उल-वुजूद' का अर्थ है:
(A) अस्तित्व की एकता
(B) ईश्वर की एकता
(C) पैगंबरों की एकता
(D) विधान की एकता

275. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: भक्ति आंदोलन विश्वासों के एक समूह वाला एक अखंड आंदोलन था।
कथन II: इसमें सगुण से निर्गुण और वैष्णववाद से शैववाद तक के संतों और विश्वासों की एक विस्तृत विविधता सम्मिलित थी।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

276. मध्यकालीन भारत में राज्य की आय का मुख्य स्रोत क्या था?
(A) भू-राजस्व
(B) आयकर
(C) विदेशी व्यापार पर सीमा शुल्क
(D) विदेशों से प्राप्त उपहार

277. चित्रकला की 'राजस्थानी' शैली किसके विषयों के चित्रण के लिए जानी जाती है?
(A) रामायण और महाभारत जैसे हिंदू महाकाव्य और कृष्ण लीला।
(B) बुद्ध का जीवन।
(C) मुगल दरबारी जीवन।
(D) बाइबिल।

278. किस मुगल सम्राट की धार्मिक नीति को 'सुलह-ए-कुल' (सर्वधर्म सद्भाव) शब्द से पहचाना जाता है?
(A) अकबर
(B) बाबर
(C) शाहजहाँ
(D) औरंगजेब

279. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): मध्यकालीन भारत में कुछ अर्थों में महिलाओं की स्थिति का ह्रास हुआ।
कारण (R): सती, जौहर, बाल विवाह जैसी प्रथाओं के प्रचलन और पर्दा प्रथा के प्रसार ने इस गिरावट में योगदान दिया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

280. 'वारकरी' परंपरा को लोकप्रिय बनाने वाले सर्वाधिक प्रमुख मराठी भक्ति संत कौन थे?
(A) तुकाराम
(B) रामानंद
(C) कबीर
(D) तुलसीदास

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) उनके पास सीमित अधिकार थे, मुख्य रूप से 'स्त्रीधन' पर, जिसमें विवाह के समय प्राप्त उपहार सम्मिलित थे।
मध्यकालीन भारतीय समाज में हिंदू महिलाओं के संपत्ति अधिकार अत्यंत सीमित थे। उन्हें मुख्य रूप से 'स्त्रीधन' पर अधिकार प्राप्त था, जिसमें विवाह के समय प्राप्त उपहार एवं आभूषण सम्मिलित थे। पैतृक संपत्ति पर उनका अधिकार नगण्य था और वे पुरुषों के समान वैधानिक अधिकार नहीं रखती थीं। पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के कारण महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता संकुचित रही और वे पूर्ण स्वामित्व से वंचित रहीं।

2. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन कोई अखंड विचारधारा नहीं थी, अपितु यह विभिन्न दर्शनों और पद्धतियों का एक विविध समूह था। इसमें निर्गुण एवं सगुण जैसी दो प्रमुख धाराएं विद्यमान थीं। कबीर और गुरु नानक ने निराकार ईश्वर की उपासना पर बल दिया, जिसे निर्गुण भक्ति कहा जाता है। इसके विपरीत, तुलसीदास और मीराबाई जैसे संतों ने साकार रूप की सगुण भक्ति को अपनाया जो वैचारिक विविधता को दर्शाता है।

3. (C) संगमरमर में बहुमूल्य और अर्ध-बहुमूल्य पत्थरों की जड़ाई।
मुगल वास्तुकला में 'पितरा दुरा' एक परिष्कृत सजावटी तकनीक थी जिसका उपयोग भवनों का सौंदर्य बढ़ाने के लिए किया जाता था। इस विधि में श्वेत संगमरमर के पत्थरों को तराशकर उनमें बहुमूल्य एवं अर्ध-कीमती रंगीन पत्थरों को जड़ा जाता था। शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान इस कला का सर्वाधिक विकास हुआ। इसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण ताजमहल और एतमाद-उद-दौला के मकबरे की दीवारों पर निर्मित जटिल पुष्प डिजाइनों में देखा जा सकता है।

4. (D) कंपनी शैली
भारत के मध्यकाल में मुगल, राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला शैलियाँ अपनी पराकाष्ठा पर थीं। ये शैलियाँ स्थानीय राजदरबारों और शासकों के संरक्षण में विकसित हुई थीं। कंपनी शैली का उद्भव आधुनिक काल में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के दौरान हुआ था। यह शैली भारतीय एवं यूरोपीय तत्वों का मिश्रण थी, जो मध्यकालीन भारतीय चित्रकला परंपराओं का भाग नहीं थी। अतः यह शैली उस ऐतिहासिक कालखंड से संबंधित नहीं है।

5. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अकबर के शासनकाल में राजा टोडरमल द्वारा विकसित दहसाला प्रणाली भू-राजस्व प्रशासन का एक क्रांतिकारी सुधार था। यह प्रणाली विगत दस वर्षों के दौरान फसलों की पैदावार और प्रचलित मूल्यों के औसत आंकड़ों पर आधारित थी। इसका मुख्य उद्देश्य राजस्व की मांग में अनिश्चितता को समाप्त करना और कृषकों के लिए एक स्थिर कर ढांचा प्रदान करना था। भूमि की उचित पैमाइश एवं वर्गीकरण ने इस प्रशासनिक नवाचार को सफल बनाया।

6. (B) महिलाएं पूर्णतः पृथक थीं और उन्होंने किसी भी सार्वजनिक या आर्थिक जीवन में भाग नहीं लिया।
विजयनगर साम्राज्य में महिलाओं की सामाजिक भूमिका सक्रिय थी, जहाँ वे प्रशासन, व्यापार एवं युद्ध कौशल में भाग लेती थीं। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने और संगीत जैसे कला रूपों में निपुण होने की स्वतंत्रता प्राप्त थी। समाज में सती प्रथा एवं बहुविवाह प्रचलित थे, तथापि महिलाओं की स्थिति पूर्णतः पृथक नहीं थी। मंदिर सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र थे और जाति व्यवस्था ने समाज को विभिन्न स्तरों पर विभाजित किया था।

7. (D) पहले पांच सिख गुरु और नौवें गुरु की।
सिख धर्म के पवित्र ग्रंथ आदि ग्रंथ का संकलन मुख्य रूप से आध्यात्मिक उपदेशों का संग्रह है। इसमें प्रथम पांच सिख गुरुओं की शिक्षाओं के साथ-साथ नौवें गुरु, तेग बहादुर की रचनाओं को भी विशेष स्थान दिया गया है। गुरु अर्जुन देव ने इस संकलन कार्य को पूर्ण किया था। इस ग्रंथ में विभिन्न समुदायों के भक्ति संतों की वाणी भी सम्मिलित है, जो भारतीय समाज के विविध सांस्कृतिक संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करती है।

8. (A) जागीर
जागीर प्रणाली मध्यकालीन भारत में प्रशासनिक एवं सैन्य व्यवस्था का एक अभिन्न अंग थी। इसमें राज्य के कुलीन अधिकारियों को उनके वेतन और सेवाओं के प्रतिफल स्वरूप विशिष्ट भूमि क्षेत्रों का राजस्व अधिकार प्रदान किया जाता था। यह अनुदान प्रायः वंशानुगत प्रकृति का होता था, जो जागीरदारों को उस क्षेत्र से कर संग्रह की अनुमति देता था। यह व्यवस्था केंद्रीय सत्ता और स्थानीय प्रशासन के मध्य राजस्व हस्तांतरण का प्रमुख माध्यम थी।

9. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
मध्यकालीन भारतीय दर्शन में शंकराचार्य ने अद्वैत वेदांत के माध्यम से आत्मा और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन किया। रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत का दर्शन दिया, जो भक्ति एवं ज्ञान के समन्वय पर आधारित था। वल्लभाचार्य ने पुष्टिमार्ग के अंतर्गत कृष्ण भक्ति को प्रोत्साहित किया, जबकि कबीर ने निर्गुण भक्ति के माध्यम से निराकार ईश्वर की उपासना का संदेश दिया। इन विभिन्न मतों ने भारतीय समाज की दार्शनिक चेतना को समृद्ध किया था।

10. (A) चौपड़ (एक पारंपरिक बोर्ड गेम)
मध्यकालीन भारतीय समाज में चौपड़ मनोरंजन का एक अत्यंत लोकप्रिय एवं पारंपरिक खेल था। इसका आनंद राजपरिवारों

भारतीय एवं फारसी संगीत का सुंदर मिश्रण किया। अकबर स्वयं संगीत प्रेमी था और उसके दरबार में तानसेन जैसे महान संगीतज्ञ थे। संगीत ने विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने का सशक्त माध्यम प्रदान किया।

51. (C) विजयनगर साम्राज्य
विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत मंदिर वास्तुकला ने भव्य रूप धारण किया, जिसकी विशिष्ट पहचान 'गोपुरम्' थे। ये मंदिर के प्रवेश द्वार पर निर्मित विशाल एवं अलंकृत मीनारें होती थीं, जो दूर से ही श्रद्धालुओं को आकर्षित करती थीं। इन गोपुरों पर देवी-देवताओं एवं पौराणिक कथाओं की सुंदर नक्काशी की जाती थी। हम्पी के मंदिरों में इनके उत्कृष्ट उदाहरण देखे जा सकते हैं। इस स्थापत्य शैली ने दक्षिण भारतीय मंदिरों को आध्यात्मिक एवं दृश्य रूप में राजसी गरिमा प्रदान की थी।

52. (D) अद्वैत (Non-dualism)
आदि शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित 'अद्वैत' दर्शन भारतीय चिंतन परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'दो नहीं', जो आत्मा एवं परमात्मा की पूर्ण एकता पर बल देता है। शंकराचार्य के अनुसार, केवल ब्रह्म ही सत्य है और यह जगत माया है। ज्ञान के माध्यम से इस अद्वैत भाव को अनुभव करना ही मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र मार्ग बताया गया है। उनके इस तर्कसंगत दर्शन ने हिंदू धर्म के पुनरुत्थान और दार्शनिक सुदृढ़ीकरण में क्रांतिकारी भूमिका निभाई।

53. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
मध्यकालीन भारत में आहार संबंधी आदतें सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के अनुसार भिन्न थीं। जहाँ सम्राट एवं कुलीन वर्ग विविध मांसाहारी व्यंजनों, पुलाव, कबाब एवं आयातित मेवों का सेवन करते थे, वहीं सामान्य जनता का आहार अत्यंत सरल था। साधारण लोग मुख्य रूप से दाल, चावल, मोटे अनाज एवं स्थानीय शाक-सब्जियों पर निर्भर थे। क्षेत्रीय जलवायु एवं धार्मिक विश्वासों ने भी आहार पद्धतियों को प्रभावित किया, जिससे भारतीय पाक कला में एक समृद्ध एवं विविध विरासत का निर्माण हुआ।

54. (B) व्यापक रूप से अकबर की उदार नीतियों की निरंतरता, यद्यपि कट्टरपंथ के कुछ व्यक्तिगत उदाहरणों के साथ।
जहाँगीर की धार्मिक नीति अधिकांशतः उसके पिता अकबर के उदारवादी सिद्धांतों की निरंतरता थी। उसने सभी समुदायों को अपने धर्म के अनुपालन की स्वतंत्रता प्रदान की और वह स्वयं भी विभिन्न मतों के विद्वानों से संवाद करता था। यद्यपि गुरु अर्जुन देव को मृत्युदंड देने जैसी कुछ घटनाएं राजनीतिक विवादों के कारण हुईं, फिर भी उसका समग्र शासनकाल धार्मिक सहिष्णुता के वातावरण से युक्त था। उसके समय में कला के अन्य रूपों में भी धार्मिक समन्वय की स्पष्ट झलक मिलती है।

55. (A) 4, 3, 1, 2
सिख धर्म के गुरुओं की परंपरा ने समाज को नवीन दिशा प्रदान की। गुरु नानक के पश्चात गुरु अंगद देव ने कमान संभाली और गुरुमुखी लिपि को लोकप्रिय बनाया। उनके पश्चात गुरु रामदास ने अमृतसर नगर की आधारशिला रखी। पांचवें गुरु अर्जुन देव ने आदि ग्रंथ का संकलन किया और हरमंदिर साहिब का निर्माण कराया। उनके पश्चात गुरु हरगोविंद ने सिखों में सैन्य भावना का संचार किया। यह क्रमिक नेतृत्व सिख धर्म के आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास के विभिन्न चरणों को स्पष्ट करता है।

56. (A) शत्रुओं द्वारा बंदी बनाए जाने और अपमान से बचने के लिए महिलाओं द्वारा सामूहिक आत्मदाह।
मध्यकालीन राजपूत संस्कृति में 'जौहर' की प्रथा वीरता एवं आत्मसम्मान के सर्वोच्च बलिदान का प्रतीक थी। जब युद्ध में पराजय निश्चित हो जाती थी और दुर्ग की रक्षा असंभव होती थी, तब राजपूत महिलाएं अपने सत्व एवं सम्मान की रक्षा हेतु सामूहिक रूप से अग्नि में समर्पित होकर प्राण त्याग देती थीं। यह अत्यंत कठिन निर्णय शत्रुओं के हाथों बंदी बनने एवं अपमानित होने से बचने के लिए लिया जाता था। चित्तौड़ के इतिहास में जौहर की घटनाएं त्याग की मिसालें हैं।

57. (C) ताम्रलिप्ति
मध्यकालीन भारत में समुद्री व्यापार अत्यंत विकसित था और पश्चिमी तट पर कई महत्वपूर्ण पत्तन स्थित थे। सूरत, कालीकट एवं खंभात जैसे पत्तन अरब तथा यूरोप के साथ व्यापार के प्रमुख केंद्र थे जहाँ से वस्त्रों एवं मसालों का आदान-प्रदान होता था। ताम्रलिप्ति बंगाल के पूर्वी तट पर स्थित एक प्राचीन पत्तन था, जो दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापार हेतु विख्यात था। पश्चिमी तट के इन व्यापारिक केंद्रों ने भारत की आर्थिक समृद्धि एवं सांस्कृतिक विनिमय में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

58. (A) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती
भारत में चिश्ती सूफी सिलसिले की नींव ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती द्वारा 12वीं शताब्दी के अंत में रखी गई थी। उन्होंने अजमेर को अपना मुख्य केंद्र बनाया और सादगी, प्रेम एवं ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का संदेश दिया। चिश्ती संतों ने जनसाधारण के मध्य रहने और उनकी समस्याओं को समझने पर बल दिया, जिससे वे अत्यधिक लोकप्रिय हुए। इस सिलसिले की शिक्षाओं ने मानवता की सेवा को ही सर्वोपरि माना। अजमेर की दरगाह आज भी सभी समुदायों के लिए श्रद्धा का केंद्र है।

59. (C) P-2, Q-1, R-4, S-3
मध्यकालीन राजस्व व्यवस्था में विभिन्न पदों का विशिष्ट महत्व था। खराज भूमि पर आरोपित कृषि कर था, जबकि खुम्स युद्ध में अधिगृहीत संपत्ति का वह भाग था जो राज्य को प्राप्त होता था। खालसा उन भूमियों को कहा जाता था जिनका राजस्व सीधे शाही कोष में जमा होता था। बटाई प्रणाली के अंतर्गत कृषक एवं राज्य के मध्य फसल का वास्तविक विभाजन होता था। इन नियमों ने साम्राज्य की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित की और कृषि उत्पादन के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

60. (B) दरबार और सेना की आवश्यकताओं के लिए विलासिता की वस्तुओं एवं सामग्रियों का निर्माण और आपूर्ति करना।
मध्यकालीन भारत में 'कारखाने' शाही कार्यशालाएं थीं जो सम्राट एवं सेना की विविध आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु

किया था। बड़े तालाबों एवं बांधों का निर्माण तुंगभद्रा जैसी नदियों पर किया गया ताकि शुष्क क्षेत्रों में भी कृषि संभव हो सके। कृषि के अतिरिक्त, विदेशी व्यापार भी अत्यंत समृद्ध था, जहाँ मसालों एवं वस्त्रों का निर्यात अंतरराष्ट्रीय बाजारों में किया जाता था। राज्य का राजस्व इन्हीं स्रोतों से प्राप्त होता था।

21. (C) औरंगजेब
औरंगजेब की धार्मिक नीति पूर्ववर्ती मुगल सम्राटों की तुलना में अत्यधिक रुढ़िवादी थी। उसने शासन को इस्लामी विधियों के अनुसार संचालित करने का प्रयास किया, जिसके अंतर्गत जजिया कर को पुनः आरोपित किया गया। उसकी नीतियों के कारण कई मंदिरों को क्षति पहुँचाई गई, जिससे विभिन्न समुदायों में असंतोष उत्पन्न हुआ। यह दृष्टिकोण धार्मिक सहिष्णुता के स्थान पर धार्मिक कट्टरता की ओर झुकाव को दर्शाता है, जिसने साम्राज्य की एकता को नकारात्मक रुप से प्रभावित किया।

22. (B) भगवान शिव की भक्ति और उपासना।
शैव धर्म हिंदू धर्म का एक प्रमुख संप्रदाय है जो भगवान शिव को सर्वोच्च सत्ता के रूप में पूजता है। इस परंपरा में शिव की भक्ति, योग एवं ध्यान के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया गया है। मध्यकालीन भारत में नयनार संतों ने दक्षिण में इस विचारधारा का व्यापक प्रसार किया। यह संप्रदाय विभिन्न रूपों और दर्शनों में विभाजित था, किंतु शिव के प्रति अटूट आस्था एवं समर्पण ही इसके अनुयायियों के लिए आध्यात्मिक साधना का मुख्य आधार था।

23. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
मध्यकालीन आर्थिक व्यवस्था में विभिन्न शब्दावलियों का विशिष्ट महत्व था। टंका दिल्ली सल्तनत का मानक रजत सिक्का था, जबकि बंजारे एक भ्रमणशील समुदाय थे जो खाद्यान्न के थोक परिवहन में दक्ष थे। हुंडी एक पारंपरिक वित्तीय उपकरण था जिसका उपयोग बिना नकद के सुरक्षित धन हस्तांतरण हेतु किया जाता था। दस्तूर राजस्व दरों की एक व्यवस्थित अनुसूची थी। इन तत्वों ने मिलकर उस काल के व्यापार एवं वाणिज्य को सुव्यवस्थित तथा गतिशील बनाया था।

24. (A) हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों द्वारा प्रचलित, विशेष रुप से उच्च वर्गों के बीच।
मध्यकालीन भारत में पर्दा प्रथा का प्रचलन हिंदू एवं मुस्लिम दोनों समुदायों की उच्च वर्ग की महिलाओं के मध्य व्यापक था। इसे सामाजिक मर्यादा एवं उच्च स्थिति का प्रतीक माना जाता था। विशेष रूप से उत्तर भारत के अभिजात परिवारों में महिलाओं का बाह्य विश्व से पृथक्करण और घूँघट धारण करना एक सामान्य आचरण था। यद्यपि ग्रामीण क्षेत्रों एवं निम्न वर्गों में यह प्रथा उतनी कठोर नहीं थी, फिर भी इसने सामाजिक संरचना को प्रभावित किया था।

25. (A) केवल 1 और 3
मुगल एवं सिख समुदायों के मध्य संबंध प्रारंभिक काल में सामान्य थे, किंतु कालांतर में इनमें तनाव उत्पन्न हो गया। गुरु अर्जुन देव को जहाँगीर के शासनकाल में राजनीतिक कारणों से मृत्युदंड दिया गया, जो एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इसी प्रकार, नौवें गुरु तेग बहादुर को औरंगजेब के आदेश पर बलिदान देना पड़ा। इन घटनाओं ने सिख समुदाय के सैन्यीकरण को प्रेरित किया। यद्यपि कुछ समय तक सहयोग भी रहा, किंतु धार्मिक एवं राजनीतिक मतभेदों के कारण संघर्ष बढ़ता गया।

26. (A) रामानुजाचार्य
विशिष्टाद्वैत दर्शन के प्रणेता रामानुजाचार्य थे, जिन्होंने भक्ति को ज्ञान के साथ संयोजित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। यह विचारधारा मानती है कि ब्रह्म एक है, किंतु उसमें जगत एवं जीव की विशिष्टताएं समाहित हैं। इस दर्शन ने वैष्णव भक्ति परंपरा को एक सुदृढ़ दार्शनिक आधार प्रदान किया। रामानुज की शिक्षाओं ने यह स्पष्ट किया कि ईश्वर की भक्ति एवं शरणागति के माध्यम से कोई भी व्यक्ति, सामाजिक पृष्ठभूमि के निरपेक्ष, मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

27. (D) वस्त्र, विभिन्न मसाले और नील
मध्यकालीन भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र था और यहाँ से अनेक मूल्यवान वस्तुओं का निर्यात किया जाता था। भारतीय सूती एवं रेशमी वस्त्र अपनी गुणवत्ता हेतु संपूर्ण विश्व में विख्यात थे। इनके अतिरिक्त, काली मिर्च एवं लौंग जैसे मसालों तथा नील की यूरोपीय और एशियाई बाजारों में भारी मांग थी। इन वस्तुओं के निर्यात से भारत को बड़ी मात्रा में स्वर्ण एवं रजत प्राप्त होता था, जिससे देश का व्यापार संतुलन सदैव अनुकूल बना रहता था।

28. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मध्यकाल में मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति के कुछ वैधानिक पक्ष तत्कालीन परिस्थितियों में प्रगतिशील थे। उन्हें माता-पिता की संपत्ति में उत्तराधिकार का कानूनी अधिकार प्राप्त था और विवाह के समय मेहर की सुरक्षा भी प्रदान की जाती थी। इसके अतिरिक्त, मुस्लिम विधि विधवाओं के पुनर्विवाह एवं विच्छेद की अनुमति प्रदान करती थी, जो अन्य समुदायों में प्रायः कठिन था। यद्यपि सामाजिक बाधाएं विद्यमान थीं, फिर भी ये अधिकार उन्हें वैधानिक पहचान प्रदान करते थे।

29. (C) संत ज्ञानेश्वर
संत ज्ञानेश्वर महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन के एक महान स्तंभ थे। उन्होंने अल्पायु में भगवद गीता पर 'ज्ञानेश्वरी' नामक अद्भुत टीका लिखी थी। यह रचना सरल मराठी भाषा में थी, जिसने संस्कृत के गूढ़ ज्ञान को सामान्य जन हेतु सुलभ बना दिया। उनकी शिक्षाओं ने वारकरी संप्रदाय को प्रेरित किया और समाज में समानता एवं प्रेम का संदेश प्रसारित किया। उनकी आध्यात्मिक विरासत आज भी महाराष्ट्र की सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना को मार्गदर्शित करती है।

30. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
दिल्ली सल्तनत एवं मुगल काल के दौरान भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया अत्यंत तीव्र रही। केंद्रीय प्रशासन की स्थापना ने कई प्रशासनिक केंद्रों को जन्म दिया, जहाँ सम्राट एवं कुलीन वर्ग निवास करते थे। इन केंद्रों में विलासिता की वस्तुओं की

से लेकर सामान्य जनता तक सभी स्तरों पर समान रूप से लिया जाता था। यह खेल न केवल समय व्यतीत करने का साधन था, अपितु सामाजिक मेलजोल का भी माध्यम था। इसके अतिरिक्त कुश्ती, पशुओं के द्वंद्व और शतरंज जैसे खेल भी प्रचलित थे, जो उस काल की जीवंत एवं विविध सांस्कृतिक गतिविधियों को दर्शाते हैं।

11. (C) केवल 1 और 3
भारत में सूफीवाद दो प्रमुख धाराओं, बा-शरा और बे-शरा में विभाजित था, जो इस्लामी सिद्धांतों के अनुपालन के आधार पर भिन्न थे। वहदत-उल-वुजूद की अवधारणा ने अस्तित्व की एकता पर बल देते हुए सूफी दर्शन को गहराई प्रदान की। चिश्ती सिलसिला सबसे प्रभावशाली रहा, जिसने सादगी एवं आध्यात्मिक शुद्धि पर ध्यान केंद्रित किया। इस परंपरा ने समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य प्रेम और धार्मिक समन्वय को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

12. (B) अकबर
मुगल सम्राट अकबर की धार्मिक नीति 'सुलह-ए-कुल' के सिद्धांत पर आधारित थी, जिसका अर्थ सार्वभौमिक शांति एवं भाईचारा है। इस उदार दृष्टिकोण ने साम्राज्य के भीतर विभिन्न धर्मों एवं समुदायों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। अकबर ने जजिया जैसे भेदभावपूर्ण करों को समाप्त कर दिया और संपूर्ण प्रजा के लिए धार्मिक स्वतंत्रता सुनिश्चित की। यह नीति साम्राज्य की स्थिरता एवं सुदृढ़ीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं सामाजिक उपकरण सिद्ध हुई।

13. (C) मकतब प्राथमिक शिक्षा के केंद्र थे, जबकि मदरसे उच्च शिक्षा के संस्थान थे।
मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था में मकतब एवं मदरसे दो प्रमुख शैक्षणिक संस्थान थे। मकतब सामान्यतः मस्जिदों से संबद्ध प्राथमिक विद्यालय थे जहाँ बालकों को पठन-पाठन और प्रारंभिक धार्मिक ज्ञान प्रदान किया जाता था। इसके विपरीत, मदरसे उच्च शिक्षा के केंद्र थे जहाँ इस्लामी विधि, तर्कशास्त्र, धर्मशास्त्र एवं दर्शन जैसे विषयों का गहन अध्ययन कराया जाता था। ये संस्थान राज्य के लिए कुशल प्रशासकों, न्यायाधीशों और विद्वानों का एक वर्ग तैयार करने में सहायक थे।

14. (D) किसान जो उसी गाँव में अपनी भूमि पर खेती करते थे जहाँ वे निवास करते थे।
कृषि व्यवस्था में 'खुद-काश्त' उन कृषकों को कहा जाता था जो उसी ग्राम में निवास करते थे जहाँ उनकी अपनी भूमि होती थी। इन कृषकों के पास भूमि के स्थायी स्वामित्व के अधिकार थे और वे स्वयं हल चलाकर कृषि कार्य करते थे। उन्हें ग्राम की पंचायती व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। राजस्व संग्रह की दृष्टि से यह वर्ग अत्यंत स्थिर एवं महत्वपूर्ण माना जाता था क्योंकि वे अपनी भूमि से संबद्ध थे।

15. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जहाँगीर के शासनकाल में मुगल चित्रकला ने अपने विकास की पराकाष्ठा प्राप्त की। सम्राट स्वयं कला का एक उत्कृष्ट पारखी एवं संरक्षक था, जिसने चित्रकारों को प्रकृति के सूक्ष्म अध्ययन और यथार्थवादी व्यक्ति-चित्रण के लिए प्रोत्साहित किया। उसके काल में चित्रों में तकनीकी सूक्ष्मता और रंगों का चयन अत्यंत प्रभावशाली हो गया। व्यक्तिगत कार्यशालाओं के माध्यम से कलाकारों ने पक्षियों, पशुओं और पुष्पों के अत्यंत सुंदर तथा विस्तृत चित्र निर्मित किए थे।

16. (B) कबीर - पद्मावत
मध्यकालीन साहित्य विभिन्न भाषाओं एवं शैलियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की समृद्धि को प्रदर्शित करता है। तुलसीदास ने अवधी में रामचरितमानस की रचना की, जबकि अबुल फज़ल ने अकबरनामा के माध्यम से मुगल इतिहास को प्रलेखित किया। कृष्णदेवराय ने तेलुगु में अमुक्तमाल्यद लिखकर अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया। पद्मावत की रचना मलिक मोहम्मद जायसी ने की थी। कबीर अपनी साखियों और सबदों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करने के लिए प्रसिद्ध थे।

17. (B) गुरु गोविंद सिंह
सिख इतिहास में 1699 का वर्ष अत्यंत क्रांतिकारी था, जब गुरु गोविंद सिंह ने आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना की। इस पहल का उद्देश्य सिख समुदाय को एक संगठित एवं अनुशासित सैन्य शक्ति के रूप में परिवर्तित करना था जो अन्याय और दमन के विरुद्ध संघर्ष कर सके। खालसा के सदस्यों के लिए पांच ककारों का पालन अनिवार्य किया गया, जिसने उनमें सामूहिक पहचान और साहस की भावना भरकर एक अद्वितीय 'संत-सिपाही' चरित्र विकसित किया।

18. (A) एक स्वर्ग रूपी उद्यान का प्रतिनिधित्व करना, जिसमें क्षेत्र को जल नहरों द्वारा चार मुख्य भागों में विभाजित किया गया हो।
मुगल वास्तुकला की चारबाग शैली स्वर्ग के उद्यान की इस्लामी अवधारणा से अनुप्राणित है। इस अभिकल्प में संपूर्ण क्षेत्र को नहरों अथवा मार्गों के माध्यम से चार समान वर्गाकार भागों में विभाजित किया जाता था। प्रवहमान जल और हरियाली इस शैली के मुख्य आकर्षण थे। यह संरचना न केवल सौंदर्य की दृष्टि से प्रभावशाली थी, अपितु यह मुगल भवनों के चारों ओर एक शांत एवं व्यवस्थित वातावरण प्रदान करने के लिए निर्मित की गई थी।

19. (A) 2, 1, 3, 4
भारतीय भक्ति परंपरा का विकास विभिन्न चरणों में हुआ। सर्वप्रथम 8वीं शताब्दी में शंकराचार्य ने अद्वैत दर्शन का प्रसार किया। उनके पश्चात 11वीं-12वीं शताब्दी में रामानुजाचार्य ने भक्ति मार्ग को नवीन आधार प्रदान किया। कबीर ने 15वीं शताब्दी में निर्गुण भक्ति की धारा प्रवाहित की और अंततः 16वीं शताब्दी में चैतन्य महाप्रभु ने बंगाल में कृष्ण भक्ति को लोकप्रिय बनाया। संतों का यह कालक्रम भारतीय आध्यात्मिक चेतना के निरंतर विकास और परिवर्तन का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करता है।

20. (D) कृषि मुख्य आधार थी, और राज्य ने तालाबों और बांधों जैसी बड़े स्तर की सिंचाई परियोजनाओं में निवेश किया।
विजयनगर साम्राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी, जिसमें राज्य ने सिंचाई सुविधाओं के विस्तार हेतु व्यापक निवेश

और राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करना थी, जिससे समन्वय की नींव पड़ी।

41. (C) उन्होंने संसार का त्याग करने और तपस्वी के रूप में रहने के विचार को प्रोत्साहित किया।
गुरु नानक सिख धर्म के प्रवर्तक थे जिन्होंने निराकार ईश्वर की उपासना का संदेश दिया। उनकी शिक्षाओं ने कर्मकांडों, मूर्तिपूजा और जातिगत कठोरता का कड़ा विरोध किया। उन्होंने त्याग एवं तपस्या के स्थान पर पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हुए ईमानदारी से जीविकोपार्जन और परोपकार पर बल दिया। उनके अनुसार सच्ची भक्ति ईश्वर के नाम स्मरण और मानवता की सेवा में निहित है। उन्होंने समाज में समानता एवं भ्रातृत्व की भावना जगाकर नवीन आध्यात्मिक क्रांति का सूत्रपात किया।

42. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
मुगल सम्राटों ने भारतीय वास्तुकला में अद्वितीय योगदान दिया। अकबर ने फतेहपुर सीकरी के रूप में एक भव्य नगर स्थापित किया, जबकि शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण कराया। जहाँगीर के काल में एतमाद-उद-दौला का मकबरा श्वेत संगमरमर की सुंदरता को प्रदर्शित करता है। हुमायूँ का मकबरा उनकी पत्नी द्वारा निर्मित कराया गया था, जो मुगल मकबरा निर्माण शैली का प्रारंभिक उदाहरण है। ये इमारतें उस काल की कलात्मक श्रेष्ठता और शाही वैभव की प्रतीक हैं जो आज भी विख्यात हैं।

43. (D) प्रेम और भक्ति के माध्यम से ईश्वर का प्रत्यक्ष, व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त करना।
सूफीवाद इस्लाम का वह रहस्यवादी पक्ष है जो प्रेम एवं मानवता की सेवा के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति पर बल देता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य कर्मकांडों के स्थान पर ईश्वर के साथ प्रत्यक्ष एवं व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना था। सूफी संतों ने संगीत, कविता एवं ध्यान को आध्यात्मिक साधना का साधन बनाया ताकि वे दिव्य प्रेम का अनुभव कर सकें। उनकी शिक्षाओं ने धार्मिक कट्टरता को न्यून कर समाज में शांति, सहिष्णुता और आपसी भाईचारे का संदेश प्रसारित किया।

44. (B) एक पाही-काश्त
मध्यकालीन कृषि व्यवस्था में 'पाही-काश्त' उन कृषकों को कहा जाता था जो किसी अन्य ग्राम से आकर संविदात्मक आधार पर कृषि करते थे। ये कृषक उस ग्राम के स्थायी निवासी नहीं होते थे जहाँ वे भूमि जोतते थे। वे प्रायः अधिक उपजाऊ भूमि की खोज में अथवा बेहतर शर्तों पर कृषि हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन करते थे। इस वर्ग की उपस्थिति यह दर्शाती है कि उस काल में कृषक गतिशील थे और भूमि उपलब्धतानुसार श्रम करते थे।

45. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गुरु तेग बहादुर का बलिदान सिख एवं मुगल इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी। औरंगजेब की धार्मिक नीतियों के विरोध में उनके द्वारा दिए गए बलिदान ने सिख समुदाय के भीतर संघर्ष एवं साहस की नवीन लहर उत्पन्न की। इसके परिणामस्वरूप उनके पुत्र गुरु गोविंद सिंह ने सिखों को एक संगठित सैन्य शक्ति 'खालसा' के रूप में परिवर्तित किया। इस परिवर्तन ने सिखों को अत्याचार के विरुद्ध लड़ने हेतु सशक्त बनाया और पंजाब में स्वतंत्र सत्ता का मार्ग प्रशस्त किया।

46. (D) मीराबाई
मीराबाई राजस्थान की एक महान महिला भक्ति संत थीं, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भगवान कृष्ण की अनन्य भक्ति में समर्पित कर दिया। उन्होंने राजसी सुख-सुविधाओं का परित्याग कर भजनों को अपनाया। उनकी कविताएं प्रेम, विरह एवं समर्पण की गहन भावनाओं से ओत-प्रोत हैं, जो आज भी संपूर्ण भारत में गायी जाती हैं। उन्होंने सामाजिक बंधनों एवं रुढ़ियों को चुनौती देते हुए यह सिद्ध किया कि सच्ची भक्ति के मार्ग में कोई भी बाधा अवरोध नहीं बन सकती।

47. (A) सामान्य जन तक पहुँचने के लिए स्थानीय भाषा में भक्ति और सूफी साहित्य की रचना।
मध्यकाल में क्षेत्रीय भाषाओं के विकास का मुख्य श्रेय भक्ति एवं सूफी संतों को प्राप्त है। इन संतों ने अपने उपदेशों एवं साहित्य की रचना लोक भाषाओं में की ताकि वे सामान्य जनता तक सुगमता से पहुँच सकें। संस्कृत जैसी कठिन शास्त्रीय भाषाओं के स्थान पर स्थानीय बोलियों के प्रयोग से धर्म एवं आध्यात्मिकता का लोकतंत्रीकरण हुआ। इससे न केवल इन भाषाओं की साहित्यिक गुणवत्ता में सुधार हुआ, अपितु भारतीय समाज में नवीन सांस्कृतिक चेतना का संचार भी हुआ।

48. (B) मीराबाई - राजस्थान
भक्ति आंदोलन ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग संतों के माध्यम से अपनी पैठ बनाई। मीराबाई राजस्थान में कृष्ण भक्ति का प्रमुख चेहरा बनीं, जबकि चैतन्य महाप्रभु ने बंगाल में कीर्तन परंपरा को लोकप्रिय बनाया। संत ज्ञानेश्वर ने महाराष्ट्र में वारकरी संप्रदाय की आधारशिला रखी और कबीर ने उत्तर भारत में अपनी निर्गुण वाणी से समाज को प्रभावित किया। इन संतों ने अपनी स्थानीय भाषाओं के माध्यम से भक्ति का संदेश घर-घर पहुँचाया, जिससे समन्वय देखने को मिला।

49. (A) संपन्न मुसलमानों के लिए अनिवार्य एक धार्मिक कर, जिसका उपयोग परोपकारी उद्देश्यों के लिए किया जाता था।
मध्यकालीन भारत की कर प्रणाली में 'जकात' एक महत्वपूर्ण धार्मिक कर था जो केवल संपन्न मुसलमानों पर अनिवार्य रूप से आरोपित किया जाता था। यह कर व्यक्ति की कुल संपत्ति का एक निश्चित भाग होता था। जकात से प्राप्त राशि का उपयोग मुख्य रूप से निर्धनों की सहायता, अनाथों के कल्याण और धार्मिक कार्यों हेतु किया जाता था। इसे कर से अधिक एक आध्यात्मिक उत्तरदायित्व माना जाता था, जिसका उद्देश्य समाज में धन का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना था।

50. (A) केवल 1 और 2
मध्यकालीन भारत में संगीत कला का अभूतपूर्व विकास हुआ। इस दौरान हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ध्रुपद शैली अत्यंत लोकप्रिय हुई, जिसे अकबर जैसे शासकों ने संरक्षण प्रदान किया। प्रसिद्ध विद्वान अमीर खुसरो को सितार एवं तबला जैसे वाद्ययंत्रों के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है, जिन्होंने

(A) अकबर
(B) बाबर
(C) हुमायूँ
(D) जहाँगीर

295. मध्यकालीन भारत में किसानों की स्थिति के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन अशुद्ध है?
(A) वे समस्त समृद्ध और ऋणमुक्त थे।
(B) वे भूमि अधिकारों के भिन्न-भिन्न स्तरों वाला एक विभेदित समूह थे।
(C) भू-राजस्व की मांग प्रायः उच्च होती थी।
(D) उन्हें भू-राजस्व के अतिरिक्त कई अन्य उपकरों (abwabs) का भुगतान करना पड़ता था।

296. सिख धर्म के संस्थापक कौन थे?
(A) गुरु नानक
(B) गुरु गोविंद सिंह
(C) गुरु अर्जुन देव
(D) गुरु तेग बहादुर

297. अकबर द्वारा प्रतिपादित 'सुलह-ए-कुल' (सार्वभौमिक शांति) की अवधारणा का अर्थ था:
(A) समस्त धर्मों के बीच सद्भाव और सहिष्णुता।
(B) केवल मुसलमानों के बीच शांति।
(C) सैन्य विजय के माध्यम से शांति।
(D) किसी विशिष्ट शत्रु के साथ शांति संधि।

298. 'अमुक्तमाल्यद', शासनकला पर एक प्रसिद्ध कृति, किस विजयनगर शासक द्वारा लिखी गई थी?
(A) कृष्णदेवराय
(B) हरिहर प्रथम
(C) बुक्का प्रथम
(D) देव राय द्वितीय

299. मध्यकालीन समाज के संदर्भ में 'आभूषणों' का उपयोग मुख्य रूप से किस लिए किया जाता था?
(A) पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा सौंदर्य के लिए, और सामाजिक स्थिति के प्रतीक के रूप में।
(B) केवल धार्मिक अनुष्ठानों के लिए।
(C) व्यापार में वस्तु विनिमय के लिए।
(D) वेश बदलकर अस्त्रों के रूप में।

300. वह सूफी सिलसिला जो सर्वाधिक रुढ़िवादी था और शरिया के पालन पर बल देता था, वह था:
(A) चिश्ती
(B) नक्शबंदी
(C) सुहरावर्दी
(D) कादिरी

स्थापित की गई थीं। इन केंद्रों में कुशल शिल्पकार विलासिता की वस्तुएं, रेशमी वस्त्र, आभूषण एवं शस्त्र निर्मित करते थे। ये कारखाने न केवल उत्पादन के केंद्र थे, अपितु ये कला एवं तकनीक के संरक्षण के स्थान भी थे जहाँ नवीन डिज़ाइनों का परीक्षण किया जाता था। अकबर जैसे शासकों ने इन कारखानों के विस्तार में विशेष रुचि ली, जिससे व्यापारिक कौशल को बढ़ावा मिला।

61. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संत रविदास 15वीं शताब्दी के एक प्रभावशाली भक्ति संत थे जिन्होंने जाति आधारित भेदभाव और सामाजिक ऊंच-नीच को चुनौती दी। चर्मकार समुदाय से संबंधित होने के पश्चात भी उनकी आध्यात्मिक प्रखरता ने समाज के सभी वर्गों को प्रभावित किया। उन्होंने यह संदेश दिया कि ईश्वर की भक्ति हेतु जन्म नहीं, अपितु हृदय की पवित्रता अनिवार्य है। भक्ति आंदोलन ने उन्हें अपनी वाणी मुखरित करने हेतु एक सशक्त मंच प्रदान किया, जिससे समाज में समानता एवं मानवता के प्रति चेतना का संचार हुआ।

62. (D) दक्कन सल्तनत - चारबाग शैली
मध्यकालीन भारतीय चित्रकला विभिन्न क्षेत्रीय शैलियों के माध्यम से अपनी विविधता को प्रकट करती है। राजस्थानी शैली में गहरे रंगों का प्राधान्य था, जबकि मुगल शैली दरबारी वैभव हेतु जानी जाती थी। पहाड़ी शैली ने हिमालय की वादियों में राधा-कृष्ण के प्रेम को चित्रित किया। चारबाग कोई चित्रकला शैली नहीं है, अपितु यह मुगल वास्तुकला की एक विशिष्ट उद्यान अभिकल्प पद्धति है। दक्कन के क्षेत्रों में अपनी स्वतंत्र चित्रकला शैलियाँ विकसित हुई थीं, जो वास्तुकला के चारबाग प्रारुप से पूर्णतः भिन्न थीं।

63. (A) भगवान विठोबा (विष्णु/कृष्ण का एक रूप)
संत तुकाराम महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन के एक अत्यंत प्रिय संत थे। उनके भक्ति गीत, जिन्हें 'अभंग' कहा जाता है, मुख्य रूप से भगवान विठोबा को समर्पित थे, जो भगवान विष्णु अथवा कृष्ण के ही एक रूप माने जाते हैं। तुकाराम ने अपनी सरल वाणी के माध्यम से बाह्य आडंबरों का विरोध किया और शुद्ध भक्ति तथा नैतिक जीवन पर बल दिया। उनकी शिक्षाओं ने वारकरी संप्रदाय के अनुयायियों को प्रेरित किया और महाराष्ट्र की सामाजिक चेतना को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया।

64. (C) केवल 2 और 3
मुगल काल में भारतीय अर्थव्यवस्था सुदृढ़ थी और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। हस्तशिल्प एवं वस्त्र उद्योग विशेष रूप से बंगाल और गुजरात में विकसित थे। आंतरिक व्यापार हेतु परिवहन मुख्य रूप से बैलगाड़ियों एवं नौकाओं पर निर्भर था। मुद्रा व्यवस्था मानकीकृत थी और रजत सिक्कों का प्रयोग व्यापक रूप से होता था। व्यापार की इस सुव्यवस्थित प्रणाली ने साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि एवं स्थिरता को बनाए रखने में सहयोग दिया, जिससे भारत का प्रभाव वैश्विक स्तर पर निरंतर बना रहा।

65. (B) दीन-ए-इलाही
अकबर ने फतेहपुर सीकरी के इबादत खाना में विभिन्न धर्मों के विद्वानों के साथ विमर्श के पश्चात 'दीन-ए-इलाही' नामक आध्यात्मिक मार्ग का प्रतिपादन किया। इसका उद्देश्य साम्राज्य के सभी धर्मों के सर्वोत्तम तत्वों को एक सूत्र में पिरोना और धार्मिक कट्टरता को समाप्त करना था। यह कोई औपचारिक धर्म नहीं था, अपितु नैतिक आचरण एवं सहिष्णुता पर आधारित एक जीवन पद्धति थी। यद्यपि इसके अनुयायियों की संख्या सीमित रही, किंतु इसने अकबर की उदारवादी सोच और समावेशी संस्कृति को स्पष्ट रूप से दर्शाया।

66. (A) उन्होंने ज्ञानेश्वरी का एक आलोचनात्मक संस्करण लिखा, जिससे यह जनसुलभ हो गई।
संत एकनाथ महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन के एक प्रखर विद्वान थे। उनका सबसे महत्वपूर्ण साहित्यिक योगदान संत ज्ञानेश्वर की अमर रचना 'ज्ञानेश्वरी' का एक प्रामाणिक संस्करण तैयार करना था। उन्होंने इस महान ग्रंथ को पुनर्जीवित कर जनसामान्य हेतु पुनः सुलभ बनाया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक समानता एवं मानवता का संदेश प्रसारित किया। उन्होंने जातिगत बंधनों को शिथिल कर सभी वर्गों के लोगों के साथ जुड़ने का प्रयास किया, जिससे मराठी साहित्य एवं समाज को नवीन दिशा मिली।

67. (C) उपहार के रूप में प्राप्त वह संपत्ति जिस पर महिला का विशेष नियंत्रण होता था।
मध्यकालीन हिंदू समाज में 'स्त्रीधन' वह संपत्ति थी जो किसी महिला को विवाह के समय अथवा अपने परिवार से उपहार स्वरुप प्राप्त होती थी। इस संपत्ति पर केवल महिला का ही पूर्ण अधिकार होता था, और वह इसे अपनी इच्छानुसार व्यय कर सकती थी। यद्यपि महिलाओं के सामान्य उत्तराधिकार अधिकार अत्यंत सीमित थे, फिर भी स्त्रीधन उन्हें एक सीमा तक आर्थिक सुरक्षा एवं गरिमा प्रदान करता था। यह प्रथा पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के निजी स्वामित्व एवं वित्तीय स्वतंत्रता का एक महत्वपूर्ण पक्ष प्रस्तुत करती थी।

68. (D) बड़े मंडपों और अलंकृत गोपुरों के साथ मंदिर परिसरों का विस्तार।
विजयनगर साम्राज्य की वास्तुकला दक्षिण भारतीय शैली के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। इस काल में मंदिर परिसरों का अभूतपूर्व विस्तार हुआ, जिसमें बड़े अलंकृत मंडप और ऊंचे प्रवेश द्वार निर्मित किए गए। हम्पी में विट्ठल स्वामी एवं विरुपाक्ष जैसे मंदिर इस शैली की भव्यता के प्रमाण हैं। वास्तुकला की यह शैली न केवल धार्मिक आस्था को दर्शाती थी, अपितु यह साम्राज्य की शक्ति, समृद्धि एवं कलात्मक श्रेष्ठता का भी प्रतीक थी, जिसने आने वाली पीढ़ियों हेतु एक महान विरासत छोड़ी।

69. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
सिख धर्म का पवित्र ग्रंथ आदि ग्रंथ भारतीय अध्यात्म का एक अनूठा संकलन है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें सिख गुरुओं की वाणी के साथ-साथ हिंदू एवं मुस्लिम संतों जैसे कबीर एवं बाबा फरीद के पदों को भी सम्मानजनक

140. (A) स्थानीय भाषा में उपदेश दिया और कबीर तथा रविदास सहित समस्त जातियों के शिष्यों को स्वीकार किया।
रामानंद उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के एक क्रांतिकारी प्रणेता थे जिन्होंने भक्ति के मार्ग को सभी हेतु उन्मुक्त कर दिया। उन्होंने सामाजिक रुढ़ियों को भंग करते हुए कबीर एवं रविदास जैसे विभिन्न पृष्ठभूमियों के व्यक्तियों को अपने शिष्यों के रूप में स्वीकार किया। रामानंद ने शास्त्रीय संस्कृत के स्थान पर स्थानीय लोक भाषा में उपदेश प्रदान किए, जिससे उनका संदेश सामान्य जनता तक प्रभावी ढंग से पहुँचा। उनके इस समावेशी दृष्टिकोण ने उत्तर भारत में नवीन आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न की और भक्ति को एक जन आंदोलन में परिवर्तित करने में मुख्य भूमिका निभाई।

141. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
मध्यकालीन भारत में चित्रकला की विभिन्न शैलियों ने अपनी विशिष्ट विशेषताओं के माध्यम से भारतीय कला को समृद्ध किया। जहाँगीर के काल में मुगल शैली ने यथार्थवाद एवं प्रकृति के सूक्ष्म अध्ययन को अंगीकार किया। राजस्थानी एवं विजयनगर शैलियों ने सुदृढ़ रेखाओं एवं गहरे रंगों के माध्यम से धार्मिक आख्यानों को चित्रित किया। पहाड़ी शैली अपने कोमल रंगों और राधा-कृष्ण के प्रेम के गीतात्मक चित्रण हेतु विख्यात हुई। इन सभी शैलियों ने अपने-अपने क्षेत्रों की सांस्कृतिक पहचान और धार्मिक भावनाओं को कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया, जिससे भारतीय चित्रकला को बहुआयामी पहचान प्राप्त हुई।

142. (A) जिला (सरकार) स्तर पर एक राजस्व संग्राहक।
मुगल प्रशासनिक ढांचे में 'अमलगुज़ार' एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजस्व अधिकारी होता था जो जिला अथवा 'सरकार' स्तर पर कार्य करता था। उसका प्राथमिक उत्तरदायित्व भू-राजस्व का मूल्यांकन करना एवं उसका कुशल संग्रह सुनिश्चित करना था। इसके अतिरिक्त, वह कृषि के विस्तार को प्रोत्साहित करने और कृषकों को कठिन समय में सहायता प्रदान करने की भूमिका भी निर्वहन करता था। अमलगुज़ार केंद्रीय सत्ता और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के मध्य एक कड़ी के रूप में कार्य करता था, जिससे साम्राज्य की वित्तीय स्थिरता एवं कृषि उत्पादकता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण सहायता प्राप्त होती थी।

143. (D) 1, 2 और 3
सिख धर्म का विकास आध्यात्मिक गहराई एवं वीरतापूर्ण संघर्ष का एक प्रेरणादायी इतिहास है। प्रथम पांच गुरुओं ने सिख धर्म के दार्शनिक आधार को सुदृढ़ किया और सामुदायिक संस्थाओं की स्थापना की। पांचवें गुरु अर्जुन देव एवं नौवें गुरु तेग बहादुर की शहादतों ने सिख समुदाय को अत्याचार के विरुद्ध संगठित होने एवं सैन्यीकरण हेतु प्रेरित किया। अंततः, दसवें गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की और मानवरूपी गुरु की परंपरा को समाप्त कर गुरु ग्रंथ साहिब को शाश्वत गुरु घोषित किया। इस क्रमिक विकास ने सिख धर्म को एक अद्वितीय सामाजिक पहचान प्रदान की।

144. (A) भक्ति और सूफी संतों द्वारा अपने संदेश को सामान्य जन तक पहुँचाने का प्रयास।
मध्यकाल में क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य में अभूतपूर्व वृद्धि का मुख्य कारण भक्ति एवं सूफी आंदोलनों का व्यापक प्रसार था। इन संतों ने अनुभव किया कि यदि उन्हें आध्यात्मिक संदेश सामान्य जनता तक पहुँचाना है, तो उन्हें जनसाधारण की लोक भाषाओं का प्रयोग करना होगा। इसके परिणामस्वरूप ब्रज, अवधी, मराठी एवं पंजाबी जैसी भाषाओं में उच्च कोटि के भजनों की रचना हुई। इस भाषाई क्रांति ने न केवल साहित्य को समृद्ध किया, अपितु इसने धर्म का लोकतंत्रीकरण करते हुए समाज के प्रत्येक वर्ग को आध्यात्मिक विमर्श का भाग बनाया, जिससे भारतीय संस्कृति को नवीन शक्ति मिली।

145. (A) सामाजिक जीवन के केंद्रों के रूप में मंदिरों की अनुपस्थिति।
विजयनगर साम्राज्य का सामाजिक जीवन मंदिरों के इर्द-गिर्द बुना हुआ था, जो न केवल उपासना के स्थल थे अपितु सांस्कृतिक एवं शिक्षा के प्रमुख केंद्र भी थे। समाज में एक स्पष्ट जाति पदानुक्रम विद्यमान था, जहाँ ब्राह्मणों को उच्च सम्मान प्राप्त था। राजपरिवार एवं संपन्न वर्ग में बहुपत्नी विवाह तथा सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियां प्रचलित थीं। विदेशी यात्रियों के वृत्तांतों से ज्ञात होता है कि समाज में महिलाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण थी, फिर भी पारंपरिक बंधनों का प्रभाव सुदृढ़ था। मंदिरों की सक्रिय उपस्थिति ने विजयनगर समाज को एक विशिष्ट धार्मिक एवं सामाजिक पहचान दी थी।

146. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मुगल सम्राटों का संगीत के प्रति दृष्टिकोण उनकी व्यक्तिगत रुचियों के अनुसार परिवर्तित होता रहा। अकबर संगीत का महान संरक्षक था जिसने तानसेन जैसे संगीतज्ञों को अपने दरबार में स्थान दिया और हिंदुस्तानी संगीत को अभूतपूर्व प्रोत्साहन दिया। इसके विपरीत, औरंगजेब अपनी कट्टर धार्मिक मान्यताओं के कारण संगीत को अनुचित मानता था, जिसके परिणामस्वरूप उसने शाही दरबार में संगीत पर प्रतिबंध आरोपित कर दिया। तथापि, इससे संगीत समाप्त नहीं हुआ अपितु यह क्षेत्रीय दरबारों में विस्तृत हो गया, जहाँ इसे नवीन जीवन और स्थानीय शैलियों के साथ विकसित होने का अवसर मिला।

147. (C) भारवाही पशुओं और बैलगाड़ियों का एक बड़ा काफिला।
मध्यकालीन भारत में भारवाही माल के परिवहन हेतु बैलगाड़ियों एवं भारवाही पशुओं के बड़े काफिले ही प्राथमिक साधन थे। बंजारों जैसे कुशल व्यापारिक समुदाय इन काफिलों का नेतृत्व करते थे, जो पत्तनों से उत्तर भारत के मुख्य नगरों तक वस्त्रों एवं अन्य वस्तुओं का परिवहन करते थे। यह परिवहन व्यवस्था मंद थी किंतु सुव्यवस्थित थी, और इसके लिए मुख्य व्यापारिक मार्गों पर सरायों की व्यवस्था की जाती थी। इस पारंपरिक परिवहन प्रणाली ने देश के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य व्यापारिक संबंधों को बनाए रखने और आर्थिक गतिविधियों को गतिशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

के मामलों में पितृसत्तात्मक सामाजिक ढांचा प्रायः प्रभावी रहता था, जिससे महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित हो जाती थी। विशेष रूप से उच्च वर्ग में पर्दा प्रथा का पालन कठोरता से किया जाता था। वैधानिक अधिकारों की तुलना में सामाजिक वास्तविकताएं अक्सर उनकी सार्वजनिक भूमिका को संकुचित कर देती थीं।

79. (A) केवल 1 और 3
चैतन्य महाप्रभु 16वीं शताब्दी के बंगाल के एक महान वैष्णव संत थे, जिन्होंने कृष्ण भक्ति के माध्यम से समाज में नवीन चेतना जागृत की। उन्होंने बौद्धिक पांडित्य के स्थान पर भावनात्मक भक्ति एवं प्रेम को ईश्वर प्राप्ति का सर्वोत्तम मार्ग बताया। उनके द्वारा प्रारंभ की गई 'संकीर्तन' प्रथा, जिसमें सामूहिक रूप से भगवान के नाम का जाप किया जाता है, आज भी अत्यंत लोकप्रिय है। उनकी शिक्षाओं ने जातिगत भेदों को न्यून कर प्रेम एवं भ्रातृत्व का संदेश प्रसारित किया, जिससे बंगाल की आध्यात्मिक पहचान अत्यधिक समृद्ध हुई।

80. (B) राजस्व मांग का एक स्थूल अनुमान या मूल्यांकन, जिसे समूह मूल्यांकन के रूप में भी जाना जाता है।
मुगल भू-राजस्व प्रशासन में 'नसक' मूल्यांकन की एक विशिष्ट पद्धति थी, जिसे समूह मूल्यांकन भी कहा जाता था। इस प्रणाली में प्रत्येक खेत की पृथक पैमाइश के स्थान पर, किसी ग्राम की विगत पैदावार एवं राजस्व के आंकड़ों के आधार पर एक स्थूल अनुमान लगाया जाता था। यह पद्धति उन क्षेत्रों में अधिक उपयोगी थी जहाँ विस्तृत माप संभव नहीं थी। यद्यपि यह दहसाला जितनी सटीक नहीं थी, तथापि राजस्व प्रबंधन में इसका अपना व्यावहारिक महत्व था। इसने राजस्व प्रक्रिया को अपेक्षाकृत सरल एवं तीव्र बनाया था।

81. (A) हिंदू और मुस्लिम दोनों संतों की शिक्षाओं को सम्मिलित करते हैं, जो एक समावेशी आध्यात्मिक परंपरा को दर्शाते हैं।
गुरु ग्रंथ साहिब भारतीय संस्कृति के समन्वय एवं संश्लेषण का एक उत्कृष्ट प्रतीक है। इसमें न केवल सिख गुरुओं की वाणी है, अपितु कबीर, रविदास एवं बाबा फरीद जैसे अनेक हिंदू तथा मुस्लिम संतों की रचनाओं को भी समान आदर के साथ संकलित किया गया है। यह समावेशी चरित्र प्रदर्शित करता है कि सत्य किसी विशिष्ट धर्म की बपौती नहीं है। यह पवित्र ग्रंथ समाज में धार्मिक सहिष्णुता, समानता एवं आपसी भाईचारे की भावना को सुदृढ़ करता है, जो मध्यकालीन भारत की सबसे बड़ी सांस्कृतिक उपलब्धि है।

82. (A) एक आध्यात्मिक वंशावली या क्रम, जो एक सूफी संत को उसके पूर्ववर्तियों से जोड़ता है।
सूफीवाद में 'सिलसिला' शब्द एक आध्यात्मिक वंशावली को संदर्भित करता है जो शिष्यों को उनके गुरुओं के माध्यम से पैगंबर तक जोड़ता है। यह श्रृंखला यह सुनिश्चित करती थी कि आध्यात्मिक ज्ञान की परंपरा निरंतर एवं शुद्ध रूप में बनी रहे। प्रत्येक सिलसिले का अपना विशिष्ट दर्शन होता था, जैसे चिश्ती अथवा सुहरावर्दी। शिष्य अपने 'पीर' के प्रति समर्पित होकर इस सिलसिले का भाग बनते थे। यह व्यवस्था सूफीवाद के संस्थागत ढांचे एवं उसकी आध्यात्मिक निरंतरता को अक्षुण्ण बनाए रखने का मुख्य आधार थी।

83. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
विजयनगर साम्राज्य की सामाजिक संरचना पारंपरिक हिंदू रीति-रिवाजों एवं जाति व्यवस्था पर आधारित थी। यद्यपि यह समृद्ध साम्राज्य था, किंतु यह पूर्णतः समतावादी नहीं था। विदेशी यात्रियों के वृत्तांत समाज में व्याप्त जाति पदानुक्रम एवं सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का स्पष्ट उल्लेख करते हैं। ब्राह्मणों का समाज में उच्च स्थान था और संपन्न वर्गों में सती का प्रचलन गौरव का विषय माना जाता था। यह साम्राज्य की उस सामाजिक वास्तविकता को दर्शाता है जहाँ धार्मिक भव्यता के साथ पारंपरिक जड़ता भी विद्यमान थी।

84. (D) नवनिर्मित हिंदू मंदिरों को नष्ट करने का आदेश।
शाहजहाँ की धार्मिक नीति अकबर की उदारता एवं औरंगजेब की कट्टरता के मध्य एक संक्रमण को प्रदर्शित करती है। यद्यपि वह कला का महान संरक्षक था, किंतु उसके शासनकाल में कुछ ऐसे निर्णय लिए गए जो रुढ़िवादिता की ओर झुकाव दर्शाते थे। उसने नवनिर्मित हिंदू मंदिरों को नष्ट करने का आदेश दिया और इस्लाम के प्रति अपनी निष्ठा को मुखर रूप में प्रस्तुत किया। यह परिवर्तन संकेत देता था कि मुगल दरबार में धार्मिक सहिष्णुता का वह युग धीरे-धीरे परिवर्तित हो रहा था जो पूर्ववर्ती सम्राटों द्वारा स्थापित था।

85. (C) विठोबा की उपासना करने के लिए पंढरपुर की वार्षिक तीर्थयात्रा पर केंद्रित एक वैष्णव भक्ति परंपरा।
वारकरी संप्रदाय महाराष्ट्र की एक अत्यंत लोकप्रिय वैष्णव भक्ति परंपरा है। इसका मुख्य केंद्र पंढरपुर है और अनुयायी भगवान विठोबा की उपासना करते हैं। इस संप्रदाय की विशिष्ट विशेषता 'वारी' अथवा वार्षिक तीर्थयात्रा है। ज्ञानेश्वर एवं तुकाराम जैसे संतों ने इस आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाया। यह संप्रदाय जातिगत भेदभाव से परे समानता, सादगी एवं प्रेमपूर्ण भक्ति पर बल देता है, जो महाराष्ट्र की सामाजिक समरसता एवं सांस्कृतिक एकता का एक सुदृढ़ स्तंभ है। भक्ति का यह मार्ग अत्यंत सरल है।

86. (B) गुजरात
फतेहपुर सीकरी में स्थित 'बुलंद दरवाजा' मुगल वास्तुकला का एक भव्य प्रतीक है। इस विशाल द्वार का निर्माण सम्राट अकबर ने 1601 ईस्वी में गुजरात पर अपनी ऐतिहासिक विजय की स्मृति में करवाया था। यह विश्व के सबसे ऊँचे प्रवेश द्वारों में से एक माना जाता है, जो लाल बलुआ पत्थर एवं संगमरमर की कलात्मक नक्काशी से सुसज्जित है। इस स्मारक की भव्यता न केवल अकबर की सैन्य शक्ति को दर्शाती है, अपितु यह उस काल की स्थापत्य कला की श्रेष्ठता एवं नवीनता का भी एक अद्वितीय प्रमाण प्रस्तुत करती है।

87. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भक्ति आंदोलन ने भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। संतों ने अनुभव किया कि संस्कृत की जटिलता सामान्य जनता हेतु बाधक थी, अतः उन्होंने अपने

भारत का विदेशी व्यापार समृद्ध हुआ और स्थानीय शिल्पकारों को एक सुदृढ़ आर्थिक आधार प्राप्त हुआ, जिससे समृद्धि बढ़ी।

124. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
भक्ति आंदोलन का उद्भव 7वीं से 9वीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत में हुआ था, जहाँ अलवार एवं नयनार संतों ने क्रमशः भगवान विष्णु एवं शिव के प्रति प्रेमपूर्ण समर्पण का प्रसार किया। यह आंदोलन केवल दक्षिण तक सीमित नहीं रहा, अपितु धीरे-धीरे यह उत्तर भारत एवं देश के अन्य भागों में भी विस्तृत हो गया। इन संतों ने अपनी स्थानीय भाषाओं में भजनों की रचना की और जाति तथा लिंग के भेदभाव को मिटाकर भक्ति के मार्ग को सभी हेतु सुलभ बना दिया। इस प्रकार, भक्ति आंदोलन की जड़ें प्राचीन दक्षिण भारतीय परंपराओं में हैं।

125. (A) साक्षर और धार्मिक रुप से विज्ञ व्यक्ति जो राज्य की सेवा कर सकें
मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था, जो मुख्य रूप से मकतबों एवं मदरसों के माध्यम से संचालित होती थी, का प्राथमिक लक्ष्य राज्य के प्रशासनिक एवं न्यायिक ढांचे हेतु कुशल जनशक्ति तैयार करना था। यहाँ छात्रों को साक्षर बनाने के साथ-साथ अरबी, फारसी, धर्मशास्त्र एवं इस्लामी विधि का गहन ज्ञान प्रदान किया जाता था। इस शिक्षा का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना था जो काजी, राजस्व अधिकारी और अन्य महत्वपूर्ण राजकीय पदों के दायित्वों को सुचारु रूप से निर्वहन कर सकें। इस प्रकार, शिक्षा व्यवस्था तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक आवश्यकताओं से संबद्ध थी।

126. (A) मीराबाई - पंजाब
मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के संतों का अपना एक विशिष्ट भौगोलिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव क्षेत्र था। मीराबाई का संबंध मुख्य रूप से राजस्थान एवं गुजरात से था, जहाँ उन्होंने भगवान कृष्ण की भक्ति का प्रसार किया। संत ज्ञानेश्वर महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय के आधार स्तंभ थे। चैतन्य महाप्रभु ने बंगाल में कृष्ण भक्ति को लोकप्रिय बनाया। रामानंद ने उत्तर भारत, विशेषकर वाराणसी को अपना केंद्र बनाकर भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। संतों और उनके क्षेत्रों का यह समन्वय भारतीय आध्यात्मिकता की क्षेत्रीय विविधता और व्यापक प्रभाव को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

127. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विजयनगर साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि का मुख्य आधार इसकी उर्वर भूमि एवं सक्रिय विदेशी व्यापार था। रायचूर दोआब जैसे उपजाऊ क्षेत्रों पर नियंत्रण और तुंगभद्रा नदी द्वारा निर्मित उन्नत सिंचाई व्यवस्था ने कृषि उत्पादन को अत्यधिक बढ़ाया। इसके अतिरिक्त, पत्तनों के माध्यम से होने वाले लाभदायक समुद्री व्यापार ने साम्राज्य के कोष को स्वर्ण एवं रजत से भर दिया। राज्य की सुव्यवस्थित भू-राजस्व प्रणाली ने इन संसाधनों का कुशल प्रबंधन किया, जिससे विजयनगर को उस काल के सर्वाधिक धनी एवं शक्तिशाली साम्राज्यों में से एक बनने में सहायता प्राप्त हुई।

128. (A) शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत
सूफी दर्शन की 'वहदत-उल-वुजूद' (अस्तित्व की एकता) की अवधारणा भारतीय दार्शनिक चिंतन, विशेष रूप से शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के अत्यंत निकट मानी जाती है। दोनों ही विचारधाराएँ यह मानती हैं कि परम सत्य अथवा ईश्वर एक ही है और यह संपूर्ण दृश्य जगत उसी की अभिव्यक्ति है। जहाँ अद्वैत वेदांत आत्मा एवं ब्रह्म की एकता पर बल देता है, वहीं वहदत-उल-वुजूद संपूर्ण सृष्टि में ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने का संदेश देता है। इस वैचारिक समानता ने भारत में सूफीवाद और हिंदू दर्शन के मध्य एक गहरा आध्यात्मिक संवाद स्थापित किया था।

129. (2, 4, 3, 1)
दिल्ली सल्तनत एवं मुगल काल की स्थापत्य कला का विकास विभिन्न चरणों में हुआ। कुतुब मीनार का निर्माण 12वीं शताब्दी के अंत में प्रारंभ हुआ, जो सल्तनत कालीन भव्यता का प्रतीक है। इसके सदियों पश्चात, 16वीं शताब्दी में हुमायूँ का मकबरा और फिर अकबर द्वारा बुलंद दरवाजा निर्मित कराया गया। अंततः, 17वीं शताब्दी के मध्य में शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण पूर्ण कराया। स्मारकों का यह कालक्रम न केवल समय के प्रवाह को दर्शाता है, अपितु यह स्थापत्य शैलियों के क्रमिक विकास एवं मुगल कालीन वैभव के उत्कर्ष को प्रदर्शित करता है।

130. (A) राजस्थानी चित्रकला
चित्रकला की 'किशनगढ़ शैली' राजस्थानी चित्रकला की एक अत्यंत विशिष्ट एवं सुंदर उप-शैली है, जो 18वीं शताब्दी में अपने चरमोत्कर्ष पर थी। यह शैली अपनी गीतात्मकता, सूक्ष्म रेखांकन एवं भावनात्मक गहराई हेतु जानी जाती है। इस शैली की सबसे प्रसिद्ध कृति 'बणी ठणी' है, जिसे भारतीय कला की 'मोनालिसा' भी कहा जाता है। इसमें राधा एवं कृष्ण के प्रेम प्रसंगों को अत्यंत सुंदरता के साथ चित्रित किया गया है। किशनगढ़ शैली ने राजस्थानी कला की समृद्ध परंपरा को नवीन आयाम प्रदान किया, जो आज भी कला प्रेमियों को मंत्रमुग्ध करता है।

131. (A) कुछ महिलाएं उच्च शिक्षित थीं और साहित्य, प्रशासन तथा यहाँ तक कि कुश्ती में भी सम्मिलित थीं, जबकि सती जैसी प्रथाएँ भी प्रचलित थीं।
विजयनगर साम्राज्य में महिलाओं की स्थिति विरोधाभासों से पूर्ण थी। एक ओर, समाज में सती प्रथा एवं बहुविवाह जैसी कुरीतियां प्रचलित थीं। दूसरी ओर, कुछ महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने और संगीत, लेखन तथा प्रशासनिक कार्यों में भाग लेने के अवसर प्राप्त थे। ऐतिहासिक वृत्तांतों के अनुसार, महिलाएं युद्ध कौशल एवं कुश्ती में भी निपुण थीं। यह स्थिति यह दर्शाती है कि यद्यपि सामाजिक संरचना पारंपरिक थी, फिर भी प्रतिभावान महिलाओं हेतु सार्वजनिक एवं बौद्धिक जीवन में स्थान उपलब्ध था, जो उन्हें एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता था।

ने संगीत के प्रयोग के कारण इसका विरोध किया, किंतु चिश्ती जैसे सूफी सिलसिलों में इसे आध्यात्मिक जागृति का सशक्त साधन माना गया। समा ने न केवल सूफी दर्शन को लोकप्रिय बनाया, अपितु भारतीय एवं इस्लामी संगीत के समन्वय में भी भूमिका निभाई।

97. (B) निराकार ईश्वर पर बल देने वाली निर्गुण भक्ति
मध्य प्रदेश के निमाड़ क्षेत्र के पूजनीय संत सिंगाजी निर्गुण भक्ति परंपरा के एक महान प्रस्तावक थे। उन्होंने कबीर की भांति निराकार ईश्वर की उपासना का संदेश दिया और बाह्य आडंबरों एवं कर्मकांडों का विरोध किया। उनकी वाणी सरल एवं ग्रामीण परिवेश के निकट थी, जिसने जनसाधारण के हृदय को गहराई से स्पर्श किया। वे पशुपालकों के संरक्षक देवता के रूप में भी पूजे जाते हैं। उनकी शिक्षाओं ने समाज में सादगी एवं अध्यात्म का प्रसार किया, जिससे निमाड़ की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ आधार प्राप्त हुआ।

98. (A) आंतरिक कक्ष के लिए आनुपातिक छत बनाए रखते हुए एक भव्य और प्रभावशाली बाहरी रूप प्रदान करना।
मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला में 'दोहरा गुंबद' एक महत्वपूर्ण तकनीकी नवाचार था जिसका मुख्य उद्देश्य भवनों को भव्यता एवं सुदृढ़ता प्रदान करना था। इस पद्धति में एक के ऊपर एक दो गुंबद निर्मित किए जाते थे। बाह्य गुंबद भवन को बाहर से ऊँचा एवं प्रभावशाली बनाता था, जबकि आंतरिक गुंबद कक्ष की छत की ऊँचाई को संतुलित रखता था। हुमायूँ का मकबरा इस तकनीक का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसने संरचना को स्थायित्व प्रदान किया और विशाल गुंबदों के निर्माण की चुनौतियों का कुशलतापूर्वक समाधान किया।

99. (C) साख और प्रेषण (remittance) के साधन, जो आधुनिक विनिमय पत्रों के समान थे।
मध्यकालीन भारतीय व्यापारिक व्यवस्था में 'हुंडी' साख एवं प्रेषण का अत्यंत विश्वसनीय साधन थी। यह एक प्रकार का विनिमय पत्र होता था जिसके माध्यम से व्यापारी एक स्थान से दूसरे स्थान तक बिना नकद ले जाए धन का सुरक्षित हस्तांतरण कर सकते थे। इससे डकैती का जोखिम न्यून हुआ और लंबी दूरी के व्यापार को गति मिली। सराफों द्वारा संचालित यह सुव्यवस्थित हुंडी प्रणाली उस काल की उन्नत वित्तीय परिपक्वता एवं व्यापारिक सुगमता का एक ठोस प्रमाण है, जिसने अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाया।

100. (D) कई नए हिंदू मंदिरों का संरक्षण और निर्माण।
औरंगजेब की धार्मिक नीति अपनी रूढ़िवादिता एवं कठोरता हेतु जानी जाती है, जिसके अंतर्गत उसने जजिया कर को पुनः आरोपित किया और कई हिंदू मंदिरों को क्षति पहुँचाने का आदेश दिया। उसने 'झरोखा-दर्शन' जैसी प्रथाओं एवं संगीत पर भी प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि वह उन्हें अनुचित मानता था। उसकी नीति हिंदू मंदिरों के संरक्षण के स्थान पर इस्लामी सिद्धांतों के शुद्धिकरण पर केंद्रित थी। यह दृष्टिकोण धार्मिक सहिष्णुता के स्थान पर संकीर्णता की ओर झुकाव प्रदर्शित करता था, जिसने साम्राज्य को प्रभावित किया।

101. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्यकालीन भारत की आर्थिक समृद्धि में व्यापार एवं वाणिज्य का महत्वपूर्ण स्थान था। मुगल साम्राज्य द्वारा स्थापित राजनीतिक स्थिरता ने व्यापारियों को सुरक्षा प्रदान की, जिससे निवेश में वृद्धि हुई। सड़कों के व्यापक संजाल एवं सरायों जैसी सुविधाओं ने लंबी दूरी की यात्रा को सुगम बनाया। इसके अतिरिक्त, टंकण प्रणाली के मानकीकरण एवं हुंडी जैसी वित्तीय व्यवस्थाओं ने आंतरिक तथा विदेशी व्यापार को अत्यधिक गति प्रदान की। इन कारकों ने भारतीय बाजारों को विश्व व्यापार का एक जीवंत केंद्र बना दिया था।

102. (B) तुलसीदास
संत तुलसीदास 16वीं शताब्दी के एक महान भक्त कवि थे जिन्होंने अवधी भाषा में 'रामचरितमानस' की रचना की। इस महाकाव्य ने भगवान राम की कथा को जन-जन तक पहुँचाया और इसे घर-घर में लोकप्रिय बना दिया। उनकी रचना ने भक्ति को नवीन आयाम प्रदान किया, जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम राम को आदर्श मानकर भक्ति एवं सदाचार पर बल दिया गया। रामचरितमानस न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, अपितु यह भारतीय संस्कृति एवं नैतिकता का एक अमूल्य स्तंभ है जिसने समाज को निरंतर प्रेरित किया है।

103. (D) गाउन या लंबा कोट (अंगरखा)
मुगल कालीन पहनावे में 'जामा' एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं गरिमामयी वस्त्र था, जो पुरुषों के परिधान का मुख्य भाग माना जाता था। यह एक लंबा, घेरदार एवं घुटनों तक आने वाला कोट अथवा अंगरखा होता था, जिसे वक्ष के समीप बांधा जाता था। इसे उत्तम रेशमी अथवा सूती वस्त्रों से निर्मित किया जाता था और इस पर अक्सर सुंदर नक्काशी की जाती थी। जामा न केवल राजसी वैभव का प्रतीक था, अपितु इसने उस समय की सांस्कृतिक एवं वस्त्र शैली में एक विशिष्ट पहचान स्थापित की थी।

104. (A) P-2, Q-3, R-1, S-4
भारत में सूफी सिलसिलों ने आध्यात्मिक मार्गदर्शन के माध्यम से समाज को गहराई से प्रभावित किया। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने चिश्ती सिलसिले की आधारशिला रखी और अजमेर को अपना केंद्र बनाया। बहा-उद-दीन ज़कारिया ने सुहरावर्दी सिलसिले के माध्यम से मुल्तान में शिक्षा प्रदान की। शेख अहमद सरहिंदी नक्शबंदी सिलसिले के प्रमुख संत थे, जो अपनी रुढ़िवादी मान्यताओं हेतु जाने जाते थे। निजामुद्दीन औलिया चिश्ती परंपरा के अत्यंत प्रिय संतों में से एक थे, जिनकी दरगाह सभी समुदायों हेतु श्रद्धा का केंद्र है।

105. (C) फारसी
दिल्ली सल्तनत एवं मुगल साम्राज्य के दौरान फारसी प्रशासन, साहित्य एवं उच्च संस्कृति की प्राथमिक भाषा थी। यद्यपि शासक वर्ग मूल रूप से तुर्की भाषी था, तथापि उन्होंने फारसी को राजकाज की भाषा के रूप में अंगीकार किया। समस्त सरकारी अभिलेख, शाही आदेश एवं साहित्यिक कृतियाँ इसी भाषा में रचित थीं। फारसी के प्रभुत्व ने न केवल प्रशासनिक कार्यों को एकरूपता प्रदान की, अपितु इसने भारतीय एवं

उपदेशों की रचना ब्रज, अवधी एवं मराठी जैसी लोक भाषाओं में की। इससे ये भाषाएँ साहित्यिक रुप से समृद्ध हुईं और ज्ञान का प्रसार व्यापक हुआ। इस भाषाई परिवर्तन ने न केवल धार्मिक संदेशों को सरल बनाया, अपितु समाज के सभी वर्गों के मध्य नवीन भाषाई पहचान एवं सांस्कृतिक चेतना को भी मजबूती प्रदान की थी।

88. (A) बड़ी संख्या में स्वर्ण सिक्कों (वराह) का प्रचलन और एक समृद्ध विदेशी व्यापार।
विजयनगर साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि का मुख्य आधार इसकी सुव्यवस्थित मुद्रा प्रणाली एवं सक्रिय विदेशी व्यापार था। साम्राज्य में 'वराह' नामक स्वर्ण सिक्कों का व्यापक प्रचलन था, जो इसकी आर्थिक शक्ति के प्रतीक थे। इन सिक्कों ने आंतरिक एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाया। पत्तनों के माध्यम से अरब एवं अन्य देशों के साथ मसालों तथा वस्त्रों का व्यापार होता था जिससे प्रचुर संपदा प्राप्त होती थी। यह आर्थिक ढांचा साम्राज्य को शक्तिशाली एवं समृद्ध राष्ट्र के रुप में स्थापित करने हेतु उत्तरदायी था।

89. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
भारतीय आध्यात्मिक इतिहास में विभिन्न संतों ने अपनी विचारधाराओं के माध्यम से समाज को दिशा प्रदान की। शंकराचार्य ने 'अद्वैत वेदांत' के दर्शन से एकता का संदेश दिया। सूफी संतों ने 'वहदत-उल-वुजूद' के माध्यम से अस्तित्व की एकता को समझाया। सम्राट अकबर ने 'सुलह-ए-कुल' की नीति अपनाकर धार्मिक सद्भाव का मार्ग प्रशस्त किया, जबकि गुरु गोविंद सिंह ने 'खालसा' की स्थापना कर एक अनुशासित योद्धा समुदाय तैयार किया। इन दर्शनों ने मिलकर भारतीय संस्कृति को अधिक समावेशी एवं बहुआयामी बनाया है।

90. (A) कृष्णदेवराय
विजयनगर साम्राज्य के महान शासक कृष्णदेवराय के दरबार में आठ सर्वश्रेष्ठ तेलुगु कवियों का समूह था, जिन्हें 'अष्टदिग्गज' कहा जाता था। ये कवि साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षक थे और उनके सानिध्य में तेलुगु साहित्य का स्वर्ण युग प्रारंभ हुआ। अल्लसानी पेद्दन उनमें सर्वाधिक प्रमुख थे। जैसे शिवाजी के पास 'अष्ट प्रधान' नामक प्रशासनिक परिषद थी, वैसे ही कृष्णदेवराय के अष्टदिग्गजों ने बौद्धिक विकास में योगदान दिया। यह शासक की विद्वत्ता एवं साहित्य के प्रति उनके समर्पण का परिचायक है।

91. (D) यथार्थवादी व्यक्ति-चित्र (पोट्रेट) तथा वनस्पतियों और जीवों का विस्तृत अध्ययन।
मुगल सम्राट जहाँगीर कला का अनन्य प्रेमी था और उसके शासनकाल में चित्रकला ने यथार्थवाद के नवीन आयाम स्थापित किए। जहाँगीर ने विशेष रूप से व्यक्ति-चित्रों एवं प्रकृति के सूक्ष्म अध्ययन को प्रोत्साहित किया। उसके निर्देश पर चित्रकारों ने पुष्पों, पक्षियों एवं पशुओं के अत्यंत विस्तृत तथा वैज्ञानिक रुप से सटीक चित्र निर्मित किए। मंसूर जैसे महान चित्रकार इसी काल की देन थे। इस शैली ने तकनीकी प्रवीणता और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत समन्वय प्रदर्शित किया, जो मुगल कला की विशिष्ट पहचान बनी।

92. (A) केवल 2
मुगल शासन के दौरान कृषकों की आर्थिक स्थिति प्रायः कठिन थी क्योंकि राज्य की भू-राजस्व मांग अत्यधिक थी। अधिकांश क्षेत्रों में कृषकों को अपनी कुल उपज का एक-तिहाई से आधा भाग कर के रूप में देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त उन्हें कई स्थानीय उपकरों का भुगतान भी करना होता था। यद्यपि अकाल के समय राजस्व में छूट के कुछ प्रावधान थे, किंतु भारी करों के भार ने उन्हें सदैव आर्थिक दबाव में रखा। यह स्थिति कृषि प्रधान समाज में उत्पादकों एवं राज्य के मध्य तनावपूर्ण संबंधों को दर्शाती है।

93. (C) एक निराकार ईश्वर के प्रति भक्ति और संपूर्ण मानवता की समानता।
सिख गुरुओं की शिक्षाएं निराकार ईश्वर की भक्ति और मानवता की समानता पर आधारित हैं। उन्होंने मूर्तिपूजा, निरर्थक कर्मकांडों एवं जातिगत भेदभाव का कड़ा विरोध किया। उनकी दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं और ईश्वर की सेवा का सर्वोत्तम मार्ग मानवता की निस्वार्थ सेवा है। उन्होंने सत्यनिष्ठा, ईमानदारी से श्रम करने एवं निर्बल वर्गों की सहायता करने पर विशेष बल दिया। इन नैतिक एवं आध्यात्मिक सिद्धांतों ने एक समतावादी समाज की आधारशिला रखी जहाँ प्रेम एवं सेवा ही सर्वोच्च धर्म माना जाता है।

94. (B) वर्ण व्यवस्था द्वारा शासित समाज, परंतु जिसमें अनेक जातियों और उप-जातियों का विस्तार हुआ।
मध्यकालीन हिंदू समाज की संरचना मुख्य रुप से वर्ण व्यवस्था एवं उसमें विकसित अनेक जातियों के पदानुक्रम द्वारा निर्धारित थी। यद्यपि मूल ढांचा अपरिवर्तित रहा, किंतु इस काल में विभिन्न व्यवसायों के आधार पर समाज कई नवीन जातियों में विभाजित हुआ। खान-पान एवं विवाह के नियम अत्यंत कठोर थे, जो सामाजिक पृथक्करण को बढ़ावा देते थे। भक्ति आंदोलन ने जाति की कठोरता को चुनौती दी, किंतु समग्र सामाजिक व्यवस्था व्यापक रुप से जन्म आधारित श्रेणियों और पारंपरिक रीति-रिवाजों से ही संचालित होती रही।

95. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
विजयनगर साम्राज्य की स्थापत्य शैली पूर्ववर्ती दक्षिण भारतीय राजवंशों जैसे चोल एवं होयसल की समृद्ध परंपराओं का एक उन्नत स्वरुप थी। विजयनगर के वास्तुकारों ने इन शैलियों के सर्वोत्तम तत्वों को ग्रहण कर उन्हें अधिक भव्यता प्रदान की। उन्होंने विशाल गोपुरों एवं जटिल नक्काशीदार स्तंभों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया। यह शैली प्राचीन स्थापत्य कला की निरंतरता और उसमें नवीनता का एक सुंदर संगम थी, जिसने हम्पी जैसे भव्य नगर को विश्वपटल पर एक अनूठी पहचान प्रदान की।

96. (B) आध्यात्मिक स्थिति प्रेरित करने के लिए संगीत और काव्य प्रदर्शनों का पाठ।
सूफी साधना में 'समा' एक अत्यंत महत्वपूर्ण आध्यात्मिक प्रथा है, जिसमें संगीत एवं काव्य पाठ के माध्यम से भक्त ईश्वर के साथ एकाकार होने का प्रयास करता है। यह सभाएं रुहानी परमानंद प्राप्त करने हेतु आयोजित की जाती थीं। यद्यपि रुढ़िवादी उलेमा

115. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विजयनगर साम्राज्य के शासक, विशेष रूप से कृष्णदेवराय, कला एवं साहित्य के महान संरक्षक थे। उनके शासनकाल को तेलुगु साहित्य का 'स्वर्ण युग' माना जाता है क्योंकि उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं को अत्यधिक प्रोत्साहित किया। उनके दरबार में आठ महान कवि 'अष्टदिग्गज' के रूप में सुशोभित थे, जिन्होंने साहित्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी योगदान दिया। कृष्णदेवराय स्वयं एक विद्वान लेखक थे, जिन्होंने 'अमुक्तमाल्यद' जैसी महत्वपूर्ण कृति की रचना की। इस संरक्षण ने न केवल साहित्य को समृद्ध किया, अपितु साम्राज्य को सांस्कृतिक केंद्र बनाया।

116. (A) उनके व्यक्तिगत विश्वासों और राजनीतिक आवश्यकताओं से प्रभावित एक व्यावहारिक और सहिष्णु दृष्टिकोण।
मुगल सम्राट हुमायूँ की धार्मिक नीति अधिकांशतः उदार एवं व्यावहारिक थी। यद्यपि वह एक धर्मनिष्ठ मुसलमान था, तथापि उसका व्यक्तिगत दृष्टिकोण रहस्यवादी मान्यताओं से भी प्रभावित था। उसने अपनी सत्ता सुदृढ़ करने हेतु विभिन्न समुदायों के प्रति सहिष्णुता अपनाई और किसी भी प्रकार के व्यापक धार्मिक उत्पीड़न से परहेज किया। उसका शासनकाल निरंतर संघर्षों से युक्त रहा, जिसके कारण उसकी नीतियां स्थिरता के स्थान पर तात्कालिक राजनीतिक आवश्यकताओं एवं आपसी सामंजस्य पर अधिक केंद्रित रहीं, जिससे भविष्य के शासन की आधारशिला रखी गई।

117. (A) यह जातीयता (तुर्क, अफगान, फारसी) तथा विदेशी मूल (अशरफ) एवं स्वदेशी धर्मांतरितों (अजलाफ) के बीच के अंतर पर आधारित था।
मध्यकालीन मुस्लिम समाज एक अखंड समुदाय नहीं था, अपितु यह कई सामाजिक एवं जातीय विभाजनों में विभक्त था। समाज में मुख्य रूप से विदेशी मूल के मुसलमानों, जिन्हें 'अशरफ' कहा जाता था, और स्थानीय स्तर पर धर्मांतरित हुए 'अजलाफ' के मध्य एक स्पष्ट अंतर था। अशरफ वर्ग में तुर्क एवं अफगान मूल के लोग सम्मिलित थे जो प्रशासन में उच्च पदों पर आसीन थे। स्थानीय धर्मांतरितों ने अक्सर अपनी पुरातन जातिगत पहचानों एवं व्यवसायों को बनाए रखा, जिससे समुदाय के भीतर भी एक पदानुक्रमित संरचना निर्मित हुई थी।

118. (A) पूर्व-वैदिक और गैर-आर्य लोक परंपराएं जिन्हें बाद में मुख्यधारा के हिंदू धर्म में आत्मसात कर लिया गया।
शाक्त धर्म, जो शक्ति अथवा देवी की उपासना पर केंद्रित है, की जड़ें भारत की अत्यंत प्राचीन स्थानीय लोक परंपराओं में गहराई से समाहित हैं। प्रारंभ में ये परंपराएँ मुख्यधारा के वैदिक धर्म से पृथक थीं, किंतु समय के साथ इन्हें हिंदू धर्म के दार्शनिक ढांचे में आत्मसात कर लिया गया। मध्यकाल तक शाक्त मत एक अत्यंत शक्तिशाली संप्रदाय बन गया, जिसने तांत्रिक क्रियाओं एवं भक्ति के समन्वय से अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित की। यह विकास भारतीय संस्कृति की समावेशी प्रकृति और स्थानीय मान्यताओं के निरंतर प्रभाव को दर्शाता है।

119. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
मुगल एवं विजयनगर वास्तुकला की विशिष्ट विशेषताएं उनके प्रसिद्ध स्मारकों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। एतमाद-उद-दौला का मकबरा अपनी सुंदर 'पितरा दुरा' जड़ाऊ कार्य हेतु प्रसिद्ध है। हुमायूँ का मकबरा भारत में 'दोहरा गुंबद' तकनीक एवं 'चारबाग' शैली के शुरुआती उपयोग का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। दूसरी ओर, दक्षिण भारत के मीनाक्षी मंदिर जैसे विशाल परिसरों में अलंकृत 'गोपुरम्' मंदिर वास्तुकला की मुख्य पहचान हैं। ये स्थापत्य तत्व उस काल की तकनीकी उन्नति, कलात्मक सौंदर्य एवं सांस्कृतिक पहचान के गौरवशाली प्रतीक माने जाते हैं।

120. (A) बैलगाड़ियों के बड़े काफिले
मध्यकालीन भारत में आंतरिक व्यापार का सुचारु संचालन मुख्य रूप से बैलगाड़ियों एवं भारवाही पशुओं के बड़े काफिलों पर निर्भर था। बंजारों जैसे भ्रमणशील समुदायों ने इस परिवहन व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो खाद्यान्न एवं अन्य थोक वस्तुओं को देश के एक भाग से दूसरे भाग तक पहुँचाते थे। ये काफिले अक्सर सहस्रों की संख्या में चलते थे और उनकी सुरक्षा हेतु विशेष प्रबंध किए जाते थे। इस सुव्यवस्थित परिवहन प्रणाली ने न केवल नगरों की आपूर्ति सुनिश्चित की, अपितु सुदूर क्षेत्रों के मध्य व्यापारिक आदान-प्रदान को सुगम बनाया।

121. (B) केवल 2 और 3
औरंगजेब की धार्मिक नीति पूर्ववर्ती उदार नीतियों से पूर्णतः भिन्न एवं रूढ़िवादी थी। उसने शासन को इस्लामी विधियों के अनुसार ढालने का प्रयास किया, जिसके अंतर्गत जजिया कर को पुनः लागू किया गया, जो गैर-मुसलमानों हेतु आर्थिक एवं सामाजिक भेदभाव का प्रतीक था। इसके अतिरिक्त, उसने कई प्रमुख मंदिरों को क्षति पहुँचाने का आदेश दिया, जिन्हें वह राजनीतिक अवज्ञा के केंद्रों के रूप में देखता था। यद्यपि उसने सभी हिंदू पर्वों पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाया, तथापि उसके इन कठोर कदमों ने साम्राज्य के भीतर धार्मिक तनाव को अत्यधिक बढ़ा दिया था।

122. (B) यह स्वयं पवित्र ग्रंथ को जीवित गुरु का दर्जा देता है।
गुरु ग्रंथ साहिब सिख धर्म का सर्वोच्च आध्यात्मिक ग्रंथ है और इसे विश्व के अन्य धर्मग्रंथों की तुलना में अद्वितीय स्थान प्राप्त है। इसकी विशिष्ट विशेषता यह है कि दसवें गुरु गोविंद सिंह ने मानवरूपी गुरुओं की परंपरा को समाप्त करते हुए इस पवित्र ग्रंथ को ही सिखों का 'शाश्वत एवं जीवित गुरु' घोषित किया। यह न केवल धार्मिक शिक्षाओं का संग्रह है, अपितु यह सिख समुदाय हेतु अंतिम मार्गदर्शन एवं आध्यात्मिक नेतृत्व का स्रोत भी है। इसकी उपस्थिति मात्र से ही गुरु की उपस्थिति का अनुभव किया जाता है।

123. (C) वस्त्र रंगाई और छपाई
मध्यकालीन भारत हस्तशिल्प एवं वस्त्र निर्माण में विश्व का अग्रणी केंद्र था। 'कलमकारी' आंध्र प्रदेश की प्रसिद्ध कला थी जिसमें सूती वस्त्रों पर हस्त शिल्प से सुंदर चित्र उकेरे जाते थे। इसी प्रकार, 'बंधनी' गुजरात एवं राजस्थान की पारंपरिक रंगाई तकनीक थी जो अपने जीवंत रंगों हेतु विख्यात थी। इन हस्तशिल्प कलाओं ने भारतीय वस्त्रों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान दिलाई। इन वस्त्रों की अत्यधिक मांग के कारण

स्थान दिया गया है। यह समावेशी दृष्टिकोण धर्म की सीमाओं से परे सत्य की खोज को दर्शाता है। गुरु अर्जुन देव ने इसका प्रथम संकलन किया था। यह ग्रंथ आज भी मानवता के लिए प्रेम, समानता एवं शांति का एक महान प्रेरणा स्रोत बना हुआ है।

70. (B) औरंगजेब
औरंगजेब के शासनकाल में मुगल कला एवं संस्कृति की दिशा में परिवर्तन आया। अपनी रूढ़िवादी धार्मिक मान्यताओं के कारण उसने शाही दरबार से संगीत एवं चित्रकला जैसे ललित कलाओं के संरक्षण को समाप्त कर दिया। इसके परिणामस्वरूप, कलाकार एवं संगीतज्ञ क्षेत्रीय राज्यों की ओर पलायन करने लगे, जिससे क्षेत्रीय कला शैलियों का विकास हुआ। औरंगजेब का ध्यान मुख्य रूप से मस्जिदों के निर्माण और रूढ़िवादी धार्मिक कार्यों पर केंद्रित रहा। इस नीति ने मुगल दरबार की उस सांस्कृतिक विविधता को प्रभावित किया जो पूर्व में विद्यमान थी।

71. (D) बहा-उद-दीन ज़कारिया
भारत में सुहरावर्दी सूफी सिलसिला अपनी विशिष्ट कार्य पद्धति हेतु विख्यात था। चिश्ती सिलसिले के विपरीत, सुहरावर्दी संतों का मत था कि राज्य का संरक्षण एवं धन स्वीकार करने में कोई दोष नहीं है, यदि उसका उपयोग मानवता की सेवा हेतु किया जाए। बहा-उद-दीन ज़कारिया इसके प्रमुख संत थे जिन्होंने मुल्तान को अपना केंद्र बनाया। उन्होंने राजकीय पदों को भी स्वीकार किया। यह सिलसिला सादगी के स्थान पर एक सुव्यवस्थित जीवनशैली में विश्वास करता था, जिसने उत्तर-पश्चिमी भारत में अपनी पैठ बनाई।

72. (A) 2, 4, 1, 3
सिख एवं मुगल संबंधों का इतिहास कई महत्वपूर्ण पड़ावों से गुजरा है। सर्वप्रथम, गुरु अर्जुन देव ने आदि ग्रंथ का संकलन किया और कालांतर में वे शहीद हुए। इसके पश्चात, नौवें गुरु तेग बहादुर को औरंगजेब के काल में मृत्युदंड दिया गया। अंततः, 1699 में गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की, जिसने सिख समुदाय को नवीन संगठित सैन्य एवं आध्यात्मिक पहचान प्रदान की। यह कालक्रम सिख धर्म के आध्यात्मिक संकलन से लेकर दमन के विरुद्ध संघर्ष एवं सशक्तिकरण की यात्रा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

73. (C) वल्लभाचार्य
पुष्टिमार्ग कृष्ण भक्ति की एक अत्यंत प्रभावशाली धारा है, जिसकी स्थापना 15वीं शताब्दी में वल्लभाचार्य द्वारा की गई थी। इस संप्रदाय का मुख्य दर्शन 'शुद्धाद्वैत' है, जो ईश्वर के अनुग्रह के माध्यम से मुक्ति प्राप्ति पर बल देता है। इसमें भगवान कृष्ण के बाल रूप की उपासना को सर्वोपरि माना गया है। वल्लभाचार्य की शिक्षाओं ने पुष्टिमार्ग को गुजरात एवं राजस्थान के क्षेत्रों में अत्यंत लोकप्रिय बनाया। इसके माध्यम से संगीत एवं साहित्य में भी कृष्ण भक्ति की एक समृद्ध परंपरा विकसित हुई जो आज भी जीवंत है।

74. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुगल शासन के दौरान भारत का विदेशी व्यापार अत्यंत उन्नत अवस्था में था और व्यापार संतुलन सदैव भारत के पक्ष में रहता था। भारतीय वस्त्रों, मसालों एवं नील की अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अत्यधिक मांग थी, जिसके प्रतिफल स्वरूप भारत बड़ी मात्रा में स्वर्ण एवं रजत का आयात करता था। यूरोपीय कंपनियों के आगमन ने इस व्यापार को और अधिक गति प्रदान की। भारत के निर्यात की प्रचुरता ने देश को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाया, जिससे मुगल काल को भारतीय इतिहास का संपन्न युग माना जाता है।

75. (D) वारकरी
मध्यकालीन भारत में शैव धर्म विभिन्न संप्रदायों के माध्यम से विकसित हुआ, जिनमें पाशुपत एवं कापालिक जैसे तपस्वी संप्रदाय प्रमुख थे। ये संप्रदाय शिव की कठिन साधना पद्धतियों हेतु जाने जाते थे। वारकरी संप्रदाय शैव धर्म का भाग नहीं है, अपितु यह महाराष्ट्र का एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्ति संप्रदाय है जो भगवान विठोबा की पूजा पर केंद्रित है। वारकरी संत अपनी सादगी एवं पंढरपुर की तीर्थयात्रा हेतु प्रसिद्ध थे, जो शैव संप्रदायों की तुलना में पूर्णतः भिन्न धार्मिक एवं आध्यात्मिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है।

76. (B) राज्य के लिए धर्मशास्त्रियों, न्यायविदों और प्रशासकों का एक वर्ग तैयार करना।
मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली में मदरसे उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र थे जिनका प्राथमिक उद्देश्य राज्य की प्रशासनिक एवं न्यायिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना था। यहाँ छात्रों को अरबी, फारसी, धर्मशास्त्र एवं इस्लामी विधि जैसे विषयों में निपुण बनाया जाता था। इन संस्थानों से प्रशिक्षित विद्वान काजी एवं अन्य महत्वपूर्ण राजकीय पदों पर नियुक्त होते थे। मदरसे न केवल धार्मिक शिक्षा के केंद्र थे, अपितु वे बौद्धिक विमर्श के स्थान भी थे, जिन्होंने मध्यकालीन भारत की प्रशासनिक संरचना को सुदृढ़ करने में योगदान दिया।

77. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
मध्यकाल का साहित्य विभिन्न भाषाओं की समृद्धि का परिचायक है। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना अवधी में की। कृष्णदेवराय ने तेलुगु में 'अमुक्तमाल्यद' लिखकर शासनकला के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया। गुरु ग्रंथ साहिब का संकलन मुख्य रूप से पंजाबी भाषा में किया गया, जो सिख आध्यात्मिक शिक्षाओं का आधार है। अबुल फज़ल ने 'अकबरनामा' फारसी में लिखा, जो मुगल दरबार की आधिकारिक भाषा थी। इन विभिन्न कृतियों ने भारतीय संस्कृति के बहुआयामी एवं संश्लेषित विकास को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है।

78. (D) तलाक और उत्तराधिकार के समस्त मामलों में महिलाओं के पास पुरुषों के समान और पूर्ण अधिकार थे।
मध्यकालीन मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति के कई वैधानिक एवं सामाजिक पक्ष थे। यद्यपि उन्हें संपत्ति जैसे कुछ कानूनी अधिकार प्राप्त थे, किंतु व्यावहारिक रूप से उन्हें पुरुषों के समान पूर्ण समानता प्राप्त नहीं थी। विवाह एवं उत्तराधिकार

132. (C) केवल 2 और 3
भक्ति आंदोलन के भीतर 'निर्गुण' परंपरा के अनुयायी ईश्वर को निराकार, अजन्मा एवं समस्त गुणों से परे मानते थे। कबीर एवं गुरु नानक इस विचारधारा के प्रमुख प्रस्तावक थे जिन्होंने मूर्तिपूजा एवं बाह्य आडंबरों का विरोध करते हुए आंतरिक आध्यात्मिक जागृति पर बल दिया। उनके अनुसार ईश्वर को किसी विशिष्ट रूप में नहीं, अपितु सत्य एवं प्रेम के रूप में अनुभव किया जा सकता है। इसके विपरीत, तुलसीदास सगुण भक्ति के समर्थक थे जिन्होंने साकार रूप की उपासना की। निर्गुण परंपरा ने समाज में धार्मिक कट्टरता को चुनौती प्रदान की थी।

133. (A) सामान्यतः व्यावहारिक, एक धार्मिक कट्टरपंथी के दुराग्रह के बिना, यद्यपि उसने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धार्मिक शब्दावली का उपयोग करने में संकोच नहीं किया।
प्रथम मुगल सम्राट बाबर की धार्मिक नीति मुख्य रूप से राजनीतिक व्यवहारवाद पर आधारित थी। वह एक कट्टर धार्मिक व्यक्ति नहीं था और उसका मुख्य उद्देश्य भारत में एक स्थायी साम्राज्य स्थापित करना था। उसने अपनी बहुसंख्यक हिंदू प्रजा के प्रति प्रायः सहिष्णुता प्रदर्शित की और स्थानीय शासकों के साथ गठबंधन किए। यद्यपि उसने युद्धों के समय मनोबल बढ़ाने हेतु धार्मिक शब्दावली का प्रयोग किया, किंतु उसके कार्यों में किसी सुव्यवस्थित धार्मिक दमन के प्रमाण नहीं मिलते। उसका दृष्टिकोण लचीला था जिसने समावेशी शासन व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त किया।

134. (A) चिश्ती सामान्यतः राज्य से दूरी बनाए रखते थे और निर्धनता में रहते थे, जबकि सुहरावर्दी राज्य अनुदान और पद स्वीकार करते थे।
भारत में सूफीवाद के दो प्रमुख सिलसिलों, चिश्ती एवं सुहरावर्दी, के मध्य उनकी जीवनशैली एवं राज्य के प्रति दृष्टिकोण में गहरा अंतर था। चिश्ती सूफियों ने सादगी एवं निर्धनता का जीवन अपनाया और वे सक्रिय रूप से राजनीति एवं राजकीय विलासिता से पृथक रहे। उनका मत था कि राज्य का संरक्षण आध्यात्मिक पथ में बाधक हो सकता है। इसके विपरीत, सुहरावर्दी संतों ने राज्य के संरक्षण, अनुदान एवं उच्च पदों को स्वीकार करने में संकोच नहीं किया। वे मानते थे कि सत्ता के समीप रहकर वे समाज कल्याण हेतु अधिक प्रभावी कार्य कर सकते थे।

135. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मुगल सम्राटों ने भारतीय आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु एक अत्यंत कुशल एवं मानकीकृत मुद्रा प्रणाली स्थापित की थी। उनके द्वारा निर्गत स्वर्ण, रजत एवं ताम्र सिक्के अपनी शुद्धता एवं भार में एकरूपता हेतु संपूर्ण एशिया में विख्यात थे। इस सुव्यवस्थित टंकण प्रणाली ने व्यापारिक लेनदेन को सरल एवं विश्वसनीय बना दिया। साम्राज्य के विस्तार के साथ-साथ मुद्रा की इस एकरूपता ने सुदूर क्षेत्रों के मध्य व्यापारिक संबंधों को मजबूती प्रदान की। आर्थिक स्थिरता एवं वाणिज्यिक विकास को बढ़ावा देने में मुगलों की इस मुद्रा व्यवस्था ने मुख्य कार्य किया।

136. (A) नकद वेतन के स्थान पर किसी कुलीन को भूमि के खंड का राजस्व सौंपने की प्रणाली।
मुगल प्रशासनिक व्यवस्था में 'जागीर' प्रणाली राजस्व प्रबंधन एवं सैन्य सेवाओं के मध्य एक सेतु का कार्य करती थी। इसमें राज्य के अधिकारियों, जिन्हें मनसबदार कहा जाता था, को उनके नकद वेतन के प्रतिफल स्वरूप विशिष्ट भूमि क्षेत्रों से राजस्व संग्रह का अधिकार प्रदान किया जाता था। जागीरदार का उस भूमि पर स्थायी स्वामित्व नहीं होता था, उसे केवल वहाँ से निर्धारित कर संग्रह की अनुमति थी। यह व्यवस्था राज्य हेतु प्रशासनिक भार को न्यून करने और कुलीन वर्ग की साम्राज्य के प्रति निष्ठा सुनिश्चित करने का एक प्रभावी आर्थिक उपकरण सिद्ध हुई थी।

137. (A) जौनपुर के शर्की वंश के शासकों को।
भारतीय शास्त्रीय संगीत में 'ख्याल' गायन शैली का विकास मध्यकाल की अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। यद्यपि अमीर खुसरो को इसके प्रारंभिक बीज बोने का श्रेय प्राप्त है, किंतु इसे परिष्कृत एवं लोकप्रिय रूप प्रदान करने में जौनपुर के शर्की सुल्तानों ने केंद्रीय भूमिका निभाई। उनके संरक्षण में ख्याल ने ध्रुपद की कठोरता के स्थान पर अधिक कल्पनाशीलता एवं माधुर्य को अपनाया। यह शैली आगे चलकर हिंदुस्तानी संगीत की मुख्य धारा बन गई, जो भारतीय एवं फारसी संगीत तत्वों के सफल एवं सुंदर समन्वय का प्रतिनिधित्व करती है।

138. (C) सल्तनत काल के दौरान सती प्रथा पूर्णतः समाप्त हो गई थी।
मध्यकालीन भारतीय समाज में कई पारंपरिक सामाजिक रीति-रिवाज एवं प्रथाएं सुदृढ़ता से विद्यमान थीं। जाति व्यवस्था हिंदू समाज का मूल आधार बनी रही, जिसने खान-पान एवं विवाह के नियमों को कड़ाई से लागू किया। उच्च वर्गों की महिलाओं के मध्य 'पर्दा' प्रथा का पालन सामाजिक मर्यादा माना जाता था। सती प्रथा, यद्यपि इसकी आलोचना की जाती थी, तथापि यह पूर्णतः समाप्त नहीं हुई थी और कतिपय समुदायों में इसका प्रचलन बना रहा। मनोरंजन हेतु शतरंज एवं चौपड़ जैसे खेल अत्यंत लोकप्रिय थे, जो सामाजिक जीवन की जीवंतता को दर्शाते थे।

139. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
शाहजहाँ के शासनकाल को मुगल वास्तुकला का 'स्वर्ण युग' माना जाता है क्योंकि इस दौरान निर्माण कला ने अपनी पराकाष्ठा प्राप्त की। शाहजहाँ ने अकबर द्वारा प्रयुक्त लाल बलुआ पत्थर के स्थान पर श्वेत संगमरमर को प्राथमिकता दी, जिससे भवनों में नवीन कोमलता एवं चमक आई। ताजमहल एवं जामा मस्जिद जैसी रचनाएँ उसकी कलात्मक दृष्टि और साम्राज्य के वैभव की साक्षी हैं। इस काल की वास्तुकला में सूक्ष्म नक्काशी, पितरा दुरा का कार्य एवं भव्य गुंबदों का जो संतुलन देखा जाता है, वह भारतीय स्थापत्य के इतिहास में अद्वितीय एवं अनुपम है।

ईरानी संस्कृतियों के मध्य एक सेतु का कार्य भी किया, जिससे शब्दावली में नवीन समृद्धि आई।

106. (C) केवल 2 और 3
विजयनगर साम्राज्य में चित्रकला ने धार्मिक एवं पौराणिक विषयों के माध्यम से विशिष्ट पहचान बनाई। लेपाक्षी एवं हम्पी के मंदिरों की छतों पर बने भित्ति चित्र इस शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ये चित्र रामायण एवं महाभारत जैसी पौराणिक कथाओं के दृश्यों को जीवंत रूप में प्रदर्शित करते हैं। विजयनगर शैली ने पूर्ववर्ती परंपराओं की बारीकियों को अपनाकर उनमें नवीनता जोड़ी। इन चित्रों में रंगों का सुंदर संयोजन और रेखाओं की स्पष्टता उस काल की कलात्मक निपुणता एवं धार्मिक निष्ठा को दर्शाती है।

107. (D) कीर्तन (भक्ति गायन)
गुरु गोविंद सिंह द्वारा खालसा पंथ की स्थापना सिख इतिहास का क्रांतिकारी मोड़ था। उन्होंने सिखों को संगठित पहचान प्रदान करने हेतु 'पांच ककारों' का पालन अनिवार्य किया। इनमें केश, कंघा, कड़ा, कछैरा एवं कृपाण सम्मिलित हैं, जो एक सिख की बाह्य पहचान एवं आंतरिक मूल्यों के प्रतीक हैं। कीर्तन, यद्यपि सिख धर्म में भक्ति का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है, किंतु यह उन पांच अनिवार्य भौतिक प्रतीकों में सम्मिलित नहीं है जिन्हें दीक्षा के समय धारण करना अनिवार्य होता है।

108. (B) अकबर
मुगल सम्राट अकबर द्वारा लागू की गई दहसाला प्रणाली मध्यकालीन भारत की सुव्यवस्थित भू-राजस्व व्यवस्था थी। इस प्रणाली के अंतर्गत भूमि की सटीक पैमाइश की जाती थी और उसकी उत्पादकता के आधार पर वर्गीकरण होता था। राजस्व का निर्धारण विगत दस वर्षों के औसत उत्पादन एवं प्रचलित बाजार मूल्यों के आधार पर किया जाता था। इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने न केवल राज्य की आय को स्थिर किया, अपितु कृषकों हेतु कर भुगतान को अधिक पारदर्शी बनाकर भ्रष्टाचार को न्यून करने में सहायता की थी।

109. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
यद्यपि भक्ति एवं सूफी आंदोलनों के संतों ने जातिगत भेदभाव के विरुद्ध कड़ा संदेश दिया और ईश्वर के समक्ष सभी की समानता पर बल दिया, तथापि समाज की वृहद संरचना में कोई आमूलचूल परिवर्तन नहीं आया। सामाजिक जीवन में जाति व्यवस्था का प्रभाव सुदृढ़ बना रहा। लोग आध्यात्मिक मान्यताओं में समानता को स्वीकार करते थे, किंतु व्यावहारिक रूप से विवाह एवं खान-पान के नियम पारंपरिक श्रेणियों के अनुसार ही संचालित होते रहे। इस प्रकार, आध्यात्मिक क्रांति सामाजिक संरचना को पूर्णतः परिवर्तित नहीं कर सकी।

110. (D) पितरा दुरा (Pietra dura)
मुगल वास्तुकला की अत्यंत सुंदर एवं जटिल सजावटी तकनीक 'पितरा दुरा' थी। इस कला में श्वेत संगमरमर को बहुत सूक्ष्मता से तराशा जाता था और फिर उनमें कीमती रंगीन पत्थरों को जड़कर पुष्प एवं ज्यामितीय प्रतिरूप बनाए जाते थे। यह तकनीक शाहजहाँ के शासनकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर थी, जिसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण ताजमहल की दीवारों पर देखा जा सकता है। इसने भवनों को अनूठी चमक एवं राजसी सौंदर्य प्रदान किया जो आज भी कला के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करता है।

111. (D) महाराष्ट्र
'अभंग' भक्ति कविता का एक विशिष्ट रूप है जो मुख्य रूप से महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय के संतों से संबद्ध है। संत तुकाराम एवं ज्ञानेश्वर जैसे महापुरुषों ने भगवान विठोबा के प्रति अपनी अनन्य भक्ति व्यक्त करने हेतु सहस्रों अभंगों की रचना की। ये रचनाएँ सरल मराठी भाषा में हैं, जो जनमानस के हृदय को गहराई से स्पर्श करती हैं। आज भी महाराष्ट्र की सांस्कृतिक यात्राओं के दौरान इन अभंगों का सामूहिक गायन किया जाता है, जो समाज में आध्यात्मिक चेतना एवं एकता का संचार करता है।

112. (A) जहाँगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो के लिए गुरु का कथित समर्थन।
गुरु अर्जुन देव एवं जहाँगीर के मध्य संघर्ष का मुख्य कारण राजनीतिक था। सम्राट जहाँगीर ने आरोप लगाया कि गुरु ने उसके विद्रोही पुत्र खुसरो को शरण प्रदान की और उसे आशीर्वाद दिया। जहाँगीर ने इसे राजद्रोह माना और गुरु अर्जुन देव को कठोर दंड दिया, जिसके कारण अंततः उनकी शहादत हुई। इस घटना ने सिख एवं मुगल संबंधों में कड़वाहट और संघर्ष की आधारशिला रखी। यह केवल धार्मिक मतभेद नहीं था, अपितु उभरती हुई सिख शक्ति एवं मुगल सत्ता के मध्य राजनीतिक वर्चस्व का परिणाम था।

113. (A) फारसी, मध्य एशियाई और स्वदेशी भारतीय स्थापत्य परंपराओं का संश्लेषण।
उत्तर भारत में मुगल वास्तुकला का विकास विभिन्न संस्कृतियों के सुंदर संगम का प्रतिफल था। मुगलों ने अपने साथ फारसी एवं मध्य एशियाई अभिकल्पों को लाया, जिन्हें उन्होंने भारतीय शिल्पकारों की कुशलता एवं स्वदेशी स्थापत्य परंपराओं के साथ सफलतापूर्वक संयोजित किया। विशाल गुंबद एवं ऊंचे मेहराब जैसे तत्वों को स्थानीय सामग्री के साथ मिश्रित किया गया। इस संश्लेषण ने एक नवीन एवं भव्य स्थापत्य कला को जन्म दिया, जिसने ताजमहल जैसी उत्कृष्ट कृतियों के माध्यम से विश्वपटल पर भारत की अनूठी पहचान स्थापित की।

114. (D) गैर-निवासी किसान जो अपने गाँव के अतिरिक्त किसी अन्य गाँव में भूमि जोतते थे।
मध्यकालीन कृषि व्यवस्था में कृषकों को उनकी निवास स्थिति के आधार पर वर्गीकृत किया गया था। 'पाही-काश्त' वे कृषक थे जो उस ग्राम के स्थायी निवासी नहीं होते थे जहाँ वे कृषि कार्य करते थे। वे प्रायः पड़ोसी ग्रामों से आकर संविदात्मक आधार पर अथवा अस्थाई रूप से भूमि जोतते थे। यह वर्ग अक्सर बेहतर शर्तों अथवा उपजाऊ भूमि की खोज में गतिशील रहता था। इसके विपरीत, 'खुद-काश्त' वे कृषक थे जो अपने ही ग्राम में अपनी भूमि पर खेती करते थे। यह वर्गीकरण ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्पष्ट करता है।

148. (A) बसवन्ना
दक्षिण भारत में वीरशैव अथवा लिंगायत आंदोलन की स्थापना 12वीं शताब्दी में बसवन्ना द्वारा की गई थी। इस आंदोलन ने पारंपरिक हिंदू धर्म के कर्मकांडों, जातिगत भेदभाव और छुआछूत का कड़ा विरोध किया। बसवन्ना ने 'कायका' (ईमानदार श्रम) एवं 'दसोहा' (सेवा) के सिद्धांतों पर बल दिया। उनके अनुयायी भगवान शिव के प्रति अनन्य भक्ति रखते थे और अपने शरीर पर लिंग धारण करते थे। इस क्रांतिकारी आंदोलन ने समाज के शोषित वर्गों को एक नवीन आध्यात्मिक एवं सामाजिक पहचान प्रदान की, जिससे कर्नाटक के धार्मिक परिदृश्य में एक बड़ा परिवर्तन परिलक्षित हुआ।

149. (B) राजा टोडरमल
अकबर की प्रसिद्ध भू-राजस्व प्रणाली 'आईन-ए-दहसाला' के मुख्य वास्तुकार राजा टोडरमल थे, जो उनके राजस्व मंत्री थे। टोडरमल ने अपने विगत अनुभवों के आधार पर इस प्रणाली को अत्यंत वैज्ञानिक एवं सटीक बनाया। इसमें भूमि की माप और विगत दस वर्षों के उत्पादन एवं मूल्यों के औसत आंकड़ों का उपयोग किया गया था। इस सुधार ने न केवल करों के निर्धारण में पारदर्शिता प्रदान की, अपितु इसने राज्य के राजस्व को स्थिर कर कृषकों को भी शोषण से सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। टोडरमल का यह प्रशासनिक नवाचार मुगल साम्राज्य की आर्थिक सफलता का मुख्य आधार सिद्ध हुआ।

150. (B) वह अकबर और जहाँगीर की तुलना में अधिक रुढ़िवादी था, परंतु औरंगजेब से कम।
शाहजहाँ की धार्मिक नीति को मुगल इतिहास में एक संक्रमण काल के रूप में देखा जाता है। यद्यपि उसने अकबर द्वारा प्रारंभ की गई सहिष्णुता की कुछ परंपराओं को अक्षुण्ण रखा, तथापि वह अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में इस्लाम के प्रति अधिक रुढ़िवादी था। उसने कतिपय नवनिर्मित मंदिरों को विनष्ट करने के आदेश दिए और दरबार में इस्लामी रीति-रिवाजों को अधिक महत्व प्रदान किया। तथापि, उसका रुढ़िवाद औरंगजेब जितना कठोर नहीं था। शाहजहाँ का शासनकाल कलात्मक भव्यता के साथ-साथ धीरे-धीरे बढ़ते हुए धार्मिक संकीर्णता के प्रारंभिक लक्षणों का भी साक्षी रहा है।

151. (C) इस्लामी धर्मशास्त्र और विधि (फिक्ह) में विद्वानों को राजकीय अधिकारियों के रूप में सेवा करने के लिए प्रशिक्षित करना।
मध्यकालीन भारत में मदरसों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य राज्य की प्रशासनिक एवं कानूनी व्यवस्था हेतु योग्य व्यक्तियों का वर्ग तैयार करना था। इन संस्थानों में छात्रों को अरबी, फारसी एवं धर्मशास्त्र में गहन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। यहाँ से शिक्षित विद्वान काजी एवं अन्य महत्वपूर्ण राजकीय पदों पर नियुक्त होकर साम्राज्य के संचालन में योगदान देते थे। इस प्रकार, मदरसे न केवल धार्मिक शिक्षा के केंद्र थे, अपितु वे तत्कालीन राजनीतिक संरचना को बौद्धिक आधार प्रदान करने वाले महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थान भी थे, जिन्होंने मध्यकालीन संस्कृति को सुदृढ़ किया।

152. (A) केवल 1 और 2
सिख धर्म के विकास में गुरुओं की अटूट परंपरा ने समाज को नवीन दिशा एवं साहस प्रदान किया। गुरु नानक देव ने इस महान धर्म की स्थापना की और निराकार ईश्वर की भक्ति का संदेश दिया। गुरु गोविंद सिंह दसवें एवं अंतिम मानवरूपी गुरु थे जिन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की और गुरु ग्रंथ साहिब को शाश्वत गुरु घोषित किया। गुरु अर्जुन देव, जो पांचवें गुरु थे, को जहाँगीर के शासनकाल में शहादत प्राप्त हुई थी। इन गुरुओं के बलिदान एवं शिक्षाओं ने सिखों को एक संगठित एवं स्वाभिमानी समुदाय के रूप में विश्वपटल पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

153. (B) हिंदू पौराणिक कथाएं, विशेष रुप से राधा और कृष्ण की किंवदंतियां।
पहाड़ी चित्रकला शैली, जो हिमालय की तलहटी के विभिन्न राज्यों में विकसित हुई, अपनी कोमलता हेतु विख्यात है। इस शैली का मुख्य आधार हिंदू पौराणिक कथाएँ हैं, जिनमें राधा एवं कृष्ण के जीवन की घटनाओं को अत्यंत सुंदरता के साथ चित्रित किया गया है। जयदेव के 'गीत गोविंद' जैसी काव्य कृतियों ने इस शैली को गहराई प्रदान की। प्रकृति के सुंदर चित्रण एवं भावनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति ने पहाड़ी चित्रकला को भारतीय कला के इतिहास में प्रभावशाली स्थान दिलाया है। रंगों का कोमल प्रयोग और विषयों की प्रधानता इस कला की मुख्य विशेषता रही है।

154. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्यकालीन भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आए, जिनमें 'पर्दा' प्रथा का प्रसार एक मुख्य कारक था। उच्च वर्ग की महिलाओं के मध्य इसका पालन अधिक कठोरता से किया जाता था क्योंकि इसे प्रतिष्ठा एवं उच्च सामाजिक स्थिति का प्रतीक माना जाने लगा था। कई कुलीन हिंदू वर्गों ने भी बाह्य प्रभाव में इस प्रथा को अंगीकार किया। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में सहभागिता सीमित हो गई और वे घरेलू सीमाओं तक संकुचित रह गईं। यह प्रथा तत्कालीन समाज के पितृसत्तात्मक ढांचे एवं सुरक्षा संबंधी चिंताओं को भी प्रतिबिंबित करती थी।

155. (A) वे पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा धारण किए जाते थे और सामाजिक स्थिति, धन तथा धार्मिक विश्वास का प्रतीक थे।
मध्यकालीन भारतीय समाज में आभूषणों का उपयोग केवल सौंदर्य प्रसाधन तक सीमित नहीं था, अपितु यह व्यक्ति की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का एक प्रमुख संकेतक था। पुरुष एवं महिलाएं दोनों ही अत्यधिक रुचि के साथ आभूषण धारण करते थे। स्वर्ण एवं बहुमूल्य रत्नों से निर्मित ये आभूषण शाही वैभव का प्रदर्शन करते थे। इसके अतिरिक्त, कुछ आभूषणों का धार्मिक महत्व भी था। आभूषणों की इस व्यापक लोकप्रियता ने उस काल के सूक्ष्म धातु कर्म एवं कलात्मक कौशल को नवीन ऊँचाइयों तक पहुँचाया, जिससे भारतीय शिल्प की प्रतिष्ठा संपूर्ण विश्व में विस्तारित हुई।

विदेशी यात्रियों ने इस साम्राज्य के वैभव एवं जीवंत संस्कृति का विवरण दिया है, जो इसकी ऐतिहासिक भव्यता की पुष्टि करता है।

207. (A) अकबर द्वारा फतेहपुर सीकरी का निर्माण।
फतेहपुर सीकरी का निर्माण सम्राट अकबर की उदारवादी सोच एवं उसकी विशाल सांस्कृतिक दृष्टि का एक भव्य स्वरुप है। इस नवीन नगर के निर्माण में उसने विभिन्न धर्मों एवं क्षेत्रों की स्थापत्य शैलियों को समाहित किया, जो उसके 'सुलह-ए-कुल' के सिद्धांत को परिलक्षित करता है। इबादत खाना एवं बुलंद दरवाजा जैसे भवन हिंदू और फारसी डिजाइनों के सुंदर संगम हैं। इस नगर को राजधानी बनाकर अकबर ने यह संदेश दिया कि उसका साम्राज्य सामंजस्य पर आधारित है। यह परियोजना उस काल की स्थापत्य कला की श्रेष्ठता का एक अद्वितीय और स्थायी स्मारक है।

208. (A) सगुण भक्ति में गुणों के साथ ईश्वर की भक्ति सम्मिलित है, जबकि निर्गुण निराकार ईश्वर की भक्ति है।
भक्ति आंदोलन के भीतर सगुण एवं निर्गुण धाराओं ने ईश्वर प्राप्ति के दो महत्वपूर्ण मार्ग प्रस्तुत किए। सगुण भक्ति में ईश्वर को साकार एवं मानवीय गुणों वाले रूप में पूजने पर बल दिया गया, जहाँ मूर्तिपूजा एवं भजन मुख्य थे। इसके विपरीत, निर्गुण भक्ति ईश्वर को निराकार एवं समस्त गुणों से परे मानती थी, जहाँ आंतरिक अनुभव एवं नाम स्मरण को ही सर्वोच्च साधना माना गया। सगुण संतों में तुलसीदास प्रमुख थे, जबकि कबीर निर्गुण धारा के प्रणेता थे। इन दोनों धाराओं ने मिलकर भारतीय अध्यात्म को एक अत्यंत व्यापक आधार प्रदान किया।

209. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
मुगल सम्राट जहाँगीर चित्रकला का एक महान पारखी एवं समर्पित संरक्षक था। उसका शासनकाल मुगल चित्रकला के इतिहास में 'स्वर्ण युग' के रूप में विख्यात है क्योंकि उसने कला को नवीन तकनीकी सूक्ष्मता तक पहुँचाया। जहाँगीर ने परंपरागत पांडुलिपियों के चित्रण के स्थान पर स्वतंत्र चित्रों, यथार्थवादी व्यक्ति-चित्रों एवं प्रकृति के गहन अध्ययन को विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया। वह स्वयं इतना निपुण था कि कलाकार की पहचान कर सकता था। उसके संरक्षण में कलाकारों ने वनस्पतियों एवं जीवों के ऐसे अद्भुत चित्र बनाए जो आज भी कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

210. (A) इसने क्षेत्रीय लोक भाषाओं में साहित्य के विकास और संवर्धन को प्रेरित किया।
भारतीय साहित्य के इतिहास में भक्ति आंदोलन का सबसे क्रांतिकारी प्रभाव क्षेत्रीय लोक भाषाओं का अभूतपूर्व विकास था। भक्ति संतों ने अनुभव किया कि यदि उन्हें अपना संदेश सामान्य जनता तक प्रभावी ढंग से पहुँचाना है, तो उन्हें जनसाधारण की लोक भाषाओं का प्रयोग करना होगा। इसके परिणामस्वरूप ब्रज, अवधी, मराठी एवं पंजाबी जैसी भाषाओं में महान काव्य ग्रंथों की रचना हुई। इस भाषाई परिवर्तन ने न केवल साहित्य को शास्त्रीय बंधनों से मुक्त किया, अपितु इसने धर्म का लोकतंत्रीकरण करते हुए समाज के प्रत्येक वर्ग को आध्यात्मिक विमर्श का अवसर दिया।

211. (A) तुलसीदास - सगुण भक्ति
भक्ति आंदोलन के संतों को उनकी ईश्वर विषयक अवधारणा के आधार पर सगुण एवं निर्गुण धाराओं में वर्गीकृत किया गया है। तुलसीदास सगुण भक्ति के एक महान प्रणेता थे, जिन्होंने भगवान राम के साकार एवं मर्यादित रूप की उपासना की और 'रामचरितमानस' जैसा कालजयी महाकाव्य निर्मित किया। इसके विपरीत, कबीर एवं गुरु नानक निर्गुण भक्ति के समर्थक थे जिन्होंने ईश्वर को निराकार मानकर आडंबरों का विरोध किया। इस प्रकार, तुलसीदास और सगुण भक्ति का युग्म उस काल की धार्मिक एवं साहित्यिक धारा का एक सटीक और अत्यंत प्रभावशाली प्रतिनिधित्व करता है।

212. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विजयनगर साम्राज्य 15वीं और 16वीं शताब्दी में विश्व के सबसे भव्य एवं समृद्ध नगरों में से एक था, जिसकी पुष्टि अनेक विदेशी यात्रियों के वृत्तांत करते हैं। इस समृद्धि का मुख्य कारण साम्राज्य की सुदृढ़ आर्थिक नींव थी, जो उन्नत सिंचाई परियोजनाओं द्वारा समर्थित कृषि अर्थव्यवस्था पर आधारित थी। इसके साथ ही, साम्राज्य का मसालों एवं वस्त्रों का अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार अत्यंत लाभदायक था। शासकों ने व्यापार एवं कला को भरपूर संरक्षण प्रदान किया, जिससे नगर में संपदा का प्रवाह हुआ। इस आर्थिक सुदृढ़ता ने ही विजयनगर को एक शक्तिशाली सांस्कृतिक शक्ति बनाया।

213. (A) मुगल
भारत में 'चारबाग' उद्यान शैली के निर्माण की परंपरा मुगलों द्वारा प्रारंभ की गई थी, जिसकी आधारशिला प्रथम मुगल सम्राट बाबर ने रखी थी। यह शैली स्वर्ग के उद्यान की इस्लामी अवधारणा पर आधारित है, जहाँ संपूर्ण क्षेत्र को जल नहरों के माध्यम से चार बराबर वर्गाकार भागों में विभाजित किया जाता है। प्रवहमान जल एवं व्यवस्थित रूप से आरोपित वृक्ष इस शैली की मुख्य पहचान हैं। हुमायूँ के मकबरे से लेकर ताजमहल तक, मुगलों ने अपनी भव्य इमारतों के चारों ओर इन उद्यानों का निर्माण कर वास्तुकला एवं प्रकृति के मध्य एक सुंदर सामंजस्य स्थापित किया था।

214. (A) आध्यात्मिक परमानंद प्राप्त करने के लिए भक्ति संगीत और कविता का श्रवण।
सूफी मत में 'समा' एक अत्यंत पवित्र एवं रहस्यमय आध्यात्मिक अभ्यास है जो रूहानी परमानंद प्राप्त करने हेतु किया जाता है। इसमें भक्ति संगीत एवं रूहानी कविता के पाठ का प्रयोग किया जाता है ताकि भक्त का मन सांसारिक चिंताओं से मुक्त होकर ईश्वर के प्रेम में लीन हो सके। यद्यपि कतिपय रूढ़िवादी उलेमा ने इसका विरोध किया, तथापि चिश्ती जैसे सूफी सिलसिलों में इसे रूह की शुद्धि एवं खुदा के साथ एकाकार होने का शक्तिशाली माध्यम माना गया। समा के दौरान होने वाले गायन ने न केवल आध्यात्मिक अनुभव प्रदान किया, अपितु समन्वय का कार्य भी किया।

215. (A) इल्तुतमिश
दिल्ली सल्तनत की मुद्रा व्यवस्था को सुव्यवस्थित एवं मानकीकृत करने का श्रेय सुल्तान इल्तुतमिश को प्राप्त है। उसने

164. (A) केवल 1 और 2
मध्यकालीन भारत उद्योगों एवं हस्तशिल्प में एक वैश्विक शक्ति था। सूती एवं रेशमी वस्त्र उद्योग देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था, जिसकी उत्पादित सामग्री संपूर्ण विश्व में निर्यात की जाती थी। तटीय क्षेत्रों में जलयान निर्माण एक अत्यंत उन्नत उद्योग था जो समुद्री व्यापार को गति प्रदान करता था। इसके विपरीत, यह मानना त्रुटिपूर्ण है कि लौह एवं इस्पात उत्पादन अज्ञात था; भारत अपने उत्कृष्ट इस्पात हेतु प्राचीन काल से ही विख्यात था जिसका उपयोग मध्यकाल में शस्त्रों एवं उपकरणों के निर्माण में व्यापक रूप से किया जाता था।

165. (C) सिख गुरु अर्जुन देव को मृत्युदंड।
मुगल सम्राट जहाँगीर की धार्मिक नीतियां विरोधाभासों से पूर्ण थीं। यद्यपि उसने अकबर की उदारता को बनाए रखने का प्रयत्न किया, तथापि सिख गुरु अर्जुन देव को मृत्युदंड देने की घटना ने उसके शासन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। यह निर्णय मुख्य रूप से विद्रोही राजकुमार खुसरो को गुरु द्वारा प्रदान किए गए कथित समर्थन एवं राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के कारण लिया गया था। इस घटना ने न केवल सिखों को मुगलों के विरुद्ध संघर्ष हेतु प्रेरित किया, अपितु यह जहाँगीर के शासनकाल में राजनीतिक सत्ता के प्रति कठोर दृष्टिकोण का एक प्रमुख उदाहरण भी बन गई।

166. (B) खालसा भूमि
मुगल भू-राजस्व प्रणाली में भूमियों का वर्गीकरण उनके राजस्व प्रबंधन के आधार पर किया गया था। 'खालसा' वह भूमि थी जो सीधे सम्राट के नियंत्रण में होती थी और इससे प्राप्त होने वाला संपूर्ण राजस्व शाही कोष में जमा किया जाता था। इस भूमि का प्रबंधन स्वयं राज्य के अधिकारियों द्वारा किया जाता था, न कि जागीरदारों द्वारा। खालसा भूमि का विस्तार एवं इसकी आय सम्राट की अपनी वित्तीय शक्ति का मुख्य स्रोत थी। इसके विपरीत, 'जागीर' भूमि का राजस्व कुलीन अधिकारियों के वेतन के प्रतिफल में उन्हें हस्तांतरित कर दिया जाता था, जो विकेंद्रीकृत व्यवस्था थी।

167. (A) शरिया के कठोर पालन पर बल और 'समा' जैसे नवाचारों का विरोध।
नक्शबंदी सिलसिला मध्यकालीन भारत में विकसित एक रूढ़िवादी सूफी सिलसिला था जिसने पूर्ववर्ती उदारवादी प्रवृत्तियों का विरोध किया। इस सिलसिले के संतों ने इस्लामी विधि के अक्षरशः पालन पर अत्यधिक बल दिया और संगीत जैसे नवाचारों की आलोचना की जिन्हें वे अनुचित मानते थे। शेख अहमद सरहिंदी इसके प्रमुख प्रस्तावक थे, जिन्होंने अकबर की उदार नीतियों के विरुद्ध स्वर मुखरित किया। इस सिलसिले का उद्देश्य इस्लाम को उसकी मूल शुद्धता में पुनर्जीवित करना था, जिससे परवर्ती मुगल काल के धार्मिक विमर्श पर गहन प्रभाव परिलक्षित हुआ।

168. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
यद्यपि फारसी मध्यकाल में दिल्ली सल्तनत एवं मुगल दरबार की आधिकारिक भाषा थी, तथापि यह मानना त्रुटिपूर्ण है कि संस्कृत साहित्य का विकास अवरुद्ध हो गया था। संस्कृत को क्षेत्रीय राज्यों, विशेष रूप से विजयनगर एवं अन्य राज्यों में निरंतर संरक्षण प्राप्त रहा। इस काल में संस्कृत में धर्मशास्त्र, दर्शन एवं ऐतिहासिक महाकाव्यों की रचना भी अनवरत जारी रही। अनेक विद्वानों ने संस्कृत के प्राचीन ज्ञान को सहेजने और उसे नवीन रचनाओं के माध्यम से विस्तार देने का कार्य किया। फारसी के साथ संस्कृत की यह निरंतरता भारतीय बौद्धिक परंपरा की जीवंतता को प्रदर्शित करती है।

169. (C) वल्लभाचार्य - बंगाल
भक्ति आंदोलन के विभिन्न संतों ने भारत के भिन्न क्षेत्रों में अपनी गहन छाप छोड़ी। तुकाराम महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय के प्राण थे, जबकि गुरु नानक ने पंजाब में सिख धर्म की नींव रखी। रामानुजाचार्य दक्षिण भारत में विशिष्टाद्वैत के प्रणेता बने। वल्लभाचार्य का मुख्य प्रभाव क्षेत्र राजस्थान एवं गुजरात था, जहाँ उन्होंने पुष्टिमार्ग के माध्यम से कृष्ण भक्ति को लोकप्रिय बनाया, न कि बंगाल में (जहाँ चैतन्य महाप्रभु का प्रभाव था)। संतों और उनके भौगोलिक क्षेत्रों का यह वितरण प्रदर्शित करता है कि भक्ति की लहर ने संपूर्ण उपमहाद्वीप को प्रभावित किया था।

170. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1699 में गुरु गोविंद सिंह द्वारा खालसा की स्थापना सिख इतिहास की एक युगांतरकारी घटना थी। इसके माध्यम से उन्होंने सिखों को एक संगठित एवं अनुशासित सैन्य शक्ति में परिवर्तित किया जो अन्याय एवं दमन के विरुद्ध संघर्ष हेतु सदैव तत्पर रहे। 'संत-सिपाही' की यह अवधारणा एक ऐसे आदर्श व्यक्ति का निर्माण करती थी जो आध्यात्मिक रूप से पवित्र और शस्त्र धारण करने में वीर हो। इस परिवर्तन ने सिखों में सामूहिक पहचान, साहस एवं आत्मसम्मान की नवीन भावना भरी, जिसने उन्हें तत्कालीन सत्ता के विरुद्ध एक अजेय शक्ति बना दिया।

171. (A) राजनीतिक व्यवहारवाद और एक नए साम्राज्य को सुदृढ़ करने की आवश्यकता।
बाबर की धार्मिक नीति उसके राजनीतिक उद्देश्यों एवं भारत में नवीन साम्राज्य की नींव रखने की आवश्यकता से संबद्ध थी। वह एक व्यावहारिक शासक था जो जानता था कि विविध देश पर शासन करने हेतु केवल कट्टरता पर्याप्त नहीं है। यद्यपि उसने युद्धों के समय मनोबल वृद्धि हेतु धार्मिक नारों का प्रयोग किया, तथापि शासन के दौरान उसने स्थानीय प्रजा के प्रति सहिष्णुता अपनाई। उसकी प्राथमिकता साम्राज्य विस्तार एवं प्रशासनिक स्थिरता सुनिश्चित करना थी। यह व्यवहारवाद ही था जिसने मुगलों को भारत की जटिल सामाजिक संरचना में स्थापित होने में सहायता की।

172. (A) अपने पति की चिता पर विधवा द्वारा स्वयं को दाह करने की प्रथा।
'सती' प्रथा मध्यकालीन हिंदू समाज की एक अत्यंत विवादित सामाजिक कुरीति थी, जिसमें एक विधवा अपने मृत पति की चिता पर जीवित ही जलकर प्राण त्याग देती थी। यह प्रथा विशेष रूप से कतिपय समुदायों एवं राजपूतों के मध्य प्रचलित थी, जहाँ इसे पति के प्रति सर्वोच्च निष्ठा का प्रतीक

156. (A) मसाले, वस्त्र और बहुमूल्य पत्थर
विजयनगर साम्राज्य का आर्थिक जीवन अपनी व्यापारिक संपन्नता एवं समृद्ध संसाधनों हेतु विख्यात था। साम्राज्य के पत्तन अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रमुख केंद्र थे जहाँ से मसालों के साथ-साथ उच्च गुणवत्ता वाले वस्त्रों का भारी मात्रा में निर्यात किया जाता था। इसके अतिरिक्त, साम्राज्य में हीरों एवं अन्य बहुमूल्य रत्नों की खदानें थीं, जिन्होंने विदेशी व्यापारियों को आकर्षित किया। इस समृद्ध व्यापार ने साम्राज्य को प्रचुर संपदा प्रदान की, जिससे विशाल भवनों का निर्माण संभव हुआ और विजयनगर अपनी भव्यता हेतु विश्व भर में प्रसिद्ध हुआ। व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा भी महत्वपूर्ण थी।

157. (C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
भक्ति आंदोलन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता इसकी समावेशी प्रकृति थी, जिसने समाज के प्रत्येक वर्ग हेतु भक्ति के द्वार खोल दिए। संत रविदास ने यह सिद्ध किया कि ईश्वर की कृपा प्राप्त करने हेतु उच्च कुल में जन्म लेना अनिवार्य नहीं है। यह आंदोलन ब्राह्मणवादी कठोरता के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी जिसने निम्न जातियों एवं महिलाओं को आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का समान अवसर प्रदान किया। इन संतों ने जातिगत भेदों को मिटाकर मानवता एवं प्रेम का संदेश प्रसारित किया, जिससे भारतीय समाज में एक नवीन और व्यापक धार्मिक चेतना का संचार हुआ था।

158. (B) जयदेव
12वीं शताब्दी के कवि जयदेव द्वारा रचित 'गीत गोविंद' संस्कृत साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण रचना है। यह काव्य ग्रंथ भगवान कृष्ण एवं राधा के दिव्य प्रेम तथा मिलन की घटनाओं पर आधारित है। इसकी गीतात्मकता एवं भक्तिपूर्ण भावनाओं ने संपूर्ण भारत में भक्ति आंदोलन को गहराई से प्रभावित किया। विशेष रूप से ओड़िशा एवं बंगाल के क्षेत्रों में इसकी लोकप्रियता अत्यधिक रही। गीत गोविंद ने न केवल साहित्य को समृद्ध किया, अपितु इसने भारतीय संगीत एवं नृत्य की विभिन्न शैलियों को भी सदियों तक प्रेरणा प्रदान की, जो आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

159. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
मुगल सम्राटों की धार्मिक नीतियां उनके शासन की स्थिरता एवं सामाजिक सद्भाव को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक थे। अकबर ने 'सुलह-ए-कुल' के माध्यम से समावेशी समाज का निर्माण किया, जबकि औरंगजेब ने रूढ़िवादी सिद्धांतों को लागू कर जजिया कर को पुनः आरोपित कर दिया। जहाँगीर ने सामान्यतः अकबर की उदारता को निरंतरता प्रदान की, किंतु कुछ राजनीतिक निर्णयों ने विवादों को जन्म दिया। शाहजहाँ के काल में धीरे-धीरे रूढ़िवादिता में वृद्धि होने लगी थी। इन नीतियों के उतार-चढ़ाव ने मुगल साम्राज्य के उत्थान एवं पतन की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

160. (B) वे एक विभेदित समूह थे, जिनमें भूमि के स्वामी 'खुद-काश्त' से लेकर भूमिहीन मजदूर सम्मिलित थे, और वे प्रायः उच्च राजस्व मांगों के अधीन थे।
मध्यकालीन भारतीय कृषक वर्ग कोई एकसमान समूह नहीं था, अपितु वह सामाजिक एवं आर्थिक रूप से विभाजित था। समाज में 'खुद-काश्त' जैसे कृषक थे जिनके पास भूमि का स्थायी स्वामित्व था, वहीं भूमिहीन मजदूरों का भी एक बड़ा वर्ग था जो केवल श्रम पर आश्रित था। राज्य द्वारा निर्धारित भू-राजस्व की मांग प्रायः अत्यधिक होती थी, जिससे कृषकों को जीवन निर्वाह हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ता था। यद्यपि वे उत्पादन की रीढ़ थे, तथापि भारी करों एवं ऋण के भार ने उनकी स्थिति को निरंतर चुनौतीपूर्ण बनाए रखा था, जिससे असंतोष पनपता था।

161. (C) विजयनगर
विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत मंदिर वास्तुकला में कई नवीन एवं भव्य विशेषताओं को संयोजित किया गया, जिनमें 'कल्याण मंडप' सर्वाधिक उल्लेखनीय है। यह एक विशाल विवाह कक्ष होता था जिसमें देवी-देवताओं के औपचारिक विवाह उत्सव आयोजित किए जाते थे। इन मंडपों की मुख्य पहचान उनके जटिल नक्काशीदार स्तंभ थे, जो शिल्पकारों की कलात्मक निपुणता को दर्शाते थे। हम्पी के मंदिरों में इन मंडपों के भव्य अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। इस स्थापत्य शैली ने दक्षिण भारतीय मंदिरों को भव्य सांस्कृतिक आयोजनों के केंद्र के रूप में भी स्थापित किया।

162. (A) गुरु रामदास
सिख धर्म के चौथे गुरु, गुरु रामदास ने पंजाब के अमृतसर नगर की आधारशिला रखी थी। उन्होंने ही इस नगर के मध्य में एक पवित्र सरोवर के निर्माण का कार्य प्रारंभ किया, जो कालांतर में सिखों के सर्वाधिक पावन तीर्थस्थल 'हरमंदिर साहिब' का आधार बना। गुरु रामदास की दूरदर्शिता ने अमृतसर को एक महत्वपूर्ण व्यापारिक एवं धार्मिक केंद्र के रूप में विकसित किया। उनके द्वारा किए गए इन कार्यों ने सिख समुदाय को नवीन भौगोलिक एवं आध्यात्मिक पहचान प्रदान की, जिससे भविष्य में सिख धर्म के प्रसार एवं संगठन को अत्यधिक बल प्राप्त हुआ।

163. (A) उलेमा ने बाह्य धार्मिक कानूनों (शरिया) के कठोर पालन पर बल दिया, जबकि सूफियों ने आंतरिक रहस्यमय अनुभव और ईश्वर के प्रति प्रेम पर बल दिया।
सूफीवाद एवं रूढ़िवादी उलेमा के मध्य वैचारिक भिन्नता का मूल कारण ईश्वर प्राप्ति के मार्गों में अंतर था। उलेमा वर्ग इस्लामी विधियों के बाह्य एवं कठोर अनुपालन को ही धर्म का आधार मानता था। इसके विपरीत, सूफी संतों ने ईश्वर के प्रति प्रेम एवं व्यक्तिगत रहस्यमय अनुभव के माध्यम से आध्यात्मिक उन्नति पर बल दिया। सूफियों का उदार दृष्टिकोण उलेमा हेतु अक्सर असहनीय था। तथापि, समय के साथ इन दोनों धाराओं के मध्य सामंजस्य विकसित हुआ, जिसने भारतीय इस्लाम को एक विशिष्ट रहस्यवादी एवं उदार पहचान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

181. (A) गोपनीयता बनाए रखते हुए आंतरिक भाग में वायु संचार और मंद प्रकाश की अनुमति देना।
मुगल भवनों में नक्काशीदार पाषाण के पर्दे, जिन्हें 'जाली' कहा जाता था, वास्तुकला की एक अत्यंत कार्यात्मक विशेषता थी। इन जालियों का निर्माण इस प्रकार किया जाता था कि वे बाह्य दर्शकों हेतु गोपनीयता बनाए रखें, किंतु साथ ही प्रकाश एवं वायु को निरंतर भीतर प्रवाहित होने दें। यह भारतीय जलवायु में कक्षों को शीतल रखने का एक प्रभावी एवं वैज्ञानिक उपाय था। इन पर की गई जटिल ज्यामितीय नक्काशी ने न केवल भवनों की शोभा बढ़ाई, अपितु प्रकाश एवं छाया के खेल ने आंतरिक वातावरण को एक शांत गरिमा भी प्रदान की।

182. (A) रामानंद
रामानंद को उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सेतु माना जाता है, जिन्होंने दक्षिण भारतीय भक्ति परंपरा को उत्तर के जनमानस तक प्रेषित किया। उन्होंने ईश्वर के प्रति प्रेम एवं समानता का संदेश प्रसारित किया और जातिगत भेदभाव को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया। रामानंद ने ही भक्ति के मार्ग को निम्न जातियों एवं उपेक्षित वर्गों हेतु उन्मुक्त कर दिया, जिससे कबीर जैसे क्रांतिकारी संत प्रादुर्भूत हुए। स्थानीय भाषा का प्रयोग कर उन्होंने भक्ति को एक लोक आंदोलन में परिवर्तित कर दिया, जिसने सामाजिक ढांचे को पुनर्जीवित किया।

183. (A) ऑटोमोबाइल निर्माण
मध्यकालीन भारत अपने उत्कृष्ट हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पादन हेतु संपूर्ण विश्व में विख्यात था। वस्त्र उद्योग यहाँ का सर्वाधिक प्रमुख उद्योग था, जिसके सूती एवं रेशमी वस्त्रों की मांग यूरोप से लेकर एशिया तक थी। धातु कर्म एवं पाषाण नक्काशी में भारतीय शिल्पकारों की कुशलता का कोई विकल्प नहीं था। वे शस्त्र, पात्र और भव्य भवनों हेतु नक्काशीदार पत्थर निर्मित करने में दक्ष थे। ऑटोमोबाइल जैसे आधुनिक उद्योग उस काल की तकनीक के दायरे से परे थे, किंतु पारंपरिक उद्योगों ने भारत को एक अत्यंत समृद्ध आर्थिक केंद्र बनाए रखा था।

184. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
औरंगजेब की धार्मिक एवं राजनीतिक नीतियों ने मुगल साम्राज्य की आधारशिला को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसने पूर्ववर्ती सम्राटों की सहिष्णुता की नीति का परित्याग कर कट्टरवादी मार्ग अंगीकार किया, जिससे प्रजा में असंतोष व्याप्त हुआ। जजिया को पुनः लागू करने एवं मंदिरों को क्षति पहुँचाने जैसे कदमों ने विभिन्न समुदायों को मुगलों के विरुद्ध विद्रोह हेतु प्रेरित किया। इन निरंतर संघर्षों ने साम्राज्य के सैन्य एवं आर्थिक संसाधनों को अत्यधिक क्षीण कर दिया, जिससे केंद्रीय सत्ता निर्बल हुई और साम्राज्य के पतन की प्रक्रिया तीव्र हुई।

185. (A) सरल और स्थानीय रूप से उपलब्ध कपास से निर्मित।
मध्यकालीन भारत में सामान्य जनता की वेशभूषा उनकी आर्थिक स्थिति एवं क्षेत्रीय जलवायु के अनुरूप अत्यंत सरल थी। अधिकांश लोग स्थानीय स्तर पर उत्पादित कपास के वस्त्र धारण करते थे। पुरुषों हेतु धोती एवं एक साधारण कुर्ता सामान्य परिधान थे, जबकि महिलाएं साड़ी अथवा घाघरा-चोली पहनती थीं। ये वस्त्र प्रायः बिना सिलाई के अथवा अत्यंत सरल ढंग से निर्मित होते थे। विलासिता पूर्ण रेशम एवं सूक्ष्म कढ़ाई वाले वस्त्र केवल धनी वर्ग तक सीमित थे, जबकि आम जन का पहनावा पूर्णतः सादगी एवं आवश्यकता पर आधारित था।

186. (A) 'सती' प्रथा और बाल विवाह का प्रचलन था, विशेष रूप से कुछ समुदायों और क्षेत्रों में।
मध्यकालीन हिंदू समाज में महिलाओं की स्थिति अत्यंत जटिल एवं अनेक चुनौतियों से आवृत थी। समाज में सती प्रथा एवं बाल विवाह जैसी कुरीतियां गहराई से विद्यमान थीं, विशेष रूप से कतिपय समुदायों के मध्य। महिलाओं की स्वतंत्रता एवं सार्वजनिक भूमिका पितृसत्तात्मक मर्यादाओं के कारण सीमित थी। विधवाओं का जीवन अत्यंत कष्टकारी था और पुनर्विवाह की अनुमति प्रायः नहीं प्राप्त थी। यद्यपि कुछ क्षेत्रों में उन्हें संपत्ति के सीमित अधिकार थे, तथापि समग्र सामाजिक संरचना भेदभावपूर्ण थी, जो उनकी प्रगति के मार्ग में बाधा बनी रही थी।

187. (A) ऊन, प्रारंभिक रहस्यवादियों द्वारा धारण किए जाने वाले मोटे ऊनी वस्त्रों के संदर्भ में।
'सूफी' शब्द का मूल अरबी के 'सूफ' शब्द से संबद्ध माना जाता है, जिसका अर्थ 'ऊन' है। यह उन प्रारंभिक रहस्यवादियों को संदर्भित करता है जो सांसारिक विलासिता का त्याग कर सादगी का जीवन व्यतीत करते थे और मोटे ऊनी वस्त्र धारण करते थे। यह परिधान उनके वैराग्य एवं ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक था। सूफियों ने बाह्य आडंबरों के स्थान पर आंतरिक शुद्धि एवं आध्यात्मिक उन्नति पर बल दिया। उनके इस सरल जीवन ने उन्हें जनसाधारण के मध्य अत्यधिक लोकप्रिय बनाया, जिससे सूफीवाद एक बड़े आध्यात्मिक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ।

188. (A) द्रविड़ शैली
विजयनगर साम्राज्य की मंदिर वास्तुकला मुख्य रूप से दक्षिण भारतीय 'द्रविड़ शैली' का एक भव्य विस्तार है। विजयनगर के वास्तुकारों ने चोल एवं पांड्य राजवंशों की स्थापत्य परंपराओं को अग्रसर करते हुए उनमें नवीन भव्यता संयोजित की। उन्होंने विशाल गोपुरों, अलंकृत स्तंभों वाले मंडपों एवं विस्तृत मंदिर परिसरों का निर्माण किया। पाषाण नक्काशी में जो सूक्ष्मता इस काल में परिलक्षित हुई, वह अद्वितीय थी। विजयनगर शैली ने द्रविड़ वास्तुकला को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया, जिसके अवशेष आज भी हम्पी में अपनी कलात्मक श्रेष्ठता की गाथा सुनाते हैं।

189. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भक्ति आंदोलन के विभिन्न संतों ने ईश्वर के प्रति अपने प्रेम को भिन्न अवतारों एवं रूपों के माध्यम से व्यक्त किया। मीराबाई एवं चैतन्य महाप्रभु ने भगवान कृष्ण की अनन्य भक्ति का मार्ग अपनाया। तुलसीदास ने भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम मानकर उनकी उपासना की और 'रामचरितमानस' जैसा महाकाव्य रचा। संत तुकाराम महाराष्ट्र में भगवान विठोबा के प्रति समर्पित थे। इन संतों की विविध भक्ति पद्धतियों ने भारतीय समाज में आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों को गहराई से

स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे सांस्कृतिक एकता सुदृढ़ हुई।

190. (A) इसके कारण संगीतकारों ने क्षेत्रीय अभिजात वर्ग और सूबेदारों के दरबारों में संरक्षण प्राप्त किया, जिससे क्षेत्रीय संगीत शैलियों का विकेंद्रीकरण और विकास हुआ।
औरंगजेब द्वारा शाही दरबार में संगीत पर आरोपित प्रतिबंध का भारतीय शास्त्रीय संगीत पर एक अनपेक्षित प्रभाव पड़ा। यद्यपि केंद्रीय संरक्षण समाप्त हो गया, तथापि दरबार से निष्कासित संगीतकारों ने क्षेत्रीय राजाओं एवं सूबेदारों के यहाँ शरण ली। इसके परिणामस्वरूप संगीत का विकेंद्रीकरण हुआ और क्षेत्रीय संगीत शैलियों का तीव्र विकास हुआ। संगीत कलाकारों ने स्थानीय लोक संगीत एवं शास्त्रीय परंपराओं का सुंदर मिश्रण किया, जिससे संगीत की विविधता और अधिक समृद्ध हुई। इस प्रकार, इस नीति ने संगीत को देश के विभिन्न कोनों तक पहुँचा दिया।

191. (D) 1, 2 और 3
मुगल साम्राज्य की सफलता का मुख्य आधार उसकी सुव्यवस्थित भू-राजस्व प्रणालियाँ थीं, जिन्हें भिन्न क्षेत्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप लागू किया गया था। 'ज़ब्ती' प्रणाली भूमि की माप एवं विगत दस वर्षों के उत्पादन पर आधारित एक वैज्ञानिक पद्धति थी। 'बटाई' प्रणाली में फसल का वास्तविक विभाजन किया जाता था, जो कृषकों हेतु सुगम था। वहीं, 'नसक' प्रणाली एक समूह मूल्यांकन पद्धति थी जहाँ राजस्व का स्थूल अनुमान लगाया जाता था। इन प्रणालियों के मेल ने न केवल राज्य की आय सुनिश्चित की, अपितु कृषि प्रबंधन को एक सुदृढ़ ढांचा प्रदान किया।

192. (B) गुरु अर्जुन देव
सिख धर्म के पांचवें गुरु, गुरु अर्जुन देव ने सिख धर्मग्रंथ 'आदि ग्रंथ' का प्रथम संकलन एवं संपादन पूर्ण किया था। उन्होंने इस महान कार्य को आध्यात्मिक एकता सुनिश्चित करने हेतु किया। इसमें उन्होंने अपने पूर्ववर्ती गुरुओं की पवित्र वाणी के साथ-साथ हिंदू एवं मुस्लिम संतों के उपदेशों को भी सम्मिलित किया। गुरु अर्जुन देव द्वारा किए गए इस संकलन ने सिखों को एक सुदृढ़ धार्मिक आधार प्रदान किया और हरमंदिर साहिब में इसकी स्थापना की। यह ग्रंथ आज भी सिख धर्म के आध्यात्मिक जीवन का शाश्वत एवं प्रेरणादायी स्रोत बना हुआ है।

193. (A) पुष्टिमार्ग
15वीं शताब्दी के महान दार्शनिक एवं संत वल्लभाचार्य ने 'पुष्टिमार्ग' की स्थापना की थी। यह विचारधारा ईश्वर के अनुग्रह के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति का संदेश प्रदान करती है। इसमें भगवान कृष्ण के बाल रूप की अत्यंत प्रेमपूर्ण सेवा को उपासना का सर्वोच्च मार्ग माना गया है। वल्लभाचार्य ने यह प्रतिपादित किया कि सच्चा भक्त वही है जो पूर्णतः ईश्वर की इच्छा एवं कृपा पर आश्रित रहता है। इस दर्शन ने राजस्थान एवं गुजरात के क्षेत्रों में कृष्ण भक्ति की एक अत्यंत समृद्ध परंपरा को जन्म दिया, जिसने कला एवं संगीत को भी गहराई से प्रभावित किया।

194. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
चित्रकला की मुगल शैली कोई पृथक कला नहीं थी, अपितु यह प्राचीन भारतीय परंपरा एवं फारसी लघु चित्रकला शैली का एक सुंदर संश्लेषण थी। हुमायूँ एवं अकबर ने फारसी उस्तादों को भारत आमंत्रित किया, जिन्होंने भारतीय कलाकारों के साथ मिलकर कार्य किया। इस मेल ने एक नवीन शैली को जन्म दिया जिसमें फारसी सूक्ष्मता एवं भारतीय संवेदनाओं का समावेश था। यह शैली जहाँगीर के शासनकाल में अपने पूर्ण निखार एवं चरमोत्कर्ष पर पहुँची, जहाँ प्रकृति एवं यथार्थवाद को विशेष महत्व प्राप्त हुआ। औरंगजेब के समय इसमें गिरावट परिलक्षित हुई।

195. (A) तेलुगु
विजयनगर साम्राज्य के स्वर्ण युग में, विशेष रूप से कृष्णदेवराय के शासनकाल के दौरान, तेलुगु भाषा एवं साहित्य को अभूतपूर्व राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। यद्यपि संस्कृत एवं कन्नड़ भी महत्वपूर्ण थीं, तथापि तेलुगु इस काल की प्राथमिक साहित्यिक भाषा बनकर उभरी। कृष्णदेवराय स्वयं एक उच्च कोटि के तेलुगु कवि थे और उनके दरबार में 'अष्टदिग्गज' जैसे महान कवियों की उपस्थिति ने इस भाषा के साहित्य को नवीन ऊँचाइयों तक पहुँचाया। इस संरक्षण के कारण इस काल को तेलुगु साहित्य का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है, जिसने बौद्धिक विरासत को जन्म दिया।

196. (A) अकबर
मुगल सम्राट अकबर ने अपने साम्राज्य की स्थिरता एवं विस्तार हेतु एक अत्यंत दूरदर्शी एवं उदारवादी नीति अंगीकार की थी। उसने साम्राज्य के भीतर विभिन्न समूहों, विशेष रूप से राजपूतों के साथ मैत्रीपूर्ण गठबंधन स्थापित किए। अकबर का यह दृष्टिकोण केवल राजनीतिक नहीं, अपितु एक समावेशी शासन की दिशा में बड़ा कदम था। उसने राजपूत सरदारों को अपनी प्रशासनिक व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाया, जिससे मुगलों को भारत के शक्तिशाली योद्धा वर्ग का सहयोग प्राप्त हुआ। इस नीति ने मुगल साम्राज्य को एक सुदृढ़ और दीर्घकालिक राजनैतिक आधार प्रदान किया था।

197. (A) टेलीविजन धारावाहिक
मध्यकालीन भारत में मनोरंजन के साधन अत्यंत विविध थे और समाज के प्रत्येक वर्ग के लोग अपनी रुचि के अनुसार इनमें भाग लेते थे। कुश्ती एवं पशुओं के द्वंद्व, जैसे हाथियों की लड़ाई, सामान्य जनता एवं राजपरिवार के मध्य समान रूप से लोकप्रिय थे। उच्च वर्ग के लोग चौगान जैसे खेलों में अपनी घुड़सवारी एवं खेल कौशल का प्रदर्शन करते थे। इसके अतिरिक्त, शतरंज एवं चौपड़ जैसे दिमागी खेल भी प्रचलित थे। मेलों के दौरान लोक संगीतकार मनोरंजन का मुख्य स्रोत होते थे। ये गतिविधियां तत्कालीन समाज के जीवंत सामाजिक जीवन को भली-भांति दर्शाती हैं।

198. (A) अजमेर
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की प्रसिद्ध दरगाह राजस्थान के अजमेर नगर में स्थित है। 12वीं शताब्दी के अंत में भारत आए इस महान सूफी संत ने प्रेम, शांति एवं मानवता की सेवा का

संदेश प्रसारित किया। उनकी दरगाह सदियों से सांप्रदायिक सद्भाव एवं अटूट श्रद्धा का एक अद्वितीय प्रतीक बनी हुई है, जहाँ सभी समुदायों के लोग अपनी मन्नतें लेकर आते हैं। अजमेर शरीफ की यह पवित्र स्थली भारत की समन्वित संस्कृति एवं सूफी परंपरा की रुहानी गहराई को जीवंत रूप में प्रस्तुत करती है, जो आज भी करोड़ों लोगों हेतु प्रेरणा का स्रोत है।

199. (B) इस्लामी कानून द्वारा शासित राज्य में गैर-मुस्लिम प्रजा पर आरोपित व्यक्तिगत कर (poll-tax)।
मध्यकालीन भारत में 'जजिया' एक विशिष्ट धार्मिक एवं व्यक्तिगत कर था जो गैर-मुस्लिम प्रजा पर आरोपित किया जाता था। इस्लामी विधि के अनुसार, इस कर के प्रतिफल में राज्य उन्हें सुरक्षा प्रदान करता था। यह कर प्रायः आर्थिक भार के साथ-साथ सामाजिक पदानुक्रम का भी प्रतीक माना जाता था। अकबर ने अपनी उदारवादी नीतियों के अंतर्गत इसे समाप्त कर दिया था ताकि समाज के सभी वर्गों के मध्य विश्वास बढ़ सके। तथापि, औरंगजेब ने इसे पुनः लागू किया, जिससे विभिन्न समुदायों के मध्य राजनैतिक असंतोष उत्पन्न हुआ और साम्राज्य की एकता प्रभावित हुई।

200. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भक्ति आंदोलन मध्यकालीन भारत की एक अत्यंत प्रभावशाली सामाजिक क्रांति थी जिसने पारंपरिक जाति व्यवस्था एवं कर्मकांडों की कठोरता को चुनौती प्रदान की। कबीर, नानक एवं रविदास जैसे संत स्वयं विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों से आए थे। उन्होंने यह संदेश दिया कि ईश्वर के समक्ष सभी मनुष्य समान हैं और भक्ति हेतु जन्म नहीं, अपितु हृदय की पवित्रता अनिवार्य है। उनकी सरल एवं लोकभाषा में दी गई शिक्षाओं ने समाज के उपेक्षित वर्गों में आत्मसम्मान की भावना जागृत की और एक अधिक मानवीय समाज की नींव रखने का महत्वपूर्ण प्रयास किया।

201. (C) वैधानिक रूप से, उनके पास संपत्ति और तलाक के अधिकार थे, यद्यपि प्रायः पितृसत्तात्मक सामाजिक रीति-रिवाजों द्वारा सीमित थे।
मध्यकालीन मुस्लिम समाज में महिलाओं की वैधानिक स्थिति अन्य समुदायों की तुलना में उन्नत थी क्योंकि उन्हें कुरानी विधियों के अनुसार संपत्ति में उत्तराधिकार प्राप्त था। उन्हें विवाह संविदा में अपनी शर्तें रखने एवं विशेष परिस्थितियों में विच्छेद मांगने का भी अधिकार था। तथापि, व्यावहारिक रूप से ये अधिकार अक्सर समाज के पितृसत्तात्मक ढांचे एवं रुढ़िवादी परंपराओं के कारण पूर्णतः उपयोग में नहीं आ पाते थे। उच्च वर्ग की महिलाओं हेतु पर्दा प्रथा एक अनिवार्य मर्यादा थी। वैधानिक अधिकार एवं सामाजिक वास्तविकता के मध्य एक अंतर बना रहा।

202. (A) फारसी, तुर्की और दक्षिण भारतीय (द्रविड़) तत्वों का अनूठा संश्लेषण।
दक्कन की सल्तनतों में विकसित स्थापत्य शैली अपनी विशिष्टता एवं भव्यता हेतु विश्व विख्यात है। इस शैली ने फारसी एवं तुर्की स्थापत्य की बारीकियों को स्थानीय दक्षिण भारतीय तत्वों के साथ अत्यंत कुशलता से संयोजित किया। विशाल गुंबदों एवं ऊंचे मेहराबों के साथ क्षेत्रीय नक्काशी का जो मेल यहाँ दृष्टिगोचर होता है, वह अद्वितीय है। बीजापुर का 'गोल गुंबद' इसके शानदार उदाहरणों में से एक है। इस वास्तुकला ने न केवल दक्कन की स्वतंत्र पहचान स्थापित की, अपितु यह भारत की संश्लेषित संस्कृति के एक महत्वपूर्ण अध्याय को भी गौरव के साथ प्रस्तुत करती है।

203. (B) एक निराकार ईश्वर में विश्वास और समस्त मनुष्यों की समानता।
गुरु नानक देव की शिक्षाओं का मूल आधार निराकार ईश्वर की सर्वव्यापकता एवं संपूर्ण मानवता की अखंड एकता है। उन्होंने मूर्तिपूजा, निरर्थक कर्मकांडों एवं समाज को विभाजित करने वाली जाति व्यवस्था का पूर्णतः खंडन किया। उनके अनुसार, ईश्वर की सच्ची सेवा एवं उसकी प्राप्ति का मार्ग केवल सत्य के आचरण और आपसी प्रेम में ही निहित है। उन्होंने 'लंगर' जैसी संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक समानता का व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत किया। उनकी शिक्षाओं ने ऐसे समाज की नींव रखी जहाँ प्रेम एवं निस्वार्थ सेवा ही सर्वोच्च आध्यात्मिक मूल्य माने जाते हैं।

204. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
मध्यकालीन आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में विभिन्न समुदायों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। 'सराएँ' मुख्य मार्गों पर यात्रियों हेतु सुरक्षित विश्राम गृह के रूप में कार्य करती थीं। 'ददन' एक ऐसी प्रणाली थी जहाँ शिल्पकारों को उत्पादन हेतु अग्रिम भुगतान प्रदान किया जाता था। 'कारखाने' शाही कार्यशालाएँ थीं जहाँ विलासिता की वस्तुएं निर्मित होती थीं। 'बंजारे' एक भ्रमणशील व्यापारिक समुदाय था जो देश भर में खाद्यान्न की आपूर्ति सुनिश्चित करता था। इन सभी तत्वों ने मिलकर उस काल के व्यापार एवं वाणिज्य को एक सुव्यवस्थित और गतिशील आधार प्रदान किया था।

205. (A) पहाड़ी शैली
'बसोहली' चित्रकला की पहाड़ी शैली के प्रारंभिक एवं अत्यंत महत्वपूर्ण चरण हैं। बसोहली शैली अपनी तीखी रेखाओं, चटक रंगों एवं प्रतीकात्मक गहराई हेतु विख्यात है, जिसने कालांतर में अन्य पहाड़ी शैलियों को प्रभावित किया। यह शैली 17वीं शताब्दी के अंत में विकसित हुई और इसमें पौराणिक विषयों को एक अनूठी ओजस्विता के साथ चित्रित किया गया। इन केंद्रों ने पहाड़ी चित्रकला की उस समृद्ध परंपरा की आधारशिला रखी, जिसने भारतीय लघु चित्रकला के इतिहास में अपनी कोमलता एवं कलात्मक सौंदर्य के कारण एक अमूल्य और स्थायी स्थान निर्मित किया है।

206. (D) 1, 2 और 3
विजयनगर साम्राज्य का सांस्कृतिक जीवन बहुआयामी एवं अत्यंत समृद्ध था। शासकों ने संस्कृत के साथ तेलुगु, कन्नड़ एवं तमिल जैसी क्षेत्रीय भाषाओं को भरपूर प्रोत्साहन प्रदान किया, जिससे महान साहित्यिक कृतियों की रचना हुई। स्थापत्य के क्षेत्र में 'विजयनगर शैली' ने द्रविड़ परंपरा को इस्लामी तत्वों, जैसे गुंबदों के साथ बड़ी कुशलता से संयोजित किया, जिसका प्रमाण हम्पी के अवशेषों में मिलता है। अब्दुल रज्जाक जैसे

माना जाता था। यद्यपि कई ग्रंथों में इसकी अनुमति नहीं थी और कुछ मध्यकालीन शासकों ने इसे अवरुद्ध करने का प्रयत्न भी किया, तथापि सामाजिक दबाव के कारण यह दीर्घकाल तक विद्यमान रही, जो महिलाओं की सामाजिक असुरक्षा को प्रदर्शित करती है।

173. (A) फिरोज शाह तुगलक
दिल्ली सल्तनत के सुल्तान फिरोज शाह तुगलक को शिक्षा एवं सार्वजनिक कल्याण कार्यों के प्रति उनकी गहरी रुचि हेतु जाना जाता है। उन्होंने दिल्ली में 'मदरसा-ए-फिरोज शाही' की स्थापना की थी, जो उस समय उच्च शिक्षा एवं इस्लामी विद्वत्ता का एक प्रमुख केंद्र बना। इस संस्थान में देश-विदेश से विद्वान एवं छात्र आते थे। फिरोज शाह ने न केवल इस मदरसे का निर्माण कराया, अपितु इसके सुचारु संचालन हेतु पर्याप्त अनुदान भी प्रदान किया। शिक्षा के प्रति उनके इस संरक्षण ने तुगलक काल में बौद्धिक गतिविधियों एवं ज्ञान प्रसार को महत्वपूर्ण बढ़ावा दिया।

174. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
मध्यकालीन भारतीय साहित्य विभिन्न भाषाओं की समृद्धि का एक संग्रह है। अबुल फज़ल ने 'अकबरनामा' के माध्यम से मुगल प्रशासन का विस्तृत विवरण प्रदान किया, जबकि तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' लिखकर भक्ति को नवीन आधार दिया। विजयनगर के सम्राट कृष्णदेवराय ने तेलुगु में 'अमुक्तमाल्यद' लिखकर अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया। संत ज्ञानेश्वर ने 'ज्ञानेश्वरी' के माध्यम से भगवद गीता के ज्ञान को मराठी भाषा में सुगम बनाया। इन सभी कृतियों ने भारत की भाषाई विविधता एवं आध्यात्मिक चेतना को और अधिक व्यापक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

175. (A) पहाड़ी शैली
'कांगड़ा' एवं 'गुलेर' चित्रकला की पहाड़ी शैली के दो अत्यंत महत्वपूर्ण विद्यालय हैं जो हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में विकसित हुए। यह शैली अपनी कोमल रेखाओं एवं प्राकृतिक दृश्यों के सुंदर चित्रण हेतु जानी जाती है। इन चित्रों का मुख्य विषय हिंदू पौराणिक कथाएँ, विशेष रूप से राधा एवं कृष्ण का प्रेम है। पहाड़ी शैली ने मुगल तकनीक की बारीकियों को स्थानीय संवेदनाओं एवं लोक कला के साथ मिश्रित किया, जिससे ऐसी कला का जन्म हुआ जो अपनी सौंदर्यपरक भावनात्मक गहराई हेतु पूरे विश्व में विख्यात हुई।

176. (A) प्रशासनिक आवश्यकताओं और वाणिज्यिक गतिविधियों द्वारा संचालित, इस अवधि में विद्यमान नगरों की वृद्धि और नए नगरों की स्थापना देखी गई।
मध्यकालीन भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया अत्यंत गतिशील थी, जो मुख्य रूप से प्रशासनिक शक्ति एवं वर्धमान व्यापार पर आधारित थी। मुगलों एवं सुल्तानों ने कई नवीन नगरों को अपनी राजधानियों के रूप में स्थापित किया, जो शिल्प एवं वाणिज्य के प्रमुख केंद्र बन गए। प्रशासनिक अधिकारियों एवं सैनिकों की उपस्थिति ने विलासिता की वस्तुओं की मांग उत्पन्न की, जिससे दस्तकारों को नगरों की ओर आकर्षित होना पड़ा। सड़कों एवं सरायों की व्यवस्था ने नगरों के मध्य व्यापारिक संपर्क सुदृढ़ किया, जिससे शहरी अर्थव्यवस्था को विस्तार प्राप्त हुआ।

177. (A) केवल 1 और 2
विजयनगर साम्राज्य का धार्मिक जीवन उदारता एवं सहिष्णुता का उत्कृष्ट उदाहरण था। यद्यपि शासक स्वयं हिंदू थे और वैष्णव संप्रदायों के महान संरक्षक थे, तथापि उन्होंने अन्य धर्मों के प्रति भी सम्मान प्रदर्शित किया। साम्राज्य में मुस्लिम एवं ईसाई समुदायों को अपने धर्म के अनुपालन की स्वतंत्रता थी और कई मुस्लिमों को सेना में उच्च पदों पर नियुक्त किया गया था। मंदिर न केवल पूजा के स्थल थे, अपितु वे शिक्षा, कला एवं सामाजिक उत्सवों के जीवंत केंद्र के रूप में कार्य करते थे, जो साम्राज्य की सांस्कृतिक एकता को मजबूती प्रदान करते थे।

178. (A) खलिहान में राज्य और कृषक के बीच वास्तविक फसल का विभाजन।
मध्यकालीन भू-राजस्व व्यवस्था में 'बटाई' फसल साझाकरण की एक पारंपरिक एवं सरल पद्धति थी। इस प्रणाली में राजस्व का निर्धारण भूमि की पैमाइश के स्थान पर वास्तविक पैदावार के आधार पर किया जाता था। फसल की कटाई के पश्चात उसे खलिहान में राज्य एवं कृषक के मध्य एक निश्चित अनुपात में विभाजित कर लिया जाता था। यह पद्धति उन क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय थी जहाँ मौसम की अनिश्चितता के कारण फसल का सटीक अनुमान लगाना कठिन था। यद्यपि इसमें कुछ कमियां थीं, तथापि यह कृषकों हेतु जोखिम को न्यून करने का व्यावहारिक मार्ग था।

179. (A) तुलसीदास
संत तुलसीदास मुगल सम्राट अकबर एवं जहाँगीर के समकालीन थे और उनका प्रभाव उत्तर भारत की धार्मिक चेतना पर गहरा रहा। उन्होंने अवधी भाषा में अपने अमर महाकाव्य 'रामचरितमानस' की रचना की, जिसने भगवान राम को एक आदर्श नायक एवं मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनकी रचनाओं ने भक्ति मार्ग को सरल बनाया, जिससे समाज के प्रत्येक वर्ग के लोग सम्बद्ध हो सके। तुलसीदास की साहित्य साधना ने न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, अपितु इसने मध्यकालीन भारत में एक सुदृढ़ नैतिक एवं सांस्कृतिक आधार भी प्रदान किया।

180. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
मुगल एवं सिख समुदायों के मध्य संबंध निरंतर एक समान नहीं रहे, अपितु इनमें गंभीर उतार-चढ़ाव आए। प्रारंभिक गुरुओं के समय संबंध सामान्य थे, किंतु कालांतर में राजनीतिक परिस्थितियों एवं बढ़ती धार्मिक कट्टरता के कारण उनमें शत्रुता उत्पन्न हो गई। जहाँगीर के शासनकाल में गुरु अर्जुन देव और औरंगजेब के समय गुरु तेग बहादुर की शहादतों ने सिखों को मुगलों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष हेतु प्रेरित किया। इन घटनाओं ने सिख समुदाय के सैन्यीकरण एवं खालसा के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया, जिससे केंद्रीय सत्ता को कड़ी चुनौती प्राप्त हुई।

ही रजत का 'टंका' एवं ताम्र का 'जीतल' नामक दो मूल सिक्के प्रवर्तित किए, जो दीर्घकाल तक सल्तनत की अर्थव्यवस्था का आधार बने रहे। इन सिक्कों पर टंकण की तिथि एवं स्थान अंकित करने की परंपरा भी उसी ने प्रारंभ की थी। इल्तुतमिश के इस आर्थिक सुधार ने न केवल व्यापार एवं वाणिज्य को सुगम बनाया, अपितु इसने दिल्ली सल्तनत की राजनैतिक सत्ता को एक सुदृढ़ प्रशासनिक एवं वित्तीय आधार भी प्रदान किया, जिससे स्थिरता बढ़ी।

216. (A) समस्त जातियों में विधवा पुनर्विवाह को व्यापक प्रोत्साहन।
मध्यकालीन हिंदू समाज में महिलाओं की स्थिति अत्यंत चुनौतीपूर्ण थी और वह विभिन्न पारंपरिक प्रथाओं एवं सामाजिक सीमाओं में आबद्ध थी। बाल विवाह का प्रचलन सामान्य था और विशेष रूप से उच्च वर्गों में सती प्रथा का अनुपालन एक सामाजिक गौरव माना जाता था। महिलाओं के संपत्ति अधिकार अत्यंत सीमित थे, जो केवल 'स्त्रीधन' तक ही संकुचित थे। सबसे गंभीर सामाजिक बाधा विधवा पुनर्विवाह पर लगभग पूर्ण प्रतिबंध था, विशेष रूप से उच्च जातियों में, जहाँ विधवाओं को अत्यंत सादा एवं उपेक्षित जीवन जीने हेतु विवश किया जाता था। ये परिस्थितियां विषम थीं।

217. (A) अभिजात वर्ग का एक वर्ग जो एक पद (मनसब) धारण करते थे और एक निश्चित संख्या में घुड़सवारों की आपूर्ति करने के लिए बाध्य थे।
मुगल प्रशासन एवं सैन्य तंत्र का आधार 'मनसबदारी' प्रणाली थी, जिसे अकबर ने विकसित किया था। इस व्यवस्था में प्रत्येक महत्वपूर्ण अधिकारी को एक पद अथवा 'मनसब' प्रदान किया जाता था, जो उसकी सामाजिक एवं प्रशासनिक स्थिति का परिचायक था। मनसबदारों का मुख्य दायित्व सम्राट की आवश्यकता पड़ने पर एक निश्चित संख्या में सुसज्जित घुड़सवार सैनिकों की आपूर्ति करना था। बदले में, उन्हें नकद वेतन अथवा जागीर के रूप में राजस्व अधिकार प्रदान किए जाते थे। यह प्रणाली साम्राज्य के विभिन्न समूहों को एक ही सैन्य-प्रशासनिक ढांचे में संयोजित करने हेतु सफल थी।

218. (A) गुरु ग्रंथ साहिब और जन्मसाखियाँ
सिख धर्म के गुरुओं के जीवन एवं उनकी पावन शिक्षाओं का प्राथमिक एवं सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोत 'गुरु ग्रंथ साहिब' और ' जन्मसाखियाँ' हैं। गुरु ग्रंथ साहिब सिखों का पवित्र गुरु माना जाता है, जिसमें गुरुओं की मूल वाणी संकलित है जो मानवता को प्रेम एवं समानता का संदेश प्रदान करती है। दूसरी ओर, जन्मसाखियाँ गुरु नानक देव के जीवन की घटनाओं और उनकी यात्राओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती हैं, जो उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्व को समझने में सहायक हैं। ये दोनों स्रोत न केवल सिख धर्म के दार्शनिक आधार को स्पष्ट करते हैं, अपितु इतिहास को भी दर्शाते हैं।

219. (D) 1, 2 और 3
अकबर की धार्मिक नीति भारतीय इतिहास में सहिष्णुता एवं उदारवाद का एक अद्वितीय उदाहरण है। उसने गैर-मुसलमानों पर से जजिया एवं तीर्थयात्रा कर हटाकर सामाजिक न्याय की दिशा में बड़ा कदम उठाया। फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना की स्थापना कर उसने विभिन्न धर्मों के विद्वानों के मध्य संवाद एवं सत्य की खोज को प्रोत्साहित किया। इन विमर्शों से प्रभावित होकर उसने 'दीन-ए-इलाही' नामक नवीन आध्यात्मिक मार्ग का प्रस्ताव दिया, जिसका उद्देश्य सामंजस्य स्थापित करना था। अकबर के ये सुधार एक विशाल साम्राज्य को सूत्र में बांधने की राजनैतिक बुद्धिमत्ता के परिचायक हैं।

220. (A) विशाल केंद्रीय गुंबद जो विश्व के सबसे बड़े गुंबदों में से एक है।
बीजापुर में स्थित 'गोल गुंबद' आदिल शाही स्थापत्य कला का एक बेजोड़ एवं विश्व प्रसिद्ध चमत्कार है। यह सुल्तान मोहम्मद आदिल शाह का मकबरा है और इसकी सर्वाधिक विशिष्ट विशेषता इसका विशाल केंद्रीय गुंबद है, जो विश्व के सबसे बड़े स्वतंत्र रूप से खड़े गुंबदों में से एक माना जाता है। इस स्मारक के भीतर एक 'विस्परिंग गैलरी' भी है, जहाँ सूक्ष्म ध्वनि भी प्रतिध्वनित होती है। यह संरचना बिना किसी मध्यवर्ती स्तंभ के विशाल स्थान को घेरने की उस काल की उन्नत अभियांत्रिकी एवं कलात्मक निपुणता का एक शानदार और अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती है।

221. (A) हुंडी (Hundi) का उपयोग करना
17वीं शताब्दी के भारत में व्यापारिक लेनदेन एवं धन हस्तांतरण हेतु 'हुंडी' सर्वाधिक विश्वसनीय एवं प्रचलित माध्यम थी। यह एक पारंपरिक वित्तीय प्रलेख था जो विनिमय पत्र के रूप में कार्य करता था। व्यापारी अपने क्षेत्र के किसी विश्वसनीय सराफ के पास नकद जमा कर हुंडी प्राप्त करते थे, जिसे गंतव्य नगर में प्रदर्शित कर समकक्ष राशि प्राप्त की जा सकती थी। इसने लंबी दूरी के व्यापार में भारी मात्रा में नकद ले जाने के जोखिम एवं असुरक्षा को पूर्णतः समाप्त कर दिया था। हुंडी प्रणाली ने वाणिज्य को एक परिष्कृत वित्तीय आधार प्रदान किया था।

222. (A) भक्ति आंदोलन
दक्षिण भारत के अलवार एवं नयनार संत भारतीय भक्ति आंदोलन के सर्वाधिक प्रारंभिक एवं प्रभावशाली प्रणेता माने जाते हैं। 7वीं से 9वीं शताब्दी के मध्य, अलवार संतों ने भगवान विष्णु की एवं नयनार संतों ने भगवान शिव की प्रेमपूर्ण भक्ति एवं पूर्ण समर्पण का प्रचार किया। उन्होंने तमिल भाषा में मधुर भजनों की रचना की, जिससे ईश्वर के प्रति भक्ति को सामान्य जनता हेतु सुलभ बनाया गया। इन संतों ने जाति के बंधनों को ठुकराकर यह संदेश दिया कि ईश्वर का प्रेम सभी हेतु समान है। उनके योगदान ने भविष्य के भक्ति आंदोलन हेतु सुदृढ़ आधारशिला निर्मित की।

223. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
औरंगजेब की धार्मिक नीति पूर्ववर्ती मुगल सम्राटों की सहिष्णुता की नीति से पूर्णतः विपरीत एवं रुढ़िवादी थी। उसका शासनकाल इस्लामी शुद्धतावाद की ओर झुकाव एवं शरिया विधियों के कठोर अनुपालन द्वारा चिह्नित था। उसने हिंदुओं पर जजिया कर को पुनः आरोपित किया और कई महत्वपूर्ण मंदिरों को क्षति पहुँचाने का आदेश दिया, जिससे गैर-मुस्लिम प्रजा में गहरा असंतोष उत्पन्न हुआ। औरंगजेब का यह कट्टर दृष्टिकोण धार्मिक समन्वय के स्थान पर संकीर्णता

को दर्शाता था, जिसने अंततः साम्राज्य की सामाजिक एकता को कमजोर किया और पतन की प्रक्रिया को तीव्र किया।

224. (A) भगवान विष्णु, विशेष रूप से उनके अवतार राम और कृष्ण की उपासना।
वैष्णववाद भक्ति आंदोलन का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं व्यापक संप्रदाय है जो भगवान विष्णु एवं उनके विभिन्न अवतारों की भक्ति पर केंद्रित है। इस विचारधारा में ईश्वर के प्रति अगाध प्रेम एवं शरणागति को ही मोक्ष प्राप्ति का सर्वोत्तम मार्ग माना गया है। चैतन्य महाप्रभु, मीराबाई एवं तुलसीदास जैसे संतों ने इस परंपरा को अपनी रचनाओं एवं उपदेशों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। वैष्णव भक्ति ने न केवल धार्मिक जीवन को समृद्ध किया, अपितु इसने संगीत, नृत्य एवं साहित्य के क्षेत्र में भी एक अद्भुत सांस्कृतिक क्रांति का सूत्रपात किया, जो आज भी समाहित है।

225. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में चिश्ती सूफी संतों की अपार लोकप्रियता का मुख्य कारण उनका सरल, सादगीपूर्ण जीवन एवं मानवता के प्रति उनका अगाध प्रेम था। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती एवं निजामुद्दीन औलिया जैसे संतों ने राजकीय विलासिता से दूर रहकर निर्धनों एवं मजलूमों के मध्य सेवा का मार्ग अपनाया। उन्होंने अपने संदेशों हेतु क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग किया, जिससे आम जनता उनसे जुड़ सकी। उनकी दरगाहें बिना किसी भेदभाव के सभी समुदायों हेतु खुली थीं, जहाँ सभी को आध्यात्मिक सांत्वना प्राप्त होती थी। इस मानवतावादी दृष्टिकोण ने उन्हें जनमानस का सच्चा गुरु बना दिया था।

226. (A) चिश्ती सामान्यतः राज्य से दूरी बनाए रखते थे और निर्धनता में जीवन व्यतीत करते थे, जबकि सुहरावर्दी राज्य अनुदान और पद स्वीकार करते थे।
चिश्ती एवं सुहरावर्दी सूफी सिलसिलों के मध्य सर्वाधिक अंतर उनकी जीवनशैली एवं सांसारिक सत्ता के प्रति उनके दृष्टिकोण में था। चिश्ती सूफियों ने अत्यधिक सादगी का जीवन चुना और वे राज्य के किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप से पृथक रहे। उनका मत था कि सच्चा अध्यात्म केवल पूर्ण स्वतंत्रता एवं सादगी में ही संभव है। इसके विपरीत, सुहरावर्दी सिलसिले के संतों ने राज्य के संरक्षण एवं उच्च पदों को स्वीकार करने में संकोच नहीं किया। वे मानते थे कि राजनीतिक सत्ता के समीप रहकर वे लोक कल्याण के कार्यों में राज्य के संसाधनों का उचित उपयोग सुनिश्चित कर सकते हैं।

227. (A) जहाँगीर के शासनकाल में गुरु अर्जुन देव की शहादत।
मुगल एवं सिख संबंधों में संघर्ष की शुरुआत जहाँगीर के शासनकाल के दौरान हुई, जब पांचवें गुरु अर्जुन देव को शहादत प्राप्त हुई। यद्यपि इसके पीछे राजनीतिक कारण थे, जैसे विद्रोही राजकुमार खुसरो को गुरु द्वारा दिया गया कथित समर्थन, तथापि इस घटना ने सिख समुदाय को मुगलों के प्रति प्रतिरोधी बना दिया। यह एक ऐतिहासिक मोड़ था जिसने भविष्य में होने वाले सशस्त्र संघर्षों की आधारशिला रखी। इसके परिणामस्वरुप सिखों के भीतर सैन्य भावना का उदय हुआ और वे अपनी धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा हेतु संगठित होने लगे, जिससे राजनैतिक परिदृश्य में बदलाव आया।

228. (A) विजयनगर साम्राज्य
मध्यकालीन दक्षिण भारत में वास्तुकला एवं कला का सर्वाधिक गौरवशाली विकास विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत हुआ। विजयनगर के शासकों ने पूर्ववर्ती चोल एवं पांड्य शैलियों को नवीन ऊँचाई एवं भव्यता प्रदान की। उन्होंने विशाल गोपुरों, अलंकृत स्तंभों वाले मंडपों एवं विस्तृत मंदिर परिसरों का निर्माण किया। हम्पी में विट्ठल स्वामी मंदिर एवं विरूपाक्ष मंदिर इस काल की स्थापत्य श्रेष्ठता के जीवंत प्रमाण हैं। विजयनगर की यह शैली न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक थी, अपितु यह साम्राज्य की समृद्धि एवं कलात्मक नवाचार का भी एक शानदार प्रदर्शन थी, जिसने मानक स्थापित किया।

229. (A) कबीर
कबीर मध्यकालीन भारत के ऐसे अद्वितीय संत थे जिनकी शिक्षाओं ने सांप्रदायिक सीमाओं को पूर्णतः पार कर लिया। उनकी साखियों एवं पदों को सिखों के सर्वाधिक पवित्र ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में सम्मानजनक स्थान दिया गया है, जो उनके आध्यात्मिक प्रभाव की व्यापकता को दर्शाता है। साथ ही, वे कबीरपंथी समुदाय के भी मूल गुरु एवं प्रेरणा स्रोत हैं। कबीर ने अपनी सत्यनिष्ठ वाणी के माध्यम से आडंबरों का विरोध किया और मानवता की एकता का संदेश दिया। उनकी रचनाओं का यह समावेशी स्वरुप उन्हें भारतीय इतिहास का ऐसा आध्यात्मिक सेतु बनाता है जो समुदायों को जोड़ता है।

230. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
भारतीय दार्शनिक चिंतन के इतिहास में विभिन्न आचार्यों ने ब्रह्म एवं जीव के संबंध की व्याख्या हेतु अपने विशिष्ट दर्शन प्रस्तुत किए। शंकराचार्य ने 'अद्वैत' के माध्यम से पूर्ण एकता पर बल दिया, जबकि मध्वाचार्य ने 'द्वैत' दर्शन के अंतर्गत दोनों को पृथक माना। रामानुजाचार्य का 'विशिष्टाद्वैत' दर्शन भक्ति एवं ज्ञान के समन्वय का मार्ग था, और वल्लभाचार्य ने 'शुद्धाद्वैत' के माध्यम से ईश्वर के अनुग्रह को ही मुक्ति का साधन बताया। इन विचारधाराओं ने न केवल हिंदू धर्म को तार्किक आधार प्रदान किया, अपितु उन्होंने भक्ति आंदोलन को भी प्रेरित किया, जिससे आध्यात्मिकता समृद्ध हुई।

231. (A) धार्मिक और प्रशासनिक प्रशिक्षण।
मुगल कालीन शिक्षा व्यवस्था का मुख्य केंद्र मकतब एवं मदरसे थे, जिसका प्राथमिक उद्देश्य छात्रों को धार्मिक ज्ञान के साथ प्रशासनिक कार्यों हेतु तैयार करना था। मकतबों में बुनियादी साक्षरता प्रदान की जाती थी, जबकि मदरसे उच्च शिक्षा के संस्थान थे जहाँ इस्लामी विधि, तर्कशास्त्र एवं अरबी-फारसी साहित्य का गहन अध्ययन कराया जाता था। इस शिक्षा का उद्देश्य ऐसे अधिकारी तैयार करना था जो राज्य की न्यायिक मशीनरी को सुचारु रुप से संचालित कर सकें। यद्यपि कतिपय अन्य विषयों का भी अध्ययन होता था, तथापि समग्र रुप से शिक्षा व्यवस्था शासन के हितों पर केंद्रित थी।

232. (D) 1, 2 और 3
सूफीवाद इस्लाम का एक रहस्यवादी एवं उदारवादी आयाम है जो प्रेम, सादगी एवं ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण पर आधारित है। भारत में सूफी संत विभिन्न सिलसिलों में संगठित थे, जिनमें चिश्ती एवं सुहरावर्दी सर्वाधिक प्रभावशाली रहे। चिश्ती सिलसिले ने विशेष रूप से सादगी का जीवन अपनाया और राज्य की सक्रिय राजनीति से दूरी बनाए रखी, जिससे वे जनसाधारण के मध्य अत्यधिक प्रिय हुए। सूफियों ने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से समाज में धार्मिक कट्टरता को न्यून किया और आपसी भाईचारे को बढ़ावा दिया। उनकी खानकाहें शांति एवं आध्यात्मिक सांत्वना के महत्वपूर्ण केंद्र बन गई थीं।

233. (A) कृषि के लिए सिंचाई
मध्यकालीन भारत में 'रहट' का आगमन कृषि क्षेत्र हेतु एक क्रांतिकारी तकनीकी नवाचार था। यह पशु शक्ति से संचालित सिंचाई प्रणाली थी, जिसके माध्यम से कूपों से अधिक कुशलता के साथ जल निष्कर्षण संभव हुआ। इस तकनीक ने विशेष रूप से उत्तर भारत के उन क्षेत्रों में कृषि को सुगम बनाया जहाँ वर्षा अल्प होती थी। सिंचाई की बेहतर सुविधा के कारण कृषक वर्ष में एक से अधिक फसलें उत्पादित करने में सक्षम हुए और कृषि उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इस तकनीक ने न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया, अपितु खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी भूमिका निभाई।

234. (A) जहाँगीर
मुगल सम्राट जहाँगीर का शासनकाल चित्रकला के इतिहास में निर्विवाद रूप से 'स्वर्ण युग' माना जाता है। जहाँगीर स्वयं कला का असाधारण पारखी था, जिसके संरक्षण में चित्रकला ने तकनीकी बारीकियों एवं यथार्थवाद के नवीन आयाम स्थापित किए। उसने परंपरागत चित्रण शैली से पृथक व्यक्ति-चित्रों एवं प्रकृति के सूक्ष्म अध्ययन को विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया। उसके दरबार में मंसूर जैसे महान कलाकार थे जिन्होंने वनस्पतियों एवं पक्षियों के अत्यंत सूक्ष्म चित्र निर्मित किए। जहाँगीर की कलात्मक अभिरुचि ने मुगल चित्रकला को एक परिष्कृत पहचान दी, जिसमें रंग संयोजन एवं प्राकृतिक सौंदर्य का संगम है।

235. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
यद्यपि विजयनगर साम्राज्य अपनी समृद्धि एवं कलात्मक वैभव हेतु विख्यात था, तथापि इसकी सामाजिक संरचना पारंपरिक हिंदू रीति-रिवाजों एवं जाति व्यवस्था के कठोर ढांचे पर आधारित थी। यह समतावादी समाज नहीं था। समकालीन विदेशी यात्रियों के वृत्तांत समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव एवं सती प्रथा जैसी कुरीतियों का स्पष्ट उल्लेख करते हैं। ब्राह्मणों का समाज में सर्वोच्च स्थान था और उच्च वर्गों में सती का प्रचलन सामाजिक गौरव माना जाता था। ये ऐतिहासिक साक्ष्य साम्राज्य की उस वास्तविकता को प्रकट करते हैं जहाँ राजसी भव्यता के साथ पारंपरिक सामाजिक जड़ता भी विद्यमान थी।

236. (A) अबुल फ़ज़ल
'आईन-ए-अकबरी' मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विस्तृत ऐतिहासिक प्रलेख है, जिसकी रचना प्रसिद्ध विद्वान अबुल फ़ज़ल ने की थी। यह विशाल कृति अकबरनामा का तीसरा भाग है, जो साम्राज्य के प्रशासन, सांख्यिकीय आंकड़ों, राजस्व व्यवस्था, सेना एवं सामाजिक रीति-रिवाजों का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत करती है। अबुल फ़ज़ल ने बड़ी सूक्ष्मता के साथ अकबर के प्रशासनिक नवाचारों एवं साम्राज्य की भौगोलिक विविधता को इस ग्रंथ में समाहित किया है। यह पुस्तक आज भी इतिहासकारों हेतु मुगल काल के शासनतंत्र एवं तत्कालीन समाज को समझने का सबसे विश्वसनीय प्राथमिक स्रोत है।

237. (A) तुकाराम
संत तुकाराम महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन के एक महान आधार स्तंभ एवं छत्रपति शिवाजी महाराज के समकालीन थे। उन्होंने अपनी सरल मराठी भाषा में 'अभंगों' की रचना की, जिन्होंने महाराष्ट्र की धार्मिक चेतना को पुनर्जीवित किया। तुकाराम ने भक्ति को केवल पूजा-पाठ तक सीमित न रखकर उसे शुद्ध आचरण एवं मानवता की सेवा से संयोजित किया। उनके अभंगों ने जातिगत भेदभाव एवं आडंबरों पर कड़ा प्रहार किया और समाज के निम्नतम वर्ग को भी ईश्वर के प्रति प्रेम का मार्ग प्रदर्शित किया। उनकी आध्यात्मिक विरासत वारकरी संप्रदाय के माध्यम से आज भी जनजीवन में रची-बसी है और प्रेरित करती है।

238. (A) प्रशासन, अभिजात वर्ग और सैन्य शिविरों का संकेंद्रण, जिसने वस्तुओं और सेवाओं की मांग निर्मित की।
दिल्ली सल्तनत एवं मुगल काल के दौरान भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया प्रशासनिक एवं राजनैतिक शक्तियों के केंद्र में होने के कारण तीव्र हुई। सम्राट, अभिजात वर्ग एवं सैन्य शिविरों के एक स्थान पर निवास करने से वहाँ विलासिता की वस्तुओं एवं दैनिक आवश्यकताओं की भारी मांग उत्पन्न हुई। इस मांग को पूर्ण करने हेतु शिल्पकार, व्यापारी एवं सेवा प्रदाता इन केंद्रों की ओर आकर्षित हुए, जिससे धीरे-धीरे ये स्थान विशाल नगरों में परिवर्तित हो गए। सरायों की बेहतर व्यवस्था ने इन नगरों के मध्य व्यापारिक संपर्क को और सुदृढ़ किया। मध्यकालीन शहरीकरण राजसी संरक्षण एवं वाणिज्यिक गतिविधियों का परिणाम था।

239. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
औरंगजेब की धार्मिक नीति अकबर की 'सुलह-ए-कुल' की उदारवादी नीति से पूर्णतः भिन्न एवं रूढ़िवादी थी। अकबर ने साम्राज्य की स्थिरता हेतु सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता का मार्ग अपनाया था, जबकि औरंगजेब ने शासन को इस्लामी विधियों की संकीर्ण व्याख्या के आधार पर संचालित करने का प्रयास किया। उसके द्वारा जजिया कर को पुनः लागू करना और हिंदू मंदिरों को क्षति पहुँचाने जैसे कदमों ने प्रजा एवं राजपूत सरदारों को विमुख कर दिया। इस नीतिगत बदलाव ने साम्राज्य के भीतर सामाजिक तनाव एवं राजनैतिक असंतोष को अत्यधिक बढ़ा दिया, जिसने अंततः साम्राज्य के पतन की प्रक्रिया में मुख्य भूमिका निभाई।

दर्शाती हैं, अपितु वे भारत के सांस्कृतिक इतिहास की अमूल्य और स्थायी पहचान बनी हुई हैं।

271. (A) वर्ण और जाति व्यवस्था के इर्द-गिर्द संरचित समाज, जिसमें पदानुक्रमित विभाजन थे।
मध्यकालीन हिंदू समाज की संरचना मुख्य रूप से पारंपरिक वर्ण एवं जाति व्यवस्था पर आधारित थी, जिसमें पदानुक्रमित विभाजन अत्यंत सुदृढ़ थे। ब्राह्मणों का समाज में उच्च स्थान बना रहा, जबकि समाज का बड़ा भाग जातियों एवं उप-जातियों के कठिन नियमों में आबद्ध था। खान-पान एवं सामाजिक व्यवहार जाति की सीमाओं द्वारा नियंत्रित थे। यद्यपि भक्ति आंदोलन के संतों ने इस जातिगत कठोरता को चुनौती देने का प्रयास किया, तथापि वृहद सामाजिक ढांचे में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं आया। समाज व्यापक रूप से जन्म आधारित श्रेणियों और पुराने रीति-रिवाजों से ही संचालित होता रहा, जो उस काल की सामाजिक जड़ता एवं स्थिरता को प्रदर्शित करता है।

272. (A) केवल 3
मुगल एवं सिख समुदायों के मध्य के संबंध प्रारंभिक दौर में शत्रुतापूर्ण नहीं थे, अपितु बाबर एवं हुमायूँ के समय वे सामान्य रहे। संबंधों में गंभीर तनाव की शुरुआत परवर्ती काल में बढ़ती राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के कारण हुई। गुरु तेग बहादुर की शहादत औरंगजेब के शासनकाल के दौरान हुई थी, जिसने संबंधों को और अधिक संशयात्मक बना दिया। इन दमनकारी परिस्थितियों के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिक्रिया के रूप में दसवें गुरु गोविंद सिंह ने 1699 में 'खालसा' पंथ की स्थापना की। खालसा के निर्माण ने सिखों को एक संगठित सैन्य शक्ति के रूप में खड़ा किया जो अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष हेतु पूर्णतः समर्पित थी।

273. (A) मुगल
'दीवान-ए-खास' एवं 'दीवान-ए-आम' मुगल महल वास्तुकला की अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषताएं थीं, जो सम्राट के सार्वजनिक एवं निजी राजकाज के संचालन हेतु निर्मित की गई थीं। दीवान-ए-आम में सम्राट सामान्य प्रजा से साक्षात्कार करता था, जबकि दीवान-ए-खास का प्रयोग केवल विशिष्ट मंत्रियों एवं राजदूतों के साथ गुप्त मंत्रणा हेतु किया जाता था। ये भवन अपनी भव्यता, संगमरमर की नक्काशी एवं स्थापत्य कला की सूक्ष्मता हेतु प्रसिद्ध हैं। दिल्ली एवं आगरा के किलों में इनके शानदार उदाहरण देखे जा सकते हैं। ये संरचनाएँ मुगल शासन व्यवस्था की पारदर्शिता एवं गोपनीयता के संतुलन को भौतिक रूप में बड़ी कुशलता से प्रदर्शित करती हैं।

274. (A) अस्तित्व की एकता
सूफी दर्शन में 'वहदत-उल-वुजूद' एक अत्यंत महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सिद्धांत है जिसका अर्थ है 'अस्तित्व की एकता'। इस विचारधारा के अनुसार, ईश्वर ही एकमात्र परम सत्य है और यह संपूर्ण दृश्य जगत उसी का प्रकटीकरण अथवा प्रतिबिंब है। यह दर्शन ईश्वर एवं उसकी रचना के मध्य किसी प्रकार के द्वैत को अस्वीकार करता है और संपूर्ण सृष्टि में एक ही दिव्य तत्व की उपस्थिति का अनुभव करने का संदेश प्रदान करता है। इब्न अरबी द्वारा लोकप्रिय बनाया गया यह विचार भारतीय सूफी संतों के मध्य प्रभावशाली रहा। इस दर्शन ने विभिन्न धर्मों के मध्य वैचारिक सामंजस्य और प्रेमपूर्ण भाईचारे को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

275. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
भक्ति आंदोलन कोई एकरूप आंदोलन नहीं था, अपितु यह विश्वासों, साधना पद्धतियों एवं दर्शनों का एक अत्यंत विशाल संगम था। इसमें ईश्वर की निराकार उपासना करने वाली 'निर्गुण' धारा और साकार रूपों की पूजा करने वाली 'सगुण' धारा दोनों सम्मिलित थीं। इस आंदोलन में वैष्णव संत, शैव संत एवं शाक्त परंपरा के प्रभाव भी परिलक्षित हुए। संतों की सामाजिक पृष्ठभूमियाँ भी अत्यंत विविध थीं, जो कबीर जैसे जुलाहे से लेकर मीराबाई जैसी राजकुमारी तक विस्तृत थीं। इस विविधता ने ही भक्ति आंदोलन को भारत के प्रत्येक कोने तक पहुँचाया, जिससे यह एक सच्चा लोक आंदोलन बन सका और भारतीय संस्कृति को बहुआयामी गहराई प्रदान की।

276. (A) भू-राजस्व
मध्यकालीन भारतीय राज्यों, विशेष रूप से मुगल साम्राज्य एवं दिल्ली सल्तनत हेतु भू-राजस्व ही आय का सर्वाधिक प्रमुख एवं स्थायी स्रोत था। चूँकि भारत की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर आश्रित थी, अतः राज्य का कोष मुख्य रूप से कृषकों से प्राप्त होने वाले करों से संपूरित होता था। राजस्व के मूल्यांकन एवं संग्रह हेतु शासकों ने 'दहसाला' जैसी उन्नत प्रणालियाँ विकसित की थीं। यद्यपि सीमा शुल्क एवं अन्य व्यापारिक करों से भी आय प्राप्त होती थी, तथापि कृषि उत्पादन से प्राप्त होने वाला भाग ही साम्राज्य की सैन्य शक्ति एवं भव्य भवनों के निर्माण का मुख्य आधार बना रहा। इसी कारण कृषि प्रबंधन हमेशा राज्य की सर्वोच्च प्राथमिकता रहा।

277. (A) रामायण और महाभारत जैसे हिंदू महाकाव्य और कृष्ण लीला।
चित्रकला की 'राजस्थानी' शैली अपनी जीवंतता एवं धार्मिक विषयों के प्रति गहरी निष्ठा हेतु विख्यात है। इस शैली का मुख्य आधार हिंदू महाकाव्य जैसे रामायण एवं महाभारत की घटनाएँ तथा भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं का चित्रण रहा है। राजस्थानी कलाकारों ने स्थानीय लोक कथाओं को भी बड़ी कुशलता से चित्रों में उकेरा। इन चित्रों में भक्ति की भावना एवं लोक जीवन का सुंदर समन्वय दृष्टिगोचर होता है। चटक रंगों एवं पारंपरिक रेखांकन ने इस शैली को एक स्वतंत्र पहचान प्रदान की, जिसने राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरवशाली एवं प्रभावशाली बना दिया है।

278. (A) अकबर
मुगल सम्राट अकबर की धार्मिक नीति का केंद्र 'सुलह-ए-कुल' का सिद्धांत था, जिसका अर्थ 'सार्वभौमिक शांति एवं सद्भाव' है। अकबर ने अनुभव किया कि एक विविध साम्राज्य की स्थिरता हेतु सभी धर्मों के मध्य आपसी सम्मान अनिवार्य है। उसने इस नीति के अंतर्गत भेदभावपूर्ण करों को समाप्त किया और संपूर्ण प्रजा को अपने धार्मिक विश्वासों के अनुपालन की स्वतंत्रता प्रदान की। इबादत खाना में होने वाले विमर्श इसी नीति का भाग थे। 'सुलह-ए-कुल' ने न केवल राजनैतिक स्थिरता प्रदान

भाषाओं का अभूतपूर्व उत्थान हुआ। इस प्रकार, मुगल काल एक ऐसी जीवंत संस्कृति का युग था जहाँ आधिकारिक एवं लोक परंपराएँ समानांतर रूप से विकसित हुईं और विरासत को समृद्ध बनाया।

248. (A) सैन्य सेवा के बदले क्षेत्रों (अमरम) पर सैन्य और प्रशासनिक अधिकार सौंपना।
विजयनगर साम्राज्य की 'नयनकार' प्रणाली एक विशिष्ट प्रशासनिक एवं सैन्य व्यवस्था थी जो साम्राज्य की रक्षा हेतु अभिकल्पित की गई थी। इसके अंतर्गत सम्राट अपने प्रभावशाली सैन्य कमांडरों या 'नायकों' को 'अमरम' नामक भूमि क्षेत्र प्रदान करता था। ये नायक उन क्षेत्रों से राजस्व संग्रह करते थे और बदले में सम्राट को एक निश्चित संख्या में सुसज्जित पैदल एवं घुड़सवार सेना प्रदान करने हेतु उत्तरदायी थे। यह प्रणाली न केवल प्रशासन को विकेंद्रीकृत करने का साधन थी, अपितु इसने स्थानीय स्तर पर शासन को मजबूती प्रदान की और साम्राज्य को एक विशाल सैन्य शक्ति बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

249. (A) प्रेम, मानवता की सेवा और स्थानीय संस्कृति के साथ सामंजस्य।
भारत में चिश्ती सूफी सिलसिले की अपार लोकप्रियता का मुख्य आधार उनका उदारवादी दृष्टिकोण एवं स्थानीय परंपराओं के प्रति सम्मान था। चिश्ती संतों ने प्रेम, सादगी एवं निस्वार्थ मानवता की सेवा को ही ईश्वर प्राप्ति का सच्चा मार्ग बताया। उन्होंने अपनी शिक्षाओं एवं भजनों हेतु स्थानीय लोक भाषाओं एवं संगीत का प्रयोग किया, जिससे वे सामान्य जनता के हृदय में गहराई से समाहित हो सके। राजकीय आडंबरों से दूर रहकर उन्होंने निर्धनों के मध्य रहकर सेवा की। इस सिलसिले ने जाति एवं धर्म के भेदभाव को मिटाकर एक ऐसे आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण किया जहाँ सभी को सम्मान प्राप्त होता था, जिससे सामाजिक समरसता सुदृढ़ हुई।

250. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति एवं स्वतंत्रता में उनकी सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर भारी भिन्नताएं थीं। शाही वर्गों की महिलाओं को शिक्षा एवं कला में निपुण होने के अवसर तो प्राप्त थे, किंतु वे 'पर्दा' प्रथा एवं महलों की सीमाओं तक ही संकुचित थीं। इसके विपरीत, कृषक एवं श्रमिक वर्गों की महिलाएं आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से सहभागिता करती थीं और उनके पास अपेक्षाकृत अधिक सामाजिक गतिशीलता थी, यद्यपि वे आर्थिक कठिनाइयों से जूझती थीं। इस प्रकार, मध्यकालीन समाज में महिलाओं का अनुभव एक जैसा नहीं था, अपितु वह उनके वर्ग एवं क्षेत्र के रीति-रिवाजों के अनुसार अलग-अलग और अत्यंत जटिल था।

251. (D) उत्पादन और कीमतों के दस वर्ष के औसत पर आधारित एक निश्चित राजस्व मांग।
'ज़ब्ती' अथवा 'दहसाला' प्रणाली अकबर के शासनकाल की एक अत्यंत वैज्ञानिक भू-राजस्व व्यवस्था थी। राजा टोडरमल द्वारा विकसित इस प्रणाली के अंतर्गत, प्रत्येक भूमि का विगत दस वर्षों का औसत उत्पादन एवं प्रचलित बाजार मूल्यों का व्यवस्थित डेटा एकत्र किया जाता था। इसी औसत के आधार पर राजस्व की एक निश्चित एवं पारदर्शी मांग निर्धारित की जाती थी। इस पद्धति ने न केवल राज्य की आय को स्थिर किया, अपितु कृषकों हेतु कर भुगतान की अनिश्चितता को भी समाप्त कर दिया। इसने राजस्व प्रशासन में भ्रष्टाचार को न्यून करने और कृषि प्रबंधन को एक व्यवस्थित प्रशासनिक आधार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

252. (A) मुगल शाही संरक्षण में ह्रास, जिसके कारण कलाकारों ने क्षेत्रीय दरबारों में कार्य की खोज की।
राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला शैलियों के विकास के पीछे एक प्रमुख कारण मुगल साम्राज्य का सांस्कृतिक विकेंद्रीकरण था। औरंगजेब के शासनकाल में शाही दरबार से चित्रकला के संरक्षण में ह्रास हुआ, जिसके कारण कुशल कलाकार नवीन अवसरों की खोज में क्षेत्रीय राज्यों की ओर पलायन कर गए। इन क्षेत्रों के स्थानीय राजाओं ने इन कलाकारों को भरपूर संरक्षण प्रदान किया, जिससे मुगल तकनीक का स्थानीय लोक शैलियों एवं धार्मिक विषयों के साथ एक अद्भुत मेल हुआ। इस पलायन एवं संरक्षण के परिणामस्वरूप भारतीय चित्रकला में एक नवीन विविधता का संचार हुआ, जिसने इन क्षेत्रीय शैलियों को विश्व भर में विख्यात और प्रतिष्ठित बनाया।

253. (A) बंगाल
चैतन्य महाप्रभु 16वीं शताब्दी के एक महान भक्ति संत थे जिनका प्रभाव बंगाल के धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर अत्यंत गहरा रहा। उन्होंने बंगाल में वैष्णववाद एवं भगवान कृष्ण की भक्ति की अभूतपूर्व लहर उत्पन्न की। चैतन्य ने 'संकीर्तन' अथवा सामूहिक गायन एवं नृत्य के माध्यम से भक्ति को एक शक्तिशाली जन आंदोलन में परिवर्तित कर दिया। उनकी शिक्षाओं ने जातिगत बंधनों को भंग कर प्रेम एवं समानता का संदेश दिया, जिससे समाज संस्कृति में एक नवीन आध्यात्मिक जागृति आई। आज भी बंगाल में कृष्ण भक्ति की समृद्ध परंपरा उन्हीं की देन मानी जाती है, जिसने न केवल धर्म को अपितु साहित्य एवं कला को भी नवीन दिशा प्रदान की।

254. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुगल काल में फारसी दरबार की मुख्य भाषा होने के पश्चात भी, क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य का विकास अत्यंत तीव्र एवं समृद्ध रहा। इसका मुख्य श्रेय भक्ति एवं सूफी आंदोलनों के संतों को प्राप्त है, जिन्होंने अपने उपदेशों एवं रचनाओं हेतु ब्रज, अवधी एवं मराठी जैसी लोक भाषाओं को अंगीकार किया। इन संतों ने अनुभव किया कि ईश्वरीय ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने हेतु स्थानीय भाषा ही सर्वाधिक प्रभावी माध्यम है। शासकों द्वारा फारसी को दिए गए प्रोत्साहन एवं संतों द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं के संवर्धन ने मिलकर एक जीवंत साहित्यिक संस्कृति का निर्माण किया, जिसने भारतीय विरासत को गहराई एवं विविधता प्रदान की।

255. (A) आध्यात्मिक गुरु और शिष्य।
सूफीवाद में 'पीर' एवं 'मुरीद' का संबंध अत्यंत पवित्र माना जाता है, जो आध्यात्मिक गुरु एवं शिष्य के मध्य के गहन बंधन को दर्शाता है। 'पीर' वह मार्गदर्शक होता है जो आध्यात्मिक

पथ पर परिपक्व हो चुका होता है, जबकि 'मुरीद' वह साधक है जो ईश्वर प्राप्ति हेतु गुरु के मार्गदर्शन में साधना करता है। यह संबंध पूर्ण विश्वास एवं समर्पण पर आधारित होता है। गुरु का कार्य शिष्य के हृदय को शुद्ध करना एवं उसे रुहानी उन्नति के मार्ग पर ले जाना होता है। सूफी सिलसिलों में इस परंपरा ने न केवल आध्यात्मिक ज्ञान की निरंतरता को सुनिश्चित किया, अपितु समाज में नैतिक मूल्यों को प्रसारित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

256. (A) वैट (Value Added Tax)
मध्यकालीन भारतीय कर व्यवस्था पारंपरिक एवं धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित थी, जहाँ खराज, जजिया एवं जकात जैसे करों का व्यापक प्रचलन था। ये कर राज्य के राजस्व के मुख्य स्रोत थे और इनका प्रबंधन सामाजिक नियमों के अनुसार किया जाता था। इसके विपरीत, 'वैट' एक आधुनिक अप्रत्यक्ष कर प्रणाली है जो वस्तुओं के प्रत्येक उत्पादन चरण पर मूल्य वृद्धि पर आरोपित की जाती है। यह प्रणाली मध्यकाल की आर्थिक समझ एवं प्रशासनिक ढांचे का भाग नहीं थी। उस समय की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि उत्पादन एवं व्यापार पर आधारित थी, जहाँ कर संग्रह की विधियाँ सरल एवं तत्कालीन आवश्यकताओं के अनुरूप निर्धारित की जाती थीं।

257. (A) कुछ महिलाएं उच्च शिक्षित थीं और साहित्य, प्रशासन तथा यहाँ तक कि कुश्ती में भी सम्मिलित थीं, जबकि सती जैसी प्रथाएँ भी प्रचलित थीं।
अकबर ने फतेहपुर सीकरी में 'इबादत खाना' का निर्माण उसकी जिज्ञासु एवं उदारवादी धार्मिक सोच के परिणामस्वरूप कराया था। इसका प्राथमिक उद्देश्य विभिन्न धर्मों, जैसे हिंदू, मुस्लिम, ईसाई एवं जैन विद्वानों को एक साथ आमंत्रित कर उनके साथ गहन धार्मिक विषयों पर चर्चा करना था। अकबर इन विमर्शों के माध्यम से सत्य के मूल आधार को समझना चाहता था और धर्मों के मध्य व्याप्त कट्टरता को न्यून करना चाहता था। इन चर्चाओं ने ही उसे 'सुलह-ए-कुल' एवं 'दीन-ए-इलाही' जैसी अवधारणाओं को प्रतिपादित करने हेतु प्रेरित किया। इबादत खाना मध्यकालीन भारत में धार्मिक सहिष्णुता एवं बौद्धिक विमर्श का ऐतिहासिक प्रतीक है।

258. (A) मंदिर सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र था।
विजयनगर साम्राज्य का सामाजिक जीवन मंदिरों के इर्द-गिर्द गहराई से बुना हुआ था। मंदिर केवल उपासना के स्थल नहीं थे, अपितु वे शिक्षा, संगीत एवं सार्वजनिक उत्सवों के जीवंत केंद्र के रूप में कार्य करते थे। साम्राज्य की कला एवं अर्थव्यवस्था में भी मंदिरों की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जहाँ वे बड़े स्तर पर संसाधनों का प्रबंधन करते थे। यद्यपि समाज में जाति व्यवस्था का प्रभाव सुदृढ़ था और कतिपय अन्य प्रथाएं प्रचलित थीं, तथापि मंदिरों ने समाज को एक सामूहिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान प्रदान करने में मुख्य भूमिका निभाई। विजयनगर की भव्यता को समझने हेतु मंदिर-केंद्रित इस जीवन शैली का अध्ययन आवश्यक है।

259. (A) गुरु तेग बहादुर
सिख धर्म के नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर की शहादत सिख इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं मार्मिक घटना है। उन्हें मुगल सम्राट औरंगजेब के आदेश पर दिल्ली के चांदनी चौक में मृत्युदंड दिया गया था। गुरु तेग बहादुर ने धार्मिक स्वतंत्रता एवं मानवीय अधिकारों की रक्षा हेतु अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। उन्होंने अन्याय के समक्ष न झुकने का संकल्प किया और बलिदान का मार्ग चुना। उनके इस महान त्याग ने सिख समुदाय को अत्याचार के विरुद्ध और अधिक संगठित होने की प्रेरणा प्रदान की। इसी बलिदान की आधारशिला पर आगे चलकर खालसा पंथ की स्थापना हुई, जिसने समाज में साहस एवं धर्म की रक्षा का नवीन अध्याय संयोजित किया।

260. (A) ताजमहल
'पितरा दुरा' स्थापत्य कला की एक अत्यंत सुंदर एवं जटिल तकनीक है जिसका भव्य एवं पूर्ण विकसित रूप आगरा के ताजमहल में दृष्टिगोचर होता है। इस कला में श्वेत संगमरमर की दीवारों पर सूक्ष्म नक्काशी कर उनमें लैपिस लाजुली एवं अन्य कीमती रंगीन पत्थरों को जड़ा गया है। ताजमहल की दीवारों पर निर्मित ये जटिल पुष्प प्रतिरूप एवं बेल-बूटों के अभिकल्प उस काल के शिल्पकारों की अद्भुत निपुणता का प्रमाण हैं। शाहजहाँ के शासनकाल में इस तकनीक ने अपनी पराकाष्ठा प्राप्त की, जिसने ताजमहल को न केवल एक स्मारक बनाया अपितु उसे विश्व के सर्वाधिक सुंदर एवं कलात्मक निर्माणों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित किया।

261. (A) 1, 2, 3
भारतीय भक्ति एवं दार्शनिक परंपरा का विकास विभिन्न महापुरुषों के माध्यम से क्रमिक रूप से हुआ। सर्वप्रथम 8वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने अद्वैत दर्शन का प्रचार कर हिंदू धर्म के पुनरुत्थान की नींव रखी। उनके सदियों पश्चात, 11वीं-12वीं शताब्दी में रामानुजाचार्य ने भक्ति एवं ज्ञान के समन्वय का मार्ग प्रशस्त किया। अंततः, 15वीं शताब्दी में कबीर जैसे क्रांतिकारी संतों ने निर्गुण भक्ति के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया और भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। संतों का यह कालक्रम भारतीय आध्यात्मिक चेतना के निरंतर परिमार्जन एवं विकास की यात्रा को दर्शाता है, जिसने समाज को नवीन दृष्टि प्रदान की।

262. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
मध्यकालीन भारत में आधुनिक परिवहन के साधनों का अभाव था, तथापि आंतरिक व्यापार अपनी पूरी गति से संचालित होता था। व्यापार मुख्य रूप से नदियों के जलमार्ग एवं भूमि पर भारवाही पशुओं तथा बैलगाड़ियों के बड़े काफिलों पर निर्भर था। बंजारे जैसे समुदायों ने खाद्यान्न एवं अन्य थोक वस्तुओं को देश के एक भाग से दूसरे भाग तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नदियों का उपयोग भारी माल की सुगम आवाजाही हेतु किया जाता था। परिवहन की यह पारंपरिक प्रणाली तत्कालीन आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप अत्यंत सुव्यवस्थित थी और इसने सुदूर क्षेत्रों के मध्य व्यापारिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बनाए रखा।

263. (A) ब्रज भाषा और राजस्थानी
मीराबाई के भक्ति गीत उनकी अनन्य कृष्ण भक्ति की अभिव्यक्ति हैं, जिनकी रचना उन्होंने मुख्य रूप से सरल ब्रज भाषा एवं राजस्थानी के मिश्रित रूप में की थी। इन लोक भाषाओं के प्रयोग ने उनके संदेश को आम जनता हेतु अत्यंत सुलभ एवं प्रभावशाली बना दिया। उनके गीतों में प्रेम, समर्पण एवं विरह की जो मार्मिक अभिव्यक्ति है, वह सीधे हृदय को स्पर्श करती है। इन भाषाओं की मधुरता एवं मीरा की आध्यात्मिक गहराई ने मिलकर उनके पदों को भारतीय साहित्य एवं संगीत की एक अमूल्य विरासत बना दिया। आज भी उनके भजन भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी श्रद्धा के साथ गाये जाते हैं, जो सांस्कृतिक सीमाओं को पार करते हैं।

264. (A) धार्मिक ज्ञान प्रदान करना और व्यक्तियों को राजकीय सेवा के लिए प्रशिक्षित करना।
मध्यकालीन भारत में शिक्षा व्यवस्था का ढांचा तत्कालीन राजनैतिक एवं सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप निर्मित किया गया था। मकतबों एवं मदरसों का मुख्य उद्देश्य छात्रों को साक्षर बनाने के साथ उन्हें धार्मिक ग्रंथों एवं अरबी-फारसी साहित्य में दक्ष बनाना था। इस शिक्षा का एक बड़ा लक्ष्य साम्राज्य हेतु कुशल अधिकारियों, जैसे काजी एवं राजस्व अधिकारियों का वर्ग तैयार करना था। यद्यपि शिक्षा में नैतिकता एवं चरित्र निर्माण पर बल दिया जाता था, तथापि वैज्ञानिक खोज के स्थान पर यह व्यवस्था पारंपरिक ज्ञान एवं शासन के सुचारु संचालन हेतु आवश्यक व्यावहारिक कौशल प्रदान करने तक ही अधिक सीमित रही थी।

265. (A) उसने अपने दरबार में संगीत और चित्रकला को संरक्षण प्रदान किया।
औरंगजेब की धार्मिक एवं सांस्कृतिक नीतियां पूर्ववर्ती सम्राटों की तुलना में अत्यधिक रुढ़िवादी थीं। अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं के कारण उसने संगीत एवं चित्रकला को अनुचित माना और शाही दरबार से उन्हें प्राप्त होने वाले संरक्षण को पूर्णतः समाप्त कर दिया। उसने झरोखा-दर्शन जैसे कई दरबारी समारोहों को भी प्रतिबंधित कर दिया। औरंगजेब का मुख्य ध्यान इस्लामी शुद्धतावाद पर था, जिसके अंतर्गत उसने जजिया कर को पुनः आरोपित किया और कतिपय मंदिरों को क्षति पहुँचाने के आदेश दिए। संगीत एवं कला के प्रति उसकी विमुखता ने मुगल दरबार की उस सांस्कृतिक विविधता को प्रभावित किया जो पूर्व में अपने चरमोत्कर्ष पर थी।

266. (A) ईश्वर की निराकार या साकार रूप में उनकी अवधारणा।
भक्ति आंदोलन के भीतर निर्गुण एवं सगुण धाराओं के मध्य मुख्य अंतर ईश्वर के स्वरूप को समझने के दृष्टिकोण में था। निर्गुण धारा के संत, जैसे कबीर एवं गुरु नानक, ईश्वर को निराकार एवं समस्त गुणों से परे मानते थे और उन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध किया। इसके विपरीत, सगुण धारा के संतों, जैसे तुलसीदास एवं मीराबाई, ने ईश्वर को साकार एवं मानवीय गुणों वाले रूप में पूजने पर बल दिया। इन दोनों धाराओं ने ईश्वर प्राप्ति हेतु प्रेम एवं अटूट भक्ति को ही अनिवार्य माना, किंतु उपासना के तरीके एवं दार्शनिक आधार एक-दूसरे से भिन्न थे, जिसने भारतीय अध्यात्म को एक समृद्ध विविधता एवं गहराई प्रदान की।

267. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विजयनगर साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि मध्यकालीन भारत के इतिहास में उल्लेखनीय रही है। इस समृद्धि का मुख्य आधार साम्राज्य की सुदृढ़ कृषि व्यवस्था थी, जिसे शासकों ने विशाल सिंचाई परियोजनाओं एवं बांधों के माध्यम से अत्यधिक उन्नत बनाया था। इसके अतिरिक्त, साम्राज्य के पास मसालों, सूती वस्त्रों एवं हीरों का एक अत्यंत लाभदायक विदेशी व्यापार था, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संचालित होता था। अनुकूल व्यापार संतुलन एवं प्रचुर राजस्व ने विजयनगर को शक्तिशाली आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित किया। इसी अपार संपदा के कारण ही शासक भव्य मंदिरों का निर्माण कराने तथा कला एवं साहित्य को संरक्षण देने में सफल रहे।

268. (A) संत ज्ञानेश्वर
संत ज्ञानेश्वर 13वीं शताब्दी के महाराष्ट्र के एक महान संत एवं दार्शनिक थे, जिन्होंने अल्पायु में भगवद गीता पर 'ज्ञानेश्वरी' नामक अद्भुत टीका लिखी थी। यह रचना सरल एवं काव्यमयी मराठी भाषा में है, जिसका उद्देश्य संस्कृत के गूढ़ आध्यात्मिक ज्ञान को सामान्य जन हेतु सुलभ बनाना था। ज्ञानेश्वरी ने महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन एवं वारकरी संप्रदाय को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। उनकी इस कृति ने समाज में ज्ञान एवं भक्ति का अद्भुत समन्वय किया और मराठी साहित्य को नवीन गरिमा प्रदान की। संत ज्ञानेश्वर की यह आध्यात्मिक विरासत आज भी करोड़ों लोगों हेतु सत्य एवं प्रेम का मार्ग प्रशस्त करती है और मार्गदर्शन करती है।

269. (A) मुस्लिम समाज
मध्यकालीन भारत में मुस्लिम समाज एक अखंड समुदाय नहीं था, अपितु वह भी आंतरिक सामाजिक एवं जातीय विभाजनों में विभक्त था। 'अशरफ' वे मुसलमान थे जो विदेशी मूल के थे और समाज में उच्च प्रशासनिक एवं सामाजिक स्थान रखते थे। इसके विपरीत, 'अजलाफ' उन स्थानीय धर्मांतरित मुसलमानों को कहा जाता था जो पूर्व में अन्य समुदायों की निचली जातियों से आए थे और प्रायः अपने पुरातन व्यवसायों में ही संलग्न रहे। यद्यपि सिद्धांततः समानता की बात की जाती थी, तथापि व्यावहारिक रूप से इन श्रेणियों के मध्य एक स्पष्ट पदानुक्रम विद्यमान था। यह विभाजन तत्कालीन समाज की उस जटिलता को दर्शाता है जहाँ पुरानी पहचानें बनी रहीं।

270. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
मध्यकालीन भारत की स्थापत्य कला विभिन्न सम्राटों की कलात्मक दृष्टि का गौरवशाली प्रमाण है। दिल्ली सल्तनत के दौरान कुतुब मीनार की नींव रखी गई, जो उस काल की भव्यता का प्रतीक है। बीजापुर के शासकों ने विश्वप्रसिद्ध 'गोल गुंबद' का निर्माण कराया, जो अपनी विशालता हेतु विख्यात है। मुगल सम्राट अकबर ने गुजरात विजय की स्मृति में 'बुलंद दरवाजा' निर्मित कराया, जबकि शाहजहाँ ने ताजमहल में श्वेत संगमरमर एवं 'पितरा दुरा' का उत्कृष्ट प्रयोग कर वास्तुकला को शिखर पर पहुँचाया। ये इमारतें न केवल तकनीकी उन्नति को

240. (A) दक्षिण भारत

'गोपुरम्' दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला की एक अत्यंत गौरवशाली एवं विशिष्ट पहचान है, जिसका सर्वाधिक भव्य विकास विजयनगर एवं परवर्ती राजवंशों के दौरान हुआ। ये मंदिर के चारों ओर की प्राचीर में निर्मित विशाल एवं अलंकृत प्रवेश द्वार होते हैं, जो मुख्य मंदिर के शिखर से भी ऊँचे हो सकते हैं। इन गोपुरों पर देवी-देवताओं एवं पौराणिक कथाओं के दृश्यों की अत्यंत सूक्ष्म एवं सुंदर नक्काशी की जाती है। हम्पी एवं मदुरै के मंदिरों में इनके सर्वश्रेष्ठ उदाहरण देखे जा सकते हैं। स्थापत्य की यह विशेषता न केवल मंदिरों को राजसी गरिमा प्रदान करती है, अपितु श्रद्धालुओं को आकर्षित करने वाली कलात्मक उपलब्धि भी है।

241. (A) यह मुख्य रूप से एक व्यापारिक और वाणिज्यिक संघ (श्रेणी) था।

'खालसा' सिख इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं क्रांतिकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1699 में दसवें गुरु गोविंद सिंह ने की थी। यह कोई व्यापारिक संघ नहीं था, अपितु एक अनुशासित आध्यात्मिक एवं सैन्य समुदाय था जिसका उद्देश्य अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष और मानवता की रक्षा करना था। खालसा के सदस्यों हेतु पांच ककारों को धारण करना अनिवार्य किया गया, जो उनके 'संत-सिपाही' चरित्र के प्रतीक थे। इस संस्था ने सिखों को एक सामूहिक पहचान एवं अटूट साहस प्रदान किया, जिसने उन्हें तत्कालीन दमनकारी शक्तियों के विरुद्ध एक अजेय एवं स्वाभिमानी शक्ति के रूप में संगठित किया और भविष्य की दिशा परिवर्तित कर दी।

242. (A) शंकराचार्य

'अद्वैत' का दर्शन भारतीय चिंतन परंपरा का एक सर्वोच्च स्तंभ है, जिसे 8वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित किया गया था। इस दर्शन का मूल सिद्धांत जीवात्मा एवं परमात्मा की पूर्ण एकता पर बल देता है। शंकराचार्य के अनुसार, केवल ब्रह्म ही शाश्वत सत्य है और यह भौतिक जगत एक भ्रम अथवा माया है। उन्होंने ज्ञान मार्ग के माध्यम से इस अद्वैत भाव को अनुभव करने एवं मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग प्रदर्शित किया। शंकराचार्य के इस तर्कसंगत एवं गंभीर दर्शन ने न केवल हिंदू धर्म को पुनर्जीवित किया, अपितु इसने भारतीय उपमहाद्वीप की आध्यात्मिक चेतना को एक नवीन गहराई एवं वैश्विक प्रतिष्ठा भी प्रदान की थी।

243. (A) बंगाल

मध्यकालीन भारत में वस्त्र उद्योग अपनी चरमोत्कर्ष पर था और बंगाल का क्षेत्र संपूर्ण विश्व में अपनी सूक्ष्म मलमल एवं उच्च कोटि के सूती वस्त्रों हेतु विख्यात था। यहाँ की मलमल इतनी महीन एवं सुंदर होती थी कि इसकी मांग यूरोप एवं मध्य पूर्व के शाही परिवारों में अत्यधिक थी। बंगाल के शिल्पकारों की अद्वितीय निपुणता ने भारत को अंतरराष्ट्रीय व्यापार का एक अत्यंत समृद्ध केंद्र बना दिया था। वस्त्रों के इस विशाल निर्यात ने बंगाल को मुगल साम्राज्य का सबसे धनी प्रांत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहाँ के हस्तशिल्प की श्रेष्ठता ने न केवल आर्थिक समृद्धि सुनिश्चित की, अपितु भारतीय कौशल की धाक पूरी दुनिया में जमा दी थी।

244. (A) संश्लेषित और उनके व्यक्तिगत रहस्यमय विश्वासों से प्रभावित।

मुगल सम्राट हुमायूँ का धार्मिक दृष्टिकोण उदार एवं संश्लेषित था। यद्यपि वह एक निष्ठावान मुसलमान था, तथापि उसका झुकाव सूफी रहस्यवाद एवं विभिन्न दर्शनों की ओर भी गहराई से था। वह आध्यात्मिक खोज एवं विभिन्न मतों के मध्य सामंजस्य को अधिक महत्व प्रदान करता था। उसकी यह उदारवादी सोच उसके शासन के व्यक्तिगत व्यवहार में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती थी। हुमायूँ की इसी वैचारिक पृष्ठभूमि ने भविष्य में उसके पुत्र अकबर हेतु एक सहिष्णु एवं समावेशी धार्मिक नीति की आधारशिला रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसने मुगल साम्राज्य को भारतीय सामाजिक परिवेश में सफलतापूर्वक आत्मसात होने में सहायता प्रदान की।

245. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2

मध्यकालीन भारत की कृषि एवं राजस्व व्यवस्था में विभिन्न श्रेणियों के कृषकों एवं करों का स्पष्ट विभाजन था। 'खुद-काश्त' वे कृषक थे जो अपने ही ग्राम में अपनी भूमि पर खेती करते थे, जबकि 'पाही-काश्त' बाह्य क्षेत्रों से आकर संविदा पर कार्य करने वाले कृषक थे। धार्मिक करों के मामले में, 'जजिया' गैर-मुसलमानों पर आरोपित किया जाता था, जबकि 'जकात' केवल संपन्न मुसलमानों हेतु अनिवार्य एक धार्मिक कर था। इन शब्दावलियों का यह वर्गीकरण तत्कालीन समाज की आर्थिक संरचना को समझने में सहायक है, जिन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक पदानुक्रम को व्यवस्थित बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

246. (A) मीराबाई

मीराबाई मध्यकालीन भारत की एक अत्यंत प्रसिद्ध एवं प्रेरणादायी महिला भक्ति संत थीं, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भगवान कृष्ण की अनन्य भक्ति में समर्पित कर दिया। राजसी परिवार में जन्मी मीरा ने सामाजिक बंधनों एवं शाही सुखों का परित्याग कर कृष्ण को ही अपना सर्वस्व माना। उनके भजन प्रेम, समर्पण एवं विरह की गहन भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। उन्होंने सरल ब्रज एवं राजस्थानी मिश्रित भाषा में अपने हृदय के भाव व्यक्त किए, जिससे वे जन-जन के मध्य लोकप्रिय हुईं। मीराबाई का जीवन और उनकी कविताएँ आज भी स्त्री चेतना, धार्मिक स्वतंत्रता एवं अटूट आध्यात्मिक आस्था की एक अमूल्य विरासत के रूप में समादृत एवं पूजी जाती हैं।

247. (A) केवल 1 और 2

मुगल काल में भारत का सांस्कृतिक विकास फारसी एवं स्वदेशी परंपराओं के सुंदर संगम का साक्षी रहा। फारसी दरबार एवं प्रशासन की आधिकारिक भाषा थी, जिसने साहित्य एवं अभिलेखन को नवीन ऊँचाई प्रदान की। वास्तुकला में भारत-फारसी शैलियों का संश्लेषण हुआ, जिससे कालजयी कृतियाँ निर्मित हुईं। तथापि, यह मानना त्रुटिपूर्ण है कि क्षेत्रीय भाषाओं को निरुत्साहित किया गया; वास्तव में, भक्ति एवं सूफी आंदोलनों के कारण इसी काल में ब्रज एवं बंगाली जैसी क्षेत्रीय

की, अपितु इसने मुगलों को भारतीय समाज के एक बड़े भाग का विश्वास प्राप्त करने में सहायता दी, जिससे साम्राज्य और सुदृढ़ हुआ।

279. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्यकाल के दौरान भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में कई कारणों से ह्रास परिलक्षित हुआ। यद्यपि कतिपय महिला संतों ने आध्यात्मिक ऊँचाइयों को स्पर्श किया, तथापि सामान्य महिलाओं का जीवन पारंपरिक जड़ताओं से आबद्ध था। सती प्रथा एवं बाल विवाह जैसी प्रथाओं ने उनकी व्यक्तिगत गरिमा को प्रभावित किया। इसके साथ ही, पर्दा प्रथा के प्रसार ने उनकी सार्वजनिक भूमिका एवं शिक्षा के अवसरों को सीमित कर दिया। समाज का पितृसत्तात्मक ढांचा और निरंतर होने वाले युद्धों के कारण उत्पन्न असुरक्षा ने भी महिलाओं की स्थिति को प्रभावित करने में योगदान दिया, जिससे वे आर्थिक रूप से पुरुषों पर अधिक आश्रित होती चली गईं।

280. (A) तुकाराम
संत तुकाराम महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन एवं 'वारकरी' संप्रदाय को लोकप्रिय बनाने वाले सर्वाधिक प्रभावशाली संतों में से एक माने जाते हैं। उन्होंने अपनी सरल एवं सारगर्भित मराठी भाषा के अभंगों के माध्यम से ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति एवं सामाजिक समानता का संदेश प्रसारित किया। तुकाराम ने पंढरपुर की तीर्थयात्रा एवं भगवान विठोबा की उपासना को जन-जन के जीवन का अभिन्न अंग बना दिया। उनकी शिक्षाओं ने बाह्य आडंबरों का विरोध किया और शुद्ध मन से की गई भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ माना। वारकरी परंपरा के माध्यम से तुकाराम ने महाराष्ट्र के समाज को सूत्र में पिरोने और उनमें आध्यात्मिक चेतना जागृत करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

281. (A) हुमायूँ और अकबर
मुगल वास्तुकला में लाल बलुआ पत्थर एवं श्वेत संगमरमर का संतुलित उपयोग हुमायूँ एवं अकबर के शासनकाल की एक विशिष्ट पहचान है। यह संक्रमण कालीन शैली का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ प्रारंभिक सादगी परिष्कृत भव्यता की ओर अग्रसर हो रही थी। हुमायूँ के मकबरे में यह संगम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ मुख्य भवन के लाल पाषाण को श्वेत संगमरमर के गुंबद के साथ सुसज्जित किया गया है। अकबर ने इस परंपरा को फतेहपुर सीकरी के किलों में और अधिक निखारा। यह मिश्रण न केवल सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक था, अपितु इसने आने वाले समय की पूर्णतः संगमरमर आधारित वास्तुकला हेतु एक कलात्मक आधार तैयार किया था।

282. (A) कबीर, रविदास और बाबा फरीद
सिख धर्म का पवित्र ग्रंथ 'आदि ग्रंथ' भारतीय अध्यात्म की समावेशी एवं उदारवादी परंपरा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इस ग्रंथ में सिख गुरुओं की पवित्र वाणी के साथ कबीर, रविदास, नामदेव एवं मुस्लिम सूफी संत बाबा फरीद जैसे अनेक महान संतों की शिक्षाओं को भी समान रूप से संकलित किया गया है। यह समावेश इस बात का प्रमाण है कि सत्य की प्राप्ति का मार्ग किसी विशिष्ट धर्म तक सीमित नहीं है। गुरु ग्रंथ साहिब का यह स्वरूप न केवल धार्मिक एकता का संदेश प्रदान करता है, अपितु यह भारत की उस समन्वित संस्कृति को भी दर्शाता है जहाँ विभिन्न समुदायों के महापुरुषों के विचार एक ही आध्यात्मिक सूत्र में पिरोए गए हैं।

283. (A) यह जीवंत था, भारत का व्यापार संतुलन अनुकूल था, और आयात की तुलना में निर्यात अधिक था।
मुगल काल के दौरान भारत का विदेशी व्यापार अपनी पूरी भव्यता के साथ संचालित होता था। भारतीय हस्तशिल्प, विशेष रूप से सूक्ष्म वस्त्रों एवं मसालों की अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अत्यधिक मांग थी। भारत के निर्यात की प्रचुरता के कारण व्यापार संतुलन सदैव देश के पक्ष में रहा, जिसके प्रतिफल में विश्व भर से प्रचुर मात्रा में स्वर्ण एवं रजत भारत आता था। सूरत एवं बंगाल के पत्तन विश्व व्यापार के प्रमुख द्वार थे। इस समृद्ध वाणिज्यिक गतिविधि ने भारत को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर एवं शक्तिशाली बनाया, जिससे मुगल काल को भारतीय इतिहास का एक अत्यंत समृद्ध एवं वैश्विक व्यापारिक शक्ति वाला युग माना जाता है।

284. (A) अलंकृत गोपुरों और मंडपों के साथ विशाल मंदिर परिसरों का निर्माण।
मध्यकालीन दक्षिण भारत में वास्तुकला का विकास भव्यता के नवीन आयामों को स्पर्श कर रहा था। चोलों से प्रारंभ हुई परंपरा को विजयनगर एवं परवर्ती राजवंशों ने और अधिक विस्तार प्रदान किया। इस काल की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता मंदिरों के प्रवेश द्वारों पर निर्मित विशाल एवं अलंकृत 'गोपुरम्' और नक्काशीदार स्तंभों वाले बड़े 'मंडप' थे। मंदिर केवल उपासना के स्थल नहीं रह गए थे, अपितु वे विशाल नगर सदृश परिसरों में परिवर्तित हो गए थे। पाषाण पर की गई सूक्ष्म नक्काशी एवं स्थापत्य की भव्यता ने दक्षिण भारतीय मंदिरों को अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान प्रदान की, जो आज भी विश्व भर में अपनी विशिष्टता हेतु विख्यात है।

285. (D) 1, 2 और 3
भारतीय दर्शन के इतिहास में अद्वैत, विशिष्टाद्वैत एवं द्वैत जैसे मतों ने आध्यात्मिक ज्ञान को नवीन गहराई प्रदान की। शंकराचार्य ने 'अद्वैत' के माध्यम से ब्रह्म एवं जीव की एकता का प्रतिपादन किया, जिसे ज्ञान मार्ग का आधार माना जाता है। रामानुजाचार्य ने 'विशिष्ट अद्वैत' के माध्यम से भक्ति एवं ज्ञान के संगम को प्रोत्साहित किया, जो वैष्णव परंपरा में अत्यंत प्रभावशाली रहा। वहीं मध्वाचार्य ने 'द्वैत' दर्शन प्रदान किया, जिसमें ईश्वर एवं जीव के मध्य के अंतर को स्पष्ट करते हुए भक्ति के महत्व को सर्वोपरि बताया। इन सभी आचार्यों के सिद्धांतों ने हिंदू धर्म के दार्शनिक ढांचे को सुदृढ़ किया और भक्ति आंदोलन को एक तार्किक आधार प्रदान किया।

286. (A) प्राथमिक शिक्षा
मध्यकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में 'मकतब' प्रारंभिक शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे, जो सामान्यतः स्थानीय मस्जिदों के साथ संबद्ध होते थे। यहाँ बालकों को पठन-पाठन एवं बुनियादी गणित सिखाने के साथ कुरान की आयतों एवं प्राथमिक धार्मिक सिद्धांतों की शिक्षा प्रदान की जाती थी। मकतबों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को साक्षर बनाना एवं उन्हें उच्च शिक्षा हेतु

तैयार करना था। ये संस्थान समाज के सभी वर्गों हेतु सुलभ थे, जिससे सामान्य जन के मध्य शिक्षा के प्रसार में सहायता प्राप्त हुई। मकतब से शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात ही छात्र 'मदरसों' में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के योग्य होते थे, जहाँ गहन विषयों का अध्ययन होता था।

287. (A) वह भूमि जिसका राजस्व शाही कोष के लिए आरक्षित था।
मुगल प्रशासनिक व्यवस्था में भूमियों का वर्गीकरण उनके राजस्व प्रबंधन के आधार पर किया गया था। 'खालसा' उस भूमि को कहा जाता था जो सीधे सम्राट के स्वामित्व एवं नियंत्रण में होती थी। इस भूमि से प्राप्त होने वाला संपूर्ण राजस्व किसी मध्यस्थ के पास न जाकर सीधे शाही कोष में जमा किया जाता था। खालसा भूमि का उचित प्रबंधन साम्राज्य की वित्तीय शक्ति एवं सम्राट की निजी सत्ता को सुदृढ़ बनाए रखने हेतु अत्यंत आवश्यक था। राज्य के अधिकारी स्वयं इस भूमि से कर संग्रह का कार्य करते थे। इस प्रकार, खालसा भूमि साम्राज्य के केंद्रीय वित्त संचालन का सबसे प्रमुख एवं विश्वसनीय स्रोत मानी जाती थी।

288. (A) मंदिर-केंद्रित गतिविधियों की प्रमुखता।
विजयनगर साम्राज्य का सामाजिक जीवन अपनी मंदिर-केंद्रित व्यवस्था के कारण मध्यकालीन भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय स्थान रखता है। मंदिर यहाँ केवल आध्यात्मिक केंद्र नहीं थे, अपितु वे आर्थिक, सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों के मुख्य धुर थे। कला, संगीत एवं शिक्षा का संरक्षण मंदिरों के माध्यम से ही किया जाता था। साम्राज्य के उत्सव एवं यहाँ तक कि राजस्व प्रबंधन में भी मंदिरों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। भव्य गोपुरों वाले इन विशाल मंदिर परिसरों ने विजयनगर के समाज को एक सुदृढ़ धार्मिक एकता एवं सांस्कृतिक गौरव प्रदान किया, जिससे यह साम्राज्य न केवल राजनैतिक रूप से अपितु सामाजिक रूप से भी संगठित रहा।

289. (A) एकेश्वरवाद, सामाजिक समानता और नैतिक आचरण।
सिख गुरुओं की शिक्षाएं एक नवीन एवं समतावादी समाज के निर्माण की दिशा में एक सशक्त आधार स्तंभ हैं। उनकी शिक्षाओं का मूल केंद्र 'एक ओंकार' अर्थात् एक निराकार ईश्वर की भक्ति है। गुरुओं ने कड़ाई से मूर्तिपूजा एवं निरर्थक कर्मकांडों का खंडन किया। उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत ऊंच-नीच के बंधनों को भंग कर सभी मनुष्यों की समानता पर बल दिया। उनके अनुसार, सच्ची भक्ति ईमानदारी से किए गए श्रम, दूसरों के साथ साझा करने एवं निरंतर ईश्वर के नाम स्मरण में निहित है। ये नैतिक आचरण ही व्यक्ति को सच्चे आध्यात्मिक मार्ग पर ले जाते हैं और समाज में शांति एवं सामंजस्य स्थापित करने में योगदान देते हैं।

290. (A) इस्लामी कट्टरपंथ की ओर झुकाव।
मुगल सम्राट औरंगजेब की धार्मिक नीति पूर्ववर्ती उदारवादी सम्राटों की तुलना में अत्यधिक रुढ़िवादी थी। उसने शासन को शरिया विधियों के अनुसार ढालने का प्रयास किया और उन सभी प्रथाओं को बंद कर दिया जिन्हें वह अनुचित मानता था। उसने हिंदुओं पर जजिया कर को पुनः आरोपित किया और कई महत्वपूर्ण मंदिरों को क्षति पहुँचाने के आदेश दिए, जिससे साम्राज्य के विभिन्न समुदायों में असंतोष उत्पन्न हुआ। औरंगजेब का यह शुद्धतावादी दृष्टिकोण धार्मिक सहिष्णुता के अभाव को प्रदर्शित करता था, जिसने अंततः साम्राज्य की राजनैतिक स्थिरता को प्रभावित किया और उसके पतन के मार्ग को प्रशस्त करने में अपनी भूमिका निभाई।

291. (A) मसाले और वस्त्र
मध्यकाल के दौरान भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार का एक अत्यंत समृद्ध केंद्र था, जहाँ से अनेक मूल्यवान वस्तुओं का निर्यात किया जाता था। भारतीय वस्त्र, विशेष रूप से रंगीन सूती वस्त्र, अपनी अद्वितीय गुणवत्ता के कारण संपूर्ण विश्व में विख्यात थे। इनके साथ ही, काली मिर्च एवं दालचीनी जैसे मसालों की यूरोपीय एवं अरब बाजारों में भारी मांग थी। इन वस्तुओं के निर्यात से भारत को अपार आर्थिक लाभ प्राप्त होता था और बदले में बड़ी मात्रा में स्वर्ण एवं रजत देश में आता था। निर्यात की इस प्रचुरता ने भारत को 'सोने की चिड़िया' के रूप में प्रतिष्ठित किया और वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति को सुदृढ़ बनाए रखने में भूमिका निभाई।

292. (A) वल्लभाचार्य
'पुष्टिमार्ग' वैष्णव भक्ति परंपरा का एक अत्यंत प्रभावशाली संप्रदाय है जिसकी स्थापना 15वीं शताब्दी में महान दार्शनिक वल्लभाचार्य द्वारा की गई थी। इस विचारधारा का मूल दर्शन यह है कि जीव केवल ईश्वर के अनुग्रह के माध्यम से ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसमें भगवान कृष्ण के बाल स्वरूप की वात्सल्यपूर्ण सेवा एवं उपासना को भक्ति का सर्वोच्च शिखर माना गया है। वल्लभाचार्य की शिक्षाओं ने प्रेमपूर्ण भक्ति पर बल दिया और कर्मकांडों के स्थान पर ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का संदेश प्रसारित किया। इस संप्रदाय ने राजस्थान एवं गुजरात के क्षेत्रों में कला एवं साहित्य के विकास में अपना अमूल्य और चिरस्थायी योगदान दिया है।

293. (C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
चित्रकला की मुगल शैली भारतीय एवं फारसी शैलियों के परिष्कृत मिश्रण का प्रतिफल थी, जिसने एक नवीन कला परंपरा को जन्म दिया। यह शैली जहाँगीर के शासनकाल में अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँची, क्योंकि वह कला का महान पारखी था। इसके विपरीत, सम्राट औरंगजेब के समय में चित्रकला के संरक्षण में भारी गिरावट आई क्योंकि उसने अपनी रुढ़िवादी मान्यताओं के कारण ललित कलाओं को नापसंद किया और शाही दरबार से कलाकारों को निष्कासित कर दिया। इस प्रकार, मुगल चित्रकला का ह्रास औरंगजेब के काल से ही प्रारंभ हो गया था, जबकि अकबर एवं जहाँगीर के समय में इसे अभूतपूर्व प्रोत्साहन एवं विकास प्राप्त हुआ था।

294. (A) अकबर
महान संगीतज्ञ तानसेन मुगल सम्राट अकबर के दरबार के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कलाकारों में से एक थे। अकबर ने उन्हें अपने 'नवरत्नों' में स्थान दिया था और उन्हें 'मियां' की उपाधि से अलंकृत किया था। तानसेन की असाधारण प्रतिभा ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ध्रुपद शैली को नवीन ऊँचाइयों तक पहुँचाया

और कई नवीन रागों का सृजन किया। उनकी संगीत साधना ने न केवल मुगल दरबार के वैभव को संवर्धित किया, अपितु भारतीय संगीत की परंपरा को भी नवीन दिशा प्रदान की। अकबर एवं तानसेन का यह संबंध कला के प्रति राजकीय संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने भारतीय संस्कृति को और अधिक समृद्ध और विविधतापूर्ण बनाया।

295. (A) वे समस्त समृद्ध और ऋणमुक्त थे।
मध्यकालीन भारत में कृषकों की स्थिति अत्यंत कठिन एवं संघर्षपूर्ण थी। यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि वे सभी समृद्ध थे; वास्तव में, वे एक विभेदित समूह थे जहाँ धनी कृषकों के साथ भूमिहीन मजदूरों का भी बड़ा वर्ग था। राज्य द्वारा निर्धारित भू-राजस्व की मांग अक्सर अत्यधिक होती थी, और इसके अतिरिक्त उन्हें कई स्थानीय उपकरों का भुगतान भी करना पड़ता था। फसल खराब होने अथवा अकाल के समय उनकी स्थिति दयनीय हो जाती थी, जिससे वे अक्सर ऋण के जाल में आबद्ध हो जाते थे। कृषकों की यह आर्थिक विपन्नता तत्कालीन समाज की एक वास्तविकता थी, जो राज्य की भारी कर वसूली की नीतियों का प्रत्यक्ष परिणाम थी।

296. (A) गुरु नानक
सिख धर्म की स्थापना 15वीं शताब्दी के अंत में गुरु नानक देव द्वारा की गई थी। उन्होंने निराकार ईश्वर की उपासना का मार्ग प्रदर्शित किया और समाज में व्याप्त अंधविश्वासों एवं जातिगत भेदभाव का कड़ा विरोध किया। गुरु नानक ने प्रेम, सेवा एवं मानवता की एकता का संदेश दिया और 'एक ओंकार' के सिद्धांत को प्रतिपादित किया। उन्होंने 'लंगर' जैसी संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक समानता का व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत किया। गुरु नानक की सरल शिक्षाओं ने एक नवीन आध्यात्मिक आंदोलन की नींव रखी, जिसने सिखों को एक संगठित एवं स्वाभिमानी समुदाय के रूप में विश्वपटल पर पहचान दिलाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

297. (A) समस्त धर्मों के बीच सद्भाव और सहिष्णुता।
मुगल सम्राट अकबर द्वारा प्रतिपादित 'सुलह-ए-कुल' की अवधारणा का मूल अर्थ 'सार्वभौमिक शांति' एवं सभी समुदायों के मध्य धार्मिक सहिष्णुता है। अकबर ने अनुभव किया कि एक विविध साम्राज्य को सुचारु रूप से संचालित करने हेतु विभिन्न धर्मों के मध्य आपसी सम्मान अनिवार्य है। इस नीति के अंतर्गत उसने प्रजा को अपने धार्मिक विश्वासों के अनुपालन की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की। सुलह-ए-कुल ने न केवल राजनैतिक स्थिरता प्रदान की, अपितु इसने भारतीय समाज में समावेशी संस्कृति के निर्माण में भी सहायता की। अकबर का यह दृष्टिकोण उसे एक महान शासक के रूप में स्थापित करने वाला मुख्य आधार स्तंभ सिद्ध हुआ।

298. (A) कृष्णदेवराय
'अमुक्तमाल्यद' तेलुगु साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है, जिसकी रचना विजयनगर साम्राज्य के महान शासक कृष्णदेवराय ने स्वयं की थी। यह ग्रंथ न केवल एक काव्य रचना है, अपितु इसमें शासनकला एवं प्रशासन के सिद्धांतों का भी गहन वर्णन प्राप्त होता है। कृष्णदेवराय स्वयं एक विद्वान एवं कवियों के संरक्षक थे, और उनकी यह कृति उनकी बौद्धिक प्रखरता का उत्कृष्ट प्रमाण है। इस ग्रंथ के माध्यम से उन्होंने एक आदर्श राजा के कर्तव्यों एवं साम्राज्य के कल्याण हेतु आवश्यक रणनीतियों पर प्रकाश डाला है। इस साहित्यिक योगदान ने कृष्णदेवराय के काल को तेलुगु साहित्य का स्वर्ण युग बनाने में अपनी मुख्य भूमिका निभाई।

299. (A) पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा सौंदर्य के लिए, और सामाजिक स्थिति के प्रतीक के रूप में।
मध्यकालीन भारतीय समाज में आभूषणों का उपयोग अत्यंत व्यापक था। ये न केवल सौंदर्य वृद्धि के साधन थे, अपितु वे व्यक्ति की सामाजिक स्थिति एवं धन के स्पष्ट संकेतक भी थे। पुरुष एवं महिलाएं दोनों ही अत्यधिक रुचि के साथ स्वर्ण एवं बहुमूल्य रत्नों से निर्मित आभूषण धारण करते थे। शाही दरबारों में रत्नजड़ित आभूषणों का प्रदर्शन सम्राट एवं कुलीनों के वैभव का आधार था। आभूषणों की इस लोकप्रियता ने उस काल के सूक्ष्म धातु कर्म एवं शिल्प कला को नवीन ऊँचाइयों तक पहुँचाया। यह सांस्कृतिक विशेषता तत्कालीन समाज के विलासिता पूर्ण जीवन और कला के प्रति उनके गहरे अनुराग को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है।

300. (B) नक्शबंदी
सूफीवाद के विभिन्न सिलसिलों में 'नक्शबंदी' सिलसिला अपनी कठोरता एवं रुढ़िवादी धार्मिक मान्यताओं हेतु जाना जाता है। इस सिलसिले के संतों ने इस्लामी विधि के अक्षरशः पालन पर अत्यधिक बल दिया और उन सभी उदारवादी नवाचारों का कड़ा विरोध किया जिन्हें वे अनुचित मानते थे। उन्होंने संगीत एवं नृत्य जैसी प्रथाओं की भर्त्सना की, जो अन्य सूफी सिलसिलों में प्रचलित थीं। भारत में शेख अहमद सरहिंदी इस सिलसिले के प्रमुख प्रस्तावक थे, जिन्होंने अकबर की उदारवादी धार्मिक नीतियों के विरुद्ध सक्रिय रूप से स्वर मुखरित किया। नक्शबंदी सिलसिले का मुख्य उद्देश्य इस्लाम को उसकी मूल शुद्धता में पुनर्जीवित करना था।

अध्याय 07

आधुनिक भारत का इतिहास

1. उस नीति को किस अवधारणा के रूप में जाना जाता है जिसके द्वारा किसी देशी रियासत की रक्षा और विदेशी संबंधों को अंग्रेजों द्वारा नियंत्रित किया जाता था, और इसके बदले में भुगतान या क्षेत्र का समर्पण किया जाता था?
(A) व्यपगत का सिद्धांत
(B) सहायक संधि
(C) सर्वोच्चता
(D) द्वैध शासन

2. इतिहासलेखन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राष्ट्रवादी इतिहासलेखन ने भारत के अतीत के गौरवगान और औपनिवेशिक शासन की आलोचना पर ध्यान केंद्रित किया।
कथन II: साम्राज्यवादी इतिहासलेखन ने प्रायः भारतीयों को स्व-शासन के लिए अक्षम चित्रित करके ब्रिटिश शासन को उचित ठहराया।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(B) कथन II सही है, लेकिन कथन I गलत है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

3. ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) केंद्रीय प्रशासन की संरचना 1773 और 1853 के बीच विकसित हुई।
(B) कंपनी ने एक औपचारिक पुलिस और सैन्य संरचना स्थापित की।
(C) स्थानीय स्वशासन प्रारंभिक कंपनी प्रशासन की एक प्रमुख विशेषता थी।
(D) कंपनी के शासन में न्यायपालिका की एक प्रणाली विकसित की गई थी।

4. 'व्यपगत का सिद्धांत' की नीति को सबसे उपयुक्त रूप से इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(A) तीव्र क्षेत्रीय विस्तार के लिए एक सैन्य रणनीति।
(B) किसी रियासत का विलय यदि उसका शासक स्पष्ट रूप से अक्षम हो।
(C) एक व्यापारिक समझौता जो राज्यों को केवल अंग्रेजों को सामान बेचने के लिए विवश करता था।
(D) किसी रियासत का विलय यदि उसके शासक की मृत्यु बिना किसी प्राकृतिक उत्तराधिकारी के हो जाए।

5. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): ब्रिटिश शासन के दौरान कृषि के वाणिज्यीकरण से ग्रामीण ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई।
कारण (R): किसानों को बाजार के लिए नकदी फसलें उगाने के लिए विवश किया गया, जो प्रायः खाद्य फसलों की कीमत पर होता था, जिससे वे मूल्यों के उतार-चढ़ाव और साहूकारों के प्रति संवेदनशील हो गए।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

6. कौन सा समाज सुधारक मुख्य रूप से महिलाओं और विधवाओं के लिए शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना से जुड़ा है, जिससे एक महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई?
(A) ज्योतिबा फुले
(B) धोंडो केशव कर्वे
(C) दयानंद सरस्वती
(D) राजा राम मोहन राय

7. 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) भारतीय भाषाओं में प्रकाशित समाचार पत्रों को बढ़ावा देना।
(B) देशी प्रेस को वित्तीय सहायता प्रदान करना।
(C) सरकार द्वारा संचालित समाचार पत्र एजेंसी स्थापित करना।
(D) भारतीय भाषा के समाचार पत्रों में राजद्रोहात्मक लेखन को नियंत्रित और दमित करना।

8. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. द्वैध शासन
Q. प्राच्यवाद
R. सर्वोच्चता
S. खिलाफत
सूची II: (विवरण)
1. एक दृष्टिकोण जिसने पूर्वी संस्कृतियों का अध्ययन

किया और प्रायः उन्हें काल्पनिक रूप से प्रस्तुत किया, लेकिन पश्चिमी श्रेष्ठता की स्थिति से।
2. 1919 के अधिनियम द्वारा आरंभ की गई प्रांतों में दोहरी सरकार की प्रणाली।
3. भारतीय रियासतों पर अंतिम संप्रभुता का ब्रिटिश दावा।
4. खलीफा के रूप में तुर्की सुल्तान के अधिकार की रक्षा के लिए एक अखिल-इस्लामी आंदोलन।

कूट:
(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

9. आधुनिक भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए निम्नलिखित में से किस स्रोत को सामान्यतः अभिलेखीय सामग्री के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जाता है?
(A) जीवनियां और संस्मरण
(B) समाचार पत्र
(C) पुरातात्विक पुरावशेष
(D) मौखिक साक्ष्य

10. 'धन के निष्कासन का सिद्धांत', जिसमें यह तर्क दिया गया था कि ब्रिटेन व्यवस्थित रूप से भारत से धन का दोहन कर रहा है, सबसे प्रसिद्ध रूप से किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया था?
(A) दादाभाई नौरोजी
(B) आर.सी. दत्त
(C) एम.जी. रानाडे
(D) गोपाल कृष्ण गोखले

11. भारत में यूरोपीय व्यापारियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पुर्तगाली भारत में महत्वपूर्ण उपस्थिति स्थापित करने वाले पहले यूरोपीय व्यापारी थे।
2. डच लोगों ने मुख्य रूप से वस्त्र और मसालों पर अपनी व्यापारिक गतिविधियों को केंद्रित किया।
3. फ्रांसीसी भारत में व्यापारिक केंद्र स्थापित करने वाली अंतिम यूरोपीय शक्ति थे।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

12. भारत में अंग्रेजों की "अग्रगामी नीति" मुख्य रूप से किससे संबंधित थी?
(A) घरेलू सामाजिक सुधार।
(B) उत्तर-पश्चिमी सीमा के राज्यों के साथ संबंध, विशेष रूप से अफगानिस्तान।
(C) औद्योगीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आर्थिक नीतियां।
(D) दक्षिण भारत में रेलवे नेटवर्क का विस्तार।

13. कौन सा इतिहासलेखन दृष्टिकोण भारतीय इतिहास में हाशिए पर स्थित और निम्नवर्गीय समूहों के दृष्टिकोण और अनुभवों पर ध्यान केंद्रित करता है?
(A) साम्राज्यवादी
(B) राष्ट्रवादी
(C) निम्नवर्गीय (सबॉल्टरन)
(D) मार्क्सवादी

14. कलकत्ता में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना और एक केंद्रीय प्रशासनिक संरचना का विकास किस अधिनियम के साथ आरंभ हुआ?
(A) 1784 का पिट्स इंडिया अधिनियम
(B) 1833 का चार्टर अधिनियम
(C) 1853 का चार्टर अधिनियम
(D) 1773 का रेगुलेटिंग अधिनियम

15. निम्नलिखित यूरोपीय शक्तियों को भारत में उनके पहले व्यापारिक केंद्रों की स्थापना के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. फ्रांसीसी
2. ब्रिटिश
3. पुर्तगाली
4. डच

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 3, 2, 4, 1
(B) 3, 4, 2, 1
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 2, 3, 1, 4

16. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प एक आर्थिक इतिहासकार और उनके प्रमुख कार्य या अवधारणा की सही पहचान करता है?
(A) दादाभाई नौरोजी - वि-औद्योगीकरण
(B) आर.सी. दत्त - द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया
(C) कार्ल मार्क्स - कृषि का वाणिज्यीकरण
(D) एडम स्मिथ - ग्रामीण ऋणग्रस्तता

17. सावित्रीबाई फुले का योगदान किस क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण है?
(A) श्रमिक संघ आंदोलन।
(B) महिला शिक्षा और समाज सुधार।
(C) पश्चिमी विज्ञान का प्रचार।
(D) खिलाफत आंदोलन।

18. ब्रिटिश शासन के दौरान कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प के विनाश का प्रत्यक्ष परिणाम क्या था?
(A) वि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया और कृषि पर बढ़ता दबाव।
(B) प्रमुख आधुनिक उद्योगों की संख्या में तीव्र वृद्धि।
(C) शिल्पकारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार।
(D) ग्रामीण ऋणग्रस्तता में कमी।

58. ब्रिटिश शासन के दौरान एक आर्थिक घटना के रूप में "ग्रामीण ऋणग्रस्तता" मुख्य रूप से किसका परिणाम थी?
(A) उच्च भू-राजस्व की मांग, कृषि का वाणिज्यीकरण और साहूकारों की भूमिका।
(B) सरकारी बैंकों से सुलभ ऋण की प्रचुरता।
(C) किसानों को ब्याज मुक्त ऋण देने की सरकार की नीति।
(D) आधुनिक उद्योगों का विनाश, जिससे लोग कृषि की ओर लौटने को विवश हुए।

59. भारत में अंग्रेजों द्वारा आधुनिक सेना के विकास में निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता सम्मिलित नहीं थी?
(A) सैनिकों को नियमित वेतन का भुगतान।
(B) यूरोपीय तर्ज पर कठोर अनुशासन और प्रशिक्षण।
(C) उन्नत शस्त्रों और तोपखाने का उपयोग।
(D) भारतीय अधिकारियों को उच्चतम कमान पदों पर पदोन्नति।

60. किस समाज सुधारक का नाम अलीगढ़ आंदोलन और मुसलमानों के बीच आधुनिक, वैज्ञानिक शिक्षा के प्रचार के साथ सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) दादाभाई नौरोजी
(B) सैयद अहमद खान
(C) मौलाना अबुल कलाम आजाद
(D) बदरुद्दीन तैयबजी

61. भारतीय प्रेस से संबंधित निम्नलिखित अधिनियमों को उनके अधिनियमन के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम
2. 1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम
3. भारतीय प्रेस अधिनियम, 1910
4. प्रेस और पुस्तकों का पंजीकरण अधिनियम, 1867

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 2, 1, 3

62. 'उपनिवेशवाद' की अवधारणा साम्राज्य निर्माण के पूर्व के रूपों से मुख्य रूप से भिन्न है क्योंकि इसमें सम्मिलित है:
(A) बिना किसी प्रशासनिक नियंत्रण के केवल सैन्य विजय।
(B) उपनिवेशित समाज की स्वदेशी संरचनाओं का संरक्षण और संवर्धन।
(C) शासक और शासित के बीच समानता और आपसी सम्मान पर आधारित संबंध।
(D) उपनिवेश की अर्थव्यवस्था का मातृदेश के लाभ के लिए उसके साथ पूर्ण एकीकरण।

63. आधुनिक भारतीय इतिहास के प्रमुख इतिहासलेखन स्कूलों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) निम्नवर्गीय स्कूल कुलीनों और राष्ट्रीय नेताओं के इतिहास पर केंद्रित है।
(B) राष्ट्रवादी स्कूल का उदय साम्राज्यवादी स्कूल की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ।
(C) मार्क्सवादी स्कूल ऐतिहासिक प्रक्रियाओं में वर्ग विश्लेषण पर बल देता है।
(D) प्राच्यवादी स्कूल में पश्चिमी लोगों द्वारा पूर्वी समाजों का अध्ययन सम्मिलित था।

64. हैदराबाद के साथ ब्रिटिश संबंधों को मुख्य रूप से किसके माध्यम से सुदृढ़ किया गया था?
(A) लंबे और भीषण युद्धों की एक श्रृंखला।
(B) निजाम द्वारा सहायक संधि की प्रारंभिक और स्वैच्छिक स्वीकृति।
(C) व्यपगत के सिद्धांत के अंतर्गत हैदराबाद का विलय।
(D) अहस्तक्षेप की नीति और संप्रभुता के लिए आपसी सम्मान।

65. कंपनी के अधीन न्यायपालिका के विकास के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) यह पूर्णतः पारंपरिक भारतीय कानूनी प्रणालियों पर आधारित था।
(B) इसमें न्यायालयों के पदानुक्रम की स्थापना और कानूनों का संहिताकरण सम्मिलित था।
(C) इसका उद्देश्य प्रारंभ से ही सभी भारतीयों और यूरोपीय लोगों पर समान रूप से लागू एक समान कानूनी संहिता स्थापित करना था।
(D) यह सरकार की कार्यपालिका शाखा से पूर्णतः स्वतंत्र था।

66. ब्रिटिश भारत के संदर्भ में "कारखाना अधिनियम" शब्द का तात्पर्य है:
(A) प्रारंभिक कानून जिन्होंने कार्य के घंटों और स्थितियों को विनियमित करने का प्रयास किया, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों के लिए।
(B) कारखानों की स्थापना को नियंत्रित करने वाले कानून।
(C) वे कानून जिन्होंने कारखाना स्वामियों को कार्य की शर्तें निर्धारित करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी।
(D) वह कानून जिसने श्रमिक संघों के गठन पर प्रतिबंध लगा दिया।

67. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): स्वामी विवेकानंद के संदेश का भारत के युवाओं और उभरते राष्ट्रवादी आंदोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा।
कारण (R): उन्होंने आध्यात्मिक पुनरुद्धार, आत्मविश्वास और मानवता की सेवा की वकालत की, और हिंदू धर्मग्रंथों की आधुनिक, तर्कसंगत व्याख्या की।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।

28. आधुनिक भारतीय इतिहास के संदर्भ में 'सांप्रदायिकता' शब्द का अर्थ है:
(A) लाभ के लिए कृषि के वाणिज्यीकरण की नीति।
(B) एक ऐसी विचारधारा जो विभिन्न धार्मिक समुदायों के पृथक और विरोधी हितों पर बल देती है।
(C) भूमि के सामुदायिक स्वामित्व पर आधारित एक सामाजिक व्यवस्था।
(D) शहरी क्षेत्रों में स्थानीय स्वशासन का आंदोलन।

29. ब्रिटिश शिक्षा नीति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसका मुख्य उद्देश्य सीखने की पारंपरिक भारतीय प्रणालियों को संरक्षित करना और बढ़ावा देना था।
2. इस नीति के कारण अंग्रेजी-शिक्षित भारतीयों के एक नए वर्ग का उदय हुआ।
3. इसका भारतीय समाज के सभी वर्गों पर एक समान और सकारात्मक प्रभाव पड़ा।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2 और 3

30. 18वीं शताब्दी के अंत और 19वीं शताब्दी की शुरुआत में मराठों के साथ ब्रिटिश संबंध की विशेषता क्या थी?
(A) अन्य भारतीय शक्तियों के विरुद्ध एक निरंतर और शांतिपूर्ण गठबंधन।
(B) मराठा परिसंघ के प्रति अंग्रेजों की पूर्ण उदासीनता।
(C) सभी मराठा सरदारों द्वारा व्यपगत के सिद्धांत की स्वैच्छिक स्वीकृति।
(D) युद्धों की एक श्रृंखला जिसके परिणामस्वरुप अंततः मराठा शक्ति का दमन हुआ।

31. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म (अवधारणा और उसका अर्थ) गलत है?
(A) द्वैध शासन - प्रांतों में एकल, एकीकृत सरकार की प्रणाली।
(B) उपनिवेशवाद - उपनिवेशों को प्राप्त करने और बनाए रखने की नीति।
(C) व्यपगत का सिद्धांत - प्राकृतिक उत्तराधिकारी के बिना राज्यों का विलय।
(D) खिलाफत - तुर्की के खलीफा के अधिकार को बनाए रखने के लिए एक आंदोलन।

32. इतिहासलेखन का 'निम्नवर्गीय' (सबॉल्टरन) स्कूल निम्नलिखित में से किस दृष्टिकोण की आलोचना था?
(A) केवल प्राच्यवादी इतिहासलेखन
(B) राष्ट्रवादी और मार्क्सवादी दोनों कुलीन-केंद्रित इतिहासलेखन
(C) केवल साम्राज्यवादी इतिहासलेखन
(D) इतिहास के स्रोत के रूप में रचनात्मक साहित्य

33. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): भारत में अंग्रेजों द्वारा आधुनिक उद्योगों की शुरुआत सीमित और असंतुलित थी।
कारण (R): ब्रिटिश नीति ने ब्रिटेन में उद्योगों के विकास को प्राथमिकता दी और भारत को कच्चे माल के स्रोत और तैयार माल के बाजार के रूप में माना।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

34. अंग्रेजों द्वारा अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने से पहले निम्नलिखित में से कौन भारत में उपस्थिति स्थापित करने वाले शुरुआती यूरोपीय व्यापारियों में सम्मिलित नहीं थे?
(A) जर्मन
(B) पुर्तगाली
(C) डच
(D) फ्रांसीसी

35. कंपनी और क्राउन के अधीन सिविल सेवा, न्यायपालिका, पुलिस और सेना की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) भारतीय जनसंख्या के कल्याण और समृद्धि को बढ़ावा देना।
(B) भारतीयों को स्व-शासन और स्वतंत्रता के लिए तैयार करना।
(C) भारत पर अंग्रेजों के प्रशासनिक और सैन्य नियंत्रण को सुदृढ़ करना।
(D) सती और बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करना।

36. ब्रिटिश शासन के आर्थिक प्रभाव से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वि-औद्योगीकरण का तात्पर्य पारंपरिक भारतीय हस्तशिल्प और उद्योगों के पतन से था।
2. ब्रिटिश मौद्रिक नीति सदैव भारतीय अर्थव्यवस्था को लाभ पहुँचाने के लिए बनाई गई थी।
3. अकाल और महामारियां प्रायः सरकारी नीतियों के कारण और विकराल हो गईं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

37. ज्योतिबा फुले का योगदान मुख्य रूप से किस पर केंद्रित था?
(A) वैदिक परंपराओं और संस्कृति का पुनरुद्धार।
(B) ब्रिटिश उपनिवेशवाद की आर्थिक आलोचना।
(C) जाति व्यवस्था को चुनौती देना और निम्न जातियों तथा

पर ध्यान केंद्रित करके।

77. भारत शासन अधिनियम, 1919 द्वारा प्रांतों में आरंभ की गई "द्वैध शासन" शब्द का अर्थ था:
(A) विधायिका में दो सदनों की व्यवस्था।
(B) यूरोपीय और भारतीयों के लिए पृथक न्यायिक प्रणाली।
(C) प्रशासन के विषयों का ब्रिटिश अधिकारियों और भारतीय मंत्रियों के बीच विभाजन।
(D) कांग्रेस और मुस्लिम लीग की गठबंधन सरकार।

78. भारत में व्यापारिक शक्तियों के रूप में पुर्तगालियों और अंग्रेजों के बीच मुख्य अंतर यह था कि:
(A) अंग्रेजों के विपरीत, पुर्तगाली कभी भी क्षेत्रीय नियंत्रण में रुचि नहीं रखते थे।
(B) अंग्रेज पुर्तगालियों से पूर्व भारत आए थे।
(C) अंग्रेज मुख्य रुप से मसालों के व्यापार में रुचि रखते थे, जबकि पुर्तगालियों ने वस्त्रों पर ध्यान केंद्रित किया।
(D) अंग्रेजों ने पुर्तगालियों की तुलना में व्यवस्थित क्षेत्रीय विस्तार और आर्थिक एकीकरण पर अधिक ध्यान केंद्रित किया।

79. आधुनिक भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए निम्नलिखित में से किसे सामान्यतः प्राथमिक स्रोत नहीं माना जाता है?
(A) ब्रिटिश भारत के इतिहास पर आज की एक पाठ्यपुस्तक।
(B) सरकारी रिकॉर्ड जैसी अभिलेखीय सामग्री।
(C) 1885 में प्रकाशित एक समाचार पत्र।
(D) 19वीं शताब्दी के एक ब्रिटिश अधिकारी के संस्मरण।

80. अपने शुरुआती चरण में "श्रमिक और श्रमिक संघ आंदोलन" की एक प्रमुख विशेषता क्या थी?
(A) हिंसक साधनों के माध्यम से औपनिवेशिक सरकार को उखाड़ फेंकने पर इसका ध्यान।
(B) इसका परोपकारी और उदार चरित्र, जो प्रायः प्रत्यक्ष संघर्ष के स्थान पर विधायी सुधारों की मांग करता था।
(C) इसकी सुदृढ़ संगठनात्मक संरचना और प्रारंभ से ही राष्ट्रव्यापी प्रभाव।
(D) ब्रिटिश सरकार द्वारा इसका पूर्ण नियंत्रण।

81. 'अकाल और महामारियों' तथा सरकारी नीति के बीच संबंध यह दर्शाता है कि ब्रिटिश शासन के दौरान:
(A) सरकारी नीतियां अकाल को रोकने और कम करने में सदैव प्रभावी रहीं।
(B) राजस्व की मांग और खाद्यान्न के निर्यात जैसी सरकारी नीतियों ने प्रायः अकाल के प्रभाव को और अधिक गंभीर कर दिया।
(C) अकाल प्राकृतिक आपदाएं थीं जिनका सरकारी कार्यों से कोई संबंध नहीं था।
(D) ब्रिटिश सरकार ने सभी के लिए उन्नत चिकित्सा देखभाल के माध्यम से महामारियों को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया।

82. पंडिता रमाबाई का कार्य किसका उदाहरण है?
(A) अन्य महिलाओं, विशेष रुप से विधवाओं की शिक्षा और कल्याण के लिए कार्य करने वाली महिला।
(B) स्वतंत्रता के लिए राजनीतिक आंदोलन का नेतृत्व करने वाली महिला।
(C) एक महिला जो एक प्रमुख आर्थिक इतिहासकार बनीं।
(D) एक महिला जिसने एक प्रमुख श्रमिक संघ का नेतृत्व किया।

83. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) स्थानीय स्वशासन - लॉर्ड कर्जन
(B) व्यपगत का सिद्धांत - लॉर्ड वेलेज़ली
(C) वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम - लॉर्ड लिटन
(D) सहायक संधि - लॉर्ड डलहौजी

84. निम्नलिखित को उनकी गतिविधि या योगदान के मुख्य काल के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. दादाभाई नौरोजी द्वारा 'धन के निष्कासन सिद्धांत' का प्रतिपादन
2. राजा राम मोहन राय का सती प्रथा के विरुद्ध अभियान
3. निम्न जाति की शिक्षा के लिए ज्योतिबा फुले का कार्य
4. स्वामी विवेकानंद का शिकागो भाषण

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 3, 2, 4, 1

85. अंग्रेजों ने भारत में फ्रांसीसियों पर अपना राजनीतिक वर्चस्व संघर्षों की किस श्रृंखला के बाद स्थापित किया?
(A) आंग्ल-मराठा युद्ध
(B) आंग्ल-मैसूर युद्ध
(C) कर्नाटक युद्ध
(D) आंग्ल-सिख युद्ध

86. भारतीय राष्ट्रवाद की मार्क्सवादी व्याख्या यह तर्क देगी कि:
(A) यह एक विशेष रुप से सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जागरण था जो किसी भी राजनीतिक या आर्थिक उद्देश्यों से पृथक रहा।
(B) यह बुर्जुआ वर्ग के नेतृत्व में एक आंदोलन था ताकि वे अपने वर्ग हितों को सुरक्षित करने के लिए उपनिवेशवाद के विरुद्ध जनता को संगठित कर सकें।
(C) यह एक पूर्णतः एकीकृत राष्ट्रीय विद्रोह था जो किसी भी आंतरिक सामाजिक-आर्थिक वर्गीय अंतर्विरोधों से पूर्णतः मुक्त था।
(D) यह अपनी ऐतिहासिक शुरुआत से ही निम्नवर्गीय या गैर-कुलीन वर्गों द्वारा आरंभ किया गया और निरंतर नेतृत्व किया गया एक जैविक आंदोलन था।

87. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:

सूची II: (प्रमुख विशेषता)
1. प्राकृतिक उत्तराधिकारी के अभाव वाले राज्यों का विलय
2. रियासतों पर अंतिम ब्रिटिश अधिकार का दावा
3. किसी राज्य की रक्षा और विदेशी मामलों पर नियंत्रण
4. उत्तर-पश्चिम सीमा पर सक्रिय हस्तक्षेप

कूट:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

49. खिलाफत आंदोलन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल की मांग करना।
(B) ऑटोमन साम्राज्य के प्रति ब्रिटिश सरकार के व्यवहार का विरोध करना और खलीफा के अधिकार को सुरक्षित रखना।
(C) भारत में एक मुस्लिम राज्य की स्थापना करना।
(D) भारतीय मुसलमानों के बीच आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देना।

50. इतिहासलेखन का साम्राज्यवादी स्कूल 1857 के विद्रोह को किस रूप में प्रस्तुत करेगा?
(A) धार्मिक शिकायतों के कारण हुआ एक सामान्य सैन्य विद्रोह।
(B) स्वतंत्रता का एक राष्ट्रीय युद्ध।
(C) सामंती जमींदारों के विरुद्ध एक वर्ग संघर्ष।
(D) कुलीन वर्चस्व के विरुद्ध एक निम्नवर्गीय प्रतिरोध।

51. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): अंग्रेजों के अधीन एक व्यावसायिक पुलिस बल की स्थापना उनके शासन को बनाए रखने में एक प्रमुख तत्व थी।
कारण (R): पुलिस असंतोष को दबाने, अपराध को नियंत्रित करने और औपनिवेशिक राज्य के अधिकार को लागू करने में सहायक थी।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

52. ब्रिटिश शासन के दौरान कृषि के वाणिज्यीकरण का तात्पर्य है:
(A) सरकार द्वारा व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए सभी कृषि भूमि पर अधिकार करना।
(B) कृषि उत्पादन के सभी रूपों में गिरावट।
(C) सभी किसानों के बीच कृषि लाभ का समान वितरण।
(D) निर्वाह कृषि से बाजार के लिए फसलों के उत्पादन की ओर परिवर्तन।

53. शिक्षा के क्षेत्र में राजा राम मोहन राय का योगदान किसकी वकालत के लिए उल्लेखनीय था?
(A) संस्कृत और प्राचीन ग्रंथों का विशेष अध्ययन।
(B) विशुद्ध रूप से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा प्रणाली।
(C) भारतीय संस्कृति के साथ आधुनिक पश्चिमी शिक्षा का समन्वय।
(D) अंग्रेजी भाषा की शिक्षा का पूर्ण बहिष्कार।

54. आधुनिक भारत के संदर्भ में 'राष्ट्रवाद' शब्द को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार समझा जा सकता है:
(A) एक धार्मिक समुदाय का दूसरे पर वर्चस्व का दावा।
(B) एक साझा पहचान की चेतना और एक राष्ट्र के रूप में राजनीतिक एकता तथा संप्रभुता की आकांक्षा।
(C) किसी व्यक्ति की अपनी तत्काल रियासत या क्षेत्र के प्रति निष्ठा।
(D) वह सांस्कृतिक आंदोलन जिसने बिना किसी राजनीतिक लक्ष्य के भारत के प्राचीन अतीत को महिमामंडित किया।

55. सिखों के साथ ब्रिटिश संघर्ष का मुख्य कारण निम्नलिखित में से क्या था?
(A) सिखों द्वारा सहायक संधि स्वीकार करने से मना करना।
(B) मध्य एशिया के व्यापारिक मार्गों के नियंत्रण को लेकर प्रतिस्पर्धा।
(C) अंग्रेजों और सिख शासकों के बीच धार्मिक मतभेद।
(D) सिंध की विजय और मराठों के पतन के बाद पंजाब क्षेत्र का रणनीतिक महत्व।

56. आधुनिक भारतीय इतिहास के स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जीवनियाँ और संस्मरण व्यक्तिगत दृष्टिकोण प्रदान करते हैं लेकिन वे व्यक्तिपरक हो सकते हैं।
2. मौखिक साक्ष्य उन लोगों के अनुभवों को समझने में सहायता करते हैं जिन्होंने कोई लिखित विवरण नहीं छोड़ा।
3. उस काल के समाचार पत्र जनमत और राजनीतिक विमर्श को समझने के लिए एक मूल्यवान स्रोत हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

57. बंगाल में ब्रिटिश शासन की स्थापना और विस्तार निर्णायक रूप से किस युद्ध के बाद हुआ?
(A) प्लासी का युद्ध
(B) पानीपत का तीसरा युद्ध
(C) बक्सर का युद्ध
(D) वांडीवाश का युद्ध

की उनकी आर्थिक नीतियों के लिए प्रशंसा की।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

96. समाज सुधार में दयानंद सरस्वती के योगदान की विशेषता क्या थी?

(A) अंतर-धार्मिक संवाद और सभी धर्मों के संश्लेषण को बढ़ावा देना।
(B) "वेदों की ओर लौटो" का आह्वान और मूर्तिपूजा तथा कठोर जाति व्यवस्था जैसी पश्चात की बुराइयों की अस्वीकृति।
(C) मुक्ति के एकमात्र साधन के रूप में पश्चिमी शिक्षा की वकालत।
(D) सामाजिक न्याय के लिए लड़ने के लिए एक राजनीतिक दल का गठन।

97. भारतीय प्रेस के विकास के संदर्भ में 'लोकप्रिय समाचार पत्र' शब्द क्या दर्शाता है?

(A) वे समाचार पत्र जो सरकार द्वारा निःशुल्क वितरित किए जाते थे।
(B) वे समाचार पत्र जिनका भारतीय जनता के बीच व्यापक प्रसार और प्रभाव था।
(C) वे समाचार पत्र जो केवल मनोरंजन और प्रसिद्ध व्यक्तियों के समाचार प्रकाशित करते थे।
(D) भारतीय मामलों के बारे में लंदन में प्रकाशित समाचार पत्र।

98. 'सहायक संधि' की नीति किसका एक प्रमुख उपकरण थी?

(A) ब्रिटिश शक्ति के प्रति भारतीय राज्यों की अप्रत्यक्ष राजनीतिक और सैन्य अधीनता।
(B) भारतीय राज्यों का सांस्कृतिक आत्मसातकरण।
(C) रियासतों का आर्थिक विकास।
(D) कंपनी और देशी राज्यों के बीच मुक्त व्यापार को बढ़ावा देना।

99. अंग्रेज भारत में फ्रांसीसी और डच जैसी अन्य यूरोपीय शक्तियों पर अपनी सर्वोच्चता स्थापित करने में सक्षम क्यों रहे?

(A) उनकी धार्मिक सहिष्णुता और भारतीय रीति-रिवाजों के प्रति सम्मान के कारण।
(B) उनके व्यापारिक केंद्रों की अल्प संख्या के कारण, जिनका बचाव करना सुगम था।
(C) श्रेष्ठ नौसैनिक शक्ति, वित्तीय संसाधन और ब्रिटिश सरकार के समर्थन के कारण।
(D) राजनीतिक उलझनों से बचते हुए व्यापार पर उनका विशेष ध्यान।

100. निम्नलिखित में से कौन सा महिलाओं की सामाजिक स्थिति या सुधार से संबंधित ब्रिटिश कानून का उदाहरण नहीं है?

(A) सती प्रथा के विरुद्ध कानून
(B) सम्मति आयु कानून
(C) विधवा पुनर्विवाह अधिनियम
(D) रौलट अधिनियम

101. 'व्यपगत का सिद्धांत' विवादास्पद था क्योंकि इसने:

(A) केवल उन्हीं राज्यों पर लागू किया गया था जो सैन्य रूप से निर्बल थे।
(B) उत्तराधिकारी गोद लेने की दीर्घकाल से चली आ रही भारतीय परंपरा की उपेक्षा की।
(C) शासकों को कंपनी को भारी कर चुकाने के लिए विवश किया।
(D) शासकों को ईसाई धर्म अपनाने के लिए विवश किया।

102. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:

अभिकथन (A): ब्रिटिश शिक्षा नीति का प्रभाव एक समान नहीं था और इसने भारतीय समाज में एक विभाजन उत्पन्न किया।

कारण (R): इसने मुख्य रूप से उच्च जाति के शहरी पुरुषों को लाभ पहुँचाया, जिससे एक नया अंग्रेजी बोलने वाला कुलीन वर्ग बना, जबकि जनसाधारण और महिला शिक्षा की काफी हद तक उपेक्षा की गई।

सही विकल्प का चयन कीजिए:

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

103. इतिहास के स्रोत के रूप में 'मौखिक साक्ष्य' इतिहासलेखन के किस स्कूल के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है?

(A) साम्राज्यवादी
(B) प्राच्यवादी
(C) निम्नवर्गीय
(D) राष्ट्रवादी

104. निम्नलिखित में से कौन सा कंपनी और क्राउन के अंतर्गत पुलिस प्रणाली के विकास का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(A) इसमें उच्चतम रैंकों सहित सभी स्तरों पर भारतीयों को निरंतर नियुक्त किया गया था।
(B) इसे मुख्य रूप से सामुदायिक सहभागिता और सामाजिक कल्याण के लिए निर्मित किया गया था।
(C) 1857 के पश्चात इसे समाप्त कर दिया गया और सैन्य गश्त द्वारा प्रतिस्थापित किया गया।
(D) यह एक स्थानीय रूप से नियंत्रित प्रणाली से एक केंद्रीय रूप से संगठित, पदानुक्रमित बल के रूप में विकसित हुई।

105. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'वि-औद्योगीकरण' दादाभाई नौरोजी और आर.सी. दत्त दोनों के कार्यों में एक प्रमुख विषय था।

(D) A गलत है लेकिन R सही है।

68. आधुनिक भारत में 'श्रमिक और श्रमिक संघ आंदोलन' का विकास किसका प्रत्यक्ष परिणाम था?
(A) कुटीर उद्योगों की सफलता।
(B) सामूहिक सौदेबाजी को प्रोत्साहित करने की सरकार की नीति।
(C) ग्रामीण ऋणग्रस्तता में गिरावट।
(D) आधुनिक उद्योगों और कारखाना कार्यबल का उदय।

69. महिलाओं से संबंधित निम्नलिखित ब्रिटिश कानूनों में से कौन सा समाज सुधार आंदोलनों का परिणाम था?
(A) 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम
(B) इल्बर्ट बिल विवाद
(C) 1829 का सती निषेध अधिनियम
(D) 1919 का रौलट अधिनियम

70. 1857 से पूर्व के काल में भारतीय प्रेस की स्थिति क्या थी?
(A) पूर्णतः स्वतंत्र और सरकार द्वारा अनियमित।
(B) एक बढ़ती हुई इकाई, लेकिन समय-समय पर नियमों और प्रतिबंधों के अधीन।
(C) अस्तित्वहीन, पहला समाचार पत्र 1857 के पश्चात ही दिखाई दिया।
(D) विशेष रूप से ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा संचालित और प्रबंधित।

71. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (शब्द)
P. सहायक संधि
Q. व्यपगत का सिद्धांत
R. खिलाफत
S. धन का निष्कासन सिद्धांत
सूची II: (संबद्ध शक्ति/व्यक्ति)
1. लॉर्ड डलहौजी
2. लॉर्ड वेलेज़ली
3. दादाभाई नौरोजी
4. ऑटोमन सुल्तान
कूट:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

72. "इस नीति को अंग्रेजों ने अत्याचारी और अक्षम देशी शासन के विरुद्ध लोगों के कल्याण को सुनिश्चित करने के आधार पर उचित ठहराया था, लेकिन भारतीयों द्वारा इसे साम्राज्यवादी विस्तार के एक स्पष्ट कृत्य के रूप में देखा गया था।" यह विवरण किस राज्य के ब्रिटिश विलय पर सबसे सटीक बैठता है?
(A) अवध
(B) मैसूर
(C) पंजाब
(D) हैदराबाद

73. इतिहासलेखन के राष्ट्रवादी स्कूल की आलोचना किस लिए की जाती है?
(A) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और प्रशासन के विभिन्न लाभों को सक्रिय रूप से उचित ठहराने और बढ़ावा देने के लिए।
(B) इतिहास के प्राथमिक कारक के रूप में वर्ग संघर्ष और आर्थिक संघर्ष की भूमिका पर अत्यधिक बल देने के लिए।
(C) राष्ट्रीय संघर्ष का एक एकीकृत विवरण प्रस्तुत करने के लिए आंतरिक सामाजिक संघर्षों को कम करके आंकने की प्रवृत्ति के लिए।
(D) स्वतंत्रता आंदोलन में उच्च-स्तरीय राष्ट्रीय नेताओं के महत्वपूर्ण योगदान को जानबूझकर उपेक्षित करने के लिए।

74. 1858 के पश्चात क्राउन के प्रशासन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. रियासतों पर 'सर्वोच्चता' की नीति को त्याग दिया गया था।
2. ब्रिटिश प्रभुत्व सुनिश्चित करने के लिए सिविल सेवा, पुलिस और सेना की संरचना को पुनर्गठित किया गया था।
3. सीमित रीति से स्थानीय स्वशासन आरंभ करने के लिए कदम उठाए गए थे।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

75. आर.सी. दत्त ने ब्रिटिश शासन की अपनी आर्थिक आलोचना में मुख्य रूप से किस पर ध्यान केंद्रित किया?
(A) भारतीय अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण के लिए अंग्रेजों की प्रशंसा करना।
(B) भारत में मार्क्सवादी क्रांति की वकालत करना।
(C) प्रथम बार 'धन के निष्कासन का सिद्धांत' प्रस्तावित करना।
(D) भारतीय उद्योगों के पतन और भू-राजस्व नीतियों के प्रभाव का विश्लेषण करना।

76. एनी बेसेंट के नेतृत्व में थियोसोफिकल सोसाइटी ने भारतीय राष्ट्रीय जागरण में किस प्रकार योगदान दिया?
(A) क्रांतिकारी हिंसा में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित होकर।
(B) भारतीयों को उनकी प्राचीन दार्शनिक और धार्मिक विरासत पर गर्व अनुभव करने के लिए प्रोत्साहित करके।
(C) अंग्रेजों की तत्काल और पूर्ण वापसी की मांग करके।
(D) विशिष्ट रूप से कुलीन वर्ग को अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने

19. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम की आलोचना एक भेदभावपूर्ण और दमनकारी उपाय के रूप में की गई थी।
कारण (R): इसने विशेष रुप से भारतीय भाषाओं में प्रकाशित समाचार पत्रों को लक्षित किया, जबकि अंग्रेजी भाषा के प्रेस को इसके प्रावधानों से मुक्त रखा गया था।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

20. मैसूर के साथ ब्रिटिश संबंधों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) अंग्रेजों ने टीपू सुल्तान के साथ एक स्थायी सहायक संधि की थी।
(B) मैसूर को बिना किसी बड़े युद्ध के ब्रिटिश साम्राज्य में शांतिपूर्वक एकीकृत कर लिया गया था।
(C) मैसूर 18वीं शताब्दी के दौरान ब्रिटिश प्रभाव से पूर्णतः स्वतंत्र रहा।
(D) अंग्रेजों ने इस क्षेत्र पर नियंत्रण के लिए हैदर अली और टीपू सुल्तान के विरुद्ध युद्धों की एक श्रृंखला लड़ी।

21. 1909 और 1935 के बीच भारतीय संवैधानिक परिवर्तनों के संदर्भ में 'द्वैध शासन' शब्द का अर्थ है:
(A) केंद्र सरकार और प्रांतीय सरकारों के बीच शक्ति का विभाजन।
(B) विभिन्न समुदायों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल की प्रणाली।
(C) प्रांतीय विषयों का 'हस्तांतरित' और 'आरक्षित' श्रेणियों में विभाजन।
(D) केंद्र में एक द्विसदनीय विधायिका की स्थापना।

22. थियोसोफिकल सोसाइटी, जिससे एनी बेसेंट जुड़ी हुई थीं, का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) उग्र राष्ट्रवाद और क्रांतिकारी गतिविधियों को बढ़ावा देना।
(B) सार्वभौमिक भाईचारे और तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन के अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
(C) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए एक राजनीतिक दल की स्थापना करना।
(D) भारतीय शिक्षा और समाज के पूर्ण पश्चिमीकरण की वकालत करना।

23. निम्नलिखित में से कौन सी ब्रिटिश भू-राजस्व नीतियों की एक प्रमुख विशेषता नहीं थी?
(A) स्थायी बंदोबस्त
(B) रैयतवारी बंदोबस्त
(C) महलवारी बंदोबस्त
(D) जागीरदारी बंदोबस्त

24. भारतीय इतिहासलेखन का मार्क्सवादी स्कूल आधुनिक भारतीय इतिहास की व्याख्या मुख्य रुप से किस दृष्टिकोण से करता है?
(A) सामाजिक और आर्थिक वर्गों के बीच संघर्ष।
(B) ब्रिटिश साम्राज्य का सभ्यता-प्रसार मिशन।
(C) स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रवादी संघर्ष।
(D) निम्नवर्गीय या गैर-कुलीन समूहों की भूमिका।

25. 1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम मुख्य रुप से किसकी प्रतिक्रिया में लागू किया गया था?
(A) भारत में अधिक समाचार पत्रों की बढ़ती मांग।
(B) लोकप्रिय समाचार पत्रों के मूल्यों को विनियमित करने की आवश्यकता।
(C) 1857 के विद्रोह का भड़कना और प्रेस को नियंत्रित करने की आवश्यकता।
(D) संरक्षण के लिए अंग्रेजी समाचार पत्र स्वामियों की एक याचिका।

26. ब्रिटिश क्राउन द्वारा प्रयुक्त 'सर्वोच्चता' की अवधारणा का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) रियासतों पर सर्वोच्च ब्रिटिश अधिकार का दावा, जो उनकी स्वदेशी संप्रभुता से ऊपर था।
(B) भारतीय उपमहाद्वीप के भीतर सभी क्षेत्रों पर प्रत्यक्ष क्षेत्रीय शासन की प्रशासनिक नीति।
(C) स्थानीय किसानों से सीधे कृषि राजस्व के संग्रह के लिए एक केंद्रीकृत प्रणाली।
(D) देशी रियासतों के घरेलू मामलों के संबंध में पूर्ण अहस्तक्षेप का प्रशासनिक सिद्धांत।

27. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (समाज सुधारक)
P. राजा राम मोहन राय
Q. दयानंद सरस्वती
R. स्वामी विवेकानंद
S. सैयद अहमद खान
सूची II: (संबद्ध योगदान/संगठन)
1. अलीगढ़ आंदोलन
2. रामकृष्ण मिशन
3. आर्य समाज
4. ब्रह्म समाज
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

अभिकथन (A): 1909, 1919 और 1935 के संवैधानिक परिवर्तन भारतीय राष्ट्रवादी आकांक्षाओं को संतुष्ट करने में विफल रहे।
कारण (R): इन परिवर्तनों की विशेषता "रियायत-प्रतिसंतुलन" की रणनीति थी, जहाँ सत्ता के किसी भी अनुदान को अंतिम ब्रिटिश नियंत्रण बनाए रखने के लिए सुरक्षा उपायों और विभाजनों (जैसे पृथक निर्वाचन मंडल) द्वारा संतुलित किया गया था।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

88. 1773-1853 के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन केंद्रीय संरचना के विकास की एक प्रमुख विशेषता क्या थी?
(A) अन्य प्रेसीडेंसियों पर बंगाल के गवर्नर-जनरल के अधिकार का क्रमिक सुदृढ़ीकरण।
(B) कंपनी पर ब्रिटिश संसद के नियंत्रण में कमी।
(C) गवर्नर-जनरल के चुनाव के लिए सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की शुरुआत।
(D) 1773 में शुरुआत से ही कंपनी के वाणिज्यिक और राजनीतिक कार्यों का पृथक्करण।

89. ब्रिटिश शासन के दौरान "शिल्पकारों की बदलती सामाजिक-आर्थिक स्थिति" का सबसे सटीक अर्थ है:
(A) ब्रिटेन से बढ़ती मांग के कारण अभूतपूर्व समृद्धि का काल।
(B) एक शक्तिशाली औद्योगिक कार्यबल में उनका परिवर्तन।
(C) मशीन से बने सामानों की प्रतिस्पर्धा के कारण उनकी दरिद्रता और विस्थापन।
(D) व्यापार को नियंत्रित करने वाली श्रेणियों में उनका सफल संगठन।

90. मदन मोहन मालवीय का प्राथमिक योगदान किस क्षेत्र में था?
(A) एक प्रमुख राष्ट्रवादी शैक्षणिक संस्थान (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय) की स्थापना।
(B) निम्नवर्गीय ऐतिहासिक स्कूल का नेतृत्व करना।
(C) बंबई में श्रमिक संघ आंदोलन का आयोजन करना।
(D) उपनिवेशवाद की आर्थिक आलोचना तैयार करना।

91. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (इतिहासलेखन स्कूल)
P. साम्राज्यवादी
Q. राष्ट्रवादी
R. मार्क्सवादी
S. निम्नवर्गीय
सूची II: (मूल विचार)
1. इतिहास वर्ग संघर्ष से संचालित होता है।
2. इतिहास सामान्य लोगों के दृष्टिकोण से लिखा जाना चाहिए।
3. ब्रिटिश शासन एक गतिहीन समाज में आधुनिकीकरण की शक्ति थी।
4. भारतीय इतिहास भारतीय लोगों के स्वतंत्रता संघर्ष की कहानी है।
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

92. आधुनिक भारत में विकसित 'राष्ट्रवाद' की अवधारणा थी:
(A) राजाओं और सरदारों के प्रति पारंपरिक निष्ठा का सीधा विस्तार।
(B) औपनिवेशिक शासन की परिस्थितियों में इसके विरोध में उभरी एक आधुनिक परिघटना।
(C) एक ऐसा विचार जो प्राचीन काल से ही अपने आधुनिक रूप में अस्तित्व में था।
(D) प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए देश को एकजुट करने के लिए अंग्रेजों द्वारा विशेष रूप से प्रचारित एक अवधारणा।

93. स्रोत के रूप में 'जीवनियों और संस्मरणों' तथा 'अभिलेखीय सामग्री' के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) अभिलेखीय सामग्री सदैव सत्य होती है, जबकि जीवनियाँ काल्पनिक होती हैं।
(B) अभिलेखीय सामग्री लिखित स्रोत हैं, जबकि जीवनियाँ मौखिक स्रोत हैं।
(C) जीवनियाँ एक व्यक्तिगत और प्रायः व्यक्तिपरक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, जबकि अभिलेखीय सामग्री आधिकारिक विवरण हैं।
(D) जीवनियाँ आर्थिक इतिहास के लिए उपयोगी हैं, जबकि अभिलेखीय सामग्री राजनीतिक इतिहास के लिए हैं।

94. क्राउन के प्रशासन के अंतर्गत स्थानीय स्वशासन की शुरुआत का उद्देश्य क्या था?
(A) नगरों और गांवों को पूर्ण स्वतंत्रता देना।
(B) स्थानीय शक्ति केंद्र बनाकर राष्ट्रवादी आंदोलन को निर्बल करना।
(C) रियासतों की दीर्घकाल से चली आ रही मांग को पूरा करना।
(D) भारतीयों को शासन की कला में प्रशिक्षित करना और केंद्रीय खजाने पर वित्तीय भार को कम करना।

95. आर्थिक इतिहासकारों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. दादाभाई नौरोजी का "धन के निष्कासन का सिद्धांत" ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की एक मौलिक आलोचना थी।
2. आर.सी. दत्त ने ब्रिटिश शासन के नकारात्मक आर्थिक प्रभाव का विस्तृत ऐतिहासिक विश्लेषण प्रदान किया।
3. इन भारतीय आर्थिक इतिहासकारों ने सामान्यतः अंग्रेजों

महिलाओं के लिए शिक्षा को बढ़ावा देना।
(D) भारतीय कुलीन वर्ग के बीच पश्चिमी राजनीतिक विचारों का प्रचार।

38. एक विचारधारा के रूप में 'प्राच्यवाद' में क्या सम्मिलित था?
(A) भारत पर पश्चिमी संस्कृति और प्रशासन को सीधे थोपना।
(B) पश्चिमी विद्वानों द्वारा भारतीय भाषाओं, साहित्य और संस्कृति का अध्ययन।
(C) पश्चिमी मॉडलों पर आधारित भारतीय स्व-शासन के लिए राजनीतिक आंदोलन।
(D) पश्चिमी शक्तियों द्वारा पूर्व का आर्थिक शोषण।

39. 1773 और 1853 के बीच ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन प्रांतीय संरचना का विकास एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसके कारण:
(A) प्रांतीय सरकारों के लिए अधिक स्वायत्तता मिली।
(B) प्रांतीय स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना हुई।
(C) प्रांतीय प्रशासनों का पूर्ण उन्मूलन हुआ।
(D) गवर्नर-जनरल के अधीन सत्ता का बढ़ता केंद्रीकरण हुआ।

40. निम्नलिखित घटनाओं/नीतियों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. प्रांतों में द्वैध शासन की शुरुआत
2. रियासतों पर ब्रिटिश सर्वोच्चता की स्थापना
3. व्यपगत के सिद्धांत का क्रियान्वयन
4. रेगुलेटिंग अधिनियम का अधिनियमन

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 4, 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 2, 4, 1, 3

41. कौन सा कथन अवध के साथ ब्रिटिश संबंधों का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) अवध व्यपगत के सिद्धांत के अंतर्गत विलय होने वाला पहला राज्य था।
(B) अवध मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों का एक निरंतर सैन्य सहयोगी था।
(C) अवध को सहायक संधि के अधीन किया गया था और पश्चात में कुशासन के आधार पर इसका विलय कर लिया गया।
(D) अवध 1947 में भारत के विभाजन तक स्वतंत्र रहा।

42. आधुनिक भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए निम्नलिखित में से कौन सा स्रोत 'रचनात्मक साहित्य और चित्रकला' के अंतर्गत वर्गीकृत है?
(A) औपनिवेशिक समाज का चित्रण करने वाले उपन्यास और कलाकृतियां
(B) सरकारी राजपत्र और प्रतिवेदन
(C) राजनीतिक नेताओं के निजी पत्र
(D) जनगणना आंकड़े और आर्थिक सर्वेक्षण

43. "धन के निष्कासन का सिद्धांत" ने मुख्य रूप से ब्रिटिश शासन के किस पहलू की आलोचना की?
(A) सामाजिक सुधार पहल।
(B) अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत।
(C) न्यायिक और कानूनी प्रणालियां।
(D) आर्थिक शोषण और भारत से ब्रिटेन को धन का हस्तांतरण।

44. ब्रिटिश शिक्षा नीति के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) इसने भारत में निरक्षरता को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया।
(B) इसने एक छोटे, शहरी, अंग्रेजी-शिक्षित वर्ग का निर्माण किया जो प्रायः सरकारी नियोजन की खोज में रहता था।
(C) इसने जनसाधारण के लिए तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण पर बल दिया।
(D) इसने विशेष रूप से पारंपरिक भारतीय गुरुकुलों और पाठशालाओं को बढ़ावा दिया।

45. भारतीय आर्थिक इतिहास के संदर्भ में 'वि-औद्योगीकरण' शब्द का अर्थ है:
(A) बंबई और कलकत्ता जैसे शहरों में प्रमुख आधुनिक उद्योगों का विकास।
(B) भारत में औद्योगिक विकास को रोकने की ब्रिटिश सरकार की नीति।
(C) पारंपरिक कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प का पतन और विनाश।
(D) कृषि से औद्योगिक क्षेत्र की ओर श्रम का पलायन।

46. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) दयानंद सरस्वती - आर्य समाज
(B) एनी बेसेंट - थियोसोफिकल सोसाइटी
(C) ज्योतिबा फुले - सत्यशोधक समाज
(D) सैयद अहमद खान - ब्रह्म समाज

47. 1909 और 1935 के बीच संवैधानिक परिवर्तनों की क्या विशेषता थी?
(A) प्रतिनिधि तत्वों और प्रांतीय स्वायत्तता की क्रमिक शुरुआत।
(B) भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की दिशा में एक निरंतर कदम।
(C) रियासतों का पूर्ण उन्मूलन।
(D) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को संपूर्ण सत्ता का हस्तांतरण।

48. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (ब्रिटिश नीति)
P. सहायक संधि
Q. व्यपगत का सिद्धांत
R. अग्रगामी नीति
S. सर्वोच्चता

2. 'धन के निष्कासन के सिद्धांत' ने भारत से ब्रिटेन की ओर होने वाले आर्थिक प्रवाह का विश्लेषण किया।
3. कुटीर उद्योगों के विनाश के कारण कृषि क्षेत्र में अत्यधिक भार बढ़ गया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

106. केशव धोंडो कर्वे का योगदान किसका प्रमुख उदाहरण है?

(A) उपनिवेशवाद की आर्थिक आलोचना।
(B) महिला कल्याण और शिक्षा पर केंद्रित समाज सुधार आंदोलन।
(C) देशी पत्रकारिता का विकास।
(D) किसान आंदोलनों का संगठन।

107. 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम किसका एक उदाहरण है?

(A) भारतीय प्रेस को बढ़ावा देने का एक उपाय।
(B) एक कानून जो अंग्रेजी और देशी भाषाओं के समाचार पत्रों पर समान रूप से लागू होता था।
(C) संघर्ष कर रहे समाचार पत्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करने वाला कानून।
(D) भारतीय भाषा के प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से बनाया गया एक भेदभावपूर्ण अधिनियम।

108. ब्रिटिश प्रशासन द्वारा 'सांप्रदायिकता' की अवधारणा का रणनीतिक रूप से उनकी किस नीति के भाग के रूप में उपयोग किया गया था?

(A) फूट डालो और राज करो।
(B) आर्थिक विकास।
(C) समाज सुधार।
(D) भारत से वापसी।

109. मराठा क्षेत्रों पर नियंत्रण पाने के लिए अंग्रेजों की मुख्य प्रेरणा क्या थी?

(A) मराठों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत।
(B) मराठों को वश में करने के लिए मुगल सम्राट का अनुरोध।
(C) कपास और अफीम के व्यापार मार्गों को नियंत्रित करने और पश्चिमी तथा मध्य भारत में अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने की इच्छा।
(D) फ्रांसीसियों के विरुद्ध एक सुदृढ़ गठबंधन बनाने की आवश्यकता।

110. भारत शासन अधिनियम, 1935, जो एक प्रमुख संवैधानिक परिवर्तन था, ने क्या प्रस्तावित किया?

(A) एक अखिल भारतीय संघ और प्रांतीय स्वायत्तता।
(B) भारत को तत्काल 'डोमिनियन स्टेटस' प्रदान करना।
(C) केंद्रीय स्तर पर द्वैध शासन की शुरुआत।
(D) पृथक निर्वाचन मंडल का उन्मूलन।

111. ब्रिटिश भारत के आर्थिक इतिहास के संदर्भ में 'मौद्रिक नीति' शब्द किससे संबंधित है?

(A) भू-राजस्व संग्रह की प्रणाली।
(B) धन और संपत्ति के उत्तराधिकार को नियंत्रित करने वाले कानून।
(C) सरकार द्वारा समाज सुधार आंदोलनों का वित्तपोषण।
(D) औपनिवेशिक सरकार द्वारा मुद्रा, विनिमय दरों और ऋण का प्रबंधन।

112. ब्रिटिश शिक्षा नीति का सबसे महत्वपूर्ण दीर्घकालिक प्रभाव क्या था?

(A) सभी पारंपरिक भारतीय शैक्षणिक और सीखने की प्रणालियों का व्यापक और स्थायी उन्मूलन।
(B) पश्चिमी लोकतांत्रिक और राष्ट्रवादी आदर्शों की शुरुआत जिसने अंततः औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती दी।
(C) बिना किसी सामाजिक या वर्गीय विभाजन के एक पूर्णतः एकीकृत और साक्षर समाज का सफल निर्माण।
(D) वर्ष 1947 तक भारतीय जनसंख्या के सभी वर्गों में पूर्ण साक्षरता की ऐतिहासिक उपलब्धि।

113. निम्नलिखित को उनकी स्थापना या घटना के आधार पर कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित कीजिए:

1. प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध
2. अवध का विलय
3. सूरत में पहले फ्रांसीसी कारखाने की स्थापना
4. प्लासी का युद्ध

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

(A) 3, 4, 1, 2
(B) 4, 3, 2, 1
(C) 3, 1, 4, 2
(D) 1, 4, 3, 2

114. 'अग्रगामी नीति' सबसे निकटता से किसके साथ ब्रिटिश संबंधों से जुड़ी है?

(A) बंगाल
(B) मैसूर
(C) मराठा
(D) उत्तर-पश्चिम सीमा और अफगानिस्तान

115. औपनिवेशिक काल के अध्ययन के लिए 'रचनात्मक साहित्य और चित्रकला' का उपयोग करने वाला इतिहासकार मुख्य रूप से किसमें रुचि रखेगा?

(A) युद्ध में मारे गए सैनिकों की सटीक संख्या।
(B) नए कानून के लिए आधिकारिक ब्रिटिश औचित्य।
(C) कलाकारों और लेखकों द्वारा चित्रित उस समय की धारणाएं, दृष्टिकोण और सामाजिक वास्तविकताएं।
(D) व्यापार और वाणिज्य पर सटीक आर्थिक आंकड़े।

116. 1909 से 1935 तक के संवैधानिक परिवर्तनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(A) 1909 के अधिनियम ने मुसलमानों के लिए पृथक

137. ब्रिटिश काल के दौरान विकसित हुए 'प्रमुख आधुनिक उद्योग' थे:
(A) देश भर में समान रूप से वितरित।
(B) शुरुआत से ही ज्यादातर भारतीयों के स्वामित्व और नियंत्रण में।
(C) सूती वस्त्र, जूट और इस्पात जैसे कुछ क्षेत्रों और विशिष्ट क्षेत्रों में केंद्रित।
(D) मुख्य रूप से ब्रिटिश उद्योगों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए स्थापित।

138. सावित्रीबाई फुले का योगदान किसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है?
(A) राजनीतिक अधिकारों के लिए लड़ने वाले एक महिला संगठन का नेतृत्व।
(B) महिलाओं और निम्न जातियों की शिक्षा के क्षेत्र में एक अग्रणी प्रयास।
(C) ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आर्थिक आलोचना का विकास।
(D) भारतीय महिलाओं के बीच पश्चिमी संस्कृति का प्रचार।

139. एक विचार के रूप में 'उपनिवेशवाद' का तात्पर्य है:
(A) दो देशों के बीच पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंध।
(B) एक राष्ट्र द्वारा दूसरे की अधीनता और मातृदेश के हितों की सेवा के लिए उपनिवेश की अर्थव्यवस्था और समाज की संरचना करना।
(C) एक अस्थायी सैन्य अधिकार।
(D) समान स्तर पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक रूप।

140. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम को निरस्त कर दिया गया था।
कारण (R): इसे भारतीयों और ब्रिटिश प्रशासन के एक वर्ग दोनों द्वारा अत्यंत लोकप्रिय और प्रभावी कानून के रूप में देखा गया था।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

141. कंपनी और क्राउन के अधीन सेना की स्थापना में निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी विशेषताएं सम्मिलित थीं?
(A) कमान में ब्रिटिश अधिकारियों के साथ एक पदानुक्रमित संरचना।
(B) मुख्य लड़ाकू बल के रूप में भारतीय सिपाहियों का उपयोग।
(C) 1857 के पश्चात भारतीय और यूरोपीय सैनिकों के बीच संख्यात्मक समानता बनाए रखने की नीति।
(D) भारतीय सिपाहियों के बीच राष्ट्रवादी भावनाओं का प्रोत्साहन।

142. 'कृषि के वाणिज्यीकरण' की प्रक्रिया का किसानों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा क्योंकि:
(A) इसके कारण स्थानीय उपभोग के लिए खाद्यान्न के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई।
(B) इसने उन्हें एक अस्थिर वैश्विक बाजार से जोड़ दिया, जिससे वे मूल्यों में गिरावट और ऋण के प्रति संवेदनशील हो गए।
(C) इसने उन्हें साहूकारों के नियंत्रण से मुक्त कर दिया।
(D) नकदी फसलों से होने वाले लाभ को सरकार द्वारा समान रूप से वितरित किया गया था।

143. सैयद अहमद खान का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) अंग्रेजों का विरोध करने के लिए एक राजनीतिक दल का गठन करना।
(B) भारतीय मुसलमानों के बीच सामाजिक और शैक्षिक आधुनिकीकरण को बढ़ावा देना ताकि उन्हें ब्रिटिश शासन की नई वास्तविकताओं के साथ जोड़ा जा सके।
(C) मुगल साम्राज्य के पुनरुद्धार के लिए एक आंदोलन आरंभ करना।
(D) सभी आधुनिक शिक्षा को अस्वीकार करते हुए शुद्धतावादी इस्लाम की ओर लौटने की वकालत करना।

144. 'अकाल और महामारियों' के प्रति ब्रिटिश सरकार की नीति की प्रायः किस लिए आलोचना की जाती थी?
(A) राहत उपायों पर इसके अत्यधिक व्यय के कारण।
(B) 'अहस्तक्षेप' सिद्धांतों के प्रति इसके पालन के कारण, जिसने प्रभावी हस्तक्षेप में विलंब किया और उसे सीमित कर दिया।
(C) अकाल के दौरान सभी खाद्य निर्यातों पर प्रतिबंध लगाने की इसकी नीति के कारण।
(D) जानमाल की किसी भी हानि को पूर्णतः रोकने में इसकी सफलता के कारण।

145. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (सुधारक/नेता)
P. ज्योतिबा फुले
Q. दादाभाई नौरोजी
R. एनी बेसेंट
S. एम. एम. मालवीय
सूची II: (योगदान का प्राथमिक क्षेत्र)
1. थियोसोफिकल सोसाइटी और होम रूल आंदोलन
2. जाति-विरोधी आंदोलन और महिला शिक्षा
3. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना
4. 'धन का निष्कासन सिद्धांत' और उपनिवेशवाद की आर्थिक आलोचना
कूट:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

(A) हिंदू दर्शन के सभी पहलुओं को अस्वीकार करने का आह्वान।
(B) एक व्यावहारिक, सामाजिक रूप से उन्मुख वेदांत और राष्ट्रीय आत्म-सम्मान की भावना को बढ़ावा देना।
(C) यह तर्क कि भारत को पश्चिमी शैली की पूंजीवादी अर्थव्यवस्था अपनानी चाहिए।
(D) खिलाफत आंदोलन का नेतृत्व।

127. निम्नलिखित में से कौन सा '1857 से पूर्व भारतीय प्रेस की स्थिति' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) यह अस्तित्वहीन था।
(B) यह पूर्णतः सरकार के नियंत्रण में था और केवल आधिकारिक समाचार प्रकाशित करता था।
(C) यह अंग्रेजी और देशी दोनों भाषाओं के समाचार पत्रों के साथ एक विकासशील इकाई थी, जो सरकारी विनियमन के अधीन थी।
(D) यह किसी भी प्रकार की सेंसरशिप या लाइसेंसिंग से पूर्णतः मुक्त था।

128. 'सर्वोच्चता' की अवधारणा का तात्पर्य था कि:
(A) रियासतें ब्रिटिश क्राउन के साथ समान भागीदार थीं।
(B) ब्रिटिश क्राउन का अधिकार रियासतों के अधिकार से श्रेष्ठ था, यदि आवश्यक हो तो उनके आंतरिक मामलों में भी।
(C) रियासतों को भारतीय साम्राज्य से पृथक होने का अधिकार था।
(D) ईस्ट इंडिया कंपनी और रियासतों का भारत पर संयुक्त शासन था।

129. आधुनिक भारतीय इतिहास के स्रोतों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अभिलेखीय सामग्री आधिकारिक विवरण हैं जो प्रशासनिक इतिहास प्रदान करते हैं।
2. मौखिक साक्ष्य उन लोगों के दृष्टिकोण को समझने में सहायता करते हैं जिन्होंने लिखित विवरण नहीं छोड़े।
3. रचनात्मक साहित्य एक काल के सामाजिक और सांस्कृतिक लोकाचार के बारे में जानकारी प्रदान कर सकता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

130. भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना और विस्तार को किसके द्वारा सुगम बनाया गया था?
(A) भारतीय शक्तियों के बीच पूर्ण एकता और सहयोग।
(B) भारत का राजनीतिक विखंडन और देशी शक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता।
(C) भारतीय राजनीतिक मामलों में अंग्रेजों की अहस्तक्षेप की नीति।
(D) भारतीय जनता की ओर से ब्रिटिश शासन के लिए भारी जनसमर्थन।

131. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) द्वैध शासन - प्रांतों में दोहरी सरकार
(B) अग्रगामी नीति - उत्तर-पश्चिम सीमा
(C) प्राच्यवाद - तत्काल विलय का औचित्य
(D) उपनिवेशवाद - एक विदेशी शक्ति द्वारा आर्थिक और राजनीतिक नियंत्रण

132. दादाभाई नौरोजी के 'धन के निष्कासन सिद्धांत' ने तर्क दिया कि:
(A) भारत की निर्धनता इसकी पारंपरिक सामाजिक रीति-रिवाजों के कारण थी।
(B) ब्रिटेन भारत के संसाधनों और धन का दोहन करके स्वयं को समृद्ध कर रहा था।
(C) बार-बार होने वाले अकाल विशुद्ध रूप से प्राकृतिक आपदाएँ थीं।
(D) ब्रिटिश मौद्रिक नीति भारतीय शिल्पकारों के लिए लाभकारी थी।

133. आधुनिक भारत में महिला संगठनों का उदय मुख्य रूप से किसलिए हुआ?
(A) ब्रिटिश प्रशासनिक नीतियों का समर्थन करने के लिए।
(B) महिलाओं की शिक्षा, सामाजिक स्थिति और कानूनी अधिकारों के मुद्दों को संबोधित करने के लिए।
(C) प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए।
(D) राजनीतिक सत्ता के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए।

134. निम्नलिखित में से कौन सा अधिनियम प्रेस को नियंत्रित करने के उद्देश्य से बनाए गए कानून का एक उदाहरण है?
(A) 1853 का चार्टर अधिनियम
(B) भारत शासन अधिनियम, 1919
(C) भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियां) अधिनियम, 1931
(D) स्थानीय स्वशासन अधिनियम, 1882

135. इतिहासलेखन के मार्क्सवादी स्कूल का मुख्य उद्देश्य इतिहास का विश्लेषण किसके संदर्भ में करना है?
(A) महान राष्ट्रीय नेताओं के कार्य।
(B) किसी सभ्यता की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ।
(C) विभिन्न आर्थिक वर्गों के बीच संघर्ष।
(D) औपनिवेशिक शासन का औचित्य।

136. हैदर अली और टीपू सुल्तान के अधीन मैसूर के साथ ब्रिटिश संबंध का सबसे अच्छा वर्णन है:
(A) शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का संबंध।
(B) मराठों के विरुद्ध एक निरंतर गठबंधन।
(C) तीव्र प्रतिद्वंद्विता और चार बड़े युद्धों का काल।
(D) मैसूर द्वारा सहायक संधि की तत्काल स्वीकृति।

(A) भारतीय समाज के भीतर आंतरिक अंतर्विरोध और वर्ग संघर्ष।
(B) ब्रिटिश शासन के लाभ और आधुनिकीकरण का प्रभाव।
(C) राष्ट्रीय चेतना का उदय और औपनिवेशिक उत्पीड़न के विरुद्ध एकीकृत संघर्ष।
(D) हाशिए पर रहने वाले किसान और आदिवासी समूहों के दृष्टिकोण।

179. ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन प्रांतीय संरचना का विकास किस आवश्यकता से प्रेरित था?
(A) नए विजित क्षेत्रों को प्रभावी ढंग से प्रशासित करना और राजस्व एकत्र करना।
(B) स्वायत्त प्रांत बनाना।
(C) भारतीयों को स्व-शासन के लिए तैयार करना।
(D) भारतीय शासकों की मांगों का पालन करना।

180. अंग्रेजों की आर्थिक नीतियां, जैसे भू-राजस्व बंदोबस्त और कृषि का वाणिज्यीकरण, सामूहिक रूप से किस ओर ले गईं?
(A) भारतीय किसानों की एकसमान समृद्धि।
(B) कृषि अर्थव्यवस्था में गतिरोध और निर्धनता में वृद्धि।
(C) भारत से कच्चे माल के निर्यात में गिरावट।
(D) अकाल और ग्रामीण ऋण का उन्मूलन।

181. महाराष्ट्र में ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले का कार्य महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है:
(A) अपनी प्रथाओं में सुधार के लिए उच्च जातियों के नेतृत्व में एक आंदोलन।
(B) निम्न जातियों के भीतर से जाति और लिंग पदानुक्रम को एक क्रांतिकारी चुनौती।
(C) सत्ता प्राप्त करने के लिए विशुद्ध रूप से राजनीतिक आंदोलन।
(D) पारंपरिक, शास्त्र-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने वाला आंदोलन।

182. औपनिवेशिक काल का 'रचनात्मक साहित्य' एक उपयोगी ऐतिहासिक स्रोत है क्योंकि यह:
(A) सटीक सांख्यिकीय आंकड़े प्रदान करता है।
(B) उस समय के व्यक्तिपरक अनुभवों, सामाजिक आलोचनाओं और सांस्कृतिक परिवर्तनों को दर्शाता है।
(C) विभिन्न मुद्दों पर सरकार की आधिकारिक स्थिति बताता है।
(D) सदैव वस्तुनिष्ठ और पूर्वाग्रह से मुक्त होता है।

183. 1909 के संवैधानिक परिवर्तन विशेष रूप से किस लिए जाने जाते हैं?
(A) प्रांतीय स्वायत्तता आरंभ करने के लिए।
(B) सभी वयस्कों को मतदान का अधिकार देने के लिए।
(C) पृथक निर्वाचन मंडल की प्रणाली स्थापित करने के लिए, जिसने सांप्रदायिक राजनीति के बीज बोए।
(D) वायसराय के पद को समाप्त करने के लिए।

184. भारत में कुटीर उद्योगों के विनाश का मुख्य कारण क्या था?
(A) भारतीय शिल्पकारों का आलस्य।
(B) भारत में भारतीय वस्तुओं की मांग में कमी।
(C) ब्रिटेन से सस्ते, मशीन निर्मित सामानों की आमद और प्रतिकूल औपनिवेशिक नीतियां।
(D) प्राकृतिक आपदाओं की एक श्रृंखला जिसने कार्यशालाओं को नष्ट कर दिया।

185. भारत में 'श्रमिक संघ आंदोलन' की शुरुआत में किसका वर्चस्व था?
(A) परोपकारी और राष्ट्रवादी जो कानूनी और उदार माध्यमों से श्रमिकों की स्थिति में सुधार करना चाहते थे।
(B) क्रांति का लक्ष्य रखने वाले कट्टरपंथी कम्युनिस्ट।
(C) कारखाना स्वामी जो एक अनुशासित कार्यबल बनाना चाहते थे।
(D) ब्रिटिश अधिकारी जो श्रम को नियंत्रित करना चाहते थे।

186. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): अंग्रेज अंततः भारत में फ्रांसीसियों के साथ अपनी प्रतिद्वंद्विता में सफल रहे।
कारण (R): ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी एक निजी उद्यम थी जिसे महत्वपूर्ण सरकारी समर्थन और एक श्रेष्ठ नौसेना प्राप्त थी, जबकि फ्रांसीसी कंपनी एक सरकारी विभाग की भाँति थी और उसमें उसी स्तर की व्यावसायिक और नौसैनिक गतिशीलता का अभाव था।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

187. 19वीं शताब्दी के समाज सुधार आंदोलनों के दौरान 'महिलाओं की स्थिति' के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) सुधारक आवश्यक परिवर्तन के तरीकों और सीमा पर सार्वभौमिक रूप से सहमत थे।
(B) ध्यान विशेष रूप से महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों पर था।
(C) सती, विधवा पुनर्विवाह और शिक्षा जैसे मुद्दे सुधारवादी एजेंडे के केंद्र में थे।
(D) ब्रिटिश सरकार ने महिलाओं से संबंधित सभी सामाजिक सुधारों का सक्रिय रूप से विरोध किया।

188. निम्नलिखित में से कौन सी अवधारणा भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति से संबंधित नहीं है?
(A) गुटनिरपेक्ष आंदोलन
(B) सहायक संधि
(C) व्यपगत का सिद्धांत
(D) सर्वोच्चता

146. निम्नलिखित में से कौन सा 'द्वैध शासन' का सबसे उपयुक्त विवरण है?
(A) दो राजाओं द्वारा शासन।
(B) दोहरी सरकार की एक प्रणाली जहाँ प्रशासनिक विषयों को 'आरक्षित' और 'हस्तांतरित' सूचियों में विभाजित किया गया था।
(C) एक द्विसदनीय विधायिका।
(D) भारत का ब्रिटिश भारत और रियासती भारत में विभाजन।

147. खिलाफत आंदोलन के 'निम्नवर्गीय' परिप्रेक्ष्य का अध्ययन करने वाला इतिहासकार किस पर ध्यान केंद्रित करेगा?
(A) ब्रिटिश अधिकारियों और आंदोलन के नेताओं के बीच राजनयिक वार्ता।
(B) हिंदुओं और मुसलमानों को एकजुट करने में महात्मा गांधी की भूमिका।
(C) सामान्य किसानों और श्रमिकों ने अपने कारणों से आंदोलन को कैसे समझा और उसमें भाग लिया।
(D) अखिल भारतीय खिलाफत समिति द्वारा पारित प्रस्ताव।

148. 1858 में कंपनी से क्राउन के प्रशासन में संक्रमण का क्या परिणाम हुआ?
(A) शोषणकारी आर्थिक नीतियों में मौलिक परिवर्तन।
(B) ब्रिटिश संसद के प्रति भारतीय प्रशासन के प्रत्यक्ष नियंत्रण और उत्तरदायित्व में वृद्धि।
(C) भारतीयों को तत्काल स्व-शासन का अनुदान।
(D) भारतीय सिविल सेवा का विघटन।

149. 'श्रमिक और श्रमिक संघ आंदोलन' का विकास किसका परिणाम था?
(A) कुटीर उद्योगों का पतन।
(B) औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया और एक वेतनभोगी वर्ग का निर्माण।
(C) श्रमिकों को सशक्त बनाने की ब्रिटिश सरकार की इच्छा।
(D) 19वीं शताब्दी के समाज सुधार आंदोलन।

150. समाज सुधारकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. राजा राम मोहन राय ने पश्चिमी और पूर्वी शिक्षा के संश्लेषण की वकालत की।
2. सावित्रीबाई फुले भारत में महिला शिक्षा की अग्रदूत थीं।
3. स्वामी विवेकानंद मुख्य रूप से एक आर्थिक इतिहासकार थे।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

151. ब्रिटिश प्रशासन द्वारा पारित विभिन्न प्रेस अधिनियमों का सामान्यतः उद्देश्य क्या था?
(A) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करना।
(B) समाचार पत्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करना।
(C) आलोचनात्मक राष्ट्रवादी प्रकाशनों को नियंत्रित, सेंसर और दमित करना।
(D) समाचार पत्रों के विन्यास और रुपरेखा को विनियमित करना।

152. इतिहासलेखन में 'प्राच्यवाद' शब्द उस दृष्टिकोण को संदर्भित करता है जो प्रायः:
(A) पूर्व को तर्कहीन, निरंकुश और पश्चिम से हीन चित्रित करता था।
(B) पूर्वी राष्ट्रों की पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए तर्क देता था।
(C) पूर्वी भाषाओं और संस्कृतियों के अध्ययन की पूर्णतः उपेक्षा करता था।
(D) भारतीय विद्वानों द्वारा भारतीय पाठकों के लिए लिखा गया था।

153. अंग्रेजों और अवध राज्य के बीच का संबंध किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) सहायक संधि के माध्यम से विस्तार और उसके पश्चात कुशासन के बहाने विलय।
(B) व्यपगत के सिद्धांत का सफल क्रियान्वयन।
(C) आपसी सम्मान और समानता पर आधारित एक सैन्य गठबंधन।
(D) अंग्रेजों की अहस्तक्षेप की नीति।

154. कंपनी शासन के अधीन न्यायपालिका के विकास के परिणामस्वरुप क्या हुआ?
(A) भारतीय कानूनों का ब्रिटिश कानूनों से पूर्ण प्रतिस्थापन।
(B) दीवानी और फौजदारी अदालतों के पदानुक्रम की स्थापना।
(C) उच्चतम न्यायिक पदों पर भारतीय न्यायाधीशों की नियुक्ति।
(D) कानूनी दस्तावेज़ीकरण के सभी रुपों का उन्मूलन।

155. निम्नलिखित में से कौन सी ब्रिटिश भारत के आर्थिक इतिहास की विशेषता नहीं थी?
(A) वि-औद्योगीकरण
(B) ग्रामीण ऋणग्रस्तता
(C) तीव्र और संतुलित औद्योगिक विकास की राज्य-संचालित नीति
(D) कृषि का वाणिज्यीकरण

156. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): 19वीं शताब्दी के समाज सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज के पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
कारण (R): राजा राम मोहन राय, दयानंद सरस्वती और ज्योतिबा फुले जैसे नेताओं ने प्रचलित सामाजिक बुराइयों को चुनौती दी और आधुनिकीकरण, शिक्षा और सामाजिक समानता की वकालत की।

निर्वाचन मंडल की शुरुआत की।
(B) ये अधिनियम तुरंत भारतीयों को पूर्ण शक्ति हस्तांतरित करने के लिए निर्मित किए गए थे।
(C) 1919 के अधिनियम ने प्रांतों में द्वैध शासन की शुरुआत की।
(D) 1935 के अधिनियम ने प्रांतीय स्वायत्तता का प्रस्ताव दिया।

117. व्यापार और हस्तशिल्प के विनाश ने "शिल्पकारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति" को प्रत्यक्ष रुप से कैसे प्रभावित किया?
(A) उन्हें धनी उद्यमी बनाकर।
(B) उन्हें कृषि या अल्प वेतन वाले श्रम में विवश करके, जिससे निर्धनता बढ़ी।
(C) अधिकारों की मांग करने के लिए शक्तिशाली श्रमिक संघ बनाने में उनकी सहायता करके।
(D) उन्हें बेहतर अवसरों के लिए ब्रिटेन प्रवास करने के लिए प्रोत्साहित करके।

118. दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज को सबसे अच्छी तरह से इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) वेदों के अधिकार के आधार पर हिंदू समाज में सुधार लाने के उद्देश्य से एक समाज सुधार आंदोलन।
(B) स्वतंत्रता की मांग करने वाला एक राजनीतिक दल।
(C) विश्व के सभी धर्मों को संश्लेषित करने के उद्देश्य से एक धार्मिक आंदोलन।
(D) अंग्रेजी साहित्य को बढ़ावा देने वाली एक साहित्यिक संस्था।

119. 1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम किसका प्रत्यक्ष परिणाम था?
(A) देशी समाचार पत्रों की व्यावसायिक सफलता।
(B) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने की ब्रिटिश इच्छा।
(C) 1857 के विद्रोह का भड़कना और यह धारणा कि प्रेस विद्रोह को बढ़ावा दे रहा था।
(D) सरकारी विनियमन के लिए भारतीय पत्रकारों की मांग।

120. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (घटना/नीति)
P. बंगाल का स्थायी बंदोबस्त
Q. सती प्रथा का उन्मूलन
R. व्यपगत का सिद्धांत
S. स्थानीय स्वशासन की शुरुआत
सूची II: (संबद्ध ब्रिटिश गवर्नर-जनरल/वायसराय)
1. लॉर्ड डलहौजी
2. लॉर्ड रिपन
3. लॉर्ड कॉर्नवालिस
4. लॉर्ड विलियम बेंटिक
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

121. इतिहासलेखन के 'साम्राज्यवादी' और 'राष्ट्रवादी' स्कूलों के बीच मुख्य अंतर उनके किसमें निहित है?
(A) अभिलेखीय स्रोतों का उपयोग।
(B) भौगोलिक केंद्र।
(C) ब्रिटिश शासन की प्रकृति और प्रभाव की व्याख्या।
(D) लेखन की भाषा।

122. 'खिलाफत' शब्द एक ऐसे आंदोलन का प्रतीक है जिसका मुख्य उद्देश्य था:
(A) अखिल-इस्लामी और अंतर्राष्ट्रीय।
(B) स्थानीय और घरेलू।
(C) विशुद्ध रूप से आर्थिक।
(D) समाज सुधार पर केंद्रित।

123. पंजाब के सिख साम्राज्य के साथ ब्रिटिश संबंधों का अंत किसमें हुआ?
(A) एक स्थायी और स्थिर सहायक संधि।
(B) ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य में पंजाब का स्वैच्छिक एकीकरण।
(C) क्षेत्र में एक संयुक्त आंग्ल-सिख शासन की स्थापना।
(D) दो बड़े युद्ध जिसके कारण पंजाब का विलय हो गया।

124. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): भारत में एक व्यावसायिक सिविल सेवा का विकास ब्रिटिश शासन के सुदृढ़ीकरण के लिए महत्वपूर्ण था।
कारण (R): सिविल सेवा को मुख्य रूप से लोकप्रिय समर्थन सुनिश्चित करने के लिए प्रशासन के उच्चतम स्तरों पर भारतीयों को सम्मिलित करने के लिए निर्मित किया गया था।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

125. 'ग्रामीण ऋणग्रस्तता' की घटना निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी से और गंभीर हो गई थी?
(A) ब्रिटिश भू-राजस्व प्रणाली की कठोरता।
(B) स्थानीय साहूकारों द्वारा उच्च ब्याज दरों की वसूली।
(C) कृषि का बलात वाणिज्यीकरण।
(D) काश्तकारों को सुलभ, अल्प ब्याज वाला ऋण प्रदान करने का सरकार का बड़े पैमाने पर कार्यक्रम।

126. भारतीय चिंतन में स्वामी विवेकानंद के योगदान में सम्मिलित था:

संगठित होने के लिए प्रेरित किया।
(C) ब्रिटिश सरकार ने कारखाना अधिनियमों को लागू करने के लिए श्रमिक संघ बनाए।
(D) कारखाना अधिनियमों ने श्रमिक संघों को अवैध बना दिया।

168. भारतीय राष्ट्रवाद में एनी बेसेंट का योगदान महत्वपूर्ण था क्योंकि उन्होंने:
(A) 'धन के निष्कासन सिद्धांत' की रचना की।
(B) आर्य समाज की स्थापना की।
(C) 'होम रूल' की मांग को लोकप्रिय बनाया और नरमपंथियों तथा गरमपंथियों के बीच की दूरी को कम किया।
(D) महाराष्ट्र में महिला शिक्षा की शुरुआत की।

169. निम्नलिखित में से कौन सा ऐतिहासिक स्रोत के रूप में 'जीवनियों और संस्मरणों' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) 1773 के रेगुलेटिंग अधिनियम का पाठ।
(B) 1890 के एक समाचार पत्र में एक संपादकीय।
(C) जवाहरलाल नेहरू की 'एन ऑटोबायोग्राफी'।
(D) 1901 की जनगणना प्रतिवेदन।

170. 'धन के निष्कासन सिद्धांत' के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) इसे दादाभाई नौरोजी द्वारा व्यवस्थित रूप से प्रतिपादित किया गया था।
(B) इसे ब्रिटिश सरकार ने समर्थन और स्वीकार किया था।
(C) इसने तर्क दिया कि धन भारत से ब्रिटेन की ओर प्रवाहित हो रहा था।
(D) यह ब्रिटिश शासन की राष्ट्रवादी आलोचना का एक प्रमुख भाग था।

171. अंग्रेजों की 'अग्रगामी नीति' किससे कथित खतरे के संबंध में ब्रिटिश साम्राज्यवादी चिंताओं की अभिव्यक्ति थी?
(A) रूस
(B) फ्रांस
(C) चीन
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका

172. मैसूर के साथ ब्रिटिश युद्धों का अंतिम परिणाम क्या था?
(A) एक सुदृढ़, स्वतंत्र मैसूर राज्य की स्थापना।
(B) टीपू सुल्तान की मृत्यु और पुनर्स्थापित वोडेयार वंश पर सहायक संधि थोपना।
(C) अंग्रेजों की पराजय और दक्षिण भारत से उनका निष्कासन।
(D) व्यपगत के सिद्धांत के अंतर्गत मैसूर का विलय।

173. क्राउन के अधीन 'सिविल सेवा', जिसे प्रायः राज का 'स्टील फ्रेम' कहा जाता था, की विशेषता क्या थी?
(A) उच्च पदों से भारतीयों का बहिष्कार।
(B) सामाजिक कल्याण गतिविधियों में इसकी प्राथमिक भूमिका।
(C) भारतीय जनता के प्रति इसकी उत्तरदेही।
(D) इसकी अक्षमता और भ्रष्टाचार।

174. ब्रिटिश शासन के दौरान शिल्पकारों की बदलती सामाजिक-आर्थिक स्थिति के कारण क्या हुआ?
(A) उनकी राजनीतिक शक्ति में वृद्धि।
(B) शहरी-से-ग्रामीण प्रवास की एक प्रक्रिया।
(C) उनका विस्थापन और आजीविका की हानि, जिसे 'कंगालीकरण' के रूप में जाना जाता है।
(D) ब्रिटिश सहायता से उनके शिल्प कौशल का आधुनिकीकरण।

175. थियोसोफिकल सोसाइटी, जिससे एनी बेसेंट जुड़ी हुई थीं, ने किसमें सहायता की?
(A) भारत की संस्कृति और दर्शन में गौरव की भावना जागृत करना।
(B) किसान विद्रोहों को संगठित करना।
(C) पश्चिमी जीवन शैली को अपनाने को बढ़ावा देना।
(D) ब्रिटिश शासन को तत्काल उखाड़ फेंकने की मांग करना।

176. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (अधिनियम/नीति)
P. वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम, 1878
Q. भारत शासन अधिनियम, 1919
R. सहायक संधि
S. व्यपगत का सिद्धांत
सूची II: (प्राथमिक परिणाम/विशेषता)
1. रक्षा और विदेश नीति में भारतीय राज्यों की संप्रभुता की हानि
2. सतारा, नागपुर और झाँसी जैसे राज्यों का विलय
3. भारतीय भाषा के समाचार पत्रों की सेंसरशिप
4. प्रांतों में द्वैध शासन की शुरुआत
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

177. 'खिलाफत' का मुद्दा भारत में एक प्रमुख राष्ट्रीय आंदोलन कब बना?
(A) जब इसे विशेष रूप से मुस्लिम नेताओं का समर्थन मिला।
(B) जब महात्मा गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसे असहयोग आंदोलन से जोड़ दिया।
(C) जब ब्रिटिश सरकार इसकी सभी मांगों पर सहमत हो गई।
(D) जब तुर्की के सुल्तान ने अपनी शक्तियां पुनः प्राप्त कर लीं।

178. 'राष्ट्रवादी' इतिहासलेखन दृष्टिकोण का उपयोग करने वाले इतिहासकार का प्राथमिक ध्यान क्या होगा?

(A) श्रमिक आंदोलन।
(B) भारत का आर्थिक विकास।
(C) पश्चिमी साहित्य का प्रचार।
(D) महिला शिक्षा और विधवाओं का उत्थान।

201. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (अवधारणा/नीति)
P. सांप्रदायिकता
Q. द्वैध शासन
R. खिलाफत
S. प्राच्यवाद
सूची II: (संक्षिप्त विवरण)
1. पश्चिमी विद्वानों द्वारा पूर्वी संस्कृतियों का अध्ययन।
2. तुर्की खलीफा से संबंधित अखिल-इस्लामी आंदोलन।
3. प्रांतीय विषयों का आरक्षित और हस्तांतरित में विभाजन।
4. विरोधी धार्मिक पहचानों पर आधारित विचारधारा।
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

202. 1857 से पूर्व भारतीय प्रेस की स्थिति को इस प्रकार चित्रित किया जा सकता है:
(A) अस्तित्वहीन और अप्रासंगिक।
(B) पूर्ण स्वतंत्रता और बिना किसी सरकारी हस्तक्षेप के फलती-फूलती।
(C) प्रारंभिक, लेकिन बढ़ती हुई, जिसमें सरकार द्वारा विनियमन के समय-समय पर प्रयास किए गए।
(D) विशेष रूप से अंग्रेजी में और ब्रिटिश हितों द्वारा संचालित।

203. इतिहासलेखन का 'निम्नवर्गीय' स्कूल मुख्य रूप से क्या चाहता है?
(A) जनता और हाशिए पर रहने वाले समूहों के दृष्टिकोण से इतिहास लिखना।
(B) ब्रिटिश शासन की उपलब्धियों का महिमामंडन करना।
(C) विशेष रूप से औपनिवेशिक राज्य की आर्थिक नीतियों पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) राष्ट्रवादी नेताओं के कार्यों को उचित ठहराना।

204. 'सहायक संधि' की नीति एक कूटनीतिक रणनीति थी जिसके परिणामस्वरूप:
(A) भारतीय राज्य सैन्य रूप से अधिक शक्तिशाली हो गए।
(B) प्रतिभागी भारतीय राज्य की संप्रभुता की हानि हुई।
(C) अंग्रेज भारतीय शासकों को कर चुकाते थे।
(D) अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय राज्यों के एक संयुक्त मोर्चे का गठन हुआ।

205. ईस्ट इंडिया कंपनी (1773-1853) के अधीन केंद्रीय और प्रांतीय प्रशासनिक संरचना का विकास किसकी एक प्रक्रिया थी?
(A) स्थानीय शासकों के लिए बढ़ता विकेंद्रीकरण और स्वायत्तता।
(B) ब्रिटिश सत्ता का क्रमिक सुदृढ़ीकरण और केंद्रीकरण।
(C) निर्वाचित भारतीय प्रतिनिधियों को सत्ता का हस्तांतरण।
(D) कंपनी की प्रशासनिक मशीनरी का विघटन।

206. ब्रिटिश भारत के संदर्भ में 'ग्रामीण ऋणग्रस्तता' शब्द का अर्थ है:
(A) अच्छी फसल के कारण किसानों द्वारा संचित धन।
(B) कृषि विकास के लिए सरकारी ऋण की प्रणाली।
(C) ऋण का वह चक्र जिसमें किसान साहूकारों और राज्य के नियंत्रण में फंस गए थे।
(D) जमींदारों द्वारा किसानों के ऋण क्षमा करने की परोपकारी गतिविधि।

207. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले 19वीं सदी के महाराष्ट्र में समाज सुधार के अग्रदूत थे।
कारण (R): उन्होंने ब्राह्मणवादी जाति व्यवस्था को चुनौती देने पर ध्यान केंद्रित किया और महिलाओं तथा तथाकथित 'निचली जातियों' के लिए शिक्षा के पक्ष में कार्य किया।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

208. अंग्रेजों द्वारा अधिनियमित विभिन्न प्रेस अधिनियमों, जैसे वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम, का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) औपनिवेशिक शासन के प्रति असंतोष और राष्ट्रवादी आलोचना को दबाना।
(B) पत्रकारों के अधिकारों के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करना।
(C) विभिन्न समाचार पत्रों के बीच निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करना।
(D) जनता के लिए समाचार पत्रों की लागत कम करना।

209. 'व्यपगत का सिद्धांत' किस गवर्नर-जनरल की विस्तारवादी नीतियों के साथ सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) लॉर्ड वेलेज़ली
(B) लॉर्ड विलियम बेंटिक
(C) लॉर्ड डलहौजी
(D) लॉर्ड रिपन

210. आधुनिक भारतीय इतिहास लिखने के लिए निम्नलिखित स्रोतों पर विचार कीजिए:
1. सरकारी विवरण जैसी अभिलेखीय सामग्री।
2. राजनीतिक नेताओं की जीवनियाँ और संस्मरण।
3. सामान्य लोगों के मौखिक साक्ष्य।

189. भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रति 'प्राच्यवादी' दृष्टिकोण, यद्यपि शैक्षणिक था, प्रायः किस प्रकार एक साम्राज्यवादी उद्देश्य की पूर्ति करता था?
(A) यह तर्क देकर कि भारत स्व-शासन के लिए तैयार था।
(B) ज्ञान का एक ऐसा निकाय बनाकर जिसने भारत पर शासन करना और उसे नियंत्रित करना सुगम बना दिया।
(C) यह प्रमाणित करके कि भारतीय संस्कृति पश्चिमी संस्कृति से श्रेष्ठ थी।
(D) भारतीयों को अपने ही अतीत को अस्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करके।

190. अंग्रेजों और सिखों के बीच संबंध किसके पश्चात तीव्रता से खराब हुए?
(A) गुरु गोविंद सिंह की मृत्यु।
(B) महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु और उसके पश्चात पंजाब में राजनीतिक अस्थिरता।
(C) 1809 में अमृतसर की संधि पर हस्ताक्षर।
(D) 1857 के विद्रोह का भड़कना।

191. भारत में अंग्रेजों द्वारा स्थापित पुलिस प्रणाली को मुख्य रूप से किस लिए निर्मित किया गया था?
(A) अपनी मुख्य प्राथमिकता के रूप में भारतीय जनसंख्या की सेवा और सुरक्षा करना।
(B) औपनिवेशिक राज्य के लिए बल प्रयोग और नियंत्रण के एक प्रमुख साधन के रूप में कार्य करना।
(C) जिला मजिस्ट्रेट से पूर्णतः स्वतंत्र होकर कार्य करना।
(D) इसमें केवल ब्रिटिश कर्मी सम्मिलित होना।

192. ब्रिटिश शासन के आर्थिक प्रभाव से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. दादाभाई नौरोजी के धन के निष्कासन सिद्धांत ने भारत से धन के हस्तांतरण पर प्रकाश डाला।
2. कृषि के वाणिज्यीकरण से सदैव लघु किसानों को लाभ हुआ।
3. वि-औद्योगीकरण के कारण पारंपरिक भारतीय विनिर्माण का पतन हुआ।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

193. मदन मोहन मालवीय का नाम मौलिक रूप से किस प्रमुख संस्थान की स्थापना से जुड़ा है?
(A) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
(B) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
(C) डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी
(D) थियोसोफिकल सोसाइटी

194. वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम (1878) और अन्य समान प्रेस अधिनियम ब्रिटिश सरकार के किसके प्रमाण हैं?
(A) एक स्वतंत्र और निष्पक्ष प्रेस के प्रति प्रतिबद्धता।
(B) भारतीय प्रेस के माध्यम से फैले राष्ट्रवादी विचारों के बढ़ते प्रभाव का भय।
(C) भारतीय भाषाओं को समझने में अक्षमता।
(D) सभी समाचार पत्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की नीति।

195. भारत में 'राष्ट्रवाद' की अवधारणा किसका परिणाम थी?
(A) औपनिवेशिक अधीनता का साझा अनुभव और आधुनिक विचारों का प्रसार।
(B) प्राचीन राजनीतिक एकता की निरंतरता।
(C) राष्ट्रीय पहचान को प्रोत्साहित करने की ब्रिटिश नीति।
(D) मुगलों के विरुद्ध एकजुट होने के लिए रियासतों के प्रयास।

196. मार्क्सवादी इतिहासलेखन भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन को किस रूप में देखता है?
(A) बुर्जुआ वर्ग द्वारा अपने वर्ग हितों की पूर्ति के लिए लड़ा गया संघर्ष।
(B) बिना किसी आंतरिक अंतर्विरोध के एक अखंड आंदोलन।
(C) एक विशुद्ध धार्मिक पुनरुद्धारवादी आंदोलन।
(D) एक सफल किसान क्रांति।

197. बंगाल में ब्रिटिश शासन का विस्तार एक क्रमिक प्रक्रिया थी जो किसके साथ आरंभ हुई?
(A) व्यापारिक अधिकार प्राप्त करना और कारखाने स्थापित करना।
(B) बक्सर का युद्ध।
(C) अवध का विलय।
(D) प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध।

198. ब्रिटिश क्राउन की 'सर्वोच्चता' का अर्थ था कि:
(A) अंग्रेज भारत में अंतिम और सर्वोच्च शक्ति थे, और राज्य अधीनस्थ थे।
(B) भारतीय रियासतें पूर्णतः संप्रभु थीं।
(C) राज्यों को एक निश्चित वार्षिक कर देना पड़ता था लेकिन अन्यथा वे स्वतंत्र थे।
(D) राज्य अपनी विदेश नीति स्वयं बना सकते थे।

199. दादाभाई नौरोजी और आर.सी. दत्त द्वारा प्रतिपादित उपनिवेशवाद की आर्थिक आलोचना ने तर्क दिया कि भारत की निर्धनता थी:
(A) इसकी जलवायु और भूगोल का परिणाम।
(B) अत्यधिक जनसंख्या के कारण।
(C) औपनिवेशिक नीतियों के परिणामस्वरूप एक मानव-निर्मित परिघटना।
(D) एक ऐतिहासिक समस्या जो ब्रिटिश शासन से पूर्व की थी।

200. केशव धोंडो कर्वे ने अपना जीवन किस कार्य के लिए समर्पित कर दिया?

सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

157. 'महिलाओं की स्थिति' समाज सुधारकों के लिए एक प्रमुख मुद्दा बन गई, जिन्होंने किन प्रथाओं के विरुद्ध अभियान चलाया?
(A) महिला शिक्षा।
(B) महिलाओं के लिए संपत्ति का अधिकार।
(C) सती प्रथा, बाल विवाह और बलात वैधव्य।
(D) महिला संगठनों का गठन।

158. 17वीं और 18वीं शताब्दी में पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और ब्रिटिश मुख्य रूप से किस कारण से भारत की ओर आकर्षित हुए थे?
(A) लाभकारी व्यापार के अवसर।
(B) धार्मिक परिवर्तन की संभावना।
(C) यूरोप में राजनीतिक उथल-पुथल से बचने की इच्छा।
(D) मुगल सम्राटों का निमंत्रण।

159. इतिहासलेखन का 'निम्नवर्गीय' स्कूल 'राष्ट्रवादी' स्कूल को यह तर्क देकर चुनौती देता है कि:
(A) राष्ट्रवादी आंदोलन सदैव अहिंसक था।
(B) जनसाधारण के योगदान और चेतना पर विचार किए बिना स्वतंत्रता संघर्ष का इतिहास अपूर्ण है।
(C) ब्रिटिश शासन भारत के लिए पूर्णतः लाभकारी था।
(D) आधुनिक भारतीय इतिहास में आर्थिक कारकों की कोई भूमिका नहीं थी।

160. ब्रिटिश क्राउन द्वारा स्थानीय स्वशासन की स्थापना मुख्य रूप से किस कारण से प्रेरित थी?
(A) लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता।
(B) प्रशासनिक और वित्तीय सुगमता।
(C) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दबाव।
(D) केंद्र सरकार को विकेंद्रीकृत करने की इच्छा।

161. 'वि-औद्योगीकरण' की अवधारणा सीधे 'कुटीर उद्योगों, व्यापार और हस्तशिल्प के विनाश' से जुड़ी है क्योंकि:
(A) कुटीर उद्योगों के उदय के कारण आधुनिक कारखानों का पतन हुआ।
(B) ब्रिटिश वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा के सम्मुख पारंपरिक भारतीय विनिर्माण का पतन ही वि-औद्योगीकरण का सार है।
(C) ब्रिटिश नीति ने आधुनिक उद्योगों के स्थान पर कुटीर उद्योगों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया।
(D) वि-औद्योगीकरण श्रमिकों के कृषि से उद्योग की ओर स्थानांतरण को संदर्भित करता है।

162. राजा राम मोहन राय को प्रायः 'आधुनिक भारत का जनक' कहा जाता है क्योंकि उन्होंने:
(A) अंग्रेजों के विरुद्ध एक सैन्य विद्रोह का नेतृत्व किया।
(B) हिंदू समाज में सुधार आरंभ किए और सामाजिक तथा धार्मिक प्रश्नों के लिए एक आधुनिक, तर्कसंगत दृष्टिकोण की वकालत की।
(C) 'धन के निष्कासन का सिद्धांत' तैयार किया।
(D) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की।

163. 1857 के लाइसेंसिंग अधिनियम और 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम के बीच एक मुख्य अंतर क्या था?
(A) 1857 का अधिनियम 1878 के अधिनियम की तुलना में अधिक कठोर था।
(B) 1857 का अधिनियम सभी प्रेस पर लागू होता था, जबकि 1878 का अधिनियम विशेष रूप से देशी भाषा के प्रेस को लक्षित करता था।
(C) 1878 का अधिनियम एक पूर्व-सेंसरशिप अधिनियम था, जबकि 1857 का अधिनियम नहीं था।
(D) 1857 का अधिनियम कभी लागू नहीं किया गया था, जबकि 1878 का अधिनियम लागू हुआ था।

164. अंग्रेजों द्वारा 'सर्वोच्चता' शब्द का प्रयोग किसलिए किया गया था?
(A) रियासतों के मामलों में अपने हस्तक्षेप को उचित ठहराने के लिए।
(B) रियासतों को पूर्ण संप्रभुता प्रदान करने के लिए।
(C) अन्य यूरोपीय शक्तियों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करने के लिए।
(D) अपनी शिक्षा नीति तैयार करने के लिए।

165. अंग्रेजों और मराठों के बीच संघर्ष किसके नियंत्रण के लिए था?
(A) दक्षिण में मसालों का व्यापार।
(B) बंगाल के उपजाऊ मैदान।
(C) पश्चिमी और मध्य भारत में मुगल साम्राज्य के पतन से उत्पन्न राजनीतिक शून्यता।
(D) चीन के समुद्री मार्ग।

166. भारत शासन अधिनियम, 1919 के अंतर्गत संवैधानिक परिवर्तन की एक प्रमुख विशेषता क्या थी?
(A) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की शुरुआत।
(B) प्रांतीय सरकारों में 'द्वैध शासन' की शुरुआत।
(C) भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना।
(D) कार्यकारी और विधायी शक्तियों का पूर्ण पृथक्करण।

167. 'कारखाना अधिनियम' और 'श्रमिक तथा श्रमिक संघ आंदोलन' ऐतिहासिक रूप से जुड़े हुए हैं क्योंकि:
(A) श्रमिक संघ आंदोलन ने कारखाना अधिनियम के सभी रूपों का विरोध किया।
(B) अपर्याप्त और दोषपूर्ण ढंग से लागू कारखाना अधिनियमों ने श्रमिकों को बेहतर स्थितियों की मांग के लिए संघों में

इनमें से कौन से स्रोत ऐतिहासिक शोध के लिए प्रासंगिक हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

211. 1919 के संवैधानिक परिवर्तन, जिन्होंने द्वैध शासन की शुरुआत की, किसका परिणाम थे?
(A) कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच लखनऊ समझौता।
(B) साइमन कमीशन की सिफारिशें।
(C) मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार।
(D) क्रिप्स मिशन के प्रस्ताव।

212. हस्तशिल्प के विनाश और 'वि-औद्योगीकरण' की परिघटना के कारण क्या हुआ?
(A) आजीविका के प्राथमिक स्रोत के रूप में भूमि और कृषि पर दबाव बढ़ गया।
(B) ग्रामीण भारत में समृद्धि बढ़ी।
(C) आधुनिक उद्योगों में वैकल्पिक नियोजन की तीव्र वृद्धि।
(D) भारतीय शिल्पकारों का ब्रिटेन में बड़े पैमाने पर प्रवास।

213. दयानंद सरस्वती और आर्य समाज का योगदान किस क्षेत्र में महत्वपूर्ण था?
(A) ब्रिटिश शासन की आर्थिक आलोचना।
(B) हिंदू धर्म के भीतर धार्मिक और सामाजिक सुधार।
(C) पश्चिमी उदार कलाओं का प्रचार।
(D) औद्योगिक श्रम का संगठन।

214. 'उपनिवेशवाद' शब्द मौलिक रूप से किस संबंध का वर्णन करता है?
(A) राजनीतिक और आर्थिक प्रभुत्व तथा शोषण।
(B) समानता और साझेदारी।
(C) समानों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान।
(D) अस्थायी सैन्य गठबंधन।

215. अंग्रेज भारत में पुर्तगाली और फ्रांसीसी जैसे अन्य यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों को किस कारण से पराजित करने में सक्षम रहे?
(A) श्रेष्ठ नौसैनिक शक्ति, बेहतर वित्तीय संगठन और राज्य का समर्थन।
(B) उनके सैनिकों की अधिक संख्या।
(C) सभी भारतीय शासकों से प्राप्त सहायता।
(D) संघर्षों से बचने और केवल व्यापार पर ध्यान केंद्रित करने की उनकी नीति।

216. क्राउन के अधीन न्यायपालिका के प्रशासन में क्या देखा गया?
(A) कंपनी के अधीन पारित कानूनों का पूर्ण उन्मूलन।
(B) प्रांतों में उच्च न्यायालयों की स्थापना।
(C) भारत के मुख्य न्यायाधीश के रूप में एक भारतीय की नियुक्ति।
(D) संपूर्ण न्यायालय प्रणाली का विघटन।

217. औपनिवेशिक सरकार की मौद्रिक नीति की राष्ट्रवादियों द्वारा प्रायः किस लिए आलोचना की जाती थी?
(A) भारतीय रुपये को बहुत सुदृढ़ रखना, जिससे ब्रिटिश आयातकों को लाभ हुआ।
(B) 'धन के निष्कासन' को सुगम बनाने के लिए विनिमय दरों और काउंसिल बिलों में हेरफेर करना।
(C) अत्यधिक मुद्रा निर्गमन करना, जिससे मुद्रास्फीति हुई।
(D) भारतीय उद्योगों को बहुत अधिक सस्ता ऋण प्रदान करना।

218. ब्रिटिश शिक्षा नीति का प्रभाव भारतीयों के एक ऐसे वर्ग का निर्माण था जिन्होंने:
(A) सीखने की पारंपरिक प्रणालियों के प्रति निष्ठावान रहे।
(B) पश्चिमी विचारों को आत्मसात किया और फिर राष्ट्रवादी मांगों को व्यक्त करने के लिए उनका उपयोग किया।
(C) ब्रिटिश प्रशासन में उच्च-स्तरीय नीति-निर्धारण भूमिकाओं में नियुक्त किए गए।
(D) पूर्णतः कृषि विकास पर ध्यान केंद्रित किया।

219. महिलाओं से संबंधित निम्नलिखित ब्रिटिश कानूनों में से कौन सा समाज सुधार आंदोलनों की एक प्रमुख उपलब्धि थी?
(A) वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम
(B) शस्त्र अधिनियम
(C) हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856
(D) रौलट अधिनियम

220. '1857 के लाइसेंसिंग अधिनियम' ने निम्नलिखित में से कौन सा प्रतिबंध लगाया?
(A) इसने भारतीय भाषाओं में समाचार पत्रों के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया।
(B) इसने किसी भी प्रेस के लिए सरकार से लाइसेंस प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया, जिसे कभी भी निरस्त किया जा सकता था।
(C) इसने सभी समाचार पत्रों की कीमत निर्धारित कर दी।
(D) इसके लिए सभी संपादकों का ब्रिटिश मूल का होना आवश्यक था।

221. एक विचारधारा के रूप में 'सांप्रदायिकता' का मानना है कि:
(A) एक देश के सभी समुदाय समान सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हित साझा करते हैं।
(B) एक ही धर्म को मानने वाले लोगों के धर्मनिरपेक्ष हित अन्य धर्मों को मानने वाले लोगों के हितों से पृथक और प्रायः विरोधी होते हैं।
(C) एक राष्ट्र पर धार्मिक नेताओं का शासन होना चाहिए।
(D) आर्थिक विकास ही राज्य का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए।

222. 'जीवनियाँ और संस्मरण' जैसी प्राथमिक स्रोत सामग्रियाँ मूल्यवान हैं लेकिन उनका सावधानी के साथ उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि वे:
(A) सदैव विदेशी भाषा में लिखी जाती हैं।

पत्रिकाएं।
(C) पुस्तकों को मुद्रित करने वाले प्रेस सहित सभी मुद्रण प्रेस।
(D) लंदन में प्रकाशित समाचार पत्र।

289. 'खिलाफत' शब्द का अर्थ है:
(A) फारस के शासक की उपाधि।
(B) तुर्की के खलीफा का समर्थन करने के लिए भारत में एक आंदोलन।
(C) बंगाल में भू-राजस्व की एक प्रणाली।
(D) मुगल दरबार में चित्रकला की एक शैली।

290. इतिहासलेखन का साम्राज्यवादी स्कूल प्रायः भारत में ब्रिटिश विस्तार को किस रुप में प्रस्तुत करता था?
(A) लोभ और आक्रामकता की कहानी।
(B) एक अराजक और अनियोजित प्रक्रिया।
(C) एक पिछड़े समाज में प्रगति लाने के लिए एक 'सभ्यता-प्रसार मिशन'।
(D) अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफलता।

291. 1857 के पश्चात क्राउन के तहत 'सेना' के प्रशासन को पुनर्गठित किया गया था ताकि:
(A) ब्रिटिश सैनिकों पर भारतीय सैनिकों का बहुमत सुनिश्चित किया जा सके।
(B) सभी तोपखाने और उन्नत शस्त्र यूरोपीय नियंत्रण में रखे जा सकें।
(C) सेना को पूर्णतः भंग किया जा सके।
(D) सभी सैनिकों में राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा दिया जा सके।

292. ब्रिटिश शासन को समझने में दादाभाई नौरोजी का प्रमुख योगदान क्या था?
(A) 'अग्रगामी नीति' का समर्थन।
(B) 'धन के निष्कासन सिद्धांत' का प्रतिपादन।
(C) थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना।
(D) समाज सुधार आंदोलन में नेतृत्व।

293. ब्रिटिश शिक्षा नीति के प्रभाव के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) यह भारत के प्रत्येक गाँव और प्रत्येक बच्चे तक पहुँची।
(B) यह एक नए बौद्धिक वर्ग को बनाने में सहायक थी जिसने राष्ट्रवादी आंदोलन का नेतृत्व किया।
(C) इसने मुख्य रूप से तकनीकी और व्यावसायिक कौशल पर ध्यान केंद्रित किया।
(D) इसने सीखने की पारंपरिक भारतीय प्रणालियों को संरक्षित और प्रोत्साहित किया।

294. सावित्रीबाई फुले का योगदान किस क्षेत्र में सबसे अधिक उल्लेखनीय है?
(A) श्रमिक आंदोलन।
(B) ब्रिटिश आर्थिक नीति की आलोचना लिखना।
(C) महिला शिक्षा को बढ़ावा देना और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध लड़ना।
(D) राजनीतिक अधिकारों के लिए एक महिला संगठन का नेतृत्व करना।

295. निम्नलिखित में से कौन सा ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का प्रत्यक्ष परिणाम नहीं था?
(A) कुटीर उद्योगों का विनाश।
(B) कृषि का वाणिज्यीकरण।
(C) पूरे भारत में स्वतंत्र किसान स्वामियों के एक विशाल और समृद्ध वर्ग का उदय।
(D) भारत से ब्रिटेन को धन का निष्कासन।

296. 'सहायक संधि' प्रणाली ब्रिटिश विस्तार का एक प्रमुख उपकरण थी और यह सबसे प्रसिद्ध रुप से किससे जुड़ी है?
(A) लॉर्ड डलहौजी
(B) लॉर्ड वेलेज़ली
(C) लॉर्ड कर्जन
(D) लॉर्ड हेस्टिंग्स

297. 'निम्नवर्गीय' इतिहासलेखन किसकी ऐतिहासिक भूमिका में सर्वाधिक रुचि रखता है?
(A) वायसराय और शीर्ष ब्रिटिश अधिकारी।
(B) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता।
(C) सामान्य लोग, किसान और आदिवासी।
(D) भारतीय पूंजीपति वर्ग।

298. कंपनी और क्राउन दोनों के तहत प्रशासन का केंद्रीय विषय क्या था?
(A) भारत को लोकतंत्र के लिए तैयार करना।
(B) ब्रिटिश सत्ता और आर्थिक हितों का संरक्षण और सुदृढ़ीकरण।
(C) प्राथमिक लक्ष्य के रूप में भारतीय जनता का कल्याण।
(D) वर्तमान भारतीय राजनीतिक संरचनाओं का संरक्षण।

299. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): अंग्रेजों द्वारा शुरु किए गए भू-राजस्व बंदोबस्त ने पारंपरिक कृषि संरचना को बाधित किया और ग्रामीण ऋणग्रस्तता को बढ़ावा दिया।
कारण (R): उच्च और निश्चित राजस्व मांगें, जो फसल की स्थिति के निरपेक्ष नकद में देय थीं, ने किसानों को साहूकारों से अत्यधिक दरों पर ऋण लेने के लिए विवश किया।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

(D) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस योजना के लिए पूर्ण संस्थागत समर्थन प्रदान किया, जिससे यह व्यापक रूप से अलोकप्रिय हो गई।

233. आंग्ल-सिख युद्धों का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) धार्मिक शत्रुता।
(B) पंजाब के रणनीतिक और उपजाऊ क्षेत्र के विलय की ब्रिटिश महत्वाकांक्षा।
(C) ब्रिटिश क्षेत्र पर सिख आक्रमण।
(D) तिब्बत के व्यापारिक मार्गों को लेकर विवाद।

234. औपनिवेशिक भारत में 'कारखाना अधिनियम की प्रकृति' से पता चलता है कि ऐसे कानून:
(A) व्यापक थे और सभी श्रमिकों की सुरक्षा के लिए सदैव कठोरता से लागू किए जाते थे।
(B) मुख्य रूप से भारतीय उद्योगों को ब्रिटिश उद्योगों के विरुद्ध कम प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए अधिनियमित किए गए थे।
(C) प्रायः संकोचपूर्ण, दायरे में सीमित और विभिन्न समूहों के दबाव में अधिनियमित किए गए थे।
(D) श्रमिकों को हड़ताल करने का अधिकार और प्रबंधन पर पूर्ण नियंत्रण देने के लिए निर्मित किए गए थे।

235. 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में उभरे महिला संगठन महत्वपूर्ण थे क्योंकि उन्होंने:
(A) कुलीन महिलाओं के लिए सामाजिक क्लबों के रूप में कार्य किया।
(B) महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों के लिए अपनी मांगें व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान किया।
(C) ब्रिटिश सरकार द्वारा निर्मित और नियंत्रित किए गए थे।
(D) विशेष रूप से धार्मिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया।

236. 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम को अपमानजनक रूप से "गैगिंग एक्ट" कहा गया क्योंकि इसने:
(A) प्रेस को वित्तीय सहायता प्रदान की।
(B) भारतीय भाषा के प्रेस में सरकार की आलोचना को मौन करने का लक्ष्य रखा।
(C) समाचार पत्रों को सरकारी परिपत्र प्रकाशित करने के लिए विवश किया।
(D) अखबारी कागज की कीमत को विनियमित किया।

237. 'सर्वोच्चता' की अवधारणा एक अस्पष्ट सिद्धांत था जिसका अनिवार्य रूप से अर्थ था:
(A) रियासतें सर्वोच्च थीं।
(B) ब्रिटिश सत्ता जब चाहे तब सर्वोच्च थी, जिससे वह राज्यों के मामलों में इच्छानुसार हस्तक्षेप कर सकती थी।
(C) राज्यों और क्राउन के बीच सभी शक्तियाँ समान रूप से विभाजित थीं।
(D) न्यायपालिका भारत में सर्वोच्च प्राधिकारी थी।

238. 'साम्राज्यवादी' स्कूल का एक इतिहासकार भारतीय राज्यों के विलय की व्याख्या किस रूप में करेगा?
(A) अन्यायपूर्ण आक्रामकता का कार्य।
(B) एक अराजक क्षेत्र में व्यवस्था, सुशासन और आधुनिकीकरण लाने के लिए एक आवश्यक कदम।
(C) वर्ग संघर्ष का परिणाम।
(D) निम्नवर्गीय प्रतिरोध का परिणाम।

239. 1857 के पश्चात क्राउन के अधीन सेना के विकास में कौन सी नीति सम्मिलित थी?
(A) ब्रिटिश सैनिकों की तुलना में भारतीय सैनिकों का अनुपात बढ़ाना।
(B) जातिगत एकजुटता को तोड़ने के लिए विभिन्न सामाजिक समूहों से सैनिकों की भर्ती करना।
(C) निष्ठा सुनिश्चित करने के लिए 'लड़ाकू जातियों' की अवधारणा के आधार पर रेजिमेंटों का संगठन करना।
(D) ब्रिटिश सैनिकों की कमान भारतीय अधिकारियों को सौंपना।

240. कृषि का वाणिज्यीकरण 'अकाल' से कैसे जुड़ा है?
(A) नकदी फसलों के उत्पादन ने प्रायः स्थानीय खाद्यान्न की खेती को प्रतिस्थापित कर दिया, जिससे क्षेत्रीय खाद्य सुरक्षा में पर्याप्त कमी आई।
(B) इन विशिष्ट व्यावसायिक फसलों को अत्यंत अल्प जल की आवश्यकता होती थी और वे सूखे के प्रति प्रतिरोधी थीं।
(C) व्यावसायिक खेती से प्राप्त लाभ का उपयोग राज्य द्वारा राष्ट्रीय खाद्य भंडार बनाए रखने के लिए किया जाता था।
(D) इसने औसत किसान के लिए निरंतर इतना धन उत्पन्न किया कि वह सभी बड़े अकाल का सफलतापूर्वक सामना कर सके।

241. सैयद अहमद खान का योगदान मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) खिलाफत आंदोलन।
(B) मुसलमानों के बीच आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अलीगढ़ आंदोलन की स्थापना।
(C) 'धन के निष्कासन सिद्धांत' का प्रतिपादन।
(D) 1857 के विद्रोह का नेतृत्व।

242. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): भारत में प्रारंभिक श्रमिक संघ आंदोलन का नेतृत्व प्रायः स्वयं श्रमिकों के स्थान पर राष्ट्रवादियों और मानवतावादियों द्वारा किया गया था।
कारण (R): श्रमिक वर्ग अभी भी अपने प्रारंभिक चरण में था, और बाहरी नेताओं ने उनकी शिकायतों को स्वर देने के लिए आवश्यक संगठनात्मक और वैचारिक नेतृत्व प्रदान किया।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या

(B) प्रायः व्यक्तिपरक होती हैं और लेखक के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और स्मृति से प्रभावित होती हैं।
(C) प्राप्त करने के लिए बहुत महंगी हैं।
(D) इनमें कोई तथ्यात्मक जानकारी नहीं होती है।

223. हैदराबाद राज्य के साथ ब्रिटिश संबंध किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) युद्ध के माध्यम से विलय।
(B) सहायक संधि का सफल और दीर्घकालिक अनुप्रयोग।
(C) व्यपगत के सिद्धांत के माध्यम से विलय।
(D) समानों का संबंध।

224. ब्रिटिश शासन के तहत सिविल सेवा की स्थापना का उद्देश्य क्या बनाना था?
(A) भारतीय जनता के प्रति निष्ठावान प्रशासकों का एक निकाय।
(B) प्रशासन चलाने और ब्रिटिश हितों को सुरक्षित करने के लिए एक कुशल, पदानुक्रमित नौकरशाही।
(C) एक अस्थायी प्रशासनिक संरचना।
(D) अपनी स्थापना से ही सभी स्तरों पर सभी भारतीयों के लिए खुली सेवा।

225. दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रतिपादित 'धन के निष्कासन सिद्धांत' किसका एक केंद्रीय घटक था?
(A) ब्रिटिश शासन का साम्राज्यवादी औचित्य।
(B) पूंजीवाद की मार्क्सवादी आलोचना।
(C) उपनिवेशवाद की राष्ट्रवादी आर्थिक आलोचना।
(D) भारत की प्राच्यवादी समझ।

226. भारतीय पुनर्जागरण में थियोसोफिकल सोसाइटी और एनी बेसेंट का योगदान मुख्य रूप से किस क्षेत्र में था?
(A) आर्थिक क्षेत्र।
(B) सैन्य क्षेत्र।
(C) सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र, भारत के अतीत में गौरव को बढ़ावा देकर।
(D) कानूनी क्षेत्र।

227. 'लोकप्रिय समाचार पत्रों' का विकास महत्वपूर्ण था क्योंकि वे:
(A) राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार और जनमत की लामबंदी के साधन बन गए।
(B) सदैव ब्रिटिश सरकार की नीतियों के समर्थक थे।
(C) केवल मनोरंजन पर ध्यान केंद्रित करते थे और राजनीतिक सामग्री से बचते थे।
(D) केवल ब्रिटिश अधिकारियों के बीच प्रसारित किए जाते थे।

228. भारत में अंग्रेजों की 'अग्रगामी नीति' मुख्य रूप से किसके साथ सीमाओं को सुरक्षित करने की ओर निर्देशित थी?
(A) बर्मा
(B) अफगानिस्तान
(C) नेपाल
(D) चीन

229. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (इतिहासलेखन का स्कूल)
P. साम्राज्यवादी
Q. राष्ट्रवादी
R. मार्क्सवादी
S. निम्नवर्गीय
सूची II: (मुख्य प्रस्तावक/विचार)
1. आर.सी. दत्त
2. रंजीत गुहा
3. विन्सेंट स्मिथ
4. आर.पी. दत्त
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

230. 'कुटीर उद्योगों का विनाश' किसका संदर्भ है?
(A) भारतीयों के स्वामित्व वाले आधुनिक कारखानों का उदय।
(B) औपनिवेशिक नीतियों और प्रतिस्पर्धा के कारण पारंपरिक भारतीय विनिर्माण का पतन।
(C) युद्धों के दौरान कार्यशालाओं का भौतिक विनाश।
(D) शिल्पकारों द्वारा स्वेच्छा से उद्योगों को बंद करना।

231. 19वीं शताब्दी के समाज सुधार आंदोलन, जिनमें राजा राम मोहन राय और ज्योतिबा फुले जैसी हस्तियां सम्मिलित थीं, यह दर्शाते हैं कि:
(A) भारतीय समाज पूर्ण था और उसमें कोई सामाजिक बुराइयां नहीं थीं।
(B) भारतीय समाज के भीतर ही एक आंतरिक आलोचना और आधुनिकीकरण की इच्छा थी।
(C) सभी भारतीय किसी भी प्रकार के सामाजिक परिवर्तन के विरोधी थे।
(D) समाज सुधार केवल ब्रिटिश सरकार की एक पहल थी।

232. 1919 के अधिनियम द्वारा लागू की गई 'द्वैध शासन' की प्रणाली विफल रही क्योंकि:
(A) भारतीय मंत्रियों को आंतरिक वित्त और पुलिस सहित सबसे महत्वपूर्ण विभागों पर पूर्ण नियंत्रण दिया गया था।
(B) विषयों का प्रशासनिक विभाजन अव्यावहारिक था क्योंकि मंत्रियों के पास वित्त और सिविल सेवा पर नियंत्रण नहीं था।
(C) ब्रिटिश प्रांतीय गवर्नरों ने किसी भी नियुक्त भारतीय मंत्रियों के साथ सहयोग करने से पूर्णतः मना करने की नीति बनाए रखी।

(C) पश्चिमी भारत से अंग्रेजों की वापसी।
(D) मराठों द्वारा ब्रिटिश संस्कृति की स्वैच्छिक स्वीकृति।

254. क्राउन के तहत आरंभ की गई 'स्थानीय स्वशासन' की प्रणाली थी:
(A) स्थानीय स्तर पर पूर्ण लोकतंत्र की प्रणाली।
(B) आधिकारिक नियंत्रण और सीमित मताधिकार के साथ स्थानीय निकायों को सत्ता का सीमित हस्तांतरण।
(C) एक ऐसी प्रणाली जहाँ स्थानीय निकाय सेना द्वारा नियंत्रित होते थे।
(D) एक विफलता क्योंकि इसमें किसी भी भारतीय ने भाग नहीं लिया।

255. ब्रिटिश शासन के दौरान शिल्पकारों की स्थिति किस कारण से खराब हुई?
(A) नए स्वरुपों को अपनाने में उनकी अक्षमता।
(B) देशी दरबारों से संरक्षण की हानि और मशीन से बने सामानों से प्रतिस्पर्धा।
(C) उनके उपकरणों पर लगाए गए उच्च कर।
(D) विधि द्वारा सभी हस्तशिल्प उत्पादन पर प्रतिबंध।

256. भारतीय युवाओं को स्वामी विवेकानंद का संदेश था:
(A) संसार का त्याग और एकांत ध्यान करना।
(B) शक्ति, आत्मविश्वास और राष्ट्र की सेवा।
(C) पश्चिमी विधियों को बिना सोचे-समझे अपनाना।
(D) चुनाव लड़ने के लिए एक राजनीतिक दल बनाना।

257. 'रचनात्मक साहित्य और चित्रकला' इतिहासकारों के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं क्योंकि वे:
(A) घटनाओं का एक तथ्यात्मक, कालानुक्रमिक विवरण प्रदान करते हैं।
(B) उस काल की मानसिकता, मूल्यों और सामाजिक तनावों को प्रकट करते हैं जिन्हें आधिकारिक दस्तावेज शायद न बता सकें।
(C) आर्थिक आंकड़ों के लिए एकमात्र विश्वसनीय स्रोत हैं।
(D) सदैव वस्तुनिष्ठ और बिना किसी वैचारिक झुकाव के होते हैं।

258. 'व्यपगत का सिद्धांत' किसकी नीति थी?
(A) विलय
(B) व्यापार
(C) समाज सुधार
(D) शिक्षा

259. दादाभाई नौरोजी द्वारा वर्णित आर्थिक 'निष्कासन' का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) ब्रिटिश अधिकारियों और व्यापारियों के वेतन तथा लाभ, और औपनिवेशिक प्रशासन के अन्य व्यय जो ब्रिटेन भेजे जा रहे थे।
(B) भारतीय व्यापारियों द्वारा अपना लाभ विदेश भेजना।
(C) भारत में कच्चे माल के आयात की उच्च लागत।
(D) चीन के साथ भारत का प्रतिकूल व्यापार संतुलन।

260. किस समाज सुधारक ने लड़कियों के लिए शैक्षणिक संस्थानों की एक श्रृंखला स्थापित की, जिसका समापन भारत के पहले महिला विश्वविद्यालय में हुआ?
(A) सावित्रीबाई फुले
(B) राजा राम मोहन राय
(C) धोंडो केशव कर्वे
(D) सैयद अहमद खान

261. अंग्रेजों द्वारा पारित विभिन्न प्रेस अधिनियम किसके संकेतक हैं?
(A) एक स्वतंत्र प्रेस के लिए सरकार का समर्थन।
(B) राष्ट्रवादी प्रेस की बढ़ती शक्ति और प्रभाव।
(C) समाचार पत्रों की पाठक संख्या में गिरावट।
(D) समाचार पत्र उद्योग की आर्थिक विफलता।

262. 'उपनिवेशवाद' की अवधारणा का सबसे अच्छा उदाहरण है:
(A) पारस्परिक लाभ के लिए दूसरे देश के बुनियादी ढांचे में निवेश करने वाला देश।
(B) एक राजनीतिक रूप से शक्तिशाली देश जो अपने स्वयं के संवर्धन के लिए दूसरे देश की अर्थव्यवस्था और समाज को अधीन करता है।
(C) दो देशों के बीच एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम।
(D) आपसी रक्षा के लिए एक सैन्य गठबंधन।

263. ब्रिटिश प्रशासन से संबंधित अभिलेखीय सामग्रियों का विश्लेषण करने वाला इतिहासकार किसका परीक्षण कर रहा होगा?
(A) लोक गीत और मौखिक परंपराएं।
(B) सरकारी फाइलें, आधिकारिक पत्राचार और राजपत्र।
(C) सामान्य किसानों की निजी डायरियाँ।
(D) उस काल के दौरान लिखे गए उपन्यास।

264. कर्नाटक युद्धों में फ्रांसीसियों पर अंग्रेजों की विजय महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसने:
(A) उन्हें बंगाल पर नियंत्रण दिया।
(B) मराठों की हार का मार्ग प्रशस्त किया।
(C) भारत के नियंत्रण के लिए उनके मुख्य यूरोपीय प्रतिद्वंद्वी को हटा दिया।
(D) उन्हें मसालों के व्यापार तक पहुँच प्रदान की।

265. निम्नलिखित में से कौन सी अंग्रेजों द्वारा शुरु की गई प्रमुख भू-राजस्व प्रणाली नहीं थी?
(A) स्थायी बंदोबस्त
(B) रैयतवारी बंदोबस्त
(C) महलवारी बंदोबस्त
(D) इनामदार बंदोबस्त

266. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है:

अभिकथन (A): 19वीं शताब्दी के समाज सुधार आंदोलन प्रायः शहरी, शिक्षित, मध्यम और उच्च वर्गों तक सीमित थे।

कारण (R): सुधारकों का संदेश, जो प्रायः मुद्रण और आधुनिक संघों के माध्यम से व्यक्त किया जाता था, विस्तृत ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित पहुँच रखता था जहाँ पारंपरिक प्रतिमानों का सुदृढ़ प्रभाव था।

सही विकल्प का चयन कीजिए:

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

267. अपने शुरुआती चरण में 'श्रमिक और श्रमिक संघ आंदोलन' की विशेषता क्या थी?

(A) राज्य को उखाड़ फेंकने की मांग।
(B) मजदूरी और कार्य के घंटों जैसी तत्काल आर्थिक शिकायतों पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) स्वयं श्रमिक वर्ग का नेतृत्व।
(D) पूर्ण सरकारी समर्थन और संरक्षण।

268. निम्नलिखित में से कौन सा समाज सुधारकों द्वारा प्रभावित महिलाओं से संबंधित ब्रिटिश कानून का सबसे अच्छा उदाहरण है?

(A) सम्मति आयु अधिनियम, 1891
(B) इल्बर्ट बिल, 1883
(C) भारतीय परिषद अधिनियम, 1909
(D) भारत रक्षा अधिनियम, 1915

269. 'प्राच्यवाद' शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है:

(A) पूर्वी देशों की मुक्ति के लिए एक राजनीतिक आंदोलन।
(B) पूर्व का पश्चिमी शैक्षणिक अध्ययन, जिसने प्रायः पूर्वी समाजों की एक काल्पनिक या रुढ़िबद्ध छवि का निर्माण किया।
(C) पश्चिमी समाजों का पूर्वी अध्ययन।
(D) इतिहासलेखन का एक देशी भारतीय स्कूल।

270. 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश भारतीय सेना की स्थापना में एक महत्वपूर्ण पुनर्गठन देखा गया जिसका उद्देश्य था:

(A) भारतीय अधिकारियों को उच्चतम रैंक तक पदोन्नत करना।
(B) सैन्य टुकड़ियों के संयोजन को सावधानीपूर्वक संतुलित करके और प्रमुख संपत्तियों को नियंत्रित करके भविष्य के किसी बड़े विद्रोह को रोकना।
(C) व्यय बचाने के लिए सेना के आकार को कम करना।
(D) लोकतांत्रिक शासन के लिए सेना को प्रशिक्षित करना।

271. अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कृषि के वाणिज्यीकरण का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना था।
2. कुटीर उद्योगों के विनाश के कारण कृषि भूमि पर दबाव बढ़ गया।
3. सरकार की मौद्रिक नीति धन के निष्कासन को सुगम बनाने के लिए निर्मित की गई थी।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

272. 'महिलाओं की स्थिति' के प्रति राजा राम मोहन राय का योगदान उनके किस अभियान द्वारा सबसे अच्छी तरह से सिद्ध होता है?

(A) महिला शिक्षा का प्रचार।
(B) महिलाओं को मतदान का अधिकार।
(C) सती प्रथा का उन्मूलन।
(D) सिविल सेवा में महिलाओं का प्रवेश।

273. 1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम और 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम दोनों किस लिए बनाए गए उपाय थे?

(A) भारत में पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए।
(B) प्रेस की स्वतंत्रता को नियंत्रित और प्रतिबंधित करने के लिए।
(C) समाचार पत्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए।
(D) पत्रकारों के कार्य के घंटों को विनियमित करने के लिए।

274. 'द्वैध शासन' की अवधारणा संवैधानिक सुधारों के किस समूह से जुड़ी है?

(A) मॉर्ले-मिंटो सुधार (1909)
(B) मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (1919)
(C) साइमन कमीशन रिपोर्ट (1930)
(D) भारत शासन अधिनियम (1935)

275. इतिहासलेखन का 'निम्नवर्गीय' स्कूल किसकी आलोचना के रुप में उभरा?

(A) राष्ट्रवादी और मार्क्सवादी इतिहास में कुलीन नेताओं की भूमिका पर अत्यधिक बल।
(B) ऐतिहासिक लेखन में अभिलेखीय स्रोतों का उपयोग।
(C) आर्थिक इतिहास का अध्ययन।
(D) उपनिवेशवाद का साम्राज्यवादी औचित्य।

276. अवध के प्रति ब्रिटिश नीति, जिसका समापन 1856 में इसके विलय में हुआ, किस बहाने पर आधारित थी?

(A) व्यपगत का सिद्धांत।
(B) शासक का ब्रिटिश-विरोधी गठबंधन।
(C) नवाब द्वारा कथित कुशासन।
(D) नेपाल के लिए सीधे व्यापार मार्ग की आवश्यकता।

277. कंपनी और क्राउन के तहत न्यायपालिका की क्या विशेषता थी?
(A) किसी भी जातीय भेदभाव की पूर्ण अनुपस्थिति।
(B) विधि के एक नए सिद्धांत और औपचारिक न्यायालय संरचना की शुरुआत।
(C) ब्रिटिश कानून पर पारंपरिक भारतीय कानून की सर्वोच्चता।
(D) लोकप्रिय मत द्वारा न्यायाधीशों का चुनाव।

278. भारतीय अर्थव्यवस्था के 'वि-औद्योगीकरण' का एक प्रमुख परिणाम निम्नलिखित में से क्या था?
(A) भारत निर्मित औद्योगिक वस्तुओं का एक प्रमुख निर्यातक बन गया।
(B) भारत आयातित निर्मित वस्तुओं पर तीव्रता से निर्भर हो गया।
(C) शिल्पकारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर जनसंख्या का बड़े पैमाने पर पलायन हुआ।

279. ज्योतिबा फुले के प्रयास मुख्य रूप से किस ओर निर्देशित थे?
(A) ब्रिटिश नीतियों की आर्थिक आलोचना।
(B) शिक्षा के माध्यम से निम्न जातियों और महिलाओं की सामाजिक मुक्ति।
(C) वैदिक हिंदू धर्म का पुनरुद्धार।
(D) अंग्रेजी भाषा और संस्कृति का प्रचार।

280. 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में 'लोकप्रिय समाचार पत्रों' के विकास ने किसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
(A) ब्रिटिश प्रशासन को सुदृढ़ करना।
(B) राष्ट्रीय चेतना और जनमत को बढ़ावा देना।
(C) भारतीयों के बीच राजनीतिक गतिविधि को हतोत्साहित करना।
(D) राष्ट्रवाद के ऊपर क्षेत्रवाद को बढ़ावा देना।

281. 'सहायक संधि' की नीति के तहत भारतीय शासक को क्या करना आवश्यक था?
(A) अपनी सेना को भंग करना और अपने क्षेत्र में एक ब्रिटिश सैन्य टुकड़ी को स्वीकार करना।
(B) सैन्य स्वायत्तता के बदले में एक बड़ा वार्षिक कर देना।
(C) अपना पूरा क्षेत्र अंग्रेजों को सौंप देना।
(D) अंग्रेजों के विरुद्ध फ्रांसीसियों के साथ गठबंधन करना।

282. आधुनिक भारतीय इतिहास की 'राष्ट्रवादी' व्याख्या किस पर बल देती है?
(A) अंग्रेजों का 'सभ्यता-प्रसार मिशन'।
(B) औपनिवेशिक शासन से भारत के स्वतंत्रता संघर्ष की कहानी।
(C) बुर्जुआ और सर्वहारा वर्ग के बीच वर्ग संघर्ष।
(D) गैर-कुलीन, निम्नवर्गीय समूहों का इतिहास।

283. 1935 के भारत शासन अधिनियम में निहित संवैधानिक परिवर्तन ने क्या प्रदान किया?
(A) तत्काल स्वतंत्रता।
(B) केंद्र में द्वैध शासन और प्रांतों के लिए स्वायत्तता।
(C) वायसराय के पद का उन्मूलन।
(D) बिना किसी योग्यता के सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार।

284. ब्रिटिश शासन के तहत 'ग्रामीण ऋणग्रस्तता' किसके संयोजन के कारण एक व्यापक परिघटना बन गई?
(A) अल्प भू-राजस्व मांग और उच्च फसल कीमतें।
(B) उच्च भू-राजस्व मांग, उसे चुकाने के लिए नकदी की आवश्यकता और साहूकारों का जाल।
(C) ऋण राहत के लिए सरकारी कार्यक्रम।
(D) कुटीर उद्योगों की समृद्धि जिससे भूमि पर भार कम हुआ।

285. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (शब्द)
P. वि-औद्योगीकरण
Q. वाणिज्यीकरण
R. धन का निष्कासन
S. सर्वोच्चता
सूची II: (संदर्भ में अर्थ)
1. भारत से ब्रिटेन को संसाधनों का हस्तांतरण।
2. रियासतों पर अंतिम ब्रिटिश संप्रभुता का दावा।
3. कृषि में निर्वाह फसलों से बाजार की फसलों की ओर परिवर्तन।
4. पारंपरिक उद्योगों का पतन।
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

286. 19वीं शताब्दी में महिलाओं की स्थिति सुधार का विषय बन गई, जिसमें भारतीय सुधारकों ने निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी को चुनौती दी?
(A) सती प्रथा
(B) थोपा गया वैधव्य
(C) महिलाओं का शिक्षा का अधिकार
(D) बाल विवाह

287. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत है?
(A) राजा राम मोहन राय - ब्रह्म समाज
(B) दयानंद सरस्वती - आर्य समाज
(C) एनी बेसेंट - अलीगढ़ आंदोलन
(D) ज्योतिबा फुले - सत्यशोधक समाज

288. 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम का मुख्य लक्ष्य क्या था?
(A) भारत में अंग्रेजी भाषा का प्रेस।
(B) भारतीय भाषाओं में प्रकाशित समाचार पत्र और

नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

243. सती प्रथा के उन्मूलन से संबंधित ब्रिटिश कानून किसका एक स्पष्ट उदाहरण है?
(A) भारतीय सामाजिक मामलों में अंग्रेजों का अहस्तक्षेप।
(B) राजा राम मोहन राय जैसे भारतीय सुधारकों के आग्रह पर एक सामाजिक प्रथा में विधायी हस्तक्षेप।
(C) सभी भारतीयों की इच्छा के विरुद्ध पारित कानून।
(D) भारतीय अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने के उद्देश्य से बनाया गया कानून।

244. भारत में डच और ब्रिटिश व्यापारिक कंपनियों के बीच मुख्य अंतर क्या था?
(A) डच अखिल भारतीय साम्राज्य स्थापित करने में अधिक सफल रहे।
(B) अंग्रेजों ने अंततः डच की तुलना में व्यापार से क्षेत्रीय विजय की ओर अधिक प्रभावी ढंग से ध्यान केंद्रित किया।
(C) डच मसालों के व्यापार में रुचि नहीं रखते थे।
(D) अंग्रेज डच से पूर्व भारत आए थे।

245. 19वीं शताब्दी के भारत में जो 'राष्ट्रवाद' उत्पन्न हुआ वह था:
(A) बिना किसी भिन्नता के एक एकल, एकीकृत विचारधारा।
(B) एक एकल राष्ट्र बनाने की एक आधुनिक चेतना, जो पूर्व की क्षेत्रीय या वंशवादी निष्ठाओं से भिन्न थी।
(C) प्रशासन को सुगम बनाने के लिए अंग्रेजों द्वारा थोपा गया एक विचार।
(D) मुगल साम्राज्य को बहाल करने का एक आंदोलन।

246. भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना और विस्तार को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में सबसे अच्छी तरह वर्णित किया जा सकता है जिसमें सम्मिलित था:
(A) केवल शांतिपूर्ण संधियाँ और वार्ता।
(B) युद्ध, कूटनीति और सहायक संधि तथा व्यपगत के सिद्धांत जैसी नीतियों का संयोजन।
(C) सभी भारतीय शासकों का स्वैच्छिक समर्पण।
(D) एक एकल, निर्णायक युद्ध जिसने उन्हें पूरे उपमहाद्वीप पर नियंत्रण दे दिया।

247. अंग्रेजों के अंतर्गत स्थापित 'न्यायपालिका' का उद्देश्य क्या था?
(A) पारंपरिक भारतीय न्याय प्रणालियों को बनाए रखना।
(B) विधि के शासन की अवधारणा प्रस्तुत करना, यद्यपि इसे प्रायः जातीय पूर्वाग्रह के साथ लागू किया गया था।
(C) कार्यपालिका और न्यायपालिका को एक-दूसरे से पूर्णतः स्वतंत्र बनाना।
(D) भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय प्रजा पर सर्वोच्च अधिकार देना।

248. आर्थिक इतिहासकार आर.सी. दत्त ने अपने कार्य में व्यवस्थित रूप से किसका प्रलेखन किया?
(A) भारतीय कृषि के लिए ब्रिटिश शासन के लाभ।
(B) भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश भू-राजस्व नीतियों और वि-औद्योगीकरण का नकारात्मक प्रभाव।
(C) भारतीय श्रमिक वर्ग का उदय।
(D) ब्रिटिश मौद्रिक नीति की सफलता।

249. ब्रिटिश शिक्षा नीति के प्रभाव के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) इसने अंग्रेजी-शिक्षित भारतीयों के एक नए वर्ग का निर्माण किया।
(B) इसने लोकतंत्र और राष्ट्रवाद के आदर्शों को बढ़ावा दिया।
(C) इसके कारण आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा की पूर्णतः उपेक्षा हुई।
(D) इसके लाभ काफी हद तक शहरी उच्च और मध्यम वर्गों तक सीमित थे।

250. स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान 'लोकप्रिय समाचार पत्रों' ने किस रूप में कार्य किया?
(A) ब्रिटिश प्रचार के एक साधन के रूप में।
(B) राजनीतिक शिक्षा, लामबंदी और औपनिवेशिक शासन की आलोचना के एक उपकरण के रूप में।
(C) बिना किसी राजनीतिक महत्व के मनोरंजन के स्रोत के रूप में।
(D) एक व्यवसाय के रूप में जो सदैव लाभकारी था।

251. 'खिलाफत' आंदोलन ने अपनी प्रासंगिकता खो दी और कब समाप्त हो गया?
(A) जब ब्रिटिश सरकार ने उसकी सभी माँगें स्वीकार कर लीं।
(B) जब महात्मा गांधी ने अपना समर्थन वापस ले लिया।
(C) जब मुस्तफा कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की के लोगों ने स्वयं खलीफा के पद को समाप्त कर दिया।
(D) जब मुस्लिम लीग आंदोलन से पीछे हट गई।

252. आधुनिक भारत के 'राष्ट्रवादी' इतिहासकारों को प्रायः किस लिए श्रेय दिया जाता है?
(A) औपनिवेशिक शासन को उचित ठहराने के लिए।
(B) स्वतंत्रता संघर्ष का एक प्रेरणादायक विवरण प्रस्तुत करने के लिए जिसने राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा दिया।
(C) हाशिए पर रहने वाले लोगों के इतिहास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए।
(D) वर्ग संघर्ष के दृष्टिकोण से इतिहास का विश्लेषण करने के लिए।

253. 19वीं शताब्दी की शुरुआत में अंग्रेजों और मराठों के बीच संबंध किसके साथ समाप्त हुआ?
(A) एक शक्तिशाली आंग्ल-मराठा गठबंधन।
(B) मराठा परिसंघ का पूर्ण विघटन और ब्रिटिश सर्वोच्चता की स्थापना।

300. आधुनिक भारत में महिला संगठनों के उदय का क्या महत्व था?

(A) महिलाओं को सशक्त बनाने में ब्रिटिश नीति की सफलता।

(B) अपने अधिकारों और सामाजिक स्थिति के बारे में महिलाओं के बीच बढ़ती चेतना।

(C) पारिवारिक संरचना के महत्व में गिरावट।

(D) पुरुषों के नेतृत्व वाले समाज सुधार आंदोलनों की पूर्ण विफलता।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) सहायक संधि
सहायक संधि लॉर्ड वेलेज़्ली द्वारा प्रारंभ की गई एक अत्यंत महत्वपूर्ण विस्तारवादी नीति थी। इसके माध्यम से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय रियासतों को अपनी रक्षा और विदेशी संबंधों के नियंत्रण के बदले ब्रिटिश सैन्य टुकड़ी रखने हेतु विवश किया। इस सुरक्षा के बदले रियासत को नकद भुगतान करना पड़ता था या अपने क्षेत्र का एक उपजाऊ हिस्सा कंपनी को सौंपना पड़ता था। इसने भारतीय राजाओं की संप्रभुता को पूर्णतः समाप्त कर दिया।

2. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
राष्ट्रवादी और साम्राज्यवादी इतिहासलेखन आधुनिक भारतीय इतिहास को समझने के दो परस्पर विपरीत दृष्टिकोण हैं। राष्ट्रवादी विचारधारा ने भारत के गौरवशाली अतीत को महिमामंडित करने और औपनिवेशिक शासन के शोषणकारी चरित्र की तीखी आलोचना करने का प्रयास किया। दूसरी ओर, साम्राज्यवादी लेखकों ने अक्सर ब्रिटिश शासन को एक सभ्यता-प्रसार मिशन के रूप में प्रस्तुत किया और यह तर्क दिया कि भारतीय स्वयं शासन करने में सक्षम नहीं थे। अतः दोनों कथन पूर्णतः सत्य और सटीक हैं।

3. (C) स्थानीय स्वशासन प्रारंभिक कंपनी प्रशासन की एक प्रमुख विशेषता थी।
ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन काल के दौरान केंद्रीय प्रशासनिक संरचना का क्रमिक विकास हुआ और पुलिस तथा सेना की औपचारिक प्रणालियाँ स्थापित की गईं। हालाँकि, स्थानीय स्वशासन उस समय कंपनी प्रशासन की कोई प्रमुख विशेषता नहीं थी। स्थानीय स्वशासन का वास्तविक विकास और महत्व बाद में ब्रिटिश क्राउन के शासन के दौरान विशेष रूप से लॉर्ड रिपन के कार्यकाल में बढ़ा। कंपनी का मुख्य ध्यान केवल प्रशासनिक नियंत्रण और राजस्व संग्रह पर ही केंद्रित रहा।

4. (D) किसी रियासत का विलय यदि उसके शासक की मृत्यु बिना किसी प्राकृतिक उत्तराधिकारी के हो जाए।
लॉर्ड डलहौजी द्वारा कार्यान्वित व्यपगत का सिद्धांत एक आक्रामक विस्तारवादी नीति थी जिसके तहत किसी रियासत का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर लिया जाता था यदि उसके शासक की मृत्यु बिना किसी प्राकृतिक उत्तराधिकारी के हो जाती थी। इस नीति ने उत्तराधिकारी गोद लेने की प्राचीन भारतीय परंपरा को स्वीकार करने से स्पष्ट इनकार कर दिया। इसके माध्यम से सतारा, झाँसी और नागपुर जैसी कई महत्वपूर्ण रियासतों का अंग्रेजों द्वारा बलपूर्वक अधिग्रहण किया गया।

5. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ब्रिटिश शासन के दौरान कृषि के वाणिज्यीकरण ने भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया। किसानों को अपनी आजीविका के लिए आवश्यक खाद्य फसलों के स्थान पर बाजार की मांग वाली नकदी फसलें जैसे कपास, नील और अफीम उगाने के लिए विवश होना पड़ा। बाजार में मूल्य के उतार-चढ़ाव और उच्च राजस्व मांगों के कारण किसान ऋण के दुष्चक्र में बुरी तरह फंस गए। इससे साहूकारों पर उनकी निर्भरता और ऋणग्रस्तता काफी अधिक बढ़ गई।

6. (B) धोंडो केशव कर्वे
धोंडो केशव कर्वे एक महान भारतीय समाज सुधारक थे जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन महिला शिक्षा और विधवाओं के उत्थान हेतु समर्पित कर दिया। उन्होंने पुणे में विधवाओं के लिए एक आश्रम की स्थापना की और उनके पुनर्विवाह की प्रबल वकालत की। शिक्षा के क्षेत्र में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान वर्ष 1916 में बॉम्बे में प्रथम महिला विश्वविद्यालय की स्थापना करना था। उन्हें उनके अतुलनीय समाज सुधार प्रयासों के लिए सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

7. (D) भारतीय भाषा के समाचार पत्रों में राजद्रोहात्मक लेखन को नियंत्रित और दमित करना।
लॉर्ड लिटन द्वारा वर्ष 1878 में लागू देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाचार पत्रों की स्वतंत्रता को सीमित करना था। उस समय देशी प्रेस ब्रिटिश सरकार की जनविरोधी नीतियों की तीव्र आलोचना कर रहा था। यह कानून अत्यंत भेदभावपूर्ण था क्योंकि इसने केवल भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों को लक्षित किया और अंग्रेजी प्रेस को मुक्त रखा। इसका मुख्य लक्ष्य सरकारी आलोचना और राजद्रोहात्मक सामग्री के प्रसार को कठोरता से प्रतिबंधित करना था।

8. (A) P-2, Q-1, R-3, S-4
द्वैध शासन 1919 के अधिनियम द्वारा प्रांतों में प्रारंभ की गई दोहरी सरकार की एक जटिल प्रणाली थी। प्राच्यवाद पश्चिमी विद्वानों द्वारा पूर्वी संस्कृतियों के अध्ययन और उनकी व्याख्या से संबंधित एक विशिष्ट दृष्टिकोण था। सर्वोच्चता ब्रिटिश क्राउन का भारतीय रियासतों पर अंतिम संप्रभु अधिकार का दावा था। खिलाफत आंदोलन तुर्की के सुल्तान के धार्मिक अधिकार को बनाए रखने के लिए भारतीय मुसलमानों द्वारा शुरू किया गया एक महत्वपूर्ण वैश्विक और धार्मिक आंदोलन था।

9. (C) पुरातात्विक पुरावशेष
आधुनिक भारतीय इतिहास के अध्ययन हेतु अभिलेखीय सामग्री में मुख्य रूप से लिखित सरकारी रिकॉर्ड, आधिकारिक पत्राचार, डायरियाँ और समकालीन समाचार पत्र सम्मिलित होते हैं। पुरातात्विक पुरावशेष, जैसे प्राचीन खंडहर और सिक्के, सामान्यतः प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास के अध्ययन के लिए अधिक प्रासंगिक होते हैं। आधुनिक काल के लिए लिखित दस्तावेज, मौखिक साक्ष्य और समकालीन

साहित्य अधिक महत्वपूर्ण और विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं। इसलिए पुरातात्विक साक्ष्यों को आधुनिक काल के लिए अभिलेखीय सामग्री नहीं माना जाता।

10. (A) दादाभाई नौरोजी
दादाभाई नौरोजी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' में धन के निष्कासन का सिद्धांत प्रतिपादित किया। उन्होंने तर्क दिया कि ब्रिटिश शासन व्यवस्थित रूप से भारत के संसाधनों और धन को ब्रिटेन भेज रहा था, जिसके बदले में भारत को कोई लाभ नहीं मिल रहा था। यह प्रक्रिया भारत में बढ़ती निर्धनता का मुख्य कारण बनी। उनके इस विश्लेषण ने भारतीय राष्ट्रवादियों को ब्रिटिश आर्थिक शोषण को समझने और उसके विरुद्ध संगठित होने हेतु प्रेरित किया।

11. (A) केवल 1 और 2
पुर्तगाली भारत में व्यापारिक केंद्र स्थापित करने वाले प्रथम यूरोपीय थे जिन्होंने 1498 में कालीकट में प्रवेश किया। डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने मुख्य रूप से भारत से वस्त्रों, मसालों और अन्य वस्तुओं के व्यापार पर ध्यान केंद्रित किया। फ्रांसीसी भारत में व्यापारिक गतिविधियां शुरु करने वाली अंतिम प्रमुख यूरोपीय शक्ति थे, यद्यपि डेनिश भी सक्रिय थे। ब्रिटिश और डच के बीच प्रतिस्पर्धा ने भारतीय व्यापार के परिदृश्य को काफी सीमा तक प्रभावित किया और औपनिवेशिक संरचना की नींव रखी।

12. (B) उत्तर-पश्चिमी सीमा के राज्यों के साथ संबंध, विशेष रूप से अफगानिस्तान।
अंग्रेजों की अग्रगामी नीति मुख्य रूप से मध्य एशिया में रूसी विस्तार के भय से संचालित थी। इस नीति के तहत ब्रिटिश सरकार ने भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा को सुरक्षित करने हेतु अफगानिस्तान और पड़ोसी जनजातीय क्षेत्रों में सक्रिय हस्तक्षेप किया। इसका उद्देश्य इन क्षेत्रों में अपना प्रभाव बढ़ाना और एक सुरक्षा घेरा बनाना था ताकि ब्रिटिश भारत पर किसी भी बाहरी हमले को प्रभावी ढंग से रोका जा सके। यह नीति कई भीषण सीमावर्ती संघर्षों का कारण बनी।

13. (C) निम्नवर्गीय (सबॉल्टरन)
इतिहासलेखन का निम्नवर्गीय दृष्टिकोण पारंपरिक इतिहास के कुलीन-केंद्रित विवरणों को कड़ी चुनौती देता है। यह विचारधारा उन लोगों के अनुभवों और आवाजों पर ध्यान केंद्रित करती है जिन्हें अक्सर ऐतिहासिक विवरणों में उपेक्षित किया गया है, जैसे किसान, श्रमिक, महिलाएं और आदिवासी समूह। इसका मानना है कि इतिहास केवल महान नेताओं की कहानी नहीं है, बल्कि जनसाधारण की चेतना और संघर्ष भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। यह दृष्टिकोण भारतीय इतिहास को समझने का एक नवीन परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

14. (D) 1773 का रेगुलेटिंग अधिनियम
1773 का रेगुलेटिंग अधिनियम ब्रिटिश संसद द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन को विनियमित करने का प्रथम गंभीर प्रयास था। इसके द्वारा कलकत्ता में एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की गई और बंगाल के गवर्नर को गवर्नर-जनरल का पद दिया गया। इस अधिनियम ने कंपनी के कार्यों पर ब्रिटिश सरकार का प्रत्यक्ष नियंत्रण बढ़ा दिया और भारत में एक व्यवस्थित केंद्रीय प्रशासन की नींव रखी। इसने मद्रास और बॉम्बे प्रेसीडेंसी को बंगाल के गवर्नर-जनरल के अधीन कर दिया।

15. (B) 3, 4, 2, 1
भारत में यूरोपीय शक्तियों के आगमन का सही ऐतिहासिक क्रम पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश और अंत में फ्रांसीसी है। पुर्तगालियों ने पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में सबसे पहले अपने व्यापारिक केंद्र स्थापित किए। इसके बाद डच और ब्रिटिश सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत में व्यापार हेतु भारत आए। फ्रांसीसी भारत में अपने व्यापारिक केंद्र स्थापित करने वाली अंतिम प्रमुख यूरोपीय शक्ति थे। इस कालक्रम ने भारत में इन शक्तियों के बीच राजनीतिक और आर्थिक प्रतिस्पर्धा की एक लंबी पृष्ठभूमि तैयार की।

16. (B) आर.सी. दत्त - द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया
आर.सी. दत्त एक प्रमुख भारतीय आर्थिक इतिहासकार थे जिन्होंने 'द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' नामक अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी। इस कार्य में उन्होंने ब्रिटिश शासन के आर्थिक प्रभावों का गहरा विश्लेषण किया और बताया कि कैसे औपनिवेशिक नीतियों ने भारतीय कृषि और हस्तशिल्प को विनष्ट किया। दादाभाई नौरोजी मुख्य रूप से धन के निष्कासन के सिद्धांत हेतु जाने जाते हैं। दत्त का विश्लेषण भारतीय राष्ट्रवादियों के लिए ब्रिटिश आर्थिक शोषण के विरुद्ध एक शक्तिशाली और तार्किक आधार बन गया।

17. (B) महिला शिक्षा और समाज सुधार।
सावित्रीबाई फुले को भारत की प्रथम महिला शिक्षिका माना जाता है जिन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर महिलाओं और वंचित वर्गों की शिक्षा हेतु संघर्ष किया। उन्होंने पुणे में लड़कियों के लिए प्रथम स्कूल खोला और तत्कालीन पितृसत्तात्मक समाज की चुनौतियों का डटकर सामना किया। उन्होंने छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाई और विधवाओं के अधिकारों हेतु कार्य किया। उनका अतुलनीय योगदान आधुनिक भारतीय समाज में समानता और शिक्षा के प्रति एक मील का पत्थर है।

18. (A) वि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया और कृषि पर बढ़ता दबाव।
ब्रिटिश शासन के दौरान ब्रिटेन से सस्ते मशीन निर्मित सामानों की आमद ने भारत के समृद्ध हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों को पूर्णतः नष्ट कर दिया। इस विनाशकारी प्रक्रिया को वि-औद्योगीकरण कहा जाता है। इसके परिणामस्वरूप लाखों शिल्पकार और जुलाहे बेरोजगार हो गए और अपनी आजीविका हेतु केवल कृषि पर निर्भर होने को विवश हुए। इससे कृषि भूमि पर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव बढ़ गया और ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता तथा घोर आर्थिक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हुई।

19. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1878 का देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम अत्यधिक दमनकारी और भेदभावपूर्ण माना जाता था क्योंकि इसने केवल भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगाए।

अंग्रेजी प्रेस को इस कानून के दायरे से पूर्णतः बाहर रखा गया था, जो ब्रिटिश सरकार की दोहरी नीति को दर्शाता था। इसका उद्देश्य उन क्षेत्रीय समाचार पत्रों को चुप कराना था जो औपनिवेशिक प्रशासन की नीतियों की तीखी आलोचना कर रहे थे। इस कानून ने भारतीय बुद्धिजीवियों और राष्ट्रवादियों में भारी असंतोष पैदा किया।

20. (D) अंग्रेजों ने इस क्षेत्र पर नियंत्रण के लिए हैदर अली और टीपू सुल्तान के विरुद्ध युद्धों की एक श्रृंखला लड़ी।
अठारहवीं शताब्दी के अंत में मैसूर के हैदर अली और उनके पुत्र टीपू सुल्तान ने दक्षिण भारत में ब्रिटिश विस्तार को कड़ी चुनौती दी। इसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों और मैसूर के बीच चार युद्ध हुए, जिन्हें आंग्ल-मैसूर युद्ध कहा जाता है। टीपू सुल्तान की बहादुरी और सैन्य नवाचारों के बावजूद, 1799 में श्रीरंगपट्टनम के चौथे युद्ध में उनकी वीरगति के पश्चात अंग्रेजों ने मैसूर पर अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया और वहां वाडियार वंश को पुनः नाममात्र हेतु स्थापित किया।

21. (C) प्रांतीय विषयों का 'हस्तांतरित' और 'आरक्षित' श्रेणियों में विभाजन।
भारत शासन अधिनियम 1919 द्वारा प्रारंभ की गई द्वैध शासन प्रणाली ने प्रांतीय प्रशासन को दो स्पष्ट भागों में विभाजित किया। आरक्षित विषयों जैसे पुलिस, न्याय और वित्त पर गवर्नर का प्रत्यक्ष नियंत्रण था, जबकि हस्तांतरित विषयों जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य की जिम्मेदारी निर्वाचित भारतीय मंत्रियों को सौंपी गई थी। यह व्यवस्था भारतीयों को उत्तरदायी सरकार प्रदान करने का एक अत्यंत सीमित प्रयास था, क्योंकि वास्तविक शक्ति अभी भी गवर्नर के पास ही सुरक्षित बनी रही।

22. (B) सार्वभौमिक भाईचारे और तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन के अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
थियोसोफिकल सोसाइटी एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन था जिसने प्राचीन हिंदू धर्म और दर्शन के गौरव पर बल दिया। एनी बेसेंट के नेतृत्व में इस समाज ने भारतीयों में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति स्वाभिमान की भावना जागृत की। इसका उद्देश्य जाति और नस्ल के भेदभाव के बिना मानवता का एक सार्वभौमिक भाईचारा स्थापित करना था। इसने भारतीय पुनर्जागरण और राष्ट्रवादी आंदोलन के बौद्धिक आधार को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे शिक्षित भारतीयों का आत्मविश्वास और राष्ट्रीय चेतना काफी बढ़ी।

23. (D) जागीरदारी बंदोबस्त
अंग्रेजों ने भारत में राजस्व संग्रह हेतु तीन प्रमुख प्रणालियाँ लागू की थीं: स्थायी बंदोबस्त, रैयतवारी और महलवारी। स्थायी बंदोबस्त मुख्य रूप से बंगाल में लागू था, रैयतवारी दक्षिण और पश्चिम भारत में और महलवारी उत्तर-पश्चिमी प्रांतों में प्रचलित थी। जागीरदारी प्रणाली वास्तव में मुगल और मध्यकालीन भारत की एक पुरानी सामंती व्यवस्था थी, जिसे अंग्रेजों ने अपनी नई राजस्व नीतियों के तहत धीरे-धीरे समाप्त कर दिया था। अतः जागीरदारी अंग्रेजों की प्रमुख भू-राजस्व नीतियों में सम्मिलित नहीं थी।

24. (A) सामाजिक और आर्थिक वर्गों के बीच संघर्ष।
इतिहासलेखन का मार्क्सवादी स्कूल भारतीय इतिहास की व्याख्या मुख्य रूप से आर्थिक कारकों और वर्ग संघर्ष के आधार पर करता है। यह विचारधारा ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को एक शोषणकारी आर्थिक प्रणाली के रूप में देखती है जिसने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों के बीच तीव्र अंतर्विरोध उत्पन्न किए। राष्ट्रवादी संघर्ष को भी इस दृष्टिकोण में बुर्जुआ वर्ग और जनसाधारण के बीच के संबंधों के संदर्भ में विश्लेषित किया जाता है। इसका मुख्य बल उत्पादन के साधनों और सामाजिक वर्गों पर केंद्रित रहता है।

25. (C) 1857 के विद्रोह का भड़कना और प्रेस को नियंत्रित करने की आवश्यकता।
1857 के महान विद्रोह के दौरान ब्रिटिश सरकार को यह अनुभव हुआ कि समाचार पत्र और विभिन्न प्रकाशन विद्रोही भावनाओं को भड़काने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसी असंतोष को दबाने और सूचनाओं के प्रवाह को नियंत्रित करने हेतु लॉर्ड कैनिंग ने 1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम लागू किया। इस अधिनियम के तहत किसी भी प्रेस को संचालित करने हेतु सरकार से अनुमति लेना अनिवार्य कर दिया गया। सरकार को किसी भी राजद्रोहात्मक सामग्री को तत्काल जब्त करने का अधिकार मिल गया।

26. (A) रियासतों पर सर्वोच्च ब्रिटिश अधिकार का दावा, जो उनकी स्वदेशी संप्रभुता से ऊपर था।
सर्वोच्चता की अवधारणा ब्रिटिश क्राउन की वह नीति थी जिसके तहत उन्होंने स्वयं को भारत की समस्त रियासतों से ऊपर और अंतिम संप्रभु घोषित किया। इस सिद्धांत के अनुसार रियासतों की आंतरिक स्वायत्तता अत्यंत सीमित थी और अंग्रेज उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने या किसी शासक को पदच्युत करने का पूर्ण अधिकार रखते थे। 1858 के पश्चात यह नीति और अधिक स्पष्ट हो गई, जिसने यह स्थापित किया कि भारत में कोई भी शक्ति ब्रिटिश सत्ता के स्वतंत्र नहीं थी।

27. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना कर आधुनिक सुधारों की सुदृढ़ नींव रखी। स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज के माध्यम से वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर भारतीय आध्यात्मिकता को विश्व स्तर पर गौरव दिलाया। सर सैयद अहमद खान ने अलीगढ़ आंदोलन का सफल नेतृत्व किया ताकि मुसलमानों में आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा का प्रसार हो सके। ये सभी महान सुधारक भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं।

28. (B) एक ऐसी विचारधारा जो विभिन्न धार्मिक समुदायों के पृथक और विरोधी हितों पर बल देती है।
आधुनिक भारतीय इतिहास में सांप्रदायिकता एक ऐसी राजनीति का प्रतीक है जो धर्म को आधार बनाकर विभिन्न समूहों को विभाजित करती है। इस विचारधारा के अनुसार एक धर्म के लोगों के हित दूसरे धर्म के लोगों के हितों से अनिवार्य रूप से भिन्न और विरोधी होते हैं। अंग्रेजों ने अपनी 'फूट डालो

और राज करो' की नीति के तहत इसे निरंतर बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरुप भारतीय समाज में अविश्वास बढ़ा और अंततः देश का अत्यंत दुखद विभाजन हुआ।

29. (B) केवल 2
ब्रिटिश शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य प्रशासन हेतु एक वफादार और शिक्षित लिपिक वर्ग तैयार करना था। यद्यपि इसने पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली की उपेक्षा की, किंतु इसके परिणामस्वरुप भारत में एक नया अंग्रेजी-शिक्षित मध्यम वर्ग उभरा। इस वर्ग ने बाद में पश्चिमी लोकतांत्रिक और उदारवादी विचारों को अपनाया और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को बौद्धिक नेतृत्व प्रदान किया। यह कहना अनुचित होगा कि इसका सभी वर्गों पर एक समान सकारात्मक प्रभाव पड़ा, क्योंकि ग्रामीण जनता और महिलाएँ इससे वंचित रहीं।

30. (D) युद्धों की एक श्रृंखला जिसके परिणामस्वरुप अंततः मराठा शक्ति का दमन हुआ।
अठारहवीं शताब्दी के अंत और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में अंग्रेजों और मराठा परिसंघ के बीच तीव्र राजनीतिक और सैन्य प्रतिस्पर्धा रही। इसके परिणामस्वरुप तीन आंग्ल-मराठा युद्ध हुए। पानीपत के तीसरे युद्ध के पश्चात मराठों की आपसी कलह का लाभ उठाकर अंग्रेजों ने धीरे-धीरे उनकी शक्ति को क्षीण किया। 1818 में तीसरे युद्ध की समाप्ति के साथ मराठा साम्राज्य का पूर्ण पतन हो गया और भारत के एक विशाल भू-भाग पर ब्रिटिश संप्रभुता और प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित हो गया।

31. (A) द्वैध शासन - प्रांतों में एकल, एकीकृत सरकार की प्रणाली।
द्वैध शासन शब्द का वास्तविक अर्थ दोहरी सरकार की प्रणाली है, न कि एकल एकीकृत सरकार। इसे 1919 के भारत शासन अधिनियम द्वारा प्रांतों में लागू किया गया था, जिसमें शासन के विषयों को आरक्षित और हस्तांतरित श्रेणियों में विभाजित किया गया था। अन्य युग्म पूर्णतः सही हैं क्योंकि उपनिवेशवाद आर्थिक नियंत्रण की नीति है, व्यपगत का सिद्धांत उत्तराधिकारी विहीन राज्यों के विलय से जुड़ा है और खिलाफत आंदोलन तुर्की के खलीफा के धार्मिक समर्थन में चलाया गया था।

32. (B) राष्ट्रवादी और मार्क्सवादी दोनों कुलीन-केंद्रित इतिहासलेखन
इतिहासलेखन का निम्नवर्गीय या सबॉल्टरन स्कूल उन इतिहासकारों की आलोचना के रूप में उभरा जो इतिहास को केवल नेताओं और कुलीन वर्ग के दृष्टिकोण से देखते थे। राष्ट्रवादी और मार्क्सवादी स्कूलों ने भी अक्सर सामान्य जनता और हाशिए के समूहों की ऐतिहासिक भूमिका को पर्याप्त महत्व नहीं दिया था। निम्नवर्गीय स्कूल का मानना है कि इतिहास को नीचे से अर्थात किसानों, श्रमिकों और आदिवासियों की चेतना के आधार पर समझा जाना चाहिए, जिन्होंने औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया था।

33. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में अंग्रेजों ने आधुनिक उद्योगों के विकास को कभी भी अपनी प्राथमिकता नहीं दी। उनकी आर्थिक नीति का मुख्य लक्ष्य भारत को ब्रिटेन के कारखानों हेतु कच्चे माल का निर्यातक और वहां से तैयार होकर आने वाले सामानों का एक विशाल उपभोक्ता बाजार बनाना था। इसी कारण भारत में जो भी औद्योगिक विकास हुआ वह अत्यंत सीमित, असंतुलित और मुख्य रूप से ब्रिटिश पूंजी के नियंत्रण में था। इस संकुचित औपनिवेशिक दृष्टिकोण ने भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वतंत्र औद्योगिक विकास को बाधित किया।

34. (A) जर्मन
भारत में शुरुआती यूरोपीय व्यापारियों में पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश, डेनिश और फ्रांसीसी प्रमुख शक्तियाँ थीं। पुर्तगाली सबसे पहले आए और उसके बाद अन्य शक्तियों ने अपने-अपने व्यापारिक केंद्र स्थापित किए। जर्मन शक्तियों की उस समय भारत में कोई महत्वपूर्ण व्यापारिक या राजनीतिक उपस्थिति नहीं थी। इन यूरोपीय शक्तियों के बीच व्यापारिक एकाधिकार और क्षेत्रीय नियंत्रण हेतु लंबे समय तक संघर्ष चलता रहा, जिसमें अंततः अंग्रेजों ने अपनी सर्वोच्चता स्थापित की और पूरे उपमहाद्वीप पर अपना राजनीतिक प्रभुत्व जमाया।

35. (C) भारत पर अंग्रेजों के प्रशासनिक और सैन्य नियंत्रण को सुदृढ़ करना।
ब्रिटिश शासन ने भारत में सिविल सेवा, सेना, पुलिस और न्यायपालिका की स्थापना मुख्य रुप से अपने साम्राज्य की स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु की थी। इन संस्थाओं का उपयोग कानून-व्यवस्था बनाए रखने, राजस्व संग्रह करने और औपनिवेशिक राज्य के विरुद्ध उठने वाली किसी भी आवाज को कठोरता से दबाने हेतु किया गया। यद्यपि उन्होंने एक व्यवस्थित प्रशासनिक ढांचा प्रदान किया, किंतु इनका प्राथमिक उद्देश्य कभी भी भारतीयों का वास्तविक कल्याण या उन्हें स्व-शासन हेतु प्रशिक्षित करना नहीं रहा।

36. (C) केवल 1 और 3
वि-औद्योगीकरण ने वास्तव में भारतीय हस्तशिल्प के पतन और कृषि पर जनसंख्या की निर्भरता को बढ़ा दिया। ब्रिटिश मौद्रिक और राजस्व नीतियां सदैव ब्रिटेन के आर्थिक हितों की पूर्ति हेतु बनाई गई थीं, न कि भारत के लाभ हेतु। सरकारी नीतियों की संवेदनहीनता और राजस्व की कठोर वसूली ने अक्सर अकाल और महामारियों की स्थिति को और अधिक विनाशकारी तथा जानलेवा बना दिया। इस प्रकार प्रथम और तृतीय कथन सही हैं, जबकि द्वितीय कथन ऐतिहासिक वास्तविकता के पूर्णतः विपरीत और त्रुटिपूर्ण है।

37. (C) जाति व्यवस्था को चुनौती देना और निम्न जातियों तथा महिलाओं के लिए शिक्षा को बढ़ावा देना।
महात्मा ज्योतिबा फुले एक महान क्रांतिकारी समाज सुधारक थे जिन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। उनका मुख्य संघर्ष ब्राह्मणवादी वर्चस्व और जाति आधारित भेदभाव के विरुद्ध था। उन्होंने समाज के सबसे पिछड़े वर्गों और महिलाओं हेतु शिक्षा को सशक्तिकरण का मुख्य हथियार माना। फुले ने सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर भारत में प्रथम बार दलितों और लड़कियों हेतु विद्यालय खोले। उनकी प्रगतिशील विचारधारा ने आधुनिक भारत के दलित और सामाजिक न्याय आंदोलनों की अत्यंत सुदृढ़ नींव रखी।

38. (B) पश्चिमी विद्वानों द्वारा भारतीय भाषाओं, साहित्य और संस्कृति का अध्ययन।
प्राच्यवाद अठारहवीं शताब्दी के अंत में उभरा एक बौद्धिक दृष्टिकोण था जिसमें विलियम जोन्स जैसे विद्वानों ने संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं तथा प्राचीन ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया। इसका उद्देश्य भारत के प्राचीन ज्ञान को समझना और उसे पश्चिमी विश्व के सामने प्रस्तुत करना था। यद्यपि इसमें प्रशंसा का भाव था, किंतु यह अक्सर पश्चिमी श्रेष्ठता की भावना से प्रेरित था और इसका उपयोग औपनिवेशिक प्रशासन को अधिक प्रभावी ढंग से संचालित करने हेतु आवश्यक जानकारी प्राप्त करने में किया गया।

39. (D) गवर्नर-जनरल के अधीन सत्ता का बढ़ता केंद्रीकरण हुआ।
1773 के रेगुलेटिंग अधिनियम से लेकर 1853 के चार्टर अधिनियम तक ब्रिटिश प्रशासन का झुकाव स्पष्ट रूप से केंद्रीकरण की ओर था। बंगाल के गवर्नर-जनरल की शक्तियां निरंतर बढ़ाई गईं और मद्रास तथा बॉम्बे जैसी अन्य प्रेसीडेंसियों को उनके प्रशासनिक नियंत्रण में लाया गया। इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य विशाल ब्रिटिश भारतीय क्षेत्रों पर एक एकीकृत और प्रभावी प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित करना था। इससे निर्णय लेने की शक्ति कलकत्ता में केंद्रित हो गई और प्रांतीय स्वायत्तता काफी कम हो गई।

40. (A) 4, 2, 3, 1
ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम में रेगुलेटिंग अधिनियम 1773 में पारित हुआ, जो ब्रिटिश संसदीय नियंत्रण की औपचारिक शुरुआत थी। इसके बाद अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में रियासतों पर ब्रिटिश सर्वोच्चता का क्रमिक विकास हुआ। लॉर्ड डलहौजी ने 1840 के दशक के अंत में व्यपगत का सिद्धांत आक्रामक रूप से लागू किया। अंत में, भारत शासन अधिनियम 1919 के माध्यम से प्रांतों में द्वैध शासन की शुरुआत हुई। यह कालक्रम भारत में ब्रिटिश राजनीतिक और प्रशासनिक विस्तार के विभिन्न चरणों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

41. (C) अवध को सहायक संधि के अधीन किया गया था और पश्चात में कुशासन के आधार पर इसका विलय कर लिया गया।
अवध और अंग्रेजों के बीच के संबंध काफी जटिल और विश्वासघात से भरे रहे। अवध के नवाब ने प्रारंभिक काल में ही अंग्रेजों के साथ सहायक संधि कर ली थी। हालाँकि, 1856 में लॉर्ड डलहौजी ने कुशासन और प्रशासनिक अक्षमता का झूठा आरोप लगाकर अवध का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर लिया। यह निर्णय 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारणों में से एक बना क्योंकि अवध के सैनिकों और जनता ने इसे अपने आत्मसम्मान पर चोट और एक घोर विश्वासघात के रूप में देखा।

42. (A) औपनिवेशिक समाज का चित्रण करने वाले उपन्यास और कलाकृतियां
आधुनिक भारतीय इतिहास के अध्ययन में रचनात्मक साहित्य जैसे उपन्यास, कविताएँ और चित्रकला महत्वपूर्ण सांस्कृतिक स्रोत माने जाते हैं। ये स्रोत उस समय के सामाजिक लोकाचार, लोगों की आंतरिक भावनाओं और औपनिवेशिक शासन के प्रति जनसाधारण की प्रतिक्रियाओं को जीवंत रूप से दर्शाते हैं। बंकिम चंद्र चटर्जी जैसे लेखकों के उपन्यास और उस काल की विशिष्ट चित्रकला शैली उस समय के वैचारिक और सामाजिक परिवर्तन को समझने में सहायता करती हैं, जो सरकारी दस्तावेजों में अक्सर नहीं मिल पाते।

43. (D) आर्थिक शोषण और भारत से ब्रिटेन को धन का हस्तांतरण।
धन के निष्कासन के सिद्धांत ने यह स्पष्ट रूप से उजागर किया कि ब्रिटिश प्रशासन किस प्रकार भारतीय राजस्व और बहुमूल्य संसाधनों को वेतन, पेंशन और अन्य खर्चों के नाम पर निरंतर ब्रिटेन भेज रहा था। दादाभाई नौरोजी ने तर्क दिया कि यह निरंतर होने वाला आर्थिक प्रवाह भारत की व्यापक निर्धनता और आर्थिक पिछड़ेपन का मुख्य कारण है। इस सिद्धांत ने औपनिवेशिक शासन के इस दावे को कड़ी चुनौती दी कि वे भारत का विकास कर रहे हैं, और राष्ट्रवादी आंदोलन को सुदृढ़ आधार दिया।

44. (B) इसने एक छोटे, शहरी, अंग्रेजी-शिक्षित वर्ग का निर्माण किया जो प्रायः सरकारी नियोजन की खोज में रहता था।
ब्रिटिश शिक्षा नीति का मुख्य केंद्र जनशिक्षा न होकर एक विशिष्ट वर्ग का निर्माण करना था जो अंग्रेजों हेतु प्रशासनिक कार्यों में सहायक हो सके। इसके परिणामस्वरूप एक ऐसा मध्यम वर्ग उभरा जो अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित था। हालाँकि इस वर्ग ने बाद में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में भूमिका निभाई, किंतु तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था ने ग्रामीण जनता और तकनीकी प्रशिक्षण की घोर उपेक्षा की। इससे समाज में एक नई बौद्धिक और सामाजिक खाई उत्पन्न हुई।

45. (C) पारंपरिक कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प का पतन और विनाश।
वि-औद्योगीकरण औपनिवेशिक भारत की एक अत्यंत दुखद आर्थिक परिघटना थी। औद्योगिक क्रांति के पश्चात ब्रिटेन से आने वाले सस्ते और मशीन निर्मित उत्पादों ने भारतीय बुनकरों और कारीगरों के पारंपरिक बाजारों को विनष्ट कर दिया। इसके अतिरिक्त, भेदभावपूर्ण सीमा शुल्क और कंपनी की नीतियों ने भी भारतीय हस्तशिल्प के निर्यात को जानबूझकर हतोत्साहित किया। इसके कारण लाखों कुशल कारीगर अपनी आजीविका खो बैठे और कृषि की ओर लौटने को विवश हुए, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर अत्यधिक आर्थिक बोझ पड़ा।

46. (D) सैयद अहमद खान - ब्रह्म समाज
सर सैयद अहमद खान का नाम ब्रह्म समाज से नहीं, बल्कि अलीगढ़ आंदोलन और आधुनिक मुस्लिम शिक्षा के प्रसार से जुड़ा है। ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राम मोहन राय द्वारा की गई थी। दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज बनाया, एनी बेसेंट थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़ी थीं और ज्योतिबा फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। ये सभी संगठन अपने-अपने क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सामाजिक और धार्मिक सुधारों हेतु विख्यात हैं। अतः चौथा विकल्प गलत सुमेलित है और ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है।

47. (A) प्रतिनिधि तत्वों और प्रांतीय स्वायत्तता की क्रमिक शुरुआत।
1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधारों से लेकर 1935 के भारत शासन अधिनियम तक के काल में ब्रिटिश सरकार ने प्रशासन में भारतीयों की भागीदारी को धीरे-धीरे बढ़ाया। इन सुधारों ने विधायी परिषदों का विस्तार किया और प्रांतों को अधिक अधिकार प्रदान करने की दिशा में क्रमिक कदम उठाए। यद्यपि ये परिवर्तन पूर्ण स्वतंत्रता के राष्ट्रवादी लक्ष्य से बहुत दूर थे और इनमें सांप्रदायिक निर्वाचन जैसे विभाजनकारी तत्व सम्मिलित थे, फिर भी इन्होंने भारत के भविष्य के संवैधानिक ढांचे की आधारशिला रखने का कार्य किया।

48. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
सहायक संधि में राज्य की रक्षा और विदेशी मामलों पर ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित किया जाता था। व्यपगत का सिद्धांत प्राकृतिक उत्तराधिकारी न होने पर राज्यों के अनिवार्य विलय की नीति थी। अग्रगामी नीति मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिम सीमा पर सक्रिय हस्तक्षेप और विस्तार से संबंधित थी। सर्वोच्चता का अर्थ था रियासतों पर ब्रिटिश क्राउन का अंतिम संप्रभु अधिकार। ये सभी नीतियां भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार और सुदृढ़ीकरण हेतु विभिन्न कूटनीतिक और सैन्य उपकरणों के रूप में उपयोग की गई थीं।

49. (B) ऑटोमन साम्राज्य के प्रति ब्रिटिश सरकार के व्यवहार का विरोध करना और खलीफा के अधिकार को सुरक्षित रखना।
प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात तुर्की के सुल्तान और खलीफा के साथ किए गए अपमानजनक व्यवहार के विरोध में भारत में खिलाफत आंदोलन प्रारंभ हुआ। भारतीय मुसलमान खलीफा को अपना धार्मिक प्रमुख मानते थे और चाहते थे कि उनके अधिकार और साम्राज्य की पवित्रता अक्षुण्ण बनी रहे। महात्मा गांधी ने हिंदू-मुस्लिम एकता को सुदृढ़ करने हेतु इस आंदोलन का समर्थन किया और इसे असहयोग आंदोलन के साथ जोड़ दिया। यह आंदोलन औपनिवेशिक सरकार के विरुद्ध एक विशाल जन-प्रतिरोध के रूप में उभरा।

50. (A) धार्मिक शिकायतों के कारण हुआ एक सामान्य सैन्य विद्रोह।
साम्राज्यवादी इतिहासकार अक्सर 1857 की घटनाओं को मात्र एक सिपाही विद्रोह के रूप में चित्रित करते हैं, जो उनके अनुसार चर्बी वाले कारतूसों और कुछ धार्मिक अंधविश्वासों के कारण हुआ था। वे इसके गहरे राजनीतिक और आर्थिक कारणों, जैसे ब्रिटिश शोषण और रियासतों के विलय की क्रूर नीति की उपेक्षा करते हैं। उनके दृष्टिकोण में यह ब्रिटिश शासन की सभ्यता के विरुद्ध एक बर्बर प्रतिक्रिया थी, न कि स्वतंत्रता का कोई राष्ट्रीय संघर्ष। यह व्याख्या औपनिवेशिक सत्ता को न्यायोचित ठहराने का प्रयास करती है।

51. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ब्रिटिश शासन ने भारत में एक संगठित और व्यावसायिक पुलिस बल की स्थापना की ताकि विशाल उपमहाद्वीप पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखा जा सके। पुलिस का मुख्य कार्य केवल अपराध रोकना नहीं था, बल्कि औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध किसी भी प्रकार के राजनीतिक असंतोष या विद्रोह को कठोरता से दबाना भी था। इस बल ने साम्राज्य की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित की और ग्रामीण क्षेत्रों में भी राज्य की शक्ति को स्थापित किया। इसलिए पुलिस प्रशासन ब्रिटिश साम्राज्य का एक अनिवार्य स्तंभ था।

52. (D) निर्वाह कृषि से बाजार के लिए फसलों के उत्पादन की ओर परिवर्तन।
कृषि के वाणिज्यीकरण का तात्पर्य किसानों द्वारा केवल अपने परिवार के उपभोग हेतु फसलें उगाने के स्थान पर उन्हें बाजार में बेचने के उद्देश्य से उगाने से है। अंग्रेजों ने नील, चाय, कपास और अफीम जैसी नकदी फसलों को प्रोत्साहन दिया ताकि वे अपने औद्योगिक हितों और निर्यात व्यापार को पूरा कर सकें। इसने भारतीय ग्रामीण समाज के पारंपरिक आत्मनिर्भर ढांचे को छिन्न-भिन्न कर दिया और किसानों को वैश्विक बाजार की अनिश्चितताओं और साहूकारों के शोषण के प्रति अत्यंत संवेदनशील बना दिया।

53. (C) भारतीय संस्कृति के साथ आधुनिक पश्चिमी शिक्षा का समन्वय।
राजा राम मोहन राय एक दूरदर्शी विचारक थे जिन्होंने अनुभव किया कि भारत की प्रगति हेतु पारंपरिक ज्ञान के साथ आधुनिक विज्ञान और पश्चिमी दर्शन का संगम आवश्यक है। उन्होंने अंग्रेजी भाषा की शिक्षा का समर्थन किया ताकि भारतीय आधुनिक लोकतांत्रिक और तर्कसंगत विचारों से परिचित हो सकें। उन्होंने हिंदू कॉलेज जैसी संस्थाओं के माध्यम से एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत की जो रुढ़िवाद को चुनौती दे सके और भारतीयों के मानसिक क्षितिज का विस्तार कर राष्ट्र निर्माण में सहयोग प्रदान कर सके।

54. (B) एक साझा पहचान की चेतना और एक राष्ट्र के रूप में राजनीतिक एकता तथा संप्रभुता की आकांक्षा।
आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का उदय औपनिवेशिक शासन की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ, जिसने विभिन्न क्षेत्रीय, भाषाई और धार्मिक पहचानों के लोगों को एक साझा शत्रु के विरुद्ध एकजुट किया। यह केवल सांस्कृतिक लगाव नहीं था, बल्कि एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में अपनी नियति का स्वयं निर्धारण करने की एक प्रबल राजनीतिक इच्छा थी। साझा शोषण के अनुभवों और आधुनिक संचार साधनों ने भारतीयों में इस भावना को सुदृढ़ किया कि वे एक ही भौगोलिक और राजनीतिक इकाई के अभिन्न अंग हैं।

55. (D) सिंध की विजय और मराठों के पतन के बाद पंजाब क्षेत्र का रणनीतिक महत्व।
उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक अंग्रेजों ने भारत के अधिकांश भू-भाग पर अधिकार कर लिया था और अब उनकी दृष्टि समृद्ध तथा रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण पंजाब पर थी। महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात पंजाब में उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता ने अंग्रेजों को हस्तक्षेप का अवसर दिया। वे उत्तर-पश्चिमी सीमा को सुरक्षित करना चाहते थे और पंजाब की उपजाऊ भूमि तथा राजस्व पर नियंत्रण करना चाहते थे। इसके परिणामस्वरूप दो

मौजूद गहरे जातिगत, वर्गीय और लैंगिक विभाजनों की अक्सर उपेक्षा की। यह स्कूल अक्सर यह दिखाने का प्रयास करता था कि पूरा भारत एक ही उद्देश्य हेतु एकजुट था, जिससे समाज के आंतरिक सामाजिक अंतर्विरोधों की जटिलता को समझने में कठिनाई होती है।

74. (B) केवल 2 और 3
1857 के विद्रोह के पश्चात ब्रिटिश सरकार ने भारत का शासन सीधे क्राउन के अधीन ले लिया। उन्होंने अपनी प्रशासनिक पकड़ सुदृढ़ करने हेतु सिविल सेवा, सेना और पुलिस का व्यापक पुनर्गठन किया ताकि भविष्य में कोई विद्रोह न हो सके। साथ ही, वित्तीय भार कम करने और कुछ भारतीयों को प्रशासन में सम्मिलित करने हेतु स्थानीय स्वशासन के सीमित प्रयास भी किए गए। हालाँकि, सर्वोच्चता की नीति को त्यागा नहीं गया, बल्कि उसे और अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित कर रियासतों पर नियंत्रण बढ़ाया गया।

75. (D) भारतीय उद्योगों के पतन और भू-राजस्व नीतियों के प्रभाव का विश्लेषण करना।
रमेश चंद्र दत्त एक प्रख्यात आर्थिक इतिहासकार थे जिन्होंने ब्रिटिश शासन के विनाशकारी आर्थिक पहलुओं पर गहरा प्रकाश डाला। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे अंग्रेजों की अत्यधिक भू-राजस्व मांग ने किसानों को कंगाल कर दिया और बार-बार आने वाले भीषण अकालों का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि जानबूझकर बनाई गई औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों के कारण ही भारत के विश्व प्रसिद्ध हस्तशिल्प और उद्योग पूरी तरह बर्बाद हो गए। उनके कार्य ने भारतीय आर्थिक राष्ट्रवाद को वैज्ञानिक आधार दिया।

76. (B) भारतीयों को उनकी प्राचीन दार्शनिक और धार्मिक विरासत पर गर्व अनुभव करने के लिए प्रोत्साहित करके।
एनी बेसेंट और थियोसोफिकल सोसाइटी ने तर्क दिया कि हिंदू धर्म और प्राचीन भारतीय दर्शन सर्वश्रेष्ठ हैं और पश्चिमी भौतिकवाद का श्रेष्ठ विकल्प प्रदान करते हैं। इस दृष्टिकोण ने शिक्षित भारतीयों के मन से हीन भावना को दूर किया और उनमें अपने धर्म तथा संस्कृति के प्रति नया आत्मविश्वास जगाया। इस सांस्कृतिक पुनरुद्धार ने अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक राष्ट्रवाद को बल दिया, क्योंकि लोगों ने अनुभव किया कि एक महान विरासत वाला राष्ट्र विदेशी शासन के अधीन लंबे समय तक नहीं रहना चाहिए।

77. (C) प्रशासन के विषयों का ब्रिटिश अधिकारियों और भारतीय मंत्रियों के बीच विभाजन।
1919 के सुधारों के तहत द्वैध शासन का उद्देश्य प्रांतों में उत्तरदायी सरकार की शुरुआत करना था। इसके तहत शिक्षा, स्वास्थ्य और स्थानीय निकाय जैसे 'हस्तांतरित' विषय भारतीय मंत्रियों को दिए गए, जो विधायिका के प्रति जवाबदेह थे। दूसरी ओर, राजस्व, पुलिस और न्याय जैसे महत्वपूर्ण 'आरक्षित' विषय गवर्नर और उनकी परिषद के अधीन रहे। यह व्यवस्था दोषपूर्ण थी क्योंकि मंत्रियों के पास बिना वित्तीय नियंत्रण के विकास कार्य करना असंभव था, जिससे यह प्रयोग विफल रहा और शासन में जटिलता बढ़ी।

78. (D) अंग्रेजों ने पुर्तगालियों की तुलना में व्यवस्थित क्षेत्रीय विस्तार और आर्थिक एकीकरण पर अधिक ध्यान केंद्रित किया।
यद्यपि पुर्तगाली भारत आने वाले प्रथम यूरोपीय थे, किंतु उनका प्रभाव मुख्य रूप से तटीय क्षेत्रों और धार्मिक परिवर्तन तक ही सीमित रहा। इसके विपरीत, अंग्रेजों ने व्यापार के साथ-साथ कूटनीति और युद्ध के माध्यम से पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर व्यवस्थित राजनीतिक और प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित किया। उन्होंने रेलवे, टेलीग्राम और एक केंद्रीकृत कानून प्रणाली के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था को ब्रिटेन के वैश्विक बाजार के साथ एकीकृत किया, जिससे वे एक स्थायी और विशाल साम्राज्य स्थापित करने में सफल रहे।

79. (A) ब्रिटिश भारत के इतिहास पर आज की एक पाठ्यपुस्तक।
प्राथमिक स्रोत वे दस्तावेज या सामग्रियाँ होती हैं जो अध्ययन किए जा रहे काल के दौरान ही उत्पन्न हुई हों, जैसे सरकारी रिकॉर्ड, उस समय के समाचार पत्र, संस्मरण और समकालीन कलाकृतियां। आज की एक पाठ्यपुस्तक वास्तव में एक द्वितीयक स्रोत है क्योंकि यह प्राथमिक स्रोतों के विश्लेषण और व्याख्या पर आधारित होती है। यह उस समय का प्रत्यक्ष साक्ष्य नहीं है, बल्कि बाद में संकलित की गई जानकारी और निष्कर्ष है। अतः इतिहास शोध में इन दोनों के बीच अंतर करना अत्यंत आवश्यक है।

80. (B) इसका परोपकारी और उदार चरित्र, जो प्रायः प्रत्यक्ष संघर्ष के स्थान पर विधायती सुधारों की मांग करता था।
भारत में शुरुआती श्रमिक आंदोलनों का नेतृत्व अक्सर एन.एम. लोखंडे जैसे समाज सुधारकों ने किया था। ये नेता उग्र हड़तालों के बजाय श्रमिकों की दशा सुधारने हेतु सरकार से प्रार्थना करने और कानूनी बदलावों पर बल देते थे। वे मिल स्वामियों और सरकार के साथ सहयोग करके कार्य के घंटों में कमी और रविवार की छुट्टी जैसी बुनियादी माँगें रखते थे। इस चरण में आंदोलन में वैचारिक कठोरता का अभाव था और यह मुख्य रूप से मानवीय सहानुभूति और उदारवादी दृष्टिकोण पर आधारित था।

81. (B) राजस्व की मांग और खाद्यान्न के निर्यात जैसी सरकारी नीतियों ने प्रायः अकाल के प्रभाव को और अधिक गंभीर कर दिया।
ब्रिटिश शासन के दौरान अकाल केवल प्रकृति की मार नहीं थे, बल्कि औपनिवेशिक नीतियों का परिणाम थे। अकाल के समय भी अंग्रेज भारी भू-राजस्व की वसूली करते रहे और भारत से अनाज का निर्यात ब्रिटेन को जारी रखा गया। सरकार ने 'अहस्तक्षेप' की कठोर आर्थिक नीति अपनाई, जिससे राहत कार्यों में अत्यधिक विलंब हुआ। इन कारणों से सामान्य सूखे की स्थिति भी व्यापक भुखमरी और लाखों लोगों की अकाल मृत्यु का कारण बनी, जिसने ब्रिटिश प्रशासन की क्रूरता और संवेदनहीनता को उजागर किया।

बना दिया और दक्षिण भारत में अंग्रेजों की राजनीतिक स्थिति को बहुत सुदृढ़ किया।

65. (B) इसमें न्यायालयों के पदानुक्रम की स्थापना और कानूनों का संहिताकरण सम्मिलित था।
ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन के तहत न्यायपालिका का विकास विधि के शासन की आधुनिक अवधारणा पर आधारित था। अंग्रेजों ने जिला स्तर से लेकर सदर अदालतों तक न्यायालयों का एक व्यवस्थित पदानुक्रम स्थापित किया। बाद में लॉर्ड मैकाले जैसे विधि विशेषज्ञों के प्रयासों से कानूनों का संहिताकरण किया गया ताकि पूरे ब्रिटिश भारत में एक समान कानूनी प्रक्रिया लागू हो सके। यद्यपि इसमें यूरोपीय लोगों के प्रति पक्षपात था, किंतु इसने भारत में आधुनिक कानूनी प्रणाली और न्यायिक प्रक्रिया की नींव रखी।

66. (A) प्रारंभिक कानून जिन्होंने कार्य के घंटों और स्थितियों को विनियमित करने का प्रयास किया, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों के लिए।
उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में आधुनिक कारखानों के उदय के साथ ही श्रमिकों के शोषण की समस्याएँ बढ़ गईं। इसके उत्तर में ब्रिटिश सरकार ने प्रथम कारखाना अधिनियम 1881 में पारित किया। इन अधिनियमों का उद्देश्य बच्चों के काम करने की न्यूनतम आयु निर्धारित करना और महिलाओं हेतु काम के घंटों को सीमित करना था। यद्यपि ये कानून काफी हद तक अपर्याप्त थे, किंतु इन्होंने भारत में श्रम कल्याण के क्षेत्र में विधायी हस्तक्षेप की शुरुआत की और श्रमिक अधिकारों की दिशा में कदम बढ़ाया।

67. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्वामी विवेकानंद ने अपने ओजस्वी संदेशों के माध्यम से भारतीय युवाओं में एक नई ऊर्जा और आत्मविश्वास का संचार किया। उन्होंने धर्म को केवल पूजा-पाठ तक सीमित न रखकर उसे 'दरिद्र नारायण' की सेवा से जोड़ा। शिकागो धर्म संसद में उनके भाषण ने विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा बढ़ाई। उनके आध्यात्मिक राष्ट्रवाद और आत्मशक्ति के आह्वान ने कई स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरित किया, जिससे वे औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध खड़े होने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो सके और राष्ट्रीय गौरव बढ़ा।

68. (D) आधुनिक उद्योगों और कारखाना कार्यबल का उदय।
भारत में रेलवे, जूट और सूती वस्त्र जैसे आधुनिक उद्योगों के विकास के साथ ही एक विशाल श्रमिक वर्ग अस्तित्व में आया। इन कारखानों में कार्य की कठोर परिस्थितियां, अत्यंत कम वेतन और लंबे कार्य घंटों के कारण श्रमिकों में भारी असंतोष बढ़ा। इसी असंतोष ने धीरे-धीरे संगठित श्रमिक आंदोलनों और ट्रेड यूनियनों के गठन को जन्म दिया। ये आंदोलन शुरू में केवल आर्थिक मांगों तक सीमित थे, लेकिन बाद में वे व्यापक राष्ट्रवादी संघर्ष का एक अभिन्न हिस्सा बन गए और राजनीतिक चेतना बढ़ी।

69. (C) 1829 का सती निषेध अधिनियम
सती प्रथा एक अमानवीय सामाजिक बुराई थी जिसे समाप्त करने हेतु राजा राम मोहन राय ने निरंतर संघर्ष किया। उनके द्वारा चलाए गए व्यापक अभियान और जनमत तैयार करने के प्रयासों के परिणामस्वरूप लॉर्ड विलियम बेंटिक ने 1829 में सती प्रथा को अवैध और दंडनीय घोषित किया। यह कानून इस बात का प्रमाण था कि भारतीय समाज सुधारक और प्रगतिशील ब्रिटिश प्रशासक मिलकर समाज की जड़ परंपराओं को बदलने और महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने में सक्षम थे। इसने सामाजिक सुधारों का मार्ग प्रशस्त किया।

70. (B) एक बढ़ती हुई इकाई, लेकिन समय-समय पर नियमों और प्रतिबंधों के अधीन।
1857 से पूर्व भारत में प्रेस का निरंतर विकास हो रहा था, जिसमें हिक्की के बंगाल गजट जैसे समाचार पत्रों ने नींव रखी थी। राजा राम मोहन राय जैसे सुधारकों ने प्रेस का उपयोग सामाजिक चेतना हेतु किया। हालाँकि, ब्रिटिश सरकार प्रेस की बढ़ती स्वतंत्रता से चिंतित थी और उसने समय-समय पर दमनकारी नियम लागू किए। जेम्स एडम्स और मेटकाफ जैसे अधिकारियों के अधीन प्रेस की स्थिति बदलती रही, जिससे यह स्पष्ट था कि प्रेस सरकार की कड़ी निगरानी और नियंत्रण में बना हुआ था।

71. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
लॉर्ड वेलेज़ली सहायक संधि के मुख्य प्रवर्तक थे, जिसके माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार किया। लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत का सिद्धांत अपनाकर कई महत्वपूर्ण राज्यों का विलय किया। खिलाफत आंदोलन का मुख्य केंद्र तुर्की का ऑटोमन सुल्तान था, जिसे विश्व के मुसलमान अपना खलीफा मानते थे। दादाभाई नौरोजी ने धन के निष्कासन का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसने ब्रिटिश आर्थिक शोषण को उजागर किया। ये सभी व्यक्तित्व और नीतियां आधुनिक भारतीय इतिहास के निर्माण और राष्ट्रवादी चेतना में अत्यंत महत्वपूर्ण रही हैं।

72. (A) अवध
लॉर्ड डलहौजी ने 1856 में अवध का विलय यह तर्क देकर किया कि वहां का नवाब वाजिद अली शाह प्रशासन चलाने में पूर्णतः अक्षम है और जनता कुशासन का शिकार हो रही है। अंग्रेजों ने इसे जनकल्याण के रूप में प्रस्तुत किया, किंतु भारतीय जनता और सैनिकों ने इसे एक साम्राज्यवादी लूट के रूप में देखा। इस विलय ने अवध की जनता और सेना में गहरा रोष उत्पन्न किया, जिसके परिणामस्वरूप 1857 के विद्रोह में इस क्षेत्र ने सबसे सक्रिय, संगठित और हिंसक भूमिका निभाई थी।

73. (C) राष्ट्रीय संघर्ष का एक एकीकृत विवरण प्रस्तुत करने के लिए आंतरिक सामाजिक संघर्षों को कम करके आंकने की प्रवृत्ति के लिए।
राष्ट्रवादी इतिहासलेखन ने मुख्य रूप से औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध भारतीयों की सामूहिक एकता पर ध्यान केंद्रित किया। यद्यपि इसने राष्ट्रीय चेतना जगाने में बड़ी भूमिका निभाई, किंतु आलोचकों का मानना है कि इसने भारतीय समाज के भीतर

91. (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
साम्राज्यवादी इतिहासलेखन ब्रिटिश शासन को एक आधुनिकीकरण करने वाली शक्ति के रूप में देखता था। राष्ट्रवादी स्कूल ने इतिहास को स्वतंत्रता संघर्ष की प्रेरक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया। मार्क्सवादी स्कूल ऐतिहासिक बदलावों के पीछे वर्ग संघर्ष और आर्थिक कारणों को सबसे महत्वपूर्ण मानता है। निम्नवर्गीय या सबॉल्टरन स्कूल का मुख्य बल सामान्य जनता और उनके स्थानीय संघर्षों को उजागर करने पर रहता है। ये चारों स्कूल आधुनिक भारतीय इतिहास को समझने हेतु विभिन्न वैचारिक आयाम प्रदान करते हैं जो शोध हेतु आवश्यक हैं।

92. (B) औपनिवेशिक शासन की परिस्थितियों में इसके विरोध में उभरी एक आधुनिक परिघटना।
भारत में राष्ट्रवाद का उदय एक क्रमिक और आधुनिक प्रक्रिया थी जो उन्नीसवीं शताब्दी में प्रारंभ हुई। साझा औपनिवेशिक शोषण, अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से प्राप्त लोकतांत्रिक विचारों और रेल तथा प्रेस जैसे संचार साधनों ने भारतीयों को एक सूत्र में बांधा। यह पूर्व की क्षेत्रीय निष्ठाओं से भिन्न एक ऐसी चेतना थी जिसने पूरे भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखा। इस प्रकार राष्ट्रवाद स्वयं उपनिवेशवाद की ही उपज थी, जिसने अंततः उसी विदेशी सत्ता को चुनौती दी जिसने अनजाने में इसे जन्म दिया था।

93. (C) जीवनियाँ एक व्यक्तिगत और प्रायः व्यक्तिपरक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, जबकि अभिलेखीय सामग्री आधिकारिक विवरण हैं।
अभिलेखीय सामग्री जैसे सरकारी राजपत्र और फाइलें राज्य की नीतियों और प्रशासनिक निर्णयों का वस्तुनिष्ठ विवरण देती हैं। इसके विपरीत, जीवनियाँ और संस्मरण किसी व्यक्ति के निजी अनुभवों, आंतरिक भावनाओं और उसकी विशिष्ट विचारधारा को दर्शाते हैं। यद्यपि जीवनियाँ अधिक रोचक और मानवीकृत विवरण प्रदान करती हैं, किंतु उनमें व्यक्तिगत पूर्वाग्रह होने की संभावना अधिक होती है। इतिहासकार इन दोनों स्रोतों का तुलनात्मक अध्ययन करके किसी ऐतिहासिक घटना की अधिक स्पष्ट और संतुलित तस्वीर प्राप्त करने का सफल प्रयास करते हैं।

94. (D) भारतीयों को शासन की कला में प्रशिक्षित करना और केंद्रीय खजाने पर वित्तीय भार को कम करना।
लॉर्ड रिपन द्वारा शुरु की गई स्थानीय स्वशासन की नीति के पीछे दो प्रमुख उद्देश्य थे। प्रथम, स्थानीय स्तर पर स्वच्छता और शिक्षा जैसे कार्यों का प्रबंधन स्थानीय लोगों को सौंपकर केंद्रीय प्रशासन का बोझ कम करना और वित्तीय दक्षता बढ़ाना। द्वितीय उद्देश्य भारतीयों की राजनीतिक आकांक्षाओं को संतुष्ट करना था। यद्यपि यह पूर्ण लोकतंत्र नहीं था, किंतु इसने भारतीयों को नगरपालिकाओं और बोर्डों के माध्यम से प्रशासनिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर दिया, जिसे बाद में राष्ट्रवादी आंदोलन और नेताओं ने अत्यंत सराहा।

95. (A) केवल 1 और 2
दादाभाई नौरोजी और आर.सी. दत्त जैसे आर्थिक इतिहासकारों ने ब्रिटिश शासन की कथित गौरवशाली छवि को विनष्ट कर दिया। उन्होंने अपने सांख्यिकीय और ऐतिहासिक विश्लेषण से सिद्ध किया कि ब्रिटिश नीतियां भारत को समृद्ध बनाने के स्थान पर उसे खोखला कर रही थीं। उन्होंने राजस्व व्यवस्था, वि-औद्योगीकरण और धन के निरंतर निष्कासन को भारतीय गरीबी का मूल कारण बताया। यह कहना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि उन्होंने अंग्रेजों की प्रशंसा की; बल्कि उनके कार्यों ने ब्रिटिश राज की नैतिक आधारशिला पर ही कड़ा प्रहार किया।

96. (B) "वेदों की ओर लौटो" का आह्वान और मूर्तिपूजा तथा कठोर जाति व्यवस्था जैसी पश्चात की बुराइयों की अस्वीकृति।
स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज के माध्यम से हिंदू समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और कुरीतियों के विरुद्ध एक शक्तिशाली आंदोलन चलाया। उन्होंने वेदों को ज्ञान का अंतिम और शुद्धतम स्रोत माना और मध्यकालीन बुराइयों जैसे मूर्तिपूजा, छुआछूत और बाल विवाह का पुरजोर विरोध किया। उनका दृष्टिकोण तर्कसंगत और सुधारवादी था, जिसने न केवल धार्मिक शुद्धि पर बल दिया बल्कि शिक्षा के प्रसार और राष्ट्रीय आत्म-सम्मान की भावना को भी अभूतपूर्व मजबूती प्रदान की जिससे सामाजिक जागृति आई।

97. (B) वे समाचार पत्र जिनका भारतीय जनता के बीच व्यापक प्रसार और प्रभाव था।
लोकप्रिय समाचार पत्रों का तात्पर्य उन प्रकाशनों से है जिन्होंने आम जनता की भाषा में संवाद किया और उनके वास्तविक मुद्दों को उठाया। 'अमृत बाज़ार पत्रिका', 'केसरी' और 'मराठा' जैसे समाचार पत्रों ने औपनिवेशिक शासन की कमियों को उजागर किया और लोगों में देशभक्ति की भावना जागृत की। ये पत्र केवल सूचना के स्रोत नहीं थे, बल्कि राजनीतिक शिक्षा और जन-लामबंदी के प्रभावी उपकरण थे। उनकी व्यापक पाठक संख्या ने ब्रिटिश सरकार को दमनकारी प्रेस कानून लागू करने हेतु विवश कर दिया था।

98. (A) ब्रिटिश शक्ति के प्रति भारतीय राज्यों की अप्रत्यक्ष राजनीतिक और सैन्य अधीनता।
सहायक संधि एक चतुर कूटनीतिक नीति थी जिसने भारतीय शासकों को बिना प्रत्यक्ष युद्ध के ही अंग्रेजों पर निर्भर बना दिया। इस संधि को स्वीकार करने वाले राज्य को अपनी स्वतंत्र सेना भंग करनी पड़ती थी और बदले में ब्रिटिश सेना को अपने खर्च पर रखना पड़ता था। इसके अतिरिक्त, राज्य के दरबार में एक ब्रिटिश रेजिडेंट नियुक्त रहता था जो विदेशी नीति और महत्वपूर्ण आंतरिक निर्णयों को नियंत्रित करता था। इसने रियासतों की संप्रभुता को पूर्णतः समाप्त कर उन्हें अंग्रेजों के अधीन कर दिया।

99. (C) श्रेष्ठ नौसैनिक शक्ति, वित्तीय संसाधन और ब्रिटिश सरकार के समर्थन के कारण।
भारत में अंग्रेजों की सफलता का मुख्य कारण उनकी श्रेष्ठ नौसेना थी जिसने समुद्री व्यापार और आपूर्ति मार्गों पर उनका पूर्ण नियंत्रण सुनिश्चित किया। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को

82. (A) अन्य महिलाओं, विशेष रूप से विधवाओं की शिक्षा और कल्याण के लिए कार्य करने वाली महिला।
पंडिता रमाबाई महिला अधिकारों और शिक्षा की एक साहसी प्रवर्तक थीं। उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए पुणे में 'आर्य महिला समाज' की स्थापना की और विधवाओं हेतु 'शारदा सदन' नामक एक आश्रय गृह खोला। उन्होंने महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने हेतु उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण देने पर विशेष बल दिया। उनका जीवन और कार्य उस समय की महिलाओं हेतु अत्यंत प्रेरणादायक था, क्योंकि उन्होंने सिद्ध किया कि महिलाएँ अपने आत्मसम्मान और अधिकारों हेतु संघर्ष कर सकती हैं और सफल हो सकती हैं।

83. (C) वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम - लॉर्ड लिटन
लॉर्ड लिटन ने 1878 में देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम पारित किया था, जो भारतीय प्रेस के दमन का एक प्रमुख उदाहरण है। स्थानीय स्वशासन लॉर्ड रिपन से संबंधित है, व्यपगत का सिद्धांत लॉर्ड डलहौजी से और सहायक संधि लॉर्ड वेलेज़ली की नीति थी। लिटन के इस दमनकारी कानून ने क्षेत्रीय भाषाओं के समाचार पत्रों पर कड़ी सेंसरशिप लगा दी थी, जिसकी राष्ट्रवादियों द्वारा व्यापक आलोचना की गई। अतः केवल तीसरा विकल्प ऐतिहासिक रूप से सही ढंग से सुमेलित है, जबकि अन्य त्रुटिपूर्ण हैं।

84. (A) 2, 3, 1, 4
समाज सुधारों और ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम में राजा राम मोहन राय का सती विरोधी अभियान 1820 के दशक में सबसे पहले आया। इसके पश्चात 1840 और 1850 के दशक में ज्योतिबा फुले ने शिक्षा और जाति सुधार पर महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ किया। 1860 के दशक के अंत में दादाभाई नौरोजी ने धन के निष्कासन का सिद्धांत प्रतिपादित किया। अंत में, 1893 में स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में विश्व धर्म संसद में अपना प्रसिद्ध भाषण दिया। यह कालक्रम भारत के वैचारिक और सामाजिक परिवर्तन को दर्शाता है।

85. (C) कर्नाटक युद्ध
अठारहवीं शताब्दी के मध्य में भारत में वर्चस्व स्थापित करने हेतु अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच तीन कर्नाटक युद्ध हुए। इन युद्धों में फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले की प्रारंभिक सफलताओं के बावजूद, अंग्रेजों ने अपनी श्रेष्ठ नौसैनिक शक्ति और बंगाल से प्राप्त असीमित संसाधनों के बल पर फ्रांसीसियों को निर्णायक रूप से पराजित किया। 1760 के वांडीवाश के युद्ध के पश्चात भारत में फ्रांसीसियों की राजनीतिक शक्ति समाप्त हो गई और अंग्रेजों हेतु पूरे उपमहाद्वीप पर प्रभुत्व जमाने का मार्ग प्रशस्त हो गया, जिससे वे निर्विवाद बने।

86. (B) यह बुर्जुआ वर्ग के नेतृत्व में एक आंदोलन था ताकि वे अपने वर्ग हितों को सुरक्षित करने के लिए उपनिवेशवाद के विरुद्ध जनता को संगठित कर सकें।
मार्क्सवादी इतिहासकार भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का विश्लेषण वर्ग संबंधों के आधार पर करते हैं। उनका मानना है कि भारतीय बुर्जुआ वर्ग अर्थात पूंजीपति और शिक्षित वर्ग अपनी आर्थिक उन्नति हेतु ब्रिटिश बाधाओं को दूर करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने किसानों और मजदूरों को राष्ट्रवादी नारों के माध्यम से अपने साथ जोड़ा। इस दृष्टिकोण के अनुसार, राष्ट्रवाद एक ऐसा मंच था जहाँ विभिन्न वर्गों ने अपने-अपने स्वार्थों हेतु भाग लिया, किंतु नेतृत्व सदैव मध्यम और उच्च वर्ग के ही सुरक्षित हाथों में रहा।

87. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ब्रिटिश सरकार द्वारा दिए गए संवैधानिक सुधार वास्तव में भारतीयों को वास्तविक शक्ति देने के बजाय राष्ट्रवाद को कमजोर करने का एक प्रयास थे। प्रत्येक सुधार के साथ उन्होंने पृथक निर्वाचन मंडल जैसी विभाजनकारी नीतियां पेश कीं ताकि भारतीय आपस में ही उलझे रहें। उन्होंने गवर्नर को अत्यधिक विशेषाधिकार दिए, जिससे निर्वाचित प्रतिनिधियों की शक्तियां अत्यंत सीमित हो गईं। इस 'रियायत और प्रतिसंतुलन' की रणनीति के कारण राष्ट्रवादी नेता इन सुधारों से कभी संतुष्ट नहीं हुए और पूर्ण स्वतंत्रता की मांग निरंतर बढ़ती गई।

88. (A) अन्य प्रेसीडेंसियों पर बंगाल के गवर्नर-जनरल के अधिकार का क्रमिक सुदृढ़ीकरण।
1773 के रेगुलेटिंग अधिनियम से प्रारंभ हुई प्रक्रिया ने बंगाल के गवर्नर को अन्य प्रेसीडेंसियों से ऊपर गवर्नर-जनरल का दर्जा दिया। धीरे-धीरे 1833 के अधिनियम तक आते-आते उसे पूरे भारत का गवर्नर-जनरल बना दिया गया, जिसके पास समस्त सैन्य और नागरिक अधिकार केंद्रित थे। इस केंद्रीकरण का उद्देश्य विशाल ब्रिटिश भारतीय क्षेत्रों पर एक एकीकृत और प्रभावी प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित करना था। इससे बॉम्बे और मद्रास की स्वायत्तता समाप्त हो गई और एक शक्तिशाली केंद्रीय नौकरशाही का उदय हुआ जिसने साम्राज्य संभाला।

89. (C) मशीन से बने सामानों की प्रतिस्पर्धा के कारण उनकी दरिद्रता और विस्थापन।
ब्रिटिश कालीन आर्थिक नीतियों के कारण भारतीय शिल्पकारों की स्थिति में विनाशकारी परिवर्तन आए। ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति से निकले सस्ते कपड़ों और सामानों ने भारतीय हस्तशिल्प को कड़ी टक्कर दी। देशी रियासतों के पतन के कारण इन कारीगरों का पारंपरिक संरक्षण भी समाप्त हो गया। इससे लाखों जुलाहे, लुहार और अन्य शिल्पकार अपनी पुश्तैनी आजीविका खोकर निर्धन हो गए। यह कंगालीकरण की प्रक्रिया थी जिसने उन्हें कृषि मजदूरी जैसे निम्न स्तरीय कार्यों की ओर धकेल दिया और ग्रामीण संकट बढ़ाया।

90. (A) एक प्रमुख राष्ट्रवादी शैक्षणिक संस्थान (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय) की स्थापना।
पंडित मदन मोहन मालवीय एक महान स्वतंत्रता सेनानी और शिक्षाविद थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि राष्ट्र निर्माण हेतु ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जो आधुनिक विज्ञान के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित हो। इसी पवित्र उद्देश्य से उन्होंने 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की, जो आज भी भारत का एक प्रमुख शैक्षणिक केंद्र है। उन्होंने हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया और समाज के विभिन्न वर्गों को राष्ट्रवाद की मुख्यधारा से जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया जिससे राष्ट्रीय चेतना बढ़ी।

भीषण आंग्ल-सिख युद्ध हुए और अंततः 1849 में पंजाब का विलय हुआ।

56. (C) केवल 1 और 3
आधुनिक भारतीय इतिहास के अध्ययन में जीवनियाँ, संस्मरण और समाचार पत्र अत्यंत महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत हैं। जीवनियाँ व्यक्तिगत दृष्टिकोण और तत्कालीन सामाजिक परिवेश की झलक प्रदान करती हैं, जबकि समाचार पत्र जनमत और राजनीतिक बहसों का जीवंत दस्तावेज होते हैं। यद्यपि मौखिक साक्ष्य उपयोगी होते हैं, किंतु वे अक्सर उन लोगों हेतु अधिक प्रासंगिक होते हैं जो समाज के हाशिए पर रहे हैं। पहला और तीसरा कथन सही है, क्योंकि वे आधुनिक इतिहास लेखन के वैज्ञानिक आधारों की पुष्टि करते हैं।

57. (C) बक्सर का युद्ध
यद्यपि प्लासी के युद्ध ने बंगाल में ब्रिटिश प्रभाव की शुरुआत की, किंतु 1764 के बक्सर के युद्ध ने उनकी राजनीतिक और सैन्य सर्वोच्चता को निर्णायक रूप से स्थापित किया। इस युद्ध में अंग्रेजों ने मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय, अवध के नवाब और मीर कासिम की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया। इसके परिणामस्वरूप उन्हें बंगाल, बिहार और ओडिशा की दीवानी अर्थात राजस्व संग्रह के कानूनी अधिकार प्राप्त हुए, जिसने उन्हें एक व्यापारिक कंपनी से भारत की एक प्रमुख राजनीतिक शक्ति में रूपांतरित कर दिया।

58. (A) उच्च भू-राजस्व की मांग, कृषि का वाणिज्यीकरण और साहूकारों की भूमिका।
ब्रिटिश शासन के दौरान ग्रामीण ऋणग्रस्तता एक गंभीर आर्थिक संकट के रूप में उभरी। सरकार की अत्यधिक राजस्व मांग और उसे अनिवार्य रूप से नकद में चुकाने की बाध्यता ने किसानों को साहूकारों से कर्ज लेने हेतु विवश किया। नकदी फसलों के उत्पादन और बाजार की कीमतों में उतार-चढ़ाव ने उनकी स्थिति को और अधिक बिगाड़ दिया। ब्याज की ऊँची दरों और कानूनी व्यवस्था के साहूकारों के पक्ष में होने के कारण किसान पीढ़ी दर पीढ़ी ऋण के जाल में फँसते चले गए, जिससे निर्धनता बढ़ी।

59. (D) भारतीय अधिकारियों को उच्चतम कमान पदों पर पदोन्नति।
ब्रिटिश भारतीय सेना एक आधुनिक और अनुशासित बल थी जिसमें सैनिकों को नियमित वेतन और कठोर प्रशिक्षण दिया जाता था। हालाँकि, इस सेना में नस्लीय भेदभाव व्याप्त था और भारतीयों हेतु उच्चतम पद केवल सूबेदार तक ही सीमित था। वरिष्ठ कमान के समस्त पद विशेष रूप से यूरोपीय अधिकारियों हेतु आरक्षित थे। अंग्रेजों ने जानबूझकर भारतीयों को नीति-निर्धारण और उच्च सैन्य नेतृत्व से दूर रखा ताकि भविष्य में किसी भी सैन्य विद्रोह की संभावना को न्यूनतम किया जा सके और नियंत्रण बना रहे।

60. (B) सैयद अहमद खान
सर सैयद अहमद खान मुस्लिम समुदाय के महान शिक्षाविद और समाज सुधारक थे जिन्होंने अनुभव किया कि मुसलमानों के पिछड़ेपन का मुख्य कारण आधुनिक शिक्षा का अभाव है। उन्होंने अलीगढ़ आंदोलन की शुरुआत की और 1875 में मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की, जो बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बना। उनका उद्देश्य कुरान की उदार व्याख्या करना और मुस्लिम युवाओं को विज्ञान तथा पश्चिमी दर्शन में शिक्षित करना था ताकि वे ब्रिटिश शासन की नई प्रशासनिक व्यवस्था में सफल हो सकें।

61. (A) 2, 4, 1, 3
प्रेस संबंधी कानूनों में सर्वप्रथम 1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम आया, जिसे विद्रोह के दौरान प्रेस को नियंत्रित करने हेतु लागू किया गया था। इसके पश्चात 1867 में प्रेस और पुस्तकों का पंजीकरण अधिनियम पारित हुआ। 1878 में लॉर्ड लिटन ने कुख्यात देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम लागू किया। अंत में, राष्ट्रवादी आंदोलनों के बढ़ते प्रभाव को रोकने हेतु भारतीय प्रेस अधिनियम 1910 लाया गया। यह कालक्रम भारत में प्रेस की स्वतंत्रता के दमन के क्रमिक और कठोर चरणों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

62. (D) उपनिवेश की अर्थव्यवस्था का मातृदेश के लाभ के लिए उसके साथ पूर्ण एकीकरण।
आधुनिक उपनिवेशवाद केवल क्षेत्रीय विजय तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक व्यवस्थित आर्थिक शोषण की प्रणाली थी। इसमें उपनिवेश की समस्त आर्थिक संरचना को मातृदेश अर्थात ब्रिटेन के हितों के अनुकूल बदल दिया गया। भारत को कच्चे माल का स्रोत और ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों का बाजार बना दिया गया। यह एक ऐसा संबंध था जहाँ उपनिवेश का विकास पूरी तरह से शासक देश की आवश्यकताओं के अधीन था, जिसने भारत के पारंपरिक आर्थिक आत्मनिर्भरता के ढांचे को पूर्णतः नष्ट कर दिया।

63. (A) निम्नवर्गीय स्कूल कुलीनों और राष्ट्रीय नेताओं के इतिहास पर केंद्रित है।
निम्नवर्गीय या सबॉल्टरन स्कूल वास्तव में कुलीनों और राष्ट्रीय नेताओं के इतिहास पर नहीं, बल्कि समाज के सबसे निचले और उपेक्षित वर्गों जैसे किसानों, मजदूरों और आदिवासियों के इतिहास पर केंद्रित है। यह स्कूल इस विचार का विरोध करता है कि इतिहास केवल ऊपर से बनाया जाता है। राष्ट्रवादी स्कूल का उदय साम्राज्यवादी लेखकों के जवाब में हुआ और मार्क्सवादी स्कूल आर्थिक वर्गों पर बल देता है। अतः पहला कथन पूरी तरह गलत और भ्रामक है, क्योंकि यह सबॉल्टरन विचारधारा के विपरीत है।

64. (B) निजाम द्वारा सहायक संधि की प्रारंभिक और स्वैच्छिक स्वीकृति।
हैदराबाद के निजाम प्रथम भारतीय शासक थे जिन्होंने 1798 में लॉर्ड वेलेज़ली की सहायक संधि को औपचारिक रूप से स्वीकार किया था। फ्रांसीसी प्रभाव के बढ़ते भय और मराठों के साथ अपनी पुरानी प्रतिद्वंद्विता के कारण निजाम ने ब्रिटिश सुरक्षा को प्राथमिकता दी। इसके तहत उन्होंने अपने क्षेत्र में ब्रिटिश सेना रखने और उसके खर्च का भुगतान करने पर सहमति व्यक्त की। इस संधि ने हैदराबाद को एक वफादार सहयोगी

अपनी सरकार से निरंतर राजनीतिक और सैन्य सहयोग मिला, जबकि फ्रांसीसी जैसी अन्य कंपनियाँ अत्यधिक सरकारी नियंत्रण के कारण अक्षम रहीं। साथ ही, बंगाल की विजय के पश्चात अंग्रेजों के पास अपार वित्तीय संसाधन हो गए, जिससे वे लंबे युद्ध लड़ने और भारतीय शक्तियों को कूटनीति से पराजित करने में सफल रहे।

100. (D) रौलट अधिनियम
रौलट अधिनियम 1919 में पारित एक अत्यंत दमनकारी कानून था जिसका उद्देश्य क्रांतिकारी गतिविधियों को बिना किसी मुकदमे के दबाना था; इसका महिलाओं के सुधारों से कोई सीधा संबंध नहीं था। इसके विपरीत, सती प्रथा निषेध, सम्मति आयु कानून और विधवा पुनर्विवाह अधिनियम जैसे प्रगतिशील कानून भारतीय समाज सुधारकों के निरंतर दबाव में बनाए गए थे ताकि महिलाओं की सामाजिक स्थिति और सुरक्षा में सुधार हो सके। रौलट अधिनियम विशुद्ध रूप से एक राजनीतिक नियंत्रण का साधन था, न कि कोई सामाजिक सुधार उपाय।

101. (B) उत्तराधिकारी गोद लेने की दीर्घकाल से चली आ रही भारतीय परंपरा की उपेक्षा की।
व्यपगत का सिद्धांत इसलिए विवादास्पद था क्योंकि इसने भारतीय संस्कृति में गहराई से रची-बसी गोद लेने की प्रथा को अवैध घोषित कर दिया। सदियों से, निसंतान हिंदू राजा अपनी वंशावली और राज्य संचालन हेतु उत्तराधिकारी गोद लेते आए थे। लॉर्ड डलहौजी ने इस अधिकार को छीन लिया ताकि अधिक से अधिक राज्यों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय किया जा सके। इस नीति ने भारतीय राजाओं के बीच असुरक्षा और अविश्वास का वातावरण उत्पन्न किया, जो अंततः 1857 के महान विद्रोह का एक बड़ा कारण बना।

102. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ब्रिटिश शिक्षा नीति वास्तव में सभी के लिए नहीं थी। उन्होंने 'अधोमुखी निस्यंदन' का सिद्धांत अपनाया, जिसका मानना था कि उच्च वर्ग को शिक्षित करने से ज्ञान स्वतः ही छनकर नीचे तक पहुँच जाएगा। इसके परिणामस्वरुप, केवल शहरी और उच्च जाति के पुरुषों को ही पश्चिमी शिक्षा का लाभ मिला, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों, महिलाओं और दलितों की शिक्षा को पूरी तरह नजरअंदाज किया गया। इसने समाज में एक नया शिक्षित कुलीन वर्ग पैदा किया जो अपनी भाषा और संस्कृति में आम जनता से पूर्णतः कट गया था।

103. (C) निम्नवर्गीय
निम्नवर्गीय या सबॉल्टरन इतिहास लेखन हेतु मौखिक साक्ष्य जैसे लोकगीत, कहावतें और व्यक्तिगत यादें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। चूंकि इतिहास के उपेक्षित वर्गों, जैसे मजदूरों और किसानों ने शायद ही कभी अपने लिखित रिकॉर्ड छोड़े हों, इसलिए उनके दृष्टिकोण को समझने हेतु मौखिक परंपरा ही एकमात्र सशक्त साधन बचती है। यह स्कूल लिखित सरकारी दस्तावेजों के स्थान पर इन अनौपचारिक स्रोतों के माध्यम से सामान्य जनता के प्रतिरोध और उनकी चेतना के अनकहे पहलुओं को इतिहास के पटल पर लाने का प्रयास करता है।

104. (D) यह एक स्थानीय रुप से नियंत्रित प्रणाली से एक केंद्रीय रुप से संगठित, पदानुक्रमित बल के रुप में विकसित हुई।
अंग्रेजों ने भारत में पारंपरिक ग्राम रक्षकों और जमींदारों की पुलिस व्यवस्था को समाप्त कर उसे एक आधुनिक प्रशासनिक ढांचे में बदल दिया। लॉर्ड कॉर्नवालिस ने पुलिस थानों की स्थापना की और पुलिस को पूर्णतः प्रशासनिक नियंत्रण में लाया। बाद में 1861 के पुलिस अधिनियम के साथ, इसे एक अनुशासित, वर्दीधारी और पदानुक्रमित बल बना दिया गया, जिसकी कमान ब्रिटिश अधिकारियों के सुरक्षित हाथों में थी। इसका मुख्य उद्देश्य नागरिक सुरक्षा के स्थान पर औपनिवेशिक कानून-व्यवस्था बनाए रखना और राजनीतिक नियंत्रण सुनिश्चित करना था।

105. (C) केवल 1 और 3
वि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया को दादाभाई नौरोजी और आर.सी. दत्त जैसे प्रख्यात आर्थिक विचारकों ने प्रमुखता से उठाया, जिसमें पारंपरिक उद्योगों के विनाश को भारतीय गरीबी का मूल कारण बताया गया। हस्तशिल्प के पतन से बेरोजगार हुए लाखों कारीगर खेती की ओर मुड़े, जिससे भूमि पर जनसंख्या का भार अत्यधिक बढ़ गया। यह कहना सर्वथा त्रुटिपूर्ण है कि ब्रिटिश मौद्रिक नीति भारतीयों के हित में थी, क्योंकि विनिमय दरों और मुद्रा का प्रबंधन सदैव ब्रिटिश व्यापारिक लाभ को ही ध्यान में रखकर किया गया था।

106. (B) महिला कल्याण और शिक्षा पर केंद्रित समाज सुधार आंदोलन।
धोंडो केशव कर्वे आधुनिक भारत के उन विरले समाज सुधारकों में से थे जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन महिलाओं के वास्तविक सशक्तिकरण हेतु समर्पित कर दिया। उन्होंने न केवल विधवाओं के पुनर्विवाह हेतु संघर्ष किया, बल्कि उनके लिए शैक्षणिक संस्थानों और आश्रय गृहों की स्थापना भी की। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा ही महिलाओं को पराधीनता के पाश से मुक्त कर सकती है। उनके द्वारा स्थापित संस्थानों ने हजारों महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया और महाराष्ट्र में सामाजिक परिवर्तन की एक नई चेतना जागृत की।

107. (D) भारतीय भाषा के प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से बनाया गया एक भेदभावपूर्ण अधिनियम।
1878 का देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम ब्रिटिश राज के सबसे कठोर और निरंकुश कानूनों में से एक था। इसे विशेष रूप से 'देशी' प्रेस को दबाने हेतु निर्मित किया गया था, क्योंकि वे सरकार की जनविरोधी नीतियों को जनता के समक्ष ला रहे थे। इस कानून ने जिला मजिस्ट्रेट को यह अधिकार दिया कि वह किसी भी समाचार पत्र से सुरक्षा पत्र ले सकता है और बिना किसी न्यायिक जाँच के उसकी संपत्ति जब्त कर सकता है। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर एक सीधा प्रहार था।

108. (A) फूट डालो और राज करो।
सांप्रदायिकता को अंग्रेजों ने एक रणनीतिक राजनीतिक हथियार के रूप में विकसित किया ताकि बढ़ते भारतीय राष्ट्रवाद को धर्म के आधार पर विभाजित किया जा सके। 1857 के विद्रोह में हिंदू-मुस्लिम एकता को देखने के पश्चात,

126. (B) एक व्यावहारिक, सामाजिक रूप से उन्मुख वेदांत और राष्ट्रीय आत्म-सम्मान की भावना को बढ़ावा देना।
स्वामी विवेकानंद ने वेदांत के प्राचीन ज्ञान को एक नवीन और आधुनिक स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि धर्म केवल किताबों में नहीं बल्कि मानवता की सेवा और विशेष रूप से दरिद्रों के उत्थान में निहित है। उनके 'व्यावहारिक वेदांत' ने भारतीयों को हीन भावना त्यागने और आत्मविश्वास के साथ विश्व का सामना करने हेतु प्रेरित किया। उनके ओजस्वी व्यक्तित्व और विचारों ने राष्ट्रवाद को एक आध्यात्मिक आधार दिया, जिससे भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों पर गर्व अनुभव करने में अभूतपूर्व सहायता मिली।

127. (C) यह अंग्रेजी और देशी दोनों भाषाओं के समाचार पत्रों के साथ एक विकासशील इकाई थी, जो सरकारी विनियमन के अधीन थी।
1857 से पूर्व के काल में भारतीय प्रेस ने अपनी शैशवावस्था को पार कर लिया था और यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक शक्ति के रूप में उभर रहा था। उस समय 'बंगाल गजट' जैसे अंग्रेजी पत्रों के साथ-साथ 'संवाद कौमुदी' जैसे भारतीय भाषाओं के पत्र भी अत्यंत सक्रिय थे। यद्यपि प्रेस स्वतंत्रता का विस्तार हो रहा था, किंतु ब्रिटिश सरकार समय-समय पर लाइसेंसिंग और सेंसरशिप जैसे प्रतिबंध लगाकर इसे नियंत्रित करने का निरंतर प्रयास करती रहती थी। यह काल प्रेस की बढ़ती शक्ति और सरकारी नियंत्रण के बीच संघर्ष का था।

128. (B) ब्रिटिश क्राउन का अधिकार रियासतों के अधिकार से श्रेष्ठ था, यदि आवश्यक हो तो उनके आंतरिक मामलों में भी।
सर्वोच्चता का सिद्धांत यह स्पष्ट करता था कि भारत में ब्रिटिश सत्ता ही अंतिम और सर्वोपरि है। इसके अनुसार, रियासतों के राजा स्वतंत्र शासक नहीं बल्कि ब्रिटिश क्राउन के पूर्णतः अधीनस्थ थे। इस अधिकार का उपयोग करते हुए अंग्रेज किसी भी राज्य के उत्तराधिकार का निर्णय कर सकते थे, राजा को पदच्युत कर सकते थे या उसके आंतरिक प्रशासन में सीधे हस्तक्षेप कर सकते थे। इसने रियासतों की संप्रभुता के किसी भी भ्रम को समाप्त कर दिया और उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य के वफादार एजेंटों में परिवर्तित कर दिया।

129. (D) 1, 2 और 3
आधुनिक भारतीय इतिहास को समझने हेतु विभिन्न प्रकार के स्रोत एक साथ मिलकर एक पूर्ण चित्र प्रस्तुत करते हैं। सरकारी अभिलेख हमें राज्य की नीतियों और उसके प्रशासनिक ढांचे की आधिकारिक जानकारी देते हैं। मौखिक साक्ष्य उन लोगों की अनकही कहानियों को सामने लाते हैं जिनका कोई लिखित इतिहास उपलब्ध नहीं है। रचनात्मक साहित्य उस समय की सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक परिवर्तनों की गहरी समझ प्रदान करता है। इन तीनों के समन्वय से ही हम औपनिवेशिक काल की वास्तविकताओं और जनमानस की प्रतिक्रियाओं को ठीक से समझ सकते हैं।

130. (B) भारत का राजनीतिक विखंडन और देशी शक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता।
मुगल साम्राज्य के पतन के पश्चात भारत में राजनीतिक एकता का अभाव था और कई क्षेत्रीय शक्तियां आपस में निरंतर संघर्षरत थीं। मराठों, निजामों और मैसूर के सुल्तानों के बीच की आपसी प्रतिद्वंद्विता ने अंग्रेजों को कूटनीति और 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाने का स्वर्णिम अवसर प्रदान किया। अंग्रेज अक्सर एक भारतीय राजा के विरुद्ध दूसरे की सैन्य सहायता करते थे और धीरे-धीरे दोनों की शक्ति को क्षीण कर देते थे। इसी राजनीतिक विखंडन ने एक विदेशी व्यापारिक कंपनी को भारत का भाग्य विधाता बना दिया।

131. (C) प्राच्यवाद - तत्काल विलय का औचित्य
प्राच्यवाद वास्तव में राज्यों के विलय का औचित्य नहीं था, बल्कि यह पश्चिमी विद्वानों द्वारा भारतीय संस्कृति, भाषाओं और प्राचीन ग्रंथों के गहन अध्ययन की एक बौद्धिक धारा थी। विलय का औचित्य तो 'व्यपगत के सिद्धांत' और 'कुशासन' जैसे प्रशासनिक तर्कों के माध्यम से दिया जाता था। द्वैध शासन, अग्रगामी नीति और उपनिवेशवाद के अर्थ उनके सम्मुख दिए गए विवरणों के अनुसार बिल्कुल सही और सटीक हैं। अतः तीसरा युग्म वैचारिक रूप से गलत सुमेलित है और ऐतिहासिक भ्रम उत्पन्न करता है।

132. (B) ब्रिटेन भारत के संसाधनों और धन का दोहन करके स्वयं को समृद्ध कर रहा रहा है।
दादाभाई नौरोजी ने सांख्यिकीय आंकड़ों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि ब्रिटिश राज भारत से प्रतिवर्ष बड़ी मात्रा में धन निकाल रहा है जिसके बदले में भारत को कोई वास्तविक लाभ प्राप्त नहीं हो रहा है। उन्होंने इसे 'नैतिक निकास' और 'आर्थिक निकास' दोनों का नाम दिया। इस निरंतर होने वाले धन के हस्तांतरण ने भारत की पूंजी निर्माण की क्षमता को विनष्ट कर दिया और उसे अकाल तथा दरिद्रता की ओर धकेला। उनके इस ठोस तर्क ने राष्ट्रवादी आंदोलन को एक शक्तिशाली और तार्किक वैचारिक हथियार प्रदान किया।

133. (B) महिलाओं की शिक्षा, सामाजिक स्थिति और कानूनी अधिकारों के मुद्दों को संबोधित करने के लिए।
उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी की शुरुआत में महिलाओं ने स्वयं संगठित होना प्रारंभ किया ताकि वे अपनी समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठा सकें। 'भारत स्त्री महामंडल' और 'महिला भारतीय संघ' जैसे संगठनों ने बाल विवाह, पर्दा प्रथा और शिक्षा के अभाव जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाई। इन संगठनों का उद्देश्य महिलाओं को जागरूक करना और उन्हें मतदान तथा संपत्ति जैसे बुनियादी कानूनी अधिकार दिलाने हेतु संघर्ष करना था। इसने भारतीय नारीवादी आंदोलन की एक अत्यंत सुदृढ़ और स्वतंत्र नींव रखी।

134. (C) भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियां) अधिनियम, 1931
सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान राष्ट्रवादी भावनाओं और क्रांतिकारी गतिविधियों को कुचलने हेतु ब्रिटिश सरकार ने 1931 का प्रेस अधिनियम लागू किया। इस अधिनियम ने प्रशासन को असीमित शक्तियाँ प्रदान कीं ताकि वे किसी भी ऐसी मुद्रित

117. (B) उन्हें कृषि या अल्प वेतन वाले श्रम में विवश करके, जिससे निर्धनता बढ़ी।
पारंपरिक हस्तशिल्प और व्यापार के विनाश ने भारतीय शिल्पकारों को उनकी गरिमापूर्ण आजीविका से वंचित कर दिया। जब उनके उत्पादों की बाजार में मांग समाप्त हो गई, तो उनके पास अपनी आजीविका हेतु भूमिहीन मजदूर बनने या कृषि पर निर्भर होने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा। इससे न केवल उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरी, बल्कि वे कर्ज के जाल में भी बुरी तरह फंस गए। यह गिरावट उनके जीवन स्तर में व्यापक कमी और ग्रामीण भारत में बढ़ती आर्थिक असमानता का मुख्य कारण बनी जिसने संकट बढ़ाया।

118. (A) वेदों के अधिकार के आधार पर हिंदू समाज में सुधार लाने के उद्देश्य से एक समाज सुधार आंदोलन।
आर्य समाज हिंदू धर्म में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध एक शुद्धतावादी और सुधारवादी प्रतिक्रिया थी। स्वामी दयानंद सरस्वती ने तर्क दिया कि वेद ही समस्त सच्चे ज्ञान का आधार हैं और बाद में जुड़ी हुई रीतियाँ जैसे जातिवाद और मूर्तिपूजा शुद्ध धर्म का हिस्सा नहीं हैं। उन्होंने शिक्षा, विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा पर बहुत बल दिया और विधवा विवाह का समर्थन किया। उनके आंदोलन ने भारतीयों में धार्मिक आत्मविश्वास जगाया और उन्हें आधुनिक सामाजिक चुनौतियों का सामना करने हेतु मानसिक रूप से तैयार किया।

119. (C) 1857 के विद्रोह का भड़कना और यह धारणा कि प्रेस विद्रोह को बढ़ावा दे रहा था।
1857 के विद्रोह के दौरान अंग्रेजों को यह लगा कि जनमत को भड़काने और क्रांतिकारियों के बीच सूचना प्रसारित करने में समाचार पत्रों की बड़ी भूमिका है। इसी खतरे को भांपते हुए लॉर्ड कैनिंग ने 1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम लागू किया। इसके तहत किसी भी मुद्रणालय हेतु सरकार से अधिकार पत्र लेना अनिवार्य कर दिया गया। सरकार को किसी भी ऐसी सामग्री के प्रकाशन को रोकने की असीमित शक्ति मिल गई जो साम्राज्य के हितों के विरुद्ध हो। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर एक आपातकालीन प्रतिबंध था।

120. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
लॉर्ड कॉर्नवालिस ने 1793 में बंगाल में राजस्व संग्रह हेतु स्थायी बंदोबस्त लागू किया। लॉर्ड विलियम बेंटिक ने राजा राम मोहन राय के प्रयासों से 1829 में सती प्रथा का पूर्ण उन्मूलन किया। लॉर्ड डलहौजी अपनी विस्तारवादी नीति 'व्यपगत का सिद्धांत' हेतु कुख्यात रहे, जिसने कई रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। लॉर्ड रिपन को भारत में स्थानीय स्वशासन का जनक माना जाता है, क्योंकि उन्होंने नगरपालिकाओं और स्थानीय बोर्डों को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए थे जिससे लोकतांत्रिक आधार बना।

121. (C) ब्रिटिश शासन की प्रकृति और प्रभाव की व्याख्या।
साम्राज्यवादी और राष्ट्रवादी इतिहासकारों के बीच मुख्य वैचारिक टकराव इस बात पर है कि ब्रिटिश शासन भारत हेतु कैसा था। साम्राज्यवादी लेखक इसे एक उदारवादी और आधुनिक बनाने वाली शक्ति मानते हैं जिसने भारत को कानून और व्यवस्था दी। इसके विपरीत, राष्ट्रवादी इतिहासकार इसे एक शोषक और विनाशकारी व्यवस्था के रूप में देखते हैं जिसने भारत की अर्थव्यवस्था को नष्ट किया और जनता को निर्धन बनाया। यही व्याख्यात्मक मतभेद इन दोनों स्कूलों की विचारधारा और उनके द्वारा प्रस्तुत ऐतिहासिक विवरणों का मूल आधार है।

122. (A) अखिल-इस्लामी और अंतर्राष्ट्रीय।
खिलाफत आंदोलन का मूल उद्देश्य केवल भारत तक सीमित नहीं था, बल्कि यह तुर्की के खलीफा की सत्ता को बचाने हेतु प्रारंभ हुआ था, जिन्हें विश्व भर के मुसलमान अपना धार्मिक नेता मानते थे। प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की की हार के पश्चात खलीफा के अधिकारों पर ब्रिटिश प्रहार ने भारतीय मुसलमानों को अत्यधिक आक्रोशित कर दिया। यद्यपि इसका केंद्र तुर्की था, किंतु इसने भारतीय राजनीति में मुस्लिम समुदाय को संगठित किया और महात्मा गांधी के नेतृत्व में इसे व्यापक राष्ट्रवादी संघर्ष का हिस्सा बनाया गया।

123. (D) दो बड़े युद्ध जिसके कारण पंजाब का विलय हो गया।
महाराजा रणजीत सिंह के शक्तिशाली शासन के पश्चात पंजाब में उत्तराधिकार के संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता ने अंग्रेजों को हस्तक्षेप का स्वर्णिम अवसर दिया। इसके परिणामस्वरूप 1845-46 और 1848-49 में दो भीषण आंग्ल-सिख युद्ध हुए। सिखों की अदम्य बहादुरी और कड़े प्रतिरोध के बावजूद, अंततः गुजरात के युद्ध में सिखों की निर्णायक हार हुई। इसके पश्चात लॉर्ड डलहौजी ने पंजाब का पूर्ण विलय कर लिया, जिससे उत्तर-पश्चिम भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की सीमाएँ सुरक्षित हो गईं और पंजाब का राजस्व उनके नियंत्रण में आ गया।

124. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
ब्रिटिश शासन हेतु एक कुशल और वफादार सिविल सेवा का विकास अत्यंत आवश्यक था ताकि वे प्रशासन और राजस्व पर अपनी पकड़ सुदृढ़ कर सकें। हालाँकि, यह कहना सर्वथा गलत है कि इसे भारतीयों को उच्च पदों पर शामिल करने हेतु निर्मित किया गया था। वास्तव में, लंबे समय तक भारतीयों को जानबूझकर उच्च प्रशासनिक पदों से दूर रखा गया और परीक्षा की प्रक्रिया भी अंग्रेजों के पक्ष में रखी गई। सिविल सेवा मुख्य रूप से ब्रिटिश हितों की रक्षा करने वाला एक विशिष्ट और शक्तिशाली औपनिवेशिक नौकरशाही ढांचा था।

125. (D) काश्तकारों को सुलभ, अल्प ब्याज वाला ऋण प्रदान करने का सरकार का बड़े पैमाने पर कार्यक्रम।
ब्रिटिश शासन के दौरान ग्रामीण ऋणग्रस्तता के बढ़ने के मुख्य कारण उच्च लगान, खेती का वाणिज्यीकरण और राजस्व चुकाने की कठोर समय सीमा थी। सरकार ने किसानों को सुलभ ऋण प्रदान करने हेतु कोई सार्थक कदम नहीं उठाए, जिसके कारण उन्हें स्थानीय साहूकारों के चंगुल में फँसना पड़ा। साहूकार मनमाना ब्याज वसूलते थे और उनकी जमीनों पर कब्जा कर लेते थे। सरकारी ऋण की अनुपलब्धता ने ही वास्तव में ऋणग्रस्तता की समस्या को और अधिक विकराल बनाया था। अतः विकल्प (D) पूर्णतः असत्य है।

143. (B) भारतीय मुसलमानों के बीच सामाजिक और शैक्षिक आधुनिकीकरण को बढ़ावा देना ताकि उन्हें ब्रिटिश शासन की नई वास्तविकताओं के साथ जोड़ा जा सके।
सर सैयद अहमद खान का दृढ़ विश्वास था कि मुस्लिम समुदाय की प्रगति आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने में ही निहित है। उन्होंने देखा कि परंपरागत शिक्षा अब पर्याप्त नहीं थी और मुसलमान नई प्रशासनिक व्यवस्था में पिछड़ रहे थे। इसीलिए उन्होंने अलीगढ़ में आधुनिक शैक्षणिक संस्थान की स्थापना की और उदारवादी विचारों का प्रचार किया। उनका प्राथमिक लक्ष्य राजनीतिक विरोध के स्थान पर समुदाय का आंतरिक सामाजिक सुधार और उन्हें बदलते समय के योग्य बनाना था ताकि वे प्रगति कर सकें।

144. (B) 'अहस्तक्षेप' सिद्धांतों के प्रति इसके पालन के कारण, जिसने प्रभावी हस्तक्षेप में विलंब किया और उसे सीमित कर दिया।
ब्रिटिश सरकार अकाल के दौरान अक्सर यह तर्क देती थी कि बाजार के कार्यों में हस्तक्षेप करना आर्थिक सिद्धांतों के विरुद्ध है। इस 'अहस्तक्षेप' की कठोर नीति के कारण उन्होंने अनाज की कीमतों को नियंत्रित करने या निर्यात रोकने में अत्यधिक विलंब किया। राहत कार्य भी बहुत कम और देर से शुरु किए गए, जिससे भुखमरी की स्थिति अनियंत्रित हो गई। सरकार का मुख्य ध्यान केवल राजस्व वसूलने पर ही बना रहा, जिसने मानवीय संकट को एक भयानक त्रासदी में बदल दिया, जिसमें करोड़ों निर्दोष लोग मारे गए।

145. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
ज्योतिबा फुले ने महाराष्ट्र में जाति विरोधी आंदोलन और महिला शिक्षा की अलख जगाई। दादाभाई नौरोजी ने धन के निष्कासन का सिद्धांत देकर औपनिवेशिक आर्थिक नींव पर प्रहार किया। एनी बेसेंट ने थियोसोफिकल सोसाइटी और होम रुल आंदोलन के माध्यम से राजनीतिक चेतना बढ़ाई। मदन मोहन मालवीय ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना कर आधुनिक भारत हेतु एक महान शैक्षिक विरासत छोड़ी। ये सभी महान व्यक्तित्व अपने विशिष्ट क्षेत्रों में भारतीय समाज और राष्ट्र के उत्थान हेतु पूर्णतः समर्पित रहे और अमिट छाप छोड़ी।

146. (B) दोहरी सरकार की एक प्रणाली जहाँ प्रशासनिक विषयों को 'आरक्षित' और 'हस्तांतरित' सूचियों में विभाजित किया गया था।
द्वैध शासन 1919 के भारत शासन अधिनियम द्वारा प्रांतों में लागू एक प्रशासनिक प्रयोग था। इसके तहत प्रशासन के महत्वपूर्ण विभाग जैसे वित्त और पुलिस गवर्नर की सुरक्षित सूची में थे, जबकि कम महत्वपूर्ण विभाग जैसे शिक्षा और पुस्तकालय भारतीय मंत्रियों को सौंपे गए थे। इस विभाजन का उद्देश्य भारतीयों को शासन में कुछ भागीदारी देना था, किंतु बिना वित्तीय अधिकार और वास्तविक शक्ति के ये मंत्री प्रभावी कार्य करने में असमर्थ रहे। इसने शासन में अराजकता, असंतोष और प्रशासनिक विफलता उत्पन्न की।

147. (C) सामान्य किसानों और श्रमिकों ने अपने कारणों से आंदोलन को कैसे समझा और उसमें भाग लिया।
खिलाफत आंदोलन का निम्नवर्गीय अध्ययन शीर्ष नेताओं के भाषणों के स्थान पर आम जनता के अनुभवों पर केंद्रित होता है। एक इतिहासकार यह विश्लेषण करेगा कि ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों ने खलीफा के मुद्दे को अपने स्थानीय आर्थिक संघर्षों और ब्रिटिश विरोध के साथ कैसे एकीकृत किया। यह दृष्टिकोण आंदोलन की जमीनी वास्तविकता को उजागर करता है और बताता है कि कैसे एक धार्मिक-राजनीतिक मुद्दा जनसाधारण की चेतना में पहुंचकर एक बड़े विद्रोह का आधार बना, जिसमें सामान्य लोगों की अपनी आकांक्षाएं भी सम्मिलित थीं।

148. (B) ब्रिटिश संसद के प्रति भारतीय प्रशासन के प्रत्यक्ष नियंत्रण और उत्तरदायित्व में वृद्धि।
1858 के अधिनियम के पश्चात ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया और भारत सीधे ब्रिटिश क्राउन के अधीन आ गया। अब भारत का प्रशासन संचालित करने हेतु 'भारत सचिव' का पद सृजित किया गया जो ब्रिटिश संसद का सदस्य होता था। इसने प्रशासन में अधिक स्पष्टता और जवाबदेही तो लाई, किंतु यह जवाबदेही भारतीय जनता के प्रति नहीं, बल्कि लंदन में बैठी सरकार के प्रति थी। भारत अब औपचारिक रूप से ब्रिटिश साम्राज्य का एक उपनिवेश बन गया, जिसका सीधा नियंत्रण ब्रिटिश सम्राट के हाथों में था।

149. (B) औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया और एक वेतनभोगी वर्ग का निर्माण।
भारत में रेलवे और कारखानों की स्थापना ने एक नए शहरी श्रमिक वर्ग को जन्म दिया जो अपनी आजीविका हेतु केवल वेतन पर निर्भर था। इन श्रमिकों को मिलों में अत्यंत कठिन और अमानवीय परिस्थितियों में कार्य करना पड़ता था। शोषण के इस साझा अनुभव ने उन्हें अपनी मांगों हेतु एकजुट होने और संगठन बनाने के लिए प्रेरित किया। जैसे-जैसे आधुनिक उद्योगों का विस्तार हुआ, वैसे-वैसे श्रमिक संघों की ताकत और उनकी राजनीतिक समझ भी बढ़ती गई, जिससे भारत में आधुनिक संगठित श्रमिक आंदोलन का तेजी से विकास हुआ।

150. (A) केवल 1 और 2
राजा राम मोहन राय ने वास्तव में पूर्वी आध्यात्मिकता और पश्चिमी तर्कवाद के मिलन की वकालत की, ताकि भारतीय समाज का आधुनिकीकरण हो सके। सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं और पिछड़े वर्गों की शिक्षा हेतु जो संघर्ष किया, वह ऐतिहासिक और अनुकरणीय है। स्वामी विवेकानंद मुख्य रूप से एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक सुधारक थे, न कि आर्थिक इतिहासकार। आर्थिक इतिहासकार के रूप में तो दादाभाई नौरोजी और आर.सी. दत्त विख्यात हैं। अतः विवेकानंद के बारे में दिया गया तीसरा कथन गलत है, जबकि प्रथम दो कथन सत्य हैं।

151. (C) आलोचनात्मक राष्ट्रवादी प्रकाशनों को नियंत्रित, सेंसर और दमित करना।
ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित विभिन्न प्रेस कानूनों का एकमात्र और स्पष्ट उद्देश्य राष्ट्रवादी आवाजों को दबाना था। जैसे-जैसे

सामग्री को जब्त कर सकें जो सरकार के विरुद्ध घृणा या अवमानना उत्पन्न करती हो। इसने मुद्रणालयों से भारी जमानत राशि की मांग करना सरल बना दिया, जिससे कई राष्ट्रवादी समाचार पत्रों को बंद होना पड़ा। यह प्रेस की स्वतंत्रता को नियंत्रित करने का एक गंभीर और क्रूर औपनिवेशिक प्रयास था।

135. (C) विभिन्न आर्थिक वर्गों के बीच संघर्ष।
मार्क्सवादी इतिहासकार ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को मुख्य रूप से उत्पादन के संबंधों और सामाजिक वर्गों के बीच होने वाले निरंतर संघर्ष के माध्यम से देखते हैं। उनका मानना है कि औपनिवेशिक शासन ने भारत में सामंती और पूंजीवादी वर्गों के बीच नए संबंध और आर्थिक तनाव उत्पन्न किए। वे राष्ट्रवादी आंदोलन को भी बुर्जुआ वर्ग और जनसाधारण के बीच के अंतर्विरोधों के संदर्भ में विश्लेषित करते हैं। उनके लिए इतिहास केवल राजाओं की कहानी नहीं है, बल्कि आर्थिक हितों और उत्पादन के साधनों में बदलाव की एक सतत प्रक्रिया है।

136. (C) तीव्र प्रतिद्वंद्विता और चार बड़े युद्धों का काल।
मैसूर राज्य, विशेष रूप से हैदर अली और टीपू सुल्तान के नेतृत्व में, दक्षिण भारत में ब्रिटिश विस्तार के मार्ग में सबसे शक्तिशाली और आधुनिक अवरोध था। उनके पास एक अत्यंत सुसज्जित सेना और कुशल प्रशासनिक व्यवस्था थी, जिससे अंग्रेजों को चार बार भीषण युद्ध करना पड़ा। 1799 में टीपू सुल्तान की शहादत के साथ ही मैसूर का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हुआ। यह काल संधियों और युद्धों का एक ऐसा दौर था जिसने दक्षिण भारत की राजनीति और भविष्य के प्रशासनिक ढांचे को निर्णायक रूप से बदल दिया।

137. (C) सूती वस्त्र, जूट और इस्पात जैसे कुछ क्षेत्रों और विशिष्ट क्षेत्रों में केंद्रित।
ब्रिटिश काल के दौरान भारत में औद्योगिक विकास अत्यंत धीमा, असंतुलित और खंडित था। प्रमुख उद्योग केवल कुछ क्षेत्रों जैसे बंबई में सूती वस्त्र, बंगाल में जूट और बाद में जमशेदपुर में इस्पात तक ही सीमित रहे। इन उद्योगों की स्थापना में भी अक्सर ब्रिटिश पूंजी और औपनिवेशिक हितों का ही बोलबाला था। भारत में भारी मशीनरी और रसायन जैसे बुनियादी उद्योगों की घोर उपेक्षा की गई। इसके परिणामस्वरूप, भारत का औद्योगिक ढांचा कभी आत्मनिर्भर नहीं बन सका और वह ब्रिटिश उत्पादों पर ही निर्भर बना रहा।

138. (B) महिलाओं और निम्न जातियों की शिक्षा के क्षेत्र में एक अग्रणी प्रयास।
सावित्रीबाई फुले का जीवन सामाजिक बाधाओं के विरुद्ध एक निरंतर और साहसी संघर्ष था। उन्होंने उस काल में महिलाओं और दलितों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया जब समाज में इसे घोर अपराध माना जाता था। उन्होंने न केवल स्कूल खोले बल्कि स्वयं अध्यापन किया और सामाजिक अपमान सहने के बावजूद अपने पवित्र मिशन से पीछे नहीं हटीं। उनका योगदान आज भी भारत में समतावादी शिक्षा और स्त्री सशक्तिकरण की मशाल के रूप में देखा जाता है, जिसने लाखों वंचितों हेतु प्रगति और ज्ञान के द्वार सदा के लिए खोल दिए।

139. (B) एक राष्ट्र द्वारा दूसरे की अधीनता और मातृदेश के हितों की सेवा के लिए उपनिवेश की अर्थव्यवस्था और समाज की संरचना करना।
उपनिवेशवाद एक शोषणकारी राजनीतिक और आर्थिक प्रणाली है जिसमें एक शक्तिशाली राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के संसाधनों पर बलात कब्जा कर लेता है। इसका मुख्य लक्ष्य उपनिवेश का विकास करना नहीं, बल्कि उसकी समस्त व्यवस्था को मातृदेश की समृद्धि हेतु परिवर्तित करना होता है। भारत के संदर्भ में, यहाँ की खेती, व्यापार और उद्योगों को अंग्रेजों ने इस प्रकार नियंत्रित किया कि वे ब्रिटिश कारखानों के पूरक बन सकें। यह प्रभुत्व न केवल आर्थिक था बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक भी था, जिसने राष्ट्र की मौलिक पहचान बदल दी।

140. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
लॉर्ड रिपन ने 1882 में देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम को निरस्त कर दिया था, जिसे भारतीयों द्वारा एक बड़ी सफलता के रूप में देखा गया। यह दमनकारी कानून भारतीयों के बीच अत्यंत अलोकप्रिय था क्योंकि यह भेदभावपूर्ण था और केवल क्षेत्रीय भाषाओं के समाचार पत्रों पर प्रहार करता था। यह कहना कि यह कानून लोकप्रिय था, ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः गलत है। इसे भारतीयों ने एक 'गला घोंटने वाला अधिनियम' माना था। इसके निरसन से प्रेस को अस्थायी राहत मिली और राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार-प्रसार सुगम हुआ।

141. (D) भारतीय सिपाहियों के बीच राष्ट्रवादी भावनाओं का प्रोत्साहन।
ब्रिटिश भारतीय सेना का संगठन इस प्रकार किया गया था कि सैनिक केवल अपनी रेजिमेंट और ब्रिटिश क्राउन के प्रति ही वफादार रहें। अंग्रेजों ने जानबूझकर ऐसी नीतियों को हतोत्साहित किया जो सैनिकों में राष्ट्रीय चेतना या एकता की भावना जगा सकें। उन्होंने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाते हुए जाति और धर्म के आधार पर विभिन्न रेजिमेंट बनाईं ताकि सैनिकों में साझा पहचान विकसित न हो। 1857 के अनुभव के पश्चात, सेना पर ब्रिटिश नियंत्रण और भी कठोर, नस्लीय और पृथकतावादी बना दिया गया था।

142. (B) इसने उन्हें एक अस्थिर वैश्विक बाजार से जोड़ दिया, जिससे वे मूल्यों में गिरावट और ऋण के प्रति संवेदनशील हो गए।
जब किसानों ने नकदी फसलें उगाना प्रारंभ किया, तो उनकी आय अब स्थानीय मांग के बजाय अंतरराष्ट्रीय बाजार की कीमतों पर निर्भर हो गई। यदि वैश्विक बाजार में मांग गिरती या कीमतें कम होतीं, तो किसानों को भारी आर्थिक क्षति उठानी पड़ती थी। चूंकि उन्हें राजस्व अनिवार्य रूप से नकद में देना होता था, इसलिए क्षति की स्थिति में वे साहूकारों के ऋण के जाल में बुरी तरह फंस जाते थे। इस व्यवस्था ने किसानों की आर्थिक सुरक्षा को नष्ट कर दिया और उन्हें स्थाई निर्धनता के गर्त में धकेल दिया।

160. (B) प्रशासनिक और वित्तीय सुगमता।
स्थानीय स्वशासन की स्थापना के पीछे अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य कोई लोकतांत्रिक क्रांति लाना नहीं, बल्कि अपने विशाल प्रशासनिक तंत्र को अधिक कुशल और किफायती बनाना था। स्थानीय स्तर की नागरिक सुविधाओं जैसे सफाई, सड़क निर्माण और प्राथमिक शिक्षा का उत्तरदायित्व स्थानीय निकायों को सौंपकर वे केंद्रीय बजट पर पड़ने वाले वित्तीय भार को कम करना चाहते थे। साथ ही, इससे उन्हें शिक्षित भारतीयों के एक वर्ग को प्रशासन में शामिल कर संतुष्ट रखने में सहायता मिली, जिससे औपनिवेशिक शासन की स्थिरता और पकड़ बढ़ी।

161. (B) ब्रिटिश वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा के सम्मुख पारंपरिक भारतीय विनिर्माण का पतन ही वि-औद्योगीकरण का सार है।
वि-औद्योगीकरण और पारंपरिक उद्योगों का पतन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जब ब्रिटेन के मिलों में निर्मित सस्ते कपड़ों ने भारतीय बाजारों को पाट दिया, तो हाथ से काम करने वाले भारतीय जुलाहे और कारीगर उनका मुकाबला नहीं कर सके। औपनिवेशिक सरकार ने भी भेदभावपूर्ण कर नीतियां अपनाईं जिन्होंने भारतीय उत्पादों को महंगा और ब्रिटिश उत्पादों को सस्ता बना दिया। इस प्रक्रिया ने भारत के उन्नत औद्योगिक आधार को नष्ट कर उसे एक पिछड़े कृषि प्रधान देश में बदल दिया, जहाँ बेरोजगारी और निर्धनता निरंतर बढ़ती गई।

162. (B) हिंदू समाज में सुधार आरंभ किए और सामाजिक तथा धार्मिक प्रश्नों के लिए एक आधुनिक, तर्कसंगत दृष्टिकोण की वकालत की।
राजा राम मोहन राय को 'आधुनिक भारत का जनक' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने सदियों से चली आ रही धार्मिक जड़ता और अंधविश्वासों पर सर्वप्रथम कड़ा प्रहार किया। उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध ऐतिहासिक संघर्ष किया और एकेश्वरवाद का प्रचार किया। उन्होंने प्राचीन ग्रंथों की नवीन और मानवीय व्याख्या की तथा आधुनिक विज्ञान एवं अंग्रेजी शिक्षा के महत्व को पहचाना। उनके प्रयासों ने भारतीय जनमानस में आत्म-आलोचना और आधुनिकीकरण की जो प्रक्रिया शुरु की, उसी ने आगे चलकर आधुनिक राष्ट्रवादी चेतना की सुदृढ़ नींव रखी।

163. (B) 1857 का अधिनियम सभी प्रेस पर लागू होता था, जबकि 1878 का अधिनियम विशेष रूप से देशी भाषा के प्रेस को लक्षित करता था।
यद्यपि दोनों अधिनियम प्रेस की स्वतंत्रता को दबाने हेतु थे, किंतु 1878 का देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम अपनी प्रकृति में अधिक भेदभावपूर्ण और क्रूर था। 1857 का कानून एक आपातकालीन स्थिति में सभी हेतु था, जबकि 1878 का कानून विशेष रूप से भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों को चुप कराने हेतु निर्मित किया गया था, क्योंकि वे राष्ट्रवादी चेतना जगाने में अधिक प्रभावी थे। इसने अंग्रेजी और देशी प्रेस के बीच एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींच दी, जिसने ब्रिटिश सरकार के नस्लीय और औपनिवेशिक पूर्वाग्रह को उजागर किया।

164. (A) रियासतों के मामलों में अपने हस्तक्षेप को उचित ठहराने के लिए।
'सर्वोच्चता' शब्द का प्रयोग अंग्रेजों ने यह सिद्ध करने हेतु किया कि भारत की कोई भी देशी सत्ता ब्रिटिश क्राउन के बराबर नहीं है। इस दावे के माध्यम से उन्होंने रियासतों की संप्रभुता को पूर्णतः नकार दिया। इसने उन्हें यह अधिकार दिया कि वे किसी भी राज्य के आंतरिक प्रशासन में सुधार के नाम पर दखल दे सकें, राजाओं को नियुक्त या हटा सकें और संधियों की व्याख्या अपनी इच्छानुसार कर सकें। यह वास्तव में रियासतों को ब्रिटिश शासन के पूर्ण नियंत्रण में लाने का एक प्रभावी वैधानिक और राजनीतिक औजार था।

165. (C) पश्चिमी और मध्य भारत में मुगल साम्राज्य के पतन से उत्पन्न राजनीतिक शून्यता।
अठारहवीं शताब्दी में मुगल सत्ता के कमजोर होने के पश्चात मराठा ही एकमात्र ऐसी भारतीय शक्ति थे जो एक अखिल भारतीय साम्राज्य बनाने का स्वप्न देख सकते थे। दूसरी ओर, अंग्रेज भी तेजी से अपनी पकड़ मजबूत कर रहे थे। पश्चिमी और मध्य भारत के विशाल क्षेत्रों और उनके संसाधनों पर नियंत्रण हेतु इन दोनों शक्तियों के बीच संघर्ष अपरिहार्य था। मराठों की निर्णायक हार ने अंग्रेजों के लिए भारत का निर्विवाद शासक बनने का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण द्वार खोल दिया, जिससे उनकी राजनीतिक सर्वोच्चता स्थापित हुई।

166. (B) प्रांतीय सरकारों में 'द्वैध शासन' की शुरुआत।
1919 के भारत शासन अधिनियम की सबसे उल्लेखनीय विशेषता 'द्वैध शासन' या दोहरी सरकार की प्रणाली थी। इसके माध्यम से पहली बार भारतीयों को प्रांतीय स्तर पर कुछ विभागों का कार्यभार संभालने का अवसर प्राप्त हुआ। यद्यपि गवर्नर के पास अभी भी अंतिम शक्ति सुरक्षित थी, किंतु इस कदम ने उत्तरदायी शासन के विचार को संवैधानिक रूप से प्रस्तुत किया। इसने भारतीय नेताओं को संसदीय प्रक्रियाओं और प्रशासनिक चुनौतियों का व्यावहारिक अनुभव दिया, जो स्वतंत्रता के पश्चात भारत के लोकतांत्रिक विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ।

167. (B) अपर्याप्त और दोषपूर्ण ढंग से लागू कारखाना अधिनियमों ने श्रमिकों को बेहतर स्थितियों की मांग के लिए संघों में संगठित होने के लिए प्रेरित किया।
शुरुआती कारखाना अधिनियमों का मुख्य उद्देश्य श्रमिकों का वास्तविक कल्याण करना नहीं, बल्कि नाममात्र के सुधार कर बढ़ते असंतोष को रोकना था। इन अधिनियमों में कार्य की खतरनाक स्थितियों और अत्यंत कम मजदूरी जैसी मूल समस्याओं का कोई ठोस समाधान नहीं था। जब श्रमिकों ने देखा कि कानून उनके हितों की रक्षा करने में विफल हैं, तो उन्होंने अपनी सामूहिक शक्ति को पहचाना और स्वयं को संगठित करना प्रारंभ किया। इस प्रकार, वैधानिक विफलताओं ने ही भारत में सशक्त और संगठित श्रमिक संघ आंदोलनों को जन्म दिया।

भारतीय प्रेस स्वतंत्र और मुखर होता गया, वह औपनिवेशिक शोषण और अन्याय को जनता के सामने बेनकाब करने लगा। सरकार ने इसे अपने अस्तित्व हेतु खतरा माना और वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट जैसे काले कानून लागू किए ताकि जनता तक राष्ट्रवादी विचार न पहुँच सकें। इन कानूनों का उपयोग समाचार पत्रों को डराने, उन पर भारी जुर्माना लगाने और उन्हें बलपूर्वक बंद करने के हथियार के रूप में किया गया।

152. (A) पूर्व को तर्कहीन, निरंकुश और पश्चिम से हीन चित्रित करता था।
प्राच्यवाद यद्यपि भारतीय ग्रंथों के अध्ययन से प्रारंभ हुआ, किंतु इसके गहरे निहितार्थ साम्राज्यवादी थे। प्राच्यवादी लेखकों ने अक्सर यह दिखाने का प्रयास किया कि पूर्वी समाज स्थिर, रहस्यमयी और स्व-शासन के सर्वथा अयोग्य हैं। उन्होंने तर्क दिया कि इन 'पिछड़े' समाजों को आधुनिक बनाने और उनमें व्यवस्था लाने हेतु ब्रिटिश जैसे 'सभ्य' शासकों का होना अनिवार्य है। इस बौद्धिक ढांचे ने भारतीयों में हीन भावना पैदा करने और भारत पर ब्रिटिश प्रभुत्व को नैतिक रूप से उचित ठहराने में औपनिवेशिक सहायता प्रदान की।

153. (A) सहायक संधि के माध्यम से विस्तार और उसके पश्चात कुशासन के बहाने विलय।
अवध के साथ ब्रिटिश संबंधों का इतिहास विश्वासघात और शोषण की एक गाथा है। पहले अंग्रेजों ने नवाब को सहायक संधि के जाल में फँसाया, जिससे उसकी सैन्य शक्ति और राजस्व पर नियंत्रण कर लिया गया। जब नवाब पूर्णतः अंग्रेजों पर निर्भर हो गया, तो 1856 में 'कुशासन' का झूठा आरोप लगाकर उसके समृद्ध राज्य का पूर्ण विलय कर लिया गया। यह विस्तारवादी नीति का एक क्रूर उदाहरण था जिसने अंग्रेजों की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं और उनकी संधियों की अविश्वसनीयता को स्पष्ट रूप से उजागर कर दिया।

154. (B) दीवानी और फौजदारी अदालतों के पदानुक्रम की स्थापना।
ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में प्रशासन को सुचारू बनाने हेतु न्यायालयों की एक नई और व्यवस्थित प्रणाली पेश की। इसमें जिला स्तर पर मुंसिफ और जिला अदालतों से लेकर प्रांतीय स्तर पर सदर दीवानी और सदर निजामत अदालतों का गठन किया गया। इस प्रणाली ने मुगलकालीन न्याय व्यवस्था को धीरे-धीरे प्रतिस्थापित किया और लिखित कानूनों के आधार पर न्याय प्रदान करने की शुरुआत की। यद्यपि यह व्यवस्था महंगी और जटिल थी, किंतु इसने आधुनिक कानूनी ढांचे और न्यायिक प्रक्रिया की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

155. (C) तीव्र और संतुलित औद्योगिक विकास की राज्य-संचालित नीति
ब्रिटिश आर्थिक नीति का मुख्य उद्देश्य कभी भी भारत का संतुलित औद्योगिक विकास करना नहीं रहा। इसके विपरीत, औपनिवेशिक सरकार ने वि-औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया और ऐसी नीतियां अपनाईं जिससे भारतीय हस्तशिल्प विनष्ट हो जाएं। भारत में जो भी औद्योगिक प्रगति हुई, वह राज्य के सहयोग के स्थान पर निजी प्रयासों और विषम परिस्थितियों में हुई। अंग्रेजों ने भारत को केवल कच्चे माल के निर्यातक और तैयार माल के बाजार के रूप में बनाए रखा। अतः संतुलित औद्योगिक विकास की बात करना ऐतिहासिक रूप से सर्वथा त्रुटिपूर्ण है।

156. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उन्नीसवीं शताब्दी के समाज सुधार आंदोलन भारतीय समाज के आंतरिक कायाकल्प के प्रयास थे। इन आंदोलनों के नेतृत्व ने अनुभव किया कि जब तक समाज के भीतर से जड़ता, सती प्रथा, छुआछूत और महिलाओं के प्रति भेदभाव जैसी बुराइयां दूर नहीं होंगी, तब तक देश वास्तविक प्रगति नहीं कर सकता। उन्होंने आधुनिक तर्कवाद और मानवीय समानता के सिद्धांतों का उपयोग करके प्राचीन कुरीतियों को चुनौती दी। इन प्रयासों ने न केवल समाज को बदला, बल्कि एक नए और आधुनिक भारत के निर्माण का सुदृढ़ वैचारिक आधार भी तैयार किया।

157. (C) सती प्रथा, बाल विवाह और बलात वैधव्य।
समाज सुधारकों ने पहचाना कि महिलाओं की दयनीय स्थिति भारतीय समाज के पिछड़ेपन का मुख्य लक्षण है। उन्होंने सती प्रथा जैसी बर्बर परंपरा के विरुद्ध कड़ा संघर्ष किया और विधवाओं के नारकीय जीवन में सुधार हेतु उनके पुनर्विवाह की वकालत की। बाल विवाह के कारण लड़कियों के स्वास्थ्य और शिक्षा पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को प्रमुखता से उजागर किया गया। इन सुधारकों का मानना था कि महिलाओं को शिक्षित और सम्मानित बनाकर ही एक सभ्य और सशक्त समाज का निर्माण संभव है, जो राष्ट्रवादी चेतना की पहली अनिवार्य शर्त थी।

158. (A) लाभकारी व्यापार के अवसर।
सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में भारत अपनी समृद्धि, उत्कृष्ट वस्त्रों और कीमती मसालों हेतु विश्व भर में प्रसिद्ध था। यूरोपीय शक्तियों का भारत आने का प्राथमिक और मुख्य उद्देश्य इन वस्तुओं के व्यापार से अधिक से अधिक लाभ अर्जित करना था। उस समय भारत वैश्विक औद्योगिक उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र था, जिसने पुर्तगालियों, डचों, फ्रांसीसियों और अंग्रेजों को इसकी ओर आकर्षित किया। धीरे-धीरे इस व्यापारिक प्रतिद्वंद्विता ने राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं का रूप ले लिया, जिसके परिणामस्वरूप भारत में औपनिवेशिक साम्राज्यों की नींव पड़ी।

159. (B) जनसाधारण के योगदान और चेतना पर विचार किए बिना स्वतंत्रता संघर्ष का इतिहास अपूर्ण है।
निम्नवर्गीय या सबॉल्टरन स्कूल राष्ट्रवादी इतिहासलेखन की इस बात हेतु आलोचना करता है कि उसने इतिहास को केवल शिक्षित मध्यम वर्ग और राष्ट्रीय नेताओं की गतिविधियों तक सीमित कर दिया है। उनका तर्क है कि किसानों, आदिवासियों और आम लोगों के विद्रोह और उनकी स्वतंत्र चेतना ने भी राष्ट्रवादी संघर्ष को गहराई और विस्तार दिया था। उनके अनुसार, वास्तविक इतिहास वह है जो समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति के संघर्ष और उसकी भूमिका को भी उतनी ही प्रमुखता से स्वीकार करे और स्थान दे।

177. (B) जब महात्मा गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसे असहयोग आंदोलन से जोड़ दिया।
खिलाफत का मुद्दा प्रारंभ में केवल मुसलमानों तक सीमित था, लेकिन महात्मा गांधी ने इसमें हिंदू-मुस्लिम एकता का एक महान ऐतिहासिक अवसर देखा। उन्होंने कांग्रेस को राजी किया कि यदि खिलाफत और पंजाब के अन्यायों का समाधान नहीं होता है, तो पूरा देश असहयोग आंदोलन प्रारंभ करेगा। इस रणनीतिक गठबंधन ने खिलाफत आंदोलन को एक विशाल राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया, जिसमें समाज के सभी वर्गों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसने प्रथम बार ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक अत्यंत शक्तिशाली और संयुक्त जन-मोर्चा खड़ा कर दिया।

178. (C) राष्ट्रीय चेतना का उदय और औपनिवेशिक उत्पीड़न के विरुद्ध एकीकृत संघर्ष।
राष्ट्रवादी इतिहासकार का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना है कि कैसे भारत एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में विकसित हुआ और उसने विदेशी शासन की बेड़ियों को तोड़ा। वह उन घटनाओं और आंदोलनों को प्रमुखता देता है जिन्होंने भारतीयों में एकता और देशभक्ति का संचार किया। उसके लिए 1857 का विद्रोह या भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना केवल घटनाएँ नहीं हैं, बल्कि भारत की सामूहिक आत्मा की अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता की ओर बढ़ते कदमों की गाथा हैं। यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय अस्मिता को सुदृढ़ करने पर बल देता है।

179. (A) नए विजित क्षेत्रों को प्रभावी ढंग से प्रशासित करना और राजस्व एकत्र करना।
जैसे-जैसे ईस्ट इंडिया कंपनी के साम्राज्य का विस्तार हुआ, वैसे-वैसे उन्हें एक ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था की आवश्यकता महसूस हुई जो दूर-दराज के क्षेत्रों से कुशलतापूर्वक कर वसूल सके और कानून-व्यवस्था बनाए रख सके। इसी प्रशासनिक जरूरत ने प्रेसीडेंसियों और जिलों के विभाजन को जन्म दिया। इन ढांचों को भारतीयों की सुविधा हेतु नहीं, बल्कि कंपनी की व्यावसायिक और राजनीतिक पकड़ को मजबूत करने हेतु बनाया गया था। केंद्रीकृत नियंत्रण ने यह सुनिश्चित किया कि संसाधनों का दोहन बिना किसी बाधा के निरंतर जारी रहे।

180. (B) कृषि अर्थव्यवस्था में गतिरोध और निर्धनता में वृद्धि।
ब्रिटिश भू-राजस्व नीतियों और कृषि के जबरन वाणिज्यीकरण ने ग्रामीण भारत की कमर तोड़ दी। अत्यधिक करों और नकदी फसलों के दबाव ने उपजाऊ भूमि को बंजर बना दिया और किसानों को स्थाई कर्जदार बना दिया। कृषि में कोई नया तकनीकी निवेश नहीं हुआ, जिससे उत्पादकता निरंतर गिरती गई। अकाल एक सामान्य घटना बन गए और ग्रामीण जनता स्थायी निर्धनता के दुष्चक्र में फंस गई। इन आर्थिक नीतियों ने भारत को एक विकसित कृषि समाज से हटाकर एक जर्जर और शोषित उपनिवेश में रूपांतरित कर दिया।

181. (B) निम्न जातियों के भीतर से जाति और लिंग पदानुक्रम को एक क्रांतिकारी चुनौती।
ज्योतिबा और सावित्रीबाई फुले का कार्य केवल सुधार नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति थी। उन्होंने ब्राह्मणवादी वर्चस्व को सीधे चुनौती दी और तर्क दिया कि शिक्षा ही वह हथियार है जिससे निम्न जातियाँ और महिलाएँ अपनी गुलामी की जंजीरों को काट सकती हैं। उन्होंने सत्यशोधक समाज के माध्यम से तर्क और समानता पर आधारित एक नए समाज की परिकल्पना की। उनके संघर्ष ने महाराष्ट्र के सामाजिक ढांचे को हिला दिया और भविष्य के दलित आंदोलनों तथा महिला अधिकारों हेतु एक स्थायी वैचारिक प्रेरणा और आधार प्रदान किया।

182. (B) उस समय के व्यक्तिपरक अनुभवों, सामाजिक आलोचनाओं और सांस्कृतिक परिवर्तनों को दर्शाता है।
इतिहास केवल युद्धों और संधियों का लेखा-जोखा नहीं है, बल्कि यह मानव चेतना का क्रमिक विकास भी है। रचनात्मक साहित्य और चित्रकला इतिहासकार को समाज की रूह तक पहुँचने में सहायता करते हैं। जहाँ सरकारी फाइलें केवल प्रशासनिक निर्णयों को बताती हैं, वहीं एक कविता या चित्र उस निर्णय से जनता के मन में उपजी खुशी या पीड़ा को व्यक्त करता है। ये स्रोत औपनिवेशिक काल के दौरान बदलते सामाजिक मूल्यों, सांस्कृतिक संघर्षों और लोगों की आंतरिक आकांक्षाओं को समझने हेतु अत्यंत सूक्ष्म और भावपूर्ण साक्ष्य प्रदान करते हैं।

183. (C) पृथक निर्वाचन मंडल की प्रणाली स्थापित करने के लिए, जिसने सांप्रदायिक राजनीति के बीज बोए।
1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधारों ने भारतीय इतिहास में एक खतरनाक मोड़ लाया। प्रथम बार धर्म के आधार पर पृथक निर्वाचन मंडल की शुरुआत की गई, जिसमें मुसलमान केवल मुस्लिम उम्मीदवारों को ही वोट दे सकते थे। अंग्रेजों ने इसे अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के रूप में प्रस्तुत किया, लेकिन इसका वास्तविक उद्देश्य हिंदू-मुस्लिम एकता में दरार डालना था। इस व्यवस्था ने भविष्य में सांप्रदायिकता को संस्थागत बना दिया और अंततः भारत के विभाजन की वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार करने में सबसे विनाशकारी भूमिका निभाई जिसने देश को बांटा।

184. (C) ब्रिटेन से सस्ते, मशीन निर्मित सामानों की आमद और प्रतिकूल औपनिवेशिक नीतियां।
भारत के गौरवशाली कुटीर उद्योगों के पतन के पीछे मुख्य कारण ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति और ईस्ट इंडिया कंपनी की विनाशकारी नीतियां थीं। मशीन से बने विदेशी कपड़े भारतीय हाथकरघा उत्पादों की तुलना में अत्यंत सस्ते थे। साथ ही, अंग्रेजों ने भारतीय सामानों पर भारी निर्यात शुल्क लगाया और विदेशी माल को भारत में बिना किसी कर के आने दिया। इस असमान प्रतिस्पर्धा और सरकारी भेदभाव ने भारत के विश्व प्रसिद्ध हस्तशिल्प को पूरी तरह बर्बाद कर दिया, जिससे लाखों कुशल कारीगर बेरोजगार और निर्धन हो गए।

185. (A) परोपकारी और राष्ट्रवादी जो कानूनी और उदार माध्यमों से श्रमिकों की स्थिति में सुधार करना चाहते थे।
भारत में श्रमिक आंदोलनों का शुरुआती दौर उग्रवाद से मुक्त था। इसका नेतृत्व अक्सर ऐसे बुद्धिजीवियों और राष्ट्रवादियों ने किया जो मानवतावादी आधार पर श्रमिकों की दुर्दशा से दुखी थे। वे कारखानों में स्वच्छता, उचित मजदूरी और काम के घंटों में कमी जैसे सुधारों हेतु शांतिपूर्ण ढंग से प्रयास करते थे। इस चरण में मुख्य बल मिल मालिकों के साथ संवाद और सरकार

168. (C) 'होम रुल' की मांग को लोकप्रिय बनाया और नरमपंथियों तथा गरमपंथियों के बीच की दूरी को कम किया।
एनी बेसेंट ने भारतीय राजनीति में एक नई ऊर्जा का संचार किया। उन्होंने आयरिश तर्ज पर 'होम रुल लीग' की स्थापना की और स्वशासन की मांग को पूरे देश में घर-घर तक पहुँचाया। उनके प्रयासों के कारण ही 1916 के लखनऊ समझौते में कांग्रेस के दोनों धड़े पुनः एक साथ आए और मुस्लिम लीग के साथ भी सहयोग बढ़ा। उन्होंने भारतीयों को यह विश्वास दिलाया कि वे सम्मानजनक तरीके से ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन प्राप्त करने के पूर्ण हकदार हैं, जिससे राष्ट्रवादी आंदोलन अधिक संगठित और सशक्त हुआ।

169. (C) जवाहरलाल नेहरू की 'एन ऑटोबायोग्राफी'।
आधुनिक इतिहास के अध्ययन में 'एन ऑटोबायोग्राफी' जैसे ग्रंथ अमूल्य प्राथमिक स्रोत हैं। इनमें न केवल लेखक के व्यक्तिगत जीवन का विवरण होता है, बल्कि उस समय के राजनीतिक उथल-पुथल, सामाजिक परिवेश और वैचारिक संघर्षों का सजीव वर्णन भी मिलता है। यह पुस्तक स्वतंत्रता आंदोलन की सूक्ष्मताओं और नेताओं की मानसिक स्थिति को समझने का एक द्वार प्रदान करती है। यद्यपि यह व्यक्तिपरक हो सकती है, फिर भी यह सरकारी दस्तावेजों की शुष्कता के विपरीत इतिहास को एक मानवीय चेहरा और वैचारिक गहराई प्रदान करती है।

170. (B) इसे ब्रिटिश सरकार ने समर्थन और स्वीकार किया था।
धन के निष्कासन का सिद्धांत ब्रिटिश शासन की सबसे तीखी और वैज्ञानिक आर्थिक आलोचना थी, जिसे औपनिवेशिक सरकार ने कभी स्वीकार नहीं किया। इसके विपरीत, अंग्रेजों ने हमेशा यह दावा किया कि वे भारत में भारी पूंजी का निवेश कर रहे हैं और उसका विकास कर रहे हैं। दादाभाई नौरोजी के इस सिद्धांत ने अंग्रेजों के इस पाखंड को विश्व के सामने उजागर कर दिया। सरकार ने इस विचार को दबाने की कोशिश की क्योंकि यह उनके 'परोपकारी शासन' के दावे की जड़ों पर ही कड़ा प्रहार करता था। अतः विकल्प (B) गलत है।

171. (A) रूस
अंग्रेजों की अग्रगामी नीति के पीछे मुख्य कारण 'रूस का भय' या 'द ग्रेट गेम' था। उन्नीसवीं शताब्दी में रूस तेजी से मध्य एशिया की ओर विस्तार कर रहा था, जिससे अंग्रेजों को लगा कि वह जल्द ही भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमाओं तक पहुँच जाएगा। इसी खतरे को टालने हेतु ब्रिटिश सरकार ने अफगानिस्तान और सीमावर्ती क्षेत्रों में आक्रामक हस्तक्षेप किया ताकि वहां अपना प्रभाव बढ़ाकर रूस और भारत के बीच एक सुरक्षा कवच बनाया जा सके। यह साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा का एक हिस्सा था जिसने सीमांत नीति निर्धारित की।

172. (B) टीपू सुल्तान की मृत्यु और पुनर्स्थापित वोडेयार वंश पर सहायक संधि थोपना।
1799 के चौथे आंग्ल-मैसूर युद्ध में टीपू सुल्तान की वीरतापूर्वक लड़ते हुए मृत्यु हो गई, जिससे दक्षिण भारत में अंग्रेजों का सबसे बड़ा शत्रु समाप्त हो गया। विजय के पश्चात अंग्रेजों ने मैसूर के एक बड़े हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया और शेष भाग पर पुराने हिंदू वोडेयार वंश के एक बालक को राजा बनाकर उस पर अत्यंत कठोर सहायक संधि थोप दी। इस प्रकार, मैसूर की स्वतंत्रता पूरी तरह समाप्त हो गई और वह ब्रिटिश सत्ता के अधीन एक पूर्णतः संरक्षित राज्य बन गया, जिससे नियंत्रण सुदृढ़ हुआ।

173. (A) उच्च पदों से भारतीयों का बहिष्कार।
ब्रिटिश क्राउन के अधीन सिविल सेवा एक अत्यधिक विशिष्ट और नस्लीय रूप से भेदभावपूर्ण संस्था थी। प्रशासनिक संरचना के शीर्ष पदों को केवल अंग्रेजों हेतु सुरक्षित रखा गया था, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि केवल यूरोपीय ही साम्राज्य के हितों की रक्षा कर सकते हैं। भारतीयों को केवल निचले प्रशासनिक कार्यों तक सीमित रखा गया। यद्यपि बाद में परीक्षाएं भारतीयों हेतु खोली गईं, किंतु आयु सीमा और परीक्षा केंद्र जैसी बाधाओं ने उनके प्रवेश को अत्यंत कठिन बना दिया, जिससे यह सेवा भारतीयों से सदैव कटी रही।

174. (C) उनका विस्थापन और आजीविका की हानि, जिसे 'कंगालीकरण' के रूप में जाना जाता है।
औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों ने भारतीय शिल्पकारों को उनके पारंपरिक व्यवसायों से उखाड़ फेंका। जब उनके द्वारा बनाए गए सामानों की बाजार में कोई पूछ नहीं रही, तो वे दाने-दाने को मोहताज हो गए। शहरों के समृद्ध हस्तशिल्प केंद्र उजड़ गए और लाखों लोग अपनी आजीविका की तलाश में गाँवों की ओर पलायन कर गए। इस प्रक्रिया ने कुशल शिल्पकारों को भूमिहीन कृषि मजदूरों में बदल दिया, जहाँ उनका निरंतर शोषण होता रहा। यह उनके सामाजिक और आर्थिक पतन का सबसे अंधकारमय अध्याय था जिसने निर्धनता बढ़ाई।

175. (A) भारत की संस्कृति और दर्शन में गौरव की भावना जागृत करना।
थियोसोफिकल सोसाइटी ने भारतीय बुद्धिजीवियों के मन में यह विश्वास पैदा किया कि उनकी संस्कृति हीन नहीं बल्कि अत्यंत उन्नत और प्राचीन है। एनी बेसेंट ने प्राचीन भारतीय ग्रंथों की महिमा का गान किया, जिससे शिक्षित भारतीयों को अपनी जड़ों की ओर लौटने और उन पर गर्व करने की प्रेरणा मिली। इस सांस्कृतिक जागृति ने राष्ट्रवादी आंदोलन हेतु एक नैतिक और वैचारिक आधार तैयार किया। जब लोग अपनी संस्कृति को श्रेष्ठ मानने लगे, तो उनमें राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने की इच्छा और भी प्रबल हो गई।

176. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम ने क्षेत्रीय समाचार पत्रों की स्वतंत्रता छीन ली। 1919 के अधिनियम ने प्रांतों में द्वैध शासन की विवादास्पद प्रणाली शुरु की। सहायक संधि के माध्यम से भारतीय राज्यों ने अपनी सैन्य और विदेश नीति की संप्रभुता खो दी। व्यपगत के सिद्धांत ने उत्तराधिकारी न होने के आधार पर कई राज्यों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर दिया। ये सभी नीतियां और कानून भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व को बढ़ाने और भारतीयों की राजनीतिक आकांक्षाओं को दबाने या सीमित करने के अत्यंत महत्वपूर्ण साधन थे।

औपनिवेशिक प्रशासन ने दोनों समुदायों के बीच अविश्वास पैदा करने की सोची-समझी नीति अपनाई। उन्होंने पृथक निर्वाचन मंडल और नौकरियों में आरक्षण जैसे उपायों का उपयोग किया ताकि लोग एक राष्ट्र के बजाय अपने धार्मिक समूहों के प्रति वफादार रहें। इसी नीति ने अंततः सांप्रदायिक राजनीति को संस्थागत रूप दिया।

109. (C) कपास और अफीम के व्यापार मार्गों को नियंत्रित करने और पश्चिमी तथा मध्य भारत में अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने की इच्छा।
मराठों के साथ अंग्रेजों के संघर्ष के पीछे गहरे आर्थिक और सामरिक हित निहित थे। मराठा क्षेत्र उपजाऊ काली मिट्टी हेतु प्रसिद्ध थे जो कपास उत्पादन हेतु उत्तम थी, जिसकी मांग ब्रिटिश कपड़ा मिलों में अत्यधिक थी। इसके अतिरिक्त, मध्य और पश्चिमी भारत पर नियंत्रण प्राप्त करना अंग्रेजों हेतु संपूर्ण उपमहाद्वीप पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए आवश्यक था। मराठों की आपसी कलह और राजनीतिक बिखराव ने अंग्रेजों को उनके समृद्ध व्यापारिक मार्गों पर पूर्णतः कब्जा करने का एक स्वर्णिम अवसर प्रदान किया।

110. (A) एक अखिल भारतीय संघ और प्रांतीय स्वायत्तता।
1935 का भारत शासन अधिनियम अब तक का सबसे विस्तृत और महत्वपूर्ण संवैधानिक दस्तावेज था। इसमें प्रथम बार एक अखिल भारतीय संघ की परिकल्पना की गई थी जिसमें ब्रिटिश प्रांत और रियासतें दोनों सम्मिलित हों। इसने प्रांतों में 'द्वैध शासन' को समाप्त कर 'प्रांतीय स्वायत्तता' प्रदान की, जिसका अर्थ था कि अब निर्वाचित मंत्री अधिक स्वतंत्र होकर कार्य कर सकते थे। यद्यपि इसका संघीय हिस्सा कभी लागू नहीं हो सका, किंतु इसके अधिकांश प्रावधानों ने स्वतंत्र भारत के संविधान हेतु एक बुनियादी आधार प्रदान किया।

111. (D) औपनिवेशिक सरकार द्वारा मुद्रा, विनिमय दरों और ऋण का प्रबंधन।
ब्रिटिश काल में मौद्रिक नीति का उपयोग भारतीय अर्थव्यवस्था को ब्रिटेन के आर्थिक हितों के अधीन रखने हेतु किया गया था। विनिमय दर को जानबूझकर ऐसा रखा जाता था जिससे ब्रिटिश आयातकों को लाभ हो और भारतीय निर्यातकों को क्षति। सरकार ने सोने के स्थान पर चांदी पर आधारित मुद्रा प्रणाली अपनाई, जिसने अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भारत की स्थिति को कमजोर किया। इन नीतियों ने न केवल भारत से धन के निष्कासन को सुगम बनाया, बल्कि घरेलू पूंजी निर्माण और स्वतंत्र औद्योगिक विकास को भी बाधित किया।

112. (B) पश्चिमी लोकतांत्रिक और राष्ट्रवादी आदर्शों की शुरुआत जिसने अंततः औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती दी।
यद्यपि ब्रिटिश शिक्षा का उद्देश्य वफादार लिपिक बनाना था, किंतु इसने भारतीयों को अनजाने में स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र जैसे उदारवादी यूरोपीय विचारों से परिचित कराया। अंग्रेजी भाषा ने देश के विभिन्न हिस्सों के नेताओं के बीच संवाद के एक प्रभावी पुल का कार्य किया। इसी शिक्षा ने एक ऐसा बौद्धिक वर्ग तैयार किया जिसने औपनिवेशिक शोषण को वैज्ञानिक रूप से समझा और आधुनिक राष्ट्रवाद का मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार, ब्रिटिश शिक्षा ही अंततः ब्रिटिश साम्राज्य के वैचारिक पतन का एक मुख्य कारण बनी।

113. (A) 3, 4, 1, 2
ऐतिहासिक क्रम में, फ्रांसीसियों ने 1668 में सूरत में अपना प्रथम कारखाना स्थापित किया। इसके पश्चात 1757 में प्लासी का युद्ध हुआ जिसने बंगाल में अंग्रेजों की राजनीतिक नींव रखी। 1767 में प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध की शुरुआत हुई जिसमें हैदर अली ने अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी। अंत में, 1856 में लॉर्ड डलहौजी द्वारा अवध का विलय किया गया। यह कालक्रम भारत में यूरोपीय प्रतिद्वंद्विता से लेकर ब्रिटिश साम्राज्य के पूर्ण सुदृढ़ीकरण तक के विभिन्न महत्वपूर्ण ऐतिहासिक चरणों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

114. (D) उत्तर-पश्चिम सीमा और अफगानिस्तान
अग्रगामी नीति ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा रणनीति का एक हिस्सा थी जो उत्तर-पश्चिम की ओर से होने वाले किसी भी रुसी आक्रमण को रोकने हेतु निर्मित की गई थी। इसके तहत अंग्रेजों ने अफगानिस्तान के आंतरिक मामलों में सक्रिय रूप से हस्तक्षेप किया और वहां अपनी समर्थक सरकारें स्थापित करने का निरंतर प्रयास किया। यह नीति अत्यंत खर्चीली और जोखिम भरी सिद्ध हुई, जिसके कारण दो आंग्ल-अफगान युद्ध हुए। इसका मुख्य उद्देश्य भारत की सीमाओं को सुरक्षित करने हेतु एक 'बफर राज्य' का निर्माण करना था।

115. (C) कलाकारों और लेखकों द्वारा चित्रित उस समय की धारणाएं, दृष्टिकोण और सामाजिक वास्तविकताएं।
रचनात्मक साहित्य और चित्रकला इतिहास के ऐसे दर्पण हैं जो समाज की आंतरिक हलचलों को गहराई से व्यक्त करते हैं। एक इतिहासकार इन स्रोतों का उपयोग यह समझने हेतु करता है कि उस समय के लोग औपनिवेशिक परिवर्तनों को किस रूप में देख रहे थे। उदाहरण के लिए, उस काल के उपन्यासों में ग्रामीण संकट और सांस्कृतिक संघर्ष का मार्मिक चित्रण मिलता है। चित्रकला में पश्चिमी और भारतीय शैलियों का मिश्रण उस समय की बदलती सामाजिक पहचान और शासक-शासित संबंधों की सूक्ष्मताओं को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

116. (B) ये अधिनियम तुरंत भारतीयों को पूर्ण शक्ति हस्तांतरित करने के लिए निर्मित किए गए थे।
1909, 1919 और 1935 के अधिनियमों का वास्तविक उद्देश्य भारतीयों को सत्ता हस्तांतरित करना नहीं, बल्कि राष्ट्रवादी असंतोष को शांत करते हुए ब्रिटिश नियंत्रण बनाए रखना था। प्रत्येक अधिनियम में कुछ अधिकार दिए गए, किंतु साथ ही सांप्रदायिक निर्वाचन मंडल और गवर्नर के विशेषाधिकार जैसे सुरक्षा उपाय भी जोड़े गए। इन सुधारों की प्रक्रिया अत्यंत धीमी और क्रमिक थी, जो पूर्ण स्वतंत्रता की राष्ट्रवादी मांग के साथ मेल नहीं खाती थी। अतः यह कहना ऐतिहासिक रूप से गलत है कि उनका उद्देश्य पूर्ण शक्ति का हस्तांतरण था।

को ज्ञापन सौंपने पर था। इन नेताओं ने भविष्य के अधिक संगठित और राजनीतिक श्रमिक संघों हेतु एक आवश्यक प्रारंभिक आधार तैयार किया।

186. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच की प्रतिद्वंद्विता में अंग्रेजों की जीत का एक मुख्य कारण उनकी कंपनी का स्वरूप था। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी एक स्वतंत्र और संसाधन संपन्न व्यापारिक निकाय थी, जबकि फ्रांसीसी कंपनी सरकारी नियंत्रण के कारण निर्णय लेने में अक्षम थी। इसके अतिरिक्त, ब्रिटिश नौसेना विश्व में सर्वश्रेष्ठ थी, जिसने उन्हें समुद्री मार्गों पर पूर्ण नियंत्रण दिया। इन रणनीतिक और संगठनात्मक लाभों के कारण अंग्रेज अंततः फ्रांसीसियों को भारत से बाहर निकालने और अपना साम्राज्य सुदृढ़ करने में सफल रहे।

187. (C) सती, विधवा पुनर्विवाह और शिक्षा जैसे मुद्दे सुधारवादी एजेंडे के केंद्र में थे।
उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान भारतीय समाज सुधारकों ने अपना ध्यान मुख्य रूप से उन प्रथाओं पर केंद्रित किया जो महिलाओं के मानवीय अधिकारों का हनन करती थीं। उन्होंने सती प्रथा के अमानवीय कृत्य को समाप्त करने, विधवाओं को सम्मानजनक जीवन और पुनर्विवाह का अधिकार दिलाने तथा लड़कियों हेतु शिक्षा के द्वार खोलने हेतु निरंतर संघर्ष किया। ये सुधार केवल सामाजिक नहीं थे, बल्कि वे राष्ट्र की प्रगति हेतु आवश्यक माने गए थे। इन प्रयासों ने भारतीय समाज में महिलाओं की गरिमा और उनकी भूमिका को पुनर्परिभाषित किया।

188. (A) गुटनिरपेक्ष आंदोलन
सहायक संधि, व्यपगत का सिद्धांत और सर्वोच्चता ये सभी ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार और रियासतों को नियंत्रित करने की विशिष्ट औपनिवेशिक नीतियां थीं। इसके विपरीत, गुटनिरपेक्ष आंदोलन स्वतंत्रता के पश्चात के काल की एक अंतरराष्ट्रीय विदेश नीति है, जिसे पंडित नेहरू के नेतृत्व में शीत युद्ध के दौरान अपनाया गया था। इसका उद्देश्य महाशक्तियों के सैन्य गुटों से दूर रहकर स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करना था। अतः इसका औपनिवेशिक काल की साम्राज्यवादी नीतियों से कोई ऐतिहासिक संबंध नहीं है, और यह पूर्णतः भिन्न विषय है।

189. (B) ज्ञान का एक ऐसा निकाय बनाकर जिसने भारत पर शासन करना और उसे नियंत्रित करना सुगम बना दिया।
प्राच्यवादियों ने भारतीय भाषाओं और कानूनों का अध्ययन इसलिए किया ताकि वे यहाँ की सामाजिक व्यवस्था को गहराई से समझ सकें। इस ज्ञान का उपयोग अंग्रेजों ने भारत पर अधिक प्रभावी ढंग से शासन करने हेतु किया। उन्होंने भारतीय ग्रंथों की ऐसी व्याख्याएँ कीं जो उनके शासन को नैतिक रूप से न्यायोचित ठहरा सकें। यद्यपि इससे भारतीय संस्कृति की विश्व स्तर पर पहचान बढ़ी, किंतु इसका मूल उद्देश्य भारतीयों की मानसिकता को समझना और उन्हें नियंत्रित करने हेतु एक प्रशासनिक ढांचा तैयार करना था, जो साम्राज्यवादी हितों की पूर्ति करता था।

190. (B) महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु और उसके पश्चात पंजाब में राजनीतिक अस्थिरता।
महाराजा रणजीत सिंह ने एक शक्तिशाली और अनुशासित सिख साम्राज्य खड़ा किया था जिसके साथ अंग्रेजों ने मित्रता की संधि की थी। हालाँकि, 1839 में उनकी मृत्यु के पश्चात पंजाब में उत्तराधिकार की लड़ाई और दरबारी साजिशों के कारण अस्थिरता फैल गई। अंग्रेजों ने इस अराजकता को अपनी विस्तारवादी योजना हेतु एक स्वर्णिम अवसर माना। उन्होंने सिख दरबार के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर दिया, जिससे आपसी अविश्वास बढ़ा और अंततः पंजाब के विलय के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाले भीषण युद्ध हुए जिसने सीमाएं बदलीं।

191. (B) औपनिवेशिक राज्य के लिए बल प्रयोग और नियंत्रण के एक प्रमुख साधन के रूप में कार्य करना।
भारत में अंग्रेजों द्वारा निर्मित पुलिस व्यवस्था का प्राथमिक उद्देश्य कभी भी जन-सेवा नहीं था। इसे मुख्य रूप से एक दमनकारी यंत्र के रूप में तैयार किया गया था जो किसी भी प्रकार के जन-विद्रोह या राजनीतिक विरोध को कुचल सके। पुलिस पदानुक्रम में ब्रिटिश अधिकारियों का पूर्ण वर्चस्व था, जिससे यह सुनिश्चित किया जाता था कि बल पूरी तरह से साम्राज्य के प्रति वफादार रहे। इसने औपनिवेशिक सत्ता की पहुँच ग्रामीण स्तर तक सुनिश्चित की और जनता के मन में राज्य का भय बनाए रखने का कार्य किया जिससे शासन सुरक्षित रहा।

192. (B) केवल 1 और 3
दादाभाई नौरोजी ने धन के निष्कासन सिद्धांत के माध्यम से ब्रिटिश आर्थिक शोषण को सांख्यिकीय रूप से सिद्ध किया। वि-औद्योगीकरण ने वास्तव में भारतीय हस्तशिल्प को नष्ट कर दिया, जिससे अर्थव्यवस्था का संतुलन बिगड़ गया और बेरोजगारी बढ़ी। यह कहना सर्वथा गलत है कि कृषि के वाणिज्यीकरण से छोटे किसानों को लाभ हुआ; वास्तव में, इसने उन्हें बाजार की अनिश्चितताओं और कर्ज के जाल में धकेल दिया। अधिकांश लाभ तो बिचौलियों और औपनिवेशिक सरकार को ही प्राप्त हुआ, जबकि किसान अधिक निर्धन और असहाय होता चला गया।

193. (A) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
पंडित मदन मोहन मालवीय ने एक ऐसे विश्वविद्यालय की परिकल्पना की थी जो आधुनिक ज्ञान के साथ भारतीय आध्यात्मिकता और संस्कृति का संगम हो। उनके अथक प्रयासों और व्यापक जन-सहयोग के कारण 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना संभव हुई। यह संस्थान न केवल शिक्षा का केंद्र बना, बल्कि इसने स्वतंत्रता संग्राम हेतु कई महान देशभक्तों और बुद्धिजीवियों को भी तैयार किया। मालवीय जी का यह कार्य भारतीय पुनर्जागरण और राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र में उनके महान योगदान का सबसे बड़ा और जीवंत प्रतीक है।

194. (B) भारतीय प्रेस के माध्यम से फैले राष्ट्रवादी विचारों के बढ़ते प्रभाव का भय।
जैसे-जैसे भारतीय प्रेस ने औपनिवेशिक शासन के अन्यायपूर्ण कृत्यों को उजागर करना प्रारंभ किया, ब्रिटिश सरकार में बेचैनी बढ़ने लगी। वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट जैसे दमनकारी कानूनों का लागू होना इस बात का प्रमाण था कि अंग्रेज राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार से डरे हुए थे। वे जानते थे कि यदि जनता को उनकी शोषक नीतियों की सच्चाई पता चल गई, तो साम्राज्य की नींव हिल जाएगी। इन कानूनों का मुख्य उद्देश्य प्रेस की स्वतंत्र आवाज को घोंटना था ताकि औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध कोई संगठित जनमत न बन सके।

195. (A) औपनिवेशिक अधीनता का साझा अनुभव और आधुनिक विचारों का प्रसार।
भारत में राष्ट्रवाद का उदय अचानक नहीं हुआ, बल्कि यह ब्रिटिश शासन के तहत हुए साझा आर्थिक शोषण और राजनीतिक दासता की प्रतिक्रिया थी। आधुनिक शिक्षा ने भारतीयों को स्वतंत्रता और समानता जैसे पश्चिमी लोकतांत्रिक मूल्यों से गहराई से परिचित कराया। रेल, डाक और प्रेस जैसे संचार साधनों ने दूर-दराज के भारतीयों को आपस में जोड़ा, जिससे उन्हें यह अनुभव हुआ कि उनकी समस्याएँ एक ही हैं। इसी साझा अनुभव और चेतना ने विविधताओं से भरे भारत को एक राष्ट्र के रूप में एकजुट होने की महान प्रेरणा दी।

196. (A) बुर्जुआ वर्ग द्वारा अपने वर्ग हितों की पूर्ति के लिए लड़ा गया संघर्ष।
मार्क्सवादी इतिहासकार राष्ट्रवादी आंदोलन को भारतीय पूंजीपति और शिक्षित मध्यम वर्ग के उभार के रूप में देखते हैं। उनका तर्क है कि यह वर्ग अपनी आर्थिक उन्नति हेतु ब्रिटिश बाधाओं को हटाना चाहता था। यद्यपि इसमें व्यापक जनता सम्मिलित थी, किंतु आंदोलन की दिशा और नीतियां मुख्य रूप से उच्च और मध्यम वर्ग के हितों द्वारा ही निर्धारित की जाती थीं। यह दृष्टिकोण राष्ट्रवाद के पीछे छिपे वर्गीय हितों और आर्थिक संघर्षों को समझने का एक विशिष्ट और गहन सामाजिक तथा आर्थिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

197. (A) व्यापारिक अधिकार प्राप्त करना और कारखाने स्थापित करना।
बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना कोई अचानक हुई घटना नहीं थी, बल्कि यह एक लंबी और क्रमिक प्रक्रिया थी। इसकी शुरुआत सत्रहवीं शताब्दी में मुगल सम्राटों से व्यापारिक छूट प्राप्त करने और कलकत्ता जैसे स्थानों पर किलेबंद कारखाने बनाने से हुई। इन व्यापारिक केंद्रों ने धीरे-धीरे सैन्य और राजनीतिक शक्ति के रूप में विस्तार किया। जैसे-जैसे कंपनी की आर्थिक ताकत बढ़ी, उसने स्थानीय राजनीति में हस्तक्षेप करना प्रारंभ किया, जिसका समापन अंततः प्लासी और बक्सर के युद्धों के माध्यम से पूर्ण राजनीतिक नियंत्रण में हुआ।

198. (A) अंग्रेज भारत में अंतिम और सर्वोच्च शक्ति थे, और राज्य अधीनस्थ थे।
सर्वोच्चता की अवधारणा ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय रियासतों की संप्रभुता ब्रिटिश क्राउन के अधीन और उसकी कृपा पर निर्भर है। इसका अर्थ था कि कोई भी भारतीय राजा ब्रिटिश सत्ता के समान होने का दावा नहीं कर सकता था। अंग्रेज किसी भी राज्य के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने, उत्तराधिकार का निर्णय लेने या किसी शासक को हटाने का पूर्ण अधिकार रखते थे। इसने रियासतों को पूरी तरह से शक्तिहीन कर दिया और उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य के एक गौण और वफादार अंग के रूप में कार्य करने हेतु विवश किया।

199. (C) औपनिवेशिक नीतियों के परिणामस्वरूप एक मानव-निर्मित परिघटना।
दादाभाई नौरोजी और आर.सी. दत्त ने अपनी आर्थिक आलोचनाओं में यह दृढ़तापूर्वक कहा कि भारत की व्यापक निर्धनता कोई प्राकृतिक आपदा नहीं थी। उन्होंने तथ्यों के साथ सिद्ध किया कि यह जानबूझकर थोपी गई औपनिवेशिक नीतियों, अत्यधिक राजस्व वसूली और धन के निरंतर निष्कासन का प्रत्यक्ष परिणाम थी। उनके अनुसार, अंग्रेजों ने भारत की आर्थिक संरचना को इस प्रकार बदला कि वह केवल ब्रिटेन को समृद्ध करने का साधन बन गई। इस विश्लेषण ने भारतीयों को उनकी गरीबी के वास्तविक कारणों के प्रति सचेत और जागरुक किया।

200. (D) महिला शिक्षा और विधवाओं का उत्थान।
महर्षि धोंडो केशव कर्वे ने अपना जीवन उन सामाजिक कुरीतियों से लड़ने में लगा दिया जिन्होंने महिलाओं के जीवन को कष्टकारी बना दिया था। उन्होंने विधवाओं की शिक्षा हेतु विशेष प्रयास किए और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने हेतु संस्थानों की नींव रखी। 1916 में उनके द्वारा स्थापित प्रथम महिला विश्वविद्यालय भारतीय इतिहास में स्त्री शिक्षा की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था। उनके निस्वार्थ कार्यों ने न केवल हजारों महिलाओं के जीवन को बदला, बल्कि समाज की महिलाओं के प्रति सोच में भी गहरा परिवर्तन लाने का ऐतिहासिक कार्य किया।

201. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
सांप्रदायिकता एक ऐसी विचारधारा है जो धार्मिक पहचानों को एक-दूसरे के विरोधी के रूप में प्रस्तुत करती है। द्वैध शासन 1919 के अधिनियम के तहत विषयों का आरक्षित और हस्तांतरित श्रेणियों में विभाजन था। खिलाफत आंदोलन तुर्की के सुल्तान के धार्मिक पद की रक्षा हेतु चलाया गया था। प्राच्यवाद पश्चिमी विद्वानों द्वारा पूर्वी संस्कृतियों और भाषाओं के अध्ययन की एक विशेष धारा थी। ये सभी शब्दावलियाँ आधुनिक भारतीय इतिहास के विभिन्न राजनीतिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक पहलुओं को गहराई से समझने हेतु अत्यंत आवश्यक और आधारभूत हैं।

202. (C) प्रारंभिक, लेकिन बढ़ती हुई, जिसमें सरकार द्वारा विनियमन के समय-समय पर प्रयास किए गए।
1857 के विद्रोह से पूर्व भारतीय प्रेस अपनी जड़ें जमा रहा था। इसमें न केवल अंग्रेजी पत्र बल्कि राजा राम मोहन राय और अन्य सुधारकों द्वारा शुरु किए गए भारतीय भाषाओं के पत्र भी सम्मिलित थे। सरकार ने इसकी बढ़ती शक्ति को नियंत्रित करने हेतु 1823 के लाइसेंसिंग विनियमों जैसे कई कठोर प्रतिबंध लगाए। प्रेस और सरकार के बीच यह निरंतर खींचतान का दौर

था, जहाँ प्रेस सामाजिक चेतना और राजनीतिक चर्चा का केंद्र बनता जा रहा था और अंग्रेज उसे दमनकारी नीतियों के माध्यम से सीमित करने के तरीके खोज रहे थे।

203. (A) जनता और हाशिए पर रहने वाले समूहों के दृष्टिकोण से इतिहास लिखना।
निम्नवर्गीय या सबॉल्टरन इतिहासलेखन का मुख्य लक्ष्य इतिहास को 'नीचे से' देखना है। यह स्कूल मानता है कि इतिहास केवल राजाओं, वायसरायों या शिक्षित मध्यम वर्ग के नेताओं के निर्णयों का परिणाम नहीं है। इसमें उन लाखों किसानों, मजदूरों, महिलाओं और आदिवासियों की भूमिका को भी उतनी ही प्रमुखता दी जाती है जिन्होंने अपने अधिकारों हेतु संघर्ष किया। यह दृष्टिकोण पारंपरिक इतिहास के कुलीन-केंद्रित स्वरुप को चुनौती देता है और समाज के सबसे उपेक्षित वर्गों को इतिहास के वास्तविक नायक के रूप में स्थापित करता है।

204. (B) प्रतिभागी भारतीय राज्य की संप्रभुता की हानि हुई।
सहायक संधि एक ऐसी कूटनीतिक व्यवस्था थी जिसने भारतीय रियासतों को अपनी रक्षा हेतु पूर्णतः अंग्रेजों पर निर्भर बना दिया। इस संधि पर हस्ताक्षर करने के पश्चात, राज्य को अपनी स्वतंत्र सेना रखने का अधिकार नहीं रह जाता था और उसे ब्रिटिश सेना के खर्च का भारी बोझ उठाना पड़ता था। इसके अतिरिक्त, एक ब्रिटिश रेजिडेंट के माध्यम से अंग्रेज राज्य की विदेशी नीति और महत्वपूर्ण निर्णयों को नियंत्रित करते थे। इस प्रकार, राज्य का नाममात्र का स्वतंत्र अस्तित्व रह जाता था और वास्तविक संप्रभुता अंग्रेजों के पास चली जाती थी।

205. (B) ब्रिटिश सत्ता का क्रमिक सुदृढ़ीकरण और केंद्रीकरण।
1773 से 1853 के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्रशासन को अधिक प्रभावी बनाने हेतु शक्तियों को बंगाल के गवर्नर-जनरल के हाथों में केंद्रित किया। रेगुलेटिंग एक्ट और चार्टर एक्ट्स के माध्यम से मद्रास और बॉम्बे प्रेसीडेंसियों की स्वायत्तता को कम किया गया और एक अखिल भारतीय प्रशासनिक ढांचा तैयार किया गया। इस केंद्रीकरण का मुख्य उद्देश्य विशाल भारतीय क्षेत्रों पर कड़ा नियंत्रण रखना, राजस्व संग्रह को सुनिश्चित करना और कंपनी के व्यावसायिक हितों की रक्षा करना था, जिससे एक शक्तिशाली औपनिवेशिक नौकरशाही का उदय हुआ।

206. (C) ऋण का वह चक्र जिसमें किसान साहूकारों और राज्य के नियंत्रण में फंस गए थे।
ब्रिटिश काल के दौरान ग्रामीण ऋणग्रस्तता एक भयानक सामाजिक-आर्थिक समस्या बन गई थी। अत्यधिक भू-राजस्व और उसे चुकाने की कठोर समय सीमा ने किसानों को स्थानीय साहूकारों से ऊँची ब्याज दरों पर उधार लेने हेतु विवश किया। फसलें खराब होने या बाजार में कीमतें गिरने पर वे ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाते थे, जिससे उनकी जमीनें साहूकारों के पास चली जाती थीं। यह ऋण पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता था, जिसने भारतीय किसानों को स्थायी गरीबी और दासता की स्थिति में धकेल दिया था जिसने ग्रामीण संकट बढ़ाया।

207. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ज्योतिबा और सावित्रीबाई फुले ने उन्नीसवीं सदी के महाराष्ट्र में सामाजिक न्याय हेतु एक अभूतपूर्व लड़ाई लड़ी। उन्होंने पहचाना कि जातिगत श्रेष्ठता और अशिक्षा ही बहुजन समाज की गुलामी का मूल कारण है। इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती दी और समाज के सबसे निचले पायदान पर स्थित लोगों और महिलाओं हेतु शिक्षा को अनिवार्य बनाया। उनके सत्यशोधक समाज ने तर्क और समानता पर आधारित जीवन पद्धति को बढ़ावा दिया, जिसने आधुनिक महाराष्ट्र के सामाजिक और बौद्धिक स्वरुप को गहराई से प्रभावित किया।

208. (A) औपनिवेशिक शासन के प्रति असंतोष और राष्ट्रवादी आलोचना को दबाना।
ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित प्रेस अधिनियमों का मूल उद्देश्य राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार को रोकना था। जैसे-जैसे भारतीय प्रेस स्वतंत्र होकर सरकारी नीतियों की आलोचना करने लगा, वैसे-वैसे अंग्रेज इसे अपने साम्राज्य हेतु खतरा मानने लगे। वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट जैसे कानूनों के माध्यम से उन्होंने देशी भाषाओं के पत्रों पर कठोर सेंसरशिप लगाई ताकि वे जनता को औपनिवेशिक शोषण के प्रति जागरुक न कर सकें। इन दमनकारी उपायों का उद्देश्य प्रेस को भयभीत करना और सरकारी आदेशों के पालन हेतु विवश करना था जिससे आवाज़ दबे।

209. (C) लॉर्ड डलहौजी
लॉर्ड डलहौजी एक अत्यधिक साम्राज्यवादी गवर्नर-जनरल थे, जिन्होंने 'व्यपगत का सिद्धांत' को बड़ी निर्दयता से लागू किया। इस नीति के तहत उन्होंने उन रियासतों का विलय ब्रिटिश साम्राज्य में कर लिया जिनके शासकों का कोई अपना पुत्र नहीं था, और उन्होंने गोद लेने की परंपरा को अमान्य कर दिया। इसके माध्यम से उन्होंने सतारा, झाँसी, नागपुर और संबलपुर जैसे कई महत्वपूर्ण राज्यों को हड़प लिया। उनकी इस नीति ने भारतीय रियासतों में भारी असुरक्षा और ब्रिटिश विरोधी भावना पैदा की, जो आगे चलकर बड़े विद्रोह का कारण बनी।

210. (D) 1, 2 और 3
आधुनिक भारतीय इतिहास की रचना हेतु विभिन्न प्रकार के स्रोतों का होना अत्यंत आवश्यक है। सरकारी अभिलेख हमें औपनिवेशिक राज्य के प्रशासनिक और विधायी ढांचे की आधिकारिक जानकारी देते हैं। जीवनियाँ और संस्मरण उस समय के नेताओं के व्यक्तिगत संघर्षों और उनकी विचारधाराओं के अनकहे पहलुओं को उजागर करते हैं। सामान्य लोगों के मौखिक साक्ष्य इतिहास के उन मानवीय अनुभवों और प्रतिरोधों को सामने लाते हैं जो अक्सर लिखित दस्तावेजों में नहीं मिलते। इन सभी के सम्मिलित उपयोग से ही इतिहास का एक संतुलित और व्यापक चित्र बन सकता है।

211. (C) मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार।
1919 के संवैधानिक परिवर्तनों को मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के रुप में जाना जाता है। इन सुधारों का मुख्य लक्ष्य भारतीयों को प्रशासन में अधिक भागीदारी देना और उत्तरदायी शासन की

228. (B) अफगानिस्तान
अंग्रेजों की अग्रगामी नीति का मुख्य लक्ष्य अफगानिस्तान और उसके पड़ोसी जनजातीय क्षेत्रों पर अपना प्रभाव स्थापित करना था। अंग्रेज मध्य एशिया में रूसी साम्राज्य के बढ़ते कदमों से भयभीत थे और उन्हें डर था कि रूस अफगानिस्तान के माध्यम से भारत पर आक्रमण कर सकता है। इसी 'रूसोफोबिया' के कारण उन्होंने अफगानिस्तान में हस्तक्षेप किया और वहां अपनी मर्जी की सरकार बनाने हेतु दो भीषण युद्ध लड़े। यह नीति उत्तर-पश्चिमी सीमा को सुरक्षित करने और ब्रिटिश साम्राज्य के रणनीतिक हितों की रक्षा हेतु निर्मित की गई थी।

229. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
विन्सेंट स्मिथ साम्राज्यवादी इतिहास लेखन के एक प्रमुख स्तंभ थे जिन्होंने ब्रिटिश शासन को न्यायोचित ठहराया। आर.सी. दत्त ने राष्ट्रवादी परिप्रेक्ष्य से भारत का आर्थिक इतिहास लिखा। आर.पी. दत्त ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए औपनिवेशिक शोषण और वर्ग संघर्ष का विश्लेषण किया। रंजीत गुहा ने निम्नवर्गीय या सबॉल्टरन स्कूल की नींव रखी, जो इतिहास को आम जनता के दृष्टिकोण से देखने पर बल देता है। ये सभी विद्वान आधुनिक भारतीय इतिहास के अध्ययन के विभिन्न वैचारिक स्तंभों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इसे शोधपूर्ण गहराई देते हैं।

230. (B) औपनिवेशिक नीतियों और प्रतिस्पर्धा के कारण पारंपरिक भारतीय विनिर्माण का पतन।
कुटीर उद्योगों का विनाश औपनिवेशिक काल की एक अत्यंत दुखद आर्थिक घटना थी। सदियों से भारत अपने उत्कृष्ट वस्त्रों और हस्तशिल्प हेतु पूरी दुनिया में प्रसिद्ध था। लेकिन ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति के पश्चात आने वाले मशीन निर्मित सस्ते माल और कंपनी की भेदभावपूर्ण कर नीतियों ने इन उद्योगों को पूरी तरह तहस-नहस कर दिया। कारीगरों का पारंपरिक संरक्षण भी समाप्त हो गया, जिससे वे दरिद्रता के दलदल में फंस गए। इस विनाश ने भारत के समृद्ध विनिर्माण क्षेत्र को समाप्त कर उसे केवल एक पिछड़े कृषि प्रधान देश में बदल दिया।

231. (B) भारतीय समाज के भीतर ही एक आंतरिक आलोचना और आधुनिकीकरण की इच्छा थी।
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधार आंदोलन इस बात के प्रमाण हैं कि भारतीय बुद्धिजीवी अपने समाज की कमियों के प्रति जागरूक थे और उनमें परिवर्तन की तीव्र आकांक्षा थी। उन्होंने पश्चिमी विचारों से प्रभावित होकर नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति की मूल शुद्धि हेतु सती प्रथा, जातिवाद और अशिक्षा जैसी बुराइयों के विरुद्ध मोर्चा खोला। इन सुधारकों ने यह सिद्ध किया कि भारतीय समाज स्वयं को बदलने और आधुनिक बनाने में पूरी तरह सक्षम है। इन आंतरिक सुधारों ने ही भविष्य के राजनीतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रवादी आंदोलन हेतु एक मजबूत सामाजिक आधार तैयार किया।

232. (B) विषयों का प्रशासनिक विभाजन अव्यावहारिक था क्योंकि मंत्रियों के पास वित्त और सिविल सेवा पर नियंत्रण नहीं था।
1919 के अधिनियम के तहत शुरू की गई द्वैध शासन प्रणाली अपनी बनावट में ही विफल थी। यद्यपि शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे विषय भारतीय मंत्रियों को दिए गए, लेकिन उनके लिए आवश्यक धन अर्थात वित्त पर गवर्नर का पूर्ण नियंत्रण बना रहा। बिना वित्तीय अधिकारों के कोई भी मंत्री अपनी योजनाओं को लागू करने में असमर्थ था। इसके अतिरिक्त, सिविल सेवा के अधिकारी भी गवर्नर के प्रति वफादार थे और वे मंत्रियों के आदेशों की उपेक्षा करते थे। इस शक्तिहीनता और प्रशासनिक खींचतान ने इस पूरी व्यवस्था को केवल एक दिखावा बना दिया था।

233. (B) पंजाब के रणनीतिक और उपजाऊ क्षेत्र के विलय की ब्रिटिश महत्वाकांक्षा।
आंग्ल-सिख युद्धों का मुख्य कारण अंग्रेजों की वह विस्तारवादी नीति थी जिसके तहत वे पूरे भारत पर अपना निर्बाध प्रभुत्व चाहते थे। पंजाब न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध और उपजाऊ था, बल्कि उसकी भौगोलिक स्थिति उत्तर-पश्चिमी सीमा की सुरक्षा हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण थी। महाराजा रणजीत सिंह के पश्चात पंजाब की सैन्य शक्ति और राजनीतिक अस्थिरता ने अंग्रेजों को एक बहाना दिया। वे सिखों के मजबूत खालसा सैन्य बल को नष्ट करना चाहते थे ताकि उनका साम्राज्य सुरक्षित रह सके और पंजाब के राजस्व पर उनका पूर्ण अधिकार हो जाए।

234. (C) प्रायः संकोचपूर्ण, दायरे में सीमित और विभिन्न समूहों के दबाव में अधिनियमित किए गए थे।
भारत में कारखाना अधिनियमों का इतिहास यह दर्शाता है कि ब्रिटिश सरकार ने ये कानून केवल भारी दबाव में बनाए थे। एक ओर भारतीय समाज सुधारक और राष्ट्रवादी बेहतर कार्य स्थितियों की मांग कर रहे थे, तो दूसरी ओर ब्रिटेन के मिल मालिक चाहते थे कि भारतीय उद्योगों में भी श्रम कानून लागू हों ताकि उनकी प्रतिस्पर्धा कम हो सके। इसी कारण ये कानून आधे-अधूरी मन से बनाए गए और इन्हें लागू करने की मशीनरी भी बहुत कमजोर रखी गई। इनका मुख्य उद्देश्य श्रमिकों का वास्तविक उत्थान करने के बजाय केवल असंतोष को शांत करना था।

235. (B) महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों के लिए अपनी मांगें व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान किया।
बीसवीं शताब्दी के शुरुआती दौर में महिला संगठनों का गठन भारतीय नारीवाद के उदय का एक ऐतिहासिक प्रतीक था। इन संगठनों ने महिलाओं को पहली बार घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर सार्वजनिक जीवन में अपनी आवाज उठाने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने न केवल शिक्षा और स्वास्थ्य के मुद्दों पर काम किया, बल्कि मताधिकार और विधायी परिषदों में प्रतिनिधित्व की भी जोरदार मांग की। इन प्रयासों ने सिद्ध कर दिया कि भारतीय महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं और वे राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में बराबर की भागीदार बनने हेतु पूर्णतः तैयार हैं।

236. (B) भारतीय भाषा के प्रेस में सरकार की आलोचना को मौन करने का लक्ष्य रखा।
1878 के देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम को 'मुंह बंद करने वाला कानून' कहा गया क्योंकि इसका एकमात्र उद्देश्य देशी भाषाओं के समाचार पत्रों का दमन करना था। ये पत्र आम

220. (B) इसने किसी भी प्रेस के लिए सरकार से लाइसेंस प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया, जिसे कभी भी निरस्त किया जा सकता था।
1857 के विद्रोह के दौरान अभिव्यक्ति पर अंकुश लगाने हेतु लॉर्ड कैनिंग ने लाइसेंसिंग अधिनियम लागू किया। इस कानून के तहत किसी भी मुद्रणालय के स्वामी हेतु सरकार से अधिकार पत्र लेना आवश्यक हो गया। सरकार के पास यह शक्ति थी कि यदि उसे कोई सामग्री आपत्तिजनक या विद्रोही लगे, तो वह बिना किसी कारण बताए लाइसेंस को रद्द कर सकती थी और प्रेस को बंद कर सकती थी। यह प्रेस की स्वतंत्रता को पूरी तरह सरकार की इच्छा और नियंत्रण के अधीन करने का एक कठोर औपनिवेशिक प्रयास था जिसने आवाज़ दबाई।

221. (B) एक ही धर्म को मानने वाले लोगों के धर्मनिरपेक्ष हित अन्य धर्मों को मानने वाले लोगों के हितों से पृथक और प्रायः विरोधी होते हैं।
सांप्रदायिकता एक ऐसी राजनीति का आधार है जो यह मानती है कि धार्मिक पहचान ही किसी व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हितों का निर्धारण करती है। यह विचारधारा यह दावा करती है कि एक धर्म के लोगों का विकास तभी संभव है जब वे दूसरे धर्म के लोगों के विरुद्ध खड़े हों। अंग्रेजों ने अपनी 'फूट डालो और राज करो' की नीति के माध्यम से इस सोच को बढ़ावा दिया ताकि भारतीय कभी भी एक राष्ट्र के रूप में एकजुट न हो सकें। इसी विचारधारा ने अंततः समाज में गहरी दूरियाँ और हिंसा उत्पन्न की।

222. (B) प्रायः व्यक्तिपरक होती हैं और लेखक के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और स्मृति से प्रभावित होती हैं।
जीवनियाँ और संस्मरण इतिहास के बहुत ही रोचक स्रोत होते हैं क्योंकि वे घटनाओं को एक मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। हालाँकि, एक इतिहासकार हेतु इनका उपयोग करते समय सावधानी बरतना आवश्यक है, क्योंकि लेखक अक्सर अपनी छवि को बेहतर दिखाने हेतु तथ्यों को तोड़-मरोड़ सकता है या कुछ अप्रिय घटनाओं को छिपा सकता है। संस्मरण याददाश्त पर आधारित होते हैं, जो समय के साथ धुंधली हो सकती है। इसलिए, ऐतिहासिक सत्य तक पहुँचने हेतु इन व्यक्तिगत विवरणों को अन्य आधिकारिक दस्तावेजों के साथ मिलाकर जाँचना अनिवार्य है।

223. (B) सहायक संधि का सफल और दीर्घकालिक अनुप्रयोग।
हैदराबाद का निजाम पहला शासक था जिसने लॉर्ड वेलेज़ली की सहायक संधि को पूर्णतः स्वीकार किया था। इसके माध्यम से हैदराबाद ने अपनी सैन्य स्वतंत्रता अंग्रेजों को सौंप दी और अपने यहाँ ब्रिटिश सेना की एक बड़ी टुकड़ी रखना स्वीकार किया। इस संधि के कारण हैदराबाद लंबे समय तक अंग्रेजों का एक वफादार सहयोगी बना रहा और मराठों के विरुद्ध युद्धों में उनका साथ दिया। यद्यपि इससे निजाम की संप्रभुता समाप्त हो गई, लेकिन इससे हैदराबाद के शासक को ब्रिटिश संरक्षण प्राप्त हुआ, जो भारत की स्वतंत्रता तक अक्षुण्ण बना रहा।

224. (B) प्रशासन चलाने और ब्रिटिश हितों को सुरक्षित करने के लिए एक कुशल, पदानुक्रमित नौकरशाही।
भारत में सिविल सेवा की नींव लॉर्ड कॉर्नवालिस ने रखी थी, जिसका उद्देश्य साम्राज्य को एक मजबूत प्रशासनिक आधार प्रदान करना था। यह सेवा पूरी तरह से केंद्रीकृत और ब्रिटिश अधिकारियों के वर्चस्व वाली थी। इसका मुख्य कार्य राजस्व का कुशलतापूर्वक संग्रह करना, कानून-व्यवस्था बनाए रखना और यह सुनिश्चित करना था कि ब्रिटिश सरकार की नीतियां पूरे देश में बिना किसी बाधा के लागू हों। इसे 'स्टील फ्रेम' कहा गया क्योंकि इसी ने औपनिवेशिक शासन को स्थिरता और दीर्घायु प्रदान की, भले ही यह भारतीय जनता से सदैव कटी रही।

225. (C) उपनिवेशवाद की राष्ट्रवादी आर्थिक आलोचना।
दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रतिपादित 'धन के निष्कासन सिद्धांत' ने पहली बार यह वैचारिक आधार प्रदान किया कि ब्रिटिश शासन भारत हेतु वरदान नहीं बल्कि एक अभिशाप है। उन्होंने सांख्यिकीय प्रमाणों के साथ यह सिद्ध किया कि ब्रिटेन व्यवस्थित रूप से भारत के संसाधनों को चूस रहा है। इस सिद्धांत ने भारतीयों के मन से यह भ्रम निकाल दिया कि अंग्रेज भारत का आधुनिकीकरण कर रहे हैं। इसने राष्ट्रवादी आंदोलन को एक ठोस आर्थिक दिशा दी और जनता को यह समझाने में सहायता की कि राजनीतिक स्वतंत्रता के बिना आर्थिक खुशहाली संभव नहीं है।

226. (C) सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र, भारत के अतीत में गौरव को बढ़ावा देकर।
एनी बेसेंट के नेतृत्व में थियोसोफिकल सोसाइटी ने भारतीयों को उनकी सोई हुई सांस्कृतिक चेतना से जगाने का कार्य किया। उन्होंने पश्चिमी विद्वानों के सामने भारतीय दर्शन और धर्म की महानता को सिद्ध किया, जिससे शिक्षित भारतीयों में अपने धर्म और परंपराओं के प्रति नया सम्मान पैदा हुआ। इस सांस्कृतिक गौरव ने अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक राष्ट्रवाद को बहुत बल दिया। जब लोगों ने यह महसूस किया कि उनकी संस्कृति विश्व की महानतम संस्कृतियों में से एक है, तो उनमें औपनिवेशिक दासता को स्वीकार न करने का साहस और आत्मसम्मान विकसित हुआ।

227. (A) राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार और जनमत की लामबंदी के साधन बन गए।
उन्नीसवीं सदी के अंत में लोकप्रिय समाचार पत्रों का उदय भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन हेतु एक महत्वपूर्ण मोड़ था। 'केसरी', 'अमृत बाज़ार पत्रिका' और 'द हिंदू' जैसे पत्रों ने औपनिवेशिक प्रशासन के काले कारनामों को जनता के सामने बेनकाब किया। ये पत्र केवल समाचार नहीं देते थे, बल्कि लोगों को राजनीतिक रूप से शिक्षित करते थे और उनमें देश प्रेम की भावना भरते थे। इनकी पहुँच और प्रभाव इतना अधिक था कि ब्रिटिश सरकार को इन्हें दबाने हेतु कई दमनकारी कानून बनाने पड़े, जिससे इनकी महत्ता और प्रभावशीलता स्पष्ट होती है।

बढ़े। उनकी कूटनीतिक चपलता और भारतीय रियासतों के आंतरिक मामलों में दखल देने की नीति ने उन्हें डच की तुलना में एक विशाल और स्थायी भारतीय साम्राज्य स्थापित करने में सफलता प्रदान की।

245. (B) एक एकल राष्ट्र बनाने की एक आधुनिक चेतना, जो पूर्व की क्षेत्रीय या वंशवादी निष्ठाओं से भिन्न थी।
उन्नीसवीं सदी में भारत में जिस राष्ट्रवाद का विकास हुआ, वह अपनी प्रकृति में आधुनिक और क्रांतिकारी था। इससे पहले भारतीयों की पहचान उनके राज्य, जाति या धर्म तक सीमित थी। औपनिवेशिक शासन के साझा दमन ने लोगों को यह अनुभव कराया कि वे एक ही भौगोलिक और राजनीतिक इकाई का हिस्सा हैं। साझा इतिहास, संस्कृति और स्वतंत्रता की सामूहिक आकांक्षा ने एक ऐसी 'भारतीय' पहचान को जन्म दिया जो किसी एक राजा या क्षेत्र के प्रति वफादार न होकर पूरे राष्ट्र के प्रति समर्पित थी। यही आधुनिक भारत का वास्तविक वैचारिक जन्म था।

246. (B) युद्ध, कूटनीति और सहायक संधि तथा व्यपगत के सिद्धांत जैसी नीतियों का संयोजन।
भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का निर्माण केवल सैन्य बल पर नहीं, बल्कि चतुर कूटनीति और सुनियोजित रणनीतियों का परिणाम था। जहाँ आवश्यक हुआ, उन्होंने प्लासी और बक्सर जैसे युद्ध लड़े, लेकिन साथ ही उन्होंने सहायक संधि जैसी नीतियों से राजाओं को अपना अधीनस्थ बना लिया। डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत का उपयोग कर शांतिपूर्ण तरीके से राज्यों को हड़प लिया। यह बल, छल और कानून का एक ऐसा घातक मिश्रण था जिसने भारतीय शक्तियों को एक-एक करके निष्क्रिय कर दिया और अंग्रेजों को पूरे उपमहाद्वीप का निर्विवाद राजनीतिक स्वामी बना दिया।

247. (B) विधि के शासन की अवधारणा प्रस्तुत करना, यद्यपि इसे प्रायः जातीय पूर्वाग्रह के साथ लागू किया गया था।
ब्रिटिश न्यायपालिका ने भारत में एक ऐसी कानूनी व्यवस्था की नींव रखी जहाँ न्याय किसी राजा की इच्छा पर नहीं, बल्कि लिखित कानूनों और प्रक्रियाओं पर आधारित था। इसने समानता और निष्पक्षता के आधुनिक सिद्धांतों को प्रस्तुत किया। हालाँकि, व्यवहार में यह व्यवस्था दोषपूर्ण थी क्योंकि यूरोपीय लोगों के विरुद्ध मामलों की सुनवाई केवल यूरोपीय न्यायाधीश ही कर सकते थे और दंड की प्रक्रिया भी अलग थी। इस जातीय भेदभाव के बावजूद, इस प्रणाली ने भारत को एक आधुनिक कानूनी ढांचा प्रदान किया जो आज भी हमारी न्याय व्यवस्था का आधार बना हुआ है।

248. (B) भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश भू-राजस्व नीतियों और वि-औद्योगीकरण का नकारात्मक प्रभाव।
आर.सी. दत्त ने अपने विस्तृत आर्थिक विश्लेषण में यह सिद्ध किया कि ब्रिटिश राज ने भारत को एक 'दुधारू गाय' की तरह प्रयोग किया। उन्होंने सांख्यिकीय आंकड़ों के माध्यम से दिखाया कि कैसे अत्यधिक करों ने भारतीय किसानों को स्थायी गरीबी की स्थिति में धकेल दिया। उन्होंने वि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया का भी प्रलेखन किया, जिससे भारत का सदियों पुराना गौरवशाली हस्तशिल्प पूरी तरह विनष्ट हो गया। उनके इस वैज्ञानिक शोध ने राष्ट्रवादी नेताओं को वह आधार प्रदान किया जिससे वे विश्व स्तर पर ब्रिटिश राज के आर्थिक कुशासन को प्रभावी ढंग से चुनौती दे सके।

249. (C) इसके कारण आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा की पूर्णतः उपेक्षा हुई।
यह कहना कि ब्रिटिश शिक्षा ने वैज्ञानिक शिक्षा की पूरी तरह उपेक्षा की, ऐतिहासिक रूप से सही नहीं है। यद्यपि उनका मुख्य ध्यान लिपिक तैयार करना था, लेकिन उन्होंने भारत में आधुनिक विज्ञान और चिकित्सा की नींव भी रखी। कलकत्ता मेडिकल कॉलेज और रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज जैसी संस्थाएं इसी काल की देन हैं। पश्चिमी शिक्षा ने भारतीयों को वैज्ञानिक पद्धति और तर्कवाद से परिचित कराया। हालाँकि, यह शिक्षा केवल एक छोटे वर्ग तक सीमित थी और जनसाधारण इससे वंचित रहा, लेकिन इसने भारत में आधुनिक शोध और शिक्षा की एक नई वैज्ञानिक दिशा अवश्य प्रारंभ की।

250. (B) राजनीतिक शिक्षा, लामबंदी और औपनिवेशिक शासन की आलोचना के एक उपकरण के रूप में।
स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लोकप्रिय समाचार पत्र केवल सूचना के माध्यम नहीं थे, बल्कि वे जन-जागरण की मशाल थे। उन्होंने जटिल आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों को सरल भाषा में आम जनता तक पहुँचाया, जिससे लोगों में सरकार के विरुद्ध असंतोष और राष्ट्रवाद की भावना बढ़ी। इन पत्रों ने आंदोलनों के संदेशों को प्रसारित किया और लोगों को संगठित होने हेतु प्रेरित किया। ब्रिटिश सरकार इन समाचार पत्रों के प्रभाव से इतनी भयभीत थी कि उसने इन्हें चुप कराने हेतु कई दमनकारी कानून बनाए, जो इनके महत्व को स्वयं सिद्ध करते हैं।

251. (C) जब मुस्तफा कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की के लोगों ने स्वयं खलीफा के पद को समाप्त कर दिया।
खिलाफत आंदोलन का अंत अत्यंत अप्रत्याशित था। जिस खलीफा की सत्ता को बचाने हेतु भारत में इतना बड़ा जन-आंदोलन चल रहा था, उसे तुर्की के ही आधुनिकतावादी नेता मुस्तफा कमाल अतातुर्क ने 1924 में पूरी तरह समाप्त कर दिया। तुर्की ने एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य बनने का मार्ग चुना, जिससे खिलाफत का मुद्दा अपनी जड़ ही खो बैठा। इस घटना के पश्चात भारत में चल रहे आंदोलन का कोई वैचारिक आधार नहीं रह गया और वह स्वतः समाप्त हो गया। इसने सिद्ध किया कि धार्मिक मुद्दों पर आधारित वैश्विक आंदोलनों की अपनी सीमाएं होती हैं।

252. (B) स्वतंत्रता संघर्ष का एक प्रेरणादायक विवरण प्रस्तुत करने के लिए जिसने राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा दिया।
राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने भारत के गौरवशाली अतीत को पुनर्जीवित करने और स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं को एक प्रेरक गाथा के रूप में प्रस्तुत करने का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने औपनिवेशिक इतिहासकारों के उस दावे को चुनौती दी कि भारतीय अपना इतिहास लिखने के योग्य नहीं हैं। उनके लेखन ने देशवासियों में आत्मविश्वास भरा और उन्हें यह अनुभव कराया कि वे एक महान राष्ट्र के उत्तराधिकारी हैं।

जनता के बीच औपनिवेशिक शासन की शोषक नीतियों का खुलासा कर रहे थे, जो अंग्रेजों हेतु असहनीय था। इस कानून ने सरकार को इतनी असीमित शक्तियाँ प्रदान कीं कि वह बिना किसी अदालती कार्यवाही के किसी भी प्रेस को बंद कर सकती थी। यह कानून केवल भारतीय भाषा के पत्रों पर लागू होता था, जो इसकी भेदभावपूर्ण और दमनकारी प्रकृति का सबसे बड़ा प्रमाण था।

237. (B) ब्रिटिश सत्ता जब चाहे तब सर्वोच्च थी, जिससे वह राज्यों के मामलों में इच्छानुसार हस्तक्षेप कर सकती थी।
सर्वोच्चता का सिद्धांत कोई लिखित कानून नहीं था, बल्कि यह ब्रिटिश शासन का एक लचीला और निरंकुश दावा था। इसका उपयोग अंग्रेज अपनी सुविधानुसार किसी भी रियासत के मामले में दखल देने हेतु करते थे। यदि कोई राजा उनके हितों के प्रतिकूल कार्य करता, तो वे उसे 'कुशासन' या 'उत्तराधिकार विवाद' के नाम पर हटा सकते थे। इस सिद्धांत ने रियासतों और ब्रिटिश क्राउन के बीच के संबंधों में किसी भी प्रकार की समानता को पूरी तरह समाप्त कर दिया और रियासतों को ब्रिटिश शासन की दया पर पूर्णतः निर्भर बना दिया।

238. (B) एक अराजक और अनियोजित प्रक्रिया।
साम्राज्यवादी इतिहासकार अक्सर यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि भारत में ब्रिटिश विस्तार कोई सोची-समझी योजना नहीं थी, बल्कि यह परिस्थितियों और भारतीय शासकों की आपसी अराजकता के कारण हुआ। उनके अनुसार, अंग्रेज तो केवल व्यापार करने आए थे, लेकिन उन्हें शांति और व्यवस्था बनाए रखने हेतु मजबूरन युद्ध लड़ने पड़े और राज्यों का विलय करना पड़ा। यह व्याख्या अंग्रेजों की सोची-समझी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं और उनके सुनियोजित आर्थिक शोषण को छिपाने का एक चालाकी भरा प्रयास है, ताकि औपनिवेशिक शासन को नैतिक रूप से उचित ठहराया जा सके।

239. (C) निष्ठा सुनिश्चित करने के लिए 'लड़ाकू जातियों' की अवधारणा के आधार पर रेजिमेंटों का संगठन करना।
1857 के विद्रोह के कड़वे अनुभवों से सीखते हुए अंग्रेजों ने अपनी सैन्य नीति को पूरी तरह बदल दिया ताकि भविष्य में सिपाही फिर कभी विद्रोह न कर सकें। उन्होंने 'लड़ाकू जातियों' का एक नया सिद्धांत गढ़ा, जिसके तहत केवल उन्हीं समूहों से सैनिकों की भर्ती की गई जिन्होंने विद्रोह के दौरान अंग्रेजों का साथ दिया था। सेना में यूरोपीय सैनिकों का अनुपात बढ़ाया गया और महत्वपूर्ण तोपखाने तथा शस्त्रों पर केवल ब्रिटिश नियंत्रण रखा गया। रेजिमेंटों को जाति और धर्म के आधार पर इस प्रकार विभाजित किया गया कि उनमें कभी राष्ट्रीय एकता न पनप सके।

240. (A) नकदी फसलों के उत्पादन ने प्रायः स्थानीय खाद्यान्न की खेती को प्रतिस्थापित कर दिया, जिससे क्षेत्रीय खाद्य सुरक्षा में पर्याप्त कमी आई।
कृषि के वाणिज्यीकरण ने अकाल की विभीषिका को कई गुना बढ़ा दिया। अंग्रेजों के दबाव और राजस्व की मांग के कारण किसानों ने गेहूं और चावल जैसी खाद्य फसलों के स्थान पर नील और कपास जैसी नकदी फसलें उगाना प्रारंभ कर दिया। जब भी मौसम खराब होता या बाजार में मंदी आती, तो किसानों के पास न तो बेचने हेतु फसल होती और न ही खाने हेतु अनाज। इस व्यवस्था ने ग्रामीण क्षेत्रों में अनाज के संचय को समाप्त कर दिया, जिससे सामान्य सूखा भी एक भयानक अकाल में बदल जाता था जिसने करोड़ों जानें लीं।

241. (B) मुसलमानों के बीच आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अलीगढ़ आंदोलन की स्थापना।
सर सैयद अहमद खान ने महसूस किया कि पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था मुसलमानों को आधुनिक विश्व और ब्रिटिश राज की चुनौतियों हेतु तैयार नहीं कर रही है। उनके अलीगढ़ आंदोलन का मुख्य ध्येय मुस्लिम समाज में वैज्ञानिक सोच और अंग्रेजी शिक्षा का संचार करना था। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की नींव रखी, जो आगे चलकर मुस्लिम समुदाय के बौद्धिक और राजनीतिक नेतृत्व का केंद्र बना। उनका यह प्रयास समुदाय के भीतर सामाजिक और शैक्षणिक सुधार की एक दूरदर्शी पहल थी, जिसने आधुनिक मुस्लिम चेतना को एक सुदृढ़ नई दिशा प्रदान की।

242. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में शुरुआती श्रमिक वर्ग काफी हद तक असंगठित और अशिक्षित था, जिससे वह अपने अधिकारों की लड़ाई स्वयं लड़ने में सक्षम नहीं था। इसीलिए राष्ट्रवादी नेताओं और एन.एम. लोखंडे जैसे समाज सुधारकों ने उनका नेतृत्व किया। इन नेताओं ने श्रमिकों की पीड़ा को समझा और उनकी मांगों को सरकार और मिल मालिकों के सम्मुख रखा। उन्होंने अपनी वैचारिक समझ और संसाधनों का उपयोग करके श्रमिकों को एकजुट किया और उन्हें संगठन की शक्ति का महत्व समझाया। इसी बाहरी सहयोग ने भारत में आधुनिक श्रमिक संघवाद की सुदृढ़ नींव रखने का कार्य किया।

243. (B) राजा राम मोहन राय जैसे भारतीय सुधारकों के आग्रह पर एक सामाजिक प्रथा में विधायती हस्तक्षेप।
सती प्रथा के विरुद्ध पारित कानून भारतीय समाज सुधार के इतिहास में एक मील का पत्थर है। यद्यपि यह कानून लॉर्ड विलियम बेंटिक ने बनाया था, लेकिन इसके पीछे असली ताकत राजा राम मोहन राय और उनके द्वारा जागृत किया गया जनमत था। उन्होंने शास्त्रों की मानवीय व्याख्या के माध्यम से इस क्रूर प्रथा को अधार्मिक सिद्ध किया और अंग्रेजों पर इसे प्रतिबंधित करने हेतु दबाव डाला। यह इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि कैसे वैचारिक दृढ़ता और प्रशासनिक शक्ति मिलकर समाज की सबसे गहरी जड़ों वाली बुराइयों को भी जड़ से उखाड़ सकती हैं।

244. (B) अंग्रेजों ने अंततः डच की तुलना में व्यापार से क्षेत्रीय विजय की ओर अधिक प्रभावी ढंग से ध्यान केंद्रित किया।
डच और ब्रिटिश दोनों ही शुरु में मसालों के व्यापार हेतु भारत आए थे, लेकिन उनकी रणनीतियों में बुनियादी अंतर था। डच ने भारत के स्थान पर दक्षिण-पूर्व एशिया अर्थात इंडोनेशिया के मसाला द्वीपों को अपना मुख्य केंद्र बनाया। इसके विपरीत, अंग्रेजों ने भारत की राजनीतिक कमजोरियों को समझा और धीरे-धीरे व्यापारिक रियायतों से क्षेत्रीय संप्रभुता की ओर

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जीवन निस्वार्थ सेवा और पूर्ण समर्पण का उदाहरण है।

261. (B) भारतीय राष्ट्रवादी प्रेस की बढ़ती शक्ति और प्रभाव।
ब्रिटिश सरकार द्वारा एक के बाद एक दमनकारी प्रेस कानूनों का लाया जाना इस बात का स्पष्ट संकेत था कि राष्ट्रवादी प्रेस उनके साम्राज्य हेतु एक बड़ी चुनौती बन चुका था। समाचार पत्र अब केवल सूचना का माध्यम नहीं रहे थे, बल्कि वे जनता को ब्रिटिश राज की शोषक प्रकृति के प्रति जागरूक कर रहे थे और उनमें विद्रोह की भावना भर रहे थे। इन कानूनों का उद्देश्य प्रेस को डराना और उसे सरकार की कठपुतली बनाना था। अंग्रेजों का यह डर ही राष्ट्रवादी पत्रकारिता की सबसे बड़ी सफलता और उसकी शक्ति का जीवंत प्रमाण था।

262. (B) एक राजनीतिक रूप से शक्तिशाली देश जो अपने स्वयं के संवर्धन के लिए दूसरे देश की अर्थव्यवस्था और समाज को अधीन करता है।
उपनिवेशवाद का वास्तविक सार एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र का व्यवस्थित और गहरा आर्थिक शोषण है। यह केवल शासन करने की बात नहीं है, बल्कि उपनिवेश की पूरी आंतरिक संरचना, जैसे उसकी खेती, उद्योग और व्यापार को इस प्रकार रुपांतरित करना है कि वह केवल मातृदेश के हितों को पूरा कर सके। इसमें शासक देश अपने लाभ हेतु उपनिवेश के सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचे में भी अनावश्यक हस्तक्षेप करता है। भारत में ब्रिटिश शासन इसी शोषक व्यवस्था का एक उत्कृष्ट उदाहरण था जिसने यहाँ की पारंपरिक समृद्धि को विनष्ट कर दिया।

263. (B) सरकारी फाइलें, आधिकारिक पत्राचार और राजपत्र।
अभिलेखीय सामग्री के अध्ययन में इतिहासकार उन दस्तावेजों का सूक्ष्म विश्लेषण करता है जो औपनिवेशिक सरकार ने अपने दैनिक प्रशासनिक कार्यों के दौरान तैयार किए थे। इनमें अधिकारियों के बीच गुप्त पत्राचार, विधायी बहसों के रिकॉर्ड, भू-राजस्व के आंकड़े और सरकारी घोषणाएं सम्मिलित होती हैं। ये स्रोत हमें यह समझने में सहायता करते हैं कि ब्रिटिश प्रशासन कैसे निर्णय लेता था, उनकी प्राथमिकताएं क्या थीं और वे भारतीय समाज को किस प्रकार नियंत्रित करना चाहते थे। यद्यपि ये आधिकारिक विवरण हैं, किंतु इनके विश्लेषण से औपनिवेशिक राज्य की वास्तविक मंशाओं का पता चलता है।

264. (C) भारत के नियंत्रण के लिए उनके मुख्य यूरोपीय प्रतिद्वंद्वी को हटा दिया।
कर्नाटक युद्धों में अंग्रेजों की विजय भारत के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ थी। इन युद्धों ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब भारत में अंग्रेजों का मुकाबला करने वाली कोई अन्य सक्षम यूरोपीय शक्ति नहीं बची है। फ्रांसीसियों की हार के पश्चात, भारत के राजनीतिक रंगमंच पर अंग्रेजों का एकाधिकार हो गया। अब उन्हें केवल भारतीय शक्तियों से ही निपटना था, जिसे उन्होंने अपनी चतुर कूटनीति और श्रेष्ठ सैन्य शक्ति से धीरे-धीरे संभव बनाया। इन युद्धों ने अंग्रेजों को दक्षिण भारत में एक सुदृढ़ आधार प्रदान किया और उनकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं को ऊर्जा दी।

265. (D) इनामदार बंदोबस्त
अंग्रेजों ने भारत में राजस्व संग्रह हेतु तीन मुख्य और व्यवस्थित प्रणालियाँ विकसित की थीं। स्थायी बंदोबस्त मुख्य रूप से बंगाल और बिहार में लागू था। रैयतवारी प्रणाली को मद्रास और बॉम्बे प्रेसीडेंसियों में अपनाया गया, जहाँ किसानों से सीधे लगान लिया जाता था। महलवारी व्यवस्था उत्तर-पश्चिमी भारत और पंजाब में प्रचलित थी, जहाँ पूरे गांव से सामूहिक रुप से राजस्व की वसूली की जाती थी। 'इनामदार' जैसी कोई व्यवस्थित राजस्व नीति अंग्रेजों ने भारत में व्यापक स्तर पर कभी लागू नहीं की थी; यह केवल कुछ विशेष भूमि अनुदानों से संबंधित शब्द था।

266. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उन्नीसवीं शताब्दी के समाज सुधार आंदोलन आधुनिक विचारों और तर्क पर आधारित थे, जो मुख्य रूप से शहरों में रहने वाले और अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग के बीच विकसित हुए थे। उस समय संचार के साधन मुद्रित पुस्तकों और पत्रिकाओं तक ही सीमित थे, जिनकी पहुँच गाँवों और आम जनता तक अत्यंत कम थी। ग्रामीण भारत में अभी भी प्राचीन परंपराओं और रीति-रिवाजों की सामाजिक पकड़ बहुत मजबूत थी। इसी कारण, इन आंदोलनों का तात्कालिक प्रभाव शहरी केंद्रों तक ही सीमित रहा, यद्यपि इन्होंने आगे चलकर राष्ट्रव्यापी वैचारिक परिवर्तन की नींव अवश्य रखी।

267. (B) मजदूरी और कार्य के घंटों जैसी तत्काल आर्थिक शिकायतों पर ध्यान केंद्रित करना।
भारत में श्रमिक आंदोलन के शुरुआती चरण का मुख्य स्वर क्रांतिकारी नहीं, बल्कि सुधारात्मक और उदारवादी था। उस समय श्रमिक वर्ग अभी भी असंगठित था और उनकी सबसे बड़ी चिंता कारखानों में होने वाला अत्यधिक शारीरिक शोषण थी। उनके संघर्ष मुख्य रूप से न्यूनतम मजदूरी की मांग, काम के घंटों को कम करने और साप्ताहिक छुट्टी जैसे बुनियादी मानवीय अधिकारों के इर्द-गिर्द ही सिमटे हुए थे। इन आंदोलनों का उद्देश्य व्यवस्था को पूर्णतः बदलना नहीं, बल्कि मौजूदा व्यवस्था के भीतर अपने जीवन और कार्य की स्थितियों को सहनीय बनाना था।

268. (A) सम्मति आयु अधिनियम, 1891
सम्मति आयु अधिनियम समाज सुधारकों, विशेष रूप से बी.एम. मालाबारी के अथक प्रयासों का सुखद परिणाम था। इस कानून का उद्देश्य बाल विवाह की कुप्रथा पर अंकुश लगाना और विवाह हेतु लड़की की न्यूनतम आयु बढ़ाकर 12 वर्ष करना था। यद्यपि रुढ़िवादी तबके ने इसका कड़ा विरोध किया, लेकिन सुधारकों ने दृढ़ता से तर्क दिया कि कम उम्र में विवाह महिलाओं के स्वास्थ्य और मानवीय गरिमा के विरुद्ध है। यह अधिनियम इस बात का प्रमाण था कि भारतीय समाज के भीतर से उभरी सुधारवादी आवाजें औपनिवेशिक राज्य को सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध कानून बनाने हेतु विवश कर सकती थीं।

इस प्रकार, इन इतिहासकारों ने अपनी कलम के माध्यम से राष्ट्रवाद की मशाल को प्रज्वलित रखा और लोगों को सामूहिक संघर्ष हेतु तैयार किया।

253. (B) मराठा परिसंघ का पूर्ण विघटन और ब्रिटिश सर्वोच्चता की स्थापना।
1818 में तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध की समाप्ति आधुनिक भारतीय इतिहास का एक निर्णायक मोड़ थी। मराठों की हार के साथ ही भारत में अंग्रेजों की अंतिम बड़ी सैन्य चुनौती भी समाप्त हो गई। पेशवा के पद को समाप्त कर दिया गया और मराठा सरदारों को अपनी स्वायत्तता छोड़कर ब्रिटिश सर्वोच्चता स्वीकार करने हेतु विवश किया गया। इस विजय ने पूरे मध्य और पश्चिमी भारत पर अंग्रेजों का निर्बाध नियंत्रण स्थापित कर दिया। इसके पश्चात, अंग्रेज भारत की एकमात्र संप्रभु शक्ति बन गए और उन्होंने पूरे उपमहाद्वीप पर अपना सुदृढ़ प्रशासनिक जाल फैलाया।

254. (B) आधिकारिक नियंत्रण और सीमित मताधिकार के साथ स्थानीय निकायों को सत्ता का सीमित हस्तांतरण।
क्राउन के शासन के दौरान शुरु की गई स्थानीय स्वशासन की प्रणाली वास्तव में कोई पूर्ण लोकतंत्र नहीं थी। यद्यपि इसने नगर पालिकाओं और जिला बोर्डों में निर्वाचित सदस्यों की शुरुआत की, लेकिन इन पर सरकार का कड़ा नियंत्रण बना रहा। मताधिकार केवल उन लोगों तक सीमित था जिनके पास संपत्ति थी या जो शिक्षित थे। इन निकायों के पास वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियाँ बहुत कम थीं। इसके बावजूद, इसने भारतीयों को शासन की बुनियादी प्रक्रियाओं का अनुभव दिया और स्थानीय स्तर पर नागरिक समस्याओं को उठाने हेतु एक सीमित संवैधानिक मंच प्रदान किया।

255. (B) देशी दरबारों से संरक्षण की हानि और मशीन से बने सामानों से प्रतिस्पर्धा।
भारतीय शिल्पकारों के पतन का एक मुख्य और अक्सर उपेक्षित कारण देशी रियासतों का विलय था। ये रियासतें उत्कृष्ट हस्तशिल्प और कलाकृतियों की मुख्य संरक्षक थीं। अंग्रेजों द्वारा इन राज्यों को हड़पने के पश्चात, शिल्पकारों ने अपना सबसे बड़ा बाजार खो दिया। साथ ही, औद्योगिक क्रांति के पश्चात ब्रिटेन से आने वाले मशीन निर्मित सस्ते माल ने उनकी स्थिति और भी खराब कर दी। संरक्षण और बाजार दोनों के एक साथ चले जाने ने भारतीय हस्तशिल्प की कमर तोड़ दी, जिससे सदियों पुरानी कला और कौशल का पूर्ण विनाश हुआ जिसने निर्धनता बढ़ाई।

256. (B) शक्ति, आत्मविश्वास और राष्ट्र की सेवा।
स्वामी विवेकानंद का युवाओं हेतु आह्वान अत्यंत स्पष्ट और ओजस्वी था। उन्होंने तर्क दिया कि भारत को वर्तमान में 'लोहे की मांसपेशियों और स्टील की नसों' वाले युवाओं की आवश्यकता है। उन्होंने कमजोरी को घोर पाप माना और युवाओं को अपने भीतर छिपी अनंत शक्ति को पहचानने हेतु प्रेरित किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि राष्ट्र की सच्ची सेवा गरीबों और पीड़ितों के उत्थान में निहित है। उनके विचारों ने भारतीय युवाओं में न केवल आध्यात्मिक चेतना जगाई, बल्कि उनमें राष्ट्रीय आत्म-सम्मान और देशभक्ति की एक प्रबल एवं क्रांतिकारी भावना भी प्रज्वलित की।

257. (B) उस काल की मानसिकता, मूल्यों और सामाजिक तनावों को प्रकट करते हैं जिन्हें आधिकारिक दस्तावेज शायद न बता सकें।
इतिहास केवल युद्धों और संधियों का लेखा-जोखा नहीं है, बल्कि यह मानव चेतना का विकास भी है। रचनात्मक साहित्य और चित्रकला इतिहासकार को समाज की रुह तक पहुँचने में सहायता करते हैं। जहाँ सरकारी फाइलें केवल प्रशासनिक निर्णयों को बताती हैं, वहीं एक कविता या चित्र उस निर्णय से जनता के मन में उपजी खुशी या पीड़ा को जीवंत रुप से व्यक्त करता है। ये स्रोत औपनिवेशिक काल के दौरान बदलते सामाजिक मूल्यों, सांस्कृतिक संघर्षों और लोगों की आंतरिक आकांक्षाओं को समझने हेतु अत्यंत सूक्ष्म और भावपूर्ण ऐतिहासिक साक्ष्य प्रदान करते हैं।

258. (A) विलय
व्यपगत का सिद्धांत या हड़प नीति लॉर्ड डलहौजी द्वारा अपनाई गई एक शुद्ध विस्तारवादी नीति थी। इसका एकमात्र उद्देश्य कूटनीतिक चालों के माध्यम से भारतीय रियासतों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय करना था। इस नीति के तहत उन्होंने उत्तराधिकार के प्राचीन अधिकारों को दरकिनार कर दिया और राज्यों के स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त कर दिया। यह अंग्रेजों की क्षेत्रीय भूख का सबसे बड़ा प्रमाण था, जिसने भारत के राजनीतिक मानचित्र को बदल दिया और देशी राजाओं के मन में ब्रिटिश शासन के प्रति गहरा अविश्वास, असुरक्षा और घृणा उत्पन्न की।

259. (A) ब्रिटिश अधिकारियों और व्यापारियों के वेतन तथा लाभ, और औपनिवेशिक प्रशासन के अन्य व्यय जो ब्रिटेन भेजे जा रहे थे।
दादाभाई नौरोजी ने स्पष्ट किया कि 'धन का निष्कासन' भारत से ब्रिटेन को होने वाला एक निरंतर एकतरफा हस्तांतरण है। इसमें वे सभी खर्च सम्मिलित थे जिन्हें अंग्रेज 'होम चार्जेस' कहते थे, जैसे ब्रिटिश अधिकारियों के वेतन, उनकी पेंशन, भारत में रेलवे हेतु लिए गए ऋण का ब्याज, और कंपनी के शेयरधारकों का लाभांश। यह समस्त धन भारतीय करदाताओं की जेब से निकलकर सीधे ब्रिटेन की समृद्धि बढ़ाने में लग रहा था। इस निरंतर दोहन ने भारत की बचत और निवेश की क्षमता को पूरी तरह विनष्ट कर उसे दरिद्रता में धकेला।

260. (C) धोंडो केशव कर्वे
महर्षि कर्वे आधुनिक भारत में महिला शिक्षा के एक अविस्मरणीय स्तंभ हैं। उन्होंने समाज के भारी विरोध और अत्यंत सीमित संसाधनों के बावजूद लड़कियों की शिक्षा हेतु निरंतर कार्य किया। 1916 में पुणे में उनके द्वारा स्थापित प्रथम महिला विश्वविद्यालय एक क्रांतिकारी उपलब्धि थी, जिसने सिद्ध किया कि महिलाएँ उच्च शिक्षा में पुरुषों के पूर्णतः समान सक्षम हैं। उनके प्रयासों ने भारतीय महिलाओं हेतु नए क्षितिज खोले और उन्हें समाज में एक सम्मानित और आत्मनिर्भर स्थान दिलाने में

दिशा में क्रमिक कदम बढ़ाना था। इसी के तहत प्रांतों में 'द्वैध शासन' की शुरुआत की गई, जिसमें सत्ता को आरक्षित और हस्तांतरित विषयों में विभाजित किया गया। यद्यपि ये सुधार राष्ट्रवादी आकांक्षाओं को पूरी तरह संतुष्ट नहीं कर सके, लेकिन इन्होंने भारत में भविष्य की संसदीय और लोकतांत्रिक व्यवस्था हेतु एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक मंच और ढांचा तैयार किया।

212. (A) आजीविका के प्राथमिक स्रोत के रूप में भूमि और कृषि पर दबाव बढ़ गया।
भारत के समृद्ध हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों के विनाश, जिसे वि-औद्योगीकरण कहा जाता है, का भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा। जब लाखों बुनकर, लुहार और अन्य शिल्पकार बेरोजगार हो गए, तो उनके पास अपनी आजीविका हेतु कृषि मजदूरी के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा। इससे कृषि भूमि पर जनसंख्या का बोझ बहुत बढ़ गया और जोतों का आकार छोटा होता गया। इस स्थिति ने ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी को और सघन बनाया और कृषि अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से असंतुलित और संकटग्रस्त कर दिया जिससे कंगाली बढ़ी।

213. (B) हिंदू धर्म के भीतर धार्मिक और सामाजिक सुधार।
स्वामी दयानंद सरस्वती और आर्य समाज का सबसे महत्वपूर्ण योगदान हिंदू समाज को उसकी आंतरिक बुराइयों से मुक्त करना था। उन्होंने वेदों की सर्वोच्चता पर बल देते हुए मूर्तिपूजा, कर्मकांड, बाल विवाह और छुआछूत जैसी रूढ़ियों का कड़ा विरोध किया। उन्होंने समाज में समानता और आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु 'डी.ए.वी.' शिक्षण संस्थाओं का जाल बिछाया। उनके सुधारों ने न केवल धार्मिक शुद्धि की, बल्कि भारतीयों में एक नया आत्मविश्वास और गौरव भी जगाया, जिसने कालांतर में राष्ट्रवादी भावनाओं को अभूतपूर्व मजबूती प्रदान की।

214. (A) राजनीतिक और आर्थिक प्रभुत्व तथा शोषण।
उपनिवेशवाद मूल रूप से एक ऐसी शक्ति संरचना है जहाँ एक शक्तिशाली देश किसी दूसरे देश पर अपना राजनीतिक नियंत्रण स्थापित करता है ताकि वह उसके संसाधनों का अपने लाभ हेतु दोहन कर सके। यह केवल शासन करने की बात नहीं है, बल्कि उपनिवेश की पूरी अर्थव्यवस्था, समाज और संस्कृति को मातृदेश के हितों के अधीन कर देना है। भारत के संदर्भ में, यह एक ऐसा शोषक संबंध था जिसने भारत की पारंपरिक समृद्धि को नष्ट कर उसे ब्रिटेन के उद्योगों हेतु केवल कच्चे माल का स्रोत बना दिया जिसने निर्धनता बढ़ाई।

215. (A) श्रेष्ठ नौसैनिक शक्ति, बेहतर वित्तीय संगठन और राज्य का समर्थन।
भारत में अंग्रेजों की सफलता उनकी उन्नत सैन्य तकनीक और सुदृढ़ आर्थिक आधार का परिणाम थी। ब्रिटिश नौसेना उस समय विश्व में बेजोड़ थी, जिसने उन्हें समुद्री मार्गों पर एकाधिकार प्रदान किया। इसके विपरीत, फ्रांसीसी और डच कंपनियाँ अपने गृह देशों की राजनीतिक अस्थिरता और अत्यधिक सरकारी नियंत्रण के कारण पिछड़ गईं। अंग्रेजों के पास बंगाल की विजय के पश्चात अपार धन था और उनकी कंपनी का निजी स्वरुप उन्हें त्वरित निर्णय लेने में सक्षम बनाता था। इन सभी कारकों ने उन्हें अन्य यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों पर निर्णायक बढ़त दिलाई।

216. (B) प्रांतों में उच्च न्यायालयों की स्थापना।
1858 में क्राउन के शासन की शुरुआत के साथ ही न्यायपालिका में महत्वपूर्ण संरचनात्मक सुधार किए गए। 1861 के भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम के तहत कलकत्ता, मद्रास और बॉम्बे में उच्च न्यायालयों की स्थापना की गई, जिन्होंने पुरानी सदर अदालतों और सर्वोच्च न्यायालयों का स्थान लिया। इस कदम का उद्देश्य पूरे भारत में एक अधिक एकीकृत और व्यवस्थित न्यायिक प्रणाली बनाना था। यद्यपि इन न्यायालयों में भी नस्लीय भेदभाव बना रहा, लेकिन इसने भारत में आधुनिक कानूनी प्रशासन और उच्च न्यायिक समीक्षा की एक नई परंपरा का मार्ग प्रशस्त किया।

217. (B) 'धन के निष्कासन' को सुगम बनाने के लिए विनिमय दरों और काउंसिल बिलों में हेरफेर करना।
औपनिवेशिक सरकार की मौद्रिक नीति का मुख्य लक्ष्य भारत से ब्रिटेन को होने वाले धन के हस्तांतरण को आसान बनाना था। विनिमय दर को जानबूझकर ऐसा रखा जाता था कि भारतीय रुपया ब्रिटिश पाउंड के मुकाबले कमजोर रहे, जिससे ब्रिटिश आयातकों को कम कीमत पर भारतीय कच्चा माल मिल सके। इसके अलावा, काउंसिल बिलों जैसी जटिल वित्तीय व्यवस्थाओं के माध्यम से भारतीय राजस्व का एक बड़ा हिस्सा ब्रिटेन के खर्चों के भुगतान हेतु भेज दिया जाता था। इस आर्थिक चालाकी ने भारत की पूंजी को निरंतर बाहर भेजकर उसे दुर्बल बनाया।

218. (B) पश्चिमी विचारों को आत्मसात किया और फिर राष्ट्रवादी मांगों को व्यक्त करने के लिए उनका उपयोग किया।
यद्यपि ब्रिटिश शिक्षा का उद्देश्य प्रशासन हेतु वफादार सेवक तैयार करना था, लेकिन इसके अनपेक्षित परिणाम बहुत गहरे थे। अंग्रेजी शिक्षित भारतीयों ने पश्चिमी उदारवाद, लोकतंत्र और नागरिक अधिकारों के सिद्धांतों को गहराई से पढ़ा। उन्होंने महसूस किया कि जो अधिकार अंग्रेजों को ब्रिटेन में प्राप्त हैं, वे भारतीयों को क्यों नहीं दिए जा रहे? इसी शिक्षित वर्ग ने बाद में औपनिवेशिक शासन के तर्क को उन्हीं की भाषा में चुनौती दी और राष्ट्रवादी आंदोलन को एक स्पष्ट वैचारिक दिशा और संगठित नेतृत्व प्रदान किया जिसने आधार बनाया।

219. (C) हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856
हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे महान समाज सुधारकों के निरंतर प्रयासों और संघर्ष का सुखद परिणाम था। उस समय विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी और उन्हें समाज में अपमानित जीवन जीने हेतु विवश किया जाता था। विद्यासागर ने शास्त्रों के प्रमाणों के साथ यह सिद्ध किया कि विधवा विवाह धार्मिक रुप से अनुचित नहीं है। उनके दबाव में लॉर्ड कैनिंग ने 1856 में यह कानून पारित किया, जिसने विधवाओं को सम्मान के साथ जीने और पुनः विवाह करने का कानूनी अधिकार प्रदान कर सामाजिक क्रांति की।

269. (B) पूर्व का पश्चिमी शैक्षणिक अध्ययन, जिसने प्रायः पूर्वी समाजों की एक काल्पनिक या रूढ़िबद्ध छवि का निर्माण किया।
प्राच्यवाद पश्चिमी विद्वानों द्वारा अपनाई गई एक ऐसी पद्धति थी जिसके माध्यम से उन्होंने पूर्व की संस्कृतियों और भाषाओं का अध्ययन किया। यद्यपि इसमें भारत के प्राचीन ज्ञान के प्रति सम्मान का भाव भी था, लेकिन इसकी एक बड़ी कमजोरी यह थी कि इसने पूर्व को एक 'स्थिर' और 'रहस्यमयी' समाज के रूप में चित्रित किया जिसे सभ्य बनाने हेतु पश्चिम के नेतृत्व की आवश्यकता है। इस बौद्धिक दृष्टिकोण ने अनजाने में ही सही, लेकिन साम्राज्यवादी सत्ता को यह नैतिक आधार प्रदान किया कि वे भारतीयों पर शासन करने हेतु प्राकृतिक रूप से योग्य हैं।

270. (B) सैन्य टुकड़ियों के संयोजन को सावधानीपूर्वक संतुलित करके और प्रमुख संपत्तियों को नियंत्रित करके भविष्य के किसी बड़े विद्रोह को रोकना।
1857 के विद्रोह के पश्चात ब्रिटिश सैन्य प्रशासन का मुख्य मंत्र 'सुरक्षा और संतुलन' था। उन्होंने सेना का पुनर्गठन इस प्रकार किया कि भारतीय सैनिक कभी भी संगठित होकर पुनः विद्रोह न कर सकें। महत्वपूर्ण सैन्य साजो-सामान और तोपखाने को केवल यूरोपीय इकाइयों के नियंत्रण में रखा गया। रेजिमेंटों को जाति और धर्म के आधार पर विभाजित किया गया ताकि उनमें आपसी प्रतिस्पर्धा बनी रहे। सैनिकों के बीच किसी भी राजनीतिक प्रभाव को रोकने हेतु उनके समाचार पत्रों और बाहरी विश्व के साथ संपर्क पर भी अत्यंत कड़ी निगरानी रखी जाने लगी।

271. (D) 1, 2 और 3
ब्रिटिश आर्थिक नीतियां भारत के शोषण का एक सुनियोजित ढांचा थीं। कृषि का वाणिज्यीकरण किसानों की भलाई हेतु नहीं, बल्कि ब्रिटिश कारखानों को कच्चा माल पहुँचाने हेतु किया गया। पारंपरिक कुटीर उद्योगों के विनाश ने अर्थव्यवस्था का संतुलन बिगाड़ दिया और बेरोजगारी बढ़ाई। साथ ही, मौद्रिक नीतियों को इस चतुराई से बनाया गया कि भारत का राजस्व सुगमता से ब्रिटेन भेजा जा सके। इन तीनों कारकों ने मिलकर भारतीय अर्थव्यवस्था की आत्मनिर्भरता को पूरी तरह विनष्ट कर दिया और उसे एक जर्जर औपनिवेशिक ढांचे में बदल दिया, जिससे व्यापक निर्धनता और ऋणग्रस्तता बढ़ी।

272. (C) सती प्रथा का उन्मूलन।
राजा राम मोहन राय का महिलाओं के अधिकारों के प्रति सबसे बड़ा और ऐतिहासिक योगदान सती प्रथा के विरुद्ध उनका सफल धर्मयुद्ध था। उन्होंने शास्त्रों की मानवीय व्याख्या के माध्यम से यह सिद्ध किया कि धर्म के नाम पर महिलाओं को जीवित जलाना एक जघन्य अपराध है। उनके द्वारा जागृत की गई जन-चेतना और निरंतर दबाव के कारण ही ब्रिटिश सरकार 1829 में इसे अवैध घोषित करने हेतु विवश हुई। उनके इस साहसी कदम ने भारतीय समाज में महिलाओं की गरिमा और उनके जीवन के अधिकार को पुनर्स्थापित करने की दिशा में प्रथम और अत्यंत महत्वपूर्ण नींव रखी।

273. (B) प्रेस की स्वतंत्रता को नियंत्रित और प्रतिबंधित करने के लिए।
1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम और 1878 का देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम दोनों ही ब्रिटिश सरकार के दमनकारी चरित्र के प्रत्यक्ष प्रतीक हैं। अंग्रेजों को ज्ञात था कि एक स्वतंत्र प्रेस उनके साम्राज्य की शोषक नीतियों को बेनकाब कर सकता है और जनता में विद्रोह की ज्वाला भड़का सकता है। इसी भय से उन्होंने समय-समय पर ऐसे कानून बनाए जिससे समाचार पत्रों की स्वतंत्र आवाज को घोंटा जा सके। ये कानून प्रेस को डराने, उन पर भारी जुर्माना लगाने और उन्हें बंद करने के औपनिवेशिक औजार थे ताकि जनमत को दबाया जा सके।

274. (B) मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (1919)
मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के तहत शुरू की गई 'द्वैध शासन' की प्रणाली भारतीय संवैधानिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण प्रयोग थी। इसने प्रथम बार प्रांतीय स्तर पर शासन की शक्तियों को दो भागों में विभाजित किया—हस्तांतरित और आरक्षित। हस्तांतरित विषय भारतीय मंत्रियों को दिए गए, जबकि महत्वपूर्ण आरक्षित विषय गवर्नर के पास सुरक्षित रहे। यद्यपि यह व्यवस्था दोषपूर्ण और सीमित थी, लेकिन इसने भारतीयों को सरकार चलाने का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किया और भविष्य की पूर्ण उत्तरदायी सरकार की मांग को और अधिक प्रबल बनाया जिसने लोकतांत्रिक आधार तैयार किया।

275. (A) राष्ट्रवादी और मार्क्सवादी इतिहास में कुलीन नेताओं की भूमिका पर अत्यधिक बल।
निम्नवर्गीय या सबॉल्टरन स्कूल ने इस बात पर बल दिया कि इतिहास केवल शिक्षित कुलीनों या औद्योगिक वर्गों की कहानी नहीं है। उन्होंने तर्क दिया कि पारंपरिक राष्ट्रवादी और मार्क्सवादी इतिहासकारों ने सामान्य जनता, जैसे किसानों और आदिवासियों के स्वतंत्र संघर्षों और उनकी चेतना को अक्सर नजरअंदाज किया है। यह स्कूल इतिहास को समाज के सबसे निचले स्तर से देखने की वकालत करता है और यह मानता है कि जनसाधारण के प्रतिरोध ने भी ऐतिहासिक घटनाओं को उतना ही प्रभावित किया है जितना कि बड़े नेताओं के निर्णयों ने। यह दृष्टिकोण एक वैचारिक क्रांति थी।

276. (C) नवाब द्वारा कथित कुशासन।
अवध का विलय ब्रिटिश साम्राज्यवादी विस्तार का एक अत्यंत विवादास्पद और अन्यायपूर्ण अध्याय है। लॉर्ड डलहौजी ने 1856 में अवध पर कब्जा करने हेतु न तो किसी युद्ध का सहारा लिया और न ही व्यपगत के सिद्धांत का, बल्कि उन्होंने नवाब वाजिद अली शाह पर 'कुशासन' और जनता के प्रति घोर लापरवाही का आरोप लगाया। अंग्रेजों ने यह झूठा दावा किया कि वे अवध की जनता को नवाब के अत्याचारों से मुक्त करने हेतु हस्तक्षेप कर रहे हैं। यह बहाना वास्तव में एक समृद्ध राज्य को हड़पने की साम्राज्यवादी चाल थी जिसने असंतोष उत्पन्न किया।

53. निम्नलिखित में से कौन सा विद्रोह आदिवासी विद्रोह नहीं था?
(A) कोल विद्रोह
(B) मुंडा विद्रोह
(C) वासुदेव बलवंत फड़के का विद्रोह
(D) खासी विद्रोह

54. निम्नलिखित सत्याग्रहों को उनके घटित होने के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. बारदोली सत्याग्रह
2. चंपारण सत्याग्रह
3. खेड़ा सत्याग्रह
4. नमक सत्याग्रह (दांडी मार्च)

निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम दर्शाता है?
(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 2, 4, 1
(D) 2, 1, 3, 4

55. कौन सा कथन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर 'उग्रवादी' गुट की विचारधारा का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) ब्रिटिश शासन की न्यायप्रियता में विश्वास और विद्यमान व्यवस्था के भीतर सुधारों का प्रयास।
(B) अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी क्रांति के लिए औद्योगिक श्रमिकों को संगठित करने पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) लक्षित राजनीतिक हत्याओं और स्थानीय डकैतियों के माध्यम से लक्ष्य की प्राप्ति।
(D) बहिष्कार और जन आंदोलन जैसे तरीकों के माध्यम से स्वराज की वकालत।

56. 1907 का सूरत विभाजन किसका प्रत्यक्ष परिणाम था:
(A) कांग्रेस के उदारवादी और उग्रवादी पक्षों के बीच बढ़ते मतभेद।
(B) बंगाल का विभाजन।
(C) असहयोग आंदोलन की विफलता।
(D) जलियांवाला बाग हत्याकांड।

57. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (घटना/आंदोलन)
P. बारदोली सत्याग्रह
Q. गदर पार्टी
R. भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) का पुनर्गठन
S. पाबना आंदोलन

सूची II: (संबद्ध नेता)
1. लाला हरदयाल
2. सुभाष चंद्र बोस
3. ईशान चंद्र राय
4. सरदार वल्लभभाई पटेल

कूट:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

58. 'फॉरवर्ड ब्लॉक' किसके द्वारा कांग्रेस की अध्यक्षता से त्यागपत्र देने के पश्चात गठित एक राजनीतिक दल था?
(A) सुभाष चंद्र बोस
(B) जवाहरलाल नेहरु
(C) सरदार पटेल
(D) सी. राजगोपालाचारी

59. स्वतंत्रता आंदोलन में वामपंथियों की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) उन्होंने कई अवसरों पर गांधी के नेतृत्व की आलोचना की थी।
(B) उन्होंने श्रमिक संघ (ट्रेड यूनियन) आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
(C) उन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अंग्रेजों का सक्रिय रूप से समर्थन किया।
(D) वे एकीकृत, स्वतंत्र भारत के प्रबल समर्थक थे और विभाजन का विरोध करते थे।

60. 1946 में मुस्लिम लीग द्वारा "प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस" (डायरेक्ट एक्शन डे) का आह्वान एक प्रमुख घटना थी जिसने बढ़ावा दिया:
(A) संविधान निर्माण की प्रक्रिया।
(B) सांप्रदायिक हिंसा और विभाजन की मांग को प्रबलता।
(C) कांग्रेस और लीग के बीच एकता।
(D) आई.एन.ए. परीक्षण।

61. रियासतों के एकीकरण के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा प्रयुक्त प्राथमिक विधिक और राजनीतिक साधन क्या था?
(A) व्यपगत का सिद्धांत
(B) रेगुलेटिंग एक्ट
(C) विलय पत्र (इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन)
(D) भारत सरकार अधिनियम, 1935

62. भारत में राष्ट्रवाद के आर्थिक आधार को प्रारंभिक राष्ट्रवादियों द्वारा किस अवधारणा के प्रसार से शक्ति मिली?
(A) 'सुरक्षा कपाट' सिद्धांत
(B) 'श्वेत व्यक्ति का उत्तरदायित्व' (व्हाइट मैन्स बर्डन) सिद्धांत
(C) 'अहस्तक्षेप' सिद्धांत
(D) 'धन के निष्कासन' (ड्रेन ऑफ वेल्थ) का सिद्धांत

63. संथाल विद्रोह (1855-56) का तात्कालिक कारण किसके दमनकारी आचरण से संबंधित था:
(A) जमींदार और साहूकार (दिकु)
(B) ब्रिटिश सैन्य अधिकारी
(C) ईसाई मिशनरी
(D) प्रतिद्वंद्वी आदिवासी समूह

285. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
वि-औद्योगीकरण का अर्थ भारत के पारंपरिक हस्तशिल्प और उद्योगों का पतन है। वाणिज्यीकरण निर्वाह कृषि से बाजार की ओर होने वाले बदलाव को दर्शाता है। धन का निष्कासन भारत से संसाधनों का निरंतर और एकतरफा ब्रिटेन की ओर होने वाला प्रवाह है। सर्वोच्चता ब्रिटिश क्राउन का रियासतों पर अंतिम और सर्वोपरि अधिकार होने का स्पष्ट दावा है। ये सभी प्रक्रियाएँ औपनिवेशिक भारत की आर्थिक और राजनीतिक वास्तविकता को दर्शाती हैं, जिन्होंने मिलकर भारतीय समाज को गहराई से प्रभावित किया और उसे एक शोषित साम्राज्यवादी उपनिवेश बनाया।

286. (C) महिलाओं का शिक्षा का अधिकार
उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान भारतीय समाज सुधारकों ने महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु कड़ा संघर्ष किया, लेकिन उन्होंने शिक्षा के अधिकार को कभी चुनौती नहीं दी, बल्कि उसे सशक्तिकरण का मुख्य साधन माना। उन्होंने सती प्रथा, विधवाओं के साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार और बाल विवाह जैसी कुरीतियों को जड़ से मिटाने हेतु अभियान चलाए। उनका दृढ़ विश्वास था कि जब तक महिलाएं शिक्षित नहीं होंगी, वे समाज में अपना उचित स्थान प्राप्त नहीं कर सकेंगी। अतः शिक्षा सुधारकों हेतु एक सकारात्मक लक्ष्य था, न कि कोई ऐसी वस्तु जिसे उन्होंने चुनौती दी हो।

287. (C) एनी बेसेंट - अलीगढ़ आंदोलन
एनी बेसेंट का नाम अलीगढ़ आंदोलन से नहीं, बल्कि थियोसोफिकल सोसाइटी और होम रूल आंदोलन से जुड़ा है। अलीगढ़ आंदोलन की शुरुआत सर सैयद अहमद खान ने की थी ताकि मुस्लिम समुदाय में आधुनिक शिक्षा का प्रचार हो सके। राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की, दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज बनाया और ज्योतिबा फुले ने सत्यशोधक समाज के माध्यम से सामाजिक समानता की लड़ाई लड़ी। ये सभी सुधारक अपने विशिष्ट क्षेत्रों में भारतीय समाज के पुनरुद्धार हेतु विख्यात हैं। अतः तीसरा युग्म ऐतिहासिक रूप से गलत सुमेलित है और त्रुटिपूर्ण है।

288. (B) भारतीय भाषाओं में प्रकाशित समाचार पत्र और पत्रिकाएं।
देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम का मुख्य और एकमात्र लक्ष्य 'क्षेत्रीय' भाषाओं के समाचार पत्र थे। लॉर्ड लिटन को अनुभव हुआ कि ये पत्र अंग्रेजी पत्रों की तुलना में औपनिवेशिक सरकार की अधिक कड़ी आलोचना कर रहे हैं और आम जनता को ब्रिटिश राज के विरुद्ध जागरूक कर रहे हैं। यह कानून जानबूझकर भेदभावपूर्ण बनाया गया था ताकि अंग्रेजी प्रेस को कोई क्षति न हो और केवल भारतीय भाषा के पत्रों पर कड़ी सेंसरशिप लगाकर उनकी आवाज को पूर्णतः दबाया जा सके। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर एक नस्लीय और साम्राज्यवादी प्रहार था।

289. (B) तुर्की के खलीफा का समर्थन करने के लिए भारत में एक आंदोलन।
खिलाफत शब्द तुर्की के 'खलीफा' से उत्पन्न हुआ है, जिन्हें दुनिया भर के मुसलमान अपना सर्वोच्च धार्मिक प्रमुख मानते थे। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात जब अंग्रेजों ने तुर्की के साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करने और खलीफा के अधिकारों को कम करने की चेष्टा की, तो भारत में इसके विरुद्ध एक व्यापक जन-आंदोलन प्रारंभ हुआ। इसे 'खिलाफत आंदोलन' कहा गया। भारतीय मुसलमानों ने अंग्रेजों पर दबाव बनाने हेतु इसका उपयोग किया और महात्मा गांधी ने इसे असहयोग आंदोलन के साथ जोड़कर हिंदू-मुस्लिम एकता का एक स्वर्णिम उदाहरण प्रस्तुत किया।

290. (C) एक पिछड़े समाज में प्रगति लाने के लिए एक 'सभ्यता-प्रसार मिशन'।
साम्राज्यवादी इतिहासकार अक्सर यह तर्क देते हैं कि भारत में ब्रिटिश विस्तार केवल क्षेत्रीय लाभ हेतु नहीं था, बल्कि यह एक 'सभ्य' राष्ट्र का कर्तव्य था कि वह एक 'पिछड़े' समाज में कानून, व्यवस्था और आधुनिक मूल्य स्थापित करे। उन्होंने इसे 'व्हाइट मैन्'स बर्डन' या 'गोरों का बोझ' कहा, जिसके तहत वे भारत पर अपने शासन को नैतिक रूप से उचित ठहराते थे। यह व्याख्या वास्तव में औपनिवेशिक शोषण और क्रूरता को छिपाने का एक वैचारिक आवरण थी, ताकि विश्व को यह दिखाया जा सके कि अंग्रेज भारत का वास्तविक कल्याण कर रहे हैं।

291. (B) सभी तोपखाने और उन्नत शस्त्र यूरोपीय नियंत्रण में रखे जा सकें।
1857 के विद्रोह के कड़वे अनुभवों से सीखते हुए अंग्रेजों ने अपनी सैन्य व्यवस्था को पूर्णतः असुरक्षा और अविश्वास के आधार पर पुनर्गठित किया। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि सेना की वास्तविक शक्ति अर्थात तोपखाना और आधुनिक हथियार कभी भी भारतीय सैनिकों के हाथों में न रहें। इन महत्वपूर्ण संपत्तियों पर केवल ब्रिटिश सैनिकों का नियंत्रण रखा गया। इसके साथ ही, सेना में यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ा दी गई ताकि भविष्य में किसी भी भारतीय सैनिक विद्रोह को तुरंत और प्रभावी ढंग से कुचला जा सके। यह रणनीति साम्राज्य की सुरक्षा का आधार थी।

292. (B) 'धन के निष्कासन सिद्धांत' का प्रतिपादन।
दादाभाई नौरोजी का सबसे महान योगदान 'धन के निष्कासन का सिद्धांत' था, जिसने ब्रिटिश राज के कथित 'परोपकारी' स्वरूप की वास्तविकता उजागर की। उन्होंने तथ्यों और आंकड़ों के साथ यह सिद्ध किया कि अंग्रेज किस प्रकार योजनाबद्ध तरीके से भारत की पूंजी को ब्रिटेन भेज रहे हैं। इस सिद्धांत ने भारतीय राष्ट्रवादियों को वह वैचारिक आधार दिया जिससे वे औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध अपनी लड़ाई लड़ सके। इसने भारत की निर्धनता का वास्तविक कारण विश्व को बताया और भारतीयों में आर्थिक राष्ट्रवाद की भावना को जन्म दिया, जो स्वतंत्रता आंदोलन हेतु आवश्यक था।

293. (B) यह एक नए बौद्धिक वर्ग को बनाने में सहायक थी जिसने राष्ट्रवादी आंदोलन का नेतृत्व किया।
यद्यपि ब्रिटिश शिक्षा का उद्देश्य प्रशासनिक लिपिक तैयार करना था, लेकिन इसके अनपेक्षित परिणाम भारत हेतु अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुए। अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों को मिल्टन, रूसो और वोल्टेयर जैसे विचारकों के स्वतंत्रता और समानता के प्रगतिशील सिद्धांतों से परिचित कराया। इसी शिक्षा ने

30. क्रांतिकारी गतिविधियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. गदर पार्टी की स्थापना विदेशों में सशस्त्र विद्रोह के माध्यम से भारत को स्वतंत्र करने के उद्देश्य से की गई थी।
2. काकोरी षड्यंत्र मामले में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की गतिविधियों के लिए धन जुटाने हेतु ट्रेन डकैती सम्मिलित थी।
3. चटगाँव शस्त्रागार छापे का नेतृत्व सूर्य सेन ने किया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

31. महात्मा गांधी का 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पदार्पण' सबसे सटीक रूप से किस घटना से चिह्नित है?
(A) चंपारण सत्याग्रह
(B) असहयोग आंदोलन
(C) दांडी मार्च
(D) भारत छोड़ो आंदोलन

32. गांधी के दर्शन के केंद्र 'सत्याग्रह' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह परिभाषित किया गया है:
(A) व्यवस्थागत उत्पीड़न के विभिन्न रूपों के विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध।
(B) सत्य और नैतिक बल पर आधारित अहिंसक विरोध।
(C) राजनीतिक कूटनीति और समझौते की एक रणनीति।
(D) सभी प्रचलित प्रशासनिक कानूनों के प्रति निष्क्रिय आज्ञाकारिता का एक रूप।

33. चौरी-चौरा की घटना के पश्चात गांधी ने निम्नलिखित में से किस जन आंदोलन को वापस ले लिया था?
(A) सविनय अवज्ञा आंदोलन
(B) असहयोग आंदोलन
(C) भारत छोड़ो आंदोलन
(D) खेड़ा सत्याग्रह

34. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): सुभाष चंद्र बोस ने 1939 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता से त्यागपत्र दे दिया था।
कारण (R): स्वतंत्रता संग्राम के भविष्य के मार्ग के संबंध में महात्मा गांधी और कांग्रेस कार्य समिति के साथ उनके महत्वपूर्ण वैचारिक मतभेद थे।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

35. भारतीय राष्ट्रीय सेना (आज़ाद हिन्द फ़ौज) की मूल रूप से स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) सुभाष चंद्र बोस
(B) रास बिहारी बोस
(C) कैप्टन मोहन सिंह
(D) जनरल शाह नवाज खान

36. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रमुख कारक है जिसने 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत में वामपंथी विचारधारा के विकास में योगदान दिया?
(A) उदारवादी राष्ट्रवादियों की सफलता।
(B) समाजवादी विचारों को बढ़ावा देने की ब्रिटिश सरकार की नीति।
(C) 1857 के विद्रोह की विफलता।
(D) 1917 की रूसी क्रांति का प्रभाव।

37. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत में गठित निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रमुख वामपंथी संगठन था?
(A) सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी
(B) जस्टिस पार्टी
(C) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
(D) स्वराज पार्टी

38. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में वामपंथियों की प्रमुख भूमिका क्या थी?
(A) उन्होंने विशेष रूप से ब्रिटिश सरकार की नीतियों का समर्थन किया।
(B) उन्होंने औद्योगिक श्रमिकों और किसानों को वर्ग के आधार पर संगठित करने पर ध्यान केंद्रित किया।
(C) उन्होंने रियासतों को यथावत रखने की वकालत की।
(D) उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध किसी भी प्रकार के जन आंदोलन का कड़ा विरोध किया।

39. आधुनिक भारत में सांप्रदायिक राजनीति की उत्पत्ति का मुख्य कारण माना जाता है:
(A) प्राचीन जाति व्यवस्था।
(B) मुगल सम्राटों की आर्थिक नीतियां।
(C) राज्यों का भाषाई पुनर्गठन।
(D) अंग्रेजों की 'विभाजन करो और शासन करो' की नीति।

40. किस घटना को सांप्रदायिक राजनीति के विकास में एक प्रमुख मील का पत्थर माना जाता है, जिससे अंततः पृथक राज्य की मांग उत्पन्न हुई?
(A) 1906 में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का गठन।
(B) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना।
(C) स्वदेशी आंदोलन का प्रारंभ।
(D) चंपारण सत्याग्रह।

41. भारत के विभाजन में सांप्रदायिकता की भूमिका के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(A) इसने इस विचार को बढ़ावा दिया कि धार्मिक समुदाय

अध्याय 08

आधुनिक भारत का इतिहास

1. भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में योगदान देने वाले प्रमुख कारणों के रूप में निम्नलिखित में से किसे पहचाना गया है?
(A) औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देना।
(B) ब्रिटिश प्रशासन द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप का प्रशासनिक और राजनीतिक एकीकरण।
(C) मुगल प्रशासन द्वारा विविध आर्थिक नीतियों का कार्यान्वयन।
(D) रियासतों की स्वतंत्र संप्रभु संस्थाओं के रूप में स्थापना।

2. भारतीय राष्ट्रवाद के सामाजिक आधार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: वकीलों, डॉक्टरों और शिक्षकों सहित नए शिक्षित मध्यम वर्ग ने प्रारंभिक राष्ट्रवादी नेतृत्व का मुख्य आधार तैयार किया।
कथन II: पारंपरिक जमींदार अभिजात वर्ग और सामंत आधुनिक राष्ट्रवादी विचारों के सबसे प्रमुख प्रस्तावक थे।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन II सत्य है, लेकिन कथन I असत्य है।

3. 1857 के विप्लव की प्रकृति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह एक सिपाही विद्रोह के रूप में प्रारंभ हुआ लेकिन शीघ्र ही नागरिक जनसंख्या में फैल गया।
(B) विभिन्न समूहों ने विलय और भू-राजस्व नीतियों के विरुद्ध शिकायतों सहित विविध कारणों से इसमें भाग लिया।
(C) यह प्रारंभ से ही पूर्णतः एकीकृत और सुव्यवस्थित राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम था।
(D) इसने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकार को गंभीर चुनौती दी थी।

4. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): एनफील्ड राइफल का आगमन 1857 के विद्रोह का एक तात्कालिक कारण था।
कारण (R): राइफल के कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी का प्रयोग किया गया था, जिससे हिंदू और मुस्लिम दोनों सिपाहियों की धार्मिक भावनाओं को आघात पहुँचा था।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

5. 1857 की क्रांति का महत्वपूर्ण प्रभाव क्या था?
(A) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रशासनिक और सैन्य शक्तियों का विस्तार।
(B) एक बुनियादी नीति के रूप में व्यपगत के सिद्धांत (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स) का व्यापक कार्यान्वयन।
(C) भारतीय प्रशासन का ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश राजमुकुट (क्राउन) को हस्तांतरण।
(D) भारतीय क्षेत्रों को तत्काल पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता प्रदान करना।

6. 1857 के विद्रोह के एक नेता और उनके प्राथमिक कार्यक्षेत्र की सही जोड़ी की पहचान कीजिए।
(A) नाना साहब - फैजाबाद
(B) बखत खान - बरेली
(C) लक्ष्मीबाई - दिल्ली
(D) तात्या टोपे - आरा

7. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (1857 के नायक)
P. मंगल पांडे
Q. मौलवी अहमद उल्ला
R. लक्ष्मीबाई
S. बखत खान
सूची II: (संबद्ध स्थान/भूमिका)
1. फैजाबाद
2. दिल्ली में विद्रोही सेना के सेनापति
3. बैरकपुर
4. झांसी
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

8. निम्नलिखित में से कौन 1857 के विद्रोह की विफलता का प्रमुख कारण नहीं था?
(A) विद्रोहियों के पक्ष में शिक्षित मध्यम वर्ग की सक्रिय भागीदारी।

(B) एकीकृत विचारधारा और नेतृत्व का अभाव।
(C) अंग्रेजों के पास श्रेष्ठ सैन्य संसाधन और संगठन।
(D) भारतीय समाज के सभी वर्गों और क्षेत्रों से व्यापक समर्थन का अभाव।

9. कूका विद्रोह एक महत्वपूर्ण प्रतिरोध आंदोलन था जिसकी उत्पत्ति भारत के किस क्षेत्र में हुई थी?
(A) बंगाल
(B) महाराष्ट्र
(C) पंजाब
(D) असम

10. औपनिवेशिक शासन के प्रारंभिक प्रतिरोध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कूका विद्रोह के राजनीतिक और धार्मिक दोनों पक्ष थे, जिसका उद्देश्य सिख संप्रभुता को पुनः स्थापित करना था।
2. नागा विद्रोह मुख्य रूप से नरमुंड शिकार प्रथाओं को रोकने और प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित करने के ब्रिटिश प्रयासों की प्रतिक्रिया थी।
3. अहोम विद्रोह का नेतृत्व अपदस्थ अहोम राजकुमारों ने अपने क्षेत्र के ब्रिटिश विलय के विरुद्ध किया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

11. महाराष्ट्र में विद्रोह के उस नेता की पहचान कीजिए जो अंग्रेजों के विरुद्ध रामोसियों और अन्य पहाड़ी जनजातियों को संगठित करने के लिए जाने जाते थे?
(A) गोमधर कोंवर
(B) बिरसा मुंडा
(C) सिद्धू मुर्मू
(D) वासुदेव बलवंत फड़के

12. उत्तर-पूर्व में खासी विद्रोह मुख्य रूप से किस ब्रिटिश कार्रवाई के विरुद्ध एक विरोध था?
(A) कृषि भूमि पर भारी कर लगाना।
(B) ब्रह्मपुत्र घाटी और सिलहट को जोड़ने वाली खासी पहाड़ियों के माध्यम से ब्रिटिश सड़क निर्माण।
(C) स्थानीय किसानों द्वारा नील की अनिवार्य और बलपूर्वक खेती।
(D) दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों का आगमन।

13. निम्नलिखित आदिवासी विद्रोहों को उनके घटित होने के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. संथाल विद्रोह
2. कोल विद्रोह
3. मुंडा विद्रोह (उलगुलान)
4. अहोम विद्रोह

निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम दर्शाता है?
(A) 4, 2, 1, 3
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 2, 4, 3, 1
(D) 3, 1, 4, 2

14. मुंडा विद्रोह, जिसे 'उलगुलान' या 'महान हलचल' के रूप में भी जाना जाता है, का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था?
(A) चक्र बिसोई
(B) सिद्धू और कान्हू
(C) टीटू मीर
(D) बिरसा मुंडा

15. किसान और आदिवासी आंदोलनों के संबंध में अशुद्ध जोड़ी की पहचान कीजिए।
(A) भील विद्रोह - वासुदेव बलवंत फड़के
(B) संथाल विद्रोह - सिद्धू और कान्हू
(C) नील विद्रोह - दिगंबर और विष्णु विश्वास
(D) पाबना आंदोलन - ईशान चंद्र राय

16. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): 1859-60 का नील विद्रोह एक सफल किसान विद्रोह था।
कारण (R): इसने ब्रिटिश सरकार को नील आयोग नियुक्त करने और यह आदेश जारी करने के लिए विवश किया कि रैयतों को नील की खेती के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

17. बंगाल में पाबना कृषि आंदोलन मुख्य रूप से किसके विरुद्ध था:
(A) ब्रिटिश सरकार की कर नीतियां।
(B) जमींदारों की दमनकारी प्रथाएं।
(C) व्यावसायिक फसलों की बलपूर्वक खेती।
(D) ईसाई मिशनरियों की गतिविधियां।

18. 1917 के चंपारण सत्याग्रह में किसानों की मुख्य शिकायत क्या थी?
(A) शोषणकारी तिनकठिया पद्धति।
(B) उच्च भू-राजस्व दरें।
(C) जमींदारी प्रथा।
(D) नमक कर।

19. खेड़ा सत्याग्रह (1918) गांधीजी द्वारा किसके समर्थन में प्रारंभ किया गया था?
(A) उच्च मजदूरी की मांग करने वाले मिल मजदूर।

(B) विदेशी वस्तुओं के आयात का विरोध करने वाले किसान।
(C) फसल नष्ट होने के कारण राजस्व में छूट की मांग करने वाले किसान।
(D) भूमि अधिकारों की मांग करने वाले भूमिहीन मजदूर।

20. बारदोली सत्याग्रह (1928) के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) यह विशेष रूप से साइमन कमीशन के आगमन के विरुद्ध निर्देशित एक व्यापक विरोध आंदोलन था।
(B) इसके प्रारंभ और प्रारंभिक संगठन से ही महात्मा गांधी ने प्रत्यक्ष रूप से इसका नेतृत्व किया था।
(C) यह एक ऐसा अभियान था जो अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल रहा और अंततः इसे निर्दयतापूर्वक दबा दिया गया।
(D) यह सरकार द्वारा भू-राजस्व में मनमानी वृद्धि के विरुद्ध विरोध था।

21. 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का एक प्रमुख कारण क्या था?
(A) अंग्रेजों के विरुद्ध हिंसक सशस्त्र संघर्ष प्रारंभ करना।
(B) शासन से तत्काल और पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करना।
(C) लोकप्रिय असंतोष के समाधान और संवाद के लिए एक 'सुरक्षा कपाट' (सेफ्टी वाल्व) प्रदान करना।
(D) केवल औद्योगिक श्रमिकों के हितों का प्रतिनिधित्व करना।

22. अपने प्रारंभिक चरण (1885-1905) में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व को सबसे अच्छी तरह से किस रूप में वर्णित किया गया है?
(A) उग्रवादी
(B) उदारवादी
(C) क्रांतिकारी
(D) समाजवादी

23. निम्नलिखित में से कौन सा नेता भारतीय राष्ट्रवाद के 'उग्रवादी' चरण से संबंधित नहीं है?
(A) लाला लाजपत राय
(B) बाल गंगाधर तिलक
(C) बिपिन चंद्र पाल
(D) गोपाल कृष्ण गोखले

24. 'लाल-बाल-पाल' की तिकड़ी उग्रवादी राष्ट्रवाद के उदय के केंद्र में थी। वे कौन थे?
(A) लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल
(B) लाला हरदयाल, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल
(C) लाला लाजपत राय, बालशास्त्री जांभेकर, गोपाल कृष्ण गोखले
(D) लाला हंसराज, बाल गंगाधर तिलक, पी. सी. राय

25. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उदारवादियों और उग्रवादियों के बीच ऐतिहासिक विभाजन किस अधिवेशन में हुआ था?
(A) कलकत्ता अधिवेशन, 1906
(B) लखनऊ अधिवेशन, 1916
(C) सूरत अधिवेशन, 1907
(D) नागपुर अधिवेशन, 1920

26. एक राष्ट्रवादी नेता के रूप में अपने सक्रिय काल के दौरान अरबिंदो घोष के साथ निम्नलिखित में से कौन सी विचारधारा सबसे निकटता से जुड़ी हुई है?
(A) निष्क्रिय प्रतिरोध और आध्यात्मिक राष्ट्रवाद।
(B) संवैधानिक आंदोलन और अनुनय-विनय।
(C) हिंसक क्रांति और ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या।
(D) धन के निष्कासन पर आधारित उपनिवेशवाद की आर्थिक आलोचना।

27. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (क्रांतिकारी संगठन)
P. अनुशीलन समिति
Q. गदर पार्टी
R. अभिनव भारत
S. हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन
सूची II: (संबद्ध क्षेत्र/गतिविधि)
1. महाराष्ट्र
2. पंजाब / उत्तर भारत
3. बंगाल
4. सैन फ्रांसिस्को, यू.एस.ए.
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

28. भारत में प्रारंभिक क्रांतिकारी संगठनों की विचारधारा में मुख्य रूप से क्या सम्मिलित था?
(A) सामूहिक सत्याग्रहों के लिए किसानों को संगठित करना।
(B) सशस्त्र संघर्ष और व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्यों के माध्यम से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना।
(C) विधान परिषद के चुनावों में भाग लेना।
(D) याचिकाओं और ज्ञापनों के माध्यम से अधिराज्य का दर्जा (डोमिनियन स्टेटस) प्राप्त करना।

29. निम्नलिखित में से कौन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय प्रमुख क्रांतिकारी नहीं था?
(A) भगत सिंह
(B) चंद्रशेखर आज़ाद
(C) दादाभाई नौरोजी
(D) राम प्रसाद बिस्मिल

277. (B) विधि के एक नए सिद्धांत और औपचारिक न्यायालय संरचना की शुरुआत।
ईस्ट इंडिया कंपनी और बाद में ब्रिटिश क्राउन ने भारत में न्याय की एक ऐसी व्यवस्था स्थापित की जो लिखित नियमों और निर्धारित प्रक्रियाओं पर आधारित थी। उन्होंने जिला अदालतों से लेकर उच्च न्यायालयों तक का एक व्यवस्थित पदानुक्रम निर्मित किया। इस व्यवस्था ने सदियों से चली आ रही प्रथागत न्याय प्रणालियों को प्रतिस्थापित किया और 'कानून के समक्ष समानता' के आधुनिक विचार को प्रस्तुत किया। यद्यपि यह व्यवस्था महंगी थी और इसमें नस्लीय भेदभाव भी मौजूद था, फिर भी इसने भारत को एक सुदृढ़ कानूनी ढांचा और प्रशासनिक न्याय की नई परंपरा प्रदान की।

278. (B) भारत आयातित निर्मित वस्तुओं पर तीव्रता से निर्भर हो गया।
वि-औद्योगीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को पूरी तरह परजीवी बना दिया। जब भारत के पारंपरिक हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग विनष्ट हो गए, तो भारतीय जनता की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु स्वदेशी उत्पादों का कोई विकल्प नहीं बचा। इसके परिणामस्वरूप, भारत जो कभी वस्त्रों का सबसे बड़ा निर्यातक था, अब वह ब्रिटेन की मशीनों में निर्मित उत्पादों का एक विशाल खरीदार बन गया। इस पराश्रयता ने भारतीय धन को निरंतर ब्रिटेन की ओर प्रवाहित किया और देश के आर्थिक विकास की स्वाभाविक गति को पूरी तरह अवरुद्ध कर दिया जिससे निर्धनता और संकट बढ़े।

279. (B) शिक्षा के माध्यम से निम्न जातियों और महिलाओं की सामाजिक मुक्ति।
ज्योतिबा फुले का मुख्य उद्देश्य समाज की जड़ता और जातिगत शोषण के विरुद्ध एक बौद्धिक और सामाजिक क्रांति लाना था। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा ही वह एकमात्र सशक्त माध्यम है जिससे समाज के पिछड़े वर्ग और महिलाएँ अपने आत्मसम्मान को पहचान सकते हैं और शोषण मुक्त जीवन जी सकते हैं। उन्होंने सत्यशोधक समाज के माध्यम से लोगों को अंधविश्वासों से दूर रहने और तर्क के आधार पर अपनी मुक्ति का मार्ग खोजने हेतु निरंतर प्रेरित किया। उनके ये क्रांतिकारी प्रयास आधुनिक भारत में सामाजिक समानता के विकास की महत्वपूर्ण आधारशिला बने।

280. (B) राष्ट्रीय चेतना और जनमत को बढ़ावा देना।
बीसवीं शताब्दी के आरंभ में लोकप्रिय समाचार पत्रों ने राष्ट्रवादी आंदोलन हेतु एक शक्तिशाली प्रवक्ता की भूमिका निभाई। इन पत्रों ने तिलक, गांधी और नेहरू जैसे नेताओं के प्रगतिशील विचारों को गाँव-गाँव तक पहुँचाया। उन्होंने औपनिवेशिक सरकार के दमनकारी कानूनों और आर्थिक शोषण का मुखर विरोध किया, जिससे आम जनता में देशभक्ति और एकता की भावना जाग्रत हुई। इन समाचार पत्रों ने लोगों को यह अनुभव कराया कि वे एक ही विशाल संघर्ष का हिस्सा हैं, जिससे राष्ट्रवादी आंदोलन एक संभ्रांतवादी आंदोलन से बदलकर एक वास्तविक जन-आंदोलन में रुपांतरित हुआ।

281. (A) अपनी सेना को भंग करना और अपने क्षेत्र में एक ब्रिटिश सैन्य टुकड़ी को स्वीकार करना।
सहायक संधि स्वीकार करने वाला भारतीय राजा वास्तव में अपनी संप्रभुता अंग्रेजों के हाथों गिरवी रख देता था। उसे अपनी पुश्तैनी सेना समाप्त करनी पड़ती थी और ब्रिटिश सेना को अपने खर्चे पर रखना पड़ता था, जो अंततः उसी के राज्य पर कड़ा नियंत्रण रखती थी। इसके अतिरिक्त, राजा अपने दरबार में एक ब्रिटिश रेजिडेंट रखने हेतु बाध्य था जो हर महत्वपूर्ण निर्णय में हस्तक्षेप करता था। इस व्यवस्था ने भारतीय शासकों को ऐसी कृत्रिम सुरक्षा प्रदान की जिसने उन्हें निकम्मा और पूर्णतः अंग्रेजों का गुलाम बना दिया जिससे उनकी सत्ता विनष्ट हो गई।

282. (B) औपनिवेशिक शासन से भारत के स्वतंत्रता संघर्ष की कहानी।
राष्ट्रवादी इतिहासकार भारतीय इतिहास को एक ऐसी महान प्रक्रिया के रूप में देखते हैं जहाँ एक प्राचीन सभ्यता अपनी खोई हुई स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त करने हेतु संघर्ष कर रही है। उनका मुख्य ध्यान उन व्यक्तियों, संगठनों और आंदोलनों पर रहता है जिन्होंने भारतीयों को संगठित किया और उनमें राष्ट्रीय गौरव की भावना भरी। उनके लिए इतिहास केवल तथ्यों का संकलन नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों हेतु प्रेरणा का एक अक्षय स्रोत है। यह दृष्टिकोण ब्रिटिश शासन के शोषक चरित्र को उजागर करने और भारतीय जनता की विजय गाथा को प्रमुखता से प्रस्तुत करता है।

283. (B) केंद्र में द्वैध शासन और प्रांतों के लिए स्वायत्तता।
1935 का भारत शासन अधिनियम संवैधानिक विकास की दिशा में एक विशाल कदम था। इसने प्रांतों से द्वैध शासन को हटाकर उन्हें वास्तविक स्वायत्तता प्रदान की, जिसका अर्थ था कि अब निर्वाचित भारतीय मंत्री अपने विभागों के प्रबंधन में अधिक स्वतंत्र थे। साथ ही, इसने केंद्र में द्वैध शासन की शुरुआत का प्रस्ताव रखा और एक संघीय ढांचे की परिकल्पना की। यद्यपि इसमें अभी भी गवर्नर-जनरल के पास व्यापक विशेषाधिकार थे, लेकिन इसने भारतीयों को एक बड़े प्रशासनिक अनुभव हेतु तैयार किया, जो आगे चलकर स्वतंत्र भारत के संसदीय लोकतंत्र का आधार बना।

284. (B) उच्च भू-राजस्व मांग, उसे चुकाने के लिए नकदी की आवश्यकता और साहूकारों का जाल।
ग्रामीण ऋणग्रस्तता ब्रिटिश शासन की सबसे भयावह आर्थिक परिणति थी। अंग्रेजों ने भू-राजस्व की दरें अत्यंत ऊँची रखीं और उसे नकद में चुकाने की कठोर शर्त लगा दी। फसल अच्छी हो या खराब, किसान को लगान देना ही पड़ता था। इस मजबूरी का अनुचित लाभ उठाकर स्थानीय साहूकारों ने किसानों को ऊँची ब्याज दरों पर ऋण देना प्रारंभ किया। कर्ज न चुका पाने की स्थिति में किसानों की उपजाऊ जमीनें हड़प ली जाती थीं। इस प्रकार, राजस्व नीति और साहूकारी प्रथा के गठबंधन ने भारतीय किसान को ऋण और निर्धनता के दुष्चक्र में धकेल दिया।

अलग राष्ट्र बनाते हैं।
(B) राजनीतिक नेताओं ने समर्थन जुटाने और राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए सांप्रदायिक भावनाओं का प्रयोग किया।
(C) यह पूर्णतः हिंदुओं और मुस्लिमों के बीच अंतर्निहित और प्राचीन शत्रुता का परिणाम था।
(D) अंग्रेजों की पृथक निर्वाचक मंडल की नीति ने सांप्रदायिक विभाजन को और गहरा कर दिया।

42. 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात भारत के सम्मुख सबसे महत्वपूर्ण तात्कालिक चुनौती क्या थी?
(A) 500 से अधिक रियासतों का भारतीय संघ में एकीकरण।
(B) संविधान का निर्माण।
(C) प्रथम आम चुनाव।
(D) प्रथम पंचवर्षीय योजना का प्रारंभ।

43. स्वतंत्रता के समय "कश्मीर समस्या" मुख्य रूप से किससे उत्पन्न हुई थी:
(A) राज्य का आर्थिक पिछड़ापन।
(B) पड़ोसी क्षेत्रों के साथ भाषाई विवाद।
(C) प्रथम पंचवर्षीय योजना का कार्यान्वयन।
(D) राज्य के शासक का भारत या पाकिस्तान किसी में भी सम्मिलित होने में हिचकिचाहट।

44. भारतीय संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष कौन थे?
(A) जवाहरलाल नेहरू
(B) डॉ. बी.आर. अंबेडकर
(C) सरदार वल्लभभाई पटेल
(D) डॉ. राजेंद्र प्रसाद

45. स्वतंत्रता के पश्चात भारत में पंचवर्षीय योजनाओं का मुख्य उद्देश्य क्या था:
(A) मुक्त-बाजार आधारित पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना।
(B) नियोजित आर्थिक विकास और औद्योगीकरण प्राप्त करना।
(C) पूर्णतः केवल कृषि विकास पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को समाप्त करना।

46. भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन किस आयोग की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया था?
(A) साइमन कमीशन
(B) हंटर कमीशन
(C) बटलर कमीशन
(D) राज्य पुनर्गठन आयोग (फजल अली आयोग)

47. स्वतंत्रता के पश्चात प्रारंभिक वर्षों (1964 तक) में भारत की विदेश नीति किस सिद्धांत द्वारा निर्देशित थी:
(A) गुटनिरपेक्षता।
(B) सोवियत संघ के साथ गठबंधन।
(C) संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ गठबंधन।
(D) साम्राज्यवादी विस्तार।

48. निम्नलिखित में से कौन रानी लक्ष्मीबाई की प्रमुख सहायक के रूप में जानी जाती हैं और 1857 के विद्रोह में महिला सेना की एक प्रमुख हस्ती थीं?
(A) बेगम हजरत महल
(B) झलकारीबाई
(C) उदा देवी
(D) अवंतीबाई

49. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उदारवादी नेतृत्व अपने प्रारंभिक चरण में अंग्रेजों से महत्वपूर्ण रियायतें प्राप्त करने में असफल रहा।
कारण (R): औपनिवेशिक शासकों द्वारा उनके संवैधानिक आंदोलन, याचिकाओं और अनुनय-विनय के तरीकों को निर्बल और निष्प्रभावी माना गया।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

50. भील विद्रोह किन दो क्षेत्रों में हुआ था?
(A) महाराष्ट्र और राजस्थान
(B) बंगाल और बिहार
(C) पंजाब और हरियाणा
(D) असम और नागालैंड

51. भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अंग्रेजों द्वारा आर्थिक शोषण, जिससे धन का निष्कासन हुआ, ने व्यापक असंतोष उत्पन्न किया।
2. आधुनिक शिक्षा के प्रारंभ ने भारतीयों को स्वतंत्रता, समानता और राष्ट्रवाद के पाश्चात्य विचारों से परिचित कराया।
3. भारत के अतीत के गौरव और सांस्कृतिक विरासत की पुनर्खोज ने राष्ट्रीय गौरव की भावना जाग्रत की।

उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

52. मौलवी अहमद उल्ला, जो 1857 के विद्रोह के एक महत्वपूर्ण नायक थे, किस क्षेत्र के प्रमुख नेता थे?
(A) दिल्ली
(B) कानपुर
(C) ग्वालियर
(D) लखनऊ और फैजाबाद

एक ऐसा नया मध्यम वर्ग और बौद्धिक नेतृत्व तैयार किया जो औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध तर्क दे सकता था और पूरे भारत को एक नई साझा भाषा में एकजुट कर सकता था। इस शिक्षित वर्ग ने ही बाद में राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य आंदोलनों को नेतृत्व प्रदान किया।

294. (C) महिला शिक्षा को बढ़ावा देना और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध लड़ना।
सावित्रीबाई फुले आधुनिक भारत की प्रथम महिला शिक्षिका और एक क्रांतिकारी समाज सुधारक थीं। उन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर उस दौर में महिलाओं और दलितों की शिक्षा हेतु संघर्ष किया जब यह समाज में पूर्णतः प्रतिबंधित था। उन्होंने न केवल स्कूल खोले, बल्कि स्वयं अपमान सहकर भी अध्यापन किया। उनका मुख्य लक्ष्य शिक्षा के माध्यम से समाज के वंचित वर्गों और महिलाओं को मानसिक गुलामी से मुक्त करना था। उनका जीवन आज भी समता और नारी सशक्तिकरण हेतु लड़ने वाले हर व्यक्ति हेतु एक महान और शाश्वत प्रेरणा है।

295. (C) पूरे भारत में स्वतंत्र किसान स्वामियों के एक विशाल और समृद्ध वर्ग का उदय।
ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का परिणाम कभी भी भारतीय किसानों की समृद्धि नहीं रहा। इसके विपरीत, अंग्रेजों द्वारा थोपी गई कठोर राजस्व प्रणालियों और कृषि के जबरन वाणिज्यीकरण ने किसानों को और अधिक निर्धन, भूमिहीन और असहाय बना दिया। सरकार की अत्यधिक मांग और साहूकारों के शोषण के कारण अधिकांश किसान केवल ऋण के बोझ तले दब गए। समृद्ध किसान वर्ग का उदय तो दूर की बात, ग्रामीण भारत में व्यापक दरिद्रता और भुखमरी का दौर प्रारंभ हो गया था। अतः यह कहना कि ब्रिटिश नीतियों से किसानों का भला हुआ, ऐतिहासिक सत्य के विपरीत है।

296. (B) लॉर्ड वेलेज़ली
लॉर्ड वेलेज़ली को सहायक संधि प्रणाली का सबसे बड़ा प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने इस चतुर कूटनीतिक नीति का उपयोग भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार हेतु एक शक्तिशाली हथियार के रूप में किया। इस संधि के माध्यम से उन्होंने हैदराबाद, मैसूर, अवध और मराठा पेशवा जैसे कई महत्वपूर्ण राज्यों को ब्रिटिश संरक्षण में ले लिया, जिससे वे सैन्य और राजनीतिक रूप से पूरी तरह अंग्रेजों पर निर्भर हो गए। वेलेज़ली की इस आक्रामक और चतुर विस्तारवादी नीति ने भारत के एक विशाल भू-भाग पर बिना किसी बड़े युद्ध के ब्रिटिश प्रभुत्व स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

297. (C) सामान्य लोग, किसान और आदिवासी।
निम्नवर्गीय या सबॉल्टरन इतिहासलेखन मुख्य रूप से समाज के उन उपेक्षित समूहों के संघर्षों पर ध्यान केंद्रित करता है जिन्हें पारंपरिक इतिहास में कभी उचित स्थान नहीं मिला। इस स्कूल के इतिहासकारों का मानना है कि इतिहास की वास्तविक शक्ति सामान्य जन के प्रतिरोध में निहित है। वे किसानों के स्थानीय विद्रोहों, आदिवासियों के जल-जंगल-जमीन के संघर्षों और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की चेतना का गहरा अध्ययन करते हैं। उनका उद्देश्य उन आवाजों को मुख्यधारा के इतिहास में लाना है जिन्हें कुलीन और राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने अक्सर बड़े नेताओं के साये में भुला दिया था।

298. (B) ब्रिटिश सत्ता और आर्थिक हितों का संरक्षण और सुदृढ़ीकरण।
ईस्ट इंडिया कंपनी और बाद में ब्रिटिश क्राउन के अधीन प्रशासन का एक ही अटल लक्ष्य था—भारत को ब्रिटिश साम्राज्य के आर्थिक लाभ हेतु बनाए रखना। उनकी हर नीति, चाहे वह रेलवे का विकास हो, कानून का संहिताकरण हो या प्रशासनिक सुधार, अंततः इसी उद्देश्य से संचालित थी कि भारत से राजस्व का प्रवाह सुचारु रहे और ब्रिटिश उत्पादों हेतु बाजार सुरक्षित रहे। यद्यपि उन्होंने एक व्यवस्थित प्रशासनिक ढांचा प्रदान किया, लेकिन उसका वास्तविक स्वामी हमेशा ब्रिटिश हित ही रहा। भारतीयों का कल्याण तो केवल संयोगवश या साम्राज्य की स्थिरता बनाए रखने हेतु किया जाता था।

299. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ब्रिटिश शासन द्वारा लागू किए गए भू-राजस्व बंदोबस्त भारतीय कृषि हेतु एक बहुत बड़ा आघात थे। अंग्रेजों ने लगान की दरें अत्यंत ऊँची रखीं और उन्हें हर हाल में नकद में चुकाने की कड़ी शर्त लगा दी। फसल बर्बाद होने पर भी सरकार कोई रियायत नहीं देती थी, जिससे किसान साहूकारों के चंगुल में फँसने हेतु पूर्णतः विवश हो गए। साहूकार ऊँची ब्याज दरों के माध्यम से किसानों का शोषण करते थे और उनकी जमीनों पर कब्जा कर लेते थे। इस कठोर व्यवस्था ने ग्रामीण भारत के पारंपरिक सामाजिक ताने-बाने को विनष्ट कर उसे ऋण के गर्त में धकेल दिया।

300. (B) अपने अधिकारों और सामाजिक स्थिति के बारे में महिलाओं के बीच बढ़ती चेतना।
आधुनिक भारत में महिला संगठनों का उदय इस बात का स्पष्ट संकेत था कि भारतीय महिलाएं अब केवल समाज सुधारकों की अपील का विषय नहीं रही थीं, बल्कि वे स्वयं अपनी मुक्ति की लड़ाई की सूत्रधार बन गई थीं। 'भारत स्त्री महामंडल' और 'महिला भारतीय संघ' जैसे संगठनों के माध्यम से उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, मताधिकार और विवाह के कानूनों में सुधार हेतु संगठित होकर आवाज उठाई। इन प्रयासों ने सिद्ध कर दिया कि महिलाएं समाज के हर क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाने हेतु तैयार हैं और वे राष्ट्र के लोकतांत्रिक भविष्य की एक अनिवार्य एवं सशक्त शक्ति हैं।

64. तात्या टोपे अपना स्वयं का छापामार अभियान प्रारंभ करने से पूर्व 1857 के विद्रोह के दौरान किस नेता के सेनापति थे?
(A) रानी लक्ष्मीबाई
(B) नाना साहब
(C) बेगम हजरत महल
(D) कुंवर सिंह

65. असम में अहोम विद्रोह किस युद्ध के पश्चात असम से हटने के वचन को पूर्ण करने में ब्रिटिश विफलता के विरुद्ध एक विरोध था?
(A) द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध
(B) प्रथम आंग्ल-बर्मी युद्ध
(C) प्लासी का युद्ध
(D) तृतीय आंग्ल-सिख युद्ध

66. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): बारदोली सत्याग्रह भारतीय किसान आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।
कारण (R): इसकी सफलता ने सरदार वल्लभभाई पटेल को राष्ट्रीय नेतृत्व के पद पर प्रतिष्ठित किया और अहिंसक जन विरोध की शक्ति का प्रदर्शन किया।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

67. निम्नलिखित में से किसे 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस के विभाजन के कारण के रूप में पहचाना जाता है?
(A) स्वदेशी आंदोलन के तरीकों पर असहमति।
(B) कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव को लेकर संघर्ष।
(C) (A) और (B) दोनों।
(D) विधान परिषदों में भागीदारी पर असहमति।

68. क्रांतिकारी संगठन 'अभिनव भारत' की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) भगत सिंह
(B) रास बिहारी बोस
(C) अरबिंदो घोष
(D) वी.डी. सावरकर और उनके भाई

69. गांधी के नेतृत्व वाले आंदोलनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. असहयोग आंदोलन का उद्देश्य अहिंसक साधनों के माध्यम से स्वराज प्राप्त करना था।
2. सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रारंभ नमक कानून के उल्लंघन के साथ हुआ था।
3. भारत छोड़ो आंदोलन "करो या मरो" के नारे से चिह्नित था।
उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

70. भारत में वामपंथी विचारधारा के विकास में निम्नलिखित सभी कारकों का प्रभाव था, सिवाय:
(A) रूसी क्रांति
(B) ब्रिटिश सरकार की औद्योगिक नीति
(C) श्रमिक संघवाद का उदय
(D) गांधीवादी रणनीतियों से मोहभंग

71. पाकिस्तान की मांग को औपचारिक रूप से मुस्लिम लीग ने किस अधिवेशन में स्वीकार किया था?
(A) ढाका, 1906
(B) लखनऊ, 1916
(C) कराची, 1943
(D) लाहौर, 1940

72. भारत की संविधान सभा के प्रमुख कार्यों में से एक था:
(A) स्वतंत्र भारत के लिए संविधान का मसौदा तैयार करना।
(B) प्रथम आम चुनाव का संचालन करना।
(C) अंग्रेजों के साथ सत्ता हस्तांतरण पर बातचीत करना।
(D) रियासतों के एकीकरण की देखरेख करना।

73. गुटनिरपेक्षता की भारतीय विदेश नीति मुख्य रूप से किसके द्वारा तैयार की गई थी?
(A) सरदार वल्लभभाई पटेल
(B) डॉ. बी.आर. अंबेडकर
(C) जवाहरलाल नेहरू
(D) लाल बहादुर शास्त्री

74. बखत खान, जो 1857 में विद्रोही सेना के एक प्रमुख सैन्य नेता थे, के पास किसकी सेना में सूबेदार के रूप में पूर्व अनुभव था?
(A) ईस्ट इंडिया कंपनी
(B) मुगल सम्राट
(C) मराठा
(D) रणजीत सिंह

75. 1857 के विद्रोह की प्रकृति ऐतिहासिक विमर्श का विषय है। कौन सा दृष्टिकोण बताता है कि यह केवल एक 'सिपाही विद्रोह' था?
(A) राष्ट्रवादी इतिहासकारों का दृष्टिकोण
(B) मार्क्सवादी इतिहासकारों का दृष्टिकोण
(C) सबाल्टर्न (निम्नवर्गीय) इतिहासकारों का दृष्टिकोण
(D) प्रारंभिक ब्रिटिश इतिहासकारों का दृष्टिकोण

76. वासुदेव बलवंत फड़के के नेतृत्व में विद्रोह महत्वपूर्ण है क्योंकि इसे कुछ इतिहासकारों द्वारा किस रूप में माना जाता है:
(A) पश्चिमी भारत में पहला बड़ा आदिवासी विद्रोह।

(D) मुगल वंश को पूर्ण शक्ति के साथ पुनर्स्थापित किया गया।

100. अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब ने 1857 के विद्रोह का नेतृत्व कहाँ से किया था?
(A) झांसी
(B) दिल्ली
(C) ग्वालियर
(D) कानपुर

101. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): 1831-32 का कोल विद्रोह बाहरी लोगों के विरुद्ध एक बड़ा आदिवासी विद्रोह था।
कारण (R): इसका तात्कालिक कारण आदिवासी भूमि को गैर-आदिवासी किसानों और साहूकारों को हस्तांतरित करना और एक नई न्यायिक एवं राजस्व प्रणाली लागू करना था।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

102. नील विद्रोह को किस समूह से महत्वपूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ, जिसने किसानों की दयनीय स्थिति को प्रचारित करने में सहायता की?
(A) ब्रिटिश जमींदार
(B) भारतीय शिक्षित मध्यम वर्ग और प्रेस
(C) लंदन में ब्रिटिश सरकार
(D) फ्रांसीसी नील बागान मालिक

103. निम्नलिखित में से कौन सा 'उग्रवादी' राष्ट्रवादियों द्वारा प्रयुक्त पद्धति नहीं थी?
(A) ब्रिटिश वस्तुओं और संस्थाओं का बहिष्कार
(B) स्वदेशी या देशज उत्पादों को बढ़ावा देना
(C) राष्ट्रीय विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना
(D) ब्रिटिश संसद को याचिकाएं और स्मरण पत्र भेजना

104. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. कांग्रेस का सूरत विभाजन
2. मुस्लिम लीग की स्थापना
3. बंगाल का विभाजन
4. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना
निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम दर्शाता है?
(A) 4, 3, 2, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 2, 3, 1
(D) 3, 4, 1, 2

105. गदर पार्टी के नाम में 'गदर' का शाब्दिक अर्थ है:
(A) स्वतंत्रता
(B) एकता
(C) विद्रोह
(D) बलिदान

106. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में वामपंथी संगठनों का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय मुक्ति के संघर्ष को किसके संघर्ष के साथ जोड़ना था:
(A) किसानों और श्रमिकों की आर्थिक मुक्ति।
(B) प्राचीन परंपराओं का पुनरुद्धार।
(C) एक धर्मतंत्रीय (थियोक्रेटिक) राज्य की स्थापना।
(D) रियासतों का संरक्षण।

107. विभाजन के तत्काल पश्चात 'कश्मीर समस्या' के संघर्ष में परिवर्तित होने का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित जनमत संग्रह।
(B) भारत द्वारा लगाई गई आर्थिक नाकेबंदी।
(C) लद्दाख में बौद्ध जनसंख्या द्वारा विद्रोह।
(D) पाकिस्तान समर्थित कबीलाई हमलावरों द्वारा राज्य पर आक्रमण।

108. राष्ट्रवाद का सामाजिक आधार प्रारंभ में संकीर्ण था, लेकिन समय के साथ इसका विस्तार हुआ। इस विस्तार के लिए कौन सा कारक सबसे कम उत्तरदायी था?
(A) सभी वर्गों को प्रभावित करने वाली ब्रिटिश नीतियों के कारण उत्पन्न आर्थिक कठिनाइयाँ।
(B) शासन में भारतीय भागीदारी को बढ़ावा देने के ब्रिटिश सरकार के प्रयास।
(C) तिलक जैसे नेताओं द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं और धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग।
(D) गांधीवादी युग के दौरान अपनाई गई जन लामबंदी की रणनीतियाँ।

109. अपने बाद के चरण में कूका विद्रोह का स्वरूप क्या था?
(A) यह पूर्णतः एक सामाजिक सुधार आंदोलन बन गया।
(B) यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ पूर्णतः समाहित हो गया।
(C) यह ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने और सिख संप्रभुता पुनर्स्थापित करने के उद्देश्य से एक राजनीतिक आंदोलन में परिवर्तित हो गया।
(D) यह अपने संस्थापक की मृत्यु के पश्चात बिखर गया।

110. निम्नलिखित में से कौन सा पाबना आंदोलन का सबसे उपयुक्त वर्णन है?
(A) जमींदारों और अंग्रेजों दोनों को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से एक हिंसक विद्रोह।
(B) इस्लाम को शुद्ध करने के लिए एक धार्मिक आंदोलन।
(C) वन अधिकारों के लिए एक आदिवासी विद्रोह।
(D) जमींदारों की अवैध मांगों के विरुद्ध विधिक और काफी हद तक अहिंसक संघर्ष।

P. नील विद्रोह
Q. पाबना आंदोलन
R. चंपारण सत्याग्रह
S. खेड़ा सत्याग्रह

सूची II: (प्रमुख विशेषता)
1. तिनकठिया पद्धति के विरुद्ध विरोध
2. फसल नष्ट होने के कारण बढ़े हुए राजस्व के भुगतान से इनकार
3. बलपूर्वक नील की खेती के विरुद्ध विद्रोह
4. विधिक समाधान की मांग करते हुए जमींदारी उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

90. उदारवादियों के प्रति उग्रवादियों के विरोध का मुख्य कारण उदारवादियों की कौन सी नीति थी:
(A) 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' या रियायतों के लिए प्रार्थना करने की नीति।
(B) सामाजिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) बंगाल के विभाजन का समर्थन करना।
(D) जन भागीदारी में विश्वास का अभाव।

91. चंद्रशेखर आज़ाद निम्नलिखित में से किस क्रांतिकारी गतिविधि में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित नहीं थे?
(A) काकोरी षड्यंत्र
(B) लाला लाजपत राय की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए सांडर्स की हत्या
(C) वायसराय की ट्रेन को उड़ाने का प्रयास
(D) चटगाँव शस्त्रागार छापा

92. "करो या मरो" का आह्वान महात्मा गांधी ने किस जन आंदोलन के दौरान दिया था?
(A) असहयोग आंदोलन
(B) भारत छोड़ो आंदोलन
(C) सविनय अवज्ञा आंदोलन
(D) खिलाफत आंदोलन

93. सुभाष चंद्र बोस के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे दो बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे।
2. उन्होंने आज़ाद हिन्द की अनंतिम सरकार की स्थापना की।
3. उन्होंने अंग्रेजों से लड़ने के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान धुरी शक्तियों (एक्सिस पावर्स) की सहायता मांगी थी।

उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

94. कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (सी.एस.पी.) का गठन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर उन नेताओं द्वारा किया गया था जिन्होंने वकालत की थी:
(A) उदारवादियों के संवैधानिक तरीकों की ओर वापसी।
(B) अधिराज्य के दर्जे की तत्काल स्वीकृति।
(C) श्रमिक वर्ग के लिए एक पृथक निर्वाचक मंडल।
(D) राष्ट्रवाद और समाजवादी आदर्शों का सम्मिश्रण।

95. द्वि-राष्ट्र सिद्धांत, जो भारत के विभाजन का आधार बना, ने क्या प्रतिपादित किया था:
(A) हिंदू और मुस्लिम दो अलग राष्ट्र थे जो एक देश में साथ नहीं रह सकते थे।
(B) भारत एक बहुराष्ट्रीय राज्य था जिसे एक संघ बनना चाहिए था।
(C) भारत को भाषाई आधार पर विभाजित किया जाना चाहिए।
(D) भारत और ब्रिटेन दो अलग राष्ट्र थे।

96. भारतीय संविधान के निर्माण की प्रक्रिया में लगभग कितना समय लगा?
(A) एक वर्ष
(B) दो वर्ष, ग्यारह महीने और अठारह दिन
(C) छह महीने
(D) पांच वर्ष

97. पोट्टी श्रीरामुलु का आमरण अनशन किस भाषाई राज्य के निर्माण के लिए एक प्रमुख कारक था?
(A) कर्नाटक
(B) आंध्र प्रदेश
(C) गुजरात
(D) महाराष्ट्र

98. पंचशील या शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांत, जो भारत की प्रारंभिक विदेश नीति के आधार थे, प्रथम बार औपचारिक रूप से किस देश के साथ एक समझौते में घोषित किए गए थे?
(A) चीन
(B) सोवियत संघ
(C) संयुक्त राज्य अमेरिका
(D) पाकिस्तान

99. निम्नलिखित में से कौन सा 1857 की क्रांति का परिणाम था?
(A) सेना में भारतीय सैनिकों के अनुपात में वृद्धि की गई।
(B) अंग्रेजों ने भारतीयों के सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों में अधिक हस्तक्षेप प्रारंभ कर दिया।
(C) अंग्रेजों द्वारा निर्दयी विजय और विस्तार की नीति का परित्याग कर दिया गया।

(D) सविनय अवज्ञा आंदोलन

167. वामपंथियों और गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस के बीच वैचारिक भिन्नता का एक प्रमुख बिंदु किस अवधारणा पर था:
(A) पूर्ण स्वतंत्रता।
(B) अहिंसा का प्रयोग।
(C) ब्रिटिश शासन का विरोध।
(D) वर्ग संघर्ष।

168. 1932 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री रामसे मैकडोनाल्ड द्वारा घोषित सांप्रदायिक पंचाट (कम्युनल अवार्ड) में क्या प्रावधान था:
(A) न केवल मुस्लिमों के लिए बल्कि दलित वर्गों और अन्य अल्पसंख्यकों के लिए भी पृथक निर्वाचक मंडल।
(B) भारत के लिए अधिराज्य का दर्जा।
(C) एक संविधान सभा का गठन।
(D) पंजाब और बंगाल का विभाजन।

169. 1947-1964 की अवधि के संदर्भ में 'कश्मीर समस्या' क्या थी?
(A) कश्मीर के भीतर भाषाई पुनर्गठन के लिए एक आंदोलन।
(B) औद्योगिक अल्पविकास की समस्या।
(C) जम्मू और कश्मीर रियासत के भारत में विलय को लेकर विवाद, जिससे पाकिस्तान के साथ संघर्ष हुआ।
(D) कश्मीर और चीन के बीच सीमा विवाद।

170. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): भारतीय राष्ट्रवाद का उदय एक एकल, एकरूपी प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि इसमें विचारों की कई और प्रायः परस्पर विरोधी धाराएं सम्मिलित थीं।
कारण (R): उदारवादी संविधानवादियों, उग्रवादी राष्ट्रवादियों, क्रांतिकारियों और वामपंथियों के हित और विचारधाराएं सदैव एक समान नहीं थीं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

171. 1857 के विद्रोह की विफलता का एक प्रमुख कारण यह था कि:
(A) विद्रोहियों के पास लड़ने का कोई कारण नहीं था।
(B) ब्रिटिश सेना की संख्या बहुत कम थी।
(C) मौसम की स्थिति विद्रोहियों के प्रतिकूल थी।
(D) कई भारतीय शासक और बड़े क्षेत्र तटस्थ रहे या उन्होंने अंग्रेजों का समर्थन किया।

172. कोल जनजाति, जिसने 1831-32 में विद्रोह किया था, मुख्य रूप से किस क्षेत्र में स्थित थी?
(A) मालाबार
(B) छोटा नागपुर
(C) असम
(D) राजस्थान

173. बारदोली सत्याग्रह स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण घटना थी क्योंकि:
(A) यह प्रथम अवसर था जब किसानों ने कर देने से मना कर दिया था।
(B) इससे तत्काल स्वतंत्रता प्राप्त हो गई।
(C) इसने सिद्ध किया कि संगठित अहिंसक जन विरोध सरकार को रियायत देने के लिए विवश कर सकता है।
(D) इसका नेतृत्व स्वयं महात्मा गांधी ने किया था।

174. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (नारा/शब्द)
P. स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है
Q. करो या मरो
R. निष्क्रिय प्रतिरोध
S. गदर
सूची II: (संबद्ध नेता/समूह)
1. महात्मा गांधी
2. अरबिंदो घोष
3. बाल गंगाधर तिलक
4. यू.एस.ए. में क्रांतिकारी
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

175. भारत और विदेशों में क्रांतिकारियों की विचारधारा और गतिविधियों में निम्नलिखित सभी विशेषताएं थीं, सिवाय:
(A) संवैधानिक आंदोलन और याचिका देने पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) सशस्त्र संघर्ष की प्रभावकारिता में विश्वास।
(C) देशभक्ति की प्रबल भावना और आत्म-बलिदान की इच्छा।
(D) गुप्त संगठनों और नेटवर्क की स्थापना।

176. निम्नलिखित में से कौन सा आंदोलन गांधी के नेतृत्व में नहीं था?
(A) चंपारण सत्याग्रह
(B) स्वदेशी आंदोलन
(C) असहयोग आंदोलन
(D) सविनय अवज्ञा आंदोलन

177. भारत में वामपंथी विचारधारा का विकास किसका परिणाम था:
(A) गांधीवादी तरीकों की सफलता।
(B) रूसी क्रांति जैसी वैश्विक घटनाओं का प्रभाव और श्रमिकों एवं किसानों के मध्य बढ़ता असंतोष।
(C) साम्यवाद को प्रोत्साहित करने की ब्रिटिश नीति।

111. कांग्रेस में उदारवादियों और उग्रवादियों के बीच का विभाजन किस अधिवेशन में अस्थायी रूप से समाप्त हो गया था?
(A) लखनऊ, 1916
(B) सूरत, 1907
(C) लाहौर, 1929
(D) कलकत्ता, 1906

112. एक क्रांतिकारी और उस मामले/घटना की सही जोड़ी की पहचान कीजिए जिससे वे प्रसिद्ध रूप से संबद्ध हैं।
(A) भगत सिंह - अलीपुर बम कांड
(B) वी.डी. सावरकर - नासिक षड्यंत्र मामला
(C) सूर्य सेन - काकोरी षड्यंत्र
(D) राम प्रसाद बिस्मिल - चटगाँव शस्त्रागार छापा

113. भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह मुख्य रूप से जापानियों द्वारा बंदी बनाए गए भारतीय युद्धबंदियों से निर्मित थी।
2. इसमें 'रानी झांसी रेजिमेंट' नाम की एक महिला रेजिमेंट थी।
3. यह मुख्य भूमि भारत के एक बड़े भाग को ब्रिटिश नियंत्रण से मुक्त कराने में सफल रही।

उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

114. भारत में सांप्रदायिकता का उदय एक जटिल परिघटना थी। निम्नलिखित में से कौन सा एक योगदान देने वाला कारक नहीं था?
(A) अंतर-धार्मिक सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के निरंतर प्रयास।
(B) मुस्लिम समुदाय के एक बड़े भाग का आर्थिक और शैक्षिक पिछड़ापन।
(C) कुछ नेताओं द्वारा राष्ट्रवादी राजनीति में धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग।
(D) अंग्रेजों की 'विभाजन करो और शासन करो' की नीति और पृथक निर्वाचक मंडल।

115. संविधान सभा में 'उद्देश्य प्रस्ताव' को अपनाना एक महत्वपूर्ण चरण था क्योंकि इसने:
(A) केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों के विभाजन को अंतिम रूप दिया।
(B) डॉ. राजेंद्र प्रसाद को स्थायी अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किया।
(C) संविधान निर्माण के लिए दर्शन और मार्गदर्शक सिद्धांतों को रेखांकित किया।
(D) आधिकारिक रूप से भारत की स्वतंत्रता की घोषणा की।

116. प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56) में किस क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई थी?
(A) भारी उद्योग
(B) सेवा क्षेत्र और सूचना प्रौद्योगिकी
(C) रक्षा उत्पादन
(D) सिंचाई और बिजली परियोजनाओं सहित कृषि

117. 1857 के किस नायक को फैजाबाद में विद्रोह का नेतृत्व करने का श्रेय दिया जाता है और जिन्हें अंग्रेजों द्वारा एक बड़ा संकट माना जाता था?
(A) बखत खान
(B) नाना साहब
(C) मौलवी अहमद उल्ला
(D) तात्या टोपे

118. नागाओं का विद्रोह उनके क्षेत्र में ब्रिटिश प्रवेश के विरुद्ध एक लंबा प्रतिरोध था। 20वीं शताब्दी में इस प्रतिरोध के बाद के चरण से जुड़ी एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व थीं:
(A) टिकेंद्रजीत सिंह
(B) रानी गैडिनल्यू
(C) यू तिरोत सिंह
(D) गोमधर कोंवर

119. खेड़ा सत्याग्रह का एक प्राथमिक कारण फसल नष्ट होने के बावजूद अधिकारियों द्वारा राजस्व छूट देने से इनकार करना था, जिसने निम्नलिखित में से किसका उल्लंघन किया था:
(A) नमक कानून
(B) रौलट एक्ट
(C) वन अधिनियम
(D) अकाल संहिता

120. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (विचारधारा/समूह)
P. उदारवादी राष्ट्रवाद
Q. उग्रवादी राष्ट्रवाद
R. क्रांतिकारी राष्ट्रवाद
S. वामपंथी राजनीति (समाजवादी)

सूची II: (नेता/प्रस्तावक)
1. भगत सिंह
2. एम.एन. राय
3. गोपाल कृष्ण गोखले
4. बाल गंगाधर तिलक

कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

121. लंदन, पेरिस और सैन फ्रांसिस्को जैसे स्थानों पर विदेशों में क्रांतिकारियों की गतिविधियाँ महत्वपूर्ण थीं क्योंकि उन्होंने:

(B) भारत में क्रांतिकारी आंदोलन का अग्रदूत।
(C) मराठा शासन पुनर्स्थापित करने का अंतिम प्रयास।
(D) मिशनरियों के विरुद्ध विशुद्ध रूप से धार्मिक आंदोलन।

77. 'तिनकठिया' पद्धति, जो चंपारण सत्याग्रह का मुख्य विषय थी, का अर्थ था कि किसानों को कितनी भूमि पर नील की खेती करनी पड़ती थी?
(A) उनकी संपूर्ण भूमि पर।
(B) उनकी भूमि के 3/10 भाग पर।
(C) उनकी भूमि के 3/20 भाग पर।
(D) उनकी आधी भूमि पर।

78. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी नेतृत्व के बारे में सत्य कथन की पहचान कीजिए।
(A) उन्होंने प्रारंभ से ही पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की थी।
(B) उन्होंने बहिष्कार और निष्क्रिय प्रतिरोध के तरीकों का प्रयोग किया।
(C) वे मुख्य रूप से ग्रामीण किसानों के मध्य से आए थे।
(D) उन्हें ब्रिटिश न्यायप्रियता और निष्पक्षता में अटूट विश्वास था।

79. "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा" का नारा प्रसिद्ध रूप से किससे संबंधित है:
(A) बाल गंगाधर तिलक
(B) लाला लाजपत राय
(C) महात्मा गांधी
(D) अरबिंदो घोष

80. गदर पार्टी जैसे विदेशों में सक्रिय क्रांतिकारियों का उद्देश्य क्या था?
(A) जनमत तैयार करने के माध्यम से भारत के लिए अधिराज्य का दर्जा प्राप्त करना।
(B) ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए भारतीय सैनिकों और प्रवासियों के बीच विद्रोह भड़काना।
(C) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को वित्तीय सहायता प्रदान करना।
(D) यूरोप और अमेरिका में समाजवादी समुदायों की स्थापना करना।

81. किस आंदोलन में गांधी ने भारत में पहली बार सामूहिक भूख हड़ताल को एक शस्त्र के रूप में प्रयोग किया था?
(A) चंपारण सत्याग्रह
(B) अहमदाबाद मिल हड़ताल
(C) खेड़ा सत्याग्रह
(D) असहयोग आंदोलन

82. 'उलगुलान' शब्द निम्नलिखित में से किस विद्रोह से संबंधित है?
(A) मुंडा विद्रोह
(B) संथाल विद्रोह
(C) कोल विद्रोह
(D) नील विद्रोह

83. एक प्रमुख वामपंथी संगठन, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का वैचारिक आधार क्या था?
(A) फेबियन समाजवाद
(B) अराजकतावाद
(C) मार्क्सवाद-लेनिनवाद
(D) गांधीवादी सर्वोदय

84. अंग्रेजों द्वारा मुस्लिमों के लिए 'पृथक निर्वाचक मंडल' का प्रारंभ किस अधिनियम की एक प्रमुख विशेषता थी?
(A) भारत सरकार अधिनियम, 1935
(B) भारत सरकार अधिनियम, 1919
(C) रौलट एक्ट, 1919
(D) भारतीय परिषद अधिनियम, 1909 (मॉर्ले-मिंटो सुधार)

85. किस राज्य के भारत में एकीकरण में 'ऑपरेशन पोलो' नामक पुलिस कार्रवाई सम्मिलित थी?
(A) कश्मीर
(B) जूनागढ़
(C) हैदराबाद
(D) त्रावणकोर

86. ब्रिटिश शासन का एक महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव जिसने राष्ट्रवाद को गति दी, वह था:
(A) ब्रिटेन के समान भारत का तीव्र औद्योगीकरण।
(B) भारत का वि-औद्योगीकरण और पारंपरिक कारीगरों एवं शिल्पकारों का विनाश।
(C) व्यापक सामाजिक सुरक्षा के साथ एक कल्याणकारी राज्य का निर्माण।
(D) भूमि और संसाधनों का समान वितरण।

87. बैरकपुर के एक सिपाही मंगल पांडे ने 1857 में विद्रोह कर दिया क्योंकि:
(A) उन्हें पदोन्नति देने से मना कर दिया गया था।
(B) वे अल्प वेतन और प्रतिकूल सेवा शर्तों का विरोध कर रहे थे।
(C) उन्हें समुद्र पार युद्ध में लड़ने का आदेश दिया गया था।
(D) उन्होंने नई एनफील्ड राइफल के कारतूसों का प्रयोग करने से इनकार कर दिया था।

88. विद्रोह और उसके प्राथमिक क्षेत्र की अशुद्ध जोड़ी की पहचान कीजिए।
(A) नागा विद्रोह - बंगाल
(B) कूका विद्रोह - पंजाब
(C) अहोम विद्रोह - असम
(D) भील विद्रोह - महाराष्ट्र

89. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (किसान आंदोलन)

(D) आई.एन.ए. के लिए व्यापक सहानुभूति उत्पन्न करना और विविध राजनीतिक समूहों को एकजुट करना।

133. भारत में वामपंथी राजनीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) की औपचारिक स्थापना 1925 में कानपुर में हुई थी।
2. वामपंथी नेताओं ने प्रायः श्रमिकों और किसानों के विषयों को पर्याप्त रूप से संबोधित न करने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की आलोचना की।
3. मेरठ षड्यंत्र मामला कम्युनिस्ट और श्रमिक संघ नेताओं पर सरकार की एक बड़ी दमनकारी कार्रवाई थी।

उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

134. निम्नलिखित में से कौन आधुनिक भारत में एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में सांप्रदायिकता की उत्पत्ति की सबसे अच्छी व्याख्या करता है?

(A) यह धार्मिक भिन्नताओं का एक अपरिहार्य परिणाम था।
(B) यह एक आधुनिक विचारधारा थी जिसने राजनीतिक लामबंदी और सत्ता के संघर्ष के लिए धार्मिक भिन्नताओं को एक साधन के रूप में प्रयोग किया।
(C) यह विशेष रूप से मुस्लिम लीग की देन थी।
(D) यह पूर्णतः एक ग्रामीण परिघटना थी जिसे शहरी अभिजात वर्ग का कोई समर्थन नहीं मिला।

135. भारतीय राज्यों के एकीकरण में सबसे विवादास्पद विषयों में से एक जूनागढ़ का मामला था, जिसे अंततः किसके द्वारा हल किया गया:

(A) भारत द्वारा सैन्य आक्रमण।
(B) संयुक्त राष्ट्र द्वारा एक निर्णय।
(C) नवाब द्वारा स्वेच्छा से विलय पत्र पर हस्ताक्षर करना।
(D) एक जनमत संग्रह जिसमें जनता ने भारत में सम्मिलित होने के पक्ष में मतदान किया।

136. भारत की प्रारंभिक विदेश नीति का अंग 'पंचशील' की नीति में निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांत सम्मिलित नहीं है?

(A) महाशक्तियों का सामना करने के लिए सैन्य गठबंधन का गठन।
(B) एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान।
(C) पारस्परिक अनाक्रमण।
(D) एक-दूसरे के आंतरिक विषयों में पारस्परिक अहस्तक्षेप।

137. निम्नलिखित में से किसे 1857 की क्रांति का कारण नहीं माना जाता है?

(A) व्यपगत का सिद्धांत (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स) की नीति।
(B) ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ।
(C) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन।
(D) भारत का आर्थिक शोषण।

138. संथाल विद्रोह किसके विरुद्ध निर्देशित था:

(A) स्थानीय जमींदार और साहूकार (दिकु) तथा उनका समर्थन करने वाला ब्रिटिश प्रशासन।
(B) विशेष रूप से ब्रिटिश शासन।
(C) केवल ईसाई मिशनरी।
(D) मुगल अवशेष।

139. कांग्रेस के उदारवादी नेताओं की विचारधारा किससे प्रभावित थी?

(A) मार्क्सवादी साहित्य।
(B) प्राचीन भारतीय राजनीतिक परंपराएं।
(C) रूसी क्रांति की सफलता।
(D) यूरोपीय उदारवादी और लोकतांत्रिक विचार।

140. भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष हेतु निम्नलिखित में से किस संगठन की स्थापना विदेश में की गई थी?

(A) अनुशीलन समिति
(B) गदर पार्टी
(C) अभिनव भारत
(D) हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन

141. स्वतंत्रता संग्राम में गांधी के नेतृत्व की विशेषता थी:

(A) अंतिम विकल्प के रूप में हिंसा का प्रयोग।
(B) शहरी शिक्षित वर्ग पर विशेष ध्यान।
(C) संघर्ष-विराम-संघर्ष की रणनीति और जन लामबंदी।
(D) अंग्रेजों के साथ वार्ता को पूर्णतः अस्वीकार करना।

142. स्वतंत्रता आंदोलन में वामपंथियों की एक महत्वपूर्ण भूमिका किस पर उनके बल देने में थी:

(A) अधिराज्य का दर्जा और क्रमिक सुधार।
(B) एक संवैधानिक राजतंत्र।
(C) पारंपरिक ग्राम पंचायत व्यवस्था का पुनरुद्धार।
(D) एक क्रांतिकारी सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम के साथ पूर्ण और तत्काल स्वतंत्रता।

143. संविधान सभा का गठन किसके प्रस्तावों पर आधारित था:

(A) कैबिनेट मिशन योजना
(B) क्रिप्स मिशन
(C) साइमन कमीशन
(D) वेवेल योजना

144. झलकारीबाई, जो 1857 के विद्रोह में एक वीर हस्ती थीं, किसकी सेना में सैनिक थीं?

(A) नाना साहब
(B) रानी लक्ष्मीबाई
(C) बेगम हजरत महल
(D) कुंवर सिंह

145. बिरसा मुंडा के नेतृत्व में मुंडा विद्रोह का उद्देश्य क्या स्थापित करना था:
(A) ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर एक पृथक मुंडा राज्य।
(B) अंग्रेजों और दिकुओं (बाहरी लोगों) को निष्कासित कर 'मुंडा राज'।
(C) केवल मुंडा समाज के भीतर सामाजिक सुधार।
(D) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ गठबंधन।

146. किस घटना के कारण रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी 'नाइटहुड' की उपाधि त्याग दी थी?
(A) जलियांवाला बाग हत्याकांड
(B) बंगाल का विभाजन
(C) भगत सिंह को फांसी
(D) चौरी-चौरा की घटना

147. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (घटना)
P. खेड़ा सत्याग्रह
Q. सूरत विभाजन
R. मुस्लिम लीग की स्थापना
S. चंपारण सत्याग्रह
सूची II: (वर्ष)
1. 1906
2. 1907
3. 1917
4. 1918
कूट:
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

148. कानपुर षड्यंत्र मामला (1924) अंग्रेजों द्वारा किसके विरुद्ध प्रारंभ किया गया अभियोग था:
(A) गदर पार्टी के सदस्य
(B) काकोरी डकैती में सम्मिलित क्रांतिकारी
(C) स्वदेशी आंदोलन के नेता
(D) एस.ए. डांगे और एम.एन. राय जैसे नव-उभरते कम्युनिस्ट

149. वेवेल योजना और शिमला सम्मेलन (1945) मुख्य रूप से किसके कारण असफल रहे:
(A) कांग्रेस की तत्काल स्वतंत्रता की मांग।
(B) सत्ता हस्तांतरण से अंग्रेजों का इनकार।
(C) कार्यकारी परिषद में प्रतिनिधित्व के विषय पर मुस्लिम लीग की हठधर्मिता।
(D) भारत छोड़ो आंदोलन का प्रारंभ होना।

150. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): प्रथम पंचवर्षीय योजना ने कृषि विकास पर ध्यान केंद्रित किया।
कारण (R): स्वतंत्रता के समय, भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि आधारित थी और देश एक गंभीर खाद्य संकट का सामना कर रहा था।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

151. निम्नलिखित में से किन कारकों ने 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में उग्रवादी राष्ट्रवाद के उदय में योगदान दिया?
(A) राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने में उदारवादी तरीकों की सफलता।
(B) ब्रिटिश सरकार द्वारा सार्वभौमिक मताधिकार प्रदान करना।
(C) औपनिवेशिक शासन द्वारा लाई गई आर्थिक समृद्धि।
(D) 1905 में बंगाल का विभाजन।

152. निम्नलिखित में से कौन सा विद्रोह उसके नेता के साथ सही सुमेलित है?
(A) संथाल विद्रोह - सिद्धू और कान्हू
(B) अहोम विद्रोह - बिरसा मुंडा
(C) कोल विद्रोह - वासुदेव बलवंत फड़के
(D) खासी विद्रोह - नाना साहब

153. प्रारंभिक क्रांतिकारी संगठनों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान क्या था:
(A) संपूर्ण देश में जन लामबंदी प्राप्त करना।
(B) विधान परिषदों के चुनाव जीतना।
(C) युवाओं को मातृभूमि के लिए बलिदान हेतु प्रेरित करना और ब्रिटिश अजेयता के मिथक को चुनौती देना।
(D) अंग्रेजों को तत्काल स्वतंत्रता देने के लिए विवश करना।

154. गांधी की 'स्वराज' की अवधारणा का अर्थ था:
(A) व्यक्तिगत आत्म-संयम के माध्यम से स्वयं पर शासन, जिससे राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो।
(B) केवल विदेशी औपनिवेशिक शासन की प्रणालियों से राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना।
(C) समानता पर आधारित एक केंद्रीकृत समाजवादी राज्य की स्थापना।
(D) प्राचीन राजशाही शासन और अधिकार की पारंपरिक प्रणालियों की बहाली।

155. भारत में वामपंथी आंदोलन ने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देते हुए भी, मुख्यधारा की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ प्रायः तनावपूर्ण संबंध क्यों रखे?
(A) वामपंथियों ने किसी भी ब्रिटिश विरोधी गतिविधि में भाग लेने से इनकार कर दिया था।
(B) वामपंथियों ने द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटिश युद्ध प्रयासों का विशेष रूप से समर्थन किया।

(C) कांग्रेस पूर्ण स्वतंत्रता में विश्वास नहीं करती थी।
(D) कांग्रेस को पूंजीपति वर्ग का माना जाता था और वह क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन के प्रति प्रतिबद्ध नहीं थी।

156. माउंटबेटन योजना, जिसने भारत के विभाजन की रुपरेखा तैयार की थी, उसे किस नाम से भी जाना जाता था?
(A) वेवेल योजना
(B) 3 जून की योजना
(C) अगस्त प्रस्ताव
(D) क्रिप्स प्रस्ताव

157. भारतीय संविधान के निर्माण की प्रक्रिया ने कई देशों के संविधानों से प्रेरणा ली, लेकिन इसकी मौलिक भावना किसके द्वारा आकार दी गई थी:
(A) विशेष रूप से ब्रिटिश संसदीय प्रणाली।
(B) अमेरिकी राष्ट्रपति प्रणाली।
(C) लंबे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विकसित आदर्श और आकांक्षाएं।
(D) सोवियत संघ का संविधान।

158. 1956 का भारतीय राज्य पुनर्गठन अधिनियम मुख्य रूप से किस सिद्धांत पर आधारित था?
(A) आर्थिक व्यवहार्यता
(B) प्रशासनिक सुविधा
(C) जाति
(D) भाषा

159. बांडुंग सम्मेलन (1955) किसके विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था:
(A) गुटनिरपेक्ष आंदोलन।
(B) संयुक्त राष्ट्र।
(C) राष्ट्रमंडल (कॉमनवेल्थ)।
(D) वारसॉ संधि।

160. 1857 की क्रांति के किस परिणाम ने भारत में ब्रिटिश सेना के संगठन में परिवर्तन किया?
(A) ब्रिटिश सैनिकों की संख्या कम कर दी गई।
(B) सिख, गोरखा और पठान जैसी 'लड़ाकू जातियों' से सैनिकों की भर्ती की नीति अपनाई गई।
(C) तोपखाने की इकाइयाँ भारतीय सैनिकों को सौंप दी गईं।
(D) सेना से सभी भारतीय सैनिकों को हटा दिया गया।

161. वासुदेव बलवंत फड़के का विद्रोह किसके प्रारंभिक उदाहरण के रूप में महत्वपूर्ण है:
(A) भूमि अधिकारों के लिए विशुद्ध रूप से किसान आधारित विद्रोह।
(B) एक 'गणराज्य' स्थापित करने के लिए ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के घोषित उद्देश्य के साथ एक सशस्त्र संघर्ष।
(C) वन अधिकारों के लिए एक आदिवासी विद्रोह।
(D) एक अहिंसक सत्याग्रह आंदोलन।

162. चंपारण सत्याग्रह के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(A) यह मुख्य रूप से औद्योगिक श्रमिकों का आंदोलन था।
(B) यह भारत में सत्याग्रह का महात्मा गांधी का प्रथम प्रयोग था।
(C) मुख्य विषय दमनकारी तिनकठिया पद्धति थी।
(D) सरकार को शोषणकारी व्यवस्था को समाप्त करने के लिए विवश होना पड़ा।

163. निम्नलिखित नेताओं के सक्रिय काल को उनकी प्रमुखता के व्यापक कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. दादाभाई नौरोजी (उदारवादी नेता के रूप में)
2. बाल गंगाधर तिलक (उग्रवादी नेता के रूप में)
3. भगत सिंह (क्रांतिकारी के रूप में)
4. जवाहरलाल नेहरु (प्रधानमंत्री के रूप में)

निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम दर्शाता है?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

164. 1907 में सूरत में कांग्रेस के विभाजन का तात्कालिक कारण क्या था?
(A) स्वदेशी आंदोलन की विफलता।
(B) बंगाल के विभाजन पर असहमति।
(C) मॉर्ले-मिंटो सुधारों का पारित होना।
(D) अधिवेशन के अध्यक्ष का निर्वाचन, जिसमें उग्रवादी लाला लाजपत राय को चाहते थे और उदारवादी रासबिहारी घोष का प्रस्ताव कर रहे थे।

165. भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रारंभिक क्रांतिकारी बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब में केंद्रित थे।
2. उनके तरीकों में प्रायः दमनकारी ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या और धन संचय के लिए डकैती सम्मिलित थी।
3. वे जनता पर कोई प्रभाव डालने में असफल रहे और पूर्णतः अलग-थलग थे।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

166. सुभाष चंद्र बोस का प्रसिद्ध नारा "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा!" किसके नेतृत्व के दौरान दिया गया था?
(A) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
(B) भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA)
(C) फॉरवर्ड ब्लॉक

(A) विदेशी शक्तियों के साथ भारत की स्वतंत्रता के लिए सफलतापूर्वक वार्ता की।
(B) पूर्णतः भारतीय छात्रों के लिए शैक्षिक अवसर प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया।
(C) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर औपनिवेशिक शोषण को उजागर किया और इस उद्देश्य के लिए जनमत तैयार किया।
(D) ब्रिटिश सरकार को तत्काल अधिराज्य का दर्जा देने के लिए विवश करने में सक्षम रहे।

122. दांडी मार्च, या नमक सत्याग्रह, किस बड़े आंदोलन का एक प्रमुख भाग था?
(A) सविनय अवज्ञा आंदोलन
(B) असहयोग आंदोलन
(C) भारत छोड़ो आंदोलन
(D) खिलाफत आंदोलन

123. स्वतंत्रता आंदोलन में वामपंथियों की भूमिका के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में किसान और श्रमिक विषयों को प्रमुखता से लाने के लिए निरंतर कार्य किया।
(B) उन्होंने अखिल भारतीय श्रमिक संघ कांग्रेस (AITUC) जैसे संगठनों का गठन किया।
(C) उन्होंने मुख्यधारा के राष्ट्रवादी विमर्श के लिए एक क्रांतिकारी, सामाजिक-आर्थिक विकल्प प्रस्तुत किया।
(D) वे अहिंसा और वर्ग सहयोग की गांधीवादी रणनीति से पूर्णतः सहमत थे।

124. 1946 के कैबिनेट मिशन योजना ने, पृथक पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार करते हुए, क्या प्रस्ताव दिया था:
(A) भारत का तत्काल दो अधिराज्यों (डोमिनियंस) में विभाजन।
(B) एक निर्बल केंद्र सरकार के साथ त्रि-स्तरीय संरचना।
(C) संपूर्ण ब्रिटिश भारत के लिए एक एकात्मक सरकार।
(D) अगले दस वर्षों तक प्रत्यक्ष ब्रिटिश शासन को जारी रखना।

125. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): स्वतंत्र भारत की सरकार ने राज्यों के पुनर्गठन का विशाल कार्य अपने हाथ में लिया।
कारण (R): पूर्व-विद्यमान प्रांतीय सीमाएँ ब्रिटिश प्रशासनिक सुविधा पर आधारित थीं और देश की भाषाई एवं सांस्कृतिक वास्तविकताओं को नहीं दर्शाती थीं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

126. राष्ट्रवाद के आर्थिक आधार की एक प्रमुख विशेषता उन ब्रिटिश नीतियों की आलोचना थी जिन्होंने:
(A) ब्रिटिश उद्योगों की लागत पर भारतीय उद्योगों को बढ़ावा दिया।
(B) आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थापना की।
(C) भारतीय श्रमिकों के लिए उच्च मजदूरी सुनिश्चित की।
(D) भारत से ब्रिटेन की ओर 'धन के निष्कासन' का मार्ग प्रशस्त किया।

127. किस नगर का पतन विद्रोहियों के लिए एक बड़ा आघात और 1857 के विद्रोह में एक महत्वपूर्ण मोड़ था?
(A) दिल्ली
(B) कानपुर
(C) लखनऊ
(D) झांसी

128. यू तिरोत सिंह निम्नलिखित में से किस आदिवासी विद्रोह के नेता थे?
(A) मुंडा विद्रोह
(B) खासी विद्रोह
(C) कोल विद्रोह
(D) अहोम विद्रोह

129. सरदार पटेल के नेतृत्व में बारदोली सत्याग्रह की मुख्य मांग क्या थी?
(A) जमींदारी प्रथा का उन्मूलन।
(B) नए बढ़ाए गए भू-राजस्व कर की वापसी।
(C) किसानों को उनके द्वारा जोती गई भूमि पर मालिकाना हक का अधिकार।
(D) नकदी फसलों की बलपूर्वक खेती को समाप्त करना।

130. अरबिंदो घोष ने सक्रिय राजनीति से हटने के पश्चात आध्यात्मिकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए किस स्थान पर एक आश्रम स्थापित किया था?
(A) कलकत्ता
(B) पुडुचेरी
(C) वर्धा
(D) साबरमती

131. एक क्रांतिकारी संगठन, हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का प्राथमिक उद्देश्य क्या स्थापित करना था:
(A) ब्रिटिश राजमुकुट के अधीन भारत का एक अधिराज्य।
(B) स्वतंत्र रियासतों की एक श्रृंखला।
(C) सशस्त्र क्रांति के माध्यम से एक संघीय गणराज्य।
(D) सोवियत सहायता के साथ एक समाजवादी राज्य।

132. दिल्ली के लाल किले में आयोजित "आई.एन.ए. के मुकदमों" का अनपेक्षित परिणाम क्या हुआ:
(A) हिंदुओं और मुस्लिमों के बीच सांप्रदायिक तनाव में वृद्धि।
(B) जनता की दृष्टि में आई.एन.ए. सदस्यों को देशद्रोही सिद्ध करना।
(C) अंग्रेजों द्वारा सभी आई.एन.ए. बंदियों की तत्काल रिहाई।

(D) स्वदेशी आंदोलन की विफलता।

178. भारत के विभाजन में सांप्रदायिकता की भूमिका को सबसे अच्छी तरह किस प्रकार समझा जा सकता है:
(A) औपनिवेशिक नीतियों द्वारा जानबूझकर बढ़ावा दी गई और राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कुछ समूहों द्वारा प्रयुक्त विचारधारा।
(B) विभाजन के लिए उत्तरदायी एकमात्र कारक।
(C) धार्मिक समूहों के बीच एक प्राचीन, अपरिवर्तनीय घृणा।
(D) सभी भारतीयों द्वारा समर्थित एक आंदोलन।

179. रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करने के कार्य का नेतृत्व मुख्य रूप से किसके द्वारा किया गया था?
(A) जवाहरलाल नेहरू
(B) डॉ. बी.आर. अंबेडकर
(C) सरदार वल्लभभाई पटेल
(D) महात्मा गांधी

180. द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-61) का प्राथमिक उद्देश्य क्या था:
(A) कृषि आत्मनिर्भरता।
(B) सेवा क्षेत्र का विकास।
(C) लघु और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना।
(D) भारी उद्योगों और सार्वजनिक क्षेत्र पर बल देते हुए तीव्र औद्योगीकरण।

181. राष्ट्रवाद का सामाजिक और आर्थिक आधार किसके द्वारा निर्मित हुआ था?
(A) ब्रिटिश शासक वर्ग जो भारत का आधुनिकीकरण करना चाहता था।
(B) अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करने वाले पारंपरिक सामंत और राजा।
(C) एक नया शिक्षित मध्यम वर्ग और औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत व्यापक आर्थिक कठिनाइयाँ।
(D) केवल औद्योगिक श्रमिक वर्ग।

182. निम्नलिखित में से कौन 1857 के विद्रोह का एक राजनीतिक कारण था?
(A) चर्बी वाले कारतूसों की घटना।
(B) लॉर्ड डलहौजी द्वारा अपनाई गई व्यपगत का सिद्धांत (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स) की नीति।
(C) सती प्रथा का उन्मूलन।
(D) उच्च भू-राजस्व की मांग।

183. पाबना आंदोलन उस समय के कई अन्य किसान आंदोलनों से भिन्न है क्योंकि:
(A) यह अत्यंत हिंसक था और इसका उद्देश्य सभी जमींदारों का विनाश करना था।
(B) इसका नेतृत्व ब्रिटिश बागान मालिकों ने किया था।
(C) यह विशेष रूप से एक आदिवासी आंदोलन था।
(D) इसका लक्ष्य जमींदारी प्रथा को समाप्त करना नहीं था बल्कि विधिक ढांचे के भीतर अवैध उपकरों और दमन के विरुद्ध संघर्ष करना था।

184. लाला लाजपत राय, जो एक प्रमुख उग्रवादी नेता थे, किस नाम से लोकप्रिय थे?
(A) पंजाब केसरी
(B) लोकमान्य
(C) देशबंधु
(D) दीनबंधु

185. 1930 का चटगाँव शस्त्रागार छापा किसके नेतृत्व में एक प्रमुख क्रांतिकारी गतिविधि थी?
(A) भगत सिंह
(B) जतिन दास
(C) सूर्य सेन
(D) रास बिहारी बोस

186. पूना पैक्ट (1932) महात्मा गांधी और किसके बीच एक समझौता था?
(A) डॉ. बी.आर. अंबेडकर
(B) ब्रिटिश वायसराय
(C) एम.ए. जिन्ना
(D) सुभाष चंद्र बोस

187. स्वतंत्रता आंदोलन में वामपंथियों की भूमिका में क्या सम्मिलित था:
(A) गांधी के सभी निर्णयों का निरंतर समर्थन।
(B) पारंपरिक, पूर्व-औद्योगिक समाज की ओर लौटने की वकालत करना।
(C) अंग्रेजों के अधीन अधिराज्य के दर्जे की मांग करना।
(D) किसानों और श्रमिकों को किसान सभाओं और श्रमिक संघों (ट्रेड यूनियनों) में संगठित करना।

188. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): अंग्रेजों की 'विभाजन करो और शासन करो' की नीति भारत में सांप्रदायिकता के विकास में एक महत्वपूर्ण कारक थी।
कारण (R): मुस्लिमों और कालांतर में अन्य समुदायों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल के प्रारंभ ने धर्म आधारित राजनीतिक विभाजन उत्पन्न किए और उन्हें स्थायी बना दिया।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

189. गुटनिरपेक्षता द्वारा चिह्नित 1964 तक की भारत की विदेश नीति का अर्थ था:
(A) भारत को विश्व के सभी विषयों से पृथक करना।
(B) उस गुट के साथ जुड़ना जिसने अधिक आर्थिक सहायता

प्रदान की।
(C) अंतर्राष्ट्रीय विषयों में सक्रिय रुप से भाग लेते हुए दोनों महाशक्ति गुटों से समान दूरी बनाए रखना।
(D) अन्य दो को चुनौती देने के लिए तीसरा सैन्य गुट बनाना।

190. निम्नलिखित में से किस नेता को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी चरण का अंग नहीं माना जाता है?
(A) दादाभाई नौरोजी
(B) फिरोजशाह मेहता
(C) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
(D) बिपिन चंद्र पाल

191. 1857 का विद्रोह अंततः कई कारकों के कारण असफल रहा। निम्नलिखित में से कौन इसकी विफलता का सबसे कम संभावित कारण है?
(A) जनसाधारण के बीच ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए अत्यधिक समर्थन।
(B) सिख और गोरखा सैनिकों के समर्थन का अभाव।
(C) विद्रोहियों के पास आधुनिक, भविष्योन्मुखी राजनीतिक कार्यक्रम का अभाव।
(D) ब्रिटिश पक्ष का श्रेष्ठ सेनापतित्व और संगठन।

192. औपनिवेशिक शासन के प्रतिरोध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. महाराष्ट्र और राजस्थान में भील विद्रोह ब्रिटिश नीतियों और सामंती उत्पीड़न के विरुद्ध एक निरंतर होने वाली परिघटना थी।
2. नागा विद्रोह संप्रभुता के लिए और औपनिवेशिक प्रशासन थोपने के विरुद्ध संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता था।
3. कूका विद्रोह एक धार्मिक शुद्धिकरण आंदोलन के रूप में प्रारंभ हुआ लेकिन कालांतर में इसने राजनीतिक स्वरूप ले लिया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

193. खेड़ा सत्याग्रह (1918) में किसानों की प्राथमिक मांग क्या थी:
(A) तिनकठिया पद्धति का उन्मूलन।
(B) फसल नष्ट होने के कारण भू-राजस्व की माफी।
(C) मिल मजदूरों के वेतन में वृद्धि।
(D) मंदिरों में प्रवेश का अधिकार।

194. 'लाल-बाल-पाल' शब्द राष्ट्रवादी नेताओं के किस समूह को संदर्भित करता है?
(A) उग्रवादी
(B) उदारवादी
(C) क्रांतिकारी
(D) समाजवादी

195. भारत में प्रारंभिक क्रांतिकारी संगठनों के बीच एक सामान्य वैचारिक सूत्र यह विश्वास था कि स्वतंत्रता किसके माध्यम से प्राप्त की जा सकती है:
(A) सामूहिक सविनय अवज्ञा।
(B) संवैधानिक सुधार।
(C) व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्य और सशस्त्र संघर्ष।
(D) अनुनय-विनय और याचिकाएं।

196. गोलमेज सम्मेलन लंदन में किसलिए आयोजित किए गए थे:
(A) भारत के विभाजन पर चर्चा करना।
(B) भारत को तत्काल स्वतंत्रता प्रदान करना।
(C) गांधी और अंबेडकर के बीच विवाद की मध्यस्थता करना।
(D) साइमन कमीशन की रिपोर्ट सहित भारत के लिए संवैधानिक सुधारों पर चर्चा करना।

197. अखिल भारतीय किसान सभा, एक प्रमुख किसान संगठन, 1936 में किस वैचारिक समूह के महत्वपूर्ण प्रभाव से निर्मित हुआ था?
(A) उदारवादी
(B) लिबरल
(C) वामपंथी और समाजवादी
(D) स्वराजवादी

198. 1940 में मुस्लिम लीग का 'लाहौर प्रस्ताव' महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने:
(A) भारत के लिए अधिराज्य के दर्जे की मांग की।
(B) भारत के उत्तर-पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में मुस्लिमों के लिए "स्वतंत्र राज्यों" के गठन का आह्वान किया।
(C) कैबिनेट मिशन योजना को स्वीकार किया।
(D) साइमन कमीशन के बहिष्कार की घोषणा की।

199. सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार पर आधारित स्वतंत्र भारत के पहले आम चुनाव कब आयोजित किए गए थे?
(A) 1947
(B) 1950
(C) 1957
(D) 1951-52

200. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (स्वतंत्रता पश्चात का कार्य)
P. राज्यों का एकीकरण
Q. संविधान का निर्माण
R. राज्यों का भाषाई पुनर्गठन
S. पंचवर्षीय योजनाएं

सूची II: (प्रमुख व्यक्ति/निकाय)
1. योजना आयोग
2. राज्य पुनर्गठन आयोग
3. सरदार पटेल
4. संविधान सभा (अंबेडकर के नेतृत्व में मसौदा समिति)

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

201. कौन सी ऐतिहासिक व्याख्या 1857 के विद्रोह को "भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध" मानती है?
(A) ब्रिटिश इतिहासकारों की साम्राज्यवादी व्याख्या।
(B) ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रारंभिक प्रशासनिक रिपोर्ट।
(C) राष्ट्रवादी व्याख्या, विशेष रूप से वी.डी. सावरकर द्वारा।
(D) किसान चेतना पर सबाल्टर्न स्कूल का ध्यान।

202. वासुदेव बलवंत फड़के का विद्रोह मुख्य रूप से किस आधुनिक राज्य में केंद्रित था?
(A) महाराष्ट्र
(B) पंजाब
(C) बंगाल
(D) तमिलनाडु

203. एक आंदोलन और उसके प्राथमिक कारण की अशुद्ध जोड़ी की पहचान कीजिए।
(A) चंपारण सत्याग्रह - तिनकठिया पद्धति
(B) खेड़ा सत्याग्रह - फसल नष्ट होने के पश्चात राजस्व माफी
(C) बारदोली सत्याग्रह - भू-राजस्व में वृद्धि
(D) पाबना आंदोलन - नमक कर

204. अल्पकाल में, 1907 में कांग्रेस का विभाजन किस समूह की नीति की विजय थी?
(A) उदारवादियों की संवैधानिकता की नीति।
(B) अंग्रेजों की 'विभाजन करो और शासन करो' की नीति।
(C) उग्रवादियों की जन आंदोलन की नीति।
(D) क्रांतिकारियों की सशस्त्र संघर्ष की नीति।

205. अनुशीलन समिति और युगांतर प्रसिद्ध क्रांतिकारी संगठन थे जो कहाँ स्थित थे:
(A) पंजाब
(B) महाराष्ट्र
(C) बंगाल
(D) मद्रास

206. गांधी ने किस घटना के कारण 1922 में असहयोग आंदोलन वापस ले लिया था?
(A) जलियांवाला बाग हत्याकांड।
(B) साइमन कमीशन की घोषणा।
(C) गोलमेज सम्मेलन की विफलता।
(D) चौरी-चौरा की घटना जहाँ एक पुलिस चौकी में आग लगा दी गई थी।

207. स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) जैसे वामपंथी संगठनों की प्राथमिक भूमिका क्या थी:
(A) समाजवादी और कम्युनिस्ट विचारों का प्रचार करना तथा श्रमिक वर्ग एवं किसानों को संगठित करना।
(B) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करना।
(C) विशेष रूप से धार्मिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) महात्मा गांधी की नीतियों को बिना शर्त समर्थन प्रदान करना।

208. 1906 में मुस्लिम लीग के गठन को एक ब्रिटिश अधिकारी द्वारा प्रोत्साहित किया गया था, और वायसराय से मिलने वाले प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था:
(A) मुहम्मद अली जिन्ना
(B) आगा खान
(C) सैयद अहमद खान
(D) मौलाना अबुल कलाम आजाद

209. किस रियासत का भारत में विलय भविष्य के जनमत संग्रह की शर्त पर था, जो एक दीर्घकालिक विषय बन गया?
(A) हैदराबाद
(B) जम्मू और कश्मीर
(C) जूनागढ़
(D) त्रावणकोर

210. स्वतंत्रता के पश्चात भारत में प्रारंभ की गई पंचवर्षीय योजनाओं के पीछे मूल विचार क्या था?
(A) विकास लक्ष्यों की ओर आर्थिक संसाधनों को निर्देशित करने के लिए राज्य के नेतृत्व वाली योजना का उपयोग करना।
(B) आर्थिक विकास निर्धारित करने के लिए मुक्त-बाजार शक्तियों को अनुमति देना।
(C) विशेष रूप से कृषि निर्यात पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) सभी प्रमुख उद्योगों का निजीकरण करना।

211. भारतीय राष्ट्रवाद का उदय 'क्रिया और प्रतिक्रिया' की गतिशीलता का परिणाम था। अंग्रेजों की निम्नलिखित में से किस 'क्रिया' ने राष्ट्रवादी 'प्रतिक्रिया' उत्पन्न नहीं की?
(A) नस्लीय अहंकार और भेदभाव।
(B) आर्थिक शोषण और धन का निष्कासन।
(C) कानून और प्रशासन की एक समान प्रणाली का प्रारंभ।
(D) देश का राजनीतिक एकीकरण।

212. 1857 के विद्रोह की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. मेरठ में विद्रोह
2. मंगल पांडे को फांसी
3. बहादुर शाह जफर को सम्राट घोषित करना
4. झांसी में विद्रोह
निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम दर्शाता है?
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 1, 2, 4

(D) 1, 3, 4, 2

213. खासी, नागा, अहोम और कोल जैसे आदिवासी विद्रोहों की एक सामान्य विशेषता किसके प्रति उनका विरोध था:
(A) जाति व्यवस्था।
(B) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नेतृत्व।
(C) उनके क्षेत्रों में बाहरी लोगों (दिकुओं) और औपनिवेशिक प्रशासनिक तंत्र की घुसपैठ।
(D) आधुनिक तकनीक का प्रयोग।

214. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): राष्ट्रवाद के उग्रवादी चरण ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को चिह्नित किया।
कारण (R): यह उदारवादियों की कुलीन-आधारित राजनीति से आगे बढ़ा और बहिष्कार एवं स्वदेशी जैसे नए तरीकों के माध्यम से जनता को सम्मिलित करने का लक्ष्य रखा।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

215. 1915 में भारत में एक साथ विद्रोह की गदर पार्टी की योजना मुख्य रूप से किसके कारण विफल रही:
(A) धन का अभाव।
(B) ब्रिटेन और जर्मनी के बीच आकस्मिक युद्ध विराम।
(C) इस योजना के प्रति महात्मा गांधी का विरोध।
(D) विश्वासघात और अंग्रेजों द्वारा कुशल गुप्तचर सूचनाएं।

216. 1942 में कांग्रेस कार्य समिति द्वारा "भारत छोड़ो" प्रस्ताव किस स्थान पर पारित किया गया था?
(A) वर्धा
(B) बंबई (मुंबई)
(C) कलकत्ता (कोलकाता)
(D) दिल्ली

217. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) ने प्रारंभ में द्वितीय विश्व युद्ध को 'साम्राज्यवादी युद्ध' के रूप में वर्णित किया था, लेकिन बाद में इसे 'जन युद्ध' के रूप में अपना रुख बदल लिया, जब:
(A) अंग्रेजों ने स्वतंत्रता का वचन दिया।
(B) जापानियों ने पर्ल हार्बर पर हमला किया।
(C) नाजी जर्मनी ने सोवियत संघ पर आक्रमण किया।
(D) भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ किया गया।

218. सांप्रदायिकता के विकास के बारे में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) यह एक ऐसी विचारधारा थी जिसने दावा किया कि एक समान धर्म साझा करने वाले लोग समान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक हितों को भी साझा करते हैं।
(B) यह सभी भारतीयों को एकजुट करने की ब्रिटिश सरकार की नीति के परिणामस्वरूप उभरा।
(C) यह एक ऐसा आंदोलन था जिसने सभी धर्मों को समाप्त करने की मांग की थी।
(D) इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभी नेताओं द्वारा सर्वसम्मति से समर्थन दिया गया था।

219. राज्य पुनर्गठन आयोग (1953) की अध्यक्षता किसके द्वारा की गई थी?
(A) के.एम. पणिक्कर
(B) एच.एन. कुंजरू
(C) सरदार पटेल
(D) फजल अली

220. स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्रमंडल (कॉमनवेल्थ) में बने रहने का भारत का निर्णय महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने प्रदर्शित किया:
(A) ब्रिटिश राजमुकुट के प्रति भारत की निरंतर अधीनता।
(B) विदेश नीति के प्रति एक व्यावहारिक दृष्टिकोण, संप्रभुता से समझौता किए बिना संबंध बनाए रखना।
(C) गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत की अस्वीकृति।
(D) राजतंत्र बनने की इच्छा।

221. दादाभाई नौरोजी, आर.सी. दत्त और अन्य जैसे प्रारंभिक राष्ट्रवादियों द्वारा प्रस्तुत उपनिवेशवाद की आर्थिक आलोचना किसमें एक प्रमुख कारक थी:
(A) ब्रिटिश शासन की लोकहितकारी प्रकृति को सिद्ध करना।
(B) भारत में अधिक ब्रिटिश निवेश को प्रोत्साहित करना।
(C) ब्रिटिश शासन के शोषणकारी स्वरूप को उजागर कर इसकी नैतिक नींव को निर्बल करना।
(D) भारत के विभाजन को न्यायोचित ठहराना।

222. बख्त खान, जिन्होंने 1857 के विद्रोह के दौरान दिल्ली में विद्रोही सेना की प्रभावी कमान संभाली थी, कहाँ के सैन्य अधिकारी थे?
(A) ग्वालियर
(B) फैजाबाद
(C) मेरठ
(D) बरेली

223. प्रारंभिक किसान और आदिवासी विद्रोहों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे प्रायः साहूकारों, जमींदारों और औपनिवेशिक अधिकारियों जैसे तात्कालिक उत्पीड़कों के विरुद्ध निर्देशित होते थे।
2. वे स्थानीय थे और उनमें राष्ट्रव्यापी एकता की आधुनिक भावना का अभाव था।
3. वे पूर्णतः असफल रहे और औपनिवेशिक नीति पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

224. स्वदेशी आंदोलन, जो बंगाल के विभाजन का प्रत्यक्ष परिणाम था, सबसे प्रबल रूप से किसके द्वारा समर्थित था:
(A) कांग्रेस का उदारवादी गुट।
(B) कांग्रेस का उग्रवादी गुट।
(C) मुस्लिम लीग।
(D) ब्रिटिश सरकार।

225. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी आंदोलन का एक प्रमुख योगदान यह था कि इसने:
(A) सफलतापूर्वक एक जन-आधारित क्रांति प्राप्त की।
(B) धीमी और अप्रभावी संवैधानिक राजनीति का एक विकल्प प्रदान किया।
(C) दहशत के कार्यों के माध्यम से अंग्रेजों को तत्काल भारत छोड़ने के लिए विवश किया।
(D) संपूर्ण भारत में एक समानांतर सरकार स्थापित की।

226. 1916 के कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन का क्या महत्व था?
(A) कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने लखनऊ समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें मांगों के एक साझा समूह पर सहमति बनी।
(B) कांग्रेस उदारवादियों और उग्रवादियों के बीच विभाजित हो गई।
(C) 'पूर्ण स्वराज' (पूर्ण स्वतंत्रता) का प्रस्ताव पारित किया गया।
(D) भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ किया गया।

227. भारत में वामपंथी राजनीति ने न केवल कम्युनिस्ट पार्टी बल्कि समाजवादी समूहों का भी उदय देखा। एक प्रमुख समाजवादी नेता जो भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय थे, वे थे:
(A) एस.ए. डांगे
(B) एम.एन. राय
(C) जयप्रकाश नारायण
(D) पी.सी. जोशी

228. 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' सबसे प्रबलता से किसके द्वारा व्यक्त किया गया था:
(A) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
(B) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
(C) हिंदू महासभा
(D) एम.ए. जिन्ना के नेतृत्व में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग

229. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (नेता)
P. जवाहरलाल नेहरू
Q. सरदार पटेल
R. डॉ. बी.आर. अंबेडकर
S. फजल अली

सूची II: (स्वतंत्रता पश्चात के भारत में भूमिका)
1. अध्यक्ष, संविधान की मसौदा समिति
2. अध्यक्ष, राज्य पुनर्गठन आयोग
3. विदेश नीति के वास्तुकार (गुटनिरपेक्षता)
4. रियासतों के एकीकरण के वास्तुकार
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

230. 'व्यपगत का सिद्धांत' (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स) की नीति 1857 से पूर्व भारतीय शासकों के बीच असंतोष का एक प्रमुख कारण थी। इस नीति का अर्थ था कि:
(A) सभी भारतीय राज्यों को अंततः मिला लिया जाएगा।
(B) प्राकृतिक उत्तराधिकारी के बिना मृत शासक का दत्तक पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता था।
(C) भारतीय शासक स्थायी सेना नहीं रख सकते थे।
(D) समस्त व्यापार ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से किया जाना था।

231. बंगाल में 1859-60 का नील विद्रोह किसके द्वारा किया गया विद्रोह था:
(A) अंग्रेजों के विरुद्ध जमींदार।
(B) अपने अधिकारियों के विरुद्ध सिपाही।
(C) बेहतर वेतन के लिए औद्योगिक श्रमिक।
(D) यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा नील की खेती की दमनकारी व्यवस्था के विरुद्ध किसान।

232. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी चरण के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) उनका नेतृत्व काफी हद तक शिक्षित, शहरी पेशेवरों से निर्मित था।
(B) उनका मुख्य उद्देश्य क्रमिक सुधारों के माध्यम से स्वशासन प्राप्त करना था।
(C) वे संवैधानिक आंदोलन, याचिकाओं और प्रार्थनाओं के तरीकों में विश्वास करते थे।
(D) वे किसान और मजदूर वर्ग की जनता को राष्ट्रवादी धारा में सफलतापूर्वक लामबंद करने में सफल रहे।

233. हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) का गठन HRA के पुनर्गठन द्वारा किया गया था। नाम में परिवर्तन भगत सिंह जैसे युवा क्रांतिकारियों पर किस विचारधारा के प्रभाव को दर्शाता है?
(A) फासीवाद
(B) अराजकतावाद
(C) समाजवाद
(D) गांधीवाद

234. खिलाफत आंदोलन भारतीय मुस्लिमों द्वारा किसके विरोध में प्रारंभ किया गया था:

(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

258. 1920 और 1930 के दशक के दौरान भारत में वामपंथी विचारधारा ने किसके कारण अपनी स्थिति सुदृढ़ की:
(A) रूसी क्रांति का वैश्विक प्रभाव और विभिन्न समूहों के बीच बढ़ती वर्ग चेतना।
(B) ब्रिटिश सरकार का संरक्षण।
(C) भारत में पूंजीवादी विकास की सफलता।
(D) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पतन।

259. 1906 में अपने गठन के समय मुस्लिम लीग का प्रारंभिक उद्देश्य क्या था:
(A) भारत के विभाजन की मांग करना।
(B) अंग्रेजों के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी सशस्त्र संघर्ष प्रारंभ करना।
(C) ब्रिटिश सरकार के प्रति राजभक्ति को बढ़ावा देना और मुस्लिमों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करना।
(D) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ विलय करना।

260. भारत की स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर किसके द्वारा "नियति के साथ मिलन" (ट्रिस्ट विद डेस्टिनी) भाषण दिया गया था?
(A) महात्मा गांधी
(B) सरदार पटेल
(C) डॉ. राजेंद्र प्रसाद
(D) जवाहरलाल नेहरू

261. प्रथम पंचवर्षीय योजना किस मॉडल पर आधारित थी?
(A) महालनोबिस मॉडल
(B) गांधीवादी मॉडल
(C) हैरोड-डोमर मॉडल
(D) शिकागो स्कूल मॉडल

262. 1857 का विद्रोह मेरठ की घटना से प्रारंभ हुआ था, जहाँ सिपाहियों ने किसके पश्चात विद्रोह किया था:
(A) समुद्र पार करने का आदेश मिलने के पश्चात।
(B) नए चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इनकार करने पर दंड मिलने के पश्चात।
(C) उनके वेतन में कटौती के पश्चात।
(D) अवध के विलय के पश्चात।

263. पाबना किसान लीग किसके लिए प्रसिद्ध थी?
(A) अंग्रेजों को हिंसक रूप से उखाड़ फेंकने का आह्वान।
(B) एक पृथक किसान राज्य की मांग।
(C) जमींदारों के प्रति पूर्ण राजभक्ति।
(D) जमींदारी उत्पीड़न से लड़ने के लिए विधिक तरीकों का प्रयोग, जैसे अवैध लगान का भुगतान न करना और विधिक चुनौतियां।

264. अरबिंदो घोष का राजनीतिक दर्शन, आध्यात्मिकता की ओर मुड़ने से पूर्व, किस रूप में सबसे अच्छी तरह वर्णित है:
(A) आध्यात्मिक राष्ट्रवाद और निष्क्रिय प्रतिरोध का सिद्धांत।
(B) संवैधानिक आंदोलन।
(C) मार्क्सवादी क्रांति।
(D) ब्रिटिश शासन के समक्ष पूर्ण आत्मसमर्पण।

265. "कोमागाटा मारु" घटना क्या थी?
(A) क्रांतिकारियों द्वारा की गई ट्रेन डकैती।
(B) एक ब्रिटिश अधिकारी की हत्या।
(C) भारतीय प्रवासियों को ले जाने वाले एक जहाज को कनाडा से वापस भेज दिया जाना, जिसने राष्ट्रवादी और क्रांतिकारी भावनाओं को जाग्रत किया।
(D) ब्रिटिश शस्त्रागार पर छापा।

266. 'ग्राम स्वराज' या ग्राम स्वायत्तता की अवधारणा किसके राजनीतिक दर्शन का केंद्र थी?
(A) महात्मा गांधी
(B) सुभाष चंद्र बोस
(C) जवाहरलाल नेहरू
(D) बी.आर. अंबेडकर

267. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): कम्युनिस्टों और समाजवादियों सहित वामपंथियों ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान श्रमिकों और किसानों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
कारण (R): उन्होंने श्रमिक संघों और किसान सभाओं का आयोजन किया, जिससे वर्ग आधारित विषयों को साम्राज्यवाद विरोधी राजनीति की मुख्यधारा में लाया गया।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

268. 1947 में भारत का विभाजन एक जटिल प्रक्रिया का चरमोत्कर्ष था जिसमें एक प्रमुख तत्व था:
(A) भारत छोड़ो आंदोलन की सफलता।
(B) संयुक्त भारत में सत्ता-साझेदारी की व्यवस्था पर सहमत होने में कांग्रेस और मुस्लिम लीग की विफलता।
(C) संयुक्त राष्ट्र का प्रस्ताव।
(D) संपूर्ण भारत में आयोजित एक जनमत संग्रह।

269. भारत की संविधान सभा थी:
(A) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर भारत के लोगों द्वारा प्रत्यक्ष निर्वाचित।
(B) ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त।
(C) प्रांतीय विधान सभाओं के सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित।
(D) वायसराय द्वारा नामित।

(D) महात्मा गांधी ने इसका बहिष्कार किया था।

247. कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (CSP) का गठन 1934 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर युवा नेताओं के एक समूह द्वारा किया गया था। इसके प्रमुख संस्थापकों में से कौन एक था?
(A) सरदार पटेल
(B) सी. राजगोपालाचारी
(C) एम.ए. जिन्ना
(D) आचार्य नरेंद्र देव

248. पृथक निर्वाचक मंडल की मांग, जो सांप्रदायिक राजनीति का एक प्रमुख तत्व था, का अर्थ था कि:
(A) केवल एक विशेष धर्म के लोग ही उसी धर्म के उम्मीदवारों के लिए मतदान कर सकते थे।
(B) सभी वयस्क मतदान कर सकते थे।
(C) पुरुषों और महिलाओं के लिए पृथक चुनाव होंगे।
(D) केवल संपत्ति के स्वामी ही मतदान कर सकते थे।

249. 'यथास्थिति समझौता' (स्टैंडस्टिल एग्रीमेंट) 1947 में किसलिए प्रयुक्त एक तंत्र था:
(A) सांप्रदायिक दंगों को रोकना।
(B) संविधान के निर्माण को स्थगित करना।
(C) नई भारतीय सरकार और रियासतों के बीच विद्यमान प्रशासनिक और आर्थिक व्यवस्था बनाए रखना।
(D) भारत-पाकिस्तान सीमाओं को स्थिर करना।

250. 1947 के पश्चात भारत द्वारा अपनाई गई गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति किसकी नीति थी:
(A) किसी भी सैन्य गुट में सम्मिलित न होना और एक स्वतंत्र विदेश नीति बनाए रखना।
(B) अंतर्राष्ट्रीय विषयों में भाग न लेना।
(C) सोवियत संघ का पक्ष लेना।
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका का पक्ष लेना।

251. भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का एक महत्वपूर्ण कारण प्रेस की भूमिका थी, जिसने:
(A) विशेष रूप से ब्रिटिश सरकार की नीतियों का समर्थन किया।
(B) पूर्णतः अंग्रेजों के स्वामित्व और संचालन में था।
(C) केवल अंतर्राष्ट्रीय समाचारों पर ध्यान केंद्रित किया और भारतीय विषयों की उपेक्षा की।
(D) राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार में सहायता की और औपनिवेशिक शासन की कमियों को उजागर किया।

252. 1857 के विद्रोह के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इससे भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का अंत हो गया।
2. ब्रिटिश राजमुकुट ने भारत के प्रशासन का प्रत्यक्ष उत्तरदायित्व संभाला।
3. गवर्नर-जनरल को 'वायसराय' की नई उपाधि दी गई।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

253. भील जनजाति ने किन क्षेत्रों में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया?
(A) बंगाल और बिहार
(B) असम और नागालैंड
(C) महाराष्ट्र और राजस्थान
(D) पंजाब और सिंध

254. चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह और अहमदाबाद मिल हड़ताल महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उन्होंने:
(A) अंग्रेजों के विरुद्ध हिंसक विद्रोह के प्रथम उदाहरण प्रस्तुत किए।
(B) ये सभी पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करने वाले आंदोलन थे।
(C) अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में पूर्णतः असफल रहे।
(D) गांधी को जन लामबंदी के एक प्रभावशाली नए तरीके के साथ एक नेता के रूप में स्थापित किया।

255. 1907 में सूरत में कांग्रेस का विभाजन भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में एक बड़ी घटना है। विभाजित होने वाले दो गुट थे:
(A) उदारवादी और उग्रवादी
(B) हिंदू और मुस्लिम
(C) ब्रिटिश-समर्थक और ब्रिटिश-विरोधी
(D) जमींदार और किसान

256. श्यामजी कृष्णवर्मा द्वारा स्थापित लंदन में "इंडिया हाउस" किसका केंद्र था?
(A) भारत में ब्रिटिश संस्कृति को बढ़ावा देना।
(B) ब्रिटेन में भारतीय क्रांतिकारी गतिविधियाँ।
(C) भारत और ब्रिटेन के बीच व्यापारिक वार्ता।
(D) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की उदारवादी नीतियों को बढ़ावा देना।

257. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (आंदोलन/घटना)
P. आई.एन.ए.
Q. बारदोली सत्याग्रह
R. चंपारण सत्याग्रह
S. गदर पार्टी
सूची II: (नेता)
1. सरदार पटेल
2. लाला हरदयाल
3. महात्मा गांधी
4. सुभाष चंद्र बोस
कूट:
(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4

(B) संथाल हुल
(C) कोल विद्रोह
(D) रामोसी विद्रोह

283. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किस अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' या पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव स्वीकार किया था?
(A) लखनऊ अधिवेशन, 1916
(B) नागपुर अधिवेशन, 1920
(C) कराची अधिवेशन, 1931
(D) लाहौर अधिवेशन, 1929

284. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनिए:
सूची I: (क्रांतिकारी)
P. भगत सिंह
Q. सूर्य सेन
R. राम प्रसाद बिस्मिल
S. वी.डी. सावरकर
सूची II: (संबद्ध अधिनियम/घटना)
1. काकोरी षड्यंत्र
2. चटगाँव शस्त्रागार छापा
3. अभिनव भारत समाज
4. लाहौर षड्यंत्र मामला
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

285. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): गांधी ने 1930 में दांडी मार्च प्रारंभ किया।
कारण (R): यह मार्च एक बुनियादी वस्तु, नमक के उत्पादन और विक्रय पर अन्यायपूर्ण ब्रिटिश एकाधिकार के विरुद्ध एक विरोध था।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

286. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के बीच प्राथमिक अंतर क्या था?
(A) CSP एक पृथक दल था, जबकि CPI कांग्रेस का अंग थी।
(B) CSP गांधीवादी तरीकों में विश्वास करती थी, जबकि CPI नहीं।
(C) CPI अधिराज्य का दर्जा चाहती थी, जबकि CSP पूर्ण स्वतंत्रता चाहती थी।
(D) CSP का गठन कांग्रेस के भीतर इसे समाजवाद की ओर उन्मुख करने के लिए किया गया था, जबकि CPI अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट (कॉमिन्टर्न) से संबद्ध एक स्वतंत्र दल था।

287. किस योजना ने भारत के विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण का आधार तैयार किया?
(A) माउंटबेटन योजना
(B) क्रिप्स मिशन योजना
(C) कैबिनेट मिशन योजना
(D) वेवेल योजना

288. 1956 में राज्यों के भाषाई पुनर्गठन के परिणामस्वरूप किसका निर्माण हुआ:
(A) 25 राज्य और 7 संघ राज्य क्षेत्र।
(B) 14 राज्य और 6 संघ राज्य क्षेत्र।
(C) 20 राज्य और 5 संघ राज्य क्षेत्र।
(D) 12 राज्य और 8 संघ राज्य क्षेत्र।

289. निम्नलिखित में से कौन सा 'पंचशील' के पांच सिद्धांतों में से एक नहीं है?
(A) पारस्परिक अनाक्रमण
(B) संयुक्त सैन्य कमान का निर्माण
(C) शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व
(D) आंतरिक विषयों में पारस्परिक अहस्तक्षेप

290. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान "आर्थिक राष्ट्रवाद" की अवधारणा में क्या सम्मिलित था:
(A) स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देना और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना।
(B) ब्रिटेन के साथ मुक्त व्यापार नीति की वकालत करना।
(C) ब्रिटेन से अधिक ऋण और निवेश की मांग करना।
(D) समस्त कृषि भूमि के राष्ट्रीयकरण की मांग करना।

291. 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण चर्बी वाले कारतूसों का मुद्दा था, लेकिन इसके अंतर्निहित कारण अनेक थे। निम्नलिखित में से कौन सा एक अंतर्निहित कारण नहीं था?
(A) आर्थिक शोषण जिसके कारण ग्रामीण ऋणग्रस्तता उत्पन्न हुई।
(B) व्यपगत के सिद्धांत जैसी नीतियों के माध्यम से राजनीतिक विस्तारवाद।
(C) जनता को एकजुट करने में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सफलता।
(D) अंग्रेजों द्वारा सामाजिक और धार्मिक हस्तक्षेप।

292. पंजाब में कूका विद्रोह (नामधारी आंदोलन) के कार्यक्रम में निम्नलिखित में से कौन सा सम्मिलित था?
(A) ब्रिटिश प्रशासन के साथ सहयोग।
(B) फ्रांसीसियों से सहायता मांगना।
(C) सिखों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग करना।
(D) ब्रिटिश शिक्षा, कानूनों और उत्पादों का बहिष्कार।

270. 1947 और 1964 के बीच भारतीय विदेश नीति शीत युद्ध से काफी प्रभावित थी। गुटनिरपेक्षता किसके प्रति एक रणनीतिक प्रतिक्रिया थी:
(A) औपचारिक रूप से सोवियत सैन्य गुट में सम्मिलित होना।
(B) औपचारिक रूप से अमेरिकी सैन्य गुट में सम्मिलित होना।
(C) भारत को विश्व विषयों से पूर्णतः पृथक करना।
(D) संप्रभुता का दावा करना और महाशक्ति प्रतिद्वंद्विता से बचना।

271. भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के प्रमुख सामाजिक कारणों में से एक था:
(A) अंग्रेजों का नस्लीय अहंकार और भारतीयों द्वारा सामना किया जाने वाला भेदभाव।
(B) अंग्रेजों द्वारा जाति व्यवस्था को बढ़ावा देना।
(C) अंग्रेजों द्वारा सभी भारतीय रीति-रिवाजों का उन्मूलन।
(D) ब्रिटिश शासकों द्वारा सभी प्रजा के साथ समान व्यवहार।

272. 1857 के उस नायक की पहचान कीजिए जो एक कुशल छापामार युद्ध रणनीतिकार और नाना साहब के सहयोगी थे।
(A) बखत खान
(B) तात्या टोपे
(C) मौलवी अहमद उल्ला
(D) मंगल पांडे

273. दीनबंधु मित्र के नाटक 'नील दर्पण' में किस विद्रोह से जुड़ी क्रूरताओं को दर्शाया गया था?
(A) संथाल विद्रोह
(B) नील विद्रोह
(C) पाबना आंदोलन
(D) मुंडा विद्रोह

274. तिलक और पाल जैसे उग्रवादी नेताओं ने राजनीतिक कार्रवाई के नए स्वरूपों को लोकप्रिय बनाया, जैसे:
(A) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी को बढ़ावा देना।
(B) इंग्लैंड में प्रतिनिधिमंडल भेजना।
(C) वायसराय को याचिकाएं लिखना।
(D) ब्रिटिश-नियंत्रित परिषदों के अंतर्गत चुनाव लड़ना।

275. क्रांतिकारियों की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उनका उद्देश्य भारतीयों में स्वाभिमान और अवज्ञा की भावना उत्पन्न करना था।
2. उनके कार्य प्रायः दमनकारी ब्रिटिश नीतियों की प्रतिक्रिया में होते थे।
3. कांग्रेस के नेतृत्व वाले मुख्यधारा के राष्ट्रवादी आंदोलन के साथ उनका कोई संबंध या प्रभाव नहीं था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

276. जलियांवाला बाग हत्याकांड किस अधिनियम के विरोध के दौरान हुआ था?
(A) मॉर्ले-मिंटो सुधार
(B) साइमन कमीशन
(C) भारत सरकार अधिनियम, 1935
(D) रौलट एक्ट

277. निम्नलिखित में से कौन भारत में एक प्रमुख वामपंथी संगठन है?
(A) सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी
(B) स्वराज पार्टी
(C) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
(D) ब्रह्म समाज

278. स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में "सांप्रदायिक त्रिकोण" किसके बीच की परस्पर क्रिया को संदर्भित करता है:
(A) कांग्रेस, मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा
(B) भारतीय राष्ट्रवादी, ब्रिटिश साम्राज्यवादी और सांप्रदायिक ताकतें
(C) किसान, मजदूर और जमींदार
(D) उदारवादी, उग्रवादी और क्रांतिकारी

279. कश्मीर का एकीकरण शासक की किसके लिए प्रारंभिक आकांक्षा के कारण जटिल हो गया था:
(A) पाकिस्तान में तत्काल विलय।
(B) भारत में तत्काल विलय।
(C) चीन के साथ विलय।
(D) स्वतंत्रता।

280. द्वितीय पंचवर्षीय योजना को प्रभावित करने वाले महालनोबिस मॉडल ने किस पर बल दिया था:
(A) भारी उद्योग आधारित सार्वजनिक क्षेत्र का विकास।
(B) कृषि विकास।
(C) सेवा-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर झुकाव।
(D) न्यूनतम राज्य हस्तक्षेप के साथ मुक्त-बाजार दृष्टिकोण।

281. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में हुई थी, और इसके पहले अधिवेशन की अध्यक्षता किसके द्वारा की गई थी:
(A) ए.ओ. ह्यूम
(B) दादाभाई नौरोजी
(C) डब्ल्यू.सी. बनर्जी
(D) सुरेंद्रनाथ बनर्जी

282. बिरसा मुंडा के नेतृत्व में मुंडा विद्रोह (1899-1900) को किस नाम से भी जाना जाता है?
(A) उलगुलान

(A) प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात मित्र राष्ट्रों द्वारा ऑटोमन साम्राज्य (तुर्की) के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार।
(B) बंगाल का विभाजन।
(C) जलियांवाला बाग हत्याकांड।
(D) पृथक निर्वाचक मंडल का प्रारंभ।

235. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): सुभाष चंद्र बोस का मानना था कि ब्रिटेन के शत्रुओं से सहायता लेकर भारत की स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है।
कारण (R): वे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत से पलायन कर गए और अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए जर्मनी और जापान की सहायता मांगी।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

236. मेरठ षड्यंत्र मामला (1929) किसकी गतिविधियों को दबाने के उद्देश्य से की गई एक सरकारी कार्रवाई थी:
(A) स्वराज पार्टी
(B) कम्युनिस्ट और श्रमिक संघवादी
(C) मुस्लिम लीग
(D) गदर पार्टी

237. 16 अगस्त, 1946 को मुस्लिम लीग द्वारा घोषित 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' के कारण व्यापक सांप्रदायिक दंगे हुए, विशेष रूप से:
(A) दिल्ली
(B) बंबई
(C) कलकत्ता
(D) मद्रास

238. भारतीय संघ में हैदराबाद का विलय किसके माध्यम से संपन्न हुआ था:
(A) एक जनमत संग्रह
(B) निजाम द्वारा स्वेच्छा से विलय
(C) संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता वाला समझौता
(D) एक 'पुलिस कार्रवाई'

239. 1950 के दशक में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों के पुनर्गठन का आधार क्या था:
(A) भाषाई पहचान
(B) आर्थिक व्यवहार्यता
(C) धार्मिक संरचना
(D) प्रशासनिक सुविधा

240. आधुनिक, अखिल भारतीय राष्ट्रवाद के विकास को निम्नलिखित सभी ने सुगम बनाया, सिवाय:
(A) रेलवे, टेलीग्राफ और एक एकीकृत डाक प्रणाली का प्रारंभ।
(B) राष्ट्रवादी भावना को निर्बल करने के लिए क्षेत्रवाद को बढ़ावा देने की ब्रिटिश नीति।
(C) शिक्षित अभिजात वर्ग के बीच अंग्रेजी के रूप में एक सामान्य संपर्क भाषा का उदय।
(D) क्षेत्रीय भाषा के प्रेस का उदय जिसने राष्ट्रवादी विचारों का प्रसार किया।

241. झांसी की रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों की कट्टर शत्रु बन गईं क्योंकि उन्होंने:
(A) सती प्रथा को समाप्त कर दिया।
(B) व्यपगत के सिद्धांत के अंतर्गत सिंहासन पर उनके दत्तक पुत्र के अधिकार को मान्यता देने से इनकार कर दिया।
(C) उनके राज्य पर भारी कर लगा दिए।
(D) मांग की कि वे ईसाई धर्म स्वीकार कर लें।

242. 1855-56 का संथाल विद्रोह आदिवासी प्रतिरोध के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। यह किस क्षेत्र में हुआ था?
(A) राजमहल की पहाड़ियाँ
(B) पश्चिमी घाट
(C) हिमालय की तलहटी
(D) मालाबार तट

243. भारत में महात्मा गांधी के नेतृत्व में पहला सत्याग्रह आंदोलन था:
(A) खेड़ा सत्याग्रह
(B) बारदोली सत्याग्रह
(C) चंपारण सत्याग्रह
(D) नमक सत्याग्रह

244. सूरत अधिवेशन (1907) में उदारवादियों और उग्रवादियों के बीच विवाद का मुख्य बिंदु किसके इर्द-गिर्द केंद्रित था:
(A) भारत का विभाजन।
(B) महात्मा गांधी का नेतृत्व।
(C) प्रथम विश्व युद्ध में भागीदारी।
(D) स्वतंत्रता संग्राम में प्रयुक्त होने वाली विधियां और आंदोलन के लक्ष्य।

245. निम्नलिखित में से कौन भारत का एक प्रमुख क्रांतिकारी था जो अंग्रेजों द्वारा शहीद किया गया था?
(A) गोपाल कृष्ण गोखले
(B) दादाभाई नौरोजी
(C) भगत सिंह
(D) जवाहरलाल नेहरु

246. 1942 का क्रिप्स मिशन असफल रहा क्योंकि:
(A) इसने भारत के विभाजन का प्रस्ताव रखा था, जिसे कांग्रेस ने अस्वीकार कर दिया।
(B) इसने पूर्ण स्वतंत्रता के स्थान पर युद्ध के पश्चात केवल अधिराज्य के दर्जे की पेशकश की थी।
(C) मुस्लिम लीग से परामर्श नहीं किया गया था।

293. गांधी द्वारा उन किसानों के समर्थन में कौन सा सत्याग्रह प्रारंभ किया गया था जिनकी फसलें नष्ट हो गई थीं और जो राजस्व छूट की मांग कर रहे थे?
(A) चंपारण सत्याग्रह
(B) बारदोली सत्याग्रह
(C) खेड़ा सत्याग्रह
(D) वायकॉम सत्याग्रह

294. राष्ट्रवाद का उग्रवादी चरण निम्नलिखित सभी से संबद्ध है, सिवाय:
(A) लोगों को संगठित करने के लिए गणपति उत्सव जैसे धार्मिक उत्सवों का प्रयोग।
(B) 'प्रार्थना, याचिका और विरोध' की पद्धति।
(C) अंतिम लक्ष्य के रूप में 'स्वराज' का आह्वान।
(D) राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देना और ब्रिटिश विद्यालयों का बहिष्कार।

295. भारत और विदेशों में क्रांतिकारियों का योगदान महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने:
(A) सत्ता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण का मार्ग प्रशस्त किया।
(B) कांग्रेस के उदारवादी नेताओं द्वारा पूर्णतः समर्थित और अनुमोदित किया गया था।
(C) संपूर्ण भारत में एक समानांतर सरकार स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।
(D) प्रतिरोध की भावना को जीवित रखा और अनगिनत युवाओं को प्रेरित किया।

296. भारत में महात्मा गांधी की पहली बड़ी सार्वजनिक उपस्थिति और भाषण किस विश्वविद्यालय के उद्घाटन के अवसर पर हुआ था?
(A) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
(B) कलकत्ता विश्वविद्यालय
(C) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
(D) मद्रास विश्वविद्यालय

297. भारत में वामपंथी राजनीति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसने राष्ट्रवादी विमर्श में समाजवाद और साम्यवाद की विचारधारा को सम्मिलित किया।
2. यह पूर्णतः शहरी औद्योगिक श्रमिकों पर केंद्रित था और किसानों की उपेक्षा की।
3. वामपंथी समूहों के कभी-कभी मुख्यधारा के कांग्रेस आंदोलन के साथ गंभीर वैचारिक संघर्ष होते थे।

उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

298. 1940 के दशक में सांप्रदायिक राजनीति के विकास का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम क्या था:
(A) ब्रिटिश भारत का भारत और पाकिस्तान में विभाजन
(B) लखनऊ समझौता
(C) संविधान सभा का गठन
(D) भारत छोड़ो आंदोलन

299. विलय पत्र वह विधिक दस्तावेज था जिसके द्वारा:
(A) भारत को ब्रिटेन से स्वतंत्रता मिली।
(B) भारत के संविधान को अपनाया गया।
(C) राज्यों को भाषाई आधार पर पुनर्गठित किया गया।
(D) रियासतों के शासक भारत या पाकिस्तान के अधिराज्य में सम्मिलित होने के लिए सहमत हुए।

300. 1962 का भारत-चीन युद्ध भारत की विदेश नीति के लिए एक बड़ा आघात था और इसने किसके नेतृत्व पर संकट उत्पन्न कर दिया:
(A) सरदार वल्लभभाई पटेल
(B) जवाहरलाल नेहरू
(C) लाल बहादुर शास्त्री
(D) इंदिरा गांधी

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) ब्रिटिश प्रशासन द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप का प्रशासनिक और राजनीतिक एकीकरण।
ब्रिटिश शासन ने भारत में सर्वप्रथम एक समान विधिक और प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की। रेलवे, डाक तथा टेलीग्राफ के विस्तार ने भौगोलिक दूरियों को कम कर संचार सुगम बनाया। इस एकीकरण ने विभिन्न क्षेत्रों के नागरिकों में सामूहिक पहचान और एकता की भावना जाग्रत की। इसी सुदृढ़ राजनीतिक आधार ने आधुनिक राष्ट्रवादी चेतना के विकास और प्रसार के लिए उपयुक्त मंच प्रदान किया।

2. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
भारतीय राष्ट्रवाद का प्रारंभिक नेतृत्व मुख्य रूप से पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग ने किया। इसमें अधिवक्ता, चिकित्सक और शिक्षक सम्मिलित थे, जिन्होंने आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाया। इसके विपरीत, अधिकांश पारंपरिक जमींदार वर्ग अपनी सुख-सुविधाओं को सुरक्षित रखने हेतु ब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठावान बने रहे। अतः यह शिक्षित मध्यम वर्ग ही भारतीय राष्ट्रवादी चेतना का वास्तविक अग्रदूत और वैचारिक आधार सिद्ध हुआ।

3. (C) यह प्रारंभ से ही पूर्णतः एकीकृत और सुव्यवस्थित राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम था।
1857 का विद्रोह एक आकस्मिक सैनिक विद्रोह के रूप में प्रारंभ हुआ, जो कालांतर में नागरिक क्षेत्रों तक विस्तृत हो गया। यद्यपि इसमें विभिन्न सामाजिक वर्गों ने सहभागिता की, किंतु यह पूर्णतः संगठित अथवा एकीकृत राष्ट्रीय आंदोलन नहीं था। विद्रोहियों के पास स्पष्ट भविष्योन्मुखी योजना और अखिल भारतीय नेतृत्व का अभाव था। अधिकांश प्रतिभागी केवल स्थानीय शिकायतों और क्षेत्रीय हितों की रक्षा हेतु संघर्षरत थे।

4. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1857 के विद्रोह के तात्कालिक कारणों में एनफील्ड राइफल के कारतूसों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इन कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी के प्रयोग की सूचना से सैनिकों में तीव्र रोष व्याप्त हो गया। कारतूसों को मुख से खोलना धार्मिक मान्यताओं पर प्रहार माना गया। इस धार्मिक असंतोष ने सैनिकों के वर्षों से संचित आक्रोश को एक व्यापक और तीव्र सशस्त्र विद्रोह में परिवर्तित कर दिया।

5. (C) भारतीय प्रशासन का ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश राजमुकुट (क्राउन) को हस्तांतरण।
1857 के विद्रोह के पश्चात ब्रिटिश सरकार ने भारत के शासन ढांचे में आमूल-चूल परिवर्तन किए। 1858 के अधिनियम द्वारा भारत का प्रशासन ईस्ट इंडिया कंपनी से छीनकर सीधे ब्रिटिश राजमुकुट को हस्तांतरित कर दिया गया। इस परिवर्तन का मुख्य उद्देश्य कंपनी के कुशासन को समाप्त कर अधिक सुव्यवस्थित औपनिवेशिक नियंत्रण स्थापित करना था। इसी समय गवर्नर-जनरल का पद वायसराय के रूप में परिवर्तित हुआ।

6. (B) बखत खान - बरेली
1857 के संघर्ष के दौरान बखत खान एक प्रखर सैन्य नेता के रूप में उभरे। वे मूल रूप से बरेली से संबंधित थे, जहाँ उन्होंने विद्रोही सैनिकों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। कालांतर में वे दिल्ली पहुँचे और मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर की ओर से विद्रोही सेना की कमान संभाली। ब्रिटिश सेना में सूबेदार के रूप में उनका दीर्घकालीन अनुभव विद्रोह के दौरान उनकी रणनीतिक क्षमताओं में सहायक सिद्ध हुआ।

7. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
मंगल पांडे ने बैरकपुर में सैन्य विद्रोह का सूत्रपात किया, जबकि लक्ष्मीबाई ने झांसी में ब्रिटिश सेना का वीरतापूर्वक सामना किया। मौलवी अहमद उल्ला ने फैजाबाद क्षेत्र में विद्रोहियों को संगठित कर ब्रिटिश अधिकारियों को कड़ी चुनौती दी। बखत खान ने दिल्ली में विद्रोही सेना के सेनापति के रूप में दायित्व निभाया। यह सूची 1857 के महान नायकों और उनके विशिष्ट कार्यक्षेत्रों के समन्वय को प्रदर्शित करती है।

8. (A) विद्रोहियों के पक्ष में शिक्षित मध्यम वर्ग की सक्रिय भागीदारी।
1857 के विद्रोह की विफलता का मुख्य कारण शिक्षित मध्यम वर्ग की सक्रिय भागीदारी का अभाव था। इस वर्ग ने विद्रोह को पिछड़ापन मानकर अंग्रेजों के प्रति निष्ठा बनाए रखी। इसके अतिरिक्त, विद्रोहियों के पास आधुनिक शस्त्रों और संचार साधनों की भारी कमी थी। नेतृत्व में समन्वय का अभाव और विद्रोह का राष्ट्रव्यापी विस्तार न होना भी ब्रिटिश सत्ता की विजय के महत्वपूर्ण कारण सिद्ध हुए।

9. (C) पंजाब
कूका विद्रोह का प्रारंभ पंजाब में एक धार्मिक सुधार आंदोलन के रूप में हुआ था, जिसका नेतृत्व बाबा राम सिंह ने किया। इसका प्राथमिक उद्देश्य सिख धर्म की कुरीतियों को दूर कर उसे शुद्ध बनाना था। समय के साथ यह आंदोलन राजनीतिक स्वरूप धारण कर गया, जिसका लक्ष्य पंजाब से ब्रिटिश शासन को समाप्त करना था। विद्रोहियों ने विदेशी वस्तुओं के पूर्ण बहिष्कार और स्वदेशी अपनाने पर बल दिया।

10. (D) 1, 2, और 3
ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रारंभिक विद्रोह विविध कारणों से प्रेरित थे। कूका विद्रोह ने पंजाब में सिख संप्रभुता की पुनर्स्थापना का प्रयास किया। उत्तर-पूर्व में अहोम विद्रोह ब्रिटिश विस्तारवाद के विरुद्ध स्थानीय राजकुमारों का संघर्ष था। नागा विद्रोह प्रशासनिक नियंत्रण और सामाजिक हस्तक्षेप के विरुद्ध

जनजातीय प्रतिक्रिया थी। ये सभी आंदोलन स्थानीय स्तर पर केंद्रित थे, जिन्होंने प्रारंभिक काल में औपनिवेशिक सत्ता को गंभीर चुनौतियां प्रदान कीं।

11. (D) वासुदेव बलवंत फड़के
ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह संगठित करने वाले वासुदेव बलवंत फड़के को भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का जनक माना जाता है। उन्होंने महाराष्ट्र में रामोसी, कोली और भील समुदायों को संगठित कर एक विद्रोही सेना निर्मित की। उनका ध्येय भारत में एक लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना करना था। उन्होंने संचार व्यवस्था को बाधित कर और सरकारी खजानों को लूटकर औपनिवेशिक सरकार को चुनौती दी, जिसके कारण उन्हें निर्वासित किया गया।

12. (B) ब्रह्मपुत्र घाटी और सिलहट को जोड़ने वाली खासी पहाड़ियों के माध्यम से ब्रिटिश सड़क निर्माण।
असम और सिलहट के मध्य सड़क निर्माण की ब्रिटिश योजना ने खासी पहाड़ियों की जनजातीय स्वायत्तता में सीधा हस्तक्षेप किया। इस कार्य हेतु स्थानीय नागरिकों से बलात श्रम कराया गया, जिससे समुदायों में तीव्र आक्रोश फैल गया। यू तिरोत सिंह के नेतृत्व में खासी योद्धाओं ने छापामार युद्ध द्वारा अंग्रेजों का कड़ा विरोध किया। यह विद्रोह मुख्य रूप से अपनी पैतृक भूमि और जीवन पद्धति की रक्षा हेतु था।

13. (A) 4, 2, 1, 3
भारत में जनजातीय विद्रोहों का कालक्रम औपनिवेशिक विस्तार से संबद्ध है। अहोम विद्रोह 1828 में असम के विलय के विरुद्ध प्रारंभ हुआ। इसके पश्चात 1831 में छोटा नागपुर में कोल विद्रोह हुआ। संथाल विद्रोह 1855 में जमींदारी शोषण के विरुद्ध एक व्यापक संघर्ष था। अंततः 1899 में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में मुंडा विद्रोह हुआ। यह कालक्रम आदिवासी चेतना और प्रतिरोध के क्रमिक विकास को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

14. (D) बिरसा मुंडा
छोटा नागपुर क्षेत्र में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुआ मुंडा विद्रोह आदिवासी प्रतिरोध का अनुपम उदाहरण है। इसे 'उलगुलान' अथवा महान हलचल के रूप में जाना जाता है। इस आंदोलन का मुख्य ध्येय बाहरी शोषणकर्ताओं को निष्कासित कर मुंडा राज स्थापित करना था। बिरसा मुंडा ने सामाजिक सुधारों पर बल दिया और अपने अनुयायियों को पारंपरिक धार्मिक विश्वासों की ओर लौटने और नैतिक जीवन जीने हेतु प्रेरित किया।

15. (A) भील विद्रोह - वासुदेव बलवंत फड़के
भील विद्रोह मुख्य रूप से खानदेश क्षेत्र में हुआ, जिसका नेतृत्व स्थानीय नेताओं ने किया था। वासुदेव बलवंत फड़के का संबंध रामोसी विद्रोह से था। अन्य विकल्पों में, सिद्धू और कान्हू ने संथालों का नेतृत्व किया, जबकि दिगंबर और विष्णु विश्वास ने बंगाल के नील विद्रोह का संचालन किया। पाबना आंदोलन के मुख्य प्रवर्तक ईशान चंद्र राय थे, जिन्होंने किसानों को उनके विधिक अधिकारों के लिए संगठित किया।

16. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1859 में बंगाल के किसानों ने यूरोपीय बागान स्वामियों द्वारा नील की बलात खेती के विरुद्ध विद्रोह किया। यह आंदोलन अपनी अटूट एकता और विधिक संघर्ष के लिए विख्यात रहा। किसानों की दृढ़ता के फलस्वरूप सरकार को नील आयोग गठित करना पड़ा। आयोग ने स्वीकार किया कि किसानों को नील उत्पादन हेतु विवश नहीं किया जा सकता। इस विजय ने भारतीय किसान आंदोलनों को भविष्य हेतु एक प्रभावी मॉडल प्रदान किया।

17. (B) जमींदारों की दमनकारी प्रथाएं।
बंगाल के पाबना जिले में किसानों ने जमींदारों द्वारा आरोपित अवैध लगान और उनके दमनकारी व्यवहार के विरुद्ध आंदोलन किया। किसानों ने 'किसान लीग' गठित कर न्यायालयों में विधिक संघर्ष किया। इस आंदोलन की विशिष्टता यह थी कि यह अहिंसक था और किसानों ने ब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठा जताते हुए केवल न्याय की मांग की। इसके परिणामस्वरूप 1885 में ऐतिहासिक बंगाल किरायेदारी अधिनियम पारित किया गया।

18. (A) शोषणकारी तिनकठिया पद्धति।
बिहार के चंपारण में किसानों को अपनी भूमि के 3/20 भाग पर अनिवार्य रूप से नील की खेती करनी पड़ती थी, जिसे तिनकठिया पद्धति कहा जाता था। अंतरराष्ट्रीय मूल्यों में गिरावट के कारण बागान स्वामी किसानों से अवैध कर वसूल रहे थे। राजकुमार शुक्ल के आमंत्रण पर महात्मा गांधी वहां पहुँचे और सत्याग्रह द्वारा इस शोषणकारी व्यवस्था का अंत किया। यह भारत में गांधीजी का प्रथम सफल अहिंसक आंदोलन था।

19. (C) फसल नष्ट होने के कारण राजस्व में छूट की मांग करने वाले किसान।
गुजरात के खेड़ा जिले में 1918 में भीषण अकाल से फसलें पूर्णतः नष्ट हो गई थीं। राजस्व नियमों के अनुसार ऐसी स्थिति में कर माफ होना चाहिए था, किंतु अधिकारी कर वसूली पर अडिग थे। गांधीजी के नेतृत्व में किसानों ने लगान न देने का सत्याग्रह प्रारंभ किया। अंततः सरकार को झुकना पड़ा और केवल सक्षम किसानों से ही कर लेने का आदेश जारी हुआ। इसने किसानों में आत्मविश्वास भरा।

20. (D) यह सरकार द्वारा भू-राजस्व में मनमानी वृद्धि के विरुद्ध विरोध था।
बारदोली में सरकार ने भू-राजस्व में लगभग 22 प्रतिशत की मनमानी वृद्धि कर दी थी। सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में किसानों ने इस वृद्धि के विरुद्ध अहिंसक सत्याग्रह प्रारंभ किया। महिलाओं ने भी इस आंदोलन में सक्रिय सहभागिता की और पटेल को 'सरदार' की उपाधि प्रदान की। आंदोलन की अपार सफलता के पश्चात सरकार को कर वृद्धि वापस लेनी पड़ी। इससे पटेल की नेतृत्व क्षमता वैश्विक स्तर पर स्थापित हुई।

में धर्म आधारित ध्रुवीकरण को अपने सबसे हिंसक रूप में प्रदर्शित किया।

61. (C) विलय पत्र (इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन)
सरदार पटेल ने रियासतों के एकीकरण हेतु 'विलय पत्र' का प्रयोग एक मुख्य विधिक उपकरण के रूप में किया। इसके अंतर्गत रियासतों के शासकों को रक्षा, विदेश मामले और संचार के विषय भारत सरकार को सौंपने थे। पटेल ने कूटनीतिक दबाव और जहाँ आवश्यक हुआ, वहां सैन्य बल की चेतावनी का प्रयोग किया। इस प्रक्रिया ने जटिल भौगोलिक स्थितियों को सुलझाया और बिखरे हुए भारत को एक सुदृढ़ और एकीकृत राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

62. (D) 'धन के निष्कासन' (ड्रेन ऑफ वेल्थ) का सिद्धांत
दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रतिपादित 'धन के निष्कासन' के सिद्धांत ने भारतीयों को यह समझने में सहायता की कि ब्रिटिश शासन कैसे भारत की संपदा को निरंतर ब्रिटेन भेज रहा है। इस अवधारणा ने सिद्ध किया कि भारत की निर्धनता का मुख्य कारण प्राकृतिक नहीं, बल्कि औपनिवेशिक शोषण है। इस आर्थिक आलोचना ने शिक्षित वर्ग में गहरे असंतोष को जन्म दिया और राष्ट्रवाद को एक तर्कसंगत आधार प्रदान किया। इसी आधार पर स्वदेशी और बहिष्कार जैसे भविष्य के आंदोलनों की नींव रखी गई।

63. (A) जमींदार और साहूकार (दिकु)
संथाल विद्रोह मुख्य रूप से उन बाहरी शोषणकर्ताओं के विरुद्ध था जिन्होंने संथालों की पारंपरिक भूमि और सामाजिक व्यवस्था में अनुचित हस्तक्षेप किया था। इन बाहरी लोगों को वे 'दिकु' कहते थे, जिनमें भ्रष्ट जमींदार और साहूकार सम्मिलित थे। ब्रिटिश प्रशासन ने इन शोषकों का पक्ष लिया और नवीन राजस्व प्रणाली लागू की जिससे संथाल भारी ऋण में निमग्न हो गए। सिद्धू और कान्हू के नेतृत्व में आदिवासियों ने अपनी अस्मिता और भूमि की रक्षा हेतु एक व्यापक प्रतिरोध प्रारंभ किया।

64. (B) नाना साहब
तात्या टोपे 1857 के विद्रोह के दौरान नाना साहब के विश्वासपात्र और उनकी सेना के सेनापति थे। उन्होंने कानपुर के पतन के पश्चात विद्रोह को जीवंत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नाना साहब के नेपाल गमन के बाद भी तात्या टोपे ने संघर्ष जारी रखा और लक्ष्मीबाई की सहायता हेतु ग्वालियर पहुँचे। उनकी छापामार युद्ध तकनीक ने अंग्रेजों को दीर्घकाल तक संशय में रखा। वे विद्रोह के उन अंतिम नायकों में से थे जिन्हें अंग्रेजों ने बड़ी कठिनाई से बंदी बनाकर फांसी दी।

65. (B) प्रथम आंग्ल-बर्मी युद्ध
प्रथम आंग्ल-बर्मी युद्ध के दौरान अंग्रेजों ने असम से हटने का वचन दिया था, किंतु विजय पश्चात उन्होंने इसे अपने साम्राज्य में विलीन कर लिया। इस विश्वासघात के कारण अहोम राजकुमार गोमधर कोंवर के नेतृत्व में 1828 में विद्रोह प्रारंभ हुआ। अहोम अभिजात वर्ग अपनी लुप्त संप्रभुता और अधिकारों को पुनः प्राप्त करना चाहता था। यद्यपि इस विद्रोह को सैन्य बल से दमित कर दिया गया, किंतु इसने उत्तर-पूर्व में औपनिवेशिक शासन के प्रति प्रारंभिक और गहरे असंतोष को उजागर किया।

66. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बारदोली सत्याग्रह ने सिद्ध किया कि शांतिपूर्ण जन आंदोलन द्वारा एक शक्तिशाली सरकार को भी विवश किया जा सकता है। सरदार पटेल के कुशल संगठन ने न केवल किसानों की आर्थिक मांगें पूर्ण कराईं, अपितु उन्हें राष्ट्रीय राजनीति की मुख्यधारा से भी संबद्ध किया। इस आंदोलन की सफलता ने पटेल को राष्ट्रीय स्तर पर एक सुदृढ़ नेता के रूप में प्रतिष्ठित किया। इसने भविष्य के सविनय अवज्ञा आंदोलनों हेतु एक ठोस आधार और आत्मविश्वास प्रदान किया, जो अहिंसा की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

67. (C) (A) और (B) दोनों।
1907 का सूरत विभाजन वैचारिक और संगठनात्मक दोनों स्तरों पर उपजे तीव्र तनाव का परिणाम था। उदारवादी और उग्रवादी गुट स्वदेशी आंदोलन की रणनीतियों पर असहमत थे; उग्रवादी इसे अखिल भारतीय स्वरूप देना चाहते थे जबकि उदारवादी इसे केवल बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे। इसके साथ ही, आगामी अध्यक्ष के चयन को लेकर भी तीखा संघर्ष हुआ। इन दोनों कारणों ने मिलकर कांग्रेस को दो पृथक रास्तों पर चलने हेतु विवश कर दिया, जिससे राष्ट्रीय आंदोलन को तात्कालिक क्षति पहुँची।

68. (D) वी.डी. सावरकर और उनके भाई
'अभिनव भारत' की स्थापना 1904 में विनायक दामोदर सावरकर और उनके भाई गणेश सावरकर ने की थी। यह एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन था जो इटली के 'यंग इटली' आंदोलन से प्रेरित था। इसका मुख्य ध्येय सशस्त्र विद्रोह द्वारा भारत से ब्रिटिश शासन को समाप्त करना था। संगठन के सदस्यों ने दमनकारी ब्रिटिश अधिकारियों के उन्मूलन की योजनाएं बनाईं और क्रांतिकारियों को शस्त्र एवं वैचारिक साहित्य उपलब्ध कराया। इसने महाराष्ट्र के युवाओं में देशभक्ति और सर्वोच्च बलिदान की तीव्र भावना जाग्रत की।

69. (D) 1, 2, और 3
गांधीवादी आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के स्वरूप को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। असहयोग आंदोलन ने प्रथम बार जनता को अहिंसक प्रतिरोध हेतु व्यापक स्तर पर संगठित किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन ने नमक कानून के उल्लंघन द्वारा ब्रिटिश सत्ता की नैतिकता को चुनौती दी। भारत छोड़ो आंदोलन ने ब्रिटिश शासन की समाप्ति हेतु "करो या मरो" का स्पष्ट उद्घोष किया। ये तीनों आंदोलन गांधीवादी रणनीति के विभिन्न सोपानों को प्रदर्शित करते हैं जिन्होंने क्रमशः ब्रिटिश शासन की जड़ों को निर्बल किया।

70. (B) ब्रिटिश सरकार की औद्योगिक नीति
भारत में वामपंथ का उदय ब्रिटिश सरकार की किसी उदार नीति के कारण नहीं, अपितु उसके आर्थिक शोषण के विरोध में हुआ। रूसी क्रांति की सफलता ने वैश्विक स्तर पर समाजवाद का

31. (A) चंपारण सत्याग्रह
दक्षिण अफ्रीका से प्रत्यावर्तन के पश्चात गांधीजी ने भारत में अपनी राजनीतिक सक्रियता का प्रारंभ 1917 के चंपारण सत्याग्रह से किया। उन्होंने यहां नील किसानों की पीड़ा निवारण हेतु अहिंसक प्रतिरोध और सत्याग्रह का प्रथम सफल प्रयोग किया। इस आंदोलन ने गांधीजी को भारतीय राजनीति के केंद्र में स्थापित किया और राष्ट्र के विभिन्न वर्गों को उनके नेतृत्व में एकजुट होने की प्रेरणा दी। यहीं से भारत में गांधीवादी जन आंदोलनों का उदय हुआ।

32. (B) सत्य और नैतिक बल पर आधारित अहिंसक विरोध।
गांधीवादी दर्शन में 'सत्याग्रह' का अर्थ सत्य की शक्ति पर अडिग रहकर अन्याय के विरुद्ध नैतिक संघर्ष करना है। यह केवल निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं, बल्कि आत्मिक बल का सक्रिय प्रयोग है जो शत्रु को शारीरिक क्षति पहुँचाए बिना उसका हृदय परिवर्तन करने का लक्ष्य रखता है। इसमें कष्ट सहने की क्षमता और अहिंसा के प्रति अटूट निष्ठा अनिवार्य है। सत्याग्रह ने निहत्थी जनता को एक शक्तिशाली साम्राज्य के विरुद्ध लड़ने की आत्मशक्ति दी।

33. (B) असहयोग आंदोलन
असहयोग आंदोलन अपने चरमोत्कर्ष पर था, जब 1922 में चौरी-चौरा में उग्र भीड़ ने एक पुलिस थाने को अग्नि के हवाले कर दिया। इस हिंसक घटना में कई पुलिसकर्मी हताहत हुए, जिससे गांधीजी अत्यंत व्यथित हुए। उनका मानना था कि राष्ट्र अभी पूर्ण अहिंसक संघर्ष हेतु प्रशिक्षित नहीं है। फलस्वरूप, उन्होंने तत्काल प्रभाव से आंदोलन वापस ले लिया। इस निर्णय ने अनेक राष्ट्रवादी नेताओं को स्तब्ध किया, किंतु गांधीजी ने नैतिकता को राजनीति से ऊपर रखा।

34. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सुभाष चंद्र बोस 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित हुए, किंतु गांधीजी और कार्यसमिति के साथ उनके तीव्र वैचारिक मतभेद उत्पन्न हुए। बोस त्वरित सशस्त्र संघर्ष के पक्षधर थे, जबकि गांधीजी अहिंसक रणनीति पर अडिग थे। इन मतभेदों के कारण प्रशासनिक गतिरोध उत्पन्न हुआ, जिसके फलस्वरूप बोस ने त्यागपत्र देकर फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन किया। यह घटना कांग्रेस के भीतर व्याप्त वैचारिक संघर्ष को स्पष्टता से प्रदर्शित करती है।

35. (C) कैप्टन मोहन सिंह
भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) की मूल परिकल्पना और प्रारंभिक स्थापना का श्रेय कैप्टन मोहन सिंह को प्राप्त है। उन्होंने जापान द्वारा बंदी बनाए गए भारतीय युद्धबंदियों को संगठित कर इस सैन्य बल का गठन किया। यद्यपि कालांतर में सुभाष चंद्र बोस ने इसका पुनर्गठन कर इसे एक अत्यंत शक्तिशाली और अनुशासित रूप प्रदान किया, किंतु इसकी नींव मोहन सिंह ने ही रखी थी। इस सेना का मुख्य ध्येय सशस्त्र संघर्ष द्वारा भारत को ब्रिटिश दासता से मुक्त करना था।

36. (D) 1917 की रूसी क्रांति का प्रभाव।
1917 की सफल रूसी समाजवादी क्रांति ने भारतीय राष्ट्रवादियों के एक बड़े वर्ग को प्रभावित किया। इस घटना ने यह विचार प्रसारित किया कि संगठित श्रमिक और किसान वर्ग एक शक्तिशाली साम्राज्यवादी शासन को पराजित कर सकते हैं। इसके पश्चात भारत में मार्क्सवादी और समाजवादी विचारधारा का व्यापक प्रसार हुआ। इस वैश्विक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नवीन सामाजिक-आर्थिक दृष्टि और वर्ग चेतना प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

37. (C) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना 1925 में कानपुर में हुई, जो भारत में संगठित वामपंथी आंदोलन का प्रस्थान बिंदु था। इसका उद्देश्य पूर्ण स्वतंत्रता के साथ एक समतावादी समाज की स्थापना करना था। पार्टी ने उपनिवेशवाद और सामंतवाद दोनों के विरुद्ध संघर्ष को एकीकृत करने का प्रयास किया। इसके नेताओं ने अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन से प्रेरणा प्राप्त की और मध्यम वर्ग के नेतृत्व वाले आंदोलनों के समानांतर एक क्रांतिकारी श्रमिक और किसान राजनीति विकसित की।

38. (B) उन्होंने औद्योगिक श्रमिकों और किसानों को वर्ग के आधार पर संगठित करने पर ध्यान केंद्रित किया।
वामपंथी संगठनों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता अपर्याप्त है, आर्थिक शोषण से मुक्ति भी अनिवार्य है। उन्होंने ट्रेड यूनियनों और किसान सभाओं द्वारा मजदूरों और किसानों को उनके अधिकारों हेतु जागरूक किया। उनके निरंतर दबाव के कारण ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने कार्यक्रमों में भूमि सुधार और श्रमिक कल्याण जैसे प्रगतिशील मुद्दों को प्राथमिकता देना प्रारंभ किया।

39. (D) अंग्रेजों की 'विभाजन करो और शासन करो' की नीति।
भारत में सांप्रदायिक राजनीति का उदय ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की एक सुनियोजित रणनीति का परिणाम था। अंग्रेजों ने अपनी सत्ता सुरक्षित रखने हेतु विभिन्न धार्मिक समुदायों के मध्य मतभेदों को निरंतर प्रोत्साहन दिया। उन्होंने एक समुदाय को दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने हेतु विशेष रियायतों और पृथक निर्वाचक मंडलों का सहारा लिया। इस नीति ने आपसी अविश्वास को गहरा किया, जिसने कालांतर में राष्ट्रीय एकता को खंडित कर सांप्रदायिक राजनीति को आधार प्रदान किया।

40. (A) 1906 में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का गठन।
1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना सांप्रदायिक राजनीति के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुई। इसे ब्रिटिश अधिकारियों के प्रोत्साहन से मुस्लिम अभिजात वर्ग के हितों की रक्षा हेतु निर्मित किया गया था। लीग ने प्रारंभ में ब्रिटिश सरकार के प्रति निष्ठा और पृथक राजनीतिक अधिकारों की मांग पर ध्यान केंद्रित किया। इसके गठन ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद के समक्ष एक सांप्रदायिक विकल्प प्रस्तुत किया, जिससे भविष्य में द्वि-राष्ट्र सिद्धांत सुदृढ़ हुआ।

21. (C) लोकप्रिय असंतोष के समाधान और संवाद के लिए एक 'सुरक्षा कपाट' (सेफ्टी वाल्व) प्रदान करना।
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का एक मुख्य उद्देश्य भारतीयों में राजनीतिक चेतना का विकास करना था। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, ए.ओ. ह्यूम ने इसे 'सुरक्षा कपाट' के रूप में प्रयुक्त किया ताकि जनता के बढ़ते आक्रोश को संवैधानिक मार्ग से व्यक्त किया जा सके। इससे अंग्रेजों को एक संभावित हिंसक विद्रोह को रोकने में सहायता मिली। कालांतर में यही मंच भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य केंद्र बना।

22. (B) उदारवादी
कांग्रेस के प्रारंभिक दो दशकों के नेतृत्व को उदारवादी कहा जाता है क्योंकि वे पूर्णतः संवैधानिक पद्धतियों में विश्वास रखते थे। दादाभाई नौरोजी और गोपाल कृष्ण गोखले जैसे नेताओं ने याचिकाओं और भाषणों द्वारा क्रमिक सुधारों की मांग की। उनका ध्येय ब्रिटिश शासन को समाप्त करना नहीं, बल्कि व्यवस्था में सुधार लाना था। वे ब्रिटिश न्यायप्रियता में अटूट विश्वास रखते थे और किसी भी तीव्र जन आंदोलन के पक्षधर नहीं थे।

23. (D) गोपाल कृष्ण गोखले
गोपाल कृष्ण गोखले कांग्रेस के उदारवादी गुट के प्रखर नेता और महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरु थे। वे सदैव संवैधानिक सुधारों और संतुलित विचारधारा के समर्थक रहे। इसके विपरीत, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल 'उग्रवादी' कहे जाते थे क्योंकि वे अधिक आक्रामक राजनीतिक दृष्टिकोण रखते थे। गोखले ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की तीखी आलोचना की, किंतु उनका मार्ग सदैव शांतिपूर्ण और विधिक मर्यादाओं में रहा।

24. (A) लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल
20वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रवाद में 'लाल-बाल-पाल' की तिकड़ी अत्यंत प्रभावशाली थी। इन नेताओं ने उदारवादियों की अनुनय-विनय की नीति को त्यागकर स्वराज और जन आंदोलन पर बल दिया। उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में स्वदेशी और बहिष्कार जैसे प्रभावी शस्त्रों को लोकप्रिय बनाया। उनके प्रयासों ने राष्ट्रीय आंदोलन को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की, जिससे स्वतंत्रता संग्राम का सामाजिक आधार अत्यंत विस्तृत हो गया।

25. (C) सूरत अधिवेशन, 1907
1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस के उदारवादी और उग्रवादी गुटों के मध्य मतभेद चरम पर पहुँच गए। मुख्य विवाद स्वदेशी आंदोलन के विस्तार और अधिवेशन के अध्यक्ष पद के निर्वाचन को लेकर था। उदारवादी गुट केवल संवैधानिक सुधारों के पक्ष में था, जबकि उग्रवादी इसे राष्ट्रव्यापी जन आंदोलन बनाना चाहते थे। इस ऐतिहासिक विभाजन ने राष्ट्रीय आंदोलन की गति को कुछ समय के लिए धीमा कर दिया।

26. (A) निष्क्रिय प्रतिरोध और आध्यात्मिक राष्ट्रवाद।
अरबिंदो घोष उग्रवादी राष्ट्रवाद के प्रमुख प्रस्तावक थे, जिन्होंने 'निष्क्रिय प्रतिरोध' का सिद्धांत प्रतिपादित किया। उनका मानना था कि भारतीयों को कर भुगतान और ब्रिटिश सेवाओं का बहिष्कार कर शासन को पंगु बनाना चाहिए। उन्होंने राष्ट्रवाद को एक आध्यात्मिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया। उनके लेख 'न्यू लैम्प्स फॉर ओल्ड' ने उदारवादी राजनीति की कड़ी आलोचना की। कालांतर में वे सक्रिय राजनीति त्यागकर आध्यात्मिक जीवन की ओर मुड़ गए।

27. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
अनुशीलन समिति बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र थी, जबकि गदर पार्टी की स्थापना सैन फ्रांसिस्को में लाला हरदयाल ने की। अभिनव भारत समाज की स्थापना सावरकर बंधुओं ने महाराष्ट्र में की और हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन उत्तर भारत में सक्रिय रहा। ये सभी संगठन सशस्त्र क्रांति द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु समर्पित थे। इन्होंने युवाओं को राष्ट्र हेतु सर्वोच्च बलिदान के लिए प्रेरित किया और ब्रिटिश सत्ता को कड़ी चुनौती दी।

28. (B) सशस्त्र संघर्ष और व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्यों के माध्यम से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने।
प्रारंभिक क्रांतिकारी संगठनों का मानना था कि अहिंसक मार्गों से पूर्ण स्वतंत्रता असंभव है। उन्होंने दमनकारी ब्रिटिश अधिकारियों के उन्मूलन और शस्त्रों हेतु डकैती जैसे साहसिक कार्यों द्वारा जनता में व्याप्त भय को समाप्त करने का प्रयास किया। उनका उद्देश्य युवाओं में देशभक्ति का संचार करना और ब्रिटिश सत्ता की अजेयता के भ्रम को तोड़ना था। यद्यपि ये आंदोलन व्यक्तिगत वीरता पर आधारित थे, किंतु इन्होंने राष्ट्रीय चेतना को प्रज्वलित किया।

29. (C) दादाभाई नौरोजी
दादाभाई नौरोजी कांग्रेस के उदारवादी चरण के अत्यंत प्रतिष्ठित नेता थे, जो संवैधानिक पद्धतियों में अटूट विश्वास रखते थे। उन्हें 'भारत के वयोवृद्ध पुरुष' कहा जाता था। इसके विपरीत, भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद और राम प्रसाद बिस्मिल क्रांतिकारी विचारधारा के समर्थक थे, जो सशस्त्र संघर्ष को अनिवार्य मानते थे। नौरोजी ने सदैव शांतिपूर्ण विरोध और विधिक सुधारों की वकालत की, जबकि क्रांतिकारी समूह औपनिवेशिक सत्ता को जड़ से उखाड़ने हेतु तत्पर थे।

30. (D) 1, 2, और 3
20वीं शताब्दी की क्रांतिकारी गतिविधियाँ अत्यंत सुसंगठित और साहसिक थीं। गदर पार्टी ने विदेशों से विद्रोह की रूपरेखा तैयार की, जबकि काकोरी कांड ने क्रांतिकारियों की रणनीतिक धन संचय योजना को प्रदर्शित किया। सूर्य सेन के नेतृत्व में चटगाँव शस्त्रागार छापा ब्रिटिश सत्ता पर एक व्यवस्थित सैन्य प्रहार का उत्कृष्ट उदाहरण था। इन घटनाओं ने सिद्ध किया कि भारतीय युवा स्वतंत्रता हेतु सर्वोच्च बलिदान देने को तत्पर थे, जिसने भविष्य को प्रेरित किया।

51. (D) 1, 2, और 3
भारतीय राष्ट्रवाद का उदय अनेक अंतर्संबंधित कारकों का सामूहिक परिणाम था। दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रतिपादित 'धन के निष्कासन' के सिद्धांत ने ब्रिटिश आर्थिक शोषण को उजागर किया। पाश्चात्य शिक्षा ने भारतीयों को आधुनिक राजनीतिक मूल्यों से परिचित कराया, जबकि इतिहास की गौरवशाली पुनर्व्याख्या ने आत्मविश्वास जाग्रत किया। इन तत्वों ने मिलकर एक ऐसी चेतना विकसित की जिसने बिखरे हुए समाज को एक राष्ट्र के रूप में संगठित होने और विदेशी शासन को चुनौती देने की शक्ति दी।

52. (D) लखनऊ और फैजाबाद
मौलवी अहमद उल्ला 1857 के विद्रोह के अत्यंत कुशल और दृढ़ नेताओं में से एक थे। उन्होंने फैजाबाद और लखनऊ क्षेत्रों में विद्रोह की ज्वाला प्रज्वलित की और ब्रिटिश सेना को कई बार पराजित किया। ब्रिटिश अधिकारी उन्हें 'अदम्य साहस का व्यक्ति' मानते थे और उन्हें बंदी बनाने हेतु भारी पुरस्कार की घोषणा की थी। उन्होंने विभिन्न धर्मावलंबियों को एकजुट कर प्रभावशाली छापामार युद्ध रणनीति अपनाई, जिसने अंग्रेजों को उत्तर भारत में निरंतर संकट में रखा।

53. (C) वासुदेव बलवंत फड़के का विद्रोह
वासुदेव बलवंत फड़के का विद्रोह विशुद्ध रूप से एक राजनीतिक विद्रोह था, जिसका उद्देश्य भारत में स्वतंत्र गणराज्य की स्थापना करना था। यह जनजातीय शिकायतों अथवा वन अधिकारों पर आधारित नहीं था, बल्कि ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध एक सशस्त्र राष्ट्रवादी आंदोलन था। इसके विपरीत, कोल, मुंडा और खासी विद्रोह प्रत्यक्ष रूप से आदिवासी समुदायों द्वारा उनके पारंपरिक जीवन और भूमि पर बाहरी हस्तक्षेप के विरोध में किए गए थे। फड़के का संघर्ष आधुनिक क्रांतिकारी गतिविधियों का प्रस्थान बिंदु है।

54. (A) 2, 3, 1, 4
गांधीवादी आंदोलनों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया थी जो 1917 के चंपारण सत्याग्रह से प्रारंभ हुई। इसके पश्चात 1918 में खेड़ा सत्याग्रह ने किसानों की समस्याओं को राष्ट्रीय पहचान दी। 1928 का बारदोली सत्याग्रह सरदार पटेल के नेतृत्व में एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ। अंततः, 1930 का नमक सत्याग्रह एक व्यापक जन आंदोलन के रूप में उभरा। यह कालक्रम दर्शाता है कि कैसे स्थानीय मुद्दों से प्रारंभ होकर गांधीवादी राजनीति धीरे-धीरे संपूर्ण राष्ट्र में व्याप्त हो गई।

55. (D) बहिष्कार और जन आंदोलन जैसे तरीकों के माध्यम से स्वराज की वकालत।
उग्रवादी राष्ट्रवादियों ने उदारवादियों की संवैधानिक प्रार्थनाओं की नीति को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया। उनका विश्वास था कि स्वतंत्रता भिक्षा से नहीं, अपितु शक्ति और संघर्ष से प्राप्त होती है। उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, स्वदेशी के प्रचार और राष्ट्रीय शिक्षा द्वारा ब्रिटिश शासन की नींव हिलाने का प्रयास किया। उनका मुख्य लक्ष्य स्वराज था और उन्होंने सामान्य जनता, विशेषकर युवाओं को सक्रिय रूप से राजनीतिक आंदोलन में सम्मिलित करने हेतु नवीन मार्ग विकसित किए।

56. (A) कांग्रेस के उदारवादी और उग्रवादी पक्षों के बीच बढ़ते मतभेद।
सूरत विभाजन का मुख्य कारण उदारवादी और उग्रवादी गुटों में स्वदेशी आंदोलन के विस्तार और संगठन के लक्ष्यों पर असहमति थी। उग्रवादी चाहते थे कि आंदोलन संपूर्ण राष्ट्र में विस्तृत हो और पूर्ण स्वराज मुख्य लक्ष्य हो, जबकि उदारवादी इसे केवल बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे। 1907 के अधिवेशन में अध्यक्ष पद के निर्वाचन को लेकर हुआ टकराव अंततः विभाजन का कारण बना। इस फूट ने ब्रिटिश सरकार को राष्ट्रवादी आंदोलन को दुर्बल करने का अवसर दिया।

57. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
बारदोली सत्याग्रह सरदार पटेल के कुशल नेतृत्व हेतु प्रसिद्ध है, जबकि गदर पार्टी की स्थापना लाला हरदयाल ने विदेशों में की। सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय राष्ट्रीय सेना का पुनर्गठन कर उसे प्रभावी सैन्य बल बनाया। पाबना किसान आंदोलन का नेतृत्व ईशान चंद्र राय ने किया, जिन्होंने बंगाल के किसानों को विधिक अधिकारों हेतु संगठित किया। इन आंदोलनों और उनके नायकों के मध्य यह संबंध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न आयामों और रणनीतियों को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

58. (A) सुभाष चंद्र बोस
1939 में कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन के पश्चात सुभाष चंद्र बोस ने गांधीजी और कार्यसमिति के साथ वैचारिक मतभेदों के कारण अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। इसके तुरंत बाद उन्होंने कांग्रेस के भीतर ही 'फॉरवर्ड ब्लॉक' नामक नवीन राजनीतिक दल का गठन किया। उनका उद्देश्य राष्ट्रवाद की अधिक प्रगतिशील और क्रांतिकारी विचारधारा को प्रोत्साहित करना था। उन्होंने जनता को संघर्ष हेतु सन्नद्ध करने और द्वितीय विश्व युद्ध की वैश्विक परिस्थितियों का लाभ उठाकर स्वतंत्रता प्राप्ति पर बल दिया।

59. (D) वे एकीकृत, स्वतंत्र भारत के प्रबल समर्थक थे और विभाजन का विरोध करते थे।
भारतीय वामपंथी संगठनों, विशेषकर कम्युनिस्टों ने विभाजन के प्रश्न पर एक विवादास्पद दृष्टिकोण अपनाया था। उन्होंने प्रारंभ में जातीय आत्मनिर्णय के अधिकार के आधार पर पाकिस्तान की मांग का सैद्धांतिक समर्थन किया, जो अन्य राष्ट्रवादी समूहों से भिन्न था। यद्यपि वे किसानों और श्रमिकों के अधिकारों हेतु समर्पित थे, किंतु उनकी इस नीति ने उन्हें मुख्यधारा के आंदोलन से कुछ सीमा तक पृथक कर दिया। वे निरंतर वर्ग संघर्ष में विश्वास रखते थे और कांग्रेस की नीतियों के आलोचक रहे।

60. (B) सांप्रदायिक हिंसा और विभाजन की मांग को प्रबलता।
1946 में कैबिनेट मिशन की विफलता के पश्चात मुस्लिम लीग ने 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' का आह्वान किया ताकि पाकिस्तान की मांग को विवशतापूर्वक मनवाया जा सके। इस घटना ने पूरे राष्ट्र में, विशेषकर कोलकाता में, भीषण सांप्रदायिक दंगों को जन्म दिया। इस व्यापक हिंसा ने हिंदू और मुस्लिम समुदायों के मध्य अविश्वास की खाई को इतना गहरा कर दिया कि विभाजन लगभग अपरिहार्य हो गया। इस त्रासदी ने भारतीय राजनीति

किया। उनके इस उद्घोष ने भारतीयों के मानस से ब्रिटिश शासन का भय निर्मूल किया और उन्हें अपने अधिकारों हेतु सक्रिय संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

80. (B) ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए भारतीय सैनिकों और प्रवासियों के बीच विद्रोह भड़काना।
गदर पार्टी जैसे संगठनों ने अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों का लाभ उठाकर भारत को स्वतंत्र कराने का लक्ष्य रखा था। उन्होंने अनुभव किया कि ब्रिटिश शासन को केवल बाहरी और आंतरिक सशस्त्र विद्रोह द्वारा ही निष्कासित किया जा सकता है। उन्होंने विदेशों में निवास कर रहे भारतीयों और ब्रिटिश सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों के मध्य क्रांतिकारी साहित्य वितरित किया। उनका मुख्य ध्येय प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत में एक व्यापक सशस्त्र विद्रोह को क्रियान्वित करना था, ताकि ब्रिटिश शक्ति की दुर्बलता का लाभ उठाया जा सके।

81. (B) अहमदाबाद मिल हड़ताल
1918 में अहमदाबाद के मिल श्रमिकों और स्वामियों के मध्य बोनस के प्रश्न पर तीव्र विवाद उत्पन्न हुआ था। गांधीजी ने श्रमिकों का समर्थन किया और उन्हें अहिंसक हड़ताल पर जाने हेतु प्रेरित किया। जब स्वामियों ने झुकने से मना कर दिया, तो गांधीजी ने प्रथम बार आमरण अनशन (भूख हड़ताल) को एक शक्तिशाली राजनीतिक शस्त्र के रूप में प्रयोग किया। उनके इस साहसी कदम ने मिल स्वामियों पर गहरा नैतिक दबाव बनाया, जिससे वे अंततः श्रमिकों की न्यायोचित मांगों को स्वीकार करने हेतु विवश हुए।

82. (A) मुंडा विद्रोह
'उलगुलान' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'महान हलचल' है और यह विशेषतः बिरसा मुंडा के नेतृत्व में 1899-1900 के मुंडा विद्रोह हेतु प्रयुक्त होता है। यह विद्रोह छोटा नागपुर क्षेत्र में आदिवासियों की भूमि और सांस्कृतिक स्वायत्तता की रक्षा हेतु किया गया था। बिरसा मुंडा ने इस आंदोलन द्वारा न केवल अंग्रेजों और बाहरी लोगों (दिकुओं) को चुनौती दी, अपितु मुंडा समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और कुरीतियों को दूर कर उन्हें एक नवीन धार्मिक एवं सामाजिक पहचान प्रदान करने का भी स्तुत्य प्रयास किया।

83. (C) मार्क्सवाद-लेनिनवाद
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई.) का वैचारिक आधार पूर्णतः मार्क्सवाद और लेनिनवाद के सिद्धांतों पर आधारित था। पार्टी का अटूट विश्वास था कि समाज का वास्तविक उत्थान उत्पादन के साधनों पर जनता के नियंत्रण और वर्ग संघर्ष द्वारा ही संभव है। उन्होंने रूसी क्रांति से प्रेरणा प्राप्त की और भारत में एक सर्वहारा क्रांति का स्वप्न देखा। उनका उद्देश्य औपनिवेशिक शासन को समाप्त करने के साथ ही पूंजीवादी व्यवस्था का अंत कर एक समाजवादी और समतावादी राष्ट्र का निर्माण करना था।

84. (D) भारतीय परिषद अधिनियम, 1909 (मॉर्ले-मिंटो सुधार)
1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधारों ने भारत में प्रथम बार धर्म के आधार पर पृथक निर्वाचक मंडल की व्यवस्था प्रारंभ की। इसके अंतर्गत मुस्लिम प्रत्याशियों हेतु केवल मुस्लिम मतदाता ही मतदान कर सकते थे। इस प्रावधान का मुख्य ध्येय भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को दुर्बल करना और सांप्रदायिक आधार पर समाज को विभाजित करना था। इसने 'विभाजन करो और शासन करो' की ब्रिटिश नीति को विधिक मान्यता प्रदान की, जिससे कालांतर में हिंदू और मुस्लिम समुदायों के मध्य राजनीतिक अविश्वास निरंतर बढ़ता गया।

85. (C) हैदराबाद
स्वतंत्रता पश्चात हैदराबाद के निजाम ने भारत में सम्मिलित होने से मना कर स्वतंत्र रहने का प्रयास किया। वहां रजाकारों द्वारा नागरिकों पर किए जा रहे अत्याचारों और अस्थिरता को देखते हुए भारत सरकार ने सैन्य कार्रवाई का निर्णय लिया। सितंबर 1948 में 'ऑपरेशन पोलो' नामक यह पुलिस कार्रवाई संचालित की गई। मात्र पांच दिवस के भीतर निजाम की सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया और हैदराबाद का आधिकारिक रूप से भारतीय संघ में विलय सुनिश्चित हुआ। इसने राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा और अखंडता को सुदृढ़ किया।

86. (B) भारत का वि-औद्योगीकरण और पारंपरिक कारीगरों एवं शिल्पकारों का विनाश।
ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के पारंपरिक सूती वस्त्र और हस्तशिल्प उद्योगों को पूर्णतः विनष्ट कर दिया। भारतीय उत्पादों पर भारी शुल्क आरोपित किया गया, जबकि ब्रिटिश मशीनी माल को बिना किसी बाधा के भारतीय बाजारों में बेचा गया। इसके फलस्वरूप करोड़ों कारीगर बेरोजगार हुए और कृषि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ गया। इस 'वि-औद्योगीकरण' ने भारतीयों को अनुभव कराया कि उनकी आर्थिक दुर्दशा का एकमात्र कारण विदेशी शासन है, जिसने राष्ट्रवाद और स्वदेशी की भावना को तीव्र गति प्रदान की।

87. (D) उन्होंने नई एनफील्ड राइफल के कारतूसों का प्रयोग करने से इनकार कर दिया था।
1857 के विद्रोह की तात्कालिक चिंगारी बैरकपुर छावनी में मंगल पांडे द्वारा प्रज्वलित की गई थी। उन्होंने नवीन एनफील्ड राइफल के उन कारतूसों का प्रयोग करने से मना कर दिया, जिन पर गाय और सुअर की चर्बी होने की सूचना प्रसारित हुई थी। जब उन्हें आदेश पालन हेतु विवश किया गया, तो उन्होंने अपने अधिकारियों पर प्रहार किया। उनकी इस वीरता और तत्पश्चात दी गई फांसी ने पूरे राष्ट्र के सैनिकों में तीव्र आक्रोश भर दिया, जिससे यह स्थानीय विरोध एक महान विप्लव बन गया।

88. (A) नागा विद्रोह - बंगाल
नागा विद्रोह मुख्य रूप से उत्तर-पूर्व भारत के नागा पहाड़ियों के क्षेत्र में हुआ था, न कि बंगाल में। यह विद्रोह ब्रिटिश प्रशासन द्वारा नागाओं के पारंपरिक जीवन और स्वायत्तता में किए गए हस्तक्षेप के विरुद्ध एक सुदीर्घ प्रतिरोध था। कूका विद्रोह पंजाब में सिख धर्म की शुद्धि हेतु था, अहोम विद्रोह असम में सक्रिय रहा और भील विद्रोह महाराष्ट्र के पहाड़ी क्षेत्रों में संचालित हुआ। ये विद्रोह औपनिवेशिक शासन के प्रति विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों की तीव्र क्षेत्रीय प्रतिक्रियाओं को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

आकर्षण बढ़ाया, जिससे भारतीय युवा भी प्रभावित हुए। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात भारत में उद्योगों के विस्तार से श्रमिक वर्ग की संख्या में वृद्धि हुई और उनकी समस्याओं ने ट्रेड यूनियनवाद को जन्म दिया। साथ ही, कांग्रेस के भीतर कुछ युवा नेताओं का गांधीवादी अहिंसा की सीमित सफलता से मोहभंग होना भी इसके प्रसार का कारण बना।

71. (D) लाहौर, 1940
मुस्लिम लीग के 1940 के लाहौर अधिवेशन में ऐतिहासिक 'पाकिस्तान प्रस्ताव' पारित किया गया। इस प्रस्ताव में आधिकारिक रूप से मांग की गई कि भारत के उत्तर-पश्चिम और पूर्वी क्षेत्रों के मुस्लिम बहुल प्रांतों को मिलाकर एक स्वतंत्र और संप्रभु राज्य निर्मित किया जाए। यह सांप्रदायिक राजनीति का एक निर्णायक मोड़ था, जहाँ लीग ने द्वि-राष्ट्र सिद्धांत को अपना अंतिम ध्येय घोषित कर दिया। इसके पश्चात कांग्रेस और लीग के मध्य किसी समझौते की संभावना क्षीण हो गई, जिससे विभाजन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

72. (A) स्वतंत्र भारत के लिए संविधान का मसौदा तैयार करना।
संविधान सभा का प्राथमिक और सर्वाधिक महत्वपूर्ण दायित्व एक ऐसे विधिक ढांचे का निर्माण करना था जो स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक आकांक्षाओं को पूर्ण कर सके। सभा के सदस्यों ने विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विषयों पर गहन विमर्श किया। उन्हें न केवल कानून निर्मित करने थे, अपितु भारत की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने हेतु मौलिक अधिकारों और नीति निर्देशक तत्वों को भी परिभाषित करना था। यह एक महान ऐतिहासिक प्रलेख तैयार करने की प्रक्रिया थी जिसने आधुनिक भारत की आधारशिला रखी।

73. (C) जवाहरलाल नेहरू
जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत की विदेश नीति के मुख्य शिल्पकार थे। उन्होंने अनुभव किया कि भारत को शीत युद्ध की प्रतिद्वंद्विता से पृथक रहकर अपने आंतरिक विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उनकी गुटनिरपेक्षता की नीति ने भारत को महाशक्ति गुटों के प्रभाव से सुरक्षित रखा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक स्वतंत्र स्वर प्रदान किया। नेहरू ने उपनिवेशवाद और रंगभेद के विरोध को भी भारत की नीति का अभिन्न अंग बनाया। उनके प्रयासों ने ही भारत को विकासशील देशों का एक प्रमुख और विश्वसनीय नेता बनाया।

74. (A) ईस्ट इंडिया कंपनी
बखत खान ने 1857 के विद्रोह में सम्मिलित होने से पूर्व ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में सूबेदार के रूप में लगभग चालीस वर्षों तक सेवा की थी। उन्होंने अफगान युद्धों में भी सहभागिता की थी, जिससे उन्हें आधुनिक सैन्य रणनीति और तोपखाने का व्यापक अनुभव प्राप्त हुआ। इसी सैन्य पृष्ठभूमि के कारण वे बरेली से विद्रोही सैनिकों को दिल्ली लाने और मुगल सम्राट की सेना को एक अनुशासित रूप प्रदान करने में सफल रहे। उनकी रणनीतिक कुशलता अंग्रेजों हेतु एक गंभीर सैन्य चुनौती सिद्ध हुई।

75. (D) प्रारंभिक ब्रिटिश इतिहासकारों का दृष्टिकोण
प्रारंभिक ब्रिटिश इतिहासकारों और औपनिवेशिक अधिकारियों ने 1857 की घटनाओं को केवल एक 'सिपाही विद्रोह' के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया। उनके अनुसार, यह विद्रोह मात्र चर्बी वाले कारतूसों के विषय पर कुछ असंतुष्ट सैनिकों तक सीमित था और इसमें कोई व्यापक जन समर्थन निहित नहीं था। यह संकुचित दृष्टिकोण विद्रोह के गहरे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कारणों की अवहेलना करता है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्रोह के राष्ट्रीय महत्व को कम करना और ब्रिटिश शासन की स्थिरता एवं वैधता को सिद्ध करना था।

76. (B) भारत में क्रांतिकारी आंदोलन का अग्रदूत।
वासुदेव बलवंत फड़के को अनेक इतिहासकारों द्वारा भारतीय क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का जनक माना जाता है। उन्होंने अनुभव किया कि केवल शांतिपूर्ण विरोध से ब्रिटिश शासन को हटाना दुष्कर है, अतः उन्होंने एक सशस्त्र गुप्त सेना संगठित की। उनका विद्रोह 1857 के पश्चात प्रथम ऐसा सुसंगठित प्रयास था जिसने सीधे तौर पर एक स्वतंत्र गणराज्य की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित किया। यद्यपि वे असफल रहे, किंतु उनके साहसी प्रयासों ने भविष्य के क्रांतिकारियों को प्रेरित किया और सशस्त्र प्रतिरोध की एक नवीन परंपरा का सूत्रपात किया।

77. (C) उनकी भूमि के 3/20 भाग पर।
चंपारण में प्रचलित तिनकठिया पद्धति के अनुसार प्रत्येक किसान को अपनी प्रति बीघा भूमि के तीन हिस्सों (अर्थात 3/20 भाग) पर अनिवार्य रूप से नील की खेती करनी पड़ती थी। यह व्यवस्था पूर्णतः यूरोपीय बागान स्वामियों के हितों के अनुकूल और किसानों हेतु अत्यंत शोषणकारी थी। किसानों को नील के बदले अत्यंत अल्प मूल्य प्राप्त होता था और भूमि की उर्वरता भी क्षीण हो जाती थी। महात्मा गांधी ने इसी दमनकारी व्यवस्था के विरुद्ध भारत में अपना प्रथम सफल सत्याग्रह आंदोलन संचालित किया था।

78. (D) उन्हें ब्रिटिश न्यायप्रियता और निष्पक्षता में अटूट विश्वास था।
उदारवादी नेताओं का अटूट विश्वास था कि अंग्रेज मूलतः न्यायप्रिय हैं और वे भारत के उत्थान हेतु कार्य करना चाहते हैं। उनका विचार था कि अंग्रेजों को भारत की वास्तविक विषम परिस्थितियों और समस्याओं का पूर्ण ज्ञान नहीं है, अतः वे याचिकाओं और भाषणों द्वारा उन्हें जागरूक करना चाहते थे। वे ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत ही रहकर क्रमिक संवैधानिक सुधारों की मांग करते थे। उनका मानना था कि ब्रिटेन के साथ निरंतर जुड़ाव भारत के आधुनिकीकरण और सर्वांगीण विकास हेतु लाभदायक और अनिवार्य है।

79. (A) बाल गंगाधर तिलक
बाल गंगाधर तिलक ने "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा" का प्रभावशाली नारा प्रदान कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नवीन ऊर्जा का संचार किया। वे कांग्रेस के उग्रवादी चरण के सर्वाधिक प्रखर नेता थे जिन्होंने स्वराज को जन-जन का अंतिम ध्येय बनाया। उन्होंने गणपति और शिवाजी उत्सवों के माध्यम से नागरिकों को सांस्कृतिक रूप से एकीकृत

41. (C) यह पूर्णतः हिंदुओं और मुस्लिमों के बीच अंतर्निहित और प्राचीन शत्रुता का परिणाम था।
भारत का विभाजन कोई प्राचीन अथवा ऐतिहासिक रूप से अनिवार्य घटना नहीं थी। यह आधुनिक युग की राजनीतिक परिस्थितियों, ब्रिटिश स्वार्थों और सांप्रदायिक विचारधारा के प्रसार का एक जटिल परिणाम था। हिंदू और मुस्लिम समुदाय सदियों से सांस्कृतिक समन्वय के साथ रहते आए थे। विभाजन का मुख्य कारण राजनीतिक सत्ता का संघर्ष और पृथक निर्वाचक मंडल जैसी औपनिवेशिक नीतियां थीं। प्राचीन शत्रुता का दावा एक ऐतिहासिक भ्रम मात्र है।

42. (A) 500 से अधिक रियासतों का भारतीय संघ में एकीकरण।
स्वतंत्रता के तत्काल पश्चात भारत के समक्ष भौगोलिक और राजनीतिक एकता बनाए रखने की विकट चुनौती थी। ब्रिटिश शासन के अंत पर 500 से अधिक रियासतों को भारत, पाकिस्तान में सम्मिलित होने अथवा स्वतंत्र रहने का विकल्प दिया गया था। यह स्थिति राष्ट्र के विखंडन का गंभीर संकट पैदा कर रही थी। सरदार पटेल के कुशल कूटनीतिक प्रयासों और दृढ़ संकल्प ने इन विविध राज्यों को एकीकृत कर आधुनिक अखंड भारत का निर्माण किया।

43. (D) राज्य के शासक का भारत या पाकिस्तान किसी में भी सम्मिलित होने में हिचकिचाहट।
कश्मीर समस्या की जड़ें 1947 के विलय के समय की अनिश्चितता में निहित हैं। महाराजा हरि सिंह ने प्रारंभ में किसी भी पक्ष में सम्मिलित न होकर कश्मीर को स्वतंत्र बनाए रखने का प्रयास किया। इस विलंब का लाभ उठाकर पाकिस्तान समर्थित कबीलाई हमलावरों ने आक्रमण कर दिया। ऐसी विषम स्थिति में महाराजा ने भारत से सैन्य सहायता की मांग की और विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस जटिल परिस्थिति ने एक दीर्घकालिक अंतरराष्ट्रीय विवाद को जन्म दिया।

44. (B) डॉ. बी.आर. अंबेडकर
डॉ. बी.आर. अंबेडकर भारतीय संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष थे, जिन्हें 'संविधान का जनक' कहा जाता है। उनके नेतृत्व में समिति ने वैश्विक संविधानों का अध्ययन कर भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल एक विस्तृत आलेख तैयार किया। अंबेडकर ने वंचित वर्गों और अल्पसंख्यकों के अधिकारों को सुनिश्चित करने हेतु विशेष प्रावधान किए। उनके प्रखर विधिक ज्ञान और सामाजिक दृष्टि ने भारत को एक न्यायपूर्ण और प्रगतिशील लोकतांत्रिक संविधान प्रदान करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

45. (B) नियोजित आर्थिक विकास और औद्योगीकरण प्राप्त करना।
स्वतंत्रता पश्चात भारत ने निर्धनता, बेरोजगारी और पिछड़ेपन के निवारण हेतु पंचवर्षीय योजनाओं का मार्ग चुना। इन योजनाओं का लक्ष्य सीमित राष्ट्रीय संसाधनों का कुशल आवंटन और संतुलित क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित करना था। सरकार ने बुनियादी ढांचे, सिंचाई और भारी उद्योगों में निवेश कर देश को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया। यह नियोजित विकास की एक ऐसी प्रणाली थी जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र को मुख्य भूमिका प्रदान की गई ताकि विकास का लाभ सर्वसाधारण तक पहुँचे।

46. (D) राज्य पुनर्गठन आयोग (फजल अली आयोग)
स्वतंत्रता पश्चात भाषाई आधार पर राज्यों की मांग तीव्र होने पर सरकार ने फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग नियुक्त किया। आयोग ने स्वीकार किया कि प्रशासनिक कुशलता के साथ भाषाई समानता भी राज्यों के गठन का आधार होनी चाहिए। इसी अनुशंसा पर 1956 में राज्य पुनर्गठन अधिनियम पारित हुआ। इसके परिणामस्वरूप भारत में 14 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों का गठन हुआ, जिससे क्षेत्रीय आकांक्षाओं को लोकतांत्रिक संतुष्टि प्राप्त हुई।

47. (A) गुटनिरपेक्षता।
स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने गुटनिरपेक्षता की नीति को विदेश नीति का मुख्य आधार बनाया। इसका उद्देश्य शीत युद्ध के दौरान दोनों महाशक्ति गुटों, अमेरिका और सोवियत संघ, से समान दूरी बनाए रखना था। भारत अपनी नवीन स्वतंत्रता के पश्चात किसी सैन्य गठबंधन का भाग बनकर अपनी संप्रभुता संकट में नहीं डालना चाहता था। यह नीति नव-स्वतंत्र राष्ट्रों के मध्य आपसी सहयोग और वैश्विक शांति को बढ़ावा देने पर केंद्रित थी।

48. (B) झलकारीबाई
झलकारीबाई झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की नियमित सेना में एक अत्यंत साहसी सैनिक थीं। वे रानी की शारीरिक बनावट से साम्यता रखती थीं, जिसका उन्होंने ब्रिटिश सेना को भ्रमित करने हेतु चतुराई से प्रयोग किया। झांसी के दुर्ग पर आक्रमण के समय, उन्होंने स्वयं को रानी के रूप में प्रस्तुत कर वीरतापूर्वक लड़ते हुए शत्रुओं का ध्यान भटकाया। उनके इस बलिदान से लक्ष्मीबाई को सुरक्षित निकलने का अवसर प्राप्त हुआ। वे विद्रोह की अमर लोक नायिका हैं।

49. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कांग्रेस के प्रारंभिक उदारवादी नेताओं की रणनीति संवैधानिक सीमाओं के भीतर सुधारों की मांग करने पर केंद्रित थी। उनका विश्वास था कि ब्रिटिश शासन न्यायप्रिय है और वे प्रार्थनाओं द्वारा परिवर्तन ला सकते हैं। किंतु, औपनिवेशिक सरकार ने उनके इस दृष्टिकोण को दुर्बलता मानकर उनकी मांगों की निरंतर उपेक्षा की। इस विफलता ने भारतीयों में तीव्र असंतोष उत्पन्न किया, जिससे कालांतर में अधिक उग्र और जन-आधारित राष्ट्रवादी आंदोलनों का उदय हुआ।

50. (A) महाराष्ट्र और राजस्थान
भील विद्रोह औपनिवेशिक शासन और सामंती अत्याचारों के विरुद्ध आदिवासियों के प्रतिरोध की एक सुदीर्घ श्रृंखला थी। यह विद्रोह मुख्य रूप से महाराष्ट्र के खानदेश और राजस्थान के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्रों में केंद्रित रहा। अंग्रेजों द्वारा वन अधिकारों पर प्रतिबंध और पारंपरिक जीवन पद्धति में हस्तक्षेप के कारण भीलों ने समय-समय पर सशस्त्र संघर्ष किया। इन विद्रोहों ने आदिवासियों की स्वतंत्रता और स्वायत्तता बनाए रखने की तीव्र आकांक्षा को प्रदर्शित किया, जो औपनिवेशिक सत्ता हेतु बड़ी चुनौती थी।

89. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
नील विद्रोह बंगाल में बागान स्वामियों के शोषण के विरुद्ध था, जबकि पाबना आंदोलन ने जमींदारों की दमनकारी लगान नीतियों को विधिक चुनौती दी। चंपारण सत्याग्रह ने तिनकठिया जैसी अमानवीय पद्धति के उन्मूलन का लक्ष्य रखा। खेड़ा सत्याग्रह अकाल के समय फसल विनाश के उपरांत भी अनिवार्य कर वसूली के विरुद्ध किसानों का एक सफल अहिंसक संघर्ष था। ये चारों आंदोलन भारतीय कृषकों की विविध समस्याओं और उनके समाधान हेतु अपनाई गई पृथक-पृथक रणनीतियों को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं।

90. (A) 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' या रियायतों के लिए प्रार्थना करने की नीति।
उग्रवादी नेताओं ने उदारवादियों की 'प्रार्थना और याचिका' की पद्धति को 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' की संज्ञा दी और इसकी तीखी आलोचना की। उनका अटूट विश्वास था कि विदेशी सरकार कभी भी याचना से अधिकार प्रदान नहीं करेगी, इसके लिए प्रबल दबाव बनाना अनिवार्य है। वे जन आंदोलनों, पूर्ण बहिष्कार और आत्मनिर्भरता द्वारा स्वराज प्राप्त करना चाहते थे। उग्रवादियों ने अनुभव किया कि उदारवादी रणनीति जनसाधारण को संघर्ष से जोड़ने में पूर्णतः विफल रही है, अतः उन्होंने अधिक आक्रामक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया।

91. (D) चटगाँव शस्त्रागार छापा
चंद्रशेखर आज़ाद उत्तर भारत के एक अत्यंत शक्तिशाली और रणनीतिक क्रांतिकारी नेता थे, जिन्होंने काकोरी कांड और सांडर्स के उन्मूलन जैसी घटनाओं का नेतृत्व किया। उन्होंने वायसराय की रेल उड़ाने की योजना भी निर्मित की थी। किंतु, चटगाँव शस्त्रागार छापा पूर्णतः बंगाल के क्रांतिकारियों की गतिविधि थी, जिसका सफल नेतृत्व सूर्य सेन (मास्टर दा) ने किया था। आज़ाद हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के मुख्य सेनापति थे, जो अंतिम क्षण तक अंग्रेजों के बंदी नहीं बने और स्वयं को राष्ट्रहित में बलिदान कर दिया।

92. (B) भारत छोड़ो आंदोलन
1942 में द्वितीय विश्व युद्ध की विषम परिस्थितियों के मध्य गांधीजी ने "भारत छोड़ो" आंदोलन का आह्वान किया। उन्होंने मुंबई के मैदान से राष्ट्र को "करो या मरो" का ऐतिहासिक मंत्र प्रदान किया। इसका तात्पर्य था कि या तो हम भारत को स्वतंत्र कराएंगे अथवा इस पुनीत प्रयास में अपने प्राणों की आहुति दे देंगे। इस नारे ने पूरे देश में अभूतपूर्व उत्साह का संचार किया और नागरिक स्वतःस्फूर्त ढंग से संघर्ष हेतु सड़कों पर उतर आए। यह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अंतिम महान जन संघर्ष सिद्ध हुआ।

93. (D) 1, 2, और 3
सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अत्यंत साहसी और दूरदर्शी नायक थे। उन्होंने 1938 और 1939 में कांग्रेस की अध्यक्षता की, किंतु गांधीजी से वैचारिक मतभेदों के पश्चात सैन्य मार्ग से स्वतंत्रता का चयन किया। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध का लाभ उठाकर धुरी शक्तियों से सहयोग प्राप्त किया और आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना की। उनकी भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) ने 'दिल्ली चलो' का उद्घोष किया और भारत की सीमाओं पर ब्रिटिश सेना को कड़ी चुनौती दी, जिससे स्वतंत्रता का मार्ग सुगम हुआ।

94. (D) राष्ट्रवाद और समाजवादी आदर्शों का सम्मिश्रण।
कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (सी.एस.पी.) का गठन उन युवा नेताओं द्वारा किया गया जो राष्ट्रवाद को आर्थिक न्याय के साथ संबद्ध करना चाहते थे। जयप्रकाश नारायण और आचार्य नरेंद्र देव जैसे नेता मानते थे कि कांग्रेस को पूर्ण स्वतंत्रता के साथ निर्धनता निवारण और भूमि सुधार जैसे समाजवादी लक्ष्यों को भी अंगीकार करना चाहिए। वे चाहते थे कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक न होकर सर्वसाधारण हेतु सामाजिक और आर्थिक समानता भी लाए। इस पार्टी ने कांग्रेस के भीतर एक शक्तिशाली और प्रगतिशील वैचारिक समूह के रूप में कार्य किया।

95. (A) हिंदू और मुस्लिम दो अलग राष्ट्र थे जो एक देश में साथ नहीं रह सकते थे।
द्वि-राष्ट्र सिद्धांत ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि हिंदू और मुस्लिम केवल दो पृथक धार्मिक समूह नहीं, अपितु दो भिन्न राष्ट्र हैं जिनकी संस्कृति, परंपराएं और हित परस्पर मेल नहीं खाते। मुहम्मद अली जिन्ना और मुस्लिम लीग ने इस विचार का प्रबल प्रचार किया कि एक लोकतांत्रिक भारत में मुस्लिम अल्पसंख्यक सदैव असुरक्षित रहेंगे। इस वैचारिक आधार ने मुसलमानों हेतु एक पृथक मातृभूमि की मांग को जन्म दिया, जिसने अंततः 1947 में भारत के दुखद विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

96. (B) दो वर्ष, ग्यारह महीने और अठारह दिन
भारतीय संविधान का निर्माण एक अत्यंत जटिल और गहन प्रक्रिया थी, जिसमें संविधान सभा ने लगभग तीन वर्षों तक निरंतर परिश्रम किया। इस अवधि में सभा के सदस्यों ने वैश्विक संविधानों का सूक्ष्म विश्लेषण कर उन्हें भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल ढाला। सभा ने कुल ग्यारह सत्र आयोजित किए और मसौदे के प्रत्येक शब्द पर विस्तार से विमर्श किया। यह सुदीर्घ प्रयास भारत को एक व्यापक और समावेशी लोकतांत्रिक दस्तावेज प्रदान करने हेतु आवश्यक था, जो राष्ट्र की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता का पूर्ण सम्मान कर सके।

97. (B) आंध्र प्रदेश
स्वतंत्रता पश्चात भाषाई आधार पर राज्यों के गठन की मांग ने तीव्र रूप धारण कर लिया था। मद्रास प्रांत से पृथक होकर एक तेलुगु भाषी राज्य 'आंध्र' निर्मित करने हेतु पोट्टी श्रीरामुलु ने आमरण अनशन किया। 56 दिवस के अनशन के पश्चात उनके प्राणोत्सर्ग से पूरे क्षेत्र में व्यापक विरोध व्याप्त हो गया। इस प्रचंड जन दबाव के कारण केंद्र सरकार को अंततः झुकना पड़ा और 1953 में आंध्र प्रदेश भारत का प्रथम भाषाई राज्य बना। इस घटना ने संपूर्ण राष्ट्र में भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का मार्ग प्रशस्त किया।

98. (A) चीन
पंचशील के पांच सिद्धांत प्रथम बार 1954 में भारत और चीन के मध्य तिब्बत के विषय पर हुए एक समझौते की प्रस्तावना में घोषित किए गए थे। इन सिद्धांतों में परस्पर क्षेत्रीय अखंडता का

134. (B) यह एक आधुनिक विचारधारा थी जिसने राजनीतिक लामबंदी और सत्ता के संघर्ष के लिए धार्मिक भिन्नताओं को एक साधन के रूप में प्रयोग किया।
सांप्रदायिकता कोई प्राचीन धार्मिक संघर्ष नहीं, अपितु यह आधुनिक काल की एक राजनीतिक परिघटना है। इसका उदय औपनिवेशिक परिस्थितियों में सत्ता और राजकीय सेवाओं में भागीदारी प्राप्त करने के संघर्ष के रूप में हुआ। कतिपय नेताओं और संगठनों ने जन समर्थन जुटाने हेतु धार्मिक पहचान और असुरक्षा के भाव का सहारा लिया। अंग्रेजों ने भी अपने निहित स्वार्थों हेतु इन भिन्नताओं को निरंतर प्रोत्साहित किया। इस प्रकार, धर्म का प्रयोग राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु एक शस्त्र के रूप में किया गया, जिसने अंततः राष्ट्र को विभाजित किया।

135. (D) एक जनमत संग्रह जिसमें जनता ने भारत में सम्मिलित होने के पक्ष में मतदान किया।
जूनागढ़ के नवाब ने अपनी बहुसंख्यक हिंदू जनता की इच्छा के विरुद्ध पाकिस्तान में विलय की घोषणा कर दी थी। इसके पश्चात वहां व्यापक जन विद्रोह हुआ और नवाब को पाकिस्तान पलायन करना पड़ा। भारत सरकार ने स्थिति को नियंत्रित करने हेतु हस्तक्षेप किया और अंततः फरवरी 1948 में वहां एक जनमत संग्रह आयोजित किया गया। इस लोकतांत्रिक मतदान में भारी बहुमत (लगभग 99 प्रतिशत) ने भारत में सम्मिलित होने का निर्णय लिया। इस विधिक प्रक्रिया ने जूनागढ़ के भारतीय संघ में विलय को पूर्णतः वैध और स्थायी बना दिया।

136. (A) महाशक्तियों का सामना करने के लिए सैन्य गठबंधन का गठन।
पंचशील के सिद्धांतों का मुख्य ध्येय शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करना था, न कि किसी सैन्य गुट का निर्माण करना। भारत ने सदैव शीत युद्धकालीन सैन्य गठबंधनों का विरोध किया क्योंकि वे राष्ट्रीय संप्रभुता हेतु संकटकारी थे। इसके विपरीत, पंचशील के अन्य सिद्धांत जैसे अनाक्रमण, समानता और एक-दूसरे के आंतरिक विषयों में अहस्तक्षेप, स्वतंत्र राष्ट्रों के मध्य आपसी सम्मान पर आधारित थे। यह नीति भारत की शांतिपूर्ण विदेश नीति की आधारशिला बनी, जिसने विश्व मंच पर भारत की छवि को एक स्वतंत्र नैतिक शक्ति के रूप में निखारा।

137. (C) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन।
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में हुई थी, जो 1857 के विद्रोह के लगभग तीन दशक पश्चात की घटना है। अतः कांग्रेस का गठन विद्रोह का कारण कदापि नहीं हो सकता था। विद्रोह के वास्तविक कारण डलहौजी की विस्तारवादी नीतियां, आर्थिक शोषण और सामाजिक-धार्मिक हस्तक्षेप जैसे गंभीर विषय थे। इसके विपरीत, कांग्रेस का जन्म विद्रोह की विफलता के पश्चात संवैधानिक और सुव्यवस्थित राजनीति के एक नवीन युग के प्रारंभ के रूप में हुआ, जिसका उद्देश्य अहिंसक और क्रमिक रीति से भारतीय अधिकारों हेतु संघर्ष करना था।

138. (A) स्थानीय जमींदार और साहूकार (दिकु) तथा उनका समर्थन करने वाला ब्रिटिश प्रशासन।
संथाल विद्रोह का मुख्य लक्ष्य उन 'दिकुओं' (बाहरी लोगों) को निष्कासित करना था जिन्होंने संथालों की पारंपरिक भूमि और सामाजिक व्यवस्था को विनष्ट कर दिया था। भ्रष्ट जमींदारों और साहूकारों ने संथालों को ऋण के कुचक्र में फंसा लिया था, और ब्रिटिश पुलिस एवं न्यायालयों ने सदैव इन शोषकों का ही समर्थन किया। इसी अन्याय के विरुद्ध सिद्धू और कान्हू के नेतृत्व में संथालों ने विद्रोह का ध्वज उठाया। यद्यपि अंग्रेजों ने इसे क्रूरतापूर्वक दबा दिया, किंतु कालांतर में 'संथाल परगना' निर्मित कर उन्हें कुछ प्रशासनिक स्वायत्तता प्रदान की गई।

139. (D) यूरोपीय उदारवादी और लोकतांत्रिक विचार।
कांग्रेस के प्रारंभिक उदारवादी नेताओं ने पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त की थी और वे मिल्टन, मिल और हर्बर्ट स्पेंसर जैसे प्रखर यूरोपीय विचारकों से गहराई से प्रभावित थे। वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता, विधिक शासन और प्रतिनिधि सरकार जैसे आधुनिक उदारवादी मूल्यों में विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि ब्रिटिश शासन भारत में इन प्रगतिशील मूल्यों को लाने का एक माध्यम है। इसी विचारधारा के कारण वे क्रांतिकारी या हिंसक मार्ग के स्थान पर संवैधानिक सुधारों और अंग्रेजों की न्यायप्रियता के प्रति आशान्वित बने रहे, जिसे कालांतर में अपर्याप्त माना गया।

140. (B) गदर पार्टी
गदर पार्टी की स्थापना 1913 में अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में लाला हरदयाल और अन्य भारतीय प्रवासियों द्वारा की गई थी। यह भारत के बाहर गठित सर्वाधिक प्रभावशाली क्रांतिकारी संगठनों में से एक था। इसका मुख्य ध्येय प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारत में सशस्त्र विद्रोह भड़काकर ब्रिटिश शासन को विनष्ट करना था। अनुशीलन समिति, अभिनव भारत और HRA जैसे अन्य संगठन मुख्य रूप से भारत की सीमाओं के भीतर ही सक्रिय थे। गदर आंदोलन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय स्वतंत्रता हेतु व्यापक समर्थन और आवश्यक संसाधन सफलतापूर्वक जुटाए।

141. (C) संघर्ष-विराम-संघर्ष की रणनीति और जन लामबंदी।
गांधीजी का नेतृत्व एक विशिष्ट रणनीतिक समझ पर आधारित था, जिसे 'संघर्ष-विराम-संघर्ष' कहा जाता है। उन्होंने अनुभव किया कि जनसाधारण दीर्घकाल तक निरंतर संघर्ष नहीं कर सकते, अतः वे एक विशाल आंदोलन के पश्चात रचनात्मक कार्य और विश्राम की अवधि रखते थे ताकि आगामी लड़ाई हेतु सामूहिक ऊर्जा संचित की जा सके। उनकी सफलता का रहस्य समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर ग्रामीण जनता को आंदोलन से जोड़ने की अद्भुत क्षमता थी। इस पद्धति ने ब्रिटिश शासन को क्रमशः निर्बल और नैतिक रूप से एकाकी कर दिया।

142. (D) एक क्रांतिकारी सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम के साथ पूर्ण और तत्काल स्वतंत्रता।
वामपंथी विचारधारा वाले नेताओं ने स्वतंत्रता संग्राम को केवल राजनीतिक स्वाधीनता तक सीमित नहीं माना। उन्होंने पुरजोर वकालत की कि स्वतंत्र भारत में भूमि का न्यायोचित पुनर्वितरण होना चाहिए और प्रमुख उद्योगों पर सार्वजनिक

भीषण संकट की स्थिति में महाराजा ने भारत से सैन्य सहायता की प्रार्थना की और विधिक रूप से विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। भारतीय सेना के हस्तक्षेप के पश्चात यह संघर्ष एक दीर्घकालिक अंतरराष्ट्रीय विवाद में परिवर्तित हो गया।

108. (B) शासन में भारतीय भागीदारी को बढ़ावा देने के ब्रिटिश सरकार के प्रयास।
भारतीय राष्ट्रवाद का विस्तार अंग्रेजों की किसी सद्भावना के कारण नहीं, अपितु उनके बहुआयामी शोषण के विरुद्ध भारतीयों की संगठित सामूहिक प्रतिक्रिया से हुआ। अंग्रेजों ने जो भी सीमित प्रशासनिक भागीदारी प्रदान की, वह केवल बढ़ते जन असंतोष को शांत करने का एक साधन थी। इसके विपरीत, निरंतर आर्थिक तबाही, अकाल और नस्लीय भेदभाव ने समाज के प्रत्येक वर्ग को व्यथित किया, जिससे वे एकजुट हुए। तिलक द्वारा सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग और गांधीजी की जन लामबंदी ने राष्ट्रवाद को मध्यम वर्ग से निकालकर किसानों और श्रमिकों तक पहुँचाया।

109. (C) यह ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने और सिख संप्रभुता पुनर्स्थापित करने के उद्देश्य से एक राजनीतिक आंदोलन में परिवर्तित हो गया।
कूका विद्रोह जो बाबा राम सिंह के नेतृत्व में एक धार्मिक सुधार आंदोलन के रूप में प्रारंभ हुआ था, कालांतर में ब्रिटिश विरोधी राजनीतिक आंदोलन में परिवर्तित हो गया। विद्रोहियों ने पंजाब में पुनः स्वतंत्र सिख शासन स्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित किया। उन्होंने ब्रिटिश कानूनों का उल्लंघन किया और अपनी समानांतर डाक एवं प्रशासनिक व्यवस्था निर्मित करने का साहसपूर्ण प्रयास किया। अंग्रेजों ने इस आंदोलन को अपनी सत्ता हेतु गंभीर संकट माना और इसे अत्यंत क्रूरतापूर्वक कुचल दिया, जिसमें अनेक विद्रोहियों को तोप से उड़ा दिया गया।

110. (D) जमींदारों की अवैध मांगों के विरुद्ध विधिक और काफी हद तक अहिंसक संघर्ष।
पाबना आंदोलन बंगाल के कृषकों का एक सुसंगठित और परिपक्व प्रतिरोध था। यह जमींदारी प्रथा के समूल नाश हेतु नहीं, अपितु जमींदारों द्वारा आरोपित अवैध उपकरों और उनकी दमनकारी लगान नीतियों के विरुद्ध था। कृषकों ने स्वयं को 'महारानी के रैयत' घोषित किया और न्यायालयों के माध्यम से अपने विधिक अधिकारों की रक्षा की। इस आंदोलन ने सिद्ध किया कि किसान अपने अधिकारों के प्रति निरंतर जागरूक हो रहे हैं और वे संगठित होकर विधिक रीति से शोषण का सफलतापूर्वक मुकाबला करने में सक्षम हैं।

111. (A) लखनऊ, 1916
1916 का लखनऊ अधिवेशन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन हेतु ऐतिहासिक एकता का प्रतीक था। एनी बेसेंट और तिलक के प्रयासों से नौ वर्षों के पश्चात उदारवादी और उग्रवादी गुट पुनः एक साथ आए। इसी अधिवेशन में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के मध्य 'लखनऊ समझौता' संपन्न हुआ, जिसमें दोनों ने सरकार के समक्ष साझा मांगें प्रस्तुत करने पर सहमति व्यक्त की। इस अभूतपूर्व एकता ने ब्रिटिश सरकार पर प्रबल दबाव बनाया और राष्ट्रवादी आंदोलन को पुनः एक शक्तिशाली और संगठित रूप प्रदान किया, जिससे स्वतंत्रता संघर्ष की गति तीव्र हुई।

112. (B) वी.डी. सावरकर - नासिक षड्यंत्र मामला
नासिक षड्यंत्र मामला वी.डी. सावरकर और उनके गुप्त संगठन 'अभिनव भारत' से संबद्ध है, जिसके अंतर्गत कलेक्टर जैक्सन का वध किया गया था। इसके विपरीत, भगत सिंह लाहौर षड्यंत्र और केंद्रीय सभा बम कांड से संबंधित थे। सूर्य सेन ने चटगाँव शस्त्रागार छापे का नेतृत्व किया, जबकि राम प्रसाद बिस्मिल का नाम प्रमुखता से काकोरी रेल डकैती के साथ जुड़ा है। सावरकर को इस अभियोग के पश्चात कालापानी का दंड दिया गया, जो क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रति ब्रिटिश सत्ता की कठोरता और प्रतिशोध की भावना को दर्शाता है।

113. (A) केवल 1 और 2
भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) का गठन मुख्य रूप से उन भारतीय सैनिकों से हुआ था जिन्हें जापान ने दक्षिण-पूर्व एशिया में युद्धबंदी बनाया था। सुभाष चंद्र बोस ने इसमें महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु 'रानी झांसी रेजिमेंट' का निर्माण किया, जो उस काल की एक अत्यंत क्रांतिकारी पहल थी। यद्यपि INA ने कोहिमा और इम्फाल तक मार्च किया, किंतु वह भारत के किसी विशाल भू-भाग को स्थायी रूप से मुक्त कराने में सफल नहीं रही। फिर भी, इसकी वीरता ने भारतीय सशस्त्र सेनाओं और जनसाधारण में देशभक्ति की अभूतपूर्व लहर उत्पन्न की।

114. (A) अंतर-धार्मिक सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के निरंतर प्रयास।
भारत में सांप्रदायिकता का उदय मुख्य रूप से औपनिवेशिक कुनीतियों और कतिपय समूहों की संकीर्ण राजनीतिक आकांक्षाओं का फल था। कांग्रेस ने सदैव एक धर्मनिरपेक्ष और अखंड राष्ट्र का समर्थन किया, जो सांप्रदायिकता के निवारण का प्रयास था। मुस्लिम समुदाय का आर्थिक पिछड़ापन और अंग्रेजों द्वारा पृथक निर्वाचक मंडल का प्रावधान सांप्रदायिक विभाजन के मुख्य कारक सिद्ध हुए। साथ ही, कुछ नेताओं द्वारा राजनीति में धार्मिक प्रतीकों का अनपेक्षित प्रयोग भी अनजाने में समुदायों के मध्य दूरी बढ़ाने का कारण बना, जिसने राष्ट्रीय एकता को क्षति पहुँचाई।

115. (C) संविधान निर्माण के लिए दर्शन और मार्गदर्शक सिद्धांतों को रेखांकित किया।
जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत 'उद्देश्य प्रस्ताव' ने स्वतंत्र भारत के संविधान की वैचारिक आधारशिला रखी। इसने उद्घोषणा की कि भारत एक स्वतंत्र, संप्रभु गणराज्य होगा जहाँ सामाजिक न्याय, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अवसर की समानता के मूल्यों को सर्वोपरि स्थान दिया जाएगा। यही प्रस्ताव कालांतर में संविधान की 'प्रस्तावना' का आधार बना। इसने संविधान निर्माताओं को एक स्पष्ट दिशा प्रदान की कि राष्ट्र का शासन स्वरूप कैसा होना चाहिए और नागरिकों को कौन से मूलभूत अधिकार प्राप्त होने चाहिए, जो एक जीवंत लोकतंत्र हेतु अनिवार्य हैं।

सम्मान, अनाक्रमण और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व जैसे महत्वपूर्ण बिंदु सम्मिलित थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने इन सिद्धांतों को वैश्विक शांति का आधार माना और 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का उद्घोष किया। यद्यपि कालांतर में सीमा विवादों और युद्ध के कारण इन सिद्धांतों के प्रति परस्पर विश्वास को गहरा आघात पहुँचा।

99. (C) अंग्रेजों द्वारा निर्दयी विजय और विस्तार की नीति का परित्याग कर दिया गया।
1857 के विद्रोह के पश्चात ब्रिटिश नीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। महारानी विक्टोरिया की 1858 की उद्घोषणा के अनुसार, भविष्य में भारतीय रियासतों के और अधिक विलय को रोकने का वचन दिया गया। अंग्रेजों ने अनुभव किया कि स्थानीय शासकों और जमींदारों को असंतुष्ट करना उनके शासन हेतु संकटकारी हो सकता है। अतः उन्होंने भारतीय शासकों को दत्तक पुत्र ग्रहण करने की अनुमति प्रदान की और उनके अधिकारों के सम्मान का आश्वासन दिया। इस प्रकार विस्तारवाद का स्थान अब सहयोग की नीति ने ले लिया।

100. (D) कानपुर
अंतिम पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहब ने कानपुर में 1857 के विद्रोह का सफल नेतृत्व किया। अंग्रेजों द्वारा उनकी वार्षिक वृत्ति (पेंशन) बंद किए जाने के कारण उनमें तीव्र असंतोष था। उन्होंने स्वयं को पेशवा घोषित किया और शहर से ब्रिटिश नियंत्रण पूर्णतः समाप्त कर दिया। उनके विश्वसनीय सेनापति तात्या टोपे और अजीमुल्ला खान ने इस संघर्ष में उनका सक्रिय सहयोग किया। कानपुर विद्रोह के दौरान घटित घटनाओं ने अंग्रेजों को स्तब्ध कर दिया और यह क्षेत्र उत्तर भारत में विद्रोही गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बनकर उभरा।

101. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कोल विद्रोह छोटा नागपुर क्षेत्र के आदिवासियों का ब्रिटिश नीतियों और बाहरी हस्तक्षेप के विरुद्ध एक शक्तिशाली प्रतिरोध था। अंग्रेजों ने आदिवासियों की पारंपरिक भूमि छीनकर गैर-आदिवासी साहूकारों और कृषकों को आवंटित कर दी थी। साथ ही, नवीन और जटिल कर प्रणालियों ने आदिवासियों को आर्थिक रूप से पंगु बना दिया। इस घोर अन्याय के विरोध में बुद्धो भगत के नेतृत्व में कोलों ने सशस्त्र विद्रोह किया। यह आंदोलन आदिवासियों की अपनी पैतृक भूमि और स्वायत्तता को सुरक्षित रखने की अदम्य इच्छा का प्रतीक था।

102. (B) भारतीय शिक्षित मध्यम वर्ग और प्रेस
बंगाल के नील विद्रोह को प्रथम बार भारतीय प्रेस और प्रबुद्ध मध्यम वर्ग का सुसंगठित समर्थन प्राप्त हुआ। दीनबंधु मित्र के प्रसिद्ध नाटक 'नील दर्पण' ने बागान स्वामियों के अमानवीय अत्याचारों को जन-जन तक पहुँचाया। हरिश्चंद्र मुखर्जी जैसे निर्भीक पत्रकारों ने अपने लेखों द्वारा कृषकों की दयनीय स्थिति का वास्तविक चित्रण किया। इस बौद्धिक समर्थन ने एक स्थानीय किसान आंदोलन को व्यापक राजनीतिक और सामाजिक स्वरूप प्रदान किया। इसी जन दबाव में ब्रिटिश सरकार कृषकों के पक्ष में सुधार हेतु विवश हुई।

103. (D) ब्रिटिश संसद को याचिकाएं और स्मरण पत्र भेजना
उग्रवादी राष्ट्रवादियों ने उदारवादियों की 'याचिका और प्रार्थना' की नीति को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया था। उनका मानना था कि ब्रिटिश शासन से केवल विनम्रता द्वारा कुछ भी प्राप्त करना असंभव है। इसके स्थान पर उन्होंने बहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा जैसे सशक्त माध्यम अपनाए ताकि औपनिवेशिक शासन को सीधी चुनौती दी जा सके। वे जनता के मध्य जाकर उनमें आत्मविश्वास और बलिदान की भावना जाग्रत करना चाहते थे। प्रार्थना के स्थान पर वे प्रत्यक्ष राजनीतिक कार्रवाई और जन आंदोलन को ही स्वराज प्राप्ति का एकमात्र साधन मानते थे।

104. (A) 4, 3, 2, 1
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं का कालक्रम एक सुव्यवस्थित विकास को दर्शाता है। सर्वप्रथम 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। तत्पश्चात 1905 में बंगाल के विभाजन ने राष्ट्रवादी लहर को तीव्र किया। इसी की प्रतिक्रिया में और मुस्लिम हितों की रक्षा हेतु 1906 में मुस्लिम लीग का गठन हुआ। अंततः, रणनीतियों के टकराव के कारण 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का प्रथम ऐतिहासिक विभाजन हुआ। यह कालक्रम राष्ट्रीय चेतना के क्रमिक विकास और आंतरिक वैचारिक संघर्षों के बढ़ने को स्पष्ट करता है।

105. (C) विद्रोह
'गदर' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'विद्रोह' अथवा 'क्रांति' है। इसी नाम से लाला हरदयाल ने अमेरिका में एक साप्ताहिक पत्र और राजनीतिक दल का प्रारंभ किया था। गदर पार्टी का स्पष्ट ध्येय ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक व्यापक सशस्त्र क्रांति को क्रियान्वित करना था। उन्होंने विदेशों में निवास कर रहे भारतीयों को संगठित किया और उन्हें भारत लौटकर विद्रोह करने हेतु प्रेरित किया। इस नाम ने ही उनके आक्रामक और निडर लक्ष्यों को परिभाषित किया, जो केवल सुधार नहीं, अपितु औपनिवेशिक सत्ता को समूल नष्ट करना चाहते थे।

106. (A) किसानों और श्रमिकों की आर्थिक मुक्ति।
वामपंथी आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक नवीन सामाजिक दृष्टि जोड़ी। उनका अटूट विश्वास था कि ब्रिटिश शासन से मुक्ति केवल आधी विजय होगी, यदि किसानों और श्रमिकों का आर्थिक शोषण अनवरत जारी रहता है। अतः उन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष को सामाजिक और आर्थिक क्रांति के साथ संबद्ध करने पर बल दिया। उन्होंने श्रमिकों हेतु उचित पारिश्रमिक और किसानों हेतु जमींदारी प्रथा के उन्मूलन की मांग की। उनका लक्ष्य एक ऐसा भारत निर्मित करना था जहाँ राजनीतिक सत्ता के साथ संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण भी हो।

107. (D) पाकिस्तान समर्थित कबीलाई हमलावरों द्वारा राज्य पर आक्रमण।
विभाजन के तत्काल पश्चात कश्मीर समस्या के हिंसक होने का मुख्य कारण पाकिस्तान समर्थित सशस्त्र कबीलों की घुसपैठ थी। जब महाराजा हरि सिंह विलय का त्वरित निर्णय नहीं ले पा रहे थे, तब इन हमलावरों ने कश्मीर की सीमाओं का उल्लंघन कर व्यापक तबाही मचाई और श्रीनगर की ओर बढ़ने लगे। इस

125. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता के समय भारत के प्रांतों का गठन ऐतिहासिक युद्धों और प्रशासनिक सुविधा के आधार पर हुआ था, न कि सांस्कृतिक अथवा भाषाई आधार पर। एक जीवंत लोकतांत्रिक राष्ट्र में प्रशासन को जनता के समीप लाने हेतु यह अनिवार्य था कि राज्यों की सीमाएं उनकी भाषा और संस्कृति के अनुरूप हों। अतः सरकार ने राज्य पुनर्गठन आयोग गठित किया ताकि वैज्ञानिक और तार्किक आधार पर सीमाओं का पुनर्निर्धारण किया जा सके। इस प्रक्रिया ने क्षेत्रीय आकांक्षाओं को राष्ट्रीय एकता के व्यापक ढांचे के भीतर संतुलित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

126. (D) भारत से ब्रिटेन की ओर 'धन के निष्कासन' का मार्ग प्रशस्त किया।
प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने अनुभव किया कि भारत की निर्धनता का मुख्य कारण यहाँ की संपदा का निरंतर ब्रिटेन गमन है, जिसे 'धन का निष्कासन' कहा गया। इस प्रक्रिया में वेतन, पेंशन, ऋण पर ब्याज और व्यापारिक लाभ के रूप में भारी धनराशि बिना किसी प्रतिफल के भारत से बाहर भेजी जा रही थी। इस आर्थिक आलोचना ने यह स्पष्ट कर दिया कि ब्रिटिश शासन भारत के विकास हेतु नहीं, अपितु उसके व्यवस्थित शोषण हेतु है। इस विचार ने भारतीयों को एकजुट होने और स्वदेशी की मांग करने हेतु प्रबल रूप से प्रेरित किया।

127. (A) दिल्ली
1857 के विद्रोह में दिल्ली पर अधिकार विद्रोहियों हेतु अत्यधिक प्रतीकात्मक और रणनीतिक महत्व रखता था। बहादुर शाह जफर को भारत का सम्राट घोषित करने से विद्रोह को एक विधिक केंद्र और अखिल भारतीय स्वरूप प्राप्त हुआ। सितंबर 1857 में अंग्रेजों द्वारा दिल्ली पर पुनः विजय प्राप्त करना विद्रोहियों हेतु एक अत्यंत गंभीर मनोवैज्ञानिक और सैन्य आघात सिद्ध हुआ। इसके पश्चात विद्रोह का केंद्रीय नेतृत्व बिखर गया और अंग्रेजों को उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों में विद्रोह को दमित करने में अत्यधिक सुगमता हुई।

128. (B) खासी विद्रोह
यू तिरोत सिंह खासी पहाड़ियों के एक महान नायक थे, जिन्होंने 1829 में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का सफल नेतृत्व किया। इस विद्रोह का मुख्य कारण अंग्रेजों द्वारा खासी पहाड़ियों से होकर एक सड़क निर्मित करने का प्रयास था, जिससे आदिवासियों की स्वायत्तता और भूमि को प्रत्यक्ष संकट उत्पन्न हो गया था। तिरोत सिंह ने अपनी कुशल छापामार रणनीति से चार वर्षों तक ब्रिटिश सेना को विषम स्थिति में रखा। अंततः उन्हें बंदी बनाया गया, किंतु उनका संघर्ष जनजातीय स्वतंत्रता और भूमि अधिकारों की रक्षा का एक अमर उदाहरण बन गया।

129. (B) नए बढ़ाए गए भू-राजस्व कर की वापसी।
1928 में बारदोली सत्याग्रह का तात्कालिक कारण बॉम्बे सरकार द्वारा भू-राजस्व में 22 प्रतिशत की अनुचित वृद्धि करना था। कपास की गिरती कीमतों के मध्य कृषकों हेतु यह भार वहन करना असंभव था। सरदार पटेल ने कृषकों को संगठित कर उन्हें अनुशासित रूप से कर भुगतान न करने हेतु प्रेरित किया। इस सफल अहिंसक प्रतिरोध के फलस्वरूप सरकार को एक जांच समिति नियुक्त करनी पड़ी, जिसने अंततः कर वृद्धि को घटाकर लगभग 6 प्रतिशत कर दिया। यह भारतीय कृषकों की एक महान और गौरवशाली विजय थी।

130. (B) पुडुचेरी
अरबिंदो घोष ने 1910 में सक्रिय क्रांतिकारी राजनीति को पूर्णतः त्यागकर पुडुचेरी को अपना स्थायी निवास स्थान बनाया। वहां उन्होंने आंतरिक योग और आध्यात्मिक साधना पर ध्यान केंद्रित किया और 'श्री अरबिंदो आश्रम' की स्थापना की। यद्यपि वे प्रत्यक्ष राजनीति से पृथक हो गए थे, किंतु उनके दार्शनिक विचारों और लेखों ने भारतीयों को मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर स्वतंत्र होने हेतु निरंतर प्रेरित किया। उनका आश्रम आज भी एक प्रमुख वैश्विक आध्यात्मिक केंद्र के रूप में मानवता को आकर्षित करता है और शांति का संदेश देता है।

131. (C) सशस्त्र क्रांति के माध्यम से एक संघीय गणराज्य।
1924 में स्थापित हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का मुख्य लक्ष्य भारत में एक 'संयुक्त राज्य भारत का संघीय गणराज्य' स्थापित करना था। इसके घोषणापत्र 'द रिवोल्यूशनरी' में वयस्क मताधिकार और शोषणविहीन समाज की पुरजोर वकालत की गई थी। संगठन का अटूट विश्वास था कि सशस्त्र विद्रोह ही ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का एकमात्र मार्ग है। उन्होंने अपनी गतिविधियों हेतु धन संचय के लिए काकोरी कांड जैसी साहसिक घटनाओं को अंजाम दिया। यह संगठन कालांतर में समाजवाद की ओर मुड़कर HSRA के रूप में पुनर्गठित हुआ।

132. (D) आई.एन.ए. के लिए व्यापक सहानुभूति उत्पन्न करना और विविध राजनीतिक समूहों को एकजुट करना।
लाल किले में आज़ाद हिन्द फ़ौज के अधिकारियों पर चलाए गए मुकदमों ने पूरे राष्ट्र में राष्ट्रवाद की एक अभूतपूर्व लहर उत्पन्न कर दी। जनसाधारण ने इन सैनिकों को 'अपराधी' नहीं अपितु 'स्वतंत्रता सेनानी' माना। कांग्रेस, मुस्लिम लीग और अकाली दल जैसे परस्पर विरोधी राजनीतिक समूह भी उनके बचाव हेतु एक मंच पर आ गए। इस प्रचंड जन आक्रोश और सेना के भीतर बढ़ती सहानुभूति ने अंग्रेजों को स्पष्ट कर दिया कि अब वे भारतीय सैनिकों की वफादारी के भरोसे भारत पर शासन नहीं कर सकते, जिससे स्वतंत्रता अत्यंत समीप आ गई।

133. (D) 1, 2, और 3
भारत में वामपंथी आंदोलन ने 1920 के दशक में व्यवस्थित स्वरूप ग्रहण करना प्रारंभ किया। कानपुर अधिवेशन ने इसे एक अखिल भारतीय पहचान प्रदान की। वामपंथी नेताओं ने कांग्रेस की रणनीतियों को प्रायः समझौतावादी मानकर अधिक क्रांतिकारी सामाजिक-आर्थिक एजेंडे की मांग की। मेरठ षड्यंत्र मामला सरकार द्वारा कम्युनिस्टों के बढ़ते प्रभाव को बाधित करने का एक व्यापक प्रयास था, जिसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया। इन गतिविधियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में वर्ग चेतना और समाजवादी आदर्शों को मजबूती से स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

थी। अंग्रेजों की 'विभाजन करो और शासन करो' की इस प्रत्यक्ष कुनीति ने भारतीयों में प्रचंड रोष उत्पन्न किया। उदारवादी पद्धतियों की विफलता ने युवाओं को अधिक आक्रामक और जुझारू राजनीति की ओर प्रवृत्त किया। इसी आक्रोश से स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन का उद्भव हुआ, जिसने कांग्रेस के भीतर उग्रवादी गुट को वैचारिक शक्ति प्रदान की। इसने सिद्ध किया कि अब भारतीय जनता केवल आंशिक सुधार नहीं, अपितु पूर्ण स्वराज की आकांक्षा रखती थी।

152. (A) संथाल विद्रोह - सिद्धू और कान्हू
संथाल विद्रोह 1855-56 में सिद्धू और कान्हू के नेतृत्व में हुआ था, जिन्होंने जमींदारों और अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध आदिवासियों को संगठित किया। इसके विपरीत, मुंडा विद्रोह का सफल नेतृत्व बिरसा मुंडा ने किया था, न कि अहोम विद्रोह का। वासुदेव बलवंत फड़के ने रामोसी विद्रोह का कुशल संचालन किया था, जबकि खासी विद्रोह यू तिरोत सिंह के नेतृत्व में संपन्न हुआ था। नायकों और उनके संबंधित जन आंदोलनों की यह सही पहचान भारतीय जनजातीय और क्रांतिकारी इतिहास के विविध चरणों को स्पष्टता से समझने हेतु अनिवार्य है।

153. (C) उनकी भूमि के 3/20 भाग पर।
प्रारंभिक क्रांतिकारियों का मुख्य ध्येय एक व्यापक जन आंदोलन खड़ा करना नहीं, अपितु अपने साहसिक कृत्यों द्वारा जनसाधारण के मानस से अंग्रेजों का भय निर्मूल करना था। उन्होंने दमनकारी अधिकारियों को लक्षित कर यह प्रदर्शित किया कि ब्रिटिश सत्ता भी दुर्बल हो सकती है। उनके सर्वोच्च आत्म-बलिदान और निर्भीकता ने सहस्रों युवाओं के हृदय में देशभक्ति की तीव्र ज्वाला प्रज्वलित की। यद्यपि वे सैन्य दृष्टि से लघु समूह थे, किंतु उनके प्रखर नैतिक प्रभाव ने मुख्यधारा के राष्ट्रीय आंदोलन को अधिक साहसी और स्वराज के प्रति अडिग बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

154. (A) व्यक्तिगत आत्म-संयम के माध्यम से स्वयं पर शासन, जिससे राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो।
गांधीजी हेतु 'स्वराज' केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं था, अपितु यह एक गहन नैतिक और सामाजिक अवधारणा थी। उनका विश्वास था कि वास्तविक स्वराज तब आएगा जब प्रत्येक नागरिक स्वयं पर नियंत्रण (आत्म-शासन) करना सीखेगा। इसमें स्वदेशी का अंगीकरण, अस्पृश्यता का निवारण और विकेंद्रीकृत ग्राम अर्थव्यवस्था का निर्माण सम्मिलित था। उनके अनुसार, स्वराज का अर्थ अंतिम व्यक्ति की स्थिति में गुणात्मक सुधार होना है। यह केवल सत्ता का हस्तांतरण नहीं, अपितु समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान की एक व्यापक और सतत प्रक्रिया थी।

155. (D) कांग्रेस को पूंजीपति वर्ग का माना जाता था और वह क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन के प्रति प्रतिबद्ध नहीं थी।
वामपंथी समूहों और कांग्रेस के मध्य तनाव का मुख्य कारण उनके पृथक वैचारिक दृष्टिकोण थे। वामपंथियों का मानना था कि कांग्रेस के नेतृत्व पर जमींदारों और बड़े उद्योगपतियों का प्रभाव है, जो सर्वसाधारण के पूर्ण आर्थिक उत्थान में बाधक सिद्ध हो सकते हैं। वे चाहते थे कि स्वतंत्रता के साथ ही समाज का समाजवादी पुनर्गठन भी सुनिश्चित हो, जबकि कांग्रेस का प्राथमिक ध्यान केवल राजनीतिक स्वाधीनता पर केंद्रित था। इसी वर्ग आधारित राजनीति और गांधीवादी ट्रस्टीशिप सिद्धांत के प्रति वामपंथियों की असहमति ने उनके संबंधों में निरंतर जटिलता बनाए रखी।

156. (B) 3 जून की योजना
लॉर्ड माउंटबेटन ने 3 जून, 1947 को अपनी ऐतिहासिक योजना प्रस्तुत की, जिसे '3 जून की योजना' कहा जाता है। इस योजना ने आधिकारिक रूप से ब्रिटिश भारत के दो स्वतंत्र राष्ट्रों- भारत और पाकिस्तान- में विभाजन का प्रस्ताव रखा। इसमें रियासतों को यह स्वायत्तता दी गई कि वे अपनी इच्छानुसार किसी भी राष्ट्र के साथ जुड़ सकें। इस योजना ने सत्ता के हस्तांतरण की प्रक्रिया को तीव्र किया और विभाजन की कड़वी वास्तविकता को अंतिम रूप प्रदान किया, जिससे सदियों पुरानी भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता खंडित हो गई।

157. (C) लंबे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विकसित आदर्श और आकांक्षाएं।
यद्यपि भारतीय संविधान ने वैश्विक प्रणालियों के श्रेष्ठ तत्वों को आत्मसात किया, किंतु इसकी मूल आत्मा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के गौरवशाली मूल्यों से उपजी है। नेहरू का उद्देश्य प्रस्ताव, कराची अधिवेशन की प्रगतिशील आर्थिक नीतियां और गांधीजी के ग्राम विकास के आदर्श इसके प्रमुख आधार स्तंभ हैं। सामाजिक समानता, न्याय और बंधुत्व की मांग उसी सुदीर्घ संघर्ष के दौरान प्रबल हुई थी। संविधान केवल एक विधिक प्रलेख नहीं, अपितु यह उन करोड़ों भारतीयों के स्वप्नों और बलिदानों का प्रतिबिंब है जिन्होंने एक लोकतांत्रिक और समावेशी भारत की परिकल्पना की थी।

158. (D) भाषा
1956 का राज्य पुनर्गठन अधिनियम मुख्य रूप से भाषाई आधार पर राज्यों के निर्माण के सिद्धांत पर केंद्रित था। स्वतंत्रता पश्चात भाषाई समुदायों की अपनी विशिष्ट पहचान और प्रशासनिक सुगमता की मांग अत्यंत तीव्र हो गई थी। सरकार ने अनुभव किया कि लोकतंत्र को प्रभावी बनाने हेतु प्रशासन का जनसाधारण की अपनी भाषा में होना अनिवार्य है। इसी तर्कसंगत आधार पर राज्यों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण किया गया, जिससे सांस्कृतिक एकता सुदृढ़ हुई। इस प्रक्रिया ने क्षेत्रीय विविधताओं को राष्ट्रीय ढांचे के भीतर स्वीकार कर भारत की अखंडता को और अधिक लोकतांत्रिक आधार प्रदान किया।

159. (A) गुटनिरपेक्ष आंदोलन।
1955 में इंडोनेशिया के बांडुंग में आयोजित सम्मेलन एशियाई और अफ्रीकी राष्ट्रों की एकता का एक ऐतिहासिक प्रतीक था। इसमें सम्मिलित देशों ने उपनिवेशवाद और रंगभेद के विरुद्ध एकजुट होने का संकल्प लिया। इस सम्मेलन ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की सुदृढ़ नींव रखी, जिसका ध्येय शीत युद्ध के कालखंड में किसी भी महाशक्ति गुट का भाग न बनना था। जवाहरलाल नेहरु ने इसमें अग्रणी भूमिका निभाई

नियंत्रण अनिवार्य है। वे क्रमिक सुधारों के स्थान पर समाज के आमूल-चूल परिवर्तन के पक्षधर थे। उनके निरंतर दबाव के फलस्वरूप ही कांग्रेस ने 1931 के कराची अधिवेशन में मौलिक अधिकारों और आर्थिक नीति पर ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया। वामपंथियों ने सुनिश्चित किया कि स्वतंत्र भारत के भविष्य में गरीबों और वंचितों के हित केंद्र में रहें।

143. (A) कैबिनेट मिशन योजना
भारत की संविधान सभा का गठन 1946 की कैबिनेट मिशन योजना के विधिक प्रावधानों के अंतर्गत किया गया था। इस मिशन ने एक ऐसी सभा का प्रस्ताव दिया था जिसके सदस्यों का निर्वाचन प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा होना था। यद्यपि कांग्रेस और मुस्लिम लीग के मध्य विभाजन के प्रश्न पर गंभीर मतभेद थे, किंतु दोनों ने संविधान निर्माण की इस प्रक्रिया में सहभागिता पर सहमति व्यक्त की। इसी गरिमामयी सभा ने कालांतर में स्वतंत्र भारत हेतु एक विस्तृत और ऐतिहासिक संविधान तैयार करने का गुरुतर उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक संपन्न किया।

144. (B) रानी लक्ष्मीबाई
झलकारीबाई झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की 'दुर्गा दल' नामक महिला सैन्य इकाई की एक अत्यंत वीर और विश्वसनीय योद्धा थीं। उनकी शारीरिक बनावट रानी से साम्यता रखती थी, जिसका उन्होंने झांसी के युद्ध में रणनीतिक लाभ उठाया। जब अंग्रेजों ने दुर्ग को घेर लिया, तब झलकारीबाई ने रानी की वेशभूषा धारण की और ब्रिटिश सेना को भ्रमित करने हेतु अग्रिम मोर्चे पर डट गईं। उनके इस अप्रतिम बलिदान और साहस के कारण ही लक्ष्मीबाई दुर्ग से सुरक्षित निकलने में सफल हो सकीं। उनका नाम आज भी एक महान वीरांगना के रूप में पूज्य है।

145. (B) अंग्रेजों और दिकुओं (बाहरी लोगों) को निष्कासित कर 'मुंडा राज'।
बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुए विद्रोह का मुख्य लक्ष्य आदिवासियों की जल, जंगल और जमीन पर उनके पारंपरिक अधिकारों को पुनः प्रतिष्ठित करना था। वे भ्रष्ट जमींदारों, साहूकारों और ब्रिटिश अधिकारियों (दिकुओं) को अपनी समस्याओं का मूल कारण मानते थे। बिरसा मुंडा ने 'मुंडा राज' की उद्घोषणा की जहाँ बाहरी हस्तक्षेप के बिना आदिवासी अपनी गौरवशाली परंपराओं के अनुरूप जीवन व्यतीत कर सकें। उन्होंने एक नवीन धार्मिक मार्ग 'बिरसैत' का भी प्रचार किया, जिसने मुंडाओं को वैचारिक रूप से संगठित कर शोषण के विरुद्ध खड़े होने की आत्मशक्ति दी।

146. (A) जलियांवाला बाग हत्याकांड
1919 में अमृतसर के जलियांवाला बाग में निहत्थे नागरिकों पर किए गए भीषण नरसंहार ने संपूर्ण राष्ट्र को स्तब्ध कर दिया। इस अमानवीय घटना और पंजाब में आरोपित मार्शल लॉ के विरोध में रवींद्रनाथ टैगोर ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त 'नाइटहुड' की उपाधि का परित्याग कर दिया। उन्होंने वायसराय को प्रेषित पत्र में स्पष्ट किया कि वे ऐसी विषम परिस्थितियों में किसी भी राजकीय सम्मान को धारण करना अपमानजनक समझते हैं। यह साहसी कदम ब्रिटिश शासन की अनैतिकता के विरुद्ध भारतीय बुद्धिजीवियों के गहरे आक्रोश का एक प्रखर प्रतीकात्मक प्रदर्शन था।

147. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई, जो सांप्रदायिक राजनीति का एक नवीन सोपान था। तत्पश्चात 1907 में सूरत में कांग्रेस का ऐतिहासिक विभाजन हुआ। महात्मा गांधी ने 1917 में चंपारण सत्याग्रह द्वारा अपनी राजनीतिक सक्रियता प्रारंभ की और 1918 में खेड़ा सत्याग्रह का कुशल नेतृत्व किया। ये घटनाएं 20वीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों में भारतीय राजनीति के परिवर्तित स्वरूप और रणनीतियों को रेखांकित करती हैं। इन क्रमिक घटनाओं ने ही कालांतर में एक सुसंगठित और राष्ट्रव्यापी स्वतंत्रता आंदोलन का सुदृढ़ आधार निर्मित किया।

148. (D) एस.ए. डांगे और एम.एन. राय जैसे नव-उभरते कम्युनिस्ट
कानपुर षड्यंत्र मामला ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में विस्तृत हो रही कम्युनिस्ट विचारधारा को दमित करने का एक सुयोजित प्रयास था। सरकार ने एम.एन. राय, एस.ए. डांगे और अन्य नेताओं पर हिंसक क्रांति द्वारा ब्रिटिश सम्राट की संप्रभुता को चुनौती देने का अभियोग लगाया। इस मुकदमे द्वारा अंग्रेजों ने वामपंथी नेताओं को कारावास में डालकर आंदोलन को शैशवावस्था में ही कुचलने का प्रयत्न किया। किंतु, इस अभियोग ने जनसाधारण के मध्य कम्युनिस्ट विचारों को और अधिक प्रचारित किया और क्रांतिकारी राजनीति को एक नवीन आयाम प्रदान किया।

149. (C) कार्यकारी परिषद में प्रतिनिधित्व के विषय पर मुस्लिम लीग की हठधर्मिता।
1945 में वेवेल योजना और शिमला सम्मेलन की विफलता का मुख्य कारण मुस्लिम लीग की यह हठधर्मिता थी कि कार्यकारी परिषद के समस्त मुस्लिम सदस्यों को नामांकित करने का एकमात्र अधिकार केवल उसके पास होना चाहिए। कांग्रेस ने इस मांग का विरोध किया क्योंकि वह स्वयं को एक धर्मनिरपेक्ष संगठन मानती थी जिसमें मुस्लिम सदस्य भी सम्मिलित थे। जिन्ना के इस अड़ियल रुख के कारण कोई सर्वमान्य समझौता संभव नहीं हो सका। इस असफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब भारत का विभाजन टालना लगभग असंभव होता जा रहा है।

150. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1947 में विभाजन और शरणार्थी संकट के फलस्वरूप भारत में खाद्यान्न की तीव्र कमी उत्पन्न हो गई थी। अर्थव्यवस्था पूर्णतः कृषि पर आश्रित थी किंतु सिंचाई और आधुनिक तकनीकों का अभाव था। अतः, प्रथम पंचवर्षीय योजना ने कृषि और सिंचाई परियोजनाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की ताकि राष्ट्र खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हो सके और मुद्रास्फीति पर नियंत्रण पाया जा सके। इस प्राथमिकता का मुख्य ध्येय एक सुदृढ़ आर्थिक आधार निर्मित करना था, जिसके बिना भविष्य में किसी भी औद्योगिक विकास की कल्पना करना नितांत कठिन होता।

151. (D) 1905 में बंगाल का विभाजन।
लॉर्ड कर्जन द्वारा 1905 में किया गया बंगाल का विभाजन उग्रवादी राष्ट्रवाद के अभ्युदय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना

168. (A) न केवल मुस्लिमों के लिए बल्कि दलित वर्गों और अन्य अल्पसंख्यकों के लिए भी पृथक निर्वाचक मंडल।
1932 में ब्रिटिश सरकार द्वारा घोषित सांप्रदायिक पंचाट ने भारत में 'विभाजन करो और शासन करो' की कुनीति को और अधिक विस्तृत किया। इसमें दलित वर्गों को भी हिंदू समाज से पृथक मानते हुए उनके हेतु पृथक निर्वाचक मंडल का प्रावधान किया गया। गांधीजी ने इसे हिंदू समाज को विखंडित करने का षड्यंत्र माना और इसके विरोध में यरवदा जेल में आमरण अनशन प्रारंभ किया। इसी के फलस्वरूप कालांतर में ऐतिहासिक 'पूना पैक्ट' संपन्न हुआ, जिसमें पृथक निर्वाचक मंडल के स्थान पर आरक्षित सीटों की व्यवस्था को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

169. (C) जम्मू और कश्मीर रियासत के भारत में विलय को लेकर विवाद, जिससे पाकिस्तान के साथ संघर्ष हुआ।
कश्मीर समस्या का सूत्रपात 1947 में महाराजा हरि सिंह के विलय के निर्णय में विलंब और तत्पश्चात पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित हमले से हुआ। भारत ने विधिक विलय पत्र के आधार पर सैन्य सहायता प्रेषित की, जिससे प्रथम भारत-पाक युद्ध प्रारंभ हुआ। यह विषय संयुक्त राष्ट्र में पहुँचा, जहाँ संघर्ष विराम रेखा (LoC) निर्धारित हुई और जनमत संग्रह की शर्त रखी गई जो कभी पूर्ण न हो सकी। 1964 तक यह विषय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत और पाकिस्तान के मध्य निरंतर तनाव और अनेक सैन्य संघर्षों का मूल कारण बना रहा।

170. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारतीय राष्ट्रवाद कोई एकरूपी विचारधारा नहीं थी, अपितु यह विभिन्न सामाजिक समूहों और राजनीतिक दृष्टिकोणों का अद्भुत संगम था। उदारवादी जहाँ क्रमिक संवैधानिक सुधार चाहते थे, वहीं उग्रवादी पूर्ण स्वराज के अनन्य पक्षधर थे। क्रांतिकारी सशस्त्र विद्रोह में विश्वास रखते थे और वामपंथी वर्ग संघर्ष द्वारा सामाजिक समानता की स्थापना करना चाहते थे। इन विभिन्न धाराओं के मध्य आपसी मतभेद और वैचारिक विमर्श के उपरांत भी, उन सबका अंतिम और साझा ध्येय ब्रिटिश शासन का समूल अंत था। इस वैचारिक विविधता ने ही स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक आधार प्रदान किया।

171. (D) कई भारतीय शासक और बड़े क्षेत्र तटस्थ रहे या उन्होंने अंग्रेजों का समर्थन किया।
1857 के विद्रोह की विफलता का एक प्रमुख कारण इसका अखिल भारतीय न होना था। जहाँ उत्तर भारत के विशाल भू-भाग में युद्ध व्याप्त था, वहीं दक्षिण भारत, पंजाब और बंगाल के अधिकांश क्षेत्र शांत रहे। अनेक शक्तिशाली रियासतों जैसे हैदराबाद, ग्वालियर और पटियाला के शासकों ने न केवल विद्रोह से दूरी बनाई, अपितु सक्रिय रूप से अंग्रेजों की सहायता की। तत्कालीन गवर्नर जनरल कैनिंग ने स्वीकार किया था कि यदि ये शासक विद्रोह में सम्मिलित हो जाते, तो अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ता। इन शासकों ने ब्रिटिश सत्ता हेतु रक्षा कवच का कार्य किया।

172. (B) छोटा नागपुर
कोल विद्रोह 1831-32 में मुख्य रूप से छोटा नागपुर क्षेत्र (वर्तमान झारखंड) में संचालित हुआ था। कोल आदिवासियों ने अपनी पैतृक भूमि पर बाहरी लोगों (दिकुओं) के बढ़ते प्रभुत्व और ब्रिटिश प्रशासन द्वारा आरोपित मनमाने करों के विरुद्ध शस्त्र उठाए थे। अंग्रेजों ने उनकी पारंपरिक न्याय प्रणाली को प्रतिस्थापित कर नवीन जटिल न्यायालय स्थापित किए थे, जिससे आदिवासियों में तीव्र असंतोष था। बुद्धो भगत और अन्य प्रखर नेताओं के नेतृत्व में यह विद्रोह संपन्न हुआ। यद्यपि इसे सैन्य बल से दमित किया गया, किंतु इसने जनजातीय शोषण के विरुद्ध एक सुदृढ़ स्वर बुलंद किया।

173. (C) इसने सिद्ध किया कि संगठित अहिंसक जन विरोध सरकार को रियायत देने के लिए विवश कर सकता है।
बारदोली सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के गौरवशाली इतिहास में एक सुसंगठित और अनुशासित अहिंसक संघर्ष का अनुपम उदाहरण है। सरदार पटेल के कुशल नेतृत्व में किसानों ने अटूट सामूहिक एकता का प्रदर्शन करते हुए सरकार को झुकने पर विवश कर दिया। इस गौरवमयी सफलता ने न केवल बढ़ी हुई लगान दरों को न्यून कराया, अपितु राष्ट्र भर के जन आंदोलनों को यह अटूट विश्वास दिलाया कि गांधीवादी रणनीतियां पूर्णतः प्रभावी हैं। इसने सिद्ध किया कि यदि जनता संगठित और अनुशासित रहे, तो वे बिना शस्त्रों के भी औपनिवेशिक सत्ता से अपने अधिकार प्राप्त कर सकते हैं।

174. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
बाल गंगाधर तिलक ने स्वराज को भारतीयों का जन्मसिद्ध अधिकार घोषित किया, जबकि महात्मा गांधी ने 1942 में "करो या मरो" का ऐतिहासिक उद्घोष किया। अरबिंदो घोष ने 'निष्क्रिय प्रतिरोध' के सिद्धांत को प्रतिपादित किया, जो उग्रवादी चरण की प्रमुख रणनीति थी। 'गदर' शब्द विदेशों में सक्रिय उन क्रांतिकारियों से संबद्ध है जिन्होंने सशस्त्र विद्रोह की विस्तृत योजना निर्मित की थी। ये नारे और शब्दावलियां भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विविध सोपानों, विचारधाराओं और उन महानायकों की अदम्य भावना को प्रतिबिंबित करती हैं जिन्होंने राष्ट्र को स्वतंत्र कराने में अविस्मरणीय योगदान दिया।

175. (A) संवैधानिक आंदोलन और याचिका देने पर ध्यान केंद्रित करना।
क्रांतिकारियों की प्रखर विचारधारा उदारवादियों की संवैधानिक राजनीति और याचिकाओं के पूर्णतः विपरीत थी। उनका दृढ़ विश्वास था कि केवल शांतिपूर्ण प्रार्थनाओं से ब्रिटिश शासन को समाप्त करना असंभव है। उनके हेतु सशस्त्र संघर्ष, सर्वोच्च आत्म-बलिदान और गुप्त संगठनों द्वारा विदेशी सत्ता को चुनौती देना ही एकमात्र प्रशस्त मार्ग था। उन्होंने औपनिवेशिक अधिकारियों को लक्षित कर जनसाधारण के मानस से ब्रिटिश अजेयता का भ्रम दूर करने का प्रयास किया। उनके कृत्य वीरतापूर्ण और क्रांतिकारी थे, जो क्रमिक सुधारों के स्थान पर पूर्ण स्वाधीनता और ब्रिटिश सत्ता के अंत हेतु समर्पित थे।

176. (B) स्वदेशी आंदोलन
स्वदेशी आंदोलन 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में प्रारंभ हुआ था, जो गांधीजी के भारतीय राजनीति में सक्रिय होने (1915-17) से पूर्व की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। इस आंदोलन का नेतृत्व मुख्य रूप से तिलक, लाला लाजपत राय

और विकासशील राष्ट्रों को विश्व राजनीति में एक स्वतंत्र और प्रभावशाली स्वर प्रदान करने की दिशा में ऐतिहासिक कार्य किया।

160. (B) सिख, गोरखा और पठान जैसी 'लड़ाकू जातियों' से सैनिकों की भर्ती की नीति अपनाई गई।
1857 के विद्रोह के पश्चात अंग्रेजों ने भारतीय सेना की संरचना में व्यापक परिवर्तन किए ताकि भविष्य में ऐसे विद्रोहों की पुनरावृत्ति रोकी जा सके। उन्होंने अवध, बिहार और मध्य भारत के उन क्षेत्रों से भर्ती न्यून कर दी जहाँ से विद्रोह का सूत्रपात हुआ था। इसके स्थान पर, उन्होंने सिख, गोरखा और पंजाब के मुसलमानों जैसी जातियों को 'मार्शल रेस' (लड़ाकू जातियों) के रूप में वर्गीकृत कर उन्हें सेना में प्राथमिकता दी। साथ ही, सेना के भीतर क्षेत्रीय और सांप्रदायिक विभाजन बनाए रखने की नीति अपनाई गई ताकि सैनिकों में एकता न हो सके।

161. (B) एक 'गणराज्य' स्थापित करने के लिए ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के घोषित उद्देश्य के साथ एक सशस्त्र संघर्ष।
वासुदेव बलवंत फड़के का विद्रोह 1857 के पश्चात का प्रथम सुसंगठित प्रयास था जिसने भारत में एक स्वतंत्र गणराज्य की स्थापना को अपना स्पष्ट ध्येय बनाया। उन्होंने समाज के विभिन्न वंचित वर्गों, विशेषकर रामोसी जनजाति को संगठित कर सरकारी खजानों पर साहसिक प्रहार किए। उनका अटल विश्वास था कि केवल सशस्त्र संघर्ष ही विदेशी शासन को समूल समाप्त कर सकता है। यद्यपि उन्हें बंदी बनाकर अदन निर्वासित किया गया, किंतु उनके विद्रोह ने क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के एक नवीन युग का सूत्रपात किया जिसने आगे चलकर अनगिनत महान क्रांतिकारियों को प्रेरित किया।

162. (A) यह मुख्य रूप से औद्योगिक श्रमिकों का आंदोलन था।
चंपारण सत्याग्रह (1917) मुख्य रूप से कृषि और कृषकों से संबंधित संघर्ष था, न कि औद्योगिक श्रमिकों से। यह बिहार के उन किसानों का आंदोलन था जिन्हें यूरोपीय बागान स्वामियों द्वारा बलात नील उत्पादन हेतु विवश किया जाता था। गांधीजी ने इस आंदोलन द्वारा प्रथम बार सत्याग्रह और अहिंसा की अपनी शक्ति का भारत में परिचय दिया। इस आंदोलन की अपार सफलता ने कृषकों की दयनीय स्थिति में गुणात्मक सुधार किया और गांधीजी को राष्ट्रीय राजनीति में एक प्रभावशाली और सर्वमान्य जन नेता के रूप में मजबूती से प्रतिष्ठित कर दिया।

163. (A) 1, 2, 3, 4
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के नायकों का यह क्रम भारतीय राजनीति के क्रमिक और व्यवस्थित विकास को दर्शाता है। दादाभाई नौरोजी ने 19वीं शताब्दी के अंत में उदारवादी चरण का नेतृत्व किया। तत्पश्चात 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में बाल गंगाधर तिलक ने उग्रवादी राष्ट्रवाद को जन-जन तक पहुँचाया। 1920 के दशक में भगत सिंह और उनके साथी क्रांतिकारी धारा के अप्रतिम नायक बनकर उभरे। अंततः, जवाहरलाल नेहरु ने स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में राष्ट्र निर्माण का उत्तरदायित्व संभाला। यह कालक्रम स्वतंत्रता संघर्ष के निरंतर बदलते स्वरूपों को स्पष्ट करता है।

164. (D) अधिवेशन के अध्यक्ष का निर्वाचन, जिसमें उग्रवादी लाला लाजपत राय को चाहते थे और उदारवादी रासबिहारी घोष का प्रस्ताव कर रहे थे।
1907 के सूरत अधिवेशन में विभाजन का तात्कालिक और सर्वाधिक दृश्यमान कारण अध्यक्ष पद हेतु हुआ तीव्र संघर्ष था। उग्रवादी चाहते थे कि आंदोलन का नेतृत्व लाला लाजपत राय जैसे जुझारु नेता करें, ताकि स्वराज और बहिष्कार के एजेंडे को अधिक शक्ति प्राप्त हो। दूसरी ओर, उदारवादी एक नरमपंथी और संवैधानिक नेतृत्व के पक्ष में थे। यह केवल व्यक्तिगत पद का निर्वाचन नहीं था, अपितु दो विपरीत राजनीतिक विचारधाराओं और कार्य-शैलियों का भीषण टकराव था। इस टकराव ने अंततः कांग्रेस को दो गुटों में विभाजित कर राष्ट्रीय आंदोलन को तात्कालिक रूप से दुर्बल किया।

165. (A) केवल 1 और 2
भारत में क्रांतिकारी गतिविधियाँ मुख्य रूप से बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब जैसे प्रबुद्ध क्षेत्रों में केंद्रित थीं, जहाँ राजनीतिक चेतना अत्यंत प्रखर थी। इन क्रांतिकारियों ने दमनकारी ब्रिटिश अधिकारियों को लक्षित किया और अपनी गतिविधियों के वित्तपोषण हेतु सरकारी संपदा पर अधिकार किया। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि वे जनसाधारण से पूर्णतः पृथक थे; वास्तव में, उनके अदम्य साहस और बलिदान ने आम नागरिकों के हृदय में गहरी सहानुभूति और प्रज्वलित देशभक्ति का संचार किया। उन्होंने युवाओं हेतु प्रेरणा के अक्षय स्रोत के रूप में कार्य किया और स्वतंत्रता संघर्ष को एक नवीन जुझारु तेवर प्रदान किया।

166. (B) भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA)
सुभाष चंद्र बोस ने "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा!" का अमर आह्वान दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) के योद्धाओं और भारतीय प्रवासियों के मध्य किया था। इस उद्घोष का मुख्य उद्देश्य भारतीयों को सशस्त्र संघर्ष हेतु प्रेरित करना और उन्हें राष्ट्रहित में सर्वोच्च बलिदान हेतु सन्नद्ध करना था। बोस का दृढ़ विश्वास था कि बिना प्रत्यक्ष संघर्ष और बलिदान के स्वतंत्रता प्राप्ति संभव नहीं है। इस शक्तिशाली नारे ने सहस्रों नागरिकों को INA में सम्मिलित होने और ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध निर्णायक सैन्य अभियान संचालित करने हेतु प्रोत्साहित किया।

167. (D) वर्ग संघर्ष।
वामपंथी विचारधारा और गांधीवादी दृष्टिकोण के मध्य मुख्य वैचारिक मतभेद 'वर्ग संघर्ष' की अवधारणा पर केंद्रित था। वामपंथी मानते थे कि समाज में जमींदारों और किसानों तथा पूंजीपतियों और श्रमिकों के मध्य हितों का टकराव अपरिहार्य है, जिसे केवल वर्ग संघर्ष द्वारा ही सुलझाया जा सकता है। इसके विपरीत, गांधीजी 'ट्रस्टीशिप' और 'वर्ग सहयोग' के सिद्धांत में अटूट विश्वास रखते थे, जहाँ संपन्न और निर्धन आपसी समन्वय से रह सकें। वामपंथियों हेतु सामाजिक क्रांति का अर्थ आर्थिक ढांचे का आमूल-चूल परिवर्तन था, जबकि गांधीजी नागरिकों के नैतिक और हृदय परिवर्तन पर बल देते थे।

116. (D) सिंचाई और बिजली परियोजनाओं सहित कृषि
स्वतंत्रता के समय भारत गंभीर खाद्यान्न संकट और निर्धनता से ग्रस्त था, अतः प्रथम पंचवर्षीय योजना ने कृषि क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की। इसका मुख्य ध्येय खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना था। सरकार ने भाखड़ा-नांगल और हीराकुंड जैसे विशाल बांधों के निर्माण और सिंचाई प्रणालियों के विस्तार पर भारी निवेश किया। इस योजना ने बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ किया और यह सफल रही, जिससे भविष्य में तीव्र औद्योगीकरण की नींव रखने हेतु आवश्यक आत्मविश्वास और आर्थिक स्थिरता प्राप्त हुई।

117. (C) मौलवी अहमद उल्ला
मौलवी अहमद उल्ला शाह 1857 के विद्रोह के एक असाधारण नायक थे, जिन्होंने फैजाबाद में ब्रिटिश सत्ता को कड़ी चुनौती दी। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध 'धर्मयुद्ध' का आह्वान किया और विभिन्न समुदायों को एकीकृत कर एक प्रभावशाली विद्रोही सैन्य बल गठित किया। ब्रिटिश सैन्य अधिकारी उन्हें अपनी राह का सर्वाधिक कठिन अवरोध मानते थे क्योंकि उनकी रणनीतियां और जन समर्थन अत्यंत व्यापक थे। उनकी शहादत के पश्चात ही अंग्रेज उस क्षेत्र में अपना नियंत्रण पुनर्स्थापित कर सके। वे भारतीय प्रतिरोध की अदम्य और अविनाशी भावना के प्रतीक हैं।

118. (B) रानी गैडिनल्यू
रानी गैडिनल्यू नागा पहाड़ियों की एक महान क्रांतिकारी नेता थीं, जिन्होंने मात्र 13 वर्ष की अल्पायु में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का ध्वज बुलंद किया। उन्होंने अपने चचेरे भाई जादोनांग के 'हेराका' आंदोलन को आगे बढ़ाया और नागाओं को विदेशी शासन के विरुद्ध एकजुट किया। उन्हें 1932 में बंदी बनाया गया और आजीवन कारावास का दंड दिया गया। जवाहरलाल नेहरु ने उन्हें 'पहाड़ियों की बेटी' और 'रानी' की उपाधि से अलंकृत किया। उनका संघर्ष उत्तर-पूर्व भारत में जनजातीय चेतना और प्रखर राष्ट्रवाद का एक प्रेरणादायक उदाहरण है।

119. (D) अकाल संहिता
1918 में गुजरात के खेड़ा जिले में फसलें विनष्ट होने के उपरांत भी राजस्व अधिकारियों ने कर वसूली अनवरत जारी रखी, जो ब्रिटिश 'अकाल संहिता' (फेमिन कोड) का स्पष्ट उल्लंघन था। संहिता के अनुसार, यदि उत्पादन सामान्य से एक चौथाई से कम हो, तो राजस्व पूर्णतः माफ होना चाहिए था। गांधीजी और सरदार पटेल ने किसानों को इस घोर अन्याय के विरुद्ध संगठित किया। यह सत्याग्रह न केवल आर्थिक न्याय हेतु था, अपितु औपनिवेशिक सरकार को अपने ही निर्मित कानूनों का अनुपालन करने हेतु विवश करने का एक नैतिक संघर्ष था।

120. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
गोपाल कृष्ण गोखले कांग्रेस के उदारवादी चरण के प्रतीक थे, जबकि बाल गंगाधर तिलक ने उग्रवादी विचारधारा का सफल नेतृत्व किया। भगत सिंह क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के अप्रतिम नायक थे जिन्होंने समाजवाद को भी आत्मसात किया, और एम.एन. राय भारत में वामपंथी एवं कम्युनिस्ट राजनीति के प्रमुख प्रस्तावक रहे। ये सभी नेता भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की विविध विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन विभिन्न दृष्टिकोणों के उपरांत भी, उन सभी का साझा और एकमात्र ध्येय भारत को विदेशी दासता से मुक्त करना और एक श्रेष्ठ न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करना था।

121. (C) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर औपनिवेशिक शोषण को उजागर किया और इस उद्देश्य के लिए जनमत तैयार किया।
विदेशों में सक्रिय क्रांतिकारियों ने भारत के स्वाधीनता संघर्ष को वैश्विक पहचान दिलाने में निर्णायक भूमिका निभाई। उन्होंने विभिन्न देशों में पत्र-पत्रिकाओं द्वारा ब्रिटिश शासन के अत्याचारों और भारत की आर्थिक तबाही का सत्य विश्व के समक्ष रखा। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजों की नैतिक छवि निर्बल हुई और भारत के पक्ष में वैश्विक सहानुभूति जाग्रत हुई। साथ ही, इन केंद्रों ने भारतीय छात्रों और प्रवासियों को स्वतंत्रता हेतु संगठित किया, जिससे आंदोलन को एक व्यापक वैश्विक आधार और नैतिक समर्थन प्राप्त हुआ।

122. (A) सविनय अवज्ञा आंदोलन
1930 का दांडी मार्च या नमक सत्याग्रह सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रारंभ का सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षण था। गांधीजी ने नमक जैसे बुनियादी विषय का चयन कर सरकार के अन्यायपूर्ण एकाधिकार को चुनौती दी और समाज के प्रत्येक वर्ग को आंदोलन से संबद्ध किया। साबरमती से दांडी तक की उनकी पैदल यात्रा ने संपूर्ण राष्ट्र में अपूर्व उत्साह भर दिया। इस प्रतीकात्मक विरोध ने सिद्ध किया कि अहिंसक साधनों द्वारा भी एक शक्तिशाली साम्राज्य के कानूनों की अवहेलना की जा सकती है, जिससे यह आंदोलन राष्ट्रव्यापी जन विद्रोह बन गया।

123. (D) वे अहिंसा और वर्ग सहयोग की गांधीवादी रणनीति से पूर्णतः सहमत थे।
भारतीय वामपंथी नेताओं के गांधीवादी रणनीति के साथ गंभीर वैचारिक मतभेद थे। जहाँ गांधीजी विभिन्न वर्गों के मध्य सहयोग और पूर्ण अहिंसा पर बल देते थे, वहीं वामपंथी वर्ग संघर्ष को सामाजिक परिवर्तन का अपरिहार्य साधन मानते थे। वे प्रायः गांधीजी की आंदोलन वापस लेने की नीति की तीखी आलोचना करते थे और इसे बुर्जुआ हितों की रक्षा मानते थे। उनके दृष्टिकोण में वास्तविक स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं, अपितु क्रांतिकारी आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों से ही संभव थी, जिसके लिए वे अधिक आक्रामक और प्रत्यक्ष मार्ग के पक्षधर थे।

124. (B) एक निर्बल केंद्र सरकार के साथ त्रि-स्तरीय संरचना।
1946 के कैबिनेट मिशन ने भारत की एकता अक्षुण्ण रखने हेतु एक जटिल संघीय ढांचे का प्रस्ताव दिया था। इसमें प्रांतों को तीन समूहों में विभाजित किया गया था और केंद्र के पास केवल रक्षा, विदेश मामले और संचार जैसे सीमित विषय रखे गए थे। मिशन का ध्येय पाकिस्तान की मांग को टालते हुए मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान करना था। किंतु, केंद्र की शक्तियों और समूहों की व्याख्या पर कांग्रेस और लीग के मध्य तीव्र असहमति के कारण यह योजना अंततः पूर्णतः विफल सिद्ध हुई।

और बिपिन चंद्र पाल जैसे उग्रवादी नेताओं ने किया था। इसके विपरीत, चंपारण सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रत्यक्ष रूप से महात्मा गांधी के नेतृत्व और उनकी सत्याग्रह की मौलिक विचारधारा के अंतर्गत संचालित हुए। स्वदेशी आंदोलन ने बहिष्कार और आत्मनिर्भरता के उन सिद्धांतों की सुदृढ़ नींव रखी, जिन्हें कालांतर में गांधीजी ने और अधिक विस्तृत किया।

177. (B) रूसी क्रांति जैसी वैश्विक घटनाओं का प्रभाव और श्रमिकों एवं किसानों के मध्य बढ़ता असंतोष।
भारत में वामपंथ के अभ्युदय का मुख्य कारण 1917 की रूसी क्रांति की अपार सफलता थी, जिसने शोषित वर्गों को संगठित होने का नवीन मार्ग दिखाया। साथ ही, प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात भारत में व्याप्त बेरोजगारी और आर्थिक कठिनाइयों ने मजदूरों और कृषकों को अपने अधिकारों के प्रति निरंतर जागरूक किया। मध्यम वर्ग के प्रबुद्ध युवाओं में गांधीवादी नीतियों की सीमित सफलता से मोहभंग होने के कारण भी उनका झुकाव समाजवाद की ओर तीव्र हुआ। इन सभी कारकों ने स्वतंत्रता संग्राम में एक क्रांतिकारी सामाजिक-आर्थिक एजेंडा प्रस्तुत किया जिसने भारतीय वर्ग चेतना को सुदृढ़ किया।

178. (A) औपनिवेशिक नीतियों द्वारा जानबूझकर बढ़ावा दी गई और राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कुछ समूहों द्वारा प्रयुक्त विचारधारा।
सांप्रदायिकता को भारत के विभाजन के मुख्य कारण के रूप में विश्लेषित किया जाता है, जो कोई प्राचीन विद्वेष नहीं अपितु एक आधुनिक राजनीतिक उपकरण था। अंग्रेजों ने अपनी 'विभाजन करो और शासन करो' की कुनीति के अंतर्गत धार्मिक पहचान को राजनीतिक पहचान में परिवर्तित किया। पृथक निर्वाचक मंडल जैसे विधिक प्रावधानों ने समुदायों के मध्य अविश्वास के बीज बोए। कुछ राजनीतिक संगठनों ने भी अपनी शक्ति संवर्धन हेतु धार्मिक भावनाओं का अनुचित सहारा लिया। इस प्रकार, सांप्रदायिकता एक ऐसी विचारधारा के रूप में उभरी जिसने राष्ट्रवाद को निर्बल कर धर्म आधारित पृथक पहचान को सर्वोपरि बनाया।

179. (C) सरदार वल्लभभाई पटेल
स्वतंत्रता पश्चात भारत की अखंडता को सुरक्षित करने का विकट और चुनौतीपूर्ण दायित्व सरदार वल्लभभाई पटेल को प्रदान किया गया था। उन्होंने अपनी विलक्षण दूरदर्शिता, अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प द्वारा 560 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित होने हेतु राजी किया। पटेल ने कुशल कूटनीति और आवश्यकता पड़ने पर कठोर विधिक निर्णयों द्वारा राष्ट्र को विखंडित होने से बचाया। उनके इस ऐतिहासिक योगदान हेतु ही उन्हें 'भारत का लौह पुरुष' कहा जाता है। उनके बिना आधुनिक एकीकृत भारत की परिकल्पना करना नितांत असंभव है, वे राष्ट्र की एकता के शिल्पी हैं।

180. (D) भारी उद्योगों और सार्वजनिक क्षेत्र पर बल देते हुए तीव्र औद्योगीकरण।
द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-61) ने स्वतंत्र भारत के आर्थिक विकास की दिशा परिवर्तित कर दी। पी.सी. महालनोबिस के मॉडल पर आधारित इस योजना ने भारी उद्योगों और आधारभूत ढांचे के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। सरकार का विश्वास था कि इस्पात, कोयला और विद्युत जैसे प्रमुख उद्योगों में निवेश द्वारा ही राष्ट्र को आत्मनिर्भर और प्रगतिशील बनाया जा सकता है। सार्वजनिक क्षेत्र को आर्थिक विकास के 'कमांडिंग हाइट्स' पर प्रतिष्ठित किया गया ताकि तीव्र औद्योगिक विकास के साथ सामाजिक न्याय भी सुनिश्चित हो सके। इस योजना ने आधुनिक औद्योगिक भारत की नींव रखी।

181. (C) एक नया शिक्षित मध्यम वर्ग और औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत व्यापक आर्थिक कठिनाइयाँ।
भारतीय राष्ट्रवाद का अभ्युदय ब्रिटिश शासन की शोषणकारी नीतियों के विरुद्ध उपजे गहरे सामाजिक और आर्थिक असंतोष का परिणाम था। पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग ने लोकतांत्रिक मूल्यों और स्वाधीनता के विचारों को समाज में प्रसारित किया। वहीं, कृषकों पर आरोपित भारी लगान, कारीगरों का व्यवस्थित विनाश और बार-बार पड़ने वाले अकालों ने जनसाधारण को आर्थिक रूप से विनष्ट कर दिया। इस सामूहिक संकट ने भारतीयों को अनुभव कराया कि उनका साझा शत्रु ब्रिटिश साम्राज्यवाद है। इसी चेतना ने विभिन्न वर्गों को एक साझा मंच पर आकर विदेशी शासन का विरोध करने हेतु प्रेरित किया।

182. (B) लॉर्ड डलहौजी द्वारा अपनाई गई व्यपगत का सिद्धांत (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स) की नीति।
1857 के विद्रोह के पीछे अनेक राजनीतिक कारण विद्यमान थे, जिनमें लॉर्ड डलहौजी की 'व्यपगत का सिद्धांत' सर्वाधिक विनाशकारी थी। इस कुनीति के अंतर्गत, जिन शासकों का कोई प्राकृतिक उत्तराधिकारी नहीं था, उनके दत्तक पुत्रों को अयोग्य घोषित कर उनके राज्यों को बलात ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन कर लिया गया। झांसी, नागपुर और सतारा जैसी प्रमुख रियासतों का विलय इसी आधार पर किया गया, जिससे भारतीय शासकों और उनकी प्रजा में गहरा आक्रोश एवं असुरक्षा का भाव जाग्रत हुआ। इसने ब्रिटिश सत्ता के प्रति अविश्वास को चरम पर पहुँचाया, जो विद्रोह का मुख्य आधार बना।

183. (D) इसका लक्ष्य जमींदारी प्रथा को समाप्त करना नहीं था बल्कि विधिक ढांचे के भीतर अवैध उपकरों और दमन के विरुद्ध संघर्ष करना था।
बंगाल का पाबना आंदोलन किसान आंदोलनों के गौरवशाली इतिहास में अपनी परिपक्वता और रणनीतिक सूझबूझ हेतु जाना जाता है। यहाँ कृषकों ने जमींदारों को पूर्णतः निष्कासित करने की मांग नहीं की, अपितु उनके द्वारा आरोपित अवैध लगान और बलपूर्वक वसूली का प्रखर विरोध किया। उन्होंने अपनी 'किसान लीग' निर्मित कर विधिक माध्यमों से संघर्ष किया और न्यायालयों में अपनी न्यायोचित बात रखी। कृषकों ने स्वयं को 'महारानी के रैयत' घोषित कर ब्रिटिश कानून के भीतर ही विधिक संरक्षण की मांग की। यह आंदोलन हिंसक क्रांति के स्थान पर सुसंगठित शांतिपूर्ण प्रतिरोध का उत्कृष्ट उदाहरण था।

राजनीतिक दूरियां बढ़ीं और अंततः भारत के विभाजन की दुखद वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार हुई, जो घातक सिद्ध हुई।

249. (C) नई भारतीय सरकार और रियासतों के बीच विद्यमान प्रशासनिक और आर्थिक व्यवस्था बनाए रखना।
'यथास्थिति समझौता' (स्टैंडस्टिल एग्रीमेंट) 1947 में भारत की स्वतंत्रता और रियासतों के विलय के संक्रमण काल के दौरान प्रयुक्त एक महत्वपूर्ण विधिक साधन था। इसका ध्येय रियासतों के भारत में अंतिम विलय होने तक उनके और केंद्र सरकार के मध्य व्यापार, संचार और डाक जैसी आवश्यक राजकीय सेवाओं को बिना किसी अवरोध के सुचारु रूप से जारी रखना था। यह समझौता सुनिश्चित करता था कि सत्ता हस्तांतरण के समय प्रशासनिक शून्यता उत्पन्न न हो। अधिकांश रियासतों ने भारत के साथ इस पर हस्ताक्षर किए, जिससे एकीकरण की जटिल प्रक्रिया को अधिक सुव्यवस्थित और सहज बनाया जा सका।

250. (A) किसी भी सैन्य गुट में सम्मिलित न होना और एक स्वतंत्र विदेश नीति बनाए रखना।
स्वतंत्रता पश्चात भारत द्वारा अंगीकार की गई गुटनिरपेक्षता की नीति का मुख्य उद्देश्य शीत युद्ध की प्रतिद्वंद्विता से पृथक रहकर अपनी संप्रभुता को सुरक्षित रखना था। जवाहरलाल नेहरु का अटूट विश्वास था कि भारत को न तो अमेरिकी गुट और न ही सोवियत गुट का भाग बनना चाहिए, ताकि वह अंतरराष्ट्रीय विषयों पर अपने स्वतंत्र विधिक निर्णय ले सके। यह नीति नव-स्वतंत्र राष्ट्रों के विकास और वैश्विक शांति हेतु एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती थी। इसने भारत को विश्व राजनीति में एक नैतिक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के नेतृत्व का स्वर्णिम अवसर प्रदान किया।

251. (D) राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार में सहायता की और औपनिवेशिक शासन की कमियों को उजागर किया।
भारतीय राष्ट्रवाद के अभ्युदय में भारतीय प्रेस, विशेषकर क्षेत्रीय भाषाओं के समाचार पत्रों ने अत्यंत निर्णायक भूमिका निभाई। इन पत्रों ने ब्रिटिश शासन की शोषणकारी आर्थिक नीतियों और दमनकारी कानूनों का निरंतर सूक्ष्म विश्लेषण किया, जिससे जनसाधारण में राजनीतिक चेतना जाग्रत हुई। प्रेस ने राष्ट्र के विभिन्न भागों के नेताओं और आंदोलनों की सूचनाएं प्रसारित कर नागरिकों को एक साझा राष्ट्रीय पहचान से संबद्ध किया। अंग्रेजों द्वारा आरोपित कठोर प्रतिबंधों के उपरांत भी, प्रेस ने भारतीयों को अन्याय के विरुद्ध स्वर बुलंद करने और स्वराज की मांग करने हेतु निरंतर प्रेरित और संगठित किया।

252. (D) 1, 2 और 3
1857 के महान विप्लव के उपरांत ब्रिटिश सरकार ने भारत के शासन ढांचे में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। 1858 के अधिनियम द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन पूर्णतः समाप्त कर दिया गया और भारत की सत्ता सीधे ब्रिटिश राजमुकुट ने ग्रहण कर ली। इस ऐतिहासिक परिवर्तन के साथ ही गवर्नर-जनरल के पद को 'वायसराय' की उपाधि प्रदान की गई, जो सीधे ब्रिटिश क्राउन का आधिकारिक प्रतिनिधि होता था। इन समस्त प्रशासनिक परिवर्तनों का मुख्य उद्देश्य भविष्य में किसी भी व्यापक विद्रोह की संभावना को क्षीण करना और ब्रिटिश नियंत्रण को अधिक व्यवस्थित, सुदृढ़ और स्थायी बनाना था।

253. (C) महाराष्ट्र और राजस्थान
भील विद्रोह 19वीं और 20वीं शताब्दी के समय पश्चिमी भारत के पहाड़ी क्षेत्रों, विशेषतः महाराष्ट्र के खानदेश और राजस्थान के दक्षिण-पश्चिमी भाग में केंद्रित रहा। भीलों ने ब्रिटिश शासन द्वारा अपने पारंपरिक वन अधिकारों पर आरोपित प्रतिबंधों और बाहरी प्रशासनिक हस्तक्षेप के विरुद्ध अनेक बार शस्त्र उठाए। अंग्रेजों ने उनकी गौरवशाली जीवन शैली को परिवर्तित करने का कुप्रयास किया और उन पर भारी लगान थोपा, जिसके परिणामस्वरूप गोविंद गुरु और अन्य स्थानीय नेताओं के नेतृत्व में भीलों ने तीव्र प्रतिरोध किया। ये विद्रोह जनजातीय स्वायत्तता और अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने का अनवरत संघर्ष थे।

254. (D) गांधी को जन लामबंदी के एक प्रभावशाली नए तरीके के साथ एक नेता के रूप में स्थापित किया।
चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद के स्थानीय आंदोलनों ने गांधीजी की अहिंसक सत्याग्रह की रणनीति की अमोघ प्रभावशीलता को सिद्ध किया। इन लघु किंतु सफल संघर्षों ने गांधीजी को समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर कृषकों और श्रमिकों की समस्याओं को समझने और उन्हें संगठित करने का अमूल्य अवसर प्रदान किया। उनकी इन प्रारंभिक जीतों ने उन्हें जनमानस के मध्य एक चमत्कारिक और विश्वसनीय नेता के रूप में प्रतिष्ठित किया। इन घटनाओं ने ही भविष्य के राष्ट्रव्यापी असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों हेतु एक सुदृढ़ संगठनात्मक और वैचारिक आधार तैयार किया, जिसने अंततः स्वतंत्रता संग्राम की संपूर्ण दिशा परिवर्तित कर दी।

255. (A) उदारवादी और उग्रवादी
1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का प्रथम ऐतिहासिक विभाजन उदारवादी (नरम दल) और उग्रवादी (गरम दल) गुटों के मध्य हुआ। यह विभाजन मुख्य रूप से बंगाल विभाजन के विरोध में अपनाई जाने वाली भविष्य की रणनीतियों और स्वराज के लक्ष्य को लेकर उपजे गहरे वैचारिक मतभेदों का परिणाम था। उदारवादी जहाँ संवैधानिक विधिक दायरे में रहकर सुधारों की आकांक्षा रखते थे, वहीं उग्रवादी पूर्ण बहिष्कार और तीव्र जन आंदोलनों के पक्षधर थे। इस आंतरिक फूट के कारण राष्ट्रीय आंदोलन कुछ कालखंड हेतु दुर्बल हुआ, जिसे ब्रिटिश सरकार ने दमनकारी नीतियों द्वारा और अधिक दबाने का प्रयत्न किया।

256. (B) ब्रिटेन में भारतीय क्रांतिकारी गतिविधियाँ।
1905 में श्यामजी कृष्णवर्मा द्वारा लंदन में स्थापित 'इंडिया हाउस' भारतीय क्रांतिकारियों और प्रबुद्ध छात्रों का एक प्रमुख वैश्विक केंद्र बन गया। इसका मुख्य ध्येय ब्रिटेन में निवास कर रहे भारतीयों के मध्य राष्ट्रवादी चेतना जाग्रत करना और भारत की स्वाधीनता हेतु अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाना था। विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल और मदनलाल ढींगरा जैसी महान हस्तियाँ इस केंद्र से संबद्ध थीं। इंडिया हाउस ने न केवल क्रांतिकारियों को वैचारिक मंच प्रदान किया, अपितु वहां से 'द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट' जैसी पत्रिकाओं द्वारा ब्रिटिश शासन

पर विजय प्राप्त करने में सहायता की, जिससे विद्रोह अंततः असफल हुआ।

192. (D) 1, 2 और 3
औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध प्रारंभिक प्रतिरोधों की प्रकृति अत्यंत विविध और गहन थी। भील विद्रोह ने पश्चिमी भारत में सामंती और ब्रिटिश शोषण को कड़ी चुनौती दी, जबकि नागा विद्रोह ने अपनी जनजातीय संप्रभुता की रक्षा हेतु शस्त्र उठाए। कूका विद्रोह ने धार्मिक सुधार के साथ प्रारंभ होकर राजनीतिक स्वाधीनता का लक्ष्य अंगीकार किया। ये सभी उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि ब्रिटिश शासन को न केवल राजनीतिक अपितु सामाजिक और सांस्कृतिक मोर्चों पर भी तीव्र स्थानीय प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, जिसने कालांतर में एक विशाल राष्ट्रीय आंदोलन की वैचारिक और साहसिक पृष्ठभूमि तैयार की।

193. (B) फसल नष्ट होने के कारण भू-राजस्व की माफी।
1918 के खेड़ा सत्याग्रह का मुख्य कारण भीषण अकाल और महामारी के फलस्वरूप फसलों का पूर्णतः विनष्ट हो जाना था। ब्रिटिश राजस्व कानून के अनुसार ऐसी विषम स्थिति में कृषकों को कर में छूट प्राप्त होनी चाहिए थी, किंतु प्रशासन हठधर्मिता के साथ पूर्ण वसूली पर अडिग था। गांधीजी ने कृषकों को संगठित कर उन्हें कर न देने की शपथ दिलाई। इस आंदोलन का मुख्य ध्येय कृषकों के विधिक अधिकारों की रक्षा करना और सरकार के हठधर्मी रवैये के विरुद्ध अहिंसक प्रतिरोध करना था। अंततः सरकार को अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी और कर वसूली को स्थगित किया गया।

194. (A) उग्रवादी
'लाल-बाल-पाल' शब्दावली लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल हेतु प्रयुक्त होती है, जो कांग्रेस के उग्रवादी गुट के सर्वाधिक प्रभावशाली नेता थे। उन्होंने 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रवाद को एक नवीन और जुझारू दिशा प्रदान की। इन नेताओं ने उदारवादियों की संवैधानिक प्रार्थनाओं के स्थान पर स्वराज, स्वदेशी और बहिष्कार जैसे अधिक आक्रामक और प्रत्यक्ष माध्यमों की वकालत की। उन्होंने आम नागरिकों और युवाओं को स्वतंत्रता संघर्ष से सक्रिय रूप से जोड़कर इसे एक वास्तविक जन आंदोलन बनाने का सफल प्रयास किया, जिससे राष्ट्रीय चेतना का व्यापक विस्तार हुआ।

195. (C) व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्य और सशस्त्र संघर्ष।
प्रारंभिक क्रांतिकारी संगठनों का यह दृढ़ विश्वास था कि ब्रिटिश शासन को केवल शस्त्रों और शक्ति के माध्यम से ही निष्कासित किया जा सकता है। उन्होंने दमनकारी अधिकारियों के उन्मूलन और साहसिक क्रांतिकारी गतिविधियों को क्रियान्वित किया ताकि भारतीयों के मानस से भय समाप्त हो और उनमें राष्ट्रीय गौरव का संचार हो। उनका मानना था कि सर्वोच्च आत्म-बलिदान और व्यक्तिगत वीरता के उदाहरण ही सुप्त जनता को जागृत कर सकते हैं। वे क्रमिक विधिक सुधारों अथवा याचिकाओं को कालक्षेप मानते थे और पूर्ण स्वाधीनता हेतु तत्काल सशस्त्र क्रांति के प्रबल पक्षधर थे।

196. (D) साइमन कमीशन की रिपोर्ट सहित भारत के लिए संवैधानिक सुधारों पर चर्चा करना।
लंदन में 1930 से 1932 के मध्य आयोजित तीन गोलमेज सम्मेलनों का मुख्य ध्येय साइमन कमीशन की अनुशंसाओं के आधार पर भारत के भविष्य के संवैधानिक ढांचे पर गहन विमर्श करना था। ब्रिटिश सरकार की आकांक्षा थी कि भारतीय नेता प्रस्तावित संवैधानिक सुधारों पर अपनी सहमति प्रदान करें। किंतु, कांग्रेस ने केवल द्वितीय सम्मेलन में सहभागिता की और सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर मतभेदों के कारण ये सम्मेलन वांछित परिणाम देने में विफल रहे। इन सम्मेलनों ने अंततः 1935 के ऐतिहासिक भारत सरकार अधिनियम के निर्माण की महत्वपूर्ण विधिक भूमिका तैयार की।

197. (C) वामपंथी और समाजवादी
1936 में लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना भारतीय किसान आंदोलन में एक निर्णायक और ऐतिहासिक मोड़ थी। इस संगठन के निर्माण में स्वामी सहजानंद सरस्वती जैसे प्रखर नेताओं के साथ वामपंथी और समाजवादी विचारधारा के कार्यकर्ताओं का गहरा प्रभाव था। उन्होंने अनुभव किया कि कृषकों को संगठित किए बिना साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष अपूर्ण है। इस संगठन ने कृषकों की मूलभूत समस्याओं जैसे जमींदारी उन्मूलन और ऋण माफी को राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में प्रतिष्ठित किया। इसने स्वतंत्रता संग्राम में एक जुझारू वर्ग-चेतना विकसित करने में अमूल्य योगदान दिया।

198. (B) भारत के उत्तर-पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में मुस्लिमों के लिए "स्वतंत्र राज्यों" के गठन का आह्वान किया।
1940 का लाहौर प्रस्ताव मुस्लिम लीग के इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है, जिसने औपचारिक रूप से पृथक राष्ट्र की मांग को वैधानिक आधार दिया। मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में पारित इस प्रस्ताव में उद्घोषणा की गई कि मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को स्वतंत्र और संप्रभु राज्यों के रूप में गठित किया जाना चाहिए। यद्यपि इसमें प्रत्यक्ष रूप से 'पाकिस्तान' शब्द का प्रयोग नहीं हुआ था, किंतु इसने द्वि-राष्ट्र सिद्धांत को मुस्लिम लीग का अंतिम ध्येय बना दिया। इस घोषणा ने भारतीय राष्ट्रीय एकता को गंभीर चुनौती दी और आगे के राजनीतिक समझौतों को अत्यधिक जटिल बना दिया।

199. (D) 1951-52
स्वतंत्र भारत के प्रथम आम चुनाव अक्टूबर 1951 से फरवरी 1952 के मध्य आयोजित किए गए थे। यह विश्व के लोकतांत्रिक इतिहास में एक अत्यंत विशाल और साहसी प्रयोग सिद्ध हुआ, क्योंकि भारत ने प्रथम बार व्यापक निर्धनता और निरक्षरता के उपरांत भी सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अंगीकार किया था। इन चुनावों ने वैश्विक स्तर पर सिद्ध किया कि भारतीय जनता लोकतंत्र हेतु पूर्णतः सन्नद्ध है। चुनाव आयोग के सफल प्रबंधन और व्यापक जन सहभागिता ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि को एक सुदृढ़ और परिपक्व लोकतंत्र के रूप में मजबूती से स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

184. (A) पंजाब केसरी
लाला लाजपत राय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रखर और ओजस्वी नेता थे, जिन्होंने पंजाब में राष्ट्रवादी चेतना जाग्रत करने में अग्रणी भूमिका निभाई। उनकी अदम्य निडरता और वीरता के कारण उन्हें 'पंजाब केसरी' अथवा 'शेर-ए-पंजाब' के नाम से विभूषित किया गया। वे 'लाल-बाल-पाल' की सुप्रसिद्ध तिकड़ी के महत्वपूर्ण सदस्य थे और उन्होंने उग्रवादी राष्ट्रवाद को एक सुदृढ़ वैचारिक आधार प्रदान किया। साइमन कमीशन के विरोध के समय पुलिस की लाठीचार्ज में वे गंभीर रूप से आहत हुए और अंततः उनका स्वर्गवास हो गया। उनके सर्वोच्च बलिदान ने राष्ट्र भर में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीव्र आक्रोश उत्पन्न किया।

185. (C) सूर्य सेन
1930 में चटगाँव शस्त्रागार छापे का सफल नेतृत्व सूर्य सेन ने किया था, जिन्हें उनके अनुयायी श्रद्धापूर्वक 'मास्टर दा' पुकारते थे। उन्होंने एक गुप्त क्रांतिकारी सैन्य दल 'इंडियन रिपब्लिकन आर्मी' का गठन किया और चटगाँव के दो प्रमुख शस्त्रागारों पर अधिकार कर लिया। यह घटना ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक सुसंगठित और सफल सैन्य प्रहार का अनुपम उदाहरण सिद्ध हुई। क्रांतिकारियों ने कुछ कालखंड हेतु चटगाँव को ब्रिटिश नियंत्रण से पूर्णतः मुक्त घोषित कर दिया था। सूर्य सेन की विलक्षण रणनीतिक कुशलता और अनुशासन ने बंगाल के युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम हेतु अत्यधिक प्रेरित और संगठित किया।

186. (A) डॉ. बी.आर. अंबेडकर
1932 में यरवदा जेल में महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर के मध्य ऐतिहासिक 'पूना पैक्ट' संपन्न हुआ। इसका मुख्य कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा दलितों हेतु घोषित 'पृथक निर्वाचक मंडल' की व्यवस्था थी, जिसे गांधीजी हिंदू समाज के विभाजन के रूप में देख रहे थे। इस समझौते के अंतर्गत अंबेडकर ने दलितों हेतु पृथक निर्वाचक मंडल की मांग का परित्याग किया, और इसके बदले में प्रांतीय एवं केंद्रीय विधानमंडलों में दलितों हेतु आरक्षित सीटों की संख्या में महत्वपूर्ण वृद्धि की गई। इसने दलितों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व और हिंदू समाज की एकता के मध्य एक न्यायपूर्ण मार्ग प्रशस्त किया।

187. (D) किसानों और श्रमिकों को किसान सभाओं और श्रमिक संघों (ट्रेड यूनियों) में संगठित करना।
स्वतंत्रता संग्राम में वामपंथियों ने समाज के सबसे वंचित सोपान को राजनीतिक रूप से सक्रिय करने में निर्णायक भूमिका निभाई। उन्होंने अनुभव किया कि वास्तविक स्वाधीनता हेतु कृषकों और श्रमिकों का सुसंगठित होना नितांत अनिवार्य है। इसी पुनीत उद्देश्य से उन्होंने अखिल भारतीय किसान सभा और विविध ट्रेड यूनियनों का गठन किया। उन्होंने इन वर्गों को उनके विधिक अधिकारों के प्रति सचेत किया और शोषण के विरुद्ध लड़ना सिखाया। उनके सतत प्रयासों ने राष्ट्रवादी आंदोलन को एक व्यापक जनाधार और सामाजिक-आर्थिक चेतना प्रदान की, जिससे यह केवल मध्यम वर्ग तक सीमित न रहकर वास्तविक जन आंदोलन बना।

188. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ब्रिटिश शासन ने भारत में अपना नियंत्रण अक्षुण्ण रखने हेतु धार्मिक विविधताओं का अत्यंत चतुराई से प्रयोग किया। उन्होंने 'विभाजन करो और शासन करो' की कुनीति के अंतर्गत 1909 में मुस्लिमों और कालांतर में अन्य समुदायों हेतु पृथक निर्वाचक मंडल की व्यवस्था प्रारंभ की। इस विधिक व्यवस्था ने नागरिकों को उनकी व्यापक राष्ट्रीय पहचान के स्थान पर संकुचित धार्मिक पहचान के आधार पर मतदान करने और सोचने हेतु विवश किया। इसने समाज में आपसी विश्वास को विनष्ट कर सांप्रदायिक राजनीति को प्रोत्साहित किया, जो अंततः राष्ट्र के दुखद विभाजन का सर्वाधिक प्रमुख और उत्तरदायी कारण सिद्ध हुआ।

189. (C) अंतर्राष्ट्रीय विषयों में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए दोनों महाशक्ति गुटों से समान दूरी बनाए रखना।
स्वतंत्रता पश्चात भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति का तात्पर्य विश्व विषयों से उदासीन होना नहीं था, अपितु किसी भी सैन्य गुट (अमेरिका अथवा सोवियत संघ) का भाग बने बिना स्वतंत्र विधिक निर्णय लेना था। जवाहरलाल नेहरू का विश्वास था कि भारत जैसे नव-स्वतंत्र राष्ट्र को अपनी समस्त ऊर्जा आंतरिक नवनिर्माण पर व्यय करनी चाहिए, न कि महाशक्तियों के टकराव में। भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उपनिवेशवाद, रंगभेद और वैश्विक शांति के विषयों पर अत्यंत सक्रिय भूमिका निभाई। यह नीति संप्रभुता की रक्षा और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिक नेतृत्व प्रदान करने की एक सुनियोजित और दूरदर्शी रणनीति थी।

190. (D) बिपिन चंद्र पाल
बिपिन चंद्र पाल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उग्रवादी गुट के प्रमुख स्तंभ थे और उन्हें 'लाल-बाल-पाल' की विख्यात तिकड़ी का अभिन्न भाग माना जाता था। वे उदारवादियों की अनुनय-विनय और याचिकाओं की निर्बल नीति के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने बंगाल विभाजन के समय स्वदेशी और बहिष्कार के प्रभावी माध्यमों से जनता को संघर्ष हेतु सुसज्जित किया। दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता और सुरेंद्रनाथ बनर्जी जैसे नेता उदारवादी चरण से संबद्ध थे, जो केवल संवैधानिक मर्यादाओं में रहकर सुधारों की आकांक्षा रखते थे। पाल की विचारधारा अत्यंत आक्रामक और पूर्ण स्वराज के प्रति अडिग थी।

191. (A) जनसाधारण के बीच ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए अत्यधिक समर्थन।
1857 के विद्रोह के दौरान ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को भारतीय जनसाधारण का कोई स्वाभाविक समर्थन प्राप्त नहीं था; इसके विपरीत, राष्ट्रव्यापी असंतोष ही विद्रोह का मूल कारण था। विद्रोह की विफलता के वास्तविक कारकों में सिखों, गोरखाओं और अनेक दक्षिण भारतीय राज्यों का अंग्रेजों के साथ होना सम्मिलित था। इसके अतिरिक्त, विद्रोहियों के पास किसी सुदृढ़ केंद्रीय योजना, आधुनिक शस्त्रों और प्रभावी संचार तंत्र का अभाव था। अंग्रेजों के पास श्रेष्ठ सैन्य रणनीति और सुशिक्षित नेतृत्व था, जिसने उन्हें बिखरे हुए विद्रोहियों

इसे तत्परता से स्वीकार किया और मुस्लिम लीग के गठन को प्रोत्साहित किया। आगा खान लीग के प्रथम स्थायी अध्यक्ष निर्वाचित हुए और उन्होंने प्रारंभ में ब्रिटिश शासन के प्रति निष्ठा और सांप्रदायिक हितों की रक्षा पर मुख्य ध्यान दिया।

209. (B) जम्मू और कश्मीर
जम्मू और कश्मीर का भारतीय संघ में विलय एक विशिष्ट और विषम परिस्थिति में संपन्न हुआ था। जब पाकिस्तान समर्थित हमलावरों ने आक्रमण किया, तब महाराजा हरि सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। भारत सरकार ने इस विलय को स्वीकार करते हुए आश्वासन दिया था कि राज्य में शांति स्थापना के पश्चात वहां की जनता की इच्छा जानने हेतु एक जनमत संग्रह (प्लेबिसिट) आयोजित किया जाएगा। किंतु, पाकिस्तान द्वारा अधिकृत क्षेत्रों को रिक्त न करने और निरंतर परिवर्तित परिस्थितियों के कारण यह जनमत संग्रह कभी संभव नहीं हो सका, जिससे यह एक दीर्घकालिक अंतरराष्ट्रीय विवाद बन गया।

210. (A) विकास लक्ष्यों की ओर आर्थिक संसाधनों को निर्देशित करने के लिए राज्य के नेतृत्व वाली योजना का उपयोग करना।
स्वतंत्रता पश्चात भारत ने अनुभव किया कि केवल निजी क्षेत्र के भरोसे निर्धनता और पिछड़ेपन को दूर करना संभव नहीं है। अतः, सरकार ने सोवियत मॉडल से प्रेरणा लेकर पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा नियोजित विकास का मार्ग चुना। इसका मूल विचार सीमित राष्ट्रीय संसाधनों का तार्किक और न्यायपूर्ण वितरण करना था ताकि भारी उद्योगों, कृषि और आधारभूत ढांचे का संतुलित क्षेत्रीय विकास हो सके। राज्य ने अर्थव्यवस्था में एक मार्गदर्शक और नियंत्रक की भूमिका निर्वहन की ताकि विकास का वास्तविक लाभ समाज के वंचित वर्गों तक भी समान रूप से पहुँच सके।

211. (C) कानून और प्रशासन की एक समान प्रणाली का प्रारंभ।
अंग्रेजों द्वारा संपूर्ण भारत में एक समान विधिक और प्रशासनिक व्यवस्था लागू करना एक ऐसा कदम था जिसने भारतीयों को अनजाने में एकीकृत किया, किंतु यह कोई नकारात्मक 'क्रिया' नहीं थी जिसने रोष उत्पन्न किया हो। इसके विपरीत, नस्लीय भेदभाव, आर्थिक लूट और राजनीतिक विस्तारवाद जैसी दमनकारी नीतियों ने भारतीयों के स्वाभिमान को सीधे आहत किया और उनमें राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया जाग्रत की। समान प्रशासन और कानून ने तो भारतीयों को एक ऐसा मंच प्रदान किया जहाँ वे अपनी साझा शिकायतों को उठा सके और एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में संगठित होने का विधिक आधार प्राप्त कर सके।

212. (A) 2, 1, 3, 4
1857 के विद्रोह की घटनाओं का कालक्रम सैन्य अनुशासन भंग होने और तत्पश्चात भड़के जन आक्रोश को स्पष्ट करता है। सर्वप्रथम मार्च में बैरकपुर में मंगल पांडे को फांसी दी गई, जिसने विद्रोह की चिंगारी सुलझाई। तत्पश्चात मई में मेरठ के सैनिकों ने खुला विद्रोह कर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। दिल्ली पहुँचकर उन्होंने बहादुर शाह जफर को अपना सम्राट घोषित किया। इस घटना के पश्चात ही विद्रोह की ज्वाला झांसी और अन्य सुदूर क्षेत्रों तक विस्तृत हुई। यह क्रम स्पष्ट करता है कि कैसे एक स्थानीय सैन्य घटना क्रमशः एक राष्ट्रव्यापी सुसंगठित विद्रोह में परिवर्तित हुई।

213. (C) उनके क्षेत्रों में बाहरी लोगों (दिकुओं) और औपनिवेशिक प्रशासनिक तंत्र की घुसपैठ।
अधिकांश आदिवासी विद्रोहों का मूल कारण उनकी जल, जंगल और जमीन पर उनके पारंपरिक अधिकारों का अपहरण था। अंग्रेजों ने आदिवासियों के क्षेत्रों में नवीन विधिक कानून लागू किए और बाहरी साहूकारों एवं जमींदारों (दिकुओं) के प्रवेश को प्रोत्साहित किया। इन बाहरी तत्वों ने आदिवासियों का भीषण आर्थिक शोषण किया और उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक स्वायत्तता को विनष्ट करने का प्रयास किया। इसी अन्याय और अवांछित बाहरी हस्तक्षेप के विरुद्ध कोल, नागा और अहोम जैसे जनजातीय समुदायों ने अपनी जीवन पद्धति और पैतृक भूमि की रक्षा हेतु निरंतर सशस्त्र संघर्ष किया।

214. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उग्रवादी राष्ट्रवाद का अभ्युदय भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ था क्योंकि इसने आंदोलन को केवल शिक्षित अभिजात वर्ग के कमरों से निकालकर सड़कों और जनसाधारण तक पहुँचाया। तिलक, लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल जैसे महानायकों ने स्वराज को प्रत्येक भारतीय का परम लक्ष्य बनाया। उन्होंने बहिष्कार और स्वदेशी जैसे प्रभावी माध्यमों द्वारा जनता को सीधे संघर्ष में सम्मिलित किया। इस दृष्टिकोण ने न केवल ब्रिटिश शासन के नैतिक आधार को कड़ी चुनौती दी, अपितु भारतीयों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की एक नवीन लहर भी उत्पन्न की, जिसने स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

215. (D) विश्वासघात और अंग्रेजों द्वारा कुशल गुप्तचर सूचनाएं।
1915 में गदर पार्टी ने भारतीय सैनिकों के सक्रिय सहयोग से एक व्यापक सशस्त्र विद्रोह की गुप्त योजना निर्मित की थी। किंतु, ब्रिटिश गुप्तचर विभाग इस षड्यंत्र का पता लगाने में सफल रहा और कतिपय विश्वासघातियों ने महत्वपूर्ण सूचनाएं अंग्रेजों को प्रेषित कर दीं। इससे पूर्व कि विद्रोह प्रारंभ हो पाता, सरकार ने पंजाब में व्यापक छापेमारी कर प्रमुख नेताओं को बंदी बना लिया। इस विश्वासघात ने भारत को स्वतंत्र कराने के एक विशाल विदेशी प्रयास को विफल कर दिया, जिसके पश्चात गदर आंदोलन को अपूरणीय क्षति पहुँची और अनेक महान क्रांतिकारियों को फांसी दी गई।

216. (A) वर्धा
जुलाई 1942 में कांग्रेस कार्यसमिति की महत्वपूर्ण बैठक वर्धा में आयोजित हुई थी, जहाँ प्रसिद्ध "भारत छोड़ो" प्रस्ताव प्रथम बार पारित किया गया। इस प्रस्ताव में ब्रिटिश शासन की तत्काल समाप्ति की मांग की गई और उद्घोषणा की गई कि यदि अंग्रेज भारत त्यागने को सहमत नहीं होते, तो कांग्रेस एक व्यापक जन आंदोलन प्रारंभ करेगी। कालांतर में अगस्त में बंबई के अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में इस प्रस्ताव की औपचारिक विधिक पुष्टि की गई। वर्धा वह ऐतिहासिक स्थान था जहाँ इस अंतिम और निर्णायक संघर्ष की वैचारिक और रणनीतिक आधारशिला रखी गई थी।

महान कार्य कालांतर में उग्रवादी और गांधीवादी नेतृत्व ने संपन्न किया।

233. (C) समाजवाद
1928 में भगत सिंह और उनके सहयोगियों ने हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन को 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HSRA) के रूप में पुनर्गठित किया। संगठन के नाम में 'सोशलिस्ट' (समाजवादी) शब्द का समावेश इस तथ्य का प्रतीक था कि ये क्रांतिकारी अब केवल राजनीतिक स्वाधीनता नहीं, अपितु आर्थिक समानता और शोषणमुक्त समाज की आकांक्षा रखते थे। वे रूसी क्रांति और मार्क्सवादी सिद्धांतों से गहराई से प्रभावित थे। उनका ध्येय भारत में एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करना था जहाँ शक्ति चंद पूंजीपतियों के स्थान पर श्रमिकों और कृषकों के हाथों में हो, जो तत्कालीन क्रांतिकारी चेतना का नवीन विस्तार था।

234. (A) प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात मित्र राष्ट्रों द्वारा ऑटोमन साम्राज्य (तुर्की) के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार।
खिलाफत आंदोलन भारतीय मुसलमानों द्वारा तुर्की के सुल्तान, जिन्हें वे अपना खलीफा अथवा धार्मिक प्रमुख मानते थे, के पद और साम्राज्य की रक्षा हेतु प्रारंभ किया गया था। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात ब्रिटेन द्वारा तुर्की पर आरोपित कठोर शर्तों ने भारतीय मुसलमानों में तीव्र रोष उत्पन्न किया। गांधीजी ने इस अवसर को हिंदू-मुस्लिम एकता हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण माना और खिलाफत आंदोलन को असहयोग आंदोलन के साथ संबद्ध कर दिया। इस ऐतिहासिक समन्वय ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक अभूतपूर्व जन आधार प्रदान किया और ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक सुदृढ़ संयुक्त मोर्चा तैयार किया।

235. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सुभाष चंद्र बोस का अटल विश्वास था कि भारत की स्वाधीनता हेतु अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों का लाभ उठाना और बाह्य सैन्य सहायता प्राप्त करना अनिवार्य है। उनका विचार था कि "शत्रु का शत्रु मित्र होता है", अतः उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के समय धुरी शक्तियों (जर्मनी और जापान) की ओर हाथ बढ़ाया। उन्होंने भारत से पलायन कर विदेश में 'आज़ाद हिन्द फ़ौज' को सुसंगठित किया ताकि वे अंग्रेजों के विरुद्ध निर्णायक सैन्य अभियान संचालित कर सकें। उनके इस साहसी निर्णय ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक नवीन और जुझारू अध्याय जोड़ा, जिसने ब्रिटिश भारतीय सेना की वफादारी की नींव हिला दी।

236. (B) कम्युनिस्ट और श्रमिक संघवादी
मेरठ षड्यंत्र मामला ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में प्रसरित हो रहे वामपंथी प्रभाव और श्रमिक आंदोलनों को कुचलने हेतु एक सुनियोजित विधिक कार्रवाई थी। सरकार ने अभियोग लगाया कि कम्युनिस्ट और ट्रेड यूनियन नेता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं। इस मुकदमे में अनेक प्रमुख भारतीय और विदेशी कम्युनिस्ट नेताओं को बंदी बनाया गया और दीर्घकाल तक कारावास में रखा गया। किंतु, इस दमनकारी कार्रवाई ने इन नेताओं को जनमानस की दृष्टि में नायक बना दिया और भारत में समाजवादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार को और अधिक गति एवं व्यापकता प्रदान की।

237. (C) कलकत्ता
16 अगस्त, 1946 को मुस्लिम लीग द्वारा उद्घोषित 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' के कारण कलकत्ता में भीषण और भयावह सांप्रदायिक हिंसा हुई, जिसे 'ग्रेट कलकत्ता किलिंग्स' के नाम से जाना जाता है। इस हिंसा का मुख्य ध्येय पाकिस्तान की मांग को लेकर शक्ति प्रदर्शन करना था। अनेक दिवसों तक चले इन दंगों में सहस्रों निर्दोष नागरिक हताहत हुए और समुदायों के मध्य अविश्वास की खाई नितांत गहरी हो गई। इस भीषण त्रासदी ने यह स्पष्ट कर दिया कि राजनीतिक समझौतों की विफलता का दुष्परिणाम जनता को भोगना पड़ रहा है, जिससे भारत के विभाजन की राह और अधिक हिंसक और दुखद हो गई।

238. (D) एक 'पुलिस कार्रवाई'
स्वतंत्रता के समय हैदराबाद के निज़ाम ने भारत में विलय से मना कर स्वतंत्र रहने का कुप्रयास किया, जिससे वहां आंतरिक अशांति और दमनकारी रजाकार सेना का आतंक व्याप्त हो गया। राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा और भौगोलिक अखंडता को संकट में देखते हुए, भारत सरकार ने सितंबर 1948 में 'ऑपरेशन पोलो' नामक एक सीमित सैन्य अथवा पुलिस कार्रवाई संचालित की। मात्र कतिपय दिवसों के संघर्ष के पश्चात निज़ाम की सेना ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया। इस सफल कार्रवाई के परिणामस्वरुप हैदराबाद का भारतीय संघ में पूर्ण विलय संपन्न हुआ, जिसने दक्षिण भारत में स्थायी स्थिरता और राष्ट्रीय एकता सुनिश्चित की।

239. (A) भाषाई पहचान
1950 के दशक में भारत में राज्यों के पुनर्गठन का सर्वाधिक प्रमुख और निर्णायक आधार भाषाई पहचान थी। पोट्टी श्रीरामुलु के सर्वोच्च बलिदान और व्यापक जन आंदोलनों के प्रचंड दबाव में सरकार को यह स्वीकार करना पड़ा कि एक ही भाषा भाषी नागरिकों हेतु पृथक राज्य निर्मित करना प्रशासनिक और लोकतांत्रिक दृष्टि से अनिवार्य है। इसी के फलस्वरुप 1953 में आंध्र प्रदेश का गठन हुआ और कालांतर में 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम द्वारा राष्ट्र के मानचित्र को भाषाई आधार पर नवीन स्वरूप प्रदान किया गया। इस गौरवशाली प्रक्रिया ने क्षेत्रीय विविधताओं को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोने का महान कार्य किया।

240. (B) राष्ट्रवादी भावना को निर्बल करने के लिए क्षेत्रवाद को बढ़ावा देने की ब्रिटिश नीति।
अंग्रेजों ने अपनी सत्ता सुरक्षित रखने हेतु क्षेत्रवाद और सांप्रदायिकता को प्रोत्साहित किया, जो राष्ट्रवाद को सुदृढ़ करने वाला नहीं अपितु उसे दुर्बल करने वाला कारक था। इसके विपरीत, रेल, डाक और टेलीग्राफ जैसे आधुनिक संचार साधनों ने भारतीयों को भौगोलिक रूप से एकीकृत किया, जबकि अंग्रेजी शिक्षा ने विभिन्न क्षेत्रों के शिक्षित वर्ग को एक साझा वैचारिक मंच प्रदान किया। क्षेत्रीय भाषाओं के प्रेस ने राष्ट्रवादी विचारों को सामान्य जनसाधारण तक पहुँचाया। इन

225. (B) धीमी और अप्रभावी संवैधानिक राजनीति का एक विकल्प प्रदान किया।
क्रांतिकारी आंदोलन ने उस काल के युवाओं को एक ऐसा मार्ग दिखाया जो उदारवादियों की 'याचिका और प्रार्थना' की राजनीति से पूर्णतः भिन्न था। क्रांतिकारियों ने अपने व्यक्तिगत साहस और सर्वोच्च बलिदान द्वारा यह सिद्ध किया कि भारतीय भी शस्त्र उठा सकते हैं और ब्रिटिश सत्ता को कड़ी चुनौती दे सकते हैं। यद्यपि वे तत्काल स्वाधीनता प्राप्त न करा सके, किंतु उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नवीन जुझारू तेवर प्रदान किया और जनमानस से ब्रिटिश अजेयता का भय निर्मूल कर दिया। उनके कृत्यों ने मुख्यधारा की राजनीति को अधिक साहसी और स्वराज के प्रति मुखर होने हेतु निरंतर प्रेरित किया।

226. (A) कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने लखनऊ समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें मांगों के एक साझा समूह पर सहमति बनी।
1916 का लखनऊ अधिवेशन भारतीय राजनीति में एकता का एक दुर्लभ और स्वर्णिम क्षण था। इसमें न केवल कांग्रेस के नरम और गरम दल पुनः एकीकृत हुए, अपितु कांग्रेस और मुस्लिम लीग के मध्य ऐतिहासिक 'लखनऊ पैक्ट' भी संपन्न हुआ। दोनों संगठनों ने संवैधानिक सुधारों की साझा योजना पर सहमति व्यक्त की और अंग्रेजों के समक्ष एक सुदृढ़ संयुक्त मोर्चा प्रस्तुत किया। यद्यपि इसमें पृथक निर्वाचक मंडल को स्वीकार किया गया, किंतु इस समझौते ने कुछ समय हेतु सांप्रदायिक दूरियों को न्यून किया और राष्ट्रीय आंदोलन को एक नवीन शक्ति एवं ऊर्जा प्रदान की, जिससे संघर्ष तीव्र हुआ।

227. (C) जयप्रकाश नारायण
जयप्रकाश नारायण 1930 और 1940 के दशक में भारत के सर्वाधिक प्रभावशाली समाजवादी नेताओं में से एक थे। उन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान एक अप्रतिम नायक की भूमिका निभाई, विशेषकर हजारीबाग कारावास से पलायन पश्चात भूमिगत रहकर विद्रोह को संगठित करने में। वे कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्य थे और उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को कृषकों एवं श्रमिकों के अधिकारों के साथ संबद्ध करने का स्तुत्य प्रयास किया। उनके क्रांतिकारी विचारों और निर्भीक नेतृत्व ने भारतीय युवाओं के मध्य समाजवाद को एक लोकप्रिय और विश्वसनीय राष्ट्रवादी विकल्प के रूप में मजबूती से स्थापित किया।

228. (D) एम.ए. जिन्ना के नेतृत्व में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग
द्वि-राष्ट्र सिद्धांत का सर्वाधिक मुखर और व्यवस्थित समर्थन मुहम्मद अली जिन्ना ने किया, जिन्होंने दावा किया कि हिंदू और मुस्लिम दो पृथक और असंगत राष्ट्र हैं। उनके अनुसार, दोनों समुदायों की संस्कृति, परंपराएं और सामाजिक मूल्य इतने भिन्न हैं कि वे एक लोकतांत्रिक राज्य में परस्पर साथ नहीं रह सकते। जिन्ना ने तर्क प्रस्तुत किया कि स्वतंत्र भारत में मुसलमान स्थायी रूप से हिंदू बहुमत के अधीन होकर असुरक्षित हो जाएंगे। इसी विचारधारा ने मुस्लिम लीग को पाकिस्तान की मांग पर अडिग रहने और अंततः भारत के विभाजन को अपरिहार्य बनाने हेतु प्रवृत्त किया, जिससे एकता खंडित हुई।

229. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
स्वतंत्रता पश्चात भारत के नवनिर्माण में इन महान हस्तियों का योगदान अतुलनीय रहा है। जवाहरलाल नेहरू ने गुटनिरपेक्षता द्वारा राष्ट्र की स्वतंत्र विदेश नीति निर्मित की, जबकि सरदार पटेल ने अपनी विलक्षण कूटनीति से रियासतों को एकीकृत किया। डॉ. अंबेडकर ने संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में देश को एक आधुनिक लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान किया और फजल अली ने भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की वैज्ञानिक रूपरेखा तैयार की। इन दूरदर्शी नेताओं के समन्वित प्रयासों ने ही स्वतंत्र भारत को एक सुदृढ़, संगठित और एकीकृत राष्ट्र के रूप में विश्व मंच पर प्रतिष्ठित करने में सफलता प्राप्त की।

230. (B) प्राकृतिक उत्तराधिकारी के बिना मृत शासक का दत्तक पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता था।
लॉर्ड डलहौजी द्वारा क्रियान्वित 'व्यपगत का सिद्धांत' भारतीय रियासतों के विलय की एक अत्यंत आक्रामक और अन्यायपूर्ण कुनीति थी। इसके अंतर्गत अंग्रेजों ने भारतीय परंपरा के अनुरूप गोद लिए गए पुत्रों को विधिक उत्तराधिकारी मानने से मना कर दिया और ऐसे राज्यों को सीधे ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन कर लिया। इस अपमानजनक नीति ने झांसी की रानी और नाना साहब जैसे अनेक भारतीय शासकों को अपना कट्टर शत्रु बना दिया। यह नीति भारतीय राजाओं के मध्य असुरक्षा और गहरे असंतोष का मुख्य कारण सिद्ध हुई, जिसने अंततः 1857 के महान विप्लव की निर्णायक पृष्ठभूमि तैयार की।

231. (D) यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा नील की खेती की दमनकारी व्यवस्था के विरुद्ध किसान।
बंगाल का नील विद्रोह कृषकों का यूरोपीय बागान स्वामियों के अमानवीय शोषण के विरुद्ध एक सुसंगठित और सफल प्रतिरोध था। बागान स्वामी कृषकों को न्यून मूल्य पर और बलात नील उत्पादन हेतु विवश करते थे, जिससे उनकी अपनी आजीविका संकटग्रस्त हो जाती थी। दिगंबर और विष्णु विश्वास के नेतृत्व में कृषकों ने सामूहिक हड़ताल की और नील उत्पादन से पूर्णतः इनकार कर दिया। इस विद्रोह की विशिष्टता यह थी कि इसे भारतीय बुद्धिजीवियों और प्रेस का व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ, जिससे विवश होकर सरकार को नील आयोग गठित कर कृषकों के पक्ष में न्यायोचित निर्णय लेना पड़ा।

232. (D) वे किसान और मजदूर वर्ग की जनता को राष्ट्रवादी धारा में सफलतापूर्वक लामबंद करने में सफल रहे।
कांग्रेस के प्रारंभिक उदारवादी चरण की सर्वाधिक बड़ी सीमा यह थी कि इसका सामाजिक आधार अत्यंत संकुचित था। इसमें मुख्य रूप से शिक्षित शहरी मध्यम वर्ग, अधिवक्ता और पत्रकार ही सम्मिलित थे। यद्यपि ये नेता प्रखर देशभक्त थे और उन्होंने ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीतियों की तीखी आलोचना की, किंतु वे सामान्य ग्रामीण जनता, कृषकों और श्रमिकों तक अपनी प्रभावी पहुँच बनाने में विफल रहे। वे जन आंदोलनों के स्थान पर केवल संवैधानिक मर्यादाओं में विश्वास रखते थे। राष्ट्रवादी आंदोलन को एक वास्तविक जन आंदोलन बनाने का

200. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
स्वतंत्रता पश्चात राष्ट्र निर्माण के महान कार्यों में विभिन्न नेताओं और संस्थाओं का योगदान अमूल्य रहा। सरदार पटेल ने अपनी विलक्षण कूटनीति से रियासतों का भारत में विलय कराया, जबकि डॉ. अंबेडकर के नेतृत्व में संविधान सभा ने राष्ट्र को एक सुदृढ़ लोकतांत्रिक विधिक ढांचा प्रदान किया। फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग ने भाषाई आधार पर राज्यों की सीमाओं का निर्धारण किया और योजना आयोग ने राष्ट्र के नियोजित आर्थिक विकास की रूपरेखा निर्मित की। इन सभी के समन्वित प्रयासों से ही आधुनिक भारत की सुदृढ़ और स्थायी नींव रखी जा सकी।

201. (C) राष्ट्रवादी व्याख्या, विशेष रूप से वी.डी. सावरकर द्वारा।
वी.डी. सावरकर ने 1909 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में 1857 के विद्रोह को "भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध" की संज्ञा दी। उन्होंने तर्क प्रस्तुत किया कि यह मात्र एक सिपाही विद्रोह नहीं, अपितु विदेशी शासन को समूल उखाड़ने हेतु किया गया एक सुसंगठित राष्ट्रीय प्रयास था। इस राष्ट्रवादी व्याख्या ने आगामी स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारियों हेतु प्रेरणा के एक प्रखर स्रोत के रूप में कार्य किया। इसने इस ऐतिहासिक घटना को हीनता के स्थान पर गौरवपूर्ण दृष्टि से देखने का एक नवीन दृष्टिकोण भारतीयों को प्रदान किया, जिससे देशभक्ति तीव्र हुई।

202. (A) महाराष्ट्र
वासुदेव बलवंत फड़के की क्रांतिकारी गतिविधियाँ मुख्य रूप से महाराष्ट्र के पुणे और निकटवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में केंद्रित थीं। उन्होंने अनुभव किया कि भारत की निर्धनता का मूल कारण ब्रिटिश शासन है, अतः उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर रामोसी समुदाय को संगठित किया। उन्होंने महाराष्ट्र में अपनी गुप्त सेना द्वारा संचार व्यवस्था को बाधित करने और सरकारी खजानों पर अधिकार करने की योजना बनाई। उनका ध्येय महाराष्ट्र से ब्रिटिश सत्ता को समाप्त कर एक स्वतंत्र गणराज्य की आधारशिला रखना था, जिसने वहां के युवाओं को क्रांतिकारी पथ पर अग्रसर होने हेतु प्रेरित किया।

203. (D) पाबना आंदोलन - नमक कर
पाबना आंदोलन का मुख्य कारण बंगाल के जमींदारों द्वारा आरोपित अवैध लगान और उनकी दमनकारी नीतियां थीं, न कि नमक कर। इसके विपरीत, चंपारण सत्याग्रह तिनकठिया पद्धति के अमानवीय शोषण के विरुद्ध था और खेड़ा सत्याग्रह अकाल के समय राजस्व में विधिक छूट प्राप्त करने हेतु किया गया था। बारदोली सत्याग्रह भी सरकार द्वारा भू-राजस्व में की गई अत्यधिक वृद्धि के विरोध में था। नमक कर के विरुद्ध मुख्य ऐतिहासिक संघर्ष 1930 में गांधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान हुआ था, न कि 19वीं शताब्दी के पाबना आंदोलन के समय।

204. (B) अंग्रेजों की 'विभाजन करो और शासन करो' की नीति।
1907 के सूरत विभाजन से राष्ट्रवादी आंदोलन तात्कालिक रूप से दुर्बल हुआ, जिसका प्रत्यक्ष लाभ ब्रिटिश सरकार को प्राप्त हुआ। अंग्रेजों ने प्रारंभ से ही कांग्रेस के भीतर फूट डालने और उदारवादियों को उग्रवादियों से पृथक करने का निरंतर प्रयास किया था ताकि आंदोलन को सुगमता से दमित किया जा सके। विभाजन के पश्चात अंग्रेजों ने उग्रवादियों पर कठोर दमन प्रारंभ किया और उदारवादियों को कुछ नाममात्र की रियायतें प्रदान कर फुसलाने का प्रयत्न किया। इस प्रकार, यह विभाजन अल्पकाल हेतु ब्रिटिश कुनीति की एक बड़ी विजय सिद्ध हुआ जिसने स्वतंत्रता की गति को धीमा किया।

205. (C) Bengal
अनुशीलन समिति और युगांतर बंगाल में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के दो सर्वाधिक प्रभावशाली और सक्रिय संगठन थे। इनका अभ्युदय 1905 के बंगाल विभाजन के पश्चात उत्पन्न व्यापक आक्रोश के मध्य हुआ। बरिंद्र कुमार घोष और भूपेंद्र नाथ दत्त जैसे नेताओं ने युवाओं को सशस्त्र क्रांति हेतु संगठित किया। इन संगठनों ने दमनकारी ब्रिटिश अधिकारियों के उन्मूलन की योजनाएं बनाईं और क्रांतिकारियों को वैचारिक एवं सैन्य प्रशिक्षण उपलब्ध कराया। बंगाल के इन समूहों ने ब्रिटिश सत्ता के मानस में गहरा भय उत्पन्न किया और राष्ट्रीय आंदोलन को एक नवीन और जुझारू रूप प्रदान किया।

206. (D) चौरी-चौरा की घटना जहाँ एक पुलिस चौकी में आग लगा दी गई थी।
फरवरी 1922 में चौरी-चौरा में एक आक्रोशित भीड़ ने पुलिस थाने को अग्नि के हवाले कर दिया, जिसमें 22 पुलिसकर्मी हताहत हुए। गांधीजी, जो अहिंसा को अपने समस्त आंदोलनों की आत्मा मानते थे, इस हिंसक घटना से अत्यंत व्यथित हुए। उन्होंने अनुभव किया कि जनसाधारण अभी अहिंसा के कठोर अनुशासन को पूर्णतः हृदयंगम नहीं कर पाए हैं। परिणामस्वरूप, उन्होंने आंदोलन को तत्काल वापस लेने का साहसी निर्णय लिया। यद्यपि इससे अनेक नेता क्षुब्ध हुए, किंतु गांधीजी ने नैतिकता को राजनीतिक लाभ से ऊपर प्रतिष्ठित कर अहिंसा के प्रति अपनी अटूट निष्ठा पुनः सिद्ध की।

207. (A) समाजवादी और कम्युनिस्ट विचारों का प्रचार करना तथा श्रमिक वर्ग एवं किसानों को संगठित करना।
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई.) जैसे वामपंथी संगठनों ने स्वतंत्रता संघर्ष को एक व्यापक सामाजिक-आर्थिक आयाम प्रदान किया। उनका प्राथमिक ध्येय राष्ट्र की राजनीतिक स्वाधीनता के साथ मजदूरों और कृषकों को आर्थिक शोषण से पूर्णतः मुक्त कराना था। उन्होंने श्रमिक संघों और किसान सभाओं के माध्यम से शोषित वर्गों को विधिक रूप से संगठित किया। उनके निरंतर प्रयासों ने कांग्रेस को अपने कार्यक्रमों में अधिक जनहितकारी और प्रगतिशील समाजवादी नीतियों को सम्मिलित करने हेतु विवश किया, जिससे राष्ट्रीय आंदोलन का आधार समाज के सबसे निम्न सोपान तक विस्तृत हुआ।

208. (B) आगा खान
1906 में जब मुस्लिम लीग का गठन हुआ, तब शिमला में वायसराय लॉर्ड मिंटो से भेंट करने वाले मुस्लिम प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व आगा खान ने किया था। इस प्रतिनिधिमंडल ने मुस्लिमों हेतु पृथक राजनीतिक अधिकारों और राजकीय सेवाओं में प्रतिनिधित्व की मांग प्रस्तुत की थी। अंग्रेजों ने अपनी 'विभाजन करो और शासन करो' की कुनीति के अंतर्गत

सकारात्मक संरचनात्मक परिवर्तनों ने अनजाने में एक सुदृढ़ अखिल भारतीय राष्ट्रीय चेतना के विकास में अमूल्य सहायता की, जिसने अंततः औपनिवेशिक शासन को कड़ी चुनौती दी।

241. (B) व्यपगत के सिद्धांत के अंतर्गत सिंहासन पर उनके दत्तक पुत्र के अधिकार को मान्यता देने से इनकार कर दिया।
झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के अंग्रेजों का प्रखर विरोधी बनने का मुख्य कारण लॉर्ड डलहौजी की अन्यायपूर्ण 'व्यपगत का सिद्धांत' की कुनीति थी। उनके पति के देहावसान के पश्चात, अंग्रेजों ने उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को विधिक उत्तराधिकारी मानने से मना कर दिया और झांसी को बलात ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन कर लिया। इस घोर अपमान और अन्याय ने रानी को सशस्त्र विद्रोह का मार्ग चुनने हेतु विवश किया। उन्होंने "मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी" का अटल संकल्प लिया और 1857 के युद्ध में अद्भुत वीरता का प्रदर्शन करते हुए ब्रिटिश सत्ता को जड़ से हिला दिया।

242. (A) राजमहल की पहाड़ियाँ
संथाल विद्रोह 1855-56 में मुख्य रूप से राजमहल की पहाड़ियों और 'दामन-ए-कोह' के दुर्गम क्षेत्रों में संचालित हुआ था। यह क्षेत्र वर्तमान झारखंड और पश्चिम बंगाल के कतिपय हिस्सों में अवस्थित है। संथालों ने अपनी पारंपरिक भूमि पर बाहरी शोषणकर्ताओं (दिकुओं) और ब्रिटिश प्रशासन के निरंतर बढ़ते हस्तक्षेप के विरोध में शस्त्र उठाए थे। सिद्धू और कान्हू के सफल नेतृत्व में हुए इस विद्रोह ने औपनिवेशिक सत्ता की नींव हिला दी थी। यद्यपि इसे सैन्य बल द्वारा दमित कर दिया गया, किंतु इसके फलस्वरूप सरकार को संथालों हेतु पृथक प्रशासनिक इकाई 'संथाल परगना' निर्मित करने हेतु विवश होना पड़ा।

243. (C) चंपारण सत्याग्रह
दक्षिण अफ्रीका से प्रत्यावर्तन के पश्चात महात्मा गांधी ने भारत में सत्याग्रह का अपना प्रथम सफल प्रयोग 1917 में बिहार के चंपारण में संपन्न किया। यहाँ उन्होंने नील की खेती करने वाले कृषकों के विरुद्ध हो रहे अमानवीय शोषण और दमनकारी 'तिनकठिया' पद्धति को सशक्त चुनौती दी। इस आंदोलन द्वारा गांधीजी ने अहिंसक प्रतिरोध की अपनी विशिष्ट कार्यशैली का प्रदर्शन किया, जिससे विवश होकर ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा और कृषकों को राहत प्राप्त हुई। इस प्रथम गौरवमयी विजय ने गांधीजी को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक विश्वसनीय और जन-आधारित सर्वमान्य नेता के रूप में मजबूती से प्रतिष्ठित कर दिया।

244. (D) स्वतंत्रता संग्राम में प्रयुक्त होने वाली विधियां और आंदोलन के लक्ष्य।
1907 के सूरत अधिवेशन में उदारवादियों और उग्रवादियों के मध्य का विवाद मुख्य रूप से आंदोलन की भविष्य की रणनीति को लेकर था। उग्रवादी चाहते थे कि 1905 के बंगाल विभाजन के विरोध में प्रारंभ हुआ स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन संपूर्ण राष्ट्र में विस्तृत हो और पूर्ण स्वराज मुख्य लक्ष्य हो। इसके विपरीत, उदारवादी इसे केवल बंगाल तक सीमित रखने के पक्षधर थे और क्रमिक संवैधानिक सुधारों में अटूट विश्वास रखते थे। रणनीतियों और लक्ष्यों पर यह मौलिक असहमति ही कांग्रेस के ऐतिहासिक विभाजन का कारण बनी, जिसने तात्कालिक रूप से राष्ट्रीय आंदोलन को कुछ निर्बल किया।

245. (C) भगत सिंह
भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अत्यंत प्रभावशाली क्रांतिकारी महानायक थे, जिन्होंने अल्पायु में अपनी शहादत से संपूर्ण राष्ट्र को जागृत कर दिया। वे हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के प्रमुख सदस्य थे और उन्होंने 'इंकलाब जिंदाबाद' का अमर उद्घोष किया। लाला लाजपत राय की मृत्यु का प्रतिशोध लेने हेतु सांडर्स का वध और केंद्रीय सभा में बम प्रक्षेप के कारण उन्हें अंग्रेजों ने 23 मार्च, 1931 को फांसी दे दी। उनके अदम्य साहस और प्रखर राष्ट्रवादी विचारधारा ने करोड़ों युवाओं को स्वाधीनता के पुनीत संघर्ष में कूदने हेतु निरंतर प्रेरित किया, वे अमर सेनानी हैं।

246. (B) इसने पूर्ण स्वतंत्रता के स्थान पर युद्ध के पश्चात केवल अधिराज्य के दर्जे की पेशकश की थी।
1942 में स्टैफोर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में आया क्रिप्स मिशन द्वितीय विश्व युद्ध के समय भारतीयों का सहयोग प्राप्त करने का एक ब्रिटिश कूटनीतिक प्रयास था। किंतु, इसने भारतीयों की पूर्ण स्वाधीनता की न्यायोचित मांग को पूर्णतः उपेक्षित किया और केवल भविष्य में 'अधिराज्य का दर्जा' (डोमिनियन स्टेटस) प्रदान करने का अस्पष्ट आश्वासन दिया। गांधीजी ने इस प्रस्ताव को "दिवालिया बैंक के नाम उत्तर-दिनांकित चेक" की संज्ञा दी। कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने ही इस अपर्याप्त योजना को अस्वीकार कर दिया, जिससे यह मिशन पूर्णतः विफल रहा और इसके पश्चात 'भारत छोड़ो' आंदोलन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

247. (D) आचार्य नरेंद्र देव
1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (सी.एस.पी.) के गठन में आचार्य नरेंद्र देव एक प्रमुख संस्थापक और प्रखर विचारक थे। उनके साथ जयप्रकाश नारायण ने भी निर्णायक भूमिका निर्वहन की। इन नेताओं का ध्येय कांग्रेस के भीतर रहते हुए राष्ट्रवादी आंदोलन को समाजवादी दिशा प्रदान करना था। वे मानते थे कि राजनीतिक स्वाधीनता के साथ कृषकों और श्रमिकों की आर्थिक मुक्ति भी अपरिहार्य है। आचार्य नरेंद्र देव के विद्वतापूर्ण नेतृत्व और समाजवादी दर्शन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक नवीन वैचारिक गहराई जोड़ी, जिससे आंदोलन का सामाजिक आधार अधिक व्यापक, समावेशी और जनहितकारी बना, जो राष्ट्र हेतु आवश्यक था।

248. (A) केवल एक विशेष धर्म के लोग ही उसी धर्म के उम्मीदवारों के लिए मतदान कर सकते थे।
पृथक निर्वाचक मंडल एक ऐसी सांप्रदायिक चुनाव प्रणाली थी जहाँ निर्वाचन क्षेत्रों को धार्मिक आधार पर आरक्षित किया गया था। इसमें मतदाता केवल अपने ही धर्म के प्रतिनिधि का चुनाव कर सकते थे, जैसे मुस्लिमों हेतु केवल मुस्लिम मतदाता ही मतदान के पात्र थे। अंग्रेजों ने 1909 में इस व्यवस्था को लागू किया ताकि भारतीयों में धार्मिक आधार पर विभाजन स्थायी हो सके। इसने साझा राष्ट्रीय हित के स्थान पर संकीर्ण सांप्रदायिक पहचान को अनुचित बढ़ावा दिया, जिससे समुदायों के मध्य

217. (C) नाजी जर्मनी ने सोवियत संघ पर आक्रमण किया।
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई.) ने प्रारंभ में द्वितीय विश्व युद्ध को साम्राज्यवादी ताकतों के मध्य का संघर्ष मानकर इसका प्रखर विरोध किया था। किंतु, जब हिटलर के नेतृत्व वाले नाजी जर्मनी ने कम्युनिस्टों के वैचारिक गढ़ सोवियत संघ पर आक्रमण किया, तो पार्टी ने अपना राजनीतिक रुख पूर्णतः परिवर्तित कर लिया। उनके हेतु अब यह युद्ध फासीवाद के विरुद्ध 'जन युद्ध' (पीपल्स वॉर) बन गया। इस वैचारिक परिवर्तन के कारण उन्होंने ब्रिटिश युद्ध प्रयासों का समर्थन प्रारंभ किया और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन से स्वयं को पृथक रखा, जिससे राष्ट्रवादी संगठनों के साथ उनके संबंधों में कटुता आई।

218. (A) यह एक ऐसी विचारधारा थी जिसने दावा किया कि एक समान धर्म साझा करने वाले लोग समान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक हितों को भी साझा करते हैं।
सांप्रदायिकता एक ऐसी भ्रामक राजनीतिक विचारधारा है जो मानती है कि धार्मिक पहचान ही किसी नागरिक या समूह के सांसारिक हितों (जैसे रोजगार, अधिकार, विकास) का एकमात्र आधार है। यह दावा करती है कि एक धर्म के अनुयायियों के हित दूसरे धर्म के लोगों से अनिवार्यतः पृथक और विरोधी होते हैं। इस संकुचित सोच ने राष्ट्रवाद की साझा पहचान को खंडित किया और नागरिकों को धार्मिक समूहों में विभाजित कर दिया। यह विचारधारा राजनीतिक लामबंदी हेतु धर्म का अनुचित दुरुपयोग करती है, जो अंततः समाज में घृणा और दुखद विभाजन को जन्म देती है।

219. (D) फजल अली
1953 में गठित राज्य पुनर्गठन आयोग की अध्यक्षता न्यायमूर्ति फजल अली ने की थी, जिसमें के.एम. पणिक्कर और एच.एन. कुंजरू भी सदस्य थे। इस आयोग का मुख्य दायित्व भाषाई आधार पर राज्यों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण के जटिल विषय की गहन जांच करना था। आयोग ने संपूर्ण राष्ट्र का भ्रमण किया और जनता की भावनाओं एवं प्रशासनिक आवश्यकताओं का सूक्ष्म विश्लेषण किया। इसकी अनुशंसाओं ने आधुनिक भारत के राजनीतिक मानचित्र को सुव्यवस्थित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई और भाषाई विविधता को राष्ट्रीय एकता के साथ संतुलित करने का एक तार्किक और स्थायी समाधान प्रस्तुत किया।

220. (B) विदेश नीति के प्रति एक व्यावहारिक दृष्टिकोण, संप्रभुता से समझौता किए बिना संबंध बनाए रखना।
स्वतंत्रता पश्चात भारत का राष्ट्रमंडल (कॉमनवेल्थ) में बने रहने का निर्णय नेहरू की व्यावहारिक और दूरदर्शी कूटनीति का प्रमाण था। यद्यपि भारत एक पूर्ण संप्रभु गणराज्य बन गया था और ब्रिटिश राजमुकुट के प्रति वफादार नहीं था, फिर भी उसने राष्ट्रमंडल की सदस्यता निरंतर जारी रखी। इसका ध्येय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के आर्थिक और राजनीतिक संबंधों को अक्षुण्ण रखना था। यह निर्णय प्रदर्शित करता है कि भारत अपनी संप्रभुता पर अडिग रहते हुए भी अतीत के कटु अनुभवों को त्यागकर वैश्विक मंच पर सहयोग और संवाद के पथ पर अग्रसर होने हेतु सन्नद्ध था।

221. (C) ब्रिटिश शासन के शोषणकारी स्वरूप को उजागर कर इसकी नैतिक नींव को निर्बल करना।
दादाभाई नौरोजी जैसे प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने गहन शोध और सांख्यिकी द्वारा यह सिद्ध किया कि ब्रिटिश शासन भारत हेतु कोई वरदान नहीं, अपितु एक सुयोजित लूट का तंत्र है। उन्होंने प्रदर्शित किया कि कैसे भारत की संपदा का प्रवाह अनवरत ब्रिटेन की ओर हो रहा है। इस 'धन के निष्कासन' के सिद्धांत ने अंग्रेजों के इस मिथ्या दावे को पूर्णतः झुठला दिया कि वे भारत के कल्याण हेतु शासन कर रहे हैं। इस आर्थिक आलोचना ने मध्यम वर्ग की चेतना जाग्रत की और उनमें ब्रिटिश सत्ता के प्रति गहरा असंतोष और प्रतिरोध का भाव उत्पन्न किया, जिससे राष्ट्रवाद सुदृढ़ हुआ।

222. (D) बरेली
बखत खान 1857 के विद्रोह के एक अत्यंत कुशल सैन्य रणनीतिकार थे, जिन्होंने बरेली में विद्रोह का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया था। वे ब्रिटिश सेना के पूर्व सूबेदार थे, जिससे उन्हें आधुनिक युद्ध कला का उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त था। जब वे बरेली से अपने अनुभवी सैनिकों के साथ दिल्ली पहुँचे, तो मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर ने उन्हें विद्रोही सेना का मुख्य सेनापति नियुक्त किया। उनकी सैन्य कुशलता ने दिल्ली की रक्षा को सुदृढ़ता प्रदान की और उन्होंने अंतिम क्षण तक अंग्रेजों के विरुद्ध अद्भुत साहस के साथ मोर्चा संभाले रखा, जिससे वे विद्रोह के एक अत्यंत महत्वपूर्ण नायक बने।

223. (A) केवल 1 और 2
प्रारंभिक कृषक और आदिवासी विद्रोह मुख्य रूप से अपने तात्कालिक उत्पीड़कों जैसे भ्रष्ट साहूकारों, जमींदारों और स्थानीय पुलिस के विरुद्ध केंद्रित थे। ये आंदोलन अत्यंत साहसी थे, किंतु वे अपनी प्रकृति में स्थानीय थे और उनके पास पूरे राष्ट्र को एकीकृत करने वाली किसी आधुनिक राष्ट्रवादी विचारधारा का अभाव था। यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि वे पूर्णतः विफल रहे; उनके प्रखर प्रतिरोध ने प्रायः सरकार को वन कानूनों और राजस्व प्रणालियों में स्थानीय सुधार हेतु विवश किया। इन विद्रोहों ने जनसाधारण के मानस में अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की एक सुदृढ़ और जुझारू परंपरा विकसित की।

224. (B) कांग्रेस का उग्रवादी गुट।
स्वदेशी आंदोलन को वास्तविक गति और व्यापक जनाधार कांग्रेस के उग्रवादी गुट ने प्रदान किया। तिलक, लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल जैसे नेताओं ने इसे केवल बंगाल तक सीमित न रखकर एक अखिल भारतीय आंदोलन बनाने की पुरजोर वकालत की। उन्होंने विदेशी वस्तुओं के दहन और स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहित करने को आत्मनिर्भरता के शस्त्र के रूप में प्रयुक्त किया। उग्रवादियों का अटल विश्वास था कि निष्क्रिय विरोध और पूर्ण बहिष्कार द्वारा ब्रिटिश शासन की आर्थिक नींव पर प्रहार करके ही स्वराज का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है, जिससे जन चेतना का विस्तार हुआ।

के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय जनमत भी सुसंगठित रुप से तैयार किया गया।

257. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विविध सोपानों का नेतृत्व इन महान विभूतियों ने किया। सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) को एक शक्तिशाली सैन्य शक्ति के रूप में संगठित किया, जबकि सरदार पटेल ने बारदोली सत्याग्रह द्वारा अपनी विलक्षण संगठनात्मक क्षमता का परिचय दिया। महात्मा गांधी ने चंपारण से भारत में अपने सत्याग्रह के प्रयोग का सूत्रपात किया और लाला हरदयाल ने विदेशों में गदर पार्टी की स्थापना कर सशस्त्र क्रांति का उद्घोष किया। ये नेता और उनके संबंधित आंदोलन स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु अंगीकार किए गए विविध और अत्यंत प्रभावी मार्गों का सफल प्रतिनिधित्व करते हैं।

258. (A) रूसी क्रांति का वैश्विक प्रभाव और विभिन्न समूहों के बीच बढ़ती वर्ग चेतना।
1920 और 1930 के दशक में भारत में वामपंथ के प्रसार का मुख्य कारण 1917 की रूसी क्रांति की ऐतिहासिक सफलता थी, जिसने शोषितों को सत्ता हस्तांतरण का एक नवीन मॉडल प्रदर्शित किया। इसके साथ ही, प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात भारत में गहराते आर्थिक संकट ने मजदूरों और कृषकों को अपने वर्ग हितों के प्रति अधिक जागरूक और मुखर बनाया। मध्यम वर्ग के प्रबुद्ध युवा राष्ट्रवादियों का कांग्रेस की धीमी संवैधानिक राजनीति से मोहभंग होना भी उन्हें अधिक क्रांतिकारी और समाजवादी विचारधारा की ओर ले गया, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नवीन सामाजिक आधार और वैचारिक गहराई प्रदान की।

259. (C) ब्रिटिश सरकार के प्रति राजभक्ति को बढ़ावा देना और मुस्लिमों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करना।
1906 में जब मुस्लिम लीग की स्थापना हुई, तो इसका प्राथमिक उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता के प्रति राजभक्ति प्रदर्शित करना और यह सुनिश्चित करना था कि भविष्य के किसी भी विधिक सुधार में मुस्लिम हितों की उपेक्षा न हो। लीग के संस्थापक मुस्लिम अभिजात वर्ग और जमींदार थे, जो कांग्रेस के निरंतर बढ़ते प्रभाव के मध्य अपने राजनीतिक अस्तित्व को लेकर चिंतित थे। अंग्रेजों ने भी अपनी 'विभाजन करो और शासन करो' की कुनीति के अंतर्गत इसे प्रोत्साहित किया ताकि वे हिंदू-मुस्लिम एकता को विखंडित कर सकें और उभरते राष्ट्रवादी आंदोलन को सुगमता से निर्बल बना सकें।

260. (D) जवाहरलाल नेहरू
14-15 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि को जब भारत स्वतंत्र हुआ, तब प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने संविधान सभा में अपना ऐतिहासिक "नियति के साथ मिलन" (ट्रिस्ट विद डेस्टिनी) भाषण दिया। इस ओजस्वी भाषण में उन्होंने सदियों की पराधीनता के अंत और एक नवीन युग के प्रारंभ की उद्घोषणा की। उन्होंने समस्त देशवासियों से भारत की अनवरत सेवा और मानवता के कल्याण हेतु समर्पित होने का आह्वान किया। नेहरू के इन गौरवमयी शब्दों ने न केवल तत्कालीन करोड़ों भारतीयों की भावनाओं को शब्द दिए, अपितु वे आधुनिक और लोकतांत्रिक भारत के भविष्य के संकल्प का शाश्वत प्रतीक बन गए।

261. (C) हैरोड-डोमर मॉडल
भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56) हैरोड-डोमर आर्थिक विकास मॉडल पर आधारित थी। इस मॉडल का मुख्य केंद्र बचत और निवेश द्वारा आर्थिक विकास की दर को संवर्धित करना था। चूंकि उस समय भारत गंभीर खाद्यान्न संकट और मुद्रास्फीति से संघर्ष कर रहा था, अतः इस योजना ने कृषि विकास और सिंचाई परियोजनाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की। इसका ध्येय राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को संतुलित बनाना और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करना था। यद्यपि यह एक सरल मॉडल था, किंतु इसने भविष्य की समस्त विकास योजनाओं हेतु एक स्थिर, सफल और सुदृढ़ आधार तैयार किया।

262. (B) नए चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इनकार करने पर दंड मिलने के पश्चात।
10 मई, 1857 को मेरठ में विद्रोह की वास्तविक शुरुआत तब हुई जब 85 भारतीय सिपाहियों ने नवीन एनफील्ड राइफल के चर्बीयुक्त कारतूसों को छूने से मना कर दिया। इसके कारण उन्हें कठोर कारावास और अपमानजनक दंड दिया गया। अपने सहयोगियों के साथ हुए इस घोर अन्याय ने संपूर्ण सैन्य छावनी में आक्रोश की ज्वाला प्रज्वलित कर दी। अन्य सैनिकों ने सशस्त्र विद्रोह कर अपने साथियों को कारागार से मुक्त कराया और ब्रिटिश अधिकारियों पर प्रहार किया। इसके तत्काल पश्चात वे दिल्ली की ओर कूच कर गए, जिससे यह स्थानीय सैन्य विरोध एक विशाल जन क्रांति में परिवर्तित हो गया।

263. (D) जमींदारी उत्पीड़न से लड़ने के लिए विधिक तरीकों का प्रयोग, जैसे अवैध लगान का भुगतान न करना और विधिक चुनौतियां।
बंगाल की पाबना किसान लीग अपने अनुशासित और विधिक संघर्ष हेतु इतिहास में विख्यात है। कृषकों ने जमींदारों द्वारा आरोपित मनमाने और अवैध उपकरों का सुसंगठित विरोध किया और उनके विरुद्ध न्यायालयों में विधिक संघर्ष किया। उन्होंने स्वयं को 'महारानी का रैयत' कहकर यह स्पष्ट किया कि उनका संघर्ष ब्रिटिश कानून की मर्यादाओं के भीतर है, न कि शासन को उखाड़ फेंकने हेतु। इस आंदोलन की महान सफलता यह थी कि इसने सरकार को कृषकों के अधिकारों की रक्षा हेतु 1885 में बंगाल किरायेदारी अधिनियम पारित करने हेतु विवश किया, जो कृषकों की एक बड़ी विधिक विजय थी।

264. (A) आध्यात्मिक राष्ट्रवाद और निष्क्रिय प्रतिरोध का सिद्धांत।
अरबिंदो घोष का प्रारंभिक राजनीतिक दर्शन राष्ट्रवाद को केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं, अपितु एक पवित्र आध्यात्मिक साधना मानता था। उन्होंने 'निष्क्रिय प्रतिरोध' के विचार को जनप्रिय बनाया, जिसके अंतर्गत ब्रिटिश संस्थाओं, शिक्षा और वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार कर शासन को पंगु बनाने का लक्ष्य था। उनका विश्वास था कि भारत की स्वाधीनता का अर्थ केवल विदेशी शासन का अंत नहीं, अपितु भारतीय आत्मा और गौरवशाली संस्कृति की पुनर्जागृति है। उनके तेजस्वी लेखों

और सुदीर्घ अवधि के विकास हेतु ठोस आधार तैयार किया जा सकता है। इस योजना ने निजी क्षेत्र के स्थान पर राज्य को अर्थव्यवस्था का मुख्य चालक नियुक्त किया, जिससे आधुनिक औद्योगिक भारत की सुदृढ़ नींव रखी गई।

281. (C) डब्ल्यू.सी. बनर्जी
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन दिसंबर 1885 में बंबई में आयोजित हुआ था, जिसकी गौरवमयी अध्यक्षता प्रसिद्ध अधिवक्ता व्योमेश चंद्र बनर्जी (डब्ल्यू.सी. बनर्जी) ने की थी। इस ऐतिहासिक बैठक में राष्ट्र के विभिन्न भागों से आए 72 प्रतिनिधियों ने सहभागिता की थी। ए.ओ. ह्यूम ने इसके गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, किंतु बनर्जी के नेतृत्व में इस मंच ने प्रथम बार सुसंगठित रीति से भारतीय शिकायतों को ब्रिटिश सरकार के समक्ष प्रस्तुत करने की औपचारिक शुरुआत की। इसी अधिवेशन ने आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद और सुव्यवस्थित संवैधानिक संघर्ष की विधिक आधारशिला रखी थी।

282. (A) उलगुलान
1899-1900 के मुंडा विद्रोह को मुंडा भाषा में 'उलगुलान' कहा जाता है, जिसका तात्पर्य 'महान हलचल' अथवा भीषण विप्लव है। बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुआ यह विद्रोह छोटा नागपुर क्षेत्र के आदिवासियों की भूमि और संस्कृति पर बाहरी शोषणकर्ताओं (दिकुओं) और ब्रिटिश कानूनों के अनपेक्षित अतिक्रमण के विरुद्ध एक शक्तिशाली जंग थी। बिरसा ने मुंडा राज स्थापित करने और आदिवासियों को पूर्णतः शोषणमुक्त करने का आह्वान किया। यद्यपि यह विद्रोह दमित कर दिया गया, किंतु इसकी तीव्रता के कारण सरकार को छोटा नागपुर किरायेदारी अधिनियम पारित करना पड़ा, जिसने आदिवासियों की पैतृक भूमि की विधिक रक्षा की।

283. (D) लाहौर अधिवेशन, 1929
दिसंबर 1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में आयोजित कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन भारत के स्वतंत्रता इतिहास का एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। इसी अधिवेशन में कांग्रेस ने अपने लक्ष्य को 'अधिराज्य के दर्जे' से परिवर्तित कर 'पूर्ण स्वराज' (पूर्ण स्वतंत्रता) घोषित किया। 31 दिसंबर की मध्यरात्रि को रावी तट पर तिरंगा फहराया गया और 26 जनवरी, 1930 को प्रथम स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने का संकल्प लिया गया। इस ऐतिहासिक घोषणा ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष को एक अधिक स्पष्ट, उग्र और समझौताविहीन दिशा प्रदान की, जिससे भविष्य के आंदोलनों की राह प्रशस्त हुई।

284. (B) P-4, Q-2, R-1, S-3
क्रांतिकारी आंदोलन के नायकों ने विविध घटनाओं द्वारा ब्रिटिश सत्ता की नींव हिला दी। भगत सिंह लाहौर षड्यंत्र मामले और सांडर्स के वध से संबद्ध थे, जबकि सूर्य सेन ने चटगाँव में शस्त्रागार छापे का साहसी नेतृत्व किया। राम प्रसाद बिस्मिल का नाम काकोरी कांड की ऐतिहासिक रेल डकैती हेतु सदैव स्मरण किया जाता है, और वी.डी. सावरकर ने 'अभिनव भारत' जैसे गुप्त संगठनों द्वारा युवाओं को राष्ट्रहित में प्रेरित किया। ये समस्त घटनाएं प्रदर्शित करती हैं कि कैसे क्रांतिकारियों ने देश के विभिन्न अंचलों में सशस्त्र संघर्ष और सर्वोच्च बलिदान द्वारा स्वतंत्रता की पावन लौ को प्रज्वलित रखा।

285. (A) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
1930 में साबरमती से दांडी तक की गई गांधीजी की ऐतिहासिक पदयात्रा नमक पर ब्रिटिश सरकार के अन्यायपूर्ण कर और एकाधिकार के विरुद्ध एक शक्तिशाली नैतिक विरोध था। नमक एक ऐसी अनिवार्य वस्तु थी जिससे धनी और निर्धन सभी संबद्ध थे, अतः इस विषय ने समाज के प्रत्येक वर्ग को आंदोलन में सम्मिलित होने हेतु प्रेरित किया। जब गांधीजी ने दांडी के तट पर प्रतीकात्मक रूप से नमक बनाकर कानून भंग किया, तो इसने संपूर्ण राष्ट्र में सविनय अवज्ञा आंदोलन का सूत्रपात कर दिया। इस सत्याग्रह ने ब्रिटिश सत्ता की नैतिकता को चुनौती दी और भारतीय जनशक्ति का अभूतपूर्व प्रदर्शन किया।

286. (D) CSP का गठन कांग्रेस के भीतर इसे समाजवाद की ओर उन्मुख करने के लिए किया गया था, जबकि CPI अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट (कॉमिन्टर्न) से संबद्ध एक स्वतंत्र दल था।
कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (सी.एस.पी.) और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई.) के मध्य मुख्य अंतर उनकी संगठनात्मक संरचना और वैचारिक निष्ठा में निहित था। सी.एस.पी. के नेता जैसे जयप्रकाश नारायण कांग्रेस के भीतर रहकर उसे कृषकों और श्रमिकों के अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक और समाजवादी बनाना चाहते थे। इसके विपरीत, सी.पी.आई. एक स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय विचारधारा से संबद्ध थी और उसका दृष्टिकोण अधिक क्रांतिकारी था। यद्यपि दोनों ही समाजवाद के आकांक्षी थे, किंतु सी.एस.पी. का मुख्य ध्यान राष्ट्रवादी आंदोलन को भीतर से सुदृढ़ करना था, जबकि सी.पी.आई. वर्ग संघर्ष और अंतरराष्ट्रीय साम्यवाद के सिद्धांतों पर अधिक बल देती थी।

287. (A) माउंटबेटन योजना
लॉर्ड माउंटबेटन द्वारा 3 जून, 1947 को प्रस्तुत की गई योजना ही भारत के विभाजन और दो स्वतंत्र राष्ट्रों - भारत और पाकिस्तान - के निर्माण का अंतिम विधिक आधार बनी। इस योजना ने पंजाब और बंगाल के विभाजन की रूपरेखा निर्मित की और रियासतों को अपनी पसंद के राष्ट्र में सम्मिलित होने का विकल्प प्रदान किया। यद्यपि कांग्रेस दीर्घकाल तक अखंड भारत के पक्ष में रही, किंतु व्यापक सांप्रदायिक हिंसा और मुस्लिम लीग के अड़ियल रुख के कारण उसे अंततः इस योजना को विवशतापूर्वक स्वीकार करना पड़ा। इस योजना ने सदियों पुराने एकीकृत भारत के भौगोलिक विभाजन की कड़वी वास्तविकता को अंतिम रूप दिया।

288. (B) 14 राज्य और 6 संघ राज्य क्षेत्र।
1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम का पारित होना स्वतंत्र भारत के राजनीतिक मानचित्र को सुव्यवस्थित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक सोपान था। फजल अली आयोग की अनुशंसाओं के आधार पर, सरकार ने ब्रिटिश काल की अव्यवस्थित प्रशासनिक सीमाओं को प्रतिस्थापित कर भाषाई और सांस्कृतिक समानता के आधार पर राज्यों का नवीन पुनर्निर्धारण किया। इसके

सुदीर्घ अवधि तक विशाल ब्रिटिश सेना को संशय में रखा। उन्होंने ग्वालियर पर अधिकार करने में रानी लक्ष्मीबाई की भी महत्वपूर्ण सहायता की। उनकी रणनीतिक सूझबूझ और अदम्य साहस ने उन्हें विद्रोह का एक अमर नायक बना दिया, जिन्हें अंग्रेजों ने विश्वासघात द्वारा बंदी बनाकर फांसी दी थी।

273. (B) नील विद्रोह
दीनबंधु मित्र द्वारा रचित सुप्रसिद्ध बंगाली नाटक 'नील दर्पण' 1859-60 के बंगाल के नील विद्रोह की क्रूर वास्तविकताओं का एक जीवंत और मार्मिक चित्रण है। इस नाटक ने यूरोपीय बागान स्वामियों द्वारा कृषकों पर किए जाने वाले अमानवीय अत्याचारों, उनके भीषण आर्थिक शोषण और दमनकारी नील उत्पादन व्यवस्था को समाज के समक्ष उजागर किया। इस कालजयी साहित्यिक कृति ने बंगाल के प्रबुद्ध वर्ग और आम जनता में तीव्र आक्रोश उत्पन्न किया, जिससे विद्रोह को व्यापक जन समर्थन प्राप्त हुआ। यह भारत में साहित्य द्वारा राजनीतिक चेतना जाग्रत करने और औपनिवेशिक शोषण को चुनौती देने का एक प्रारंभिक और शक्तिशाली उदाहरण है।

274. (A) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी को बढ़ावा देना।
तिलक और बिपिन चंद्र पाल जैसे उग्रवादी नेताओं ने अनुभव किया कि केवल संवैधानिक विमर्शों से ब्रिटिश सत्ता को नहीं झुकाया जा सकता। उन्होंने 'बहिष्कार' और 'स्वदेशी' को राजनीतिक कार्रवाई के नवीन और अमोघ शस्त्रों के रूप में विकसित किया। विदेशी माल, विशेषकर ब्रिटिश वस्त्रों का बहिष्कार करके उन्होंने औपनिवेशिक सत्ता की आर्थिक आधारशिला पर प्रहार किया। साथ ही, स्वदेशी उद्योगों और राष्ट्रीय शिक्षा को प्रोत्साहित कर भारतीयों में आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान जाग्रत किया। इन माध्यमों ने प्रथम बार जनसाधारण को सक्रिय रूप से स्वतंत्रता संघर्ष का भाग बनाया, जिससे आंदोलन राष्ट्रव्यापी स्वरुप में विस्तृत हो गया।

275. (A) केवल 1 और 2
क्रांतिकारी आंदोलनों का मुख्य ध्येय व्यक्तिगत वीरता और सशस्त्र प्रतिरोध द्वारा भारतीयों के मानस से ब्रिटिश शासन का भय समूल नष्ट करना था। उनके कृत्य प्रायः औपनिवेशिक दमन और दमनकारी विधिक कानूनों की प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया थे। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि उनका मुख्यधारा के आंदोलन पर कोई प्रभाव नहीं था; वास्तव में, उनके साहस और सर्वोच्च बलिदान ने कांग्रेस जैसे संगठनों के भीतर भी अधिक दृढ़ और स्वराज-उन्मुख नीतियों हेतु दबाव निर्मित किया। उनके अदम्य साहस ने राष्ट्रीय आंदोलन को वह जुझारू तेवर प्रदान किया जिसने ब्रिटिश सत्ता की नैतिक और सैन्य अजेयता को निरंतर गंभीर चुनौती दी।

276. (D) रौलट एक्ट
1919 में ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित रौलट एक्ट ने प्रशासन को किसी भी नागरिक को बिना विधिक मुकदमे के कारावास में डालने की असीमित शक्तियाँ प्रदान कर दी थीं। इसे 'काला कानून' कहा गया और इसके विरोध में संपूर्ण राष्ट्र में प्रदर्शन हुए। 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में नागरिक इस कानून और अपने नेताओं की गिरफ्तारी के विरुद्ध शांतिपूर्वक एकत्रित हुए थे। जनरल डायर द्वारा निहत्थी भीड़ पर किए गए भीषण नरसंहार ने पूरे राष्ट्र की अंतरात्मा को झकझोर दिया। इस क्रूर घटना ने ब्रिटिश शासन के अमानवीय स्वरूप को उजागर किया और स्वतंत्रता संग्राम को अधिक उग्र बनाया।

277. (C) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई.) भारत का एक प्रमुख और ऐतिहासिक वामपंथी संगठन है, जिसकी स्थापना 1920 के दशक में संपन्न हुई थी। यह मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों पर आधारित है और इसका ध्येय समाज के शोषित सोपानों, विशेषकर मजदूरों और कृषकों के अधिकारों हेतु संघर्ष करना है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इस पार्टी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद और देशी सामंतवाद दोनों के विरुद्ध एक साथ संघर्ष किया। इसके प्रखर नेताओं ने वर्ग चेतना को प्रोत्साहित किया और एक ऐसे भारत की परिकल्पना की जहाँ सामाजिक और आर्थिक समानता सर्वोपरि हो, जिससे राष्ट्रीय आंदोलन का वैचारिक क्षितिज और अधिक व्यापक हुआ।

278. (B) भारतीय राष्ट्रवादी, ब्रिटिश साम्राज्यवादी और सांप्रदायिक ताकतें
"सांप्रदायिक त्रिकोण" की अवधारणा उन तीन शक्तियों के मध्य के जटिल संबंधों को रेखांकित करती है जिन्होंने भारत के विभाजन की विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं। इसमें एक पक्ष भारतीय राष्ट्रवादी (विशेषकर कांग्रेस) थे जो अखंड राष्ट्र की आकांक्षा रखते थे, द्वितीय पक्ष ब्रिटिश साम्राज्यवादी थे जो 'विभाजन करो और शासन करो' की कुनीति का अनुसरण कर रहे थे, और तृतीय पक्ष सांप्रदायिक संगठन (जैसे मुस्लिम लीग) थे जो पृथक धार्मिक पहचान पर बल दे रहे थे। इन तीनों के परस्पर विरोधी हितों और अंग्रेजों द्वारा सांप्रदायिकता के अनुचित प्रयोग ने राष्ट्रीय एकता को खंडित किया, जिससे अंततः विभाजन अपरिहार्य हुआ।

279. (D) स्वतंत्रता।
1947 में जब भारत और पाकिस्तान के मध्य विलय का विकल्प प्रदान किया गया, तब जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने किसी भी पक्ष में सम्मिलित न होकर राज्य को 'स्वतंत्र' रखने की आकांक्षा व्यक्त की थी। उनकी इस हिचकिचाहट और स्वतंत्रता की अभिलाषा ने एक राजनीतिक शून्यता उत्पन्न की, जिसका अनुचित लाभ उठाकर पाकिस्तान समर्थित कबीलाई हमलावरों ने आक्रमण कर दिया। इस आकस्मिक हमले ने महाराजा को भारत से सैन्य सहायता की प्रार्थना करने और अंततः विधिक विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने हेतु विवश किया। इसी प्रारंभिक विलंब और जटिलता ने कश्मीर को एक दीर्घकालिक अंतरराष्ट्रीय विवादित विषय में परिवर्तित कर दिया।

280. (A) भारी उद्योग आधारित सार्वजनिक क्षेत्र का विकास।
द्वितीय पंचवर्षीय योजना ने भारत की आर्थिक नीति को 'महालनोबिस मॉडल' की दिशा प्रदान की, जिसका मुख्य ध्येय तीव्र औद्योगीकरण था। इसमें इस्पात, कोयला, विद्युत और भारी मशीनों जैसे आधारभूत उद्योगों पर विशेष बल दिया गया। सरकार का विश्वास था कि इन प्रमुख क्षेत्रों में सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा निवेश करके ही राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है

राजवंश को सफलतापूर्वक बहाल किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

31. नेपोलियन बोनापार्ट का पतन किस युद्ध में उसकी अंतिम पराजय के साथ हुआ?
(A) वाटरलू का युद्ध
(B) ऑस्टरलिट्ज़ का युद्ध
(C) ट्राफलगर का युद्ध
(D) बोरोडिनो का युद्ध

32. 1815 ईस्वी में वियना कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) पूरे यूरोप में क्रांतिकारी आंदोलनों और उदारवादी सुधारों को बढ़ावा देना।
(B) शक्ति संतुलन स्थापित करना और क्रांति-पूर्व राजतंत्रों को बहाल करना।
(C) ऑस्ट्रिया के नेतृत्व में एक एकीकृत यूरोपीय राज्य बनाना।
(D) नेपोलियन युद्धों में रुस की भूमिका के लिए उसे दंडित करना।

33. निम्नलिखित में से कौन-सी घटना 'पूर्वी समस्या' का भाग मानी जाती है?
(A) इटली का एकीकरण
(B) क्रीमिया युद्ध (1854-1856)
(C) अमेरिकी क्रांति
(D) औद्योगिक क्रांति

34. 20वीं शताब्दी की शुरुआत में 'युवा तुर्क आंदोलन' का मुख्य लक्ष्य क्या था?
(A) ऑटोमन साम्राज्य में सुल्तान की निरंकुश शक्ति को बहाल करना।
(B) क्षेत्रीय पृथक्करण के माध्यम से एक पृथक कुर्द राज्य बनाना।
(C) पश्चिमी शक्तियों के विरुद्ध ऑटोमन साम्राज्य को रुस के साथ जोड़ना।
(D) संवैधानिक सरकार स्थापित करके साम्राज्य का आधुनिकीकरण करना।

35. 20वीं शताब्दी की शुरुआत के 'बाल्कन युद्ध' मुख्य रूप से किसके नियंत्रण को लेकर संघर्ष थे?
(A) अटलांटिक में व्यापार मार्गों का नियंत्रण।
(B) यूरोप में शेष ऑटोमन क्षेत्रों पर नियंत्रण।
(C) जर्मनी का एकीकरण।
(D) फ्रांसीसी सिंहासन का उत्तराधिकार।

36. जर्मनी का एकीकरण काफी हद तक किस प्रशियाई राजनेता के नेतृत्व में प्राप्त किया गया था?
(A) कैसर विल्हेम I
(B) ओटो वॉन बिस्मार्क
(C) क्लेमेंस वॉन मेटरनिक
(D) नेपोलियन III

37. इटली के एकीकरण में किस प्रमुख विदेशी शक्ति के प्रभाव पर विजय पाना शामिल था, जिसने प्रायद्वीप के कुछ हिस्सों को नियंत्रित किया था?
(A) रुसी साम्राज्य
(B) ब्रिटिश साम्राज्य
(C) संयुक्त राज्य अमेरिका
(D) ऑस्ट्रियाई साम्राज्य

38. निम्नलिखित में से किसे प्रथम विश्व युद्ध का एक प्राथमिक दीर्घकालिक कारण माना जाता है?
(A) सैन्य गठबंधनों और राष्ट्रवाद की जटिल प्रणाली।
(B) राष्ट्र संघ की विफलता।
(C) 1930 के दशक की आर्थिक मंदी।
(D) जर्मनी में नाजीवाद का उदय।

39. वर्साय की संधि, जिसने प्रथम विश्व युद्ध को समाप्त किया, ने किस देश पर कठोर दंडात्मक उपाय थोपे थे?
(A) फ्रांस
(B) रुस
(C) जर्मनी
(D) ऑस्ट्रिया-हंगरी

40. प्रथम विश्व युद्ध के परिणामों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसके कारण ऑस्ट्रो-हंगेरियन, ऑटोमन और रुसी साम्राज्यों का विघटन हुआ।
2. यह सीधे तौर पर जर्मनी के एकीकरण का कारण बना।
3. इसने संयुक्त राष्ट्र के पूर्ववर्ती संगठन, राष्ट्र संघ के निर्माण को प्रेरित किया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

41. फासीवाद, जैसा कि मुसोलिनी के इटली में देखा गया, में निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी विशेषताएं शामिल हैं?
(A) चरम राष्ट्रवाद
(B) एक-दलीय तानाशाही राज्य
(C) वर्गीय संघर्ष और अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा क्रांति को बढ़ावा देना
(D) राजनीतिक विरोध का दमन

42. हिटलर के अधीन जर्मनी में नाजीवाद, इतालवी फासीवाद से मुख्य रूप से किस आधार पर भिन्न है?

परिणामस्वरुप राष्ट्र में 14 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों का गठन संपन्न हुआ। इस भाषाई पुनर्गठन ने क्षेत्रीय आकांक्षाओं को राष्ट्रीय एकता के व्यापक ढांचे के भीतर संतुलित करने का कार्य किया और प्रशासन को जनसाधारण हेतु अधिक सुलभ, सहज एवं लोकतांत्रिक बनाया।

289. (B) संयुक्त सैन्य कमान का निर्माण
पंचशील के पांच सिद्धांत शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और राष्ट्रीय संप्रभुता के सम्मान पर आधारित थे, जिनका मुख्य ध्येय महाशक्ति गुटों के मध्य चल रहे सैन्य तनाव को न्यून करना था। इनमें परस्पर अखंडता का सम्मान, अनाक्रमण, अहस्तक्षेप, समानता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व सम्मिलित थे। सैन्य कमान निर्मित करना इन सिद्धांतों के मूल दार्शनिक भाव के पूर्णतः विपरीत था, क्योंकि भारत किसी भी प्रकार के सैन्य गठबंधन का भाग नहीं बनना चाहता था। गुटनिरपेक्षता की यह नीति स्वतंत्र राष्ट्रों के मध्य नैतिक सहयोग को प्रोत्साहित करने और वैश्विक शांति बनाए रखने हेतु नेहरू के नेतृत्व में सुविचारित रूप से तैयार की गई थी।

290. (A) स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देना और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना।
आर्थिक राष्ट्रवाद की अवधारणा इस दृढ़ विश्वास पर आधारित थी कि भारत की निर्धनता का मुख्य कारण ब्रिटिश आर्थिक शोषण और संपदा का अनवरत निष्कासन है। राष्ट्रवादी नेताओं ने अनुभव किया कि केवल स्वदेशी का अंगीकरण कर और विदेशी माल, विशेषकर ब्रिटिश वस्त्रों का बहिष्कार करके ही भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता पुनः प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने खादी और स्थानीय लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करने को राजनीतिक संघर्ष का एक अभिन्न अंग बनाया। इस विचारधारा ने भारतीयों को यह बोध कराया कि स्वराज केवल राजनीतिक सत्ता का हस्तांतरण नहीं, अपितु राष्ट्र के समस्त संसाधनों पर भारतीयों का पूर्ण नियंत्रण भी है।

291. (C) जनता को एकजुट करने में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सफलता।
1857 का विद्रोह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से लगभग 28 वर्ष पूर्व घटित हुआ था, अतः कांग्रेस का इसमें कोई प्रत्यक्ष भूमिका अथवा योगदान संभव नहीं था। विद्रोह के वास्तविक और अंतर्निहित कारणों में अंग्रेजों की विस्तारवादी कुनीतियां, कृषकों का भीषण आर्थिक शोषण और भारतीयों की सामाजिक-धार्मिक परंपराओं में अनुचित हस्तक्षेप जैसे गंभीर विषय सम्मिलित थे। डलहौजी की विलय की नीति और नवीन कारतूसों के प्रश्न ने पूर्व से व्याप्त असंतोष को केवल विस्फोटक स्वरुप प्रदान किया। यह विद्रोह विदेशी शासन के विरुद्ध समाज के विभिन्न सोपानों के संचित आक्रोश का एक स्वतः स्फूर्त और हिंसक प्रदर्शन था।

292. (D) ब्रिटिश शिक्षा, कानूनों और उत्पादों का बहिष्कार।
पंजाब में बाबा राम सिंह के नेतृत्व में कूका विद्रोह ने बहिष्कार और असहयोग के उन मौलिक सिद्धांतों का बहुत पूर्व प्रयोग किया था, जिन्हें कालांतर में गांधीजी ने अपनाया। कूका विद्रोहियों ने ब्रिटिश डाक व्यवस्था, राजकीय विद्यालयों और न्यायालयों का पूर्ण बहिष्कार किया और केवल हस्तनिर्मित स्वदेशी वस्त्र ही धारण किए। उन्होंने अपनी समानांतर शासन और संचार व्यवस्था निर्मित करने का साहसी प्रयास किया ताकि वे पूर्णतः आत्मनिर्भर हो सकें। उनका यह प्रखर प्रतिरोध केवल धार्मिक सुधार तक सीमित नहीं था, अपितु वह पंजाब से ब्रिटिश सत्ता को समूल उखाड़ फेंकने का एक सुसंगठित राजनीतिक और आर्थिक संघर्ष था।

293. (C) खेड़ा सत्याग्रह
1918 के खेड़ा सत्याग्रह के दौरान गांधीजी ने गुजरात के उन कृषकों का नेतृत्व किया जिनकी समस्त फसलें अकाल और महामारी के कारण विनष्ट हो गई थीं। ब्रिटिश प्रशासन कानून की अवहेलना कर कृषकों से बलपूर्वक राजस्व की वसूली कर रहा था। गांधीजी ने कृषकों को यह अनुशासित शिक्षण दिया कि वे बिना डरे राजस्व देने से मना कर दें और सदैव अहिंसक बने रहें। इस सत्याग्रह की सफलता ने विश्व स्तर पर सिद्ध किया कि शांतिपूर्ण प्रतिरोध के माध्यम से निर्धन और निहत्थे किसान भी एक शक्तिशाली दमनकारी सरकार को अपनी न्यायोचित मांगें मानने हेतु विवश कर सकते हैं, जिससे गांधीजी का राजनीतिक प्रभाव विस्तृत हुआ।

294. (B) 'प्रार्थना, याचिका और विरोध' की पद्धति।
'प्रार्थना, याचिका और विरोध' की विधिक रणनीति कांग्रेस के प्रारंभिक उदारवादी चरण की मुख्य विशेषता थी, जिसे उग्रवादी नेताओं ने पूर्णतः अस्वीकार कर दिया था। तिलक, लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल जैसे उग्रवादी राष्ट्रवादियों का अटल विश्वास था कि स्वराज याचना से नहीं, अपितु प्रखर संघर्ष और आत्म-शक्ति से प्राप्त होता है। उन्होंने बहिष्कार, स्वदेशी, तीव्र जन आंदोलनों और सांस्कृतिक उत्सवों द्वारा नागरिकों को संगठित करने पर बल दिया। उनके हेतु स्वराज एक जन्मसिद्ध विधिक अधिकार था, जिसके लिए वे संवैधानिक मर्यादाओं से आगे बढ़कर अधिक जुझारु और प्रभावी राजनीतिक मार्ग के प्रबल पक्षधर थे।

295. (D) प्रतिरोध की भावना को जीवित रखा और अनगिनत युवाओं को प्रेरित किया।
भारत और विदेशों में सक्रिय क्रांतिकारियों का सर्वाधिक महान योगदान यह था कि उन्होंने अत्यंत विषम कालखंड में भी स्वाधीनता की अलख को प्रज्वलित रखा। उनके साहसिक कृत्यों और निस्वार्थ सर्वोच्च बलिदानों ने भारतीयों के मानस से ब्रिटिश अजेयता का भय समूल नष्ट कर दिया और उन्हें राष्ट्रीय स्वाभिमान के साथ जीने की प्रेरणा दी। यद्यपि उनकी संख्या सीमित थी, किंतु उनके प्रखर नैतिक प्रभाव ने मुख्यधारा के आंदोलन को अधिक ऊर्जावान और स्वराज के प्रति दृढ़ बनाने में अमूल्य सहायता की। उन्होंने सिद्ध किया कि भारतीय स्वतंत्रता हेतु प्राणोत्सर्ग करने से पीछे नहीं हटेंगे, जिसने अंततः ब्रिटिश शासन की नींव दुर्बल की।

296. (A) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) के भव्य उद्घाटन समारोह में महात्मा गांधी की प्रथम बड़ी सार्वजनिक उपस्थिति हुई। इस अवसर पर उन्होंने अपना ऐतिहासिक भाषण प्रस्तुत

9. भूमि धारण और राजस्व संग्रह की प्रणाली के रूप में 'जमींदारी' की अवधारणा सबसे सीधे किसके इतिहास से जुड़ी है?
(A) रोमन साम्राज्य
(B) सामंती यूरोप
(C) भारतीय उपमहाद्वीप
(D) क्रांति-पूर्व फ्रांस

10. 'सामंतवाद' का मूल सिद्धांत किसके बीच का संबंध है?
(A) लॉर्ड और वैसल।
(B) सम्राट और संसद।
(C) कारीगर और व्यापारी श्रेणी।
(D) पोप और पवित्र रोमन सम्राट।

11. पुनर्जागरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसने कलात्मक और वैज्ञानिक नवाचार में तीव्र गिरावट को चिह्नित किया।
2. इसने मानवतावाद और शास्त्रीय पुरातनता के अध्ययन पर बल दिया।
3. इसकी विशेषता चर्च के सिद्धांतों को बिना किसी प्रश्न के स्वीकार करना था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

12. संसदीय लोकतंत्र सरकार की एक ऐसी प्रणाली है जहाँ कार्यपालिका अपनी लोकतांत्रिक वैधता किससे प्राप्त करती है और किसके प्रति उत्तरदायी होती है?
(A) वंशानुगत सम्राट के प्रति।
(B) राष्ट्रीय विधायिका के प्रति।
(C) स्वतंत्र न्यायपालिका के प्रति।
(D) जमींदार अभिजात वर्ग के प्रति।

13. समाजवाद के मूल सिद्धांतों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) यह उत्पादन के साधनों के सामूहिक या राज्य के स्वामित्व की वकालत करता है।
(B) इसका उद्देश्य समाज के भीतर वर्गीय असमानताओं को कम करना है।
(C) यह धन के निजी संचय और व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देता है।
(D) यह प्रायः प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग पर बल देता है।

14. नाजीवाद और फासीवाद की राजनीतिक विचारधाराएं अपनी किस विशेषता में समानता रखती हैं?
(A) अंतर्राष्ट्रीयवाद और वैश्विक सहयोग के प्रति प्रतिबद्धता।
(B) राष्ट्रवाद और विस्तारवादी सैन्यवाद की अस्वीकृति।
(C) उदार लोकतंत्र और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समर्थन।
(D) अत्यधिक अधिनायकवाद और सर्वसत्तावादी राज्य नियंत्रण।

15. निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. फ्रांसीसी क्रांति
2. अमेरिकी क्रांति
3. प्रथम विश्व युद्ध का प्रारंभ
4. जर्मनी का एकीकरण

(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 2, 1, 3

16. 19वीं शताब्दी की यूरोपीय कूटनीति में 'पूर्वी समस्या' मुख्य रूप से किस साम्राज्य की राजनीतिक और क्षेत्रीय अस्थिरता के इर्द-गिर्द घूमती थी?
(A) ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य
(B) ऑटोमन साम्राज्य
(C) रूसी साम्राज्य
(D) ब्रिटिश साम्राज्य

17. मध्यकाल में 'चर्च की सर्वोच्चता' की अवधारणा का तात्पर्य था कि:
(A) राजा और सम्राट पोप से श्रेष्ठ अधिकार रखते थे।
(B) आध्यात्मिक और लौकिक मामलों पर चर्च का अंतिम अधिकार था।
(C) वैज्ञानिक जांच को सत्य का एकमात्र मान्य मार्ग माना जाता था।
(D) धर्मग्रंथों की व्यक्तिगत व्याख्या को प्रोत्साहित किया जाता था।

18. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): 16वीं शताब्दी के धर्म सुधार आंदोलन ने रोमन कैथोलिक चर्च के अधिकार और सिद्धांतों को चुनौती दी।
कारण (R): यह आंदोलन जर्मनी में नाजीवाद के उदय का प्रत्यक्ष परिणाम था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

19. पवित्र रोमन साम्राज्य को सबसे सटीक रूप से इस रूप में वर्णित किया गया था:
(A) ऑगस्टस सीजर के एकीकृत रोमन साम्राज्य का प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी।
(B) आधुनिक राजनीतिक अर्थों में एक शक्तिशाली और केंद्रीकृत राष्ट्र-राज्य।
(C) मध्य यूरोप में एक शिथिल परिसंघ वाली एक जटिल राजनीतिक इकाई।
(D) फ्रांसीसी क्रांति के बाद नेपोलियन बोनापार्ट द्वारा स्थापित एक साम्राज्य।

अध्याय 09
विश्व का इतिहास

1. निम्नलिखित में से कौन-सा 'विधि संहिता' की अवधारणा को सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
(A) पूर्वजों द्वारा सौंपी गई पारंपरिक प्रथाओं और मौखिक इतिहास का एक संग्रह।
(B) किसी राज्य या अधिकार क्षेत्र के लिए कानूनों का एक व्यवस्थित और लिखित संकलन।
(C) न्याय की प्रकृति और प्रशासनिक नैतिकता पर एक दार्शनिक शोध प्रबंध।
(D) स्थानीय विवादों को सुलझाने के लिए एक सम्राट द्वारा जारी किए गए अस्थायी आदेशों की एक श्रृंखला।

2. निम्नलिखित में से सही कथन की पहचान कीजिए:
कथन I: रोमन साम्राज्य की मुख्य विशेषता एक जटिल शासन प्रणाली और विशाल क्षेत्रीय विस्तार था।
कथन II: 'जब तक दोष सिद्ध न हो जाए तब तक निर्दोष' की अवधारणा रोमन कानून का एक गौण और अप्रभावी पहलू था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

3. प्राचीन विश्व में, विशेष रूप से रोमन साम्राज्य में, दास प्रथा मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस पर आधारित थी?
(A) धार्मिक संबद्धता और कथित विधर्म।
(B) नस्लीय विशेषताएं और जातीय मूल।
(C) ऋण दायित्व, युद्ध और जन्म।
(D) राजनीतिक असंतोष और सम्राट का विरोध।

4. इनमें से कौन-सी अवधारणा संसदीय लोकतंत्र के सिद्धांतों से सबसे कम संबंधित है?
(A) समाजवाद
(B) पुनर्जागरण
(C) धर्म सुधार आंदोलन
(D) अभिजाततंत्र

5. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणाएं)
P. वणिकवाद
Q. सामंतवाद
R. पुनर्जागरण
S. समाजवाद
सूची II: (संबद्ध विचार)
1. वैसलेज और मैनोरियल प्रणाली
2. मानवतावाद और शास्त्रीय कलाओं का पुनरुद्धार
3. उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व
4. कीमती धातुओं का संचय और अनुकूल व्यापार संतुलन
कूट:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

6. ऐतिहासिक संदर्भ में 'अभिजाततंत्र' शब्द सरकार के उस रूप को संदर्भित करता है जहाँ शक्ति किसके पास होती है?
(A) निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से सामान्य जनता के पास।
(B) एक छोटे, विशेषाधिकार प्राप्त और वंशानुगत कुलीन वर्ग के पास।
(C) पूर्ण अधिकार रखने वाले एक एकल, निरंकुश सम्राट के पास।
(D) उच्च पादरियों और प्रभावशाली धार्मिक नेताओं के पास।

7. मध्यकालीन यूरोप में 'ब्लैक डेथ' का एक बड़ा आर्थिक और सामाजिक परिणाम क्या था?
(A) इसने संघर्ष कर रहे अपने कृषि दासों पर सामंती स्वामियों की शक्ति को काफी सुदृढ़ कर दिया।
(B) इसके कारण श्रम की भारी अधिकता हुई और शहरी पारिश्रमिक में गिरावट आई।
(C) इसके परिणामस्वरूप तत्काल स्थिर संसदीय लोकतंत्रों की स्थापना हुई।
(D) इसके कारण श्रम की भारी कमी हो गई, जिससे किसानों को बेहतर स्थितियों की मांग करने की शक्ति मिली।

8. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): चर्च की सर्वोच्चता यूरोप में मध्यकाल की एक परिभाषित विशेषता थी।
कारण (R): पवित्र रोमन साम्राज्य एक धर्मनिरपेक्ष संस्था थी जो पोप की सत्ता से पूर्णतः स्वतंत्र थी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

ने युवाओं के हृदय में अदम्य साहस और बलिदान की भावना संचारित की, जिसने उग्रवादी राष्ट्रवाद को एक नवीन वैचारिक गहराई प्रदान की।

265. (C) भारतीय प्रवासियों को ले जाने वाले एक जहाज को कनाडा से वापस भेज दिया जाना, जिसने राष्ट्रवादी और क्रांतिकारी भावनाओं को जाग्रत किया।
1914 की कोमागाटा मारु घटना भारतीय प्रवासियों के प्रति ब्रिटिश साम्राज्य के भेदभावपूर्ण और क्रूर रवैये का ज्वलंत उदाहरण थी। जब इस जहाज को कनाडा के तट से बलपूर्वक वापस भेजा गया, तो यात्रियों को अकल्पनीय कष्टों का सामना करना पड़ा। भारत लौटने पर बज बज बंदरगाह पर पुलिस के साथ हुए हिंसक संघर्ष में अनेक निर्दोष यात्री हताहत हुए। इस अमानवीय व्यवहार ने विदेशों में निवास कर रहे भारतीयों और राष्ट्र के भीतर क्रांतिकारियों में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रचंड आक्रोश उत्पन्न किया। इस घटना ने गदर आंदोलन हेतु एक शक्तिशाली उत्प्रेरक का कार्य किया।

266. (A) महात्मा गांधी
गांधीजी के राजनीतिक दर्शन के केंद्र में 'ग्राम स्वराज' की पावन अवधारणा थी, जिसका तात्पर्य प्रत्येक ग्राम का आत्मनिर्भर और स्वायत्त होना था। उनका अटल विश्वास था कि वास्तविक लोकतंत्र तब तक संभव नहीं जब तक सत्ता का पूर्ण विकेंद्रीकरण न हो और शासन की नींव गाँवों से न संबद्ध हो। उन्होंने ग्रामीण उद्योगों, विशेषकर चरखा और खादी को पुनर्जीवित करने पर बल दिया ताकि ग्रामीण जनता आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सके। गांधीजी हेतु ग्राम स्वराज केवल एक प्रशासनिक व्यवस्था नहीं थी, अपितु यह सामाजिक न्याय और शोषणविहीन समाज के निर्माण का एक मौलिक और शाश्वत मार्ग था।

267. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता संग्राम के समय वामपंथियों ने राष्ट्रवादी आंदोलन को एक नवीन गहराई और विशाल जनाधार प्रदान किया। उन्होंने अनुभव किया कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ-साथ देशी सामंतवाद और पूंजीवाद के विरुद्ध संघर्ष करना भी अनिवार्य है। इसी पुनीत उद्देश्य से उन्होंने व्यापक स्तर पर किसान सभाओं और ट्रेड यूनियनों का गठन किया, जिससे करोड़ों शोषित मजदूर और किसान प्रथम बार सुसंगठित होकर स्वाधीनता की लड़ाई में सम्मिलित हुए। उनके इस योगदान ने यह सुनिश्चित किया कि स्वतंत्र भारत के एजेंडे में गरीबों के सामाजिक-आर्थिक कल्याण और भूमि सुधार जैसे प्रगतिशील मुद्दे प्रमुखता से स्थान पाएं।

268. (B) संयुक्त भारत में सत्ता-साझेदारी की व्यवस्था पर सहमत होने में कांग्रेस और मुस्लिम लीग की विफलता।
भारत का विभाजन मुख्य रूप से कांग्रेस और मुस्लिम लीग के मध्य भविष्य की संवैधानिक रूपरेखा और सत्ता में न्यायपूर्ण भागीदारी को लेकर उपजे गतिरोध का परिणाम था। लीग ने जहाँ पृथक पाकिस्तान की मांग पर अडिग रुख अपनाया, वहीं कांग्रेस एक सुदृढ़ केंद्र वाले एकीकृत भारत के पक्ष में थी। कैबिनेट मिशन जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं की विफलता और तत्पश्चात भड़की भीषण सांप्रदायिक हिंसा ने दोनों दलों के मध्य आपसी विश्वास को पूर्णतः विनष्ट कर दिया। इस राजनीतिक और सामाजिक गतिरोध ने अंततः विभाजन की कड़वी और दुखद वास्तविकता को स्वीकार करना ही एकमात्र विकल्प बना दिया।

269. (C) प्रांतीय विधान सभाओं के सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित।
भारत की संविधान सभा का गठन कैबिनेट मिशन योजना के विधिक प्रावधानों के अंतर्गत किया गया था। चूँकि उस समय विभाजन की अनिश्चितता और संसाधनों की न्यूनता के कारण प्रत्यक्ष चुनाव कराना संभव नहीं था, अतः 1946 में निर्वाचित प्रांतीय विधानसभाओं के सदस्यों को ही संविधान सभा के प्रतिनिधियों को चुनने का विधिक अधिकार दिया गया। इसमें रियासतों के प्रतिनिधियों को भी विधिवत नामांकित किया गया था। यद्यपि यह सभा अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित थी, किंतु इसमें समाज के समस्त वर्गों, धर्मों और विचारधाराओं के प्रबुद्ध नेताओं का व्यापक प्रतिनिधित्व सम्मिलित था, जिसने इसकी लोकतांत्रिक वैधता सुनिश्चित की।

270. (D) संप्रभुता का दावा करना और महाशक्ति प्रतिद्वंद्विता से बचना।
1947 से 1964 के मध्य नेहरु के नेतृत्व में गुटनिरपेक्षता की नीति शीत युद्ध की विनाशकारी राजनीति से भारत को सुरक्षित रखने का एक सफल माध्यम थी। भारत ने अनुभव किया कि किसी भी सैन्य गुट (अमेरिका अथवा सोवियत संघ) में सम्मिलित होने का अर्थ अपनी नवनिर्मित संप्रभुता को पुनः संकट में डालना होगा। भारत ने विश्व राजनीति में एक 'तृतीय पक्ष' की भूमिका अपनाई, जो वैश्विक शांति, उपनिवेशवाद के अंत और विकासशील राष्ट्रों के सहयोग पर आधारित थी। यह नीति भारत को दोनों गुटों से आर्थिक सहायता प्राप्त करने और अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक स्वतंत्र नैतिक स्वर बनाए रखने में सक्षम बनाती थी।

271. (A) अंग्रेजों का नस्लीय अहंकार और भारतीयों द्वारा सामना किया जाने वाला भेदभाव।
भारतीय राष्ट्रवाद के अभ्युदय में अंग्रेजों का नस्लीय श्रेष्ठता का व्यवहार एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक कारक था। अंग्रेज भारतीयों को हेय दृष्टि से देखते थे और उन्हें सार्वजनिक स्थानों, रेल और राजकीय सेवाओं में निरंतर अपमानित किया जाता था। शिक्षित भारतीयों को उनकी योग्यता के उपरांत भी उच्च पदों से वंचित रखा गया। इस निरंतर होते नस्लीय अपमान ने भारतीयों के स्वाभिमान को गहरी चोट पहुँचाई और उन्हें अनुभव कराया कि विदेशी शासन के अधीन वे कभी भी सम्मानजनक जीवन नहीं जी सकते। इसी सामूहिक अपमान की भावना ने भारतीयों को एकजुट होकर स्वराज की मांग करने हेतु प्रबल रूप से प्रेरित किया।

272. (B) तात्या टोपे
तात्या टोपे 1857 के विद्रोह के सर्वाधिक कुशल और साहसी सेनापतियों में से एक थे। वे नाना साहब के अटूट सहयोगी थे और उन्होंने कानपुर के पतन के पश्चात भी विद्रोह की मशाल को प्रज्वलित रखा। तात्या टोपे अपनी अद्वितीय छापामार युद्ध रणनीति हेतु विश्व विख्यात थे, जिसकी सहायता से उन्होंने

20. धर्म सुधार आंदोलन, जिसे प्रोटेस्टेंट सुधार के रूप में भी जाना जाता है, मुख्य रूप से किसके कार्यों द्वारा प्रारंभ किया गया था?
(A) रोम में पोप।
(B) फ्रांस में नेपोलियन बोनापार्ट।
(C) प्रशिया में ओटो वॉन बिस्मार्क।
(D) जर्मनी में मार्टिन लूथर।

21. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (घटना)
P. क्रीमिया युद्ध
Q. फ्रांसीसी क्रांति
R. जर्मनी का एकीकरण
S. औद्योगिक क्रांति
सूची II: (प्राथमिक संबद्ध अवधारणा)
1. संसदीय लोकतंत्र
2. राष्ट्रवाद
3. पूर्वी समस्या
4. आर्थिक क्रांति
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

22. 'वणिकवाद' के आर्थिक सिद्धांत ने इस विचार को बढ़ावा दिया कि किसी राष्ट्र की संपत्ति मुख्य रूप से उसके किस मानक से मापी जाती है?
(A) औद्योगिक उत्पादन का स्तर।
(B) स्वर्ण और रजत के भंडार की मात्रा।
(C) कृषि आत्मनिर्भरता।
(D) वैश्विक मुक्त व्यापार के प्रति प्रतिबद्धता।

23. उपनिवेशवाद ने वणिकवादी शक्तियों के हितों की पूर्ति कैसे की?
(A) वैश्विक व्यापार के लिए उपनिवेशों के औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देकर।
(B) उपनिवेशों और सभी राष्ट्रों के बीच मुक्त और निष्पक्ष व्यापार को प्रोत्साहित करके।
(C) उपनिवेशों में लोकतांत्रिक संस्थाओं और कानूनी अधिकारों की स्थापना करके।
(D) कच्चे माल और निर्मित माल के लिए एक नियंत्रित बाजार प्रदान करके।

24. औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम किस देश में प्रारंभ हुई थी?
(A) ग्रेट ब्रिटेन
(B) फ्रांस
(C) जर्मनी
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका

25. 1776 ईस्वी की अमेरिकी क्रांति मुख्य रूप से किस यूरोपीय शक्ति की नीतियों के विरुद्ध एक संघर्ष था?
(A) फ्रांस
(B) स्पेन
(C) ग्रेट ब्रिटेन
(D) पुर्तगाल

26. 1789 ईस्वी की फ्रांसीसी क्रांति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह आंशिक रूप से एक गंभीर वित्तीय संकट और सामाजिक असमानता के कारण हुई थी।
2. इसके कारण फ्रांस में तत्काल और स्थायी रूप से एक स्थिर लोकतंत्र की स्थापना हुई।
3. इसके आदर्शों में 'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व' शामिल थे।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

27. 1911 की चीनी क्रांति का क्या परिणाम हुआ?
(A) माओत्से तुंग के नेतृत्व में चीन के जनवादी गणराज्य की स्थापना।
(B) चीनी भूमि से सभी विदेशी प्रभावों का सफलतापूर्वक निष्कासन।
(C) बीजिंग में शाही सिंहासन पर मिंग राजवंश की पुनर्स्थापना।
(D) किंग राजवंश का अंत और रिपब्लिक ऑफ चाइना की स्थापना।

28. 1917 की रूसी क्रांति के कारण किस शासक राजवंश का पतन हुआ?
(A) हैब्सबर्ग
(B) रोमानोव
(C) होहेनज़ोलर्न
(D) बोर्बोन

29. 1911 की चीनी क्रांति और 1949 की चीनी क्रांति के बीच एक प्रमुख अंतर यह है कि 1949 की क्रांति:
(A) ने एक राजतंत्र को उखाड़ फेंका।
(B) राष्ट्रवादियों के नेतृत्व में हुई थी।
(C) के परिणामस्वरूप एक साम्यवादी सरकार बनी।
(D) मुख्य रूप से एक किसान विद्रोह था।

30. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): नेपोलियन बोनापार्ट के उत्थान को फ्रांसीसी क्रांति के बाद आई अस्थिरता के परिणाम के रूप में देखा जा सकता है।
कारण (R): नेपोलियन ने फ्रांसीसी सिंहासन पर बोर्बोन

किया, जिसमें उन्होंने भारतीय कुलीन वर्ग की वैभवपूर्ण जीवन शैली की तीखी आलोचना की और स्वतंत्रता संग्राम को आम जनसाधारण एवं निर्धनों से जोड़ने की अपरिहार्य आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि जब तक समाज का सबसे निम्न सोपान सक्रिय नहीं होगा, तब तक स्वराज का कोई वास्तविक अर्थ नहीं है। इस प्रखर भाषण ने गांधीजी की भविष्य की राजनीति के स्पष्ट संकेत दिए, जहाँ कृषक और श्रमिक ही आंदोलन के मुख्य आधार बने।

297. (C) केवल 1 और 3
भारत में वामपंथी आंदोलनों ने राष्ट्रवादी संघर्ष को एक नवीन सामाजिक-आर्थिक दृष्टि प्रदान की और समाजवाद के प्रगतिशील विचारों को जनप्रिय बनाया। उन्होंने न केवल शहरी औद्योगिक श्रमिकों अपितु कृषकों को भी व्यापक स्तर पर किसान सभाओं द्वारा संगठित किया, अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि उन्होंने कृषकों की उपेक्षा की। वामपंथियों के वर्ग संघर्ष और क्रांतिकारी सिद्धांतों के कारण प्रायः गांधीवादी और कांग्रेस की मुख्यधारा की रणनीतियों के साथ उनके गंभीर वैचारिक मतभेद और संघर्ष होते रहे। इन समस्त चुनौतियों के उपरांत भी, वामपंथियों ने स्वाधीनता की लड़ाई को अधिक व्यापक, समावेशी और शोषित वर्गों के प्रति अत्यंत संवेदनशील बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई।

298. (A) ब्रिटिश भारत का भारत और पाकिस्तान में विभाजन
1940 के दशक में सांप्रदायिक राजनीति का निरंतर विकास अपने सर्वाधिक दुखद और निर्णायक चरण में पहुँच गया था। मुस्लिम लीग की पाकिस्तान हेतु हठधर्मिता और उसके दुष्परिणामस्वरूप भड़की राष्ट्रव्यापी सांप्रदायिक हिंसा ने राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता को अपूरणीय क्षति पहुँचाई। कांग्रेस और लीग के मध्य किसी भी विधिक सत्ता-साझेदारी के समझौते पर सर्वसम्मति न बन पाने के कारण विभाजन लगभग अपरिहार्य हो गया। इस सांप्रदायिक ध्रुवीकरण ने अंततः अगस्त 1947 में सदियों पुराने एकीकृत भारत को दो स्वतंत्र राष्ट्रों में विभाजित कर दिया, जिसके साथ ही बड़े पैमाने पर विस्थापन और भीषण मानवीय त्रासदी का दौर प्रारंभ हुआ।

299. (D) रियासतों के शासक भारत या पाकिस्तान के अधिराज्य में सम्मिलित होने के लिए सहमत हुए।
'विलय पत्र' (इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन) वह औपचारिक और विधिक दस्तावेज था जिसने भारत के राजनीतिक और भौगोलिक एकीकरण को संभव बनाया। इसके माध्यम से रियासतों के शासकों ने अपनी संप्रभुता के कतिपय महत्वपूर्ण विषय, जैसे रक्षा, विदेशी मामले और संचार, स्वेच्छा से भारत अथवा पाकिस्तान की सरकार को हस्तांतरित करने की सहमति प्रदान की थी। सरदार पटेल के कुशल मार्गदर्शन और दृढ़ संकल्प के कारण अधिकांश रियासतों ने इस पर हस्ताक्षर किए, जिससे सैकड़ों बिखरी हुई स्वतंत्र इकाइयों को एकीकृत कर एक आधुनिक और भौगोलिक रूप से संगठित भारत का निर्माण संभव हो सका। यह भारतीय संघ के गठन की प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विधिक आधार था।

300. (B) जवाहरलाल नेहरू
1962 में चीन द्वारा किए गए आकस्मिक आक्रमण और तत्पश्चात भारत की सैन्य पराजय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति और नेतृत्व हेतु एक अत्यंत गंभीर आघात सिद्ध हुई। नेहरू ने चीन के साथ 'पंचशील' और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के आदर्शों पर अत्यधिक विश्वास किया था, जो इस युद्ध के कारण पूर्णतः खंडित हो गया। इस घटना ने भारत की गुटनिरपेक्षता और राष्ट्रीय रक्षा तैयारियों पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े किए और संसद के भीतर एवं बाहर नेहरू की नीतियों की तीखी आलोचना हुई। इस भीषण संकट ने नेहरू के अंतिम वर्षों को गहरा दुख प्रदान किया और भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि एवं आंतरिक आत्मविश्वास को तात्कालिक रूप से निर्बल किया।

(A) कॉर्पोरेट राज्य पर बल।
(B) नस्लीय विचारधारा पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) जनसभाओं का उपयोग।
(D) लोकतंत्र की अस्वीकृति।

43. किस घटना को यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभ का तात्कालिक कारण माना जाता है?
(A) पर्ल हार्बर पर बमबारी।
(B) म्यूनिख समझौता।
(C) पोलैंड पर जर्मन आक्रमण।
(D) इथियोपिया पर इतालवी आक्रमण।

44. निम्नलिखित में से कौन द्वितीय विश्व युद्ध का एक प्रमुख कारण नहीं था?
(A) जर्मनी और जापान जैसी धुरी शक्तियों की आक्रामक विस्तारवादी नीतियां।
(B) तुष्टीकरण की नीति की विफलता।
(C) वर्साय की संधि से उत्पन्न अनसुलझे मुद्दे।
(D) संघर्ष को रोकने में संयुक्त राष्ट्र की सफलता।

45. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (नेता)
P. एडोल्फ हिटलर
Q. व्लादिमीर लेनिन
R. बेनिटो मुसोलिनी
S. सन यात-सेन
सूची II: (संबद्ध विचारधारा/आंदोलन)
1. 1911 की चीनी क्रांति
2. फासीवाद
3. 1917 की रूसी क्रांति
4. नाजीवाद
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

46. द्वितीय विश्व युद्ध का एक महत्वपूर्ण परिणाम क्या था?
(A) जर्मनी के औपनिवेशिक साम्राज्य की पुनर्स्थापना।
(B) यूरोप का विभाजन और शीत युद्ध का प्रारंभ।
(C) विश्व शक्तियों के रूप में अमेरिका और सोवियत संघ का पतन।
(D) ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य की पुनर्स्थापना।

47. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 1945 में किस प्राथमिक उद्देश्य के साथ की गई थी?
(A) साम्राज्यों में वणिकवादी व्यापार के आर्थिक सिद्धांतों को बढ़ावा देना।
(B) पूर्ण विधायी अधिकार वाली एक एकल विश्व सरकार बनाना।
(C) अंतर्राष्ट्रीय शांति बनाए रखना और भविष्य के विश्व युद्धों को रोकना।
(D) वर्साय की संधि की दंडात्मक शर्तों को लागू करना।

48. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): औद्योगिक क्रांति के कारण व्यापक शहरीकरण और एक नए श्रमिक वर्ग का उदय हुआ।
कारण (R): यह परिवर्तन सार्वभौमिक रूप से उत्कृष्ट कार्य स्थितियों, उच्च पारिश्रमिक और सामाजिक संघर्ष की अनुपस्थिति द्वारा चिह्नित था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

49. कौन-सी अवधारणा मध्यकालीन यूरोप में उस राजनीतिक और सामाजिक प्रणाली को संदर्भित करती है जहाँ एक लॉर्ड को सैन्य सेवा के बदले में वैसल्स द्वारा भूमि प्रदान की जाती थी?
(A) वणिकवाद
(B) सामंतवाद
(C) समाजवाद
(D) फासीवाद

50. शास्त्रीय ग्रीस और रोम से प्रेरणा लेते हुए, यूरोप में कला, साहित्य और विद्या के 'पुनर्जन्म' को किस नाम से जाना जाता है?
(A) पुनर्जागरण
(B) धर्म सुधार आंदोलन
(C) औद्योगिक क्रांति
(D) प्रबोधन

51. निम्नलिखित में से गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) 1917 की रूसी क्रांति - जार का तख्तापलट
(B) 1776 की अमेरिकी क्रांति - ब्रिटेन से स्वतंत्रता
(C) 1949 की चीनी क्रांति - एक साम्यवादी राज्य की स्थापना
(D) 1789 की फ्रांसीसी क्रांति - जर्मनी का एकीकरण

52. 1878 की बर्लिन कांग्रेस किन दो साम्राज्यों के बीच युद्ध से उत्पन्न मुद्दों के समाधान के लिए बुलाई गई थी?
(A) फ्रांस और प्रशिया
(B) रूस और ऑटोमन साम्राज्य
(C) ब्रिटेन और चीन
(D) ऑस्ट्रिया और इटली

53. तानाशाही शक्तियों के उदय से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. मुसोलिनी का रोम मार्च
2. हिटलर को जर्मनी का चांसलर नियुक्त किया जाना

(A) लियोन ट्रॉट्स्की
(B) व्लादिमीर लेनिन
(C) जोसेफ स्टालिन
(D) अलेक्जेंडर केरेंस्की

77. निम्नलिखित में से कौन प्रथम विश्व युद्ध का एक प्रमुख परिणाम है?
(A) पवित्र रोमन साम्राज्य की स्थापना।
(B) विश्व भर में उपनिवेशवाद की सुदृढ़ता।
(C) अमेरिका और जर्मनी के बीच शीत युद्ध का तत्काल प्रारंभ।
(D) मोहभंग की गहरी भावना और यूरोपीय मानचित्र का पुनर्निर्धारण।

78. 1920 और 1930 के दशक में फासीवाद और नाजीवाद जैसी तानाशाही शक्तियों के उदय को किसके द्वारा सुगम बनाया गया था?
(A) आर्थिक अस्थिरता, राष्ट्रीय अपमान और साम्यवाद का भय।
(B) अभूतपूर्व वैश्विक शांति और समृद्धि का काल।
(C) पूरे यूरोप में लोकतांत्रिक संस्थाओं की सफलता और अपील।
(D) राष्ट्र संघ का सुदृढ़ नेतृत्व।

79. निम्नलिखित में से सही कथन की पहचान कीजिए:
कथन I: वणिकवाद एक आर्थिक सिद्धांत है जो न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप और मुक्त व्यापार की वकालत करता है।
कथन II: उपनिवेशवाद का अभ्यास प्रायः वणिकवादी लक्ष्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप में किया जाता था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

80. नेपोलियन बोनापार्ट के पतन के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप क्या हुआ?
(A) जर्मनी का एकीकरण।
(B) रुसी क्रांति।
(C) प्रथम विश्व युद्ध का प्रारंभ।
(D) वियना कांग्रेस का आयोजन।

81. रोमन साम्राज्य के संदर्भ में 'दास प्रथा' शब्द उस स्थिति को संदर्भित करता है जहाँ व्यक्तियों को माना जाता था:
(A) सीमित मतदान अधिकार वाले नागरिक।
(B) किसी अन्य व्यक्ति की कानूनी संपत्ति, जिनके पास कोई व्यक्तिगत अधिकार नहीं थे।
(C) अनुबंधित श्रमिक जिन्हें एक निश्चित अवधि के बाद मुक्त कर दिया जाता था।
(D) प्रतिबंधित व्यवसायों वाली एक निम्न जाति।

82. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): पुनर्जागरण ने मध्यकाल के दैवीय सरोकारों से ध्यान हटाकर मानवीय क्षमता और सांसारिक मामलों पर केंद्रित किया।
कारण (R): यह परिवर्तन 'मानवतावाद' के रूप में जानी जाने वाली बौद्धिक विचारधारा में समाहित है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

83. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना किस संघर्ष के अनुभवों के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में की गई थी?
(A) नेपोलियन युद्ध
(B) क्रीमिया युद्ध
(C) द्वितीय विश्व युद्ध
(D) प्रथम विश्व युद्ध

84. जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क द्वारा निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी के विरुद्ध नियोजित युद्धों की एक श्रृंखला के माध्यम से प्राप्त किया गया था?
(A) रूस
(B) डेनमार्क
(C) ऑस्ट्रिया
(D) फ्रांस

85. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (घटना)
P. अमेरिकी क्रांति
Q. फ्रांसीसी क्रांति
R. वियना कांग्रेस
S. क्रीमिया युद्ध का प्रारंभ
सूची II: (वर्ष)
1. 1789 ईस्वी
2. 1815 ईस्वी
3. 1854 ईस्वी
4. 1776 ईस्वी
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-1, Q-4, R-3, S-2

86. निम्नलिखित में से कौन-सी फासीवाद की एक केंद्रीय विशेषता है?
(A) व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों पर बल।
(B) व्यक्ति का राज्य के अधीन होना।
(C) अंतर्राष्ट्रीयवाद और राष्ट्र-राज्यों का उन्मूलन।
(D) शांतिवाद के प्रति प्रतिबद्धता।

65. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पद)
P. नाजीवाद
Q. समाजवाद
R. अभिजाततंत्र
S. संसदीय लोकतंत्र
सूची II: (विवरण)
1. निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा सरकार।
2. विशेषाधिकार प्राप्त, कुलीन वर्ग द्वारा शासन।
3. नस्लीय सर्वोच्चता और आक्रामक राष्ट्रवाद की विचारधारा।
4. सामूहिक स्वामित्व पर आधारित सामाजिक संगठन की प्रणाली।
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

66. इटली के एकीकरण का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) पवित्र रोमन साम्राज्य को बहाल करना।
(B) इतालवी प्रायद्वीप के विभिन्न राज्यों से एक एकल राजनीतिक इकाई का निर्माण करना।
(C) इटली में एक साम्यवादी राज्य स्थापित करना।
(D) फ्रांस और ऑस्ट्रिया पर विजय प्राप्त करना।

67. निम्नलिखित में से कौन नाजीवाद से जुड़ी हिटलर की 'लेबेन्सराउम' की नीति का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(A) जर्मनी की मौजूदा सीमाओं के भीतर नस्लीय शुद्धता की नीति।
(B) आंतरिक आर्थिक आत्मनिर्भरता और विकास का कार्यक्रम।
(C) फासीवादी राज्य गठबंधन बनाने की एक कूटनीतिक रणनीति।
(D) पूर्वी यूरोप में निवास स्थान प्राप्त करने का लक्ष्य।

68. 1776 की अमेरिकी क्रांति वैचारिक रूप से किससे प्रभावित थी?
(A) प्राकृतिक अधिकारों और स्वशासन के बारे में प्रबोधन के विचार।
(B) सामंती परंपराएं और राजाओं का दैवीय अधिकार।
(C) वणिकवाद के सिद्धांत।
(D) रूसी क्रांति की सफलता।

69. 1949 की चीनी क्रांति किन दो मुख्य गुटों के बीच गृहयुद्ध की परिणति थी?
(A) राजतंत्रवादी और गणतंत्रवादी।
(B) राष्ट्रवादी और साम्यवादी।
(C) युद्ध सरदार और केंद्र सरकार।
(D) बॉक्सर विद्रोही और विदेशी शक्तियाँ।

70. वियना कांग्रेस (1815 ईस्वी) किस राजनीतिक सिद्धांत से सर्वाधिक संबंधित है?
(A) क्रांति
(B) राष्ट्रवाद
(C) वैधता और रुढ़िवाद
(D) समाजवाद

71. सही युग्म की पहचान कीजिए:
(A) नाजीवाद - एडोल्फ हिटलर
(B) फासीवाद - कार्ल मार्क्स
(C) वणिकवाद - व्लादिमीर लेनिन
(D) समाजवाद - नेपोलियन बोनापार्ट

72. 1789 ईस्वी की फ्रांसीसी क्रांति का एक प्रमुख कारण क्या था?
(A) समाजवादी नीतियों का सफल क्रियान्वयन।
(B) पुरातन व्यवस्था की अत्यधिक सामाजिक और आर्थिक असमानता।
(C) बिस्मार्क के नेतृत्व में जर्मनी का एकीकरण।
(D) क्रीमिया युद्ध में सैन्य पराजय।

73. 'पूर्वी समस्या' को यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि यह किस दिशा में स्थित एक साम्राज्य के क्षेत्रों से संबंधित थी?
(A) उत्तरी अमेरिका के पूर्व में।
(B) पश्चिमी और मध्य यूरोप की मुख्य शक्तियों के पूर्व में।
(C) रूसी साम्राज्य के पूर्व में।
(D) चीन के पूर्व में।

74. निम्नलिखित अवधारणाओं पर विचार कीजिए:
1. अभिजाततंत्र
2. संसदीय लोकतंत्र
3. नाजीवाद
इनमें से कौन-सी अवधारणाएं मौलिक रूप से असमानता के सिद्धांतों पर आधारित हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

75. निम्नलिखित क्रांतियों को उनके प्रारंभ के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. चीनी क्रांति (साम्यवादी)
2. अमेरिकी क्रांति
3. रूसी क्रांति (बोल्शेविक)
4. फ्रांसीसी क्रांति
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 2, 3, 4, 1
(D) 1, 2, 3, 4

76. 1917 की रूसी क्रांति के दौरान बोल्शेविकों का नेता कौन था?

(B) 1776 की अमेरिकी क्रांति
(C) 1917 की रूसी क्रांति
(D) 1911 की चीनी क्रांति

147. लिखित कानून और न्यायशास्त्र जैसी अवधारणाओं सहित रोमन साम्राज्य की कानूनी विरासत ने सीधे तौर पर किस अवधारणा के विकास को प्रभावित किया?
(A) सामंतवाद
(B) विधि संहिता
(C) समाजवाद
(D) नाजीवाद

148. नेपोलियन बोनापार्ट का युग किसके लिए महत्वपूर्ण है?
(A) क्रांति के आदर्शों को फैलाने और साम्राज्य के निर्माण के लिए।
(B) पूरे फ्रांस में सामंतवाद को पुनः स्थापित करने के लिए।
(C) ग्रेट ब्रिटेन को सफलतापूर्वक पराजित करने के लिए।
(D) कूटनीति के माध्यम से शांति को बढ़ावा देने के लिए।

149. 'चर्च की सर्वोच्चता' किसके कार्यालय के माध्यम से सर्वाधिक शक्तिशाली रुप से व्यक्त की गई थी?
(A) पवित्र रोमन सम्राट
(B) फ्रांस के राजा
(C) पोप
(D) कॉन्स्टेंटिनोपल के कुलपति

150. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ ग्रेट ब्रिटेन में वस्त्र उद्योग से हुआ था।
कारण (R): स्पिनिंग जेनी और पावर लूम जैसे नवाचारों ने वस्त्र उत्पादन की गति और पैमाने को अत्यधिक बढ़ा दिया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

151. 'पवित्र रोमन साम्राज्य' क्या था?
(A) प्राचीन काल में रोमनों द्वारा स्थापित साम्राज्य।
(B) मध्य यूरोप में स्थित जर्मन भाषी राजनीतिक इकाई।
(C) मध्य पूर्व में केंद्रित एक खिलाफत।
(D) स्पेन का औपनिवेशिक साम्राज्य।

152. 'धर्म सुधार आंदोलन' को आमतौर पर किस नाम से भी जाना जाता है?
(A) प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार
(B) प्रति-धर्मसुधार
(C) महान विच्छेद
(D) कैथोलिक पुनरुद्धार

153. 'वणिकवाद' का एक मुख्य सिद्धांत यह विश्वास था कि:
(A) वैश्विक व्यापार एक सकारात्मक-योग खेल था।
(B) आयात से अधिक निर्यात करना शक्ति का निर्माण करता है।
(C) उपनिवेशों को कहीं भी व्यापार करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए।
(D) सरकार को अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

154. 1911 की चीनी क्रांति और 1949 की चीनी क्रांति अपने अंतिम वैचारिक परिणामों में भिन्न थीं, जो क्रमशः थे:
(A) साम्यवादी और राष्ट्रवादी।
(B) राष्ट्रवादी और साम्यवादी।
(C) राजतंत्रवादी और गणतंत्रवादी।
(D) सामंती और राजतंत्रवादी।

155. वियना कांग्रेस (1815) ने 'पुरातन व्यवस्था' को बहाल करने का प्रयास किया, जो संदर्भित करती है:
(A) क्रांति-पूर्व राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था।
(B) रुस में साम्यवादी प्रणाली।
(C) रोमन साम्राज्य प्रणाली।
(D) अपने चरमोत्कर्ष पर सामंती व्यवस्था।

156. 19वीं शताब्दी में 'पूर्वी समस्या' किसके भविष्य को लेकर ब्रिटेन और रुस के परस्पर विरोधी हितों के कारण और अधिक जटिल हो गई थी?
(A) पतनशील ऑटोमन साम्राज्य का भविष्य।
(B) उत्तरी अमेरिका में उपनिवेशों का नियंत्रण।
(C) जर्मनी का एकीकरण।
(D) औद्योगिक तकनीक का भविष्य।

157. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (युद्ध/संघर्ष)
P. क्रीमिया युद्ध
Q. अमेरिकी क्रांति
R. फ्रेंको-प्रशिया युद्ध
S. प्रथम विश्व युद्ध
सूची II: (संबद्ध मुद्दा)
1. जर्मनी का एकीकरण
2. गठबंधनों की प्रणाली, साम्राज्यवाद, राष्ट्रवाद
3. पूर्वी समस्या
4. औपनिवेशिक स्वतंत्रता
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

158. राष्ट्रवाद की अवधारणा निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी घटनाओं के पीछे एक प्रेरक शक्ति थी?
(A) जर्मनी का एकीकरण
(B) इटली का एकीकरण

87. 'जमींदारी' प्रणाली किससे संबंधित एक सामाजिक-आर्थिक संरचना का उदाहरण है?
(A) औद्योगिक उत्पादन
(B) भूमि स्वामित्व और राजस्व
(C) समुद्री व्यापार
(D) धार्मिक पदानुक्रम

88. नाजीवाद और फासीवाद के अन्य रूपों के बीच मुख्य अंतर क्या था?
(A) आर्थिक नीति
(B) सरकार की प्रणाली
(C) प्रचार का उपयोग
(D) नस्ल पर अत्यधिक और केंद्रीय ध्यान

89. 1917 की रुसी क्रांति का एक प्रमुख कारण क्या था?
(A) प्रथम विश्व युद्ध में जार शासन की सफलता।
(B) सैन्य पराजय और निरंकुशता के कारण व्यापक असंतोष।
(C) जरीना एलेक्जेंड्रा की लोकप्रियता।
(D) जार द्वारा सफल भूमि सुधारों का क्रियान्वयन।

90. 'पूर्वी समस्या' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह मुख्य रूप से ऑटोमन साम्राज्य की घटती शक्ति से संबंधित थी।
2. यूरोपीय शक्तियाँ ऑटोमन साम्राज्य के पतन की स्थिति में शक्ति संतुलन को लेकर चिंतित थीं।
3. क्रीमिया युद्ध और बाल्कन युद्ध इसी समस्या की अभिव्यक्तियाँ थीं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

91. 'विधि संहिता' की अवधारणा किस ओर परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है?
(A) लिखित नियमों से मनमाने निर्णयों की ओर।
(B) मनमाने शासन से स्थापित नियमों की प्रणाली की ओर।
(C) लोकतांत्रिक शासन से निरंकुश शासन की ओर।
(D) धार्मिक कानून से धर्मनिरपेक्ष परंपरा की ओर।

92. पवित्र रोमन साम्राज्य को प्रभावी रूप से किस ऐतिहासिक काल के दौरान भंग कर दिया गया था?
(A) पुनर्जागरण
(B) धर्म सुधार आंदोलन
(C) नेपोलियन युद्ध
(D) प्रथम विश्व युद्ध

93. युवा तुर्क आंदोलन किस देश में राष्ट्रवाद के उदय से जुड़ा है?
(A) जर्मनी
(B) इटली
(C) ऑटोमन साम्राज्य
(D) रूस

94. 1911 की चीनी क्रांति का तात्कालिक परिणाम क्या था?
(A) चीन के जनवादी गणराज्य की स्थापना।
(B) अंतिम किंग सम्राट का पदत्याग।
(C) मंचूरिया पर जापानी आक्रमण।
(D) माओत्से तुंग का सर्वोच्च शक्ति के रूप में उदय।

95. सामंतवाद के संदर्भ में, 'फीफ' क्या है?
(A) भूमि से बंधा हुआ एक किसान।
(B) एक लॉर्ड द्वारा एक वैसल को दी गई भूमि की संपत्ति।
(C) चर्च को दिया जाने वाला कर।
(D) एक मध्यकालीन दुर्ग।

96. निम्नलिखित में से कौन द्वितीय विश्व युद्ध का एक प्रमुख परिणाम था?
(A) फासीवाद को सार्वभौमिक रुप से अपनाना।
(B) संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन।
(C) औपनिवेशिक साम्राज्यों की सुदृढ़ता।
(D) प्रथम विश्व युद्ध से पहले के राजतंत्रों की पुनर्स्थापना।

97. एक संस्था के रूप में 'दास प्रथा' किस प्राचीन सभ्यता की अर्थव्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता थी?
(A) पुनर्जागरण कालीन फ्लोरेंस
(B) रोमन साम्राज्य
(C) बिस्मार्क का जर्मनी
(D) 20वीं शताब्दी का रुस

98. नेपोलियन बोनापार्ट का उत्थान सबसे सीधे तौर पर किस महान क्रांति का परिणाम है?
(A) अमेरिकी क्रांति
(B) रुसी क्रांति
(C) फ्रांसीसी क्रांति
(D) चीनी क्रांति

99. व्यापार के सकारात्मक संतुलन के माध्यम से राष्ट्रीय संपत्ति संचित करने की नीति, जिसमें प्रायः संरक्षणवाद और उपनिवेशवाद शामिल होता है, किस रुप में जानी जाती है?
(A) समाजवाद
(B) सामंतवाद
(C) वणिकवाद
(D) फासीवाद

100. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): बिस्मार्क के नेतृत्व में जर्मनी के एकीकरण ने यूरोप में शक्ति संतुलन को महत्वपूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया।
कारण (R): नवगठित जर्मन साम्राज्य एक निर्बल, विकेंद्रीकृत राज्य था जिसमें बहुत कम औद्योगिक या सैन्य क्षमता थी।

(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

123. इटली का एकीकरण एक जटिल प्रक्रिया थी जिसमें निम्नलिखित में से किस व्यक्तित्व के अतिरिक्त अन्य सभी शामिल थे?
(A) ग्यूसेप मैजिनी
(B) काउंट कावूर
(C) ग्यूसेप गैरीबाल्डी
(D) ओतः वॉन बिस्मार्क

124. 'पुनर्जागरण पुरुष' शब्द उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो:
(A) एक धर्मनिष्ठ और एकांतप्रिय भिक्षु है।
(B) कई क्षेत्रों में व्यापक ज्ञान रखता है।
(C) एक शक्तिशाली सामंती लॉर्ड है।
(D) एक पेशेवर भाड़े का सैनिक है।

125. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना किस पूर्ववर्ती संगठन की विफलता से सीखने के प्रयास का प्रतिनिधित्व करती थी?
(A) वियना कांग्रेस
(B) यूरोप की संयुक्त व्यवस्था
(C) पवित्र गठबंधन
(D) राष्ट्र संघ

126. द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. हिटलर के जर्मनी की आक्रामक और विस्तारवादी नीतियां।
2. इस आक्रामकता को प्रभावी ढंग से चुनौती देने में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की विफलता।
3. वाइमर गणराज्य के तहत जर्मनी द्वारा प्राप्त आर्थिक समृद्धि और स्थिरता।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

127. संसदीय लोकतंत्र की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) एक एकल, गैर-निर्वाचित नेता द्वारा शासन।
(B) कार्यपालिका और विधायी शक्तियों का संलयन।
(C) राजनीतिक दलों का निषेध।
(D) वंशानुगत उत्तराधिकार पर आधारित सरकार।

128. 'समाजवाद' की अवधारणा काफी हद तक किसके प्रति उत्तर के रूप में उभरी?
(A) मध्यकालीन चर्च की शक्ति।
(B) औद्योगिक क्रांति द्वारा उत्पन्न स्थितियाँ।
(C) 16वीं शताब्दी की वणिकवादी नीतियां।
(D) रोमन साम्राज्य का पतन।

129. ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया-हंगरी जैसी शक्तियों के दृष्टिकोण से 1878 की बर्लिन कांग्रेस का मुख्य लक्ष्य क्या था?
(A) बाल्कन में रूसी विस्तार को प्रोत्साहित करना।
(B) ऑटोमन साम्राज्य को पूर्णतः विघटित करना।
(C) ऑटोमन साम्राज्य के विरुद्ध रूस के लाभ को सीमित करना।
(D) जर्मनी के एकीकरण को बढ़ावा देना।

130. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. बर्लिन कांग्रेस
2. क्रीमिया युद्ध
3. बाल्कन युद्ध
4. युवा तुर्क आंदोलन

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 2, 1, 3

131. 14 जुलाई, 1789 को बैस्टिल का पतन किस महान क्रांति का प्रतीकात्मक प्रस्थान बिंदु है?
(A) अमेरिकी क्रांति
(B) रूसी क्रांति
(C) फ्रांसीसी क्रांति
(D) 1911 की चीनी क्रांति

132. 1917 की रूसी क्रांति के दो पृथक चरण थे, फरवरी क्रांति और अक्टूबर क्रांति। अक्टूबर क्रांति किस समूह को सत्ता में लाई?
(A) मेंशेविक
(B) संवैधानिक लोकतंत्रवादी
(C) बोल्शेविक
(D) जार के वफादार

133. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): उपनिवेशवाद एक ऐसी आर्थिक प्रणाली थी जिससे उपनिवेशवादी और उपनिवेशित दोनों को समान रूप से लाभ हुआ।
कारण (R): उपनिवेशों को व्यापार और शासन में समान भागीदार के रूप में स्थापित किया गया था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A और R दोनों गलत हैं।

134. निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रमुख यूरोपीय साम्राज्य नहीं था जो प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप ढह गया?
(A) रूसी साम्राज्य
(B) ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य
(C) ऑटोमन साम्राज्य

(A) एक संसदीय लोकतंत्र
(B) एक सामंती राज्य
(C) एक सर्वसत्तावादी राज्य
(D) एक वणिकवादी राज्य

111. बाल्कन युद्धों को प्रथम विश्व युद्ध का एक महत्वपूर्ण अग्रदूत माना जाता है क्योंकि उन्होंने:
(A) जर्मनी के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।
(B) रूसी सेना की निर्बलता का प्रदर्शन किया।
(C) महाशक्तियों के बीच तनाव और प्रतिद्वंद्विता को बढ़ा दिया।
(D) क्षेत्र के सभी जातीय संघर्षों को सुलझा दिया।

112. पश्चिम में औद्योगिक पूंजीवाद से पूर्व की आर्थिक प्रणाली, जो श्रेणी-आधारित कारीगरों और भूमि-आधारित अभिजात वर्ग की विशेषता थी, किस रूप में जानी जाती है?
(A) सामंतवाद
(B) समाजवाद
(C) वणिकवाद
(D) उपनिवेशवाद

113. धर्म सुधार आंदोलन का मूल विचार क्या था?
(A) पोप की अचूकता।
(B) धार्मिक धर्मयुद्धों की आवश्यकता।
(C) केवल विश्वास के माध्यम से मुक्ति।
(D) चर्च और राज्य का विलय।

114. 'विधि संहिता' की अवधारणा में रोमन साम्राज्य के योगदान का सबसे सटीक उदाहरण है:
(A) दस आज्ञाएं
(B) हम्मुराबी की संहिता
(C) मैग्ना कार्टा
(D) जस्टिनियन की संहिता के सिद्धांत

115. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): 1949 की चीनी क्रांति ने माओत्से तुंग के नेतृत्व में साम्यवादी दल को सत्ता में लाया।
कारण (R): यह क्रांति 1911 में किंग राजवंश के पतन का प्रत्यक्ष और तत्काल परिणाम थी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

116. नाजीवाद का राजनीतिक दर्शन किसके साथ मौलिक रूप से असंगत है?
(A) राष्ट्रवाद
(B) सैन्यवाद
(C) संसदीय लोकतंत्र
(D) अधिनायकवाद

117. 1776 की अमेरिकी क्रांति का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) ब्रिटिश सिंहासन के उत्तराधिकार को लेकर विवाद।
(B) एक समाजवादी समाज स्थापित करने की इच्छा।
(C) "बिना प्रतिनिधित्व के कराधान" पर शिकायतें।
(D) फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव।

118. नेपोलियन बोनापार्ट का उत्थान और पतन किस अवधि के बीच फैला हुआ है?
(A) फ्रांसीसी क्रांति के अंत और वियना कांग्रेस के बीच।
(B) अमेरिकी क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति के बीच।
(C) वियना कांग्रेस और जर्मनी के एकीकरण के बीच।
(D) प्रथम विश्व युद्ध के अंत और द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत के बीच।

119. द्वितीय विश्व युद्ध का एक प्रमुख परिणाम क्या था?
(A) यूरोपीय उपनिवेशवाद की सुदृढ़ता।
(B) पवित्र रोमन साम्राज्य की पुनर्स्थापना।
(C) महाशक्तियों के रूप में अमेरिका और सोवियत संघ का उदय।
(D) राष्ट्रवाद की सार्वभौमिक अस्वीकृति।

120. इनमें से कौन प्रथम विश्व युद्ध का प्रत्यक्ष प्रभाव था?
(A) इटली का एकीकरण।
(B) औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ।
(C) चीनी साम्यवादी क्रांति।
(D) ऑटोमन और ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्यों का पतन।

121. 19वीं और 20वीं शताब्दी की शुरुआत की 'पूर्वी समस्या' को किस नाम से भी जाना जाता है?
(A) पश्चिमी प्रश्न
(B) यूरोप का बीमार व्यक्ति का प्रश्न
(C) जर्मन प्रश्न
(D) इतालवी प्रश्न

122. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विचारधारा)
P. समाजवाद
Q. वणिकवाद
R. फासीवाद
S. सामंतवाद
सूची II: (मूल सिद्धांत)
1. राज्य की शक्ति और चरम राष्ट्रवाद
2. भूमि-आधारित पदानुक्रम और दायित्व
3. सामूहिक स्वामित्व और आर्थिक समानता
4. व्यापार अधिशेष के माध्यम से राष्ट्रीय संपत्ति
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

101. निम्नलिखित ऐतिहासिक अवधियों/घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. पुनर्जागरण
2. प्रथम विश्व युद्ध
3. ब्लैक डेथ
4. फ्रांसीसी क्रांति
(A) 3, 1, 4, 2
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 4, 1, 3, 2

102. 'अभिजाततंत्र' की अवधारणा किसके आधुनिक आदर्श के विपरीत है?
(A) राजतंत्र
(B) धर्मतंत्र
(C) योग्यतातंत्र
(D) अल्पतंत्र

103. औद्योगिक क्रांति को 'क्रांति' कहा जाता है क्योंकि इसने:
(A) सरकार के हिंसक तख्तापलट को शामिल किया।
(B) समाज और तकनीक को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया।
(C) एक एकल क्रांतिकारी व्यक्तित्व द्वारा नेतृत्व किया गया था।
(D) एक समाजवादी राज्य के रूप में परिणत हुई।

104. वर्साय की संधि के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) इसने जर्मनी को "युद्ध अपराध" खंड स्वीकार करने के लिए विवश किया।
(B) इसे एक अपमानजनक और अन्यायपूर्ण शांति के रूप में देखा गया था।
(C) इसने संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की।
(D) इसमें जर्मनी को भारी युद्ध हर्जाना देने की आवश्यकता थी।

105. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (क्रांति)
P. अमेरिकी क्रांति (1776)
Q. चीनी क्रांति (1911)
R. रूसी क्रांति (1917)
S. चीनी क्रांति (1949)
सूची II: (प्रमुख परिणाम)
1. किंग राजवंश का अंत
2. चीन के जनवादी गणराज्य की स्थापना
3. ग्रेट ब्रिटेन से स्वतंत्रता
4. विश्व के पहले प्रमुख साम्यवादी राज्य की स्थापना
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

106. नाजीवाद की विचारधारा को एडोल्फ हिटलर द्वारा लिखित किस पुस्तक में विस्तार से बताया गया था?
(A) द कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो
(B) द प्रिंस
(C) मीन कैम्फ
(D) द सोशल कॉन्ट्रैक्ट

107. निम्नलिखित में से सही कथन की पहचान कीजिए:
कथन I: 1815 की वियना कांग्रेस का उद्देश्य फ्रांसीसी क्रांति द्वारा उत्पन्न राष्ट्रवाद और उदारवाद की शक्तियों को दबाना था।
कथन II: कांग्रेस ने यूरोप में एक स्थायी शांति बनाने में सफलता प्राप्त की, जिससे अगली दो शताब्दियों तक सभी बड़े युद्धों को रोका जा सका।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

108. मध्यकालीन यूरोप में 'चर्च की सर्वोच्चता' का अर्थ था कि:
(A) पोप के अधिकार को धर्मनिरपेक्ष शासकों के अधीन माना जाता था।
(B) चर्च के पास महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक शक्ति थी।
(C) वैज्ञानिक खोज पादरियों की प्राथमिक भूमिका थी।
(D) राज्य द्वारा सभी धर्मों के साथ समान सम्मान का व्यवहार किया जाता था।

109. नाजीवाद और फासीवाद से जुड़ी निम्नलिखित नीतियों पर विचार कीजिए:
1. राज्य और सेना का महिमामंडन।
2. व्यक्तिगत स्वतंत्रता और राजनीतिक असंतोष का दमन।
3. नस्लीय शुद्धता और यहूदी-विरोध पर बल।
ऊपर दी गई कौन-सी नीतियां इन तानाशाही शक्तियों की विशेषता हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

110. एक ऐसा राज्य जहाँ सरकार सार्वजनिक और निजी जीवन के हर पहलू को नियंत्रित करने का प्रयास करती है, उसे सबसे सटीक रूप से इस रूप में वर्णित किया गया है:

(D) ब्रिटिश साम्राज्य

135. मुसोलिनी के नेतृत्व में इटली में फासीवाद के उदय की विशेषता अर्धसैनिक दस्तों का उपयोग थी, जिन्हें किस नाम से जाना जाता था?
(A) रेड गाड्र्स
(B) ब्राउनशर्ट्स
(C) ब्लैकशर्ट्स
(D) व्हाइट आर्मी

136. 1930 के दशक में 'तुष्टीकरण' की नीति किसके प्रति मित्र राष्ट्रों की प्रतिक्रिया से सर्वाधिक जुड़ी हुई है?
(A) रूसी क्रांति।
(B) इटली का एकीकरण।
(C) हिटलर के जर्मनी की विस्तारवादी महत्वाकांक्षाएं।
(D) वणिकवाद की आर्थिक नीतियां।

137. निम्नलिखित में से सही कथन की पहचान कीजिए:
कथन I: 14वीं शताब्दी में ब्लैक डेथ ने यूरोप की जनसंख्या को अत्यधिक कम कर दिया था।
कथन II: इस जनसांख्यिकीय पतन का तत्कालीन सामंती आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं पर बहुत कम प्रभाव पड़ा।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

138. जर्मनी का एकीकरण 1871 में प्रशिया की किस युद्ध में विजय के बाद पूर्ण हुआ था?
(A) क्रीमिया युद्ध
(B) ऑस्ट्रो-प्रशिया युद्ध
(C) फ्रेंको-प्रशिया युद्ध
(D) सप्तवर्षीय युद्ध

139. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पद)
P. जमींदारी प्रणाली
Q. पुनर्जागरण (उत्पत्ति)
R. नाजीवाद
S. सामंतवाद (शास्त्रीय मॉडल)
सूची II: (संबद्ध देश/क्षेत्र)
1. जर्मनी
2. भारतीय उपमहाद्वीप
3. पश्चिमी यूरोप
4. इतालवी नगर-राज्य
कूट:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

140. निम्नलिखित में से कौन 'पुनर्जागरण' के सार को सबसे सटीक रूप से दर्शाता है?
(A) तीव्र धार्मिक युद्धों का काल।
(B) मध्यकालीन मानदंडों को चुनौती देने वाला एक सांस्कृतिक पुनर्जन्म।
(C) एक सम्राट के अधीन यूरोप का राजनीतिक एकीकरण।
(D) इटली में समाजवादी कम्यूनों की स्थापना।

141. प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण किस साम्राज्य के आर्कड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड की हत्या थी?
(A) ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य
(B) जर्मन साम्राज्य
(C) रूसी साम्राज्य
(D) ऑटोमन साम्राज्य

142. 'सामंतवाद' की प्रणाली मुख्य रूप से किस पर आधारित थी?
(A) मौद्रिक अर्थव्यवस्था और मुक्त श्रम।
(B) एक केंद्रीकृत नौकरशाही और एक स्थायी सेना।
(C) भूमि धारण पर आधारित दायित्व।
(D) नेताओं के लिए लोकतांत्रिक चुनाव।

143. फ्रांसीसी क्रांति के कारणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रबोधन का बौद्धिक प्रभाव।
2. फ्रांसीसी राज्य का वित्तीय संकट।
3. तीन एस्टेट की कठोर सामाजिक संरचना।
ऊपर दिए गए कथनों में से किन कारणों ने क्रांति में योगदान दिया?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

144. एक राजनीतिक और आर्थिक सिद्धांत के रूप में 'समाजवाद' किसकी सर्वाधिक आलोचना करता है?
(A) राजाओं का दैवीय अधिकार।
(B) पूंजीवादी व्यवस्था और निजी संपत्ति।
(C) चर्च का अधिकार।
(D) राष्ट्रवाद के सिद्धांत।

145. 1920 और 1930 के दशक में जर्मनी और इटली में तानाशाही शक्तियों का उदय क्या दर्शाता है?
(A) संकट के दौरान अधिनायकवादी समाधानों की अपील।
(B) लोकतांत्रिक सरकारों की अंतर्निहित स्थिरता।
(C) अंतर्राष्ट्रीयतावादी और शांतिवादी आंदोलनों की सफलता।
(D) सामंतवाद की अंतिम विजय।

146. किस क्रांति ने विश्व इतिहास में पहले साम्यवादी राज्य की स्थापना की?
(A) 1789 की फ्रांसीसी क्रांति

3. द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारंभ
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 1, 2

54. क्रीमिया युद्ध (1854-1856) के मुख्य संघर्ष में ब्रिटेन और फ्रांस सहित एक गठबंधन ने ऑटोमन क्षेत्र में किस साम्राज्य के विस्तार का विरोध किया था?
(A) प्रशियाई साम्राज्य
(B) ऑस्ट्रियाई साम्राज्य
(C) स्पेनिश साम्राज्य
(D) रुसी साम्राज्य

55. निम्नलिखित में से सही कथन की पहचान कीजिए:
कथन I: संसदीय लोकतंत्र की अवधारणा शक्तियों के पृथक्करण और जनता के प्रतिनिधित्व का समर्थन करती है।
कथन II: अभिजाततंत्र की अवधारणा एक वंशानुगत, विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग द्वारा शासन पर आधारित है, जो आधुनिक लोकतांत्रिक सिद्धांतों के विपरीत है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

56. उपनिवेशवाद की ऐतिहासिक घटना किस आर्थिक सिद्धांत के व्यावहारिक अनुप्रयोग के रुप में सबसे निकटता से जुड़ी है?
(A) समाजवाद
(B) वणिकवाद
(C) सामंतवाद
(D) साम्यवाद

57. नेपोलियन बोनापार्ट के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वह फ्रांसीसी क्रांति के बाद के चरणों के दौरान प्रमुखता से उभरा।
2. उसने 'नेपोलियन कोड' में फ्रांसीसी कानून को संहिताबद्ध किया, जिसने विश्व भर की कानूनी प्रणालियों को प्रभावित किया।
3. उसके शासन का अंत रुस की सफल और स्थायी विजय के साथ हुआ।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

58. 'धर्म सुधार आंदोलन' के कारण ईसाई धर्म की किस प्रमुख शाखा की स्थापना हुई?
(A) प्रोटेस्टेंटवाद
(B) पूर्वी रुढ़िवादी
(C) रोमन कैथोलिक धर्म
(D) कॉप्टिक ईसाई धर्म

59. 'चर्च की सर्वोच्चता' को किस काल के दौरान व्यापक स्तर पर चुनौती दी जाने लगी?
(A) प्रारंभिक रोमन साम्राज्य
(B) अंधकार युग
(C) पुनर्जागरण और धर्म सुधार आंदोलन
(D) सामंतवाद का चरमोत्कर्ष

60. निम्नलिखित में से कौन-सी क्रांति 20वीं शताब्दी की नहीं है?
(A) 1911 की चीनी क्रांति
(B) 1917 की रुसी क्रांति
(C) 1789 ईस्वी की फ्रांसीसी क्रांति
(D) 1949 की चीनी क्रांति

61. फासीवादी इटली में मुसोलिनी की नीति में निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी शामिल थे?
(A) एक कॉर्पोरेट राज्य का निर्माण।
(B) उदार लोकतंत्र को बढ़ावा देना।
(C) आक्रामक विदेश नीति और राष्ट्रवाद।
(D) गुप्त पुलिस के माध्यम से असंतोष का दमन।

62. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): वर्साय की संधि उन स्थितियों को उत्पन्न करने में एक प्रमुख कारक थी जिनके कारण द्वितीय विश्व युद्ध हुआ।
कारण (R): इसकी शर्तों ने जर्मनी में गहरा असंतोष और आर्थिक तंगी उत्पन्न की, जिसका हिटलर जैसे कट्टरपंथी नेताओं ने लाभ उठाया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

63. 'ब्लैक डेथ' शब्द किस प्रमुख ऐतिहासिक घटना को संदर्भित करता है?
(A) प्रथम विश्व युद्ध की सबसे विनाशकारी लड़ाई।
(B) नेपोलियन द्वारा किया गया एक राजनीतिक नरसंहार।
(C) द्वितीय विश्व युद्ध से पहले की आर्थिक मंदी।
(D) 14वीं शताब्दी में एक भीषण ब्यूबोनिक प्लेग महामारी।

64. समाज पर औद्योगिक क्रांति का एक बड़ा प्रभाव क्या था?
(A) कुल जनसंख्या में गिरावट।
(B) शहरी क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर जनसंख्या का व्यापक पलायन।
(C) सामंती व्यवस्था की सुदृढ़ता।
(D) एक नए औद्योगिक श्रमिक वर्ग और नई सामाजिक संरचनाओं का उदय।

(C) बाल्कन युद्ध
(D) सामंतवाद की स्थापना

159. प्रथम विश्व युद्ध के परिणामों और प्रभावों में शामिल हैं:
(A) एक लेनदार राष्ट्र के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका का उदय।
(B) यूरोप में स्थायी शांति की सफल स्थापना।
(C) पूरे महाद्वीप में राजशाही शासन की सुदृढ़ता।
(D) राष्ट्रवादी भावनाओं में गिरावट।

160. फासीवाद और नाजीवाद के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. दोनों सर्वसत्तावादी विचारधाराएं थीं जिन्होंने लोकतंत्र को अस्वीकार कर दिया था।
2. दोनों मौलिक रूप से अंतरराष्ट्रीयतावादी थे और उन्होंने वैश्विक श्रमिक एकजुटता को बढ़ावा दिया।
3. नाजीवाद में नस्लीय सिद्धांत का एक अनूठा और केंद्रीय तत्व शामिल था जो इतालवी फासीवाद में कम स्पष्ट था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

161. द्वितीय विश्व युद्ध का एक प्राथमिक कारण किस संधि की स्थायी शांति बनाने में विफलता थी?
(A) वेस्टफेलिया की संधि
(B) वियना कांग्रेस
(C) वर्साय की संधि
(D) बर्लिन कांग्रेस संधि

162. निम्नलिखित में से सही कथन की पहचान कीजिए:
कथन I: 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका की प्रतिक्रिया थी।
कथन II: संयुक्त राष्ट्र का प्राथमिक लक्ष्य सोवियत संघ के विरुद्ध एक सैन्य गठबंधन के रूप में कार्य करना था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

163. यूरोप में 'सामंतवाद' के पतन को किसके द्वारा गति मिली?
(A) मुद्रा-आधारित अर्थव्यवस्था का उदय और नगरों का विकास।
(B) सामंती स्वामियों द्वारा लागू किए गए सफल सुधार।
(C) किसी भी बड़े युद्ध या महामारी का अभाव।
(D) इटली का एकीकरण।

164. पुनर्जागरण को यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इसे किसके पुनर्जन्म के रूप में देखा गया था?
(A) सामंती निष्ठा।
(B) चर्च की सर्वोच्चता।
(C) शास्त्रीय ग्रीक और रोमन संस्कृति तथा विद्या।
(D) वणिकवादी आर्थिक नीति।

165. 'आतंक का शासन' किस क्रांति का एक कट्टरपंथी और हिंसक चरण था?
(A) अमेरिकी क्रांति
(B) फ्रांसीसी क्रांति
(C) रूसी क्रांति
(D) 1911 की चीनी क्रांति

166. 20वीं शताब्दी की किन दो क्रांतियों के परिणामस्वरूप साम्यवादी राज्य बने?
(A) चीनी (1911) और रूसी (1917)
(B) रूसी (1917) और चीनी (1949)
(C) चीनी (1911) और चीनी (1949)
(D) अमेरिकी (1776) और फ्रांसीसी (1789)

167. निम्नलिखित नेताओं के सर्वोच्च सत्ता में उदय को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. नेपोलियन बोनापार्ट
2. एडोल्फ हिटलर
3. व्लादिमीर लेनिन
4. बेनिटो मुसोलिनी

(A) 1, 3, 4, 2
(B) 1, 4, 3, 2
(C) 3, 1, 4, 2
(D) 4, 3, 1, 2

168. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में "अफ्रीका के लिए छीना-झपटी" किसका एक प्रमुख उदाहरण है?
(A) उपनिवेशवाद
(B) समाजवाद
(C) सामंतवाद
(D) पुनर्जागरण

169. जर्मनी के एकीकरण के लिए बिस्मार्क की 'यथार्थवादी राजनीति' की नीति ने किस पर बल दिया?
(A) आदर्शवादी और नैतिक विचार।
(B) शक्ति की राजनीति के माध्यम से राष्ट्रीय हित की प्राप्ति।
(C) कैथोलिक चर्च के साथ गठबंधन।
(D) केवल शांतिवाद और कूटनीति।

170. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): 'ब्लैक डेथ' के कारण 14वीं शताब्दी के यूरोप में श्रम की भारी कमी हो गई।
कारण (R): इस कमी ने जीवित बचे श्रमिकों और किसानों की स्थिति को निर्बल कर दिया, जिससे लॉर्ड्स को कठोर सामंती दायित्वों को लागू करने की अनुमति मिली।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

171. 'जमींदारी' प्रणाली, 'सामंतवाद' और 'दास प्रथा' ये सभी ऐतिहासिक अवधारणाएं मुख्य रूप से किससे संबंधित हैं?
(A) लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं।
(B) सामाजिक पदानुक्रम और आर्थिक नियंत्रण की प्रणालियाँ।
(C) कलात्मक आंदोलन।
(D) 20वीं शताब्दी की क्रांतिकारी विचारधाराएं।

172. युद्धों के बीच की अवधि में तानाशाही शक्तियों का उदय किन सिद्धांतों की अस्वीकृति थी?
(A) राष्ट्रवाद और सैन्यवाद।
(B) उदारवाद और संसदीय लोकतंत्र।
(C) समाजवाद और साम्यवाद।
(D) अभिजाततंत्र और राजतंत्र।

173. 'विधि संहिता' का मूल विचार यह सुनिश्चित करना है कि न्याय:
(A) सामाजिक स्थिति के आधार पर भिन्न-भिन्न तरीके से प्रशासित हो।
(B) त्वरित और प्रायः मनमाना हो।
(C) सुसंगत, सार्वजनिक और गैर-व्यक्तिगत नियमों पर आधारित हो।
(D) केवल सम्राट की इच्छा से निर्धारित हो।

174. 19वीं शताब्दी में इटली का एकीकरण और जर्मनी का एकीकरण दोनों ही किस शक्ति के प्रमुख उदाहरण हैं?
(A) राष्ट्रवाद
(B) समाजवाद
(C) अंतर्राष्ट्रीयवाद
(D) वणिकवाद

175. प्रथम विश्व युद्ध अपनी किस विशेषता के कारण पूर्ववर्ती संघर्षों से मौलिक रूप से भिन्न था?
(A) घुड़सवार सेना के हमलों का उपयोग।
(B) नागरिक आबादी पर सीमित प्रभाव।
(C) कुल पैमाना, औद्योगिक प्रकृति और वैश्विक भागीदारी।
(D) अल्प अवधि और हताहतों की कम संख्या।

176. निम्नलिखित में से 'उपनिवेशवाद' के लिए सबसे उपयुक्त परिभाषा कौन-सी है?
(A) यह सिद्धांत कि किसी देश की शक्ति उसके स्वर्ण भंडार पर आधारित होती है।
(B) राजनीतिक नियंत्रण और आर्थिक शोषण प्राप्त करने की नीति।
(C) सामुदायिक संपत्ति स्वामित्व के साथ सामाजिक संगठन की एक प्रणाली।
(D) मानवीय क्षमता और पुरातनता के अध्ययन पर बल देने वाला एक सांस्कृतिक आंदोलन।

177. 1949 की चीनी क्रांति का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था?
(A) सन यात-सेन
(B) माओत्से तुंग
(C) च्यांग काई-शेक
(D) पुयी

178. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद गढ़ा गया शब्द "लौह आवरण", किसके वैचारिक और भौतिक विभाजन को संदर्भित करता है?
(A) जर्मनी का पूर्व और पश्चिम में विभाजन।
(B) यूरोप का पश्चिमी और सोवियत प्रभाव क्षेत्रों में विभाजन।
(C) औपनिवेशिक शक्तियों और उपनिवेशों के बीच विश्व का विभाजन।
(D) कोरिया का उत्तर और दक्षिण में विभाजन।

179. हिटलर के नाजीवाद और मुसोलिनी के फासीवाद की आर्थिक नीतियां दोनों ही किसकी विशेषता रखती थीं?
(A) राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए राज्य का निर्देशन और नियंत्रण।
(B) अहस्तक्षेप मुक्त बाजार पूंजीवाद के प्रति प्रतिबद्धता।
(C) समस्त निजी संपत्ति का उन्मूलन।
(D) अंतर्राष्ट्रीय मुक्त व्यापार को बढ़ावा देना।

180. "पूर्वी समस्या" ऑटोमन साम्राज्य के भविष्य से संबंधित थी। निम्नलिखित में से कौन इस समस्या में प्रत्यक्ष भागीदार या गहराई से रुचि रखने वाला पक्ष नहीं था?
(A) रूस
(B) संयुक्त राज्य अमेरिका
(C) ग्रेट ब्रिटेन
(D) ऑस्ट्रिया-हंगरी

181. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (व्यक्तित्व)
P. ओतो वॉन बिस्मार्क
Q. नेपोलियन बोनापार्ट
R. मार्टिन लूथर
S. क्लेमेंस वॉन मेटरनिक
सूची II: (ऐतिहासिक महत्व)
1. धर्म सुधार आंदोलन के प्रमुख व्यक्तित्व
2. जर्मनी के एकीकरण के वास्तुकार
3. वियना कांग्रेस में प्रभावशाली व्यक्तित्व
4. फ्रांसीसी क्रांति के बाद सत्ता में आए, एक यूरोपीय साम्राज्य बनाया

कूट:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

182. द्वितीय विश्व युद्ध का एक प्रमुख कारण है:
(A) वर्साय की संधि के परिणाम।
(B) रूस में समाजवाद का उदय।
(C) ऑटोमन साम्राज्य का पतन।
(D) औद्योगिक क्रांति।

183. निम्नलिखित में से सही कथन की पहचान कीजिए:
कथन I: 1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्शों का समर्थन किया।
कथन II: नेपोलियन बोनापार्ट का उत्थान इन लोकतांत्रिक आदर्शों की पूर्ण पूर्ति का प्रतिनिधित्व करता था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

184. इंग्लैंड में संसदीय लोकतंत्र की स्थापना एक क्रमिक प्रक्रिया थी जिसमें किसकी शक्ति को सीमित करना शामिल था?
(A) किसान वर्ग
(B) व्यापारी वर्ग
(C) पादरी वर्ग
(D) राजतंत्र

185. निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. प्रथम विश्व युद्ध का प्रारंभ।
2. वियना कांग्रेस।
3. नेपोलियन का सत्ता में उदय।
(A) 2, 3, 1
(B) 3, 2, 1
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 1, 2

186. 'अभिजाततंत्र' की अवधारणा किसके द्वारा शासन की एक प्रणाली है?
(A) श्रेष्ठ और सर्वाधिक गुणी नागरिकों द्वारा।
(B) सर्वाधिक संपन्न नागरिकों द्वारा।
(C) एक एकल धार्मिक नेता द्वारा।
(D) निर्वाचित अधिकारियों द्वारा।

187. 1917 की रूसी क्रांति के परिणामस्वरूप रूस किस प्रमुख संघर्ष से हट गया?
(A) प्रथम विश्व युद्ध
(B) द्वितीय विश्व युद्ध
(C) क्रीमिया युद्ध
(D) नेपोलियन युद्ध

188. समाजवाद और फासीवाद के बीच मौलिक अंतर क्या है?
(A) फासीवाद राष्ट्रवादी है, जबकि समाजवाद अंतरराष्ट्रीयतावादी है।
(B) समाजवाद वर्गों का समर्थन करता है, जबकि फासीवाद उन्हें समाप्त करना चाहता है।
(C) फासीवाद आर्थिक है, जबकि समाजवाद विशुद्ध रूप से राजनीतिक है।
(D) दोनों के बीच कोई मौलिक अंतर नहीं है।

189. औद्योगिक क्रांति ने नए सामाजिक वर्ग बनाए, जिनमें एक बड़ा शहरी सर्वहारा वर्ग और एक:
(A) नया औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग शामिल था।
(B) शक्तिशाली सामंती अभिजात वर्ग शामिल था।
(C) दास-स्वामियों का वर्ग शामिल था।
(D) कुशल कारीगरों की श्रेणी शामिल थी।

190. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): इटली का एकीकरण एक सीधी प्रक्रिया थी जिसका नेतृत्व एक एकल नेता और एक एकल विचार द्वारा किया गया था।
कारण (R): इसमें जटिल कूटनीति, क्रांतिकारी उत्साह और कावूर, मैजिनी और गैरीबाल्डी जैसे विभिन्न व्यक्तित्वों के नेतृत्व में सैन्य अभियान शामिल थे।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

191. युवा तुर्क आंदोलन का उद्देश्य किस रुग्ण साम्राज्य में सुधार और आधुनिकीकरण करना था?
(A) ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य
(B) रूसी साम्राज्य
(C) पवित्र रोमन साम्राज्य
(D) ऑटोमन साम्राज्य

192. निम्नलिखित में से कौन द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव था?
(A) यूरोप में निरंकुश राजतंत्रों की बहाली।
(B) वि-उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया का प्रारंभ।
(C) एक वैश्विक विचारधारा के रूप में फासीवाद की अंतिम विजय।
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए अलगाववाद का एक लंबा दौर।

193. रोमन साम्राज्य विश्व इतिहास में निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी के लिए महत्वपूर्ण है?
(A) इसकी कानूनी और प्रशासनिक प्रणालियाँ।
(B) इसकी अभियांत्रिकी और वास्तुकला की उपलब्धियाँ।
(C) लैटिन का प्रसार और रोमांस भाषाओं की नींव।
(D) प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार।

194. 'संसदीय लोकतंत्र' की अवधारणा किसके प्रत्यक्ष विरोध में है?
(A) एक निरंकुश राजतंत्र या तानाशाही।

(B) एक गणतंत्र।
(C) सरकार की एक संघीय प्रणाली।
(D) एक संवैधानिक राजतंत्र।

195. 'ब्लैक डेथ' ने किसके द्वारा सामंतवाद के अंत में योगदान दिया?
(A) स्वामी और दास के बीच संबंधों को सुदृढ़ करके।
(B) श्रम अधिशेष उत्पन्न करके और मजदूरी को कम करके।
(C) समाज पर चर्च के नियंत्रण को पुख्ता करके।
(D) श्रम का मूल्य बढ़ाकर और किसानों को स्वतंत्रता की मांग करने का अवसर देकर।

196. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
1. राष्ट्रवाद
2. सैन्यवाद
3. साम्राज्यवाद
4. गठबंधन प्रणाली

इन कारकों को निम्नलिखित में से किस संघर्ष के प्रमुख दीर्घकालिक कारणों के रूप में उद्धृत किया जाता है?
(A) नेपोलियन युद्ध
(B) द्वितीय विश्व युद्ध
(C) प्रथम विश्व युद्ध
(D) क्रीमिया युद्ध

197. फासीवादी इटली के लिए मुसोलिनी की नीति ने किस पर बल दिया?
(A) राज्य पर व्यक्ति का महत्व।
(B) शांतिवाद और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग।
(C) बहुदलीय लोकतंत्र को बढ़ावा देना।
(D) राज्य का पूर्ण प्राधिकार और आध्यात्मिक मूल्य।

198. वर्साय की संधि की प्रायः किसलिए आलोचना की जाती है?
(A) उन शिकायतों को उत्पन्न करने के लिए जिन्होंने नाजीवाद के उदय को हवा दी।
(B) जर्मनी के प्रति बहुत उदार होने के लिए।
(C) सोवियत संघ की स्थापना के लिए।
(D) फ्रांस के लिए राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धांत की अनदेखी करने के लिए।

199. 1911 की चीनी क्रांति का नेतृत्व किस व्यक्तित्व ने किया था, जिन्हें प्रायः चीन में "राष्ट्रपिता" कहा जाता है?
(A) माओत्से तुंग
(B) च्यांग काई-शेक
(C) सन यात-सेन
(D) युआन शिकाई

200. 'उपनिवेशवाद' की आर्थिक क्रांति के लिए प्राथमिक प्रेरणा क्या थी?
(A) उपनिवेश बनाने वाली शक्ति के लिए कच्चे माल और बाजारों को सुरक्षित करना।
(B) विश्व के अन्य भागों में लोकतांत्रिक आदर्शों को प्रसारित करना।
(C) उपनिवेशित लोगों की उन्नत तकनीकों से सीखना।
(D) सभी राष्ट्रों के लिए वैश्विक मुक्त व्यापार को बढ़ावा देना।

201. नेपोलियन बोनापार्ट के युग का निश्चित अंत किसके द्वारा हुआ?
(A) रूसी शीतकालीन अभियान।
(B) वर्साय की संधि।
(C) वियना कांग्रेस और वाटरलू का युद्ध।
(D) स्वयं फ्रांसीसी क्रांति।

202. 'समाजवाद' की अवधारणा मौलिक रूप से किसकी वकालत करती है?
(A) निजी उद्यम और लाभ द्वारा संचालित अर्थव्यवस्था।
(B) उत्पादन का सार्वजनिक स्वामित्व या नियंत्रण।
(C) एक वंशानुगत कुलीन वर्ग के इर्द-गिर्द संरचित समाज।
(D) राष्ट्रीय गौरव के लिए औपनिवेशिक साम्राज्यों का विस्तार।

203. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(A) वणिकवाद - एडम स्मिथ
(B) फासीवाद - मुसोलिनी
(C) नाजीवाद - हिटलर
(D) रूसी क्रांति - लेनिन

204. बिस्मार्क के अधीन जर्मनी के एकीकरण ने किसके सफल अनुप्रयोग का प्रदर्शन किया?
(A) उदारवादी आदर्शवाद
(B) शांतिवादी कूटनीति
(C) समाजवादी क्रांति
(D) यथार्थवादी राजनीति और सैन्य शक्ति

205. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (शताब्दी)
P. 18वीं शताब्दी
Q. 19वीं शताब्दी (उत्तरार्ध)
R. 20वीं शताब्दी की शुरुआत
S. 20वीं शताब्दी के मध्य

सूची II: (प्रमुख क्रांति/घटना)
1. जर्मनी और इटली का एकीकरण
2. रूसी क्रांति (1917)
3. अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियाँ
4. चीनी क्रांति (1949)

कूट:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

206. 'चर्च की सर्वोच्चता' को किन दो आंदोलनों द्वारा सर्वाधिक प्रभावी ढंग से चुनौती दी गई थी?

(A) सामंतवाद और रोमन साम्राज्य
(B) पुनर्जागरण और धर्म सुधार आंदोलन
(C) समाजवाद और नाजीवाद
(D) औद्योगिक क्रांति और उपनिवेशवाद

207. शक्तिशाली लोगों के एक छोटे समूह द्वारा चलाई जाने वाली सरकार, जो प्रायः संपन्न या कुलीन वर्ग से होती है, एक 'अभिजाततंत्र' या एक _________ है:
(A) लोकतंत्र
(B) धर्मतंत्र
(C) राजतंत्र
(D) अल्पतंत्र

208. पवित्र रोमन साम्राज्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह न तो पवित्र था, न रोमन और न ही साम्राज्य — यह वोल्टेयर की प्रसिद्ध टिप्पणी थी।
2. यह एक अत्यंत केंद्रीकृत और एकीकृत राज्य था।
3. इसे नेपोलियन युद्धों के दौरान प्रभावी रूप से भंग कर दिया गया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

209. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. दास प्रथा
Q. जमींदारी
R. विधि संहिता
S. ब्लैक डेथ

सूची II: (संबद्ध विशेषता)
1. रोमन साम्राज्य की कानूनी विरासत
2. भारतीय उपमहाद्वीप में भूमि राजस्व प्रणाली
3. 14वीं शताब्दी की ब्यूबोनिक प्लेग महामारी
4. व्यक्तियों को कानूनी संपत्ति मानना

कूट:
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

210. ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. औद्योगिक क्रांति ने श्रमिकों को शहरी कारखानों में केंद्रित किया।
2. प्रारंभिक औद्योगिक पूंजीवाद में प्रायः खराब कार्य परिस्थितियाँ और आर्थिक असमानता शामिल थी।
3. पूंजीवाद की आलोचना और एक विकल्प के प्रस्ताव के रूप में समाजवाद का उदय हुआ।

निम्नलिखित में से कौन इन कथनों के बीच संबंध का वर्णन करता है?
(A) समाजवाद के कारण औद्योगिक क्रांति हुई।
(B) औद्योगिक क्रांति के परिणामों ने समाजवाद को जन्म दिया।
(C) औद्योगिक क्रांति एक विफल समाजवादी प्रयोग था।
(D) औद्योगिक क्रांति और समाजवाद के बीच कोई संबंध नहीं है।

211. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन किया गया था।
कारण (R): इसका पूर्ववर्ती संगठन, राष्ट्र संघ, द्वितीय विश्व युद्ध को रोकने में अत्यधिक सफल रहा था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

212. 'पूर्वी समस्या' संदर्भित करती है:
(A) एक सैन्य शक्ति के रूप में जापान का उदय।
(B) ऑटोमन साम्राज्य के पतन से उत्पन्न स्थिति।
(C) चीन में अफीम युद्ध।
(D) साइबेरिया में रूस का पूर्व की ओर विस्तार।

213. वणिकवाद की आर्थिक क्रांति का सबसे सटीक वर्णन इस रूप में किया गया है:
(A) राज्य की शक्ति के लिए आर्थिक राष्ट्रवाद का एक रूप।
(B) सामूहिक कृषि पर आधारित प्रारंभिक समाजवाद।
(C) मुक्त व्यापार और खुले बाजारों की एक प्रणाली।
(D) सामंती मनोर की आर्थिक प्रणाली।

214. रोमन साम्राज्य में 'विधि संहिता', जैसे कि ट्वेल्व टेबल्स, महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसने:
(A) केवल सम्राट पर लागू होती थी।
(B) यह एक गुप्त पाठ था जिसे केवल पुजारी जानते थे।
(C) यह कौंसुल की इच्छा के आधार पर दैनिक रूप से परिवर्तित होती थी।
(D) कानून को सभी नागरिकों के लिए सुलभ और लागू करने योग्य बनाया।

215. 'धर्मसुधार' या 'धर्म सुधार आंदोलन' के कारण किसका एक लंबा दौर चला?
(A) यूरोप में अभूतपूर्व धार्मिक एकता।
(B) कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट राज्यों के बीच धार्मिक संघर्ष।
(C) साक्षरता और विद्या में गिरावट।
(D) कैथोलिक चर्च का पूर्ण विलोप।

(D) फ्रांसीसी और ब्रिटिश साम्राज्यों को भंग करके।

246. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना मुख्य रूप से किस इच्छा से प्रेरित थी?
(A) उपनिवेशवाद को बढ़ावा देना।
(B) एक और विश्व युद्ध को रोकना।
(C) एक वणिकवादी विश्व प्रणाली बनाना।
(D) विश्व स्तर पर फासीवाद को लागू करना।

247. 'रोमन साम्राज्य' किसका एक प्रारंभिक उदाहरण प्रस्तुत करता है?
(A) एक संहिताबद्ध कानूनी प्रणाली वाला राज्य।
(B) एक सफल संसदीय लोकतंत्र।
(C) एक समाजवादी अर्थव्यवस्था।
(D) एक औद्योगिक समाज।

248. वह बौद्धिक और सांस्कृतिक आंदोलन जिसने तर्क, व्यक्तिवाद और मानवतावाद पर बल दिया, और जिसने 'चर्च की सर्वोच्चता' को चुनौती दी, वह था:
(A) सामंती व्यवस्था
(B) पुनर्जागरण
(C) वणिकवादी क्रांति
(D) औद्योगिक क्रांति

249. 'औद्योगिक क्रांति' की भांति ही आर्थिक परिवर्तन के रूप में 'उपनिवेशवाद' का एक उदाहरण कौन-सा है?
(A) मैनचेस्टर में कारखानों की स्थापना।
(B) शोषण के लिए क्षेत्रों पर यूरोपीय नियंत्रण।
(C) प्रशिया के अधीन जर्मन राज्यों का एकीकरण।
(D) भूमि के लिए रूसी किसानों की मांग।

250. फासीवाद और नाजीवाद दोनों के उदय को किसके विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है?
(A) उदार लोकतंत्र और साम्यवाद।
(B) राजतंत्र और अभिजाततंत्र।
(C) राष्ट्रवाद और सैन्यवाद।
(D) औद्योगिक क्रांति।

251. 'पूर्वी समस्या' एक शताब्दी से भी अधिक समय तक यूरोपीय कूटनीति में एक केंद्रीय मुद्दा थी क्योंकि:
(A) साम्राज्य के तीव्र औद्योगिकीकरण ने यूरोप को संकट में डाल दिया था।
(B) संभावित साम्राज्य के पतन ने शक्ति संतुलन को संकट में डाल दिया था।
(C) ऑटोमन साम्राज्य रूस को जीतने का प्रयास कर रहा था।
(D) पवित्र रोमन और ऑटोमन साम्राज्यों के बीच एक गठबंधन था।

252. 'बाल्कन युद्धों' ने किसके ठीक पहले तनाव बढ़ा दिया था?
(A) द्वितीय विश्व युद्ध
(B) प्रथम विश्व युद्ध
(C) नेपोलियन युद्ध
(D) इटली का एकीकरण

253. कौन-सी दो घटनाएँ 'नेपोलियन बोनापार्ट के युग' के प्रारंभ और अंत को चिह्नित करती हैं?
(A) फ्रांसीसी क्रांति और प्रथम विश्व युद्ध
(B) उसका सत्ता में उदय और वियना कांग्रेस
(C) अमेरिकी क्रांति और जर्मनी का एकीकरण
(D) औद्योगिक और रूसी क्रांतियाँ।

254. 'नाजीवाद' का एक प्रमुख वैचारिक घटक जो इतालवी 'फासीवाद' में स्पष्ट रूप से केंद्रीय नहीं था, वह था:
(A) यहूदी-विरोध और नस्लीय विचारधारा
(B) राष्ट्रवाद
(C) सर्वसत्तावाद
(D) सैन्यवाद

255. 'विधि संहिता' किसके लिए एक आधारभूत अवधारणा है?
(A) विधि का शासन
(B) मनमाना शासन
(C) अराजकता
(D) सामंती दायित्व

256. 'सामंतवाद' की प्रणाली एक विकेंद्रीकृत राजनीतिक संरचना और किस पर आधारित अर्थव्यवस्था की विशेषता थी?
(A) औद्योगिक विनिर्माण
(B) कृषि और भूमि स्वामित्व
(C) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
(D) एक सार्वभौमिक मुद्रा

257. 'पुनर्जागरण' किसकी संस्कृतियों में नवीन रुचि से जुड़ा है?
(A) प्राचीन मिस्र और मेसोपोटामिया
(B) प्राचीन ग्रीस और रोम
(C) वाइकिंग और जर्मनिक जनजातियाँ
(D) प्राचीन चीन और भारत

258. 1776 ईस्वी में अमेरिकी क्रांति को भड़काने वाली घटना किन संघर्षों में निहित थी?
(A) कराधान और शासन
(B) धर्म
(C) दास प्रथा
(D) सिंहासन का उत्तराधिकार

259. 1911 की चीनी क्रांति ने किसके सहस्राब्दियों पुराने शासन को समाप्त कर दिया?
(A) राजवंशों और सम्राटों का
(B) एक संसद का
(C) युद्ध सरदारों का
(D) एक साम्यवादी दल का

231. 'चर्च की सर्वोच्चता' की अवधारणा किस ऐतिहासिक काल से सर्वाधिक संबंधित है?
(A) रोमन साम्राज्य
(B) प्रबोधन
(C) 20वीं शताब्दी
(D) यूरोपीय मध्यकाल

232. वणिकवाद की आर्थिक क्रांति के ठीक बाद और उसके स्थान पर कौन-सी आर्थिक प्रणाली आई?
(A) सामंतवाद
(B) औद्योगिक पूंजीवाद
(C) समाजवाद
(D) वस्तु विनिमय

233. 1949 की चीनी क्रांति किसकी स्थापना के लिए महत्वपूर्ण है?
(A) एक संसदीय लोकतंत्र।
(B) मुख्य भूमि पर रिपब्लिक ऑफ चाइना।
(C) एक संवैधानिक राजतंत्र।
(D) पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना।

234. फासीवाद और नाजीवाद जैसी तानाशाही शक्तियों का उदय किस काल के दौरान हुआ?
(A) 18वीं शताब्दी
(B) उत्तर मध्यकाल
(C) रोमन साम्राज्य का युग
(D) युद्धों के बीच की अवधि।

235. प्रथम विश्व युद्ध के कारणों, परिणामों और प्रभावों में निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी शामिल हैं?
(A) पवित्र रोमन साम्राज्य का सफल एकीकरण
(B) वर्साय की संधि
(C) कई साम्राज्यों का पतन
(D) विश्व शक्ति के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका का उदय

236. जर्मनी का एकीकरण किन शक्तियों की विजय थी?
(A) समाजवाद और अंतर्राष्ट्रीयवाद।
(B) राष्ट्रवाद और प्रशियाई सैन्यवाद।
(C) पोप का अधिकार और कैथोलिक धर्म।
(D) फ्रांसीसी उदारवाद।

237. भू-धारण और राजस्व विनियोजन की प्रणाली के रूप में अपने कार्य में 'जमींदारी' प्रणाली किस यूरोपीय अवधारणा के सर्वाधिक निकट है?
(A) संसदीय लोकतंत्र
(B) वणिकवाद
(C) समाजवाद
(D) सामंतवाद

238. 'विधि संहिता' का मूलभूत सिद्धांत क्या है?
(A) कानून मनमाना और लचीला होना चाहिए।
(B) कानून लिखित, सार्वजनिक और व्यवस्थित होना चाहिए।
(C) कानून गुप्त होना चाहिए और केवल शासकों को ज्ञात होना चाहिए।
(D) कोई कानून होना ही नहीं चाहिए।

239. अमेरिकी क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर क्या था?
(A) अमेरिकी क्रांति में एक राजा शामिल था।
(B) अमेरिका में सामाजिक परिवर्तन अधिक कट्टरपंथी था।
(C) फ्रांसीसी क्रांति ने समाज को अधिक मौलिक रूप से पुनर्गठित किया।
(D) प्रबोधन के विचारों ने अमेरिका को प्रभावित नहीं किया।

240. 'औद्योगिक क्रांति' संदर्भित करती है:
(A) औद्योगिक श्रमिकों का एक राजनीतिक विद्रोह।
(B) मशीन-आधारित अर्थव्यवस्थाओं की ओर संक्रमण।
(C) उद्योग पर फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव।
(D) औद्योगिक संसाधनों को लेकर लड़ा गया युद्ध।

241. 'अभिजाततंत्र' का शाब्दिक अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ द्वारा शासन' है, लेकिन व्यवहार में इसका अर्थ क्या हो गया है?
(A) जनता द्वारा शासन।
(B) वंशानुगत कुलीन वर्ग द्वारा शासन।
(C) एकल व्यक्ति द्वारा शासन।
(D) सेना द्वारा शासन।

242. 1917 की रूसी क्रांति, विशेष रूप से बोल्शेविकों का नारा क्या था?
(A) "शांति, भूमि और रोटी"
(B) "स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व"
(C) "बिना प्रतिनिधित्व के कोई कराधान नहीं"
(D) "सूर्य के नीचे एक स्थान"

243. नेपोलियन बोनापार्ट का पतन किसका परिणाम था?
(A) पूरे यूरोप का उसका सफल एकीकरण।
(B) पुरातन व्यवस्था को बहाल करने के लिए प्रतिबद्ध एक गठबंधन।
(C) फ्रांस में एक लोकतांत्रिक चुनाव।
(D) स्वेच्छा से पद त्याग करने का उसका निर्णय।

244. 'युवा तुर्क आंदोलन' किसके लिए एक शक्ति थी?
(A) ऑटोमन साम्राज्य का विघटन।
(B) सुल्तान की निरंकुश शक्ति का संरक्षण।
(C) इस्लामी कट्टरवाद।
(D) साम्राज्य में राष्ट्रवाद और सुधार।

245. 'वर्साय की संधि' ने किसके द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभ में योगदान दिया?
(A) एक सुदृढ़ और स्थिर जर्मनी का निर्माण करके।
(B) एक कठोर और अपमानजनक शांति थोपकर।
(C) जर्मनी और रूस के बीच गठबंधन बनाकर।

(C) सभी नागरिकों के बीच समान रूप से धन वितरित किया।
(D) विनिर्माण और जीवन शैली को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया।

275. अमेरिका की क्रांति (1776 ईस्वी) और फ्रांस की क्रांति (1789 ईस्वी) को किस शताब्दी की प्रमुख क्रांतियाँ माना जाता है?
(A) 18वीं शताब्दी
(B) 17वीं शताब्दी
(C) 19वीं शताब्दी
(D) 20वीं शताब्दी

276. 1949 की चीनी क्रांति किस नेता को सत्ता में लाई?
(A) सन यात-सेन
(B) व्लादिमीर लेनिन
(C) माओत्से तुंग
(D) च्यांग काई-शेक

277. नेपोलियन बोनापार्ट के युग के अंत को कहाँ लिए गए निर्णयों द्वारा पुख्ता किया गया था?
(A) वर्साय की संधि
(B) याल्टा सम्मेलन
(C) वियना कांग्रेस
(D) बर्लिन कांग्रेस

278. बिस्मार्क के अधीन जर्मनी के एकीकरण को प्रायः किस वाक्यांश के साथ जोड़ा जाता है?
(A) "स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व"
(B) "रक्त और लौह"
(C) "शांति, भूमि और रोटी"
(D) "मेरा एक स्वप्न है"

279. वर्साय की संधि ने प्रथम विश्व युद्ध का उत्तरदायित्व मुख्य रूप से किस पर मढ़ा?
(A) सर्बिया
(B) रूस
(C) ऑस्ट्रिया-हंगरी
(D) जर्मनी

280. मुसोलिनी के फासीवादी शासन की एक प्रमुख नीति किसकी रचना थी?
(A) अहस्तक्षेप अर्थव्यवस्था
(B) बहुदलीय लोकतंत्र
(C) कॉर्पोरेट राज्य
(D) शांतिवादी विदेश नीति

281. 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना विश्व द्वारा किसे रोकने की विफलता का प्रत्यक्ष परिणाम थी?
(A) प्रथम विश्व युद्ध
(B) द्वितीय विश्व युद्ध
(C) फ्रांसीसी क्रांति
(D) रूसी क्रांति

282. 'अभिजाततंत्र' शब्द किसके द्वारा नियंत्रित सरकार को संदर्भित करता है?
(A) एकल सम्राट
(B) कुलीन और विशेषाधिकार प्राप्त परिवारों का छोटा समूह
(C) लोकप्रिय रूप से निर्वाचित सभा
(D) धार्मिक नेता

283. 'चर्च की सर्वोच्चता' मध्यकालीन यूरोप की एक प्रमुख विशेषता थी, लेकिन इसे किसके उदय से चुनौती प्राप्त हुई?
(A) शक्तिशाली राजतंत्र और पुनर्जागरण
(B) रोमन साम्राज्य
(C) सामंती व्यवस्था
(D) वणिकवाद

284. 'उपनिवेशवाद' और 'वणिकवाद' संबंधित आर्थिक परिघटनाएँ थीं जहाँ:
(A) उपनिवेशों ने मातृ देश के हितों की सेवा की।
(B) उपनिवेशों को औद्योगिकीकरण के लिए प्रोत्साहित किया गया।
(C) सभी राष्ट्रों के बीच मुक्त व्यापार का अभ्यास किया गया था।
(D) उपनिवेशों की संपत्ति समान रूप से साझा की गई थी।

285. 1911 की चीनी क्रांति और 1917 की रूसी क्रांति दोनों के परिणामस्वरूप किसका तख्तापलट हुआ?
(A) दीर्घकालिक राजतंत्रों का
(B) लोकतांत्रिक गणराज्यों का
(C) फासीवादी तानाशाहियों का
(D) औपनिवेशिक शासकों का

286. प्रथम विश्व युद्ध से पहले बाल्कन प्रायद्वीप को "यूरोप का बारूद का ढेर" कहा जाता था क्योंकि:
(A) यह विश्व का सर्वाधिक औद्योगिक क्षेत्र था।
(B) वहां राष्ट्रवादी आकांक्षाएं और महाशक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता थी।
(C) यह एक शांतिपूर्ण और स्थिर क्षेत्र था।
(D) यह पवित्र रोमन साम्राज्य का केंद्र था।

287. इटली के एकीकरण को, जिसे रिसोर्जिमेंटो के रूप में जाना जाता है, किसका आंदोलन था?
(A) रोमन साम्राज्य को बहाल करने का।
(B) एक एकल और स्वतंत्र इतालवी राष्ट्र-राज्य बनाने का।
(C) एक समाजवादी गणराज्य स्थापित करने का।
(D) इटली को और अधिक नगर-राज्यों में विभाजित करने का।

288. निम्नलिखित में से कौन प्रथम विश्व युद्ध का परिणाम नहीं है?
(A) पूर्वी यूरोप में नए राष्ट्रों का उदय।
(B) राष्ट्र संघ का निर्माण।
(C) अमेरिका और सोवियत संघ के बीच शीत युद्ध का प्रारंभ।

260. 1917 की रूसी क्रांति के कारण किस विचारधारा पर आधारित राज्य की स्थापना हुई?
(A) समाजवाद/साम्यवाद
(B) वणिकवाद
(C) फासीवाद
(D) संसदीय लोकतंत्र

261. वियना कांग्रेस (1815 ईस्वी) एक राजनयिक बैठक थी जिसका उद्देश्य था:
(A) पूरे यूरोप में क्रांति प्रसारित करना।
(B) संयुक्त राष्ट्र का गठन करना।
(C) जर्मनी के एकीकरण का आयोजन करना।
(D) नेपोलियन के बाद के यूरोप के मानचित्र को पुनः तैयार करना।

262. क्रीमिया युद्ध, बर्लिन कांग्रेस, युवा तुर्क आंदोलन और बाल्कन युद्ध ये सभी किसके घटक हैं?
(A) जर्मनी में राष्ट्रवाद का उदय
(B) पूर्वी समस्या
(C) फ्रांसीसी क्रांति के बाद के परिणाम
(D) द्वितीय विश्व युद्ध

263. जर्मनी और इटली दोनों का एकीकरण किस शक्तिशाली 19वीं शताब्दी की विचारधारा की अभिव्यक्ति थी?
(A) समाजवाद
(B) राष्ट्रवाद
(C) उदारवाद
(D) सामंतवाद

264. प्रथम विश्व युद्ध के मुख्य कारणों में से एक था:
(A) हिटलर का उदय
(B) अमेरिकी गृहयुद्ध
(C) उलझाने वाले गठबंधनों की एक प्रणाली
(D) बर्लिन कांग्रेस की विफलता

265. फासीवाद और नाजीवाद जैसी तानाशाही शक्तियों के उदय को किसके द्वारा सुगम बनाया गया था?
(A) प्रथम विश्व युद्ध के बाद के आर्थिक संकट और राजनीतिक अस्थिरता।
(B) यूरोपीय शांति और समृद्धि का एक लंबा दौर।
(C) राष्ट्र संघ की शक्ति।
(D) लोकतांत्रिक आदर्शों का प्रसार।

266. द्वितीय विश्व युद्ध का एक प्रमुख कारण था:
(A) वर्साय की संधि के अनसुलझे मुद्दे।
(B) रूसी क्रांति की सफलता।
(C) रोमन साम्राज्य का पतन।
(D) वणिकवादी आर्थिक नीतियां।

267. रोमन साम्राज्य की विरासत में एक परिष्कृत ________ शामिल है:
(A) संसदीय लोकतंत्र की प्रणाली।
(B) विधि संहिता और शासन के सिद्धांत।
(C) औद्योगिक विनिर्माण आधार।
(D) समाजवादी आर्थिक संरचना।

268. 'दास प्रथा', 'अभिजाततंत्र' और 'सामंतवाद' ये सभी प्रणालियाँ किस पर निर्मित हैं?
(A) अंतर्निहित सामाजिक और कानूनी असमानता।
(B) मानवीय समानता का सिद्धांत।
(C) योग्यता के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता का विचार।
(D) सार्वभौमिक मताधिकार।

269. 'ब्लैक डेथ' ने किसके द्वारा परोक्ष रूप से पुनर्जागरण में योगदान दिया?
(A) सामंती व्यवस्था को सुदृढ़ करके।
(B) पुरातन व्यवस्था को चुनौती देने वाले व्यवधानों द्वारा।
(C) धार्मिक कट्टरवाद को बढ़ावा देकर।
(D) यूरोपीय पृथक्करण की ओर ले जाकर।

270. 'संसदीय लोकतंत्र' किसके साथ सर्वाधिक तीव्र विरोधाभास रखता है?
(A) निरंकुश राजतंत्र और तानाशाही
(B) एक गणतंत्र
(C) संघवाद
(D) एक संवैधानिक राजतंत्र

271. समाजवाद किसके द्वारा उत्पन्न असमानताओं की आलोचना के रूप में उभरा?
(A) रोमन साम्राज्य
(B) औद्योगिक क्रांति
(C) चर्च की सर्वोच्चता
(D) सामंती व्यवस्था

272. 'नाजीवाद' और 'फासीवाद' दोनों किसके उदाहरण हैं?
(A) धुर दक्षिणपंथी सर्वसत्तावादी विचारधाराएँ।
(B) 20वीं शताब्दी के लोकतांत्रिक आंदोलन।
(C) 18वीं शताब्दी के आर्थिक सिद्धांत।
(D) मध्यकालीन धार्मिक आंदोलन।

273. 'धर्म सुधार आंदोलन' ने किसकी धार्मिक एकता को भंग कर दिया?
(A) इस्लामी दुनिया
(B) पश्चिमी ईसाई जगत
(C) बौद्ध दुनिया
(D) रूसी रुढ़िवादी चर्च

274. औद्योगिक क्रांति को एक 'आर्थिक क्रांति' माना जाता है क्योंकि इसने:
(A) एक त्वरित और रक्तहीन तख्तापलट था।
(B) सामंती व्यवस्था को पुनः स्थापित किया।

216. नाजीवाद का राजनीतिक दर्शन निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी पर आधारित था?
(A) एक आर्य स्वामी नस्ल की अवधारणा।
(B) एक आक्रामक और विस्तारवादी विदेश नीति।
(C) चरम राष्ट्रवाद और फ्यूहरर सिद्धांत।
(D) उदार लोकतंत्र के मूल्यों में विश्वास।

217. वियना कांग्रेस (1815) ने किसकी शक्तियों को पीछे धकेलने का प्रयास किया?
(A) राष्ट्रवाद और उदारवाद।
(B) राजतंत्र और धर्म।
(C) सामंतवाद और अभिजाततंत्र।
(D) वणिकवाद और उपनिवेशवाद।

218. अमेरिका (1776) और फ्रांस (1789) की क्रांतियाँ दोनों:
(A) आंशिक रूप से प्रबोधन के विचारों से प्रेरित थीं।
(B) के परिणामस्वरूप तत्काल स्थिर गणराज्य बने।
(C) के कारण उनके संबंधित राजाओं को दंड दिया गया।
(D) पूर्ववर्ती शक्ति की बहाली के साथ समाप्त हुई।

219. इटली के एकीकरण और जर्मनी के एकीकरण का साझा शत्रु कौन था?
(A) रूसी साम्राज्य
(B) ब्रिटिश साम्राज्य
(C) ऑस्ट्रियाई साम्राज्य
(D) ऑटोमन साम्राज्य

220. द्वितीय विश्व युद्ध एक 'संपूर्ण युद्ध' था क्योंकि इसने:
(A) केवल पेशेवर सैनिकों द्वारा लड़ा गया था।
(B) एक छोटे भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित था।
(C) कूटनीति के माध्यम से शीघ्र सुलझा लिया गया था।
(D) अर्थव्यवस्था और नागरिकों के पूर्ण लामबंदी को शामिल किया।

221. किस ऐतिहासिक अवधारणा को लॉर्ड्स, वैसल्स और सर्फ़ के सामाजिक पदानुक्रम द्वारा परिभाषित किया गया है, जो भूमि धारण और पारस्परिक दायित्व पर आधारित है?
(A) सामंतवाद
(B) समाजवाद
(C) वणिकवाद
(D) संसदीय लोकतंत्र

222. 'दास प्रथा' शब्द किसकी स्थिति को दर्शाता है?
(A) कानूनी रूप से संपत्ति के रूप में स्वामित्व होना।
(B) ऋण के लिए अस्थायी दासता।
(C) सीमित अधिकारों वाला गैर-नागरिक होना।
(D) अल्प पारिश्रमिक वाला कारखाना श्रम।

223. 'पुनर्जागरण' का प्रारंभ कहाँ हुआ था?
(A) फ्रांस के साम्राज्य में।
(B) इटली के नगर-राज्यों में।
(C) पवित्र रोमन साम्राज्य में।
(D) ब्रिटिश द्वीपों में।

224. इनमें से कौन-सी 18वीं शताब्दी की एक प्रमुख क्रांति थी?
(A) 1917 की रूसी क्रांति
(B) 1911 की चीनी क्रांति
(C) जर्मनी का एकीकरण
(D) 1776 ईस्वी की अमेरिकी क्रांति

225. नेपोलियन बोनापार्ट की अंतिम पराजय कहाँ हुई थी?
(A) ऑस्टरलिट्ज़
(B) वियना कांग्रेस
(C) वर्साय
(D) वाटरलू का युद्ध

226. बर्लिन कांग्रेस और क्रीमिया युद्ध दोनों घटनाएँ किससे जुड़ी हैं?
(A) इटली का एकीकरण
(B) फ्रांसीसी क्रांति
(C) नाजीवाद का उदय
(D) पूर्वी समस्या

227. प्रथम विश्व युद्ध का एक मुख्य कारण था:
(A) संयुक्त राष्ट्र की विफलता।
(B) नाजी जर्मनी का आक्रामक विस्तारवाद।
(C) उलझाने वाले सैन्य गठबंधनों की एक कठोर प्रणाली।
(D) रोमन साम्राज्य का पतन।

228. मुसोलिनी के नेतृत्व में किस देश में तानाशाही शक्ति के रूप में फासीवाद का उदय हुआ?
(A) इटली
(B) जर्मनी
(C) रूस
(D) स्पेन

229. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना किस प्रमुख वैश्विक संघर्ष के परिणामस्वरूप हुई थी?
(A) प्रथम विश्व युद्ध
(B) नेपोलियन युद्ध
(C) द्वितीय विश्व युद्ध
(D) शीत युद्ध

230. 'ब्लैक डेथ' ने मध्यकालीन यूरोप पर किसके द्वारा गहरा प्रभाव डाला?
(A) श्रम की कमी उत्पन्न करके और सामंती व्यवस्था को चुनौती देकर।
(B) किसान वर्ग पर अभिजात वर्ग की शक्ति को सुदृढ़ करके।
(C) जनसंख्या वृद्धि के दौर की ओर ले जाकर।
(D) पवित्र रोमन सम्राट के अधीन यूरोप को एकीकृत करके।

(D) जीवन की भारी क्षति और आर्थिक व्यवधान।

289. 'नाजीवाद' को 'फासीवाद' का अधिक चरम रूप माना जा सकता है क्योंकि इसमें किस पर केंद्रीय बल दिया गया है?
(A) आर्थिक नीति
(B) राष्ट्रवाद
(C) नस्लीय सिद्धांत
(D) कॉर्पोरेट राज्य

290. यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध की तत्काल शुरुआत किसके द्वारा पोलैंड पर आक्रमण से हुई थी?
(A) सोवियत संघ
(B) इटली
(C) जर्मनी
(D) फ्रांस

291. 'विधि संहिता' की अवधारणा किसके आधार पर समाज स्थापित करने के लिए आवश्यक है?
(A) शासक की सनक।
(B) विधि का शासन।
(C) केवल परंपरा।
(D) सामाजिक अराजकता।

292. दास प्रथा की संस्था किसकी अर्थव्यवस्था के लिए मौलिक थी?
(A) पुनर्जागरण कालीन इटली
(B) प्राचीन रोमन साम्राज्य
(C) 20वीं शताब्दी का जर्मनी
(D) क्रांतिकारी फ्रांस

293. सामंतवाद के पतन को 'ब्लैक डेथ' ने तेज कर दिया क्योंकि इसके परिणामस्वरुप श्रम की कमी ने:
(A) लॉर्ड्स को और भी अधिक नियंत्रण करने की अनुमति दी।
(B) किसानों की सौदेबाजी की शक्ति बढ़ा दी।
(C) सभी व्यापार और वाणिज्य को स्थायी रुप से रोक दिया।
(D) तत्काल कारखानों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

294. 'पुनर्जागरण' के विचार कई मायनों में किसके विश्वदृष्टि की अस्वीकृति थे?
(A) पूर्ववर्ती मध्यकाल।
(B) शास्त्रीय ग्रीस और रोम।
(C) 18वीं शताब्दी के प्रबोधन।
(D) औद्योगिक क्रांति।

295. समाजवाद किसके बाद एक प्रमुख विचारधारा के रूप में उभरा?
(A) रोम का पतन
(B) धर्म सुधार आंदोलन
(C) औद्योगिक क्रांति
(D) अमेरिकी क्रांति

296. 1789 की फ्रांसीसी क्रांति अंततः किस ओर ले गई?
(A) नेपोलियन बोनापार्ट का उदय।
(B) बोर्बोन राजतंत्र की स्थायी बहाली।
(C) जर्मनी का एकीकरण।
(D) फ्रांस का विभाजन।

297. 1815 में 'वियना कांग्रेस' किस भावना से संचालित थी?
(A) क्रांतिकारी उत्साह
(B) उदारवाद और राष्ट्रवाद
(C) रुढ़िवाद और राजतंत्र की पुनर्स्थापना।
(D) समाजवाद और साम्यवाद

298. 19वीं शताब्दी में 'पूर्वी समस्या' किसकी निर्बलता से उत्पन्न कूटनीतिक और सैन्य मुद्दों से संबंधित थी?
(A) ऑस्ट्रियाई साम्राज्य
(B) ऑटोमन साम्राज्य
(C) रूसी साम्राज्य
(D) ब्रिटिश साम्राज्य

299. प्रथम विश्व युद्ध 1914 में प्रारंभ हुआ था। युद्ध के दौरान ही कौन-सी प्रमुख क्रांति हुई थी?
(A) 1776 की अमेरिकी क्रांति
(B) 1911 की चीनी क्रांति
(C) 1917 की रूसी क्रांति
(D) 1949 की चीनी क्रांति

300. 'फासीवाद' और 'नाजीवाद' जैसी तानाशाही शक्तियों का उदय किसका पतन दर्शाता है?
(A) यूरोप में सामंतवाद का।
(B) प्रथम विश्व युद्ध के बाद की लोकतांत्रिक व्यवस्था का।
(C) चर्च की शक्ति का।
(D) वणिकवाद की प्रणाली का।

के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। लूथर ने व्यक्तिगत आस्था और धर्मग्रंथों की प्रत्यक्ष समझ को प्राथमिकता दी, जिससे व्यापक बौद्धिक क्रांति आई।

21. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
क्रीमिया युद्ध 'पूर्वी समस्या' से संबंधित था। फ्रांसीसी क्रांति ने आधुनिक संसदीय लोकतंत्र के विकास हेतु वैचारिक आधार प्रदान किया। जर्मनी का एकीकरण 19वीं शताब्दी के उग्र राष्ट्रवाद की एक महत्वपूर्ण परिणति थी। औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन के तरीकों में बदलाव लाकर आर्थिक क्रांति का सूत्रपात किया। ये सभी घटनाएँ आधुनिक विश्व के निर्माण में मौलिक स्तंभों के रूप में कार्य करती हैं और वैश्विक इतिहास की दिशा को पूर्णतः निर्धारित करती हैं।

22. (B) स्वर्ण और रजत के भंडार की मात्रा।
वणिकवाद का आर्थिक सिद्धांत इस विचार पर आधारित था कि किसी राष्ट्र की शक्ति उसके पास उपलब्ध बहुमूल्य धातुओं, विशेषतः सोने और चांदी के भंडार से आंकी जाती है। इस उद्देश्य हेतु राष्ट्रों ने निर्यात बढ़ाने और आयात को न्यूनतम करने की नीतियां अपनाईं। वे व्यापार में अनुकूल संतुलन बनाए रखने को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे। इस विचारधारा ने यूरोपीय शक्तियों के बीच वैश्विक संसाधनों पर नियंत्रण की होड़ को जन्म दिया, जिससे उपनिवेशवाद का मार्ग प्रशस्त हुआ।

23. (D) कच्चे माल और निर्मित माल के लिए एक नियंत्रित बाजार प्रदान करके।
उपनिवेशवाद ने वणिकवादी शक्तियों के आर्थिक हितों की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने मातृ देश के उद्योगों हेतु आवश्यक सस्ते कच्चे माल के निरंतर स्रोत और निर्मित माल हेतु एक सुरक्षित एवं नियंत्रित बाजार प्रदान किया। इस व्यवस्था में उपनिवेशों को केवल अपनी मातृ शक्ति के साथ व्यापार हेतु बाध्य किया जाता था। इससे वणिकवादी राष्ट्रों को व्यापार अधिशेष और धन संचय में सहायता मिली। यह प्रणाली संसाधनों के दोहन पर आधारित थी।

24. (A) ग्रेट ब्रिटेन
औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ सर्वप्रथम 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ग्रेट ब्रिटेन में हुआ था। इसके लिए वहां उपलब्ध कोयले और लोहे के विशाल भंडार, निवेश हेतु पूंजी और विकसित व्यापारिक मार्ग उत्तरदायी थे। सर्वप्रथम वस्त्र उद्योग में मशीनीकरण की शुरुआत हुई, जिसने धीरे-धीरे उत्पादन के समस्त क्षेत्रों को परिवर्तित कर दिया। ब्रिटेन ने अपनी तकनीकी श्रेष्ठता के कारण विश्व की कार्यशाला के रूप में पहचान बनाई। इस क्रांति ने सामाजिक संरचनाओं को मौलिक रूप से परिवर्तित किया।

25. (C) ग्रेट ब्रिटेन
1776 की अमेरिकी क्रांति मुख्य रूप से ग्रेट ब्रिटेन की औपनिवेशिक नीतियों के विरुद्ध एक संघर्ष था। अमेरिकी उपनिवेशों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा उन पर आरोपित करों और व्यापारिक प्रतिबंधों का कड़ा विरोध किया। "बिना प्रतिनिधित्व के कराधान नहीं" का नारा इस आंदोलन का मूल आधार बना। इस युद्ध के परिणामस्वरूप तेरह उपनिवेशों ने ब्रिटिश शासन से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की। इस क्रांति ने विश्व भर में लोकतांत्रिक और स्वतंत्रतावादी विचारधाराओं को नई ऊर्जा प्रदान की।

26. (B) केवल 1 और 3
1789 की फ्रांसीसी क्रांति के पीछे वित्तीय संकट, अत्यधिक कर बोझ और सामाजिक असमानता जैसे कारक अत्यंत महत्वपूर्ण थे। इस क्रांति ने 'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व' के आदर्शों को जन्म दिया, जिन्होंने आधुनिक राजनीति की दिशा बदल दी। हालांकि, क्रांति के पश्चात फ्रांस में तत्काल स्थिर लोकतंत्र स्थापित नहीं हो सका, बल्कि यह वर्षों तक राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष का काल रहा। इसने यूरोप में पुरातन व्यवस्था के अंत और आधुनिक राष्ट्रवाद के उदय में भूमिका निभाई।

27. (D) किंग राजवंश का अंत और रिपब्लिक ऑफ चाइना की स्थापना।
1911 की चीनी क्रांति, जिसे सिन्हाई क्रांति भी कहा जाता है, चीन के इतिहास में एक ऐतिहासिक मोड़ थी। इस क्रांति ने चीन में दो हजार वर्षों से चली आ रही शाही शासन प्रणाली और किंग राजवंश का अंत कर दिया। इसके परिणामस्वरूप राजशाही के स्थान पर 'रिपब्लिक ऑफ चाइना' की स्थापना हुई। यद्यपि इसके पश्चात चीन को आंतरिक संघर्षों का सामना करना पड़ा, परंतु इसने चीन के आधुनिकीकरण और लोकतांत्रिक परिवर्तन की प्रक्रिया की नींव रख दी।

28. (B) रोमानोव
1917 की रूसी क्रांति ने रूस में सदियों पुराने रोमानोव राजवंश के शासन को समाप्त कर दिया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सैन्य पराजय, आर्थिक बदहाली और निरंकुश शासन के कारण व्याप्त जन असंतोष ने इस क्रांति को जन्म दिया। फरवरी क्रांति के दौरान जार को सत्ता छोड़नी पड़ी और बाद में अक्टूबर क्रांति के माध्यम से बोल्शेविक सत्ता में आए। इस घटना ने विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया और राजशाही को पूर्णतः समाप्त कर दिया।

29. (C) के परिणामस्वरूप एक साम्यवादी सरकार बनी।
1911 और 1949 की चीनी क्रांतियों के मध्य मौलिक अंतर उनके वैचारिक परिणामों में निहित है। 1911 की क्रांति ने शाही शासन को समाप्त कर एक राष्ट्रवादी गणराज्य की स्थापना की थी। इसके विपरीत, 1949 की क्रांति माओत्से तुंग के नेतृत्व में साम्यवादी दल की विजय के साथ समाप्त हुई। इसके परिणामस्वरूप चीन में साम्यवादी विचारधारा पर आधारित 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' की स्थापना हुई। इस क्रांति ने सामाजिक और आर्थिक संरचना को समाजवादी सिद्धांतों के अनुरूप पुनर्गठित किया।

30. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
नेपोलियन बोनापार्ट का उदय फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात व्याप्त राजनीतिक अस्थिरता और अराजकता का परिणाम था। जनता एक सुदृढ़ शासन की आकांक्षा कर रही थी, जिसका लाभ

विकेंद्रीकृत राजनीतिक संरचना भूमि के स्वामित्व पर टिकी थी। इसने मध्यकालीन यूरोप की सामाजिक रुपरेखा को परिभाषित किया।

11. (A) केवल 2
पुनर्जागरण काल यूरोप में कला, साहित्य और वैज्ञानिक नवाचार का क्रांतिकारी युग था। इस काल की मुख्य विशेषता मानवतावाद पर बल और प्राचीन ग्रीक तथा रोमन संस्कृतियों का गहन अध्ययन था। यह युग केवल चर्च के सिद्धांतों को स्वीकार करने का नहीं, बल्कि तर्क और अन्वेषण का समय था। इसने मध्यकालीन रुढ़ियों को चुनौती देकर आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की नींव रखी। इस आंदोलन ने कलात्मक यथार्थवाद को प्रोत्साहित किया।

12. (B) राष्ट्रीय विधायिका के प्रति।
संसदीय लोकतंत्र सरकार की वह व्यवस्था है जहाँ कार्यपालिका अपनी वैधता सीधे जनता द्वारा निर्वाचित राष्ट्रीय विधायिका से प्राप्त करती है। इस प्रणाली में मंत्रिमंडल अपने सभी कार्यों और निर्णयों हेतु विधायिका के प्रति सामूहिक रुप से उत्तरदायी होता है। यदि कार्यपालिका संसद का विश्वास खो देती है, तो उसे त्यागपत्र देना पड़ता है। यह व्यवस्था शक्तियों के संतुलन और सार्वजनिक जवाबदेही को सुनिश्चित करने का एक प्रभावी तंत्र है।

13. (C) यह धन के निजी संचय और व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देता है।
समाजवाद एक सामाजिक और आर्थिक विचारधारा है जो उत्पादन के साधनों पर सामूहिक या राज्य के स्वामित्व का समर्थन करती है। इसका प्राथमिक उद्देश्य समाज में आर्थिक समानता लाना और वर्गीय भेदों को कम करना है। यह व्यक्तिगत लाभ के बजाय सामाजिक कल्याण और सहयोग को प्राथमिकता देता है। समाजवाद पूंजीवादी प्रतिस्पर्धा के स्थान पर संसाधनों के तर्कसंगत वितरण पर बल देता है। यह समुदाय की सक्रिय भूमिका को अनिवार्य मानता है।

14. (D) अत्यधिक अधिनायकवाद और सर्वसत्तावादी राज्य नियंत्रण।
नाजीवाद और फासीवाद दोनों विचारधाराएं अत्यधिक अधिनायकवाद और राज्य के पूर्ण नियंत्रण की विशेषता रखती हैं। ये विचारधाराएं उदार लोकतंत्र और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को पूर्णतः अस्वीकार करती हैं। इनमें एकल नेता की पूजा और सैन्य शक्ति के महिमामंडन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। सर्वसत्तावादी होने के कारण ये नागरिक जीवन के प्रत्येक पहलू को नियंत्रित करती हैं। दोनों ही विचारधाराएं उग्र राष्ट्रवाद और विरोधियों के दमन द्वारा सत्ता सुरक्षित रखती हैं।

15. (A) 2, 1, 4, 3
ऐतिहासिक क्रम में सर्वप्रथम 1776 में अमेरिकी क्रांति हुई, जिसने आधुनिक लोकतंत्र की नींव रखी। इसके पश्चात 1789 में फ्रांसीसी क्रांति हुई, जिसने यूरोप में राजशाही को चुनौती दी। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 1871 में बिस्मार्क के नेतृत्व में जर्मनी का एकीकरण पूर्ण हुआ। अंततः, 1914 में प्रथम विश्व युद्ध का प्रारंभ हुआ। यह कालानुक्रमिक क्रम विश्व इतिहास के राजनीतिक परिवर्तनों को समझने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक मील का पत्थर है।

16. (B) ऑटोमन साम्राज्य
19वीं शताब्दी की यूरोपीय कूटनीति में 'पूर्वी समस्या' का संबंध मुख्य रूप से ऑटोमन साम्राज्य की गिरती शक्ति और क्षेत्रीय अस्थिरता से था। जैसे-जैसे यह साम्राज्य दुर्बल हुआ, यूरोपीय महाशक्तियों के बीच इसके क्षेत्रों पर नियंत्रण हेतु प्रतिद्वंद्विता बढ़ गई। रूस, ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया इस स्थिति का लाभ उठाकर अपना प्रभाव बढ़ाना चाहते थे। इस समस्या ने बाल्कन क्षेत्र में निरंतर तनाव उत्पन्न किया, जो प्रथम विश्व युद्ध के मुख्य कारणों में से एक बना।

17. (B) आध्यात्मिक और लौकिक मामलों पर चर्च का अंतिम अधिकार था।
मध्यकाल में 'चर्च की सर्वोच्चता' का अर्थ था कि ईसाई चर्च का प्रभाव केवल धार्मिक मामलों तक सीमित नहीं था, बल्कि वह राजनीतिक जीवन पर भी पूर्ण नियंत्रण रखता था। चर्च को आध्यात्मिक और लौकिक दोनों विषयों पर निर्णय लेने वाला अंतिम प्राधिकारी माना जाता था। शासकों की सत्ता को प्रायः चर्च की स्वीकृति की आवश्यकता होती थी। इस व्यवस्था ने उस युग की शिक्षा, कानून और नैतिकता को गहराई से प्रभावित किया।

18. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
16वीं शताब्दी का धर्म सुधार आंदोलन एक महत्वपूर्ण धार्मिक परिवर्तन था जिसने रोमन कैथोलिक चर्च के निर्विवाद अधिकार को चुनौती दी। इसने व्यक्तिगत विश्वास और धर्मग्रंथों की व्याख्या पर बल दिया। हालांकि, यह दावा करना गलत है कि यह आंदोलन जर्मनी में नाजीवाद के उदय का परिणाम था। नाजीवाद 20वीं शताब्दी की राजनीतिक विचारधारा है, जबकि धर्म सुधार आंदोलन कई सदियों पूर्व हुआ था। इन दोनों के मध्य कोई सीधा संबंध नहीं है।

19. (C) मध्य यूरोप में एक शिथिल परिसंघ वाली एक जटिल राजनीतिक इकाई।
पवित्र रोमन साम्राज्य मध्य यूरोप में स्थित एक अत्यंत जटिल और शिथिल रुप से संगठित राजनीतिक इकाई थी। यह आधुनिक अर्थों में एकीकृत राष्ट्र-राज्य नहीं था, बल्कि इसमें कई छोटे राज्यों और रियासतों का समावेश था। इसकी संरचना में सम्राट की शक्ति प्रायः स्थानीय शासकों की सहमति पर निर्भर करती थी। यह साम्राज्य सदियों तक यूरोप की राजनीति का केंद्र रहा, परंतु इसकी आंतरिक एकता दुर्बल रही। 1806 में इसका औपचारिक अंत हुआ।

20. (D) जर्मनी में मार्टिन लूथर।
धर्म सुधार आंदोलन, जिसे प्रोटेस्टेंट सुधार भी कहा जाता है, मुख्य रुप से जर्मनी में मार्टिन लूथर के प्रयासों से प्रारंभ हुआ था। 1517 में उन्होंने कैथोलिक चर्च की प्रथाओं के विरुद्ध अपनी प्रसिद्ध थीसिस प्रस्तुत की थी। उनके कार्यों ने चर्च के एकाधिकार को तोड़ा और ईसाई धर्म के भीतर एक नई शाखा

और सामाजिक बदलाव भी लाए, जिससे आधुनिक पश्चिमी समाज के विकास में सहायता मिली।

59. (C) पुनर्जागरण और धर्म सुधार आंदोलन
मध्यकालीन यूरोप में चर्च की सर्वोच्चता को 14वीं से 16वीं शताब्दी के दौरान पुनर्जागरण और धर्म सुधार आंदोलनों द्वारा व्यापक स्तर पर चुनौती दी गई। पुनर्जागरण ने मानवतावाद और तर्क पर बल देकर लोगों को स्वतंत्र रूप से सोचने हेतु प्रोत्साहित किया। इसके पश्चात धर्म सुधार आंदोलन ने कैथोलिक चर्च के धार्मिक और राजनीतिक एकाधिकार पर सीधा प्रहार किया। इन आंदोलनों ने व्यक्तिवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, जिससे समाज पर चर्च की पकड़ दुर्बल हुई और आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

60. (C) 1789 ईस्वी की फ्रांसीसी क्रांति
1789 की फ्रांसीसी क्रांति 18वीं शताब्दी की एक प्रमुख ऐतिहासिक घटना है। इस क्रांति ने राजशाही का अंत किया और आधुनिक युग के लोकतांत्रिक आदर्शों की नींव रखी। इसके विपरीत, 1911 और 1949 की चीनी क्रांतियाँ तथा 1917 की रूसी क्रांति सभी 20वीं शताब्दी की घटनाएँ हैं, जिन्होंने वैश्विक राजनीति को मौलिक रूप से परिवर्तित किया। कालानुक्रमिक रूप से फ्रांसीसी क्रांति इन अन्य क्रांतियों से सौ वर्ष से भी अधिक पुरानी है और यह आधुनिक विश्व के वैचारिक इतिहास का एक प्रारंभिक मील का पत्थर है।

61. (B) उदार लोकतंत्र को बढ़ावा देना।
फासीवादी इटली में मुसोलिनी की नीतियों का मुख्य केंद्र राज्य की सर्वोच्चता और चरम राष्ट्रवाद था। उसने इटली को एक 'कॉर्पोरेट राज्य' के रूप में पुनर्गठित किया, जहाँ समाज के सभी वर्गों को राज्य के नियंत्रण में लाया गया। उसकी सरकार ने गुप्त पुलिस के माध्यम से किसी भी प्रकार के राजनीतिक असंतोष का कठोरता से दमन किया। हालांकि, फासीवाद मौलिक रूप से उदार लोकतंत्र के सिद्धांतों के विरुद्ध था। उसने संसदीय प्रणाली और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को राष्ट्र की एकता हेतु बाधक माना और उन्हें समाप्त कर दिया।

62. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वर्साय की संधि ने प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात जर्मनी पर अत्यंत अपमानजनक और दंडात्मक शर्तें थोपीं। इस संधि के कारण जर्मनी को अपनी महत्वपूर्ण भूमि, सैन्य शक्ति और आर्थिक संसाधनों से हाथ धोना पड़ा। इस स्थिति ने जर्मन जनता में गहरे अन्याय और आर्थिक तंगी की भावना उत्पन्न की। हिटलर जैसे कट्टरपंथी नेताओं ने इसी राष्ट्रीय अपमान और आर्थिक संकट का लाभ उठाकर सत्ता प्राप्त की। इस प्रकार, वर्साय की संधि ने वास्तव में उन परिस्थितियों को जन्म दिया जिससे द्वितीय विश्व युद्ध का मार्ग प्रशस्त हुआ।

63. (D) 14वीं शताब्दी में एक भीषण ब्यूबोनिक प्लेग महामारी।
'ब्लैक डेथ' 14वीं शताब्दी के मध्य में यूरोप और एशिया में फैली एक अत्यंत विनाशकारी ब्यूबोनिक प्लेग महामारी थी। इस महामारी ने यूरोप की लगभग एक-तिहाई से आधी जनसंख्या को समाप्त कर दिया था। इसके सामाजिक और आर्थिक परिणाम अत्यंत गहरे थे, क्योंकि जनसंख्या में भारी गिरावट के कारण श्रम की कमी हो गई। इस संकट ने सामंती व्यवस्था को दुर्बल किया और किसानों एवं श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ा दिया। यह इतिहास की सबसे घातक महामारियों में से एक मानी जाती है।

64. (D) एक नए औद्योगिक श्रमिक वर्ग और नई सामाजिक संरचनाओं का उदय।
औद्योगिक क्रांति ने समाज के बुनियादी ढांचे में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। मशीनीकरण के कारण उत्पादन कारखानों में केंद्रित हुआ, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन हुआ। इस प्रक्रिया ने एक नए और विशाल 'औद्योगिक श्रमिक वर्ग' को जन्म दिया जो अपनी आजीविका हेतु मजदूरी पर निर्भर था। इसके साथ ही एक नया पूंजीपति वर्ग भी उभरा। इन परिवर्तनों ने पुरानी सामंती व्यवस्था को समाप्त कर वर्ग-आधारित नई सामाजिक संरचनाओं की नींव रखी, जिसने आधुनिक समाज को आकार दिया।

65. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
नाजीवाद एक ऐसी विचारधारा है जो नस्लीय सर्वोच्चता और उग्र राष्ट्रवाद पर आधारित है। समाजवाद एक ऐसी प्रणाली है जो संसाधनों और उत्पादन के साधनों पर सामूहिक या सार्वजनिक स्वामित्व का समर्थन करती है। अभिजाततंत्र का तात्पर्य समाज के एक छोटे और विशेषाधिकार प्राप्त कुलीन वर्ग द्वारा शासन से है। संसदीय लोकतंत्र सरकार का वह आधुनिक रूप है जहाँ जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि शासन का संचालन करते हैं। ये सभी अवधारणाएं इतिहास के विभिन्न चरणों में सामाजिक-आर्थिक विकास का प्रतिनिधित्व करती हैं।

66. (B) इतालवी प्रायद्वीप के विभिन्न राज्यों से एक एकल राजनीतिक इकाई का निर्माण करना।
19वीं शताब्दी में इटली के एकीकरण का मुख्य उद्देश्य इतालवी प्रायद्वीप पर बिखरे हुए विभिन्न छोटे राज्यों और ऑस्ट्रियाई नियंत्रण वाले क्षेत्रों को एक सूत्र में पिरोना था। राष्ट्रवादियों का लक्ष्य एक स्वतंत्र और एकीकृत इतालवी राष्ट्र-राज्य की स्थापना करना था जो एक समान संस्कृति, भाषा और इतिहास पर आधारित हो। इस प्रक्रिया में कूटनीति, क्रांतिकारी संघर्ष और सैन्य अभियानों का सहारा लिया गया। अंततः, 1861 में इटली के साम्राज्य की घोषणा के साथ यह लक्ष्य प्राप्त हुआ, जिसने आधुनिक इटली की नींव रखी।

67. (D) पूर्वी यूरोप में निवास स्थान प्राप्त करने का लक्ष्य।
हिटलर की 'लेबेन्सराउम' या 'जीवित रहने के स्थान' की नीति नाजीवाद की विस्तारवादी विचारधारा का एक केंद्रीय स्तंभ थी। इसका मुख्य उद्देश्य जर्मनी की बढ़ती जनसंख्या हेतु पूर्वी यूरोप और रूस के विशाल क्षेत्रों को विजित करना और वहां जर्मन लोगों को बसाना था। हिटलर का मानना था कि जर्मनी की शक्ति और आर्थिक आत्मनिर्भरता हेतु अतिरिक्त भूमि का होना अनिवार्य है। इस आक्रामक नीति ने पूर्वी यूरोप के देशों पर आक्रमण का आधार तैयार किया और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान व्यापक विनाश का कारण बनी।

उठाकर नेपोलियन ने सत्ता प्राप्त की। हालांकि, नेपोलियन ने फ्रांस में पुराने बोर्बोन राजवंश को बहाल नहीं किया था। इसके स्थान पर उसने स्वयं को फ्रांस का सम्राट घोषित किया और नया शाही ढांचा निर्मित किया। बोर्बोन राजवंश की वास्तविक बहाली नेपोलियन की पराजय के पश्चात 1815 में की गई थी।

31. (A) वाटरलू का युद्ध
नेपोलियन बोनापार्ट का राजनीतिक करियर 1815 में वाटरलू के युद्ध में उसकी निर्णायक पराजय के साथ समाप्त हुआ। इस युद्ध में ब्रिटिश और प्रशियाई सेनाओं के गठबंधन ने नेपोलियन को पराजित किया। यह उसकी सत्ता को पुनर्जीवित करने के प्रयासों का अंत था। इस हार के पश्चात उसे सेंट हेलेना द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई। वाटरलू की विजय ने यूरोप में नेपोलियन के विस्तारवादी युग का स्थायी अंत सुनिश्चित कर दिया।

32. (B) शक्ति संतुलन स्थापित करना और क्रांति-पूर्व राजतंत्रों को बहाल करना।
1815 की वियना कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य नेपोलियन युद्धों के पश्चात यूरोप में दीर्घकालिक शांति और स्थिरता स्थापित करना था। इसके लिए प्रमुख शक्तियों ने यूरोप के मानचित्र को पुनः व्यवस्थित किया ताकि कोई भी राष्ट्र अत्यधिक शक्तिशाली न हो सके। कांग्रेस ने 'वैधता' के सिद्धांत के तहत क्रांति-पूर्व के पुराने राजतंत्रों को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। यह बैठक रूढ़िवादी सिद्धांतों पर आधारित थी, जिसका उद्देश्य उदारवादी और राष्ट्रवादी विचारों के प्रभाव को कम करना था।

33. (B) क्रीमिया युद्ध (1854-1856)
क्रीमिया युद्ध को 'पूर्वी समस्या' का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विनाशकारी भाग माना जाता है। यह संघर्ष मुख्य रूप से ऑटोमन साम्राज्य की अखंडता को लेकर रूस और ब्रिटेन, फ्रांस के गठबंधन के मध्य लड़ा गया था। यूरोपीय शक्तियाँ बाल्कन क्षेत्र में रूसी प्रभाव के विस्तार को रोकने हेतु प्रतिबद्ध थीं। इस युद्ध ने महान शक्तियों के मध्य प्रतिद्वंद्विता और ऑटोमन क्षेत्रों पर नियंत्रण की कूटनीतिक जटिलताओं को उजागर किया। इसने भविष्य के यूरोपीय संघर्षों हेतु एक अस्थिर आधार निर्मित किया।

34. (D) संवैधानिक सरकार स्थापित करके साम्राज्य का आधुनिकीकरण करना।
20वीं शताब्दी की शुरुआत में 'युवा तुर्क आंदोलन' ऑटोमन साम्राज्य के भीतर एक क्रांतिकारी सुधारवादी आंदोलन था। इसका मुख्य लक्ष्य सुल्तान की निरंकुश सत्ता को सीमित करना और 1876 के संविधान को पुनः लागू करना था। इस आंदोलन के नेता साम्राज्य को आधुनिक और धर्मनिरपेक्ष बनाने के पक्षधर थे ताकि इसे पश्चिमी शक्तियों के हस्तक्षेप से बचाया जा सके। उन्होंने संवैधानिक शासन और प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से साम्राज्य की एकता और शक्ति को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया।

35. (B) यूरोप में शेष ऑटोमन क्षेत्रों पर नियंत्रण।
20वीं शताब्दी की शुरुआत में हुए बाल्कन युद्ध मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्वी यूरोप में ऑटोमन साम्राज्य के क्षेत्रों पर कब्जे हेतु लड़े गए थे। बाल्कन देशों के गठबंधन ने ऑटोमन साम्राज्य की दुर्बलता का लाभ उठाकर उसे यूरोप से लगभग बाहर कर दिया। हालांकि, इन देशों के मध्य विजित क्षेत्रों के बंटवारे को लेकर आपसी संघर्ष भी हुआ। इन युद्धों ने क्षेत्र में अत्यधिक अस्थिरता उत्पन्न की और महान शक्तियों के मध्य तनाव बढ़ा दिया, जिससे प्रथम विश्व युद्ध का वातावरण निर्मित हुआ।

36. (B) ओटो वॉन बिस्मार्क
जर्मनी का एकीकरण 19वीं शताब्दी की एक युगांतरकारी घटना थी, जो मुख्य रूप से प्रशिया के चांसलर ओटो वॉन बिस्मार्क के नेतृत्व में संभव हुई। बिस्मार्क ने अपनी प्रसिद्ध 'रक्त और लौह' की नीति के माध्यम से कूटनीति और सैन्य शक्ति का कुशल समन्वय किया। उन्होंने डेनमार्क, ऑस्ट्रिया और फ्रांस के विरुद्ध तीन सफल युद्ध लड़े, जिससे जर्मन भाषी राज्यों को संगठित किया गया। 1871 में जर्मन साम्राज्य की घोषणा के साथ यूरोप में एक नई और शक्तिशाली शक्ति का उदय हुआ।

37. (D) ऑस्ट्रियाई साम्राज्य
इटली के एकीकरण की प्रक्रिया में ऑस्ट्रियाई साम्राज्य के प्रभाव को समाप्त करना सबसे बड़ी चुनौती थी। 19वीं शताब्दी के मध्य में इटली के अनेक उत्तरी और मध्य क्षेत्र सीधे ऑस्ट्रिया के नियंत्रण में थे। इतालवी राष्ट्रवादियों को अपनी स्वतंत्रता और एकता हेतु ऑस्ट्रिया के साथ अनेक सैन्य संघर्ष करने पड़े। फ्रांस की कूटनीतिक और सैन्य सहायता ने भी ऑस्ट्रिया को पीछे धकेलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंततः ऑस्ट्रियाई प्रभुत्व का अंत ही एकीकृत इटली के निर्माण का आधार बना।

38. (A) सैन्य गठबंधनों और राष्ट्रवाद की जटिल प्रणाली।
प्रथम विश्व युद्ध के दीर्घकालिक कारणों में सबसे प्रमुख उग्र राष्ट्रवाद और गुप्त सैन्य गठबंधनों की जटिल प्रणाली थी। 19वीं शताब्दी के अंत तक यूरोपीय राष्ट्र दो प्रतिस्पर्धी गुटों में बंट गए थे, जिससे किसी भी छोटे विवाद के महायुद्ध में बदलने की संभावना बढ़ गई थी। इसके साथ ही साम्राज्यवाद और शस्त्रीकरण की होड़ ने तनाव को चरम पर पहुँचा दिया था। इन कारकों ने यूरोप को एक ऐसे बिंदु पर खड़ा कर दिया जहाँ एक छोटी घटना ने पूरे विश्व को संघर्ष में झोंक दिया।

39. (C) जर्मनी
प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात 1919 में हस्ताक्षरित वर्साय की संधि ने पराजित जर्मनी पर अत्यंत कठोर और अपमानजनक शर्तें थोपीं। इस संधि के तहत जर्मनी को युद्ध का एकमात्र अपराधी माना गया और उस पर भारी आर्थिक क्षतिपूर्ति आरोपित की गई। साथ ही, जर्मनी की सैन्य शक्ति को सीमित किया गया और उसके महत्वपूर्ण क्षेत्रों को छीन लिया गया। इन दंडात्मक उपायों ने जर्मन जनता में गहरे असंतोष और अपमान की भावना को जन्म दिया, जिसने नाजीवाद के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) किसी राज्य या अधिकार क्षेत्र के लिए कानूनों का एक व्यवस्थित और लिखित संकलन।
विधि संहिता किसी राज्य या विशिष्ट भौगोलिक अधिकार क्षेत्र के लिए निर्मित कानूनों का एक व्यवस्थित और लिखित संकलन होती है। यह संकलन मनमाने निर्णयों के स्थान पर समाज में स्थापित नियमों की एक सुसंगत प्रणाली स्थापित करता है। यह न्याय के प्रभावी प्रशासन हेतु सार्वजनिक रुप से सुलभ नियमों का आधार प्रदान करती है। ऐसी संहिताएं कानूनी स्थिरता और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा में सहायक होती हैं।

2. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
रोमन साम्राज्य प्राचीन इतिहास में अपने विशाल क्षेत्रीय विस्तार और जटिल शासन प्रणाली हेतु जाना जाता है। इसकी प्रशासनिक संरचना ने आधुनिक शासन पद्धतियों का आधार निर्मित किया। रोमन कानून का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह था कि जब तक दोष सिद्ध न हो, व्यक्ति को निर्दोष माना जाना चाहिए। यह न्यायशास्त्रीय अवधारणा आज भी विश्व की अनेक कानूनी प्रणालियों का एक अनिवार्य और प्रभावी आधार बनी हुई है।

3. (C) ऋण दायित्व, युद्ध और जन्म।
प्राचीन रोमन साम्राज्य की सामाजिक व्यवस्था में दास प्रथा एक अभिन्न अंग थी। इस काल में दासता का मुख्य आधार युद्ध में पराजय, ऋण चुकाने में अक्षमता और दासों के घर जन्म लेना था। यह प्रथा नस्लीय भेदभाव के स्थान पर कानूनी और आर्थिक कारणों पर आधारित थी। दासों को कानूनन संपत्ति माना जाता था और उनके पास व्यक्तिगत स्वायत्तता तथा नागरिक अधिकारों का पूर्ण अभाव था।

4. (D) अभिजाततंत्र
संसदीय लोकतंत्र की अवधारणा मुख्य रूप से जन प्रतिनिधित्व, शक्तियों के पृथक्करण और उत्तरदायित्व के सिद्धांतों पर आधारित है। समाजवाद और पुनर्जागरण आंदोलनों ने लोकतांत्रिक चेतना और समानता के विचारों को प्रोत्साहित किया। इसके विपरीत, अभिजाततंत्र शासन का वह रूप है जहाँ शक्ति केवल एक छोटे, विशेषाधिकार प्राप्त और वंशानुगत कुलीन वर्ग के पास संचित रहती है। यह प्रणाली व्यापक जन भागीदारी के लोकतांत्रिक सिद्धांतों के पूर्णतः विपरीत है।

5. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
वणिकवाद आर्थिक राष्ट्रवाद का वह रुप है जो व्यापार अधिशेष और बहुमूल्य धातुओं के संचय पर बल देता है। सामंतवाद मध्यकालीन यूरोप की वह व्यवस्था थी जिसमें वैसलेज और मैनोरियल प्रणालियाँ प्रमुख थीं। पुनर्जागरण मानवतावाद और प्राचीन शास्त्रीय कलाओं के पुनरुद्धार हेतु प्रसिद्ध है। समाजवाद उत्पादन के साधनों पर सामूहिक या राज्य के स्वामित्व की वकालत करता है। ये सभी अवधारणाएं इतिहास के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक चरणों को दर्शाती हैं।

6. (B) एक छोटे, विशेषाधिकार प्राप्त और वंशानुगत कुलीन वर्ग के पास।
ऐतिहासिक संदर्भ में अभिजाततंत्र सरकार के उस स्वरुप को दर्शाता है जहाँ शासन की सर्वोच्च शक्ति समाज के एक अत्यंत छोटे और वंशानुगत कुलीन वर्ग के पास होती है। इस व्यवस्था में नेतृत्व का आधार जन्म और सामाजिक स्थिति को माना जाता है। यह प्रणाली आधुनिक लोकतंत्र की तुलना में जन भागीदारी को अत्यंत सीमित करती है। इसमें शक्ति का हस्तांतरण कुलीन परिवारों की परंपराओं और पदानुक्रम के अनुसार होता है।

7. (D) इसके कारण श्रम की भारी कमी हो गई, जिससे किसानों को बेहतर स्थितियों की मांग करने की शक्ति मिली।
मध्यकालीन यूरोप में 14वीं शताब्दी के दौरान फैली 'ब्लैक डेथ' महामारी के विनाशकारी परिणाम हुए। इस महामारी ने जनसंख्या को अत्यंत कम कर दिया, जिससे कृषि और उद्योगों में श्रम की भारी कमी हो गई। इस स्थिति ने जीवित बचे श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति बढ़ा दी। इसके परिणामस्वरुप किसानों ने बेहतर कार्य स्थितियों और कम सामंती करों की मांग की। इसने सामंती व्यवस्था को दुर्बल करने में मुख्य भूमिका निभाई।

8. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
मध्यकालीन यूरोप की मुख्य विशेषता चर्च की सर्वोच्चता थी, जहाँ आध्यात्मिक और लौकिक दोनों मामलों पर चर्च का व्यापक प्रभाव था। उस समय समाज में पोप की सत्ता को सर्वोच्च माना जाता था। हालांकि, पवित्र रोमन साम्राज्य पूर्णतः धर्मनिरपेक्ष संस्था नहीं थी। वास्तव में, यह सम्राट और पोप के बीच एक जटिल सत्ता संघर्ष का केंद्र था। साम्राज्य की वैधता चर्च के समर्थन और धार्मिक स्वीकृति पर आधारित थी।

9. (C) भारतीय उपमहाद्वीप।
जमींदारी प्रणाली भूमि धारण और राजस्व संग्रह की एक संरचना है जो मुख्य रूप से भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास से संबंधित है। इस प्रणाली के अंतर्गत जमींदार भू-स्वामी के रूप में कार्य करते थे और कृषकों से कर वसूल कर सरकार को देते थे। यह व्यवस्था मुगल काल में विकसित हुई और ब्रिटिश शासनकाल में इसे अधिक संहिताबद्ध किया गया। इसने ग्रामीण भारत में एक विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक पदानुक्रम स्थापित किया।

10. (A) लॉर्ड और वैसल।
सामंतवाद का मूल सिद्धांत लॉर्ड और वैसल के बीच पारस्परिक संबंधों पर आधारित है। इस व्यवस्था में लॉर्ड अपने वैसल को सुरक्षा और भूमि प्रदान करता था। इसके बदले में, वैसल अपने लॉर्ड के प्रति निष्ठा की शपथ लेता था और सैन्य सेवा के साथ प्रशासनिक दायित्वों को पूरा करने का वचन देता था। यह

भूमि का एक भाग प्रदान करता था। इस व्यवस्था ने समाज को एक स्पष्ट पदानुक्रम में विभाजित किया, जिसमें सबसे ऊपर लॉर्ड होते थे और सबसे नीचे भूमि से बंधे कृषक होते थे। यह विकेंद्रीकृत प्रणाली सुरक्षा और कृषि उत्पादन की आवश्यकताओं पर आधारित थी। इसने सदियों तक यूरोप को परिभाषित किया।

50. (A) पुनर्जागरण
यूरोप में 14वीं से 17वीं शताब्दी के मध्य आए सांस्कृतिक और बौद्धिक पुनरुद्धार को पुनर्जागरण के नाम से जाना जाता है। इस आंदोलन ने मध्यकालीन धार्मिक कट्टरता के स्थान पर शास्त्रीय ग्रीक और रोमन कला, साहित्य और दर्शन से प्रेरणा ली। इसकी मुख्य विशेषता 'मानवतावाद' थी, जिसने मानव की क्षमता और तर्क पर बल दिया। पुनर्जागरण ने विज्ञान और अन्वेषण के क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की नींव रखी। इसने सोचने के तरीके में एक आधुनिक और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण का संचार किया।

51. (D) 1789 की फ्रांसीसी क्रांति - जर्मनी का एकीकरण
1789 की फ्रांसीसी क्रांति का मुख्य उद्देश्य फ्रांस में निरंकुश राजशाही का अंत और 'स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व' की स्थापना करना था। जर्मनी का एकीकरण इसके अनेक दशकों पश्चात 1871 में बिस्मार्क के नेतृत्व में पूर्ण हुआ था। अन्य विकल्प सही सुमेलित हैं; 1917 की रुसी क्रांति ने जार के शासन को समाप्त किया, 1776 की अमेरिकी क्रांति ब्रिटेन से स्वतंत्रता हेतु थी और 1949 की चीनी क्रांति ने साम्यवादी राज्य की स्थापना की। इन घटनाओं के मध्य वैचारिक और कालानुक्रमिक अंतर स्पष्ट है।

52. (B) रुस और ऑटोमन साम्राज्य
1878 की बर्लिन कांग्रेस मुख्य रुप से रुस और ऑटोमन साम्राज्य के मध्य हुए युद्ध के पश्चात उत्पन्न राजनीतिक संकट को सुलझाने हेतु बुलाई गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य बाल्कन क्षेत्र में रुसी प्रभाव के विस्तार को सीमित करना और यूरोपीय महाशक्तियों के मध्य शक्ति संतुलन बनाए रखना था। इस संधि ने रुस द्वारा जीते गए अनेक क्षेत्रों को पुनः व्यवस्थित किया, जिससे रुस और अन्य यूरोपीय शक्तियों के मध्य तनाव बढ़ गया। इसने बाल्कन में अस्थिरता बढ़ाकर भविष्य के संघर्षों की नींव रखी।

53. (A) 1, 2, 3
20वीं शताब्दी में तानाशाही शक्तियों का उदय एक निश्चित क्रम में हुआ। सर्वप्रथम 1922 में बेनिटो मुसोलिनी ने 'रोम मार्च' के माध्यम से इटली में सत्ता प्राप्त की। इसके पश्चात 1933 में एडोल्फ हिटलर को जर्मनी का चांसलर नियुक्त किया गया, जिससे नाजी शासन की शुरुआत हुई। इन अधिनायकवादी शक्तियों की आक्रामक नीतियों के परिणामस्वरूप अंततः 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ। यह कालक्रम यूरोप में लोकतंत्र के पतन और युद्ध की ओर बढ़ने की ऐतिहासिक यात्रा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

54. (D) रुसी साम्राज्य
क्रीमिया युद्ध के दौरान ब्रिटेन, फ्रांस और ऑटोमन साम्राज्य के गठबंधन ने रुसी साम्राज्य के विस्तारवादी प्रयासों का कड़ा विरोध किया। रुस ऑटोमन साम्राज्य की दुर्बलता का लाभ उठाकर बाल्कन और भूमध्य सागर क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता था। पश्चिमी शक्तियों को भय था कि रुसी विस्तार उनके व्यापारिक और रणनीतिक हितों को प्रभावित करेगा। यह युद्ध आधुनिक इतिहास के प्रथम प्रमुख तकनीकी युद्धों में से एक था, जिसकी हार ने रुस को अपनी प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार हेतु विवश किया।

55. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
संसदीय लोकतंत्र एक आधुनिक शासन प्रणाली है जो जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों, शक्तियों के पृथक्करण और उत्तरदायित्व के सिद्धांतों पर आधारित है। यह प्रणाली नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करती है। इसके विपरीत, अभिजाततंत्र शासन का एक पुरातन स्वरुप है जहाँ सत्ता एक छोटे, विशेषाधिकार प्राप्त और वंशानुगत कुलीन वर्ग के पास सीमित रहती है। यह व्यवस्था जन्मजात श्रेष्ठता के विचार पर आधारित है, जो लोकतांत्रिक समानता के आधुनिक आदर्शों के साथ पूर्णतः असंगत और उनके विपरीत है।

56. (B) वणिकवाद
उपनिवेशवाद का ऐतिहासिक अभ्यास वणिकवाद के आर्थिक सिद्धांतों के साथ गहराई से जुड़ा था। वणिकवाद इस विचार पर आधारित था कि किसी राष्ट्र की शक्ति उसके पास मौजूद सोने और चांदी के भंडार से बढ़ती है। इसे प्राप्त करने हेतु यूरोपीय शक्तियों ने उपनिवेशों को कच्चे माल के सस्ते स्रोत और अपने निर्मित माल हेतु एक सुरक्षित बाजार के रूप में उपयोग किया। उपनिवेशों के संसाधनों का यह आर्थिक दोहन मातृ देश के व्यापार अधिशेष को बढ़ाने हेतु किया गया था, जो वणिकवादी अर्थव्यवस्था का आधार था।

57. (B) केवल 1 और 2
नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात की अस्थिरता के दौरान अपनी सैन्य योग्यता के बल पर सत्ता में आया। उसने अपनी प्रसिद्ध 'नेपोलियन संहिता' के माध्यम से फ्रांसीसी कानूनों का संहिताबद्ध रुप प्रस्तुत किया, जिसने विश्व की अनेक आधुनिक कानूनी प्रणालियों को प्रभावित किया। हालांकि, यह कहना गलत है कि उसका शासन रुस की स्थायी विजय के साथ समाप्त हुआ। वास्तव में, रुस पर उसका आक्रमण एक विनाशकारी विफलता थी, जिसने उसकी सेना को नष्ट कर दिया और उसके साम्राज्य के पतन का कारण बनी।

58. (A) प्रोटेस्टेंटवाद
16वीं शताब्दी के धर्म सुधार आंदोलन के कारण ईसाई धर्म के भीतर एक प्रमुख नई शाखा के रूप में प्रोटेस्टेंटवाद की स्थापना हुई। मार्टिन लूथर और जॉन केल्विन जैसे सुधारकों ने रोमन कैथोलिक चर्च के एकाधिकार और उसकी अनेक प्रथाओं को चुनौती दी। उन्होंने विश्वास के माध्यम से मुक्ति और बाइबिल के सीधे अध्ययन पर बल दिया। इस आंदोलन ने न केवल ईसाई धर्म को विभाजित किया, बल्कि यूरोप में व्यापक राजनीतिक

77. (D) मोहभंग की गहरी भावना और यूरोपीय मानचित्र का पुनर्निर्धारण।
प्रथम विश्व युद्ध का एक सबसे गहरा मनोवैज्ञानिक परिणाम यूरोपीय समाज में व्याप्त मोहभंग और निराशा की भावना थी। युद्ध की अभूतपूर्व विनाशलीला ने सभ्यता के पुराने दावों को चुनौती दी। राजनीतिक स्तर पर, इस युद्ध ने यूरोप के मानचित्र को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। सदियों पुराने चार बड़े साम्राज्यों का अंत हुआ और उनके खंडहरों पर पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया और यूगोस्लाविया जैसे अनेक नए राष्ट्रों का निर्माण हुआ। इस भौगोलिक पुनर्निर्धारण ने क्षेत्र में जातीय और राजनीतिक पहचान के नए संघर्षों को जन्म दिया।

78. (A) आर्थिक अस्थिरता, राष्ट्रीय अपमान और साम्यवाद का भय।
प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात यूरोप में फासीवाद और नाजीवाद जैसी तानाशाही शक्तियों का उदय अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण हुआ। 1929 की महामंदी ने भीषण आर्थिक तंगी उत्पन्न की, जिससे लोग लोकतांत्रिक प्रणालियों से निराश हो गए। जर्मनी और इटली जैसे देशों में वर्साय की संधि से उपजा राष्ट्रीय अपमान का बोध अत्यंत गहरा था। इसके अतिरिक्त, रूसी क्रांति की सफलता ने उच्च वर्ग में साम्यवाद का भय उत्पन्न किया, जिसे तानाशाहों ने भुनाया। इन संकटों ने लोगों को अधिनायकवादी समाधानों की ओर आकर्षित किया।

79. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
वणिकवाद मुक्त व्यापार के विपरीत एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जो अर्थव्यवस्था में अत्यधिक सरकारी हस्तक्षेप और संरक्षणवाद की वकालत करती है। इसका उद्देश्य निर्यात बढ़ाकर और आयात घटाकर स्वर्ण भंडार संचित करना था। यह दावा करना गलत है कि यह न्यूनतम हस्तक्षेप का समर्थन करता है। हालांकि, उपनिवेशवाद का अभ्यास वास्तव में वणिकवादी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु किया गया था। उपनिवेशों का उपयोग कच्चे माल के स्रोत और निर्मित माल हेतु बंद बाजार के रूप में किया जाता था ताकि मातृ देश को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

80. (D) वियना कांग्रेस का आयोजन।
1815 में नेपोलियन बोनापार्ट की अंतिम पराजय के तत्काल पश्चात यूरोप की प्रमुख शक्तियों ने वियना कांग्रेस का आयोजन किया। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य नेपोलियन युद्धों द्वारा उत्पन्न राजनीतिक उथल-पुथल को व्यवस्थित करना था। यूरोपीय नेताओं ने महाद्वीप में शक्ति संतुलन स्थापित करने और क्रांति-पूर्व के पुराने राजतंत्रों को बहाल करने का निर्णय लिया। वियना कांग्रेस ने नेपोलियन के साम्राज्य को भंग कर दिया और यूरोप के मानचित्र को रुढ़िवादी सिद्धांतों के आधार पर पुनः तैयार किया ताकि भविष्य के संघर्षों को रोका जा सके।

81. (B) किसी अन्य व्यक्ति की कानूनी संपत्ति, जिनके पास कोई व्यक्तिगत अधिकार नहीं थे।
रोमन साम्राज्य में दास प्रथा एक अत्यंत कठोर कानूनी और सामाजिक संस्था थी। दासों को कानून की दृष्टि में मनुष्य के स्थान पर 'संपत्ति' या 'वस्तु' के रूप में माना जाता था, जिसका स्वामी उन्हें क्रय या विक्रय कर सकता था। दासों के पास कोई नागरिक या व्यक्तिगत अधिकार नहीं थे और वे पूर्णतः अपने स्वामी की इच्छा पर निर्भर थे। हालांकि कुछ दासों को सेवा के बदले मुक्त किया जा सकता था, परंतु अधिकांश का जीवन कठिन श्रम और शोषण में व्यतीत होता था। यह प्रणाली रोमन अर्थव्यवस्था का मुख्य स्तंभ थी।

82. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पुनर्जागरण काल ने मानव चिंतन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन को चिह्नित किया, जहाँ मध्यकालीन धार्मिक नियंत्रण से ध्यान हटकर मानव जीवन, तर्क और सांसारिक उपलब्धियों पर केंद्रित हुआ। इस वैचारिक परिवर्तन को 'मानवतावाद' कहा जाता है, जो मानव की गरिमा और उसकी रचनात्मक क्षमताओं को सर्वोच्च महत्व देता है। मानवतावादियों ने प्राचीन ग्रीक और रोमन साहित्य के अध्ययन के माध्यम से इस सांसारिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। इस प्रकार, मानवतावाद ही वह मुख्य बौद्धिक शक्ति थी जिसने पुनर्जागरण के सांस्कृतिक पुनरुत्थान को आधार प्रदान किया।

83. (C) द्वितीय विश्व युद्ध
संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध के विनाशकारी अनुभवों और विभीषिका के सीधे परिणाम के रूप में की गई थी। विश्व की शक्तियों ने यह अनुभव किया कि राष्ट्र संघ भविष्य के युद्धों को रोकने में विफल रहा था, अतः एक अधिक प्रभावी अंतर्राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता थी। इसका मुख्य उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों को युद्ध से बचाना और वैश्विक सहयोग एवं शांति को बढ़ावा देना था। इस संगठन का चार्टर मानवाधिकारों, अंतर्राष्ट्रीय कानून के सम्मान और सामाजिक प्रगति के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

84. (A) रूस
जर्मनी के एकीकरण हेतु ओटो वॉन बिस्मार्क ने एक अत्यंत सोची-समझी सैन्य और कूटनीतिक रणनीति अपनाई थी। उन्होंने प्रशिया के नेतृत्व में जर्मन राज्यों को एकजुट करने हेतु तीन मुख्य युद्ध लड़े: डेनमार्क के विरुद्ध, ऑस्ट्रिया के विरुद्ध और अंत में फ्रांस के विरुद्ध। इन विजयों ने जर्मनी के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया। हालांकि, बिस्मार्क ने एकीकरण की प्रक्रिया के दौरान रूस के साथ सीधे युद्ध से परहेज किया। वास्तव में, उन्होंने कूटनीतिक कौशल का उपयोग करते हुए रूस को तटस्थ रखा ताकि प्रशिया को अन्य मोर्चों पर सफलता मिल सके।

85. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
विश्व इतिहास की प्रमुख घटनाओं का वर्षानुसार क्रम उनकी ऐतिहासिक प्रासंगिकता को दर्शाता है। अमेरिकी क्रांति 1776 में प्रारंभ हुई, जिसने आधुनिक लोकतंत्र की नींव रखी। इसके पश्चात 1789 में फ्रांस में महान क्रांति हुई, जिसने राजशाही को समाप्त किया। 1815 में वियना कांग्रेस ने नेपोलियन के पश्चात के यूरोप की व्यवस्था निर्धारित की। क्रीमिया युद्ध का प्रारंभ 1854 में हुआ, जो 19वीं शताब्दी के मध्य का एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष था। इन घटनाओं के प्रभाव को समझना आधुनिक वैश्विक इतिहास के विकासक्रम हेतु आवश्यक है।

68. (A) प्राकृतिक अधिकारों और स्वशासन के बारे में प्रबोधन के विचार।
1776 की अमेरिकी क्रांति वैचारिक रूप से 18वीं शताब्दी के प्रबोधन युग के विचारों से गहराई से प्रेरित थी। थॉमस जेफरसन जैसे नेताओं ने जॉन लॉक जैसे दार्शनिकों के 'प्राकृतिक अधिकारों'—जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति—के सिद्धांतों को अपनाया। क्रांतिकारियों का मानना था कि सरकार की शक्ति जनता की सहमति पर आधारित होनी चाहिए। यदि सरकार नागरिकों के अधिकारों का हनन करती है, तो उसे उखाड़ फेंकना जनता का अधिकार है। इन उदारवादी विचारों ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष को वैचारिक आधार प्रदान किया।

69. (B) राष्ट्रवादी और साम्यवादी।
1949 की चीनी क्रांति चीन के इतिहास में दो प्रमुख वैचारिक गुटों—राष्ट्रवादी दल और चीनी साम्यवादी दल—के मध्य लंबे गृहयुद्ध की परिणति थी। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात यह संघर्ष और तीव्र हो गया। माओत्से तुंग के नेतृत्व में साम्यवादियों ने किसानों के व्यापक समर्थन और प्रभावी सैन्य रणनीति के बल पर राष्ट्रवादियों को पराजित किया। इस विजय के परिणामस्वरूप मुख्य भूमि चीन पर 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' की स्थापना हुई, जबकि राष्ट्रवादी भागकर ताइवान द्वीप पर शरण लेने हेतु विवश हो गए।

70. (C) वैधता और रुढ़िवाद
1815 की वियना कांग्रेस मुख्य रूप से 'वैधता' और 'रुढ़िवाद' के राजनीतिक सिद्धांतों से संचालित थी। नेपोलियन की हार के पश्चात, यूरोपीय शक्तियों ने फ्रांसीसी क्रांति से पूर्व के पुराने राजवंशों को उनके सिंहासन पर बहाल करने का निर्णय लिया। उनका मानना था कि केवल पारंपरिक राजशाही ही यूरोप में स्थिरता सुनिश्चित कर सकती है। इस बैठक का उद्देश्य उदारवाद और राष्ट्रवाद की क्रांतिकारी शक्तियों को दबाना था ताकि यूरोप के पुराने शक्ति संतुलन को संरक्षित किया जा सके। यह रुढ़िवादी राजनीति का मील का पत्थर था।

71. (A) नाजीवाद - एडोल्फ हिटलर
एडोल्फ हिटलर जर्मनी में नाजीवाद की विचारधारा के सबसे प्रमुख प्रणेता और नेता थे। उन्होंने इस विचारधारा के माध्यम से एक सर्वसत्तावादी शासन स्थापित किया। अन्य विकल्पों में मिलान त्रुटिपूर्ण है; फासीवाद के प्रमुख नेता बेनिटो मुसोलिनी थे। वणिकवाद एक आर्थिक सिद्धांत था, जबकि लेनिन साम्यवाद से संबंधित थे। समाजवाद एक व्यापक विचारधारा है जिसे नेपोलियन बोनापार्ट के साथ नहीं जोड़ा जा सकता, क्योंकि उनका संबंध फ्रांसीसी साम्राज्य के विस्तार और कानूनी सुधारों से था।

72. (B) पुरातन व्यवस्था की अत्यधिक सामाजिक और आर्थिक असमानता।
1789 की फ्रांसीसी क्रांति का एक बुनियादी कारण फ्रांस की 'पुरातन व्यवस्था' में व्याप्त गहरी सामाजिक और आर्थिक विषमता थी। समाज तीन एस्टेट में विभाजित था, जहाँ प्रथम दो एस्टेट को भारी विशेषाधिकार प्राप्त थे और वे करों से मुक्त थे। इसके विपरीत, तृतीय एस्टेट पर करों का भारी बोझ था और उन्हें राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखा गया था। इसके साथ ही बढ़ते वित्तीय संकट, अकाल और प्रबोधन के क्रांतिकारी विचारों ने जनता के असंतोष को एक विशाल विद्रोह में परिवर्तित कर दिया।

73. (B) पश्चिमी और मध्य यूरोप की मुख्य शक्तियों के पूर्व में।
19वीं शताब्दी में 'पूर्वी समस्या' शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि यह ऑटोमन साम्राज्य के पतन से उत्पन्न राजनीतिक संकट से संबंधित था, जो पश्चिमी और मध्य यूरोप की प्रमुख शक्तियों की भौगोलिक स्थिति के पूर्व में स्थित था। ब्रिटेन, फ्रांस और ऑस्ट्रिया जैसी शक्तियाँ इस क्षेत्र में होने वाले किसी भी परिवर्तन को अपने हितों हेतु महत्वपूर्ण मानती थीं। बाल्कन और मध्य पूर्व के ये क्षेत्र यूरोपीय राजनीति के पूर्वी किनारे पर थे, इसलिए इन कूटनीतिक जटिलताओं को 'पूर्वी समस्या' कहा गया।

74. (C) केवल 1 और 3
अभिजाततंत्र और नाजीवाद दोनों विचारधाराएं मौलिक रूप से मनुष्यों के मध्य अंतर्निहित असमानता के सिद्धांतों पर आधारित हैं। अभिजाततंत्र यह मानता है कि शासन करने का अधिकार केवल एक छोटे, जन्मजात श्रेष्ठ और विशेषाधिकार प्राप्त कुलीन वर्ग के पास होना चाहिए। वहीं नाजीवाद नस्लीय श्रेष्ठता के सिद्धांत को मानता है, जहाँ 'आर्य' नस्ल को दूसरों से श्रेष्ठ और शासन के योग्य माना जाता है। इसके विपरीत, संसदीय लोकतंत्र समानता के आदर्शों पर आधारित है, जहाँ प्रत्येक नागरिक को समान भागीदारी का अधिकार प्राप्त होता है।

75. (A) 2, 4, 3, 1
विश्व की प्रमुख क्रांतियों का सही कालानुक्रमिक क्रम उनके वैचारिक विकास को दर्शाता है। सर्वप्रथम 1776 में अमेरिकी क्रांति हुई, जिसने उपनिवेशवाद से मुक्ति का मार्ग दिखाया। इसके पश्चात 1789 में फ्रांसीसी क्रांति हुई, जिसने समानता के आदर्शों को जन्म दिया। 20वीं शताब्दी में, 1917 की रूसी क्रांति ने विश्व के प्रथम साम्यवादी राज्य की स्थापना की। अंत में, 1949 की चीनी क्रांति सफल हुई, जिसने चीन में साम्यवादी शासन की नींव रखी। यह क्रम राजशाही से साम्यवाद तक के परिवर्तनों को स्पष्ट करता है।

76. (B) व्लादिमीर लेनिन
1917 की रूसी क्रांति के दौरान बोल्शेविकों का नेतृत्व व्लादिमीर लेनिन ने किया था। उन्होंने "शांति, भूमि और रोटी" के प्रसिद्ध नारे के साथ रूस की त्रस्त जनता को एकजुट किया। लेनिन के रणनीतिक नेतृत्व में बोल्शेविकों ने अक्टूबर क्रांति के माध्यम से अस्थायी सरकार का तख्तापलट कर सत्ता प्राप्त की। उन्होंने कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों को व्यवहार में लागू करते हुए रूस को एक समाजवादी राज्य में परिवर्तित करने की प्रक्रिया प्रारंभ की। लेनिन की भूमिका ने वैश्विक राजनीति में साम्यवाद को एक शक्तिशाली शक्ति बना दिया।

40. (B) केवल 1 और 3
प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप सदियों पुराने चार प्रमुख साम्राज्यों—ऑस्ट्रो-हंगेरियन, ऑटोमन, रूसी और जर्मन—का पतन हुआ। इस युद्ध की विभीषिका ने भविष्य में ऐसे संघर्षों को रोकने हेतु 'राष्ट्र संघ' नामक अंतर्राष्ट्रीय संगठन के निर्माण को प्रेरित किया। हालांकि जर्मनी का एकीकरण इस युद्ध का परिणाम नहीं था, बल्कि यह युद्ध से कई दशक पूर्व ही हो चुका था। युद्ध के पश्चात यूरोप का राजनीतिक मानचित्र परिवर्तित हुआ और अनेक नए स्वतंत्र राष्ट्रों का उदय हुआ, जिसने वैश्विक राजनीति के नए युग की शुरुआत की।

41. (C) वर्गीय संघर्ष और अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा क्रांति को बढ़ावा देना
मुसोलिनी के नेतृत्व में इटली का फासीवाद एक उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा थी, जिसने राज्य की सर्वोच्चता और एक-दलीय तानाशाही पर बल दिया। इसकी मुख्य विशेषताओं में सैन्य शक्ति का महिमामंडन और राजनीतिक विरोधियों का दमन शामिल था। हालांकि, फासीवाद वर्गीय संघर्ष और अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा क्रांति के सिद्धांतों का कट्टर विरोधी था, जो साम्यवादी विचारधारा का आधार थे। फासीवाद समाज के सभी वर्गों को राष्ट्र और राज्य के हित में एकजुट करने का प्रयास करता था, न कि उन्हें आपस में लड़ाने का।

42. (B) नस्लीय विचारधारा पर ध्यान केंद्रित करना।
हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी का नाजीवाद इतालवी फासीवाद के समान था, परंतु इसका मुख्य अंतर इसकी चरम नस्लीय विचारधारा में निहित था। नाजीवाद में 'आर्य' नस्ल की श्रेष्ठता और यहूदियों के प्रति घृणा को विचारधारा के केंद्र में रखा गया था। जबकि इतालवी फासीवाद मुख्य रूप से राज्य की शक्ति और राष्ट्रीय एकता पर केंद्रित था, नाजीवाद ने जैविक आधार पर समाज के शुद्धिकरण का लक्ष्य रखा। इस नस्लीय उन्माद ने ही प्रलय जैसी भयावह घटनाओं को जन्म दिया, जो इसे विशिष्ट बनाता है।

43. (C) पोलैंड पर जर्मन आक्रमण।
1 सितंबर, 1939 को पोलैंड पर जर्मनी का आक्रमण द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभ का तात्कालिक और मुख्य कारण बना। इस आक्रमण के प्रत्युत्तर में ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। हालांकि इससे पूर्व तुष्टीकरण की नीति के माध्यम से हिटलर को रोकने का प्रयास किया गया था, परंतु पोलैंड पर हमले ने शांति की समस्त संभावनाओं को समाप्त कर दिया। इस घटना ने एक वैश्विक संघर्ष की शुरुआत की जिसने संपूर्ण विश्व की राजनीति और समाज को प्रभावित किया।

44. (D) संघर्ष को रोकने में संयुक्त राष्ट्र की सफलता।
द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारणों में धुरी शक्तियों की उग्र विस्तारवादी नीतियां शामिल थीं। वर्साय की संधि की कठोर शर्तें और तुष्टीकरण की विफल नीति ने भी हिटलर को आक्रामक कदम उठाने हेतु प्रोत्साहित किया। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र संघ इस युद्ध का कारण नहीं था, बल्कि इसकी स्थापना युद्ध की समाप्ति के पश्चात भविष्य के संघर्षों को रोकने हेतु की गई थी। युद्ध प्रारंभ होने के समय राष्ट्र संघ अस्तित्व में था, जो शांति बनाए रखने में पूर्णतः विफल रहा था।

45. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
एडोल्फ हिटलर जर्मनी में नाजीवाद की विचारधारा हेतु जाने जाते हैं। व्लादिमीर लेनिन ने 1917 की रूसी क्रांति का नेतृत्व किया और प्रथम साम्यवादी राज्य की नींव रखी। बेनिटो मुसोलिनी इटली में फासीवाद के जनक थे, जिन्होंने वहां अधिनायकवादी शासन स्थापित किया। सन यात-सेन को 1911 की चीनी क्रांति का मुख्य वास्तुकार माना जाता है, जिसने चीन में शाही शासन को समाप्त कर गणतंत्र की स्थापना की। ये सभी नेता 20वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं के केंद्र में रहे हैं।

46. (B) यूरोप का विभाजन और शीत युद्ध का प्रारंभ।
द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे गहरा परिणाम यूरोप का दो वैचारिक गुटों में विभाजन था। युद्ध की समाप्ति के साथ ही संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ दो महाशक्तियों के रूप में उभरे, जिनके मध्य शीत युद्ध का प्रारंभ हुआ। पूर्वी यूरोप सोवियत प्रभाव में चला गया, जबकि पश्चिमी यूरोप अमेरिकी गठबंधन के साथ रहा। इस विभाजन ने दशकों तक वैश्विक राजनीति को प्रभावित किया। इसके साथ ही, पुराने यूरोपीय औपनिवेशिक साम्राज्यों का पतन और वि-उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया भी तीव्र हुई।

47. (C) अंतर्राष्ट्रीय शांति बनाए रखना और भविष्य के विश्व युद्धों को रोकना।
1945 में द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका के पश्चात संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों को युद्ध के विनाश से बचाना और अंतर्राष्ट्रीय शांति सुनिश्चित करना था। यह राष्ट्र संघ की विफलताओं से शिक्षा लेकर निर्मित एक अधिक शक्तिशाली वैश्विक मंच था। संयुक्त राष्ट्र ने विभिन्न देशों के मध्य सहयोग बढ़ाने, मानवाधिकारों की रक्षा करने और विवादों को कूटनीति से सुलझाने का लक्ष्य रखा। आज भी यह विश्व में संघर्ष समाधान हेतु महत्वपूर्ण संस्था है।

48. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
औद्योगिक क्रांति ने समाज में व्यापक परिवर्तन लाते हुए शहरीकरण को प्रोत्साहित किया और एक नए विशाल श्रमिक वर्ग को जन्म दिया। हालांकि, यह दावा करना पूर्णतः गलत है कि यह परिवर्तन उत्कृष्ट कार्य स्थितियों और सामाजिक शांति के साथ हुआ। वास्तविकता इसके विपरीत थी; कारखानों में कार्य की स्थितियाँ अत्यंत दयनीय थीं और श्रमिकों का शोषण चरम पर था। इन समस्याओं ने व्यापक सामाजिक असंतोष को जन्म दिया, जिसके परिणामस्वरूप बाद में श्रमिक आंदोलनों और समाजवादी विचारधाराओं का उदय हुआ।

49. (B) सामंतवाद
मध्यकालीन यूरोप में सामंतवाद एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था थी जिसमें शक्ति का केंद्र भूमि थी। इस प्रणाली में एक सुदृढ़ लॉर्ड अपने अधीन वैसल्स को सैन्य सेवा और निष्ठा के बदले

86. (B) व्यक्ति का राज्य के अधीन होना।
फासीवाद की एक अत्यंत केंद्रीय और बुनियादी विशेषता व्यक्ति के हितों को पूर्णतः राज्य के अधीन करना है। इस विचारधारा के अनुसार, राष्ट्र और राज्य की शक्ति ही सर्वोपरि है, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का महत्व केवल तभी है जब वह राज्य के लक्ष्यों की पूर्ति करती हो। फासीवादी शासन में राज्य नागरिक जीवन के प्रत्येक पहलू को नियंत्रित करता है और 'एक राष्ट्र, एक नेता' के सिद्धांत पर बल देता है। यह उदारवादी लोकतंत्र के उन मूल्यों की पूर्ण उपेक्षा करता है जो व्यक्तिगत स्वायत्तता और मानवाधिकारों को प्राथमिकता देते हैं।

87. (B) भूमि स्वामित्व और राजस्व
जमींदारी प्रणाली एक ऐसी सामाजिक-आर्थिक संरचना का उदाहरण है जो सीधे भूमि स्वामित्व और उससे प्राप्त होने वाले राजस्व से जुड़ी हुई थी। इस व्यवस्था में जमींदारों को भूमि के एक बड़े भाग का स्वामी माना जाता था, और उनका मुख्य कार्य उस भूमि पर कृषि करने वाले किसानों से राजस्व वसूल करना था। वसूले गए राजस्व का एक निश्चित भाग वे सरकार को देते थे। यह प्रणाली न केवल आर्थिक शोषण का माध्यम थी, बल्कि इसने ग्रामीण समाज में एक कठोर पदानुक्रम और शक्ति संरचना को भी जन्म दिया।

88. (D) नस्ल पर अत्यधिक और केंद्रीय ध्यान
यद्यपि नाजीवाद और फासीवाद दोनों अधिनायकवादी विचारधाराएं थीं, परंतु नाजीवाद का सबसे विशिष्ट पहलू नस्ल पर इसका अत्यधिक और केंद्रीय ध्यान था। हिटलर की विचारधारा 'आर्य' नस्ल की जैविक श्रेष्ठता के विचार पर टिकी थी, जिसने यहूदियों के व्यवस्थित उत्पीड़न और विनाश को जन्म दिया। जबकि इतालवी फासीवाद मुख्य रूप से राज्य की शक्ति और राष्ट्रीय महिमा पर केंद्रित था, नाजीवाद ने जैविक आधार पर समाज के शुद्धिकरण को अपना लक्ष्य बनाया, जो इसे अन्य अधिनायकवादी प्रणालियों से अधिक हिंसक और कट्टरपंथी बनाता है।

89. (B) सैन्य पराजय और निरंकुशता के कारण व्यापक असंतोष।
1917 की रूसी क्रांति का एक मुख्य कारण जार शासन की निरंतर सैन्य पराजय और उसकी हठीली निरंकुशता थी। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूसी सेनाओं को भारी क्षति उठानी पड़ी, जिससे सेना और जनता का मनोबल टूट गया। युद्ध के कारण देश में भोजन की भारी कमी और आर्थिक बदहाली उत्पन्न हुई, जिसने जार निकोलस द्वितीय के प्रति जनता के क्रोध को चरम पर पहुँचा दिया। जनता परिवर्तन की मांग कर रही थी, जिसे जार ने उपेक्षित किया। इसी व्यापक असंतोष ने वह विस्फोटक स्थिति उत्पन्न की जिससे क्रांति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

90. (D) 1, 2 और 3
'पूर्वी समस्या' 19वीं शताब्दी की एक अत्यंत जटिल कूटनीतिक चुनौती थी जो मुख्य रूप से ऑटोमन साम्राज्य की गिरती शक्ति से जुड़ी थी। जैसे-जैसे साम्राज्य दुर्बल हुआ, यूरोपीय महाशक्तियों के मध्य शक्ति संतुलन बिगड़ने का भय उत्पन्न हो गया, क्योंकि प्रत्येक शक्ति ऑटोमन क्षेत्रों पर अपना प्रभाव बढ़ाना चाहती थी। क्रीमिया युद्ध और बाल्कन युद्ध इसी समस्या की हिंसक अभिव्यक्तियाँ थीं, जहाँ क्षेत्रीय राष्ट्रवाद और महाशक्तियों के हित आपस में टकराए। इन घटनाओं ने न केवल ऑटोमन साम्राज्य के भाग्य को प्रभावित किया, बल्कि प्रथम विश्व युद्ध हेतु आधार तैयार किया।

91. (B) मनमाने शासन से स्थापित नियमों की प्रणाली की ओर।
'विधि संहिता' की अवधारणा मानव सभ्यता के विकास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। यह शासक की व्यक्तिगत सनक और मनमाने निर्णयों के स्थान पर एक सुव्यवस्थित, लिखित और पूर्व-निर्धारित नियमों की प्रणाली स्थापित करती है। जब कानून लिखित और सार्वजनिक होते हैं, तो न्याय में अधिक निष्पक्षता और सुसंगति आती है। यह व्यवस्था नागरिकों को यह जानने का अधिकार प्रदान करती है कि उनके अधिकार और कर्तव्य क्या हैं। इस प्रकार, विधि संहिता कानून के शासन की नींव रखती है, जो आधुनिक सभ्य समाज की मुख्य पहचान है।

92. (C) नेपोलियन युद्ध
पवित्र रोमन साम्राज्य का औपचारिक और प्रभावी अंत नेपोलियन युद्धों के दौरान हुआ था। 1806 में, नेपोलियन द्वारा यूरोप के राजनीतिक मानचित्र को पुनः व्यवस्थित करने और 'राइन के परिसंघ' की स्थापना के पश्चात, अंतिम पवित्र रोमन सम्राट फ्रांसिस द्वितीय ने पद त्याग दिया और साम्राज्य को भंग घोषित कर दिया। सदियों पुरानी यह संस्था नेपोलियन की बढ़ती सैन्य शक्ति के समक्ष टिक नहीं सकी। इस विघटन ने आधुनिक जर्मनी के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण मोड़ को चिह्नित किया और यूरोप की पुरानी सामंती संरचनाओं को स्थायी रूप से परिवर्तित कर दिया।

93. (C) ऑटोमन साम्राज्य
युवा तुर्क आंदोलन 20वीं शताब्दी की शुरुआत में ऑटोमन साम्राज्य के भीतर उभरा एक महत्वपूर्ण राष्ट्रवादी और सुधारवादी आंदोलन था। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य सुल्तान की निरंकुश सत्ता को समाप्त करना, संवैधानिक शासन स्थापित करना और साम्राज्य का आधुनिकीकरण करना था। युवा तुर्क चाहते थे कि साम्राज्य पश्चिमी शक्तियों की तरह शक्तिशाली और संगठित बने ताकि उसका विघटन रोका जा सके। इस आंदोलन ने तुर्की राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया और अंततः प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात आधुनिक तुर्की गणराज्य की स्थापना हेतु वैचारिक और राजनीतिक आधार तैयार किया।

94. (B) अंतिम किंग सम्राट का पदत्याग।
1911 की चीनी क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण और तात्कालिक परिणाम अंतिम किंग सम्राट, पुयी का पदत्याग था। इस घटना ने चीन में दो हजार वर्षों से अधिक पुरानी शाही शासन व्यवस्था और राजवंशों के चक्र को सदैव हेतु समाप्त कर दिया। सम्राट के गद्दी छोड़ने के साथ ही चीन में राजशाही का अंत हुआ और नए गणराज्य, 'रिपब्लिक ऑफ चाइना' की घोषणा की गई। हालांकि इसके पश्चात चीन को अनेक वर्षों तक अस्थिरता का सामना करना पड़ा, परंतु इस क्रांति ने चीन के इतिहास को एक नई लोकतांत्रिक और राष्ट्रवादी दिशा की ओर मोड़ दिया।

किए गए लाभ को कम करना था। ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया-हंगरी जैसी शक्तियाँ बाल्कन क्षेत्र में बढ़ते रूसी प्रभाव से अत्यंत चिंतित थीं, क्योंकि इससे यूरोप का शक्ति संतुलन प्रभावित हो सकता था। उन्होंने कूटनीति के माध्यम से रूस को विवश किया कि वह जीते गए अनेक क्षेत्रों को वापस करे। इस कांग्रेस ने ऑटोमन साम्राज्य को कुछ समय हेतु जीवनदान दिया, परंतु इसने रूस में असंतोष उत्पन्न किया और बाल्कन में अस्थिरता को स्थायी बना दिया।

130. (B) 2, 1, 4, 3
19वीं और 20वीं शताब्दी की 'पूर्वी समस्या' से जुड़ी इन घटनाओं का कालक्रम उनकी ऐतिहासिक कड़ी को स्पष्ट करता है। सर्वप्रथम 1854 में क्रीमिया युद्ध हुआ, जिसने रूस के विस्तार को रोका। इसके पश्चात 1878 में बर्लिन कांग्रेस बुलाई गई ताकि बाल्कन संकट को सुलझाया जा सके। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में 'युवा तुर्क आंदोलन' ने ऑटोमन साम्राज्य में आंतरिक सुधारों का प्रयास किया। अंत में, 1912-13 में बाल्कन युद्ध हुए, जिन्होंने ऑटोमन प्रभाव को लगभग समाप्त कर दिया। यह क्रम साम्राज्य के क्रमिक पतन और बढ़ते क्षेत्रीय तनावों की दिशा को पूर्णतः दर्शाता है।

131. (C) फ्रांसीसी क्रांति
14 जुलाई, 1789 को पेरिस में 'बैस्टिल' के किले का पतन फ्रांसीसी क्रांति की सबसे प्रतीकात्मक घटना मानी जाती है। बैस्टिल का किला राजा की निरंकुश सत्ता और दमन का प्रतीक था, जिसे पेरिस की जनसामान्य ने ध्वस्त कर दिया। इस घटना ने सदियों पुरानी राजशाही के विरुद्ध जनशक्ति की विजय की घोषणा की और क्रांति के निर्णायक चरण की शुरुआत की। आज भी यह दिन फ्रांस में 'बैस्टिल दिवस' के रूप में राष्ट्रीय उत्सव के तौर पर मनाया जाता है, जो स्वतंत्रता और सामंती दमन के अंत हेतु किए गए ऐतिहासिक संघर्ष की गौरवशाली स्मृति दिलाता है।

132. (C) बोल्शेविक
1917 की रूसी क्रांति के अक्टूबर चरण के परिणामस्वरूप व्लादिमीर लेनिन के नेतृत्व वाले 'बोल्शेविक' सत्ता में आए। बोल्शेविकों ने अस्थायी सरकार का तख्तापलट किया और एक ऐसी सरकार स्थापित की जो मार्क्सवादी सिद्धांतों पर आधारित थी। इस क्रांति ने रूस को विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य में परिवर्तित कर दिया। बोल्शेविकों की सफलता का मुख्य कारण उनका "शांति, भूमि और रोटी" का आकर्षक नारा था, जिसने युद्ध और निर्धनता से त्रस्त श्रमिकों और सैनिकों का समर्थन प्राप्त किया। इसने वैश्विक राजनीति में साम्यवाद के उदय को स्थायी रूप से सुनिश्चित किया।

133. (D) A और R दोनों गलत हैं।
उपनिवेशवाद कभी भी ऐसी प्रणाली नहीं थी जिससे उपनिवेशवादी और उपनिवेशित दोनों को समान लाभ प्राप्त हुआ हो। यह स्पष्ट रूप से एक शोषक व्यवस्था थी जहाँ मातृ देश ने अपने आर्थिक विकास हेतु उपनिवेशों के संसाधनों और श्रम का क्रूरता से दोहन किया। उपनिवेशों को कभी भी शासन या व्यापार में समान भागीदार नहीं माना गया, बल्कि उन्हें कच्चे माल के सस्ते स्रोत और निर्मित माल हेतु एक लाचार बाजार के रूप में प्रयुक्त किया गया। इसके परिणामस्वरूप उपनिवेशों में निर्धनता और आर्थिक पिछड़ापन बढ़ा, जबकि उपनिवेशवादी शक्तियाँ उनकी संपदा से समृद्ध हुईं।

134. (D) ब्रिटिश साम्राज्य
प्रथम विश्व युद्ध के भीषण परिणामों के रूप में यूरोप और मध्य पूर्व के चार विशाल साम्राज्यों का अंत हुआ, जिनमें रूसी, जर्मन, ऑस्ट्रो-हंगेरियन और ऑटोमन साम्राज्य सम्मिलित थे। युद्ध ने इन साम्राज्यों की आंतरिक दुर्बलताओं को उजागर किया और क्रांतिकारी आंदोलनों को बढ़ावा दिया। हालांकि, ब्रिटिश साम्राज्य इस युद्ध के पश्चात ढहा नहीं, बल्कि वह विजयी पक्ष में रहा और उसने अपने क्षेत्रों में कुछ विस्तार भी किया। यद्यपि युद्ध ने ब्रिटेन की आर्थिक शक्ति को दुर्बल किया, परंतु साम्राज्य का वास्तविक विघटन द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात के दशकों में हुआ, जब स्वतंत्रता आंदोलनों ने तीव्रता प्राप्त की।

135. (C) ब्लैकशर्ट्स
बेनिटो मुसोलिनी के नेतृत्व में इटली में फासीवाद के उदय में 'ब्लैकशर्ट्स' नामक अर्धसैनिक दस्तों ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन दस्तों के सदस्य काली कमीज पहनते थे और वे अपने राजनीतिक विरोधियों, विशेषतः समाजवादियों, को डराने-धमकाने और उन पर हिंसक हमलों हेतु कुख्यात थे। मुसोलिनी ने इन दस्तों का उपयोग कानून-व्यवस्था बनाए रखने के नाम पर अराजकता फैलाने और सत्ता पर अपनी पकड़ सुदृढ़ करने हेतु किया। 1922 के 'रोम मार्च' के दौरान इन ब्लैकशर्ट्स के दबाव ने ही सम्राट को मुसोलिनी को सरकार बनाने हेतु आमंत्रित करने पर विवश किया था।

136. (C) हिटलर के जर्मनी की विस्तारवादी महत्वाकांक्षाएं।
1930 के दशक में ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा अपनाई गई 'तुष्टीकरण' की नीति मुख्य रूप से हिटलर के नेतृत्व वाले नाजी जर्मनी की आक्रामक मांगों और विस्तारवादी महत्वाकांक्षाओं के प्रति एक प्रतिक्रिया थी। मित्र राष्ट्रों को लगा कि यदि वे जर्मनी की कुछ क्षेत्रीय मांगों को स्वीकार कर लेते हैं, तो एक और विनाशकारी विश्व युद्ध से बचा जा सकेगा। इस नीति का सबसे प्रमुख उदाहरण 1938 का म्यूनिख समझौता था, जिसमें चेकोस्लोवाकिया के कुछ भाग जर्मनी को सौंप दिए गए। हालांकि, इस नीति ने हिटलर को और साहसी बनाया और अंततः यह युद्ध रोकने में विफल रही।

137. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
14वीं शताब्दी में आई 'ब्लैक डेथ' महामारी ने यूरोप की जनसंख्या को अत्यंत कम कर दिया था, जिसके विनाशकारी सामाजिक और आर्थिक प्रभाव पड़े। यह कहना गलत है कि इसका सामंती संरचनाओं पर बहुत कम प्रभाव पड़ा। वास्तविकता में, जनसंख्या की भारी गिरावट के कारण श्रम की भीषण कमी हो गई, जिसने जीवित बचे किसानों और श्रमिकों के मूल्य को बढ़ा दिया। उन्होंने अधिक पारिश्रमिक और बेहतर स्वतंत्रता की मांग करना प्रारंभ कर दिया। इस स्थिति ने सामंती लॉर्ड्स के नियंत्रण को दुर्बल किया और सदियों पुरानी सामंती व्यवस्था के पतन की प्रक्रिया को अत्यंत तीव्र कर दिया।

यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसने आधुनिक औद्योगिक विश्व की आधारशिला रखी और वैश्विक संबंधों को पुनः परिभाषित किया।

104. (C) इसने संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की।
वर्साय की संधि के विषय में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि इसने संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की थी। वास्तव में, इस संधि ने प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात 'राष्ट्र संघ' का निर्माण किया था, जो अंततः विफल रहा। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात 1945 में हुई थी। वर्साय की संधि अन्य दंडात्मक प्रावधानों हेतु जानी जाती है, जैसे जर्मनी पर युद्ध का दोष आरोपित करना और उस पर अत्यधिक आर्थिक क्षतिपूर्ति थोपना। इन कठोर शर्तों ने जर्मनी में गहरे असंतोष को जन्म दिया, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध को प्रेरित किया।

105. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
विभिन्न क्रांतियों ने विश्व इतिहास को भिन्न रूपों में आकार दिया है। 1776 की अमेरिकी क्रांति का मुख्य परिणाम ग्रेट ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त करना था। 1911 की चीनी क्रांति ने किंग राजवंश के सदियों पुराने शासन को समाप्त किया। 1917 की रूसी क्रांति के परिणामस्वरूप विश्व के प्रथम प्रमुख साम्यवादी राज्य, सोवियत संघ की स्थापना हुई। अंततः, 1949 की चीनी क्रांति ने मुख्य भूमि चीन पर 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' की नींव रखी। ये घटनाएँ आधुनिक युग में उपनिवेशवाद से लेकर साम्यवाद तक की विभिन्न विचारधाराओं के सफल प्रयोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

106. (C) मीन कैम्फ
एडोल्फ हिटलर ने अपनी पुस्तक 'मीन कैम्फ' (मेरा संघर्ष) में नाजीवाद के राजनीतिक दर्शन और अपनी भविष्य की योजनाओं का विस्तार से वर्णन किया था। यह पुस्तक उन्होंने 1920 के दशक में कारावास के दौरान लिखी थी। इसमें हिटलर ने नस्लीय श्रेष्ठता, यहूदी-विरोध और जर्मनी हेतु 'लेबेन्सराउम' अर्थात अतिरिक्त भूमि प्राप्त करने के अपने विचारों को प्रस्तुत किया। यह पुस्तक नाजी विचारधारा का आधार बनी और हिटलर के सत्ता में आने के पश्चात इसने जर्मनी की सरकारी नीतियों को गहराई से प्रभावित किया। यह तानाशाही और घृणा की विचारधारा का दस्तावेज है।

107. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
1815 की वियना कांग्रेस का प्राथमिक उद्देश्य वास्तव में उन उदारवादी और राष्ट्रवादी शक्तियों को कुचलना था जो फ्रांसीसी क्रांति और नेपोलियन के अभियानों द्वारा संपूर्ण यूरोप में प्रसारित हुई थीं। यूरोपीय शक्तियाँ पुराने राजतंत्रों और शक्ति संतुलन को बहाल करना चाहती थीं। हालांकि, यह दावा करना त्रुटिपूर्ण है कि इस कांग्रेस ने ऐसी स्थायी शांति निर्मित की जिसने अगले दो सौ वर्षों तक समस्त युद्धों को रोका। यद्यपि इसने कुछ समय हेतु स्थिरता प्रदान की, परंतु 19वीं शताब्दी में अनेक क्षेत्रीय युद्ध हुए और अंततः 1914 में प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ।

108. (B) चर्च के पास महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक शक्ति थी।
मध्यकालीन यूरोप में 'चर्च की सर्वोच्चता' का अर्थ केवल धार्मिक प्रभुत्व नहीं था, बल्कि समाज के प्रत्येक पहलू पर उसका गहरा प्रभाव था। चर्च के पास अपार राजनीतिक शक्ति थी और वह प्रायः शासकों के निर्णयों और नीतियों को प्रभावित करता था। शिक्षा, कानून और सामाजिक नैतिकता का निर्धारण चर्च के सिद्धांतों के अनुसार होता था। उस समय चर्च स्वयं एक बड़ी आर्थिक शक्ति भी था जिसके पास विशाल भूमि और राजस्व के स्रोत थे। जनसामान्य के जीवन के समस्त महत्वपूर्ण संस्कार और नियम चर्च द्वारा ही पूर्णतः नियंत्रित एवं संचालित किए जाते थे।

109. (D) 1, 2 और 3
नाजीवाद और फासीवाद दोनों ही ऐसी सर्वसत्तावादी विचारधाराएं थीं जिन्होंने राज्य और सैन्य शक्ति के चरम महिमामंडन को अपना आधार बनाया। इन शासनों ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को पूर्णतः समाप्त कर दिया और किसी भी प्रकार के राजनीतिक विरोध या असंतोष को हिंसक रीति से कुचल दिया। नाजीवाद का एक विशिष्ट और क्रूर पहलू नस्लीय शुद्धता और उग्र यहूदी-विरोध पर अत्यधिक बल देना था, जिसे उन्होंने सरकारी नीति के रूप में कड़ाई से लागू किया। ये सभी लक्षण इन तानाशाही शक्तियों की पहचान थे, जिन्होंने 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में विश्व को विनाश की ओर धकेला।

110. (C) एक सर्वसत्तावादी राज्य
सर्वसत्तावादी राज्य सरकार का वह रूप है जहाँ सत्ताधारी शक्ति नागरिक जीवन के प्रत्येक पहलू, चाहे वह सार्वजनिक हो या निजी, पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करती है। इस व्यवस्था में किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत स्वतंत्रता, राजनीतिक बहुलवाद या स्वतंत्र अभिव्यक्ति हेतु कोई स्थान नहीं होता है। राज्य अपनी विचारधारा को थोपने हेतु व्यापक प्रचार, सेंसरशिप और दमनकारी पुलिस बल का उपयोग करता है। नाजी जर्मनी और सोवियत संघ इसके प्रमुख ऐतिहासिक उदाहरण हैं। यह प्रणाली लोकतंत्र के उन समस्त मूल्यों के विपरीत है जो व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करते हैं।

111. (C) महाशक्तियों के बीच तनाव और प्रतिद्वंद्विता को बढ़ा दिया।
20वीं शताब्दी की शुरुआत में हुए बाल्कन युद्धों ने प्रथम विश्व युद्ध हेतु आधार तैयार करने का कार्य किया। इन युद्धों के कारण बाल्कन क्षेत्र में ऑटोमन साम्राज्य का प्रभाव लगभग समाप्त हो गया, जिससे वहां एक शक्ति शून्य उत्पन्न हो गया। इस शून्य को भरने हेतु रूस और ऑस्ट्रिया-हंगरी जैसी महाशक्तियों के मध्य प्रतिद्वंद्विता और अधिक उग्र हो गई। क्षेत्रीय राष्ट्रवाद और महाशक्तियों के परस्पर विरोधी हितों ने यूरोप के राजनयिक संबंधों को अत्यंत तनावपूर्ण और अस्थिर बना दिया। इसी अस्थिरता और बढ़ते सैन्य गठबंधनों ने अंततः प्रथम विश्व युद्ध की अग्नि प्रज्वलित की।

इस क्रांति ने कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों को प्रथम बार एक राष्ट्र की शासन प्रणाली के रूप में लागू किया। इसने न केवल रूस की सामाजिक-आर्थिक संरचना को परिवर्तित किया, बल्कि आने वाले दशकों में संपूर्ण वैश्विक राजनीति और विचारधारा को भी दो ध्रुवों में विभाजित कर दिया।

147. (B) विधि संहिता
रोमन साम्राज्य की सबसे महान और स्थायी विरासत उसकी कानूनी प्रणाली है, जिसने आधुनिक 'विधि संहिता' के विकास को सीधे प्रभावित किया है। रोमनों ने कानूनों को व्यवस्थित, संहिताबद्ध और लिखित रूप देने की परंपरा प्रारंभ की, जिसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण 'जस्टिनियन कोड' है। इस प्रणाली ने यह विचार स्थापित किया कि कानून सार्वभौमिक, तर्कसंगत और सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू होने चाहिए। आज के अधिकांश वैश्विक कानून प्रणालियों के मूलभूत सिद्धांत, जैसे अनुबंध और नागरिक अधिकार, सीधे तौर पर इसी रोमन विरासत और संहिताबद्ध कानून की अवधारणा से उद्भूत हुए हैं।

148. (A) क्रांति के आदर्शों को फैलाने और साम्राज्य के निर्माण के लिए।
नेपोलियन बोनापार्ट का युग विरोधाभासों से परिपूर्ण है। एक ओर उन्होंने सैन्य शक्ति के बल पर विशाल फ्रांसीसी साम्राज्य का निर्माण किया, वहीं दूसरी ओर उन्होंने फ्रांसीसी क्रांति के बुनियादी आदर्शों, जैसे समानता और कानूनी सुधारों, को विजित क्षेत्रों में प्रसारित किया। उनकी 'नेपोलियन संहिता' ने सामंती विशेषाधिकारों को समाप्त किया और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया। हालांकि उनके शासन ने राष्ट्रवाद की भावना को भी जागृत किया, जिसने अंततः उनके अपने साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त किया। नेपोलियन के युग ने आधुनिक यूरोप की प्रशासनिक और कानूनी नींव रखने में निर्णायक भूमिका निभाई।

149. (C) पोप
मध्यकालीन यूरोप में 'चर्च की सर्वोच्चता' की सर्वाधिक शक्तिशाली अभिव्यक्ति रोम के 'पोप' के कार्यालय के माध्यम से होती थी। पोप को न केवल ईसाई जगत का आध्यात्मिक प्रमुख माना जाता था, बल्कि उनकी सत्ता शासकों और सम्राटों से भी ऊपर मानी जाती थी। उनके पास किसी भी शासक को धर्म से निष्कासित करने की शक्ति थी, जो उस समय एक गंभीर राजनीतिक दंड था। पोप का कार्यालय संपूर्ण पश्चिमी यूरोप में शिक्षा, कानून और सामाजिक जीवन को नियंत्रित करने वाला मुख्य केंद्र था। चर्च की इस विशाल सत्ता ने मध्यकाल की संपूर्ण राजनीतिक संरचना और शक्ति संतुलन को गहराई से प्रभावित किया।

150. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
औद्योगिक क्रांति का वास्तविक प्रारंभ 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ग्रेट ब्रिटेन में हुआ था और इसका प्रथम प्रभाव वस्त्र उद्योग में देखा गया। स्पिनिंग जेनी और पावर लूम जैसे नवीन तकनीकी नवाचारों ने धागे की कताई और कपड़ों की बुनाई की प्रक्रिया को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। इन मशीनों के उपयोग से उत्पादन की गति और पैमाने में इतनी अधिक वृद्धि हुई कि हस्तशिल्प कारीगर उनका मुकाबला नहीं कर सके। इस तकनीकी प्रगति ने ही कारखाना प्रणाली की नींव रखी, जिससे वस्त्र उत्पादन सस्ता और सुलभ हुआ, और अंततः पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था में औद्योगिक परिवर्तन का सूत्रपात हुआ।

151. (B) मध्य यूरोप में स्थित जर्मन भाषी राजनीतिक इकाई।
पवित्र रोमन साम्राज्य मध्यकालीन और प्रारंभिक आधुनिक काल के दौरान मध्य यूरोप में स्थित एक अत्यंत जटिल राजनीतिक इकाई थी। इसमें मुख्य रूप से जर्मन भाषी क्षेत्र सम्मिलित थे। यह प्राचीन रोमन साम्राज्य का सीधा विस्तार नहीं था, बल्कि इसकी स्थापना मध्यकाल में ईसाई जगत के राजनीतिक और धार्मिक एकीकरण के प्रयास के रूप में की गई थी। इसके शासक को 'पवित्र रोमन सम्राट' कहा जाता था। यह साम्राज्य अनेक स्वायत्त राज्यों का एक शिथिल महासंघ था, जो 1806 में नेपोलियन द्वारा भंग किए जाने तक यूरोप की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करता रहा।

152. (A) प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार
16वीं शताब्दी के 'धर्म सुधार आंदोलन' को सामान्यतः 'प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार' के रूप में जाना जाता है। यह एक शक्तिशाली धार्मिक आंदोलन था जिसने रोमन कैथोलिक चर्च के एकाधिकार और उसकी कुछ विवादास्पद प्रथाओं के विरुद्ध स्वर मुखर किया। सुधारकों ने बाइबिल के अधिकार और व्यक्तिगत विश्वास पर बल दिया। इस आंदोलन ने ईसाई धर्म को विभाजित कर दिया और अनेक नवीन प्रोटेस्टेंट संप्रदायों को जन्म दिया। इसने न केवल यूरोप के धार्मिक मानचित्र को परिवर्तित किया, बल्कि साक्षरता और आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के उदय को भी गहराई से प्रभावित किया, जिससे मध्यकालीन युग का अंत हुआ।

153. (B) आयात से अधिक निर्यात करना शक्ति का निर्माण करता है।
वणिकवाद का एक मुख्य सिद्धांत यह विश्वास था कि किसी राष्ट्र की आर्थिक शक्ति और समृद्धि उसके द्वारा आयात की तुलना में अधिक निर्यात करने की क्षमता पर निर्भर करती है। इस विचारधारा के अनुसार, व्यापार में अनुकूल संतुलन बनाए रखने से राष्ट्र में सोने और चांदी जैसी कीमती धातुओं का प्रवाह बढ़ता है। इसे प्राप्त करने हेतु सरकारें घरेलू उद्योगों को संरक्षण प्रदान करती थीं और विदेशी सामानों पर भारी कर आरोपित करती थीं। वणिकवाद ने राष्ट्रों के मध्य तीव्र प्रतिस्पर्धा और उपनिवेशवाद को बढ़ावा दिया, क्योंकि प्रत्येक शक्ति अपनी राष्ट्रीय संपत्ति को अधिकतम करने की होड़ में संलग्न थी।

154. (B) राष्ट्रवादी और साम्यवादी।
चीन के 20वीं शताब्दी के इतिहास में दो बड़ी क्रांतियाँ हुईं जिनके वैचारिक परिणाम पूर्णतः भिन्न थे। 1911 की क्रांति, जिसका नेतृत्व सन यात-सेन ने किया था, ने राजशाही को समाप्त कर एक 'राष्ट्रवादी' गणराज्य की स्थापना की थी। इसके विपरीत, 1949 की क्रांति माओत्से तुंग के नेतृत्व में सफल हुई और इसने चीन में 'साम्यवादी' शासन की नींव रखी। 1911 की क्रांति ने चीन को आधुनिक राजनीति से परिचित कराया, जबकि 1949 की क्रांति ने देश की संपूर्ण आर्थिक व्यवस्था को

विघटन ने इन क्षेत्रों में जातीय और राष्ट्रीय पहचान के नए संघर्षों को जन्म दिया और उन औपनिवेशिक एवं शाही व्यवस्थाओं का अंत किया जिन्होंने दीर्घकाल तक शासन किया था।

121. (B) यूरोप का बीमार व्यक्ति का प्रश्न
19वीं और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में 'पूर्वी समस्या' को प्रायः "यूरोप का बीमार व्यक्ति" के प्रश्न के रूप में भी जाना जाता था। यह शब्द मुख्य रूप से ऑटोमन साम्राज्य हेतु प्रयुक्त किया जाता था, जो तीव्र गति से पतन की ओर अग्रसर था। यूरोपीय महाशक्तियों के मध्य मुख्य चिंता यह थी कि यदि यह साम्राज्य पूर्णतः गिर गया, तो उसके क्षेत्रों पर किसका नियंत्रण होगा और यूरोप का शक्ति संतुलन कैसे प्रभावित होगा। इस समस्या ने निरंतर कूटनीतिक तनाव और युद्धों को जन्म दिया, क्योंकि रूस और ब्रिटेन जैसे देश अपनी स्थिति सुदृढ़ करने की होड़ में संलग्न थे।

122. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
समाजवाद का मूल सिद्धांत उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व और आर्थिक समानता स्थापित करना है। वणिकवाद राष्ट्र की शक्ति बढ़ाने हेतु अनुकूल व्यापार अधिशेष और धन संचय पर बल देने वाला आर्थिक विचार है। फासीवाद चरम राष्ट्रवाद और राज्य की असीमित शक्ति का समर्थन करने वाली विचारधारा है जो लोकतंत्र के विरुद्ध है। सामंतवाद मध्यकालीन यूरोप की वह प्रणाली थी जो भूमि धारण और लॉर्ड एवं वैसल के मध्य पारस्परिक दायित्वों के पदानुक्रम पर आधारित थी। ये चारों अवधारणाएं अलग-अलग युगों में सामाजिक और राजनीतिक जीवन को संचालित करने वाले मुख्य स्तंभ रहे हैं।

123. (D) ओतः वॉन बिस्मार्क
इटली के एकीकरण में अनेक प्रमुख इतालवी देशभक्तों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। ग्यूसेप मैजिनी ने वैचारिक आधार तैयार किया, काउंट कावूर ने कूटनीतिक कुशलता से समर्थन जुटाया, और ग्यूसेप गैरीबाल्डी ने सैन्य अभियानों के माध्यम से क्षेत्रों को मुक्त कराया। हालांकि, ओटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का भाग नहीं थे। बिस्मार्क एक प्रशियाई राजनेता थे जिनका मुख्य कार्य जर्मनी का एकीकरण करना था। यद्यपि जर्मनी और इटली के एकीकरण की घटनाएँ समकालीन थीं, परंतु बिस्मार्क का नेतृत्व और प्रभाव केवल जर्मन भाषी क्षेत्रों तक ही सीमित था, न कि इतालवी प्रायद्वीप तक।

124. (B) कई क्षेत्रों में व्यापक ज्ञान रखता है।
'पुनर्जागरण पुरुष' शब्द उस आदर्श व्यक्ति को संदर्भित करता है जो कला, विज्ञान, साहित्य और दर्शन जैसे अनेक विविध क्षेत्रों में असाधारण ज्ञान और प्रतिभा रखता है। यह अवधारणा पुनर्जागरण काल के मानवतावादी आदर्शों से उद्भूत हुई है, जो व्यक्ति के पूर्ण विकास पर बल देते थे। लियोनार्डो द विंची इसके सबसे उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं, जो चित्रकार, आविष्कारक और वैज्ञानिक भी थे। ऐसा व्यक्ति अपनी बौद्धिक जिज्ञासा और बहुमुखी प्रतिभा के माध्यम से मानव की असीम क्षमताओं का प्रदर्शन करता है, जो मध्यकालीन संकुचित विचारधारा के बिल्कुल विपरीत था।

125. (D) राष्ट्र संघ
संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 1945 में 'राष्ट्र संघ' की विफलता से प्राप्त कड़वे अनुभवों के पश्चात की गई थी। राष्ट्र संघ प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात निर्मित किया गया था, परंतु वह आक्रामक देशों को रोकने और द्वितीय विश्व युद्ध के विनाश को टालने में पूर्णतः असमर्थ रहा था। संयुक्त राष्ट्र के संस्थापकों ने इस पूर्ववर्ती संगठन की निर्बलताओं, जैसे कि सैन्य शक्ति का अभाव, को दूर करने का प्रयास किया। एक नवीन और अधिक प्रभावी अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था निर्मित करने का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि भविष्य में राष्ट्रों के मध्य विवादों का समाधान कूटनीति के माध्यम से हो।

126. (B) केवल 1 और 2
द्वितीय विश्व युद्ध के उदय के पीछे हिटलर के जर्मनी की अत्यंत आक्रामक और विस्तारवादी नीतियां सबसे प्रमुख कारण थीं, जिसका उद्देश्य संपूर्ण यूरोप पर प्रभुत्व स्थापित करना था। इसके साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय, विशेषतः ब्रिटेन और फ्रांस, द्वारा अपनाई गई तुष्टीकरण की नीति इस आक्रामकता को समय पर चुनौती देने में पूर्णतः विफल रही। हालांकि, यह दावा करना गलत है कि वाइमर गणराज्य के तहत जर्मनी आर्थिक रूप से स्थिर था। इसके विपरीत, वहां की भीषण आर्थिक बदहाली और मुद्रास्फीति ने ही लोगों को हताशा में हिटलर जैसे कट्टरपंथी नेता का समर्थन करने हेतु प्रेरित किया था।

127. (B) कार्यपालिका और विधायी शक्तियों का संलयन।
संसदीय लोकतंत्र की एक विशिष्ट विशेषता कार्यपालिका और विधायिका के मध्य शक्तियों का संलयन है। इस प्रणाली में कार्यपालिका के सदस्य संसद के भी सदस्य होते हैं और वे सीधे तौर पर विधायिका के प्रति उत्तरदायी होते हैं। सरकार तभी तक सत्ता में रह सकती है जब तक उसे संसद के निचले सदन का विश्वास प्राप्त हो। यह व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि सरकार के कार्यों पर जनप्रतिनिधियों का निरंतर नियंत्रण बना रहे। यह प्रणाली शक्तियों के पूर्ण पृथक्करण वाली अध्यक्षीय प्रणाली से भिन्न है और उत्तरदायी शासन का एक प्रभावी माध्यम प्रदान करती है।

128. (B) औद्योगिक क्रांति द्वारा उत्पन्न स्थितियाँ।
समाजवाद की विचारधारा का उदय और विकास मुख्य रूप से 19वीं शताब्दी की औद्योगिक क्रांति के नकारात्मक परिणामों के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन में तो वृद्धि की, परंतु इसने श्रमिकों के भीषण शोषण, अत्यधिक निर्धनता और समाज में गहरी आर्थिक असमानता को भी जन्म दिया। समाजवादी विचारकों ने तर्क दिया कि उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व ही इन समस्त समस्याओं की जड़ है। उन्होंने एक ऐसी व्यवस्था का प्रस्ताव किया जहाँ संसाधनों का स्वामित्व समाज या राज्य के पास हो ताकि सभी हेतु समान आर्थिक अवसर सुनिश्चित हों।

129. (C) ऑटोमन साम्राज्य के विरुद्ध रूस के लाभ को सीमित करना।
1878 की बर्लिन कांग्रेस का मुख्य राजनयिक उद्देश्य रूस और ऑटोमन साम्राज्य के मध्य हुए युद्ध के पश्चात रूस द्वारा प्राप्त

95. (B) एक लॉर्ड द्वारा एक वैसल को दी गई भूमि की संपत्ति।
सामंतवाद की व्यवस्था में 'फीफ' वह भूमि या संपत्ति थी जिसे एक शक्तिशाली लॉर्ड अपने अधीन किसी वैसल को उसकी सैन्य सेवा और निष्ठा के बदले में प्रदान करता था। यह भूमि केवल संपत्ति नहीं थी, बल्कि वैसल की शक्ति और सामाजिक स्थिति का आधार भी थी। इस फीफ पर वैसल का प्रशासनिक अधिकार होता था, और वह वहां रहने वाले कृषकों से राजस्व वसूलता था। यह लॉर्ड और वैसल के मध्य के अनुबंध का मुख्य केंद्र था, जो पूरे सामंती पदानुक्रम और मध्यकालीन यूरोप की संपूर्ण आर्थिक व्यवस्था को संचालित करता था।

96. (B) संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन।
द्वितीय विश्व युद्ध का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी परिणाम 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन था। युद्ध की अभूतपूर्व तबाही ने विश्व के नेताओं को यह विश्वास दिलाया कि अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने हेतु एक प्रभावी वैश्विक संस्था का होना अनिवार्य है। संयुक्त राष्ट्र को भविष्य में ऐसे युद्धों को रोकने और राष्ट्रों के मध्य सहयोग को बढ़ावा देने के मिशन के साथ स्थापित किया गया था। इसने पुराने राष्ट्र संघ का स्थान लिया और तब से यह वैश्विक कूटनीति, मानवाधिकारों की रक्षा और संघर्ष समाधान हेतु मुख्य अंतर्राष्ट्रीय मंच है।

97. (B) रोमन साम्राज्य
दास प्रथा की संस्था प्राचीन रोमन साम्राज्य की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना की एक आधारभूत विशेषता थी। रोमन समाज और उसकी आर्थिक समृद्धि काफी हद तक दासों द्वारा किए गए श्रम पर निर्भर थी, जो कृषि, खनन और घरेलू कार्यों में नियोजित थे। युद्धों में विजय के माध्यम से बड़ी संख्या में दासों को लाया जाता था, जिन्हें कानूनन संपत्ति माना जाता था। रोमन साम्राज्य के उत्थान और उसके विशाल निर्माण कार्यों में इस बंधुआ श्रम की महत्वपूर्ण भूमिका रही। यह व्यवस्था उस युग के कानून और उत्पादन प्रणाली का एक अनिवार्य अंग बनी रही थी।

98. (C) फ्रांसीसी क्रांति
नेपोलियन बोनापार्ट का सत्ता में उदय सबसे सीधे तौर पर 1789 की फ्रांसीसी क्रांति का परिणाम था। क्रांति के पश्चात फ्रांस में जो राजनीतिक अस्थिरता, निरंतर युद्ध और अराजकता का दौर चला, उसने एक शक्तिशाली और कुशल सैन्य नेता हेतु अवसर निर्मित किया। नेपोलियन ने क्रांतिकारी आदर्शों और अपनी सैन्य प्रतिभा का उपयोग कर जनता का विश्वास प्राप्त किया और अंततः सत्ता हस्तगत की। उन्होंने क्रांति के अनेक प्रशासनिक और कानूनी सुधारों को संपूर्ण यूरोप में प्रसारित किया। नेपोलियन के बिना फ्रांसीसी क्रांति का इतिहास और उसका वैश्विक प्रभाव अपूर्ण है।

99. (C) वणिकवाद
वणिकवाद एक ऐसी आर्थिक नीति है जो व्यापार के सकारात्मक संतुलन के माध्यम से राष्ट्र की संपत्ति बढ़ाने पर बल देती है। इसमें राष्ट्र स्वर्ण और रजत के भंडार को संचित करने हेतु निर्यात को प्रोत्साहित और आयात को प्रतिबंधित करने वाली संरक्षणवादी नीतियां अपनाते हैं। उपनिवेशवाद इस नीति का एक अनिवार्य भाग था, जहाँ उपनिवेशों का उपयोग कच्चे माल की आपूर्ति और निर्मित माल हेतु एक सुरक्षित बाजार के रूप में किया जाता था। 16वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य यूरोपीय शक्तियों की वैश्विक व्यापारिक होड़ इसी वणिकवादी विचारधारा से गहराई से प्रेरित थी।

100. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
बिस्मार्क के नेतृत्व में 1871 में जर्मनी के एकीकरण ने वास्तव में यूरोप के शक्ति संतुलन को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। नवगठित जर्मन साम्राज्य कोई निर्बल राज्य नहीं था, बल्कि यह यूरोप की सबसे बड़ी सैन्य और औद्योगिक शक्ति के रूप में उभरा। इसकी तीव्र आर्थिक प्रगति और आधुनिक सेना ने ब्रिटेन और फ्रांस जैसी स्थापित शक्तियों हेतु एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत की। जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क की कुशल कूटनीति और प्रशिया की सैन्य श्रेष्ठता की विजय थी, जिसने आने वाले दशकों में संपूर्ण वैश्विक राजनीति के स्वरुप को ही परिवर्तित कर दिया।

101. (A) 3, 1, 4, 2
ऐतिहासिक घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम उनके विकास को समझने में सहायक होता है। सर्वप्रथम 14वीं शताब्दी के मध्य में 'ब्लैक डेथ' महामारी फैली, जिसने मध्यकालीन समाज को झकझोर दिया। इसके पश्चात पुनर्जागरण काल आया, जिसने कला और चिंतन में नवीन चेतना जागृत की। फिर 1789 में फ्रांसीसी क्रांति हुई, जिसने आधुनिक लोकतंत्र और समानता के विचार प्रदान किए। अंततः, 20वीं शताब्दी की शुरुआत में प्रथम विश्व युद्ध हुआ, जिसने विश्व की राजनीतिक संरचना को परिवर्तित किया। यह क्रम सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों के सफर को दर्शाता है।

102. (C) योग्यतातंत्र
अभिजाततंत्र की अवधारणा शासन के अधिकार को जन्म और वंशानुगत विशेषाधिकारों से जोड़ती है, जो इसे आधुनिक 'योग्यतातंत्र' के बिल्कुल विपरीत खड़ा करती है। योग्यतातंत्र एक ऐसी प्रणाली है जहाँ शक्ति, पद और अवसर व्यक्ति की क्षमता, प्रतिभा और परिश्रम के आधार पर दिए जाते हैं, न कि उसके परिवार या सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर। आधुनिक लोकतंत्र और प्रशासनिक प्रणालियाँ योग्यतातंत्र के आदर्शों पर आधारित हैं, जो मानती हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता सिद्ध करने का समान अवसर प्राप्त होना चाहिए। यह निष्पक्षता का आधार है।

103. (B) समाज और तकनीक को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया।
औद्योगिक क्रांति को 'क्रांति' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसने मानव समाज, अर्थव्यवस्था और तकनीक को इतनी गहराई से परिवर्तित किया कि उसकी तुलना केवल कृषि की खोज से की जा सकती है। इसने उत्पादन के तरीकों को हस्तशिल्प से मशीनों की ओर और घरों से विशाल कारखानों की ओर स्थानांतरित कर दिया। इस परिवर्तन ने न केवल आर्थिक विकास को तीव्र किया, बल्कि शहरीकरण, नवीन सामाजिक वर्गों के उदय और जीवन स्तर में भी मौलिक बदलाव लाए।

138. (C) फ्रेंको-प्रशिया युद्ध
जर्मनी का एकीकरण 1871 में फ्रेंको-प्रशिया युद्ध में प्रशिया की निर्णायक विजय के पश्चात पूर्ण हुआ था। बिस्मार्क ने कुशलता से फ्रांस को युद्ध हेतु प्रेरित किया, जिससे दक्षिण जर्मन राज्य उत्तर जर्मन परिसंघ के साथ प्रशिया के नेतृत्व में एकजुट हो गए। सेडान के युद्ध में फ्रांस की पराजय ने नेपोलियन III के साम्राज्य का अंत कर दिया और वर्साय के महल में जर्मन साम्राज्य की घोषणा का मार्ग प्रशस्त किया। इस युद्ध ने न केवल एक नवीन और शक्तिशाली जर्मनी को जन्म दिया, बल्कि यूरोप के शक्ति संतुलन को भी फ्रांस से हटाकर जर्मनी की ओर स्थानांतरित कर दिया।

139. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
विभिन्न सामाजिक-आर्थिक प्रणालियाँ विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों से गहराई से संबद्ध रही हैं। जमींदारी प्रणाली मुख्य रूप से भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्रमुख राजस्व व्यवस्था थी। पुनर्जागरण की उत्पत्ति 14वीं शताब्दी में इटली के समृद्ध नगर-राज्यों, जैसे फ्लोरेंस, में हुई थी। नाजीवाद 20वीं शताब्दी के जर्मनी की एक विनाशकारी राजनीतिक विचारधारा थी। सामंतवाद अपने शास्त्रीय रूप में मध्यकालीन पश्चिमी यूरोप की मुख्य राजनीतिक और सामाजिक संरचना थी। इन अवधारणाओं के वैश्विक इतिहास में उनके विशिष्ट क्षेत्रों के साथ संबंधों को समझना उनके विकास को जानने हेतु अनिवार्य है।

140. (B) मध्यकालीन मानदंडों को चुनौती देने वाला एक सांस्कृतिक पुनर्जन्म।
पुनर्जागरण का सबसे सटीक सार यह है कि यह एक व्यापक सांस्कृतिक, बौद्धिक और कलात्मक पुनर्जन्म था जिसने मध्यकालीन रुढ़ियों और चर्च के नियंत्रण को चुनौती दी। इसने मानव की तर्कशक्ति, रचनात्मकता और मानवतावाद पर बल दिया। इस आंदोलन ने प्राचीन ग्रीक और रोमन ज्ञान को पुनः खोजा और उसे आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया। इसने विज्ञान, साहित्य और कला के क्षेत्र में नवीन चेतना जागृत की, जिससे व्यक्ति को विश्व को देखने का एक नया दृष्टिकोण प्राप्त हुआ। यह परिवर्तन ही मध्यकाल के अंत और आधुनिक युग की शुरुआत का सबसे बड़ा सूचक बना।

141. (A) ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य
प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक और विस्फोटक कारण 28 जून, 1914 को साराजेवो में ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य के राजकुमार और उत्तराधिकारी, आर्कड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड की हत्या थी। उन्हें एक सर्बियाई राष्ट्रवादी ने मार दिया था, जिससे ऑस्ट्रिया-हंगरी और सर्बिया के मध्य तनाव चरम पर पहुँच गया। इस क्षेत्रीय विवाद ने यूरोप की जटिल सैन्य गठबंधन प्रणाली को सक्रिय कर दिया, जिससे शीघ्र ही रुस, जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन जैसे देश इस युद्ध में खिंचे चले आए। इस प्रकार, एक राजकुमार की हत्या ने विश्व इतिहास के सबसे भीषण संघर्षों में से एक की चिंगारी भड़का दी।

142. (C) भूमि धारण पर आधारित दायित्व।
सामंतवाद की प्रणाली का मुख्य आधार भूमि का स्वामित्व और उस पर टिके पारस्परिक दायित्वों का जाल था। इस व्यवस्था में समाज एक पिरामिड की तरह संगठित था, जहाँ सबसे ऊपर लॉर्ड होता था जो अपने वैसल्स को सुरक्षा के बदले भूमि प्रदान करता था। वैसल अपने लॉर्ड के प्रति सैन्य सेवा और निष्ठा हेतु बाध्य थे। सबसे निचले स्तर पर किसान थे जो भूमि से जुड़े थे और वहां कार्य करने के बदले सुरक्षा पाते थे। यह एक विकेंद्रीकृत प्रणाली थी जहाँ राजनीतिक शक्ति और आर्थिक जीवन पूर्णतः भूमि के इर्द-गिर्द केंद्रित था।

143. (D) 1, 2 और 3
फ्रांसीसी क्रांति किसी एक कारण का परिणाम नहीं थी, बल्कि अनेक कारकों के मेल से उत्पन्न हुई थी। प्रबोधन के विचारकों ने स्वतंत्रता और समानता की नवीन चेतना जगाई, जिसने राजशाही के औचित्य को चुनौती दी। उसी समय, फ्रांस का राज्य निरंतर युद्धों के कारण वित्तीय संकट में डूबा था। इसके साथ ही, समाज की कठोर तीन एस्टेट वाली संरचना, जहाँ जनसामान्य पर भारी कर थे और कुलीनों को विशेषाधिकार प्राप्त थे, ने जनता के असंतोष को चरम पर पहुँचा दिया। इन समस्त कारणों ने मिलकर एक ऐसी विस्फोटक स्थिति निर्मित की जिसने क्रांति को अपरिहार्य बना दिया।

144. (B) पूंजीवादी व्यवस्था और निजी संपत्ति।
समाजवाद एक ऐसी राजनीतिक विचारधारा है जो पूंजीवादी व्यवस्था और उत्पादन के साधनों पर निजी संपत्ति के एकाधिकार की सर्वाधिक कड़ी आलोचना करती है। समाजवादियों का मानना है कि निजी लाभ पर आधारित पूंजीवाद अनिवार्य रूप से श्रमिकों के शोषण और समाज में गहरी आर्थिक असमानता को जन्म देता है। वे एक ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था का प्रस्ताव देते हैं जहाँ संसाधनों का स्वामित्व सामूहिक या सार्वजनिक हो, ताकि धन का वितरण न्यायसंगत हो सके। समाजवाद व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सामाजिक सहयोग और सार्वजनिक कल्याण के सिद्धांतों को आर्थिक जीवन का आधार बनाने पर बल देता है।

145. (A) संकट के दौरान अधिनायकवादी समाधानों की अपील।
1920 और 1930 के दशक में जर्मनी और इटली में हिटलर और मुसोलिनी जैसे तानाशाहों का उदय स्पष्ट करता है कि गंभीर संकट के समय लोग प्रायः कठोर अधिनायकवादी समाधानों की ओर आकर्षित होते हैं। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात की आर्थिक बदहाली और राष्ट्रीय अपमान की भावना ने लोकतांत्रिक संस्थाओं में विश्वास को दुर्बल कर दिया था। इन तानाशाहों ने व्यवस्था, सुरक्षा और राष्ट्रीय गौरव की पुनर्स्थापना का वचन दिया, जो त्रस्त जनता को आकर्षक लगा। यह कालखंड दर्शाता है कि सामाजिक और आर्थिक अस्थिरता किस प्रकार लोकतंत्र हेतु संकट उत्पन्न कर सकती है और तानाशाही को जन्म दे सकती है।

146. (C) 1917 की रुसी क्रांति
1917 की रुसी क्रांति विश्व इतिहास की एक युगांतरकारी घटना थी क्योंकि इसने प्रथम सफल साम्यवादी राज्य, सोवियत संघ, की स्थापना की। व्लादिमीर लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने पूंजीवादी व्यवस्था और राजशाही के अवशेषों को समाप्त कर उत्पादन के साधनों पर सार्वजनिक नियंत्रण स्थापित किया।

112. (A) सामंतवाद
पश्चिमी यूरोप में औद्योगिक पूंजीवाद के उदय से पूर्व की प्रमुख सामाजिक प्रणाली को सामंतवाद के रूप में जाना जाता है। यह प्रणाली मुख्य रूप से भूमि के स्वामित्व और उस पर आधारित पदानुक्रमित संबंधों की विशेषता रखती थी। इस युग में अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान थी और व्यापार मुख्य रूप से स्थानीय श्रेणियों तक सीमित था। समाज में भूमि-आधारित अभिजात वर्ग का प्रभुत्व था और उत्पादक वर्ग, विशेषतः किसान, अपने स्वामियों के प्रति विभिन्न दायित्वों से बंधे थे। औद्योगिक क्रांति ने इस पुरानी सामंती संरचना को ध्वस्त कर आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था की नींव रखी।

113. (C) केवल विश्वास के माध्यम से मुक्ति।
16वीं शताब्दी के धर्म सुधार आंदोलन का एक सबसे बुनियादी और क्रांतिकारी विचार यह था कि ईश्वर की अनुकंपा और मुक्ति केवल व्यक्तिगत विश्वास के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। सुधारकों, विशेषतः मार्टिन लूथर ने तर्क दिया कि मुक्ति हेतु चर्च के कर्मकांडों या पुरोहितों की मध्यस्थता अनिवार्य नहीं है। इस विचार ने धार्मिक जीवन में व्यक्ति की स्वायत्तता और धर्मग्रंथों के सीधे अध्ययन पर बल दिया। इसने रोमन कैथोलिक चर्च के सदियों पुराने आध्यात्मिक एकाधिकार को भंग कर दिया और ईसाई धर्म के भीतर एक नवीन वैचारिक युग की शुरुआत की।

114. (D) जस्टिनियन की संहिता के सिद्धांत
रोमन साम्राज्य की सबसे स्थायी कानूनी विरासत 'जस्टिनियन की संहिता' में समाहित है। सम्राट जस्टिनियन द्वारा संकलित इन सिद्धांतों ने रोमन कानून को एक व्यवस्थित और तार्किक रूप प्रदान किया। इसमें नागरिक अधिकारों, अनुबंधों और न्याय के प्रशासन के स्पष्ट नियम निर्धारित किए गए थे। इन सिद्धांतों ने बाद में पश्चिमी यूरोप की कानूनी प्रणालियों के विकास हेतु आधार प्रदान किया। आज भी आधुनिक न्यायशास्त्र के अनेक मूलभूत तत्व, जैसे कानूनों का वर्गीकरण और व्यवस्थित संहिताबद्धता, सीधे तौर पर इसी रोमन साम्राज्य के ऐतिहासिक और बौद्धिक योगदान से प्रेरित हैं।

115. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
1949 की चीनी क्रांति वास्तव में माओत्से तुंग के नेतृत्व में साम्यवादी दल को सत्ता में लेकर आई और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की स्थापना हुई। हालांकि, यह क्रांति 1911 में किंग राजवंश के पतन का 'तत्काल' परिणाम नहीं थी। 1911 और 1949 के मध्य लगभग चार दशकों का लंबा अंतराल था, जो आंतरिक अस्थिरता, युद्ध सरदारों के शासन, जापान के साथ युद्ध और राष्ट्रवादियों एवं साम्यवादियों के मध्य भीषण गृहयुद्ध से परिपूर्ण था। 1949 की सफलता इसी लंबे संघर्ष और बदलती वैश्विक परिस्थितियों की परिणति थी, न कि राजवंश के अंत की तात्कालिक घटना।

116. (C) संसदीय लोकतंत्र
नाजीवाद का राजनीतिक दर्शन मौलिक रूप से संसदीय लोकतंत्र के सिद्धांतों के साथ पूर्णतः असंगत और उनका विरोधी है। नाजीवाद एक सर्वसत्तावादी विचारधारा है जो 'एक नेता, एक राष्ट्र' के सिद्धांत पर बल देती है और बहुदलीय प्रणाली तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को राष्ट्र की एकता हेतु घातक मानती है। जबकि राष्ट्रवाद, सैन्यवाद और अधिनायकवाद नाजीवाद के अनिवार्य स्तंभ हैं, संसदीय लोकतंत्र इसके विपरीत जनता की इच्छा और शक्तियों के विकेंद्रीकरण की बात करता है। हिटलर ने सत्ता में आने के पश्चात लोकतांत्रिक संस्थाओं को सर्वप्रथम नष्ट किया था ताकि उसकी तानाशाही सुचारु चल सके।

117. (C) "बिना प्रतिनिधित्व के कराधान" पर शिकायतें।
1776 की अमेरिकी क्रांति का सबसे प्राथमिक और प्रेरक कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा उपनिवेशों पर आरोपित अनुचित कर थे। अमेरिकी उपनिवेशवासी इस बात से अत्यधिक क्रोधित थे कि लंदन की संसद, जहाँ उनका कोई प्रतिनिधि नहीं था, उन पर कर थोप रही थी। "बिना प्रतिनिधित्व के कराधान नहीं" का नारा इस असंतोष की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति बन गया। वे स्वयं को ब्रिटिश नागरिक मानते थे और शासन में समान अधिकार चाहते थे। जब ब्रिटिश सरकार ने इन शिकायतों को उपेक्षित किया, तो यह संवैधानिक विवाद अंततः स्वतंत्रता हेतु एक सशस्त्र विद्रोह और क्रांति में परिवर्तित हो गया।

118. (A) फ्रांसीसी क्रांति के अंत और वियना कांग्रेस के बीच।
नेपोलियन बोनापार्ट का ऐतिहासिक युग फ्रांसीसी क्रांति के समापन चरणों से प्रारंभ होकर 1815 की वियना कांग्रेस तक विस्तृत है। वह क्रांति के पश्चात फैली अराजकता के मध्य एक शक्तिशाली सैन्य नेता के रूप में उभरा और 1804 में स्वयं को सम्राट घोषित किया। उसके विजय अभियानों ने संपूर्ण यूरोप की सीमाओं को परिवर्तित कर दिया और क्रांतिकारी आदर्शों का प्रसार किया। अंततः, वाटरलू के युद्ध में उसकी पराजय के पश्चात, 1815 में वियना कांग्रेस द्वारा यूरोप में पुनः व्यवस्था और राजतंत्रों की स्थापना की गई। यह कालखंड क्रांति और साम्राज्य निर्माण को दर्शाता है।

119. (C) महाशक्तियों के रूप में अमेरिका और सोवियत संघ का उदय।
द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे निर्णायक परिणाम वैश्विक शक्ति संतुलन में आया बुनियादी परिवर्तन था। युद्ध ने पुरानी यूरोपीय शक्तियों—ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी—को आर्थिक और सैन्य रूप से जर्जर कर दिया। उनके स्थान पर संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ दो नई 'महाशक्तियों' के रूप में उभरे। इन दोनों के मध्य वैचारिक भिन्नता ने शीघ्र ही शीत युद्ध के युग की शुरुआत की, जिसने अगले अनेक दशकों तक संपूर्ण दुनिया को दो प्रतिस्पर्धी गुटों में विभाजित कर दिया। इसके साथ ही, वि-उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया भी तीव्र हुई, जिससे एशिया और अफ्रीका में नए राष्ट्रों का उदय हुआ।

120. (D) ऑटोमन और ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्यों का पतन।
प्रथम विश्व युद्ध का एक सीधा और अत्यंत महत्वपूर्ण प्रभाव सदियों पुराने विशाल साम्राज्यों का पतन था। इस युद्ध के कारण ऑटोमन साम्राज्य और ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य का पूर्ण विघटन हो गया, जिससे मध्य यूरोप और मध्य पूर्व का राजनीतिक मानचित्र पूर्णतः परिवर्तित हो गया। इन साम्राज्यों के अवशेषों पर अनेक नए राष्ट्रों का निर्माण हुआ, जैसे पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया और आधुनिक तुर्की। इस

समाजवादी सिद्धांतों के अनुरूप परिवर्तित कर दिया। ये दोनों आधुनिक चीन के निर्माण के सबसे महत्वपूर्ण चरण हैं।

155. (A) क्रांति-पूर्व राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था।
1815 की वियना कांग्रेस में 'पुरातन व्यवस्था' को बहाल करने का प्रयास किया गया था, जो मुख्य रूप से 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से पूर्व यूरोप में प्रचलित राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था को संदर्भित करती है। इस व्यवस्था में निरंकुश राजतंत्र का शासन था और समाज कठोर वर्गीय विशेषाधिकारों पर आधारित था। वियना कांग्रेस के नेताओं का मानना था कि क्रांति द्वारा प्रसारित उदारवादी और राष्ट्रवादी विचार यूरोप की शांति हेतु संकट हैं। अतः उन्होंने पुराने राजवंशों को सत्ता में लौटाने और पारंपरिक शक्ति संरचनाओं को पुनः स्थापित करने का लक्ष्य रखा ताकि समाज को यथास्थिति में लाया जा सके।

156. (A) पतनशील ऑटोमन साम्राज्य का भविष्य।
19वीं शताब्दी की 'पूर्वी समस्या' मुख्य रूप से गिरते हुए ऑटोमन साम्राज्य के भविष्य को लेकर थी। इस मुद्दे ने ब्रिटेन और रूस जैसी महाशक्तियों के मध्य गंभीर प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया क्योंकि दोनों के हित परस्पर विरोधी थे। रूस बाल्कन क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाकर भूमध्य सागर तक पहुँच प्राप्त करना चाहता था, जबकि ब्रिटेन को भय था कि इससे उसका व्यापारिक मार्ग असुरक्षित हो जाएगा। ब्रिटेन ऑटोमन साम्राज्य की अखंडता को बनाए रखने का पक्षधर था ताकि रूसी विस्तार को रोका जा सके। महाशक्तियों की कूटनीतिक चालों और बाल्कन के राष्ट्रवाद ने मिलकर इस समस्या को अत्यंत जटिल बना दिया।

157. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
विश्व इतिहास के प्रमुख संघर्ष विशिष्ट वैचारिक और राजनीतिक मुद्दों से संबद्ध रहे हैं। क्रीमिया युद्ध 'पूर्वी समस्या' और ऑटोमन साम्राज्य की रक्षा से संबंधित था। अमेरिकी क्रांति उपनिवेशों द्वारा ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त करने का एक सफल संघर्ष था। फ्रेंको-प्रशिया युद्ध ने फ्रांस को पराजित कर बिस्मार्क के नेतृत्व में जर्मनी के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया। प्रथम विश्व युद्ध साम्राज्यवाद, उग्र राष्ट्रवाद और यूरोप की जटिल सैन्य गठबंधन प्रणालियों की परिणति था। इन युद्धों के कारणों और परिणामों को समझना आधुनिक विश्व के राजनीतिक विकास और सीमाओं के निर्धारण की प्रक्रिया को जानने हेतु अनिवार्य है।

158. (D) सामंतवाद की स्थापना
राष्ट्रवाद एक शक्तिशाली विचारधारा है जिसने 19वीं और 20वीं शताब्दी में अनेक महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तनों को प्रेरित किया। इसने इटली और जर्मनी के एकीकरण में मुख्य भूमिका निभाई। बाल्कन युद्ध भी विभिन्न जातीय समूहों की अपनी स्वतंत्र राष्ट्र निर्मित करने की राष्ट्रवादी आकांक्षाओं का परिणाम थे। हालांकि, सामंतवाद की स्थापना राष्ट्रवाद से संबद्ध नहीं थी। सामंतवाद एक मध्यकालीन प्रणाली थी जो भूमि के स्वामित्व और व्यक्तिगत निष्ठा के पदानुक्रम पर आधारित थी, और यह राष्ट्र-राज्य की आधुनिक अवधारणा के उभरने से बहुत पूर्व विकसित हुई थी। राष्ट्रवाद के उदय ने सामंतवाद को समाप्त किया।

159. (A) एक लेनदार राष्ट्र के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका का उदय।
प्रथम विश्व युद्ध के सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक परिणामों में से एक वैश्विक वित्तीय शक्ति का यूरोप से अमेरिका की ओर स्थानांतरण था। युद्ध से पूर्व अमेरिका पर यूरोप का ऋण था, परंतु युद्ध के दौरान उसने मित्र राष्ट्रों को भारी मात्रा में रसद और ऋण उपलब्ध कराया। युद्ध की समाप्ति तक, अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा 'लेनदार राष्ट्र' बन गया, जबकि प्रमुख यूरोपीय शक्तियाँ गहरे ऋण में डूब गईं। इस परिवर्तन ने अमेरिका को एक महान शक्ति के रूप में स्थापित किया और न्यूयॉर्क को लंदन के स्थान पर विश्व के मुख्य वित्तीय केंद्र के रूप में खड़ा कर दिया। इसने अमेरिकी प्रधानता की नींव रखी।

160. (B) केवल 1 और 3
फासीवाद और नाजीवाद दोनों ही सर्वसत्तावादी विचारधाराएं थीं जिन्होंने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को राज्य के अधीन कर दिया और लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया। हालांकि, ये विचारधाराएं कभी अंतरराष्ट्रीयतावादी नहीं थीं; इसके विपरीत, ये उग्र राष्ट्रवाद पर आधारित थीं और साम्यवाद के अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक एकजुटता के विचार की कट्टर विरोधी थीं। नाजीवाद का एक विशिष्ट तत्व इसकी चरम नस्लीय विचारधारा थी, जो यहूदियों के व्यवस्थित उत्पीड़न पर आधारित थी। जबकि इतालवी फासीवाद राज्य की शक्ति पर केंद्रित था, नाजीवाद ने जैविक आधार पर समाज के शुद्धिकरण को अपनी राजनीति का मुख्य केंद्र बनाया।

161. (C) वर्साय की संधि
द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारणों में से एक वर्साय की संधि की वह विफलता थी जिसमें वह यूरोप में स्थायी और न्यायपूर्ण शांति स्थापित नहीं कर सकी। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात हस्ताक्षरित इस संधि ने जर्मनी पर अत्यंत अपमानजनक शर्तें और भारी आर्थिक क्षतिपूर्ति आरोपित की, जिससे वहां गहरा असंतोष और उग्र राष्ट्रवाद उत्पन्न हुआ। इस अपमान ने हिटलर जैसे कट्टरपंथी नेताओं के उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया। संधि द्वारा निर्मित 'राष्ट्र संघ' के पास भी आक्रामकता को रोकने हेतु आवश्यक शक्ति का अभाव था। इस प्रकार, वर्साय की संधि ने शांति के स्थान पर उन शिकायतों को जन्म दिया जिन्होंने महायुद्ध की नींव रखी।

162. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना वास्तव में द्वितीय विश्व युद्ध की भीषण तबाही के विरुद्ध एक वैश्विक प्रतिक्रिया थी, जिसका लक्ष्य भविष्य के युद्धों को रोकना था। हालांकि, यह तर्क पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि इसका प्राथमिक लक्ष्य सोवियत संघ के विरुद्ध एक सैन्य गठबंधन के रूप में कार्य करना था। इसके विपरीत, संयुक्त राष्ट्र को एक समावेशी वैश्विक मंच के रूप में निर्मित किया गया था जहाँ समस्त राष्ट्र, चाहे उनकी विचारधारा कुछ भी हो, शांति और सहयोग हेतु मिलकर कार्य कर सकें। सोवियत संघ स्वयं संयुक्त राष्ट्र का एक संस्थापक सदस्य और सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य था, जो इसके सामूहिक सुरक्षा सिद्धांत को दर्शाता है।

163. (A) मुद्रा-आधारित अर्थव्यवस्था का उदय और नगरों का विकास।
यूरोप में सामंतवाद के पतन की प्रक्रिया अनेक परिवर्तनों के कारण तीव्र हुई, जिनमें मुद्रा-आधारित अर्थव्यवस्था का उदय प्रमुख था। जैसे-जैसे व्यापार का विस्तार हुआ और नवीन नगर विकसित हुए, भूमि के स्थान पर धन विनिमय का मुख्य साधन बन गया। इसने कृषकों को अपने सामंती दायित्वों को नकद भुगतान में परिवर्तित करने या स्वतंत्र होने का अवसर प्रदान किया। नगरों में रोजगार के अवसरों ने किसानों को जमींदारों के नियंत्रण से निकलने हेतु प्रेरित किया। इन आर्थिक बदलावों ने पुराने भूमि-आधारित पदानुक्रम को दुर्बल कर दिया और एक नवीन सामाजिक व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त किया जो अधिक गतिशील और शहरी थी।

164. (C) शास्त्रीय ग्रीक और रोमन संस्कृति तथा विद्या।
'पुनर्जागरण' का शाब्दिक अर्थ 'पुनर्जन्म' है, और यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इस काल के विचारकों ने प्राचीन ग्रीक और रोमन सभ्यता की महान संस्कृतियों और विद्याओं को पुनः खोजने और पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। मध्यकाल के दौरान जो शास्त्रीय ज्ञान लुप्त हो गया था, उसे पुनर्जागरण के दौरान मानवतावाद, कला और विज्ञान के माध्यम से नवीन जीवन प्राप्त हुआ। इस आंदोलन ने मध्यकालीन धार्मिक कट्टरता के स्थान पर तर्क और मानवीय अनुभव को केंद्र में रखा। यूनान और रोम के दार्शनिकों और कलाकारों से प्रेरणा लेकर यूरोप ने एक नवीन बौद्धिक युग में प्रवेश किया, जिसने आधुनिक पश्चिमी सभ्यता की आधारशिला रखी।

165. (B) फ्रांसीसी क्रांति
'आतंक का शासन' 1793 से 1794 के मध्य फ्रांसीसी क्रांति का एक अत्यंत कट्टरपंथी और हिंसक चरण था। मैक्सिमिलियन रोबेस्पिएर के नेतृत्व में क्रांतिकारी सरकार ने क्रांति के शत्रुओं का दमन करने हेतु गिलोटिन का व्यापक उपयोग किया। इस अवधि में हजारों व्यक्तियों को मृत्युदंड दिया गया, जिनमें राजा और रानी भी सम्मिलित थे। हालांकि इसका उद्देश्य गणतंत्र की रक्षा करना था, परंतु इस अत्यधिक हिंसा ने जनता में भय उत्पन्न किया और अंततः स्वयं रोबेस्पिएर के पतन का कारण बनी। यह दौर क्रांति के उस विरोधाभास को दर्शाता है जहाँ स्वतंत्रता के नाम पर चरम निरंकुशता और दमन का सहारा लिया गया था।

166. (B) रूसी (1917) और चीनी (1949)
20वीं शताब्दी की दो सर्वाधिक प्रभावशाली क्रांतियाँ 1917 की रूसी क्रांति और 1949 की चीनी क्रांति थीं, जिनके परिणामस्वरूप साम्यवादी राज्यों की स्थापना हुई। 1917 की क्रांति ने जार के शासन को समाप्त कर सोवियत संघ की नींव रखी। इसके पश्चात, 1949 में माओत्से तुंग के नेतृत्व में चीनी साम्यवादियों ने गृहयुद्ध में विजय प्राप्त कर 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' की स्थापना की। इन दोनों क्रांतियों ने कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों को व्यवहार में लागू किया और वैश्विक राजनीति को परिवर्तित कर दिया। इनके प्रभाव से विश्व दो बड़े वैचारिक गुटों में विभाजित हो गया, जिसने शीत युद्ध के युग को जन्म दिया।

167. (A) 1, 3, 4, 2
इन ऐतिहासिक नेताओं के सत्ता में आने का कालक्रम विश्व इतिहास के राजनीतिक परिवर्तनों को दर्शाता है। नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात 1799 में सत्ता में आए। व्लादिमीर लेनिन ने 1917 की रूसी क्रांति के माध्यम से प्रथम साम्यवादी राज्य की स्थापना की। इसके पश्चात 1922 में बेनिटो मुसोलिनी ने इटली में फासीवादी शासन स्थापित किया। अंत में, 1933 में एडोल्फ हिटलर जर्मनी के चांसलर बने, जिससे नाजी तानाशाही की शुरुआत हुई। यह क्रम यूरोप में राजशाही के पतन, साम्यवाद के उदय और फिर चरम दक्षिणपंथी अधिनायकवाद के विकास की ऐतिहासिक यात्रा को स्पष्ट रूप से चित्रित करता है।

168. (A) उपनिवेशवाद
19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में "अफ्रीका हेतु छीना-झपटी" उपनिवेशवाद का एक ज्वलंत और क्रूर उदाहरण है। इस अवधि में यूरोपीय शक्तियों ने अफ्रीकी महाद्वीप के संसाधनों और व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण प्राप्त करने हेतु उसका आपस में तीव्र गति से विभाजन कर लिया। इस प्रक्रिया में वहां के स्थानीय निवासियों की इच्छाओं और सीमाओं की पूर्णतः उपेक्षा की गई। बर्लिन सम्मेलन (1884-85) ने इस औपनिवेशिक विस्तार को व्यवस्थित किया, जिससे लगभग संपूर्ण अफ्रीका यूरोपीय नियंत्रण में आ गया। इस घटना ने अफ्रीकी समाज और अर्थव्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया और साम्राज्यवाद के चरम स्वरुप को विश्व के समक्ष प्रदर्शित किया।

169. (B) शक्ति की राजनीति के माध्यम से राष्ट्रीय हित की प्राप्ति।
जर्मनी के एकीकरण हेतु ओटो वॉन बिस्मार्क द्वारा अपनाई गई 'यथार्थवादी राजनीति' की नीति पूर्णतः व्यावहारिक और शक्ति-आधारित थी। बिस्मार्क ने आदर्शवादी सिद्धांतों के स्थान पर इस बात पर बल दिया कि राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने हेतु सैन्य शक्ति और कूटनीतिक चालों का उपयोग करना अनिवार्य है। उनका प्रसिद्ध नारा "रक्त और लौह" इसी दर्शन का प्रतीक था, जिसका अर्थ था कि महान समस्याओं का समाधान केवल युद्ध और सामर्थ्य से होता है। उन्होंने कूटनीतिक कुशलता से अपने शत्रुओं को अलग-थलग किया और प्रशिया की सैन्य शक्ति का उपयोग कर जर्मन राष्ट्र का निर्माण किया। यह नीति सफल रही।

170. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
14वीं शताब्दी के यूरोप में 'ब्लैक डेथ' महामारी के कारण जनसंख्या में इतनी बड़ी गिरावट आई कि श्रम की भीषण कमी हो गई। हालांकि, यह दावा करना गलत है कि इस कमी ने लॉर्ड्स को और अधिक नियंत्रण करने की अनुमति दी। वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत थी; श्रम की कमी ने जीवित बचे किसानों की स्थिति को सुदृढ़ कर दिया। अब वे अपने स्वामियों से बेहतर मजदूरी और अधिक स्वतंत्रता की मांग करने की स्थिति में थे। लॉर्ड्स ने पुराने सामंती नियमों को कठोरता से लागू करने का प्रयास किया, परंतु वे बढ़ते आर्थिक

दबाव के समक्ष विफल रहे, जिससे सामंतवाद दुर्बल हुआ और अंततः समाप्त हो गया।

171. (B) सामाजिक पदानुक्रम और आर्थिक नियंत्रण की प्रणालियाँ।
जमींदारी प्रणाली, सामंतवाद और दास प्रथा—ये सभी अवधारणाएं विभिन्न कालखंडों में प्रचलित सामाजिक पदानुक्रम और आर्थिक नियंत्रण की कठोर प्रणालियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये प्रणालियाँ समाज को स्पष्ट रूप से शासक और शासित, या शोषक और शोषित वर्गों में विभाजित करती हैं। इनमें शक्ति का आधार भूमि का स्वामित्व या मनुष्यों पर कानूनी अधिकार होता था। ये व्यवस्थाएं यह सुनिश्चित करती थीं कि आर्थिक संसाधनों और उत्पादन पर एक छोटे कुलीन वर्ग का नियंत्रण बना रहे, जबकि बहुसंख्यक आबादी उनके अधीन रहकर कार्य करे। इन प्रणालियों को समझना समाज में शक्ति के वितरण के विकास को जानने हेतु आवश्यक है।

172. (B) उदारवाद और संसदीय लोकतंत्र।
दोनों विश्व युद्धों के मध्य की अवधि में जर्मनी और इटली जैसी तानाशाही शक्तियों का उदय मुख्य रूप से उदारवाद और संसदीय लोकतंत्र के सिद्धांतों की स्पष्ट अस्वीकृति थी। तानाशाहों ने तर्क दिया कि बहुदलीय लोकतंत्र अक्षम है और यह राष्ट्रीय एकता एवं आर्थिक सुधार के मार्ग में बाधक है। उन्होंने व्यक्तिगत स्वतंत्रता के उदारवादी आदर्शों को राष्ट्र की सामूहिक शक्ति हेतु संकट बताया। इसके स्थान पर उन्होंने सर्वसत्तावादी राज्य का समर्थन किया जहाँ केवल एक दल और एक नेता का पूर्ण नियंत्रण हो। यह उदय उस गहरे संकट और निराशा की उपज था जहाँ लोग व्यवस्था के नाम पर अपने लोकतांत्रिक अधिकारों को त्यागने हेतु सिद्ध थे।

173. (C) सुसंगत, सार्वजनिक और गैर-व्यक्तिगत नियमों पर आधारित हो।
'विधि संहिता' की अवधारणा का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि न्याय का प्रशासन किसी व्यक्ति की सनक के स्थान पर सुसंगत और पूर्व-निर्धारित नियमों पर आधारित हो। जब कानून लिखित और सार्वजनिक होते हैं, तो वे समाज के समस्त सदस्यों हेतु समान रूप से उपलब्ध और लागू करने योग्य बन जाते हैं। यह व्यवस्था गैर-व्यक्तिगत न्याय को बढ़ावा देती है, जहाँ नियमों का पालन बिना किसी भेदभाव के किया जाता है। विधि संहिता न्यायपालिका को एक स्पष्ट ढांचा प्रदान करती है, जो कानून के शासन की रक्षा करता है और नागरिकों के अधिकारों को शासकों के मनमाने निर्णयों से सुरक्षित रखता है।

174. (A) राष्ट्रवाद
19वीं शताब्दी में इटली और जर्मनी का एकीकरण आधुनिक इतिहास में राष्ट्रवाद की शक्ति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। इन दोनों प्रक्रियाओं में बिखरे हुए छोटे राज्यों को एक साझा पहचान—भाषा, संस्कृति और गौरवशाली अतीत—के आधार पर एक सूत्र में पिरोया गया। राष्ट्रवाद ने लोगों के मन में अपने भाषाई और सांस्कृतिक समुदाय हेतु एक स्वतंत्र राष्ट्र निर्मित करने की तीव्र भावना जागृत की। इटली में 'रिसोर्जिमेंटो' और जर्मनी में बिस्मार्क की नीतियां इसी राष्ट्रवादी चेतना की परिणति थीं। इन एकीकरणों ने यूरोप के राजनीतिक मानचित्र को मौलिक रूप से परिवर्तित किया और 20वीं शताब्दी की वैश्विक राजनीति की नींव रखी।

175. (C) कुल पैमाना, औद्योगिक प्रकृति और वैश्विक भागीदारी।
प्रथम विश्व युद्ध अपने समय के पूर्ववर्ती युद्धों से मौलिक रूप से भिन्न था क्योंकि यह प्रथम 'संपूर्ण युद्ध' था। इसका पैमाना अभूतपूर्व था, जिसमें अनेक महाद्वीपों के देशों ने भाग लिया। यह युद्ध की औद्योगिक प्रकृति का भी प्रदर्शन था, जहाँ टैंक, विमान और रासायनिक हथियारों जैसे आधुनिक मशीनी हथियारों का प्रथम बार बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया। नागरिक आबादी और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को युद्ध के प्रयासों हेतु पूर्णतः झोंक दिया गया था। हताहतों की विशाल संख्या और वैश्विक भागीदारी ने इसे एक ऐसा संघर्ष बना दिया जिसने विश्व की राजनीतिक व्यवस्था को सदैव हेतु परिवर्तित कर दिया।

176. (B) राजनीतिक नियंत्रण और आर्थिक शोषण प्राप्त करने की नीति।
उपनिवेशवाद की सबसे सटीक परिभाषा यह है कि यह एक शक्तिशाली राष्ट्र द्वारा दूसरे क्षेत्र पर राजनीतिक नियंत्रण स्थापित करने और वहां के संसाधनों का अपने आर्थिक लाभ हेतु शोषण करने की नीति है। इस व्यवस्था में उपनिवेश बनाने वाली शक्ति उपनिवेशित क्षेत्र के निवासियों के अधिकारों को दबाती है और वहां की अर्थव्यवस्था को अपने उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुसार मोड़ देती है। इसमें कच्चे माल की लूट और स्थानीय बाजारों पर एकाधिकार प्राप्त करना मुख्य उद्देश्य होता है। उपनिवेशवाद केवल भौगोलिक विस्तार नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी व्यवस्था है जो समाज को राजनीतिक और आर्थिक रूप से पंगु बना देती है।

177. (B) माओत्से तुंग
1949 की चीनी क्रांति का नेतृत्व माओत्से तुंग ने किया था, जो चीनी साम्यवादी दल के प्रमुख नेता थे। उन्होंने एक लंबी और कठिन सशस्त्र क्रांति के माध्यम से राष्ट्रवादी सरकार को पराजित किया। माओ ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को चीन की ग्रामीण स्थितियों के अनुरूप ढाला और किसानों को अपनी मुख्य शक्ति बनाया। उनकी विजय के साथ ही चीन में सदियों पुरानी सामंती व्यवस्था का अंत हुआ और 1 अक्टूबर, 1949 को 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' की स्थापना हुई। माओ का नेतृत्व आने वाले दशकों तक चीन के सामाजिक और राजनीतिक जीवन को गहराई से प्रभावित करता रहा, जिससे चीन एक वैश्विक साम्यवादी महाशक्ति के रूप में उभरा।

178. (B) यूरोप का बीमार व्यक्ति का प्रश्न
"लौह आवरण" शब्द का प्रयोग विंस्टन चर्चिल ने द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात यूरोप के वैचारिक और भौतिक विभाजन को दर्शाने हेतु किया था। यह विभाजन एक ओर पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों और दूसरी ओर सोवियत संघ के प्रभाव वाले साम्यवादी पूर्वी यूरोपीय देशों के मध्य था। यह केवल एक सीमा नहीं थी, बल्कि दो परस्पर विरोधी राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों के मध्य का गहरा अंतराल था। इस शब्द ने शीत युद्ध की शुरुआत और यूरोप के दो प्रतिस्पर्धी गुटों में बंटने की वास्तविकता को स्पष्ट किया। यह विभाजन दशकों

तक बर्लिन की दीवार जैसी भौतिक संरचनाओं और निरंतर कूटनीतिक तनाव के रूप में बना रहा।

179. (A) राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए राज्य का निर्देशन और नियंत्रण।
नाजी जर्मनी और फासीवादी इटली दोनों ने ऐसी आर्थिक नीतियां अपनाईं जहाँ निजी संपत्ति तो बनी रही, परंतु संपूर्ण अर्थव्यवस्था को राष्ट्रीय और सैन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु राज्य के कड़े निर्देशन में रखा गया। इन शासनों ने उत्पादन और कीमतों को नियंत्रित किया ताकि युद्ध की तैयारियों और आत्म-निर्भरता के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। हिटलर और मुसोलिनी दोनों का मानना था कि अर्थव्यवस्था को केवल राष्ट्र की शक्ति बढ़ाने के साधन के रूप में कार्य करना चाहिए। उन्होंने मुक्त बाजार के सिद्धांतों को पूर्णतः उपेक्षित किया और राज्य को आर्थिक जीवन का सर्वोच्च नियामक बना दिया ताकि सैन्य विस्तार संभव हो।

180. (B) संयुक्त राज्य अमेरिका
19वीं शताब्दी की 'पूर्वी समस्या' मुख्य रूप से यूरोपीय महाशक्तियों के मध्य ऑटोमन साम्राज्य के पतन को लेकर उपजा कूटनीतिक संकट था। इस समस्या में रूस, ग्रेट ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया-हंगरी जैसे देश गहराई से संबंद्ध थे क्योंकि उनके रणनीतिक हित सीधे तौर पर बाल्कन से टकरा रहे थे। उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका अपनी 'मुनरो सिद्धांत' की नीति का पालन कर रहा था, जिसके तहत वह यूरोपीय आंतरिक विवादों से दूर रहता था। अमेरिका का ध्यान मुख्य रूप से अपने पश्चिमी विस्तार और घरेलू विकास पर केंद्रित था। अतः, 19वीं शताब्दी की इस प्रमुख यूरोपीय कूटनीतिक उलझन में अमेरिका की कोई प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं थी।

181. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
ओटो वॉन बिस्मार्क जर्मनी के एकीकरण के वास्तुकार थे जिन्होंने 'रक्त और लौह' की नीति अपनाई। नेपोलियन बोनापार्ट ने फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात विशाल यूरोपीय साम्राज्य का निर्माण किया और कानूनी सुधार लागू किए। मार्टिन लूथर 16वीं शताब्दी के धर्म सुधार आंदोलन के प्रमुख नेता थे जिन्होंने चर्च की सत्ता को चुनौती दी। क्लेमेंस वॉन मेटरनिक वियना कांग्रेस के दौरान यूरोप के सर्वाधिक प्रभावशाली राजनयिक थे जिन्होंने रूढ़िवादी शांति स्थापित करने का प्रयास किया। इन ऐतिहासिक व्यक्तित्वों ने विश्व के राजनीतिक और धार्मिक मानचित्र को परिवर्तित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निर्वहन की है।

182. (A) वर्साय की संधि के परिणाम।
द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों में 1919 की वर्साय की संधि के विनाशकारी परिणाम सर्वाधिक प्रमुख माने जाते हैं। इस संधि ने पराजित जर्मनी पर अत्यंत कठोर शर्तें, भारी आर्थिक क्षतिपूर्ति और क्षेत्रीय नुकसान थोपे, जिससे जर्मन जनता में गहरे अपमान और आर्थिक तंगी की भावना उत्पन्न हुई। इस असंतोष ने ही हिटलर जैसे कट्टरपंथी नेता को सत्ता तक पहुँचने का आधार प्रदान किया। संधि द्वारा स्थापित शांति व्यवस्था दुर्बल थी और इसमें न्याय का अभाव था, जिसके कारण जर्मनी में प्रतिशोध की भावना प्रबल हुई। अंततः संधि की विसंगतियों ने उन परिस्थितियों को जन्म दिया जिससे 1939 में एक और भीषण युद्ध प्रारंभ हुआ।

183. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने वास्तव में 'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व' के महान लोकतांत्रिक आदर्शों को जन्म दिया, जिन्होंने आधुनिक राजनीति की नींव रखी। हालांकि, यह मानना त्रुटिपूर्ण है कि नेपोलियन बोनापार्ट का उत्थान इन आदर्शों की पूर्ण पूर्ति था। यद्यपि नेपोलियन ने क्रांति के कुछ प्रशासनिक सुधारों और कानूनी समानता को बढ़ाया, परंतु उनका शासन अनिवार्य रूप से एक सैन्य तानाशाही और बाद में साम्राज्य था। उन्होंने स्वयं को सम्राट घोषित कर सत्ता का केंद्रीकरण किया और प्रेस की स्वतंत्रता जैसे लोकतांत्रिक अधिकारों को सीमित किया। इस प्रकार, नेपोलियन का युग क्रांति और साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं का मिश्रण था।

184. (D) राजतंत्र
इंग्लैंड में संसदीय लोकतंत्र की स्थापना एक लंबी और क्रमिक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी जिसका मुख्य लक्ष्य राजतंत्र की निरंकुश शक्तियों को सीमित करना था। मैग्ना कार्टा से प्रारंभ होकर 1688 की गौरवशाली क्रांति तक, संसद ने धीरे-धीरे राजा के कर लगाने और कानून बनाने के एकाधिकार को चुनौती दी। बिल ऑफ राइट्स ने स्पष्ट रूप से स्थापित किया कि संसद की सर्वोच्चता राजशाही से ऊपर है। इस संघर्ष के परिणामस्वरूप इंग्लैंड में एक संवैधानिक राजतंत्र विकसित हुआ जहाँ वास्तविक शक्ति जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों के पास आ गई। इस प्रकार, संसदीय लोकतंत्र का विकास सीधे तौर पर राजा की असीमित शक्ति के क्रमिक हस्तांतरण का परिणाम था।

185. (B) 3, 2, 1
इन ऐतिहासिक घटनाओं का कालक्रम यूरोप के राजनीतिक परिवर्तनों के एक बड़े चक्र को दर्शाता है। सर्वप्रथम 1799 में नेपोलियन बोनापार्ट का सत्ता में उदय हुआ, जिन्होंने फ्रांसीसी साम्राज्य का विस्तार किया। 1815 में नेपोलियन की हार के पश्चात वियना कांग्रेस आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य युद्ध के पश्चात यूरोप में पुरानी व्यवस्था और शांति बहाल करना था। इसके लगभग एक शताब्दी पश्चात, 1914 में प्रथम विश्व युद्ध का प्रारंभ हुआ, जिसने वियना कांग्रेस द्वारा निर्मित शक्ति संतुलन की व्यवस्था को अंतिम रूप से समाप्त कर दिया। यह क्रम साम्राज्यवाद के उदय, रूढ़िवादी शांति के प्रयास और फिर महायुद्ध की ऐतिहासिक दिशा को स्पष्ट करता है।

186. (A) श्रेष्ठ और सर्वाधिक गुणी नागरिकों द्वारा।
'अभिजाततंत्र' शब्द का मूल यूनानी अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ लोगों द्वारा शासन' है। इस अवधारणा के अनुसार, शासन की शक्ति उन नागरिकों के हाथ में होनी चाहिए जो समाज में बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक रूप से सर्वाधिक गुणी और योग्य माने जाते हैं। हालांकि ऐतिहासिक रूप से यह शब्द एक ऐसे छोटे कुलीन वर्ग से जुड़ गया जो अपने जन्म, वंश और विशाल संपत्ति के कारण विशेषाधिकार प्राप्त था। यह प्रणाली इस विश्वास पर आधारित

थी कि केवल उच्च वर्ग के पास ही शासन हेतु आवश्यक शिक्षा और परंपरा होती है। आधुनिक युग में यह लोकतांत्रिक समानता के सिद्धांतों के विपरीत मानी जाती है, जहाँ योग्यता जन्म से नहीं प्रतिभा से तय होती है।

187. (A) प्रथम विश्व युद्ध
1917 की रूसी क्रांति के सबसे महत्वपूर्ण परिणामों में से एक रूस का प्रथम विश्व युद्ध से पृथक होना था। युद्ध में हो रही निरंतर सैन्य पराजय और देश में व्याप्त भीषण अकाल ने क्रांति की अग्नि को प्रज्वलित किया था। सत्ता में आने के पश्चात, लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने "शांति, भूमि और रोटी" के अपने वचन को पूर्ण करने हेतु जर्मनी के साथ 'ब्रेस्ट-लिटोव्स्क' की संधि की। इस संधि के तहत रूस ने युद्ध विराम किया, हालांकि इसके हेतु उसे अपने विशाल क्षेत्रों का त्याग करना पड़ा। युद्ध से हटने के इस निर्णय ने रूस को अपने आंतरिक संघर्षों और समाजवादी ढांचे के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर प्रदान किया।

188. (A) फासीवाद राष्ट्रवादी है, जबकि समाजवाद अंतरराष्ट्रीयतावादी है।
समाजवाद और फासीवाद के मध्य सबसे मौलिक अंतर उनके भौगोलिक दृष्टिकोण में है। समाजवाद एक 'अंतरराष्ट्रीयतावादी' विचारधारा है जो विश्व भर के श्रमिकों की एकजुटता पर बल देती है और मानती है कि वर्गीय हित राष्ट्रीय सीमाओं से ऊपर हैं। इसके विपरीत, फासीवाद एक 'उग्र राष्ट्रवादी' विचारधारा है जो राष्ट्र और राज्य की शक्ति को सर्वोच्च मानती है। फासीवाद हेतु राष्ट्र की एकता ही एकमात्र लक्ष्य है, और वह अंतर्राष्ट्रीयतावाद को राष्ट्र की निर्बलता के रूप में देखता है। जबकि समाजवाद वर्गों को समाप्त करना चाहता है, फासीवाद वर्गों को राष्ट्र के हित में राज्य के पूर्ण नियंत्रण में रखने का प्रयास करता है।

189. (A) नया औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग शामिल था।
औद्योगिक क्रांति ने समाज की पारंपरिक संरचना को पूर्णतः परिवर्तित किया और दो नए सामाजिक वर्गों को जन्म दिया। एक ओर 'औद्योगिक सर्वहारा वर्ग' था, जिसमें कारखानों में कार्य करने वाले लाखों भूमिहीन श्रमिक सम्मिलित थे। दूसरी ओर एक नवीन और शक्तिशाली 'औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग' उभरा, जिसने उद्योगों और पूंजी पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया। इस नवीन मध्यम वर्ग ने अपनी आर्थिक शक्ति के बल पर समाज में राजनीतिक प्रभाव भी प्राप्त किया। इन दोनों वर्गों के मध्य के आर्थिक हितों के टकराव ने ही आधुनिक युग के वर्ग संघर्ष और श्रमिक आंदोलनों की नींव रखी, जिससे भविष्य की राजनीतिक और सामाजिक विचारधाराएं प्रभावित हुईं।

190. (D) A गलत है लेकिन R सही है।
इटली का एकीकरण (रिसोर्जिमेंटो) कोई सरल प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि यह अत्यंत चुनौतीपूर्ण ऐतिहासिक यात्रा थी। इसे किसी एक नेता या विचार का परिणाम कहना त्रुटिपूर्ण होगा। वास्तविकता यह है कि इसमें कावूर की चतुर कूटनीति, मैजिनी के राष्ट्रवादी क्रांतिकारी विचार और गैरीबाल्डी के साहसी सैन्य अभियानों का अद्भुत समन्वय सम्मिलित था। इन विभिन्न शक्तियों ने कभी मिलकर तो कभी अलग-अलग मोर्चों पर विदेशी प्रभाव, विशेषतः ऑस्ट्रिया के विरुद्ध संघर्ष किया। यह एकीकरण विभिन्न विचारधाराओं और अनेक दशकों के निरंतर संघर्ष एवं बलिदान की परिणति थी, जिसने अंततः एक आधुनिक इतालवी राष्ट्र को जन्म दिया।

191. (D) ऑटोमन साम्राज्य
'युवा तुर्क आंदोलन' 20वीं शताब्दी की शुरुआत में ऑटोमन साम्राज्य के भीतर उभरा एक अत्यंत महत्वपूर्ण सुधारवादी आंदोलन था। इस समय ऑटोमन साम्राज्य को "यूरोप का बीमार व्यक्ति" कहा जाता था क्योंकि वह निरंतर पतन की ओर था। युवा तुर्कों का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य को आधुनिक बनाना, सुल्तान की निरंकुश सत्ता को सीमित कर संविधान को पुनः लागू करना और पश्चिमी प्रशासनिक तकनीकों को अपनाना था। वे चाहते थे कि इन सुधारों के माध्यम से साम्राज्य अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करे और विघटन से बच सके। इस आंदोलन ने आधुनिक और धर्मनिरपेक्ष तुर्की के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया, जिसने भविष्य की राजनीति को प्रभावित किया।

192. (B) वि-उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया का प्रारंभ।
द्वितीय विश्व युद्ध का एक अत्यंत दूरगामी परिणाम विश्व भर में 'वि-उपनिवेशीकरण' की प्रक्रिया का तीव्र होना था। युद्ध ने पुरानी यूरोपीय शक्तियों—जैसे ब्रिटेन और फ्रांस—को आर्थिक रूप से इतना दुर्बल कर दिया कि वे अपने विशाल औपनिवेशिक साम्राज्यों पर नियंत्रण बनाए रखने में असमर्थ हो गईं। इसके साथ ही, एशिया और अफ्रीका में स्वतंत्रता आंदोलनों ने नवीन ऊर्जा प्राप्त की और आत्म-निर्णय की मांग प्रबल हो गई। युद्ध के पश्चात के दो दशकों के भीतर भारत और इंडोनेशिया जैसे दर्जनों नवीन राष्ट्र स्वतंत्र हुए। इस प्रक्रिया ने औपनिवेशिक युग का अंत किया और वैश्विक राजनीति के मानचित्र को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया।

193. (D) प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार।
रोमन साम्राज्य की ऐतिहासिक विरासत में संहिताबद्ध कानून, प्रशासनिक कुशलता और लैटिन भाषा का प्रसार जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व सम्मिलित हैं। हालांकि, प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार रोमन साम्राज्य की देन नहीं है। प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार अनेक सदियों पश्चात, 15वीं शताब्दी के मध्य में जोहान्स गुटेनबर्ग द्वारा जर्मनी में किया गया था। रोमन काल में पुस्तकें हस्तलिखित होती थीं, जो ज्ञान के प्रसार को सीमित करती थीं। गुटेनबर्ग के आविष्कार ने सूचना क्रांति को जन्म दिया और पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार आंदोलनों में मुख्य भूमिका निर्वहन की। रोमन साम्राज्य अपनी कानूनी उपलब्धियों हेतु प्रसिद्ध है, न कि मुद्रण तकनीक हेतु।

194. (A) एक निरंकुश राजतंत्र या तानाशाही।
संसदीय लोकतंत्र की अवधारणा मौलिक रूप से निरंकुश राजतंत्र या तानाशाही के प्रत्यक्ष विरोध में है। जहाँ तानाशाही में सत्ता एक व्यक्ति या छोटे समूह के पास केंद्रित होती है और वे किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं होते, वहीं संसदीय लोकतंत्र में शक्ति जनता की इच्छा और उनके निर्वाचित प्रतिनिधियों में निहित होती है। लोकतंत्र में कानून का शासन और शक्तियों का पृथक्करण होता है, जबकि निरंकुश शासन शासक की

व्यक्तिगत सनक पर संचालित होता है। लोकतंत्र व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों की रक्षा का आधार है, जबकि तानाशाही प्रायः दमन पर आधारित होती है। ये दोनों प्रणालियाँ शासन की प्रकृति के मामले में विपरीत ध्रुव हैं।

195. (D) श्रम का मूल्य बढ़ाकर और किसानों को स्वतंत्रता की मांग करने का अवसर देकर।
14वीं शताब्दी में आई 'ब्लैक डेथ' महामारी ने यूरोप की जनसंख्या को नाटकीय रूप से कम कर दिया, जिसने सामंतवाद की नींव हिला दी। इस जनसांख्यिकीय संकट के कारण श्रम की भीषण कमी हो गई, जिससे उपलब्ध कृषकों का मूल्य अचानक बढ़ गया। लॉर्ड्स हेतु अब अपने सर्फ़ों को भूमि से बांधे रखना कठिन हो गया क्योंकि श्रमिक बेहतर पारिश्रमिक हेतु स्वतंत्र होना चाहते थे। किसानों ने विद्रोहों और सौदेबाजी के माध्यम से अपनी स्थिति सुधारी। इस आर्थिक बदलाव ने लॉर्ड्स की शक्ति को स्थायी रूप से दुर्बल किया और किसानों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं नकद आधारित मजदूरी की शुरुआत की, जिसने सामंतवाद का अंत किया।

196. (C) प्रथम विश्व युद्ध
उग्र राष्ट्रवाद, चरम सैन्यवाद, आक्रामक साम्राज्यवाद और गुप्त सैन्य गठबंधनों की जटिल प्रणाली को सामूहिक रूप से प्रथम विश्व युद्ध के मुख्य दीर्घकालिक कारणों के रूप में पहचाना जाता है। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में यूरोपीय राष्ट्रों के मध्य इन कारकों ने एक ऐसा विस्फोटक वातावरण निर्मित कर दिया था जहाँ किसी भी छोटी घटना का महायुद्ध में परिवर्तित होना निश्चित था। साम्राज्यवाद ने उपनिवेशों हेतु होड़ उत्पन्न की, जबकि सैन्यवाद ने शस्त्रास्त्रों की दौड़ को बढ़ावा दिया। गठबंधनों ने स्थानीय विवादों को महाद्वीप के संघर्ष में बदल दिया। इन सभी ने मिलकर आधुनिक इतिहास के सबसे विनाशकारी युद्धों में से एक की आधारशिला रखी।

197. (D) राज्य का पूर्ण प्राधिकार और आध्यात्मिक मूल्य।
मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवादी इटली की नीति राज्य के पूर्ण प्राधिकार और आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति निष्ठा पर आधारित थी। मुसोलिनी का प्रसिद्ध नारा था: "सब कुछ राज्य के भीतर, राज्य के बाहर कुछ भी नहीं, और राज्य के विरुद्ध कुछ भी नहीं।" फासीवाद यह मानता था कि राज्य केवल एक राजनीतिक संस्था नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है और व्यक्ति का अस्तित्व केवल राज्य की सेवा में ही सार्थक है। इस विचारधारा ने सैन्य अनुशासन और राष्ट्र के प्रति पूर्ण समर्पण पर बल दिया। इसका लक्ष्य इटली को एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में पुनः स्थापित करना था, जिसने लोकतंत्र को अस्वीकार किया।

198. (A) उन शिकायतों को उत्पन्न करने के लिए जिन्होंने नाजीवाद के उदय को हवा दी।
वर्साय की संधि की अक्सर इसलिए आलोचना की जाती है क्योंकि इसे एक "थोपी गई शांति" माना गया जिसने जर्मनी में गहरे असंतोष के बीज बोए। संधि की कठोर शर्तों—जैसे कि भारी आर्थिक क्षतिपूर्ति, सैन्य कटौती और जर्मनी पर युद्ध का एकमात्र उत्तरदायित्व डालना—ने जर्मन अर्थव्यवस्था को विनष्ट कर दिया। इस आर्थिक और राष्ट्रीय संकट का लाभ एडोल्फ हिटलर और उसकी नाजी पार्टी ने उठाया, जिन्होंने वर्साय की संधि को निरस्त करने और राष्ट्रीय गौरव को बहाल करने का वचन दिया। इस प्रकार, संधि ने शांति लाने के स्थान पर उन राजनीतिक परिस्थितियों को जन्म दिया जिन्होंने नाजीवाद को अवसर प्रदान किया और दूसरे महायुद्ध का आधार निर्मित किया।

199. (C) सन यात-सेन
1911 की चीनी क्रांति का नेतृत्व डॉ. सन यात-सेन ने किया था, जिन्हें आधुनिक चीन में "राष्ट्रपिता" के रूप में अत्यंत सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। उन्होंने चीन के दो हजार वर्ष पुराने राजशाही शासन और किंग राजवंश का अंत करने में मुख्य भूमिका निभाई। सन यात-सेन ने अपने 'तीन सिद्धांतों'—राष्ट्रवाद, लोकतंत्र और जन-कल्याण—के माध्यम से चीनी जनता को एकजुट किया। यद्यपि वे दीर्घकाल तक सत्ता में नहीं रहे, परंतु उनके विचारों ने चीन को एक आधुनिक गणराज्य में परिवर्तित करने की नींव रखी। उनके उत्तराधिकारियों ने इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर चीन के विकास की दिशा तय की, जिससे वे चीन के इतिहास में एक सर्वमान्य नेता बने।

200. (A) उपनिवेश बनाने वाली शक्ति के लिए कच्चे माल और बाजारों को सुरक्षित करना।
उपनिवेशवाद की आर्थिक क्रांति के पीछे सबसे प्राथमिक प्रेरणा मातृ देश के उद्योगों हेतु निरंतर और सस्ते कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित करना थी। औद्योगिक क्रांति के कारण यूरोपीय देशों को खनिज और रबड़ जैसे संसाधनों की भारी आवश्यकता थी। इसके साथ ही, उपनिवेशों ने यूरोपीय कारखानों में निर्मित माल हेतु एक सुरक्षित और नियंत्रित बाजार भी प्रदान किया। इस व्यवस्था के माध्यम से वणिकवादी शक्तियों ने व्यापार में एकाधिकार प्राप्त किया और उपनिवेशों की संपदा का अपने लाभ हेतु दोहन किया। यह संपूर्ण आर्थिक प्रणाली उपनिवेशों के शोषण और औपनिवेशिक शक्तियों की राष्ट्रीय संपत्ति बढ़ाने के उद्देश्य पर पूर्णतः आधारित थी।

201. (C) वियना कांग्रेस और वाटरलू का युद्ध।
नेपोलियन बोनापार्ट के विस्तारवादी युग का औपचारिक अंत 1815 में दो मुख्य घटनाओं के साथ हुआ। सैन्य रूप से, वाटरलू के युद्ध में मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने नेपोलियन को निर्णायक रूप से पराजित किया, जिससे उसकी सत्ता में लौटने की समस्त आशाएं समाप्त हो गईं। राजनीतिक रूप से, वियना कांग्रेस ने यूरोप के मानचित्र को पुनः व्यवस्थित किया और नेपोलियन द्वारा विजित क्षेत्रों को पुराने राजवंशों को लौटा दिया। इन घटनाओं ने मिलकर यूरोप में शांति और पुरानी व्यवस्था की बहाली सुनिश्चित की। इसके पश्चात नेपोलियन को सेंट हेलेना द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया। यह युग आधुनिक यूरोप की राजनीतिक सीमाओं के निर्माण में एक महत्वपूर्ण अध्याय था।

202. (B) उत्पादन का सार्वजनिक स्वामित्व या नियंत्रण।
समाजवाद की अवधारणा मौलिक रूप से इस विचार की वकालत करती है कि उत्पादन के साधनों, जैसे कारखानों और प्राकृतिक संसाधनों का स्वामित्व किसी निजी व्यक्ति के स्थान

पर संपूर्ण समाज या राज्य के पास होना चाहिए। इसका मुख्य तर्क यह है कि निजी स्वामित्व से होने वाले लाभ केवल कुछ व्यक्तियों तक सीमित रहते हैं, जिससे समाज में निर्धनता और आर्थिक असमानता बढ़ती है। समाजवाद का उद्देश्य संसाधनों का ऐसा न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना है जिससे समाज के समस्त वर्गों की बुनियादी आवश्यकताएं पूर्ण हो सकें। यह प्रणाली व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सामाजिक कल्याण और सामूहिक सहयोग को प्राथमिकता प्रदान करती है।

203. (A) वणिकवाद - एडम स्मिथ
यह युग्म सुमेलित नहीं है क्योंकि एडम स्मिथ को वणिकवाद का समर्थक नहीं, बल्कि उसका सर्वाधिक बड़ा आलोचक माना जाता है। एडम स्मिथ ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' में वणिकवादी संरक्षणवाद और सरकारी हस्तक्षेप के विरुद्ध तर्क दिया और 'मुक्त व्यापार' के सिद्धांत का समर्थन किया। अन्य युग्म सही हैं: मुसोलिनी ने फासीवाद की नींव रखी, हिटलर नाजीवाद के प्रणेता थे और लेनिन ने रूसी क्रांति का नेतृत्व किया। स्मिथ के विचार आधुनिक उदारवादी अर्थशास्त्र के आधार बने, जो वणिकवाद के उन सिद्धांतों के पूर्णतः विपरीत थे जो स्वर्ण संचय और व्यापारिक प्रतिबंधों पर अत्यधिक बल देते थे।

204. (D) यथार्थवादी राजनीति और सैन्य शक्ति
बिस्मार्क के नेतृत्व में जर्मनी का एकीकरण 'यथार्थवादी राजनीति' और संगठित सैन्य शक्ति के सफल अनुप्रयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। बिस्मार्क का मानना था कि जर्मनी का भविष्य उदारवादी भाषणों से नहीं, बल्कि "रक्त और लौह" से तय होगा। उन्होंने कूटनीतिक कुशलता के माध्यम से अपने शत्रुओं को विभाजित किया और प्रशिया की शक्तिशाली सेना का उपयोग कर डेनमार्क, ऑस्ट्रिया और फ्रांस को युद्धों में पराजित किया। इस व्यावहारिक और शक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण ने जर्मन राज्यों को प्रशिया के नेतृत्व में एकजुट किया। बिस्मार्क की यह सफलता 19वीं शताब्दी की कूटनीति में आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवाद की विजय का प्रतीक बनी।

205. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
विश्व इतिहास की प्रमुख क्रांतियाँ विशिष्ट शताब्दियों की पहचान बनी हैं। 18वीं शताब्दी अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियों हेतु जानी जाती है, जिन्होंने लोकतंत्र की नींव रखी। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जर्मनी और इटली का एकीकरण राष्ट्रवाद के चरम रूप में हुआ। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में 1917 की रूसी क्रांति ने विश्व को साम्यवादी विचारधारा से परिचित कराया। अंततः, 20वीं शताब्दी के मध्य में 1949 की चीनी क्रांति ने एशिया की राजनीति को पूर्णतः बदल दिया। इन घटनाओं के कालक्रम को समझना आधुनिक राष्ट्रों के उदय और वैश्विक विचारधाराओं के विकास को जानने हेतु अत्यंत आवश्यक और निर्णायक है।

206. (B) पुनर्जागरण और धर्म सुधार आंदोलन
मध्यकालीन यूरोप में चर्च की सर्वोच्च सत्ता को पुनर्जागरण और धर्म सुधार आंदोलनों ने सर्वाधिक प्रभावी ढंग से चुनौती दी। पुनर्जागरण ने मानवतावाद और स्वतंत्र वैज्ञानिक जांच पर बल देकर लोगों की सोच को चर्च के धार्मिक नियंत्रण से मुक्त किया। इसके पश्चात 16वीं शताब्दी के धर्म सुधार आंदोलन ने कैथोलिक चर्च के धार्मिक और राजनीतिक एकाधिकार पर सीधा प्रहार किया। इन दोनों आंदोलनों ने मिलकर व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया और धर्मग्रंथों की व्यक्तिगत व्याख्या का मार्ग प्रशस्त किया। इसके परिणामस्वरूप समाज पर चर्च का प्रभाव दुर्बल होने लगा और आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रों एवं वैज्ञानिक युग के उदय हेतु उपयुक्त वातावरण निर्मित हुआ।

207. (D) अल्पतंत्र
'अल्पतंत्र' सरकार का वह स्वरूप है जहाँ शासन की वास्तविक शक्ति समाज के एक अत्यंत छोटे और प्रभावशाली समूह के हाथों में केंद्रित होती है। यह समूह अपने धन, सैन्य शक्ति या राजनीतिक संबंधों के कारण विशेषाधिकार प्राप्त होता है। हालांकि 'अभिजाततंत्र' भी एक छोटे समूह का शासन है, परंतु 'अल्पतंत्र' शब्द का प्रयोग प्रायः तब किया जाता है जब शासन केवल संकीर्ण और निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु किया जा रहा हो। इस व्यवस्था में जनसामान्य की भागीदारी और उनकी इच्छा का कोई महत्व नहीं होता है। यह प्रणाली लोकतंत्र के उन सिद्धांतों के विपरीत है जहाँ शक्ति का मुख्य स्रोत व्यापक जनसमुदाय और निष्पक्ष चुनाव होते हैं।

208. (D) केवल 1 और 3
पवित्र रोमन साम्राज्य मध्य यूरोप की एक अत्यंत शिथिल और विकेंद्रीकृत राजनीतिक इकाई थी, जिसमें सैकड़ों छोटे-छोटे राज्य शामिल थे — अतः कथन 2 सर्वथा गलत है। फ्रांसीसी दार्शनिक वोल्टेयर ने व्यंग्यपूर्वक कहा था कि यह "न पवित्र था, न रोमन और न ही साम्राज्य।" 1806 में नेपोलियन बोनापार्ट के सैन्य दबाव और राजनीतिक पुनर्गठन के कारण इसे औपचारिक रूप से भंग कर दिया गया। अतः कथन 1 और 3 दोनों सही हैं।

209. (A) A) P-4, Q-2, R-1, S-3
दास प्रथा में व्यक्तियों को कानूनी संपत्ति माना जाता था, जो रोमन साम्राज्य की प्रमुख विशेषता थी। जमींदारी भारतीय उपमहाद्वीप में भूमि राजस्व संग्रह की प्रणाली थी। विधि संहिता रोमन साम्राज्य की कानूनी विरासत का प्रतिनिधित्व करती है, जिसने आधुनिक कानूनी प्रणालियों को प्रभावित किया। ब्लैक डेथ 14वीं शताब्दी की विनाशकारी ब्यूबोनिक प्लेग महामारी थी जिसने यूरोप की जनसंख्या को भारी क्षति पहुँचाई। अतः सही सुमेलन P-4, Q-2, R-1, S-3 है।

210. (B) औद्योगिक क्रांति के परिणामों ने समाजवाद को जन्म दिया।
औद्योगिक क्रांति और समाजवाद के मध्य एक गहरा और सीधा ऐतिहासिक संबंध है। औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि की, परंतु इसने श्रमिकों के भीषण शोषण, दयनीय कार्य स्थितियों और समाज में चरम आर्थिक विषमता जैसी गंभीर समस्याएं भी उत्पन्न कीं। कारखानों में कार्य करने वाले मजदूरों के पास न तो पर्याप्त पारिश्रमिक था और न ही कोई सुरक्षा। इन्हीं संकटों और अन्याय के विरुद्ध एक वैचारिक प्रतिक्रिया के रूप में समाजवाद का उदय हुआ। समाजवादी विचारकों ने पूंजीवाद के दोषों को उजागर किया और उत्पादन के साधनों पर

भी मौलिक रूप से और स्थायी रूप से परिवर्तित कर दिया। इसने आधुनिक युग निर्मित किया।

241. (B) वंशानुगत कुलीन वर्ग द्वारा शासन।
'अभिजाततंत्र' का शाब्दिक अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ द्वारा शासन' होने के उपरांत भी, इतिहास में यह व्यवहार में सदैव एक छोटे, विशेषाधिकार प्राप्त और वंशानुगत कुलीन वर्ग के शासन के रूप में ही प्रकट हुआ है। इस व्यवस्था में सत्ता और उच्च पद केवल उन व्यक्तियों के पास होते थे जो उच्च कुल में जन्म लेते थे और जिनके पास विशाल भू-संपत्ति होती थी। शासन करने की योग्यता को व्यक्तिगत प्रतिभा के स्थान पर वंश और पारिवारिक परंपरा से संबद्ध कर दिया गया था। इस प्रकार, यह प्रणाली समाज को 'जन्मजात शासकों' और 'जनसामान्य' में विभाजित करती थी। आधुनिक लोकतांत्रिक युग में, जहाँ समानता की बात की जाती है, ऐसी वंशानुगत सत्ता को अन्यायपूर्ण और पूर्णतः अप्रचलित माना जाता है।

242. (A) "शांति, भूमि और रोटी"
1917 की रूसी क्रांति के दौरान व्लादिमीर लेनिन और बोल्शेविकों ने "शांति, भूमि और रोटी" का अत्यंत शक्तिशाली और लोकप्रिय नारा दिया था। यह नारा रूसी जनता की तीन सर्वाधिक बुनियादी और तत्कालीन मांगों को सीधे तौर पर संबोधित करता था। 'शांति' का अर्थ प्रथम विश्व युद्ध के विनाशकारी संघर्ष से रूस को बाहर निकालना था, 'भूमि' का अर्थ जमींदारों से भूमि लेकर निर्धन किसानों में वितरित करना था, और 'रोटी' का अर्थ देश में व्याप्त भीषण अकाल और भूखमरी को समाप्त करना था। इस नारे ने युद्ध और निर्धनता से त्रस्त रूसी समाज के विभिन्न वर्गों को बोल्शेविकों के पृष्ठे एकजुट करने और क्रांति को सफल बनाने में निर्णायक और ऐतिहासिक भूमिका निर्वहन की।

243. (B) पुरातन व्यवस्था को बहाल करने के लिए प्रतिबद्ध एक गठबंधन।
नेपोलियन बोनापार्ट का पतन मुख्य रूप से यूरोप की उन प्रमुख शक्तियों—जैसे ब्रिटेन, रूस और प्रशिया—के एक शक्तिशाली सैन्य गठबंधन का परिणाम था जो फ्रांस के विस्तारवाद को रोकने हेतु प्रतिबद्ध थे। ये शक्तियाँ फ्रांसीसी क्रांति द्वारा उत्पन्न उदारवादी विचारों को दबाना और यूरोप में पुरानी 'पुरातन व्यवस्था' एवं शक्ति संतुलन को पुनः स्थापित करना चाहती थीं। नेपोलियन की रूस में हुई भारी पराजय ने उसे दुर्बल कर दिया, जिसका लाभ उठाकर इस गठबंधन ने उसे अंततः 1815 में वाटरलू के युद्ध में पराजित कर दिया। इस हार के पश्चात वियना कांग्रेस द्वारा नेपोलियन के साम्राज्य को भंग कर दिया गया और पुराने राजतंत्रों की बहाली का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसने शांति बहाल की।

244. (D) साम्राज्य में राष्ट्रवाद और सुधार।
20वीं शताब्दी की शुरुआत में 'युवा तुर्क आंदोलन' ऑटोमन साम्राज्य के भीतर राष्ट्रवाद और आधुनिकीकरण की एक नवीन लहर के रूप में उभरा। इस आंदोलन के पीछे उन शिक्षित युवाओं और सैन्य अधिकारियों का हाथ था जो साम्राज्य को निरंतर गिरती हुई स्थिति और विदेशी हस्तक्षेप से बचाना चाहते थे। उनका लक्ष्य सुल्तान की निरंकुश सत्ता को समाप्त कर संवैधानिक शासन लागू करना, प्रशासनिक कुशलता बढ़ाना और तुर्की राष्ट्रवाद को सशक्त करना था। उन्होंने साम्राज्य के आधुनिकीकरण हेतु पश्चिमी तकनीकों और प्रगतिशील विचारों को अपनाने पर बल दिया। यद्यपि इसने आंतरिक तनाव भी उत्पन्न किए, परंतु इसी आंदोलन ने भविष्य के आधुनिक और धर्मनिरपेक्ष तुर्की गणराज्य की वैचारिक आधारशिला सुदृढ़ की।

245. (B) एक कठोर और अपमानजनक शांति थोपकर।
वर्साय की संधि ने प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर जर्मनी पर अत्यंत कठोर और अपमानजनक शर्तें थोपीं, जिसने परोक्ष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि निर्मित की। इस संधि में जर्मनी को युद्ध का एकमात्र उत्तरदायी ठहराया गया और उस पर असंभव आर्थिक क्षतिपूर्ति लादी गई, जिससे वहां की अर्थव्यवस्था पूर्णतः चरमरा गई। साथ ही, जर्मनी को अपनी महत्वपूर्ण भूमि और सैन्य शक्ति से हाथ धोना पड़ा। इस राष्ट्रीय अपमान और आर्थिक तबाही ने जर्मन जनता में प्रतिशोध की भावना को जन्म दिया। हिटलर ने इसी असंतोष को शस्त्र बनाकर जनता को उकसाया और सत्ता प्राप्त की, जिससे अंततः एक और वैश्विक संघर्ष अपरिहार्य हो गया। इसने शांति के स्थान पर प्रतिशोध उत्पन्न किया।

246. (B) एक और विश्व युद्ध को रोकना।
संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 1945 में मुख्य रूप से इस दृढ़ इच्छा से प्रेरित थी कि भविष्य में मानव जाति को एक और विनाशकारी विश्व युद्ध की विभीषिका से सुरक्षित रखा जा सके। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुई करोड़ों व्यक्तियों की मृत्यु और अकल्पनीय विनाश ने यह स्पष्ट कर दिया था कि पुराने राष्ट्र संघ जैसी निर्बल संस्थाएं शांति बनाए रखने में पूर्णतः विफल रही हैं। संयुक्त राष्ट्र को एक ऐसी अधिक शक्तिशाली और सामूहिक सुरक्षा पर आधारित संस्था के रूप में निर्मित किया गया जहाँ राष्ट्र अपने विवादों को युद्ध के स्थान पर कूटनीति और संवाद से सुलझा सकें। इसका प्राथमिक मिशन अंतर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा और राष्ट्रों के मध्य न्यायपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देना है।

247. (A) एक संहिताबद्ध कानूनी प्रणाली वाला राज्य।
रोमन साम्राज्य विश्व इतिहास में एक परिष्कृत और संहिताबद्ध कानूनी प्रणाली के विकास का एक प्रारंभिक और सबसे उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। रोमनों ने कानूनों को व्यवस्थित करने, उन्हें लिखित रूप देने और न्याय के प्रशासन हेतु स्पष्ट प्रक्रियाएं निर्मित करने की परंपरा विकसित की। 'जस्टिनियन कोड' जैसे संकलनों ने नागरिक अधिकारों और संपत्ति के स्वामित्व के विषय में विस्तृत नियम प्रदान किए, जो केवल शासक की इच्छा पर आधारित नहीं थे। रोमन कानून का यह ढांचा इतना सुदृढ़ और तर्कसंगत था कि इसने आने वाली शताब्दियों में संपूर्ण पश्चिमी जगत की कानूनी प्रणालियों को आधार प्रदान किया और आधुनिक न्यायशास्त्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन की।

लेखन ने राजशाही के दैवीय अधिकार को चुनौती दी और यह स्थापित किया कि सरकार की शक्ति जनता की सहमति पर आधारित होनी चाहिए। यद्यपि दोनों क्रांतियों के परिणाम और हिंसक स्तर भिन्न थे, परंतु उनके पीछे की मूल बौद्धिक प्रेरणा समान थी, जिसने आधुनिक लोकतांत्रिक विश्व के निर्माण में निर्णायक भूमिका निर्वहन की और राजशाही को चुनौती दी।

219. (C) ऑस्ट्रियाई साम्राज्य
19वीं शताब्दी में इटली और जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रियाओं में ऑस्ट्रियाई साम्राज्य एक साझा शत्रु और सर्वाधिक बड़ी बाधा के रूप में उपस्थित था। ऑस्ट्रिया का प्रभाव इतालवी प्रायद्वीप के अनेक राज्यों और जर्मन परिसंघ के भीतर अत्यंत शक्तिशाली था। ऑस्ट्रिया किसी भी राष्ट्रवादी एकीकरण के विरुद्ध था क्योंकि इससे उसके अपने विशाल साम्राज्य की स्थिरता हेतु संकट उत्पन्न हो सकता था। इतालवी राष्ट्रवादियों को अपने क्षेत्रों को मुक्त कराने हेतु और प्रशिया को जर्मन राज्यों पर नेतृत्व स्थापित करने हेतु ऑस्ट्रिया को युद्धों में पराजित करना पड़ा। अतः ऑस्ट्रियाई प्रभुत्व को समाप्त करना ही इन दोनों आधुनिक राष्ट्रों के उदय की प्रथम अनिवार्य शर्त बनी।

220. (D) अर्थव्यवस्था और नागरिकों के पूर्ण लामबंदी को शामिल किया।
द्वितीय विश्व युद्ध को 'संपूर्ण युद्ध' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसने केवल रणक्षेत्र तक सीमित न रहकर राष्ट्र के जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया। इस युद्ध में सम्मिलित देशों ने अपनी संपूर्ण अर्थव्यवस्था, वैज्ञानिक संसाधनों और नागरिक आबादी को युद्ध के प्रयासों हेतु पूर्णतः लामबंद कर दिया था। कारखानों को शस्त्रास्त्रों के उत्पादन में परिवर्तित कर दिया गया, और नागरिक भी रसद आपूर्ति और रक्षा कार्यों के माध्यम से युद्ध का भाग बने। इसमें रणक्षेत्र और नागरिक क्षेत्रों के मध्य का अंतर लगभग समाप्त हो गया था, जहाँ नगरों पर भीषण बमबारी ने जनसामान्य को भी इस विनाशकारी संघर्ष का सीधा शिकार बनाया। इसने युद्ध की परिभाषा बदल दी।

221. (A) सामंतवाद
सामंतवाद मध्यकालीन यूरोप की वह मूलभूत राजनीतिक और सामाजिक प्रणाली है जो लॉर्ड्स, वैसल्स और सर्फ़ के एक स्पष्ट पदानुक्रमित ढांचे पर आधारित थी। इस व्यवस्था का मुख्य केंद्र भूमि का स्वामित्व था। एक लॉर्ड अपने अधीन वैसल्स को सुरक्षा और भूमि प्रदान करता था, जिसके बदले में वैसल सैन्य सेवा और निष्ठा हेतु वचनबद्ध होते थे। सबसे निचले स्तर पर सर्फ़ होते थे जो भूमि से संबद्ध थे और वहां कठोर श्रम करते थे। यह संपूर्ण संरचना आपसी दायित्वों और विकेंद्रीकृत शक्ति पर टिकी थी, जिसने आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के उदय से पूर्व सदियों तक यूरोपीय समाज का मार्गदर्शन किया। इसने सामाजिक स्थिरता और उत्पादन का आधार निर्मित किया।

222. (A) कानूनी रुप से संपत्ति के रूप में स्वामित्व होना।
'दास प्रथा' शब्द मानवीय स्थिति के उस अत्यंत दयनीय और शोषक स्वरुप को दर्शाता है जहाँ एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति द्वारा कानूनी रुप से 'संपत्ति' या 'वस्तु' के रूप में स्वामित्व में रखा जाता है। इस व्यवस्था में दास के पास कोई व्यक्तिगत अधिकार या स्वतंत्रता नहीं होती और वह पूर्णतः अपने स्वामी की इच्छा पर निर्भर होता है। दासों को क्रय, विक्रय या उपहार में दिया जा सकता था। इतिहास के विभिन्न कालखंडों में, चाहे वह प्राचीन रोम हो या औपनिवेशिक अमेरिका, यह प्रणाली आर्थिक उत्पादन हेतु बंधुआ श्रम प्राप्त करने का एक अत्यंत क्रूर और अमानवीय माध्यम बनी रही थी। इसने मानवाधिकारों का पूर्णतः उल्लंघन किया।

223. (B) इटली के नगर-राज्यों में।
पुनर्जागरण, जो कला और विद्या के 'पुनर्जन्म' का काल था, का प्रारंभ 14वीं शताब्दी में इटली के समृद्ध नगर-राज्यों, विशेषतः फ्लोरेंस, वेनिस और रोम में हुआ था। इन नगरों की धन-संपदा, उनके व्यापारिक संबंधों और प्राचीन रोमन सभ्यता के अवशेषों ने एक ऐसा वातावरण निर्मित किया जहाँ बौद्धिक जिज्ञासा और कलात्मक नवाचार फल-फूल सके। इटली की भौगोलिक स्थिति ने उसे प्राचीन ग्रीक और रोमन ज्ञान के पुनरुद्धार का केंद्र बना दिया। यहाँ से मानवतावाद और तर्क के विचार धीरे-धीरे संपूर्ण यूरोप में प्रसारित हुए, जिसने मध्यकाल के अंत और आधुनिक युग की शुरुआत में निर्णायक भूमिका निर्वहन की। इसने आधुनिक चिंतन को जन्म दिया।

224. (D) 1776 ईस्वी की अमेरिकी क्रांति
1776 की अमेरिकी क्रांति 18वीं शताब्दी की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और युगपरिवर्तनकारी घटना है। इस क्रांति ने तेरह अमेरिकी उपनिवेशों को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र कर विश्व के प्रथम आधुनिक लोकतांत्रिक गणराज्य, संयुक्त राज्य अमेरिका, की स्थापना की। इसने स्वतंत्रता और स्वशासन के उन उदारवादी सिद्धांतों को व्यवहार में लागू किया जो प्रबोधन के विचारकों ने दिए थे। अन्य विकल्प जैसे रुसी क्रांति और चीनी क्रांति 20वीं शताब्दी की घटनाएँ हैं, जबकि जर्मनी का एकीकरण 19वीं शताब्दी में हुआ था। अमेरिकी क्रांति ने न केवल अमेरिका का भविष्य परिवर्तित किया, बल्कि आने वाली फ्रांसीसी क्रांति हेतु भी वैचारिक प्रेरणा प्रदान की। इसने लोकतंत्र की नींव सुदृढ़ की।

225. (D) वाटरलू का युद्ध
नेपोलियन बोनापार्ट की अंतिम और निर्णायक पराजय 1815 में बेल्जियम के समीप 'वाटरलू के युद्ध' में हुई थी। इस ऐतिहासिक युद्ध में ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना और प्रशियाई सेना के गठबंधन ने नेपोलियन को पराजित किया। यह युद्ध नेपोलियन के सत्ता में पुनः लौटने के 'सौ दिनों' के प्रयास का दुखद अंत था। इस हार के पश्चात, नेपोलियन के साम्राज्य का स्वप्न पूर्णतः बिखर गया और उन्हें अटलांटिक महासागर में स्थित सेंट हेलेना द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया। वाटरलू की विजय ने यूरोप में नेपोलियन के सैन्य विस्तारवादी युग का सदैव हेतु समापन कर दिया। इसने यूरोप में पुनः रुढ़िवादी शांति और सीमाओं के पुनर्निर्धारण का मार्ग प्रशस्त किया।

226. (D) पूर्वी समस्या
1878 की बर्लिन कांग्रेस और क्रीमिया युद्ध दोनों ही 19वीं शताब्दी की 'पूर्वी समस्या' से गहराई से संबद्ध ऐतिहासिक

घटनाएँ हैं। 'पूर्वी समस्या' ऑटोमन साम्राज्य के पतन और उसके क्षेत्रों पर नियंत्रण हेतु यूरोपीय महाशक्तियों के मध्य की कूटनीतिक और सैन्य प्रतिद्वंद्विता का नाम था। क्रीमिया युद्ध में रूस के विस्तारवादी प्रयासों को अवरुद्ध किया गया, जबकि बर्लिन कांग्रेस का उद्देश्य बाल्कन क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखना और युद्ध के पश्चात रूसी लाभ को सीमित करना था। ये घटनाएँ दर्शाती हैं कि कैसे ऑटोमन साम्राज्य की निर्बलता ने दशकों तक यूरोप की राजनीति को तनावपूर्ण बनाए रखा और महाशक्तियों को निरंतर संघर्षों में झोंका। इसने युद्ध का आधार बनाया।

227. (C) उलझाने वाले सैन्य गठबंधनों की एक कठोर प्रणाली।
प्रथम विश्व युद्ध के मुख्य और जटिल कारणों में से एक यूरोप के देशों के मध्य निर्मित गुप्त और कठोर सैन्य गठबंधनों की प्रणाली थी। 20वीं शताब्दी की शुरुआत तक, यूरोप के प्रमुख राष्ट्र दो परस्पर विरोधी गुटों में विभाजित हो चुके थे। इन संधियों के अनुसार, यदि किसी एक मित्र राष्ट्र पर आक्रमण होता, तो अन्य देशों को अनिवार्य रुप से युद्ध में सम्मिलित होना पड़ता था। इस व्यवस्था ने एक स्थानीय विवाद को देखते ही देखते वैश्विक महायुद्ध में परिवर्तित कर दिया। जब ऑस्ट्रिया और सर्बिया के मध्य संघर्ष प्रारंभ हुआ, तो इन गठबंधनों की कड़ी ने संपूर्ण विश्व को विनाशकारी युद्ध की अग्नि में झोंक दिया। इसने कूटनीति के स्थान पर युद्ध को अपरिहार्य बनाया।

228. (A) इटली
बेनिटो मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवाद का उदय प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात इटली में हुआ था। मुसोलिनी ने 1922 में अपने 'ब्लैकशर्ट्स' के साथ 'रोम मार्च' कर सत्ता हस्तगत की और स्वयं को 'इल ड्यूस' घोषित किया। उन्होंने इटली में एक सर्वसत्तावादी तानाशाही स्थापित की जहाँ उदार लोकतंत्र को समाप्त कर राज्य के पूर्ण नियंत्रण और उग्र राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया गया। फासीवाद ने सैन्य शक्ति के महिमामंडन और रोमन साम्राज्य के गौरव को पुनः प्राप्त करने का वचन दिया। मुसोलिनी का यह मॉडल बाद में एडोल्फ हिटलर और अन्य अधिनायकवादी नेताओं हेतु प्रेरणा का स्रोत बना, जिसने 20वीं शताब्दी के इतिहास को अंधकारमय बना दिया और युद्ध की ओर धकेला।

229. (C) द्वितीय विश्व युद्ध
संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध की अभूतपूर्व तबाही और अमानवीयता के सीधे प्रत्युत्तर के रूप में की गई थी। युद्ध के दौरान ही विश्व की प्रमुख शक्तियों ने अनुभव किया कि भविष्य में ऐसे विनाशकारी संघर्षों को रोकने हेतु एक अधिक सशक्त और स्थायी अंतर्राष्ट्रीय संस्था की आवश्यकता है। इसका मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना, मानवाधिकारों की रक्षा करना और राष्ट्रों के मध्य सहयोग को बढ़ावा देना था। संयुक्त राष्ट्र ने विफल 'राष्ट्र संघ' का स्थान लिया और तब से यह वैश्विक विवादों के समाधान और मानवाधिकारों के संरक्षण हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय मंच के रूप में कार्य कर रहा है। इसने शांति की नवीन आशा जागृत की।

230. (A) श्रम की कमी उत्पन्न करके और सामंती व्यवस्था को चुनौती देकर।
14वीं शताब्दी में आई 'ब्लैक डेथ' महामारी ने मध्यकालीन यूरोप के सामाजिक और आर्थिक ताने-बाने को गहराई से प्रभावित किया। जनसंख्या में भारी गिरावट के कारण अचानक श्रम की भीषण कमी हो गई, जिसने कृषि और उत्पादन को संकट में डाल दिया। इस स्थिति ने जीवित बचे किसानों और मजदूरों की सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ा दिया, क्योंकि अब उनकी सेवाओं की मांग अत्यधिक थी। उन्होंने सामंती लॉर्ड्स से बेहतर पारिश्रमिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की मांग प्रारंभ कर दी। इस आर्थिक दबाव ने सामंती पदानुक्रम को दुर्बल कर दिया और पुराने भूमि-आधारित नियंत्रण को ध्वस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे आधुनिक मजदूरी आधारित अर्थव्यवस्था की नींव पड़ी और सामंतवाद समाप्त हुआ।

231. (D) यूरोपीय मध्यकाल
'चर्च की सर्वोच्चता' की अवधारणा यूरोपीय मध्यकाल की सर्वाधिक परिभाषित विशेषता थी। इस काल के दौरान रोमन कैथोलिक चर्च के पास अपार आध्यात्मिक, राजनीतिक और आर्थिक शक्ति थी। पोप का अधिकार शासकों और सम्राटों की सत्ता से भी ऊपर माना जाता था, और चर्च समाज के प्रत्येक पहलू—शिक्षा, कानून, नैतिकता और दैनिक जीवन— को पूर्णतः नियंत्रित करता था। चर्च न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र था, बल्कि वह सर्वाधिक बड़ा भू-स्वामी और राजनीतिक शक्ति संतुलन का नियामक भी था। इस युग में धर्म और राजनीति इतनी गहराई से संबद्ध थे कि चर्च की आधिकारिक स्वीकृति के बिना किसी भी बड़ी सत्ता या सामाजिक नियम की कल्पना करना पूर्णतः असंभव था।

232. (B) औद्योगिक पूंजीवाद
वणिकवाद की आर्थिक प्रणाली, जो 16वीं से 18वीं शताब्दी तक प्रभावी थी, के पश्चात 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में औद्योगिक पूंजीवाद का उदय हुआ। वणिकवाद ने व्यापार और स्वर्ण संचय पर ध्यान केंद्रित किया था, जबकि औद्योगिक पूंजीवाद ने मशीनीकरण और व्यापक विनिर्माण के माध्यम से संपत्ति सृजन पर बल दिया। इस नवीन प्रणाली ने मुक्त व्यापार और प्रतिस्पर्धा के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया, जैसा कि एडम स्मिथ जैसे विचारकों ने वकालत की थी। औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन की क्षमता को अनेक गुना बढ़ा दिया और पुरानी व्यापारिक बाधाओं को हटाकर एक ऐसी वैश्विक अर्थव्यवस्था की नींव रखी जो निजी निवेश और तकनीकी नवाचार द्वारा संचालित थी। इसने आधुनिक विश्व का स्वरुप निर्मित किया।

233. (D) पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना।
1949 की चीनी क्रांति विश्व इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है क्योंकि इसके परिणामस्वरूप 1 अक्टूबर, 1949 को 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' की स्थापना हुई। माओत्से तुंग के नेतृत्व में चीनी साम्यवादी दल ने गृहयुद्ध में राष्ट्रवादी शक्तियों को पराजित कर मुख्य भूमि चीन पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया। इस क्रांति ने चीन में सदियों पुराने सामंती ढांचे और विदेशी प्रभुत्व को समाप्त कर समाजवादी शासन की

नींव रखी। 1949 की यह विजय न केवल चीन के आंतरिक बदलाव का सूचक थी, बल्कि इसने वैश्विक शक्ति संतुलन को भी साम्यवाद के पक्ष में मोड़ दिया, जिससे शीत युद्ध के दौरान एशिया की राजनीति में विशाल परिवर्तन आया। इसने साम्यवाद को वैश्विक शक्ति बनाया।

234. (D) युद्धों के बीच की अवधि।
फासीवाद और नाजीवाद जैसी विनाशकारी तानाशाही शक्तियों का उदय मुख्य रूप से 'युद्धों के बीच की अवधि' (1918-1939) के दौरान हुआ। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात यूरोप में आई भारी आर्थिक तंगी, बेरोजगारी, भीषण मुद्रास्फीति और वर्साय की संधि से उपजा राष्ट्रीय अपमान इन विचारधाराओं के फलने-फूलने हेतु उपयुक्त भूमि बने। लोकतांत्रिक सरकारों की इन संकटों से निपटने में विफलता ने लोगों को कठोर अधिनायकवादी नेतृत्व की ओर धकेला। इसी अस्थिरता का लाभ उठाकर मुसोलिनी और हिटलर ने सत्ता प्राप्त की। यह कालखंड दर्शाता है कि किस प्रकार सामाजिक और आर्थिक अराजकता ने लोकतंत्र के पतन और दूसरे महायुद्ध की विभीषिका का मार्ग प्रशस्त किया। इसने इतिहास को बदल दिया।

235. (A) पवित्र रोमन साम्राज्य का सफल एकीकरण
प्रथम विश्व युद्ध के कारणों और परिणामों में साम्राज्यवाद, उग्र राष्ट्रवाद, वर्साय की संधि और सदियों पुराने साम्राज्यों—जैसे ऑटोमन और रूसी साम्राज्य—का पतन सम्मिलित है। इसके साथ ही, युद्ध ने संयुक्त राज्य अमेरिका को एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में उभारा। हालांकि, पवित्र रोमन साम्राज्य का एकीकरण इस युद्ध से संबंधित नहीं है। वास्तव में, पवित्र रोमन साम्राज्य का औपचारिक अंत प्रथम विश्व युद्ध से बहुत पूर्व, 1806 में नेपोलियन के अभियानों के दौरान हो चुका था। 19वीं शताब्दी के अंत में जो एकीकरण हुआ था, वह 'जर्मन साम्राज्य' का था, न कि पवित्र रोमन साम्राज्य का। यह ऐतिहासिक भिन्नता इन दो भिन्न युगों के राजनीतिक ढांचे को समझने हेतु महत्वपूर्ण है।

236. (B) राष्ट्रवाद और प्रशियाई सैन्यवाद।
1871 में जर्मनी का एकीकरण 19वीं शताब्दी की उग्र राष्ट्रवादी भावनाओं और प्रशिया की अजेय सैन्य शक्ति की एक महान विजय थी। ओटो वॉन बिस्मार्क ने कुशलता से प्रशियाई सैन्यवाद का उपयोग किया और कूटनीतिक चालों के माध्यम से जर्मन भाषी राज्यों को एकजुट किया। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि जर्मनी की एकता उदारवादी भाषणों से नहीं, बल्कि "रक्त और लौह" अर्थात युद्ध और सैन्य सामर्थ्य से प्राप्त होगी। डेनमार्क, ऑस्ट्रिया और फ्रांस के विरुद्ध जीती गई लड़ाइयों ने प्रशिया के प्रभुत्व को स्थापित किया और एक नवीन शक्तिशाली जर्मन साम्राज्य को जन्म दिया। यह एकीकरण यूरोप में राष्ट्रवाद की जीत और शक्ति संतुलन में एक स्थायी और निर्णायक परिवर्तन का प्रतीक बना।

237. (D) सामंतवाद
'जमींदारी' प्रणाली भू-धारण और राजस्व संग्रह के अपने स्वरूप में मध्यकालीन यूरोपीय 'सामंतवाद' के सिद्धांतों के अत्यंत समीप है। जिस प्रकार सामंतवाद में एक लॉर्ड भूमि का स्वामी होता था और किसान उसकी भूमि पर कार्य करने के बदले में उसे सेवाएं या कर प्रदान करते थे, उसी प्रकार जमींदारी व्यवस्था में जमींदार भूमि के मालिक के रूप में कार्य करते थे और कृषकों से लगान वसूल कर सरकार को देते थे। दोनों प्रणालियाँ एक स्पष्ट पदानुक्रमित सामाजिक संरचना और भूमि-आधारित आर्थिक नियंत्रण पर पूर्णतः आधारित थीं। इन प्रणालियों ने ग्रामीण समाज में शक्ति को कुछ हाथों में केंद्रित किया और बहुसंख्यक कृषक आबादी को आर्थिक रूप से निर्भर और शोषित स्थिति में रखा।

238. (B) कानून लिखित, सार्वजनिक और व्यवस्थित होना चाहिए।
'विधि संहिता' का मूलभूत और अनिवार्य सिद्धांत यह है कि समाज का संचालन करने वाले कानून लिखित, सार्वजनिक रूप से सुलभ और तार्किक रूप से व्यवस्थित होने चाहिए। यह अवधारणा शासकों की व्यक्तिगत इच्छा और मनमाने निर्णयों के स्थान पर नियमों की एक स्थायी प्रणाली स्थापित करती है। जब कानून लिखित होते हैं, तो वे समस्त नागरिकों पर समान रूप से लागू होते हैं और न्याय में निष्पक्षता सुनिश्चित होती है। संहिताबद्ध कानून यह सुनिश्चित करते हैं कि किसी व्यक्ति को उसके द्वारा किए गए कार्य के कानूनी परिणामों की सूचना पूर्व से हो। यह व्यवस्था ही आधुनिक न्यायशास्त्र और 'कानून के शासन' की मुख्य आधारशिला है, जो मनमानी सत्ता को प्रतिबंधित करती है।

239. (C) फ्रांसीसी क्रांति ने समाज को अधिक मौलिक रूप से पुनर्गठित किया।
अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांति के मध्य सबसे गहरा अंतर उनके द्वारा किए गए सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों के स्तर में था। अमेरिकी क्रांति मुख्य रूप से एक औपनिवेशिक स्वतंत्रता संग्राम था जिसने ब्रिटिश शासन को हटाकर एक लोकतांत्रिक गणराज्य निर्मित किया, परंतु वहां की आंतरिक सामाजिक संरचना में तत्काल कोई व्यापक उथल-पुथल नहीं हुई। इसके विपरीत, फ्रांसीसी क्रांति ने फ्रांस की सदियों पुरानी सामंती व्यवस्था, राजशाही और चर्च के एकाधिकार को पूर्णतः उखाड़ फेंका। इसने समाज को 'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व' के आधार पर मौलिक रूप से पुनर्गठित किया और एक अधिक हिंसक मार्ग अपनाया। फ्रांसीसी क्रांति ने न केवल राजनीति, बल्कि समाज के प्रत्येक पहलू को पूर्णतः परिवर्तित किया।

240. (B) मशीन-आधारित अर्थव्यवस्थाओं की ओर संक्रमण।
'औद्योगिक क्रांति' मानव इतिहास के उस युगांतरकारी दौर को संदर्भित करती है जहाँ उत्पादन की पद्धतियां हस्तशिल्प और पशु शक्ति के स्थान पर मशीन-आधारित कारखानों में स्थानांतरित हो गईं। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ब्रिटेन से प्रारंभ हुई इस प्रक्रिया ने नवीन तकनीकों के माध्यम से उत्पादन की गति और पैमाने में अकल्पनीय वृद्धि की। इसने कृषि आधारित समाजों को औद्योगिक समाजों में परिवर्तित कर दिया, जिससे व्यापक शहरीकरण और नवीन आर्थिक संरचनाओं का उदय हुआ। यह केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं था, बल्कि इसने लोगों के कार्य करने के तरीके, रहन-सहन और वैश्विक व्यापारिक संबंधों को

सामूहिक नियंत्रण का प्रस्ताव रखा ताकि श्रमिकों को न्याय और समानता प्राप्त हो सके।

211. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
द्वितीय विश्व युद्ध की विनाशलीला के पश्चात, भविष्य के संघर्षों को रोकने हेतु वास्तव में संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन किया गया था। हालांकि, यह तर्क पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि इसका पूर्ववर्ती संगठन, राष्ट्र संघ, सफल रहा था। वास्तविकता यह है कि राष्ट्र संघ 1930 के दशक में आक्रामक देशों की विस्तारवादी नीतियों को रोकने में पूर्णतः विफल रहा था, जिसके कारण अंततः द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना ही राष्ट्र संघ की इसी विफलता से शिक्षा लेकर एक अधिक शक्तिशाली और प्रभावी अंतर्राष्ट्रीय मंच निर्मित करने के उद्देश्य से की गई थी। राष्ट्र संघ की असफलता ने नवीन वैश्विक शांति व्यवस्था की अनिवार्यता सिद्ध की थी।

212. (B) ऑटोमन साम्राज्य के पतन से उत्पन्न स्थिति।
'पूर्वी समस्या' 19वीं शताब्दी की एक प्रमुख यूरोपीय कूटनीतिक चुनौती थी जो मुख्य रुप से "यूरोप के बीमार व्यक्ति" अर्थात ऑटोमन साम्राज्य के निरंतर पतन से जुड़ी थी। जैसे-जैसे ऑटोमन साम्राज्य दुर्बल हुआ और उसके अधीन बाल्कन देशों में राष्ट्रवाद की लहर उठी, वैसे-वैसे यूरोप की महाशक्तियों के मध्य वहां अपना प्रभाव बढ़ाने की होड़ लग गई। रूस, ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया इस स्थिति को लेकर चिंतित थे कि साम्राज्य के विघटन पर शक्ति संतुलन कैसे प्रभावित होगा। इस समस्या ने अनेक युद्धों और निरंतर अंतर्राष्ट्रीय तनाव को जन्म दिया, जिसने अंततः प्रथम विश्व युद्ध हेतु एक विस्फोटक आधार तैयार करने में मुख्य भूमिका निभाई।

213. (A) राज्य की शक्ति के लिए आर्थिक राष्ट्रवाद का एक रुप।
वणिकवाद की आर्थिक क्रांति को सर्वाधिक सटीक रुप से 'आर्थिक राष्ट्रवाद' के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ अर्थव्यवस्था का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र की राजनीतिक और सैन्य शक्ति को सुदृढ़ करना था। इस विचारधारा के अनुसार, राष्ट्र को अपनी समृद्धि बढ़ाने हेतु स्वर्ण और रजत का भंडार संचित करना चाहिए। इसे प्राप्त करने हेतु राज्य ने व्यापार में सक्रिय हस्तक्षेप किया, निर्यात को प्रोत्साहित किया और आयात पर कड़े प्रतिबंध आरोपित किए। उपनिवेशवाद भी इसी नीति का भाग था ताकि कच्चे माल पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सके। वणिकवाद ने मुक्त व्यापार के स्थान पर राज्य-नियंत्रित आर्थिक व्यवस्था पर बल दिया, जिसने आधुनिक व्यापारिक प्रतिद्वंद्विता की नींव रखी।

214. (D) कानून को सभी नागरिकों के लिए सुलभ और लागू करने योग्य बनाया।
रोमन साम्राज्य में 'विधि संहिता', जैसे कि 'ट्वेल्व टेबल्स', का महत्व इस बात में था कि इसने कानून को मनमर्जी के स्थान पर एक निश्चित और लिखित स्वरुप प्रदान किया। जब कानूनों को संहिताबद्ध और सार्वजनिक किया गया, तो वे समाज के समस्त नागरिकों हेतु सुलभ हो गए। इससे न्याय के प्रशासन में पारदर्शिता आई और न्यायाधीशों द्वारा किए जाने वाले मनमाने निर्णयों पर अंकुश लगा। यह व्यवस्था यह सुनिश्चित करती थी कि कानून केवल शासकों की गुप्त सूचना न रहे, बल्कि जनसामान्य भी अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत रह सकें। रोमन न्यायशास्त्र का यह सिद्धांत आधुनिक कानून के शासन और कानूनी समानता की आधारशिला बना।

215. (B) कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट राज्यों के बीच धार्मिक संघर्ष।
16वीं शताब्दी के धर्म सुधार आंदोलन ने यूरोप की धार्मिक एकता को भंग कर दिया और इसके परिणामस्वरुप कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट राज्यों के मध्य दीर्घकाल तक भीषण धार्मिक संघर्ष और युद्धों का दौर चला। इस विभाजन ने राजनीतिक गठबंधनों को भी धार्मिक आधार पर पुनर्गठित किया, जिसका चरम रूप 'तीस वर्षीय युद्ध' में देखा गया। हालांकि इस आंदोलन ने व्यक्तिवाद और धर्मग्रंथों की व्यक्तिगत व्याख्या को बढ़ावा दिया, परंतु इसने समाज को गहरे वैचारिक और सैन्य संघर्षों में भी झोंक दिया। इन युद्धों ने अंततः आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के उदय और धार्मिक सहिष्णुता की आवश्यकता को जन्म दिया, जिससे यूरोप की सामाजिक संरचना सदैव हेतु परिवर्तित हो गई।

216. (D) उदार लोकतंत्र के मूल्यों में विश्वास।
नाजीवाद का राजनीतिक दर्शन मौलिक रूप से उदार लोकतंत्र के मूल्यों के पूर्ण विरोध पर आधारित था। नाजी विचारधारा में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, बहुदलीय प्रणाली और नागरिक अधिकारों हेतु कोई स्थान नहीं था; इसके विपरीत, ये मूल्य उनके अनुसार राष्ट्र की शक्ति हेतु बाधक थे। नाजीवाद 'आर्य' नस्ल की श्रेष्ठता, चरम राष्ट्रवाद, सैन्यवाद और एक सर्वशक्तिमान नेता के प्रति अटूट निष्ठा पर टिका था। उन्होंने आक्रामक विस्तारवाद को राष्ट्रीय प्रगति का मार्ग माना। सत्ता में आते ही हिटलर ने लोकतांत्रिक संस्थाओं को विनष्ट कर दिया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि नाजीवाद और लोकतंत्र दो परस्पर विरोधी ध्रुव हैं। इसने मानवता को संकट में डाला।

217. (A) राष्ट्रवाद और उदारवाद।
1815 की वियना कांग्रेस का मुख्य राजनीतिक उद्देश्य उन क्रांतिकारी शक्तियों को दबाना था जो फ्रांसीसी क्रांति और नेपोलियन के अभियानों के कारण संपूर्ण यूरोप में प्रसारित हो गई थीं। विशेष रूप से, कांग्रेस के नेता 'राष्ट्रवाद' और 'उदारवाद' के विचारों को पुरानी व्यवस्था हेतु सर्वाधिक बड़ा खतरा मानते थे। वे चाहते थे कि यूरोप में राजशाही, चर्च का प्रभाव और पारंपरिक शक्ति संतुलन पुनः बहाल हो। इसके हेतु उन्होंने सीमाओं का पुनर्निर्धारण किया और दमनकारी नीतियों के माध्यम से जनसामान्य की स्वतंत्रता की मांगों को रोकने का प्रयास किया। वियना कांग्रेस आधुनिक इतिहास में रूढ़िवादी शक्तियों द्वारा आधुनिकता की लहर को रोकने का एक प्रमुख प्रयास थी।

218. (A) आंशिक रूप से प्रबोधन के विचारों से प्रेरित थीं।
1776 की अमेरिकी क्रांति और 1789 की फ्रांसीसी क्रांति दोनों ही 18वीं शताब्दी के 'प्रबोधन' युग के क्रांतिकारी विचारों से गहराई से प्रेरित थीं। दोनों क्रांतियों ने लोक संप्रभुता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, प्राकृतिक अधिकारों और कानून के शासन जैसे सिद्धांतों को अपना वैचारिक आधार बनाया। विचारकों के

248. (B) पुनर्जागरण
पुनर्जागरण वह महान बौद्धिक और सांस्कृतिक आंदोलन था जिसने तर्क, व्यक्तिवाद और मानवतावाद को केंद्र में रखकर मध्यकालीन यूरोपीय चिंतन को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। इस काल के विचारकों और कलाकारों ने प्राचीन ग्रीक और रोमन ज्ञान से प्रेरणा ली और यह स्थापित किया कि मनुष्य स्वयं अपनी नियति का निर्माता है। इस आंदोलन ने 'चर्च की सर्वोच्चता' और उसके कड़े धार्मिक सिद्धांतों को बिना किसी प्रश्न के स्वीकार करने की परंपरा को चुनौती दी। पुनर्जागरण ने वैज्ञानिक जिज्ञासा और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा दिया, जिससे कला, विज्ञान और साहित्य के क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई। इसी बौद्धिक चेतना ने आधुनिक युग की शुरुआत की और चर्च के एकाधिकार को समाप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया।

249. (B) शोषण के लिए क्षेत्रों पर यूरोपीय नियंत्रण।
जिस प्रकार औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन के तरीकों को परिवर्तित किया, उसी तरह उपनिवेशवाद ने एक बड़े आर्थिक परिवर्तन के रूप में वैश्विक संसाधनों के दोहन का मार्ग प्रशस्त किया। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण विभिन्न महाद्वीपों के क्षेत्रों पर यूरोपीय शक्तियों द्वारा स्थापित राजनीतिक नियंत्रण है, जिसका एकमात्र उद्देश्य उन क्षेत्रों का आर्थिक शोषण करना था। उपनिवेशवादी शक्तियों ने इन क्षेत्रों से कच्चे माल को सस्ते में प्राप्त किया और अपने उद्योगों द्वारा निर्मित माल को वहां महंगे दामों पर विक्रय करने हेतु एकाधिकार प्राप्त किया। यह व्यवस्था उपनिवेशों के संसाधनों की लूट पर आधारित थी, जिसने औपनिवेशिक शक्तियों को समृद्ध बनाया और उपनिवेशित क्षेत्रों को आर्थिक पिछड़ेपन और निर्धनता की ओर धकेला।

250. (A) उदार लोकतंत्र और साम्यवाद।
20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में फासीवाद और नाजीवाद के उदय को मुख्य रूप से उदार लोकतंत्र और साम्यवाद दोनों के विरुद्ध एक उग्र प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। इन विचारधाराओं के समर्थकों का मानना था कि उदार लोकतंत्र निर्बल, अक्षम और विभाजित है, जो राष्ट्रीय संकटों का सामना नहीं कर सकता। साथ ही, वे रूस में सफल हुई साम्यवादी क्रांति और वर्गीय संघर्ष के विचारों से भी अत्यधिक भयभीत थे। उन्होंने एक 'तीसरे विकल्प' का प्रस्ताव दिया जो चरम राष्ट्रवाद और एक सुदृढ़ अधिनायकवादी राज्य पर आधारित था। तानाशाहों ने वचन दिया कि वे लोकतंत्र की अव्यवस्था और साम्यवाद के संकट को समाप्त कर राष्ट्र की शक्ति और व्यवस्था को पुनः स्थापित करेंगे।

251. (B) संभावित साम्राज्य के पतन ने शक्ति संतुलन को संकट में डाल दिया था।
'पूर्वी समस्या' एक शताब्दी से भी अधिक समय तक यूरोपीय कूटनीति के केंद्र में रही क्योंकि ऑटोमन साम्राज्य का क्रमिक पतन यूरोप के 'शक्ति संतुलन' हेतु एक बड़ा संकट बन गया था। जैसे-जैसे साम्राज्य दुर्बल हुआ, रूस, ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया जैसी महाशक्तियों के मध्य इस विषय को लेकर तीव्र प्रतिद्वंद्विता प्रारंभ हो गई कि उसके क्षेत्रों और भूमध्य सागर मार्गों पर किसका प्रभाव होगा। प्रत्येक शक्ति को भय था कि यदि कोई दूसरी शक्ति वहां सुदृढ़ हो गई, तो उनके अपने रणनीतिक और व्यापारिक हित संकट में पड़ जाएंगे। इस निरंतर कूटनीतिक तनाव और साम्राज्य की गिरती स्थिति ने ही इस मुद्दे को एक दीर्घकालिक और खतरनाक अंतर्राष्ट्रीय संकट बनाए रखा। इसने युद्ध की नींव रखी।

252. (B) प्रथम विश्व युद्ध
20वीं शताब्दी की शुरुआत में हुए बाल्कन युद्धों ने यूरोप में तनाव को उस सीमा तक बढ़ा दिया था जहाँ से प्रथम विश्व युद्ध का प्रारंभ होना लगभग अपरिहार्य हो गया। इन युद्धों के कारण ऑटोमन साम्राज्य बाल्कन क्षेत्र से लगभग पूर्णतः बाहर हो गया, जिससे वहां के छोटे राष्ट्रों के मध्य क्षेत्रीय सीमाओं को लेकर भीषण संघर्ष प्रारंभ हो गया। साथ ही, बाल्कन में बढ़ते रूसी और ऑस्ट्रियाई प्रभाव की आपसी प्रतिद्वंद्विता ने संपूर्ण महाद्वीप को दो बड़े सैन्य गुटों में विभाजित कर दिया। इन युद्धों से उद्भूत अस्थिरता, उग्र राष्ट्रवाद और महाशक्तियों के परस्पर विरोधी हितों ने वह विस्फोटक वातावरण तैयार कर दिया था जिसे साराजेवो की एक घटना ने प्रथम विश्व युद्ध की विनाशकारी अग्नि में परिवर्तित कर दिया।

253. (B) उसका सत्ता में उदय और वियना कांग्रेस
'नेपोलियन बोनापार्ट का युग' मुख्य रूप से 1799 में उनके सत्ता में उदय से प्रारंभ होकर 1815 में आयोजित 'वियना कांग्रेस' तक के कालखंड को चिह्नित करता है। नेपोलियन ने फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात फैली अस्थिरता का लाभ उठाकर स्वयं को सम्राट घोषित किया। इसके पश्चात के वर्षों में उन्होंने संपूर्ण यूरोप को युद्धों में झोंक दिया और एक विशाल साम्राज्य निर्मित किया। 1815 में वाटरलू के युद्ध में उनकी अंतिम पराजय हुई, जिसके पश्चात वियना कांग्रेस ने यूरोप की राजनीतिक व्यवस्था को पुनः व्यवस्थित किया और नेपोलियन के प्रभाव को समाप्त कर पुरानी राजशाही को बहाल किया। यह कालखंड यूरोप के इतिहास में क्रांति, महान युद्ध और फिर रूढ़िवादी बहाली का एक पूर्ण ऐतिहासिक चक्र है।

254. (A) यहूदी-विरोध और नस्लीय विचारधारा
यद्यपि नाजीवाद और फासीवाद दोनों ही उग्र राष्ट्रवादी और अधिनायकवादी विचारधाराएं थीं, परंतु नाजीवाद का सबसे विशिष्ट और क्रूर वैचारिक घटक उसका 'यहूदी-विरोध' और 'नस्लीय श्रेष्ठता' का सिद्धांत था। हिटलर की विचारधारा 'आर्य' नस्ल की जैविक श्रेष्ठता के विचार पर आधारित थी, जिसने एक पूरे समुदाय के व्यवस्थित दमन और विनाश को अपनी सरकारी नीति बनाया। मुसोलिनी के इतालवी फासीवाद में प्रारंभ में नस्लवाद कोई केंद्रीय तत्व नहीं था, बल्कि वहां संपूर्ण ध्यान 'राज्य की शक्ति' और राष्ट्रीय एकता पर केंद्रित था। नाजीवाद द्वारा नस्ल को राजनीति का आधार बनाना ही उसे इतालवी फासीवाद से अधिक कट्टरपंथी, हिंसक और विनाशकारी बनाता है, जिसने पूरी मानवता को संकट में डाला।

255. (A) विधि का शासन
' विधि संहिता' की अवधारणा आधुनिक समाज में 'विधि के शासन' की स्थापना हेतु सर्वाधिक अनिवार्य और आधारभूत तत्व है। विधि का शासन यह सुनिश्चित करता है कि समाज

थी। नेपोलियन की पराजय के पश्चात, यूरोप की विजयी महाशक्तियों ने यह निर्णय लिया कि भविष्य की स्थिरता हेतु फ्रांसीसी क्रांति द्वारा उत्पन्न उदारवादी और लोकतांत्रिक लहर को रोकना अनिवार्य है। उन्होंने 'वैधता' के सिद्धांत के तहत उन पुराने राजवंशों को उनके सिंहासन पर बहाल किया जिन्हें क्रांति ने हटा दिया था। वियना कांग्रेस का मुख्य लक्ष्य यूरोप के पुराने शक्ति संतुलन को वापस लाना और पारंपरिक संस्थाओं, जैसे राजशाही और चर्च, के प्रभाव को पुनः सुदृढ़ करना था। यह आधुनिक इतिहास में प्रगतिशील शक्तियों के विरुद्ध रुढ़िवादी शक्तियों की संगठित अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया थी।

298. (B) ऑटोमन साम्राज्य
19वीं शताब्दी में 'पूर्वी समस्या' मुख्य रूप से 'ऑटोमन साम्राज्य' की निरंतर बढ़ती निर्बलता और उसके संभावित विघटन से उत्पन्न कूटनीतिक और सैन्य मुद्दों से संबंधित थी। जैसे-जैसे यह साम्राज्य दुर्बल हुआ और उसके अधीन बाल्कन क्षेत्रों में राष्ट्रवाद की लहर उठी, यूरोपीय महाशक्तियों—जैसे रूस, ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया—के मध्य वहां अपना प्रभाव बढ़ाने की होड़ लग गई। प्रत्येक शक्ति इस बात को लेकर चिंतित थी कि साम्राज्य के पतन की स्थिति में यूरोप का 'शक्ति संतुलन' कैसे प्रभावित होगा। रूस बाल्कन के माध्यम से भूमध्य सागर तक पहुँचना चाहता था, जबकि ब्रिटेन रूसी विस्तार को रोकना चाहता था। इस निरंतर अंतर्राष्ट्रीय तनाव ने ही 'पूर्वी समस्या' को दशकों तक यूरोप की राजनीति का सर्वाधिक जटिल और खतरनाक मुद्दा बनाए रखा।

299. (C) 1917 की रूसी क्रांति
प्रथम विश्व युद्ध के विनाशकारी काल के दौरान ही 20वीं शताब्दी की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और युगांतरकारी घटना, '1917 की रूसी क्रांति', घटित हुई थी। युद्ध में हो रही रूस की निरंतर सैन्य पराजय, देश में व्याप्त भीषण खाद्य संकट और जार के निरंकुश शासन के प्रति जनता के चरम असंतोष ने इस क्रांति को जन्म दिया। क्रांति के परिणामस्वरूप सदियों पुराने रोमानोव राजवंश का अंत हुआ और व्लादिमीर लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक सत्ता में आए। इस क्रांति ने रूस को विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य में परिवर्तित कर दिया और उसे प्रथम विश्व युद्ध के खूनी संघर्ष से बाहर निकाल लिया। युद्ध के मध्य में ही एक महान साम्राज्य का इस प्रकार पतन होना और नवीन विचारधारा का उदय होना विश्व इतिहास के लिए निर्णायक मोड़ था।

300. (B) प्रथम विश्व युद्ध के बाद की लोकतांत्रिक व्यवस्था का।
फासीवाद और नाजीवाद जैसी विनाशकारी तानाशाही शक्तियों का उदय मुख्य रूप से 'प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात की स्थापित लोकतांत्रिक व्यवस्था' के गहरे पतन और विफलता का प्रतीक है। युद्ध के पश्चात जर्मनी और इटली में जो उदारवादी लोकतंत्र और संसदीय प्रणालियाँ लागू की गई थीं, वे भीषण आर्थिक मंदी, बेरोजगारी और वर्साय की संधि से उपजे राष्ट्रीय अपमान का समाधान करने में पूर्णतः असमर्थ सिद्ध हुईं। अराजकता और निराशा के इस माहौल में, तानाशाहों ने यह तर्क दिया कि लोकतंत्र एक निर्बल और अक्षम व्यवस्था है जो राष्ट्र को एकजुट नहीं रख सकती। जनता ने व्यवस्था और गौरव की पुनर्स्थापना के आकर्षक वचनों के बदले अपने लोकतांत्रिक अधिकारों को त्याग दिया। यह उदय लोकतंत्र की उन विफलता को उजागर करता है।

सीमाओं को परिवर्तित किया, जबकि कूटनीतिक कांग्रेसों ने महाशक्तियों के मध्य शक्ति संतुलन निर्मित करने का प्रयास किया। इन समस्त घटनाओं की सामूहिक परिणति अंततः ऑटोमन साम्राज्य के विघटन और प्रथम विश्व युद्ध के छिड़ने के रूप में हुई, जिसने विश्व की राजनीति को बदला।

263. (B) राष्ट्रवाद
19वीं शताब्दी में जर्मनी और इटली दोनों का एकीकरण आधुनिक इतिहास में 'राष्ट्रवाद' की अजेय शक्ति की सर्वाधिक स्पष्ट और प्रभावशाली अभिव्यक्ति थी। राष्ट्रवाद की इस शक्तिशाली भावना ने विभिन्न बिखरे हुए राज्यों और विदेशी प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों को उनकी साझा भाषा, संस्कृति और गौरवशाली इतिहास के नाम पर एक सूत्र में पिरो दिया। इटली में मैजिनी और गैरीबाल्डी के आदर्शों ने, और जर्मनी में बिस्मार्क की कुशल राजनीति ने इस राष्ट्रवादी चेतना को एक स्वतंत्र राष्ट्र-राज्य के निर्माण में परिवर्तित कर दिया। इन एकीकरणों ने यह सिद्ध कर दिया कि साझा पहचान की भावना किसी भी साम्राज्यवादी बंधन से अधिक सुदृढ़ होती है। इन नए राष्ट्रों के उदय ने यूरोप की राजनीतिक शक्ति संरचना को स्थायी रूप से बदल दिया।

264. (C) उलझाने वाले गठबंधनों की एक प्रणाली
प्रथम विश्व युद्ध के मुख्य और सर्वाधिक विनाशकारी कारणों में से एक यूरोप की महाशक्तियों के मध्य निर्मित 'उलझाने वाले सैन्य गठबंधनों' की एक अत्यंत जटिल और गुप्त प्रणाली थी। 20वीं शताब्दी की शुरुआत तक, यूरोप के राष्ट्र दो प्रतिस्पर्धी गुटों में विभाजित हो चुके थे, जहाँ एक राष्ट्र पर आक्रमण का अर्थ उसके समस्त सहयोगियों द्वारा युद्ध में सम्मिलित होना था। इस कठोर व्यवस्था ने किसी भी स्थानीय विवाद को देखते ही देखते वैश्विक महायुद्ध में परिवर्तित करने की संभावना को अत्यधिक बढ़ा दिया। जब ऑस्ट्रिया और सर्बिया के मध्य संघर्ष प्रारंभ हुआ, तो इन गठबंधनों की कड़ी ने एक-एक करके रूस, जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन को इस विनाशकारी अग्नि में झोंक दिया। इसने कूटनीति की गुंजाइश विनष्ट कर दी।

265. (A) प्रथम विश्व युद्ध के बाद के आर्थिक संकट और राजनीतिक अस्थिरता।
20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में फासीवाद और नाजीवाद जैसी तानाशाही शक्तियों का उदय मुख्य रूप से प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात यूरोप में उत्पन्न भीषण आर्थिक संकट और चरम राजनीतिक अस्थिरता के कारण संभव हुआ। युद्ध के पश्चात जर्मनी और इटली में बेरोजगारी, अत्यधिक मुद्रास्फीति और वर्साय की संधि से उपजा गहरा राष्ट्रीय अपमान व्याप्त था। तत्कालीन लोकतांत्रिक सरकारें इन भयावह समस्याओं का समाधान करने में पूर्णतः अक्षम सिद्ध हो रही थीं। इसी निराशा और अराजकता के मध्य तानाशाहों ने व्यवस्था, सुरक्षा और राष्ट्रीय गौरव की पुनर्स्थापना का आकर्षक वचन दिया। त्रस्त जनता ने निर्धनता और अस्थिरता से मुक्ति पाने हेतु इन अधिनायकवादी नेताओं के कठोर समाधानों को स्वीकार कर लिया, जिससे लोकतंत्र का पतन हुआ।

266. (A) वर्साय की संधि के अनसुलझे मुद्दे।
द्वितीय विश्व युद्ध के उदय के पीछे सर्वाधिक प्रमुख और गहरा कारण 1919 की 'वर्साय की संधि' से उत्पन्न अनसुलझे मुद्दे और वहां व्याप्त अन्याय की भावना थी। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात की इस संधि ने जर्मनी पर अत्यंत अपमानजनक शर्तें, भारी आर्थिक क्षतिपूर्ति और क्षेत्रीय नुकसान थोपे थे, जिसे जर्मन जनता ने कभी स्वीकार नहीं किया। संधि द्वारा निर्मित 'राष्ट्र संघ' जैसी संस्थाएं भी निर्बल थीं और महाशक्तियों के हितों के टकराव को रोकने में विफल रहीं। इस अपमान और आर्थिक तबाही ने ही हिटलर जैसे कट्टरपंथी नेता को अपनी विस्तारवादी नीतियों हेतु उपयुक्त भूमि प्रदान की। इस प्रकार, वर्साय की संधि ने शांति स्थापित करने के स्थान पर केवल एक अल्पकालिक युद्ध विराम दिया था, जिसने महायुद्ध को जन्म दिया।

267. (B) विधि संहिता और शासन के सिद्धांत।
रोमन साम्राज्य की सर्वाधिक स्थायी और प्रभावशाली ऐतिहासिक विरासत उसकी परिष्कृत 'विधि संहिता' और शासन के उन्नत सिद्धांत हैं। रोमनों ने कानूनों को व्यवस्थित, लिखित और तार्किक निर्मित करने की जो परंपरा प्रारंभ की, उसने आधुनिक न्यायशास्त्र की आधारशिला सुदृढ़ की। उनके सिद्धांतों ने यह स्थापित किया कि न्याय मनमाना नहीं बल्कि स्थापित नियमों पर आधारित होना चाहिए, जो समस्त नागरिकों पर समान रूप से लागू हों। रोमन शासन व्यवस्था में प्रशासनिक कुशलता, नागरिक अधिकार और न्यायपालिका की अवधारणाएं इतनी परिपक्व थीं कि उन्होंने सदियों तक संपूर्ण यूरोप की कानूनी प्रणालियों का मार्गदर्शन किया। आज भी विश्व की अनेक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के मूल तत्व सीधे तौर पर इसी महान रोमन प्रशासनिक विरासत से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

268. (A) अंतर्निहित सामाजिक और कानूनी असमानता।
दास प्रथा, अभिजाततंत्र और सामंतवाद—ये तीनों ऐतिहासिक प्रणालियाँ मौलिक रूप से मनुष्यों के मध्य अंतर्निहित सामाजिक और कानूनी असमानता के सिद्धांतों पर निर्मित थीं। इन व्यवस्थाओं में यह माना जाता था कि समाज स्वाभाविक रूप से विभिन्न श्रेणियों में विभाजित है, जहाँ कुछ व्यक्ति केवल शासन करने और विशेषाधिकार भोगने हेतु जन्म लिए हैं, जबकि अन्य केवल उनकी सेवा और श्रम करने हेतु। शक्ति और अधिकारों का वितरण योग्यता के स्थान पर जन्म, वंश या बल पर पूर्णतः आधारित था। ये प्रणालियाँ बहुसंख्यक आबादी को कानूनी अधिकारों से वंचित रखती थीं और उन्हें एक छोटे कुलीन वर्ग के अधीन रहने हेतु विवश करती थीं। मानवीय समानता के आधुनिक लोकतांत्रिक विचारों के उभरने से पूर्व ये असमान प्रणालियाँ समाज का आधार थीं।

269. (B) पुरातन व्यवस्था को चुनौती देने वाले व्यवधानों द्वारा।
'ब्लैक डेथ' महामारी ने 14वीं शताब्दी के दौरान यूरोप की पुरातन सामंती व्यवस्था में जबरदस्त व्यवधान उत्पन्न किया, जिसने परोक्ष रूप से 'पुनर्जागरण' के आगमन का मार्ग प्रशस्त किया। जनसंख्या में भारी गिरावट के कारण श्रम की भीषण कमी हो गई, जिससे सामंती लॉर्ड्स का कृषकों पर सदियों

पुराना नियंत्रण दुर्बल पड़ गया। इस संकट ने समाज में नवीन आर्थिक और सामाजिक गतिशीलता उत्पन्न की, जहाँ लोगों ने पुराने चर्च-नियंत्रित विचारों और परंपराओं पर प्रश्न उठाना प्रारंभ कर दिया। इस अस्थिरता ने चिंतन और सृजनात्मकता के नवीन द्वार खोले, जहाँ मानवतावाद और सांसारिक उपलब्धियों पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। सामंतवाद के इस क्रमिक पतन और बढ़ते नगरीकरण ने ही वह बौद्धिक भूमि तैयार की जहाँ पुनर्जागरण फल-फूल सका।

270. (A) निरंकुश राजतंत्र और तानाशाही
'संसदीय लोकतंत्र' सरकार का वह स्वरूप है जो जनता की इच्छा, निर्वाचित प्रतिनिधित्व और कानून के शासन पर आधारित है, जो इसे निरंकुश राजतंत्र और तानाशाही के साथ सर्वाधिक तीव्र विरोधाभास में खड़ा करता है। जहाँ संसदीय लोकतंत्र में सत्ता जनता के प्रति उत्तरदायी होती है और शक्तियों का स्पष्ट पृथक्करण होता है, वहीं तानाशाही में समस्त शक्ति एक व्यक्ति या छोटे समूह में केंद्रित होती है। निरंकुश शासन में किसी भी प्रकार की असहमति या व्यक्तिगत स्वतंत्रता हेतु कोई स्थान नहीं होता और निर्णय शासक की व्यक्तिगत सनक पर लिए जाते हैं। लोकतंत्र नागरिक अधिकारों की रक्षा करता है, जबकि तानाशाही प्रायः दमन और बल प्रयोग पर आधारित होती है। ये दोनों व्यवस्थाएं शासन की नैतिकता के मामले में परस्पर विरोधी हैं।

271. (B) औद्योगिक क्रांति
समाजवाद की विचारधारा 19वीं शताब्दी में मुख्य रूप से 'औद्योगिक क्रांति' द्वारा उत्पन्न भीषण सामाजिक और आर्थिक असमानताओं की एक सशक्त आलोचना के रूप में उभरी। औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन में तो वृद्धि की, परंतु इसने कारखानों के स्वामियों के हाथों में संपत्ति का अत्यधिक संचय और लाखों श्रमिकों हेतु निर्धनता, शोषण एवं नारकीय जीवन की स्थिति भी उत्पन्न की। समाजवादी विचारकों ने तर्क दिया कि पूंजीवाद अनिवार्य रूप से वर्ग संघर्ष को जन्म देता है और जनसामान्य के श्रम का लाभ केवल कुछ व्यक्तियों को प्राप्त होता है। इसी अन्याय के विरुद्ध समाजवाद ने एक ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था का प्रस्ताव दिया जहाँ उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व हो ताकि समाज के समस्त सदस्यों को न्यायसंगत आर्थिक लाभ और समानता प्राप्त हो सके।

272. (A) धुर दक्षिणपंथी सर्वसत्तावादी विचारधाराएँ।
'नाजीवाद' और 'फासीवाद' दोनों ही 20वीं शताब्दी की धुर दक्षिणपंथी सर्वसत्तावादी विचारधाराओं के सर्वाधिक घातक उदाहरण हैं। ये विचारधाराएं उग्र राष्ट्रवाद, सैन्यवाद और एक सर्वशक्तिमान नेता के प्रति पूर्ण समर्पण के सिद्धांतों पर आधारित थीं। ये उदारवादी लोकतंत्र, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और साम्यवाद—इन समस्त के कट्टर विरोधी थे। इनका मुख्य उद्देश्य राष्ट्र की शक्ति को चरम पर पहुँचाना था, जिसके हेतु वे नागरिक जीवन के प्रत्येक पहलू पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करते थे। इन विचारधाराओं ने विरोधियों के हिंसक दमन और युद्ध को राष्ट्रीय गौरव का साधन माना। नाजीवाद और फासीवाद की इन्हीं विनाशकारी नीतियों ने यूरोप को अराजकता में झोंका और अंततः द्वितीय विश्व युद्ध का मुख्य कारण बनीं।

273. (B) पश्चिमी ईसाई जगत
16वीं शताब्दी के 'धर्म सुधार आंदोलन' ने पश्चिमी ईसाई जगत की उस सदियों पुरानी धार्मिक एकता को सदैव हेतु भंग कर दिया जो रोमन कैथोलिक चर्च के अधीन बनी हुई थी। मार्टिन लूथर और अन्य सुधारकों के नेतृत्व में इस आंदोलन ने चर्च के एकाधिकार और पोप की सर्वोच्च सत्ता को सीधी चुनौती दी। इसके परिणामस्वरूप ईसाई धर्म कई शाखाओं में विभाजित हो गया, जिससे संपूर्ण यूरोप में नवीन प्रोटेस्टेंट संप्रदायों का उदय हुआ। इस विभाजन ने न केवल धार्मिक मतभेदों को जन्म दिया, बल्कि इसने व्यापक राजनीतिक संघर्षों, गृहयुद्धों और राष्ट्रीय सीमाओं के पुनर्निर्धारण को भी गहराई से प्रभावित किया। पश्चिमी ईसाई जगत का यह विखंडन आधुनिक युग की शुरुआत और धर्मनिरपेक्ष चिंतन के विकास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।

274. (D) विनिर्माण और जीवन शैली को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया।
औद्योगिक क्रांति को एक वास्तविक 'आर्थिक क्रांति' माना जाता है क्योंकि इसने मानव समाज में उत्पादन के तरीकों, विनिर्माण की प्रक्रिया और लोगों की संपूर्ण जीवन शैली को मौलिक रूप से और स्थायी रूप से परिवर्तित कर दिया। इसने सदियों पुरानी कृषि प्रधान और हस्तशिल्प आधारित अर्थव्यवस्था को एक मशीन-संचालित औद्योगिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित कर दिया। इस क्रांति के कारण वस्तुओं का उत्पादन घरों से निकलकर बड़े कारखानों में होने लगा, जिससे उत्पादन की मात्रा और गति में अकल्पनीय वृद्धि हुई। इसके साथ ही, इसने व्यापक शहरीकरण, नवीन सामाजिक वर्गों के उदय और वैश्विक व्यापारिक संबंधों के नवीन प्रतिमान स्थापित किए। इसने आधुनिक औद्योगिक विश्व और हमारी समकालीन जीवन पद्धति की आधारशिला सुदृढ़ की।

275. (A) 18वीं शताब्दी
अमेरिका की क्रांति (1776 ईस्वी) और फ्रांस की क्रांति (1789 ईस्वी) दोनों को 18वीं शताब्दी की दो सर्वाधिक महान और प्रभावशाली क्रांतियों के रूप में जाना जाता है। इस शताब्दी को 'प्रबोधन का युग' भी कहा जाता है, जहाँ तर्क और स्वतंत्रता के विचारों ने पुरानी राजशाही व्यवस्था को चुनौती दी। अमेरिकी क्रांति ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध स्वशासन की विजय का प्रदर्शन किया, जबकि फ्रांसीसी क्रांति ने सदियों पुराने सामंती विशेषाधिकारों और निरंकुश राजतंत्र को जड़ से उखाड़ फेंका। इन दोनों घटनाओं ने मिलकर आधुनिक लोकतंत्र, मानवाधिकारों और राष्ट्रवाद के उन बीज सिद्धांतों को बोया, जिन्होंने आने वाली शताब्दियों में संपूर्ण विश्व की राजनीतिक दिशा और शासन प्रणालियों को गहराई से प्रभावित किया और बदला।

276. (C) माओत्से तुंग
1949 की चीनी क्रांति माओत्से तुंग को सर्वोच्च सत्ता में लेकर आई, जिन्होंने चीनी साम्यवादी दल का नेतृत्व करते हुए एक

लंबे गृहयुद्ध में राष्ट्रवादी शक्तियों को पराजित किया। माओ के सत्ता में आने के साथ ही चीन में सदियों पुराने सामंती ढांचे और विदेशी प्रभुत्व का अंत हुआ और 1 अक्टूबर, 1949 को 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' की स्थापना हुई। माओत्से तुंग ने मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा को चीनी परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित किया और कृषकों को अपनी शक्ति का मुख्य आधार बनाया। उनके नेतृत्व में चीन ने एक व्यापक सामाजिक और आर्थिक पुनर्गठन की प्रक्रिया प्रारंभ की, जिसने चीन को एक साम्यवादी महाशक्ति के रूप में स्थापित किया और वैश्विक राजनीति में एक नवीन शक्ति केंद्र निर्मित किया।

277. (C) वियना कांग्रेस
नेपोलियन बोनापार्ट के विस्तारवादी युग के अंत और उसके पश्चात की नवीन यूरोपीय व्यवस्था को 'वियना कांग्रेस' में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों द्वारा सुदृढ़ किया गया था। इस भव्य राजनयिक बैठक में विजयी महाशक्तियों—ब्रिटेन, रूस, ऑस्ट्रिया और प्रशिया—ने मिलकर यूरोप के मानचित्र को पुनः व्यवस्थित किया ताकि भविष्य में कोई भी राष्ट्र पुनः नेपोलियन की तरह प्रभुत्व स्थापित न कर सके। कांग्रेस ने 'शक्ति संतुलन' और 'वैधता' के सिद्धांतों को अपनाते हुए पुराने राजवंशों को उनके सिंहासन पर बहाल किया। इन निर्णयों ने नेपोलियन द्वारा किए गए परिवर्तनों को उलट दिया और यूरोप में एक दीर्घकाल तक चलने वाली रूढ़िवादी शांति की स्थापना की। वियना कांग्रेस ने आधुनिक यूरोपीय कूटनीति के ढांचे को निर्धारित करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

278. (B) "रक्त और लौह"
बिस्मार्क के नेतृत्व में जर्मनी के एकीकरण को सदैव उनके प्रसिद्ध वाक्यांश "रक्त और लौह" के साथ संबंद्ध किया जाता है। 1862 में दिए गए उनके एक भाषण से उद्धृत यह वाक्यांश बिस्मार्क की उस यथार्थवादी और कठोर नीति का प्रतीक था, जिसके अनुसार राष्ट्रीय एकता के महान प्रश्नों का समाधान उदारवादी भाषणों से नहीं, बल्कि केवल सैन्य शक्ति और युद्ध के माध्यम से ही संभव था। उन्होंने इसी नीति का अनुपालन करते हुए डेनमार्क, ऑस्ट्रिया और फ्रांस के विरुद्ध सफल युद्ध लड़े और बिखरे हुए जर्मन राज्यों को प्रशिया के नेतृत्व में एक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में एकजुट किया। यह वाक्यांश 19वीं शताब्दी की शक्ति-केंद्रित कूटनीति का सर्वाधिक सशक्त सूत्र माना जाता है, जिसने जर्मनी को महाशक्ति बनाया।

279. (D) जर्मनी
1919 में हस्ताक्षरित 'वर्साय की संधि' ने प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत और उससे हुए व्यापक विनाश का संपूर्ण नैतिक और कानूनी उत्तरदायित्व मुख्य रूप से 'जर्मनी' पर आरोपित किया। संधि के 'युद्ध अपराध' खंड के तहत जर्मनी को युद्ध का एकमात्र अपराधी घोषित किया गया। इस उत्तरदायित्व के आधार पर जर्मनी पर अत्यंत भारी आर्थिक क्षतिपूर्ति थोपी गई, उसकी सैन्य शक्ति को सीमित कर दिया गया और उसके महत्वपूर्ण क्षेत्रीय भागों को छीन लिया गया। इन दंडात्मक प्रावधानों ने जर्मन जनता में गहरे अपमान और प्रतिशोध की भावना को जन्म दिया। इतिहासकार मानते हैं कि संधि की इसी कठोरता और एकपक्षीय स्वभाव ने ही भविष्य में नाजीवाद के उदय और द्वितीय विश्व युद्ध का वैचारिक आधार तैयार किया, जिसने शांति के स्थान पर प्रतिशोध उत्पन्न किया।

280. (C) कॉर्पोरेट राज्य
मुसोलिनी के फासीवादी शासन की एक अत्यंत विशिष्ट और प्रमुख आर्थिक-राजनीतिक नीति 'कॉर्पोरेट राज्य' की स्थापना करना थी। इस अवधारणा के तहत मुसोलिनी ने समाज के विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों—जैसे उद्योग, कृषि और व्यवसाय—को पृथक 'कॉर्पोरेशनों' में संगठित किया, जहाँ श्रमिकों और स्वामियों दोनों को राज्य के कड़े नियंत्रण में रखा गया। इसका उद्देश्य वर्ग संघर्ष को समाप्त करना और संपूर्ण अर्थव्यवस्था को राष्ट्र की शक्ति बढ़ाने के एकमात्र लक्ष्य के प्रति समर्पित करना था। फासीवाद ने उदार लोकतंत्र की बहुदलीय प्रणाली और स्वतंत्र ट्रेड यूनियनों को अस्वीकार कर दिया और उनके स्थान पर इन कॉर्पोरेशनों के माध्यम से आर्थिक जीवन का पूर्ण सरकारी ढांचा तैयार किया। यह मुसोलिनी द्वारा राज्य की सर्वशक्तिमान सत्ता स्थापित करने का उपकरण था।

281. (B) द्वितीय विश्व युद्ध
1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना विश्व समुदाय द्वारा 'द्वितीय विश्व युद्ध' जैसी भीषण तबाही और अमानवीयता को रोकने में अपनी विफलता का एक सीधा और पीड़ादायक परिणाम थी। पूर्ववर्ती 'राष्ट्र संघ' की अक्षमता ने यह स्पष्ट कर दिया था कि शांति बनाए रखने हेतु एक अधिक शक्तिशाली, समावेशी और सामूहिक सुरक्षा पर आधारित वैश्विक संगठन की अनिवार्य आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र का मुख्य मिशन यह सुनिश्चित करना था कि भविष्य में राष्ट्रों के मध्य विवादों का समाधान युद्ध के स्थान पर कूटनीति और अंतर्राष्ट्रीय कानून के माध्यम से हो। इस संगठन की स्थापना का मूल आधार ही यह दृढ़ संकल्प था कि आने वाली पीढ़ियों को युद्ध की विभीषिका से सुरक्षित रखा जा सके, जो द्वितीय विश्व युद्ध के कड़वे अनुभवों से उद्भूत हुआ था।

282. (B) कुलीन और विशेषाधिकार प्राप्त परिवारों का छोटा समूह
'अभिजाततंत्र' शब्द ऐतिहासिक रूप से सरकार के उस स्वरूप को संदर्भित करता है जहाँ शासन की सर्वोच्च शक्ति समाज के एक अत्यंत छोटे, विशेषाधिकार प्राप्त और आमतौर पर वंशानुगत कुलीन परिवारों के समूह के हाथों में केंद्रित होती है। इस व्यवस्था में नेतृत्व का आधार व्यक्तिगत योग्यता के स्थान पर जन्म और उच्च कुल से संबंध को माना जाता था। इन परिवारों के पास न केवल राजनीतिक शक्ति होती थी, बल्कि वे समाज के अधिकांश आर्थिक संसाधनों और भूमि के भी स्वामी होते थे। अभिजाततंत्र इस विश्वास पर टिका था कि केवल एक विशिष्ट वर्ग ही शासन हेतु आवश्यक परंपराओं और शिक्षा का वास्तविक अधिकारी है। आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के उभरने से पूर्व, यह प्रणाली सदियों तक शक्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा के वितरण का मुख्य ढांचा थी।

283. (A) शक्तिशाली राजतंत्र और पुनर्जागरण
मध्यकालीन यूरोप में 'चर्च की सर्वोच्चता' की सदियों पुरानी नींव को 14वीं से 16वीं शताब्दी के दौरान उभरे शक्तिशाली

का संचालन किसी व्यक्ति या तानाशाह की मनमर्जी के स्थान पर पूर्व-निर्धारित और निष्पक्ष कानूनों के माध्यम से हो। जब कानून संहिताबद्ध और लिखित होते हैं, तो वे समस्त नागरिकों पर समान रूप से लागू होते हैं और न्याय में सुसंगति बनी रहती है। यह व्यवस्था शासकों की शक्ति को सीमित करती है और नागरिकों को मनमाने दमन से सुरक्षा प्रदान करती है। संहिताबद्ध कानून ही वह ढांचा तैयार करते हैं जिसके भीतर लोकतंत्र और न्यायपूर्ण समाज विकसित होता है, जहाँ कोई भी कानून से ऊपर नहीं होता।

256. (B) कृषि और भूमि स्वामित्व
सामंतवाद मध्यकालीन यूरोप की वह विशिष्ट प्रणाली थी जो पूर्णतः कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और भूमि के स्वामित्व पर टिकी हुई थी। इस व्यवस्था में राजनीतिक शक्ति का विकेंद्रीकरण था, जहाँ विशाल भू-भाग छोटे-छोटे सामंतों या लॉर्ड्स के नियंत्रण में थे। भूमि ही संपत्ति और सामाजिक स्थिति का एकमात्र मुख्य स्रोत थी। किसान इन भू-स्वामियों के अधीन रहकर कठोर कृषि श्रम करते थे और बदले में उन्हें सुरक्षा प्राप्त होती थी। मुद्रा का उपयोग सीमित था और अधिकांश विनिमय एवं सामाजिक संबंध भूमि धारण और उसके बदले में दी जाने वाली सेवाओं के इर्द-गिर्द बुने हुए थे। इसी भूमि-आधारित ढांचे ने सदियों तक यूरोप के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन को पूर्णतः नियंत्रित और निर्देशित किया।

257. (B) प्राचीन ग्रीस और रोम
पुनर्जागरण काल मुख्य रूप से प्राचीन ग्रीस और रोम की महान संस्कृतियों, कलाओं और विद्याओं में उपजी नवीन और गहरी रुचि से संबंद्ध है। मध्यकाल के दौरान जो शास्त्रीय ज्ञान और मानवतावादी दृष्टिकोण लगभग लुप्त हो गए थे, उन्हें 14वीं शताब्दी के इतालवी विद्वानों और कलाकारों ने पुनः खोजा। उन्होंने यूनानी दार्शनिकों के तर्कवाद और रोमन साम्राज्य की प्रशासनिक श्रेष्ठता को आधुनिक जीवन का आदर्श बनाया। इस प्राचीन ज्ञान के पुनरुद्धार ने ही कला में यथार्थवाद, विज्ञान में जिज्ञासा और साहित्य में मानवतावाद को जन्म दिया। पुनर्जागरण केवल अतीत की नकल नहीं थी, बल्कि यह प्राचीन मूल्यों को अपनाकर एक आधुनिक और तर्कसंगत विश्व के निर्माण की दिशा में एक क्रांतिकारी बौद्धिक प्रयास था।

258. (A) कराधान और शासन
1776 की अमेरिकी क्रांति की शुरुआत उन गहरे संघर्षों में निहित थी जो मुख्य रूप से कराधान और शासन के अधिकारों को लेकर थे। अमेरिकी उपनिवेशों का मानना था कि ब्रिटिश संसद को उन पर कर आरोपित करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है क्योंकि वहां उनका कोई निर्वाचित प्रतिनिधि नहीं था। "बिना प्रतिनिधित्व के कराधान नहीं" का नारा इसी असंतोष की उपज था। इसके साथ ही, वे अपने आंतरिक शासन में अधिक स्वायत्तता और स्वतंत्रता चाहते थे। जब ब्रिटिश सरकार ने इन मांगों को दबाने हेतु कठोर सैन्य कदम उठाए, तो यह विवाद एक पूर्ण स्वतंत्रता संग्राम में परिवर्तित हो गया। यह क्रांति स्वशासन और नागरिक अधिकारों की रक्षा हेतु लड़ा गया आधुनिक इतिहास का प्रथम बड़ा युद्ध था।

259. (A) राजवंशों और सम्राटों का
1911 की चीनी क्रांति ने चीन के इतिहास में दो हजार वर्षों से भी अधिक समय से चले आ रहे राजवंशों और सम्राटों के शासन को स्थायी रूप से समाप्त कर दिया। इस क्रांति ने किंग राजवंश का तख्तापलट किया और चीन को राजशाही के बोझ से मुक्त कराया। यह चीन हेतु एक महान ऐतिहासिक मोड़ था क्योंकि इसने प्राचीन शाही परंपराओं के स्थान पर एक आधुनिक 'गणराज्य' की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। यद्यपि सम्राट का अंत होने के पश्चात चीन को लंबे समय तक आंतरिक अस्थिरता और संघर्ष का सामना करना पड़ा, परंतु इस क्रांति ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब चीन में दैवीय अधिकार वाले किसी सम्राट हेतु कोई स्थान नहीं है। इसने आधुनिक चीन की नींव रखी और पुरानी जर्जर व्यवस्था का अंत किया।

260. (A) समाजवाद/साम्यवाद
1917 की रूसी क्रांति के परिणामस्वरूप रूस में एक ऐसी नवीन शासन व्यवस्था की स्थापना हुई जो 'समाजवाद' और 'साम्यवाद' की विचारधारा पर आधारित थी। व्लादिमीर लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों को व्यवहार में लागू करते हुए निजी संपत्ति और उत्पादन के साधनों पर पूंजीवादी नियंत्रण को समाप्त कर दिया। उन्होंने एक ऐसा राज्य निर्मित करने का प्रयास किया जहाँ संसाधनों का स्वामित्व और वितरण संपूर्ण समाज या श्रमिक वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में राज्य के पास हो। इस क्रांति ने रूस को सोवियत संघ में परिवर्तित कर दिया, जो विश्व का प्रथम प्रमुख साम्यवादी राष्ट्र बना। इस विचारधारा ने न केवल रूस को परिवर्तित किया, बल्कि 20वीं शताब्दी की संपूर्ण वैश्विक राजनीति को प्रभावित किया।

261. (D) नेपोलियन के बाद के यूरोप के मानचित्र को पुनः तैयार करना।
1815 में आयोजित 'वियना कांग्रेस' यूरोप के इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजनयिक बैठक थी, जिसका मुख्य उद्देश्य नेपोलियन युद्धों द्वारा उत्पन्न राजनीतिक उथल-पुथल को व्यवस्थित करना था। विजयी महाशक्तियों ने मिलकर यूरोप के मानचित्र को इस प्रकार पुनः तैयार किया कि वहां एक नवीन 'शक्ति संतुलन' स्थापित हो सके और कोई भी राष्ट्र पुनः नेपोलियन की तरह प्रभुत्व स्थापित न कर सके। कांग्रेस के नेताओं ने क्रांति-पूर्व के पुराने राजवंशों को उनके सिंहासन पर बहाल किया और उदारवादी आंदोलनों को रोकने हेतु रुढ़िवादी सिद्धांतों को अपनाया। इस बैठक ने यूरोप में दशकों तक चलने वाली एक नवीन शांति और स्थिरता की व्यवस्था की नींव रखी, जिसे 'वियना व्यवस्था' कहा जाता है।

262. (B) पूर्वी समस्या
क्रीमिया युद्ध, बर्लिन कांग्रेस, युवा तुर्क आंदोलन और बाल्कन युद्ध—ये समस्त घटनाएँ 19वीं और 20वीं शताब्दी की शुरुआत की उस महान कूटनीतिक उलझन के विभिन्न घटक हैं जिसे 'पूर्वी समस्या' कहा जाता है। यह संपूर्ण समस्या ऑटोमन साम्राज्य की गिरती हुई शक्ति और उसके कारण बाल्कन एवं मध्य पूर्व में उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता के इर्द-गिर्द घूमती थी। प्रत्येक घटना ने इस संकट को पृथक रूप से प्रभावित किया; युद्धों ने

वाले 'जर्मनी' द्वारा पोलैंड पर किए गए अचानक और भीषण आक्रमण के साथ हुई थी। इससे पूर्व हिटलर ने ऑस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया के भागों पर अधिकार कर लिया था, परंतु पोलैंड पर हमले ने मित्र राष्ट्रों के धैर्य को समाप्त कर दिया। पोलैंड के साथ अपनी रक्षा संधि के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए ब्रिटेन और फ्रांस ने दो दिन पश्चात जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। पोलैंड पर यह आक्रमण न केवल एक क्षेत्रीय विवाद था, बल्कि यह हिटलर की उस विस्तारवादी नीति का भाग था जो संपूर्ण यूरोप पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहती थी। इस घटना ने शांति की समस्त आशाओं को समाप्त कर महायुद्ध प्रारंभ किया।

291. (B) विधि का शासन।
'विधि संहिता' की अवधारणा आधुनिक समाज की उस आधारशिला को स्थापित करने हेतु अनिवार्य है जिसे 'विधि का शासन' कहा जाता है। विधि का शासन यह सुनिश्चित करता है कि समाज का संचालन शासक की व्यक्तिगत सनक या पक्षपात के स्थान पर पूर्व-निर्धारित, स्पष्ट और निष्पक्ष नियमों के माध्यम से हो। जब कानून संहिताबद्ध और लिखित होते हैं, तो वे समाज के प्रत्येक नागरिक पर समान रूप से लागू होते हैं, जिससे न्याय में सुसंगति और पारदर्शिता आती है। यह व्यवस्था शासक की शक्ति को सीमित करती है और नागरिकों को राज्य के मनमाने दमन से सुरक्षा प्रदान करती है। संहिताबद्ध कानून ही वह अनिवार्य ढांचा तैयार करते हैं जिसके भीतर लोकतंत्र सुरक्षित रह सकता है और न्याय का प्रशासन विश्वसनीय बन पाता है।

292. (B) प्राचीन रोमन साम्राज्य
दास प्रथा की संस्था प्राचीन 'रोमन साम्राज्य' की संपूर्ण अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना हेतु एक अत्यंत मौलिक और अनिवार्य स्तंभ थी। रोमन समाज और उसकी आर्थिक समृद्धि का एक बड़ा भाग दासों द्वारा किए गए कठोर श्रम पर निर्भर था, जो कृषि, खनन, निर्माण कार्यों और घरेलू सेवाओं में बड़े पैमाने पर नियोजित थे। युद्धों में विजय के माध्यम से निरंतर नए दासों की आपूर्ति सुनिश्चित की जाती थी, जिन्हें कानूनन 'संपत्ति' माना जाता था। रोमन कानून ने दासता को एक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया था, जहाँ दासों के पास कोई नागरिक अधिकार नहीं थे। यह प्रणाली इतनी गहरी थी कि रोमन साम्राज्य के विशाल बुनियादी ढांचे और उत्पादन व्यवस्था की कल्पना बिना इस बंधुआ श्रम के करना पूर्णतः असंभव है।

293. (B) किसानों की सौदेबाजी की शक्ति बढ़ा दी।
14वीं शताब्दी की 'ब्लैक डेथ' महामारी ने मध्यकालीन यूरोप में सामंतवाद के पतन को इसलिए तीव्र कर दिया क्योंकि इसने जनसंख्या में भारी गिरावट के कारण अचानक 'श्रम की भीषण कमी' उत्पन्न कर दी। इस संकट ने जीवित बचे किसानों और मजदूरों की स्थिति को अप्रत्याशित रूप से सुदृढ़ कर दिया और उनकी 'सौदेबाजी की शक्ति' को बढ़ा दिया। अब लॉर्ड्स हेतु उन्हें भूमि से बांधे रखना और कम मजदूरी पर कार्य कराना संभव नहीं था, क्योंकि श्रम का मूल्य अत्यधिक बढ़ चुका था। किसानों ने बेहतर पारिश्रमिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की पुरजोर मांग की। लॉर्ड्स के विरोध के उपरांत भी, आर्थिक वास्तविकता ने उन्हें पुराने सामंती नियमों को शिथिल करने पर विवश किया, जिससे सामंतवाद समाप्त हुआ।

294. (A) पूर्ववर्ती मध्यकाल।
पुनर्जागरण के क्रांतिकारी विचार और दृष्टिकोण अनेक महत्वपूर्ण मायनों में अपने 'पूर्ववर्ती मध्यकाल' की विश्वदृष्टि की पूर्ण अस्वीकृति थे। मध्यकाल जहाँ मुख्य रूप से परलोकवाद, चर्च के धार्मिक नियंत्रण और आस्था पर आधारित था, वहीं पुनर्जागरण ने तर्क, मानवतावाद और सांसारिक उपलब्धियों को सर्वोच्च महत्व प्रदान किया। पुनर्जागरण के विचारकों ने मध्यकालीन संकुचित सोच को त्यागकर प्राचीन ग्रीक और रोमन ज्ञान की स्वतंत्रता और वैज्ञानिक जिज्ञासा को अपनाया। उन्होंने यह स्थापित किया कि मनुष्य केवल ईश्वर की एक असहाय रचना नहीं है, बल्कि वह अपनी बुद्धि और रचनात्मकता से विश्व को समझने और उसे परिवर्तित करने की पूर्ण क्षमता रखता है। इस बौद्धिक विद्रोह ने ही आधुनिक चिंतन की सुदृढ़ नींव रखी।

295. (C) औद्योगिक क्रांति
समाजवाद एक प्रमुख विचारधारा के रूप में मुख्य रूप से 19वीं शताब्दी की 'औद्योगिक क्रांति' के पश्चात और उसके दुष्परिणामों के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिक्रिया के रूप में उभरी। औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि की, परंतु इसने कारखानों के स्वामियों द्वारा श्रमिकों का भीषण शोषण, अत्यधिक निर्धनता और समाज में चरम आर्थिक असमानता को भी जन्म दिया। समाजवादी विचारकों ने तर्क दिया कि निजी लाभ पर आधारित पूंजीवादी व्यवस्था अनिवार्य रूप से बहुसंख्यक आबादी के शोषण का कारण बनती है। उन्होंने एक ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था का प्रस्ताव रखा जहाँ उत्पादन के साधनों पर सामूहिक या सामाजिक स्वामित्व हो ताकि संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित किया जा सके और श्रमिकों को पूर्ण समानता और न्याय प्राप्त हो सके।

296. (A) नेपोलियन बोनापार्ट का उदय।
1789 की फ्रांसीसी क्रांति अपने विभिन्न क्रांतिकारी चरणों और राजनीतिक उथल-पुथल के पश्चात अंततः 'नेपोलियन बोनापार्ट के उदय' की ओर ले गई। क्रांति ने सदियों पुरानी राजशाही को उखाड़ फेंका था, परंतु इसके पश्चात फ्रांस में जो निरंतर अस्थिरता और अराजकता का दौर चला, उसने जनता के मन में एक सुदृढ़ और प्रभावी शासन की आकांक्षा उत्पन्न की। नेपोलियन ने एक कुशल सैन्य कमांडर के रूप में अपनी योग्यता सिद्ध की और क्रांतिकारी आदर्शों एवं राष्ट्रवाद के नाम पर सत्ता पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया। यद्यपि वे पश्चात में सम्राट बन गए, परंतु उन्होंने क्रांति के अनेक प्रशासनिक और कानूनी सुधारों को संहिताबद्ध किया और उन्हें संपूर्ण यूरोप में प्रसारित किया। नेपोलियन का शासन क्रांति के एक जटिल परिणाम स्वरूप है।

297. (C) रुढ़िवाद और राजतंत्र की पुनर्स्थापना।
1815 में आयोजित 'वियना कांग्रेस' मुख्य रूप से 'रुढ़िवाद' की भावना और 'राजतंत्र की पुनर्स्थापना' के दृढ़ संकल्प से संचालित

सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

10. चंद्रगुप्त द्वितीय का उदयगिरि गुफा शिलालेख गुप्त साम्राज्य के राजनीतिक विस्तार को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। ये गुफाएं मध्य प्रदेश के किस जिले में स्थित हैं?
(A) विदिशा
(B) रायसेन
(C) उज्जैन
(D) धार

11. मध्य प्रदेश में पाए गए अभिलेखों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कुषाण राजा वाशिष्क के सांची शिलालेख से इस क्षेत्र में कुषाण प्रभाव का प्रमाण मिलता है।
2. बंधु वर्मा का मंदसौर शिलालेख कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल के दौरान लिखा गया था।
3. पानगुराड़िया शिलालेख राज्य में पाया गया अशोक का एक अन्य लघु शिलालेख है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

12. कुमारगुप्त प्रथम और बंधु वर्मा के समय वत्सभट्टि द्वारा रचित मंदसौर शिलालेख किसके काव्य वर्णन के लिए प्रसिद्ध है?
(A) एक भव्य विष्णु मंदिर का निर्माण
(B) रेशम बुनकरों की एक श्रेणी के प्रवास और गतिविधियां
(C) समुद्रगुप्त की सैन्य विजय
(D) औलीकर वंश की वंशावली

13. गर्दभिल्ल वंश का संस्थापक कौन था, जिसने शकों द्वारा अपदस्थ किए जाने से पहले उज्जैन क्षेत्र में शासन किया था?
(A) विक्रमादित्य
(B) पुष्यमित्र
(C) गर्दभिल्ल
(D) अपराजित

14. ऐतिहासिक राजवंशों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: नाग वंश ने मध्य भारत में अपनी सत्ता स्थापित की थी, जिसके प्रमुख केंद्र पद्मावती (पवाया), विदिशा और मथुरा थे।
कथन II: अंतिम नाग राजा गणपतिनाग को गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने हराया था।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

15. औलीकर वंश की राजधानी निम्नलिखित में से किस स्थान पर थी, जिसने हूण राजा मिहिरकुल को पराजित किया था?
(A) दशपुर (मंदसौर)
(B) विदिशा
(C) एरण
(D) उज्जयिनी

16. निम्नलिखित में से किस राजवंश ने 5वीं और 6वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान मध्य प्रदेश के बघेलखंड क्षेत्र पर शासन किया और वे गुप्तों के सामंत थे?
(A) परिव्राजक वंश
(B) परिव्राजक और उच्चकल्प वंश
(C) उच्चकल्प वंश
(D) औलीकर वंश

17. मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों पर शासन करने वाले निम्नलिखित राजवंशों को उनके उदय के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. परमार वंश
2. त्रिपुरी का कलचुरी वंश
3. औलीकर वंश
4. नाग वंश

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) 4, 3, 2, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 2, 1, 4, 3

18. एक चंदेल शासक और उसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि के सही जोड़े की पहचान करें।
(A) विद्याधर - महमूद गजनवी की सेना को हराया
(B) यशोवर्मन - कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण
(C) धंग - खजुराहो में लक्ष्मण मंदिर का निर्माण
(D) परमर्दि देव - पृथ्वीराज चौहान को हराया

19. परमार वंश मध्य प्रदेश के सबसे महत्वपूर्ण मध्यकालीन राजवंशों में से एक था। निम्नलिखित में से किसे इस वंश का सबसे प्रतापी शासक माना जाता है, जो अपनी सैन्य दक्षता और कला एवं साहित्य के संरक्षण के लिए जाना जाता था?
(A) सियक II
(B) वाक्पतिराज मुंज
(C) भोज
(D) उदयादित्य

20. त्रिपुरी के कलचुरी वंश के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) उनकी राजधानी त्रिपुरी थी, जो आधुनिक जबलपुर के

अध्याय 10

मध्य प्रदेश का इतिहास एवं स्वाधीनता आन्दोलन

1. मध्य प्रदेश का कौन-सा प्रागैतिहासिक काल मुख्य रूप से लघु पाषाण उपकरणों के उपयोग द्वारा पहचाना जाता है?
(A) पुरापाषाण काल
(B) मध्यपाषाण काल
(C) नवपाषाण काल
(D) ताम्रपाषाण काल

2. मध्य प्रदेश में ताम्रपाषाण काल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: ताम्रपाषाण काल की विशेषता पाषाण उपकरणों के साथ तांबे का पहली बार उपयोग है।
कथन II: मध्य प्रदेश के प्रमुख ताम्रपाषाण कालीन स्थलों में कायथा, एरण और नवदाटोली शामिल हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

3. मध्य प्रदेश के शैलाश्रयों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) भीमबेटका एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है जो अपने शैलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है।
(B) आदमगढ़ शैलाश्रय होशंगाबाद शहर के पास स्थित हैं।
(C) शैल चित्र विशेष रूप से केवल राजदरबार के जीवन के दृश्यों को चित्रित करते हैं।
(D) कई शैलाश्रयों में पुरापाषाण काल से ऐतिहासिक काल तक दीर्घकालिक मानव निवास के प्रमाण मिलते हैं।

4. मध्य प्रदेश के शैल चित्र प्रागैतिहासिक लोगों के जीवन को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इन चित्रों में चित्रित सबसे सामान्य विषय क्या है?
(A) कृषि पद्धतियां और मौसमी फसल चक्र
(B) मंदिरों और स्तूपों का स्थापत्य निर्माण
(C) स्थानीय राजाओं और रानियों के औपचारिक चित्र
(D) शिकार, नृत्य और सामुदायिक जीवन के दृश्य

5. मध्य प्रदेश में निम्नलिखित में से किस स्थल को एक प्रमुख शैलाश्रय स्थल नहीं माना जाता है?
(A) भीमबेटका
(B) आदमगढ़
(C) नवदाटोली
(D) पानगुराड़िया

6. प्रागैतिहासिक स्थलों और उनसे संबंधित काल के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (प्रागैतिहासिक स्थल)
P. भीमबेटका
Q. कायथा
R. आदमगढ़
S. एरण
सूची II: (संबंधित काल)
1. ताम्रपाषाण संस्कृति
2. मध्यपाषाण कालीन साक्ष्य
3. पुरापाषाण से मध्यपाषाण काल
4. ताम्रपाषाण और लौह युग
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

7. अशोक का रूपनाथ शिलालेख मध्य प्रदेश के किस जिले में स्थित है?
(A) दतिया
(B) सतना
(C) सीहोर
(D) जबलपुर

8. मध्य प्रदेश में पाए गए अशोक के गुर्जरा शिलालेख का प्राथमिक महत्व क्या है?
(A) इसमें स्पष्ट रूप से 'अशोक' नाम का उल्लेख उसकी उपाधि 'देवानांपिय' के साथ किया गया है।
(B) यह कलिंग युद्ध के इतिहास का विस्तृत विवरण प्रदान करता है।
(C) यह स्थानीय क्षेत्र में अशोक की रानी की पहचान कारुवाकी के रूप में करता है।
(D) यह जनता के साथ संवाद करने के लिए खरोष्ठी लिपि का उपयोग करता है।

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): बेसनगर गरुड़ध्वज स्तंभ शिलालेख भारत में प्रारंभिक वैष्णववाद का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है।
कारण (R): शिलालेख वासुदेव के सम्मान में यूनानी राजदूत हेलियोडोरस द्वारा एक गरुड़-ध्वज की स्थापना का विवरण देता है।

राजतंत्रों और पुनर्जागरण आंदोलन से गंभीर चुनौती प्राप्त हुई। जैसे-जैसे फ्रांस, इंग्लैंड और स्पेन के शासक अपनी शक्ति बढ़ाते गए, उन्होंने चर्च के राजनीतिक हस्तक्षेप और करों के अधिकार को चुनौती देना प्रारंभ कर दिया। वे अपने क्षेत्र में स्वतंत्र और सर्वोच्च शासक बनने की आकांक्षा रखते थे। साथ ही, पुनर्जागरण ने मानवतावाद और तर्क पर बल देकर जनसामान्य की सोच को चर्च के कड़े धार्मिक नियंत्रण से मुक्त किया। इन दोनों शक्तियों ने मिलकर यह स्थापित किया कि सांसारिक शासन और बौद्धिक जिज्ञासा हेतु चर्च के सिद्धांतों की अधीनता अनिवार्य नहीं है, जिससे आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

284. (A) उपनिवेशों ने मातृ देश के हितों की सेवा की।
'उपनिवेशवाद' और 'वणिकवाद' आपस में गहराई से जुड़ी हुई दो आर्थिक अवधारणाएं थीं, जहाँ संपूर्ण व्यवस्था इस प्रकार निर्मित की गई थी कि 'उपनिवेश सदैव मातृ देश के आर्थिक हितों की सेवा' करें। वणिकवादी सिद्धांतों के अनुसार, उपनिवेशों का एकमात्र उद्देश्य अपने साम्राज्य की संपत्ति और शक्ति को सुदृढ़ करना था। इसके हेतु उपनिवेशों को केवल कच्चे माल के सस्ते स्रोत और मातृ देश के कारखानों में निर्मित तैयार माल हेतु एक लाचार और सुरक्षित बाजार के रूप में प्रयुक्त किया गया। वहां की स्थानीय अर्थव्यवस्था को जानबूझकर औपनिवेशिक हितों के अधीन रखा गया और उनके स्वतंत्र व्यापारिक विकास को पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया गया। संसाधनों की यह एकतरफा लूट ही वह मुख्य आधार थी जिसने यूरोपीय साम्राज्यों को समृद्ध बनाया।

285. (A) दीर्घकालिक राजतंत्रों का
1911 की चीनी क्रांति और 1917 की रूसी क्रांति दोनों ही विश्व इतिहास की ऐसी क्रांतिकारी घटनाएँ थीं जिनके परिणामस्वरूप सदियों से चले आ रहे शक्तिशाली 'दीर्घकालिक राजतंत्रों' का पूर्ण पतन और तख्तापलट हुआ। चीन में 1911 की क्रांति ने दो हजार वर्षों से भी अधिक पुरानी शाही शासन व्यवस्था और किंग राजवंश का अंत कर दिया। इसी प्रकार, 1917 की रूसी क्रांति ने रूस में रोमानोव राजवंश के तीन सौ वर्ष पुराने शासन को जड़ से उखाड़ फेंका। इन दोनों क्रांतियों ने यह सिद्ध कर दिया कि अब 'राजाओं के दैवीय अधिकार' और निरंकुश शाही सत्ता का युग समाप्त हो चुका है। इन राजतंत्रों के अवशेषों पर नवीन राजनीतिक व्यवस्थाओं की स्थापना हुई, जिसने आधुनिक युग की राजनीति को नवीन और लोकतांत्रिक दिशा प्रदान की।

286. (B) वहां राष्ट्रवादी आकांक्षाएं और महाशक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता थी।
प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व बाल्कन प्रायद्वीप को "यूरोप का बारूद का ढेर" इसलिए कहा जाता था क्योंकि वहां की स्थिति अत्यंत विस्फोटक और अस्थिर थी। एक ओर वहां निवास करने वाले विभिन्न जातीय समूहों की अपनी स्वतंत्र राष्ट्र निर्मित करने की तीव्र राष्ट्रवादी आकांक्षाएं थीं, जिसके कारण वे ऑटोमन और ऑस्ट्रियाई साम्राज्य के विरुद्ध निरंतर संघर्ष कर रहे थे। दूसरी ओर, रूस और ऑस्ट्रिया-हंगरी जैसी महाशक्तियों के मध्य इस क्षेत्र पर अपना प्रभाव बढ़ाने हेतु भीषण प्रतिद्वंद्विता थी। छोटे-छोटे क्षेत्रीय विवादों और इन महाशक्तियों के परस्पर विरोधी हितों ने मिलकर एक ऐसा तनावपूर्ण वातावरण निर्मित कर दिया था जहाँ किसी भी छोटी चिंगारी का एक भीषण महायुद्ध में परिवर्तित होना निश्चित था, जो साराजेवो हत्याकांड से हुआ।

287. (B) एक एकल और स्वतंत्र इतालवी राष्ट्र-राज्य बनाने का।
इटली का एकीकरण, जिसे इतालवी भाषा में 'रिसोर्जिमेंटो' कहा जाता है, मुख्य रूप से बिखरे हुए इतालवी राज्यों को संयोजित कर 'एक एकल और स्वतंत्र राष्ट्र-राज्य' निर्मित करने का एक महान आंदोलन था। 19वीं शताब्दी के मध्य तक इतालवी प्रायद्वीप अनेक छोटे राज्यों में विभाजित था और उसका बड़ा भाग विदेशी शक्तियों, विशेषतः ऑस्ट्रिया, के नियंत्रण में था। मैजिनी, कावूर और गैरीबाल्डी जैसे नेताओं के नेतृत्व में राष्ट्रवादियों का लक्ष्य इतालवी भाषी जनसामान्य को विदेशी शासन से मुक्त कराना और एक समान संस्कृति के आधार पर एकजुट करना था। कूटनीति और साहसी सैन्य अभियानों के माध्यम से यह लक्ष्य 1861 में प्राप्त हुआ, जिसने आधुनिक इटली को विश्व के मानचित्र पर एक नवीन और संगठित शक्ति के रूप में स्थापित किया।

288. (C) अमेरिका और सोवियत संघ के बीच शीत युद्ध का प्रारंभ।
प्रथम विश्व युद्ध के परिणामों में पूर्वी यूरोप में नवीन राष्ट्रों का उदय, राष्ट्र संघ का निर्माण और भारी जन-धन की हानि जैसे महत्वपूर्ण प्रभाव सम्मिलित हैं। हालांकि, संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के मध्य 'शीत युद्ध का प्रारंभ' प्रथम विश्व युद्ध का परिणाम नहीं है। शीत युद्ध की शुरुआत वास्तव में द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति (1945) के पश्चात हुई थी, जब ये दोनों महाशक्तियों वैचारिक रूप से एक-दूसरे के सम्मुख खड़ी हो गई थीं। यद्यपि 1917 में रुस में साम्यवाद आया था, परंतु उस समय अमेरिका और सोवियत संघ के मध्य वह वैश्विक ध्रुवीकरण और निरंतर तनाव वाली स्थिति विकसित नहीं हुई थी जो द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात देखी गई। शीत युद्ध 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध की परिघटना है।

289. (C) नस्लीय सिद्धांत
'नाजीवाद' को प्रायः 'फासीवाद' का एक अधिक चरम और हिंसक स्वरूप माना जाता है क्योंकि इसमें 'नस्लीय सिद्धांत' को विचारधारा के सर्वाधिक केंद्रीय और अनिवार्य स्तंभ के रूप में रखा गया है। जहाँ इतालवी फासीवाद मुख्य रूप से 'राज्य की शक्ति' और राष्ट्रीय एकता पर केंद्रित था, वहीं हिटलर का नाजीवाद 'आर्य' नस्ल की जैविक श्रेष्ठता और यहूदियों के विनाश की क्रूर कल्पना पर आधारित था। नाजीवाद ने नस्ल को न केवल अपनी राजनीति, बल्कि समाज के प्रत्येक पहलू का आधार बनाया, जिससे मानवता के इतिहास के सबसे बड़े नरसंहार का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह नस्लीय कट्टरपंथ ही नाजीवाद को अन्य किसी भी अधिनायकवादी प्रणाली से अधिक खतरनाक और विनाशकारी बनाता है, जो केवल सत्ता नहीं बल्कि 'नस्लीय शुद्धिकरण' का लक्ष्य रखता था।

290. (C) जर्मनी
यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध की तात्कालिक और वास्तविक शुरुआत 1 सितंबर, 1939 को एडोल्फ हिटलर के नेतृत्व

पास स्थित है।
(B) कोकल्लम प्रथम कलचुरी वंश का संस्थापक था।
(C) वे चंदेलों और परमारों के प्रमुख राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी थे।
(D) उन्हें 11वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत द्वारा अपने साम्राज्य में मिला लिया गया था।

21. राजवंशों और उनके सत्ता के प्रमुख केंद्रों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (राजवंश)
P. कलचुरी
Q. परमार
R. चंदेल
S. कच्छपघात
सूची II: (सत्ता का प्रमुख केंद्र)
1. जेजाकभुक्ति (बुंदेलखंड)
2. ग्वालियर
3. डाहल (त्रिपुरी)
4. मालवा (धार)
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

22. तोमर वंश, जिसने मुगलों से पहले ग्वालियर पर शासन किया था, संगीत के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक कौन था?
(A) वीर सिंह देव
(B) मान सिंह तोमर
(C) डूंगर सिंह
(D) विक्रमादित्य तोमर

23. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): फारुकी वंश, जिसने निमाड़ क्षेत्र (खानदेश) पर शासन किया, ने काफी समय तक स्वतंत्रता बनाए रखी।
कारण (R): गुजरात, मालवा और बहमनी सल्तनतों के बीच उनकी रणनीतिक स्थिति ने उन्हें संतुलनकारी भूमिका निभाने की अनुमति दी।
सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

24. गोंडवाना साम्राज्य, जिसकी राजधानी गढ़ा-मंडला थी, किस शासक के अधीन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा?
(A) संग्राम शाह
(B) जादुराय
(C) दलपत शाह
(D) रानी दुर्गावती

25. भोपाल रियासत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसकी स्थापना मुगल सेना के एक अफगान सैनिक दोस्त मोहम्मद खान ने की थी।
2. राज्य पर एक शताब्दी से अधिक समय तक महिला शासकों का शासन रहा, जिन्हें भोपाल की बेगमों के रूप में जाना जाता है।
3. 1947 में स्वतंत्रता के तुरंत बाद राज्य स्वेच्छा से भारतीय संघ में शामिल हो गया।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

26. इंदौर के होल्कर वंश का संस्थापक कौन था?
(A) मल्हार राव होल्कर
(B) अहिल्याबाई होल्कर
(C) यशवंत राव होल्कर प्रथम
(D) तुकोजी राव होल्कर द्वितीय

27. सिंधिया वंश ने अपने पहले केंद्र से स्थानांतरित होने के बाद ग्वालियर में अपनी राजधानी स्थापित की। वह पहला केंद्र कौन-सा था?
(A) इंदौर
(B) धार
(C) पुणे
(D) उज्जैन

28. बुंदेलखंड रियासत की स्थापना बुंदेला राजपूतों द्वारा की गई थी। ओरछा राज्य का सबसे प्रमुख और शक्तिशाली प्रारंभिक शासक किसे माना जाता है?
(A) सोहनपाल
(B) रुद्र प्रताप सिंह
(C) भारती चंद
(D) छत्रसाल

29. बघेलखंड रियासत, जिसकी राजधानी रीवा थी, की स्थापना निम्नलिखित में से किसके द्वारा की गई थी?
(A) चंदेल राजकुमारों द्वारा
(B) गढ़ा-मंडला के गोंड प्रमुखों द्वारा
(C) गुजरात से प्रवास करने वाले बघेल राजपूतों द्वारा
(D) मालवा के परमार सामंतों द्वारा

30. किस होल्कर शासक ने अंग्रेजों को चुनौती दी थी और द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध में एक प्रमुख व्यक्तित्व थे?
(A) मल्हार राव होल्कर
(B) अहिल्याबाई होल्कर
(C) तुकोजी राव होल्कर द्वितीय

75. प्रसिद्ध 'जहाज महल' और 'हिंडोला महल' मध्य प्रदेश के किस ऐतिहासिक शहर में स्थित हैं?
(A) ग्वालियर
(B) ओरछा
(C) चंदेरी
(D) मांडू

76. निम्नलिखित में से कौन मध्य प्रदेश के संदर्भ में मध्यपाषाण काल को सही ढंग से परिभाषित करता है?
(A) पाषाण युग का अंतिम चरण
(B) पुरापाषाण और नवपाषाण काल के बीच का संक्रमण काल
(C) मानव इतिहास का सबसे प्रारंभिक काल
(D) तांबे और पाषाण के एक साथ उपयोग का काल

77. मध्य प्रदेश में प्रागैतिहासिक शैल कला के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सबसे पुराने चित्र प्रायः हरे और गहरे लाल रंग के होते हैं।
2. बाद के काल के चित्र सफेद और पीले रंगों का उपयोग दिखाते हैं।
3. ये चित्र पालतू जानवरों का कोई प्रमाण नहीं देते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

78. चंद्रगुप्त द्वितीय के समय का कौन-सा शिलालेख उदयगिरि की गुफाओं में स्थित है और पूर्वी मालवा में उनके सैन्य अभियान का उल्लेख करता है?
(A) सांची शिलालेख
(B) मंदसौर शिलालेख
(C) बेसनगर स्तंभ शिलालेख
(D) वीरसेन शाबा का उदयगिरि गुफा शिलालेख

79. आभीर वंश ने ताप्ती और नर्मदा नदियों के बीच के क्षेत्र में शासन किया। इस वंश का संस्थापक किसे माना जाता है?
(A) ईश्वरसेन
(B) नागभट्ट
(C) विंध्यशक्ति
(D) प्रवरसेन

80. गुर्जर-प्रतिहार वंश के किस शासक ने कन्नौज को जीतकर उसे अपनी राजधानी बनाया?
(A) वत्सराज
(B) नागभट्ट द्वितीय
(C) नागभट्ट प्रथम
(D) मिहिर भोज

81. परमार वंश के निम्नलिखित शासकों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. भोज
2. सियक II
3. वाक्पतिराज मुंज
4. उदयादित्य

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

82. 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में होल्करों और सिंधियाओं के बीच संघर्ष का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) मराठा परिसंघ के भीतर प्रभुत्व के लिए संघर्ष
(B) क्षेत्रीय धार्मिक प्रथाओं पर विवाद
(C) यूरोपीय शक्तियों के साथ गठबंधन
(D) मालवा क्षेत्र को लेकर क्षेत्रीय विवाद

83. बंगाल विभाजन से प्रेरित मध्य प्रदेश में स्वदेशी आंदोलन मुख्य रूप से किस पर केंद्रित था?
(A) सशस्त्र विद्रोह
(B) कर-नहीं अभियान
(C) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना
(D) वन कानूनों की अवहेलना

84. इंदौर के पास महू छावनी में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था?
(A) शेख रमजान
(B) तात्या टोपे
(C) भीमाजी नायक
(D) सआदत खान

85. रघुनाथ शाह, जिन्हें 1857 में अंग्रेजों ने मृत्युदंड दिया था, किस राजवंश से संबंधित थे?
(A) परमार वंश
(B) चंदेल वंश
(C) गढ़ा-मंडला का गोंड वंश
(D) कलचुरी वंश

86. प्रसिद्ध 'चतुर्भुज मंदिर' और 'राम राजा मंदिर' मध्य प्रदेश के किस ऐतिहासिक शहर में स्थित हैं?
(A) खजुराहो
(B) ओरछा
(C) मांडू
(D) चंदेरी

87. मध्य प्रदेश में कौन-सा प्रागैतिहासिक स्थल सबसे लंबे समय तक बसे हुए शैलाश्रय परिसरों में से एक माना जाता है?
(A) कायथा
(B) एरण
(C) नवदाटोली

है, 1857 के विद्रोह के दौरान सक्रिय थे।
2. टंट्या भील एक प्रसिद्ध भील नेता थे जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध छापामार युद्ध पद्धति का उपयोग किया था।
3. गुंजन सिंह कोरकू ने बैतूल जिले में प्रसिद्ध जंगल सत्याग्रह का नेतृत्व किया था।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

42. निमाड़ क्षेत्र के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी खाज्या नायक ने शुरु में अंग्रेजों के लिए कार्य किया लेकिन बाद में वे उनके विरुद्ध हो गए। विद्रोह से पहले उनकी क्या भूमिका थी?
(A) एक छावनी में पुलिस अधिकारी
(B) राजस्व विभाग में एक तहसीलदार
(C) ब्रिटिश सेना में एक सैनिक अधिकारी
(D) एक वन रक्षक

43. मध्य प्रदेश का कौन-सा आदिवासी नायक सिवनी जिले में 'तुरिया जंगल सत्याग्रह' से जुड़ा है?
(A) बादल भोई
(B) पेमा फाल्या
(C) गुंजन सिंह कोरकू
(D) मुड़े राय

44. अंग्रेजों के विरुद्ध आदिवासी प्रतिरोध के एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व टंट्या भील युद्ध के किस रूप में विशेषज्ञ थे?
(A) नौसेना युद्ध
(B) छापामार युद्ध
(C) घेराबंदी युद्ध
(D) पारंपरिक खुले मैदान की लड़ाई

45. आदिवासी नायक बादल भोई, जिनका बलिदान प्रतिवर्ष छिंदवाड़ा में मनाया जाता है, स्वतंत्रता संग्राम की किस प्रमुख घटना से जुड़े थे?
(A) झंडा सत्याग्रह
(B) भारत छोड़ो आंदोलन
(C) असहयोग आंदोलन
(D) सविनय अवज्ञा आंदोलन

46. पेमा फाल्या मध्य प्रदेश की किस पारंपरिक कला के संदर्भ में एक प्रसिद्ध नाम है, जो मुख्य रूप से भील जनजाति से जुड़ी है?
(A) गोंड चित्रकला
(B) बैगा गोदना
(C) भील मृदभांड
(D) पिथोरा चित्रकला

47. सांची स्तूप, जो एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, मूल रूप से किस मौर्य सम्राट द्वारा बनवाया गया था?
(A) अशोक
(B) चंद्रगुप्त मौर्य
(C) बिंदुसार
(D) वृहद्रथ

48. मध्य प्रदेश की प्रसिद्ध भीमबेटका की गुफाएं निम्नलिखित में से किसके लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) जैन मठ
(B) प्रागैतिहासिक शैल चित्र और शैलाश्रय
(C) बौद्ध स्तूप और विहार
(D) हिंदू मंदिर नक्काशी

49. होशंगाबाद में स्थित आदमगढ़ की पहाड़ियाँ भारतीय उपमहाद्वीप में किस चीज़ का प्राचीनतम साक्ष्य प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण हैं?
(A) लोहे का उपयोग
(B) पशुपालन
(C) चावल की खेती
(D) सिक्का प्रणाली

50. निम्नलिखित में से कौन-सा मध्य प्रदेश में स्थित एक प्रसिद्ध किला नहीं है?
(A) मेहरानगढ़ किला
(B) ग्वालियर किला
(C) मांडू किला
(D) असीरगढ़ किला

51. मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. झंडा सत्याग्रह
2. बुंदेला विद्रोह
3. बैतूल में जंगल सत्याग्रह
4. नीमच में 1857 के विद्रोह की शुरुआत

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 4, 2, 3, 1
(D) 2, 1, 4, 3

52. मध्य प्रदेश का उज्जैन शहर किस नदी के तट पर स्थित है?
(A) नर्मदा
(B) ताप्ती
(C) चंबल
(D) क्षिप्रा

53. निम्नलिखित में से कौन-सी मध्य प्रदेश में पुरापाषाण काल की एक विशेषता है?
(A) पॉलिश किए हुए पाषाण उपकरणों का उपयोग
(B) तांबे और कांसे के उपकरणों का उपयोग
(C) भद्दे पाषाण उपकरणों के साथ आखेटक-संग्रहकर्ता जीवनशैली
(D) महापाषाण कालीन समाधियों का निर्माण

98. मांडू किस स्वतंत्र सल्तनत की राजधानी थी?
(A) मालवा सल्तनत
(B) गुजरात सल्तनत
(C) बहमनी सल्तनत
(D) खानदेश सल्तनत

99. रामगढ़ की रानी अवंतीबाई के संघर्ष की तुलना प्रायः किस अन्य प्रसिद्ध शासिका से की जाती है?
(A) रानी चेन्नम्मा
(B) रानी पद्मिनी
(C) रानी लक्ष्मीबाई
(D) रानी दुर्गावती

100. 1956 में मध्य प्रदेश के निर्माण के समय किन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया था?
(A) केवल मध्य प्रांत और बरार
(B) केवल मध्य भारत और विंध्य प्रदेश
(C) केवल बॉम्बे राज्य के हिंदी भाषी जिले
(D) मध्य प्रांत और बरार, मध्य भारत, विंध्य प्रदेश और भोपाल राज्य

101. टंट्या भील की विरासत मध्य प्रदेश के किस आदिवासी समुदाय से जुड़ी हुई है?
(A) गोंड
(B) कोरकू
(C) भील
(D) बैगा

102. मध्य प्रदेश का कौन-सा गुफा परिसर रायसेन जिले में स्थित है और महत्वपूर्ण शैल चित्र समेटे हुए है?
(A) उदयगिरि गुफाएं
(B) कठोतिया गुफाएं
(C) माडा गुफाएं
(D) बाघ गुफाएं

103. ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भीमबेटका और आदमगढ़ जैसे स्थलों के शैल चित्रों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान क्या है?
(A) वंशवादी वंशावली का रिकॉर्ड
(B) विदेशी व्यापार का प्रमाण
(C) एकीकृत धर्म का अस्तित्व
(D) प्रागैतिहासिक सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का दृश्य वर्णन

104. निम्नलिखित में से कौन-सा शिलालेख और शासक का गलत जोड़ा है?
(A) मंदसौर शिलालेख - समुद्रगुप्त
(B) गुर्जरा शिलालेख - अशोक
(C) बेसनगर स्तंभ - हेलियोडोरस
(D) उदयगिरि शिलालेख - चंद्रगुप्त द्वितीय

105. त्रिपक्षीय संघर्ष में कलचुरी वंश के मुख्य प्रतिद्वंद्वी कौन थे?
(A) चोल और चालुक्य
(B) राष्ट्रकूट और सातवाहन
(C) पाल और गुर्जर-प्रतिहार
(D) पांड्य और चेर

106. फारुकी वंश को अंततः किस मुगल सम्राट ने अपने साम्राज्य में मिला लिया था?
(A) अकबर
(B) बाबर
(C) हुमायूँ
(D) औरंगजेब

107. किस बुंदेला शासक ने ओरछा शहर की स्थापना की थी?
(A) सोहनपाल बुंदेला
(B) जुझार सिंह
(C) चंपत राय
(D) रुद्र प्रताप सिंह

108. भोपाल राज्य पर शासन करने वाली प्रथम बेगम कौन थीं?
(A) सिकंदर बेगम
(B) कुदसिया बेगम
(C) शाहजहां बेगम
(D) सुल्तान जहां बेगम

109. असहयोग आंदोलन के दौरान 'पंजाब मेल हत्याकांड' की घटना कहाँ हुई थी?
(A) जबलपुर
(B) इटारसी
(C) खंडवा
(D) ग्वालियर

110. निम्नलिखित में से कौन मध्य प्रदेश में 'जंगल सत्याग्रह' का सबसे सटीक वर्णन है?
(A) राजस्व विरोध
(B) वृक्षारोपण अभियान
(C) आदिवासियों का सशस्त्र विद्रोह
(D) वन कानूनों की अवहेलना करने हेतु घास काटने का प्रतीकात्मक विरोध

111. भीमाजी नायक की तुलना उनकी छापामार रणनीति के कारण किस अन्य नेता से की जाती है?
(A) तात्या टोपे
(B) कुंवर सिंह
(C) नाना साहेब
(D) बहादुर शाह जफर

112. मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित बाघ गुफाएं अपने भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं, जो किस स्थान के चित्रों के समान हैं?
(A) भीमबेटका
(B) अजंता
(C) एलोरा

64. निम्नलिखित में से कौन-सी घटना मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम का भाग नहीं थी?
(A) स्वदेशी आंदोलन
(B) चौरी-चौरा कांड
(C) झंडा सत्याग्रह
(D) सविनय अवज्ञा आंदोलन

65. 1857 में अंग्रेजों द्वारा शंकर शाह और रघुनाथ शाह को बलिदान दिया जाना किस क्षेत्र में विद्रोह का प्रमुख कारण बना?
(A) मालवा
(B) महाकौशल (गोंडवाना)
(C) निमाड़
(D) बघेलखंड

66. मध्य प्रदेश में एरण का ऐतिहासिक स्थल किस प्रथा का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य प्रदान करने के लिए प्रसिद्ध है?
(A) सती
(B) जौहर
(C) राज्याभिषेक
(D) भूमि दान

67. निम्नलिखित में से कौन मध्य प्रदेश की कायथा और मालवा संस्कृति जैसी ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियों का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) किलेबंदी वाली शहरी सभ्यताएं
(B) केवल पशुपालक समुदाय
(C) मृदभांड और तांबे के उपयोग वाले कृषक समुदाय
(D) खानाबदोश आखेटक-संग्रहकर्ता समाज

68. सीहोर जिले में अशोक के पानगुराड़िया शिलालेख को किस श्रेणी में रखा गया है?
(A) प्रमुख शिलालेख
(B) स्तंभ शिलालेख
(C) गुफा शिलालेख
(D) लघु शिलालेख

69. सांची शिलालेख के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: चंद्रगुप्त द्वितीय के समय के सांची शिलालेख में गुप्त अधिकारी आम्रकार्दव द्वारा दिए गए दान का उल्लेख है।
कथन II: शिलालेख सांची क्षेत्र पर सुदृढ़ गुप्त प्रशासनिक उपस्थिति का सुझाव देता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

70. कच्छपघात वंश, जिसने ग्वालियर और नरवर क्षेत्रों में शासन किया, मूल रूप से किस शक्ति के सामंत थे?
(A) राष्ट्रकूट
(B) गुर्जर-प्रतिहार
(C) पाल
(D) परमार

71. रियासतों और उनके शासकों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (रियासत)
P. गोंडवाना
Q. सिंधिया
R. होल्कर
S. भोपाल
सूची II: (शासक)
1. महादजी सिंधिया
2. शाहजहां बेगम
3. रानी दुर्गावती
4. अहिल्याबाई होल्कर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

72. बुंदेला प्रमुख राजा छत्रसाल ने किस साम्राज्यवादी शक्ति के विरुद्ध स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया था?
(A) औरंगजेब के अधीन मुगल साम्राज्य
(B) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी
(C) दिल्ली सल्तनत
(D) गुप्त साम्राज्य

73. 'चरण पादुका नरसंहार', जिसे 'मध्य प्रदेश का जलियांवाला बाग' कहा जाता है, स्वतंत्रता संग्राम के किस चरण के दौरान हुआ था?
(A) 1857 का विद्रोह
(B) असहयोग आंदोलन
(C) सविनय अवज्ञा आंदोलन
(D) भारत छोड़ो आंदोलन

74. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भीमाजी नायक ने 1857 के विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लिया और वे निमाड़ क्षेत्र में अंग्रेजों के लिए एक बड़ा संकट थे।
कारण (R): वे एक भील नेता थे जो क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति से परिचित थे और छापामार युद्ध पद्धति का उपयोग करते थे।
सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

125. ग्वालियर किले में मान सिंह तोमर द्वारा निर्मित महल को क्या कहा जाता है?
(A) जहांगीर महल
(B) गूजरी महल
(C) मान मंदिर महल
(D) जहाज महल

126. घटनाओं और उनके स्थानों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (घटना)
P. झंडा सत्याग्रह
Q. चरण पादुका नरसंहार
R. जंगल सत्याग्रह
S. सआदत खान का विद्रोह
सूची II: (स्थान)
1. छतरपुर
2. बैतूल
3. महू
4. जबलपुर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

127. 1956 में मध्य प्रदेश का पुनर्गठन किस आधार पर किया गया था?
(A) भाषाई आधार
(B) प्रशासनिक सुविधा
(C) रियासतों का विलय
(D) आर्थिक व्यवहार्यता

128. 1857 के विद्रोह के लिए शंकर शाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह को क्या दंड दिया गया?
(A) निर्वासन
(B) तोप से उड़ा दिया गया
(C) फांसी
(D) कारावास

129. भरहुत के स्तूप मूल रूप से मध्य प्रदेश के किस जिले में स्थित थे?
(A) रायसेन
(B) सतना
(C) विदिशा
(D) रीवा

130. मध्य प्रदेश का कौन-सा शहर प्रति 12 वर्ष में सिंहस्थ कुंभ आयोजित करता है?
(A) उज्जैन
(B) ओरछा
(C) अमरकंटक
(D) ओंकारेश्वर

131. ताम्रपाषाण शब्द किस काल को संदर्भित करता है?
(A) केवल पाषाण उपकरण काल
(B) लौह उपकरण काल
(C) तांबे और पाषाण के एक साथ उपयोग का काल
(D) आखेटक-संग्रहकर्ता काल

132. कुषाण राजा वाशिष्क का सांची शिलालेख क्या प्रदर्शित करता है?
(A) सातवाहनों की पराजय
(B) ब्राह्मी लिपि का त्याग
(C) वैवाहिक गठबंधन
(D) मालवा क्षेत्र में कुषाण राजनीतिक प्रभाव का विस्तार

133. उच्चकल्प वंश के इतिहास का प्रमुख स्रोत क्या है?
(A) विदेशी विवरण
(B) ताम्रपत्र दानपत्र
(C) सिक्के
(D) गुफा चित्र

134. चंदेल राजा विद्याधर किस तुर्क आक्रांता के प्रतिरोध के लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) मुहम्मद गोरी
(B) महमूद गजनवी
(C) कुतुब-उद-दीन ऐबक
(D) इल्तुतमिश

135. प्रमुख शासकों को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें:
1. राजा भोज
2. मान सिंह तोमर
3. यशोधर्मन
4. धंग
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) 3, 4, 1, 2
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 2, 1, 4, 3

136. 1564 में रानी दुर्गावती के विरुद्ध सैन्य अभियान के समय मुगल सम्राट कौन था?
(A) अकबर
(B) बाबर
(C) हुमायूँ
(D) जहांगीर

137. मध्य प्रदेश का कौन-सा नेता जबलपुर में झंडा सत्याग्रह से जुड़ा था?
(A) सेठ गोविंद दास
(B) रविशंकर शुक्ल
(C) सुभद्रा कुमारी चौहान

(D) भीमबेटका

88. सांची में पाए गए कुषाण राजा वाशिष्क का शिलालेख महत्वपूर्ण है क्योंकि यह:
(A) बौद्ध संघ को दिए गए दान का विवरण देता है
(B) सातवाहनों पर सैन्य विजय का वर्णन करता है
(C) बौद्ध धर्म अपनाने की घोषणा करता है
(D) प्रशासन का विवरण देता है

89. ऐतिहासिक संगीत और व्यक्तित्वों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: ग्वालियर के तोमर शासक मान सिंह शास्त्रीय संगीत की शैली ध्रुपद के महान संरक्षक थे।
कथन II: उनके दरबारी संगीतकार तानसेन बाद में अकबर के दरबार में नवरत्नों में से एक बने।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

90. भोपाल रियासत औपचारिक रूप से किस वर्ष भारतीय संघ में सम्मिलित हुई?
(A) 1949
(B) 1947
(C) 1948
(D) 1950

91. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): मध्य प्रांत और बरार में सविनय अवज्ञा आंदोलन का एक विशिष्ट पहलू जंगल सत्याग्रह था।
कारण (R): आंदोलन ने सीधे तौर पर आदिवासी समुदायों की उन शिकायतों को संबोधित किया जो ब्रिटिश वन कानूनों से जुड़ी थीं।
सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

92. गुंजन सिंह कोरकू को मुख्य रूप से किसके नेतृत्व के लिए याद किया जाता है?
(A) 1857 का विद्रोह
(B) बैतूल में घोड़ा डोंगरी जंगल सत्याग्रह
(C) जबलपुर में झंडा सत्याग्रह
(D) भारत छोड़ो आंदोलन

93. आदमगढ़ का ऐतिहासिक स्थल शिकार के अतिरिक्त किस गतिविधि का सबसे प्रारंभिक साक्ष्य प्रदान करता है?
(A) मृदभांड निर्माण
(B) धातु शोधन
(C) पशुपालन
(D) लेखन प्रणाली

94. मध्य प्रदेश का कौन-सा ऐतिहासिक स्थल जैन तीर्थंकर आदिनाथ की 84 फीट ऊंची प्रतिमा के लिए जाना जाता है?
(A) सांची
(B) उदयगिरि
(C) सोनागिरी
(D) बावनगजा

95. मध्य प्रदेश में नवपाषाण काल मुख्य रूप से किस तकनीकी बदलाव से पहचाना जाता है?
(A) कृषि और पशुपालन की शुरुआत
(B) आग का पहला उपयोग
(C) लघु पाषाण उपकरणों का विकास
(D) लोहे की शुरुआत

96. मध्य प्रदेश के प्रमुख शिलालेखों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. गुर्जरा शिलालेख मध्य प्रदेश में एकमात्र अशोक का शिलालेख है जिसमें उनके नाम का उल्लेख है।
2. बेसनगर स्तंभ शिलालेख एक शुंग राजा द्वारा स्थापित किया गया था।
3. बंधु वर्मा का मंदसौर शिलालेख रेशम बुनकरों की श्रेणी की प्रशंसा करता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) इनमें से कोई नहीं

97. राजवंशों और उनके प्रमुख शासकों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (राजवंश)
P. औलीकर
Q. परिव्राजक
R. उच्चकल्प
S. नाग
सूची II: (शासक)
1. जयनाथ
2. हस्तिन
3. गणपतिनाग
4. यशोधर्मन
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-1, Q-2, R-3, S-4
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

54. भीमबेटका के शैल चित्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भीमबेटका के शैल चित्र उत्तर पुरापाषाण काल से लेकर मध्यकाल तक के कालों में फैले हुए हैं।
कथन II: चित्रों का अध्यारोपण, जहाँ पुराने चित्रों के ऊपर नए चित्र बनाए गए हैं, एक सापेक्ष कालक्रम स्थापित करने में सहायता करता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

55. शिलालेखों और उनके स्थानों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अभिलेख)
P. गुर्जरा
Q. रूपनाथ
R. पानगुराड़िया
S. सांची
सूची II: (स्थान)
1. रायसेन जिला
2. सीहोर जिला
3. दतिया जिला
4. जबलपुर जिला
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

56. बेसनगर गरुड़ध्वज स्तंभ शिलालेख किस लिपि में लिखा गया है?
(A) ब्राह्मी
(B) खरोष्ठी
(C) अरामी
(D) ग्रीक

57. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): चंदेल वंश खजुराहो के भव्य मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है।
कारण (R): चंदेलों ने इन मंदिरों का निर्माण मुख्य रूप से रक्षात्मक किले के रूप में किया था।
सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

58. विदिशा के पास उदयगिरि गुफा के शिलालेख चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के हैं। ये शिलालेख मुख्य रूप से किस धार्मिक परंपरा से संबंधित विषयों को चित्रित करते हैं?
(A) वैष्णववाद और शैववाद
(B) बौद्ध परंपराएं
(C) जैन धर्म
(D) आजीवक संप्रदाय

59. कौन-सा राजवंश, जिसने त्रिपुरी से शासन किया, मध्य भारत में एक प्रमुख शक्ति था और इसे हैहय वंश के रूप में भी जाना जाता है?
(A) चंदेल
(B) परमार
(C) गुर्जर-प्रतिहार
(D) कलचुरी

60. परमार वंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वंश की स्थापना उपेंद्र नामक शासक ने की थी।
2. उनकी राजधानी प्रारंभ में उज्जैन में थी और बाद में धार स्थानांतरित हो गई।
3. राजा भोज ने वास्तुकला, व्याकरण और कविता पर कई ग्रंथ लिखे।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

61. मध्य प्रदेश में एक राजवंश और उसके संबंधित क्षेत्र के गलत जोड़े की पहचान करें।
(A) औलीकर वंश - दशपुर (मंदसौर)
(B) उच्चकल्प वंश - उच्चकल्प (उचेहरा)
(C) नाग वंश - केवल मालवा
(D) परिव्राजक वंश - बुंदेलखंड

62. होल्कर राज्य की प्रसिद्ध शासिका अहिल्याबाई होल्कर ने किस शहर को अपनी राजधानी बनाया?
(A) इंदौर
(B) ग्वालियर
(C) उज्जैन
(D) महेश्वर

63. ग्वालियर की संधि (1817) और मंदसौर की संधि (1818) ने क्रमशः किन दो प्रमुख रियासतों पर ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित की?
(A) सिंधिया और होल्कर
(B) होल्कर और भोपाल
(C) भोपाल और रीवा
(D) सिंधिया और बुंदेलखंड

(D) उदयगिरि

113. पुरापाषाण काल के तीनों चरणों के उपकरण मध्य प्रदेश की किस नदी घाटी में बहुतायत में पाए गए हैं?
(A) चंबल घाटी
(B) नर्मदा घाटी
(C) क्षिप्रा घाटी
(D) बेतवा घाटी

114. गुप्त काल का सांची शिलालेख क्या प्रदर्शित करता है?
(A) वैष्णव शासकों द्वारा बौद्ध स्थलों का संरक्षण
(B) बौद्ध प्रभाव की गिरावट
(C) मंदिरों में परिवर्तन
(D) राजधानी का स्थानांतरण

115. ऐतिहासिक राजवंशों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: परिव्राजक और उच्चकल्प राजवंशों ने क्रमशः बुंदेलखंड और बघेलखंड क्षेत्रों में शासन किया।
कथन II: दोनों राजवंशों ने गुप्त साम्राज्य की संप्रभुता को स्वीकार किया।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

116. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): परमार राजा भोज को 'कविराज' के रूप में जाना जाता है।
कारण (R): उनकी प्रसिद्ध कृति 'समरांगण सूत्रधार' स्थापत्य शास्त्र पर एक ग्रंथ है।
सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

117. सिंधिया वंश का संस्थापक कौन था?
(A) महादजी सिंधिया
(B) दौलत राव सिंधिया
(C) राणोजी सिंधिया
(D) जयाजीराव सिंधिया

118. बुंदेला विद्रोह (1842) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह ब्रिटिश राजस्व नीतियों के विरुद्ध जमींदारों का विद्रोह था।
2. विद्रोह अंग्रेजों को बेदखल करने में पूर्णतः सफल रहा।
3. मधुकर शाह और जवाहर सिंह बुंदेला इस विद्रोह के प्रमुख नेता थे।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

119. 3 जून को नीमच में 1857 के विद्रोह के पश्चात् विद्रोह का अगला प्रमुख केंद्र कौन-सा था?
(A) जबलपुर
(B) सागर
(C) मंडला
(D) ग्वालियर

120. निमाड़ क्षेत्र के किस आदिवासी नायक ने भीमाजी नायक के साथ 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी?
(A) खाज्या नायक
(B) गुंजन सिंह कोरकू
(C) बादल भोई
(D) पेमा फाल्या

121. सांची के महान स्तूप की उस अर्धवृत्ताकार संरचना का क्या नाम है जो स्तूप का मुख्य भाग है?
(A) तोरण
(B) हर्मिका
(C) अण्ड
(D) छत्र

122. मध्य प्रदेश में मध्यपाषाण काल से नवपाषाण काल में संक्रमण का प्रमाण किसके द्वारा मिलता है?
(A) मृदभांड और पॉलिश किए हुए पाषाण उपकरणों का उदय
(B) पाषाण उपकरणों का लुप्त होना
(C) शैल चित्रों की प्रथम उपस्थिति
(D) तांबे का अनन्य उपयोग

123. वत्सभट्टि द्वारा रचित मंदसौर शिलालेख किस देवता की प्रशंसा करता है जिसके लिए मंदिर बनाया गया था?
(A) विष्णु
(B) शिव
(C) इन्द्र
(D) सूर्य

124. नाग वंश की सत्ता के मुख्य केंद्र विदिशा, कांतिपुरी, मथुरा और किस अन्य महत्वपूर्ण स्थल पर थे?
(A) एरण
(B) पद्मावती (पवाया)
(C) उज्जैन
(D) त्रिपुरी

(D) यशवंत राव होल्कर प्रथम

31. रानी दुर्गावती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: गोंडवाना की रानी दुर्गावती ने आसफ खान के नेतृत्व वाली मुगल सेना के विरुद्ध वीरतापूर्ण युद्ध लड़ा था।
कथन II: जब हार निश्चित थी, तो उन्होंने अपमान के बजाय मृत्यु को चुना और प्रतिरोध का प्रतीक बन गईं।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

32. 1842 का बुंदेला विद्रोह सागर और नर्मदा क्षेत्रों में अंग्रेजों के विरुद्ध एक प्रमुख विद्रोह था। हीरापुर के हृदयशाह की ओर से इस विद्रोह का प्राथमिक नेता कौन था?
(A) जुझार सिंह
(B) हृदय शाह
(C) छत्रसाल
(D) मधुकर शाह

33. मध्य प्रदेश में नीमच छावनी से 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत का तात्कालिक कारण निम्नलिखित में से क्या था?
(A) मंगल पांडे को फांसी देना
(B) मेरठ में विद्रोह की शुरुआत
(C) सैनिकों द्वारा चर्बी वाले कारतूसों के उपयोग से इनकार करना
(D) नागपुर साम्राज्य का विलय

34. मंडला क्षेत्र में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किसने किया और वे रामगढ़ राज्य की शासिका थीं?
(A) रानी अवंतीबाई
(B) रानी लक्ष्मीबाई
(C) रानी दुर्गावती
(D) तात्या टोपे

35. 1857 के विद्रोही नेताओं और उनकी गतिविधियों के क्षेत्रों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (1857 के विद्रोही नेता)
P. शेख रमजान
Q. तात्या टोपे
R. शंकर शाह
S. सादत खान
सूची II: (गतिविधि का क्षेत्र)
1. ग्वालियर / बुंदेलखंड
2. महाकौशल (जबलपुर)
3. महिदपुर (इंदौर)
4. सागर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-1, Q-2, R-3, S-4
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

36. 1923 का झंडा सत्याग्रह मध्य प्रदेश के किस शहर से शुरु हुआ था?
(A) भोपाल
(B) इंदौर
(C) ग्वालियर
(D) जबलपुर

37. सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान मध्य प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में हुए 'जंगल सत्याग्रह' का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) राष्ट्रीय ध्वज फहराने के अधिकार की मांग करना
(B) औपनिवेशिक नमक कर के विरुद्ध विरोध करना
(C) अंग्रेजों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधात्मक वन कानूनों की अवहेलना करना
(D) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना

38. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): असहयोग आंदोलन को मध्य प्रदेश में व्यापक जनसमर्थन मिला।
कारण (R): प्रभाकर डुंडीराज जातक और सेठ गोविंद दास जैसे नेताओं ने इस क्षेत्र में बहिष्कार और हड़ताल के लिए जनता को सक्रिय रूप से लामबंद किया।
सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

39. 1 नवंबर, 1956 को मध्य प्रदेश का पुनर्गठन किस आयोग की सिफारिशों पर आधारित था?
(A) साइमन कमीशन
(B) बटलर समिति
(C) जेवीपी समिति
(D) राज्य पुनर्गठन आयोग (फ़ज़ल अली आयोग)

40. मध्य प्रदेश के निम्नलिखित आदिवासी नायकों में से कौन गढ़ा-मंडला का शासक था और उसे 1857 में विद्रोह की योजना बनाने के लिए अंग्रेजों ने फांसी दे दी थी?
(A) शंकर शाह
(B) भीमाजी नायक
(C) खाज्या नायक
(D) गुंजन सिंह कोरकू

41. मध्य प्रदेश के आदिवासी नायकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भीमाजी नायक, जिन्हें 'निमाड़ का रॉबिन हुड' कहा जाता

(D) उपरोक्त सभी

138. मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम के संबंध में कौन-सा कथन गलत है?
(A) 1923 का झंडा सत्याग्रह पूर्णतः विफल रहा।
(B) 1857 का विद्रोह 3 जून को नीमच में शुरू हुआ।
(C) रानी अवंतीबाई 1857 के विद्रोह की प्रमुख व्यक्तित्व थीं।
(D) जंगल सत्याग्रह सविनय अवज्ञा आंदोलन का भाग था।

139. टंट्या भील की गतिविधियां किस भौगोलिक क्षेत्र में केंद्रित थीं?
(A) बघेलखंड
(B) बुंदेलखंड
(C) महाकौशल
(D) मालवा और निमाड़

140. भीमबेटका के शैलाश्रयों की खोज किसने की थी?
(A) एच.डी. सांकलिया
(B) वी.एस. वाकणकर
(C) आर.डी. बनर्जी
(D) अलेक्जेंडर कनिंघम

141. नवदाटोली का उत्खनन किसके द्वारा किया गया था?
(A) वी.एस. वाकणकर
(B) बी.बी. लाल
(C) एच.डी. सांकलिया
(D) मोर्टिमर व्हीलर

142. अशोक का गुर्जरा शिलालेख महत्वपूर्ण है क्योंकि:
(A) यह सबसे लंबा है।
(B) इसमें बौद्ध धर्म में परिवर्तन का उल्लेख है।
(C) यह ग्रीक भाषा में है।
(D) इसमें उनकी उपाधि के साथ 'अशोक' नाम का उल्लेख है।

143. हेलियोडोरस स्तंभ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: बेसनगर में हेलियोडोरस स्तंभ वासुदेव को समर्पित है।
कथन II: हेलियोडोरस भागवत धर्म का अनुयायी बन गया था।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

144. औलीकर वंश के किस शासक ने हूण आक्रांता मिहिरकुल को पराजित किया था?
(A) बंधुवर्मन
(B) यशोधर्मन
(C) नरवर्मन
(D) आदित्यवर्मन

145. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): कच्छपघात वंश ग्वालियर किले के कुछ मंदिरों के निर्माण के लिए उत्तरदायी था।
कारण (R): वे एक स्वतंत्र साम्राज्यवादी शक्ति थे जिन्होंने गुर्जर-प्रतिहारों को हराया।
सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

146. होल्कर राज्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मल्हार राव होल्कर ने वंश की स्थापना की।
2. अहिल्याबाई होल्कर ने राजधानी इंदौर से महेश्वर स्थानांतरित की।
3. होल्कर प्रारंभ से ही अंग्रेजों के वफादार थे।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

147. महादजी सिंधिया ने पानीपत के पश्चात् मराठा राजनीति में किस प्रकार भूमिका निभाई?
(A) निजाम के साथ गठबंधन करके
(B) होल्कर राज्य का विलय करके
(C) मराठा सर्वोच्चता स्थापित करके और मुगल सम्राट को नियंत्रित करके
(D) राजधानी पुणे स्थानांतरित करके

148. भोपाल शहर की स्थापना किस साम्राज्य के पतन के समय दोस्त मोहम्मद खान ने की थी?
(A) गुप्त साम्राज्य
(B) दिल्ली सल्तनत
(C) मराठा साम्राज्य
(D) मुगल साम्राज्य

149. 1842 का बुंदेला विद्रोह मुख्य रूप से किसके विरुद्ध था?
(A) व्यपगत का सिद्धांत
(B) चर्बी वाले कारतूस
(C) उच्च राजस्व निर्धारण और ब्रिटिश भूमि नीतियां
(D) तीर्थयात्रा कर

150. रीवा रियासत का वह शासक कौन था जिसने 1857 के विद्रोह के दौरान अंग्रेजों की सहायता की थी?
(A) गुलाब सिंह
(B) रघुराज सिंह
(C) मार्तंड सिंह

176. टंट्या भील द्वारा अपनाई गई 'पगड़ी' क्या थी?
(A) वेशभूषा
(B) निर्धनों की सहायता हेतु कर प्रणाली
(C) निजी दल
(D) छापामार रणनीति

177. ग्वालियर किले में 'तेली का मंदिर' की सबसे विशिष्ट विशेषता क्या है?
(A) संगमरमर निर्माण
(B) द्रविड़ शैली का शिखर और उत्तर भारतीय आधार
(C) अज्ञात देवता को समर्पित
(D) वृत्ताकार मंदिर

178. सागर जिले के एरण स्थल पर गुप्त काल की कौन-सी महत्वपूर्ण संरचना पाई गई है?
(A) विशाल वराह प्रतिमा
(B) बौद्ध स्तूप
(C) रोमन व्यापार केंद्र
(D) मौर्य स्तंभ

179. मध्य प्रदेश के उत्तरकालीन शैल चित्र क्या दर्शाते हैं?
(A) केवल शिकार
(B) ज्यामितीय पैटर्न
(C) अश्वारोही योद्धा, युद्ध और धार्मिक प्रतीक
(D) समुद्री यात्रा

180. बेसनगर गरुड़ध्वज स्तंभ शिलालेख के बारे में कौन-सा कथन सही है?
(A) यह कुषाण काल का है।
(B) यह केवल खरोष्ठी लिपि में है।
(C) यह बुद्ध को समर्पित है।
(D) इसमें हेलियोडोरस द्वारा भागवत धर्म अपनाने का उल्लेख है।

181. वंश संस्थापकों और उनके राजवंशों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (संस्थापक)
P. कोकल्लम प्रथम
Q. उपेंद्र
R. यशोवर्मन
S. राणोजी
सूची II: (राजवंश)
1. परमार
2. चंदेल
3. सिंधिया
4. कलचुरी
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

182. शुंग काल के दौरान मध्य प्रदेश का कौन-सा शहर प्रमुख प्रशासनिक केंद्र था?
(A) उज्जैन
(B) विदिशा
(C) त्रिपुरी
(D) एरण

183. भोपाल रियासत के संबंध में सही कथन कौन-सा है?
(A) स्थापना मराठा सरदार ने की।
(B) केवल पुरुष नवाबों का शासन रहा।
(C) 1857 के विद्रोह में सक्रिय भाग लिया।
(D) एक शताब्दी से अधिक समय तक बेगमों ने शासन किया।

184. बेसिन की संधि के परिणामों से मध्य प्रदेश की कौन-सी दो मराठा शक्तियां प्रभावित हुईं?
(A) सिंधिया और होल्कर
(B) होल्कर और भोपाल
(C) भोपाल और रीवा
(D) सिंधिया और बुंदेलखंड

185. 1930 का 'घोड़ा डोंगरी जंगल सत्याग्रह' किस जिले में हुआ था?
(A) सिवनी
(B) छिंदवाड़ा
(C) बैतूल
(D) मंडला

186. रघुनाथ शाह का योगदान मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) 1857 के विद्रोह की योजना
(B) भील विद्रोह
(C) असहयोग आंदोलन
(D) रीवा रियासत

187. देवगढ़ का 'दशावतार मंदिर' किस काल की स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) मौर्य काल
(B) कुषाण काल
(C) हर्ष काल
(D) गुप्त काल

188. मध्य प्रदेश का कौन-सा शहर नर्मदा और कावेरी के संगम पर स्थित है और ज्योतिर्लिंग के लिए प्रसिद्ध है?
(A) उज्जैन
(B) ओंकारेश्वर
(C) महेश्वर
(D) अमरकंटक

189. पुरापाषाण काल और नवपाषाण काल के मध्य मुख्य अंतर क्या है?
(A) निवास स्थान का अंतर

162. जबलपुर में 'नमक सत्याग्रह' का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था?
(A) सेठ गोविंद दास और द्वारका प्रसाद मिश्र
(B) शंकर शाह और रघुनाथ शाह
(C) सादत खान और भागीरथ सिलावट
(D) गुंजन सिंह कोरकू

163. बादल भोई को किस घटना में भाग लेने के कारण गिरफ्तार किया गया था?
(A) 1857 का विद्रोह
(B) झंडा सत्याग्रह
(C) असहयोग के दौरान वन डिपो को जलाना
(D) भारत छोड़ो आंदोलन

164. सांची स्तूप के तोरणों पर किसके दृश्यों की नक्काशी की गई है?
(A) रामायण
(B) मौर्य सैन्य विजय
(C) मौर्य दरबार
(D) बुद्ध का जीवन और जातक कथाएँ

165. मध्य प्रदेश में पुरापाषाण काल के स्थल सर्वाधिक कहाँ पाए जाते हैं?
(A) मालवा पठार
(B) घने जंगलों में
(C) नदी घाटियों और शैलाश्रयों में
(D) पर्वत शिखरों पर

166. निम्नलिखित में से कौन मालवा मृदभांड की विशेषता नहीं है?
(A) लाल मृदभांड पर काले रंग की नक्काशी
(B) यह केवल शहरी क्षेत्रों में पाया गया है
(C) चित्रित ज्यामितीय डिजाइन
(D) यह एक समृद्ध मृदभांड परंपरा है

167. सांची क्षेत्र में कुषाण राजा वाशिष्क के शासन का प्रमाण क्या है?
(A) स्तंभ शिलालेख
(B) विजय स्तंभ
(C) ताम्रपत्र
(D) दान का विवरण देने वाला प्रतिमा शिलालेख

168. 'भारतीय रॉबिन हुड' के नाम से विख्यात टंट्या भील किस काल में सक्रिय थे?
(A) 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में
(B) मुगल काल में
(C) 1857 के विद्रोह के दौरान
(D) भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान

169. पवाया के ऐतिहासिक स्थल की पहचान किस प्राचीन शहर से की गई है?
(A) उज्जयिनी
(B) दशपुर
(C) पद्मावती
(D) त्रिपुरी

170. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): चंदेल शासक विद्याधर को महमूद गजनवी के प्रतिरोध के लिए जाना जाता है।
कारण (R): विद्याधर ने भारतीय शासकों का एक संघ बनाया और महमूद को पीछे हटने पर विवश किया।
सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

171. ग्वालियर किले के भीतर किस मंदिर के निर्माण का श्रेय कच्छपघात वंश को दिया जाता है?
(A) तेली का मंदिर
(B) कंदरिया महादेव मंदिर
(C) लक्ष्मण मंदिर
(D) सहस्त्रबाहु मंदिर (सास-बहू मंदिर)

172. निम्नलिखित में से कौन होल्कर वंश का शासक नहीं था?
(A) मल्हार राव
(B) महादजी
(C) यशवंत राव
(D) अहिल्याबाई

173. रानी दुर्गावती के शासनकाल में गोंडवाना की राजधानी क्या थी?
(A) मंडला
(B) रामनगर
(C) चौरगढ़
(D) गढ़ा

174. सागर और आसपास के क्षेत्र में 1857 के विद्रोह का नेता कौन था?
(A) तात्या टोपे
(B) कुंवर सिंह
(C) सादत खान
(D) शेख रमजान

175. 1923 का झंडा सत्याग्रह जबलपुर के पश्चात् किस शहर में संघर्ष के रूप में जारी रहा?
(A) नागपुर
(B) दिल्ली
(C) बॉम्बे
(D) कलकत्ता

265. चंदेल वंश अपनी उत्पत्ति किससे मानता है?
(A) सूर्य
(B) अग्नि
(C) चंद्रमा
(D) नाग

266. परमार वंश का संस्थापक कौन था?
(A) उपेंद्र
(B) भोज
(C) मुंज
(D) सियक II

267. ब्रिटिश सेना का सामना करने वाले होल्कर शासक कौन थे?
(A) मल्हार राव
(B) अहिल्याबाई
(C) तुकोजी राव
(D) यशवंत राव होल्कर प्रथम

268. ग्वालियर में 1857 का विद्रोह क्यों विशिष्ट था?
(A) शासक का समर्थन
(B) सेना का विद्रोह जबकि शासक वफादार रहे
(C) कोई विद्रोह नहीं
(D) विदेशी नेतृत्व

269. ओरछा किस नदी तट पर है?
(A) चंबल
(B) केन
(C) बेतवा
(D) नर्मदा

270. अमरकंटक किन नदियों का उद्गम है?
(A) नर्मदा और ताप्ती
(B) सोन और चंबल
(C) ताप्ती और बेतवा
(D) नर्मदा और सोन

271. ताम्रपाषाण साक्ष्य कहाँ नहीं मिलते?
(A) गुर्जरा
(B) कायथा
(C) एरण
(D) नवदाटोली

272. हेलियोडोरस किसका राजदूत था?
(A) मिनांडर
(B) एंटियाल्किडास
(C) डेमेट्रियस
(D) यूक्रेटाइड्स

273. गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य की राजधानी कहाँ थी?
(A) उज्जैन
(B) कन्नौज
(C) पाटलिपुत्र
(D) दिल्ली

274. गोंड साम्राज्य का अंतिम स्वतंत्र शासक कौन था?
(A) नरहर शाह
(B) संग्राम शाह
(C) दलपत शाह
(D) रानी दुर्गावती

275. रानी की उद्घोषणा कब हुई?
(A) 1857
(B) 1859
(C) 1858
(D) 1860

276. रानी दुर्गावती की समाधि कहाँ है?
(A) मंडला
(B) डिंडोरी
(C) सिवनी
(D) जबलपुर

277. 'जय विलास महल' कहाँ स्थित है?
(A) इंदौर
(B) उज्जैन
(C) ग्वालियर
(D) शिवपुरी

278. भानुगुप्त का एरण शिलालेख किस प्रथा का साक्ष्य है?
(A) बाल विवाह
(B) सती
(C) अस्पृश्यता
(D) जौहर

279. राजा भोज का नाम किस शहर की झील से जुड़ा है?
(A) उज्जैन
(B) धार
(C) मांडू
(D) भोपाल

280. 1857 में अंग्रेजों के प्रति वफादार बेगम कौन थीं?
(A) सिकंदर जहाँ बेगम
(B) दोस्त मोहम्मद
(C) यार मोहम्मद
(D) शाहजहां बेगम

281. महिदपुर में विद्रोही नेता कौन था?
(A) सादत खान
(B) फाजिल मोहम्मद
(C) मोरन खान
(D) तात्या टोपे

282. उज्जैन का गोपाल मंदिर किसने बनवाया?

(B) कला का अभाव
(C) उपकरणों की पॉलिश और फिनिशिंग
(D) धातु का उपयोग

190. शैलाश्रयों में चित्रों के अध्यारोपण का संभावित कारण क्या माना जाता है?
(A) सतह की कमी
(B) इतिहास मिटाने का प्रयास
(C) कला अभ्यास
(D) जादुई शक्ति में वृद्धि का विश्वास

191. सांची शिलालेख के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सांची शिलालेख शकों पर विजय का विवरण देता है।
कथन II: यह मुख्य रूप से बौद्ध प्रतिष्ठान के लिए दान का विवरण देता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

192. कौन-सा राजवंश 'परिव्राजक महाराजाओं' से संबंधित है?
(A) औलीकर वंश
(B) परिव्राजक वंश
(C) उच्चकल्प वंश
(D) आभीर वंश

193. मालवा के परमारों की प्रथम राजधानी कौन-सी थी?
(A) धार
(B) उज्जैन
(C) मांडू
(D) महेश्वर

194. चंदेल वंश के बारे में कौन-सा कथन गलत है?
(A) उन्हें कभी नहीं जीता गया।
(B) उन्होंने खजुराहो के मंदिरों का निर्माण किया।
(C) उनका राज्य जेजाकभुक्ति कहलाता था।
(D) परमर्दि देव पृथ्वीराज चौहान से हार गए थे।

195. रियासतों से संबंधित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. होल्कर वंश की स्थापना
2. रानी दुर्गावती का शासनकाल
3. भोपाल राज्य की स्थापना
4. महादजी सिंधिया का शासन
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 1, 4, 2
(D) 2, 1, 3, 4

196. 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान किस शहर में छात्रों के जुलूस पर पुलिस ने फायरिंग की थी?
(A) ग्वालियर
(B) भोपाल
(C) इंदौर
(D) जबलपुर

197. भीमाजी नायक का संघर्ष मुख्य रूप से किस क्षेत्र में था?
(A) बघेलखंड
(B) बुंदेलखंड
(C) निमाड़ क्षेत्र
(D) महाकौशल

198. पेमा फाल्या किस आदिवासी कला के पुनरुद्धार से जुड़े हैं?
(A) गोंड चित्रकला
(B) पिथोरा चित्रकला
(C) धातु शिल्प
(D) बैगा गोदना

199. कायथा पुरातात्विक स्थल की सबसे विशिष्ट विशेषता क्या है?
(A) पाषाण किलेबंदी
(B) चावल की खेती
(C) अशोक शिलालेख
(D) कायथा मृदभांड

200. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): नाग वंश ने गुप्तों के लिए चुनौती प्रस्तुत की थी।
कारण (R): प्रयाग प्रशस्ति में गणपतिनाग सहित नाग राजाओं के उन्मूलन का उल्लेख है।
सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

201. किस राजवंश के शासक ने हूणों पर विजय की स्मृति में विजय स्तंभ स्थापित किया था?
(A) आभीर वंश
(B) कलचुरी वंश
(C) औलीकर वंश
(D) परिव्राजक वंश

202. चंदेल वंश द्वारा शासित क्षेत्र का नाम क्या था?
(A) जेजाकभुक्ति
(B) डाहल

(D) वेंकट रमन सिंह

151. निम्नलिखित में से कौन निमाड़ क्षेत्र का एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी है?
(A) रानी अवंतीबाई
(B) तात्या टोपे
(C) भीमाजी नायक
(D) राजा छत्रसाल

152. आदमगढ़ शैलाश्रय किस काल में पशुपालन का साक्ष्य प्रदान करते हैं?
(A) मध्यपाषाण काल
(B) पुरापाषाण काल
(C) नवपाषाण काल
(D) ताम्रपाषाण काल

153. मध्य प्रदेश में पाए गए मध्यपाषाण कालीन शैल चित्रों का प्राथमिक विषय क्या है?
(A) कृषि दृश्य
(B) राजसी चित्र
(C) सामूहिक शिकार और नृत्य के दृश्य
(D) अमूर्त प्रतीक

154. ऐतिहासिक स्थलों और उनके जिलों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (स्थल)
P. भीमबेटका
Q. बेसनगर
R. आदमगढ़
S. एरण
सूची II: (जिला)
1. सागर
2. नर्मदापुरम्
3. विदिशा
4. रायसेन
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

155. मध्य प्रदेश में अशोक का कौन-सा शिलालेख रुपनाथ गाँव के समीप स्थित है?
(A) गुर्जरा
(B) सांची
(C) पानगुराड़िया
(D) रुपनाथ लघु शिलालेख

156. उदयगिरि गुफा शिलालेख किसका प्रत्यक्ष प्रमाण प्रदान करता है?
(A) गुप्त साम्राज्य का पतन
(B) मालवा विजय में गुप्त राजा की व्यक्तिगत भागीदारी
(C) मंत्रियों का संघर्ष
(D) जैन धर्म को अपनाना

157. राजा भोज की कृति 'समरांगण सूत्रधार' किस विषय पर आधारित है?
(A) संगीत
(B) चिकित्सा
(C) स्थापत्य और नगर नियोजन
(D) व्याकरण

158. कलचुरी वंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: त्रिपुरी के कलचुरी वंश को हैहय वंश के रूप में भी जाना जाता था।
कथन II: इस वंश का संस्थापक कोकल्लम प्रथम था।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

159. 1518 में दिल्ली सल्तनत के किस शासक ने ग्वालियर किले पर अधिकार कर लिया था?
(A) इब्राहिम लोदी
(B) सिकंदर लोदी
(C) बहलोल लोदी
(D) अलाउद्दीन खिलजी

160. बघेलखंड रियासत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. बघेल गुजरात के सोलंकी वंश से अपनी उत्पत्ति मानते हैं।
2. राज्य की राजधानी राजा विक्रमादित्य द्वारा रीवा स्थानांतरित की गई थी।
3. तानसेन अकबर के दरबार में जाने से पहले राजा रामचंद्र सिंह के दरबार में थे।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

161. तात्या टोपे को 1859 में मध्य प्रदेश के किस शहर में फांसी दी गई थी?
(A) ग्वालियर
(B) शिवपुरी
(C) झाँसी
(D) सागर

(B) पद्मावती
(C) त्रिपुरी
(D) दशार्ण

217. भीमबेटका की गुफाएं किस जिले में स्थित हैं?
(A) सीहोर
(B) होशंगाबाद
(C) रायसेन
(D) भोपाल

218. मंदसौर शिलालेख किस देवता को समर्पित मंदिर की प्रशंसा करता है?
(A) सूर्य
(B) विष्णु
(C) शिव
(D) ब्रह्मा

219. त्रिपुरी के कलचुरी वंश का संस्थापक कौन था?
(A) गांगेयदेव
(B) कर्ण
(C) लक्ष्मणराज
(D) कोकल्लम प्रथम

220. फारुकी वंश की राजधानी क्या थी?
(A) मांडू
(B) बुरहानपुर
(C) असीरगढ़
(D) इंदौर

221. सिंधिया वंश के बारे में कौन-सा कथन सही है?
(A) राणोजी सिंधिया संस्थापक थे।
(B) ग्वालियर राजधानी थी।
(C) मराठा शक्ति के पुनरुद्धार में भूमिका।
(D) उपरोक्त सभी

222. इंदौर रेजीडेंसी में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?
(A) शेख रमजान
(B) रानी अवंतीबाई
(C) शंकर शाह
(D) सादत खान

223. बादल भोई किस जिले के स्वतंत्रता सेनानी थे?
(A) छिंदवाड़ा
(B) बैतूल
(C) सिवनी
(D) मंडला

224. कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण किस चंदेल शासक ने कराया था?
(A) यशोवर्मन
(B) विद्याधर
(C) धंग
(D) परमर्दि देव

225. हथनोरा स्थल किस खोज के लिए प्रसिद्ध है?
(A) डायनासोर जीवाश्म
(B) आदि मानव कपाल
(C) मछली जीवाश्म
(D) पाषाण वृक्ष

226. सांची स्तूप के तोरण किस वंश के दौरान जोड़े गए?
(A) सातवाहन
(B) गुप्त
(C) कुषाण
(D) शुंग

227. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भोपाल की बेगमों के शासन को स्वर्ण युग माना जाता है।
कारण (R): उन्होंने महत्वपूर्ण प्रशासनिक और शैक्षिक सुधार किए।
सही विकल्प चुनिए:
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

228. रानी अवंतीबाई का विद्रोह किस ब्रिटिश नीति के विरुद्ध था?
(A) कराधान
(B) उत्सवों पर प्रतिबंध
(C) नील की खेती
(D) उत्तराधिकारी की अमान्यता

229. 1930 का तुरिया जंगल सत्याग्रह किस जिले में हुआ?
(A) बैतूल
(B) होशंगाबाद
(C) सिवनी
(D) सागर

230. सांची के स्तूप मुख्य रूप से क्या हैं?
(A) हिंदू मंदिर
(B) बौद्ध स्मारक
(C) जैन परिसर
(D) मौर्य महल

231. लघु पाषाण शब्द किस काल से जुड़ा है?
(A) पुरापाषाण काल
(B) नवपाषाण काल
(C) ताम्रपाषाण काल
(D) मध्यपाषाण काल

(C) अवंती
(D) अनूप

203. 1857 के नेताओं और उनके विवरणों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (नेता)
P. रानी अवंतीबाई
Q. शेख रमजान
R. शंकर शाह
S. सादत खान
सूची II: (विवरण)
1. महू विद्रोही नेता
2. रामगढ़ की रानी
3. गोंड राजा
4. सागर विद्रोही नेता
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-2, Q-4, R-3, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

204. 1923 के झंडा सत्याग्रह का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम क्या था?
(A) स्वतंत्रता प्राप्ति
(B) तिरंगे को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में मान्यता
(C) साइमन कमीशन का बहिष्कार
(D) वन कानूनों का निरसन

205. 1956 से पूर्व मध्य प्रदेश के किस भाग को मध्य प्रांत और बरार के रूप में जाना जाता था?
(A) भाग B
(B) भाग C
(C) भाग A
(D) भाग D

206. खाज्या नायक और भीमाजी नायक को प्रायः किस नाम से जाना जाता है?
(A) मालवा की तलवारें
(B) गोंडवाना के शेर
(C) बघेलखंड के रक्षक
(D) निमाड़ के नायक

207. हेलियोडोरस स्तंभ किस स्थान पर स्थित है?
(A) बेसनगर
(B) सांची
(C) भरहुत
(D) एरण

208. 'बाज़ बहादुर महल' और 'रानी रूपमती मंडप' कहाँ स्थित हैं?
(A) ओरछा
(B) मांडू
(C) ग्वालियर
(D) चंदेरी

209. मध्यपाषाण कालीन उपकरणों की परिभाषित विशेषता क्या है?
(A) हस्त-कुल्हाड़ियाँ
(B) लघु पाषाण उपकरण
(C) पॉलिश सेल्ट
(D) तांबे के बाणाग्र

210. मंदसौर के औलीकर शासक यशोधर्मन ने किस पर विजय का दावा किया था?
(A) हूण और गुप्तों से बड़े क्षेत्र पर
(B) मौर्यों पर
(C) कुषाणों पर
(D) शुंगों पर

211. राजा भोज द्वारा स्थापित संस्कृत अध्ययन केंद्र को क्या कहा जाता था?
(A) नालंदा
(B) विक्रमशिला
(C) भोजशाला
(D) वल्लभी

212. 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सिंधिया और होल्कर राज्यों के बीच संघर्ष का कारण क्या था?
(A) सर्वोच्चता और नियंत्रण के लिए संघर्ष
(B) धार्मिक विवाद
(C) पारिवारिक विवाद
(D) व्यापारिक विवाद

213. 1842 के बुंदेला विद्रोह का परिणाम क्या था?
(A) सफलता
(B) स्वायत्तता
(C) दमन और गिरफ्तारी
(D) स्वतंत्रता

214. जंगल सत्याग्रह का महत्व क्या था?
(A) शहरी भागीदारी
(B) आदिवासी और ग्रामीण लामबंदी
(C) गांधीजी का सीधा नेतृत्व
(D) विफलता

215. गुंजन सिंह कोरकू किस घटना से जुड़े थे?
(A) गोंड राजा
(B) 1857 विद्रोह
(C) समाज सुधार
(D) जंगल सत्याग्रह

216. विदिशा प्राचीन काल में किस नाम से जाना जाता था?
(A) बेसनगर

(B) मंडला
(C) जबलपुर
(D) सिवनी

249. नर्मदा के दक्षिणी तट पर स्थित ताम्रपाषाण कालीन स्थल कौन-सा है?
(A) भीमबेटका
(B) आदमगढ़
(C) नवदाटोली
(D) पानगुराड़िया

250. सांची शिलालेख में किस सैन्य अधिकारी के दान का उल्लेख है?
(A) आम्रकार्दव
(B) वीरसेन
(C) हरिषेण
(D) हेलियोडोरस

251. कच्छपघात वंश की ग्वालियर शाखा कहाँ शासन करती थी?
(A) दुबकुंड
(B) नरवर
(C) त्रिपुरी
(D) ग्वालियर

252. सिंगोरगढ़ किले के निर्माण का श्रेय किसे दिया जाता है?
(A) असीरगढ़
(B) संग्राम शाह
(C) ग्वालियर
(D) मांडू

253. होल्कर वंश की छतरियाँ किस नदी तट पर हैं?
(A) क्षिप्रा
(B) नर्मदा
(C) खान (कान्ह)
(D) चंबल

254. तात्या टोपे को किस स्थान पर पकड़ा गया था?
(A) रामगढ़
(B) ओरछा
(C) हीरापुर
(D) नरवर

255. भीमबेटका के चित्रों में सर्वाधिक किस पशु का चित्रण है?
(A) गौर (बाइसन)
(B) हाथी
(C) बाघ
(D) घोड़ा

256. उदयगिरि गुफाएं मुख्य रूप से किस धर्म से संबंधित हैं?
(A) प्रागैतिहासिक
(B) हिंदू और जैन
(C) बौद्ध
(D) आवासीय महल

257. 'भारत का जिब्राल्टर' किस किले को कहा जाता है?
(A) मांडू
(B) ग्वालियर
(C) ओरछा
(D) असीरगढ़

258. परिव्राजक वंश ने किस क्षेत्र पर शासन किया?
(A) बुंदेलखंड
(B) मालवा
(C) निमाड़
(D) महाकौशल

259. महादजी सिंधिया का मराठा शक्ति में प्रमुख योगदान क्या था?
(A) अंग्रेजों को हराना
(B) सालाबाई संधि
(C) मराठा सर्वोच्चता और मुगल सम्राट पर नियंत्रण
(D) राजधानी स्थानांतरण

260. भोपाल रियासत भारतीय संघ में कब शामिल हुई?
(A) 1947
(B) 1948
(C) 1956
(D) 1949

261. पंजाब मेल हत्याकांड का उद्देश्य क्या था?
(A) कर विरोध
(B) ध्वज फहराना
(C) क्रांतिकारी बदला
(D) खजाना लूटना

262. सांची के अतिरिक्त प्रसिद्ध स्तूप स्थल कौन-सा है?
(A) कायथा
(B) भरहुत
(C) आदमगढ़
(D) एरण

263. नवपाषाण क्रांति क्या है?
(A) आग का आविष्कार
(B) लोहे का उपयोग
(C) लेखन विकास
(D) कृषि और व्यवस्थित जीवन

264. उदयगिरि शिलालेख क्या दर्ज करता है?
(A) दान
(B) वंशावली
(C) विजय
(D) भूमि दान

232. खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर का निर्माण किसने कराया?
(A) यशोवर्मन
(B) हर्ष
(C) धंग
(D) विद्याधर

233. निम्नलिखित में से कौन परमारों का प्रतिद्वंद्वी नहीं था?
(A) चंदेल
(B) कलचुरी
(C) मौर्य
(D) चालुक्य

234. मांडू शहर किस जिले में स्थित है?
(A) धार
(B) इंदौर
(C) उज्जैन
(D) रतलाम

235. 1939 का त्रिपुरी अधिवेशन कहाँ हुआ था?
(A) भोपाल
(B) ग्वालियर
(C) इंदौर
(D) जबलपुर

236. भीमाजी नायक का बलिदान किस स्थान पर हुआ?
(A) ग्वालियर
(B) पोर्ट ब्लेयर (अंडमान)
(C) बर्मा
(D) पुणे

237. असीरगढ़ किला किस जिले में स्थित है?
(A) खंडवा
(B) खरगोन
(C) बुरहानपुर
(D) बड़वानी

238. निम्नलिखित में से कौन औलीकर वंश का शासक था?
(A) गर्दभिल्ल
(B) गणपतिनाग
(C) कोकल्लम
(D) बंधुवर्मा

239. 1948 में मध्य भारत की राजधानियां कौन-सी थीं?
(A) इंदौर और ग्वालियर
(B) भोपाल और जबलपुर
(C) रीवा और सतना
(D) उज्जैन और धार

240. सिंधिया शासकों की छतरियाँ कहाँ स्थित हैं?
(A) ग्वालियर
(B) शिवपुरी
(C) उज्जैन
(D) ओरछा

241. शैल चित्र किस स्थल पर नहीं पाए जाते?
(A) भीमबेटका
(B) कायथा
(C) आदमगढ़
(D) लिखीछाज

242. उज्जैन के गर्दभिल्ल वंश को किसने पराजित किया?
(A) शक
(B) हूण
(C) कुषाण
(D) हिंद-यूनानी

243. मान सिंह तोमर को किस संगीत शैली का श्रेय दिया जाता है?
(A) ख्याल
(B) ठुमरी
(C) ध्रुपद
(D) तराना

244. अहिल्याबाई होल्कर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अहिल्याबाई होल्कर एक वीर शासिका थीं।
कथन II: वे धर्म और सार्वजनिक कार्यों की महान संरक्षक थीं।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

245. 'सरस्वती कंठाभरण' के रचयिता कौन थे?
(A) राजा धंग
(B) राजा मान सिंह
(C) राजा भोज
(D) राजा संग्राम शाह

246. मध्य प्रांत राजनीतिक सम्मेलन का प्रथम सत्र कहाँ हुआ?
(A) जबलपुर
(B) नागपुर
(C) रायपुर
(D) सागर

247. महाकौशल में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?
(A) होल्कर
(B) सिंधिया
(C) नवाब
(D) शंकर शाह और रघुनाथ शाह

248. रानी अवंतीबाई का स्मारक कहाँ है?
(A) डिंडोरी

(A) बैजाबाई शिंदे
(B) राणोजी सिंधिया
(C) महादजी सिंधिया
(D) अहिल्याबाई होल्कर

283. बाघ गुफाओं के चित्र क्या दर्शाते हैं?
(A) शिकार
(B) राजसी चित्र
(C) केवल पैटर्न
(D) जातक कथाएँ और जनजीवन

284. बघेलखंड क्षेत्र पर शासन करने वाला राजवंश कौन-सा था?
(A) औलीकर
(B) उच्चकल्प
(C) आभीर
(D) कच्छपघात

285. विदिशा किस नदी तट पर है?
(A) नर्मदा
(B) क्षिप्रा
(C) बेतवा
(D) चंबल

286. विंध्य प्रदेश किन क्षेत्रों को मिलाकर बना था?
(A) मालवा और निमाड़
(B) महाकौशल और छत्तीसगढ़
(C) ग्वालियर और इंदौर
(D) बुंदेलखंड और बघेलखंड

287. टंट्या भील को 'रॉबिन हुड' क्यों कहा जाता था?
(A) खजाना लूटकर निर्धनों की सहायता हेतु
(B) धनुष बाण का प्रयोग
(C) वन निवास
(D) वेशभूषा

288. चंदेरी का किला किस जिले में है?
(A) गुना
(B) अशोकनगर
(C) शिवपुरी
(D) विदिशा

289. तांबे के औजारों के प्रथम उपयोग का काल कौन-सा है?
(A) पुरापाषाण काल
(B) ताम्रपाषाण काल
(C) मध्यपाषाण काल
(D) नवपाषाण काल

290. यशोधर्मन का विजय स्तंभ किसकी स्मृति में है?
(A) हूण विजय
(B) गुप्त विजय
(C) चालुक्य विजय
(D) कुषाण विजय

291. महमूद गजनवी का समकालीन परमार शासक कौन था?
(A) सियक II
(B) मुंज
(C) भोज
(D) उदयादित्य

292. खजुराहो का प्राचीन नाम क्या था?
(A) वत्स
(B) दशार्ण
(C) तुंबवन
(D) खर्जूरवाहका

293. ग्वालियर राज्य में स्वतंत्रता संग्राम को गति देने वाला संगठन कौन-सा था?
(A) कांग्रेस
(B) हिंदू महासभा
(C) प्रजा मंडल
(D) सर्वेंट्स ऑफ इंडिया

294. बांधवगढ़ का किला किस वंश का गढ़ था?
(A) कलचुरी
(B) बघेल
(C) चंदेल
(D) गोंड

295. भीमबेटका में सर्वाधिक किस रंग का प्रयोग हुआ है?
(A) नीला
(B) काला
(C) सफेद
(D) लाल

296. आभीर वंश किस संवत से जुड़ा है?
(A) कलचुरी-चेदि संवत
(B) शक संवत
(C) विक्रम संवत
(D) गुप्त संवत

297. इंदौर का 'लाल बाग पैलेस' किसने बनवाया?
(A) सिंधिया
(B) बुंदेला
(C) होल्कर
(D) बघेल

298. 'गुप्त गोदावरी' गुफाएं कहाँ स्थित हैं?
(A) चित्रकूट
(B) उज्जैन
(C) ओंकारेश्वर
(D) अमरकंटक

299. धार किसकी पूर्ववर्ती राजधानी थी?

प्रकाश डालता है। इसके माध्यम से तत्कालीन प्रशासनिक संरचना और अधिकारियों की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

79. (A) ईश्वरसेन
आभीर वंश ने तीसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान ताप्ती और नर्मदा नदियों के बीच अपनी सत्ता स्थापित की थी। इसके संस्थापक ईश्वरसेन थे, जिन्होंने स्वतंत्र शासक के रूप में पहचान बनाई। उन्होंने एक नए संवत का प्रचलन किया, जिसे बाद में कलचुरी-चेदि संवत कहा गया। आभीरों का शासन इस क्षेत्र में प्रशासनिक स्थिरता और स्थानीय व्यापारिक गतिविधियों के विकास का काल था, जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

80. (B) नागभट्ट द्वितीय
गुर्जर-प्रतिहार वंश के शक्तिशाली शासक नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर विजय प्राप्त कर उसे अपनी राजधानी बनाया था। उन्होंने त्रिपक्षीय संघर्ष में पालों और राष्ट्रकूटों को कड़ी टक्कर दी। कन्नौज को राजधानी बनाने से इस वंश की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई और यह उत्तर भारत की बड़ी राजनैतिक शक्ति बना। नागभट्ट द्वितीय के प्रयासों ने ही मिहिर भोज जैसे महान सम्राटों के लिए मार्ग प्रशस्त किया था।

81. (A) 2, 3, 1, 4
मालवा के परमार राजवंश का इतिहास उनके प्रतापी शासकों के उत्थान की कहानी है। सियक द्वितीय ने स्वतंत्र सत्ता की नींव रखी। उनके बाद मुंज ने कला और सैन्य विजयों से साम्राज्य को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया। राजा भोज के शासनकाल में परमार वंश अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। अंततः उदयादित्य के समय में राजवंश ने स्थिरता बनाए रखने का प्रयास किया। यह कालक्रम राजनैतिक प्रगति को दर्शाता है।

82. (A) मराठा परिसंघ के भीतर प्रभुत्व के लिए संघर्ष
होल्कर और सिंधिया रियासतों के बीच संघर्ष का मुख्य कारण मराठा राजनीति में सर्वोच्चता और पेशवा के दरबार में प्रभाव स्थापित करना था। दोनों राजवंश मालवा पर अपना प्रशासनिक और आर्थिक नियंत्रण चाहते थे। महादजी सिंधिया की बढ़ती शक्ति ने होल्करों के लिए असुरक्षा पैदा की, जिसके परिणामस्वरूप युद्ध हुए। इस आंतरिक कलह ने मराठा परिसंघ को कमजोर किया और अंग्रेजों को हस्तक्षेप का अवसर प्रदान किया।

83. (C) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना
1905 के बंगाल विभाजन के विरोध में शुरू हुए स्वदेशी आंदोलन की लहर मध्य प्रदेश में भी महसूस की गई। यहाँ की जनता ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और स्थानीय उत्पादों के उपयोग का संकल्प लिया। जबलपुर और सागर जैसे शहरों में सभाएँ आयोजित की गईं, जिनमें आत्मनिर्भरता पर जोर दिया गया। इस आंदोलन ने आर्थिक जागरूकता पैदा की और भविष्य के बड़े आंदोलनों के लिए जनता को मानसिक रूप से तैयार किया।

84. (D) सआदत खान
1857 के विद्रोह के दौरान इंदौर की महू छावनी में सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व सआदत खान ने किया था। उन्होंने स्थानीय सैनिकों को संगठित कर ब्रिटिश रेजिडेंसी पर हमला बोला। उनके साहस ने अंग्रेजों को अस्थायी रूप से पीछे हटने पर मजबूर किया था। सादत खान ने लंबे समय तक ब्रिटिश सेना को चुनौती दी। उनका यह बलिदान मालवा क्षेत्र में राष्ट्रवादी चेतना और विदेशी शासन के प्रति घृणा का प्रतीक है।

85. (C) गढ़ा-मंडला का गोंड वंश
रघुनाथ शाह गढ़ा-मंडला के गोंड राजवंश से संबंधित थे और राजा शंकर शाह के पुत्र थे। 1857 के संग्राम में इस जोड़ी ने जबलपुर क्षेत्र में जनक्रांति का बिगुल फूंका। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता को ब्रिटिश दासता के विरुद्ध प्रेरित किया। अंग्रेजों ने उन्हें बंदी बनाकर 18 सितंबर 1857 को सार्वजनिक रूप से मृत्युदंड दिया। उनका बलिदान आज भी जनजातीय वीरता और देशभक्ति का पर्याय माना जाता है।

86. (B) ओरछा
ओरछा नगर अपने बेजोड़ बुंदेला स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का 'चतुर्भुज मंदिर' अपनी विशालता के लिए जाना जाता है, जबकि 'राम राजा मंदिर' में भगवान राम को राजा के रूप में पूजा जाता है। बेतवा नदी के तट पर स्थित ये मंदिर बुंदेला राजाओं की धार्मिक आस्था को दर्शाते हैं। ओरछा की ये ऐतिहासिक इमारतें आज भी पर्यटकों को मध्यकालीन गौरव की याद दिलाती हैं और अत्यंत आकर्षक हैं।

87. (D) भीमबेटका
भीमबेटका को दुनिया के सबसे लंबे समय तक बसे रहने वाले शैलाश्रय परिसरों में से एक माना जाता है। यहाँ पुरातात्विक साक्ष्य सिद्ध करते हैं कि उत्तर पुरापाषाण काल से ऐतिहासिक काल तक मानव ने निरंतर निवास किया। यहाँ की गुफाएं आदिमानव की रचनात्मक अभिव्यक्ति का केंद्र थीं। विभिन्न कालखंडों के उपकरणों की उपलब्धता इसे मानव विकास के अध्ययन के लिए एक अद्वितीय और अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल बनाती है।

88. (A) बौद्ध संघ को दिए गए दान का विवरण देता है
सांची में पाया गया कुषाण सम्राट वाशिष्क का शिलालेख बौद्ध धर्म के प्रति उनके उदार दृष्टिकोण की पुष्टि करता है। यह शिलालेख मुख्य रूप से सांची के बौद्ध संघ को दिए गए उपहारों का विवरण प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से स्पष्ट होता है कि कुषाण काल में मध्य भारत में बौद्ध धर्म जीवंत अवस्था में था। यह अभिलेख तत्कालीन प्रशासनिक व्यवस्था और धार्मिक संस्थाओं के संबंधों को समझने का विश्वसनीय दस्तावेज है।

89. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
ग्वालियर के तोमर राजवंश के दौरान कला और संगीत ने अद्भुत प्रगति की थी। राजा मान सिंह तोमर ने 'ध्रुपद' गायकी को विशेष संरक्षण प्रदान किया था। उनके दरबार में तानसेन जैसे महान संगीतकार ने अपनी प्रारंभिक कला को निखारा, जो बाद

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) मध्यपाषाण काल
मध्य प्रदेश के प्रागैतिहासिक काल में मध्यपाषाण युग एक महत्वपूर्ण संक्रमणकालीन अवस्था है। इसकी मुख्य विशेषता लघु पाषाण उपकरणों का उपयोग है, जिन्हें सूक्ष्म पाषाण औजार कहा जाता है। भीमबेटका और आदमगढ़ जैसे स्थलों से प्राप्त साक्ष्य इस काल की तकनीकी प्रगति और मानव जीवनशैली के क्रमिक विकास को प्रमाणित करते हैं। यह काल ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

2. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
ताम्रपाषाण काल में मानव ने पत्थर के साथ पहली बार तांबे का प्रयोग किया। मध्य प्रदेश में इसके अवशेष कायथा, एरण और नवदाटोली से प्राप्त हुए हैं। यहाँ खुदाई में तांबे की कुल्हाड़ियाँ और विशिष्ट मृदभाण्ड मिले हैं, जो उन्नत ग्रामीण जीवन को दर्शाते हैं। ये स्थल मालवा संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, जो अपनी ऐतिहासिक विशिष्टता के लिए विख्यात हैं।

3. (C) शैल चित्र विशेष रूप से केवल राजदरबार के जीवन के दृश्यों को चित्रित करते हैं।
मध्य प्रदेश के प्राचीन शैलाश्रयों के चित्र मुख्य रूप से तत्कालीन आम जनजीवन, शिकार और सामुदायिक नृत्य पर केंद्रित हैं। ये चित्र राजदरबार के बजाय प्रकृति और मानव के आरंभिक संघर्षों को प्रस्तुत करते हैं। भीमबेटका के चित्रों में वन्य जीवों और सामूहिक उत्सवों की प्रधानता है, जो प्रागैतिहासिक मानव की रचनात्मकता और उनकी सामाजिक संरचना को समझने का विश्वसनीय आधार प्रदान करते हैं।

4. (D) शिकार, नृत्य और सामुदायिक जीवन के दृश्य
मध्य प्रदेश के शैल चित्रों में तत्कालीन मानव समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का सजीव चित्रण मिलता है। इन चित्रों के मुख्य विषय शिकार, सामूहिक नृत्य और दैनिक सामुदायिक क्रियाकलाप हैं। ये कलाकृतियाँ आदिमानव के मनोरंजन के साधनों और उनके समूह में रहने की प्रवृत्ति को दर्शाती हैं। लाल और सफेद रंगों का प्रयोग इन चित्रों को विशिष्ट और अत्यंत आकर्षक बनाता है।

5. (C) नवदाटोली
मध्य प्रदेश के पुरातात्विक मानचित्र पर नवदाटोली एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाण कालीन ग्रामीण बस्ती है, न कि प्राथमिक शैलाश्रय स्थल। इसके विपरीत भीमबेटका और आदमगढ़ अपनी प्राकृतिक गुफाओं और प्रागैतिहासिक शैल चित्रों के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध हैं। नवदाटोली की खुदाई से प्राप्त मृदभाण्ड और अनाज के अवशेष प्राचीन कृषि पद्धतियों पर व्यापक प्रकाश डालते हैं, जो इस क्षेत्र की ऐतिहासिक पहचान है।

6. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक स्थलों का कालक्रम से गहरा संबंध है। भीमबेटका पुरापाषाण काल से मध्यपाषाण काल तक के विकास को दर्शाता है। कायथा अपनी ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है, जबकि आदमगढ़ से प्रारंभिक पशुपालन के साक्ष्य मिलते हैं। एरण एक महत्वपूर्ण स्थल है जहाँ ताम्रपाषाण काल के अवशेषों के साथ बाद के लौह युग और गुप्त काल के अभिलेखीय प्रमाण प्राप्त होते हैं।

7. (D) जबलपुर
मौर्य सम्राट अशोक का रूपनाथ शिलालेख मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में स्थित है। यह एक लघु शिलालेख है जो अशोक की बौद्ध धर्म के प्रति गहरी निष्ठा को दर्शाता है। इसके माध्यम से अशोक ने धम्म के प्रचार और नैतिक मूल्यों के पालन का संदेश दिया था। ऐतिहासिक दृष्टि से यह शिलालेख मध्य भारत में मौर्य प्रशासन की प्रभावी उपस्थिति और उनकी धार्मिक नीतियों का प्रमाण है।

8. (A) इसमें स्पष्ट रूप से 'अशोक' नाम का उल्लेख उसकी उपाधि 'देवानांपिय' के साथ किया गया है।
दतिया जिले में स्थित गुर्जरा शिलालेख भारतीय इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है। यह उन दुर्लभ अभिलेखों में से एक है जहाँ सम्राट का नाम स्पष्ट रूप से 'अशोक' उत्कीर्ण है। अधिकांश अन्य लेखों में उन्हें केवल 'देवानांपिय' जैसी उपाधियों से संबोधित किया गया है। यह शिलालेख मौर्य काल की राजशाही परंपराओं और सम्राट की पहचान की पुष्टि करने वाला एक अत्यंत विश्वसनीय आधार है।

9. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विदिशा का बेसनगर गरुड़ स्तंभ भारत में भागवत धर्म के विकास का अद्वितीय साक्ष्य है। इसकी स्थापना शुंग काल में यूनानी राजदूत हेलियोडोरस द्वारा भगवान वासुदेव के सम्मान में की गई थी। शिलालेख में हेलियोडोरस स्वयं को 'भागवत' कहता है, जो सिद्ध करता है कि भारतीय संस्कृति का प्रभाव विदेशी नागरिकों पर भी पड़ा था। यह प्राचीन भारत की धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है।

10. (A) विदिशा
विदिशा जिले में स्थित उदयगिरि की गुफाएं गुप्त कालीन स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यहाँ के शिलालेख चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल और उनकी विजयों पर प्रकाश डालते हैं। वराह अवतार की विशाल प्रतिमा गुप्त सम्राटों की धार्मिक मान्यताओं और कला के प्रति उनके संरक्षण को दर्शाती है। सामरिक दृष्टि से विदिशा का महत्व गुप्त साम्राज्य के पश्चिमी मालवा पर नियंत्रण के लिए अनिवार्य था।

(A) गुप्त
(B) मौर्य
(C) प्रतिहार
(D) राष्ट्रकूट

300. 'सेंधवा घाटी' क्षेत्र से किस नायक का संघर्ष जुड़ा है?
(A) टंट्या भील
(B) भीमाजी नायक
(C) गुंजन सिंह कोरकू
(D) शंकर शाह

ग्वालियर कला, संगीत और संस्कृति का एक अत्यंत समृद्ध और महत्वपूर्ण केंद्र बन गया था।

23. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
फारूकी वंश ने मध्य प्रदेश के निमाड़ क्षेत्र पर स्वतंत्र सल्तनत के रूप में शासन किया। उनकी स्वतंत्रता का कारण उनकी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति थी, जो उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सेतु का कार्य करती थी। वे पड़ोसी राज्यों के बीच संतुलन बनाए रखने में सफल रहे। असीरगढ़ का किला उनकी शक्ति का आधार था। यह वंश मध्यकालीन भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

24. (A) संग्राम शाह
गढ़ा-मंडला के गोंडवाना साम्राज्य को महाराजा संग्राम शाह के शासनकाल में वास्तविक विस्तार प्राप्त हुआ। उन्होंने 52 गढ़ों पर विजय प्राप्त कर विशाल साम्राज्य स्थापित किया। वे महान सेनापति और कला के अनुरागी थे। उनके काल में गोंडवाना में आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक स्थिरता आई। उन्होंने दलपत शाह को उत्तराधिकारी तैयार किया, जिनका विवाह चंदेल राजकुमारी रानी दुर्गावती के साथ हुआ था, जो इतिहास में प्रसिद्ध हैं।

25. (A) केवल 1 और 2
भोपाल रियासत की नींव 18वीं शताब्दी में दोस्त मोहम्मद खान ने रखी थी। इस रियासत का इतिहास अपनी महिला शासकों, 'भोपाल की बेगम' के कारण अत्यंत विशिष्ट है। इन बेगमों ने राज्य को प्रशासनिक सुधार और स्थापत्य में नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया। 1947 में स्वतंत्रता के समय भोपाल के नवाब ने तुरंत विलय के बजाय स्वतंत्र रहने का प्रयास किया था, अंततः 1949 में इसका विलय हुआ।

26. (A) मल्हार राव होल्कर
इंदौर के होल्कर राजवंश की स्थापना मल्हार राव होल्कर ने की थी, जो मराठा साम्राज्य के पराक्रमी सेनापति थे। पेशवा बाजीराव प्रथम ने उन्हें मालवा का क्षेत्र प्रदान किया था। मल्हार राव ने सैन्य कुशलता से मध्य भारत में मराठा शक्ति को सुदृढ़ किया। उनके उत्तराधिकारियों, विशेषकर अहिल्याबाई होल्कर ने राज्य को गौरवान्वित किया। होल्कर राजवंश ने कला, शिक्षा और समाज सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

27. (D) उज्जैन
सिंधिया राजवंश ने अपनी प्रारंभिक सत्ता उज्जैन से संचालित की थी, जो प्राचीन सांस्कृतिक केंद्र रहा है। राणोजी सिंधिया ने उज्जैन को अपनी शक्ति का मुख्य आधार बनाया था। बाद में रणनीतिक कारणों से महादजी सिंधिया के समय राजधानी को ग्वालियर स्थानांतरित करने की प्रक्रिया शुरु हुई। अंततः दौलत राव सिंधिया के शासनकाल में ग्वालियर इस राजवंश की स्थायी राजधानी और राजनैतिक शक्ति का मुख्य केंद्र बना।

28. (B) रुद्र प्रताप सिंह
बुंदेलखंड में ओरछा राज्य की स्थापना 16वीं शताब्दी में राजा रुद्र प्रताप सिंह ने की थी। उन्होंने बेतवा नदी के तट पर ओरछा को राजधानी बनाया और बुंदेला शासन को स्थिरता दी। उनके शासनकाल में ओरछा महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र बना। उन्होंने किलों का निर्माण प्रारंभ करवाया और मुगल साम्राज्य जैसी बाहरी शक्तियों के विरुद्ध अपनी स्वायत्तता बनाए रखने के लिए एक सुदृढ़ सैन्य आधार तैयार किया था।

29. (C) गुजरात से प्रवास करने वाले बघेल राजपूतों द्वारा
बघेलखंड रियासत की स्थापना बघेल राजपूतों ने की थी जो मूलतः गुजरात के सोलंकी वंश से संबंधित थे। वे 13वीं शताब्दी में मध्य भारत में प्रवास कर आए और रीवा को शक्ति का केंद्र बनाया। रीवा उनकी स्थायी राजधानी बनी और यह राज्य अपनी सांस्कृतिक पहचान के लिए प्रसिद्ध रहा। संगीत सम्राट तानसेन ने भी इसी दरबार से अपनी ख्याति प्राप्त की थी, जो ऐतिहासिक गौरव है।

30. (D) यशवंत राव होल्कर प्रथम
यशवंत राव होल्कर प्रथम एक असाधारण योद्धा थे जिन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को कड़ी चुनौती दी। द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध में उनकी छापामार पद्धति ने अंग्रेजों को कई मोर्चों पर पराजित किया। उनकी वीरता के कारण उन्हें 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है। उन्होंने स्वाभिमान के लिए किसी भी बाहरी शक्ति के सामने झुकने से इनकार कर दिया, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अत्यंत प्रेरणादायक है।

31. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
गोंडवाना की रानी दुर्गावती वीरता और स्वाभिमान का प्रतीक हैं। उन्होंने अकबर की विस्तारवादी नीति का मुकाबला किया और मुगल सेना को युद्ध में पराजित किया। जब अंतिम युद्ध में उनकी पराजय निश्चित दिखाई दी, तो उन्होंने बंदी बनने के बजाय स्वयं के प्राणों की आहुति दे दी। उनका यह बलिदान मातृभूमि की रक्षा और महिला सशक्तिकरण की एक कालजयी और अत्यंत प्रेरणादायक ऐतिहासिक गाथा है।

32. (B) हृदय शाह
1842 का बुंदेला विद्रोह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध व्यापक जन असंतोष का परिणाम था। राजा हृदय शाह ने इस विद्रोह में अग्रणी भूमिका निभाई और जमींदारों को एकजुट किया। उन्होंने ब्रिटिश राजस्व नीतियों का कड़ा विरोध किया। यद्यपि इस विद्रोह को अंग्रेजों ने दबा दिया, लेकिन इसने स्थानीय जनता में स्वतंत्रता की भावना प्रज्वलित की। हृदय शाह के बलिदान ने 1857 के महान संघर्ष के लिए आधार तैयार किया।

33. (B) मेरठ में विद्रोह की शुरुआत
मध्य प्रदेश में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला 3 जून को नीमच छावनी से भड़की थी। इसका मुख्य कारण मेरठ में सिपाहियों द्वारा किए गए विद्रोह की सूचना थी, जिसने यहाँ के सैनिकों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया। सैनिकों ने सरकारी संपत्तियों को नष्ट कर दिया और छावनी पर नियंत्रण कर लिया। यह घटना इस क्षेत्र में ब्रिटिश सत्ता को हिलाने वाली पहली बड़ी चिंगारी साबित हुई।

34. (A) रानी अवंतीबाई
रामगढ़ की रानी अवंतीबाई 1857 के विद्रोह के दौरान मध्य प्रदेश की प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थीं। उन्होंने अपने राज्य का प्रशासन संभाला और ब्रिटिश आदेशों को मानने से इनकार कर दिया। रानी ने मंडला क्षेत्र में अंग्रेजों के साथ वीरतापूर्ण युद्ध लड़े। जब उन्हें घेरा गया, तो उन्होंने स्वाभिमान की रक्षा के लिए स्वयं का बलिदान दे दिया। उनकी तुलना झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई से की जाती है।

35. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
1857 के संग्राम में मध्य प्रदेश के विभिन्न नायकों ने ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। शेख रमजान ने सागर में नेतृत्व किया, जबकि तात्या टोपे ने छापामार युद्ध से अंग्रेजों को छकाया। राजा शंकर शाह ने जबलपुर में जनचेतना जगाई और सआदत खान ने इंदौर में ब्रिटिश रेजिडेंसी पर आक्रमण का नेतृत्व किया। इन सभी नेताओं ने भारतीय प्रतिरोध को एक नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की।

36. (D) जबलपुर
झंडा सत्याग्रह की शुरुआत 1923 में मध्य प्रदेश के जबलपुर शहर से हुई थी। इसका उद्देश्य टाउन हॉल पर राष्ट्रीय ध्वज फहराना और इसके अपमान का विरोध करना था। स्थानीय नेताओं ने इस आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाया। जबलपुर से प्रारंभ होकर यह सत्याग्रह जल्द ही पूरे देश में फैल गया। इस आंदोलन ने तिरंगे को राष्ट्रीय एकता और गौरव के प्रतीक के रूप में स्थापित किया।

37. (C) अंग्रेजों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधात्मक वन कानूनों की अवहेलना करना
सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान मध्य प्रदेश में 'जंगल सत्याग्रह' एक प्रभावशाली आंदोलन बना। इसका उद्देश्य ब्रिटिश सरकार द्वारा थोपे गए कठोर वन कानूनों का विरोध करना था, जिन्होंने आदिवासियों के पारंपरिक अधिकार छीन लिए थे। बैतूल और सिवनी जैसे स्थानों पर लोगों ने वनों में प्रवेश कर घास काटकर प्रतीकात्मक रूप से कानून तोड़ा। इस सत्याग्रह ने स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी समुदाय की सक्रिय भागीदारी को दर्शाया।

38. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
असहयोग आंदोलन के दौरान मध्य प्रदेश की जनता में अपूर्व उत्साह था। महात्मा गांधी के आह्वान पर स्थानीय नेताओं ने लोगों को स्वदेशी अपनाने और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए प्रेरित किया। वकीलों ने प्रैक्टिस छोड़ दी और विद्यार्थियों ने सरकारी विद्यालयों का त्याग किया। इस सक्रियता ने ब्रिटिश प्रशासन को संकट में डाल दिया और राष्ट्रीय आंदोलन को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाने का कार्य किया।

39. (D) राज्य पुनर्गठन आयोग (फ़ज़ल अली आयोग)
आधुनिक मध्य प्रदेश की स्थापना 1 नवंबर 1956 को फ़ज़ल अली आयोग की सिफारिशों पर की गई थी। आयोग ने भाषाई और प्रशासनिक आधार पर राज्यों की सीमाओं के निर्धारण का सुझाव दिया था। इसके परिणामस्वरुप मध्य प्रांत, मध्य भारत, विंध्य प्रदेश और भोपाल राज्य को मिलाकर एक विशाल राज्य बनाया गया। यह पुनर्गठन राज्य की प्रशासनिक एकता और विकास की दिशा में ऐतिहासिक कदम साबित हुआ।

40. (A) शंकर शाह
गढ़ा-मंडला के गोंड राजा शंकर शाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह 1857 के विद्रोह के महान शहीद हैं। वे सुशिक्षित शासक थे जिन्होंने अपनी रचनाओं से ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध जन असंतोष को स्वर दिया। अंग्रेजों ने उन्हें देशद्रोह के आरोप में बंदी बनाकर 18 सितंबर 1857 को तोप से उड़ा दिया। उनका यह सर्वोच्च बलिदान मध्य प्रदेश के इतिहास में शौर्य और देशभक्ति का अमिट उदाहरण है।

41. (D) 1, 2 और 3
मध्य प्रदेश के आदिवासी नायकों ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी वीरता की छाप छोड़ी है। भीमाजी नायक ने निमाड़ से अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा संभाला, जबकि टंट्या भील अपनी छापामार रणनीति के कारण श्रद्धेय बन गए। गुंजन सिंह कोरकू ने बैतूल में जंगल सत्याग्रह का नेतृत्व किया। इन नायकों ने विषम परिस्थितियों में भी विदेशी सत्ता के सामने घुटने नहीं टेके और अपने समुदायों को मुख्यधारा से जोड़ा।

42. (A) एक छावनी में पुलिस अधिकारी
खाज्या नायक निमाड़ क्षेत्र के भील नेता थे जिन्होंने 1857 के विद्रोह में सक्रिय भूमिका निभाई। विद्रोही बनने से पहले वे ब्रिटिश प्रशासन के अधीन पुलिस अधिकारी थे। ब्रिटिश अधिकारियों के अपमानजनक व्यवहार ने उन्हें अंग्रेजों का शत्रु बना दिया। उन्होंने भीमाजी नायक के साथ मिलकर सशस्त्र दस्ता तैयार किया और ब्रिटिश खजाने पर हमले किए। उनका यह विद्रोह भील समुदाय के स्वाभिमान की लड़ाई का प्रतीक था।

43. (D) मुड़े राय
1930 में सिवनी जिले में हुआ 'तुरिया जंगल सत्याग्रह' स्वतंत्रता आंदोलन की मर्मस्पर्शी घटना है। इसका नेतृत्व मुड़े राय ने किया था, जिसका उद्देश्य अन्यायपूर्ण वन कानूनों का उल्लंघन करना था। शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर ब्रिटिश पुलिस की गोलीबारी में कई आदिवासी शहीद हुए। मुड़े राय का साहस और आदिवासियों का यह बलिदान प्रमाण है कि स्वतंत्रता की प्यास समाज के हर वर्ग और दुर्गम अंचलों में व्याप्त थी।

44. (B) छापामार युद्ध
टंट्या भील अंग्रेजों के विरुद्ध छापामार युद्ध पद्धति के विशेषज्ञ थे। वे मालवा और निमाड़ के घने जंगलों की भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर ब्रिटिश सेना पर अचानक आक्रमण करते थे। उनकी रणनीति ने ब्रिटिश पुलिस को वर्षों तक परेशान रखा। टंट्या भील ने लूट का धन गरीबों और जरुरतमंदों में बाँट दिया, जिससे वे जनसाधारण के बीच एक मसीहा और लोकनायक के रूप में सदैव अमर हो गए।

45. (C) असहयोग आंदोलन
छिंदवाड़ा के आदिवासी नायक बादल भोई ने असहयोग आंदोलन के दौरान ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध आवाज बुलंद की थी। उन्होंने आदिवासियों को संगठित कर सरकारी आदेशों की अवहेलना करने के लिए प्रेरित किया। उनकी सक्रियता से डरकर अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया, जहाँ यातनाओं के कारण उनका देहांत हो गया। बादल भोई का जीवन आज भी जनजातीय समाज के लिए राष्ट्रभक्ति की निरंतर प्रेरणा है।

46. (D) पिथोरा चित्रकला
पेमा फाल्या मध्य प्रदेश की पारंपरिक 'पिथोरा' चित्रकला के विश्वविख्यात कलाकार थे। यह झाबुआ क्षेत्र की भील जनजाति की एक पवित्र अनुष्ठानिक कला है। पिथोरा पेंटिंग भील समुदाय की धार्मिक मान्यताओं और उनके परिवेश का रंगीन दस्तावेज है। पेमा फाल्या ने इस लोक कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। उनकी विशिष्ट शैली ने इस पारंपरिक कला को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया और इसे प्रासंगिक बनाया।

47. (A) अशोक
रायसेन जिले में स्थित सांची का महान स्तूप मूल रूप से मौर्य सम्राट अशोक द्वारा तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में बनवाया गया था। उन्होंने बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के प्रसार के उद्देश्य से इस भव्य संरचना का निर्माण कराया था। यह स्तूप भारतीय वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। वर्तमान में यह यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है और विश्व भर से शांति एवं आध्यात्म प्रेमियों को आकर्षित करता है।

48. (B) प्रागैतिहासिक शैल चित्र और शैलाश्रय
विंध्याचल की पहाड़ियों में स्थित भीमबेटका अपनी गुफाओं और अद्भुत शैल चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। ये चित्र पुरापाषाण काल से ऐतिहासिक काल तक के मानव जीवन को दर्शाते हैं। यूनेस्को विश्व धरोहर घोषित यह स्थल आदिमानव के दैनिक जीवन, शिकार और धार्मिक विश्वासों का जीवंत कैनवास है। इन चित्रों में प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया गया है, जो हजारों वर्षों बाद भी अपनी स्पष्टता और चमक बनाए हुए हैं।

49. (B) पशुपालन
नर्मदापुरम् जिले में स्थित आदमगढ़ की पहाड़ियाँ भारतीय पुरातत्व में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यहाँ खुदाई से मध्यपाषाण काल के साक्ष्य मिले हैं, जो मानव द्वारा पशुपालन की शुरुआत का प्राचीनतम प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। पालतू जानवरों के अवशेषों ने सिद्ध किया कि तत्कालीन मानव ने प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाना सीख लिया था। यह खोज मानव सभ्यता के विकासवादी संक्रमण को समझने का मुख्य आधार प्रदान करती है।

50. (A) मेहरानगढ़ किला
मेहरानगढ़ किला राजस्थान के जोधपुर में स्थित है, न कि मध्य प्रदेश में। इसके विपरीत, ग्वालियर का किला, मांडू का किला और असीरगढ़ का किला मध्य प्रदेश की ऐतिहासिक विरासत के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। ये किले विभिन्न कालखंडों में मध्य भारत की सामरिक और राजनैतिक शक्ति के केंद्र रहे हैं। अपनी विशिष्ट वास्तुकला और गौरवशाली इतिहास के माध्यम से ये किले आज भी पर्यटकों को निरंतर आकर्षित करते हैं।

51. (A) 2, 4, 1, 3
मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास आंदोलनों के क्रमिक विकास का परिणाम है। सर्वप्रथम 1842 में बुंदेला विद्रोह हुआ, जिसके पश्चात 1857 की महान क्रांति हुई। 20वीं शताब्दी में 1923 में जबलपुर से झंडा सत्याग्रह शुरु हुआ। अंततः 1930 में बैतूल में जंगल सत्याग्रह हुआ। यह कालक्रम राज्य में राष्ट्रवादी चेतना के निरंतर विस्तार और जनभागीदारी में हुई वृद्धि को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

52. (D) क्षिप्रा
उज्जैन नगर क्षिप्रा नदी के पावन तट पर स्थित है। यह नदी हिंदू धर्म में अत्यंत पूजनीय मानी जाती है और यहाँ प्रत्येक 12 वर्ष में सिंहस्थ कुंभ मेले का आयोजन होता है। उज्जैन न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि प्राचीन काल में अवंती महाजनपद की राजधानी भी रहा है। भगवान महाकालेश्वर का मंदिर इसी नदी के समीप स्थित है, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का आधार है।

53. (C) भद्दे पाषाण उपकरणों के साथ आखेटक-संग्रहकर्ता जीवनशैली
मध्य प्रदेश में पुरापाषाण काल की मुख्य विशेषता बड़े और खुरदरे पत्थर के उपकरणों का उपयोग थी। इस काल का मानव आखेटक और खाद्य संग्राहक था, जो पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर था। नर्मदा घाटी में पाए गए उपकरण तत्कालीन आदिमानव की तकनीकी सीमाओं को दर्शाते हैं। इस युग में स्थायी बस्तियों का अभाव था और लोग सुरक्षा एवं भोजन की तलाश में शैलाश्रयों में निवास करते थे।

54. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भीमबेटका के शैल चित्र कलात्मक रूप से समृद्ध हैं और कालक्रम समझने का वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं। यहाँ के चित्रों का फैलाव उत्तर पुरापाषाण काल से मध्यकाल तक है। एक चित्र के ऊपर दूसरे चित्र का निर्माण पुरातत्वविदों को यह समझने में मदद करता है कि कौन सा चित्र पुराना है। यह विशेषता इतिहास के विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों को श्रेणीबद्ध करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

55. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
मध्य प्रदेश में पाए गए अशोक के शिलालेख मौर्य कालीन प्रशासनिक सीमाओं के विस्तार का प्रमाण हैं। गुर्जरा शिलालेख दतिया में है, जबकि रुपनाथ जबलपुर जिले के अंतर्गत आता है। सीहोर के पानगुराड़िया से प्राप्त अभिलेख बौद्ध धर्म के प्रसार को दर्शाते हैं। रायसेन में स्थित सांची का शिलालेख अशोक के समय का है, जिसमें बाद के कालखंडों के दान और प्रशासनिक विवरण भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त होते हैं।

11. (D) 1, 2 और 3
मध्य प्रदेश के अभिलेखीय स्रोत प्राचीन इतिहास के विविध आयामों को प्रकट करते हैं। सांची से प्राप्त वाशिष्क का शिलालेख कुषाण शक्तियों के प्रभाव की पुष्टि करता है। मंदसौर का शिलालेख कुमारगुप्त प्रथम के काल की सामाजिक और आर्थिक स्थिति की जानकारी देता है। सीहोर का पानगुराड़िया शिलालेख सम्राट अशोक के धम्म प्रचार और उनके प्रशासनिक तंत्र की व्यापक पहुँच का एक सशक्त ऐतिहासिक दस्तावेज है।

12. (B) रेशम बुनकरों की एक श्रेणी के प्रवास और गतिविधियां
मंदसौर का प्रसिद्ध शिलालेख गुप्त काल के सामाजिक-आर्थिक इतिहास का दुर्लभ दस्तावेज है। यह लाट देश से दशपुर की ओर प्रवास करने वाले रेशम बुनकरों की श्रेणी का विवरण देता है। इन बुनकरों ने अपनी समृद्धि और धार्मिक निष्ठा प्रकट करने के लिए यहाँ एक भव्य सूर्य मंदिर बनवाया था। यह प्राचीन भारत में श्रेणियों की कार्यप्रणाली और उनके सामाजिक योगदान का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

13. (C) गर्दभिल्ल
गर्दभिल्ल वंश ने प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में उज्जैन के आसपास शासन किया था। इस वंश के राजा गर्दभिल्ल के काल में शकों ने आक्रमण कर मालवा पर अधिकार कर लिया था। ऐतिहासिक कथाओं के अनुसार, उनके पुत्र विक्रमादित्य ने बाद में शकों को पराजित कर उज्जैन को मुक्त कराया और विक्रम संवत की शुरुआत की। यह काल क्षेत्रीय राजवंशों और विदेशी आक्रमणकारियों के संघर्ष का अध्याय है।

14. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
नाग वंश ने कुषाणों के पतन के बाद मध्य भारत में शक्तिशाली शक्ति के रूप में उदय किया। उनके प्रमुख केंद्र पद्मावती, विदिशा और मथुरा थे। वायु पुराण के अनुसार यहाँ नौ नाग राजाओं ने शासन किया था। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति पुष्टि करती है कि उसने अंतिम नाग राजा गणपतिनाग को पराजित कर उनके राज्य को गुप्त साम्राज्य में विलीन कर लिया था।

15. (A) दशपुर (मंदसौर)
औलीकर वंश की राजधानी दशपुर थी, जिसे वर्तमान में मंदसौर कहा जाता है। इस वंश के प्रतापी राजा यशोधर्मन ने हूण शासक मिहिरकुल को पराजित कर विदेशी प्रभाव को कम किया था। उनके विजय स्तंभ आज भी मंदसौर में उनकी सैन्य उपलब्धियों के साक्षी हैं। यह राजवंश गुप्त साम्राज्य के सामंत के रूप में उभरा था, जिसने बाद में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की थी।

16. (B) परिव्राजक और उच्चकल्प वंश
परिव्राजक और उच्चकल्प राजवंशों ने 5वीं शताब्दी में मध्य प्रदेश के विंध्य और बघेलखंड क्षेत्रों पर शासन किया था। ये दोनों राजवंश गुप्त सम्राटों के सामंत के रूप में कार्य करते थे। इनके अभिलेखों में गुप्त संवत का प्रयोग उनकी अधीनता को दर्शाता है। इन शासकों ने दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में प्रशासनिक स्थिरता बनाए रखी और कला को संरक्षण प्रदान कर संस्कृति का विकास किया था।

17. (A) 4, 3, 2, 1
मध्य प्रदेश में राजवंशों का उदय क्रमिक रूप से हुआ। नाग वंश ने तीसरी शताब्दी में सत्ता स्थापित की, जिसके पश्चात औलीकर वंश का प्रभुत्व रहा। मध्यकाल के आरंभ में त्रिपुरी के कलचुरी वंश ने जबलपुर क्षेत्र में प्रभाव बढ़ाया। अंत में 10वीं शताब्दी में परमार वंश मालवा की प्रमुख शक्ति बना। यह कालक्रम राज्य की राजनैतिक स्थिरता और क्षेत्रीय शक्तियों के विकास को दर्शाता है।

18. (A) विद्याधर - महमूद गजनवी की सेना को हराया
चंदेल शासक विद्याधर अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने उत्तर भारत के राजाओं का संघ बनाकर महमूद गजनवी के हमलों का डटकर मुकाबला किया। वे एकमात्र भारतीय शासक थे जिन्होंने गजनवी की विस्तारवादी महत्वाकांक्षाओं को चुनौती दी और उसे संधि के लिए विवश किया। विद्याधर का शासनकाल चंदेल साम्राज्य की शक्ति का चरमोत्कर्ष था। उनके काल में खजुराहो की स्थापत्य कला विश्वविख्यात हुई।

19. (C) भोज
राजा भोज परमार वंश के सबसे प्रतापी और विद्वान शासक थे। उन्होंने धार को राजधानी बनाकर मालवा पर शासन किया। वे महान विजेता और साहित्य, कला एवं विज्ञान के संरक्षक थे। उन्होंने 'समरांगण सूत्रधार' जैसे अनेक ग्रंथों की रचना की। उनके शासन में धार विद्या का प्रमुख केंद्र बना। भोजपुर के विशाल शिव मंदिर का निर्माण उनकी दूरदर्शिता और स्थापत्य प्रेम का उदाहरण है।

20. (D) उन्हें 11वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत द्वारा अपने साम्राज्य में मिला लिया गया था।
त्रिपुरी के कलचुरी वंश ने जबलपुर के निकट शासन किया और वे मध्य भारत की दीर्घकालिक शक्ति रहे। कोकल्लम प्रथम इस वंश के संस्थापक थे। वे अपने पड़ोसी राज्यों चंदेलों और परमारों के साथ संघर्षरत रहते थे। कलचुरी साम्राज्य का पतन 11वीं शताब्दी में नहीं हुआ, बल्कि बाद में क्षेत्रीय शक्तियों के दबाव के कारण यह धीरे-धीरे कमजोर होकर समाप्त हो गया था।

21. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
मध्य प्रदेश के प्रमुख राजवंशों के सत्ता केंद्र उनकी भौगोलिक पहचान हैं। कलचुरी वंश का मुख्य केंद्र त्रिपुरी था जो नर्मदा के तट पर स्थित था। परमारों ने धार को अपनी राजधानी बनाया और मालवा में विस्तार किया। चंदेलों का शासन बुंदेलखंड में फैला था जहाँ उन्होंने खजुराहो के मंदिर बनवाए। कच्छपघात वंश का प्रभुत्व ग्वालियर में था, जहाँ उनके स्थापत्य कौशल के नमूने आज भी मिलते हैं।

22. (B) मान सिंह तोमर
राजा मान सिंह तोमर ग्वालियर के इतिहास के सबसे लोकप्रिय शासक थे। उन्होंने ग्वालियर किले में मान मंदिर और गूजरी महल का निर्माण करवाया। वे कुशल प्रशासक और संगीत के महान संरक्षक थे। उन्होंने 'ध्रुपद' शैली को बढ़ावा दिया और 'मानकौतूहल' ग्रंथ की रचना करवाई। उनके शासनकाल में

के लोग चित्रित मृदभाण्डों का निर्माण करते थे और तांबे के उपकरणों का कुशलता से प्रयोग करते थे। खुदाई में मिले अनाज के अवशेषों से स्पष्ट होता है कि वे एक व्यवस्थित जीवन व्यतीत करते थे। ये संस्कृतियाँ प्राचीन ग्रामीण बस्तियों के विकास की महत्वपूर्ण कहानी कहती हैं।

68. (D) लघु शिलालेख
सीहोर जिले के पानगुराड़िया में पाया गया अशोक का शिलालेख 'लघु शिलालेख' की श्रेणी में आता है। यह सम्राट अशोक की धार्मिक यात्राओं और बौद्ध सिद्धांतों के प्रसार पर प्रकाश डालता है। यह स्थल इंगित करता है कि मध्य भारत के व्यापारिक मार्गों पर मौर्य प्रशासन की सुदृढ़ पकड़ थी। पानगुराड़िया का यह अभिलेख क्षेत्र में बौद्ध भिक्षुओं की गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र होने का साक्ष्य है।

69. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सांची शिलालेख चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान मध्य भारत में गुप्तों के सुव्यवस्थित प्रशासनिक तंत्र की पुष्टि करता है। इसमें बौद्ध विहार को दिए गए दान का उल्लेख है, जो दर्शाता है कि गुप्त सम्राट अन्य धर्मों के प्रति उदार थे। सांची में गुप्त काल के इन अवशेषों की उपस्थिति क्षेत्र में दीर्घकालिक शांति और सांस्कृतिक विकास के काल को भलीभांति प्रमाणित करती है।

70. (B) गुर्जर-प्रतिहार
कच्छपघात राजवंश ने 10वीं शताब्दी के दौरान ग्वालियर और नरवर जैसे क्षेत्रों में अपनी सत्ता स्थापित की थी। प्रारंभ में वे गुर्जर-प्रतिहार सम्राटों के सामंत के रूप में कार्य करते थे। प्रतिहारों की शक्ति कम होने के बाद उन्होंने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। उन्होंने ग्वालियर में 'सास-बहू मंदिर' जैसी अद्भुत संरचनाओं का निर्माण कराया, जो उनके कला प्रेम और तत्कालीन राजनैतिक गौरव को प्रदर्शित करते हैं।

71. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
मध्य प्रदेश की रियासतों के सत्ता केंद्र उनकी पहचान रहे हैं। गोंडवाना की कमान रानी दुर्गावती ने संभाली थी। सिंधिया वंश को महादजी सिंधिया ने अखिल भारतीय शक्ति बनाया। होल्कर राज्य में अहिल्याबाई ने जनहित के कार्य किए। भोपाल रियासत का विकास शाहजहां बेगम के नेतृत्व में हुआ जिन्होंने शिक्षा और वास्तुकला को प्रोत्साहन दिया। ये सभी राज्य की अमूल्य और गौरवशाली ऐतिहासिक विरासत हैं।

72. (A) औरंगजेब के अधीन मुगल साम्राज्य
महाराजा छत्रसाल ने बुंदेलखंड की स्वतंत्रता के लिए औरंगजेब के नेतृत्व वाले मुगल साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष किया। शिवाजी महाराज से प्रेरित होकर उन्होंने अपनी सेना संगठित की और छापामार युद्ध से मुगलों को पराजित किया। उन्होंने पन्ना को राजधानी बनाया और स्वतंत्र बुंदेला राज्य स्थापित किया। छत्रसाल को 'बुंदेलखंड केसरी' कहा जाता है। उनका जीवन साहस और विदेशी शासन के विरुद्ध प्रतिरोध की प्रेरणादायक कहानी है।

73. (C) सविनय अवज्ञा आंदोलन
छतरपुर जिले में 14 जनवरी 1931 को हुआ 'चरण पादुका नरसंहार' स्वतंत्रता संग्राम की दुखद घटना है। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान पुलिस ने शांतिपूर्ण सभा पर गोलियां चलाईं, जिसमें कई देशभक्त शहीद हुए। इसकी वीभत्सता के कारण इसे 'मध्य प्रदेश का जलियांवाला बाग' कहा जाता है। यह घटना विदेशी शासन की बर्बरता और स्थानीय जनता के भीतर उमड़ते भारी आक्रोश का एक जीवंत प्रमाण है।

74. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भीमाजी नायक 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के विख्यात क्रांतिकारी थे, जिन्होंने निमाड़ क्षेत्र में ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। वे भौगोलिक परिस्थितियों से परिचित थे, जिसका लाभ उठाकर उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध छापामार युद्ध छेड़ा। उनके नेतृत्व में भील योद्धाओं ने ब्रिटिश संचार व्यवस्था को बाधित किया। उनके अदम्य साहस के कारण उन्हें अंग्रेजों के लिए एक बड़ी चुनौती और सिरदर्द माना जाता था।

75. (D) मांडू
मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित मांडू अपनी अद्वितीय स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ स्थित 'जहाज महल' दो तालाबों के बीच बना है, जो अत्यंत सुंदर है। इसी प्रकार 'हिंडोला महल' अपनी झुकी हुई दीवारों के कारण अपनी अलग पहचान रखता है। ये इमारतें मालवा सल्तनत के सुल्तानों के कला प्रेम का प्रमाण हैं। मांडू के ये स्मारक आज भी मध्यकालीन भारतीय इतिहास का गौरव हैं।

76. (B) पुरापाषाण और नवपाषाण काल के बीच का संक्रमण काल
मध्यपाषाण काल मानव इतिहास का वह चरण है जो पुरापाषाण और नवपाषाण युग के बीच सेतु का कार्य करता है। इस काल में जलवायु परिवर्तन के कारण मानव ने लघु पाषाण उपकरणों का निर्माण शुरू किया। यह वह समय था जब मानव ने शिकार के साथ प्रारंभिक पशुपालन की दिशा में कदम बढ़ाए। आदमगढ़ जैसे स्थलों से प्राप्त अवशेष इस संक्रमणकालीन विकास को समझने का आधार प्रदान करते हैं।

77. (A) केवल 1 और 2
मध्य प्रदेश की शैल कला के रंगों और विषयों का विकास समय के साथ बदला। प्राचीन चित्रों में गहरे लाल और हरे रंगों का प्रयोग किया गया है। बाद के चित्रों में सफेद और पीले रंगों की प्रधानता देखी जाती है। यह कहना गलत है कि पालतू जानवरों का चित्रण नहीं है, क्योंकि मध्यपाषाण और ताम्रपाषाण काल के चित्रों में पालतू पशुओं का स्पष्ट चित्रण प्रचुर मात्रा में मिलता है।

78. (D) वीरसेन शाबा का उदयगिरि गुफा शिलालेख
उदयगिरि की गुफाओं में स्थित वीरसेन शाबा का शिलालेख गुप्त कालीन इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है। वीरसेन सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय का सचिव था, जिसने मालवा के सैन्य अभियान का उल्लेख किया है। यह शिलालेख गुप्त साम्राज्य के विस्तार की पुष्टि करता है और सम्राट की व्यक्तिगत उपस्थिति पर

56. (A) ब्राह्मी
बेसनगर में स्थित गरुड़ स्तंभ का शिलालेख प्राचीन 'ब्राह्मी' लिपि में उत्कीर्ण है, जो उस काल की प्रमुख भारतीय लिपि थी। यह शिलालेख प्राकृत प्रभावित संस्कृत में लिखा गया है। ब्राह्मी लिपि के प्रयोग से सिद्ध होता है कि यह स्तंभ भारतीय संचार व्यवस्था का हिस्सा था। इसके माध्यम से यूनानी राजदूत हेलियोडोरस ने अपनी धार्मिक आस्था सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित की थी, जो भारतीय लिपियों की व्यापकता दर्शाती है।

57. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
चंदेल राजवंश अपनी अद्वितीय स्थापत्य कला और खजुराहो के मंदिरों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इन मंदिरों का निर्माण 9वीं से 11वीं शताब्दी के बीच हुआ था। हालाँकि, यह कहना गलत होगा कि इनका निर्माण रक्षात्मक किलों के रूप में हुआ था। ये मुख्य रूप से धार्मिक उपासना और सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक थे। चंदेलों ने सुरक्षा के लिए कालिंजर और अजयगढ़ जैसे शक्तिशाली किलों का अलग से निर्माण किया था।

58. (A) वैष्णववाद और शैववाद
उदयगिरि की गुफाएं गुप्त कालीन धार्मिक सहिष्णुता और कला के समन्वय का अनूठा उदाहरण हैं। यहाँ के शिलालेख और मूर्तियां मुख्य रूप से हिंदू धर्म की वैष्णव और शैव परंपराओं से संबंधित हैं। वराह अवतार की विशाल प्रतिमा धर्म की रक्षा का प्रतीक है। अन्य गुफाओं में शिव और शक्ति से जुड़ी कलाकृतियां भी मिलती हैं। ये शिलालेख गुप्त सम्राटों के व्यक्तिगत धार्मिक रुझान और उनके संरक्षण को दर्शाते हैं।

59. (D) कलचुरी
कलचुरी राजवंश मध्य भारत के इतिहास में एक अत्यंत प्रभावशाली शक्ति रही है। इस वंश ने त्रिपुरी को अपनी राजधानी बनाया, जो वर्तमान जबलपुर के निकट है। उन्होंने सुव्यवस्थित प्रशासनिक ढांचा विकसित किया और 'कलचुरी संवत' का प्रचलन किया। कला के प्रति उनके प्रेम के साक्ष्य अमरकंटक और भेड़ाघाट के मंदिरों में दिखाई देते हैं। वे प्रतिहारों और परमारों के साथ निरंतर सत्ता संघर्ष में संलग्न रहे थे।

60. (D) 1, 2 और 3
परमार वंश मध्यकालीन भारत के समृद्ध राजवंशों में से एक था। इसकी स्थापना उपेंद्र ने की थी और उन्होंने धार को राजधानी बनाया। इस वंश के प्रसिद्ध शासक राजा भोज थे, जिन्होंने साम्राज्य विस्तार के साथ ज्ञान की हर शाखा पर ग्रंथों की रचना की। उनकी विद्वता के कारण उन्हें 'कविराज' की उपाधि मिली। धार की सांस्कृतिक उन्नति उनकी स्थायी विरासत के रूप में आज भी जीवित है।

61. (C) नाग वंश - केवल मालवा
नाग वंश का शासन केवल मालवा तक सीमित नहीं था, बल्कि उनके केंद्र पद्मावती, विदिशा और मथुरा तक फैले थे। इसके विपरीत औलीकर वंश का केंद्र मंदसौर में था और उच्चकल्प वंश बघेलखंड में सक्रिय था। नागों के विस्तृत प्रभाव क्षेत्र के कारण ही उन्हें गुप्त साम्राज्य के उदय के समय एक बड़ी चुनौती के रूप में देखा गया था। यह ऐतिहासिक तथ्य उनकी राजनैतिक शक्ति को प्रमाणित करता है।

62. (D) महेश्वर
अहिल्याबाई होल्कर ने प्रशासनिक कारणों से अपनी राजधानी इंदौर से महेश्वर स्थानांतरित की थी। नर्मदा नदी के तट पर स्थित महेश्वर को उन्होंने सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र के रूप में विकसित किया। यहाँ उन्होंने भव्य घाटों और मंदिरों का निर्माण कराया। उनके शासनकाल में महेश्वरी साड़ियों को विशेष प्रोत्साहन मिला, जो आज विश्वप्रसिद्ध हैं। महेश्वर उनके आध्यात्मिक और सेवाभावी व्यक्तित्व का जीवंत दर्पण बन गया है।

63. (A) सिंधिया और होल्कर
19वीं शताब्दी के प्रारंभ में ग्वालियर और मंदसौर की संधियों ने मध्य भारत का भविष्य ब्रिटिश पक्ष में मोड़ दिया। 1817 की ग्वालियर की संधि से सिंधिया शासकों ने अंग्रेजों की सर्वोच्चता स्वीकार की। 1818 की मंदसौर की संधि ने होल्कर राज्य की स्वतंत्रता को सीमित कर दिया। इन संधियों के परिणामस्वरूप मराठा रियासतों की स्वायत्तता समाप्त हो गई और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव पूर्णतः स्थापित हो गया।

64. (B) चौरी-चौरा कांड
चौरी-चौरा की घटना उत्तर प्रदेश में हुई थी, जिसका मध्य प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र से सीधा संबंध नहीं था। हालाँकि, इस कारण असहयोग आंदोलन वापस लिया गया, जिसका प्रभाव यहाँ भी पड़ा। इसके विपरीत झंडा सत्याग्रह और जंगल सत्याग्रह जैसी घटनाओं में मध्य प्रदेश के नागरिकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था। इन आंदोलनों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध स्थानीय जनता की दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रभावी प्रदर्शन किया था।

65. (B) महाकौशल (गोंडवाना)
1857 के संग्राम में महाकौशल क्षेत्र में विद्रोह का मुख्य कारण राजा शंकर शाह और उनके पुत्र का बलिदान था। अंग्रेजों ने उन्हें तोप से उड़ा दिया, जिससे जनता में भारी आक्रोश फैला। इस घटना ने गोंडवाना की जनता और स्थानीय सैनिकों को ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष के लिए प्रेरित किया। यह आदिवासी गौरव और मातृभूमि के प्रति उनके असीम समर्पण की एक अत्यंत प्रेरक गाथा है।

66. (A) सती
सागर जिले में स्थित एरण का स्थल भारतीय इतिहास में सती प्रथा के प्रथम लिखित साक्ष्य के लिए जाना जाता है। यहाँ प्राप्त 510 ईस्वी के शिलालेख में गोपराज की युद्ध में मृत्यु और उनकी पत्नी के सती होने का उल्लेख है। यह अभिलेख तत्कालीन समाज की कठोर सामाजिक परंपराओं के दस्तावेजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एरण अपनी गुप्त कालीन मूर्तियों और सिक्कों के लिए भी प्रसिद्ध है।

67. (C) मृदभाण्ड और तांबे के उपयोग वाले कृषक समुदाय
कायथा और मालवा संस्कृतियाँ ताम्रपाषाण कालीन ग्रामीण संस्कृतियाँ थीं, जो कृषि और पशुपालन पर आधारित थीं। यहाँ

में सम्राट अकबर के नवरत्नों में शामिल हुए। यह तथ्य ग्वालियर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और भारतीय शास्त्रीय संगीत में इसके ऐतिहासिक योगदान को प्रमाणित करता है।

90. (A) 1949
भारत की स्वतंत्रता के पश्चात भोपाल रियासत का विलय एक जटिल प्रक्रिया थी। नवाब हमीदुल्ला खान प्रारंभ में स्वतंत्र सत्ता बनाए रखना चाहते थे, जिसके कारण स्थानीय जनता ने तीव्र आंदोलन किया। जनमत के दबाव और भारत सरकार के कूटनीतिक प्रयासों से नवाब ने अंततः 1 जून 1949 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस प्रकार भोपाल औपचारिक रूप से भारत का अभिन्न अंग बना और एकीकरण पूर्ण हुआ।

91. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 'जंगल सत्याग्रह' प्रतिरोध का एक प्रभावशाली रूप था। यह ब्रिटिश वन कानूनों के विरुद्ध आदिवासियों का सामूहिक आक्रोश था, जिन्होंने उनके पारंपरिक अधिकारों को सीमित किया था। जनजातीय समुदायों ने घास काटकर प्रतीकात्मक रूप से औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती दी। इस आंदोलन ने स्वतंत्रता संग्राम को समावेशी चरित्र प्रदान किया और राष्ट्रीय आंदोलन को दूरस्थ ग्रामीण अंचलों तक पहुँचाने का कार्य किया।

92. (B) बैतूल में घोड़ा डोंगरी जंगल सत्याग्रह
गुंजन सिंह कोरकू एक वीर स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने बैतूल जिले में 'घोड़ा डोंगरी' जंगल सत्याग्रह का नेतृत्व किया था। उन्होंने हजारों आदिवासियों को संगठित कर ब्रिटिश वन कानूनों के विरुद्ध आवाज बुलंद की। उनका यह आंदोलन इतना प्रभावी था कि अंग्रेजों को इसे दबाने के लिए भारी बल का प्रयोग करना पड़ा। यह संघर्ष जनजातीय समाज की सक्रिय और निर्णायक भूमिका का प्रेरणास्पद उदाहरण है।

93. (C) पशुपालन
आदमगढ़ शैलाश्रय पुरातत्वविदों के लिए अनमोल स्थल है क्योंकि यहाँ से पशुपालन के सबसे प्रारंभिक साक्ष्य मिले हैं। खुदाई के दौरान पालतू मवेशियों की हड्डियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो मानव जीवनशैली में आए क्रांतिकारी बदलाव को दर्शाते हैं। यह प्रमाण है कि आदिमानव ने केवल प्रकृति पर निर्भर रहने के बजाय पशुओं को वश में करना सीख लिया था, जो सभ्यता के विकास का मील का पत्थर है।

94. (D) बावनगजा
बड़वानी जिले में स्थित 'बावनगजा' एक प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल है। यहाँ पर्वत काटकर बनाई गई भगवान आदिनाथ की विशाल प्रतिमा स्थित है जिसकी ऊँचाई 84 फीट है। 15वीं शताब्दी की यह कलाकृति स्थापत्य और मूर्तिकला का अद्भुत उदाहरण है। इस स्थल का धार्मिक महत्व इतना अधिक है कि देश भर से श्रद्धालु यहाँ आते हैं। यह प्रतिमा मध्यकालीन शिल्पकारों के असाधारण कौशल का जीवंत प्रमाण है।

95. (A) कृषि और पशुपालन की शुरुआत
मध्य प्रदेश में नवपाषाण काल का आगमन सभ्यता में महत्वपूर्ण परिवर्तन लेकर आया। इस काल की पहचान आखेटक जीवन से हटकर कृषि और स्थायी पशुपालन की ओर संक्रमण है। मानव ने मिट्टी के बर्तनों का निर्माण और उन्नत पत्थर के उपकरणों का उपयोग शुरु किया। एरण जैसे स्थलों से प्राप्त अनाज के अवशेष इस काल की उन्नत कृषि पद्धतियों और व्यवस्थित जीवनशैली को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं।

96. (D) इनमें से कोई नहीं
मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक अभिलेखों के संबंध में दिए गए सभी तथ्य सत्य हैं। गुर्जरा शिलालेख में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। बेसनगर स्तंभ शिलालेख शुंग काल की धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है। मंदसौर शिलालेख कुमारगुप्त प्रथम के समय की सामाजिक व्यवस्था और बुनकरों के आर्थिक योगदान का विवरण देता है। अतः इनमें से कोई भी कथन गलत नहीं है और सभी ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित हैं।

97. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
मध्य प्रदेश में शासन करने वाले राजवंशों और उनके शासकों का गौरवशाली इतिहास रहा है। औलीकर वंश के राजा यशोधर्मन ने विदेशी हूणों को पराजित किया। परिव्राजक राजाओं में हस्तिन एक महत्वपूर्ण नाम है। उच्चकल्प वंश के राजा जयनाथ ने प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी दी। नाग वंश के अंतिम शासक गणपतिनाग थे जिन्हें समुद्रगुप्त ने पराजित किया था। ये सभी शासक अपने काल में राजनीति के प्रमुख केंद्र थे।

98. (A) मालवा सल्तनत
मांडू 15वीं शताब्दी के दौरान एक शक्तिशाली और स्वतंत्र मालवा सल्तनत की राजधानी थी। इसे 'शादियाबाद' के रूप में विकसित किया गया था। यहाँ के सुल्तानों ने भव्य महलों और मस्जिदों का निर्माण कराया जो अफगान वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूने हैं। मांडू न केवल सामरिक सैन्य केंद्र था बल्कि यह कला और संस्कृति का समृद्ध संगम स्थल रहा है, जिसकी यादें यहाँ के खंडहरों में आज भी सुरक्षित हैं।

99. (C) रानी लक्ष्मीबाई
रानी अवंतीबाई लोधी के अदम्य साहस और बलिदान की तुलना अक्सर झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई से की जाती है। दोनों ही रानियों ने अपने राज्य के उत्तराधिकार और विदेशी शासन के विरुद्ध शस्त्र उठाए थे। 1857 के संग्राम में रानी अवंतीबाई ने बहादुरी से सामना किया और स्वाभिमान की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर कर दिए। उनकी वीरता की गाथा आज भी मध्य प्रदेश के लोक गीतों में सम्मान के साथ गाई जाती है।

100. (D) मध्य प्रांत और बरार, मध्य भारत, विंध्य प्रदेश और भोपाल राज्य
1 नवंबर 1956 को आधुनिक मध्य प्रदेश का गठन कई राजनैतिक इकाइयों के एकीकरण से हुआ था। इसमें मध्य प्रांत और बरार, मध्य भारत, विंध्य प्रदेश और भोपाल की रियासत को सम्मिलित किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक कुशलता और सांस्कृतिक समानता को बढ़ावा देना था। इस

अलख जगाई। यद्यपि उन्हें बंदी बनाकर तोप से उड़ा दिया गया, लेकिन उनकी रणनीतिक सोच ने भविष्य के संघर्षों के लिए एक मजबूत वैचारिक नींव रखी थी।

187. (D) गुप्त काल
देवगढ़ का 'दशावतार मंदिर' गुप्त कालीन स्थापत्य और मूर्तिकला का एक अद्भुत उदाहरण है। पाँचवीं शताब्दी में निर्मित यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है और अपनी पंचायतन शैली के लिए प्रसिद्ध है। इसकी दीवारों पर उकेरी गई नक्काशी गुप्त काल की कलात्मक सूक्ष्मता और धार्मिक वैभव को दर्शाती है। यह मंदिर उस युग की सांस्कृतिक समृद्धि और आध्यात्मिक चेतना का जीवंत ऐतिहासिक दस्तावेज है, जो वास्तुकला की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

188. (B) ओंकारेश्वर
खंडवा जिले में नर्मदा के पावन तट पर स्थित ओंकारेश्वर एक अत्यंत प्रसिद्ध धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल है। यहाँ भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक स्थित है। यह द्वीप ॐ के आकार का है, जिसके कारण इसका अत्यधिक आध्यात्मिक महत्व है। प्राचीन काल से ही यह स्थान शिक्षा और धार्मिक साधना का प्रमुख केंद्र रहा है। यहाँ के प्राचीन मंदिर वास्तुकला की दृष्टि से समृद्ध हैं, जो मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण स्तंभ हैं।

189. (C) उपकरणों की पॉलिश और फिनिशिंग
पुरापाषाण और नवपाषाण काल के बीच प्रमुख तकनीकी अंतर पत्थर के उपकरणों के निर्माण की तकनीक में निहित है। जहाँ पुरापाषाण काल में मानव खुरदरे पत्थरों के औजारों का उपयोग करता था, वहीं नवपाषाण काल में उसने उपकरणों को पॉलिश के माध्यम से चिकना और प्रभावी बनाना सीख लिया था। ये नए उपकरण कृषि कार्यों के लिए अधिक उपयोगी थे। यह बदलाव मानव की बुद्धिमत्ता के विकास और आखेटक से उत्पादक बनने की दिशा में बड़ा कदम था।

190. (D) जातुई शक्ति में वृद्धि का विश्वास
प्रागैतिहासिक शैलाश्रयों में चित्रों का बार-बार अध्यारोपण (सुपरइम्पोजिशन) करने के पीछे पुरातत्वविदों का मानना है कि ये स्थान आदिमानव के लिए जादुई महत्व रखते थे। ऐसा माना जाता है कि उसी पवित्र स्थान पर पुनः चित्र बनाने से उनकी शिकार में सफलता की संभावना बढ़ती थी। यह प्रक्रिया उनके गहरे धार्मिक विश्वासों और प्रकृति को वश में करने की इच्छा का परिणाम थी, जो प्राचीन मानव के मनोवैज्ञानिक विकास को समझने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करती है।

191. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
गुप्त कालीन सांची शिलालेख का महत्व सांची के बौद्ध विहारों को दिए गए उदार दानों के विवरण में निहित है। इसमें प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा धार्मिक संस्थाओं को किए गए भौतिक सहयोग का उल्लेख मिलता है, जो तत्कालीन समाज की परोपकारी प्रवृत्तियों को दर्शाता है। यह कहना गलत है कि इसमें शकों पर विजय का विवरण है। सांची का यह अभिलेख गुप्तों की धार्मिक सहिष्णुता और बौद्ध केंद्रों के प्रति उनके सम्मान का एक प्रामाणिक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

192. (B) परिव्राजक वंश
'परिव्राजक' राजवंश ने 5वीं शताब्दी के दौरान मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड और आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया था। राजा हस्तिन के ताम्रपत्रों से पता चलता है कि वे गुप्त साम्राज्य के अत्यंत निष्ठावान सामंत थे और उनके शासन में गुप्त संवत का प्रयोग होता था। इस राजवंश ने विंध्य क्षेत्र के दुर्गम अंचलों में सुव्यवस्थित प्रशासनिक व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जो प्राचीन क्षेत्रीय इतिहास के अध्ययन के लिए अत्यंत मूल्यवान और प्रामाणिक है।

193. (B) उज्जैन
मालवा के परमार राजवंश ने अपनी राजनैतिक शक्ति का उदय प्राचीन शहर 'उज्जैन' से किया था। प्रारंभ में उज्जैन ही उनकी शक्ति का मुख्य केंद्र था, जहाँ से उपेंद्र जैसे शासकों ने अपने साम्राज्य की नींव रखी। बाद में सामरिक सुरक्षा के लिए राजा भोज के शासनकाल में राजधानी को उज्जैन से 'धार' स्थानांतरित कर दिया गया। उज्जैन परमारों के प्रारंभिक संघर्ष और उनके साम्राज्य के क्रमिक विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरवशाली ऐतिहासिक गवाह रहा है।

194. (A) उन्हें कभी नहीं जीता गया।
चंदेल राजवंश के बारे में यह कहना गलत है कि उन्हें कभी नहीं जीता गया। वे लंबे समय तक अपराजेय रहे, लेकिन अंततः उन्हें दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों की सैन्य शक्ति का सामना करना पड़ा और उनके साम्राज्य का पतन हुआ। खजुराहो के मंदिरों का निर्माण और जेजाकभुक्ति के नाम से उनके राज्य की पहचान जैसे तथ्य पूरी तरह सत्य हैं। अंतिम शक्तिशाली राजा की पृथ्वीराज चौहान से हार भी उनके इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ मानी जाती है।

195. (A) 2, 3, 1, 4
मध्य प्रदेश की रियासतों का इतिहास उनके उत्थान की कहानी है। सबसे पहले 16वीं शताब्दी में रानी दुर्गावती ने गोंडवाना पर शासन किया। 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में दोस्त मोहम्मद खान ने भोपाल राज्य की नींव रखी। 1730 के दशक में मल्हार राव होल्कर ने इंदौर में सत्ता सुदृढ़ की। अंत में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महादजी सिंधिया ने अखिल भारतीय शक्ति के रूप में शासन किया। यह कालक्रम राज्य की राजनैतिक विविधता और शक्तियों के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

196. (D) जबलपुर
1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जबलपुर राष्ट्रवादी गतिविधियों का केंद्र था। यहाँ के छात्रों ने विदेशी शासन के विरुद्ध जुलूस निकाला और नारे लगाए। ब्रिटिश पुलिस ने निहत्थे छात्रों पर अंधाधुंध गोलीबारी की, जिससे पूरे क्षेत्र में आक्रोश फैल गया। जबलपुर की यह घटना स्वतंत्रता संग्राम में युवा शक्ति के अदम्य साहस और उनके बलिदान की मर्मस्पर्शी गाथा है, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई ऊर्जा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

करते थे। इन दोनों नायकों ने विषम परिस्थितियों में भी अपनी रणनीतिक सूझबूझ से अंग्रेजों को परेशान रखा और भारतीय प्रतिरोध को अदम्य साहस प्रदान किया।

112. (B) अजंता
धार जिले में स्थित बाघ की गुफाएं अपने उत्कृष्ट भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं, जिनकी शैली की तुलना महाराष्ट्र की 'अजंता' गुफाओं से की जाती है। पाँचवीं शताब्दी के ये चित्र गुप्त कालीन कला के जीवंत नमूने हैं। इनमें बुद्ध के जीवन और तत्कालीन सामाजिक परिवेश का विस्तृत चित्रण मिलता है। बाघ की गुफाएं अपने कलात्मक सौंदर्य और स्थापत्य कौशल के कारण भारतीय चित्रकला के इतिहास में अनमोल रत्न हैं।

113. (B) नर्मदा घाटी
नर्मदा घाटी मध्य प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक क्षेत्र है जहाँ पुरापाषाण काल के उपकरणों का विशाल भंडार पाया गया है। यहाँ बड़ी संख्या में कुल्हाड़ियाँ और पत्थर के औजार प्राप्त हुए हैं। हथनोरा में मिला 'नर्मदा मानव' का जीवाश्म इस क्षेत्र की प्राचीनता को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध करता है। यह घाटी भारतीय उपमहाद्वीप में आदिमानव के आरंभिक इतिहास को समझने की मुख्य आधारशिला मानी जाती है।

114. (A) वैष्णव शासकों द्वारा बौद्ध स्थलों का संरक्षण
गुप्त काल का सांची शिलालेख ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह गुप्त सम्राटों की धार्मिक उदारता को प्रमाणित करता है। यद्यपि वे स्वयं वैष्णव धर्म के अनुयायी थे, लेकिन उन्होंने सांची जैसे बौद्ध केंद्रों को सुरक्षा और दान प्रदान किया। शिलालेख में उल्लेखित दान यह दर्शाता है कि उस काल में विभिन्न धर्मों के अनुयायी सद्भाव के साथ रहते थे, जो भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहलाता है।

115. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
परिव्राजक और उच्चकल्प राजवंश मध्य प्रदेश के प्राचीन राजनैतिक इतिहास में महत्वपूर्ण हैं। परिव्राजक राजाओं ने बुंदेलखंड में सत्ता स्थापित की थी, जबकि उच्चकल्प वंश का प्रभुत्व बघेलखंड में था। इन राजवंशों के अभिलेखों में गुप्त संवत का प्रयोग सिद्ध करता है कि वे गुप्त सम्राटों के सामंत थे। इन छोटे राज्यों ने दुर्गम विंध्य क्षेत्रों में गुप्तों की प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारु रूप से लागू करने में सहयोग दिया था।

116. (B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या है।
परमार राजा भोज अपनी विद्वता के कारण इतिहास में 'कविराज' के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने कविता, व्याकरण, आयुर्वेद और दर्शन जैसे विविध विषयों पर महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की थी। हालाँकि 'समरांगण सूत्रधार' स्थापत्य पर उनकी प्रसिद्ध कृति है, लेकिन उन्हें 'कविराज' की उपाधि उनकी समग्र साहित्यिक उपलब्धियों के कारण दी गई थी। उनकी कृतियाँ आज भी विद्वानों के लिए प्रेरणा का विषय हैं, जो उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को दर्शाती हैं।

117. (C) राणोजी सिंधिया
सिंधिया राजवंश की नींव राणोजी सिंधिया ने रखी थी, जो पेशवा बाजीराव प्रथम के विश्वसनीय सेनापति थे। उन्होंने मालवा में मराठा शक्ति के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पेशवा ने उनकी सेवाओं से प्रभावित होकर उन्हें उज्जैन का प्रभार सौंपा था। राणोजी ने अपनी सैन्य कुशलता से सिंधिया राज्य को सुदृढ़ आधार प्रदान किया, जिसे बाद में महादजी सिंधिया ने एक अखिल भारतीय शक्ति के रूप में विकसित कर गौरव प्रदान किया।

118. (B) केवल 1 और 3
1842 का बुंदेला विद्रोह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध महत्वपूर्ण सशस्त्र प्रतिरोध था। यह अंग्रेजों द्वारा थोपी गई अन्यायपूर्ण राजस्व नीतियों का परिणाम था। मधुकर शाह जैसे नेताओं ने वीरतापूर्वक संघर्ष किया। यद्यपि विद्रोह को अंग्रेजों ने अपनी सैन्य शक्ति से दबा दिया, लेकिन इसने भविष्य के संघर्षों के लिए जनचेतना का मार्ग प्रशस्त किया। क्रांतिकारियों का साहस आज भी स्थानीय लोकगाथाओं में जीवित है और प्रेरणा प्रदान करता है।

119. (D) ग्वालियर
1857 में नीमच से क्रांति की शुरुआत के बाद ग्वालियर इसका अगला सबसे महत्वपूर्ण केंद्र बना। ग्वालियर की भौगोलिक स्थिति और विशाल सैन्य बल के कारण यह विद्रोहियों के लिए रणनीतिक रूप से अत्यंत आवश्यक था। यद्यपि वहाँ के शासक अंग्रेजों के वफादार रहे, लेकिन स्थानीय सैनिकों ने जन समर्थन के साथ विद्रोह कर दिया। ग्वालियर की इस हलचल ने पूरे उत्तर भारत में ब्रिटिश सत्ता को गंभीर चुनौती दी थी।

120. (A) खाज्या नायक
आदिवासी नायक खाज्या नायक ने 1857 के विद्रोह में भीमाजी नायक के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया। दोनों ने भील योद्धाओं का संगठन तैयार किया और सतपुड़ा की पहाड़ियों को अपना रक्षा कवच बनाया। उन्होंने ब्रिटिश खजानों को लूटा और विदेशी प्रशासनिक तंत्र को प्रभावित किया। खाज्या नायक का अदम्य साहस निमाड़ क्षेत्र में जनजातीय प्रतिरोध की गौरवशाली गाथा है, जिसने स्थानीय जनता को निरंतर प्रेरित किया।

121. (C) अण्ड
सांची स्तूप की मुख्य वास्तुशिल्प विशेषता उसकी अर्धवृत्ताकार संरचना है, जिसे 'अण्ड' कहा जाता है। यह संरचना ब्रह्मांड के प्रतीक के रूप में मानी जाती है और इसके भीतर ही पवित्र अवशेष सुरक्षित रखे जाते हैं। अण्ड के ऊपर 'हर्मिका' और 'छत्र' स्थित होते हैं। यह संपूर्ण संरचना बौद्ध धर्म की आध्यात्मिक गहराई और सादगी का संगम है। सांची स्तूप का यह भाग मौर्य कालीन इंजीनियरिंग कौशल का अद्भुत नमूना है।

122. (A) मृदभाण्ड और पॉलिश किए हुए पाषाण उपकरणों का उदय
मध्य प्रदेश में मध्यपाषाण काल से नवपाषाण काल की ओर संक्रमण तकनीकी बदलावों से स्पष्ट होता है। इस काल में मानव ने खेती सीखी और पाषाण उपकरणों को पॉलिश के

स्थलों की भौगोलिक स्थिति ने ही प्राचीन मानव को विकसित होने का अवसर दिया।

166. (B) यह केवल शहरी क्षेत्रों में पाया गया है
मालवा मृदभाण्ड की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह मुख्य रूप से एक ताम्रपाषाण कालीन ग्रामीण संस्कृति की पहचान है, न कि केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित। ये मृदभाण्ड अपनी तकनीकी उत्कृष्टता और कलात्मक सुंदरता के लिए विख्यात हैं। यह मृदभाण्ड परंपरा तत्कालीन कृषक समुदायों की समृद्ध कलात्मक रुचि को दर्शाती है। कायथा और नवदाटोली जैसे ग्रामीण स्थलों से प्रचुर मात्रा में प्राप्त होना इस ऐतिहासिक तथ्य की पुष्टि करता है।

167. (D) दान का विवरण देने वाला प्रतिमा शिलालेख
सांची के ऐतिहासिक परिसर में कुषाण राजा वाशिष्क के शासनकाल का विश्वसनीय प्रमाण एक प्रतिमा शिलालेख से प्राप्त होता है। यह शिलालेख मुख्य रूप से कुषाण प्रशासन के दौरान सांची के बौद्ध विहारों को दिए गए दानों का आधिकारिक विवरण प्रदान करता है। इस साक्ष्य से इतिहासकारों को यह समझने में मदद मिली कि कुषाणों का राजनैतिक प्रभुत्व मध्य भारत के इस सांस्कृतिक केंद्र तक विस्तृत था, जो उनकी धार्मिक उदारता को दर्शाता है।

168. (A) 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में
टंट्या भील, जिन्हें 'इंडियन रॉबिन हुड' कहा जाता है, मुख्य रूप से 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सक्रिय थे। उन्होंने 1857 के विद्रोह से अपनी गतिविधियों को आरंभ किया था, लेकिन उनका सबसे प्रभावी संघर्ष 1870 के दशक में देखा गया। उन्होंने मालवा और निमाड़ क्षेत्र में ब्रिटिश प्रशासन को चुनौती दी और गरीबों का मसीहा बने। 1889 में उनकी शहादत तक वे अंग्रेजों के लिए बड़ी चुनौती बने रहे, जो ऐतिहासिक गौरव है।

169. (C) पद्मावती
ग्वालियर जिले के पास स्थित 'पवाया' की पहचान प्राचीन शहर 'पद्मावती' के रूप में की गई है। यह नगर नाग राजवंश की प्रमुख राजधानी और एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजनैतिक केंद्र था। भवभूति के साहित्य में पद्मावती के वैभव का विस्तार से वर्णन मिलता है। यहाँ से प्राप्त मूर्तियों और सिक्कों से स्पष्ट होता है कि यह प्राचीन भारत के उन प्रमुख नगरों में से एक था जो आर्थिक रूप से संपन्न और कलात्मक रूप से विकसित थे।

170. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
चंदेल शासक राजा विद्याधर को उनकी वीरता के लिए जाना जाता है क्योंकि वे एकमात्र भारतीय राजा थे जिन्होंने महमूद गजनवी का सफल प्रतिरोध किया था। उन्होंने उत्तर भारत के राज्यों को संगठित कर एक मजबूत राजनैतिक संघ बनाया ताकि विदेशी हमलों का सामूहिक मुकाबला किया जा सके। उनकी इस कूटनीति के कारण ही महमूद गजनवी कालिंजर के किले को जीतने में असफल रहा और उसे अंततः पीछे हटना पड़ा था।

171. (D) सहस्त्रबाहु मंदिर (सास-बहू मंदिर)
ग्वालियर किले के भीतर स्थित ऐतिहासिक 'सहस्त्रबाहु मंदिर' का निर्माण कच्छपघात राजवंश के राजा महिपाल ने 11वीं शताब्दी में कराया था। यह मंदिर अपनी बेजोड़ स्थापत्य कला और जटिल नक्काशी के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यद्यपि यह भगवान विष्णु को समर्पित है, लेकिन इसका शिल्प कौशल कच्छपघातों के वैभव का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करता है। यह मंदिर मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला की तकनीकी बारीकियों को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

172. (B) महादजी
महादजी सिंधिया ग्वालियर के सिंधिया राजवंश के प्रतापी शासक थे, न कि होल्कर वंश के। इसके विपरीत, मल्हार राव होल्कर ने होल्कर वंश की स्थापना की और अहिल्याबाई होल्कर ने इसे गौरव दिलाया। महादजी सिंधिया ने तो उत्तर भारत में मराठा शक्ति के पुनरुद्धार में सिंधिया राज्य का नेतृत्व किया था। यह स्पष्ट ऐतिहासिक अंतर मध्य प्रदेश के दो सबसे शक्तिशाली मराठा राजवंशों—सिंधिया और होल्कर—के बीच की विशिष्ट पहचान को भलीभांति दर्शाता है।

173. (C) चौरगढ़
रानी दुर्गावती के शासनकाल के दौरान 'चौरगढ़' एक महत्वपूर्ण राजनैतिक केंद्र और उनकी रणनीतिक राजधानी के रूप में विकसित हुआ था। यह विशाल किला नरसिंहपुर जिले में स्थित है और सामरिक दृष्टि से अत्यंत अभेद्य था। चौरगढ़ में ही साम्राज्य का खजाना और सैन्य संसाधन सुरक्षित रखे जाते थे। मुगलों के साथ हुए अंतिम संघर्ष के दौरान भी इस किले की भूमिका महत्वपूर्ण रही थी। यह रानी की प्रशासनिक सूझबूझ का मुख्य प्रतीक माना जाता है।

174. (D) शेख रमजान
1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मध्य प्रदेश के सागर क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व शेख रमजान ने किया था। वे ब्रिटिश भारतीय सेना के एक साहसी सिपाही थे जिन्होंने अपनी टुकड़ी के साथ मिलकर विद्रोह का बिगुल फूंका। उनके आह्वान पर सैनिकों ने ब्रिटिश अधिकारियों की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया और स्थानीय जनता को प्रेरित किया। उनके नेतृत्व में सागर क्षेत्र लंबे समय तक ब्रिटिश नियंत्रण से बाहर रहा था।

175. (A) नागपुर
1923 का झंडा सत्याग्रह, जिसकी शुरुआत जबलपुर से हुई थी, ब्रिटिश दमन के कारण जल्द ही 'नागपुर' में स्थानांतरित हो गया। नागपुर उस समय मध्य प्रांत की राजधानी था, इसलिए वहाँ ध्वज फहराने का राजनैतिक महत्व अधिक था। देश भर के सत्याग्रहियों ने नागपुर पहुँचकर गिरफ्तारी दी और सरदार पटेल के मार्गदर्शन में यह सत्याग्रह सफल रहा। नागपुर का यह मोर्चा भारतीय ध्वज को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में मान्यता दिलाने में निर्णायक साबित हुआ।

176. (B) निर्धनों की सहायता हेतु कर प्रणाली
टंट्या भील द्वारा अपनाई गई 'पगड़ी' एक स्वैच्छिक और सामाजिक कर प्रणाली थी जिसका उद्देश्य निर्धनों की आर्थिक

क्षेत्र में पाए गए हैं, जिनमें राजाओं द्वारा भूमि दान का विस्तृत विवरण मिलता है। इन अभिलेखों के माध्यम से वंश की वंशावली और तत्कालीन प्रशासनिक संरचना की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। ये ताम्रपत्र मध्य प्रदेश के क्षेत्रीय इतिहास के अत्यंत मूल्यवान और प्रामाणिक दस्तावेज हैं, जो ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत करते हैं।

134. (B) महमूद गजनवी
चंदेल राजवंश के वीर शासक राजा विद्याधर अपनी कूटनीतिक सूझबूझ के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने उत्तर भारत के हिंदू राजाओं का संघ बनाया ताकि तुर्क आक्रांता महमूद गजनवी के हमलों को रोका जा सके। विद्याधर एकमात्र ऐसे भारतीय राजा थे जिन्होंने महमूद गजनवी की सेना का सफलता से मुकाबला किया और उसे पीछे हटने पर विवश किया। उनके इस सफल प्रतिरोध ने चंदेलों की साख बढ़ाई और राजनैतिक स्वायत्तता की रक्षा की।

135. (A) 3, 4, 1, 2
मध्य प्रदेश के इतिहास में इन शासकों का उदय एक निश्चित कालक्रम में हुआ। यशोधर्मन ने 6वीं शताब्दी में ख्याति अर्जित की। 10वीं शताब्दी में चंदेल राजा धंग ने खजुराहो के मंदिरों का निर्माण किया। 11वीं शताब्दी में राजा भोज ने मालवा को कला का केंद्र बनाया। अंततः 15वीं शताब्दी में राजा मान सिंह तोमर ने ग्वालियर की सत्ता संभाली। यह कालक्रम राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक और राजनैतिक उत्थान को प्रदर्शित करता है।

136. (A) अकबर
1564 में जब मुगल सेना ने रानी दुर्गावती के विरुद्ध अभियान छेड़ा, तब दिल्ली के सिंहासन पर सम्राट अकबर आसीन था। अकबर की विस्तारवादी नीति के तहत मुगल सेनापति ने गढ़ा-मंडला पर हमला किया। रानी दुर्गावती ने मातृभूमि की रक्षा के लिए बहादुरी से युद्ध लड़ा, लेकिन परिस्थितियों के विपरीत होने पर उन्होंने मुगलों की अधीनता के बजाय वीरगति को चुना। यह युद्ध अकबर के साम्राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा का हिस्सा था।

137. (D) उपरोक्त सभी
1923 का झंडा सत्याग्रह जबलपुर के राष्ट्रवादियों की सामूहिक इच्छाशक्ति का परिणाम था। इसे सफल बनाने में सेठ गोविंद दास, पंडित रविशंकर शुक्ल और सुभद्रा कुमारी चौहान सभी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इन नेताओं के नेतृत्व में जबलपुर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया, जिसने पूरे देश को तिरंगे के सम्मान के लिए ब्रिटिश सत्ता से लोहा लेने की प्रेरणा और एक नई दिशा प्रदान की थी।

138. (A) 1923 का झंडा सत्याग्रह पूर्णतः विफल रहा।
यह कहना गलत है कि 1923 का झंडा सत्याग्रह विफल रहा, बल्कि यह राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी सफलता थी। जबलपुर से शुरु हुआ यह आंदोलन ब्रिटिश दमन के बावजूद सफल रहा और तिरंगे को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई। अन्य तथ्य जैसे नीमच से विद्रोह की शुरुआत और रानी अवंतीबाई का संघर्ष मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता इतिहास के सत्य अध्याय हैं जो सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

139. (D) मालवा और निमाड़
क्रांतिकारी टंट्या भील की विद्रोही गतिविधियाँ मुख्य रूप से मालवा और निमाड़ के घने जंगलों में केंद्रित थीं। वे इन क्षेत्रों की जटिल भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर अंग्रेजों के विरुद्ध छापामार युद्ध करते थे। खंडवा और खरगोन उनके कार्यक्षेत्र के प्रमुख केंद्र थे। टंट्या भील ने शोषित जनजातीय समाज को संगठित किया और ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। उन्हें 'निमाड़ का रॉबिन हुड' की उपाधि प्राप्त हुई थी।

140. (B) वी.एस. वाकणकर
भीमबेटका के ऐतिहासिक शैलाश्रयों की खोज का श्रेय प्रसिद्ध पुरातत्वविद् डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर को जाता है। उन्होंने 1957 में इन गुफाओं के महत्व को दुनिया के सामने रखा। उनकी इस खोज ने मानव सभ्यता के इतिहास में हजारों साल पुराने शैल चित्रों को उजागर किया, जो आदिमानव की कलात्मकता के प्रमाण हैं। उनके इस योगदान के कारण ही भीमबेटका को आज वैश्विक स्तर पर पुरातात्विक महत्व का स्थान प्राप्त है।

141. (C) एच.डी. सांकलिया
नवदाटोली पुरातात्विक स्थल का वैज्ञानिक उत्खनन प्रसिद्ध पुरातत्वविद् एच.डी. सांकलिया के नेतृत्व में किया गया था। इस खुदाई ने मध्य प्रदेश की ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति पर व्यापक प्रकाश डाला। यहाँ से अनाज और तांबे के उपकरणों के साक्ष्य मिले, जिससे तत्कालीन कृषि पद्धतियों को समझने में सहायता मिली। नवदाटोली का उत्खनन भारतीय पुरातत्व के इतिहास में मील का पत्थर है जिसने मध्य भारत की प्राचीनता को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित किया।

142. (D) इसमें उनकी उपाधि के साथ 'अशोक' नाम का उल्लेख है।
दतिया जिले में स्थित गुर्जरा शिलालेख का ऐतिहासिक महत्व अतुलनीय है क्योंकि यहाँ सम्राट की उपाधि 'देवानांपिय' के साथ उनका नाम 'अशोक' स्पष्ट रूप से उत्कीर्ण है। अधिकांश शिलालेखों में उन्हें केवल उपाधियों से संबोधित किया गया है, जिससे उनकी पहचान को लेकर संशय था। गुर्जरा शिलालेख की खोज ने इस संशय को समाप्त कर दिया और अशोक के शासनकाल एवं भौगोलिक प्रभाव को एक नया और अकाट्य आधार प्रदान किया।

143. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
बेसनगर में स्थित गरुड़ स्तंभ धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक है। इसकी स्थापना यूनानी राजदूत हेलियोडोरस द्वारा भगवान वासुदेव के सम्मान में की गई थी। शिलालेख में उसने स्वयं को 'भागवत' कहा है, जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि विदेशी नागरिक भी भारतीय अध्यात्म से प्रभावित थे। यह स्तंभ प्राचीन भारत के अन्य देशों के साथ प्रगाढ़ राजनैतिक और सांस्कृतिक संबंधों को भी दर्शाता है।

माध्यम से अधिक प्रभावी बनाया। मिट्टी के बर्तनों (मृदभाण्डों) का निर्माण इस काल की क्रांतिकारी उपलब्धि थी। एरण और जबलपुर से प्राप्त अवशेष मानव समाज के एक व्यवस्थित और उत्पादन आधारित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ते कदमों को बखूबी चित्रित करते हैं।

123. (D) सूर्य
वत्सभट्टि द्वारा रचित मंदसौर का शिलालेख भगवान सूर्य की महिमा के काव्य वर्णन के लिए प्रसिद्ध है। यह शिलालेख रेशम बुनकरों की एक श्रेणी द्वारा बनवाए गए भव्य सूर्य मंदिर की स्मृति में उत्कीर्ण किया गया था। इसमें सूर्य को जीवन का आधार बताया गया है। यह अभिलेख न केवल गुप्त काल की धार्मिक प्रवृत्तियों को दर्शाता है, बल्कि तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक संगठन और श्रेणियों की कार्यप्रणाली पर भी प्रकाश डालता है।

124. (B) पद्मावती (पवाया)
नाग राजवंश के शासन के कई महत्वपूर्ण केंद्र थे, जिनमें 'पद्मावती' (पवाया) उनकी सत्ता का अत्यंत प्रभावशाली केंद्र था। ऐतिहासिक प्रमाणों और सिक्कों से पता चलता है कि यहाँ के नाग राजाओं ने व्यापार और संस्कृति को काफी बढ़ावा दिया था। भवभूति के साहित्य में भी पद्मावती की समृद्धि का उल्लेख मिलता है, जो इस राजवंश की राजनैतिक और सांस्कृतिक महत्ता को पुष्ट करता है। यह स्थल प्राचीन व्यापारिक मार्ग पर स्थित था।

125. (C) मान मंदिर महल
ग्वालियर किले के भीतर राजा मान सिंह तोमर द्वारा निर्मित भव्य महल को 'मान मंदिर महल' कहा जाता है। 15वीं शताब्दी में निर्मित यह महल हिंदू स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसकी दीवारों पर सुंदर नक्काशी की गई है। इसके भीतर बने कक्ष तत्कालीन राजाओं की कलात्मक रुचि को दर्शाते हैं। इसके विपरीत, उन्होंने अपनी प्रिय रानी के लिए गूजरी महल बनवाया था। ये दोनों इमारतें तोमर वास्तुकला की प्रतीक हैं।

126. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख घटनाओं का स्थानों से गहरा संबंध है। 1923 का झंडा सत्याग्रह जबलपुर से प्रारंभ हुआ। छतरपुर का चरण पादुका स्थल उस भयावह नरसंहार का साक्षी है जिसने क्रांति को तीव्र किया। बैतूल के घोड़ाडोंगरी में आदिवासियों ने जंगल सत्याग्रह किया। इंदौर के महू में सआदत खान ने 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया। ये घटनाएँ राज्य में व्याप्त देशभक्ति की भावना को उजागर करती हैं।

127. (A) भाषाई आधार
1956 में मध्य प्रदेश का पुनर्गठन मुख्य रूप से भाषाई समानता और प्रशासनिक एकरूपता के आधार पर किया गया था। फ़ज़ल अली आयोग की सिफारिशों के अनुसार, हिंदी भाषी क्षेत्रों को एकीकृत कर इस विशाल राज्य का निर्माण हुआ। इसके तहत मध्य प्रांत, मध्य भारत और विंध्य प्रदेश को मिलाकर वर्तमान स्वरुप तैयार हुआ। भाषाई आधार ने विविध भौगोलिक अंचलों को एक सूत्र में पिरोकर राज्य को राजनैतिक अखंडता प्रदान की।

128. (B) तोप से उड़ा दिया गया
1857 के विद्रोह के दौरान जबलपुर के राजा शंकर शाह और उनके पुत्र के प्रति ब्रिटिश शासन का व्यवहार अत्यंत क्रूर था। अंग्रेजों ने उनके विद्रोही विचारों से डरकर उन्हें बंदी बना लिया। 18 सितंबर 1857 को उन्हें जनमानस में भय पैदा करने के लिए सार्वजनिक रुप से तोप से उड़ा दिया गया। इस घटना ने जनता को डराने के बजाय उनके भीतर ब्रिटिश सत्ता के प्रति भारी आक्रोश और स्वतंत्रता की भावना भर दी।

129. (B) सतना
भरहुत के प्राचीन बौद्ध स्तूप मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित थे, जिनका निर्माण मौर्य सम्राट अशोक के समय शुरु हुआ था। यद्यपि अब इसके अधिकांश अवशेष नष्ट हो चुके हैं, लेकिन इसकी नक्काशी तत्कालीन समाज और जातक कथाओं को समझने का महत्वपूर्ण स्रोत है। भरहुत की कला लोक जीवन को समर्पित प्रतीत होती है और यह प्राचीन भारत में बौद्ध धर्म के व्यापक प्रचार-प्रसार की गवाही देने वाला प्रमुख स्थल है।

130. (A) उज्जैन
उज्जैन नगर क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है, जहाँ प्रत्येक 12 वर्ष में 'सिंहस्थ कुंभ' का भव्य आयोजन होता है। यह महापर्व तब मनाया जाता है जब बृहस्पति सिंह राशि में प्रवेश करता है। इसमें करोड़ों श्रद्धालु पवित्र स्नान के लिए यहाँ एकत्रित होते हैं। यह आयोजन उज्जैन की आध्यात्मिक महत्ता को पूरे विश्व में प्रदर्शित करता है। महाकालेश्वर की नगरी होने के कारण यह कुंभ मेला भारतीय सनातन परंपरा का संगम है।

131. (C) तांबे और पाषाण के एक साथ उपयोग का काल
'ताम्रपाषाण' शब्द का अर्थ वह कालखंड है जब मानव ने पत्थर के औजारों के साथ पहली बार तांबे का उपयोग शुरु किया था। यह पाषाण युग और कांस्य युग के बीच की संक्रमणकालीन अवस्था है। इस काल में ग्रामीण बस्तियों का उदय हुआ और धातु शोधन की कला विकसित हुई। मध्य प्रदेश के कायथा और नवदाटोली जैसे स्थल इस काल की संस्कृति के प्रमुख केंद्र थे, जो तकनीकी विकास के निर्णायक मोड़ हैं।

132. (D) मालवा क्षेत्र में कुषाण राजनीतिक प्रभाव का विस्तार
सांची से प्राप्त कुषाण राजा वाशिष्क का शिलालेख पुख्ता प्रमाण है कि कुषाणों का राजनैतिक प्रभाव मध्य भारत के मालवा क्षेत्र तक पहुँच चुका था। यह शिलालेख दर्शाता है कि कुषाण शासकों ने सांची जैसे प्रतिष्ठित बौद्ध केंद्रों को अपना संरक्षण प्रदान किया था। इस साक्ष्य ने इतिहासकारों को मध्य भारत के राजनैतिक परिदृश्य में कुषाणों की भूमिका और उनके शासनकाल के दौरान हुई सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं को समझने में मदद की है।

133. (B) ताम्रपत्र दानपत्र
उच्चकल्प वंश के इतिहास को जानने के लिए 'ताम्रपत्र दानपत्र' सबसे विश्वसनीय स्रोत हैं। ये दानपत्र विशेष रूप से बघेलखंड

155. (D) रुपनाथ लघु शिलालेख
सम्राट अशोक का प्रसिद्ध रुपनाथ शिलालेख जबलपुर जिले के बहोरीबंद में एक चट्टान पर उत्कीर्ण है। यह एक लघु शिलालेख है जो अशोक की बौद्ध धर्म के प्रति अगाध आस्था और उनके द्वारा प्रचारित नैतिक मूल्यों पर प्रकाश डालता है। यह अभिलेख मौर्य साम्राज्य के मध्य भारत में प्रशासनिक नियंत्रण और अशोक की धार्मिक नीतियों के स्थानीय क्रियान्वयन का प्रमाण है। यह स्थल आज भी मौर्य कालीन इतिहास का अनिवार्य स्रोत है।

156. (B) मालवा विजय में गुप्त राजा की व्यक्तिगत भागीदारी
विदिशा के उदयगिरि गुफा शिलालेख चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल का प्रत्यक्ष राजनैतिक साक्ष्य प्रदान करते हैं। इन अभिलेखों में स्पष्ट उल्लेख है कि सम्राट ने मालवा के क्षेत्रों को जीतने के लिए व्यक्तिगत रुप से सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया था। यह शिलालेख दर्शाता है कि मालवा क्षेत्र गुप्त साम्राज्य के सामरिक विस्तार के लिए कितना महत्वपूर्ण था। यह गुप्त कालीन प्रशासनिक सक्रियता और सम्राट के शौर्य का गौरवशाली दस्तावेज है।

157. (C) स्थापत्य और नगर नियोजन
राजा भोज की प्रसिद्ध कृति 'समरांगण सूत्रधार' मुख्य रुप से वास्तुशास्त्र, स्थापत्य कला और नगर नियोजन के सिद्धांतों पर आधारित एक विस्तृत ग्रंथ है। इसमें मंदिरों के निर्माण, भवनों की बनावट और मूर्तिकला के सूक्ष्म नियमों का वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ सिद्ध करता है कि राजा भोज को इंजीनियरिंग और सौंदर्यशास्त्र का गहरा ज्ञान था। उनकी यह कृति आज भी प्राचीन भारतीय वास्तुकला के अध्ययन के लिए आधारभूत स्रोत है।

158. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
कलचुरी राजवंश मध्य भारत के इतिहास में एक प्रभावशाली शक्ति थी। इस वंश की मुख्य शाखा ने अपनी राजधानी त्रिपुरी में स्थापित की और एक विशाल साम्राज्य का संचालन किया। कोकल्लम प्रथम इस वंश के वास्तविक संस्थापक माने जाते हैं, जिन्होंने कलचुरी सत्ता को स्थिरता प्रदान की। उनके शासनकाल में कला और संस्कृति ने प्रगति की। भेड़ाघाट के निकट उनके समय के अनेक मंदिर आज भी उनके वैभव के साक्षी हैं।

159. (A) इब्राहिम लोदी
1518 में दिल्ली सल्तनत के सुल्तान इब्राहिम लोदी ने ग्वालियर के रणनीतिक रुप से महत्वपूर्ण किले पर अधिकार कर लिया था। यह ग्वालियर के तोमर राजवंश के पतन और सल्तनत के नियंत्रण की शुरुआत का निर्णायक मोड़ था। तोमर राजा विक्रमादित्य ने वीरतापूर्वक प्रतिरोध किया लेकिन अंततः उन्हें हार स्वीकार करनी पड़ी। ग्वालियर का किला अपनी अभेद्यता के लिए जाना जाता था, इसलिए इस विजय ने इब्राहिम लोदी की प्रतिष्ठा बढ़ाई थी।

160. (D) 1, 2 और 3
बघेलखंड रियासत का इतिहास वीरता और कलात्मक संरक्षण का संगम है। बघेल राजपूत अपनी उत्पत्ति गुजरात के प्रतापी सोलंकी वंश से मानते हैं। राजा विक्रमादित्य के शासनकाल में राजधानी को रीवा स्थानांतरित किया गया। इसी राजवंश के शासक राजा रामचंद्र के दरबार में संगीत सम्राट तानसेन अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। ये तथ्य बघेलखंड की समृद्ध सांस्कृतिक और राजनैतिक विरासत को पूरी तरह से प्रमाणित और गौरवपूर्ण बनाते हैं।

161. (B) शिवपुरी
1857 के अमर सेनानी तात्या टोपे को विश्वासघात के कारण पकड़ लिया गया और 18 अप्रैल 1859 को शिवपुरी में सार्वजनिक रुप से फांसी दे दी गई। तात्या टोपे ने अपनी छापामार युद्ध नीति से अंग्रेजों को लंबे समय तक छकाया था। शिवपुरी के जिस स्थान पर उन्हें फांसी दी गई, वह आज भी एक प्रेरणादायक स्मारक है। उनका यह सर्वोच्च बलिदान भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में शौर्य और देशभक्ति का अमिट अध्याय है।

162. (A) सेठ गोविंद दास और द्वारका प्रसाद मिश्र
1930 में जब महात्मा गांधी ने नमक कानून तोड़ने का आह्वान किया, तब जबलपुर में इसका नेतृत्व सेठ गोविंद दास और द्वारका प्रसाद मिश्र ने किया था। चूंकि जबलपुर समुद्र तट से दूर था, इसलिए यहाँ प्रतीकात्मक रुप से नमक बनाकर कानून का उल्लंघन किया गया। इस आंदोलन ने स्थानीय जनता में उत्साह भर दिया और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सविनय अवज्ञा की भावना को प्रज्वलित कर राष्ट्रवादी चेतना बढ़ाई।

163. (C) असहयोग के दौरान वन डिपो को जलाना
छिंदवाड़ा के आदिवासी नायक बादल भोई को असहयोग आंदोलन के दौरान उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार किया था। उन्होंने आदिवासियों के अधिकारों के लिए लड़ते हुए सरकारी वन डिपो को जला दिया था, जिसे अंग्रेजों ने गंभीर अपराध माना। बादल भोई का यह संघर्ष स्वतंत्रता और आदिवासियों के अधिकारों की एक पुरजोर आवाज थी। जेल की यातनाओं के बावजूद उन्होंने कभी घुटने नहीं टेके और शहीद हुए।

164. (D) बुद्ध का जीवन और जातक कथाएँ
सांची के महान स्तूप के चारों तोरण प्राचीन भारतीय मूर्तिकला के सूक्ष्म नमूनों में से एक हैं। इन तोरणों पर भगवान बुद्ध के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को बड़ी सूक्ष्मता से उकेरा गया है। इसके साथ ही, यहाँ बुद्ध के पिछले जन्मों से संबंधित 'जातक कथाओं' का कलात्मक चित्रण मिलता है। ये नक्काशी तत्कालीन सामाजिक जीवन और स्थापत्य को दर्शाती है, जो इसे एक महान ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दस्तावेज बनाती है।

165. (C) नदी घाटियों और शैलाश्रयों में
मध्य प्रदेश में पुरापाषाण काल के उपकरण सर्वाधिक मात्रा में नर्मदा और चंबल जैसी प्रमुख नदी घाटियों एवं प्राकृतिक शैलाश्रयों में पाए जाते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि नदियों के पास आदिमानव को जल और शिकार आसानी से उपलब्ध होते थे। साथ ही, विंध्याचल की गुफाएं उन्हें जंगली जानवरों और प्रतिकूल मौसम से सुरक्षा प्रदान करती थीं। इन

पुनर्गठन ने मध्य प्रदेश को क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का एक अत्यंत विशाल और विविधतापूर्ण राज्य बना दिया था।

101. (C) भील
टंट्या भील मध्य प्रदेश के भील समुदाय के अत्यंत लोकप्रिय लोकनायक हैं। उन्हें जनजातीय समाज में 'टंट्या मामा' के नाम से पुकारा जाता है और उनकी पूजा एक देवता के समान की जाती है। भील संस्कृति में उनके साहस और अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष की गाथाएँ लोक गीतों के माध्यम से सुनाई जाती हैं। उनकी विरासत आज भी भील समुदाय के स्वाभिमान और उनके अधिकारों की प्रेरणा का मुख्य केंद्र है।

102. (B) कठोतिया गुफाएं
रायसेन जिले में स्थित कठोतिया गुफाएं अपने विशिष्ट प्रागैतिहासिक शैल चित्रों के लिए जानी जाती हैं। ये गुफाएं भीमबेटका के निकट स्थित हैं और उसी कालक्रम के साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। यहाँ के चित्रों में मानव आकृतियों और शिकार के चित्रण मिलते हैं जो आदिमानव की कलात्मक क्षमता को दर्शाते हैं। रायसेन का यह क्षेत्र शैल कला की दृष्टि से समृद्ध है और पुरातत्वविदों के लिए महत्वपूर्ण केंद्र है।

103. (D) प्रागैतिहासिक सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का दृश्य वर्णन
भीमबेटका और आदमगढ़ के शैल चित्रों का महत्वपूर्ण योगदान यह है कि वे प्रागैतिहासिक मानव के दैनिक जीवन का सजीव दृश्य रिकॉर्ड प्रदान करते हैं। ये चित्र हमें बताते हैं कि तत्कालीन मानव कैसे शिकार करता था और उसके सामुदायिक उत्सव कैसे होते थे। इन कलाकृतियों ने इतिहासकारों को आदिमानव की सामाजिक संरचना और उनकी क्रमिक प्रगति को समझने के लिए एक ठोस एवं विश्वसनीय ऐतिहासिक आधार प्रदान किया है।

104. (A) मंदसौर शिलालेख - समुद्रगुप्त
मंदसौर का प्रसिद्ध शिलालेख वास्तव में गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल से संबंधित है, न कि समुद्रगुप्त से। यह शिलालेख बुनकरों की श्रेणी और उनके द्वारा निर्मित सूर्य मंदिर के बारे में जानकारी देता है। इसके विपरीत, अशोक का नाम गुर्जरा शिलालेख में मिलता है और बेसनगर स्तंभ का संबंध हेलियोडोरस से है। ऐतिहासिक तथ्यों का यह सटीक मिलान प्राचीन मध्य प्रदेश के इतिहास को समझने के लिए आवश्यक है।

105. (C) पाल और गुर्जर-प्रतिहार
त्रिपक्षीय संघर्ष में कलचुरी वंश ने पाल और गुर्जर-प्रतिहार शासकों के विरुद्ध सक्रिय भूमिका निभाई थी। कलचुरी राजाओं ने अपनी रणनीतिक स्थिति का उपयोग करते हुए इन शक्तियों के बीच प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया। इस संघर्ष ने मध्य भारत की राजनीति को लंबे समय तक अस्थिर रखा लेकिन साथ ही विभिन्न संस्कृतियों के आदान-प्रदान का अवसर दिया। यह कालक्रम भारतीय इतिहास में क्षेत्रीय शक्तियों के उदय का अध्याय है।

106. (A) अकबर
खानदेश के फारुकी वंश के शासन का अंत 1601 में सम्राट अकबर के शासनकाल में हुआ था। अकबर ने सामरिक महत्व के असीरगढ़ किले को कूटनीति और बल से जीत लिया। इसके साथ ही फारुकी साम्राज्य को मुगल साम्राज्य में विलीन कर लिया गया। इस विजय के साथ दक्षिण भारत की ओर मुगलों के विस्तार का मार्ग प्रशस्त हुआ। फारुकी वंश का पतन मध्यकालीन राजनैतिक इतिहास में एक निर्णायक मोड़ था।

107. (D) रुद्र प्रताप सिंह
बुंदेला राजपूत राजा रुद्र प्रताप सिंह ने 16वीं शताब्दी में ओरछा शहर की स्थापना की थी। उन्होंने बेतवा नदी के तट पर इस सुरक्षित स्थल को राजधानी के रूप में चुना। उन्होंने ओरछा के किले और राजमहल के निर्माण का कार्य प्रारंभ करवाया। उनके इस दूरदर्शी निर्णय के कारण ही ओरछा आने वाले समय में बुंदेलखंड की शक्ति और बेजोड़ स्थापत्य का सबसे प्रमुख केंद्र बनकर उभरा, जो आज भी प्रसिद्ध है।

108. (B) कुदसिया बेगम
भोपाल रियासत में 'बेगमों के शासन' का अध्याय कुदसिया बेगम से शुरू हुआ था। उन्होंने 1819 में सत्ता की बागडोर संभाली और एक सक्षम महिला शासिका के रूप में पहचान बनाई। उन्होंने पर्दा प्रथा त्यागकर प्रशासनिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी की और भोपाल में जामा मस्जिद का निर्माण कराया। उनके शासन ने भोपाल की भावी महिला शासकों के लिए प्रेरणा पेश की और राज्य की सांस्कृतिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया।

109. (C) खंडवा
असहयोग आंदोलन के दौरान 'पंजाब मेल हत्याकांड' की घटना मध्य प्रदेश के खंडवा रेलवे स्टेशन पर हुई थी। इसमें क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश सेना के अधिकारी पर हमला किया था, जो उनकी क्रूर नीतियों का बदला था। बाद में इन क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर फांसी दी गई। यह घटना मध्य प्रदेश के क्रांतिकारी इतिहास में महत्वपूर्ण है और दर्शाती है कि स्थानीय युवाओं में सशस्त्र प्रतिरोध की भावना अत्यंत प्रबल थी।

110. (D) वन कानूनों की अवहेलना करने हेतु घास काटने का प्रतीकात्मक विरोध
मध्य प्रदेश में 'जंगल सत्याग्रह' सविनय अवज्ञा आंदोलन का एक सशक्त स्थानीय संस्करण था। इसका मुख्य स्वरूप ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू किए गए दमनकारी वन कानूनों को तोड़ना था। सत्याग्रहियों ने प्रतिबंधित वनों में प्रवेश कर घास काटकर प्रतीकात्मक रूप से इन कानूनों का उल्लंघन किया। इस आंदोलन ने आदिवासियों की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की और स्थानीय समुदायों के उनके प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकारों की रक्षा हेतु संघर्ष किया।

111. (A) तात्या टोपे
भीमाजी नायक की तुलना तात्या टोपे से की जाती है क्योंकि दोनों ने अंग्रेजों के विरुद्ध छापामार युद्ध नीति का प्रभावी उपयोग किया था। भीमाजी नायक निमाड़ के जंगलों की भौगोलिक स्थिति से परिचित थे, जहाँ से वे ब्रिटिश सेना पर अचानक प्रहार

सहायता करना था। वे संपन्न व्यापारियों से जो धन प्राप्त करते थे, उसे समाज के वंचित वर्ग में वितरित कर देते थे। इस व्यवस्था ने उन्हें जनसाधारण के बीच एक मसीहा की छवि प्रदान की। 'पगड़ी' का यह सिद्धांत उनके उस संघर्ष का प्रतीक था जो केवल विदेशी सत्ता के विरुद्ध नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय के विरुद्ध था।

177. (B) द्रविड़ शैली का शिखर और उत्तर भारतीय आधार
ग्वालियर किले में स्थित 'तेली का मंदिर' भारतीय मंदिर स्थापत्य का एक विशिष्ट उदाहरण है। इसकी अनूठी विशेषता इसकी मिश्रित शैली है, जहाँ मंदिर का आधार उत्तर भारतीय नागर शैली में है और शिखर दक्षिण भारतीय द्रविड़ शैली से प्रेरित है। यह उत्तर और दक्षिण भारत की कलात्मक परंपराओं के मिलन का अद्भुत नमूना है। 9वीं शताब्दी का यह मंदिर अपनी विशिष्ट बनावट और सूक्ष्म नक्काशी के कारण पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

178. (A) विशाल वराह प्रतिमा
सागर जिले के एरण का ऐतिहासिक स्थल गुप्त कालीन स्थापत्य का अनमोल खजाना है। यहाँ की सबसे भव्य संरचना भगवान विष्णु के 'वराह अवतार' की एक विशाल पाषाण प्रतिमा है। इस प्रतिमा पर अनेक देवताओं की आकृतियां बड़ी सूक्ष्मता से उकेरी गई हैं, जो तत्कालीन मूर्तिकला की उच्च कोटि की निपुणता को दर्शाती हैं। एरण की यह प्रतिमा गुप्त साम्राज्य के दौरान इस क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि और कलात्मक उत्कर्ष का अत्यंत सशक्त प्रमाण है।

179. (C) अश्वारोही योद्धा, युद्ध और धार्मिक प्रतीक
मध्य प्रदेश की गुफाओं में पाए जाने वाले उत्तरकालीन शैल चित्र एक अधिक जटिल सामाजिक और सैन्य संरचना को प्रदर्शित करते हैं। इन चित्रों में घोड़ों पर सवार योद्धाओं, आपसी युद्धों और ढाल-तलवार जैसे उन्नत हथियारों की प्रधानता मिलती है। यह बदलाव समाज के संगठित होने और एक नई राजनैतिक चेतना के उदय को इंगित करता है। ये चित्र उस काल के गवाह हैं जब मानव समाज कबीलों से राज्यों के गठन की ओर बढ़ रहा था।

180. (D) इसमें हेलियोडोरस द्वारा भागवत धर्म अपनाने का उल्लेख है।
बेसनगर के गरुड़ स्तंभ की सबसे बड़ी ऐतिहासिक महत्ता यह है कि इसमें यूनानी राजदूत हेलियोडोरस द्वारा स्वयं को 'भागवत' घोषित करने का स्पष्ट उल्लेख है। यह प्रमाणित करता है कि ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में भारतीय संस्कृति का प्रभाव इतना व्यापक था कि विदेशी राजनयिक भी इससे प्रभावित होकर इसे अपना रहे थे। यह स्तंभ प्राचीन भारत की वैश्विक सांस्कृतिक उदारता और धार्मिक सहिष्णुता का एक अमर और गौरवशाली प्रतीक माना जाता है।

181. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
मध्य प्रदेश के प्रमुख राजवंशों और उनके संस्थापकों का मिलान राज्य की राजनैतिक नींव को स्पष्ट करता है। कलचुरी वंश को कोकल्लम प्रथम ने त्रिपुरी में सुदृढ़ किया, जबकि परमार वंश की सत्ता उपेंद्र ने स्थापित की। चंदेल राजवंश के उत्थान में यशोवर्मन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सिंधिया वंश की नींव राणोजी सिंधिया ने रखी जिन्होंने मराठा शक्ति का विस्तार किया। इन संस्थापकों ने अपने क्षेत्रों में स्थायी प्रशासनिक और सांस्कृतिक ढांचा निर्मित किया।

182. (B) विदिशा
शुंग राजवंश के दौरान 'विदिशा' शहर साम्राज्य की पूर्वी राजधानी और प्रमुख प्रशासनिक केंद्र के रूप में उभरा था। सम्राट पुष्यमित्र शुंग के समय में विदिशा राजनैतिक गतिविधियों का मुख्य आधार बना रहा। इसकी रणनीतिक स्थिति ने इसे उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सेतु की भूमिका प्रदान की। यहाँ के स्तूप और गरुड़ स्तंभ जैसे स्मारक शुंग कालीन कला और प्रशासनिक गौरव के जीवंत साक्षी हैं, जो ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

183. (D) एक शताब्दी से अधिक समय तक बेगमों ने शासन।
भोपाल रियासत का इतिहास अपनी महिला शासकों, 'भोपाल की बेगम' के एक शताब्दी से अधिक लंबे शासन के लिए विशिष्ट है। कुदसिया बेगम से लेकर सुल्तान जहाँ बेगम तक ने राज्य में शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासनिक सुधारों के नए आयाम स्थापित किए। उन्होंने पर्दा प्रथा के बीच भी कुशलता से राज्य संचालन किया और भोपाल को आधुनिक शहर के रूप में विकसित किया। उनका शासनकाल महिला नेतृत्व और सामाजिक प्रगति का गौरवशाली उदाहरण है।

184. (A) सिंधिया और होल्कर
1802 की बेसिन की संधि के कारण मध्य प्रदेश की दो सबसे शक्तिशाली रियासतें—सिंधिया और होल्कर—गहराई से प्रभावित हुईं। पेशवा द्वारा अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करने को इन राजवंशों ने अपनी संप्रभुता पर प्रहार माना। इसके परिणामस्वरूप भड़के द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध में उन्हें अंग्रेजों से कड़ा संघर्ष करना पड़ा। अंततः उन्हें अपनी स्वायत्तता का हिस्सा गंवाना पड़ा, जिससे मध्य भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का राजनैतिक प्रभुत्व पूर्णतः स्थापित हो गया।

185. (C) बैतूल
1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 'घोड़ा डोंगरी' जंगल सत्याग्रह बैतूल जिले में आयोजित किया गया था। इस आंदोलन का नेतृत्व वीर आदिवासी नेता गुंजन सिंह कोरकू ने किया था। यह सत्याग्रह अंग्रेजों के दमनकारी वन कानूनों के विरुद्ध एक सशक्त जन-आक्रोश था। बैतूल के दुर्गम जंगलों में आदिवासियों ने घास काटकर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी थी। यह घटना जनजातीय वीरता और राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी का गौरवशाली अध्याय है।

186. (A) 1857 के विद्रोह की योजना
रघुनाथ शाह का मुख्य योगदान 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जबलपुर क्षेत्र में विद्रोह की गुप्त योजना बनाने से संबंधित है। उन्होंने अपने पिता के साथ मिलकर स्थानीय जमींदारों को संगठित किया ताकि ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंका जा सके। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जनता में राष्ट्रभक्ति की

144. (B) यशोधर्मन
औलीकर वंश के शासक यशोधर्मन को उनकी सैन्य विजयों के लिए याद किया जाता है। उन्होंने मध्य भारत से हूणों का प्रभाव समाप्त करने में निर्णायक भूमिका निभाई और उनके शासक मिहिरकुल को पराजित किया। मंदसौर में स्थापित उनके विजय स्तंभ इस गौरवशाली गाथा के प्रमाण हैं। यशोधर्मन की सफलता ने भारत को विदेशी दासता से बचाया और गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद क्षेत्रीय गौरव की पुनर्स्थापना की, जो सराहनीय है।

145. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
कच्छपघात राजवंश ग्वालियर क्षेत्र में 10वीं शताब्दी के दौरान महत्वपूर्ण शक्ति था। उन्हें 'सास-बहू मंदिर' जैसी उत्कृष्ट स्थापत्य कला के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। हालाँकि, यह कहना गलत होगा कि उन्होंने गुर्जर-प्रतिहारों को हराया था। वास्तव में, वे लंबे समय तक प्रतिहारों के सामंत रहे थे और प्रतिहार साम्राज्य के कमजोर होने के बाद ही उन्होंने अपनी क्षेत्रीय स्वायत्तता और राजनैतिक प्रभाव का विस्तार करना शुरु किया था।

146. (A) केवल 1 और 2
इंदौर के होल्कर राजवंश की नींव मल्हार राव होल्कर ने रखी थी। अहिल्याबाई होल्कर का शासनकाल स्वर्ण युग माना जाता है, जिन्होंने लोककल्याण के अभूतपूर्व कार्य किए। यह धारणा गलत है कि होल्कर प्रारंभ से ही अंग्रेजों के वफादार थे, क्योंकि यशवंत राव होल्कर प्रथम ने अंग्रेजों के विरुद्ध भीषण युद्ध लड़ा था। होल्कर राज्य का इतिहास साहस, स्वतंत्रता के प्रति प्रेम और सांस्कृतिक संरक्षण का अद्भुत संगम है।

147. (C) मराठा सर्वोच्चता स्थापित करके और मुगल सम्राट को नियंत्रित करके
पानीपत के तीसरे युद्ध के बाद मराठा शक्ति को पुनर्जीवित करने का श्रेय महादजी सिंधिया को जाता है। उन्होंने अपनी आधुनिक सैन्य शक्ति से उत्तर भारत में पुनः मराठा प्रभुत्व स्थापित किया। महादजी ने मुगल सम्राट को अपने संरक्षण में लिया और दिल्ली की राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाई। उन्होंने सिंधिया राजवंश को एक ऐसी अखिल भारतीय राजनैतिक शक्ति बनाया जिसकी अनुमति के बिना कोई भी बड़ा परिवर्तन संभव नहीं था।

148. (D) मुगल साम्राज्य
भोपाल की आधुनिक रियासत की स्थापना 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के पतन के दौरान दोस्त मोहम्मद खान ने की थी। वह एक साहसी अफगान सैनिक था जिसने औरंगजेब की मृत्यु के बाद उत्पन्न अस्थिरता का लाभ उठाया। दोस्त मोहम्मद खान ने भोपाल को अपनी शक्ति का मुख्य केंद्र बनाया। इस रियासत ने बाद में मुगलों और अंग्रेजों के बीच अपनी एक अलग राजनैतिक एवं सांस्कृतिक पहचान बनाए रखी जो विशिष्ट है।

149. (C) उच्च राजस्व निर्धारण और ब्रिटिश भूमि नीतियां
1842 का बुंदेला विद्रोह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की शोषणकारी राजस्व नीतियों के विरुद्ध जन-आक्रोश था। अंग्रेजों द्वारा लगाए गए उच्च लगान ने पारंपरिक समाज की आर्थिक संरचना को छिन्न-भिन्न कर दिया था। स्थानीय बुंदेला प्रमुखों ने इसे अपने स्वाभिमान और आजीविका पर प्रहार माना और सशस्त्र विद्रोह किया। यद्यपि इसे दबा दिया गया, लेकिन इसने सिद्ध कर दिया कि विदेशी शासन की आर्थिक नीतियां जनविरोधी और असहनीय थीं।

150. (B) रघुराज सिंह
1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान रीवा के महाराजा रघुराज सिंह की भूमिका अंग्रेजों के प्रति सहयोगी रही थी। उन्होंने विद्रोह को कुचलने के लिए ब्रिटिश शासन को सैन्य सहायता प्रदान की। यद्यपि राज्य की जनता में अंग्रेजों के विरुद्ध असंतोष था, लेकिन महाराजा ने अपनी रियासत की सुरक्षा के लिए ब्रिटिश हितों का समर्थन करना उचित समझा। उनकी इस नीति के कारण रीवा क्षेत्र में विद्रोह तीव्र नहीं हो सका।

151. (C) भीमाजी नायक
भीमाजी नायक निमाड़ क्षेत्र के निडर आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने सतपुड़ा के वनों में भील योद्धाओं का दस्ता तैयार किया और अंग्रेजों की संचार व्यवस्था को ध्वस्त किया। उनकी वीरता के कारण उन्हें 'निमाड़ का रॉबिन हुड' कहा जाता है क्योंकि वे अंग्रेजों से छीना धन गरीबों में बाँट देते थे। उनका संघर्ष जनजातीय समाज के स्वाभिमान का प्रतीक है।

152. (A) मध्यपाषाण काल
नर्मदापुरम् जिले के आदमगढ़ शैलाश्रय इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यहाँ से मध्यपाषाण काल में पशुपालन की शुरुआत के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं। खुदाई में पालतू जानवरों के अवशेषों ने सिद्ध किया कि तत्कालीन मानव केवल शिकारी नहीं था बल्कि उसने जानवरों के उपयोग की कला सीख ली थी। यह खोज मानव सभ्यता के क्रमिक विकास और आखेटक समाज से उत्पादक समाज की ओर बढ़ते कदमों को समझने का आधार प्रदान करती है।

153. (C) सामूहिक शिकार और नृत्य के दृश्य
मध्य प्रदेश में पाए गए मध्यपाषाण कालीन शैल चित्रों का मुख्य केंद्र तत्कालीन मानव की सामुदायिक गतिविधियां हैं। इन चित्रों में सामूहिक शिकार और उत्साह के साथ किए जाने वाले नृत्य समूहों का चित्रण किया गया है। ये कलाकृतियाँ आदिमानव की सामूहिक कार्यप्रणाली और उनके सामाजिक जुड़ाव को उजागर करती हैं। प्राकृतिक रंगों से बने ये चित्र हजारों वर्षों बाद भी उस काल के मानव के संघर्ष और उनकी रचनात्मक सोच को दर्शाते हैं।

154. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक स्थलों की भौगोलिक पहचान राज्य की प्राचीन संपन्नता को दर्शाती है। भीमबेटका की प्रसिद्ध गुफाएं रायसेन जिले में हैं। बेसनगर, जो विदिशा का हिस्सा है, अपने हेलियोडोरस स्तंभ के लिए जाना जाता है। आदमगढ़ की पहाड़ियाँ नर्मदापुरम् जिले में स्थित हैं जहाँ से पशुपालन के प्राचीन साक्ष्य मिले हैं। एरण का महत्वपूर्ण स्थल सागर जिले में है जो सती प्रथा के साक्ष्य के लिए विख्यात है।

197. (C) निमाड़ क्षेत्र
भीमाजी नायक का ऐतिहासिक संघर्ष मुख्य रुप से मध्य प्रदेश के निमाड़ क्षेत्र में केंद्रित था। उन्होंने बड़वानी के पास अंग्रेजों के विरुद्ध एक व्यापक आदिवासी विद्रोह का नेतृत्व किया। भीमाजी ने कठिन भौगोलिक परिस्थितियों का उपयोग करते हुए ब्रिटिश सेना की संचार व्यवस्था को बार-बार बाधित किया। उनके नेतृत्व में निमाड़ के भीलों ने 1857 के विद्रोह के दौरान अदम्य साहस का परिचय दिया। उनके इस निरंतर संघर्ष के कारण उन्हें जन-जन का नायक और गौरवशाली क्रांतिकारी माना जाता है।

198. (B) पिथोरा चित्रकला
पेमा फाल्या मध्य प्रदेश की पारंपरिक 'पिथोरा चित्रकला' को वैश्विक पहचान दिलाने वाले प्रमुख व्यक्तित्व थे। यह चित्रकला भील जनजाति की एक अनुष्ठानिक और पवित्र कला है। पेमा फाल्या ने अपनी अद्भुत प्रतिभा से इस लोक कला की मौलिकता को संरक्षित रखते हुए इसे आधुनिक कला जगत में एक सम्मानित स्थान दिलाया। उनके योगदान के कारण ही यह जनजातीय कला आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराही जाती है। वे भील संस्कृति के सच्चे संरक्षक और प्रेरक प्रतीक माने जाते हैं।

199. (D) कायथा मृदभाण्ड
उज्जैन के कायथा पुरातात्विक स्थल की विशिष्ट पहचान 'कायथा मृदभाण्ड' हैं। ये मिट्टी के बर्तन अपनी विशेष चमक और बारीक डिजाइनों के लिए जाने जाते हैं। कायथा को खगोलविद वराहमिहिर की जन्मस्थली भी माना जाता है। यहाँ की खुदाई से प्राप्त तांबे की चूड़ियाँ तत्कालीन मानव समाज की तकनीकी प्रगति और ग्रामीण जीवनशैली को दर्शाती हैं। यह स्थल मालवा क्षेत्र की प्राचीनतम ताम्रपाषाण कालीन बस्ती के रुप में भारतीय पुरातत्व में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जो सराहनीय है।

200. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नाग राजवंश ने कुषाणों के पतन के बाद मध्य भारत में शक्तिशाली राजनैतिक शक्ति के रूप में स्थान बनाया था। वे गुप्त साम्राज्य के विस्तार में बड़ी चुनौती थे। समुद्रगुप्त की 'प्रयाग प्रशस्ति' पुष्टि करती है कि उसने आर्यावर्त अभियान के दौरान गणपतिनाग जैसे शक्तिशाली नाग राजाओं को युद्ध में पराजित कर उनके राज्यों का उन्मूलन किया था। यह संघर्ष दो महान राजवंशों के बीच सत्ता के संघर्ष को दर्शाता है, जिसने गुप्त साम्राज्य की अखिल भारतीय प्रतिष्ठा को सुदृढ़ किया।

201. (C) औलीकर वंश
मंदसौर में स्थित विजय स्तंभों का निर्माण औलीकर वंश के राजा यशोधर्मन ने करवाया था। ये स्तंभ 6वीं शताब्दी में हूण शासक मिहिरकुल पर उनकी निर्णायक विजय की स्मृति में स्थापित किए गए थे। यशोधर्मन ने इनके माध्यम से अपनी सैन्य उपलब्धियों और विदेशी शक्तियों को खदेड़ने के गौरव का प्रदर्शन किया। स्थापत्य की दृष्टि से ये स्तंभ तत्कालीन शिल्प कौशल के उत्कृष्ट नमूने हैं। यह स्मारक आज भी भारतीय शौर्य और विदेशी आक्रमणों के सफल प्रतिरोध की प्रेरणादायक गाथा सुनाता है।

202. (A) जेजाकभुक्ति
मध्यकालीन भारत में चंदेल राजवंश द्वारा शासित प्रदेश को 'जेजाकभुक्ति' के नाम से जाना जाता था। यह क्षेत्र मुख्य रुप से वर्तमान बुंदेलखंड को समाहित करता था। इस नाम की उत्पत्ति चंदेल राजा 'जयशक्ति' के नाम पर हुई थी। जेजाकभुक्ति अपनी अभेद्य सुरक्षा और खजुराहो के विश्वप्रसिद्ध मंदिरों की स्थापत्य कला के लिए विख्यात था। चंदेल शासकों ने यहाँ एक सुदृढ़ प्रशासनिक तंत्र विकसित किया और कृषि के लिए विशाल तालाबों का निर्माण कराया, जो आज भी इस क्षेत्र की पहचान है।

203. (A) P-2, Q-4, R-3, S-1
1857 के स्वतंत्रता संग्राम में मध्य प्रदेश के नायकों ने विशिष्ट भूमिका निभाई। रानी अवंतीबाई ने रामगढ़ से अंग्रेजों से लोहा लिया, जबकि शेख रमजान ने सागर में विद्रोह का नेतृत्व किया। राजा शंकर शाह ने जबलपुर क्षेत्र में सशस्त्र प्रतिरोध का बिगुल फूंका। महू के पास सआदत खान ने ब्रिटिश रेजिडेंसी पर ऐतिहासिक हमला किया। इन सभी नायकों की वीरता और बलिदान ने मध्य भारत में ब्रिटिश सत्ता की नींव हिला दी और भावी आंदोलनों के लिए मजबूत आधार तैयार किया।

204. (B) तिरंगे को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में मान्यता
1923 के झंडा सत्याग्रह का महत्वपूर्ण परिणाम यह था कि इसने तिरंगे को राष्ट्रीय एकता और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में स्थापित कर दिया। जबलपुर से शुरु हुए इस आंदोलन ने जनता को सिखाया कि ध्वज राष्ट्र की आत्मा है। ब्रिटिश प्रशासन को जन-दबाव के आगे झुकना पड़ा और सत्याग्रहियों को ध्वज फहराने की अनुमति देनी पड़ी। इस जीत ने पूरे देश के राष्ट्रवादियों में नया आत्मविश्वास भरा और तिरंगे को स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्य पहचान बनाया।

205. (C) भाग A
1956 में पुनर्गठन से पहले, मध्य प्रांत और बरार को 'भाग A' राज्य के रूप में वर्गीकृत किया गया था, जिसकी राजधानी नागपुर थी। इसमें महाकौशल, छत्तीसगढ़ और विदर्भ के क्षेत्र शामिल थे। यह क्षेत्र सीधे ब्रिटिश प्रशासन के अधीन था और बाद में लोकतांत्रिक ढांचे के रूप में विकसित हुआ। 1956 के समय इसके हिंदी भाषी क्षेत्रों को नए मध्य प्रदेश में मिला लिया गया, जो राज्य के प्रशासनिक और राजनैतिक विकास का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक आधार बना, जो आज भी प्रासंगिक है।

206. (D) निमाड़ के नायक
खाज्या नायक और भीमाजी नायक को इतिहास में 'निमाड़ के नायक' के रूप में जाना जाता है। इन वीर भील योद्धाओं ने 1857 के विद्रोह के दौरान सतपुड़ा के दुर्गम जंगलों को अपनी कर्मभूमि बनाया और अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया। उन्होंने स्थानीय समुदायों को संगठित कर छापामार युद्ध नीति से ब्रिटिश सेना को चुनौती दी। उनके अदम्य साहस के कारण वे आज भी निमाड़ के लोकगीतों और जनजातीय गौरव की कहानियों के मुख्य प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

नैतिकता का प्रतीक था, जहाँ उन्होंने न्याय को ही अपना धर्म माना। वे एक ऐसी दूरदर्शी महिला थीं जिन्होंने मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को नई ऊंचाइयां प्रदान की थीं।

245. (C) राजा भोज
'सरस्वती कंठाभरण' के रचयिता परमार वंश के प्रतापी राजा भोज थे। वे एक विलक्षण शासक थे जिन्होंने न केवल साम्राज्य का विस्तार किया, बल्कि व्याकरण, कविता और स्थापत्य जैसे विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। उनकी विद्वता के कारण ही उन्हें 'कविराज' की उपाधि प्राप्त हुई थी। उनकी यह कृति संस्कृत साहित्य और काव्यशास्त्र के क्षेत्र में एक अत्यंत उच्च कोटि का प्रमाणिक ग्रंथ मानी जाती है। राजा भोज का यह साहित्यिक योगदान सिद्ध करता है कि वे शस्त्र और शास्त्र दोनों के ही महान ज्ञाता थे।

246. (B) नागपुर
मध्य प्रांत राजनीतिक सम्मेलन का प्रथम सत्र 1905 में 'नागपुर' शहर में आयोजित किया गया था। चूँकि नागपुर उस समय इस प्रांत की प्रशासनिक राजधानी थी, इसलिए यहाँ से शुरु हुए राजनैतिक विमर्श ने पूरे क्षेत्र में राष्ट्रवादी चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस सम्मेलन में कांग्रेस की विचारधारा और विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष की रणनीति पर चर्चा की गई। नागपुर के इस सत्र ने स्थानीय नेताओं को एक संगठित मंच प्रदान किया, जिससे भविष्य के स्वतंत्रता आंदोलनों को नई ऊर्जा और दिशा प्राप्त हुई थी।

247. (D) शंकर शाह और रघुनाथ शाह
1857 के संग्राम के दौरान महाकौशल क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व राजा शंकर शाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह ने किया था। इस वीर जोड़ी ने न केवल जनता को संगठित किया बल्कि अपनी ओजस्वी कविताओं के माध्यम से स्वतंत्रता की ज्वाला प्रज्वलित की। अंग्रेजों ने उनके बढ़ते प्रभाव से डरकर उन्हें बंदी बनाया और 18 सितंबर 1857 को सार्वजनिक रूप से तोप से उड़ा दिया। उनका यह बलिदान महाकौशल क्षेत्र में आज भी देशभक्ति और विदेशी दासता के विरुद्ध प्रतिरोध का सबसे गौरवशाली और प्रेरणादायक अध्याय माना जाता है।

248. (A) डिंडोरी
रामगढ़ की वीर शासिका रानी अवंतीबाई का ऐतिहासिक स्मारक मध्य प्रदेश के 'डिंडोरी' जिले में स्थित है। यह स्मारक उस स्थान के निकट है जहाँ उन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध वीरतापूर्वक युद्ध लड़ा था और स्वाभिमान की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुति दी थी। रानी अवंतीबाई का साहस और बलिदान डिंडोरी के जनजातीय अंचलों में आज भी श्रद्धा के साथ याद किया जाता है। यह स्मारक वर्तमान पीढ़ी के लिए राष्ट्रभक्ति और महिला सशक्तिकरण की एक निरंतर प्रेरणा का महान स्रोत बना हुआ है।

249. (C) नवदाटोली
नर्मदा नदी के तट पर स्थित 'नवदाटोली' मध्य प्रदेश का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ताम्रपाषाण कालीन पुरातात्विक स्थल है। महेश्वर के निकट स्थित इस स्थल की खुदाई से प्राचीन कृषक समाज की उन्नत जीवनशैली और तांबे के उपकरणों के प्रचुर साक्ष्य मिले हैं। यहाँ से प्राप्त अनाज के अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि तत्कालीन मानव कृषि कार्य में निपुण था और उसने व्यवस्थित ग्रामीण समाज का निर्माण किया था। नवदाटोली की खोज ने नर्मदा घाटी की प्राचीनता को विश्व के पुरातात्विक मानचित्र पर एक गौरवशाली स्थान प्रदान किया है, जो सराहनीय है।

250. (A) आम्रकार्दव
सांची के शिलालेख में सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय के अधिकारी 'आम्रकार्दव' द्वारा किए गए दानों का उल्लेख मिलता है। आम्रकार्दव एक बौद्ध धर्मावलंबी थे, जिन्होंने सांची के भिक्षु संघ के रखरखाव के लिए उदारतापूर्वक आर्थिक सहयोग प्रदान किया था। यह शिलालेख न केवल गुप्त काल की प्रशासनिक संरचना पर प्रकाश डालता है, बल्कि यह सम्राटों की धार्मिक सहिष्णुता की भी पुष्टि करता है। यह अभिलेख तत्कालीन समाज की परोपकारी प्रवृत्तियों और विभिन्न धर्मों के बीच विद्यमान शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का एक अत्यंत सशक्त और प्रामाणिक ऐतिहासिक साक्ष्य प्रस्तुत करता है।

251. (D) ग्वालियर
कच्छपघात राजवंश की सबसे शक्तिशाली शाखा मुख्य रूप से 'ग्वालियर' क्षेत्र में शासन करती थी। इस राजवंश ने 10वीं शताब्दी के दौरान ग्वालियर के रणनीतिक किले को अपनी शक्ति का मुख्य केंद्र बनाया। राजा महिपाल के शासनकाल में ग्वालियर कला और स्थापत्य का समृद्ध केंद्र बना, जहाँ उन्होंने 'सास-बहू मंदिर' जैसे अद्भुत ऐतिहासिक स्मारकों का निर्माण कराया। ग्वालियर की यह शाखा अपनी सैन्य कुशलता और भव्य निर्माण कार्यों के लिए प्रसिद्ध है, जो आज भी इस क्षेत्र की राजनैतिक और सांस्कृतिक पहचान का एक अमूल्य हिस्सा बनी हुई है।

252. (B) संग्राम शाह
दमोह जिले में स्थित 'सिंगोरगढ़ किले' के निर्माण और इसे साम्राज्य के केंद्र के रूप में विकसित करने का श्रेय गोंड शासक 'संग्राम शाह' को दिया जाता है। उन्होंने अपनी वीरता से 52 गढ़ों पर विजय प्राप्त की और सिंगोरगढ़ को अपनी सामरिक शक्ति का प्रमुख स्तंभ बनाया। बाद में, यह किला रानी दुर्गावती के संघर्ष का भी महत्वपूर्ण गवाह बना। संग्राम शाह द्वारा कराया गया यह निर्माण गोंडवाना साम्राज्य की सैन्य शक्ति और उस युग की राजनैतिक स्थिरता का एक सशक्त पुरातात्विक प्रतीक माना जाता है जो आज भी खंडहरों में विद्यमान है।

253. (C) खान (कान्ह)
इंदौर के होल्कर राजवंश के शासकों की स्मृति में निर्मित भव्य 'छतरियाँ' शहर की 'खान' (कान्ह) नदी के तट पर स्थित हैं। ये छतरियाँ अपनी मराठा स्थापत्य शैली की सुंदरता और ऐतिहासिक महत्ता के लिए जानी जाती हैं। नदी के किनारे स्थित ये स्मारक होल्कर शासकों के वैभव और कला के प्रति उनके गहरे अनुराग को प्रदर्शित करते हैं। यहाँ अहिल्याबाई होल्कर की छतरियाँ श्रद्धा और पर्यटन का मुख्य केंद्र हैं, जो इंदौर के

बल्कि यह बौद्ध और भागवत धर्म के संगम का भी स्थल था। यहाँ का सुप्रसिद्ध गरुड़ स्तंभ आज भी इसके गौरवशाली अतीत और प्राचीन नाम 'बेसनगर' की ऐतिहासिक महत्ता का सशक्त प्रमाण है।

217. (C) रायसेन
भीमबेटका की गुफाएं मध्य प्रदेश के रायसेन जिले के अंतर्गत विंध्याचल की पहाड़ियों में स्थित हैं। ये गुफाएं अपनी ऐतिहासिक महत्ता के कारण यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं। रायसेन जिले का यह क्षेत्र आदिमानव के लिए एक आदर्श आश्रय स्थल रहा है। यहाँ की सात सौ से अधिक गुफाओं में बने प्रागैतिहासिक शैल चित्र मानव सभ्यता के विकास के विभिन्न चरणों को अद्भुत तरीके से दर्शाते हैं। भीमबेटका की खोज ने रायसेन जिले को विश्व के पुरातात्विक मानचित्र पर एक सम्मानजनक स्थान प्रदान किया है।

218. (A) सूर्य
मंदसौर का सुप्रसिद्ध शिलालेख एक भव्य 'सूर्य मंदिर' के निर्माण की प्रशंसा में उत्कीर्ण किया गया है। 5वीं शताब्दी के इस अभिलेख के अनुसार, रेशम बुनकरों की एक श्रेणी ने भगवान सूर्य के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए इस मंदिर का निर्माण कराया था। शिलालेख में सूर्य को संपूर्ण जगत का आधार बताया गया है। यह साक्ष्य न केवल गुप्त काल की धार्मिक प्रवृत्तियों को उजागर करता है, बल्कि उस युग की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और व्यापारिक श्रेणियों के उत्कृष्ट योगदान का भी प्रमाण है।

219. (D) कोकल्लम प्रथम
कलचुरी राजवंश की स्थापना और वास्तविक राजनैतिक नींव का गौरव 'कोकल्लम प्रथम' को प्राप्त है। उन्होंने 9वीं शताब्दी में स्वतंत्र सत्ता की स्थापना की और जबलपुर के निकट त्रिपुरी को अपनी राजधानी बनाया। उन्होंने सैन्य विजयों के साथ प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के साथ राजनैतिक संबंध स्थापित कर अपनी स्थिति मजबूत की। उनके कुशल नेतृत्व में कलचुरी राजवंश मध्य भारत की प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरा, जिसने सदियों तक यहाँ की कला, संस्कृति और राजनीति को गहराई से प्रभावित किया, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

220. (B) बुरहानपुर
'बुरहानपुर' शहर ऐतिहासिक फारुकी वंश की गौरवशाली राजधानी थी। ताप्ती नदी के तट पर स्थित यह नगर अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण 'दक्षिण के द्वार' के रूप में जाना जाता था। फारुकी सुल्तानों ने यहाँ कई सुंदर महलों और मस्जिदों का निर्माण कराया, जिन्होंने बुरहानपुर को एक समृद्ध व्यापारिक केंद्र बनाया। मुगलों के आगमन से पहले तक यह शहर स्वतंत्र फारुकी सत्ता का मुख्य केंद्र बना रहा। यहाँ की वास्तुकला में स्थानीय शैलियों का सुंदर समन्वय मिलता है, जो आज भी इसके वैभव की याद दिलाता है।

221. (D) उपरोक्त सभी
सिंधिया राजवंश के संबंध में दिए गए सभी तथ्य ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं। राणोजी सिंधिया ने इस वंश की नींव रखी और ग्वालियर बाद में उनकी स्थायी राजधानी बनी। महादजी सिंधिया ने पानीपत के युद्ध के बाद मराठा शक्ति को पुनर्जीवित करने और उत्तर भारत में पुनः प्रभुत्व स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाई थी। सिंधिया राज्य ने न केवल सैन्य मोर्चों पर सफलता पाई बल्कि कला और स्थापत्य के क्षेत्र में भी मध्य प्रदेश के इतिहास में अपना अमूल्य और अविस्मरणीय योगदान दिया है।

222. (D) सादत खान
1857 के विद्रोह के दौरान इंदौर की ब्रिटिश रेजीडेंसी और महू छावनी में विद्रोह की मशाल 'सादत खान' ने जलाई थी। वे होल्कर रियासत के एक निडर सैनिक अधिकारी थे जिन्होंने स्थानीय टुकड़ियों को संगठित कर अंग्रेजों पर हमला बोला। उनके नेतृत्व में विद्रोहियों ने ब्रिटिश अधिकारियों को भागने पर मजबूर कर दिया। यद्यपि बाद में उन्हें अंग्रेजों ने फांसी दे दी, लेकिन उनका साहस मालवा क्षेत्र में स्वतंत्रता आंदोलन की एक अमर और प्रेरक गाथा बन गया है, जो राष्ट्रभक्ति का सर्वोच्च उदाहरण है।

223. (A) छिंदवाड़ा
बादल भोई छिंदवाड़ा जिले के एक अत्यंत सम्मानित आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने जनजातीय समाज को संगठित कर ब्रिटिश सत्ता की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध सशक्त आवाज उठाई। असहयोग आंदोलन के दौरान उनकी सक्रिय भागीदारी ने उन्हें जन-जन का प्रिय नेता बना दिया। छिंदवाड़ा में उनके बलिदान की स्मृति में एक संग्रहालय भी स्थापित किया गया है। बादल भोई का जीवन जनजातीय गौरव और विदेशी गुलामी के विरुद्ध अटूट प्रतिरोध का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो आज भी प्रेरणा का निरंतर स्रोत बना हुआ है।

224. (B) विद्याधर
खजुराहो के मंदिरों में सबसे भव्य 'कंदरिया महादेव मंदिर' का निर्माण चंदेल राजा विद्याधर द्वारा कराया गया था। 11वीं शताब्दी के आरंभ में निर्मित यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और अपनी अद्वितीय स्थापत्य कला के लिए जाना जाता है। राजा विद्याधर ने यह मंदिर संभवतः महमूद गजनवी पर अपनी सफल सैन्य विजयों की स्मृति में बनवाया था। यह मंदिर चंदेल स्थापत्य शैली के चरमोत्कर्ष का प्रतीक है और भारतीय वास्तुकला के इतिहास में एक अनमोल रत्न के रूप में सुरक्षित है।

225. (B) आदि मानव कपाल
सीहोर जिले में नर्मदा नदी के तट पर स्थित 'हथनोरा' ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ से 'आदि मानव के कपाल' का जीवाश्म प्राप्त हुआ है। 1982 में की गई यह खोज भारतीय उपमहाद्वीप में मानव की प्राचीनता को सिद्ध करने वाला पहला और ठोस प्रमाण है। इसे 'नर्मदा मानव' के नाम से जाना जाता है। यह खोज प्रमाणित करती है कि लाखों वर्ष पहले भी नर्मदा घाटी आदिमानव के निवास और उनके क्रमिक विकास के लिए एक अत्यंत अनुकूल और महत्वपूर्ण क्षेत्र रही थी।

280. (A) सिकंदर जहाँ बेगम
1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भोपाल रियासत की बागडोर 'सिकंदर जहाँ बेगम' के हाथों में थी। उन्होंने राजनैतिक परिस्थितियों के कारण 'अंग्रेजों के प्रति वफादार' रहने की नीति अपनाई थी। यद्यपि उनकी सेना के सिपाहियों में विद्रोह की भावना थी, लेकिन बेगम ने ब्रिटिश सरकार को सैन्य और प्रशासनिक सहयोग प्रदान किया। उनकी इस नीति के कारण अंग्रेजों ने उन्हें विभिन्न उपाधियों से नवाजा और भोपाल रियासत को भविष्य में राजनैतिक लाभ प्राप्त हुए। सिकंदर जहाँ बेगम का यह निर्णय रियासत के हितों की रक्षा करने की उनकी कूटनीतिक सूझबूझ का हिस्सा था।

281. (C) मोरन खान
1857 के विद्रोह के दौरान मध्य प्रदेश के 'महिदपुर' क्षेत्र में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व विद्रोही नेता 'मोरन खान' ने किया था। उन्होंने स्थानीय सैनिकों को संगठित कर ब्रिटिश छावनी पर हमला बोला और विदेशी शासन को कड़ी चुनौती दी। महिदपुर का यह विद्रोह मालवा क्षेत्र में राष्ट्रवादी चेतना के प्रसार का महत्वपूर्ण पड़ाव था। मोरन खान की वीरता ने सिद्ध कर दिया कि स्वतंत्रता की ज्वाला राज्य के छोटे अंचलों में भी गहराई तक व्याप्त थी। मोरन खान का संघर्ष स्थानीय इतिहास में देशभक्ति के एक गौरवशाली अध्याय के रूप में सदैव जीवित रहेगा।

282. (A) बैजाबाई शिंदे
उज्जैन के प्रसिद्ध 'गोपाल मंदिर' का भव्य निर्माण सिंधिया राजवंश की प्रभावशाली महिला 'महारानी बैजाबाई शिंदे' ने कराया था। 19वीं शताब्दी में निर्मित यह मंदिर भगवान कृष्ण को समर्पित है और अपनी मराठा स्थापत्य शैली के लिए विश्व विख्यात है। बैजाबाई ने न केवल इस मंदिर का निर्माण कराया, बल्कि उज्जैन के अन्य धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गोपाल मंदिर आज भी उज्जैन की धार्मिक आस्था का मुख्य केंद्र और सिंधिया राजवंश के कला एवं संस्कृति के प्रति उनके अटूट समर्पण का एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक प्रतीक माना जाता है।

283. (D) जातक कथाएँ और जनजीवन
धार जिले में स्थित ऐतिहासिक 'बाघ गुफाओं' के चित्र मुख्य रूप से 'जातक कथाओं' और तत्कालीन 'दैनिक जनजीवन' को दर्शाते हैं। गुप्त कालीन कला के इन नमूनों में संगीत, नृत्य और मानवीय भावनाओं का रंगीन चित्रण मिलता है। बाघ के चित्र अपने लौकिक और सामाजिक चित्रण के लिए विख्यात हैं। ये चित्र तत्कालीन वेशभूषा और कलात्मक अभिरुचि के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं। यद्यपि समय के साथ कई चित्र धुंधले हो गए हैं, लेकिन शेष अवशेष आज भी भारतीय चित्रकला के स्वर्ण युग की गौरवशाली गाथा सुनाते हैं जो ऐतिहासिक रूप से मूल्यवान है।

284. (B) उच्चकल्प
बघेलखंड क्षेत्र पर 5वीं शताब्दी के दौरान 'उच्चकल्प' राजवंश ने अपना राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित किया था। इस राजवंश के शासकों के ताम्रपत्रों से उनके शासनकाल और प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। उच्चकल्प राजाओं ने गुप्त साम्राज्य के सामंतों के रूप में कार्य किया और इस पहाड़ी क्षेत्र में राजनैतिक स्थिरता और ब्राह्मण धर्म के प्रचार में योगदान दिया। उनका शासनकाल कला और भूमि दान की परंपराओं के लिए जाना जाता है। बघेलखंड के प्राचीन इतिहास को समझने में उच्चकल्प वंश के अभिलेख एक अत्यंत विश्वसनीय प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत की भूमिका निभाते हैं।

285. (C) बेतवा
ऐतिहासिक शहर 'विदिशा' पवित्र 'बेतवा' नदी के तट पर स्थित है। यह नदी विदिशा की आर्थिक संपन्नता और इसके राजनैतिक महत्व का मुख्य आधार रही है। प्राचीन काल में व्यापारिक मार्ग इसी नदी के किनारों से होकर गुजरते थे, जिसने विदिशा को समृद्ध नगर बनाया। बेतवा के तट पर ही बेसनगर का गरुड़ स्तंभ और उदयगिरि की गुफाएं स्थित हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक महत्ता को प्रदर्शित करती हैं। बेतवा के प्रवाह ने सदियों तक विदिशा की सभ्यताओं को फलने-फूलने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान किया है, जिससे यह राज्य की एक जीवनदायिनी नदी के रूप में प्रतिष्ठित है।

286. (D) बुंदेलखंड और बघेलखंड
1948 में गठित 'विंध्य प्रदेश' मुख्य रूप से 'बुंदेलखंड और बघेलखंड' की पूर्ववर्ती रियासतों को मिलाकर बनाया गया था। रीवा को इसकी राजधानी बनाया गया और इसमें ओरछा एवं पन्ना जैसी प्रमुख रियासतें शामिल थीं। इस प्रदेश का गठन इन दोनों अंचलों की सांस्कृतिक और प्रशासनिक एकता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से किया गया था। 1956 तक विंध्य प्रदेश एक स्वतंत्र राजनैतिक इकाई के रूप में कार्य करता रहा, जिसके बाद इसे नए मध्य प्रदेश में विलीन कर दिया गया। विंध्य प्रदेश का इतिहास इन दोनों क्षेत्रों के राजनैतिक एकीकरण का एक महत्वपूर्ण अध्याय है।

287. (A) खजाना लूटकर निर्धनों की सहायता हेतु
आदिवासी नायक टंट्या भील को 'इंडियन रॉबिन हुड' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनका उद्देश्य ब्रिटिश 'खजानों को लूटकर उस धन को निर्धनों में वितरित करना' था। वे विदेशी सत्ता की आर्थिक गुलामी के विरुद्ध मसीहा बनकर उभरे। टंट्या भील ने अकाल के समय में जनजातीय समाज की व्यापक आर्थिक सहायता की, जिससे वे उनके बीच 'टंट्या मामा' के रूप में श्रद्धेय हो गए। उनकी यह परोपकारी कार्यप्रणाली ही उन्हें अन्य क्रांतिकारियों से अलग बनाती थी। उनका संघर्ष केवल सत्ता के विरुद्ध नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक न्याय की स्थापना के लिए भी था।

288. (B) अशोकनगर
ऐतिहासिक 'चंदेरी का किला' वर्तमान में 'अशोकनगर' जिले के अंतर्गत आता है। यह किला अपनी सामरिक स्थिति और बेजोड़ बुंदेली वास्तुकला के समन्वय के लिए विख्यात है। चंदेरी का किला सदियों तक मालवा और बुंदेलखंड के बीच राजनैतिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र रहा है। यहाँ स्थित 'जौहर कुंड' राजपूत वीरांगनाओं के बलिदान की गाथा सुनाता है। अशोकनगर जिले की यह गौरवशाली विरासत आज भी

उम्मीदवार को हराकर अध्यक्ष पद जीता था। इस घटना ने कांग्रेस के भीतर वैचारिक मतभेदों और भविष्य की रणनीति पर गंभीर बहस को जन्म दिया। जबलपुर का यह अधिवेशन राष्ट्रीय राजनीति में मध्य प्रदेश की सक्रिय भागीदारी और राजनैतिक दिशा निर्धारण में इसके महत्व का एक शक्तिशाली प्रतीक है।

236. (B) पोर्ट ब्लेयर (अंडमान)
वीर आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी भीमाजी नायक को अंग्रेजों ने उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण बंदी बना लिया था। उन्हें सजा के तौर पर 'कालापानी' के लिए पोर्ट ब्लेयर भेज दिया गया। अपनी मातृभूमि से दूर, उन्होंने जेल की यातनाओं को सहा और 1876 में पोर्ट ब्लेयर में ही उनका देहांत हो गया। भीमाजी नायक का यह बलिदान निस्वार्थ देशभक्ति और विदेशी शासन के विरुद्ध आजीवन संघर्ष का प्रेरक उदाहरण है। उनकी मृत्यु उनके उस कठिन संघर्ष का अंत थी जो उन्होंने निमाड़ के जंगलों से शुरू किया था।

237. (C) बुरहानपुर
ऐतिहासिक 'असीरगढ़ किला', जिसे 'दक्षिण की कुंजी' कहा जाता है, बुरहानपुर जिले में स्थित है। सतपुड़ा की पहाड़ियों पर बना यह विशाल किला अपनी अभेद्य बनावट के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध रहा है। मध्यकाल में दक्षिण भारत की ओर जाने वाले मार्गों पर नियंत्रण के लिए इस किले पर अधिकार करना अनिवार्य माना जाता था। असीरगढ़ के किले ने फारुकी वंश और मुगलों के शासनकाल में महत्वपूर्ण सैन्य केंद्र की भूमिका निभाई थी। इसकी विशाल संरचनाएँ आज भी बुरहानपुर के गौरवशाली इतिहास की गाथा सुनाती हैं।

238. (D) बंधुवर्मा
बंधुवर्मा औलीकर वंश के एक अत्यंत महत्वपूर्ण शासक थे, जिन्होंने मंदसौर से शासन किया था। वे गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम के समकालीन और उनके सामंत थे। मंदसौर के प्रसिद्ध शिलालेख में बंधुवर्मा के शासनकाल का विवरण मिलता है, जिसमें उनके द्वारा रेशम बुनकरों को संरक्षण देने और सूर्य मंदिर के निर्माण में सहयोग का उल्लेख है। बंधुवर्मा का शासनकाल प्रशासनिक कुशलता और धार्मिक उदारता को दर्शाता है। उनकी यह विरासत मध्य प्रदेश के प्राचीन राजनैतिक इतिहास को समझने के लिए अत्यंत विश्वसनीय ऐतिहासिक स्रोत है।

239. (A) इंदौर और ग्वालियर
1948 में 'मध्य भारत' प्रांत के गठन के समय इंदौर और ग्वालियर को संयुक्त रूप से राजधानियाँ बनाया गया था। ग्वालियर को शीतकालीन राजधानी और इंदौर को ग्रीष्मकालीन राजधानी का दर्जा प्राप्त था। यह व्यवस्था इन दोनों रियासतों के बीच संतुलन बनाए रखने और प्रशासनिक विकेंद्रीकरण के उद्देश्य से की गई थी। 1956 में आधुनिक मध्य प्रदेश के निर्माण तक यह द्वि-राजधानी व्यवस्था जारी रही, जिसने क्षेत्र के प्रशासनिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और यह दोनों शहरों के राजनैतिक गौरव का प्रतीक बना रहा।

240. (B) शिवपुरी
सिंधिया राजवंश के शासकों की भव्य 'छतरियाँ' मध्य प्रदेश के शिवपुरी शहर में स्थित हैं। ये छतरियाँ अपनी अद्भुत वास्तुकला और सफेद संगमरमर के उपयोग के लिए विख्यात हैं। विशेष रूप से महारानी साख्या राजे सिंधिया और माधवराव सिंधिया की छतरियाँ हिंदू और इस्लामी स्थापत्य शैली के सुंदर समन्वय का उदाहरण हैं। सुंदर बगीचों के बीच स्थित ये स्मारक न केवल सिंधिया वंश के वैभव को दर्शाते हैं, बल्कि ये पर्यटकों के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र भी हैं। शिवपुरी की ये छतरियाँ राज्य की सांस्कृतिक विरासत हैं।

241. (B) कायथा
'कायथा' मुख्य रूप से एक ताम्रपाषाण कालीन ग्रामीण बस्ती के रूप में जाना जाता है, न कि शैल चित्रों के स्थल के रूप में। यहाँ की खुदाई से मृदभाण्ड और तांबे के औजार प्राप्त हुए हैं जो तत्कालीन मानव की जीवनशैली को दर्शाते हैं। इसके विपरीत, भीमबेटका और आदमगढ़ अपनी गुफाओं और प्रागैतिहासिक शैल चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं, जहाँ आदिमानव ने अपनी कलात्मक भावनाओं को उकेरा था। कायथा का ऐतिहासिक महत्व तकनीकी विकास और प्रारंभिक कृषि बस्तियों के अध्ययन में निहित है, जो इसे शैल कला केंद्रों से अलग बनाता है।

242. (A) शक
उज्जैन के प्राचीन गर्दभिल्ल वंश का पतन विदेशी आक्रांताओं 'शकों' के आक्रमण के कारण हुआ था। प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में शकों ने मालवा पर आक्रमण कर राजा गर्दभिल्ल को सत्ता से अपदस्थ कर दिया और उज्जैन पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। यह भारतीय इतिहास का वह दौर था जब विदेशी जनजातियाँ भारतीय भूभाग पर अपनी पैठ बना रही थीं। बाद में उनके पुत्र विक्रमादित्य ने शकों को पराजित कर पुनः उज्जैन को मुक्त कराया। यह संघर्ष विदेशी आक्रमणकारियों और क्षेत्रीय शक्तियों के बीच सत्ता का महत्वपूर्ण अध्याय है।

243. (C) ध्रुपद
राजा मान सिंह तोमर को शास्त्रीय संगीत की 'ध्रुपद' शैली के पुनरुद्धार और संरक्षण का महान श्रेय दिया जाता है। वे स्वयं संगीत के असाधारण ज्ञाता थे और उन्होंने 'मानकौतूहल' नामक ग्रंथ की रचना करवाई थी। उनके संरक्षण में ग्वालियर संगीत का विश्वविख्यात केंद्र बना, जहाँ तानसेन जैसे महान संगीतकारों ने अपनी कला को निखारा। राजा मान सिंह द्वारा ध्रुपद शैली को दी गई यह नई ऊँचाई आज भी ग्वालियर घराने की संगीत परंपरा और भारतीय सांस्कृतिक गौरव के रूप में जीवित एवं अत्यंत सम्मानित है।

244. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
अहिल्याबाई होल्कर अपनी धार्मिक निष्ठा और असाधारण प्रशासनिक कुशलता के लिए विख्यात थीं। यद्यपि वे एक सशक्त शासिका थीं, लेकिन उनकी ख्याति युद्धों के बजाय मंदिरों के जीर्णोद्धार और प्रजा की सेवा करने में अधिक रही है। उन्होंने पूरे भारत में काशी और सोमनाथ जैसे पवित्र स्थानों पर मंदिरों का निर्माण कराया। उनका शासन सुशासन और

207. (A) बेसनगर
'हेलियोडोरस स्तंभ' मध्य प्रदेश के प्राचीन नगर 'बेसनगर' में स्थित है, जो वर्तमान विदिशा के निकट है। यह स्तंभ ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी का है और इसकी स्थापना यूनानी राजदूत हेलियोडोरस ने की थी। यह महत्वपूर्ण पुरातात्विक साक्ष्य है जो शुंग काल के दौरान भागवत धर्म के प्रभाव और अंतरराष्ट्रीय राजनैतिक संबंधों की पुष्टि करता है। स्तंभ पर खुदा शिलालेख हेलियोडोरस की व्यक्तिगत श्रद्धा को प्रदर्शित करता है, जो इसे एक अद्वितीय और गौरवशाली ऐतिहासिक स्मारक बनाता है, जो अत्यंत प्रशंसनीय है।

208. (B) मांडू
धार जिले में स्थित 'मांडू' में 'बाज़ बहादुर महल' और 'रानी रूपमती मंडप' जैसे सुंदर स्थापत्य नमूने स्थित हैं। ये इमारतें मालवा के सुल्तान बाज़ बहादुर और रानी रूपमती की अमर प्रेम कहानी की मूक साक्षी हैं। रानी रूपमती का मंडप ऊँची पहाड़ी पर स्थित है जहाँ से नर्मदा के दर्शन होते हैं। मांडू के ये स्मारक न केवल कलात्मक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं बल्कि ये मध्यकालीन भारत के राजसी वैभव और लोककथाओं का भी एक जीवंत ऐतिहासिक केंद्र माने जाते हैं।

209. (B) लघु पाषाण उपकरण
मध्यपाषाण काल की प्रमुख तकनीकी विशेषता 'लघु पाषाण उपकरणों' का उपयोग है। ये उपकरण बहुत ही छोटे और अधिक प्रभावी पत्थर के टुकड़ों से बने होते थे, जिन्हें हत्थों में बांधकर तीर और भाले जैसे उन्नत हथियार बनाए जाते थे। पुरापाषाण काल के भारी औजारों की तुलना में ये उपकरण अधिक सटीक थे, जिससे शिकार में सुगमता आई। मध्य प्रदेश के आदमगढ़ जैसे स्थलों पर इन सूक्ष्म औजारों की प्रचुरता तत्कालीन मानव की तकनीकी प्रगति और बदलती जीवनशैली को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करती है।

210. (A) हूण और गुप्तों से बड़े क्षेत्र पर
औलीकर शासक यशोधर्मन ने शिलालेखों में दावा किया है कि उनका राजनैतिक प्रभाव उन क्षेत्रों तक विस्तृत था जहाँ स्वयं गुप्त सम्राटों या हूणों की पहुँच भी नहीं थी। उन्होंने हूण राजा मिहिरकुल को पराजित कर अपनी संप्रभुता स्थापित की। यशोधर्मन का यह दावा उनकी असाधारण सैन्य शक्ति और साम्राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा को दर्शाता है। उनकी यह उपलब्धि गुप्त साम्राज्य के अवसान के बाद मध्य भारत में एक नई राजनैतिक स्थिरता और क्षेत्रीय स्वाभिमान की पुनर्स्थापना का महत्वपूर्ण प्रतीक मानी जाती है।

211. (C) भोजशाला
राजा भोज ने धार में ज्ञान और कला को बढ़ावा देने के लिए 'भोजशाला' नामक संस्कृत अध्ययन केंद्र और विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। यह स्थान विद्या की देवी सरस्वती को समर्पित था और यहाँ देश-विदेश से विद्वान शिक्षा के लिए आते थे। भोजशाला तत्कालीन स्थापत्य कला का भी एक अद्भुत नमूना था। राजा भोज के इस प्रयास ने धार को मध्यकालीन भारत में शिक्षा का प्रतिष्ठित केंद्र बना दिया, जिसकी ख्याति आज भी इतिहास में सुरक्षित है। यह उनकी महान बौद्धिक विरासत का प्रमाण है।

212. (A) सर्वोच्चता और नियंत्रण के लिए संघर्ष
18वीं शताब्दी में सिंधिया और होल्कर रियासतों के बीच संघर्ष का मुख्य कारण राजनैतिक सर्वोच्चता और संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त करना था। दोनों राजवंश पेशवा के दरबार में अपना प्रभुत्व बढ़ाना चाहते थे और मालवा के व्यापारिक मार्गों पर एकाधिकार चाहते थे। महादजी सिंधिया की बढ़ती शक्ति ने होल्करों के लिए सामरिक चुनौती पेश की, जिससे सैन्य टकराव हुए। इस आपसी कलह ने मराठा परिसंघ को कमजोर किया और अंग्रेजों को इस क्षेत्र में अपनी विस्तारवादी नीतियां प्रभावी करने का अवसर प्रदान किया।

213. (C) दमन और गिरफ्तारी
1842 का बुंदेला विद्रोह साहस का उत्कृष्ट उदाहरण था, लेकिन अंततः यह ब्रिटिश सेना की बेहतर सैन्य शक्ति के कारण दमन के रूप में समाप्त हुआ। अंग्रेजों ने क्रूरतापूर्वक विद्रोह का मुकाबला किया और प्रमुख नेताओं को पकड़कर फांसी दे दी। इस विद्रोह के कुचले जाने के बाद इस क्षेत्र में ब्रिटिश प्रशासनिक पकड़ और कड़ी हो गई। हालाँकि, इस दमन ने स्थानीय जनता के मन में भारी असंतोष पैदा किया, जो बाद में 1857 के महान संग्राम के रूप में प्रकट हुआ था।

214. (B) आदिवासी और ग्रामीण लामबंदी
'जंगल सत्याग्रह' का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रभाव यह था कि इसने स्वतंत्रता आंदोलन को शहरों से निकालकर दूरस्थ वनों और ग्रामीण अंचलों तक पहुँचाया। इसमें पहली बार आदिवासी समुदायों ने संगठित होकर ब्रिटिश सत्ता को सीधी चुनौती दी। इस आंदोलन ने सिद्ध कर दिया कि विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष केवल शिक्षित शहरी वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जनजातीय लोगों के स्वाभिमान की भी लड़ाई है। इस व्यापक लामबंदी ने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नया सामाजिक आधार और जनशक्ति प्रदान की थी।

215. (D) जंगल सत्याग्रह
गुंजन सिंह कोरकू को मुख्य रूप से 1930 में बैतूल जिले में हुए 'जंगल सत्याग्रह' के कुशल नेतृत्व के लिए याद किया जाता है। उन्होंने अंग्रेजों के दमनकारी वन कानूनों के विरुद्ध हजारों आदिवासियों को संगठित किया और उनके पारंपरिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उनके अदम्य साहस ने जनजातीय समाज में आत्मविश्वास भरा और उन्हें राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की मुख्यधारा से जोड़ा। उनका संघर्ष आज भी आदिवासी स्वाभिमान और उनके अधिकारों के प्रति निष्ठा का एक अत्यंत गौरवशाली और प्रेरणादायक ऐतिहासिक प्रतीक माना जाता है।

216. (A) बेसनगर
विदिशा शहर प्राचीन काल में 'बेसनगर' के नाम से जाना जाता था। यह बेतवा नदी के तट पर स्थित एक अत्यंत समृद्ध व्यापारिक और राजनैतिक केंद्र था। शुंग काल के दौरान यह शहर अपनी समृद्धि के चरमोत्कर्ष पर था और एक प्रमुख राजधानी के रूप में उभरा। बेसनगर न केवल आर्थिक गतिविधियों का पड़ाव था,

गौरवशाली सांस्कृतिक और राजनैतिक इतिहास की मूक साक्षी बनी हुई हैं और अत्यंत आकर्षक हैं।

254. (D) नरवर
1857 के महान सेनानी तात्या टोपे को विश्वासघात के कारण मध्य प्रदेश के 'नरवर' के जंगलों में पकड़ लिया गया था। नरवर की विषम परिस्थितियों में तात्या टोपे ने लंबे समय तक अंग्रेजों को छकाया और छापामार युद्ध नीति से उन्हें संकट में डाले रखा। उनके पकड़े जाने की घटना स्वतंत्रता आंदोलन का एक अत्यंत दुखद मोड़ थी, क्योंकि इसके बाद सशस्त्र विद्रोह का मुख्य नेतृत्व कमजोर पड़ गया। नरवर की यह भूमि आज भी उस वीर क्रांतिकारी के साहस, संघर्ष और उनके साथ हुए ऐतिहासिक छल की याद दिलाती है।

255. (A) गौर (बाइसन)
भीमबेटका के शैल चित्रों में वन्य जीवों का सजीव चित्रण मिलता है, जिनमें 'गौर' (बाइसन) की आकृतियां सर्वाधिक बार और प्रमुखता से उकेरी गई हैं। आदिमानव ने इस शक्तिशाली पशु को अपनी कला का मुख्य विषय बनाया, जो संभवतः इसकी शक्ति के प्रति उनके सम्मान को दर्शाता है। इन चित्रों में गौर को दौड़ते हुए और समूह में विचरते हुए बड़ी सूक्ष्मता से दिखाया गया है। प्राकृतिक रंगों से बने ये चित्र आदिमानव की अवलोकन क्षमता और प्रकृति के साथ उनके गहरे जुड़ाव को प्रदर्शित करते हैं, जो आज भी शोधकर्ताओं को अचंभित करते हैं।

256. (B) हिंदू और जैन
विदिशा के निकट स्थित 'उदयगिरि की गुफाएं' मुख्य रूप से हिंदू और जैन धर्म की प्राचीन धार्मिक परंपराओं से संबंधित हैं। इन गुफाओं का निर्माण मुख्य रूप से गुप्त काल के दौरान किया गया था। यहाँ स्थित 20 गुफाओं में भगवान विष्णु के वराह अवतार और शिव की मूर्तियों के साथ-साथ जैन तीर्थंकरों की शांत प्रतिमाएं भी स्थित हैं। उदयगिरि का यह गुफा परिसर गुप्त सम्राटों की धार्मिक सहिष्णुता और विभिन्न पंथों को दिए गए उनके उदार संरक्षण का एक सर्वोत्कृष्ट ऐतिहासिक उदाहरण है। ये गुफाएं प्राचीन भारतीय स्थापत्य के विकास के महत्वपूर्ण पड़ाव हैं।

257. (B) ग्वालियर
ग्वालियर में स्थित ऐतिहासिक 'ग्वालियर किले' को इसकी अभेद्य बनावट और सामरिक महत्ता के कारण 'भारत का जिब्राल्टर' कहा जाता है। यह किला सदियों तक मध्य भारत की राजनीति का मुख्य केंद्र रहा है और इसे 'किलों का रत्न' भी माना जाता है। मुगल सम्राट बाबर ने भी इसकी मजबूती और सुंदरता की प्रशंसा की थी। किले के भीतर स्थित मान मंदिर और तेली का मंदिर इसकी अद्वितीय स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। अपनी ऊँचाई के कारण यह ऐतिहासिक रूप से अजेय माना जाता था, जो इसे पूरे देश के अन्य किलों से विशिष्ट बनाता है।

258. (A) बुंदेलखंड
'परिव्राजक' राजवंश ने 5वीं शताब्दी के दौरान मध्य प्रदेश के 'बुंदेलखंड' और विंध्य पर्वतीय क्षेत्रों पर अपनी सत्ता स्थापित की थी। इस वंश के शासक स्वयं को एक संन्यासी पूर्वज का वंशज मानते थे, इसलिए उन्हें 'परिव्राजक महाराजा' कहा जाता था। उनके अभिलेखों से स्पष्ट होता है कि वे गुप्त साम्राज्य के अत्यंत निष्ठावान सामंत थे और उन्होंने इस दुर्गम क्षेत्र में गुप्तों की प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूती प्रदान की थी। परिव्राजक वंश का शासन इस क्षेत्र में राजनैतिक स्थिरता और ब्राह्मण संस्कृति के विकास का एक महत्वपूर्ण काल माना जाता है।

259. (C) मराठा सर्वोच्चता और मुगल सम्राट पर नियंत्रण
महादजी सिंधिया का निर्णायक योगदान उत्तर भारत में पुनः 'मराठा सर्वोच्चता' स्थापित करना था। उन्होंने अपनी आधुनिक सैन्य शक्ति से न केवल प्रतिष्ठा वापस पाई, बल्कि मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय को अपने पूर्ण संरक्षण में ले लिया। दिल्ली के सिंहासन पर उनकी मर्जी के बिना कोई निर्णय नहीं हो सकता था, जिससे वे मराठा साम्राज्य के वास्तविक संचालक बनकर उभरे। महादजी की इस सफलता ने सिंधिया राजवंश को एक अखिल भारतीय राजनैतिक शक्ति बनाया, जिसने लंबे समय तक भारत के राजनैतिक भविष्य को नियंत्रित किया था, जो अत्यंत गौरवपूर्ण है।

260. (D) 1949
भोपाल रियासत औपचारिक रूप से '1 जून 1949' को भारतीय संघ में सम्मिलित हुई थी। स्वतंत्रता के समय नवाब ने स्वतंत्र सत्ता बनाए रखने का प्रयास किया था, जिसका स्थानीय जनता ने तीव्र विरोध किया। जन-आक्रोश और भारत सरकार के कूटनीतिक दबाव के परिणामस्वरूप नवाब को अंततः विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने पड़े। इस विलय के बाद भोपाल को 'भाग C' राज्य का दर्जा दिया गया और 1956 में इसे मध्य प्रदेश की राजधानी बनाया गया। यह घटना रियासतों के एकीकरण के इतिहास में एक महत्वपूर्ण और निर्णायक मोड़ साबित हुई थी।

261. (C) क्रांतिकारी बदला
खंडवा स्टेशन पर हुई 'पंजाब मेल हत्याकांड' की घटना का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों का 'क्रांतिकारी बदला' लेना था। यशवंत सिंह और उनके साथियों ने ब्रिटिश अधिकारी पर हमला कर अपनी देशभक्ति और विदेशी सत्ता के प्रति अपने तीव्र आक्रोश का परिचय दिया। यह घटना दर्शाती है कि मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता की तड़प केवल अहिंसक आंदोलनों तक सीमित नहीं थी, बल्कि स्थानीय युवाओं में सशस्त्र प्रतिरोध के माध्यम से मातृभूमि को स्वतंत्र कराने की प्रबल इच्छाशक्ति भी विद्यमान थी, जो अत्यंत प्रेरणादायक और ऐतिहासिक गौरवपूर्ण है।

262. (B) भरहुत
मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित 'भरहुत' एक अत्यंत प्रसिद्ध प्राचीन बौद्ध स्तूप स्थल है। यद्यपि वर्तमान में इस स्तूप के केवल कुछ ही अवशेष शेष हैं, लेकिन इसकी नक्काशी तत्कालीन बौद्ध कला और संस्कृति की उत्कृष्टता का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत

226. (A) सातवाहन
सांची स्तूप के सुंदर नक्काशीदार 'तोरणों' का निर्माण मौर्य काल के बाद 'सातवाहन' राजवंश के शासनकाल में किया गया था। यद्यपि मूल स्तूप अशोक द्वारा निर्मित कराया गया था, लेकिन सातवाहन काल के राजाओं ने इसके सौंदर्य को बढ़ाने के लिए इन भव्य तोरणों का विस्तार किया। इन तोरणों पर उकेरी गई कलाकृतियां सातवाहन कालीन उत्कृष्ट शिल्प कौशल का जीवंत प्रमाण हैं। ये प्रवेश द्वार बौद्ध दर्शन के साथ-साथ तत्कालीन सामाजिक जीवन को भी बड़ी सूक्ष्मता के साथ प्रदर्शित करते हैं, जो अद्भुत है।

227. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भोपाल रियासत में बेगमों के शासनकाल को वास्तव में एक 'स्वर्ण युग' माना जाता है। कुदसिया बेगम से लेकर सुल्तान जहाँ बेगम तक ने केवल राजनैतिक स्थिरता ही नहीं दी, बल्कि शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में क्रांतिकारी सुधार किए। उन्होंने जामा मस्जिद जैसी भव्य इमारतों का निर्माण कर स्थापत्य को नई ऊंचाइयां दीं। उनके द्वारा किए गए ये कार्य ही उनके शासन को विशिष्ट और जनकल्याणकारी बनाते हैं, जो भारतीय रियासतों के इतिहास में सुशासन का एक बेजोड़ उदाहरण है।

228. (D) उत्तराधिकारी की अमान्यता
रानी अवंतीबाई का अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह का मुख्य कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा उनके दत्तक पुत्र के उत्तराधिकार को अमान्य करना था। अंग्रेजों ने उनके राज्य पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए एक अधिकारी नियुक्त कर दिया, जिसे रानी ने अपने स्वाभिमान पर प्रहार माना। उन्होंने अन्याय स्वीकार करने के बजाय युद्ध का मार्ग चुना और 1857 के संग्राम में अपनी वीरता का लोहा मनवाया। रानी का यह संघर्ष उत्तराधिकार के अधिकार की रक्षा और विदेशी हस्तक्षेप के विरुद्ध एक राष्ट्रीय प्रतिरोध का प्रतीक है।

229. (C) सिवनी
1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 'तुरिया जंगल सत्याग्रह' सिवनी जिले में हुआ था। यह आंदोलन ब्रिटिश सरकार के दमनकारी वन कानूनों के विरुद्ध स्थानीय आदिवासियों का शांतिपूर्ण प्रतिरोध था। इस सत्याग्रह के दौरान मुड़े राय जैसे नेताओं ने घास काटकर अंग्रेजों की सत्ता को चुनौती दी थी। इस घटना के दौरान पुलिस की गोलीबारी में कई निर्दोष आदिवासी शहीद हुए, जिनके बलिदान ने पूरे क्षेत्र में स्वतंत्रता की ज्वाला को प्रज्वलित कर दिया। सिवनी का यह सत्याग्रह जनजातीय साहस की एक अमिट गाथा है।

230. (B) बौद्ध स्मारक
सांची के सुप्रसिद्ध स्तूप मुख्य रूप से 'बौद्ध स्मारक' हैं जो भगवान बुद्ध के अवशेषों और शांति के सिद्धांतों के सम्मान में निर्मित किए गए हैं। रायसेन जिले में स्थित ये स्तूप मौर्य सम्राट अशोक के समय से लेकर बाद के कई राजवंशों के कलात्मक संरक्षण के प्रतीक हैं। यहाँ का महान स्तूप अपनी आध्यात्मिक महत्ता के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। ये स्मारक न केवल पवित्र तीर्थ स्थल हैं, बल्कि प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला के उत्कृष्ट प्रतिनिधि हैं जो अहिंसा का संदेश देते हैं।

231. (D) मध्यपाषाण काल
'लघु पाषाण' का संबंध मुख्य रूप से 'मध्यपाषाण काल' से है। इस काल में जलवायु परिवर्तन के कारण मानव ने छोटे और अधिक उन्नत पत्थर के उपकरणों का निर्माण शुरु किया। ये उपकरण लकड़ी के हत्थों में जोड़कर प्रभावी हथियार बनाए जाते थे। मध्य प्रदेश के आदमगढ़ जैसे स्थलों से प्राप्त ये सूक्ष्म औजार आदिमानव की तकनीकी उन्नति और उनकी बौद्धिक प्रगति का अत्यंत महत्वपूर्ण पुरातात्विक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। यह काल ऐतिहासिक दृष्टि से मानव विकास के क्रम को समझने के लिए अत्यंत मूल्यवान माना जाता है।

232. (A) यशोवर्मन
खजुराहो के 'लक्ष्मण मंदिर' का निर्माण 10वीं शताब्दी में चंदेल राजा यशोवर्मन द्वारा कराया गया था। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है और अपनी भव्य पंचायतन शैली के लिए जाना जाता है। यशोवर्मन ने अपनी राजनैतिक शक्ति और सैन्य विजयों के गौरव को प्रदर्शित करने के लिए इस कलात्मक मंदिर की नींव रखी थी। मंदिर की बाहरी दीवारों पर उकेरी गई बारीक नक्काशी चंदेल कालीन स्थापत्य के उत्कर्ष को दर्शाती है। यह ऐतिहासिक धरोहर मध्यकालीन शिल्पकारों के असाधारण कौशल का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती है।

233. (C) मौर्य
परमार राजवंश के शासनकाल के दौरान 'मौर्य' वंश उनका प्रतिद्वंद्वी नहीं था क्योंकि मौर्य साम्राज्य परमारों के उदय से सदियों पूर्व समाप्त हो चुका था। परमारों के वास्तविक प्रतिद्वंद्वी उनके समकालीन चंदेल, कलचुरी और चालुक्य थे। इन शक्तियों के बीच मालवा की भूमि पर नियंत्रण के लिए संघर्ष होते रहते थे। प्रतिद्वंद्वी शक्तियों के साथ इस टकराव ने सैन्य कौशल और रणनीतिक सूझबूझ के विकास को प्रोत्साहित किया। यह ऐतिहासिक संदर्भ मध्य प्रदेश की क्षेत्रीय शक्तियों के मध्य सत्ता संघर्ष को स्पष्ट रूप से समझने में सहायक है।

234. (A) धार
मांडू नगर मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित है। यह नगर विंध्याचल की पहाड़ियों के बीच एक ऊंचे पठार पर बसा है और अपनी अद्वितीय स्थापत्य कला एवं प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। मांडू मध्यकाल में मालवा सल्तनत की राजधानी रहा है, जहाँ होशंग शाह जैसे सुल्तानों ने शासन किया। यहाँ के महल और मकबरे आज भी धार जिले के गौरवशाली इतिहास और कलात्मक वैभव की कहानी सुनाते हैं। अपनी ऐतिहासिक विरासत के कारण मांडू दुनिया भर के पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण केंद्र है।

235. (D) जबलपुर
कांग्रेस का ऐतिहासिक 52वाँ अधिवेशन, जिसे 'त्रिपुरी अधिवेशन' कहा जाता है, 1939 में जबलपुर के निकट त्रिपुरी में आयोजित हुआ था। यह अधिवेशन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने महात्मा गांधी द्वारा समर्थित

पुरातात्विक स्थल ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति के प्रमुख केंद्र रहे हैं, जहाँ प्राचीन बस्तियों के अवशेष प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं। गुर्जरा का ऐतिहासिक महत्व पूरी तरह से मौर्य कालीन राजनैतिक इतिहास से जुड़ा हुआ है। यह अंतर स्पष्ट करता है कि मध्य प्रदेश के विभिन्न स्थल अलग-अलग ऐतिहासिक कालखंडों के प्रतिनिधित्व के कारण अपनी विशिष्ट और अनूठी पहचान रखते हैं।

272. (B) एंटियाल्किडास
बेसनगर में गरुड़ स्तंभ स्थापित करने वाला 'हेलियोडोरस' वास्तव में यूनानी राजा 'एंटियाल्किडास' का राजनैतिक राजदूत था। उसे शुंग वंश के राजा भागभद्र के दरबार में भेजा गया था। हेलियोडोरस ने न केवल अपने राजनैतिक कर्तव्यों का निर्वाह किया, बल्कि वह भारतीय संस्कृति से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने भागवत धर्म को स्वयं अपना लिया। शिलालेख में उसके स्वामी का उल्लेख सिद्ध करता है कि प्राचीन काल में भारत और यूनानी राज्यों के बीच प्रगाढ़ राजनैतिक संबंध विद्यमान थे, जो अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान का अनूठा प्रमाण है।

273. (B) कन्नौज
'गुर्जर-प्रतिहार' साम्राज्य ने 'कन्नौज' को अपनी शक्ति का मुख्य केंद्र और स्थायी राजधानी बनाया था। यद्यपि इस वंश की प्रारंभिक जड़ें राजस्थान और उज्जैन क्षेत्र में थीं, लेकिन नागभट्ट द्वितीय के समय में कन्नौज पर अधिकार प्राप्त करना उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी। कन्नौज उस समय भारत का सबसे प्रतिष्ठित राजनैतिक केंद्र माना जाता था, जिस पर नियंत्रण के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ। राजधानी के रूप में गुर्जर-प्रतिहारों ने उत्तर भारत को लंबे समय तक राजनैतिक स्थिरता और विदेशी आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

274. (A) नरहर शाह
गढ़ा-मंडला के गोंडवाना साम्राज्य के 'अंतिम स्वतंत्र शासक' के रूप में 'नरहर शाह' का नाम इतिहास में अंकित है। यद्यपि रानी दुर्गावती के बाद साम्राज्य को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन नरहर शाह ने विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी सत्ता को बनाए रखने का प्रयास किया। उनके शासनकाल के बाद मराठों और मुगलों के बढ़ते दबाव के कारण गोंडवाना की स्वतंत्रता धीरे-धीरे समाप्त हो गई। नरहर शाह का शासन गोंड राजवंश की उस अंतिम राजनैतिक स्वायत्तता का प्रतीक है जिसने सदियों तक आदिवासी अंचलों में अपनी विशिष्ट पहचान को अक्षुण्ण रखा था।

275. (C) 1858
1857 के विद्रोह के पश्चात, ब्रिटिश संसद ने भारत के शासन को सीधे ब्रिटिश क्राउन को स्थानांतरित करने का निर्णय लिया, जिसकी घोषणा '1 नवंबर 1858' को की गई। इसे 'रानी की उद्घोषणा' कहा जाता है। इस दस्तावेज के माध्यम से रानी विक्टोरिया ने भारतीय रियासतों के साथ हुई संधियों के सम्मान और विद्रोहियों के लिए क्षमादान का आश्वासन दिया। इस घोषणा ने भारत की प्रशासनिक व्यवस्था में मौलिक परिवर्तन किए और ब्रिटिश राज के नए युग की शुरुआत की, जिसका प्रभाव मध्य प्रदेश की रियासतों के राजनैतिक भविष्य पर भी व्यापक पड़ा था।

276. (D) जबलपुर
वीरांगना 'रानी दुर्गावती' की ऐतिहासिक समाधि जबलपुर जिले के बरेला नामक स्थान पर स्थित है। यह वही क्षेत्र है जहाँ उन्होंने मुगलों की विशाल सेना के विरुद्ध वीरतापूर्वक युद्ध लड़ते हुए मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दिया था। रानी दुर्गावती का यह स्मारक आज भी उनके अदम्य साहस और स्वाभिमान की याद दिलाता है। प्रतिवर्ष उनके बलिदान दिवस पर यहाँ कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिसमें लोग उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। जबलपुर की यह पावन भूमि रानी के शौर्य की अमर गाथा को संजोए हुए है।

277. (C) ग्वालियर
ग्वालियर में स्थित 'जय विलास महल' सिंधिया राजवंश के वैभव का एक अद्वितीय प्रतीक है। 19वीं शताब्दी में निर्मित यह महल यूरोपीय स्थापत्य शैली का अद्भुत मिश्रण है। महल के भीतर विशाल दरबार हॉल और चाँदी की ट्रेन पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र हैं। इस महल का एक बड़ा हिस्सा अब संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है, जो सिंधिया वंश के इतिहास, अस्त्र-शस्त्रों और राजसी कलाकृतियों को प्रदर्शित करता है। जय विलास महल आज भी ग्वालियर की राजनैतिक और सांस्कृतिक शान का प्रतीक बना हुआ है और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

278. (B) सती
सागर जिले के 'एरण' का ऐतिहासिक शिलालेख भारतीय इतिहास में 'सती प्रथा' का सबसे प्राचीन 'अभिलेखीय साक्ष्य' प्रदान करता है। इस शिलालेख (510 ईस्वी) में वर्णन है कि सेनापति गोपराज की युद्ध में मृत्यु होने के बाद उनकी पत्नी ने उनके साथ अपने प्राण त्याग दिए थे। यह साक्ष्य तत्कालीन समाज की कठोर सामाजिक परंपराओं के दस्तावेजीकरण के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। एरण की इस खोज ने भारतीय समाज के क्रमिक विकास और मध्यकालीन सामाजिक प्रवृत्तियों को समझने में इतिहासकारों को एक ठोस और प्रामाणिक ऐतिहासिक आधार प्रदान किया है।

279. (D) भोपाल
राजा भोज का नाम राजधानी 'भोपाल' के पास स्थित विशाल 'ऊपरी झील' के साथ ऐतिहासिक रूप से जुड़ा हुआ है। माना जाता है कि राजा भोज ने ही इस विशाल जलाशय का निर्माण कराया था ताकि क्षेत्र की जल संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। उनकी इसी दूरदर्शिता के कारण शहर का नाम भी उनके नाम पर पड़ा। भोपाल में उनकी भव्य प्रतिमा इस झील के किनारे स्थापित की गई है, जो उनके जनकल्याण के प्रति योगदान को याद दिलाती है। राजा भोज की यह विरासत आज भी भोपाल की सांस्कृतिक पहचान का एक उत्कृष्ट और जीवंत उदाहरण है।

करती है। भरहुत के ये अवशेष मौर्य और शुंग काल के दौरान बौद्ध धर्म के व्यापक प्रचार-प्रसार पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। सांची के समान ही भरहुत भी भारतीय इतिहास में धार्मिक सहिष्णुता और प्राचीन स्थापत्य के गौरवशाली प्रतीकों में से एक के रूप में सदैव सम्मानित रहेगा, जो सराहनीय है।

263. (D) कृषि और व्यवस्थित जीवन
'नवपाषाण क्रांति' वह युगांतरकारी बदलाव है जब मनुष्य ने शिकारी रहने के बजाय 'कृषि और व्यवस्थित जीवन' की शुरुआत की। इस काल में मानव ने अनाजों का उत्पादन करना, पशुओं को पालना और स्थायी बस्तियाँ बनाकर रहना सीख लिया। मिट्टी के बर्तनों का निर्माण और पत्थर के उपकरणों को पॉलिश करना इसी युग की देन है। मध्य प्रदेश के एरण जैसे स्थलों से प्राप्त अवशेष इस क्रांतिकारी बदलाव की पुष्टि करते हैं। यह क्रांति ही वह आधार बनी जिसने आगे चलकर संगठित समाजों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया, जो अद्वितीय है।

264. (A) दान
उदयगिरि शिलालेख मुख्य रूप से गुप्त काल के दौरान विभिन्न धार्मिक संस्थाओं को दिए गए 'दान' का आधिकारिक रिकॉर्ड प्रस्तुत करते हैं। इन अभिलेखों में राजाओं और मंत्रियों द्वारा मंदिरों के निर्माण और ब्राह्मणों को दी गई वित्तीय सहायता का सविस्तार वर्णन मिलता है। ये दान न केवल शासकों की धार्मिक आस्था को दर्शाते हैं, बल्कि वे तत्कालीन समाज की परोपकारी प्रवृत्तियों के भी प्रतीक हैं। यह शिलालेख गुप्त कालीन प्रशासनिक उदारता और समाज में धर्म की महत्ता को समझने के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ऐतिहासिक साक्ष्य माना जाता है।

265. (C) चंद्रमा
चंदेल राजवंश के शासक अपनी उत्पत्ति पौराणिक कथाओं के अनुसार 'चंद्रमा' से मानते हैं, जिसके कारण उन्हें 'चंद्रवंशी' राजपूत कहा जाता है। लोकगाथाओं के अनुसार, इस वंश की जड़ें चंद्रदेव से जुड़ी हैं। इसी गौरव के साथ चंदेलों ने बुंदेलखंड पर शासन किया और खजुराहो के भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। चंद्रमा से उनके जुड़ाव का प्रतीक उनके कई अभिलेखों में भी स्पष्ट रूप से झलकता है। यह पौराणिक मान्यता न केवल उनके वंश की प्रतिष्ठा बढ़ाती थी, बल्कि उनके शासन को एक विशिष्ट धार्मिक और सांस्कृतिक आधार भी प्रदान करती थी।

266. (A) उपेंद्र
मालवा के प्रसिद्ध 'परमार' राजवंश की स्वतंत्र सत्ता के संस्थापक 'उपेंद्र' माने जाते हैं। उन्होंने 9वीं शताब्दी के प्रारंभ में एक स्वतंत्र राजवंश की नींव रखी और मालवा क्षेत्र को अपनी गतिविधियों का मुख्य केंद्र बनाया। उपेंद्र ने अपनी सैन्य कुशलता से परमारों की प्रतिष्ठा स्थापित की। उनके द्वारा स्थापित इस राजवंश ने आगे चलकर राजा भोज जैसे महान सम्राट दिए, जिन्होंने शिक्षा और स्थापत्य के क्षेत्र में मध्य प्रदेश के इतिहास को पूरे विश्व में गौरवान्वित किया। परमारों का उत्कर्ष उपेंद्र की राजनैतिक दूरदर्शिता का ही सफल परिणाम था।

267. (D) यशवंत राव होल्कर प्रथम
'यशवंत राव होल्कर प्रथम' अपनी असाधारण वीरता और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को कड़ी चुनौती देने के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान अंग्रेजों के विरुद्ध कई सफल सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया। उनकी सैन्य प्रतिभा के कारण ही उन्हें 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है। वे एक ऐसे स्वाभिमानी शासक थे जिन्होंने अंतिम समय तक अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करने से इनकार किया और मराठा परिसंघ को एकजुट करने का हरसंभव प्रयास किया। उनका संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता के प्रति अटूट निष्ठा का एक गौरवशाली प्रतीक है।

268. (B) सेना का विद्रोह जबकि शासक वफादार रहे
1857 के विद्रोह के दौरान ग्वालियर की स्थिति अत्यंत विशिष्ट थी क्योंकि वहाँ की 'सेना ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह' किया था, जबकि वहाँ के शासक जयाजीराव सिंधिया ब्रिटिश सत्ता के प्रति वफादार बने रहे। विद्रोही सैनिकों ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया। यह स्थिति दर्शाती है कि जनभावना विदेशी शासन के विरुद्ध थी, लेकिन राजनैतिक विवशताओं के कारण रियासत का नेतृत्व अंग्रेजों का सहयोगी बना रहा। ग्वालियर का यह संघर्ष 1857 की क्रांति के सबसे चर्चित अध्यायों में से एक माना जाता है।

269. (C) बेतवा
ऐतिहासिक नगर 'ओरछा' पवित्र 'बेतवा' नदी के तट पर बसा हुआ है। यह नदी ओरछा के बुंदेला स्थापत्य और यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता को और भी भव्य बनाती है। बेतवा के शांत तटों पर स्थित ओरछा के महल और राजाओं की छतरियाँ एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करते हैं। प्राचीन काल से ही यह नदी इस क्षेत्र के लिए जीवनदायिनी रही है और बुंदेला राजाओं ने इसके किनारों पर कई रणनीतिक और धार्मिक संरचनाओं का निर्माण कराया था। बेतवा और ओरछा का यह अटूट संबंध राज्य की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का एक अनिवार्य हिस्सा है।

270. (D) नर्मदा और सोन
पवित्र पर्वत 'अमरकंटक' भारत की दो महत्वपूर्ण नदियों—'नर्मदा और सोन'—का उद्गम स्थल है। नर्मदा नदी पश्चिम की ओर बहते हुए अरब सागर में गिरती है, जबकि सोन नदी उत्तर-पूर्व की ओर जाकर गंगा में मिल जाती है। अमरकंटक अपनी इसी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और धार्मिक महत्ता के कारण 'तीर्थराज' के रूप में जाना जाता है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता और प्राचीन मंदिर इसे आध्यात्मिक शांति का अत्यंत प्रतिष्ठित केंद्र बनाते हैं। इन महान नदियों का उद्गम स्थल होने के कारण यह क्षेत्र भारतीय संस्कृति और भूगोल में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

271. (A) गुर्जरा
दतिया जिले में स्थित 'गुर्जरा' सम्राट अशोक के शिलालेख के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ 'ताम्रपाषाण कालीन बस्तियों के साक्ष्य' नहीं मिलते हैं। इसके विपरीत, कायथा और नवदाटोली जैसे

पर्यटकों को अपने प्राचीन वैभव और चंदेरी की प्रसिद्ध हथकरघा कला (चंदेरी साड़ी) के साथ इतिहास का प्रत्यक्ष दर्शन कराने के लिए आकर्षित करती है जो अद्भुत है।

289. (B) ताम्रपाषाण काल
'ताम्रपाषाण काल' वह ऐतिहासिक चरण है जब मनुष्य ने पत्थर के साथ 'तांबे के औजारों का प्रथम उपयोग' शुरु किया था। यह पाषाण युग के अंत और धातु युग की शुरुआत का संधि काल है। मध्य प्रदेश में इस काल के प्रचुर साक्ष्य कायथा और नवदाटोली जैसे स्थलों से मिले हैं, जहाँ तांबे की कुल्हाड़ियाँ और आभूषण प्राप्त हुए हैं। इस युग में तांबे के उपयोग ने शिकार और कृषि में क्रांतिकारी बदलाव लाया। यह कालखंड मानव की तकनीकी उन्नति और प्रकृति के संसाधनों को परिष्कृत करने की उसकी बढ़ती क्षमता का एक अत्यंत सशक्त ऐतिहासिक प्रमाण है।

290. (A) हूण विजय
मंदसौर में स्थित यशोधर्मन का 'विजय स्तंभ' क्रूर 'हूण आक्रांताओं' पर उनकी निर्णायक विजय की स्मृति में स्थापित किया गया था। 6वीं शताब्दी के दौरान हूण राजा मिहिरकुल ने उत्तर भारत में आतंक मचा रखा था, जिसे राजा यशोधर्मन ने युद्ध में पराजित कर खदेड़ दिया। इस स्तंभ पर उत्कीर्ण शिलालेख यशोधर्मन के शौर्य और विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध सफल प्रतिरोध की गाथा सुनाते हैं। यह ऐतिहासिक स्मारक आज भी भारतीय इतिहास में क्षेत्रीय वीरता और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए किए गए महान संघर्षों के एक प्रेरणादायक प्रतीक के रूप में अडिग खड़ा है।

291. (C) भोज
11वीं शताब्दी में जब महमूद गजनवी उत्तर भारत पर हमले कर रहा था, तब मालवा के सिंहासन पर परमार वंश के प्रतापी राजा 'भोज' आसीन थे। राजा भोज ने अपनी राजनैतिक कूटनीति तथा सुदृढ़ सैन्य व्यवस्था के माध्यम से मालवा को इन आक्रमणों के प्रभाव से सुरक्षित रखा। ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, उन्होंने अन्य राजाओं के साथ मिलकर विदेशी शत्रुओं के विरुद्ध प्रतिरोध तंत्र विकसित करने का प्रयास किया था। उनका शासनकाल न केवल सैन्य सतर्कता का काल था, बल्कि यह विद्या और स्थापत्य के चरमोत्कर्ष का भी समय था, जिसने साम्राज्य को प्रतिष्ठित किया।

292. (D) खर्जूरवाहका
ऐतिहासिक स्थल खजुराहो का प्राचीन और मूल नाम 'खर्जूरवाहका' था। यह नाम संभवतः खजूर के पेड़ों की प्रचुरता के कारण पड़ा था। चंदेल राजाओं के अभिलेखों और तत्कालीन साहित्य में इसी नाम का उल्लेख मिलता है। खर्जूरवाहका जेजाकभुक्ति साम्राज्य की सांस्कृतिक राजधानी थी, जहाँ 9वीं से 11वीं शताब्दी के बीच अद्भुत मंदिरों का निर्माण किया गया। समय के साथ यह नाम परिवर्तित होकर 'खजुराहो' हो गया, लेकिन इसका ऐतिहासिक गौरव और इसकी कलात्मक विरासत आज भी पूरी दुनिया को इसके प्राचीन वैभव और समृद्ध भारतीय संस्कृति की याद दिलाती है।

293. (C) प्रजा मंडल
ग्वालियर रियासत में स्वतंत्रता संग्राम को जन-आंदोलन बनाने में 'प्रजा मंडल' संगठन ने निर्णायक भूमिका निभाई थी। प्रजा मंडल का मुख्य उद्देश्य रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना और जनता के नागरिक अधिकारों की रक्षा करना था। इसके कार्यकर्ताओं ने ब्रिटिश सत्ता के साथ स्थानीय सामंती व्यवस्था के विरुद्ध भी आवाज उठाई और गांधीजी के आंदोलनों को रियासत की जनता तक पहुँचाया। इस संगठन ने समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट कर उनमें राजनैतिक चेतना जगाई, जिससे स्वतंत्रता प्राप्ति के समय रियासतों के भारतीय संघ में विलय की प्रक्रिया को जनसमर्थन प्राप्त हुआ।

294. (B) बघेल
उमरिया जिले में स्थित ऐतिहासिक 'बांधवगढ़ का किला' सदियों तक 'बघेल' राजवंश का मुख्य गढ़ रहा है। बघेल राजपूतों ने इस दुर्गम पहाड़ी किले को अपनी राजधानी बनाया और यहाँ से सुदृढ़ शासन संचालित किया। किले के भीतर स्थित प्राचीन मूर्तियां और शिलालेख बघेल राजाओं के वैभव को दर्शाते हैं। बाद में, प्रशासनिक सुविधा के कारण राजधानी को रीवा स्थानांतरित कर दिया गया, लेकिन बांधवगढ़ बघेलखंड की वीरता और उनके गौरवशाली अतीत की मुख्य आधारशिला बना रहा। आज यह क्षेत्र अपने राष्ट्रीय उद्यान के साथ-साथ इस प्राचीन ऐतिहासिक किले की विरासत के लिए भी विख्यात है।

295. (D) लाल
भीमबेटका के प्रागैतिहासिक शैल चित्रों में 'लाल' रंग का प्रयोग सर्वाधिक व्यापक रूप से किया गया है। आदिमानव ने प्राकृतिक रूप से उपलब्ध लौह अयस्क और गेरू को पीसकर इस स्थायी रंग को तैयार किया था। लाल रंग का उपयोग शिकार के दृश्यों और मानवीय आकृतियों में जीवंतता लाने के लिए किया गया। इन चित्रों की सबसे बड़ी खूबी यह है कि हजारों वर्षों की प्राकृतिक मार झेलने के बावजूद ये लाल रंग आज भी अपनी स्पष्टता बनाए हुए हैं। यह रंग तत्कालीन मानव के संघर्ष और उनकी कलात्मक संवेदनाओं को व्यक्त करने का सबसे प्रमुख ऐतिहासिक माध्यम रहा है।

296. (A) कलचुरी-चेदि संवत
ताप्ती और नर्मदा क्षेत्र में शासन करने वाले 'आभीर' वंश का संबंध 'कलचुरी-चेदि संवत' की शुरुआत से माना जाता है। आभीर राजा ईश्वरसेन ने तीसरी शताब्दी में अपनी स्वतंत्र सत्ता के उपलक्ष्य में इस नए संवत का प्रचलन किया था। बाद में कलचुरी राजाओं ने भी इसी संवत को अपना लिया, जिसके कारण इसे 'कलचुरी संवत' के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। यह संवत प्राचीन भारत के कालक्रम के निर्धारण में इतिहासकारों के लिए एक अत्यंत प्रामाणिक आधार प्रदान करता है। आभीरों द्वारा शुरु की गई यह गणना पद्धति उनकी राजनैतिक संप्रभुता का एक सशक्त ऐतिहासिक प्रमाण है।

297. (C) होल्कर
इंदौर का भव्य 'लाल बाग पैलेस' होल्कर राजवंश की स्थापत्य कला के प्रति रुचि का एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इस महल का निर्माण मुख्य रूप से महाराजा तुकोजी राव होल्कर द्वितीय

के शासनकाल में प्रारंभ हुआ था। खान नदी के तट पर स्थित यह महल अपनी इतालवी शैली की वास्तुकला और सुंदर बगीचों के लिए जाना जाता है। महल के भीतर स्थित विशाल दरबार हॉल होल्करों की आधुनिक सोच को दर्शाता है। आज यह महल एक संग्रहालय के रूप में होल्कर रियासत के गौरवशाली इतिहास और उनकी सांस्कृतिक विरासत को पर्यटकों के सामने जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

298. (A) चित्रकूट
सतना जिले में स्थित पवित्र नगरी 'चित्रकूट' में 'गुप्त गोदावरी' नामक अद्भुत प्राकृतिक गुफाएं स्थित हैं। इन गुफाओं के भीतर निरंतर जल की धारा बहती रहती है, जिसे लोक मान्यताओं में गोदावरी नदी का गुप्त रूप माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, वनवास के दौरान भगवान राम और माता सीता ने यहाँ समय व्यतीत किया था। इन गुफाओं की प्राकृतिक बनावट और आध्यात्मिक वातावरण हर वर्ष लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। चित्रकूट की यह ऐतिहासिक विरासत न केवल रामायण कालीन स्मृतियों को संजोए हुए है, बल्कि यह क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

299. (D) राष्ट्रकूट
ऐतिहासिक नगर 'धार' प्राचीन काल में शक्तिशाली 'राष्ट्रकूट' राजवंश की एक महत्वपूर्ण पूर्ववर्ती राजधानी रहा है। राष्ट्रकूटों ने अपनी उत्तर भारत की विजयों के दौरान मालवा क्षेत्र को अपनी शक्ति का आधार बनाया और धार को अपनी संप्रभुता के प्रतीक के रूप में विकसित किया। बाद में, परमार वंश के उदय के साथ ही धार उनकी राजधानी बनी और राजा भोज के शासनकाल में यह शिक्षा का केंद्र बनी। राष्ट्रकूटों से लेकर परमारों तक का यह राजनैतिक उत्तराधिकार धार को मध्य भारत के इतिहास में एक अत्यंत विशिष्ट और सामरिक महत्व का शहर बनाता है, जो ऐतिहासिक रूप से गौरवपूर्ण है।

300. (B) भीमाजी नायक
निमाड़ क्षेत्र में स्थित 'सेंधवा घाटी' वीर आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी 'भीमाजी नायक' के संघर्ष का मुख्य केंद्र रही है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भीमाजी नायक ने इसी घाटी को आधार बनाकर अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह का संचालन किया था। उन्होंने भील योद्धाओं को संगठित कर ब्रिटिश खजानों को लूटा और विदेशी सेना की रसद आपूर्ति को बाधित किया। सेंधवा घाटी की भौगोलिक स्थिति ने उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध छापामार युद्ध करने में सामरिक लाभ प्रदान किया। भीमाजी नायक का अदम्य साहस आज भी निमाड़ के लोकगीतों और जनजातीय वीरता की कहानियों में एक प्रेरणादायक अध्याय है।

Nodia Editions LLP

125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 620.00